मध्य प्रदेश सन्देश

110672

मध्यप्रदेश सन्देश

110672

ग्वालियर, आषाढ़ १४, १८८०
शनिवार, ५ जुलाई, १९५८
वर्ष २ : अंक ३०

प्रदे
की
को

★

(दाईं ओर)

जनता का श्रमदान के लिए उत्साह सामुदायिक विकास योजना और स्थानीय अधिकारियों के सहयोग से अनेक बड़े कार्य करने में सफल हुआ है । द्वितीय योजनावधि में भी अनेक सुधरे हुए कुए बनाये गये हैं, जिनसे देश के विभिन्न भागों में लाखों व्यक्तियों को स्वच्छ जल पीने के लिए उपलब्ध हुआ है । चित्र में राजस्थान के नागल हीरा ग्राम (अलवर) में एक स्वच्छ कुआ है, जो ग्रामवासियों के श्रमदान से बनाया गया है

★

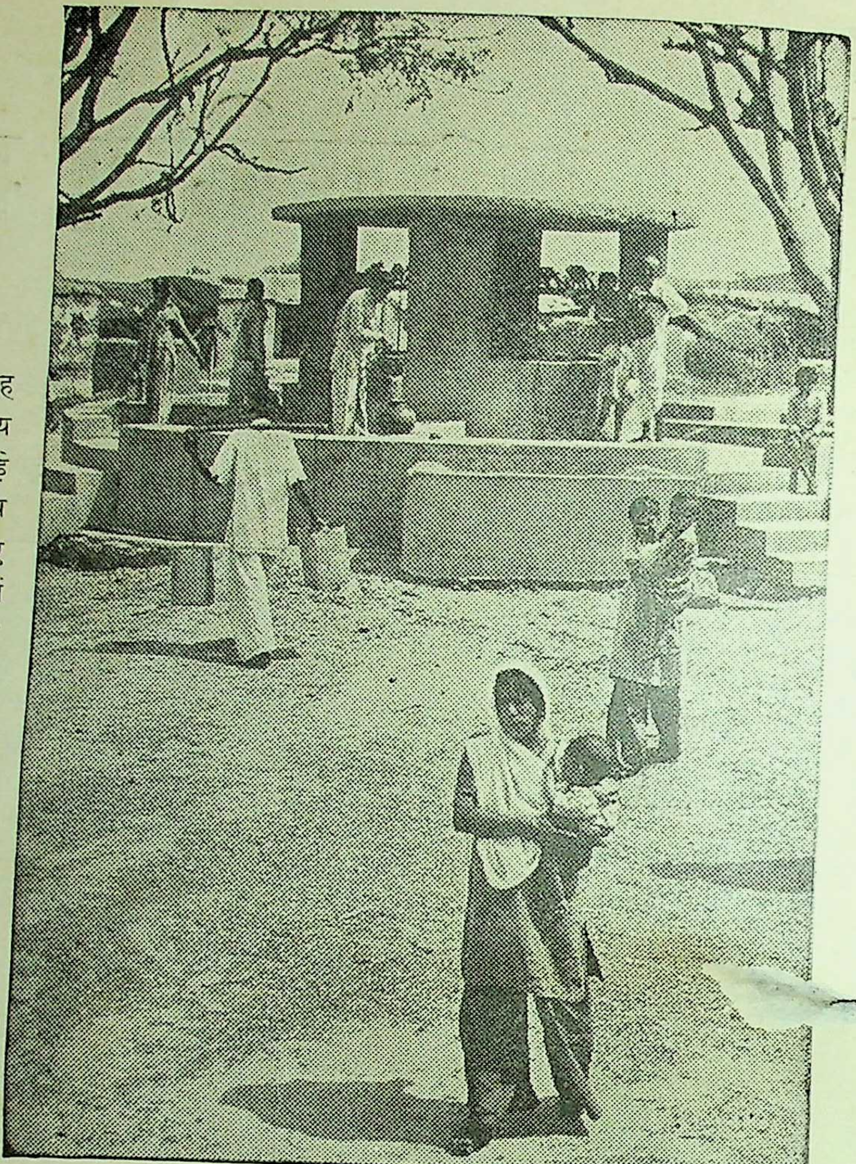

★

(नीचे)

भोपाल में अखिल भारतीय [illegible] शिक्षा परिषद् द्वारा आयोजित [illegible] परीक्षामूल्यांकन संगोष्ठी संपन्न हुई। [illegible] में शिक्षा मंत्री डॉ० शंकरदयाल [illegible] मूल्यांकन विशेषज्ञों का राज्य-[illegible] ओर से स्वागत कर रहे हैं। अ[illegible] ओर केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के [illegible] श्री के. जी. सैयदेन तथा बाईं ओर [illegible] विश्वविद्यालय के परीक्षक-मंडल के [illegible] डा० बी. एस. ब्लूम हैं

★

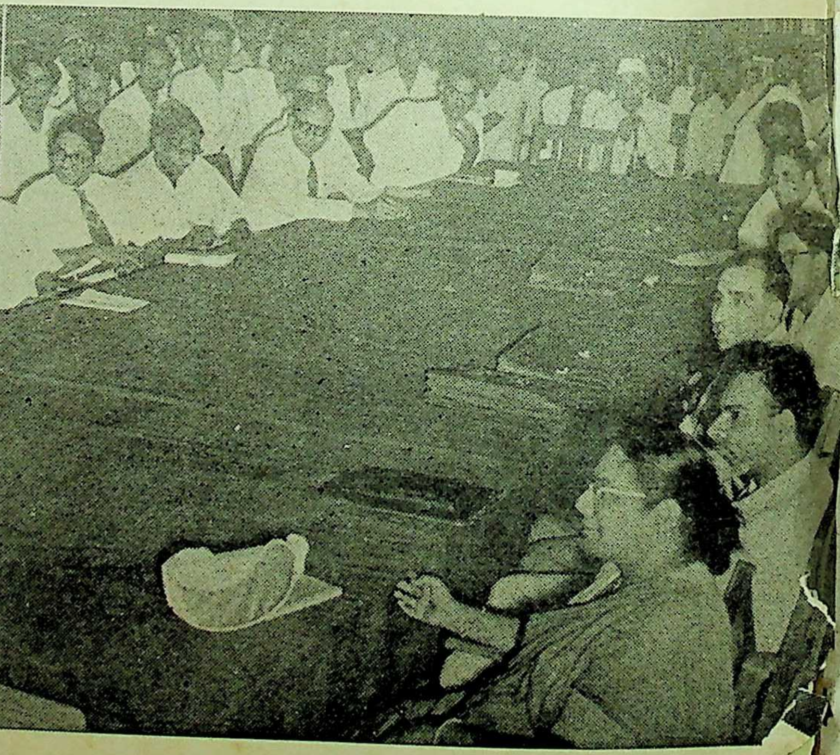

सचित्र साप्ताहिक
मध्यप्रदेश सन्देश

110672

वर्ष २ } ग्वालियर, आषाढ़ १४, १८८०, शनिवार, ५ जुलाई, १९५८ { अंक ३०

वन-महोत्सव का महत्त्व

वर्षाकाल के आगमन के साथ-साथ प्रथम ुलाई से हमारे देश में एक राष्ट्रीय पर्व प्रारम्भ ोता है। इस पर्व का नाम है वन-महोत्सव। न-महोत्सव मनाये जाने का यह नवाँ अवसर । सन् १९५० में, तत्कालीन केन्द्रीय सरकार खाद्य मंत्री श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी इस महोत्सव का श्रीगणेश किया था से देश के अनुकूल ही विशाल तथा गौरवपूर्ण नाने के लिए वह जी-जान से जुट गए थे। उन्होंने राष्ट्रव्यापी आन्दोलन के लिए यह ादर्श वाक्य बनाया था—"वृक्षों का अर्थ जल, जल का अर्थ अन्न तथा अन्न का अर्थ जीवन है।" तब से वन-महोत्सव एक राष्ट्रीय उत्सव बन गया है और वृक्षारोपण का विस्तार होता जा रहा है।

प्राचीनकाल में हमारे देश में वन एवं वृक्षों को आदर की दृष्टि से देखा जाता था। उस समय वृक्षों की परिचर्या करना एक सामाजिक तथा साथ ही धार्मिक नियम भी था। वानप्रस्थ-आश्रम में तो दम्पत्ति का यह कर्त्तव्य होता था कि वे वन-देव के आश्रय में रहकर उसका सम्वर्द्धन करें तथा वृक्ष एवं लता-बल्लरियों के प्रसाद—कन्द, मूल और फल से अपना पोषण करते हुए उपास्य-देव की उपासना में अपना समय व्यतीत करें। तब मानव प्रकृति की गोद में रहता था और उसके साथ आत्मीयता स्थापित करता था। इस प्रकार प्रकृति के साथ उसका आदान-प्रदान चलता रहता था, किन्तु, कालान्तर में देश की राजनीतिक उथल-पुथल ने इस आश्रम-प्रथा को समाप्त कर दिया। शनैः-शनैः भरण-पोषण की चिन्ता एवं धन, सत्ता तथा ऐश्वर्य के प्रलोभनों में फँसकर मानव प्रकृति से विलग हो गया। विगत कई शताब्दियों में हमारे देश की वन-सम्पत्ति की अपार क्षति हुई। इसका एकमात्र कारण विदेशी शासन की वनों के प्रति उपे ीय वत्ति ही थी।

वन-विशेषज्ञों के अनुसार वन प्रत्येक देश की ऐसी सम्पदा हैं, जिनसे देशवासियों को अगणित लाभ होते हैं। वन देश की जलवायु को ठीक रखते हैं। ये वर्षा में सहायक होते हैं। गर्मी के भीषण प्रकोप को कम करते हैं। इनसे अगणित औषधियां, फल, फूल और लकड़ी प्राप्त होती है। इनसे प्राणियों को ऑक्सीजन मिलता है, जो उन्हें जीवन-शक्ति प्रदान करता है। ये वायु को शुद्ध करते हैं, आँधियों को रोकने में सहायक होते हैं, श्रान्त पथिक को छाया देते हैं, मनोरम दृश्यों से मन को प्रसन्न करते हैं और देते हैं ऐसे आध्यात्मिक गुण, जो मानव को अपने स्तर से उठाकर देवत्व की ओर बढ़ाते हैं। यही कारण है कि संस्कृति तथा धर्म की दृष्टि से वृक्ष भारतीय जीवन का अभिन्न अंग हैं। अन्य दृष्टियों से भी वन हमारे आर्थिक जीवन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में देश की वन-सम्पदा में वृद्धि करने के उद्देश्य का विशिष्ट ध्यान रखा गया है और निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति हेतु केन्द्रीय एवं राज्य-सरकारें जन-सहयोग प्राप्त कर कार्यक्रम के अनुसार प्रगति कर रही हैं। मध्य-प्रदेश में लगभग ६७,५४३ वर्गमील वन-क्षेत्र है। इससे होनेवाली आय में और अधिक वृद्धि करने के लिए वनों के संरक्षण और वन्य-क्षेत्र में वृद्धि के हेतु शासन निरन्तर प्रयत्नशील है। वन-विस्तार की योजनाओं के अंतर्गत राज्य में वृक्षारोपण के क्षेत्र में गत वर्षों में उल्लेखनीय कार्य हुआ है, और इस कार्य में जनता का सहयोग भी प्राप्त रहा है। सन् १९५७-५८ में ३,५४९ एकड़ भूमि के क्षेत्र में, नियमित वृक्षारोपण-कार्यों के अतिरिक्त वृक्षारोपण-कार्य किया गया है, जबकि इस कार्य के लिए ३,४२० एकड़ क्षेत्र का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। उक्त वृक्षारोपण-कार्यों पर शासन द्वारा कुल मिलाकर गत वर्ष ३.६५ लाख रुपये व्यय किये गये। वनों को अविवेकपूर्ण क्षति से बचाने के लिए भी सतर्कता रखी जा रही है। वनों की सुरक्षा और उनकी वृद्धि के लिए जन-सहयोग अति आवश्यक है। अतः प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि राष्ट्र की इस मूल्यवान निधि—वन-सम्पदा—की समृद्धि में उसके महत्त्व के अनुकूल पूर्ण सहयोग दे, जिससे वह गत गौरव को पुनः प्राप्त कर सके।

—मुखपृष्ठ का चित्र—

बिलासपुर जिले में स्थित शिवरीनारायण
का मन्दिर, जो अपनी प्राचीनता
के लिए प्रसिद्ध है

निर्माण की दिशा में

हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि मशीन, नारे या अन्य भौतिक चीजें इतनी महत्वपूर्ण नहीं, जितनी कि मानवता महत्वपूर्ण है। हमने अपना उद्देश्य रखा है कि अपने निरपेक्ष राज्य को लोकतंत्र के सिद्धांतों पर स्थापित करेंगे, परन्तु लोकतंत्र, समाजवाद या इसी तरह के अन्य शब्दों का तभी कुछ अर्थ हो सकता है, जबकि मानव के मन में इनके लिए आकांक्षा पैदा होती है। आज हम इन शब्दों के लिए मौखिक सहानुभूति रखते हैं, परन्तु क्रियात्मक रूप में कुछ कर नहीं पाते। हमें यह देखना है कि हम अमल में कितना लाए हैं। वास्तव में, हमारा भविष्य तो इनके विकास से बनता है। हम अपना भविष्य तभी उज्ज्वल बना सकेंगे, जबकि हम मानव में उक्त क्रांति ला सकें। उक्त क्रांति लाने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है।

*

चरित्र-निर्माण और नव-दृष्टिकोण के निर्माण में शिक्षा ही सहायक हो सकती है। हमारे संविधान में कहा गया है कि इस वर्ष के अंदर हम छः वर्ष से १४ वर्ष की आय के सभी बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा का प्रवन्ध कर सकेंगे, परन्तु आज आठ वर्ष बीत जाने के बाद देखें, तो पता चलेगा कि हम इस उद्देश्य से कितने पिछड़े हुए हैं। अभी तो हम छः वर्ष से ग्यारह वर्ष तक के बच्चों के लिए भी वह प्रवन्ध नहीं कर सके।

आज माता शिक्षा से दीक्षित होगी, तो बुद्धि-निर्मित यह संसार एक मानव-हितैषी संसार में परिवर्तित हो जाएगा।

—डॉ. राधाकृष्णन्

*

औद्योगिक क्रान्ति ने पिछले डेढ़-सौ वर्षों में सारी दुनिया का तौर-तरीका ही बदल दिया है। औद्योगिक क्रांति अब भी जारी है और नई विधियाँ निकलती जा रही हैं। विज्ञान और शिल्प बहुत तेजी से प्रगति कर रहे हैं। इनसे मनुष्य के रहन-सहन और सामाजिक संगठन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। इस युग की मुख्य समस्या यह है कि किस प्रकार व्यक्ति परिवर्तनशील युग के अनुरूप अपने को ढाल सके। साथ ही, अपनी मनुष्यता भी बनाये रखे।

*

कोई भी विषय इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितनी शिक्षा। इस देश के लड़के और लड़कियाँ ही इस राष्ट्र के निर्माता हैं और इनके चरित्र का निर्माण शिक्षा के ही द्वारा होता है।

शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि लड़के-लड़कियाँ इस युग के और जो कार्य उन्हें करने हैं, उनके अनुरूप अपने को ढाल सकें। बच्चों को इस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए, जिससे उनके चरित्र [illegible]र विवेक का विकास हो। ऊँचे चरित्र के साथ उ[illegible]ा मस्तिष्क भी सन्तुलित, ग्रहणशील और [illegible]र हो, जिससे वे किसी भी प्रश्न पर सम्यक् विचार करें और उसको सुलझाने का प्रयत्न करें। उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होना चाहिए और यह विकास ऐसा होना चाहिए जो उन्हें युग के साथ चलने लायक बनावे।

*

समय और कार्य के अनुसार शिक्षा-पद्धति में थोड़ा-बहुत अन्तर होगा। हम इस समय बहुत बड़े परिवर्तनों में से गुजर रहे हैं। हम अब इतना आगे बढ़ आए हैं कि पीछे लौटना सम्भव नहीं है। अब एक ही रास्ता हमारे सामने है कि हम इन परिवर्तनों को समझें और आगे होने वाले परिवर्तनों की कल्पना करें।

—श्री जवाहरलाल नेहरू

*

जो क्षय-रोग-निरोध में सहायता देते हैं, वे मानव का महान् उपकार करते हैं। ईश्वर हमारी पूजा का भूखा नहीं है और उसे किसी पदार्थ की कमी भी नहीं है। वह तो हम पर दया करके भूखे, नंगे और रोगी के रूप में हमारे सामने आते हैं। हम चाहें तो भूखों, नंगों तथा रोगियों की सेवा करके अपना जीवन पवित्र बना लें। हमारा देश गरीब है। हम वांछित रोग-निरोधक उपाय नहीं कर पाते। अतः जो दानी हमारे इस सत्कार्य में हाथ बटाते हैं, वे हमारी श्लाघा के पात्र हैं।

अब क्षय असाध्य रोग नहीं रहा। डॉक्टरों ने बहुत प्रगति कर ली है और वे आयुर्वेद के इस मत से सहमत हो गए हैं कि रोगी की जन्मभूमि के जलवायु में आधुनिक औषधियों से उपचार सम्भव है। पहाड़ी क्षेत्रों और खुली हवा में जाने पर होने वाला भारी व्यय, बचाकर रोगी के पौष्टिक भोजन, स्वच्छ वस्त्र और दवा-दारू पर किया जा सकता है।

—डॉ० सम्पूर्णानन्द

*

जापानी और चीनी अपनी-अपनी भाषाओं के लिए एक सरल लिपि की खोज कर रहे हैं। भारत के प्राचीन काल में जैसे उक्त दोनों देशों के साथ संबंध रहे हैं, उनको देखते हुए देवनागरी लिपि उनके इस उद्देश्य को पूरा कर सकती है।

--आचार्य विनोबा भावे

इस अंक में

क्र. शीर्षक एवं लेखक पृष्ठ संख्या
१. वन-महोत्सव ५
—श्री प्रेमनारायण दुबे 'प्रेमी'
२. त्रिपुरी का सांस्कृतिक गौरव .. ६
—श्री प्रमोदशंकर भट्ट
३. धरती को गाने दे! (कविता) ६
—श्री प्रकाश कौल
४. तुमने धरती को पावस के अगणित पंख दिये! (कविता) ७
—प्रा० रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'
५. श्री मैथिलीशरण गुप्त का मानवतावाद ८
—डॉ० कमलाकांत पाठक
६. एक बदनाम आदमी (कहानी) .. १०
—श्री प्रकाश दीक्षित
७. भारतीय भाषाओं में उच्चारण-साम्य १३
—डॉ० विश्वनाथप्रसाद
८. भंसालीजी के साथ तीस दिन .. १५
—श्री सत्यदेव विद्यालंकार
९. गीत (कविता) १६
--श्री शंकर सक्सेना

वन-सम्पदा की समृद्धि का प्रतीक

वन-महोत्सव

—श्री प्रेमनारायण दुबे 'प्रेमी'

भारतीय कला और संस्कृति में वृक्षों का संरक्षण और संवर्द्धन नैसर्गिक सुषमा प्रदान रनेवाला एक पवित्र एवं धार्मिक कर्त्तव्य माना ाता है। यहाँ के साहित्य और गीतों में वनश्री सुन्दर दृश्य मुखरित होते हैं, तो संस्कृति में ट, पीपल, तुलसी आदि के वृक्ष मंगल-रूप में न्यनीय बनकर हमारी सांस्कृतिक श्रद्धा के चक बने हुए हैं। भारतीय विद्या, प्रणय, वीरता, ला और संस्कृति के विकास तथा मुनियों एवं हात्माओं द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान का अभिनव जन करने में वनों का बहुत बड़ा हाथ रहा है। ारतीय जीवन में, हर दृष्टिकोण से देखने पर, वनों का अद्वितीय महत्व स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है।

कृषि-प्रधान देश भारत के वन देश की आर्थिक, सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति के महत्वपूर्ण अंग हैं। आधुनिक भौतिक युग में किसी भी देश के वन उसकी महान् सम्पत्ति समझे जाते हैं। देश की अन्य उपज प्राकृतिक अनुकूलता या प्रतिकूलता के कारण बढ़ती या क्षय हो जाती है, किन्तु, वन-सम्पत्ति समुचित व्यवस्था के अन्तर्गत स्थायी रूप से समृद्ध रखी जा सकती है। उपयुक्त स्थान में रोपित और सम्यकरूपेण ोषित प्रत्येक वृक्ष हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति की समृद्धि के पथ पर प्रगति का पथ-चिह्न होता है।

वृक्षों के मानव-समाज पर अनन्य उपकार हैं, जो सहज ही नहीं भुलाए जा सकते। वृक्षों की छाया में विश्राम लेकर, मनुष्य कुल्हाड़ी से उन्हें काटकर ईंधन का काम लेते हैं और पत्थर मारकर मीठे-मीठे फल पाते हैं, किन्तु, मूक-भाव से मानव को सर्वस्व समर्पित करनेवाले वृक्ष मानव से कभी कुछ नहीं माँगते। मानव वृक्ष व वनों के ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकता। वृक्षों से भूमि को प्राकृतिक खाद प्राप्त होता है। वनखण्डों की जहाँ सघनता होती है, वहाँ यथोचित वर्षा होती है, जिससे भूमि शस्य-श्यामला बनती है और भूमि की उर्वरा-शक्ति में वृद्धि होती है। यथोचित नमी और वर्षा से पैदावार की अभिवृद्धि होती है। भूमि की आर्द्रता के कारण तापमान समशीतोष्ण हो जाता है और जलवायु सुखद एवं नम रहती है।

वर्तमान समय में औद्योगिक लकड़ियां, पाइन, देवदार, सनोवर इत्यादि व इमारती लकड़ी की माँग तीव्र होती जा रही है। ये लकड़ियाँ हमें वनों से ही प्राप्त होती हैं। ईंधन के लिए और औद्योगिक कारखानों में कोयले के अभाव में लकड़ी का ही प्रयोग होता है। वृक्षों की जड़ों में मिट्टी का भारी जमाव होता है, जो नदी को समय-असमय पाट नहीं बदलने देता, जिससे भीषण आकस्मिक हानियाँ नहीं हो पातीं और वनों से बाढ़ के प्रकोप रुक जाते हैं।

वन-सम्पदा सभी प्रकार से बहुमूल्य होती है। सभ्यता की प्रगति में मूलरूप में आवश्यक वस्तुएँ कागज, लाख, दवाइयां, माचिस, तेल, रंग, वार्निश, फल-फूल, वनस्पतियां और जड़ी-बूटियाँ हैं, जो सभी हमें वनों और वृक्षों से प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती हैं। आदिम जातियों में वृक्षों की छाल वस्त्रों के काम आती है और उससे चमड़ा भी पकाया जाता है। वन आर्थिक उन्नति में प्रत्यक्ष योगदान देते हैं, तो नैसर्गिक सौन्दर्य एवं स्वस्थ जलवायु प्रदान करने में अप्रत्यक्ष रूप से हमारे सहायक हैं।

गत शताब्दियों में हमारी वन-सम्पदा उचित देखरेख न होने से क्षतिग्रस्त हो गई है, जिससे हमारी निर्धनता में वृद्धि हुई है। वनों के संरक्षण और नए-नए पौधों के रोपण से हम उत्साही हृदय और सशक्त हाथों से, अपनी वन-सम्पदा को समृद्धिशाली कर, पुनः अपने देश को धनी एवं समृद्धिशाली बना सकते हैं। सन् १९५० से हमारे देश में, वनों के संरक्षण को जनहितकारी एवं आवश्यक समझकर, जनरुचि को इस ओर प्रवृत्त करने की दृष्टि से, राष्ट्रीय सरकार की ओर से वन-महोत्सव राष्ट्रीय-पर्व के रूप में मनाना प्रारम्भ किया गया है।

प्रतिवर्ष एक जुलाई के लगभग नए-नए पौधे रोपकर ही हमें वन-महोत्सव की इतिश्री नहीं समझना चाहिए। वृक्ष लगाने की प्रक्रिया-मात्र में ही सार्थकता और कर्त्तव्य की पूर्ति नहीं होती, बल्कि पहले हमें वृक्षों के प्रकार, खाद और उचित स्थान का चुनाव करना चाहिए। वृक्ष फल-फूल देनेवाला होना चाहिए, खाद सम्पूर्ण पोषक तत्व प्रदान करनेवाला हो और पौधे ऐसे स्थान में रोपे जायं, जहाँ वे मवेशी या पक्षियों आदि से सुरक्षित रह सकें। फलदार वृक्षों का रोपण अधिक उपयोगी होगा। हर जगह वन-संरक्षण समिति बनाई जाए, जो वृक्षों के विकास, सुरक्षा आदि की दिशा में जागरूक एवं क्रियाशील रहे। जुलूस और सभाओं का आयोजन कर वृक्षों और वनों के महत्व पर प्रकाश डाला जाय। केवल सरकारी कर्मचारी और विद्यार्थी ही वन-महोत्सव न मनाएं, बल्कि समाज के हर वर्ग के व्यक्ति वृक्षारोपण के पुण्य-कार्य करें।

प्रत्येक घर पीछे एक वृक्ष भले ही लगाया जाय, किन्तु, घर के व्यक्ति उसे पूरा पेड़ बनाने की प्रतिज्ञा अवश्य लें। जिस प्रकार प्रतिवर्ष सबसे अधिक अन्न का उत्पादन करनेवाले कृषक को सरकार पुरस्कार प्रदान करती है, जिससे प्रोत्साहन की भावना उत्पन्न होती है, यदि प्रतिवर्ष सबसे अधिक वृक्ष उगाने वाले परिश्रमी पुरुष को जनता भी किसी और रूप में भी सम्मानित किया करे, तो वन-महोत्सव का आयोजन और अधिक व्यापकता, विशालता, सुरुचि और परिश्रम के साथ सम्पन्न होगा।

यदि हम राष्ट्रीय समृद्धि के कार्य में सफल होना चाहते हैं और देश को अन्न की दृष्टि से स्वात्मनिर्भर करना चाहते हैं तो हमें अपनी वन-सम्पदा की रक्षा करना होगी और अपूर्व उत्साह और लगन से वन-महोत्सव मनाकर, वृक्षों की उचित सुरक्षा और संवर्द्धन के प्रयत्न करना होंगे।

त्रिपुरी का सांस्कृतिक गौरव

—श्री प्रमोदशंकर भट्ट

मध्यप्रदेश के सांस्कृतिक वैभव का परिचय देने वाली प्राचीन नगरियों में माहिष्मती, त्रिपुरी और उज्जैन का विशिष्ट स्थान है । महाभारत काल में अवन्ति, माहिष्मती और चेदि के राज्य थे। अवन्ति, (उज्जयिनी) प्रान्त प्रसिद्ध ही है। माहिष्मती वर्तमान मंडला को ही अधिकांश विद्वान् मानते हैं । चेदि, विन्ध्य और सतपुड़ा पर्वत के मध्य का प्रान्त कहा जाता था । महाभारत में चेदि के चंदेल राजाओं का वर्णन मिलता है। शिशुपाल चेदि का ही राजा था। कलचुरी या हैहयवंशी राजाओं का राज्य उस काल में माहिष्मती में था। माहिष्मती से हैहयवंशी मनमुटाव के कारण त्रिपुरी आगये और चंदेल, कालिंजर में आकर रहने लगे। पर थे वास्तव में दोनों चेदीश और मध्यकालीन भारतीय इतिहास में दोनों राज्यों का प्रमुख स्थान है । दोनों राज्य पड़ोसी तो थे ही, साथ-साथ उत्कर्षी भी थे । इसलिये दोनों का संघर्ष चलता रहा । वे एक-दूसरे के अधीन नहीं हुए। चेदि प्रान्त का दूसरा नाम डाहल भी था । इसी कारण कलचुरी राजा डाहलाधिपति भी कहे जाते थे ।

वैसे तो त्रिपुरी के अस्तित्व का पता विक्रम संवत् के भी पूर्व मिलता है । पर, कलचुरियों की राजधानी होने के समय से उसके गौरव का इतिहास बढ़ा । यह समय यद्यपि ३०६ वि. से आरम्भ होता है; क्योंकि इसी समय से कलचुरि संवत् का समारम्भ होता है । इसी समय से त्रिपुरी की तरुणावस्था प्रारम्भ हुई और ग्यारहवीं शताब्दी तक वह पूर्णता को प्राप्त होगई । उस समय त्रिपुरी ही नहीं, त्रिपुरी प्रान्त भी पृथ्वी का सार-रूप और लक्ष्मी का घर था ।

त्रिपुरी भारत की ही नहीं, संसार की नगरियों में एक थी । १३६ राजाओं अथवा उनके राजदूत त्रिपुरी में निवास करके उसके अधिपति कर्णदेव की सेवा में उपस्थित रहते थे । त्रिपुरी भारत के मध्य में स्थित थी, इससे अपना साम्राज्य-विस्तार करने के लिए उसके अधिपतियों को वहाँ से चारों ओर आक्रमण करने में बराबर की दूरी पड़ती थी । उनकी दस-ग्यारह पीढ़ियाँ क्रमशः उत्तरोतर योग्य और पराक्रमी होने से वह विक्रम की तेरहवीं शताब्दी में हिमालय से समुद्र तक एवं पंजाब से कोचीन तक फैले हुए विशाल साम्राज्य की राजधानी हो गई थी । त्रिपुरी इतिहास के लेखक श्री ब्योहार राजेन्द्रसिंह लिखते हैं :—

"त्रिपुरी के लिये यह बड़े गौरव की बात है कि वह भारत के सबसे बड़े साम्राज्य की राजधानी थी । ऐतिहासिककाल में अशोक सबसे बड़े सम्राट् थे, किन्तु चोल, पांड्य तथा मालाबार प्रान्त उनके राज्य के बाहर थे। महाराज समुद्रगुप्त का राज्य नर्मदा के दक्षिण तथा नैपाल तक नहीं पहुंचा । हर्ष का राज्य-विस्तार समुद्रगुप्त से बहुत अधिक न था । मुगल सम्राट् औरंगजेब का राज्य सबसे विस्तीर्ण रहा, पर उसमें भी महाराष्ट्र और दक्षिण के प्रान्त शामिल नहीं थे । पर, कर्णदेव के समय ऐसी बात नहीं थी। कर्णदेव भारत के ही नहीं, किन्तु संसार के सबसे बड़े सेनानायकों में से एक थे । भारतीय नेपोलियन भी उन्हें कहा जाता था । किन्तु वास्तव में कर्णदेव नेपोलियन से कहीं बड़ा था । नेपोलियन जिस समय स्वातंत्र्य और भ्रातृत्व की भावना की आड़ में युद्ध करता था, उससे उसे अत्यन्त लाभ होता था। विपक्षी देशों में लोग उससे सहानुभूति करने लगते थे, जिससे उसे विजय में सरलता होती थी। किन्तु. कर्णदेव की विजय में ऐसा कोई सुभीता नहीं था । नेपोलियन आसपास तथा समीपवर्ती देशों पर ही कब्जा जमा सका था, रूस और मिश्र में उसे मुंह की खानी पड़ी थी, किन्तु कर्णदेव पाण्ड्य, चोल, मालाबार, कलिंग, बंग, पंजाब और गुजरात तक गये और जीत कर लौटे । वाटरलू में नेपोलियन जो हारा तो सदा के लिये समाप्त हो गया, किन्तु कीर्तिवर्मन से हारने पर भी कर्णदेव का कुछ नहीं बिगड़ा । अतः कर्णदेव संसार के बड़े विजेताओं में से था ।"

ऐसे महान् विजेता की राजधानी त्रिपुर यदि अमरावती नगरी के समान रही हो, त इसमें आश्चर्य ही क्या ?

कलचुरियों के समय में त्रिपुरी ने दूर-दू तक अपना राजनैतिक साम्राज्य तो स्थापि किया ही, साथ-ही उसका सांस्कृतिक साम्राज भी दूर-दूर तक विस्तृत हो गया । कलचुरिय

धरती को गाने दे !

वरखा को आने दे, मस्त घटा छाने दे-
रिमझिम की सरगम पर धरती को गाने दे !

सिन्दूरी बादल से,
मेघों की पायल से,
फूट पड़े राग-राग–
सावन के आँचल से !
मेढ़-मेढ़, खेत-खेत,
चट्टानें, रेत-रेत,
प्यास लिये प्राणों में–
टेर रहे चेत, चेत !

तपन दूर जाने दे, मल्हारें गाने दे-
बिजली का तार खींच कजरी लहराने दे !

मिट्टी में महक उठे,
मस्त मोर चहक उठे,
झाड़ियों की मदिरा पी–
रोम-रोम बहक उठे !
झूमे मदहोश पवन,
डोला हरएक सुमन,
थिरक पड़ी कली-कली–
पुलक उठे चमन-चमन !

विहग गुनगुनाने दे, स्वाति नीर पाने दे–
अम्बर के हाथों से, तृप्ति छीन लाने दे !

हरियाए धाम-धाम,
नगर-नगर , ग्राम-ग्राम,
कण-कण में प्राण लिये–
बरस पड़े मेघ-श्याम !
बूंद-बूंद सुधा झरे,
मिट्टी न आह भरे,
कृषकों के खेत सभी–
अंगड़ाए हरे-हरे !

अमृत बिखर जाने दे, तन-मन सरसाने दे–
श्रमिकों की भूख दबा नाज निखर आने दे !

--श्री प्रकाश कौल

साहित्य, संस्कृति, कला, ज्ञान-विज्ञान आदि का विशेषांश

इसके संपादनपरामर्शदाता :- श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द

विशेष कविता

तुमने धरती को पावस के अगणित पंख दिए

--प्रा० रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

डूबी पर्वत में हरियाली, वन सूखे, अकुलाए;
देख रहे थे खेत-गगन में अब तक मेघ न आए ।
ताल-तलैया घटे, दहककर तपन लगी शिखरों तक,
बही लुआरें ऐसी, सारी सृष्टि अधजली अपलक ।
तुमने पंखहीन परती को नूतन पंख दिए ।
वज्र-अग्नि यह, जिसे न रवि, शशि, सागर तक सह पाए;
लंका-दहन मच गया, ऐसे उबले अंधड़ आए ।
लगता था इन अंगारों की कोई थाह नहीं है,
बिना तुम्हारी छाँह कहीं ठंढक की राह नहीं है ।
तुमने धरती को मेघों के अगणित पंख दिए ।
उड़ो! उड़ो ! अभिशप्त धारित्री, जलधारों में धंसकर,
इतनी ऊंचे उड़ो कि पीछे छूटें सपनों के घर ।
झुकी घटा में घुलो, गगन की चोटी पर चढ़ जाओ,
शीतल पवन-झकोरों में आर्द्रा-सी घुलती जाओ ।
तुमने धरती को मेघों के उड़ते पंख दिए ।

विशीषलेख

श्री मैथिलीशरण गुप्त का
मानवतावाद

—डॉ॰ कमलाकांत पाठक

नवोत्थानवादी काव्य 'गुरुकुल' में गुप्तजी की उक्ति है :—

'हिंदू हो या मुसलमान हो,
नीच रहेगा फिर भी नीच,
मनुष्यत्व सबसे ऊपर है
मान्य मही-मंडल के बीच ।[१]'

पाश्चात्य संस्कृति के मानवतावाद का द्विवेदी-युग के उत्तरार्ध में हिंदी-साहित्य पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा। विश्व-प्रेम और लोक-सेवा के आदर्श इसी मानवतावाद के तत्त्व थे, जिनका गुप्तजी के काव्य ही में नहीं, उस युग की साहित्यिक चेतना में भी समावेश दिखाई पड़ा। इसे कुछ समीक्षकों द्वारा पाश्चात्य विचार-धारा का प्रभाव बताया जाता है[२] अथवा ईसाई-संस्कृति का गुण।[३]

यह मानवतादर्श भारत के लिए नया नहीं है। भारत की संस्कृति में सर्वभूतहित की भावना संनिविष्ट है।[४] 'सर्वे सुखिनः संतु' की भावना आधुनिक युग में पुनरुज्जीवित की गई। वेदांत के आधार पर स्वामी विवेकानंद ने आध्यात्मिक क्षेत्र में,[५] अनुभूति के आधार पर रवींद्रनाथ ठाकुर ने काव्य के क्षेत्र में[६] और भागवत एवं बौद्ध-धर्म के तत्त्वों के आधार पर गाँधीजी ने सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्र में इसका प्रवर्तन किया ।[७]

मानववाद क्या वस्तु है? स्किलर का मत है कि मानववाद दर्शन के क्षेत्र में प्रकृतिवाद (Naturalism) और निरपेक्षवाद (Absolustim) का विरोधी दर्शन है। यह विशिष्ट दार्शनिक मनस्थिति है, जिसमें मानवीय अनुभूतियों की व्याख्या को तत्त्व-दर्शन का प्राथमिक कार्य समझा गया है। इसकी मान्यता है कि उक्त कार्य का संपादन मानव-ज्ञान के द्वारा पूर्णतः संभव है। पुनरुत्थानकालिक साहित्यिक मानववाद तत्त्वतः विचार और शिक्षा को मध्ययुगीन धार्मिकता के संकीर्ण पांडित्य की विधि-व्यवस्था से मुक्त करने का प्रयास था। प्रोटागोरस की यह उक्ति उसका सिद्धांत-वाक्य था कि समस्त वस्तुओं का मापक केवल मनुष्य है। मानववाद की यह मूलभूत मान्यता है कि सत्य और स्वत्व मानव के लिए हैं, मानव द्वारा प्राप्य हैं और मानव-विकास के पूर्ण तथा पर्याप्त साधन हैं।[८]

गुप्तजी के राम, नहुष, युधिष्ठिर, दिवोदास, गौतम बुद्ध आदि पात्र इसी मानववाद को चरितार्थ करते हैं। मुक्ति और मुक्ति, धर्म और पुरुषार्थ तथा व्यष्टि और समष्टि सभी का मानदंड मानव-हित है, जीवन-विकास है, सर्वोदय है। सभी वस्तुएँ मानव की हैं। लक्ष्य भी उसीका है, उद्योग भी उसीका और प्राप्य भी उसीका। गुप्तजी के दिवोदास की यह ।उक्ति दृष्टव्य है: 'निज मर्यादा-पुरुषोत्तम ही मानव का आदर्श'।

मानववाद ही का लोकहितवादी-स्वरूप मानवतावाद है, जो चिंतन-विशिष्ट दर्शन नहीं है। वह सामान्य दार्शनिक मनःस्थिति का द्योतक है। इसका व्यापक प्रभाव यह पड़ा कि तार्किक सूक्ष्मता का दर्शन के क्षेत्र में महत्त्व कम हुआ। बौद्धिक तर्क-वितर्क अथवा सूक्ष्म दार्शनिक ऊहापोह अत्यल्प व्यक्तियों को ग्राह्य होता है। उसके स्थान पर सामान्य बुद्धि (Comman Sence) की उन धारणाओं को प्रवर्धित किया गया, जिन्हें मानव ने अपनी प्रवृत्तियों और कार्यों के निर्देशनार्थ सोचा और जो बद्धमूल हो गईं [९]। इसी कारण गुप्तजी की 'विष्णुप्रिया' चैतन्य महाप्रभु को संन्यास-ग्रहण करने पर यह उपालंभ दे सकी :—

"भूले आश्रम-धर्म आज तुम,
काट गए हो स्वयं कुलद्रुम,
पर, है मेरा धर्म व्यर्थ
यदि तुम्हें स्वकर्म न साला ।
हरि-स्मरण भी कौन करेगा,
यदि अपुत्र ही लोक मरेगा,
नाथ, साधु हो तुम तो,
मैं भी हूँ साध्वी कुलबाला ।[१०]

कवि ने निवृत्ति और प्रवृत्ति के विरोध को प्रकट करके सामान्य मानव-धर्म की व्यंजना की है। प्रजनन के अभाव में सामाजिक स्तर पर मानवता का विकास नहीं हो सकता, यह कवि का अभिप्रेत है।

गुप्तजी ने जिस मानवता के सिद्धांत को प्रतिपादित किया, वह अनुभूत दर्शन है, उसका उपदेश बुद्ध और ईसा ने दिया है। महाभारतकार ने उसका आख्यान किया है और वैष्णवोपासना के

---

१. गुरुकुल, उपोद्घात, पृ. ३१। २. हिंदी काव्य पर आंग्ल प्रभाव, डा. रवींद्रसहाय, पृ. १०८।

३. आधुनिक काव्य-धारा का सांस्कृतिक स्त्रोत, डा. के. ना. शुक्ल, पृ. १६१।

४. भारतीय संस्कृति, साने गुरुजी, पृ. १९५।

5. "God is here before you in various forms, he who loves his creatures loves God."
—Swami Vivekanand, The Cultural Heritage of India, Volume IV, Page 718.

६. रवींद्रनाथ ने शोषित, पीड़ित और समाज की मानवता को ईश्वर का प्रतिरूप मान—गीतांजलि, ११।

७. आधुनिक भारत, आचार्य जावड़ेकर, पृ. ३८४।

8. Humanism, Encyclopaedia of Religion and Ethics, Volume 6, Page 831

9. Ibid, Page 831.

१०. 'आजकल' मुख-पृष्ठ, जुलाई १९५७।

विकास में उसका प्रसार हुआ है। महात्मा गाँधी ने उसे लोक-हितवाद की व्यापक भूमि पर अधिष्ठित किया और सर्वोदयवाद प्रवर्तित हुआ। स्वामी विवेकानंद, गुरुदेव रवींद्रनाथ और हिंदी के छायावादी कवियों ने इस व्यावहारिक दर्शन का तात्विक रूप ग्रहण किया और उसे आध्यात्मिक भाव-सत्ता से अन्वित कर दिया, यथा :—

'विश्व की दुर्बलता बल बने,
पराजय का बढ़ता व्यापार,
हँसाता रहे उसे सविलास
शक्ति का क्रीड़ामय संचार ।
शक्ति के विद्युत्कण, जो व्यस्त,
विकल बिखेरे हैं, हो निरुपाय,
समन्वय उसका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाय ।[१]'

गुप्तजी के मानवतावाद का भिन्न स्वरूप है। वह मानवतावाद के साथ लोकहितवाद की भावना को भी समन्वित करते हैं। पाश्चात्य दृष्टि में मानवता की हित-चिंता वस्तुतः धर्म का तत्त्व नहीं है, नैतिक गुण है। यह परहित-साधन के सिद्धांतों का विधिवत् तथा परिणाम-दर्शी अनुशीलन है, जो यह स्पष्ट करता है कि करुणा में नैतिकता का अधिष्ठान न भी हो, पर, यह उसका अंतर्भूत तत्त्व अवश्य है।[2] बाइबिल के पुरातन नियम में दया का विधान, लेवीटीकस १९, ईसा का प्रवचन और 'धम्मपद' में बुद्ध का धर्मोपदेश और करुणा का माहात्म्य-कथन मानवतावादी हित-चिंतन ही हैं। गुप्तजी के उत्कर्षकालिक काव्य में मानवतावाद का व्यावहारिक आदर्श व्यंजित हुआ है और परिपक्व-काल में विशेषतः उसका लोकहितवादी पक्ष। प्रौढ़ोत्तर-काल में वह सर्वोदय-वाद के रूप में विकसित हुआ और मानवतावाद के दार्शनिक आधार का आख्यान किया गया। आधुनिक साहित्य के अंतर्गत मानवतावाद का तात्त्विक रूप छायावादी काव्य में, सामाजिक रूप प्रेमचंदजी के उपन्यासों में तथा व्यावहारिक और लोक-हितपरक रूप गुप्तजी के काव्य में दिखाई पड़ता है। निश्चय ही मानवतावाद आदर्शवादी चिंतन-पद्धति है और उसका स्वरूप तथा प्रकार अनुभव-गम्य और स्वच्छंद दर्शन होने के कारण न रूढ़ है, न जड़। उसमें जीवन का स्पंदन है और व्यष्टि-समष्टि का एकीकरण।

आधुनिक युग में पराधिकारवाद (Pragmatism) का मानवतावाद के साथ यूरोपीय दर्शन में संबंध स्थापित हुआ है, पर, गुप्तजी का मानवतावाद इस नवीन तत्त्व-ज्ञान से अस्पृष्ट है।

गुप्तजी मानवता के आदर्श को प्रकट करनेवाले कवि हैं। उन्होंने मानवतादर्श को ईश्वरत्व के समक्ष रखा है।[३] लोकहित और विश्व-प्रेम को उन्होंने व्यावहारिक सार्थकता देने का प्रयत्न किया है। पीड़ित मानवता ही में उन्हें ईश्वर का साक्षात्कार नहीं होता, पर, तप, त्याग तथा सेवा के द्वारा भी ईश्वरत्व की प्राप्ति संभव होती है। उनके मानवतावाद में भौतिक और मानसिक उत्कर्ष की चेष्टाएँ जीवनास्था के प्रकार-भेदों के रूप में सुप्रकट हैं। उनका काम्य सुख-भोग नहीं है, मानवता का अनवरत विकास है, उसकी अप्रतिहत गतिशीलता है।

इस मानवतादर्श की गुप्तजी के काव्य में पाँच प्रकार से अभिव्यक्त हुई :—

१. करुणा की अंतर्धारा के रूप में,

२. नारी-चरित्र की गौरव-व्यंजना के रूप में,

३. मानव के चारित्रिक उत्कर्ष के रूप में,

४. देवों की श्रेष्ठता के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में, जिसमें मानव के त्याग और पुरुषार्थ का जयगान है और देवों की भोग-वृत्ति और स्थितिशीलता का सीमानिर्देश।

तथा ५. वर्तमान पर आस्था और भविष्य के प्रति आशा तथा प्रयत्न में उत्साह और फल में संतोष रखनेवाली सात्त्विक जीवन-विधि के रूप में, जिसका लक्ष्य पूर्णत्व-प्राप्ति है, परम तत्त्व की उपलब्धि है।

गुप्तजी भारतीय संस्कृति के उद्गाता ही नहीं, उन्नायक भी हैं। पर, अपनी इस मानवतावादी विचारणा के कारण वह संस्कृति के एकदेशीय अथवा अतीत-कालीन युग के कथाकार ही नहीं हैं, बल्कि, वह उस अखंड मानव-संस्कृति के द्रष्टा हैं, जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, वैयक्तिक, जातीय अथवा वैचारिक सभी प्रकार की विषमताएँ अपसारित हो जाती हैं, जहाँ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से प्रेरित होकर समस्त कार्य निस्पृह वृत्ति से किए जाते हैं और जहाँ प्रेम और करुणा अथवा तप और त्याग का महत्त्व है, स्वार्थ अथवा परिग्रह का नहीं।[४] आशय यह है कि गुप्तजी के मानवता-वादी दर्शन ने उन्हें मानव-संस्कृति का अथवा लोक-संग्रही प्रवृत्ति का कवि बनाया है। कहना न होगा कि यह भारतीय संस्कृति को सार्वभौम बनाने का उपक्रम है,[५] जो कवि के वैचारिक क्षेत्र का विस्तार और व्यक्तित्व का विकास प्रकट करता है, यथा :—

१. "आर्य-भूमि अंत में रहेगी आर्य-भूमि ही,
आकर मिलेंगी यहीं संस्कृतियाँ सबकी,
होगा एक विश्वतीर्थ भारत ही भूमि का ।[६]"

२. 'मैं' तो एक शक्ति हूँ,
मुझसे सृष्टि करो वा नाश करो,
राजस-तामस बहुत हुआ,
अब, सब जिन सत्त्व-विकास करो ।
उतनी ही लघु-गुरु वह व्यष्टि,
जितनी जिसके साथ समष्टि ।
लोक-विग्रह का नहीं,
संधि का नव पथ मैंने खोला[७] ।'

प्रथम उद्धरण में भारत का श्रेष्ठत्व भी प्रकट हुआ है, पर, द्वितीय उद्धरण में विश्व-मानवता को राष्ट्रीय सीमाओं में नहीं बाँधा गया।

---

[१] 'कामायनी,' श्रद्धा-सर्ग, अंतिम पद्य, पृ. ५९। य

[2] Humanitarianism, Encyclopaedia of Religion and Ethics, Volume 6, Page 836.

[३] 'नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया' साकेत, अष्टम सर्ग, पृ. १६७।

[४] "Service of Ones' fellows is a religious obligation. To repudiate is impiety,—The Hindu View of Life, Radhakrishnan, Page 116.

[५] "A just organization of society will be based on spiritual liberty, political equality and economic fraternity" —Ibid, Page 117.

[६] सिद्धराज, पृ. १३६।

[७] अणु, हस्तलिखित रचना, मार्ग शीर्ष २००२।

विशेष कहानी

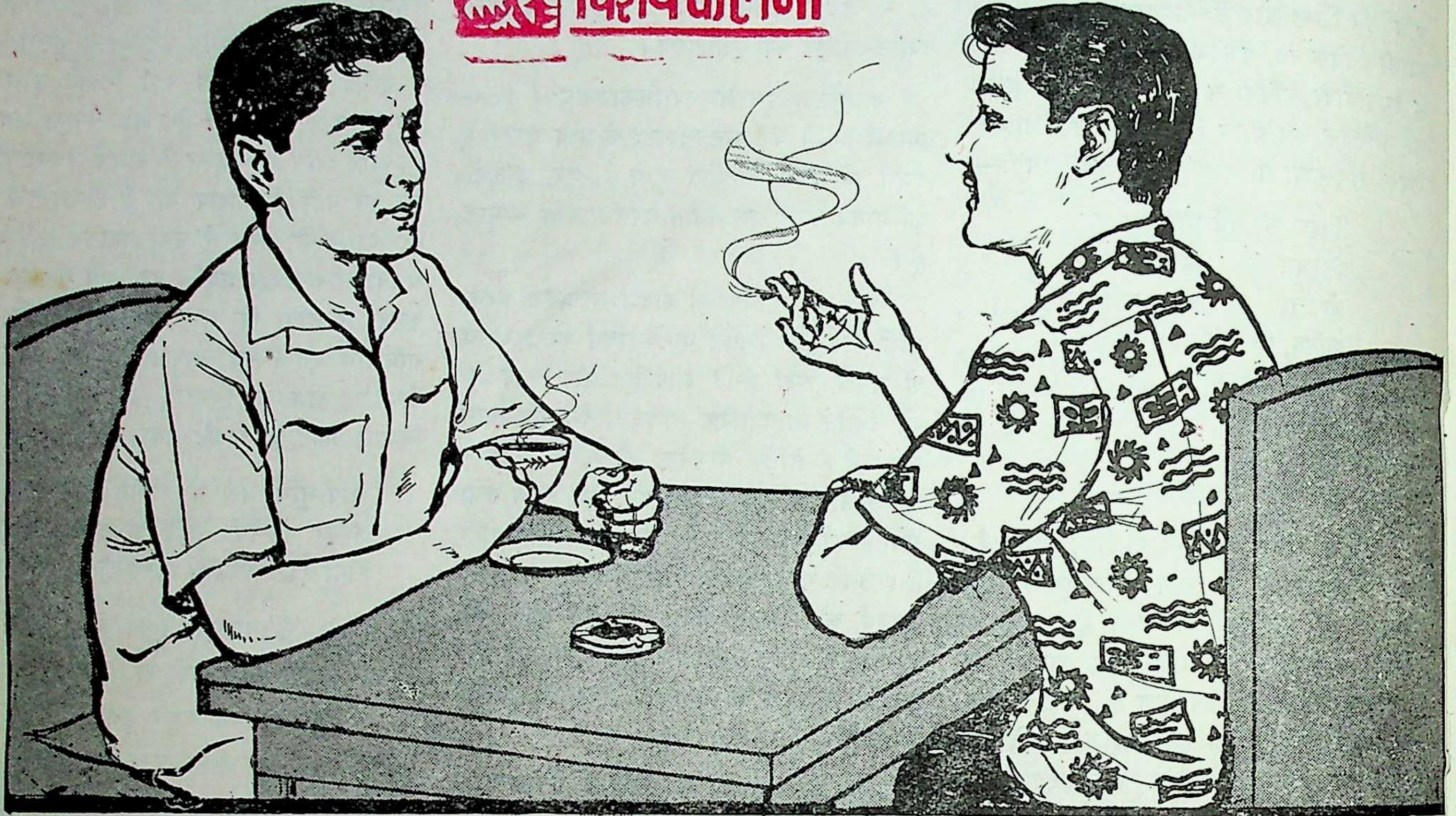

.... एक बदनाम आदमी

—श्री प्रकाश दीक्षित

बंबई में यों ताजमहल भी है, परशियन डेरी भी, एशिया भी, नाज भी और भी कई मशहूर होटल, साथ ही कुछ सिंधियों के लकड़ी के खोखों (पतले टुकड़ों) से बने हुए छोटे-छोटे चायघर भी, जहाँ, चाय के साथ-साथ, पसीने, मूंगफली के तेल के जलने या प्याज की बदबू, धुंआँ, उमस, घुटन सभी कुछ, ग्राहक के बिना चाहे, मिल जाती है।

लेकिन, गिरगाँव का 'काफे डि ईरान' बीच का रेस्तराँ है। वहाँ सस्ते सिंधी चायघरों की तरह एक आने की 'सिंगल' और दो आने की 'पेशल' चाय नहीं मिलती, और न ही बड़े होटलों की तरह साढ़े छह आने की ट्रे। छह पैसों में चाय का दो औंस वाला प्याला, गुजराती मुसलमान छोकरों की सलाम के साथ, यहाँ मयस्सर है और अगर पैसे काउन्टर पर न दिए जायं, तो ग्राहक को इस सलाम की कीमत कम-से-कम दो पैसे की 'टिप' से देनी पड़ती है।

जब तीसरे दर्जे के चाय पीने वाले अकेले होते हैं, तब दो पैसा ज्यादा खर्च करके अच्छी चाय पीने यहाँ आते हैं और जब पहले दर्जे के चायघरों में जानेवाले लोग दोस्तों के साथ होते हैं, तो दो पैसा प्रति कप खर्च बचाने के लिए यहाँ आते हैं। मतलब यह कि 'काफे डि ईरान' चलता है और खूब चलता है, भले ही इसमें चाय पीने वाले स्थायी-ग्राहक न हों। इसीलिए, इसका दुहरे बदन वाला ईरानी मालिक काउंटर पर 'बर्नियों' में 'केक-पैस्ट्री' भी रखता है और सेव-गाँठिया भी। ग्राहकों को अधिक सुविधा देने के दृष्टिकोण से उसने अपने पीछेवाली अलमारी में सिर-दर्द की दवाएँ भी रख छोड़ी हैं, खुशबूदार तेल भी और प्लेंास्टिक के कंघे भी। सुबह ताजी-जलेबियाँ भी यहाँ प्राप्य हैं, दोपहर में फलों के रस भी और शाम को एक गजरेवाली बिला नागा गजरे बेचने के लिए होटल के दरवाजे पर आ बैठती है।

इसी रेस्तराँ की एक शाम......।

मैं एक घंटा पहले ही बंबई उतरा था, अपने मेजबान के यहाँ जाने पर जब वह नहीं मिला, तब सामान उसके कमरे में पटककर सफरी-कपड़ों ही में अपनी थकावट का तकाजा पूरा करने के लिए एक गरमा-गरम काफी का प्याला पीने का इरादा लकर 'काफे डि ईरान' चला आया।

काफी की चुसकियाँ लेने में मैं इत्मीनान से समय गुजार रहा था। इससे दो फायदे थे, एक थकावट से राहत मिल रही थी और दूसरे इंतजार का समय मजे से कट रहा था।

'शेठ! एक काफी अपुन भी पिएगा।' एक व्यक्ति ने मेरे सामने कुर्सी पर बैठते हुए बेतकल्लुफी से कहा।

मैं उसे पहचान नहीं पाया, लेकिन, यह सोचकर कि कौन जाने कभी का कोई निकट-परिचित हो और तीन आने के लोभ में इसे इन्कार करके नाराज कर दूं और यह बुरा मान जाए, तो फिर, मैंने ऑर्डर दे दिया।

उस व्यक्ति ने जेब के किसी कोने से सिगरेट का एक अधबुझा टुकड़ा निकाला, लाइटर से जलाया और काफी के घूंटों में घोलकर पीने लगा।

एक खामोशी के दौर के बाद उसने सिर उठाया—'आपका नाम अरुण आरिया है न?'

'हाँ, अरुणकुमार आर्य।' मैंने कहा।

'अपने को डिकोस्ता बोलता है, मास्तर डिकोस्ता।' यह कहते हुए उसने जैसे मुझे नजरों ही नजरों में तौला—'अपना इधर पहिला मुलाकात है। मगर, हम तुमको तुम्हारे बारे में सब बताएगा। तुम्हारा नाम बताया, तुम लखनऊ का है, तुम्हारे जेब में एक नीला पाकिट है, जिसमें डेढ़ सौ रुपिया, सत्तावन नया पईसा है! एक छोकरी का तसवीर भी है।' और उसने एक कहकहा लगाया—'तुम्हारा 'स्वीट-हार्ट' होगा।'

'मास्टर डिकोस्टा! तुम मेरे......!' मैं आश्चर्य-चकित होकर बोला।

'अपने को आधा मोम्बई मानता है शेठ! पूना का बच्चा-बच्चा मास्तर डिकोस्ता के नाम पर सलाम मारता है।' वह बंबइया-हिंदी में शब्दों को चबाता हुआ कहता रहा—'अपना ये दो ऊँगली तुम देखता है, अपुन इनसे चुटकी बजाता है और 'इम्पोर्ट-सरविस' हाजरी देता है। साला आक्खी मोम्बई का दादा लोग अपुन को उस्ताद मानता है। एक-एक मोटा-शेठ अपुन की लिस्ट में दर्ज है। तुमारे को मिलवाए? तुम देखेगा सब झुककर दंड (दंडवत्) करता है। अपने को सारा घोटाला मालूम रहता है, उधर कोलाबा-साईड एक कतल हुआ था, एक शेठ ने रम्मी से करवाया था। रम्मी अपना जोड़ीदार था। हम बोला—'रम्मी शेठ अपुन खून से हाथ नहीं रँगेगा। एक दूसरा शेठ है, फिल्मों का 'फिनान्सर' है, चोरी से शराब बेचता है, जुए के अड्डे चलाता है। अपुन सब वाक्फियत रखता है। मगर....।'

उसने काफी का एक घूंट 'सिप' किया और दूसरे में प्याला खाली कर दिया।

'लेकिन, मेरी जेब के विषय में तुम्हें कैसे मालूम हुआ डिकोस्टा!' मेरा आश्चर्य अपनी जगह पर कायम था।

'देखो मिस्टर, अपने को डिकोस्ता सुनना अच्छा नहीं लगता, मास्तर डिकोस्ता बोलो या फिर सिरफ मास्तर। समझा?' उसने एक ठहाका फिर बुलंद किया—'तुम बाबू लोग कितना भी पढ़ा-लिखा, इलमदार हो, लेकिन, अपना मुकाबला नहीं, इस लाइन में 'एक्सपीरिएन्स' माँगता है।' उसने सामने की सड़क पर इंगित किया—'कितना मानुष होगा इधर?'

मैंने मनुष्यों से भरी-पूरी विठ्ठलभाई रोड को गौर से देखा। उत्तर दिया—'यही कोई सात-आठ सौ, जहाँ तक मैं देख सकता हूं।'

डिकोस्टा टेबिल पर हाथ मारता हुआ बोला—'अब कोई ऐसा आदमी बताओ, जिसकी जेब का कमेन्ट्री हम तुम्हें देगा।'

कुछ दूरी पर मेरा मेजबान विमल आता हुआ दिखाई दिया। मैंने डिकोस्टा से कहा—'हाँ मास्टर, वह आदमी, नीली मनीला और सफेद गेबरडीन के पैन्ट वाला।'

'तुम भी, शेठ, किस फुक्कड़ को बोलता। अरे ये जितना लोग एक्टर के माफिक अकड़-अकड़ कर चलता है, इनका पैसे से क्या ताल्लुक, खैर, तुम बोलता तो ठीक है, एक सिगरेट का शर्त होगा, नहीं तो हम काफी पिलाएगा।'

मेरे स्वीकार करने पर वह अपनी जगह से, अभी आने को कहकर, उठा और लापरवाही से काउन्टर की ओर देखता हुआ चल दिया। मुझे डिकोस्टा में कुछ दिलचस्पी जरूर पैदा हो गई थी, लेकिन उस व्यक्ति पर विश्वास कितना किया जाय, यह सोचता हुआ मैं मेजबान की राह देखने लगा, जो मेरी तलाश में 'काफे डि ईरान' की तरफ ही आ रहा था। इतने में किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा, घूमकर देखने पर मालूम हुआ कि यह बंबई-पुलिस का उस जमाने का एक सिपाही था।

'मिस्टर तुम डिकोस्टा के दोस्त हो?' उसने पूछा।

मैंने, बगैर विचलित हुए, उत्तर दिया—'अगर आपसे इस पहली मुलाकात को दोस्ती मान लिया जाय, तो आपका भी हूं।'

शायद पुलिस का वह अक्खड़, कम पढ़ा-लिखा सिपाही मेरी बात समझ नहीं पाया। बोला—'कब से जानते हो? क्या रिश्ता है तुम्हारा?'

नया-आदमी था। वैसे भी मैं पचड़े में पड़ने का आदी हूं नहीं, मैंने बात न बढ़े इसलिए कहा—'आप कुछ गलतफहमी में हैं, डिकोस्टा से मेरे परिचय की उम्र केवल एक घंटा है। उसने मुझसे एक काफी चाही, इन्सानियत के नाते मैंने पिला दी, मैं नहीं जानता कि यह है कौन, इसका पेशा क्या है?'

'परदेसी हो इससे छोड़ रहा हूँ। लेकिन नाम, पता, ठिकाना बताओ। बंबई क्यों आए हो, कब तक रहोगे?' मैं उचित उत्तर देता गया, इतने में डिकोस्टा दरवाजे पर दिखाई दिया। सिपाही सब-कुछ लिखकर डिकोस्टा की तरफ आग्नेय-दृष्टि डालता हुआ चला गया।

डिकोस्टा मेरे पास आया, बोला—'शेठ! एक 'चार' मीनार मँगवा लो, शर्त अपुन मारी है, मैं अभी आया।'

मुश्किल से दो मिनिट में डिकोस्टा लौटा। उसके हाथ में वही लाल डायरी थी, जिसमें पुलिसवाला मेरे संबंध में सब-कुछ लिख ले गया था।

"नाम अरुण कुमार आरिया, पता गोल इमारत, चौक लखनऊ, पेशा अखबार नवीसी, बंबई का पता माधो बिल्डिग, आठवीं गली खेतवाड़ी, दूसरा माला, रूम सी-फोर। तफरीह के लिए आया। विमलकुमार चौधरी के यहाँ ठहरा। एक महीना रुकेगा। 'काफे डि ईरान' में डिकोस्टा के साथ देखा गया।" डिकोस्टा ने डायरी का एक पष्ठ पढ़ा।

'मास्टर यह तुमने बुरा किया।' मैंने कहा।

'क्यों?'

'इसलिए कि पुलिस का काम बहुत बड़े उत्तरदायित्व, यानी रेस्पान्सिबिलिटी का होता है। हमें उसमें बाधा नहीं डालना चाहिए।'

वह अपनी टोपी माथे पर सरकाता हुआ बोला—'और आदमी का काम दोस्त की हिफाजत करना होता है। मिस्टर आरिया! तुम हमारा फ्रेंड है, कल वो तुमारे पास आता और तुम्हें परेशान करता, फिर मास्टर को तुम किधर तलाश करता? बोलो?' वह अपने ओंठों को गोलाई में फैलाकर आगे झुक आया, कुछ रुक कर बोला—'हाँ अरुण शेठ! अपना 'चार मीनार'

मँगाओ, तुमने जो आदमी बताया था, उसकी जेब में फकत उन्नीस नए पैसे, एक कंघा, एक डेट-डायरी और एक 'पेईंग गेस्ट' के गानों की चौपती है। दूसरी जेब में एक 'माउथ आरगन' था। पीछे का पाकिट खाली है।'

विमल होटल के दरवाजे से चीखा–'अरुण तू!'

हम आस-पास बैठे हुए व्यक्तियों और शष्टता की परवाह किए बिना ही आपस में गुंथ गए, सबसे पहले आपसी स्नेह और बेतकल्लुफी जताने वाली गालियों का आदान-प्रदान हुआ, फिर घूँसों-चपतों का और जब जोश कुछ ठंढा पड़ा, एक दूसरे को सहारा दिए हुए अपनी टेबिल पर आ बैठे।

डिकोस्टा न 'कप' माथे पर और झुका ली।

'अच्छा विमल तलाशी तो देना रे अपनी जेबों की।' मैंने बैठते ही कहा। डिकोस्टा ओंठों में हँसा।

विमल ने निराशा से चेहरा हिलाया––'अपन तो, प्यारे, पुराने मुफलिसों में हैं। कॉलेज में तेरे पैसों से ऐश करते रहे, अब भी दोस्तों के आपसी चंदे पर जिंदा हैं। लेकिन, तेरी मरजी।' और उसने जेबें खाली करदीं–उन्नीस नए पैसों के सिक्के, कंघा, डायरी, 'पेईंग गेस्ट' के गानों की किताब। और वह थोड़ा-सा घबराया। तभी डिकोस्टा ने 'माउथ आरगन' ओंठों पर लगाया।

डिकोस्टा बोला––'आरिया, अपुन को ये बाजा जरा पसंद आ गया, लेकिन, दोस्तों के माल पर क्या नीयत बिगाड़ी जाय! लो विमल बाबू!'

विमल भौंचक होकर हम दोनों को देख रहा था। डिकोस्टा गंभीरता से उठा––'अच्छा शेठ, बाई। अपुन का धंधा खोटा होता है, एक पैसा निकालो, अपन शर्त जीता है।'

मैं इकन्नी देता हुआ बोला––'मास्टर, आज 'चार मीनार' नहीं, 'रेड एण्ड ह्वाइट' पियो! ओ के, बाई।'

मैं एक दिन अकेला ही चौपाटी पर घूम रहा था। एक आवाज आई–'आरिया! मिस्टर आरिया।' देखा––मेरा घंटे भर का काफी का दोस्त डिकोस्टा रेत के एक टीले का उपयोग तकिए की तरह करके लेटा हुआ मुझे ही आवाज दे रहा था। मैं अंदर ही अंदर परेशान, लेकिन, ऊपर से प्रसन्न, उसके पास पहुँचा।

'कहो शेठ? क्या नक्शे हैं?' डिकोस्टा उठता हुआ बोला।

'मेहरबानी है मास्टर, तुम कैसे हो?'

'मेहरबानी तो नीली-छतरीवाले की बोलो शेठ! अपुन भी अच्छा है, बुरा कभी रहता ही नहीं। आओ बैठो।' उसने एक चंपीवाले को आवाज दी––'अपना शेठ लखनऊ से आएला है। इसका चंपी मार दे।'

'नहीं भाई मस्टर, मुझे इसकी आदत नहीं,' मैंने प्रतिवाद किया।

उसने ठहाका लगाया––'मिस्टर, तभी पोस्टर ब्रान्ड हो।' नया-प्रयोग सुन कर बगैर समझे मुझे हँसी आगई। उसने रेत में से अपनी कैप उठाई। बरसाती-सैण्डलों को झटकार कर उनकी रेत झड़ाई। बोला––'आओ, भेलपुड़ी हो जाए।'

'नहीं भाई!' कुछ देर इधर-उधर की बातें हुईं। डिकोस्टा उठते हुए बोला––'अच्छा क्वालिटी में आइसक्रीम खाएँगे।'

'नहीं, मास्टर, मैं आइसक्रीम नहीं खाता।'

'फिर नाज में समोसे चलेंगे।'

'उहू।' मैंने इन्कार कर दिया।

उसने मेरा चेहरा पढ़ लिया––'शेठ! डिकोस्टा जबकतरा जरूर है, मगर, दोस्ती निभाना जानता है। तुम काहे को घबराता है, हम खिलाएगा तुम्हें।'

'नहीं मास्टर, कुछ मूड नहीं है।'

वह मुझे खींचता हुआ बोला––'क्या बात करता है, खाना-पीना भी मूड से होता है रे? आओ! अपुन जय-भारत में काफी पिएगा।'

मैंने उठते हुए कहा––'मास्टर, तुम्हारी जेब में जो पैसे हैं, शायद किसी बच्चे की फीस के लिए हों।'

'नहीं अरुण, अपुन अकेला ही है।'

'शायद किसी व्यक्ति की माँ की दवा के लिए हों।'

'ओ अपना माँ-वाँ कोई नहीं है। तुम बेकार की बात क्यों करता है।'

'डिकोस्टा, मुझे मेहनत ही की कमाई पचती है, भाई प्यारे।' मैं बहुत गंभीर था। डिकोस्टा न अपन को 'मास्टर' न कहे जाने पर इस बार कोई आपत्ति नहीं की। वह करीब-करीब गिरता हुअ मेरे पास बैठ गया––'अरुण, तूने छुरा मारा है मेरे सीने पर! काश, तू मेरा दोस्त न होता! खून पी जाता तेरा तेरी इतनी-सी बात पर, समझा!' उसकी दृष्टि शून्य-क्षितिज में जाकर अटक गई।

थोड़ी देर तक वातावरण में शोर काँपता रहा, लहरों का, खोन्चे वालों का, आने-जाने वालों का, अँग्रेजी, हिंदी, मराठी गुजराती, सिंधी, सारी भाषाओं से मिलकर बना हुआ एक ऐसा शोर, जिसकी अपनी कोई भाषा नहीं थी।

'अपने को एक दिन मारिया भी यही बोला था।' उसके शब्द मुझे कहीं दूरस्थ-स्थान से आते-से लगे––'मारिया हमारे 'अन्कल' का लड़की था, हम दोनों ने शादी का फैसला किया था। मैं उसको हमेशा खुश रखना चाहता था अरुण! मुझे सूत-मिल से डेढ़ सो रुपिया पगार मिलता था, लेकिन, इतने में तो हमारा चाय-पानी हो पाता था। मारिया बड़ा खूबसूरत छोकरी था, अपुन गाता अच्छा था, हमने सोचा मोम्बई आकर फिल्मों में काम करें। हम दोनों भागकर इधर आया, मेरी सरविस छूट गया, थोड़ा बहुत रुपिया था, खरच हो गया। मैं तो सात रोज भी फाके कर सकता हूँ, लेकिन, मारिया को कैसे भूखा रखता। बड़ी मुश्किल से मारिया को धन्नाशाह पिक्चर्स की 'रैन-बसेरा' फिल्म में 'चान्स' देने का वादा डाइरेक्टर बरतरिया ने किया। 'स्क्रीन-टैस्ट' के लिए जाने को मरिया के पास कोई कपड़ा ही नहीं था। मेरे सामने उसकी जिंदगी के सुनहरे 'चान्स' का सवाल था। मोम्बई में अपुन को कौन जानता? इसी फिकर में हम फोर्ट में घूम रहा था, एक मोटा सेठ एक सुनसान गली में अकेला आता मिला, हम जरा-सा उसका गर्दन दबाया और फौरन् उससे तीन-सौ रुपिया वसूल कर लिया।'

डिकोस्टा की पीठ मेरी ओर थी। उसके हाथों के उतार-चढ़ाव से मने महसूस किया कि शायद उसने आँसू पोंछे हैं।

'लेकिन, हम मारिया को सच्चा-प्यार करता था, हमने उसे सब-कुछ बता दिया। उसी दिन मारिया हमें छोड़कर अंकल के पास चला गया। जाते वक्त वो बोला––'डिकोस्टा, हम तुमको तब प्यार करता था, जब तुम मेहनत करता था, अब भी हम तुम्हारा उस दिन होगा, जब तुम फिर मेहनत करेगा।' वह मेरी तरफ घूमकर बोला–'तुम

बताओ अरुण शेठ ! यह क्या एक तरह की मेहनत नहीं है ? पुलिस चारों तरफ से घेरे रहता है। हम अगर सौ रुपिए का पाकिट मारता है, तो बीस रुस्तम को देना पड़ता है, जो वख्त-बेवख्त के लिए हमारा जमानतदार है। फिर जोखम कितना है इस काम में। हर एक तो नहीं कर सकता। हिम्मत बोलता इसे। और हम कसम खाता है कि मामूली जरूरत से ज्यादा के लायक कभी नहीं रखता अपने पास !'

'मास्टर......।'

वह मेरी बात सुने बगैर कहता रहा––'हम उस दिन तुम्हारा पाकीट मारा। हमको उसमें वह छोकरी का तसवीर मिला। तुम्हारी बीबी होगा, या फिर तुम उससे प्यार करता होगा ? हमने पाकीट वापस रख दिया, इसलिए कि कौन जाने तुम्हारा वो रुपिया उसकी किसी जरूरत में खरच होनेवाला हो। हम वैसे भी बस सिर्फ उनका ही पाकीट मारता है, जो जिंदगी में किसी इन्सान से मुहब्बत नहीं करता, खाली पैसे से करता है।'

'लेकिन, मास्टर यह गुनाह है समाज की नजरों में।' मैंने कहा।

'होगा, अपुन नहीं मानता। अपन कोई 'कन्फेशन' नहीं करेगा ! हम जो किया, अपनी मुहब्बत के लिए किया, और मुहब्बत सबसे बड़ा खुदा है। हमारा-तुम्हारा दोस्ती अब खतम, हमको दोस्त माँगता, पादरी नहीं। अपुन तो एक बदनाम आदमी है, समझा, तुम्हारी दोस्ती के काबिल नहीं हूँ।'

उसने मेरी तरफ से मुंह फेर लिया, उसका गला भर्रा रहा था।

पिछले महीने इन्दौर जाना पड़ा। सारा काम दिनभर म निबटा कर 'मुझे रात की गाड़ी से लौटना था। होटल आकर अगर सो जाता, तो शायद, गाड़ी नहीं मिलती, इसलिए, मैंने समय सिनेमा में काटना तय किया। टिकिटघर से जब मैं टिकिट ले रहा था, किसी ने मेरे कंधे थपथपाए। मैंने घूमकर देखा, एक पुरुष था, एक महिला और महिला की गोद में एक नन्हा, प्यारा-सा बच्चा।

'अरे तुम पहिचाना नहीं अपुन को।' पुरुष चिल्लाया।

आकृति जहाँ हार गई, आवाज वहीं जीती। शब्दों ने परिचय दिया, मैंने अनिश्चय से कहा––'मास्टर ?'

'नहीं अरुण शेठ ! अपुन अब डिकोस्टा है, अपनी मारिया है ये। ईशू की महरबानी है। अब हम जेब नहीं काटता। बीमार पड़ गया था, कोई साला दादा पास नहीं फटका। अपनी मारिया को खबर मिला, इसने हमें बचा लिया। हम दोनों एक-दूसरे को सच्चा प्यार करता था। उसी सच्चा प्यार ने अपुन का जिंदगी बदल दिया। इधर हम मील में मजदूरी करता है, मारिया हॉस्पिटल में नर्स है। हम आज तुमको पिक्चर दिखाएगा, अपने मेहनत के पैसों से।' वह एक साँस में सब कुछ तेजी के साथ कह गया। एकाएक उसका बच्चा रोया। डिकोस्टा खुशी से चिल्लाया––'अरुण शेठ ! ये ये...ये मारिया का बच्चा है।'

'क्यों तुम्हारा क्यों नहीं ?' मैंने मजाक में कहा।

डिकोस्टा खुले दिल से हँसा। फिर, विश्वास के साथ बोला––'नहीं शेठ, सब ईशू-मसीह का है। बेबी, अरुण अंकल को सलाम करो।'

मारिया ने बेबी की नन्ही-नन्ही गुलाबी अँगुलियाँ उसके छोटे-से मगर चमकते-माथे पर लगा दीं।

भारतीय भाषाओं में उच्चारण साम्य

—डॉ० विश्वनाथप्रसाद

इस विशाल भारतभूमि में उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम की ओर यात्रा करते हुए आपको अनेक भाषाएँ और बोलियाँ सुनने को मिलेंगी। किन्तु, आपको यह निर्णय करना कठिन होगा कि कौन भाषा या बोली कहाँ शुरू हुई और कहाँ जाकर समाप्त हुई। भाषाओं का भी एक-दूसरे पर इतना प्रभाव है कि उनके बीच में विभाजन-रेखा खींचना प्रायः असम्भव है। भाषाओं के इस मेल-जोल को देखकर बरबस यही कहना पड़ता है कि हमारे देश की मूल संस्कृति एक है। भाषाओं का यह परस्पर लेन-देन आज का नहीं, उतना ही प्राचीन है, जितना ऋग्वेद। वर्ण और जातियाँ, विवाह संबंधों, देशभर में फैले हुए असंख्य तीर्थ-स्थानों और देवालयों, निरन्तर भ्रमणशील साधु-संतों और उनके उपदेशों, विभिन्न मत-मतांतरों और राजनीतिक हलचलों के कारण हमारे देश में कोई भी धारा किसी सीमा से बँधी न रह सकी, वरन् हिमालय से लेकर हिंद महासागर तक देश में चारों ओर फैली। यही कारण है कि हमें देश की विविध भाषाओं और बोलियों में अनेक बातों में अद्भुत साम्य देखने को मिलता है।

असाधारण परिवर्तनशील वस्तु

वाणी का सबसे अधिक परिवर्तनशील अंग है उच्चारण। हर व्यक्ति और क्षेत्र का उच्चारण अलग-अलग होता है।

'भारतीय भाषाओं में समानता' विषय पर डा० विश्वनाथप्रसाद ने दिल्ली केन्द्र से बोलते हुए बताया कि संस्कृत, द्रविड़ और आस्ट्रिक भाषा परिवारों की हमारी भाषाओं में भी उच्चारण की कितनी समानता है। उनके भाषण का सारांश यहाँ प्रस्तुत किया जारहा है।

––संपादक

भारतीय भाषाओं में एक और बड़ी समानता यह है कि वेदों की भाषा में इन हजारों वर्षों में जो शनैः-शनैः परिवर्तन आये, वे भी सब भाषाओं और बोलियों में परिलक्षित होते हैं और जिस उच्चारण विशेषता वाला जो समुदाय जहाँ-जहाँ फैलता गया, वहाँ-वहाँ ये विशेषताएँ भी उनके साथ गईं। फिर भी, प्रवृत्ति संस्कृत के समान और शुद्ध उच्चारण की ही रही। हर क्षेत्र, प्रदेश, जाति, वर्ण, श्रेणी का यही प्रयत्न रहा कि उसका उच्चारण यथासंभव शुद्ध या स्टेंडर्ड रहे। हर भारतीय भाषा की यही प्रवृत्ति रही—तमिल में भी। इसी प्रवृत्ति के कारण उच्चारण में काफी एकरूपता रही है।

ठीक उच्चारण पर आग्रह

ईसा से सदियों पहले हमारे देश में वैदिक मंत्रों के शुद्ध पाठ या उच्चारण पर बहुत जोर

दिया गया, अन्यथा अर्थ का अनर्थ होने का डर था। 'इंद्र शत्रु' के गलत उच्चारण के कारण असुरों को इन्द्र को मारने वाले के बजाय इन्द्र से मारा जाने वाला योद्धा मिल गया। शिक्षाओं और प्रतिशाख्यों का एकमात्र उद्देश्य उच्चारण का अनुशासन करना था। उच्चारण के इस कठोर बंधन का परिणाम यह हुआ कि प्रादेशिक और क्षेत्रीय बोलियाँ भी एक-दूसरे से अधिक दूर नहीं जा पाई। यहाँ तक कि वैयाकरणों ने समस्त प्राकृतों के लिए एक 'महाराष्ट्री प्राकृत' को ही आदर्श बनाकर व्याकरण लिखा और उसी में 'शौरसेनी' आदि प्राकृतों के उच्चारण भेदों को अपवाद रूप में लिख कर 'शेष महाराष्ट्रीवत्' कह दिया। 'मागधी' प्राकृत के बारे में कहा गया है कि यह शौरसेनी प्राकृत से निकली है और उसीसे मिलती है। प्रसिद्ध प्राकृत' वैयाकरण हेमचन्द्र ने स्पष्ट कह दिया कि प्राकृत का श्रेष्ठ रूप वही है, जो संस्कृत से अधिक से अधिक मिलता हो।

द्रविड़ और आस्ट्रिक प्रभाव

भारत में आर्य, द्राविड़ और आस्ट्रिक तीनों परिवारों की सब भाषाओं में मूर्धन्य वर्ण "र", "ष" आदि समान रूप से पाये जाते हैं। इसे द्रविड़ प्रभाव कह सकते हैं। इसी प्रकार शब्द को दोहरा कर बोलना आस्ट्रिक के प्रभाव का सूचक है।

समान स्वर और व्यंजन

भारत की भाषाओं की ध्वनियाँ यानी स्वर और व्यंजन भी बहुत-कुछ एक-से हैं। उर्दू को छोड़कर उनकी लिपि और वर्णमाला एकसी ही है। फारसी-अरबी जन्य उर्दू वर्णमाला में भी बहुत-सी भारतीय ध्वनियाँ रख ली गई हैं। किसी भाषा की किसी ध्वनि-विशेष को दिखाने वाले कुछ विशेष वर्णों को छोड़कर सबकी वर्णमाला और वर्णक्रम भी एकसा है। तमिल में महाप्राण वर्ण नहीं होते। फिर भी, कहीं कम और कहीं अधिक जोर देकर काम चलाया जाता है। स्थान-भेद के कारण उच्चारण अलग हो, पर मूल ध्वनि एक है। जैसे पंजाबी कहेगा "केंदा है," हिन्दी भाषी इसी को "कहता है," और बंगाली "कोहिते छि" बोलेगा।

विशेष ध्वनियाँ

कुछ ध्वनियाँ ऐसी हैं, जिनका भिन्न-भिन्न भाषाओं या क्षेत्रों में भिन्न उच्चारण है। जैसे क्ष, जो क और मूर्धन्य ष से मिलकर बना है। हिन्दी, गुजराती और तेलुगु में इसका उच्चारण क्ष ही होता है, पर बंगला में "ख" की तरह। 'ज्ञान' का 'ज्ञ' हिन्दी, तेलुगु और कन्नड़ में ग्यं, गुजराती में ग्न्यं और मराठी में द्न्यं बोला जाता है। इसी प्रकार ऋ तेलुगु और कन्नड़ में व्यंजन 'र' पर जोर देकर, हिन्दी में 'इ' की ध्वनि के साथ, गुजराती में हल्के 'उ' के साथ और मराठी में मूर्धन्य वर्ण की तरह उच्चरित होता है। तमिल में ज्ञ और ऋ नहीं हैं। र और ल भी तमिल के लिए कठिन ध्वनियाँ हैं। इनके पहले वे 'इ' लगा लेते हैं। उदाहरणार्थ वे रामन को 'इरामन' और लक्ष्मण को 'इलम्खणम' बोलते हैं। तालव्य च, छ, और झ मराठी में च़, ज़ और झ़ की तरह बोले जाते हैं। इसी प्रकार कहीं-कहीं ऐ और औ को अई और अऊ की तरह बोला जाता है। बंगला में अ को औ की तरह मुंह गोल करके बोलते हैं। दक्षिण भारत की भाषाओं में मूर्धन्यता उत्तरी भारत की भाषाओं से अधिक है। सिंधी में द, ज और ग की ध्वनियों में सांस बाहर निकलने की बजाय अंदर जाता है। इस प्रकार एकही प्रकार की कुछ ध्वनियों के स्थान-भेद और बोलने की लय के कारण उच्चारण में कुछ अंतर हो जाता है, पर बाक़ी ध्वनियों का मुख्य उच्चारण वैसा ही रहता है।

उच्चारण की क्रिया

भारतीय भाषाओं में स्वराघात या स्वर पर जोर देने न-देने के बारे में विशेष खोज नहीं हुई है। फिर भी, कुछ उच्चारणों से ही इनकी समानता दिखाई जा सकती है। अंग्रेजी में शब्दों के पहले भाग पर जोर रहता है और आगे धीरे-धीरे कम होजाता है। भारतीय भाषाओं में उतार-चढ़ाव अधिक नहीं होता। एकदम तेज और एकदम मंद स्वर भारतीय भाषाओं में नहीं मिलते। भावावेश में स्वर ऊँचा-नीचा होता है, उसके अतिरिक्त अंग्रेजी की तरह 'एक्सेंट' या स्वाराघात नहीं होता।

पंजाबी के कुछ शब्दों को छोड़कर अन्य भाषाओं में स्वराघात के कारण शब्दों का अर्थ नहीं बदलता। किन्तु, प्रश्न, संबोधन या आश्चर्य आदि प्रकट करने में 'काकु' यानी शब्दों पर जोर देने से काम लिया जाता है। हिन्दी, गुजराती, तेलुगु आदि सभी भाषाओं में 'काकु' से काम लिया जाता है, उदाहरर्ण के लिए--

हिन्दी	
साधारण स्वर ..	वह आया है--
अंत के शब्द पर जोर	वह आया है क्या ?
गुजराती	
साधारण स्वर ..	ते आव्यो छे--
अंत के शब्दों पर जोर	ते आव्यो छे के ?
तेलुगु	वच्चिनाडू--
	वच्चिनाडा ?
कन्नड़	वन्दानू--
	वन्दाने ?
तमिल	आवान् वन्दान--
	आवान् वन्दौना ?

ये वाक्य आम तौर से इसी ढंग से बोले जा हैं और भारतीय भाषाओं के उच्चारण-साम् को दरसाते हैं।

हमारी भाषाओं की यह समानता सदियों आदान-प्रदान, सम्पर्क और भारतीय जीवन एकरूपता का परिणाम है। रेडियो, टेलीविज सिनेमा जैसे सार्वदेशिक संचार-साधनों औ आवागमन के बढ़ने के साथ भाषाओं में शब् और उच्चारण की समानता और बढ़ेगी।

एक संस्मरण

भंसालीजी के साथ तीस दिन

—श्री सत्यदेव विद्यालंकार

सन् १९४३ के शुरू के दिनों की बात है। बाबा भंसाली वर्धा की बजाजबाड़ी में चिमूर और आष्टी में सैनिकों द्वारा की गई ज्यादतियों के विरोध में लंबा अनशन कर रहे थे। समाचारपत्रों में उनके बारे में कोई भी समाचार छापने पर सरकार ने रोक लगाई हुई थी। कानोंकान भी उनके बारे में कोई समाचार मुश्किल से ही सुनने को मिलता था। स्वर्गीय श्री देवदास गांधी के सुझाव पर हम लोग वर्धा केवल इसलिए गए कि सरकारी अधिकारियों को यह मालूम होना चाहिए कि बजाजबाड़ी पर उनके द्वारा लोह-आवरण डाल दिए जाने पर भी, बाहर की दुनिया बाबा भंसाली को भूली नहीं है। हम लोग बिना किसी पूर्व सूचना के वर्धा स्टेशन पर उतर कर ताँगे से बजाजबाड़ी की ओर रवाना हुए। बजाजबाड़ी हम पहुंचे ही थे कि पुलिस-अधिकारियों ने हमारा ताँगा रोक दिया। तब हमें पता चला कि बजाजबाड़ी पर शहर के नर-नारियों के आने-जाने पर भी रोक लगा दी गई है और किसी को बजाजबाड़ी की सड़क पर से भी गुजरने नहीं दिया जाता। हमें दिल्ली से आया जानकर बजाजबाड़ी में जाने की अनमति दे दी गई। वहाँ स्वर्गीय सेठ जमनालालजी बजाज के परिवार और आश्रम के कुछ सदस्यों के अलावा किसी को आने-जाने नहीं दिया जाता था। परन्तु, बाबा भंसाली तो अपनी अनशन की तपस्या में पूरे विश्वास और दृढ़ता के साथ लीन थे।

अनशन के अंतिम तीस दिन हम लोग बराबर बजाजबाड़ी में बाबा के पास रहें। उनकी देह सूखती जारही थी। पेट पिचककर पीठ से लगता जा-रहा था और शरीर की एक-एक हड्डी गिनी जा सकती थी। काया को इस प्रकार काँटे की तरह सुखा देने पर भी चेहरे पर कुछ अनूठा-सा तेज दिन-प्रति-दिन बढ़ता जाता था। कपड़े से तन ढक देने पर केवल चेहरा देखनेवाला यह कल्पना ही नहीं कर सकता था कि शरीर सूखकर दधीचि की काया बनता जारहा है। आसपास बैठे लोग जब भजन-कीर्तन और प्रार्थना करते तब सचेष्ट होकर बाबा उसमें सम्मिलित होते और बातचीत करने में भी कुछ भार या थकान अनुभव नहीं करते। कमल-नयन भाई का जेलर का-सा कठोर अनुशासन एवं नियंत्रण यदि नहीं होता, तो संभवतः बाबा ने उतना भी आराम न किया होता। माता जानकी-बाई सबसे अधिक चिंतित रहती थीं। उनको बाबा क लिए बच्चों का-सा मोह और गुरुजन की-सी अपार भक्ति थी। वे अपने सहज और सरल स्वभाव में अपनी सीधी-सादी भाषा में अपने भाव व्यक्त करने में चूकती न थीं। सारे वातावरण में कुछ अजीब-सी चिन्ता व्याप्त रहती थी। परन्तु, कमल-नयन अपने विनोदी स्वभाव में मस्त रहते थे और वे बाबा के साथ भी प्रायः विनोद एवं व्यंग करते रहते थे।

वर्धा पहुंचने से पहले हम लोग भी चिमूर और आष्टी के संबंध में कुछ जानते न थे। वहाँ पहुंचकर वहाँ के अत्याचारों की कहानी सुनकर हम अवाक् रह गए। आष्टी वर्धा जिले की आर्वी तहसील में और चिमूर समीपवर्ती जिले चाँदा में एक गाँव है। सन् १९४२ की अगस्त क्रांति की लहरें सुदूर गांवों तक में जा पहुंची थीं। चिमूर में पुलिस थाने पर कब्जा करके जनता का राज्य कायम कर दिया गया था। इसमें कुछ पुलिस-अधिकारी मारे गए। इसका बदला वहाँ फौज भेजकर लिया गया। कालकोठरी की तरह गाँव के सारे पुरुषों को एक बाड़े में बंद कर दिया गया, घरों को बुरी तरह लूटा गया। कीमती सामान, वस्त्र और आभूषण सब उड़ा लिए गए, यहाँ तक कि खाने-पीने का सामान भी छोड़ा न गया। बड़ी निर्लज्जता के साथ स्त्रियों के सतीत्व का बलात् अपहरण किया गया। छोटे पैमाने पर यही कांड आष्टी में दोहराया गया। वर्धा में समाचार पहुंचने पर बाबा भंसाली ने स्वयं चिमूर जाकर परिस्थिति का अध्ययन करने का निश्चय किया और यह कहकर निराहार रहना शुरू कर दिया कि ऐसी दशा में जीने से मरना कहीं अधिक अच्छा है। अनशन की अवस्था में ही आप चिमूर के लिए चल दिए।

सेठजी के लक्ष्मीनारायण मंदिर से नगर-वासियों ने आपको विदा दी। तीन-चार मील तक काफी लोग साथ गए। बिना अन्न-जल ग्रहण किए बाबा अठारह मील तक जासके, वहाँ मूच्छित होकर गिर जाने पर पुलिस उठाकर लाई और सेवाग्राम छोड़ गई। चौदह दिन तक यही क्रम रहा। निराहार स्थिति में चिमूर की ओर प्रस्थान, दस-बारह-चौदह मील की यात्रा, मूर्च्छा और पुलिस द्वारा सेवाग्राम लाकर छोड़ दिया जाना। अंत में, शरीर ने जब जवाब दे दिया, तब बजाजबाड़ी में अनशन शरू कर दिया गया। समाचारपत्रों में उसकी कोई चर्चा नहीं हो सकती थी, कुछ पत्रों ने एक ज्योति का चित्र छापना शरू किया और यह निश्चय किया गया कि जिस दिन बाबा देह-त्याग करेंगे, उस दिन

गीत

लरज लरज जाती सकुचाती किरन अहीरन,
कनक घटक में शबनम मोती चुन-चुन भर लाई,
ओढ़ चुनरिया धानी धरती मुस्काई!

(१)

दीपक का हो गया सफल श्रम सूरज उगा दिया,
हर किसान ने स्वेद बहाया जीवन जगा दिया,
लहराती हैं सपनों-सी फसलें कतार बांधे—
माटी को सोने की काया का वरदान दिया!
गाँव-गाँव ने निर्माणों की गीता दुहराई,
ओढ़ चुनरिया धानी धरती मुस्काई!

(२)

प्राची का आँगन ऊषा रोली से पोत गई,
मुस्काती है गेहूं की गदराई पौध नई !
दूर कहीं जा छिपे आलसी से सियाह साए,
पगडंडी बल खाती, आगे-पीछे दौड़ रही!
गीले पनघट ने जीवन की महिमा समझाई!
ओढ़ चुनरिया धानी धरती मुस्काई !

(३)

माटी के पूतो! माटी की शपय तुम्हें है—
तम को पी जाने का केवल श्रेय उन्हें है!
जो बीजों के साथ-साथ बोते साक्षरता,
आनेवाली नई पौध का ध्यान जिन्हें है!
श्रम के साथ बहारों की रचना है ब्याह सगाई!
ओढ़ चुनरिया धानी धरती मुस्काई !

—श्री शंकर सक्सेना

उसकी सूचना उस ज्योति को छापना बंद करके दे दी जाएगी ।

अनशन को एक महीना पूरा हुआ । पाँचवें सप्ताह के बाद छठा और सातवाँ सप्ताह भी निकल गया । आठवाँ सप्ताह शुरू होने पर माता जानकी देवी और कमलनयन से न रहा गया । श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी को बंबई से बुलाकर मध्यस्थता करने को कहा गया । उन्होंने नागपुर में रहकर कई दिनों तक कई चक्कर नागपुर और वर्धा के बीच मोटर पर लगाये । किसी-किसी दिन उनको दो चक्कर भी लगाने पड़े । तिरसठवें दिन कुछ रास्ता निकल सका और जानकीबाई बजाज के हाथों संतरे एवं मौसम्मी का रस लेकर अनशन भंग किया गया । चिमूर और आष्टी से भी कितने ही स्त्री-पुरुष बाबा के दर्शनों के लिए बजाजवाड़ी पहुँचे । वर्धा का तो कहना ही क्या था ? सारा शहर बच्चे-बूढ़े और स्त्री-पुरुष दर्शनों के लिए उमड़ पड़े । भीड़ का कई दिनों तक तांता लगा रहा ।

भंसाली बाबा का यह पहला ही अनशन न था । महात्मा गाँधी ने अपने जीवन को प्रयोगशाला कहा था । सच यह है कि उनका सारा ही आश्रम मानव-जीवन की एक बड़ी प्रयोगशाला था । उसमें बाबा भंसाली जैसे कितने ही आश्रमवासी अपने जीवन के कुछ अद्भुत प्रयोग करने में लगे रहते थे । बाबा के ये प्रयोग अपने ही ढंग के बिलकुल अनूठे होते थे । महात्मा गाँधी उनको दाद दिया करते थे । महात्मा गाँधी के विविध अनशन इक्कीस दिन की सीमा तक ही सीमित रहे । परन्तु, बाबा ने साबरमती आश्रम में सत्रह, पच्चीस और इक्यावन दिनों के अनशन के सफल प्रयोग किए । आप अनशन के दिनों में सीमित मात्रा में केवल पानी लेते हैं, परन्तु, चिमूर की यात्रा के शुरू के चौदह दिनों में पानी भी न लेकर केवल कुल्ला किया करते थे । आपके लिए अनशन का अर्थ मृत्यु को निमंत्रित करना नहीं है, वह एक साधना और तपस्या है, जिसकी मर्यादा यह है कि सहज स्वभाव से जहाँ तक हो सके, वहाँ तक निभाया जाये और जनता का ध्यान उसमें पुण्योदय करके किसी विशेष विषय पर केंद्रित किया जाये । अन्याय के प्रति मानव-चेतना जागृत करना भी कुछ कम काम नहीं है ।

बाबा का सबसे अनूठा प्रयोग वह था, जब वर्धा में मगनवाड़ी में रहते हुए उन्होंने न बोलने का व्रत लेते हुए अपने दोनों ओठ तार से सिलवा लिए थे । वे उसके लिए जब सुनारों के पास गए तो कोई उसके लिए सहमत न हुआ । अंत में एक सुनार को यह कहकर तैयार कर लिया कि मौन रखने से जो मिथ्या भाषण नहीं किया जा सकेगा, उसका पुण्य उसको भी अवश्य प्राप्त होगा । बाद में वह दो-चार घरों से कुछ आटा माँग लाते और उसको पानी में घोलकर मुंह में किसी प्रकार डालकर पी जाते । उसके अलावा नीम के पत्ते चबाते रहते । स्वास्थ्य इतनी कठोरता सहन न कर सका और शरीर पर बड़े-बड़े फफोले निकलने शुरू हो गए । गाँधीजी ने अनुरोध करके उनके मुंह का तार खुलवाया और टाट के स्थान पर खादी की लंगोटी पहनने को विवश किया । फिर भी, बाबा के अपने प्रयोग चलते ही रहे । खाने-पीने और पहनने के बारे में अपनी देह के प्रति ऐसी उपराम वृत्ति कदाचित् ही कहीं और मिल सके । एक बार सस्ते से सस्ते भोजन पर रहने का निश्चय किया, तो बस केवल मूली एवं प्याज आदि पर ही निर्वाह करना शुरू कर दिया । आश्रम के बगीचे में जो सबसे सस्ती चीज होती उस पर सारा दिन पूरा कर लेते । एक बार लहसन अधिक पैदा हुआ, तो उसका ही आहार किया जाने लगा । उसकी गर्मी के कारण पेशाब में खून जाने लगा तो उसकी भी परवाह नहीं की । कुछ दिन गाय की खली और गोबर खाकर ही रहने लग गए, तब आश्रमवासियों ने उनके विरुद्ध सत्याग्रह करने का निश्चय करके उनको वह सब छोड़ने के लिए बाध्य किया । परन्तु, बाबा ने अपने प्रयोगों द्वारा अपने को न केवल जितेंद्रिय बना लिया, अपितु मृत्युंजय पद को भी प्राप्त कर लिया है । उनके लिए जीना और मरना जीवन-प्रवाह के दो किनारे हैं, जिसका कहीं अंत नहीं है । इसीलिए तो हंसते-हंसते वे जीवन को मत्यु की कसौटी पर कस डालते हैं । यही है वह अमर पद, जिसका बखान गीता सरीखे ग्रंथों में किया गया है ।

पिछले दिनों बाबा ने अपने जीवन की सबसे बड़ी बाजी लगाई थी । अणुबमों और उद्जन बमों के परीक्षणों से सारे विश्व में हाहाकार मच गया है । अपनी आसुरी लालसा और राक्षसी महत्वाकांक्षा में उन्नत शक्तिशाली राष्ट्र विश्व के इस हाहाकार की अवहेलना करने में लगे हैं । उनकी इस आसुरी वृत्ति के विरुद्ध बाबा भंसाली ने ६६ दिन का अनशन शुरू किया था । यह साधना और तपस्या उस हृदय की थी, जिसका विश्वास दुनिया को पलटने की सामर्थ्य रखता है । नागपुर के समीप अपने टांकली आश्रम में मानव-सेवारत बाबा ने व्यापक पैमाने पर मानव-सेवा का बीड़ा उठाया और अपना सर्वस्व उस पर अर्पित कर देने का संकल्प कर लिया था । हमारा यह विश्वास है कि सद्भावना से की गई साधना एवं तपस्या कभी भी व्यर्थ नहीं जा सकती । "न हि कल्याणकृत कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति" इस सिद्धांत पर विश्वास, आस्था एवं निष्ठा रखनेवाले यह मान ही नहीं सकते कि मानव-कल्याण की भावना से की गई कोई भी तपस्या व्यर्थ जायगी ।

मध्यप्रदेश में राजगीरे की फसल का प्रथम पूर्वानुमान

सन् १९५७-५८ में मध्यप्रदेश में राजगीरे की फसल के प्रथम पूर्वानुमान के अनुसार इस साल राज्य में राजगीरा की फसल का अनुमानित क्षेत्र १३,७८९ एकड़ है. जोकि गत वर्ष के १२,६६१ एकड़ क्षेत्र से ८.९ प्रतिशत अधिक है । बोनी के क्षेत्र में वृद्धि का कारण मौसम का अनुकूल होना है ।

समूचे राज्य में १ सितम्बर से २५ अक्टूबर के बीच सामान्य समय पर बोनी शुरू हो गई थी । बोनी अनुकूल मौसम में हुई और अंकुल सफल हुआ ।

उज्जैन जिले में ४ हजार पशुओं को टीके लगाए गए

उज्जैन मंडल के पशु चिकित्सा निरीक्षक कार्यालय द्वारा, जिले में माता की बीमारी का उन्मूलन करने के हेतु २६ जनवरी से एक योजना प्रारम्भ की गई है । यह योजना तराना तहसील में प्रारम्भ हुई और पशु-चिकित्सा विभाग का यूनिट प्रत्येक ग्राम में प्रत्येक घर जाकर पशुओं को टीके लगा रहा है । मई के अन्त तक इस योजना के अन्तर्गत ४ हजार मवेशियों को माता के टीके लगाये गये हैं ।

कलेक्टर महोदय, मंडल उज्जैन के आदेश से इस कार्य में गति लाकर उसे सफल बनाने के उद्देश्य से एक २२ सदस्यीय समिति का निर्माण किया गया है, जिसमें जिले के डिप्टी क्लेक्टर्स, डिप्टी सुपरिन्टेन्डेंट पुलिस, समस्त तहसीलदार, जिला प्रचार अधिकारी, विधान सभा के सदस्य, मंडल सरपंच तथा केन्द्र-पंचायतों के सरपंच सम्मिलित हैं ।

पशु-चिकित्सा विभाग की ओर से समस्त जिले में यह कार्य तीन वर्ष में पूर्ण किया जावेगा ।

राज्यपाल-सहायता-निधि

मध्यप्रदेश के राज्यपाल श्री हरिविनायक पाटसकर द्वारा जारी की गई अपील पर राज्यपाल-सहायता-निधि के लिए दान-दाताओं द्वारा निम्नानुसार धनराशि प्रेषित की गई है:—

		रुपये. न.पै.
१.	राज्यपाल मध्यप्रदेश	१,००१.००
२.	हिजहाइनेस महाराजा तुकोजीराव होल्कर, इन्दौर	१,०००.००
३.	संचालक, उद्योग, मध्यप्रदेश, इन्दौर कार्यालय के सदस्य	५२२.८९
४.	इंडियन रेड क्रास सोसायटी, मध्यप्रदेश शाखा, इन्दौर	५००.००
५.	हिजहाइनेस दि नवाब साहिब बहादुर, जावरा	५००.००
६.	हिजहाइनेस, राजगढ़, इन्दौर	१५१.००
७.	श्री एल. ओ. जोशी, आई. ए. एस., शिक्षा सचिव, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल	१०१ ००
८.	दि हरदा इलेक्ट्रिक सप्लाई कं० (प्रायवेट) लि० हरदा	१०१.००
९.	सेठ गोपीकिशन अग्रवाल, तुमसर	१०१.००
१०.	हिजहाईनेस दि महाराजा साहिब, बड़वानी	१०१.००
११.	हिजहाईनेस, झाबुआ	१०१.००
१२.	श्री ओ. डब्ल्यू. जुत्सी, लखनऊ	१००.००
१३.	हिजहाईनेस दि राजा साहब ऑफ सीतामऊ	१००.००
१४.	श्री बी. डी. पाटिल, एक्जीक्यूटिव इंजीनियर, लोक कर्म विभाग, शिवपुरी	१००.००
१५.	श्री एम. जी. कर्णिकर, आयुक्त, भोपाल संभाग, भोपाल	५१.००
१६.	श्री जे. एस. दवे, सचिव राज्यपाल, मध्यप्रदेश भोपाल	५१.००
१७.	डॉक्टर एच. सी. सेठ, चेअरमैन लोक सेवा आयोग, मध्यप्रदेश, इन्दौर	५१.००
१८.	श्री ई. एम. जोशी, सदस्य, लोक सेवा आयोग, मध्यप्रदेश, भोपाल	५१.००
१९.	राजा ढोंडीराज, इन्दौर	५१.००
२०	सरदार दर्शनसिंह, कारागार महानिरीक्षक, मध्यप्रदेश, भोपाल	५१.००
२१.	श्री आर. पी. नरोन्हा, आई. सी. एस., आयुक्त, जबलपुर संभाग, जबलपुर	५१.००
२२.	श्री एस. पी. मेहता, आई. ए. एस., आयुक्त, ग्वालियर	५१.००
२३.	श्री एम. एन. सूद, मुख्य अभियन्ता, सिंचाई, रायपुर	५१.००
२४.	श्री एन. डी. गुप्ता, आई. ए. एस., राजस्व सचिव, मध्मप्रदेश शासन, भोपाल	३१.००
२५.	श्री एम. पी. श्रीवास्तव, अवर सचिव, मध्यप्रदेश शासन, सामान्य प्रशासन विभाग, भोपाल	२५.००
२६.	श्री आर. जी. बाजपेयी, अवर सचिव, मध्यप्रदेश शासन, सामान्य प्रशासन विभाग भोपाल	२५.००
२७	डाक्टर जी. एल. शर्मा, संचालक, स्वास्थ्य सेवायें मध्यप्रदेश, इन्दौर	२५.००
२८.	श्री पृथ्वीनाथ चड्ढा, हिन्दुस्तान मेंगनीज माइन्स, तिरोड़ी	२५.००
२९.	डाक्टर आर. सब्रामनियन, उप संचालक, जन-स्वास्थ्य, मध्यप्रदेश, इन्दौर	२१.००
३०.	श्री जी. के. शर्मा, अवर सचिव, मध्यप्रदेश शासन, योजना एवं विकास, भोपाल	२१.००
३१.	व्यवस्थापक, कमल टाकीज, हरसूद	२०.६०
३२.	प्रिन्सिपल, इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट, ग्वालियर	१५.००
३३.	श्री के. आर. निमोचा, टेकनिकल मेम्बर, मध्यप्रदेश इलेक्ट्रीसिटी बोर्ड, जबलपुर	१५.००
३४.	प्रिन्सिपल, इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इन्स्टीटयूट, खंडवा	१२.००
३५.	श्री डब्ल्यू. वी. ओक, आई. ए. एस., आयुक्त, मध्यप्रदेश शासन, इन्दौर	१०.००
३६.	श्री एम. एम. पिसाल, आई. पी. एस., जिला पुलिस अधीक्षक, गुना	१०.००
३७.	श्री जगन्नाथ जोशी, स्वत्वाधिकारी, जगदीश लोअर एण्ड दाल मिल, भाटपारा	५.००
३८.	श्री एच. वी., के. आयंगर एक्जीक्यूटिव इंजीनियर लोक कर्म विभाग, सिवनी	५.००
	कुल रुपये	५२०३.४९

विज्ञान-वार्ता

आमों की डिब्बाबन्दी

डिब्बाबन्द आमों को अधिक समय तक सुरक्षित रखने की विधि का पता लगाने के लिए कलकत्ते के इंजीनियरी और टैकनालाजी कॉलेज में अनुसंधान किये गये हैं। हिमसागर, फजली और लंगडा किस्म के आमों पर प्रयोग करने के बाद हिमसागर आम को डिब्बेबन्दी के लिए सबसे उपयुक्त पाया गया। छः महीने तक बन्द रहने पर भी इसका रंग और स्वाद करीब-करीब ज्यों-का-त्यों बना रहता है। जितना आम हो, उससे आधा चीनी का शर्बत डाल देने से आम काफी दिनों तक ताजा बना रहता है।

लंगड़ा आम के बारे में यह रहा कि उसका रंग तो ज्यों-का-त्यों बना रहा, किन्तु स्वाद में फर्क आ गया। इसका स्वाद कायम रखने के लिए ३५ प्रतिशत चीनी और थोड़ा साइट्रिक एसिड डाल दिया जाता है।

फजली आम डिब्बाबन्दी के लिए उपयुक्त नहीं है, फिर भी इसे सुरक्षित रखने की विधि निकाली गई है।

मछली के तेल से चमड़ा साफ करने का पदार्थ

मद्रास की केन्द्रीय चमड़ा अनुसंधान संस्था ने पोंगम और सार्डिन मछली के तेल से चमड़ा साफ करने का पदार्थ (फैट लिकर) तैयार करने की नई विधि निकाली है। चमड़े को नरम और लचीला बनाने तथा उसे चमकाने के लिए यह पदार्थ काम आता है।

नये ढंग से तैयार किए गए इस पदार्थ की जाँच की जाचुकी है और यह उपयोगी साबित हुआ है।

भारत को हर साल २०० से ३०० टन तक अर्थात् ५० लाख रुपये के मूल्य के फैटलिकर की जरूरत पड़ती है। दूसरी आयोजना में चमड़ा-उद्योग के विस्तार के कारण जरूरत और बढ़ेगी। नई विधि से तैयार करने से जरूरत भर को फैट-लिकर यहीं तैयार हो सकता है।

गर्मी रोकने वाली ईंटें

पिछले दिनों भीलवाड़ा (राजस्थान) के एक कारखाने में अभ्रक की ऐसी ईंटें बननी शुरू हो गई हैं, जो गर्मी को रोकती हैं। इन ईंटों को

बनाने की विधि 'सेंट्रल ग्लास एन्ड सिरेमिक रिसर्च इंस्टिट्यूट' ने निकाली है। इसी ने भीलवाड़ा के कारखाने में मशीन लगाने में सहायता की है। उद्योगों में काम आनेवाली भट्टी तैयार करने में ये ईंटें काम में लाई जाती हैं। अभ्रक के छोटे-छोटे बेकार टुकड़ों से ये ईंटें बनाई जाती हैं। इस समय कारखाने में हर रोज ३,००० ईंटें बनाई जारही हैं। इस साल के अन्त तक ६,००० ईंटें रोज बनाई जाने लगेंगी।

भारत में प्रतिवर्ष बीस लाख रुपये. की ऐसी ईंटों की जरूरत पड़ती है। अब तक ये ईंटें विदेशों से मंगानी पड़ती थीं। देश में ही यह उद्योग चालू हो जाने से विदेशी मुद्रा की बचत होगी।

त्रिपुरी का सांस्कृतिक गौरव

(पृष्ठ ६ का शेष)

की सभ्यता और संस्कृति उनके यश और विजय के साथ दूर तक फैल गई और भिन्न-भिन्न स्थानों में कलचुरियों ने मंदिरों, मठों और प्रासादों का निर्माण कराया। कलचुरि शासक शैव धर्म के उपासक थे। इसलिये पाशुपत सम्प्रदाय की उनके समय में बहुत उन्नति हुई और जहाँ-तहाँ शिवजी के मन्दिर बनाये गये। चेदि प्रदेश में सर्वत्र कलचुरियों के निर्माण किये गये स्मारक पाये जाते हैं। स्वर्गीय राखालदास वन्द्योपाध्याय ने इन स्मारकों को तीन वर्गों में विभाजित किया है। प्रथम वर्ग में वे स्मारक हैं, जो भेड़ाघाट, बिलहरी, गुर्गी, चन्द्रेही और छोटी देवरी में स्थित हैं। इन स्मारकों का निर्माण-काल युवराजदेव प्रथम, लक्ष्मणराज और युवराजदेव का राज्यकाल है। दूसरे वर्ग में सोहागपुर, अमरकंटक आदि के मंदिर समाविष्ट हैं, जो गांगेयदेव, कर्णदेव और यशकर्णदेव के समय में निर्माण किये गये थे। शेष स्मारक उत्तरकालीन कलचुरियों के समय के हैं और अधिकतर मुड़वाहा तहसील में पाये जाते हैं। रीठी, सिमरा, बड़गाँव आदि स्थानों में इनकी अधिकता है।

त्रिपुरी में पौराणिक मूर्तियों के अतिरिक्त जैन और बौद्ध मूर्तियाँ भी बहुत अच्छी दशा में प्राप्त हुई हैं। इससे त्रिपुरी की धार्मिक सहिष्णुता का पता लगता है। वहाँ इन तीनों धर्मवाले साथ-साथ रहते थे। उसका शासन-प्रबन्ध बहुत सुन्दर था, उसके साहित्य की दशा उसके शिलालेखों और ताम्रपत्रों से ही ज्ञात होती है। त्रिपुरी में प्रायः सभी राजाओं के शिलालेख और ताम्रपत्र विशुद्ध संस्कृत भाषा में और साहित्यिक रूप में पाये जाते हैं। सामाजिक उदारता में त्रिपुरी कम नहीं थी। उसके सम्राट् कर्णदेव ने हूण राजा की कन्या से विवाह किया और उसीसे उनका वंश-विस्तार हुआ है। तात्पर्य यह है कि त्रिपुरी अपने समय में छः सौ वर्षों तक एक उन्नत हिन्दू साम्राज्य की राजधानी थी और इतनी सम्पन्न थी कि यद्यपि उसको समाप्त होते आज छः सौ वर्ष लग गये। अब भी उसमें ढूंढ़ने से सोना प्राप्त हो जाता है।

प्रकृति के नियमानुसार यशःकरमदेव के बाद उसके शासकों में अपने पूर्ववर्ती नरेशों की योग्यता और शक्ति नहीं रही। यद्यपि उस पर कभी विदेशी विजेताओं का आक्रमण नहीं हुआ, तब भी पड़ोसी राजाओं ने ही उसे छिन्न-भिन्न कर दिया और वहां का कलचुरि-राजवंश विक्रम तेरहवीं शताब्दी के अंत तक इधर उधर जाकर अपना निर्वाह करने लगा।

चौदहवीं शताब्दी में त्रिपुरी-प्रान्त में गोड़ों का अभ्युदय हुआ। इन लोगों ने त्रिपुरी से छः-सात मील पूर्व गढ़ा में अपनी राजधानी बनाई और उसे सजाया, पर त्रिपुरी की तरह वह न सज पाई। सत्रहवीं शताब्दी में अकबर के शासन काल में त्रिपुरी के खंडहरों को गिरवा दिया गया।

भारत सरकार से "रजिस्टर्ड"

सफेद दाग का शत्रु

इस रामबाण दवा से स्त्री, पुरुष या बालकों के शरीर पर के सफेद दाग ऐसे निकल जाते हैं कि वे कहाँ थे इसका पता भी नहीं लगता, हजारों ने अनुभव करके प्रशंसा-पत्र भेजे हैं। मूल्य ५), अधिक विवरण मुफ्त मंगाकर देखिये। वैद्य के. आर. बोरकर, (मध्य). मु. पो. मंगरूल-पीर, जिला अकोला, (विदर्भ)। २७९-(२८-३०)

सूचना

'मध्यप्रदेश संदेश' के दिनांक २८-६-५८ के अंक में पृष्ठ २९, कालम ३ में जो नोटिस प्रकाशित हुआ है, वह श्री बलवंतराव पलसकर की ओर से हुआ है, ऐसा पढ़ा जाय।

—व्यवस्थापक, म. प्र. संदेश

सापना साइफनों को कोई क्षति नहीं

कुछ समाचारपत्रों में इस आशय के समाचार प्रकाशित हुये हैं कि सापना-सिंचाई-योजना के साइफनों के, जिनके निर्माण में २ लाख रुपये व्यय हुये थे, दोनों कूपों में दरारें पड़ गई हैं तथा कुछ समय पूर्व की गई मरम्मत के बावजूद उनमें ४० फुट लम्बी एक दरार पड़ गई है, जिसके परिणामस्वरूप किसानों को पानी मिलना बन्द होगया था। इन समाचारों में आगे कहा गया है कि नये साइफन के बनाने में भारी खर्च पड़ेगा।

वास्तविकता यह है कि सापना वितरण-प्रणाली के साइफन एक्वीडेक्ट के दो कुओं में से केवल एक कुए में छोटी दरारें पड़ी थीं, जिनकी तत्काल मरम्मत कर दी गई थी। इस मरम्मत में लगभग २,००० रुपये व्यय हुए थे। इन कुओं का निर्माण-मूल्य केवल १०,००० रुपये प्रति कूप ही है। इन दरारों के कारण जल-प्रवाह में उत्पन्न हुये अवरोध के परिणामस्वरूप ७५ एकड़ भूमि में से केवल १० एकड़ भूमि पर ही, जहाँ गन्ने की खेती होती है, प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था। जाँच करने पर यह पाया गया कि कुछ छोटी दरारों को छोड़ कर, जिनकी तत्काल मरम्मत करदी गई थी, कोई क्षति नहीं हुई है।

मलेरिया-उन्मूलन-प्रचार-सप्ताह

भिण्ड जिले में दिनांक २३ से ३० जून तक मलेरिया-उन्मूलन-प्रचार-सप्ताह मनाया गया। जिले के मेहगांव, गोरमी, सोनी आदि प्रमुख ग्रामों में फिल्म-प्रदर्शन तथा सभाओं में भाषणों द्वारा जनता को मलेरिया संबंधी पूरी-पूरी जानकारी दी गई।

स्थानीय समाचार

श्री वर्माजी का निधन

श्री रामकृष्ण वर्मा, एम. ए., साहित्य-रत्न, सम्पादक 'ग्राम-सुधार' का लगभग ३५ वर्ष की आयु में स्थानीय जयारोग्य चिकित्सालय में दिनांक ३० जून की रात्रि को ११॥ बजे आकस्मिक निधन होगया। आप अपने पीछे अपनी पत्नी और तीन बच्चे छोड़ गए हैं। आपकी मृत्यु के शोक में सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय, भोपाल के अधिकारियों और कर्मचारियों तथा उप-कार्यालय ग्वालियर के अधिकारियों और कर्मचारियों तथा साहित्यकारों की शोक-सभाएँ हुईं, जिनमें शोक-प्रस्ताव स्वीकृत किए गए और शोक-संतप्त परिवार के प्रति समवेदना प्रकट की गई।

राज्य के कोने-कोने से

कार्योपयोगी पाठशाला-भवनों की योजना

भोपाल। 'भारत में कार्योपयोगी पाठशालाओं की योजना पर २४ जून को पोलीटेकनिक छात्रावास में तृतीय प्रादेशिक संगोष्ठी की कार्यवाही प्रारम्भ हुई । यह संगोष्ठी देश के विभिन्न भागों में भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा आयोजित की गई संगोष्ठियों में से एक है । यह स्मरणीय है कि केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने शाला भवनों के लिए एक योजना बनाई है और उस योंजना के अनुसार देश में प्रादेशिक संगोष्ठियाँ आयोजित की जारही हैं ।

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय के सहायक शिक्षा सलाहकार श्री डी. आर. लाल ने संगोष्ठी के प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुये कहा कि इन संगोष्ठियों को आयोजित करने का उद्देश्य पाठशालाओं का नियोजन करना, उनकी कार्योपयोगी क्षमता में वृद्धि करना, उन्हें आकर्षक और सुन्दर बनाना और साथ ही उनके निर्माण की लागत और व्यवस्था के व्यय को कम से कम करना है ।

संगोष्ठी की कार्यवाही २७ जून तक चलती रही । संगोष्ठी में केन्द्रीय सरकार की ओर से श्री टी. सी. एम. विशेषज्ञ श्री एफ. पी. स्कोटर और श्री डी. आय. लाल. बिहार राज्य की ओर से बिहार के सहायक शिक्षा संचालक श्री एन. पी. श्रीवास्तव, शैक्षणिक भवन गवेषणा के इकाई के प्रमुख अभियन्ता श्री वी. प्रसाद और कार्यवाहक शासकीय शिल्पी श्री डी. आर. परांडेकर, मध्यप्रदेश सरकार की ओर से मध्यप्रदेश के लोक शिक्षण उप संचालक श्री जी. वी. तनखीवाले, बुनियादी प्रशिक्षण शाला मुरार (ग्वालियर) के प्रधानाध्यापक श्री आर. एस. सक्सेना और शिल्पी श्री एन. एच. धरंपारिया ने भाग लिया । हेवी इलेक्ट्रिकल्स प्रायवेट लिमिटेड भोपाल के वरिष्ठ शिल्पी श्री एस. आर. सोलंकी ने इस संगोष्ठी में पर्यवेक्षक की हैसियत से भाग लिया ।

पोंडा-बछिया सड़क का निर्माण

राज्य शासन ने अभाव-ग्रस्त क्षेत्रों में सहायता-कार्य के रूप में जबलपुर जिले की सिहोरा तहसील में लगभग ३१,१७५ रुपये की लागत से पोंडा-बछिया सड़क के निर्माण-कार्य को आरम्भ करने की स्वीकृति प्रदान कर दी है।

अग्नि-पीड़ितों को सहायता

अग्नि-कांड, बाढ़ आदि के प्रकरणों में निःशुल्क सहायता दिये जाने के हेतु राजस्व विभाग की ओर से पांच हजार रुपये की अतिरिक्त स्वीकृति अर्थ वर्ष १९५८-५९ के लिए वितरण-हेतु आयुक्त कार्यालय को प्राप्त हुई थी। उक्त धनराशि में से आयुक्त द्वारा तीन हजार रुपये की स्वीकृति ग्राम जखौली परगना लहार, जिला भिंड में अग्नि-कांड होने के कारण कलेक्टर, भिंड को दी गई तथा इसी प्रकार दो हजार रुपये ग्राम चक यशवन्तपुरा, तहसील सेंवड़ा, जिला दतिया में अग्नि-प्रकोप होने के कारण कलेक्टर दतिया को दी गई। कलेक्टर उक्त धनराशि निर्धारित विधि के अनुसार व्यय कर सकेंगे।

मलेरिया सप्ताह

शिवपुरी। यहाँ दिनांक २३ जून को जिलाधीश श्री एन. सी. गुप्ता, आय. ए. एस., ने स्वास्थ्य विभाग द्वारा दिनांक २३ जून से ३० जून तक आयोजित मलेरिया सप्ताह एवं स्वास्थ्य प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए मलेरिया-उन्मूलन के उद्देश्यों एवं डी. डी. टी. स्प्रे का कार्य, जो जिले भर में चल रहा है, पर प्रकाश डाला एवं जनता से इस कार्य में स्वास्थ्य विभाग को पूर्ण सहयोग देने की अपील की ।

सरगुजा जिले में कृषि-कार्यों के लिए ऋण

सरगुजा जिले के अन्तर्गत बैकुंठपुर सामुदायिक विकास-खंड में विभिन्न ग्राम-विकास-कार्यों के लिए मार्च और अप्रैल मास में १,८२,५२५ रुपये के ऋण वितरित किये गये। इसमें से १,३८,७२५ रुपये की धनराशि छोटे सिंचाई-कार्यों के लिए तथा ४३,८०० रुपये की धनराशि परती भूमि को कृषि-योग्य बनाने के लिए दी गई।

इसके अतिरिक्त सरगुजा जिले के एक अन्य विकास-खंड खडगंवा में भी छोटे सिंचाई कार्यों तथा परती भूमि को कृषि-योग्य बनाने के लिए क्रमशः ७५,९९० रुपये तथा २१,००० रुपए के ऋण किसानों को दिये गये ।

मध्यप्रदेश में नवम् वन-महोत्सव समारोह

दिनांक १ जुलाई से प्रारम्भ

इस वर्ष संपूर्ण मध्यप्रदेश में दिनांक १ जुलाई से नवम् वन-महोत्सव-समारोह प्रारंभ होगया है। अब तो वन-महोत्सव एक लोक-त्यौहार बन गया है, जो कि अधिकाधिक संख्या में वृक्षारोपण करके देश की वन-संपदा को बढ़ाने के राष्ट्रीय कर्त्तव्य से अनुप्राणित होकर मनाया जाता है। राज्य के वन विभाग के अधिकारियों को आदेश दे दिये गये हैं कि वे इस समारोह को सफल बनाने में संपूर्ण सहयोग दें। विभिन्न सजावटदार तथा फलदार पौदे तथा कलमें लगाने के अतिरिक्त जनता को बाँस, बबूल एवं बेर के पेड़ लगाने के लिये प्रोत्साहित किया जायगा। वृक्षारोपण के पश्चात् उसे सींचने तथा उसकी रक्षा करने के विषय में भी जनता को पूरी तरह समझाया जायगा। राष्ट्रीय विस्तार-सेवा-खंडों में इस प्रकार के पेड़ लगाये जायँगे, जिनकी लकड़ी ईंधन के उपयुक्त हो तथा जिनकी पत्ती पशुओं के चारे के उपयोग में लाई जा सके। इन क्षेत्रों में अच्छे किस्म की घास भी लगाई जायगी।

वृक्षारोपण-कार्य

राज्य में वन लगाने की योजनाओं के अन्तर्गत वृक्षारोपण के क्षेत्र में गत वर्षों में उल्लेखनीय कार्य हुआ है। नियमित वृक्षारोपण-कार्यों के अतिरिक्त सन् १९५७-५८ में ३,५४९ एकड़ भूमि में वृक्षारोपण-कार्य किया गया। इस कार्य के लिए ३,४३० एकड़ का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। इन वृक्षारोपण-कार्यों पर कुल मिलाकर गत वर्ष ३.६५ लाख रुपये की धनराशि व्यय की गई।

वनमंत्री द्वारा छः सार्वजनिक भवनों का उद्घाटन

रीवा । वन एवं नैसर्गिक साधन मंत्री श्री शम्भूनाथ शुक्ल ने रीवा जिले के अपने दौरे के समय रीवा, मऊगंज तथा हनुमना विकास-खंडों में छः सार्वजनिक भवनों का उद्घाटन किया। समऊ स्थित सामुदायिक केन्द्र, नौढ़ियां एवं बछरहटा के बीज गोदाम, बिझौली का केन्द्र तथा हनुमना में निर्मित पशु-चिकित्सालय भी इसमें शामिल है ।

इन अवसरों पर आयोजित विशाल जन-सभाओं में भाषण करते हुये वनमंत्रीजी ने कहा कि लोगों को श्रम की महत्ता को समझ कर अपने दैनिक जीवन में इसकी प्रतिष्ठापना करना चाहिये। आपने सहकारिता की आवश्यकता पर बल दिया तथा कहा कि कृषि-कार्यों के लिए प्राप्त ऋणों का ग्रामीणों को दुरुपयोग नहीं करना चाहिये ।

सहायता-कार्यों का निरीक्षण

वन मंत्री महोदय ने मार्ग में समऊ, मनगवां, देव तालाब, नौढियाँ मुडनिया एवं मऊगंज ग्रामों में चल रहे सहायता-कार्यों को भी देखा । यहां मजदूरों से बातें करते हुये आपने उन्हें यह आश्वासन दिया कि शासन की ओर से उन्हें हर सम्भव सहायता प्राप्त होगी, किन्तु अपने स्वयं के हित के लिये उन्हें भी कड़ा परिश्रम करना चाहिये ।

जिला ग्राम पाठशाला

मुरैना उत्तरी वृत्त की कन्या-शालाओं की निरीक्षिका द्वारा प्राप्त समाचारों में मुरैना जिले के श्योपुर परगने के अंतर्गत बड़ौदा ग्राम में कन्या शिक्षा में रुचि रखने वाले महानुभावों के इस विचार का कि गाँव में माध्यमिक शाला के लिए स्थान है स्वागत किया गया है। साथ ही, बताया गया है कि उक्त ग्राम की संख्या ६ हजार न होकर ४,२८६ है तथा कन्याओं की संख्या भी शाला में न्यून है अर्थात् केवल ३८ वालिकाएँ ही शिक्षा पा रही हैं। अतएव निर्धारित सिद्धान्तों के अन्तर्गत कक्षा ५ से शिक्षण प्रारम्भ करने में प्रत्यक्ष कठिनाइयाँ उपस्थित होरही हैं । अन्त में उक्त ग्राम की जनता से शाला स्थापना के लिए वांछित साधन (भवन आदि) की व्यवस्था में पूर्ण सहयोग देने का अनुरोध किया गया है।

जबलपुर के निकट प्राथमिक शाला भवन का निर्माण पूर्ण

जबलपुर से ५२ मील दूर मंडला शहडोल जिले की सीमा पर स्थित दादरगांव की जनता की एक दीर्घकालीन इच्छा उस समय पूरी हुई जब जिलाध्यक्ष ने एक प्राथमिक पाठशाला-भवन का उद्घाटन किया। ईंट, सीमेन्ट और गारे से बना हुआ यह सुन्दर शाला-भवन जनता और अधिकारियों के सत्प्रयासों और सहयोग की भावना का प्रतीक है। यह शाला-भवन ६,००० रुपयों की कुल लागत से बनाया गया है, जिसमें ३,००० रुपयों का अंशदान सरकार की ओर से तथा शेष जनता की ओर से प्राप्त हुआ है। जंगल के ठेकेदार श्री नत्थूसिंह ने इस भवन के लिए १,००० रु. का अंशदान दिया। जिले का यह भाग 'कारोपानी' के नाम से जनता में सम्बोधित किया जाता है। यहां की जमीन पर आवागमन कठिन होने के कारण यहां प्राथमिक सुविधाओं का भी अभाव था। यहां तक कि ईंटों और कारीगरों को ४० मील दूर से लाना पड़ा।

जिलाध्यक्ष ने अपने भाषण में ग्रामवासियों और तहसील कर्मचारियों को उनके उत्साह के लिए बधाई दी और आशा प्रगट की कि भविष्य में यह शाला-भवन रचनात्मक कार्यों का केन्द्र बनेगा। उन्होंने विभिन्न विकास-योजनाओं की चर्चा की और जनता से कहा कि वह सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का सर्वोत्तम उपयोग करे। उन्होंने अभावसूचक परिस्थितियों का भी उल्लेख किया और उनका मुकाबिला करने के लिए सरकार द्वारा किए गए सहायता-कार्यों की चर्चा की। अभी तक दो लाख रुपयों से अधिक रकम विभिन्न सहायता-कार्यों पर खर्च हो चुकी है और जिले के लगभग ३०,००० लोग इन कार्यों में लगे हैं। इस समारोह के अन्त में अपाहिजों और वृद्धों को जो किसी भी प्रकार का शारीरिक श्रम करने में असमर्थ हैं, गेहूं मुफ्त में वितरत किया गया।

टीकमगढ़ जिला परामर्शदात्री समिति की बैठक

टीकमगढ़ जिला परामर्शदात्री समिति की बैठक अभी हाल में जिलाधीश टीकमगढ़ की अध्यक्षता में हुई।

जिले के अधूरे निर्माण-कार्यों की पूर्ति के लिए २५,९०७ रु. स्वीकृत किये गये, जिससे १३ पानी पीने के के कुए, ११ तालाबों की मरम्मत, ११ पाठशाला-भवन तथा ३ पंचायत-भवन का निर्माण-कार्य पूर्ण कराया जायगा।

जिलाध्यक्ष ने समस्त सदस्यों एवं उपस्थित अधिकारियों से 'राज्यपाल सहायता निधि' में योगदान करने की अपील की, जिसके फलस्वरूप उपस्थित व्यक्तियों ने ४६७ रुपये तत्काल दिये।

संगीत-गोष्ठी

उज्जैन । स्थानीय अवन्तिका संगीत समाज उज्जैन के तत्वावधान में संगीत प्रकाश विद्यालय लाखेरवाड़ी में एक सरस संगीत गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय कलाकारों के अतिरिक्त श्री विश्वनाथ वन्द्योपाध्याय (रेडियो स्टार, कलकत्ता) ने सरल एवं शास्त्रीय संगीत का गान किया। आपके हिन्दी एवं बंगला गीत वहुत पसन्द किये गये। श्री महादेव ने बैंजो पर राग भीमपलासी तथा श्री वंसीलाल ने वंशी पर फिल्म-गीत प्रस्तुत किये। अन्त में मंत्री श्री ईश्वरचन्द्र शर्मा ने आभार प्रदर्शन किया ।

दमोह के किसानों को राहत

ओलों तथा अपर्याप्त वर्षा के कारण जिन किसानों की फसल को क्षति पहुंची है, उन्हें राहत पहुंचाने की दृष्टि से राज्य शासन ने दमोह जिले के ३० ग्रामों की सन् १९५७–५८ की रवी किश्त के २४,८८९ रुपये के भू-राजस्व की वसूली माफ करदी है।

शासन ने जिले के ६६७ ग्राम में सन् १९५८-१९५९ की रवी किश्त के ३,००,३१६ रुपये के भू-राजस्व की वसूली स्थगित करदी है।

किसानों की सहायता

ओलों तथा अपर्याप्त वर्षा से फसल को क्षति पहुँचने के कारण राज्य-शासन ने सागर जिले के ६८ ग्रामों में १९५७-५८ वर्ष की रबी किश्त के ४९,७४२ रुपये के भू-राजस्व की छूट देने की स्वीकृति प्रदान की है।

इसके अतिरिक्त शासन ने जिले के १,३३८ ग्रामों में १९५८–५९ वर्ष की रबी किश्त तक ६,५६,११६ रु० के भू-राजस्व की वसूली का स्थगन मंजूर किया है।

110672

ग्वालियर जिले में सहायता-कार्य

सहकारी समितियों के सहायक पंजीयक द्वारा प्राप्त प्रतिवेदन में बताया गया है कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत ग्वालियर जिले में १९५८-५९ वर्ष के लिए निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार एक मध्यवर्ती हितकारी अधिकोष की स्थापना की जायगी । उक्त अधिकोष के लिए २,१४० रुपयों की व्यवस्था की गई है। पाँच नवीन बृहदाकार समितियाँ स्थापित की जायँगी । उक्त सहकारी समितियों के लिए ८,५०० रुपये की धनराशि की व्यवस्था शासकीय अनुदान के रूप में की गई है । गत वर्षों में स्थापित ११ बृहदाकार सहकारी समितियों के लिए ७,६०० रुपये की व्यवस्था शासकीय सहायता के रूप में की जारही है। एक नव-स्थापित बृहदाकार संस्था के लिए भण्डार-गृह के निर्माणार्थ ७,५०० रुपयों के ऋण की व्यवस्था भी शासन द्वारा की गई है। पूर्व स्थापित दो क्रय-विक्रय समितियों के लिए २,५०० रुपये की धनराशि की सहायता शासन द्वारा की जायगी। डबरा-विकास-खण्ड के पिछोर स्थान पर सहकारी धान मिल की स्थापना के लिए चार हजार रुपये की शासकीय सहायता की व्यवस्था की गई है । ग्वालियर तथा पिछोर स्थानों पर छः कृषि-सुधार-सहकारी-समितियां स्थापित की जायँगी। उक्त कृषि-सुधार-समितियों को नौ हजार रुपये की धनराशि अंशदान के रूप में तथा ४५,००० रुपये की धनराशि शासकीय सहायता के रूप में दी जायगी । छोटी संस्थाओं के सुधार पर भी यथोचित बल दिया जारहा है। शासन द्वारा भाण्डेर की २, मुरार-विकास-खण्ड की २ तथा डबरा ब्लाक की १ छोटी संस्था के लिए क्रमशः ३००, ३०० तथा १५० रुपये की धनराशियों की सहायता के रूप में व्यवस्था की गई है ।

कृषि-कार्यों की प्रगति

कृषि मण्डल ग्वालियर के सहायक संचालक द्वारा प्राप्त मासिक-प्रतिवेदन में बताया गया है कि गत मई मास में दो सौ मन गेहूँ की बीज क्रय किया गया। २९ मन अरहर एवं मूंगफली का बीज तथा १६५ मन उर्वरक वितरित किया गया । ¼ एकड़ भू-क्षेत्र में शाक-भाजी की खेती की गई। दस एकड़ क्षेत्र में उन्नत कृषि-यंत्रों का प्रदर्शन किया गया। पाँच रेंहट कृषकों को क्रय कराए गये। आलोच्य अवधि में ३६ खाद-गर्त खोदे गए तथा ४६,६९३ मन ग्रामीण तथा शहरी खाद उत्पादन शक्ति में वृद्धि करने के उद्देश्य से खेतों में डाला गया। १,३६४ मन ग्रामीण खाद तैयार किया गया। ४७ एकड़ क्षेत्र में मेंढ़-बंधन-कार्य पूर्ण किया गया। १४८ एकड़ भू-क्षेत्र ट्रेक्टर तथा २४ एकड़ भू-क्षेत्र बैलों द्वारा जोता गया। ३० एकड़ क्षेत्र में ग्रीष्म-कालीन जोत का प्रबन्ध हुआ । जल-सुविधाओं के विस्तार को दृष्टिगत कर छः नवीन जल-कूप खोदे गए। दूर्वा-क्षेत्र के अन्तर्गत ५७ एकड़ भू-क्षेत्र था ।

नागोद तहसील में राहत-कार्य

सतना जिले की नागोद तहसील के अन्तर्गत जून मास के प्रथम सप्ताह में ५२ तालाबों पर जीर्णोद्धार, १६ जन-मार्गों एवं २ कुओं पर निर्माण तथा १ बावड़ी पर पुनरुद्धार कार्य प्रगति पर रहे। उक्त ७१ राहत-कार्यों से युक्त सप्ताह में सूखा एवं अभाव की स्थिति से पीड़ित २,३४७ व्यक्तियों ने प्रतिदिन लाभ उठाया।

अग्नि-पीड़ितों की सहायता

राज्य-शासन ने सन् १९५७-५८ के वित्तीय वर्ष के अन्तर्गत सतना जिले की रघुराज नगर तहसील के १० कृषकों को ८४० रुपये, अमरपाटन तहसील के १ कृषक को ६० रुपये तथा नागोद तहसील के ९ कृषकों को ४८० रुपये की सहायता उनकी सम्पत्ति को अग्नि से क्षति पहुँचाने के कारण प्रदान की है ।

तीन चौकीदार मारे गये

मिरगपुरा गाँव, पुलिस स्टेशन सरियाछोला, जिला मुरैना के तीन ग्रामीण चौकीदार, हर-विलास, भोगीराम और प्यारेलाल; पन्ना गूजर के कुख्यात दल द्वारा १९ जून १९५८ की संध्या को, मुरैना से लगभग १५ मील दूर, मेहरचन्दपुरा ग्राम के निकट मारे गये। ऐसा विश्वास किया जाता है कि मारे गये लोगों पर डाकुओं का सन्देह था कि इस क्षेत्र में पिछले दो दिनों से पुलिस डाकू दल का, जो पीछा कर रही है उसके लिए ये लोग जिम्मेदार हैं। घटना की खबर पाते ही पुलिस दल, जिला पुलिस अधीक्षक और अन्य अधिकारी फौरन घटनास्थल पर गये और वे अभी भी डाकुओं के गिरोह का पीछा कर रहे हैं। मरे हुए दो चौकीदारों के लड़कों को जिला पुलिस-अधीक्षक ने चौकीदार नियुक्त कर दिया है तथा तीसरे के सम्बन्ध में, जिसके कोई लड़का नहीं है, मुआवजा देने का प्रश्न विचाराधीन है।

आदिमजाति सलाहकार-परिषद् की बैठक सम्पन्न

मध्यप्रदेश आदिमजाति सलाहकार परिषद् की दूसरी बैठक पचमढ़ी में दो दिन के पश्चात् समाप्त हुई। इसके अध्यक्ष आदिमजाति कल्याण मंत्री थे। पुनर्गठित राज्य के अनुसूचित क्षेत्रों का संशोधन करने, आदिमजाति-कल्याण विभाग के अन्तर्गत चलनेवाली प्राथमिक तथा माध्यमिक शालाओं का प्रशासन शिक्षा विभाग को हस्तान्तरित करने और गैर सरकारी-आदिमजाति कल्याण-संस्थाओं को सहायता-अनुदान देने की विधि आदि प्रश्नों पर इस बैठक में चर्चा की गई। आयुक्त, अनसूचित जनजाति तथा अनसूचित जाति, भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत सन् १९५६-५७ के वार्षिक प्रतिवेदन पर भी विचार किया गया ।

श्री एल. एम. श्रीकान्त, आयुक्त, अनसूचित-जाति और अनुसूचित जनजाति (भारत सरकार) भी विशेष निमंत्रण पर उपस्थित थे। उन्होंने परिषद् में भाषण देते हुए बस्तर जिले के अबूझमाड़ के पिछड़े क्षेत्रों का तुरन्त सर्वेक्षण करने की आवश्यकता प्रतिपादित की, ताकि इस क्षेत्र की जनता की स्थिति के सुधार के लिए योजनाएँ बनाई जाकर कार्यान्वित की जा सकें। उन्होंने कहा कि इन योजनाओं का उद्देश्य जनता की आर्थिक स्थिति का सुधार होना चाहिये और ये योजनाएँ इस क्षेत्र की जनता की प्राचीन प्रथाओं और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुकूल होनी चाहिये। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि इन कार्यक्रमों को पूरा करने के लिए केन्द्रीय सरकार की ओर से आर्थिक सहायता दी जायगी। श्री श्रीकान्त ने यह मत प्रगट किया कि अनुसूचित जनजातियों की वर्तमान सूची संशोधित की जानी चाहिये, जिससे कि उनकी निवास विषयक योग्यता के सम्बन्ध के प्रतिबन्ध शिथिल किये जा सकें और आदिमजातियाँ विभिन्न योजनाओं से पूरा-पूरा लाभ उठा सकें। सभा का समारोप आदिमजाति कल्याण विभाग के उप-मंत्री श्री एस. बी. सोलंकी के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ ।

परिषद ने मुख्य मंत्री डॉक्टर काटजू से भी भेंट की और उनके साथ दो घंटे तक आदिम जाति कल्याण कार्यों से सम्बन्धित समस्याओं पर चर्चा की।

साप्ताहिक समीक्षा

बम्बई में भारी वर्षा

बम्बई में भारी वर्षा से पांच व्यक्तियों की मृत्यु होगई । दिनांक २६ की रात और २७ को प्रातःकाल इतनी अधिक वर्षा हुई कि कुछ सड़कों पर पानी दस फुट तक ऊंचा जमा हो गया ।

यद्यपि बम्बई में वर्षा ऋतु देर से आरम्भ हुई, परन्तु पिछले नौ दिनों में ७० सेंटीमीटर वर्षा होचुकी है, जो वर्ष की कुल वर्षा का एक-तिहाई है ।

जहाजघाटों में कार्य आरम्भ

राष्ट्रव्यापी बन्दरगाह एवं गोदी कर्मचारी हड़ताल-वापिस लिए जाने के बाद बम्बई बन्दरगाह के सब विभागों में २७ जून को पूरे पैमाने पर काम आरम्भ होगया । कलकत्ता बन्दरगाह और गोदियों के कर्मचारियों ने भी अपना काम आरम्भ कर दिया ।

प्रातः काल की पारी में साढ़े छः बजे लगभग बीस हजार कर्मचारी काम पर आए ।

रेल-दुर्घटना

मध्य रेलवे पर बम्बई से २५ मील दूर मुम्ब्रा और दीवा के बीच मूसलाधार वर्षा में एक उपनगरीय रेल खड़ी हुई एक दूसरी उपनगरीय रेल के पिछले भाग से लड़ गई । इस दुर्घटना में चार व्यक्ति मरे और तीस से ज्यादा घायल हुए । घायलों में से कुछ की हालत गम्भीर बताई जाती है ।

खड़ी हुई गाड़ी के एंजिन का ड्राइवर घटना-स्थल पर ही मर गया । दो अन्य व्यक्ति अस्पताल में ले जाते हुए रास्ते में ही मर गए । चौथे की मृत्यु अस्पताल में हुई ।

खड़ी हुई गाड़ी के दो पिछले डिब्बे और दूसरी गाड़ी का अगला डिब्बा लगभग चूर-चूर होगए ।

रूस में प्राचीन बौद्ध-मन्दिर मिला

सोवियत् किर्गीजिया में फ्रुंज के चालीस मील पूर्व में पौराणिक नगर आक-बेशिम के स्थान पर ८-९ वीं शताब्दी का एक बौद्ध मंदिर खोदा गया है । पिछले चार वर्ष में इस क्षेत्र में मिलने वाला यह दूसरा मंदिर है । मंदिर की आकृति और मूर्तियां गांधार और अजन्ता कला के समान है । मन्दिर में बोधिसत्व और बुद्ध की मूर्तियां और मूर्तियों के पत्थर से कटे टूटे-फूटे जेवर मिले हैं ।

इन प्राप्त अवशेषों से यह सिद्ध होता है कि पहले कभी इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों और अफगानिस्तान तथा उत्तरी भारत के लोगों में सम्बन्ध था ।

सातवीं शताब्दी में भारत की यात्रा पर आए चीनी यात्री व्हेनसांग ने भी इस क्षेत्र में बौद्ध-धर्म के प्रचार का उल्लेख किया है ।

चीनी का निर्यात बढ़ाने के लिए अध्यादेश जारी

भारत सरकार ने एक अध्यादेश निकाल कर चीनी के निर्यात-व्यापार को प्रोत्साहन देने की योजना घोषित की है ।

इस अध्यादेश के अनुसार भारत सरकार को यह अधिकार होगा कि वह चीनी की एक खास मात्रा को निर्यात करने के लिए मुक्त कर सकेगी और मिलों के लिए उनके उत्पादन का ख्याल रखते हुए चीनी के निर्यात का कोटा निर्धारित कर सकेगी ।

अध्यादेश में यह भी व्यवस्था की गई है कि चीनी का निर्यात केवल एक ही संस्थान की मार्फत किया जाए, ताकि चीनी के विक्रेताओं में अनावश्यक होड़ न चल पड़े और बाहर भेजी जाने वाली चीनी के लिए अच्छे से अच्छे दाम वसूल किए जासकें ।

भारत से यूगोस्लाविया को सिलाई की मशीनें

भारत के राज्य व्यापार निगम ने हाल ही में यूगोस्लाविया के सरकारी व्यापार संगठन 'इन्टरट्रेड' के साथ एक करार पर हस्ताक्षर किए हैं । इस करार के अनुसार भारत से तीस लाख से अधिक रुपयों की लगभग पचास हजार सिलाई की मशीनें यूगोस्लाविया भेजी जाएंगी ।

पूर्वी पाकिस्तान में गवर्नर का शासन

पाकिस्तान सरकार ने फैसला किया है कि पूर्वी पाकिस्तान में संविधान को विलम्बित करके दो महीने के लिए गवर्नर का शासन लागू कर दिया जाय ।

मंत्रिमंडलीय सचिवालय कराची से प्रकाशित एक घोषणा में कहा गया है–"पूर्वी पाकिस्तान के गवर्नर की सिफारिश पर केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने राष्ट्रपति को सलाह दी है कि वे संविधान की धारा १९३ के मातहत एक फर्मान निकाल दें ।"

मंत्रिमंडल की एक खास बैठक ९० मिनट तक हुई और उसीमें उक्त फैसला किया गया ।

बाढ़ों की रोकथाम

सिंचाई तथा बिजली मंत्रालय द्वारा नियुक्त बाढ़-समिति ने बाढ़-नियंत्रण के लिए काम और उपायों पर विचार करने के बाद अपनी अन्तिम रिपोर्ट दी है । समिति ने कहा है कि बाढ़ की रोकथाम के लिए देश को कई क्षेत्रों में बांट देना चाहिए और उनके लिए अलग-अलग योजनाएं बनाई जानी चाहिएँ । बाढ़ आने की सूचना पहले से देने और इसी प्रकार के अन्य कामों की भी व्यवस्था होनी चाहिए । समिति इस नतीजे पर पहुँची है कि बाढ़-नियंत्रण के लिए तटबंध बहुत उपयोगी हो सकते हैं । किन्तु, तटबंधों के साथ-साथ बाढ़ का पानी इकट्ठा करने के लिए जलाशय आदि भी बनाये जाने चाहिए ।

—सन् १९५७ में देश में १२,५७० लाख रुपये के मूल्य की खनिज धातुओं का उत्पादन हुआ, जबकि सन् १९५६ में केवल १०,८२० लाख रुपये के मूल्य की धातुओं का हुआ था । खनिजों के उत्पादन में १६ प्रतिशत की यह वृद्धि कोयले, कच्चे लोहे, सीसे, कच्चे जस्ते, चूने और नमक का उत्पादन बढ़ने के कारण हुई ।

—लोगों को जीवन बीमा के संबंध में जानकारी कराने के लिए फिल्म विभाग ने एक डाक्युमेंटरी फिल्म तयार की है, जो ३० मई से देश में दिखाई जारही है । इस चित्र म जीवन बीमा के विभिन्न लाभ बताये गये हैं ।

विविध-समाचार

भानगढ़ में माध्यमिक शाला-भवन

श्री मंडलोई द्वारा उद्घाटन

राजस्व मंत्री, श्री वी. ए. मंडलोई ने खंडवा से दस मील दूर स्थित भानगढ़ ग्राम में २२ जून, १९५८ को प्रातः माध्यमिक शाला-भवन का उद्घाटन करते हुए कहा कि ग्रामों में समृद्ध और विकसित जीवन का वातावरण तैयार करने के लिए हमें सारे कल्याणकारी कार्य एक होकर करना चाहिए, "एकता" हमारा आदर्श शब्द होना चाहिये। हमें अपने-अपने स्वार्थों को छोड़ना होगा, अपने हितों को छोड़कर समाज की तरक्की की ओर ध्यान देना होगा।

मानी नदी के तट पर सुन्दर दृश्यावलियों के बीच अवस्थित यह शाला-भवन इस बात का जीता जागता सबूत है कि लोगों के संयुक्त प्रयास थोड़े से समय में ही कितनी सफलता प्राप्त करवा देते हैं। २५,००० रुपये की अनुमानित लागत से बनाये गये इस शाला भवन से समीपवर्ती ग्रामों की शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति होगी। कुल लागत में ग्रामीण जनता ने ८,००० रुपये नकद दिये हैं और ५,००० रुपये के मूल्य का श्रमदान किया है। ९,५०० रुपये खंडवा-विकास खंड में से खर्च किये गये हैं और २,५०० रुपये एक स्थानीयग्रामीण, श्री राव भीमसिंह ने दिये हैं, जिन्होंने अपनी जमीन भी दी है, जिस पर भवन बनाया गया है। श्री मंडलोई ने जनता से यह कहा कि वे लड़कियों को भी इस शाला में भेजें। अन्त में श्री मंडलोई ने ग्रामवासियों को समाज के प्रति इस सेवा-भावना के लिये धन्यवाद दिया और इस प्रकार के रचनात्मक कार्यों में सभी सम्भव सरकारी सहायता देने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर श्री बी. एल. तिवारी, संसद सदस्य, श्री आर. के. मंडलोई, डॉ० कुलकर्णी तथा श्री आर. सी. तिवारी, सचिव, लोक शिक्षण समिति, खंडवा (जो इस शाला का संचालन करेगी) और अन्य बहुत से व्यक्ति उपस्थित थे।

भोपाल में परीक्षण एवं मूल्यांकन कार्यशाला

अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् भोपाल में दिनांक २५ जून से ५ जुलाई तक परीक्षण एवं मूल्यांकन (एक्जा मिनेशन एण्ड एवैल्युएशन) कार्य शाला का आयोजन कर रही है। परिषद् के मूल्यांकन अधिकारियों को वर्तमान परीक्षा-प्रणाली में सुधार करने की दृष्टि से व्यावहारिक शिक्षा दी जायगी।

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के सचिव श्री के. जी. सैयदेन ने २५ जून को इस कार्यशाला का उद्घाटन किया। अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् की सहायक क्षेत्र अधिकारी श्रीमती सेन गुप्ता भी इसी सम्बन्ध में दिनांक २४ जून को भोपाल पहुँच गई थी।

शिकागो विश्वविद्यालय के परीक्षक मंडल के प्रमुख तथा मूल्यांकन कार्य के विशेषज्ञ डॉक्टर बेन्जामिन एस. ब्लूम, ने तीन अन्य अमरीकी विशेषज्ञों के सहयोग से इस कार्यशाला का संचालन किया।

बुनियादी शिक्षा के सेमीनार का आरंभ

'प्राथमिक शालाओं का बुनियादी ढंग पर परिवर्तन' विषय पर पश्चिमी क्षेत्र के राज्य के प्रतिनिधियों की संगोष्ठी का आयोजन भोपाल में २६ जून से २ जुलाई तक हुआ। इस संगोष्ठी में बम्बई, राजस्थान तथा मध्यप्रदेश, प्रत्येक राज्य के आठ अधिकारियों ने, जो अपने राज्यों के बुनियादी शैक्षणिक कार्यों में सक्रिय रूप से संलग्न हैं, भाग लिया। यह संगोष्ठी भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित की गई थी।

रांज्य सरकार ने इसी विषय पर सन् १९५८-५९ में जिला स्तर पर २१ तथा सम्भागीय स्तर पर ४ संगोष्ठियाँ आयोजित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

मध्यभारत के इतिहास का १४ रुपये मूल्य निर्धारित

पूर्ववर्ती मध्यभारत शासन द्वारा प्रकाशित 'मध्यभारत का इतिहास' भाग १, अब १४ रुपये, प्रति कापी की दर से विक्रयार्थ उपलब्ध है। ६३८ पृष्ठों की इस पुस्तक में भूतपूर्व मध्यभारत क्षेत्र के इतिहास का प्रागैतिहासिक काल से ३५० ईस्वी तक का विस्तृत वर्णन है। इसमें २ नक्शे, २ रंगीन चित्र तथा १२३ एकरंगे चित्र हैं, जो आर्ट पेपर पर छापे गये हैं।

रीवा में जिलाधीशों का सम्मेलन

रीवा संभाग के सूखा-ग्रस्त क्षेत्रों में चल रहे सहायता-कार्यों की प्रगति पर विचार-विमर्श करने के लिये संभाग के सूखा प्रभावित पांचों जिलों–रीवा, सतना, पन्ना, सीधी एवं शहडोल के जिलाधीशों का एक सम्मेंलन दिनांक २३ जून १९५८ को रीवा में हुआ।

वन एवं नैसर्गिक साधन मंत्री श्री शम्भुनाथ शुक्ल ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। रीवा संभाग के आयुक्त ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुये कहा कि इस संभाग के सूखा प्रभावित क्षेत्रों में सहायता-कार्य प्रारम्भ करने तथा सस्ते अनाज की दूकानें खोलने के लिये लगभग तीस लाख रुपये की धनराशि रखी गई थी। कुल १,८१९ सहायता-कार्य प्रारम्भ किये गये थे, जिनमें से ९६३ कार्य पूरे होचुके हैं। केवल सीधी जिले में ही ३५० सहायता-कार्य प्रारम्भ किये गये, जिनसे हजारों व्यक्तियों को जीविका प्राप्त हुई, इसके अतिरिक्त सीधी जिले में सस्से अनाज की ८३ दूकानें भी खोली गई।

जिलाधीशों ने यह निश्चय किया कि सहायता-कार्यों को वर्षा प्रारम्भ होने तक चालू रखा जावे। सुपु. इंजीनियर तथा अन्य अधिकारियों ने भी सम्मेलन में भाग लिया।

हैजे के १,४७,००० टीके लगाये गये

दुर्ग जिले में हैजे की भीषण व्याधि को फैलने से रोकने के लिये जिला चिकित्सा अधिकारियों द्वारा एक वृहद् एवं प्रभावपूर्ण अभियान चलाया जारहा है। इस महामारी की रोकथाम के लिये सब सहकारी और गैर सरकारी चिकित्सकों को इस काम में लगाया गया है और उन्हें आवश्यक दवाइयाँ दी गई हैं। सहायक चिकित्सा अधिकारी सफाई-व्यवस्था निरीक्षक, ग्राम सेवक और जनपद के टीका कर्मचारी जिले भर में दौरा कर रहे हैं और बहुंसंख्या में लोगों को टीके लगाकर उन्हें निरोधक उपाय अपनाने की सलाह दे रहे हैं। दिनांक २० जून १९५८ तक कुल १,४७,००० लोगों को टीके लगाये जा चुके हैं।

इसके अतिरिक्त, ३७६ पीने के पानी के कुओं को रोगाणुरहित किया गया है और ग्राम-तालावों जो नहरों से जुड़े हैं, साफ करके पुनः भर दिया गया है। निरोधक उपाय के रूप में आने जाने वाले लोगों को टीके लगाये जा रहे हैं।

न्यायालय तहसील सबलगढ़

प्र० क्र० ४०५।५७—१८।२०

माधौसिंह वल्द अमरसिंह, कौम ठाकुर, साकिन नोरावली खैरोन, परगना सबलगढ़ प्रार्थी।

विरुद्ध

फोदलिया वल्द हरज्ञान, चमार, साकिन नोरावली खैरोन, परगना सबलगढ़ विपक्षी.

फोदलिया वल्द हरज्ञान, चमार, साकिन नोरावली खैरोन के नाम।

क्योंकि वादी ने आवेदन-पत्र इस न्यायालय में धारा ३८ (२) जमींदारी समाप्ति विधान के अन्तर्गत पक्के कृषक के स्वत्व प्राप्ति हेतु प्रस्तुत किया है।

इसलिए आपको सूचना दी जाती है कि आप खुद या अभिभाषक द्वारा जो प्रकरण से परिचित हो, दिनांक २३ जुलाई १९५८, वक्त ११ बजे इस न्यायालय में उपस्थित होकर आवेदन-पत्र के विरुद्ध कारण दिखाओ। अगर ऐसा न करेंगे तो उपरोक्त आवेदन-पत्र पर आपकी अनुपस्थिति में आदेश दिया जावेगा,

आज दिनांक ४ जून १९५८ को मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा से जारी किया गया।

वीरेन्द्रसिंह यादव,
नायब तहसीलदार,
परगना सबलगढ़.

२९२—३०

कोमल चमड़ीके
बाल निकालनेके लिये
बादशाही
साबू, पावडर, लोशन
सर्वोत्तम है
र. नं ५२९

सी. सी. महाजन एन्ड कम्पनी, बम्बई-२

ग्वालियर मेला तथा प्रदर्शिनी ग्वालियर, म. प्र.

फोन नं. ५५८
तारः—३६

ग्वालियर का सुप्रसिद्ध वार्षिक मेला

मध्यप्रदेश शासन के तत्वावधान में ग्वालियर का सुप्रसिद्ध "मेला तथा प्रदर्शिनी" का आयोजन सदैव की भांति दिनांक २० दिसम्बर १९५८ से १४ जनवरी १९५९ तक किये जाने का निश्चय किया गया है।

यह मेला वर्षानुवर्ष प्रगतिपथ पर अग्रसर होता आ रहा है। इस वर्ष भी मेले का आयोजन वैशिष्ठ्यपूर्ण एवं आकर्षक ढंग से जिसमें विविध प्रदर्शिनियां, सांस्कृतिक कार्यक्रम, मल्लयुद्ध आदि किये जाने का विचार है।

यह मेला हर प्रकार की स्थायी सुविधाओं के लिए उत्तरी भारत में प्रसिद्धि प्राप्त है।

सर्व-साधारण के जानकारी के हेतु यह विज्ञापन प्रकाशित किया जाकर निवेदन है कि इस वर्ष के मेले के संबंध में यदि कोई महानुभाव अपने कोई सुझाव भेजना चाहें तो वे जुलाई १९५८ के अंतिम सप्ताह तक भेजने का कष्ट करें व मेले को हर प्रकार से सफलीभूत बनाने में सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

सी. एम. खार,
सेक्रेटरी.
एम.ए., एलएल.बी.

२९५—३०

कार्यालय टप्पा तहसील अ. बडोदिया, जिला शाजापुर

मि० नं० ४२।५७—१८।२०

जगन्नाथ पिता काशीराम खाती, उ. कृ. निवासी पोलाय कलां वादी.

भागीरथ पि. उकार, खाती कृषक पोलाय कलां फौत वारिस मु. तुलसीबाई पति सांवत, खाती नि. मकोडिया, पगरना देवास प्रतिवादी.

वाद धारा ३८ ज. स. वि. २००८.

नोटिस

बनामः—भागीरथ पि. उकार खाती, कृषक पोलायकलां फौत वारिस मु. तुलसीबाई पति सांवत जाति खाती निवासी मकोडिया, परगना देवास।

जोकि उपरोक्त पते से तुमको जरिये सूचना पत्र के इत्तला दी गई व वहां मौजूद न होने से जरिये इस नोटिस के सूचित किया जाता है कि तुम्हारे विरुद्ध आराजी नं. ६३२–१–॥, ग्राम पोलायकलां की भूमि पर वादी जगन्नाथ पिता काशीराम, खाती, उपकृषक, निवासी पोलायकलां पेश होते टप्पा कार्यालय में ज. दी. स. वि. २००८ वि. की धारा ३ के अन्तर्गत प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत कर पक्के कृषक के स्वत्व चाहे हैं तथा तुम्हारा उपरोक्त पते पर पता न मिलने से पुनः तारीख पेशी २३ जुलाई १९५८ नियत की जाकर जरिये नोटिस सूचना दी जाती है कि जो कोई प्रतिवादीगण उक्त आराजी का अपनें को वारिस समझता हो वह तारीख पेशी २३ जुलाई १९५८ को स्वयं या किसी योग्य अभिभाषक या ऐसे व्यक्ति द्वारा जो प्रकरण के परिस्थितियों से पूर्ण तया परिचित हो उपस्थित होकर पैरवी करें, अन्यथा क्षतिपूर्ति धन शासन खाते जमा किया जावेगा, तत्पश्चात् कोई आपत्ति श्रवण योग्य न होगी।

बिश्वनाथ मण्डलोई,
नायब तहसीलदार, टप्पा अवन्तीपुर,
बड़ोदिया

मध्यप्रदेश सन्देश
में
विज्ञापन देकर लाभ उठाइए।

महाकोशल में माध्यमिक शालाओं का पुनर्गठन

अंग्रेजी अनिवार्य होगीः आठवीं कक्षा जुड़ेगी

नवीन मध्यप्रदेश राज्य में प्राथमिक शिक्षा के पुनर्गठन के परिणामस्वरूप महाकोशल-क्षेत्र में स्थित माध्यमिक शालाओं में पांचवीं कक्षा नहीं रहेगी। यह कक्षा प्राथमिक शालाओं में मिलादी जायगी। अतः अब सारी माध्यमिक शालायें छठवीं कक्षा से आरम्भ होंगी। यहाँ यह स्मरणीय है कि अब तक महाकोशल में तीन प्रकार की माध्यमिक शालायें रही हैं—

१. इंडियन मिडिल स्कूल :–(कक्षा पांचवी से छठवीं तथा कुछ स्थानों में आठवीं कक्षा भी) इन शालाओं में कहीं अंग्रेजी ऐच्छिक विषय था और कहीं नहीं था। यहां समन्वित पाठ्यक्रम के अनुसार पढ़ाई होती है।

२. सीनियर बेसिक स्कूल :–कक्षा ५ से ७ तक तथा कुछ स्थानों में जनपद द्वारा संचालित शालाओं में आठवीं कक्षा भी रहती थी। इन शालाओं में से कुछ में अंग्रेजी ऐच्छिक विषय रहता था और कुछ में नहीं रहता था। इन शालाओं का पाठ्यक्रम हिन्दुस्तानी तालीमी संघ द्वारा निर्धारित होता था।

३. इंडियन इंग्लिश मिडिल स्कूल अथवा उच्च शालाओं के माध्यमिक विभाग–इन शालाओं में पांचवीं से आठवीं तक कक्षायें होती हैं तथा अंग्रेजी अनिवार्य विषय रहता है। समन्वित पाठ्यक्रम के अनुसार इन शालाओं में पढ़ाई होती है। यह निश्चय किया गया है कि इंडियन मिडिल स्कूल तथा सीनियर बेसिक स्कूलों में भी आठवीं कक्षा ही होंगी तथा अंग्रेजी एक अनिवार्य विषय होगा। सीनियर बेसिक स्कूल हिन्दुस्तानी तालीमी संघ द्वारा निर्धारित पाठ्क्रम के अनुसार शिक्षा देते रहेंगे तथा वे अपने विशिष्ट नामों से ही पुकारे जायँगे। अब यह प्रस्ताव किया गया है कि इंडियन मिडिल स्कूल और इंडियन इंग्लिश मिडिल स्कूलों के बीच का अन्तर समाप्त कर दिया जाये। अब इन दोनों प्रकार के स्कूलों को मिडिलस्कूल कहा जायेगा तथा उसमें छठवीं से आठवीं कक्षायें होंगी और अंग्रेजी अनिवार्य विषय रहेगा।

अभी, मध्यप्रदेश में लगभग ३३० गैर सरकारी इंडियन मिडिल स्कूल और लगभग ६० सरकारी इंडियन स्कूल और सीनियर बेसिक स्कूल हैं, जिनमें अभी तक आठवीं कक्षा नहीं है। इन सब शालाओं में आगामी सत्र से आठवीं कक्षा आरम्भ करने का प्रस्ताव है।

झाबुआ जिला परामर्शदात्री समिति की बैठक

झाबुआ जिला परामर्शदात्री समिति की प्रथम बैठक जिलाधीश की अध्यक्षता में अभी हाल में झाबुआ में सम्पन्न हुई, जिसमें मुख्य रूप से सभी विभागों द्वारा सन् १९५८-५९ में किये जानेवाले कार्यों पर विचार-विमर्श किया गया और निर्धारित लक्ष्यों के प्रति सहमति प्रकट की गई। इस अवसर पर जिलाधीश ने समस्त शासकीय एवं अशासकीय व्यक्तियों से अपील की कि सभी मिलकर योजना-कार्यों को सफलीभूत बनाने में अपना योगदान दें।

परामर्शदात्री समिति की बैठक में सर्व प्रथम प्रत्येक विभाग ने जिला स्तर पर अपनी योजनाएँ प्रस्तुत कीं। पंचायत विभाग नवीन वर्ष में ग्रामीण विकास-कार्यक्रम के अन्तर्गत १,५३,००० रुपये तथा स्थानीय विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत २६ हजार रुपये व्यय करेगा। योजनानुसार प्रत्येक दो ग्राम-पंचायतों पर एक मंत्री रखा जायगा, ताकि ग्राम-पंचायतों का कार्य अधिक व्यवस्थित किया जासके। इस योजनानुसार मंडल झाबुआ में ९१ ग्राम-पंचायत मंत्री नियुक्त किये जायँगे।

थांदला धोबीघाट डेम, पंपावती डेम, अलीराजपुर रपट तथा स्टाप डेम के निर्माण के के लिये कुल उन्नीस हजार रुपये तथा थांदला, जोबट एवं पेटलावद में रपट-निर्माण के लिये ६,५२५ रुपये की स्वीकृति प्रदान की गई।

पशु-पालन एवं पशु-चिकित्सा विभाग द्वारा इस वर्ष रायपुरिया पशु मेले के अवसर पर एक प्रदर्शनी लगाई जायगी एवं पशुओं में माता-उन्मूलन-कार्य के लिये बासठ हजार रुपये का प्रावधान किया गया है।

आदिम जाति कल्याण विभाग, मंडल झाबुआ में केन्द्रीय योजना के अन्तर्गत २,४५,००० रुपये तथा राज्य-योजना के अन्तर्गत २,३८,००० रुपये व्यय करेगा। यह रकम झाबुआ में गुप्त रोगों के लिये यूनिट की स्थापना, हरिजन-आदिवासी सहकारी समितियों की सहायता, आदर्श झोंपड़ों के निर्माण, जलकष्ट-निवारण, छात्रवृत्तियाँ तथा औद्योगिक प्रशिक्षण-केन्द्रों की स्थापना पर खर्च की जायगी। उद्योग विभाग द्वारा २७,००० रुपये, शिक्षा विभाग द्वारा १,०७,००० रुपये स्वास्थ्य विभाग द्वारा ४,७०,०००रुपये, सहकारिता विभाग द्वारा १६,६९० रुपये, लोक-निर्माण विभाग द्वारा सड़क-निर्माण कार्य पर ४,२२,००० रुपये तथा सिंचाई-योजनाओं पर ३ लाख रुपये खर्च किये जावेंगे।

उपरोक्त योजनाओं के अन्तर्गत जोबट स्थित कालीन केन्द्र में इस वर्ष से उत्पादन शुरू किया जायगा, अलीराजपुर में एक परिवार-नियोजन-केन्द्र की स्थापना की जायेगी तथा सहकारी समितियों को ऋण व सहायता प्रदान की जायगी। कृषि-विभाग खेतों की मेढ़ बाँधने के कार्यक्रम पर बत्तीस हजार रुपये व्यय करेगा एवं उत्पादन वृद्धि कीविविध परियोजनाओं पर कुल २,८६,००० रुपये व्यय करेगा।

लोक-कर्म विभाग, झाबुआ मंडल में झिरी बंधान तथा औलाद थापली व वोलास टेंक-निर्माण कार्य पर कुल २ लाख रुपये तथा नाहतरा व सौतेर डेम पर १,२०,००० रुपये व्यय करेगा। इसके अलावा मथवाड़-छपतला मार्ग का सर्वे, झाबुआ-अनास-पिटोल मार्ग, थांदला-कुशलगढ़ मार्ग तथा अलीराजपुर-चांदपुर मार्ग का निर्माण-कार्य पूर्ण करवाया जायगा।

बैठक में शासकीय अधिकारियों के अतिरिक्त मंडल सरपंच-विधान-सभा सदस्य, नगरपालिका सभापति तथा केन्द्र सरपंचों ने भाग लिया।

ओलों से पीड़ितों को सहायता

राज्य सरकार ने जबलपुर संभाग के आयुक्त को पाँच हजार रुपये की धनराशि सौंप दी है, जो ३ मार्च १९५८ को जबलपुर जिले के कुछ गांवों में गिरे हुए ओलों से जिन व्यक्तियों की क्षति हुई है, उनकी सहायता करने के लिये व्यय की जायगी।

कार्यालय टप्पा तहसील बडोदिया

मि० नं० ४१।५७—१८।२०

उमरावसिंह पिता बलवन्तसिंह, खाती, उपकृषक, ग्राम पोलाय कलां वादी.

बनाम

भागीरथ पुत्र उंकार, खाती, पक्का कृषक, ग्राम पोलायकलां, मृत वारिस मु. तुलसीबाई पति सावंत, खाती, ग्राम मकोडिया, परगना देवास, प्रतिवादी ।

वाद धारा ३८, ज. स. वि. २००८.

नोटिस

बनामः—भागीरथ पुत्र उंकार, खाती, पक्का कृषक, ग्राम पोरायकलां, मृतक वारिस मु. तुलसीबाई पति सावंत, खाती, ग्राम नि. मकोडिया, परगना देवास ।

जोकि उपरोक्त पते से तुमको जरिये सूचना-पत्र के इत्तला दी गंई वहां मौजूद न होने से जरिये इस नोटिस के सूचित किया जाता है कि तुम्हारे विरुद्ध आराजी नं. ६३२—२, रकबा ।१, ग्राम पोलायकलां की भूमि पर वादी उमरावसिंह पि. बलवन्तसिंह, खाती, उप कृषक, पोलायकलां पेश होने टप्पा क्रार्यालय में ज. स. वि. २००८ वि की धारा ३८ के अन्तर्गत प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत कर पक्के कृषक के स्वत्व चाहे हैं तथा तुम्हारा उपरोक्त पते पर पता न मिलने से पुनः तारीख पेशी २४ जुलाई १९५८ नियत की जाकर जरिये नोटिस सूचना दी जाती है कि जो कोई प्रतिवादीगण उक्त आराजी का अपने को वारिस समझता हो वह तारीख सदर को स्वयं या किसी योग्य अभिभाषक या ऐसे व्यक्ति द्वारा जो प्रकरण में उरिस्थित होकर पैरवी करें अन्यथा क्षतिपूर्ति धन शासन खाते जमा किया जावेगा तत्पश्चात् कोई आपत्ति श्रवण योग्य न होगी ।

विश्वनाथ मण्डलोई,

नायब तहसीलदार, टप्पा अवन्तीपुर बड़ोदिवां.

२९६—(३०)

यदि आप भारत के हृदय स्थल मध्यप्रदेश
के
गौरव मय अतीत की गाथाओं से परिचय प्राप्त करना चाहते हैं
तो इस विभाग द्वारा प्रकाशित
'मध्यभारत का इतिहास (प्रथम भाग)'
पढ़िये । (पृष्ठ संख्या ६३८ चार रंगों का कलापूर्ण आकर्षक आवरण
बाग गुफा के ३ तिरंगे चित्र व अन्य अनेक अप्राप्य
प्राचीन चित्रों से सुसज्जित)
मूल्य चौदह रुपये (डाक व्यय दो रुपये आतिरिक्त)
प्राप्ति स्थानः—
व्यवस्थापक,
प्रकाशन शाखा, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय,
जयाजी चौक, ग्वालियर म० प्र०.

सूखामृत (रजिस्टर्ड)

सूखा व अन्य बाल रोगों की अत्यन्त लाभप्रद औषध बच्चों के दांत आसानी ने निकलते हैं। समस्त मध्यप्रदेश में एजेन्टों की आवश्यकता है।

श्री धनसिंह आयुर्वेद भवन, बरई-ग्वालियर भोपाल, रतलाम, रीवां, छतरपुर व समस्त भारत में एजेन्सी देना है

सफेद दाग

यह ऐसे निकल जाते हैं कि वे कहां थे इसका पता भी नहीं लगता। भगवान जी जैन पाचोरा (खानदेश) की पुत्री के सफेद कोढ़ के दाग अच्छे हो गये और आपने हमको ५१) इनाम दिया। ऐसे कई इनाम मिले। मू० ६), विवरण-पत्र मुफ्त मंगावें। नक्कालों से सावधान रहें। वैद्य [illegible]. आर. बोरकर,. आयुर्वेद भवन (२५) मु. पो. मंगरूलपीर, जि. आकोला (विदर्भ)

न्यायालय तहसील सबलगढ़

प्र० क्र० ४०६।५७—१८।२०

कल्ला, किशोरी, फोसू वगैरा, चमार, साकिन खिरका, परगना सबलगढ़ प्रार्थीगण.

विरुद्ध

जींगा वल्द चोखरिया, कौम तेली, साकिन टेंटरा, परगना सबलगढ़ विपक्षी ।

जींगा वल्द चोखरिवा, कौम तेली, साकिन टेंटरा, परगना सबलगढ़ के नाम.

क्योंकि वादीगण ने आवेदन-पत्र इस न्यायालय में धारा ३८ (२) जमींदारी समाप्ति विधान के अन्तर्गत पक्कें कृषक के स्वत्व प्राप्ति हेतु प्रस्तुत किया है ।

इसलिए आपको सूचना दी जाती है कि आप खुद या अभिभाषक द्वारा जो प्रकरण से परिचित हो, दिनांक २३ जुलाई १९५८, वक्त ११ बजे इस न्यायालय में उपस्थित होकर आवेदन-पत्र के विरुद्ध कारण दिखाओ। अगर ऐसा न करेंगे तो उपरोक्त आवेदन-पत्र पर आपकी अनुपस्थिति में आदेश दिया जावेगा ।

आज दिनांक ४ जून १९५८ को मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा से जारी किया गया.

वीरेन्द्रसिंह यादव,

२९१—(३०) नायब तहसीलदार,

कामदिलाऊ दफ्तरों के माध्यम से राज्य सेवा में कर्मचारियों की भर्ती

काम दिलाऊ दफ्तरों की सेवाओं का अधिक प्रभावकारी ढंग से लाभ उठाने की दृष्टि से राज्य-सरकार ने अपने एक परिपत्र में अपने सभी सरकारी विभागों, विभागीय प्रमुखों, आयुक्तों तथा जिलाध्यक्षों को यह निर्देश दिया है कि जिन स्थानों की एक मास से भी अधिक समय तक रिक्त रहने की सम्भावना हो और जिन्हें पदोन्नति द्वारा अथवा लोक सेवा आयोग के माध्यम से भरना आवश्यक न हो, उन सब रिक्त स्थानों की अधिसूचना काम दिलाऊ दफ्तरों को ही जाए। काम दिलाऊ दफ्तर योग्य उम्मीदवारों की सूची प्रस्तुत करेगा। शासकीय विभागों द्वारा रिक्त स्थानों के लिए आवश्यक कर्मचारियों की माँग उन काम दिलाऊ दफतरों को भेजी जावेगी जिनके सीमा-क्षेत्र में स्थान रिक्त होंगे।

स्मरण रहे कि राज्य में स्थित सब काम-दिलाऊ दफ्तर जो पहले भारत सरकार के अन्तर्गत थे, दिनांक १ नवम्बर १९५६ से राज्य सरकार द्वारा ले लिए गए हैं।

राज्य के सभी जिलों में काम दिलाऊ दफ्तर नहीं हैं, इसलिए राज्य सरकार ने निर्देश दिया है कि यद्यपि यथासम्भव राज्य कर्मचारियों की नियुक्ति उन व्यक्तियों में से की जाए जिनकी काम दिलाऊ दफतरों ने सिफारिश की है, अधिकारीगण अन्य उम्मीदवारों के दावों पर भी, उनकी योग्यता के आधार पर विचार कर सकेंगे।

मंडला के किसानों को राहत

ओलों तथा अपर्याप्त वर्षा से फसल को क्षति पहुँचने के कारण राज्य-शासन ने मंडला जिले में भू-राजस्व में छूट, स्थगन और पुनर्स्थगन के लिए स्वीकृति प्रदान की है।

जिले के ८० ग्रामों में शासन ने १०,९३७ रुपये की रवी-किश्तों की लगान माफ कर दी है। वैसे ही, सरकार ने १,७९० गांवों में सन् १९५८-५९ की रबी किश्त तक ३,३०,९७० रुपये के भू-राजस्व की वसूली का स्थगन मंजूर किया है। सन् १९५६-५७ की रबी किश्त की १,६८,२६७ रुपये के लगान की वसूली १ साल के लिए पुनः स्थगित कर दी गई है।

OFFICE OF THE DIRECTOR OF PUBLIC INSTRUCTION, MADHYA PRADESH

ADVERTISEMENT

Recruitment of Teachers for Secondary Schools

The recruitment of teachers for Secondary Schools is being made in different regions of the State according to the procedure obtaining in each region prior to the re-organisation. It is necessary to introduce uniformity in the procedure for recruitment. It has therefore, been decided that every Divisional or Regional Educational Officer (Deputy Director of Public Instruction and Instpectresses of Schools of the reijon in Madhya Bharat, Assistant Director of Public Instruction, Rewa, Divisional Superintendents of Education and Inspectresses of Schools i Mahakoshal and Deputy Director of Public Instruction in charge of the Bhopal Region, Bhopal) will maintain a register of candidates for the post of Secondary School teachers. The register will be maintained for each academic session *i. e.* from 1st July to 30th June. Applications will be entered in the register as and when they are received and acknwoledgements will be sent to the aplicants (if they send a self-addressed stamped envelopes with the application.) showing the serial number at which their names have been registered.

2. The candidates for appointment will be selected by a Selction Committee according to the procedure which will be issued shortly.

3. Candidates who desire to be registered for appointment to the post of Secondary School teachers should submit their applications to the appointing Officer concerned in the region in which they want to serve so as to reach that Office on or before the 15th July 1958 giving the following details with supporting documents.—

(*a*) Full name and address,

(*b*) Age and domicile.

(*c*) Full details of several examinations passed particularly the number of marks obtained at the last examination.

(*d*) Experience of teaching in a recognised School.

(*e*) Special qualifications like a recognised certificate in Drawing, for Physical Education, as a Scout Master, as N. C. C. cadet or Officer, as representing the Games and sports for District, Division or the State etc.

(*f*) Whether the candidate is a member of the Scheduled Caste or Tribe.

Note.—(*i*) If a candidate wants to be considered in more divisions or regions or than one he will have to apply to each of the offices of the appointing authority concerned.

(*ii*) The academic attainments of students will be given the highest priority in making the selection. Therefore, full details should be furnished. In the absence of details an adverse presumption will be drawn.

(297—30-31)

E. W. FRANKLIN,
Director of Public Instruction,
Madhya Pradesh.

GOVERNMENT OF MADHYA PRADESH

FINANCE DEPARTMENT

NOTIFICATION

4½ per cent. Madhya Pradesh State Development Loan, 1970, issued at Rs. 99.00 nP. and redeemable at par on 15th July 1970.

1. **Object.**—The loan is required for financing development schemes under the Second-Five Year Plan

2. **Security for loan.**—In accordance with Article 293 (1) of the Constitution of India, the loan will be secured on the Consolidated Fund of the State of Madhya Pradesh.

The consent of the Central Government has been obtained to the floatation of this loan as required by Article 293(3 of the Constitution of India

3. **Description.**—The loan will be briefly described as the 4½ per cent. Madhya Pradesh State Development Loan, 1970.

4. **Amount of issue.**—The amount of the loan will be Rs. 200 lakhs.

5. **Issue price.**—The issue price will be Rs. 99.00 nP. for every Rs. 100 of the loan applied for.

6. **Subscriptions.**—Subscriptions will be received from the 15th July 1958 to the 19th July 1958 both days inclusive Subscriptions may be in the form of cash or of securities of the 3 per cent. Madhya Pradesh Loan, 1958. The loan will be closed without notice as soon as it appears that the total subscriptions amount approximately to Rs. 200 lakhs and in any case not later than the close of business on the 19th July 1958. The Government reserves the right to retain subscriptions received up to ten per cent. in excess of the sum of Rs. 200 lakhs.

7. **Partial allotment.**—If the total subscriptions exceed the sum of Rs. 220 lakhs, partial allotment will be made to subscribers in cash. If partial allotment is made, the balance of the sum paid at the time of application will be refunded as soon as possible after allotment. No interest will be paid on the amounts so refunded.

8. **Date of repayment.**—The loan will have a currency of 12 years from the 15th July 1958 and will be repaid at par on the 15th July 1970.

9. **Interest.**—The loan will bear interest at the rate of 4½ per cent., per annum from the 15th July 1958. Interest will be payable half yearly on the 15th January and 15th July and will be subject to income-tax.

Refunds of income-tax will be obtainable by holders of the loan who are not liable to income-tax or who are liable to income-tax at a lower rate. An individual holder can also obtain on application a certificate from the Income-tax Officer of the District authorising deduction of income-tax at the rate applicable in his case when tax will be deducted at that rate instead of at the maximum rate.

10. **Place of payment of interest.**—Interest will be paid at any treasury or sub-treasury in the State of Madhya Pradesh and at the Public Debt Offices at Bombay, Calcutta, New Delhi, Madras and Bangalore.

11. **Conversion terms.**—Securities of the 3 per cent. Madhya Pradesh Loan, 1958 will be accepted in payment of subscriptions to the 4½ per cent. Madhya Pradesh State Development Loan, 1970 at Rs 100 per Rs 100 nominal of the loan tendered. If the cash value of the securities tendered is not an exact multiple of the issue price per cent. of the new loan applied for, the tenderer will receive in cash at the time of issue of the new securities the amount by which the value of the the loan tendered exceeds the nearest lower multiple of the issue price

Interest due on the securities of the 3 per cent , Madhya Pradesh Loan, 1958 tendered for conversion will be paid up to and including the 14th July 1958 at the rate of 3 per cent.. per annum at the time of issue of the new securities.

12. Forms of securities.—The loan will be issued in the form of—

(1) Stock; the applicants for which will be given Stock Certificates, or

(2) Promissory Notes

If no preference is stated by the applicants, the securities will be issued in the form of Promissory Notes which are transferrable by endorsement.

13. Applications for loan.—(1) Applications for the loan must be for Rs. 100 or for a multiple of that sum.

(2) Applications will be received at—

(*a*) The offices of the Reserve Bank of India, Bombay, Calcutta, New Delhi, Madras and Bangalore;

(*b*) the branches of the State Bank of India within the State of Madhya Pradesh; and

(*c*) the Government treasuries and sub-treasuries in the State of Madhya Pradesh at places where there is on branch of the State Bank of India.

(3) Applications may be made in the form attached hereto (printed copies of which are available at the places mentioned in sub-paragraph (2) above) or in any other form which states clearly the amount and description of the securitie required, the full name and address of the applicant and the Public Dept Office or treasury or sub-treasury at which he desires that interest shall be paid.

14. Method of paying subscriptions.—Applications should be accompanied by the necessary payment in any of the forms mentioned below:—

(*a*) *Cash or Cheques.*—Cheques tendered at Offices of the Reserve Bank of India or the State Bank of India or at the treasuries should be drawn in favour of the Bank or the Treasury Officer concerned. When a cheque is tendered in payment of the application money, the security will not be issued until the amount of the cheque has been realised.

(*b*) 3 *per cent. Madhya Pradesh Loan*, 1958.—Applicants who tender securities in payment must transfer such securities to Government.—

(*i*) in the case of Stock Certificates by signing the form of transfer deed on the reverse of the Certificate before a witness;

(*ii*) in the case of Promissory Notes, by endorsing them in the manner indicated below:—
"Pay to the Governor of Madhya Pradesh."

15. Brokerage.—Brokerage will be paid at the rate of 12 Naye Paise per cent. to recognised banks and brokers on allotments made in respect of applications for the loan bearing their stamp.

16. Depreciation Fund.—The Government of Madhya Pradesh will provide in each financial year from 1959-60 to 1969-70 inclusive, as sum equal to 1½ per cent. of the total anominal amount of the loan to be used for purchasing the securitie of the loan or cancellation.

17. Sinking Fund.—The Government of Madhya Pradesh will also make such annual contributions to Sinking Fund to be utilised towards the amortisation of their open market loans, as they may from time to time decide to be necessary

18. Public Debt Office.—The State Public Debt Office will be located at the Public Debt Office, Bombay.

By order and in the name of the Governor of
Madhya Pradesh,
M. Y. GODBOLE,
Secy. to Govt., Madhya Pradesh,
Finance Department.

शासन की गतिविधि

मध्यप्रदेश में एम्पलायमेन्ट एक्सचेंज

मध्यप्रदेश शासन द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत सन् १९५७-५८ में विलासपुर, शहडोल, छिंदवाड़ा, कटनी, उज्जैन और रतलाम में एम्लायमेंट एक्सचेंज खोलने की स्वीकृति दे चुका है। सरगुजा, बालाघाट, झाबुआ, खरगोन, छतरपुर, टीकमगढ़ और बैतूल में सन् १९५८-५९ में एम्प्लायमेंट एक्सचेंज खोलने के प्रस्ताव राज्य-शासन के विचाराधीन हैं।

प्रत्येक एम्प्लायमेंट एक्सचेंज से एक रोजगार-सलाहकार समिति भी संबद्ध रहती है, जिसका अध्यक्ष जिलाध्यक्ष होता है। इस समिति में मालिकों, मजदूरों, स्थानीय संस्थाओं, महिला संगठनों आदि के प्रतिनिधि तथा डी. एस. एस. ए. बी. के सेक्रेटरी और एम्प्लायमेंट ऑफिसर रहते हैं। इन समितियों की वर्ष में दो बार बैठक होती है। एक्सचेंज द्वारा किये गये कार्य का सिंहावलोकन किया जाता है तथा एप्लायमेंट अधिकारियों को स्थानीय महत्त्व के प्रश्नों पर सलाह दी जाती है। शिवराव समिति के सुझावों के अनुसार, भारत शासन ने एक नवम्बर १९५६ से एक्सचेंज का प्रशासन संबंधित राज्य-शासन को सौंप दिया है।

यह स्मरणीय है कि राष्ट्रीय एम्प्लायमेंट सेवा का आरम्भ द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् हुआ था, जिसका प्रारंभिक उद्देश्य था कि सेवा-निवृत्त सैनिकों के पुनर्वास की व्यवस्था की जासके। भारत के सभी प्रमुख नगरों में एप्प्लायमेंट एक्सचेंज के दफ्तर खोले गये हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् वे सभी श्रेणियों के बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार दिलाने के लिए खोल दिये गये हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षकों के लिए निवास-व्यवस्था

मध्यप्रदेश-शासन ने ग्रामीण क्षेत्रों में काम करनेवाली महिला शिक्षकों के निवास के लिए गृह-निर्माण की एक विशेष योजना बनाई है। इस कार्यक्रम की अन्तर्गत इस वर्ष राज्य के प्रत्येक तहसील में महिला शिक्षकों के लिए दो क्वार्टर बनाने का प्रस्ताव है। निर्माण का आधार जनता द्वारा अंशदान होगा। जनता को श्रम अथवा धन के रूप में कुल लागत का २५ प्रतिशत अंशदान देना होगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षकों के लिए निवास-व्यवस्था न होना लड़कियों की शिक्षा के प्रसार में महत्त्वपूर्ण रुकावट है। वर्तमान योजना को लड़कियों में शिक्षा-प्रसार की योजना के अन्तर्गत स्वीकार कर लिया गया है और केन्द्रीय शासन द्वारा भी सहायता मंजूर कर ली गई है।

भोपाल सूती मिल का प्रकरण औद्योगिक ट्रिब्यूनल के सुपुर्द

राज्य-शासन ने न्यू भोपाल टेक्सटाइल मिल्स लिमिटेड, भोपाल और कपड़ा मिल मजदूर कांग्रेस, भोपाल के बीच कपड़ा मिल मजदूर कांग्रेस द्वारा मजदूरों को ग्रेच्युटी (पुरस्कार) देने की योजना शुरू करने के संबंध में चल रहे औद्योगिक विवाद को फैसले (एडजुडीकेशन) के लिए औद्योगिक ट्रिब्यूनल को सौंप दिया है।

ट्रिब्यूनल निम्न विषयों पर विचार करेगा:–

१. क्या ग्रेच्यूटी की योजना न्यू भोपाल टैक्सटाइल मिल्स, लिमिटेड भोपाल में कंपनी द्वारा नियुक्त काम करनेवाले मजदूरों के लाभार्थ वहाँ शुरू की जाए ?

२. यदि हाँ, तो योजना की शर्तें और परिस्थितियाँ क्या हों ?

अल्प-बचत अभियान

मध्यप्रदेश में सन् १९५७-५८ में अल्प-बचत अभियान के अन्तर्गत ५१,६१,३०० रुपये की राशि जमा की गई है। उज्जैन जिले में इस अवधि में बीस लाख रुपये के अल्प-बचत सर्टिफिकेट बेचे गये। इस वर्ष रायपुर जिले में डाकघरों के बचत खातों तथा अल्प-बचत योजना के अन्तर्गत १८,६८,७२१ रु. जमा किये गये। इसी प्रकार रायसेन जिले में इस वर्ष अल्प-बचत अभियान के अन्तर्गत १२,९२,५७९ रुपये की रकम लगाई गई।

मध्यप्रदेश में अल्प-बचत अभियान को प्रबल बनाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं और इस सम्बन्ध में विभिन्न जिलों से प्राप्त समाचार बहुत उत्साहजनक हैं।

उच्च शालाओं का उच्चतर माध्यमिक शालाओं में परिवर्तन

शासकीय शालाओं को शासन का निर्देश

राज्य शासन ने राज्य की सभी गैर शासकीय उच्च शालाओं को आगामी सत्र से महाकोशल या मध्यभारत माध्यमिक शिक्षा मंडल का (जैसी भी स्थिति हो) एकीकृत उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम अंगीकृत कर, उच्चतर माध्यमिक शालाओं में परिवर्तित करने का निर्देश दिया है। गैर सरकारी उच्च शालाओं को इस बात का भी आश्वासन दिया गया है कि इस परिवर्तन में हुये अतिरिक्त व्यय पर, सामान्य दर से उन्हें अनुदान सहायता दी जायगी।

इस योजना के फलस्वरूप सन् १९५८-५९ की नई कक्षा के विद्यार्थियों का दल, सन् १९६१ में उच्चतर माध्यमिक शाला (हायर सेकेंडरी स्कूल) परीक्षा में बठेगा।

यहाँ यह स्मरण रखने की बात है कि मध्य-प्रदेश में इस समय २६ उच्चतर माध्यमिक शालाएँ हैं, जिनमें से २० शालाएँ बहुउद्देश्यीय उच्च शालाएँ हैं। आगामी सत्र से ६५ शासकीय उच्च माध्यमिक शालाओं की ग्यारहवीं कक्षा में पूर्व विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रम पढ़ाया जायगा। जो विद्यार्थी साधारण उच्च शाला परीक्षा उत्तीर्ण हो चुके हैं, वे इस वर्ग में भर्ती किए जाएँगे और उच्चतर माध्यमिक शाला परीक्षा अथवा पूर्व विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण होने के पश्चात् ये विद्यार्थी महाविद्यालयों के तीन वर्षीय पाठ्यक्रम के लिए महाविद्यालयों में प्रथम वर्ष में प्रवेश के हकदार होंगे।

गीत

तुम बढ़ो कि अब आराम हो गया है हराम,
पथ के गीतों को पथ में सुनो सुनालो रे!

(१)
युग बीत गया जब कोमल गीतों वाला कवि,
धरती पर रह कल्पना गगन की करता था,
तारों का गजरा बना निशा के आँचल में,
किससे मिलने नीचे आकाश उतरता था,
जब बरखा आई नभ में छाये श्याम मेघ,
कवि भूल स्वयं को गाया करता विरह-गीत,
अपने जलते प्राणों की प्यास बुझाने को,
ढूंढ़ा करता कोई शीतल आभा प्रदीप्त।

(२)
है दूर क्षितिज की बात, कल्पना करो नई,
हम धरा-पुत्र, हमको धरती पर रहना है,
जिस माटी से पाया हमने माँ का दुलार,
उस माटी के ही गीत धरा पर कहना है,
कवि, उठो लेखनी उठा गीत ऐसे गाओ,
निस्पन्द प्राण में झरने जैसे झरें प्राण,
हर खेत कि जिसमें नई फसल लहलहा उठे,
हर काली लम्बी रात चीर उतरे विहान।

(३)
हर हृदय भर उठे साहस जिसमें कूट-कूट,
हर चरण बढ़ चले आगे पाकर नई राह,
हर मनुज-पुत्र के बलशाली भुज फड़क उठें,
हर नई प्रीत में बहे देश की नई चाह,
हर बन्धन की झनझना बेड़ियाँ टूट जायँ,
हर नई जवानी में फैले वह नया जोश,
हर हाथ काम करने को आतुर मचल उठे,
मिल जाय प्राण को भी जादू-सा नया होश।

(४)
अब तड़प न पाये प्राण आह बस बन्द करो,
अब मात्र नहीं रह गये कहीं तुम दीन-हीन,
तुम धरा-पुत्र नभ को धरती पर स्वयं खींच,
अपने पौरुष से किया आज वह भी अभिन्न,
अब नहीं बात करना है चाँद-सितारों से
धरती पर रह धरती से गीत सुनाओ रे,
तट छोड़ चलो मझधारों के जाकर खेलो,
पतवार उठा गुनगुना गीत कुछ गाओ रे!

(५)
फूलों का छोड़ो मोह, शूल से प्यार करो,
जिससे हर पथ का काँटा तुमको बने फूल,
पी स्वयं गरल दे दो रे जग को सुधा दान,
धरती से उठ कर गगन चूम ले चरण-धूल,
हर फसल लहलहा उठी फसल के गीत उठे,
फागुन आया पग पैंजनियाँ झनझना उठी,
गौरी का सुन्दर रूप रंग में दमक उठा,
मृदुकण्ठ रागनी आज गगन में लुटी-लुटी।

(६)
अमराई में कोयल ने छेड़ा मधुर राग,
भींगी भींगी रस भरी जवानी गई मचल,
वातास चला ले मन में वासन्ती उमंग,
हर लहर किरन के संग नाचने लगी विकल,
श्रम का विहान जग गया जगी स्वर्णिम बेला,
धरती माता ने आज सँवारा नया रूप,
खेतों-खलिहानों में छाया है नया रंग,
बिखरी है मानों आज शरद् की नई धूप।

(७)
वह पकी फसल जो लहरों-सी लहराती है,
कर रही बात वह हिलमिल कर पुरवाई से,
बैलों के कण्ठों की घंटी टनटना उठी,
मधुऋतु है कोयल कूक उठी अमराई से,
पड़ गई थाप ढोलक पर हँसिया मचल उठी,
अब भुजा कुदाली उठा खोदती है जमीन,
लो मस्त हथौड़ा उठा तोड़ता है पत्थर,
चल पड़ी प्रगति की ओर कोटि जन की मुहीम।

(८)
हम कोटि-कोटि जन सत्य-अहिंसा के गामी,
है पंचशील में दृढ़ निष्ठा विश्वास अमित,
हम प्रगति पंथ के पथिक, बढ़ रहे कदम बढ़ा,
सूरज ने देखा और देख कर हुआ चकित,
ये बड़े-बड़े पुल, बड़े बाँध हर बड़े काम,
तुम शक्ति-दान दे आओ इन्हें संभालो रे,
तुम बढ़ो कि अब आराम हो गया है हराम,
पथ के गीतों को पथ में सुनो सुनालो रे!

श्री छैलबिहारी गुप्त

Registered No. J. 158
Licenced to post without prepayment

MADHYA PRADESH SANDESH

वार्षिक मूल्य छः रुपये
Licence No. P. P. 1

this Dust Protects your dinner

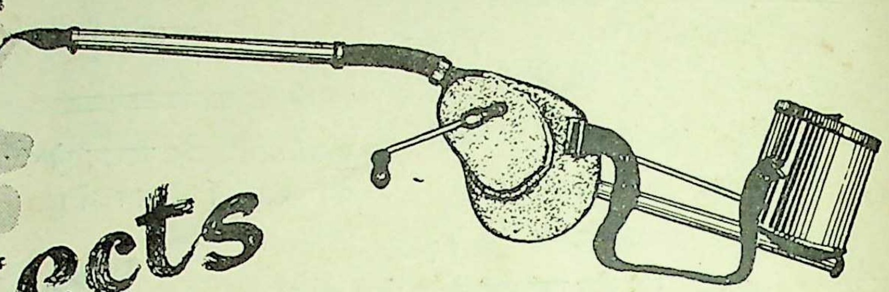

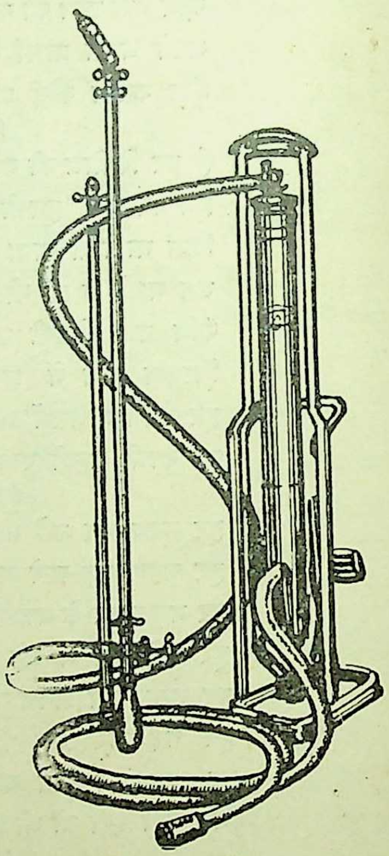

Foot Sprayer

Fine bread, ripe tomatoes, appetizing, mouth-watering fruits and vegetables for your dinner tonight. And yet, if it were not for this Dust, a special type of Dust, blown by a Special Blower, bugs, insects, and locusts might have eaten them before they reached the market.

Dust is made by Dust making Companies, Blowers are made by us.

Gwalior
G.E.W.

Blower is a great name identifying top quality, expected from a highly mechanized workshop.

We also make FOOT PUMPS, STIRRUP PUMPS, etc. for liquid spraying.

Our Blowers and Pumps are being satisfactorily used by Plant Protection Units and farmers all over the State.

You can also depend upon them for the protection of your farms and Plantation.

Prices and details on demand Please !

Grams 'MECHANIC'

GWALIOR ENGINEERING WORKS
GWALIOR

Phone '383'

प्रबंध-सम्पादक—ईश्वरसिंह परिहार, संचालक, सूचना एवं प्रकाशन संचालनालय, मध्यप्रदेश
सम्पादक—अनन्त मराल शास्त्री

प्रकाशक—गुरुप्रसाद दुबे, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय, म० प्र०
मुद्रक—गवर्नमेण्ट रीजनल प्रेस, ग्वालियर
एक प्रति का मूल्य—१३ नये पैसे

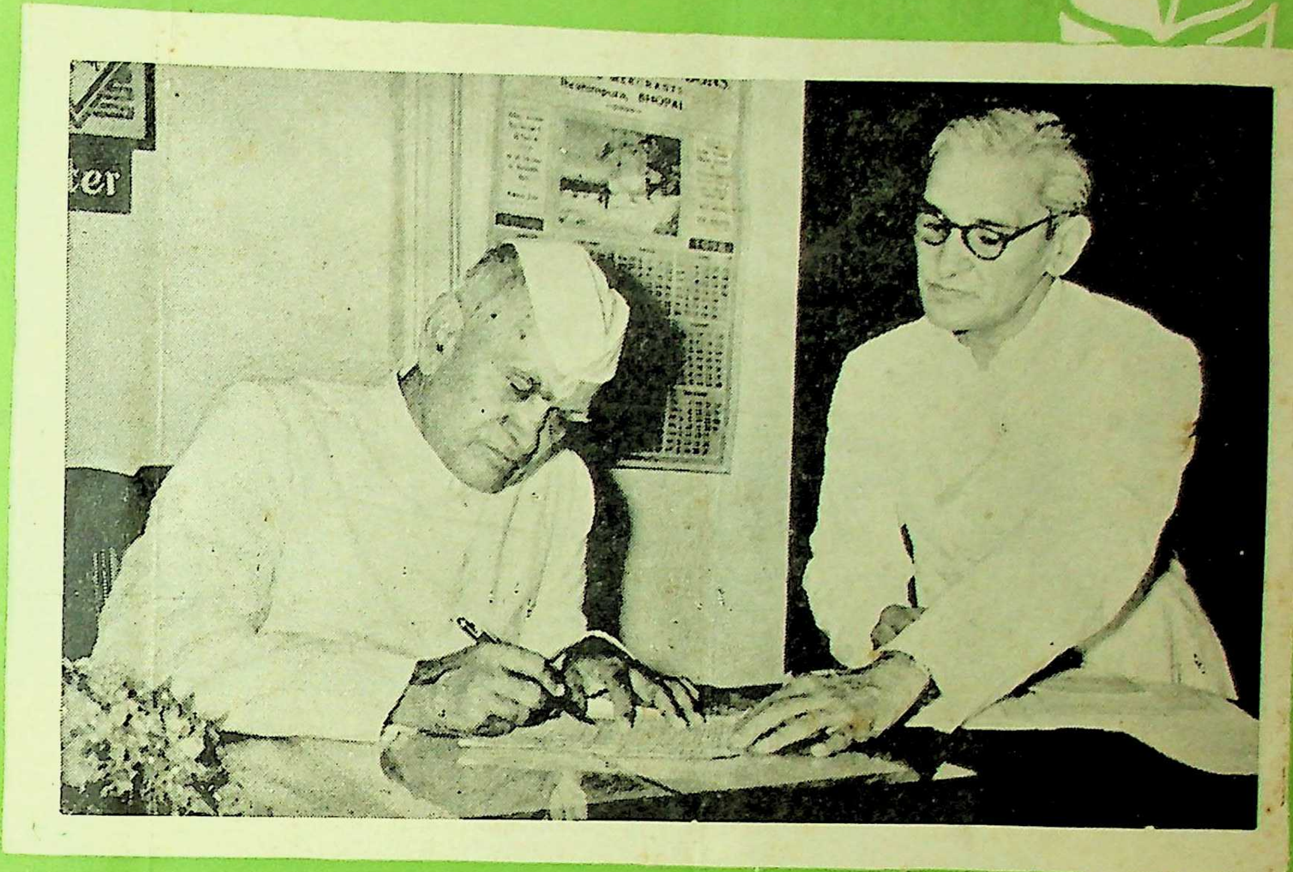

मध्यप्रदेश सन्देश

ग्वालियर, आषाढ़ २१, १८८०
शनिवार, १२ जुलाई, १९५८
वर्ष २ : अंक ३१

छतरपुर-स्थित नवनिर्मित नगर-भवन, जिसका उद्‌घाटन मुख्य मंत्री महोदय ने किया

मुख्य मंत्री डॉ० कैलासनाथ काटजू छतरपुर में हाल ही में नगर-भवन का उद्‌घाटन करते हुए

सचित्र साप्ताहिक

मध्यप्रदेश सन्देश

वर्ष २ } ग्वालियर, आषाढ़ २१, १८८०, शनिवार, १२ जुलाई, १९५८ { अंक ३१

विकास-ऋण

राज्य-शासन ने द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत चल रहे विकास-कार्यों को पूरा करने के लिए दो करोड़ रुपये की धनराशि का सार्वजनिक ऋण जारी करने की घोषणा की है। स्पष्ट है कि यह ऋण इसलिये लिया जारहा है जिससे कि राज्य की जनता की सुख-समृद्धि की जो आधार-शिला विकास-कार्यों के रूप में रखी जारही है, वह दृढ़ता और स्थायित्व प्राप्त करले। इसी स्थायित्व को लाने के लिए द्वितीय पंचवर्षीय योजनान्तर्गत १९० करोड़ रुपये की धनराशि व्यय की जारही है। इस धनराशि में से इस वर्ष ३१.७७ करोड़ रुपये व्यय किये जायेंगे। सभी जानते हैं कि नवनिर्मित इस राज्य की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होते हुए भी योजनान्तर्गत किये जारहे कार्यों के लिए अतिरिक्त विशाल धनराशि की आवश्यकता है, उसकी आंशिक पूर्ति ही सार्वजनिक ऋणों के रूप में की जा सकती है। इस तरह जनता को भी यह अवसर प्राप्त होता है कि वह अपनी सुख-समृद्धि की योजनाओं में सहयोग दे-सके और उनके विषय में अधिक-से-अधिक जानकारी प्राप्त कर सके।

सार्वजनिक ऋण का रूप अपने में आर्थिक लाभ भी लिये हुये है। यह ऋण १५ जुलाई से लिया जायगा और बारह वर्षों बाद १९७० में इसी दिनांक को सममूल्य पर वापिस चुका दिया जायगा। अभी प्रत्येक १०० रुपये के ऋण के लिए ९९ रुपये देने होंगे और १५ जौलाई, १९५८ से ही ४। रुपये प्रतिशत वार्षिक व्याज की दर से ब्याज दिया जाएगा, जो प्रति छह महीनों में १५ जनवरी और १५ जुलाई को चुकाया जायगा। इस तरह ब्याज की धनराशि प्रति छह मास बाद मिलती रहेगी। शुद्ध आर्थिक दृष्टि से ही देखा जाय तो ब्याज की यह दर बड़ी आकर्षक है। इस तरह सार्वजनिक ऋण के अन्तर्गत धन देकर स्वयं के लाभ के साथ-साथ राज्य की उन्नति के लिए भी अप्रत्यक्ष रूप से कार्य करने का अवसर प्राप्त होता है। मुख्य मंत्री महोदय ने जनता से की गई अपनी अपील में यह स्पष्ट कर दिया है कि "इस ऋण में लगाये गये प्रत्येक रुपये से हमारे राज्य में रहनेवाले प्रत्येक स्त्री-पुरुष के सुख और समृद्धि में वृद्धि होगी। इस प्रकार यथार्थतः इस ऋण में धन लगानेवाले हमारे पंचवर्षीय आयोजन के सफल क्रियान्वयन में योगदान देने का भी गौरव प्राप्त कर सकते हैं।" यदि राज्य की आर्थिक स्थिति पर ही विचार किया जाय तो यह स्पष्ट पता चलता है कि वह अत्यन्त सुदृढ़ है। राज्य-शासन द्वारा प्रकाशित एक पत्र-विज्ञप्ति में इस स्थिति को स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि "यद्यपि राज्य-सरकार की भौतिक सम्पत्ति का कोई वास्तविक मूल्यांकन नहीं किया गया है, फिर भी, यह बिना किसी आशंका के माना जा सकता है कि वह राज्य-सरकार के न चुकाये गये दायित्वों से बहुत अधिक है।" इसी तरह यदि राज्य की राजस्व-प्राप्तियों पर विचार किया जाय तो भी पता चलता है कि उनमें नया राज्य बनने के समय से अब तक निरन्तर वृद्धि हुई है, जो राज्य के आर्थिक विकास की परिचायक है। सभी दृष्टिकोणों से विचार करने पर यह स्पष्ट है कि विकास-ऋण में लगाई गई धनराशि सुरक्षित है, क्योंकि राज्य-शासन ने उसकी अदायगी का उत्तरदायित्व लिया है; लाभप्रद है, क्योंकि हर छह महीने बाद ४। प्रतिशत की दर से सुरक्षित ब्याज भी प्राप्त होता है और योजना में हाथ बटाने का एक अवसर भी प्रदान करती है, क्योंकि ऋण-राशि पूर्णतः कृषि और औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि करने की योजनाओं में लगाई जानेवाली है। इससे मध्यम आय के लोगों को भी धन लगाने का एक अवसर मिलता है, क्योंकि कम-से-कम सौ रुपये तक का धन इस ऋण में लगाया जा सकता है। अंत में हम भी मुख्य मंत्री डॉ० कैलासनाथ काटजू के शब्दों में यही कहेंगे कि "इसमें सन्देह नहीं है कि इस राज्य के सभी लोग, चाहे वह अमीर, मध्यम या गरीब वर्ग, किसी के भी क्यों न हों, ऋण-विक्रय के लिए प्राप्त होने के अवसर पर अपनी अधिकतम क्षमता तक रुपया लगाकर, ऋण को पूर्ण करने में अपना अंशदान देंगे।" इस तरह राज्य का प्रत्येक निवासी देश की समृद्धि और उससे संबंधित कार्यों में मनचाहा योग देने में पीछे न रहेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

—मुखपृष्ठ का चित्र—

मुख्य मंत्री डॉक्टर कैलासनाथ काटजू भोपाल में 'पोस्टल सेविंग्ज एकाउन्ट' में चेक से रुपया निकालने की पद्धति का श्रीगणेश करते हुए

अंशदान के प्रत्येक रुपये से जनता की सुखवृद्धि

डा० काटजू द्वारा २ करोड़ रुपये के ऋण में रुपया लगाने की अपील

मुख्य मन्त्री डाक्टर कैलासनाथ काटजू ने राज्य-सरकार द्वारा जारी किये गये दो करोड़ रुपये के ऋण में रुपया लगाने के लिए मध्यप्रदेश की जनता के नाम निम्नलिखित अपील जारी की है :—

मध्यप्रदेश की जनता को यह भलीभाँति ज्ञात है कि राज्य की द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत आरम्भ किये गये विकास-कार्यों के व्यय को पूरा करने के लिए दो करोड़ रुपये का सार्वजनिक ऋण जारी करने का राज्य-सरकार ने निश्चय किया है। अपने राज्य की जनसंख्या को देखते हुए इस ऋण का अनुपात प्रति व्यक्ति एक रुपये से भी कम आता है। इस प्रस्तावित ऋण की शर्त्तें अत्यधिक आकर्षक हैं। इस ऋण का निर्गम मूल्य (इश्यू प्राइज) ९९ रुपये है तथा इस पर १२ साल की पूर्व अवधि में प्रतिवर्ष ४। प्रतिशत के हिसाब से ब्याज मिलेगा।

अतः यह स्पष्ट है कि यदि इसे हम केवल विनियोग ही मानें तो यह प्रस्तावित ऋण लाभदायक एवं आकर्षक हैं। मुझे यह विश्वास है कि जनता इस ऋण में दिये गये योगदान को एक सामान्य विनियोग से अधिक महत्वपूर्ण मानेगी। यह राज्य की संमृद्धि में एक ठोस अंशदान है। समचे ऋण का उपयोग महत्वपूर्ण विकास-योजनाओं को कार्यान्वित करने में किया जायेगा, जिससे कि राज्य की निधि तथा समृद्धि में वृद्धि होगी। राज्य की द्वितीय पंचवर्षीय योजना १९० करोड़ रुपये की है, जिसमें से चालू वर्ष में लगभग ३१.७७ करोड़ रुपये खर्च करने का प्रस्ताव है। चालू वर्ष में जो योजनाएँ आरम्भ की जानेवाली हैं, उनमें कृषि और औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि करने की अनेक योजनाएँ सम्मिलित हैं। मैं जनता को विश्वास दिला देना चाहता हूँ कि इस ऋण में लगाये गये प्रत्येक रुपये से हमारे राज्य में रहनेवाले प्रत्येक स्त्री-पुरुष के सुख और समृद्धि में वृद्धि होगी। इस प्रकार यथार्थतः इस ऋण में धन लगानेवाले हमारे पंचवर्षीय आयोजन के सफल क्रियान्वियन में योगदान देने का भी गौरव प्राप्त कर सकते हैं।

मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि इस राज्य के सभी लोग, चाहे वह अमीर, मध्यम या गरीब वर्ग, किसी के भी क्यों न हों, ऋण विक्रय के लिए प्राप्त होने के अवसर पर, अपनी अधिकतम क्षमता तक रुपया लगाकर, ऋण को पूर्ण करने में अपना अंशदान देंगे।

दो करोड़ रुपये का विकास ऋण जारी

४¼ प्रतिशत ब्याज पर १२ वर्षीय ऋण

मध्यप्रदेश सरकार द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विकास-योजनाओं की आर्थिक पूर्ति के लिए दो करोड़ रुपये का ऋण जारी कर रही है। इस ऋण की मुख्य शर्तें ये हैं:—कि आवेदित ऋण के प्रत्येक १०० रुपये के लिए निर्गम मूल्य (इश्यू प्राइस) ९९ रुपये होगा। इस ऋण की अवधि १५ जुलाई, १९५८ से १२ वर्ष रहेगी और वह १५ जुलाई, १९७० को सममूल्य पर वापस चुका दिया जायगा। इस ऋण पर १५ जुलाई, १९५८ से ४। प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज दिया जायगा। यह ब्याज छः-छः महीनों में १५ जनवरी और १५ जुलाई को चुकाया जायगा। इस ऋण पर आय-कर लगेगा। ऋण के लिए रकमें नकद या चेक के रूप में दी जा सकती हैं और वे रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के बम्बई, कलकत्ता, नई दिल्ली, मद्रास और बंगलौर के कार्यालयों, मध्यप्रदेश राज्य में स्थित स्टेट बैंक आफ इंडिया की शाखाओं तथा मध्यप्रदेश राज्य में जिन स्थानों में स्टेट बैंक आफ इंडिया की शाखा नहीं है, वहाँ सरकारी खजानों और उप-खजानों में स्वीकार की जायँगी।

इस ऋण का पूर्ण विवरण वित्त विभाग की अधिसूचना॰ संख्या ९१४।-४ बी ६।५८, दिनांक २४ जून १९५८ में दिया गया है। यह अधिसूचना उसी तिथि के मध्यप्रदेश राज्य-पत्र के असाधारण अंक में प्रकाशित हुई है, जिसकी प्रतियाँ और आवेदन प्रपत्र उपर्युक्त ऋण स्वीकार करनेवाले कार्यालयों से मिल सकते हैं।

इच्छुक विनियोजकों की सूचना के लिए मध्यप्रदेश सरकार की वित्तीय तथा आय-व्ययक सम्बन्धी स्थिति की निम्नलिखित समीक्षा दी जारही हैं।

राजस्व की स्थिति

राज्य पुनर्गठन अधिनियम, १९५६ के अन्तर्गत जिस तिथि को नवीन मध्यप्रदेश राज्य गठित हुआ था, उस तिथि से अर्थात् १९५६-५७ के अन्तिम ५ मास १९५७-५८ और १९५८-५९ तक राजस्व लेखा पर राजस्व प्राप्तियाँ और व्यय तथा राजस्व आधिक्य अथवा कमी सूचक राशियाँ इस प्रकार हैं :—

(रुपये लाखों में)

	वास्तविक १-११-५६ से ३१-३-५७ तक	संशोधित अनुमान १९५७-५८	आय-व्ययक १९५८-५९
राजस्व प्राप्तियाँ	१९८०.०६	५१०५.५४	५६१६.७९
राजस्व व्यय..	२०७८.३१	५०८१.५५	५५०६.७६
आधिक्य (+) अथवा कमी (—)	—९८.२५	+२३.९९	+११०.०३

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

बाघ गुहाओं का स्तम्भ-शिल्प

—श्री विजयगोविन्द द्विवेदी

बाघ की नौ गुहाएँ तीन-तीन के समूह से एक-एक विहार का निर्माण करती हैं। एक विहार में गुहा क्र० १, २ और ३ हैं। इनमें से गुहा क्र० २ मुख्य निर्माण है और १ एवं ३ उसकी पूरक हैं। दूसरे विहार में गुहा क्र० ४, ५ और ६ हैं, जिनमें से क्र० ४ मुख्य निर्माण है और शेष ५ एवं ६ उसकी पूरक हैं। तीसरे विहार में गुहा क्र० ७, ८ और ९ थीं, जिनमें भी गुहा क्र० ७ मुख्य निर्माण था और शेष ८ एवं ९ पूरक निर्माण थे। यह तीसरा समूह अत्यन्त नष्ट अवस्था में है। अतः स्तंभ शिल्प के विवेचन में इसकी चर्चा उपयोगी नहीं है।

प्रथम विहार में से गुहा क्र० १ के बाह्य अलिंद का ललाट जिन सुशिल्प स्तंभों पर उन्नत था आज वे अवशिष्ट नहीं हैं और केवल चार स्तंभ, जिन पर इस गुहा का कक्ष आधारित है, स्फुटित अवस्था में खड़े हैं। क्र० २ की विशाल गुहा के नष्ट हुए बाहरी अलिंद के छह अठपहलू स्तंभों के भी केवल ठूंठ बचे हैं। गुहा के भीतर सभा मंडप के चारों ओर सोलह स्तंभ और चार कोनों पर आठ खुंमियाँ शिल्प वैविध्य युक्त निर्मित हुई हैं। इन सभी स्तंभों की अनुन्नत आधार चौकियाँ वर्गाकार हैं और उनपर ककनीनुमा गोला निर्मित हुआ है, जिससे ऊपर लगभग चार फुट की ऊँचाई तक ये वर्गाकार चार पहलू हैं। उससे ऊपर इनमें से कुछ में आठ एवं तदनंतर सोलह पहलें और अन्य में बारह एवं तदनंतर चौबीस पहलें निर्मित हुई हैं तथा कुछ में गोलाई लिये घुमावदार गराड़ियाँ उभारी एवं कोरी गयी हैं। अधिकांश स्तंभों की शीर्ष टोड़ियाँ तालपत्रों की आकृति की, जो नाग गणराज्यों का राजचिन्ह था, निर्मित हुई हैं। अनेक की टोड़ियों के नीचे स्तंभ शीर्ष पर तालवृक्ष के तने की कलात्मक अभिव्यक्ति द्वारा तालपत्रों की प्रस्तुति को प्रसाद-गुण दिया गया है। विद्वान् मार्शल ने तालवृक्ष के तने की इस आकृति का वर्णन अलंकारिक रस्सी से एकत्रित बँधे लकड़ियों के या नरसल के गट्ठे के रूप में किया हैं, किंतु अपनी ऊहा की युक्ति-युक्तता में उन्हें स्वयं संदेह रहा था (दी बाघ केव्स पृष्ठ ९)। सभा मंडप के बीच में वृत्ताकार गोले के आधारों पर चार गोल स्तंभ खड़े किये गये हैं, जिन्हें इन गुहाओं की शिला की स्फुटनशीलता के कारण, जिसका अनुभव गुहा क्र० ४ के निर्माण के क्रम में हो चुका था, इस विशाल मंडप की विस्तृत छत को अतिरिक्त आधार देने के हेतु निर्मित किया गया था। गुहा क्र० ३ के आगे का भाग भी गिरपड़ा है और अवशेषों से अनुमान होता है कि इसके एक के आगे एक निर्मित दो मंडपों में से प्रत्येक में आठ-आठ अठपहलू स्तंभ निर्मित थे।

दूसरे विहार में गुहा क्र० ४ के और ५ के सामने उनके २२० फुट से अधिक लम्बे सामान्य बाह्य अलिंद को बीस स्तंभ एवं दो खुंभियों की पंक्ति धारण किये थी। आज इनमें से केवल खुंभियों के अवशेष प्राप्त हैं। गुहा क्र० ४ के भीतर सभा मंडप के चारों ओर चौबीस स्तंभ और चार कोनों पर आठ खुंभियाँ खड़ी हैं। इनकी रचना वैविध्यपूर्ण है और गुहा क्र० २ के स्तंभों से साम्य होते हुए भी, जो इनकी चार, आठ, बारह, सोलह और चौबीस पहलों में प्रकट है, इस गुहा के स्तंभशिल्पी अपने अभिप्रायों के अलंकरण में चित्रकार पर अधिक निर्भर रहे हैं। ऊर्ध्वमुख एवं अधोमुख कमल, जिसे कला के इतिहास में 'घंटाकृति' भी कहा जाता है, और आमलक इन स्तंभों में विशेष रूप से प्रयुक्त हुए हैं तथा स्तंभशीर्षों को अलंकृत करने में, गुहा क्र० २ में जहां तालपत्र की आकृति को महत्त्व दिया गया है, यहाँ चित्रकार को कला-नियोजन का अवकाश छोड़ते हुए टोड़ियों के पार्श्वों पर सिंह, वृष एवं हाथी की, भास्कर्य आकृतियों का प्रमुखता से विनियोग हुआ है। इनमें से कुछ आरोही युक्त हैं। कुछ टोड़ियों की मुहार पर लकड़ी की टोड़ी की अनुकृति में अलंकरणात्म पट्टियाँ उत्कीर्ण की गयी हैं।

फिर सभा मंडप के चारों ओर के अलिंदों में से पीछे के और बाएँ एवं दाएँ के आगे निर्मित उन तीन तोरणों के छह स्तंभ हैं, जिन्हें फर्गुसन ने किसी अयथार्थ सूचना के आधार पर आठ कहा था, अपने मानचित्र में भी आगे की दालान के स्तूपाभिमुख अग्रभाग पर चौथे तोरण के दो स्तंभ दर्शाए थे (हिस्ट्री ऑफ इंडियन एण्ड ईस्टर्न आर्किटेक्चर, दूसरा संस्करण, भाग १, आकृति ११३) ये स्तंभ अपनी लालित्य योजना एवं निष्पादन में अन्य स्तंभों की अपेक्षा उचित ही उत्कृष्टतर हैं। कारण कि इनका निर्माण शुद्ध सौंदर्य दृष्टि से हुआ है और इन गोल स्तंभों में कम उभरे भास्कर्य शिल्प का विनियोग हुआ है तथा इन्हें धातु के गढ़े गये स्तंभों की आकृति देने का प्रयास किया गया है। ये सीधी और घुमावदार गराड़ियों से तथा सूक्ष्मतापूर्वक उत्कीर्ण दुहरी मणिमेखलाकृतियों से सजाए गये हैं और इनके शीर्ष ऊर्ध्वमुख कमल, आमलक एवं तदनंतर ऊर्ध्वमुख विकसित कमल अथवा ताल के तने की आकृति के निर्मित हुए है।

पूर्वोक्त गुहा क्र० २ के समान, किंतु उससे कुछ अधिक दूर-दूर, इस गुहा के सभा मंडप में भी चार स्तंभ अलिंदों एवं उपर्युक्त तोरणों के स्तंभों के अतिरिक्त बीच में निर्मित हैं। गुहा क्र० २ के ये स्तंभ जहां साद्यन्त मूल शिला में ही निर्मित हैं, यहां के स्तंभों की केवल आधार चौकियाँ ही मूल शिला में गढ़ी गई हैं और उससे ऊपर छत तक ये चिनाई द्वारा पूरे किये गये हैं। विद्वान इंपी और फर्गुसन ने इन्हें पीछे कभी खड़ा किया गया कहा था (वही, पृष्ठ १९८) और आधार चौकियाँ मूल शिला में निर्मित होने पर से विद्वान मार्शल ने उस अनुमान का खंडन किया था (दी बाघ केव्स, पृष्ठ १३), किंतु प्रथमोक्त विद्वानों की उपपत्तियाँ समग्रतः अयथार्थ नहीं थीं। जब इस दूसरे विहार, अर्थात्, गुहा क्र० ४, ५ और ६ का कोरा जाना प्रारंभ हुआ, स्थपत्तियों को इनकी शिला की स्फुटनशीलत का पता नहीं था। गुहा मंडपों का निर्माण छत से प्रारंभ होकर नीचे की ओर चलता है और यह स्वाभाविक है कि इन स्तंभों की आधार चौकियों तक आते-आते लगभग आधी या चौथाई शती व्यतीत हुई हो जब शिला ने अपनी त्रुटिपूर्णता प्रकट कर दी तथा मूल शिला में तदनंतर आधार चौकियाँ गुहा निर्माण के अन्तिम काल में निर्मित हुई और स्तंभों को उनके ऊपर चिनाई द्वारा पूरा किया गया। इन स्तंभों की यह निर्माण कथा बाघ के इन विहारों को अन्य आधारों पर अन्यत्र

स्थापित पूर्वापरता की (लेखक का निबंध 'बाघ गुहाओं में प्राप्त ताम्रासन', मध्यप्रदेश संदेश, १५ मई १९५७, पृष्ठ २१–२२) इस रूप में पुष्टि करती है कि प्रथम विहार के, अर्थात्, गुहा क्र० २ के निर्माण में प्रस्तुत गुहा क्र० ४ के अनुभव से लाभ उठाया गया और छत को अतिरिक्त आधार देनेवाले ये स्तंभ उसमें प्रारंभ से, अर्थात्, छत से ही निर्मित हुए तथा गुहा क्र० २ का निर्माण गुहा क्र० ४ की समाप्ति के पश्चात् प्रारंभ हुआ।

गुहा क्र० ५ का पृथक् बाह्य अलिंद नहीं था और इसके कक्ष की छत को आठ-आठ की दो पंक्तियों में निर्मित सोलह स्तंभ धारण किये थे। गुहा क्र० ६ का बाह्य अलिंद अपने अठपहलू स्तंभों सहित नष्ट होगया है और इस गुहा को गुहा क्र० ५ से जोड़ने वाले मार्ग के प्रवेश द्वार पर दो खुंभियाँ निर्मित हैं, जिनकी दोहरी शिल्प रचना को मार्शल ने 'सपल्लव कलश' अभिप्राय से व्युत्पन्न कहा है तथा यह अभिप्राय इस विद्वान् को ईसवी ७ वीं एवं ८ वीं शती में थोड़ी-सी कालावधि पर्यन्त प्रचलित प्राप्त हुआ था (दी बाघ केव्स, पृष्ठ १५–१६)। इस गुहा के सामने के भाग में इसी आकृति की एक इकहरी खुंभी और भी प्राप्त है तथा सपल्लव कलश की आकृति युक्त खुंभियाँ गुहा क्र० २ एवं ४ के नागभास्कर्यों में भी निर्मित हुई है। उपर्युक्त लगभग डेढ़ सौ और निरवशेष नष्ट हो गये। लगभग इतने ही स्तंभ एवं खुंभियाँ इन विहारों की चौरस छतों को आधार देती निर्मित थीं।

यह स्पष्ट है कि मानव संस्कृति के प्रारंभिक उन्मेषकाल में भले ही भारतवासी गुहावास से भवन-निर्माण की ओर अग्रसर हुआ था, और अपनी शालाओं में स्तंभों का उपयोग करने की मूल प्रेरणा उसने स्निग्धच्छाय वृक्षों के दृढ़ स्कंध से प्राप्त की थी किंतु स्थापत्यकला का विकास उसने खुले में भवनों का निर्माण करते हुए किया था। स्थापत्य के इन अभिप्रायों में स्तंभों की मौलिक स्थिति उपयोगिता की थी। भवन का सम्पूर्ण भार वे साधते थे (आश्वलायन-गृह्यसूत्र २।८) और शालाओं में उनके प्रयोग द्वारा स्थापत्य सामग्री की बचत के साथ-साथ, जो आदिम युगों में बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं रही होगी, आवासों के सामने के अलिंदों को, दीवारों से चारों ओर से घिरे कक्षों को जिनसे संरक्षण और संयत वायु एवं प्रकाश मिलता था, खुला रखा जा सकता था। आगे की ओर स्तंभों पर आधारित आयताकार लंबी शालाओं के निर्माण का प्रचलन था (मध्यभारत का इतिहास प्रथम खंड, पृष्ठ ३९१) और समृद्ध चतुःशाल गृहों की रचना चार शालाओं के आयताकार या वर्गाकार संयोजन से पूरी होती थी। एकाकी शालाएँ चतुःशाल गृहों की मूल घटक थीं। यह बाघ गुहा क्र० ४ की योजना से भी प्रकट है जहां ऐसी घटक शाला के व्यष्टित्व को उसके आगे निर्मित अलंकरणात्मक तोरण द्वारा पृथक दर्शाया गया है। सीमा भित्ति से सुरक्षित यह रचना बाहरी अलिंद के साथ-साथ आँगन में स्तंभ पंक्तियों का भव्य दृश्य भी प्रस्तुत करती थी। अन्यत्र ये स्तंभ छत के विस्तार की वृद्धि में सहायक होते थे और इनके प्रयोग द्वारा विस्तृत सभा मंडपों का निर्माण होता था, जिनके नयनाभिराम स्तंभ-वन की छाया में राजसभाओं में एवं तदनंतर देवगृहों में एकत्रित बहुसंख्यक जन समुदाय सामीप्य का अथवा एक तनूहता का अनुभव करता था। इन स्तंभों की बहुसंख्या का अपना स्वकीय सौंदर्य था, जिसका प्राचीन साहित्य में एवं अवशेषों में साक्षात्कार होता है।

इतिहास यह प्रकट नहीं करता कि भारत पर आधिपत्य स्थापित करने वाले जयशील आर्य नृवंश ने अपने मूल देश में स्थापत्य कला में कितना विकास किया था या किया भी था और जहां आर्येतर संस्कृति की उन्नत पृष्ठभूमि इस जाति द्वारा विजित प्रदेशों में पूर्वतः विद्यमान नहीं थी, स्तंभ पंक्तियों अथवा अलिंदों के प्राचीन अवशेष, जिनका कर्तृत्व इन दुर्निवार-विक्रम आर्यों को दिया जा सके, प्राप्त नहीं होते जो स्वाभाविक है। कारण कि इनका उद्गम देश शीतप्रधान था और अलिंदों के वास्तु का विकास मौलिक रूप से उष्ण या समशीतोष्ण प्रदेशों में ही संभव था, किंतु अवशेषों से पता चलता है कि भारतवर्ष सिंधु घाटी की संस्कृति के युग से ही स्तंभों पर आधारित ८० फुट वर्ग जितने विस्तृत सभा मंडप निर्मित करता था (पुसालकर: हिस्ट्री एण्ड कलचरल ऑफ दि इंडियन पीपल खंडन, पृष्ठ १७२) और ऋचाओं से ज्ञात होता है कि इन विजेताओं ने हजारों स्थूणाओं (स्तंभों) पर आधारित सौध एवं सद (सभाएं) इस देश में पाए थे (ऋग्वेद ५।६२।६; २।४१।५)। भृग्वंगिरा ऋषि ने जिन शालाओं से लोक-कल्याणकारी उपयोग देने की कामना की थी वे हथिनी के पैरों के समान स्थूल स्तंभों पर खड़ी थीं (अथर्ववेद ९।३।१७)। तदनंतर आदिकवि वाल्मीकि द्वारा किया गया लंका के चैत्य प्रासाद का वर्णन मिलता है। इसमें रावण ने जानकी को रखा था और कैलाश पर्वत के समान शुभ्र यह ऊर्जित प्रासाद हजारों स्तंभों पर खड़ा था (वा० रा० ५।१५।१६) मंत्रद्रष्टाओं और आदि-कवि का सहस्र से तात्पर्य गणित के दस सौ का न होकर बहुसंख्या का प्रतीत होता है। स्थापत्य में स्तंभों की बहुलता को महत्व देने वाली जातियाँ आर्य वर्चस्व काल में संभवतः दक्षिण की ओर दब गयी थीं अथवा द्राविड़ संस्कृति की निर्बाध अभिव्यक्ति उस काल में आर्यसम्राटों द्वारा अनाधिकृत विशेषतया भारत के दक्षिणी भाग मे हो रही थी और रामायण ने कुंभकर्ण के प्रासाद को भी स्फटिक एवं कांचन निर्मित स्तंभों से सर्वत्र शोभित कहा है (वही ७।१३।४)। महाभारत तदनंतर मयासुर, जो नाग था, द्वार निर्मित सभाभवन के संदर्भ में स्तंभों पर आधारि देवसभाओं का, जिनमें अनार्यमूल के देवता प्रतिष्ठित थे, उल्लेख करता है (म०भा०। २।११।१४ और इस सूचनातंतु के सहारे ईसापूर्व प्रथम सहस्राब्दी, भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान क युग, प्राप्त होता है तथा पाटलिपुत्र (आधुनि बाँकीपुर) में हुए उत्खनन में मौर्य कालीन विशा सभामंडप के अवशेष मिले हैं, जो शिला स्तंभ पर खड़ा था। इसकी अभिन्नता मेगस्थने द्वार तत्कालीन विश्व के अप्रतिम प्रासाद के रूप वर्णित मौर्य प्रासाद के सभा मंडप से की जाती है फाह्यान के आरंभिक पांचवीं शती के का में इसे देवयोनियों द्वारा निर्मित स्वभावत कहा जाने लगा था (कुमारस्वामी: हिस् ऑफ इंडियन एण्ड इंडोनेशियन आर्ट, पृ १९)। ईसापूर्व दूसरी शती से गुहा चैत्यों ए विहारों के अवशेष, जिनमें इस स्तंभ समृद्धि विनियोग हुआ था, प्राप्त होने लगते हैं। विंध्याच के दक्षिण में यह तारतम्य बहुत पीछे के का तक चला है तथा इस सांस्कृतिक कुल पर्वत उत्तरी ढलान पर एवं उत्तर में प्रतापी गुप्त सम्रा की विजयवाहिनियों के आघातों से ईस चौथी शती के उत्तरार्ध में गणतंत्री व्यवस्था के धराशायी होने के साथ अन्य क्षेत्रों में लक्षि हुई ह्रास प्रवृत्ति स्थापत्यकला के इस पार्श्व भी प्रत्यक्ष होती है जो मौर्य प्रासाद को फाह्या द्वारा देवयोनि निर्मित कहे जाने में भी व्य

(शेष पृष्ठ २३ पर)

साहित्य, संस्कृति, कला, ज्ञान-विज्ञान आदि का विशेषांश

इसके संपादनपरामर्शदाता :- श्री जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द

विशेष कविता

ओ गरुड़ कल्पना के!

श्री सुयोगी

ओ गरुड़ कल्पना के, मुझको इतना बतला—
जिस सूनेपन को 'क्षितिज' नाम दे तू उड़ता,
क्या कभी आज तक तूने पार किया उसको!
हर बार धरा की शरण गिरा गिरता-पड़ता।

क्या लाभ भला तेरे बलशाली पंखों का,
क्या लाभ भला तेरे पर्वत पर रहने का?
है बँधा धरा से स्वार्थ, मगर, बातें नभ की!!
क्या मूल्य भला जड़-ऊँचाई में उड़ने का?

मानवता से खाली निर्जीव उसासों का?
खुद आसमान मै अपना कफन बुना करता।

क्यों नहीं शून्य में नीड़ बना लेता अपना?
क्यों नहीं तारिकाओं की झिलमिल तू चुगता?
जब तेरे सब रिश्ते अंबर की दुनिया में,
क्यों नहीं कल्पना से अपनी भाँवर रचता?

पीकर माटी का अमृत, झूमता अंबर में,
क्यों नहीं शून्य की गौरी पर कविता लिखता?

कोयल को देख कि फुनगी-फुनगी तक उड़ती;
जब गाती, मधुवन घटा-सदृश लहरा उठता।
अधरों पर झुके अधर क्षिति के झिलमिल करते,
अर्थी का मुरझा फूल गमककर खिल उठता।

जीवन के गीत सुनाती, स्वर के कमल खिला,
तू एक कि जो छल से छल की चर्चा करता।

रे मै भी कई बार इस नभ में हो आया,
पर, सायँ-सायँ में भर्राती-सी हवा मिली
औ' दम घुटने-सा लगा, धरा थी बहुत दूर,
जन-हीन दिगंबर दिशा प्रेत-सी खड़ी मिली,

चौड़ी आँखों पर चाँद कफन-सा झुक आया।
अब भी उड़ता, पर, हृदय-हृदय तक ही उड़ता।

है शून्य सिद्ध पर, देह कर्ज ली धरती से
औ' उतर बुझाता आग पेट की माटी से।
तू वह ग्रह, जो भू के आकर्षण पर जीता,
है सच्चा रिश्ता साँसों वाली माटी से।

अंबर में किसके चरण-चिह्न कब बन पाए?
क्यों हृदय-तत्त्व से हीन गगन में स्वर भरता?

जिस शून्य-सर्प के अगम फंद से जूझ रहा,
पी-पीकर तेरी साँसें तुझे डसेगा वह
औ' मृत्यु-समय कंधों के लिए रोयगा जब,
नभ की नीली गहराई में फेंकेगा वह।

धरती की सीता डसने वाले नागों पर
अब उतर कि पंखों की पैनी चोटें करता!

विशेषलेख

संत कवियों की उपासना का स्वरूप

—सुश्री सुशीला धीर

जनवाणी के साहित्यिक प्रसार का श्रेय संतों ही को है। संतों की भक्ति के अकृत्रिम श्रोत उसीमें उमड़ पड़े। सांप्रदायिक पद्धति को छोड़कर हृदय के सरल उद्रेक में उनकी उपासना के विशुद्ध स्वरूप को देखा जा सकता है।

सूर और तुलसी सगुण के प्रचारक थे और कबीर आदि निर्गुण के, तथापि, साधना के निरूपण के प्रश्न पर दोनों पक्ष वाले एकमत हैं।

सूर का कथन हैः—

रूप रेख गुन जाति जुगति बिनु
निरालंब मन चक्रत धावे,
सब विधि अगम विचारहिं तानै
सूर सगुन लीला पद गावै।

तुलसी की उक्ति हैः—

अगुन अरूप अलख अज जोई,
भगत प्रेम बस सगुन सो होई।

दूसरी ओर कबीर भक्ति-भाव में आकर कहते हैं.—

संतो धोखा का सों कहिये,
गुण में निर्गुण, निर्गुण में गुण है,
बाँट छाड़ि क्यों बहिये।

शुष्क तत्त्व-चिंतन, जप, तप, यज्ञ, योग की कठिनता में मन रमाना तथा उनमें हृदय का संयोग होना कठिन है। जब तक यह संयोग साधना-मार्ग से न होगा, तब तक परलोक सदा अप्राप्य रहेगा। दोनों प्रकारों में से किसी की भी साधना अपनाने वाले को हृदय के योग की आवश्यकता है। परिणाम की दृष्टि से इन साधनों का उपयोग इतना ही है कि मन को एकाग्र करने में सहायक होते हैं। साधना का अपनाया जाना साधक पर निर्भर है। मीरा तथा सूर की तन्मयता और इधर कबीर आदि के यौगिक क्रिया से ध्यान करना, त्रिकुटी में ब्रह्म या ब्रह्मरंध्र से अमृत झरने में विशेष अंतर नहीं है। दोनों अवस्थाएँ साधक को अपने श्रेय तथा प्रेम में समाहित कर देती हैं। मन को बलपूर्वक वशीभूत नहीं किया जा सकता। उसे रोककर इंद्रियों को कार्य की क्रिया से विरत किया जा सकता है। किंतु, मन ही विषयों की ओर न दौड़े इसमें विफलता होगी, जबतक कि मन को स्वतः किसी अन्य कार्य में न लगा दिया जाय, क्योंकि, मन की स्वाभाविक स्थिति कार्य तथा क्रिया की ओर है। मन कदापि निष्क्रिय नहीं रह सकता। उसकी प्रवर्तन-शक्ति मौन रह नहीं सकती। ज्ञानमार्ग की यही कठिनता है। मन की क्रिया पर अनधिकार है, अतएव, मन को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करना ही उद्दिष्ट है। तभी उसकी शक्ति का उपयोग किया जा सकता है। मन को असत्-पथ से रोकने के लिए प्रथमतः सत्पथ तो खोल ही देना होगा। संसार का त्याग करने के पश्चात् भी साधना-पथ में अन्य कोई रूप होना चाहिए। इसीलिए, हम निर्गुण साधना-पथ में भी कहीं-कहीं स्वरूप की झलक पाते हैं। संतों की रचनाओं में इसके बहुत उदाहरण मिलेंगे। वासना स्वतः भली या बुरी नहीं वह तो आलंबन पर निर्भर है। संतों का यह आलंबन ब्रह्म है, अन्य जनों का सांसारिक वस्तुएँ और उनसे प्राप्त होनेवाली क्षणिक आनंदानुभूति। यही कामना भगवान् की ओर उन्मुख होनेपर उपासना या भक्ति का रूप ले लेती है। इंद्रियाँ यदि विषयोन्मुख हैं, तो दुःख का कारण हैं। यही विषय-विरत होकर तन्मयता की अवस्था में ब्रह्मानंद की अनुभूति करा सकते हैं।

निर्गुण साधक मलूक की उक्ति हैः—

जब लग यो अंधियार धर भूस थके सब चोर,—
जब मंदिर दीपक बह्यो, वही चोर धन मोर

मनुष्य के मनस्तत्त्व की इसी विशेषता साधनापथ में ध्यान की एकाग्रता के लिए इष्ट देव की कल्पना को जन्म दिया और दृश्य संसा ने उसका स्वरूप होने का प्रमाण। इसी निर्गुण ब्रह्म के राज्य में सर्वैश्वर्य-विभूति-संप ईश्वर का प्रकटीकरण हुआ है। केवल तर्क ईश्वर प्राप्ति नहीं होती। निर्गुण तथा सगुण दो प्रकार की साधना-पद्धतियाँ हैं, ब्रह्म की अनुभू इनसे सर्वथा भिन्न। कबीर के राम निर्गुण औ सगुण से परे हैं। कबीर को निर्गुण उपासक कह उनकी साधना का बोध कराया जा सकता पर, इससे उनकी ब्रह्मानंद की कोटि का कुछ विवेचन नहीं होता। उस समय की धर्म की दशा तथा देश की परिस्थितिवश उन् अवतारवाद तथा मूर्तिपूजा का विरोध कि पर, उनके राम को भी निर्गुण-मात्र कहना है। उनकी साधना निवृत्ति-मार्ग के अधिक नि है, तथापि कबीर की आत्मानुभूति को तो के आत्मानुभव ही से समझा जा सकता है। ब्रह्म को उन्होंने पिंड में देखा, वही ब्रह्मांड है, इससे अभिव्यक्ति अथवा जो ब्रह्मांड में वह पिंड में अनुभव किया, यह कोरी है। स्वयं अनुभूत किए बिना समझने का प्रयास क शिशु-प्रयास है। ब्रह्म की अनुभूति करने व कबीर को सगुण-निर्गुण कहना, उसकी उपा को सीमा में बाँधना व्यर्थ है। कबीर में सभी का कुछ-न-कुछ अंश मिल जाता है।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

विशेष कहानी

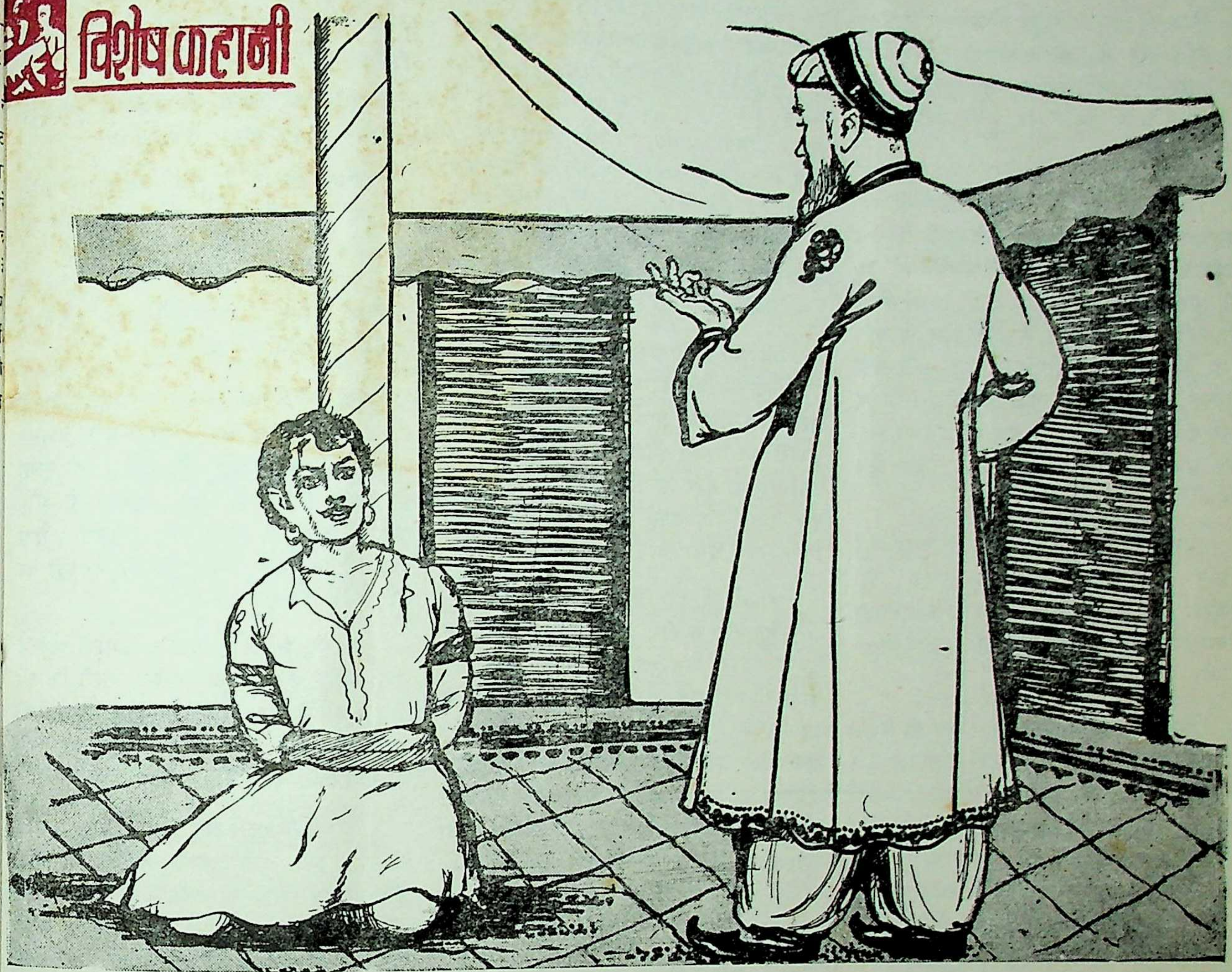

रायसेन का बलिदान

श्री शंकर बाम 'शंकर'

रायसेन का किला अपनी महत्त्वपूर्ण सामरिक स्थिति के कारण मध्यकाल में मुगल आक्रांताओं के लिए टेढ़ी खीर से कम न था। भोपाल-साँची-सड़क के २२ वें मील पर स्थित, जमीन से १९८० फीट ऊँची पहाड़ी के मंच पर अडिग खड़ा आसमान में गर्व से मस्तक ऊँचा उठाए रायसेन का यह मजबूत एवं सुंदर प्रहरी दुर्ग अपने मार्ग से गुजरनेवाले हरएक अनचाहे मेहमान को टोककर चुनौती देता था।

हुमायूँ की छाती पर मूँग दलती हुई शेरशाह की आँखों में रायसेन का यह किला तिनके की तरह खटक गया। यद्यपि उसने रायसेन से कन्नी काट कर मालवा का काफी हिस्सा हस्तगत अवश्य कर लिया था, लेकिन, इस दुर्ग की शक्ति ने अफगानों के आगे बढ़ने की राह में काँटे बिछा दिए थे।

सन् १५४३ के फरवरी मास में शेरशाह की ओर से खवास खाँ ने रायसेन की ओर कूच किया। साथ में थे शेरशाह के लाड़ले साहबजादे सलीमशाह सूर!

रायसेन के ठाकुर पूरनमल के पास संदेश भेजा गया—"संधि और शान्ति युद्ध से हर दशा में अच्छी है। अफगान विजेता शेरशाह की तरफ से हम ठाकुर को शान्ति और संधि की बातचीत के लिए खुले मैदान में आमंत्रित करते हैं और विश्वास दिलाते हैं कि इस तरफ से कोई धोखाधड़ी नहीं होगी............"

फिक्र की वजह से ठाकुर के माथे पर सिकुड़नें पड़ गईं। हाथ में उक्त फरमान थामे टहलते हुए ठाकुर ने सामने तन कर खड़े हुए सेनापति से कहा—"आज रायसेन पर सबसे बड़ी आफत आई है।"

किले के गिने-चुने बहादुर सिपाहियों की बागडोर एक शेरदिल बूढ़े राणा के हाथों में थी। ठाकुर की परेशानी की वजह से उसके माथे पर भी सिलवटें पड़ गईं। लेकिन, ये रेखाएँ फिक्र की नहीं थीं। ये ठाकुर के छोटे दिल के प्रति घृणा के भाव थे। सेनापति ने कहा—"हमारी हिम्मत की परीक्षा की घड़ी आगई है। ठाकुर हुक्म दें, हम तोप के मुँह पर इस फरमान को रखकर अफगान सेनापतियों के पास वापस भेज देंगे।"

सलाह के लिए किसी वजीर को तलब नहीं किया गया था। इसीलिए तलब नहीं किया गया था कि ठाकुर किले के एकमात्र जिम्मेदार रक्षक से अकेले में पूछना चाहता था—"क्या हमारी जीत होगी?"

सेनापति का दिल भुनकर कबाब हो गया। उसने निश्चय के स्वर में कहा—"हमारी हार नहीं होगी। हमारे तालाब और सोते जिंदगी के अंत तक हमें पानी देते रहेंगे। हमारे खत्तों में भरा अनाज दस साल तक हमारी फौज के पेट की आग बुझाता रहेगा। तोपें पिघल जायँगी, लेकिन, हमारी बारूद खत्म नहीं होगी। हमारे किले की चारों तरफ खड़ी कुदरती चिकने पत्थरों की दीवारों पर कभी दुश्मन के पैर नहीं जम सकेंगे। हमारी बंदूकों की आँच सहते-सहते अफगान फौजें भुन जायँगी। कच्चे-पक्के सिपाहियों को अपने घर याद आने लगेंगे। लेकिन, हम......हम नहीं हारेंगे, सच्चा सिपाही कभी नहीं हारता।"

सेनापति ने जो कुछ कहा था, उसका एक-एक अक्षर सच्चाई से भरपूर था। अफगानों की शान की जो चकाचौंध ठाकुर की आँखों में कौंध कर उसे अपनी ताकत को देखने से वंचित रख रही थी, वह कुछ दूर हो गई। अब ठाकुर को अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान आया और मन में बैठी हुई हलकी-सी झेंप पर परदा डालने की कोशिश करते हुए उसने कहा—"हम आपको इनाम देना चाहते हैं, सेनापति!"

सेनापति राणा ने अपनी मूँछें चबाईं। जिस इनाम को ठाकुर देना चाहता था, वह कई बार दिया जा चुका था और दोनों ही पक्ष इस बात को जानते थे। ठाकुर इस इनाम को जरूरत से ज्यादा कीमती समझता था और अकसर देने के वक्त से पहले ही अपनी देनदारी की बात भूल जाता था। राजपूत सेनापति एक पुराने वीर घराने के वंशज की हैसियत से इसे एक साधारण बात समझता था और बार-बार उसकी चर्चा उसे मूँछें चबाने के लिए विवश कर देती थीं।

वह इनाम था ठाकुर की लड़की पद्मावती। उसने बूढ़े सेनापति की व्यक्तिगत शिक्षा-दीक्षा में अस्त्र-शस्त्र चलाना और पथरीली राहों पर घुड़सवारी का कौशल सीखा था। इससे पहले कि सेनापति का बेटा रत्नसिंह उसके प्रेम-पाश में बँध जाता, बाप अपने मन में उसे बेटे के लिए नियत कर चुका था।

जो भी हो, इस विषय में साफ बातें ठाकुर और सेनापति के बीच कभी नहीं हुई थीं। उस तरफ इशारे अलबत्ता साफ-साफ चले थे। दोनों ही यह बात पूरी तरह समझ चुके थे कि कभी-न-कभी उनका आपस में समधी-समधी बन जाना अतीव आवश्यक है। लेकिन, ठाकुर बड़प्पन की भावना से इस बात को स्वयं कभी होंठों पर नहीं लाया था और सेनापति जब लाना चाहता था, तब बात स्पष्ट कर देना चाहता था।

उसने कहा—"जब मेरा बेटा मेरी जगह लेगा, वह ठाकुर के इस इनाम को सिर आँखों पर लेगा।" यही सेनापति की सब से बड़ी तमन्ना थी।

ठाकुर ने समझौते की बातें कर लेना उचित समझा। सुरक्षा के लिए सेनापति का बहादुर बेटा गिने-चुने जवानों के साथ नीचे उतरा। सलीमशाह इतना साज-सामान साथ में देखकर ठाकुर का स्वागत करते हुए बोला—"स्वागत है! स्वागत है!" मालूम होता है कि सारा किला-का किला सुलह करने के लिए नीचे आ गया है।"

रत्नसिंह ने उत्तर दिया—"वास्तव में हम लोग शान्ति के लिए अधिक उत्सुक हैं।"

"सुभानअल्लाह! सुभानअल्लाह!" अफगान सेनापति रत्नसिंह की तरफ गहरी नजरों से देखता हुआ बोला।

"दूसरे" सेनापति खवासखाँ ने गंभीर होते हुए कहा, "दगा करके कोई अफगान दोज की आग में जलना नहीं चाहता।"

"हमें अपने दोस्तों की तरफ से पूरा-पूरा इत्मीनान है।" ठाकुर ने कहा!

उचित सत्कार के बाद सलीमशाह और खवासखाँ संधि की बातचीत के लिए तैयार हो गए। डेरा इत्रों की सुगंधि से महक रहा था और अंगूरी प्यालों में ढल रही थी। बाहर दोनों तरफ के सैनिक, एक—दूसरे की तरफ से शंकित, हथियारों से लैस एक टाँग पर खड़े थे।

खवासखाँ ने तश्तरी में से एक अंगूर उठाकर मुँह में डालते हुए कहा—"दोनों ही तरफ से अगर अमन की जरूरत महसूस की जाती हो, तो सुलह हो सकती है। एक को जरूरत हो और दूसरे को न हो, तो सुलह नहीं हो सकती। मेर ख्याल है कि पहले दोनों तरफ की जरूरतों प गौर कर लिया जाय।"

रत्नसिंह झट बोल उठा—"हमारी जरूर साफ जाहिर है। हम नहीं देखना चाहते कि इ बीहड़ मुल्क में आकर हमारे संमानित मेहमानों को कष्ट उठाना पड़े और उनकी मेहमानदारी कर के लिए फिर हमें नीचे उतरना पड़े।"

"आपने बिलकुल ठीक कहा!" चतुर सली बोला। इसी तरह हमारी जरूरत भी सा है। हम इस इलाके की तरफ से बिलकुल बेफि होना चाहते हैं, ताकि इस वक्त के मेजबान ह मेहमान न समझें, हमें बिलकुल घर का आद समझें और उन्हें हमारे लिए दिक्कतें न उठा पड़ें। अफगान सरदार इस इलाके को अप मातहत देखना चाहते हैं और उनके नाज उठा हमें हर हालत में दरकार है। लेकिन, खु की निगाह अमन को ज्यादा पसंद करती है औ हम अमन के सबसे बड़े तलबगार हैं।"

"दूसरी तरफ" सलीमशाह सूर की बात अन्तिम छोर पकड़ते हुए खवासखाँ ने कहा— "हमारे पास इतनी बारूद है कि अगर हम उस दसवाँ हिस्सा भी इस पहाड़ की तलहटी में भरक आग लगा दें, तो सारा पहाड़ धधककर उड़ जाय

सलीमशाह सूर ने कहा—"हमारे पा इतने जोशीले जवान हैं कि चींटियों की कता की तरह से लगातार दस महीनों तक रायसे किले की दीवारों पर चढ़ते रह सकते हैं

इस जंगल का चप्पा-चप्पा हमारे सिपाहियों से भरा हुआ है। अनाज का एक दाना, पानी की एक बूँद और मदद की एक किरच भी साल-भर तक ऊपर नहीं पहुंच सकती।"

ठाकुर पूरनमल के चेहरे पर पसीने की बूँदें चमक आईं। लेकिन, रत्नसिंह ने अविचल भाव से कहा--"इस खबर के लिए शुक्रिया! हमारे पास इतने दिनों तक टिककर आपकी दिलेरी देखने के लिए सामान नहीं है। लेकिन, हमारे पास एक चीज है, जो, मेरा खयाल है कि, हमारे मेहमानों के पास नहीं है। हमारे पास तैयार हालत में, वक्त पर फौरन् काम आने के लिए, जितने आदमी हैं, उनसे दूने कफन हैं। रायसेन का हर सिपाही दोनों हाथों में कफन लिए हर वक्त तैयार रहता है।"

दोनों अफगान नायक हैरत से रत्नसिंह की सूरत देखने लगे।

रत्नसिंह हँस पड़ा। "आपको यकीन नहीं आता? आ भी नहीं सकता। आप नहीं जानते कि रायसेन के सात सौ दर्जी रात-दिन जुटकर सिर्फ इसी चीज की पैदावार कर रहे हैं।"

"आप शायद संजीदा नहीं हैं।" सलीम ने आरोप किया।

खवास खाँ बिगड़ गया। "आप दोनों हाथों में कफन लेकर सुलह की बातचीत करने आए हैं। हम लोग आपकी हिम्मत की दाद देते हैं।"

रत्नसिंह ने चुस्त लहजे में उत्तर दिया--"ताकत का जवाब हमेशा ताकत से दिया जाता है। आप साबित करना चाहते हैं कि आपकी ताकत हमारी ताकत से ज्यादा है। बड़ी अच्छी बात है। हम मरने के लिए तैयार हैं।" रत्नसिंह उठकर इत्मीनान से चहलकदमी करने लगा। "दूसरी तरफ" उसने बात का रुख पलटकर कहा--"हम अपने किले की तोपों से बराबर अपने मेहमानों की खातिरदारी करते रहेंगे। आप कभी महसूस नहीं कर पाएँगे कि हम लोग बेखबर होगए हैं। हमारे मेहमानों के पास सामान बहुत है, आदमी बहुत हैं, हम देखना चाहते हैं कि उनके पास सब्र कितना है!"

"आपको कम से कम हमारे पास इस चीज की कमी नहीं मिलेगी।" सलीम ने कहा।

बात संधि से काफी दूर हट चुकी थी। ठाकुर भी उठ गया। रत्नसिंह ने कहा--"आप लोग हमलावर हैं। हमलावरों के साथ अमन और सुलह की बातचीत करना खुद अपनी कमजोरी मान लेना है। आदाबअर्ज!"

"तसलीम" दोनों अफगान नायक एक साथ बोल उठे।

संधि नहीं हो सकी! अफगानों की अधीनता के फरमान को तोप के मुंह पर रखकर उड़ा दिया गया। पूरा महीना गुजर गया। मार्च का महीना भी आया और चला गया। लेकिन, अफगानों की विशाल सेना चुपचाप आलसी हथनी की तरह घेरा डाले पड़ी रही।

बिना विरोध के मालवा को हस्तगत करके स्वयं शेरशाह ४ अप्रैल, सन् १५४३ ईसवी को मौके पर तशरीफ ले आए। रायसेन दुर्ग के स्वामी ठाकुर पूरनमल को पुनः एक बार संधि का अवसर दे दिया गया। किंतु, सेनापति ने ठाकुर की ओर से छह सौ हाथी शेरशाह की भेंट में भेज दिए।

इस अपमान से जले शेरशाह ने शआवतकारों को सुरंगें खोदने का हुक्म दिया, ताकि बारूद भर कर पहाड़ी ही को उड़ा दिया जाय।

खवास खां की लाख कोशिशों से भी अभी तक रायसेन के पत्थर नहीं खुद सके थे। लेकिन, अफगान विजेता शेरशाह खुद मजदूरों के सिर पर खड़े हो गए और आखिरकार हफ्तों की मुसीबत उठाकर एक सुरंग खोद डाली गई। उसमें बारूद भर दी गई और फौज को बड़ा धावा बोलने के लिए तैयार करके पलीते में आग लगा दी गई।

कान के परदे फाड़ देने वाला धमाका हुआ। छोटे-छोटे पत्थर आसमान की तरफ उछल गए। बुरी गंध चारों ओर फैल गई। धूल का गुब्बार जरा साफ होते ही एक बड़ा रोमांचकारी दृश्य दिखाई दिया। शेरशाह की फौज के आठ सौ बाँके जवान संसार से विलीन हो गए थे। जलते हुए माँस की दुर्गंध फैल रही थी और टूटी हुई तथा छितराई हुई हड्डियों के टुकड़े ही टुकड़े धरती पर दिखाई दे रहे थे। रायसेन दुर्ग के पहाड़ी मंच को एक मामूली-सी ठेस पहुँचकर रह गई थी।

किले से अब भी भारी गोलों की धुआँधार बारिश हो रही थी। किले की तोपों पर चुने हुए तोपची तैनात थे। बूढ़ा सेनापति खुद घूम-घूम कर उन्हें गोलंदाजी के आदेश दे रहा था। रत्नसिंह हँसता हुआ सेनापति के पास आया। और बोला--"देखो, बाप्पा, माली हमारा घोंसला जलाने आया था, खुद उसका घर जल गया।"

"नहीं, रतन, यह घरवाला माली नहीं है, महलवाला माली है। इसे इतने-से नुकसान से क्षति पहुँचनेवाली नहीं है। सिपाही को हमेशा अपनी से ज्यादा दुश्मन की ताकत देखनी चाहिए।" वह बेटे के साथ-साथ ठाकुर की ओर चला।

आठ सौ इन्सानों के जीवित मांस के जलने की दुर्गंध ऊपर सभी की नाकों तक पहुँच चुकी थी। ठाकुर अपने मुसाहबों के साथ खुशियाँ मना रहा था। सेनापति को देखते ही वह फूलता हुआ बोला--"ओह सेनापति! शेरशाह इस वक्त अफसोस से हाथ मल रहा होगा।"

"कम से कम वह खुशी नहीं मना रहा होगा।" व्यंग्य के स्वर में सेनापति ने गंभीरता के साथ कहा। "ठाकुर, जीत में खुशी मनाना सिपाही की हार है। इतने वक्त में दुश्मन अपनी जीत के सामान कर रहा होगा।"

लेकिन, ठाकुर कभी स्थिरचित्त नहीं रहा। मई में उसने चौंसठ हाथियों की भेंट के साथ अपने लड़के को फिर संधि का संदेश लेकर अफगान अधिपति शेरशाह के पास भेजा। अब शेरशाह किसी शर्त पर संधि करना नहीं चाहता था। बिना शर्त के आत्मसमर्पण उसकी सबसे बड़ी शर्त थी और उस अविचल बूढ़े सेनापति के रहते हुए यह असंभव था।

बूढ़ा सेनापति इस बातचीत को पसंद नहीं करता था। सच्चा सिपाही कभी संमानहीन समझौते का आसरा नहीं ताकता। उसका कहना था कि किले का बच्चा-बच्चा सिपाही हो जाय और वह सैनिकत्व के उन नियमों का पालन करे, जो सेनापति के अपने दिमाग में थे। यह सेनापति की आंतरिक इच्छा थी। स्वयं उसकी दृष्टि मंद पड़ती जा रही थी। वृद्धावस्था के कारण उसका शरीर कभी-कभी दगा दे जाता था। उसके मन की तमाम शक्ति और नियंत्रण की भावना दूसरों के अन्दर सैनिकोचित गुण देखने के लिए तड़प रही थी और उसके मन की समस्त ममता अपने बेटे रत्नसिंह में केंद्रित हो गई थी।

शेरशाह ने सचमुच अफसोस से हाथ मले थे। लेकिन, वह हतोत्साह होनेवाला नहीं था।

पूरे दो लाख आदमियों की ताकत उसके पास थी, जिनमें पचास हजार के लगभग आदमी निपट लड़ाके थे। भारी आयोजन के साथ जून के अंत में उसके सैनिक मृत्यु को न्योता देकर रायसेन के किले पर चढ़ दौड़े। फिर एक बार आकाश धुएँ और दुर्गंधपूर्ण आग से ढक गया।

महीनों का इंतजाम दो दिनों में ढेर हो गया। आक्रमण असफल रहा। रायसेन अजेय रहा। लेकिन, कुछ हद तक किले की कमान करनेवाली एक बाहरी मुख्य चौकी उनके हाथ आ गई। पहाड़ खोदकर चूहा मिला। बादशाह की भौंह संकुचित होगई।

ठाकुर घबरा गया। दुश्मन का जीवट इसके दिल में घर कर गया था, लेकिन, बूढ़े सेनापति के माथे पर सिलवटें तक न पड़ीं।

आक्रमणकारी समझता था कि किले का जीता जाना असंभव है। किले के अधिपति के प्राण डर से सूख रहे थे। ठाकुर ने सेनापति को फिर सलाह के लिए बुला भेजा। खबर आई थी कि मारवाड़ का राजा मालदेव शेरशाह की ताक में बैठा है। साथ ही शेरशाह का संदेश आया था कि "अगर अफगान शाहंशाह के सामने ठाकुर एक दफा फिर हाजिर हों, तो सुलह हो सकती है, और बड़ी अच्छी शर्तों पर!"

ठाकुर इस झखमारी से तंग आ गया था। "हम एक बार फिर मिल लें।" उसने सेनापति से पूछा।

"पहाड़ के जीव का बार-बार मैदान में उतरना अच्छा नहीं है।" सेनापति ने कहा। "हम अपने घोंसले में खुश हूँ। जिसे बातचीत करनी हो, वह खुद हमारे पास आए।"

"अफगान शाहंशाह हमारे पास आए!" आश्चर्य से ठाकुर ने कहा।

"जंग में कोई शाहंशाह नहीं है, कोई राजा नहीं है।" सेनापति ने कहा"--एक डाकू किसी के घर को लूटना चाहता है। जो अपना घर बचाना चाहता है, वह उससे हर हालत में बड़ा है।"

लेकिन, ठाकुर नहीं माना!

रत्नसिंह को बुलाकर सेनापति ने कहा–'बेटा, रायसेन का अंत आ गया है। आदमी की जिंदगी में बहुत-सी तमन्नाएँ, बहुत-से अरमान होते हैं, लेकिन, जब वह सिपाही बनकर जंग में कूदता है, तब वे सब उठाकर पीछे रख दिए जाते हैं। उनके बर आने का एक ही तरीका उस वक्त रह जाता है। खतरों में बढ़कर ही आदमी खतरों को पार करता है। अपना फर्ज मत भूलना।" कहकर सेनापति ने उसके माथे को प्यार से चूम लिया।

रत्नसिंह ने सेनापति के हुक्म के आगे सिर झुकाया और पिता के प्यार का जवाब उसके हृदय से लग कर दिया।

शेरशाह का दरबार पूरी शानशौकत से सजा हुआ था। चोबदार ने ठाकुर के आने की सूचना दी। ठाकुर अंदर आया। अभी वह दरबार के बीच में ठीक तरह से पहुँचा भी नहीं था कि शेरशाह का एक दरबारी आगे बढ़ा और ठाकुर पूरनमल की गरदन पकड़ कर उसने उसे जमीन पर पटक दिया। "सिजदा कर नामुराद! अफगान शाहंशाह के सामने सिजदा कर।"

ठाकुर हक्का-बक्का रह गया। अभी रत्नसिंह अपनी तलवार निकाल भी नहीं पाया था कि उसकी मुश्कें कसली गईं। शेरशाह ने इस कांड पर दुखी होने का प्रदर्शन करते हुए कहा–"नहीं, नहीं, ऐसा नहीं करना चाहिए!"

ठाकुर घिघिया गया। "क्या... क्या राजाओं से इसी तरह बर्ताव किया जाता है?"

"नहीं, नहीं, ठाकुर, हमारा असली मंशा यह नहीं था। हम तो सिर्फ यह चाहते हैं कि आप मुकाबले का इरादा छोड़ दें और हमें किला सौंपकर हमारी हिफाजत में आ जाएँ। हमारा खयाल है कि खुद आपको इसमें कोई ऐतराज नहीं है।" शेरशाह ने कहा।

"थू!" रत्नसिंह ने वहीं सरे-दरबार जमीन पर थूकते हुए कहा–"यह भी कोई बादशाह का दरबार है! लगता है, जैसे कसाईखाने में शोहदे इकट्ठे हो गए हों...."

वह आगे भी कुछ कहता, लेकिन, पास खड़े हुए एक दरबारी ने उसका मुंह भींचकर तड़ातड़ कई थप्पड़ें जड़ दीं और उसे फर्श पर इतने जोर से धक्का दिया कि उसका माथा फूट गया।

जब तक मुसीबत नहीं आती, कोई उससे जितना चाहे डर सकता है, लेकिन, जब वह आ जाती है, तो हयादार इन्सान का दिल मजबूत हो आता है। ठाकुर इस अप्रत्याशित अत्याचार और अनर्थ को देख कर दृढ़ स्वर में बोला–"अब किसी किस्म की सुल्ह, किसी किस्म की बातचीत और किसी तरह का अमन नामुमकिन है। हम दोनों अपने सिपाहियों के साथ वापस किले को लौटना चाहते हैं।"

ठाकुर के साथ आए हुए सब सिपाही मौत के घाट उतार दिए गए थे। ठाकुर की अब किले को वापस जाने की आशा व्यर्थ थी। शेरशाह ने सारी नैतिक भावनाओं को उठाकर ताक पर रख दिया था। वह बेशर्मी से हँसा–"अब आप वापस नहीं जा सकेंगे, ठाकुर!"

लेकिन, शाहंशाह की यह उम्मीद कि मालिक के फँस जाने पर नौकर हाथ-पैर खुद ढीले कर देते हैं, यहाँ बेकार रही। अगले दिन हाथ-पैर बँधे रत्नसिंह के डेरे में खवास खाँ ने प्रवेश किया और पूछा--"दोनों हाथों कफन नहीं लाए?"

रत्नसिंह की आँखों में खून बरस रहा था। उसने शांत स्वर में कहा–"अफगान सेनापति, विश्वासघात, दगा और फरेब के साथ व्यंग्य का वही मेल है, जो गोबर के साथ घी का। व्यंग्य एक कला है और वह कलाकार के होंटों ही पर खिलती है।"

खवास खाँ भुन गया। 'जबानदराज सिपाही, अगर बादशाह सलामत की रहमत न होती, तो तेरी जबान खींच ली जाती।"

"इसके बाद मुझे तुम्हारे मुंह से गालियाँ सुनने की उम्मीद है, अफगान सेनापति! क्या शाहंशाह नुमा डाकू शेरशाह की तमाम फौजों की कमान इसी तरह के हलके दर्जे के लोगों के हाथों में है?"

खवास खाँ रत्नसिंह के सामने अप्रतिभ हो गया। उसने सीधे अपने आने का मतलब बयान किया–"शाहंशाह का हुक्म है कि तुम्हें और सिर्फ तुम्हें इस वादे पर छोड़ दिया जाए कि ठाकुर की जान की दुआ लेकर यहाँ से अकेले किले में लौट जाओ और उन्हें पैगाम दो कि या तो वे किला खाली कर दें, नहीं तो ठाकुर कल सुबह तक जिंदा पहाड़ की चोटी से गिरा दिया जायगा।"

"तो अभी आप लोगों को रायसेनी बाने का विश्वास नहीं हुआ? अच्छी बात है, यह आखिरी कोशिश भी कर देखिए!" रत्नसिंह ने कहा।

ठाकुर की लड़की पद्मावती अपने पिता के वापस लौटने की राह देख रही थी। जब रात

किले के फाटक पर खड़े-खड़े गुजर गई, तब बूढ़े सेनापति ने दूर की पहाड़ियों पर अंतिम निगाह डालते हुए कहा–"दगा !"

"क्या, क्या कहा आपने ?" पद्मावती ने पूछा ।"

"प्यारी बच्ची, हमारे साथ दगा हुआ है" बूढ़ा भर्राते हुए स्वर में बोला । अब तक हम चैन से बैठे थे । अब हमारी परीक्षा का असली वक्त आ गया है। ईश्वर देखना चाहता है कि हम में, रायसेन के बहादुरों में, कितना पानी है ।"

"अब क्या होगा ?" पद्मा ने अपनी आवाज संयत करने की कोशिश करते हुए पूछा ।

"तुम जाकर राजकुमारों को एक जगह इकट्ठा करो । तख्त खाली नहीं रखा जायगा ।" सेनापति ने दृढ़ स्वर में उत्तर दिया ।

पद्मा आँखों पर रूमाल रखकर वहाँ से हट गई ।

उसी वक्त सामने के पहाड़ी रास्ते से एक सिर उभरा । सेनापति की निगाह उधर जम गई । इस प्रकार आनेवाले समाचारवाहक ही होते थे, क्योंकि अनिच्छित व्यक्तियों को रोकने के लिए पहाड़ियों के हर मोरचे पर सिपाही तैनात थे ।

"कौन है ?"वृद्ध सेनापति चिल्लाया— "रत्नसिंह !"

सामने पिता को देखते ही रत्नसिंह के तेज क़दम सुस्त पड़ गए । उसके मुंह से क्षीण-सी ावाज निकली–"बाप्पा !"

बाप्पा नहीं, सेनापति कहो । कहो, हमारे ाकुर को कहाँ छोड़ आए हो ?"

"शेरशाह ने फरेब किया है ।" रत्नसिंह ंपित स्वर में बोला ।

"शेरशाह ने फरेब किया है या तुमने ठाकुर साथ दगा किया है ?" सेनापति ने अपनी मली निगाहें उसकी आँखों में डालते हुए ा । उसके स्वर में तेजी थी ।

रत्नसिंह ने अपना सिर पकड़ लिया–"यह प क्या कह रहे हैं बाप्पा ? . . . सेनापति ! रायसेन के सेनापति का बेटा बोल रहा है । शाह ने पैगाम भिजवाया है कि अगर अब भी ना उसके हाथों में नहीं सौंप दिया जायगा. तो कल सुबह ही ठाकुर का शरीर पहाड़ की चोटी से नीचे फेंक दिया जायगा . . ."

"ओह, सेनापति का प्यारा बेटा शेरशाह का दूत बनकर आया है ? ठाकुर पहाड़ की चोटी से नीचे फेंक दिया जायगा और तुम, उसके अंगरक्षक, जिंदा रहकर तमाशा देखोगे ? अरे, मेरे प्यारे बेटे की कटार कहाँ है ? शायद दुश्मनों ने उसे काम में लाने से पहले ही छीन लिया है ? तो, यह लो, अपने बाप की कटार और चले जाओ वहीं, जहाँ इस किले का अधिपति गया है ।"

रत्नसिंह का दिल छलनी हो गया । सेनापति के माथे पर बहुत से भावों की संमलित रेखाएँ उभर आई थीं और उसके स्वर का संतुलन बिगड़ गया था । रत्नसिंह ने अपने बाप के आगे बढ़े हुए हाथ से कटार छीन ली । एक बार उसने अपनी पूरी आँखों से सेनापति के दृढ़ चेहरे को देखा और तुरन्त उलटे पैरों जिधर से आया था, उधर ही वापस लौट चला । कुछ दूर जाने पर सेनापति की तेज आवाज सुनाई पड़ी :—

"रतन ! रतन !"

रतन आज्ञाकारी पुत्र की तरह लौटा । पास आ जाने पर सेनापति ने कहा–"तुम पहली मुलाकात में अफगान सेनापतियों से एक चीज का जिक्र कर आए थे। तुम उसे भूले जा रहे हो । उन्हें उनकी भेंट भी तो देना है !"

सेनापति किले के अंदर गया और थोड़ी देर में वापस लौट आया । उसने बेटे के हाथों में एक गठरी पकड़ा दी ।

जब तक बेटे का सिर फिर पहाड़ियों के फेर में गुम नहीं हो गया, सेनापति उसे देखता रहा । फिर एक लंबी साँस लेकर वह किले के अंदर चला गया ।

दोपहर के नाश्ते में अफगान सेनापति खवास खाँ और सलीमशाह अंगूरों और सेबों पर हाथ साफ कर रहे थे कि डेरे के अंदर उन्हें सूचना दी गई–"रायसेन के रत्नसिंह खिदमत में हाजिर होना चाहते हैं ।"

"वाह, वाह !" खवास खाँ उछल पड़ा ! उसे रत्नसिंह के वापस आने की कोई उम्मीद नहीं थी; क्योंकि, उसके वापस आकर जवाब देने के मानी थे कि दुश्मन किला सौंप देने को तैयार है ।

"अंदर भेजो !" उसने जल्दी से कहा ।

रत्नसिंह अंदर आ गया । आते ही उसने जल्दी से कहा–"प्यारे दोस्तो, आप लोग यकीन नहीं करना चाहते थे । किले से यह भेंट आपके लिए भेजी गई है । ताकि, वक्त आने पर. . अपने ही लिए. . . . . आपको तकलीफ न करनी. . . .पड़े. . ."

उसने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ा दिए, जिनमें पकड़े हुए सफेद लट्ठे के दो कफन सहसा खुलकर जमीन पर गिर पड़े और उनके पीछे से एक नक्काशीदार मूठ प्रकट हो गई, जिसका आबदार फल पूरा-का-पूरा रत्नसिंह के पेट में घुसा हुआ था । वह लड़खड़ाया और दोनों सेनापतियों के सामने जमीन पर गिर पड़ा । कुछ ही देर में उसकी आत्मा अनंत की ओर प्रस्थान कर गई ।

दोनों सेनापति अचकचाकर एक-दूसरे का मुंह देखते रह गए ।

रायसेन दुर्ग का मस्तक अब भी ऊँचा था !

यह रायसेन का एक अनोखा नियम था कि खाली तख्त को भरने के लिए वहाँ एक के बाद एक शाही खानदान के खून के तीन शाहजादे तैयार रहते थे । पद्मावती ने जाकर उन तीनों को बुलाया । बूढ़े सेनापति ने कहा-"ईश्वर ने अपनी कृपा का साया तुम्हारे बाप के ऊपर डाल दिया है और वह अब वापस लौट कर नहीं आयगा । बताओ, तुम तीनों में से कौन आगे बढ़कर इस मुश्किल वक्त में अपने बाप के तख्त की आन को ऊँचा करेगा !"

सेनापति की ललकार सुन कर तीनों राजकुमारों को साँप सूंघ गया । शेरशाह की ताकत के सामने तीनों में से कोई भी रायसेन के किले की पतवार सँभालने के लिए तैयार नहीं था । सेनापति का मुंह क्रोध से तमतमा गया । वह आवेश में चिल्लाया–"काश कि तुम औरत होते !"

रायसेन का गर्व पतन की ओर जा रहा था । उसकी अजेय दीवारों के भीतर मुर्दा दिल इन्सान अपनी जान की दुआएँ माँग रहे थे । आशा अब कोसों दूर हो गई थी ! शेरदिल बूढ़ा सेनापति कायर शाहजादों पर लानत भेजता हुआ वहाँ से चला आया ।

बार-बार रह-रह कर सेनापति के दिल में कोई हथौड़े से चोट कर रहा था। जितनी ही वह अपने बेटे की सूरत की याद करता था, उसका दम टूटता जाता था। अब पीड़ा असह्य होती जा रही थी। ठाकुर की लड़की का हाथ पकड़े हुए वह बाहर आया और बिगुल बजाकर उसने अपने अफसरों को एक जगह इकट्ठा किया। उसके गले में एक पीला रूमाल लिपटा हुआ था, जिसके दोनों सिरों का सहारा लिए उसके हाथ ऊपर, छाती तक, उठे हुए थे।

"साथियो!" उसने सब को संबोधित किया-- "अफगानों की शक्ति इस ओर बढ़ रही है! रायसेन के भाग्य-निर्णय का अवसर आ रहा है! शेरशाह इस किले को नहीं जीत सकता। इसे भगवान् ले सकते हैं या इसमें बसने वालों का विश्वासघात! जो नीति की राह पर चलते हैं, उन्हींकी किस्मत सच्ची है और वही इज्जतदार हैं। तुम लोग किले की रक्षा करो। मैं आज पहली बार जिंदगी की सबसे बड़ी थकान महसूस कर रहा हूँ। मैं और ज्यादा जिंदा नहीं रहना चाहता। ऐसा न हो कि कहीं मुझे दगाबाज आक्रमणकारियों की सूरत देखनी पड़ जाए।"

सब लोग चुप थे। किसी की जबान से शब्द नहीं निकला। सेनापति ने अपने गले में पड़े हुए रूमाल के दोनों सिरे खींच लिए। जब तक कोई उसके दोनों हाथों को अलग करे, सेनापति की स्मरणीय जीवनलीला समाप्त हो चुकी थी।

रायसेन को ईश्वर ने नहीं लिया। वह शेरशाह की सुनहरी धोखाधड़ी थी, जिसने किले में रहने-वालों की आँखों पर पट्टी बाँध दी। शेरशाह ने धोखे से किले में घुसकर सैनिकों को मारकाट का हुक्म दिया। ठाकुर के सैनिकों को अपने शौर्य का प्रखर पानी पिलाने का अवसर मिला। रायसेन का हर सैनिक अपने दोनों हाथों में कफन लिए आक्रमणकारियों को मारकर स्वयं हँसते-हँसते कट गया।

* * *

संत कवियों की उपासना का स्वरूप

(पृष्ठ ८ का शेष)

ही उन्हें ब्रह्म की अनुभूति हुई, वैसे ही समस्त संकीर्णताओं की सीमा का त्याग करके वे असीम में विचरण करने लगे और जहाँ आत्मा को संकोच हुआ, उसी बात को फटकारने में उन्होंने कोई कसर न रखी। ब्रह्मांड की विशालता से कबीर की विशालता का कुछ अनुमान भले ही लगाया जाय, उन्हें लकीर के फकीर नहीं बनाया जा सका।

सगुण-साधना में ईश्वर को किसी-न-किसी विशेष रूप में प्राप्त करने की चेष्टा है, सख्यभाव से, वात्सल्य से, माधुर्य से। यह सब मानव स्वभाव के प्रतिरूप हैं सही, पर, ब्रह्म या विराट् ईश्वर की भावना में तो सभी आते हैं। वह इनसे कहीं अधिक है। मनुष्य अपनी ही सीमा में उसे चाहे जितना मान ले, उसका विराट्तत्त्व तो अर्जुन भी न सह सका, जो भूमंडल को अपने धनुष की टंकार से गुंजा सकता था। चाहे गीता में यह रूपक ही हो, तथापि उससे ब्रह्म की विराट् कल्पना को कुछ आश्रय मिलता है। उपनिषदों में भी ब्रह्म के इस सूक्ष्म तथा विराट् स्वरूप के संबंध में कई सूत्र मिलते हैं।

कबीर ने भी इस सूक्ष्म को तो आँखों ही में छिपा लिया:--

ना मैं देखों और को ना तोहिं देखन देऊँ।

इस प्रकार यदि निर्गुण तथा सगुण साधनाओं से प्राप्त होने वाले निर्गुण तथा सगुण ब्रह्म की ओर न जाकर इनसे परे देखा जाय, तभी कबीर के राम का कुछ परिचय मिल सकता है। वस्तुतः इन संप्रदायों तथा विभिन्न साधना-पद्धतियों में ईश्वर-संनिधान या ब्रह्मानुभूति के लिए आवश्यक है ध्यान की एकाग्रता तथा प्रेम की तन्मयता। उपासक संसार से विमुख होकर अपने उपास्य में लीन हो जाता है, सभी कामनाएँ एकमुखी होकर उपास्य में समाहित हो जाती हैं और साधक तल्लीनता की चरम अवस्था में किसी साध्य की अपेक्षा न करके स्वानुभूति कर लेता है। मोक्ष या मुक्ति यही अवस्था है, जिसमें साधक समस्त आकांक्षाओं तथा कामनाओं से रहित होकर आत्मानुभूति में विचरण करने लगता है। वही आत्मा परमात्मा है:--

सब घर मेरा साइँया, सूनी सेज न कोय,
भाग तिन्होंका है सखी जा घट प्रगट होय।
--कबीर

परमात्मा की यह अनुभूति सगुण तथ निर्गुण दोनों ही के साधकों को हो सकती है जब परमात्मा तथा आत्मा में अभेदत्व स्थापि हो जाता है। कबीर कहते हैं:--

कबीर मन मिरतक गया दुरबल भया सरीर,
पाछे लागे हरि फिरें कहत कबीर कबीर।

सूर कहते हैं:--

भक्त विरह कातर करुनामय डोलत पाछे लागे।

इस प्रकार साधक की तन्मयता अपेक्षित है जिसमें उपासक उपास्य में लीन हो जाय। निर्गु सगुण साधना-मार्ग तथा निर्गुण, सगुण ईश्व तो सीमा-रेखाएँ हैं। असीम तन्मयता से असी परमात्मा की अनुभूति असीम आत्मा ही को है सकती है, निर्गुण-सगुण-सीमा-रेखाओं में आब आत्मा को नहीं।

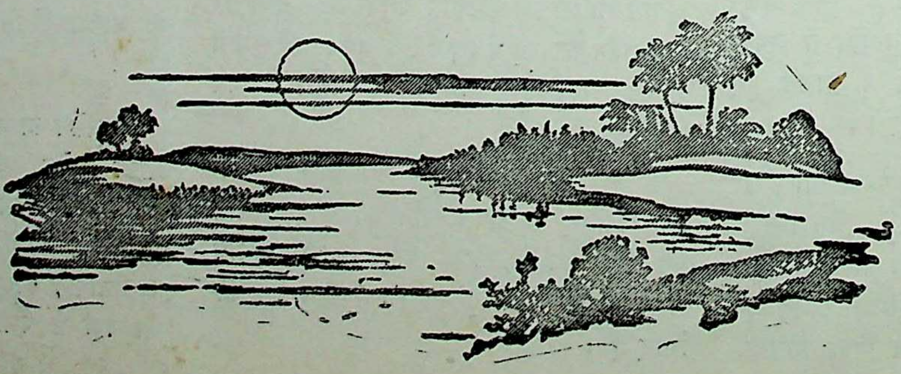

ग्रामीण शिक्षा : एक दृष्टि

– श्री शमसुदीन

भारत ग्रामों का देश है। विदेशी शासन-काल में भारत के ग्रामों की बहुत अवहेलना हुई। उसी समय से ग्रामों का जो पतन हुआ और ग्रामीण समस्याओं का उदय हुआ, वे आज भी हल की जाना हैं। उनमें शिक्षा की समस्या भी एक प्रमुख समस्या है।

स्वर्गीय पंडित हरिहरनाथ वांचू के ग्रामीण शिक्षा पर लिखे गये लेख के अनुसार अंग्रेजों के समय में शिक्षा शहर की थी और उन्हें ही सामाजिक, नागरिक एवं अन्य सब प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त थीं। राष्ट्रीय जीवन का महत्त्व भी शहरों को ही प्राप्त था। आधुनिक काल में जनता और सरकार दोनों ने ग्रामीण समस्याओं को हल करना प्रारम्भ किया है और कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि क्षेत्रों में परिवर्तन और उन्नति करना प्रारंभ होगया है।

भारत में लोकतंत्र की स्थापना हो गई है तथा शहरों और ग्रामों की समान रूप से उन्नति की जा रही है। ग्रामों में प्रधान रूप से निर्धनता और निरक्षरता की समस्या को हल किया जा रहा है। यदि ग्रामीण जनता शिक्षित और जागृत हो जायगी तो वह स्वास्थ्य और स्वच्छता के भी महत्त्व को समझ सकेगी। इसी प्रकार किसान अधिक अन्न उपजाना एवं वैज्ञानिक यंत्रों का प्रयोग करना सीख सकें, यह सब भी एक प्रकार की शिक्षा है।

अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा

देहातों में प्रायमरी शिक्षा की स्थिति उत्साह-वर्द्धक नहीं है। उनमें जो बालक पढ़ते हैं, वे साधारणत: एक या दो वर्ष के बाद पढ़ना छोड़ देते हैं और जो भी अक्षर-ज्ञान प्राप्त करते हैं, वह आगे चलकर भूल जाते हैं। यथार्थ में साक्षरता हमेशा के लिए कायम रखने के लिए आवश्यक यह है कि बालक पाँच वर्ष तक प्रायमरी शिक्षा प्राप्त करे तथा आगे लिखने एवं पढ़ने के संपर्क में बना रहे। इस प्रकार ग्रामीणों के समय, धन और शक्ति का व्यर्थ व्यय रोका जा सकता है। बालकों की प्रायमरी शिक्षा को अधिक उत्तम और उपयोगी बनाने के लिए आवश्यक है कि उनकी शिक्षा अध्यापकों की अपेक्षा अध्यापिकाओं द्वारा होनी चाहिए। महिलाएँ बच्चों को ज्यादा अच्छी तरह शिक्षित कर सकती हैं। शिक्षा को और भी उपयोगी बनाने के लिए ग्रामों में पुस्तकालयों का प्रसार होना चाहिये। किंतु, इसमें भी धन की कमी एक बड़ी बाधा है। उपर्युक्त समस्याओं को देखते हुए यही निश्चित् किया जा सकता है कि बालक को ६ वर्ष से ११ वर्ष की उम्र तक अनिवार्य शिक्षा दी जाय। यह शिक्षा योग्य शिक्षकों द्वारा इस प्रकार दी जाय कि बालक इसे छोड़ देने पर भी इसका ज्ञान न भूलें।

शिक्षा-भवन

ग्रामों में शाला-भवनों की समस्या भी एक कठिन समस्या है। साधारणत: देखने में आता है कि ये भवन अपर्याप्त होते हैं। अधिकांश इमारतें तो किराये पर और कुछ समय के लिए ही शालाओं को दी जाती हैं। ये शिक्षा के प्रसार में एक बड़ी बाधा का काम करती हैं। शाला भवन की सीमा के भीतर बागवानी तथा खेल-कूद के लिए भी पर्याप्त स्थान होना चाहिये। इससे भी शिक्षा उचित और उपयोगी होसकती है। यथार्थ में सरकार के साथ जनता को सहयोग देकर इस समस्या को हल करना चाहिये। धनी और उदार लोगों से धन जमा कर ग्रामीण अपने श्रमदान से गाँवों में शाला की अच्छी और स्वास्थ्यवर्धक इमारतें तैयार कर सकते हैं।

पाठ्यक्रम

कुछ समय पूर्व तक ग्रामीण शिक्षा का पाठ्यक्रम ऐसा रहा है कि जिसका जीवन से कोई संबंध नहीं रहता था। बालक शिक्षा समाप्त कर लेने के बाद शहर के बालकों के समान नौकरी की ही तलाश में रहता था। उसकी शिक्षा ऐसी नहीं रहती थी, जो उसे कृषि एवं छोटे-छोटे ग्रामीण उद्योगों की ओर आकर्षित करे। यथार्थ में, ग्रामीण शिक्षा ग्राम के वातावरण के अनुकूल ऐसी होनी चाहिए कि बालक ग्राम में एक उपयोगी और योग्य नागरिक बन सके। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर महात्मा गांधी ने बुनियादी शिक्षा की कल्पना की थी। उन्होंने शिक्षा की इस पद्धति में ऐसे पाठ्यक्रम की व्यवस्था की, जो बालक को कृषि, बागवानी, सूत-कताई तथा ग्रामीण वातावरण में यथासंभव कई प्रकार के छोटे-छोटे उद्योगों में निपुण करे। बालक उपर्युक्त उद्योगों में से किसी भी एक उद्योग में शिक्षा प्राप्त कर आगे चल कर अपनी जीविका की भी समस्या हल कर सके। इस प्रकार ग्रामोद्योग से परिपूर्ण पाठ्यक्रम ग्रामीण शिक्षा का महत्त्वपूर्ण और उपयोगी अंग बन सकता है, जिस ओर शासन प्रयत्नशील भी है।

ग्रामीण-शिक्षा और स्वास्थ्य

पूर्व में ग्रामीण शिक्षा में स्वास्थ्य को उतना महत्त्व नहीं दिया गया था, किंतु अब इस ओर लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ है। आधुनिक पाठ्यक्रम में व्यायाम अनिवार्य कर दिया गया है, ताकि विद्यार्थी शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ और सुन्दर नागरिक बनें। इसके लिए अखाड़े, खेलकूद तथा स्काउटिंग आदि की व्यवस्था की गई है। शिक्षा-क्रम में भी बालकों को स्वच्छता का महत्व, स्वास्थ्य के सर्व-साधारण नियम, प्रारंभिक चिकित्सा आदि का ज्ञान दिया जाता है। नये पाठ्यक्रम में समाज-सेवा को भी आवश्यक स्थान दिया गया है। इस प्रकार आधुनिक ग्रामीण शिक्षा में स्वास्थ्य की ओर यथेष्ट ध्यान दिया गया है।

गाँवों में लड़कियों की शिक्षा

प्राथमिक शालाओं में लड़कियाँ लड़कों के साथ पढ़ती हैं और यहाँ तक किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव नहीं होता। किंतु, आगे चलकर मिडिल स्कूल की ऊँची कक्षाओं का प्रश्न उठता है कि लड़कियों की शिक्षा की व्यवस्था किस प्रकार की जाय, क्योंकि इस अवस्था तक लड़कियाँ उम्र में बढ़ जाती हैं और पालक उन्हें लड़कों के साथ पढ़ाना नहीं चाहते। इसके लिए जनता सरकार को आर्थिक सहयोग देकर अलग लड़कियों के लिए शालाएं खोलने को प्रेरित कर सकती है, अन्यथा प्रायमरी शालाओं के समान मिडिल एवं हाइ-स्कूलों में सहशिक्षा का प्रचार सफल करने की

कोशिश की जाय। इतना अवश्य है कि जिन शालाओं में लड़कियों की संख्या अधिक हो वहाँ अध्यापिकाएँ अवश्य रखी जायँ।

ग्रामीण शिक्षा और आर्थिक स्थिति

ग्रामीण शिक्षा का आर्थिक पहलू उद्योगों के द्वारा सुधारा जा सकता है। शालाओं में खेती, बागवानी, सूत-कताई एवं अन्य कई प्रकार के कला-कौशलों की शिक्षा द्वारा आर्थिक स्थिति में उन्नति की जा सकती है। गाँवों की प्रधान समस्यायें निरक्षरता तथा निर्धनता की हैं। ग्रामोद्योग की शिक्षा द्वारा इन दोनों समस्याओं को एक साथ हल किया जा सकता है।

शालाओं में बागवानी द्वारा फल-फूल, तरकारी-भाजी की जा सकती है। इससे बालक भावी जीवन में कार्य करने की शिक्षा तो प्राप्त करेंगे ही, साथ ही साथ इनमें उत्पन्न चीजों को बेचकर शाला की आय बढ़ाई जा सकती है। शाला में टाट-पट्टी की ज्यादा जरूरत होती है। यह भी पालकों द्वारा तैयार कराके इसमें खर्च होनेवाले पैसे की बचत की जा सकती है।

इन विचारों का यह तात्पर्य नहीं है कि ग्रामीण शिक्षा शहर की शिक्षा से बिलकुल भिन्न कोई अलग ही चीज बना दी जाय या बनादी गई है। हम यह मानते हैं कि ग्राम-विशेष की आवश्यकताओं के अनुसार गाँवों की शिक्षा शहर की शिक्षा से कुछ बातों में भिन्न होगी, किंतु शहर और गाँवों का अन्तर हमें धीरे-धीरे खत्म करना है। सारे देश की शिक्षा चाहे वह शहर की हो, चाहे ग्राम की, एक-सी होना चाहिए। यथार्थ में संपूर्ण देश की शिक्षा-व्यवस्था उस दिशा में प्रयत्नशील है जो सर्व-साधारण जनता की निरक्षरता और निर्धनता को दूर कर उसे भारतीय लोकतंत्र को सफल बनानेवाले उत्तम नागरिक बना सके—ऐसे नागरिक जो आपस में समता, स्वतंत्रता और बन्धुत्व की भावनाओं का प्रसार करते हुए समान अवसर और अधिकारों का उपभोग कर सकें।

आर्थिक गति-विधि

विदेशी मुद्रा और हम

—श्री नर्मदेश्वर सिन्हा

हमारे देश को विदेशी मुद्रा की अत्यधिक आवश्यकता है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना के सफलतापूर्वक कार्यान्विय के लिए विदेशी मुद्रा की और भी आवश्यकता है। आज के युग में यह और भी आवश्यक है कि जनसाधारण विदेशी मुद्रा और व्यापार के सम्बन्ध को समझें, उसमें भी यह जागरूकता हो कि विदेशों से आनेवाली ऐसी सामग्री के, जिसके आयात के बिना हम काम चला सकते हैं, उपभोग को कम कर दें। देश के लिए अत्यन्त आवश्यक सामग्री का ही आयात हो। हर व्यापारी और निर्माता को यह समझने की आवश्यकता है कि व्यापार और निर्माण का एक स्तर हो, जो विदेशों में भारतीय मान की रक्षा कर सके। इस प्रकार जब भारतीय सामग्री की साख में वृद्धि होगी तभी निर्यात बढ़ सकेगा और विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सकेगी। जिस तरह यह आवश्यक है कि हम जो कुछ कमाएँ उससे अधिक उसके व्यय पर ध्यान दें, उसी तरह इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि अत्यन्त कठिनाई से अर्जित मुद्रा से हम केवल ऐसी ही सामग्री विदेशों से खरीदें जो हमारे देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने वाली हों, तथा जिनके द्वारा हम ऐसा उत्पादन कर सकें, जिसका निर्यात सम्भव हो सके। साथ ही, हम ऐसी आयातित सामग्री का उपयोग न करें जो आवश्यक हो, ऐशो-आराम के लिए हो अथवा सौन्दर्य-प्रसाधन सम्बन्धी हो। विदेशी मुद्रा की समस्या केवल कुछ व्यक्तियों की ही समस्या नहीं है। अतः उसे समस्त देशवासियों को समझना और उसके हल करने में योग देना चाहिए।

विदेशी मुद्रा कोष की समस्या इस समय पुनः अत्यन्त जटिल दिखलाई पड़ रही है। इस समय हमारा देश औसतन पाँच करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा प्रति सप्ताह व्यय कर रहा है, जबकि पिछले जनवरी और फरवरी मास में साप्ताहिक औसत क्रमशः ढाई करोड़ और एक करोड़ रुपये का था। विचारणीय यह है कि भारत का निर्यात व्यापार बहुत कम है। यह स्थिति तो तब है, जबकि सरकार निरन्तर प्रयत्नशील और सजग है। निर्यात में वृद्धि न होना और आयात में काफी कम न होना विदेशी मुद्रा समस्या के प्रमुख दो कारण हैं। विदेशी मुद्रा की कमी इस सीमा तक पहुँच गई है कि मई के तीसरे सप्ताह में रिजर्व बैंक के कोष में केवल दो अरब अड़तालीस करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा थी। तात्पर्य यह है कि एक वर्ष की अवधि में लगभग ५० प्रतिशत की कमी हो गई है। इस स्थिति से भारत सरकार का चिन्तित होना स्वाभाविक है। देश के समक्ष उपस्थित इस समस्या के कारण ही भारत सरकार समय-समय पर आयातों पर प्रतिबंध लगाती रही है।

हमारी द्वितीय पंचवर्षीय योजना का उद्देश्य देश का औद्योगिक विकास करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विदेशी मुद्रा का संकट यदि न टाला गया तो पंचवर्षीयि योजना के मार्ग में बड़ी कठिनाई उत्पन्न हो जायगी।

औद्योगिक विकास के लिए विदेशों से मशीनरी आदि मँगाना अत्यन्त आवश्यक है, किन्तु यदि विदेशी मुद्रा ही समाप्त हो जायगी तब मशीनें मंगा कर नए-नए उद्योग स्थापित करने का कार्य कैसे चलेगा? सन् १९५७ के अन्त तक भारत को चार अरब अस्सी करोड़ रुपये की विदेशी सहायता प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त विदेशों ने भारत को सन् १९५८-५९ के वित्तीय वर्ष में तीन अरब पच्चीस करोड़ रुपये का माल उधार खाते देने का वादा किया है। इस धनराशि में चालीस करोड़ रुपये की अनुदान की धनराशि भी सम्मिलित है। इस वायदे की पूर्ति पर अल्प अवधि के लिए विदेशी मुद्रा का संकट कुछ कम अवश्य हो जायगा, किन्तु भारत को विदेशों से जिस बड़े परिमाण में यंत्रों और खाद्यान्नों का आयात करना है, उसे देखते हुए हमें अधिक विदेशी मुद्रा अर्जित करने की आवश्यकता है। भारत को इसके लिए अपने आन्तरिक साधनों को जुटाकर निर्यात करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना के इन वर्षों में पर्याप्त व्यय हो चुका है, भविष्य में अधिक व्यय-भार बढ़ना स्वाभाविक है। जून मास के आरम्भ में योजना-आयोग ने अपना जो स्मृति-पत्र भारतीय संसद के समक्ष उपस्थित किया था, उसमें योजना की पूर्ति के लिए शेष दो वर्षों में २३ अरब ४४ करोड़ को आवश्यकता बताई गई है, जबकि वर्तमान साधनों से १८ अरब ४ करोड़ से अधिक रुपये की प्राप्ति सम्भव नहीं जान पड़ती। यह भी निश्चित है कि योजना के किसी कार्य में कटौती नहीं की जायगी, विशेषकर उन कार्यों में जोकि प्रथम योजना-काल में प्रारम्भ किए जा चुके हैं। किन्तु, आयात-निर्यात के सन्तुलन के लिए आयात में कमी करने और निर्यात को बढ़ाने की आवश्यकता है। पर, स्थिति यह है कि निर्यात की मात्रा घटी है और निर्यात इतना कम हुआ है कि छै अरब रुपये वार्षिक आय का निर्धारित कोटा भी सम्भव नहीं हो पा रहा है। भारत को इस समय बारह अरब रुपयों का विदेशी ऋण भी चुकाना है, उस पर ब्याज भी लग रहा है। ऐसी स्थिति में विदेशी मुद्रा के संकट को दूर करने के लिए सबसे अच्छा उपाय यह है कि भारत अधिकाधिक प्रमाण में विदेशों को सामग्री निर्यात करे। इसके लिए स्वदेश में वस्तुओं की खपत में संयम और बचत आवश्यक है। विदेशी मुद्रा की कठिनाई के बावजूद भी बहुत-सी कम-आवश्यक उपभोक्ता सामग्री विदेशों से आयात होती है और इस पर काफी विदेशी मुद्रा व्यय हो जाती है। यदि ऐशो-आराम की चीजें और कम-आवश्यक वस्तुओं का आयात बिलकुल बन्द कर दिया जाय तो बची हुई विदेशी मुद्रा का उपयोग विदेशों से मशीनरी आदि मंगाने पर हो सकता है। किन्तु, यह तभी सम्भव है, जब हम सब में, हर नागरिक में यह भावना जागृत हो कि हम अधिक अच्छी विदेशी वस्तुओं के स्थान पर स्वदेशी वस्तुओं का उपभोग करना अधिक श्रेयस्कर समझते हैं और आयातित सामग्री का उपभोग बन्द करने को तैयार हैं।

विदेशी मुद्रा के व्यय का एक और शीर्षक है खाद्यान्न। भारतीय अर्थ-व्यवस्था कृषि-प्रवान होने पर भी हमारा देश खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर नहीं हो पा रहा है। कभी-कभी दैवी प्रकोप हमारी आशाओं पर तुषारापात कर देता है। किन्तु, फिर भी मानवीय प्रयास कभी हार मानने को तैयार नहीं। हमारे देश के किसानों को इस ओर अधिक प्रयत्न करना चाहिए और सभी दिशा में ऐसे प्रयत्न होने चाहिए कि खाद्य उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि हो जाय और देश आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ सके।

कृषकों के साथ-साथ अन्य उत्पादक भी इस समस्या को हल करने में सहायक हो सकते हैं और वह इस प्रकार कि वे अच्छा और सस्ता माल तैयार करें, जिससे कि विदेशों में उसकी खपत हो और उसकी माँग बढ़े। अन्त में, उपभोक्ता भी इस समस्या को हल करने में इस प्रकार सहायता पहुंचा सकते हैं कि देश की अच्छी सामग्री निर्यात के लिए छोड़ दी जाय और कम अच्छी सामग्री को देश में उपयोग में लाया जाय। इसी तरह विदेशी सामग्री का उपयोग भी कम-से-कम कर दिया जाय। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने स्वदेशी का जो आन्दोलन देश की आजादी की लड़ाई के समय प्रारम्भ किया था, वह तब तक पूरा नहीं होता जब तक कि आर्थिक क्षेत्र में भी हम पूर्णतः आत्मनिर्भर नहीं हो जाते।

वृक्षराज के प्रति

प्रकृति के श्रृंगार, तुमको वृक्षराज-प्रणाम !

हरित बन, दुख हरित कर, कर हरित तन-मन प्राण,
दीर्घ बाहु-प्रसार कर तुम कर रहे जग त्राण।
विहग-कुल कलरव सुकूजित सृष्टि के वरदान,
तृषित धरणी के तृषा हर तुम्हीं वृष्टि-विधान।
व्याप्त तुम सर्वत्र जग में, नगर हो या ग्राम,
प्रकृति के श्रृंगार तुमको, वृक्षराज प्रणाम।

सहन कर शीतार्त्त, हिम, आतप, सुवृष्टि महान्,
बन रहे हो श्रमित-तापिस-जन निमित्त वितान।
सुखद छाया निज करों की, मधुर फल दल साज,
अटल धार समाधि जग में कर रहे हो राज।
योगिराज समान हित-चिन्तक बने निष्काम,
प्रकृति के श्रृंगार तुमको, वृक्षराज प्रणाम।

बने यद्यपि जड़, परन्तु सचेतनों में ज्ञान,
कर रहे संचार तुम हो सब गुणों की खान।
नम्रता-निष्कामता तव है प्रसिद्ध जहान,
कवि-गणों की अमर-वाणी कर रही गुण-गान
देरहे सन्देश जग को बने शोभा-धाम
प्रकृति के श्रृंगार तुमको वृक्षराज प्रणाम।

शास्त्र वर्णित है तुम्हारा सब महत्व सुभेद,
पाप औ' अभिशाप तव, जग में सदा उच्छेद,
बने मंगलदायिनी प्रतिवर्ष ही तव वृद्धि,
देश हो धन-धान्य पूरित प्राप्त करे समृद्धि।
प्रकृति के आगार तुमको वृक्षराज प्रणाम,
प्रकृति के श्रृंगार तुमको वृक्षराज प्रणाम।

—श्री कपिलदेव तैलंग

साप्ताहिक समीक्षा

श्री पाटिल का विशाखापत्तनम् के समारोह में भाषण

केन्द्रीय यातायात एवं संचार मंत्री श्री एस. के. पाटिल ने कहा कि भारत शीघ्र ही अपनी उस जहाजी देश वाली प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त कर लेगा, जो उसे सदियों पूर्व प्राप्त थी और जिसके कारण उसका संसार के विभिन्न भागों से सम्बन्ध स्थापित होसका था।

श्री पाटिल ने, जो हिन्दुस्तान जहाजीघाट में एक लाख टन जहाजों के निर्माण के उपलक्ष्य में आयोजित एक समारोह का उद्घाटन कर रहे थे; पुनः इस आश्वासन को दोहराया कि जहाँ तक भारतीय जहाज-निर्माण-उद्योग का सम्बन्ध है, सरकार निजी उद्योगों को प्रत्येक संभव सहायता देने के लिए तैयार है।

इस अवसर पर 'राजकुमारी' जहाज का जलावतरण किया गया। यह जहाज ग्रेट ईस्टर्न शिपिंग कम्पनी का है। साथ ही 'जलावीर' का श्रीगणेश किया गया। श्री पाटिल ने जहाज-निर्माण सम्बन्धी एक प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया।

श्री पाटिल ने आशा प्रकट की कि भारत आगामी पच्चीस वर्षों में विगत की भाँति पुनः जहाजी देश बन जाएगा। अतएव, जहाज-निर्माण के क्षेत्र में द्रुतगति लाने की आवश्यकता है। मेरी यह अभिलाषा है कि दूसरी पंचवर्षीय योजना के अंत तक भारत के पास सवा दस लाख टनों की जहाजरानी की व्यवस्था होनी चाहिए।

दर्शमिक प्रणाली के बाँट और नाप

केन्द्रीय वाणिज्य मंत्री श्री कानूनगो ने एक पत्रकार-सम्मेलन में बताया कि राज्य सरकारों तथा अन्य सम्बद्ध लोगों से परामर्श करके इस वर्ष दशमिक प्रणाली के बाँट और नाप चालू करने का निश्चय किया गया है। १ जुलाई, १९५८ से इसे पाट-उद्योग में तथा १ अक्टूबर से व्यापार के कुछ चुने हुए क्षेत्रों में और सरकारी विभागों तथा विकास-उद्योगों में भी कुछ निश्चित कार्यों के लिए इसे चालू किया जारहा है। इंडियन एयरलाइन्स तथा एयर इंडिया इंटरनेशनल कार्पोरेशन द्वारा माल तथा असबाब बुक किये जाने में भी मीटर प्रणाली के बाँटों तथा पैमानों का प्रयोग होगा। परन्तु, ये कार्पोरेशन हवाई दूरियों और चालों को लिखने में मीटर प्रणाली के पैमानों का प्रयोग नहीं करेंगे। इन्डेन्टों और टेन्डरों में वस्तुओं के परिमाण तथा मूल्य मीटर प्रणाली के पैमानों में लिखे जाएँगे। भूमि तथा खानों के नये सर्वेक्षण भी मीटर के आधार पर किये जाएँगे। सरकारी विभागों द्वारा प्राविधिक, सांख्यिकी, वैज्ञानिकी और बाजारों सम्बन्धी सामग्री का संकलन तथा प्रकाशन करने में मीटर प्रणाली के पैमाने काम में लाये जाएँगे।

सहकारिता-आन्दोलन का विस्तार

दूसरी पंचवर्षीय आयोजना में अब तक चौदह हजार उम्मीदवारों को सहकारी संस्थाओं के विभिन्न पदों के कामों की शिक्षा दी जाचुकी है और आयोजना के शेष तीन वर्षों में पन्द्रह हजार लोगों को काम सिखाने की योजना है। इसके लिए देश के १४ राज्यों में ४७ स्कूल खोले गये हैं।

सामुदायिक विकास-खंडों में सहकारिता को प्रोत्साहन देने के लिए १,२२० खंड सहकारी अधिकारियों को काम सिखाया जाचुका है और हर साल सात-आठ सौ अधिकारियों को काम सिखाने की योजना है। ये लोग सहकारी संस्थाओं में व्यवस्थापक, निरीक्षक, लेखापाल आदि पदों पर काम करेंगे।

सामुदायिक विकास क्षेत्रों के डाकखानों में भी सेविंग बैंक

सामुदायिक विकास मंत्रालय ने राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के विकास कमिश्नरों से अनुरोध किया है कि सामुदायिक विकास-क्षेत्रों के डाकखानों में सेविंग बैंक खाता चालू करने का हाल में ही जो निश्चय किया गया है, उसका वे पूरा-पूरा लाभ उठाएँ। साथ ही, सामुदायिक विकास और राष्ट्रीय विस्तार-सेवा-खंडों के डाक-मंडलों के अध्यक्षों से कहा गया है कि वे डाकखानों में लोगों को सेविंग खाता खोलने की अधिक से अधिक सुविधाएं दें।

जापान में अतिवृष्टि से क्षति

पश्चिमी जापान के हिरोशिमा में बाढ़ के कारण ५ व्यक्ति मर गए, ३० घायल हुए और तेरह हजार व्यक्ति गृहहीन होगए। वर्षा ने जो, चिर प्रतीक्षित थी, २०० पुल बहा दिए, १७९ समुद्री बाँधों को धराशायी कर दिया और सौ से अधिक भू-क्षरण हुआ।

पाकिस्तान के प्रधान मंत्री की घोषणा

पाकिस्तान के प्रधान मंत्री श्री फिरोजखाँ नून ने लाहौर में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि पाकिस्तान अपने झगड़े हल करने के लिए भारत या अन्य किसी भी देश से युद्ध नहीं करेगा।

भारत को अमेरिकी ऋण

नई दिल्ली और वाशिंगटन में भारत और अमेरिका के विकास-ऋण-कोष में दो करार हुए, जिसके अन्तर्गत भारत को ७ करोड़ ५० लाख डालर ऋण मिलेगा। इसमें से २ करोड़ ५० लाख डालर सड़क परिवहन की योजनाओं, ५० लाख डालर सीमेंट-उद्योग और ५० लाख डालर पटसन-उद्योग को बढ़ाने पर खर्च होगा।

१२ जून, १९५८ को आयात-निर्यात बैंक से जो करार हुआ था, उसको और इन दो करारों को मिलाकर सन् १९५८ में अमेरिका से भारत को २२ करोड़ ५० लाख डालर मिलने की व्यवस्था होगई है।

२५ जून को और एक समझौते पर हस्ताक्षर हुए, जिसके अनुसार भारत को अमेरिकाके राष्ट्रपति की एशियाई आर्थिक विकास निधि से दो करोड़ डालर मिलेंगे। इससे राउरकेला-क्षेत्र में लोहे की खानों की खुदाई की व्यवस्था होगी, सम्बलपुर से टीटलागढ़ तक रेलवे लाइन बनाई जाएगी और जापान को कच्चे लोहे का निर्यात बढ़ाने के लिए विजय बन्दरगाह का परिवर्धन भी किया जाएगा।

२६ जून को भारत और अमेरिका की सरकारों ने पाँच करारों पर हस्ताक्षर किये हैं, जिनके अनुसार भारत को १०,८७,८३० डालर की सहायता मिलेगी। यह सहायता कृषि, शिक्षा और अनुसंधान के और कलकत्ते में उड़ान की सुविधाएँ बढ़ाने, शिल्पिक शिक्षा का प्रबंध बढ़ाने तथा मध्यप्रदेश में खेती की मशीनों से काम लेने की शिक्षा देने के और भारत के भूगभ विभाग के काम आएगी।

विविध-समाचार

मध्यप्रदेश का तांत्रिक-आर्थिक सर्वेक्षण

डॉक्टर लोकनाथन द्वारा सर्वेक्षण के क्षेत्र पर प्रकाश

भोपाल स्थित सचिवालय में सचिवों और विभागीय प्रमुखों के एक सम्मेलन में व्यावहारिक अर्थशास्त्र तथा गवेषणा की राष्ट्रीय परिषद् के महानिर्देशक डाक्टर पी.एस. लोकनाथन ने राज्य-सरकार के अनुरोध पर मध्यप्रदेश में आरम्भ किये गये तान्त्रिक-आर्थिक सर्वेक्षण के व्यापक क्षेत्र पर प्रकाश डाला और आग्रह किया कि प्रत्येक व्यक्ति इसमें अपना सहयोग दे ।

विकास-सचिव श्री पी. एस. बापना ने अपने प्रारम्भिक भाषण में कहा कि इस सर्वेक्षण का उद्देश्य प्रधानतः यह जानना है कि राज्य के वर्तमान तथा भावी भौतिक साधन निश्चित् रूप से क्या हैं, जिससे कि इसका पता चल सके कि दूसरी, तीसरी और अन्य योजनाओं में राज्य की कितनी औद्योगिक प्रगति सम्भव हो सकती है । इस सर्वेक्षण में लगभग अठारह मास लगेंगे तथा पहला प्रारम्भिक प्रतिवेदन छः महीनों में प्रस्तुत किया जायगा । राष्ट्रीय परिषद् एक मान्य विशेषज्ञ-संस्था है, जिसने सरकार और निजी उद्योगपतियों दोंनो के लिए सर्वेक्षण किया है । उसने अभी हाल ही में बिहार का तान्त्रिक-आर्थिक सर्वेक्षण पूरा किया है । मध्यप्रदेश के सर्वेक्षण के समय यह परिषद् विभिन्न योजना प्रतिवेदन भी प्रस्तुत करेगी, जिनमें राज्य की निश्चित् औद्योगिक संभावनाओं पर पूर्ण प्रकाश डाला जायगा । यह परिषद् जनजाति-क्षेत्रों का भी सामान्य, सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण करेगी, जिससे कि वह उनके विकास के लिए उपाय सुझा सकें । इस सर्वेक्षण का व्यय लगभग दो लाख रुपये होगा । विदेशी परामर्शदाताओं को आमंत्रित करने में कुछ विदेशी विनिमय भी व्यय होगा, परन्तु इसकी पूर्ति परिषद् द्वारा की जायगी ।

श्री बापना ने डॉक्टर लोकनाथन से प्रार्थना की कि वह इस पर प्रकाश डालें कि यह सर्वेक्षण किस प्रकार का होगा । श्री बापना ने अपना भाषण समाप्त करते हुए कहा कि अपने खनिज और अन्य साधनों के विकास की अपार सम्भावनाओं के कारण यह राज्य एक महान् भविष्य की आशा करता है । भविष्य में किसी भी योजना-निर्माण के लिए व्यापक सर्वेक्षण प्रथम अनिवार्य सीढ़ी है । अतः आपने कहा कि इस प्रकार के सर्वेक्षण के महत्व पर विस्तृत प्रकाश डालना आश्वयक नहीं है । आपने आशा व्यक्त की कि परिषद् को हर संभव सहयोग दिया जायगा और इस सर्वेक्षण के परिणामस्वरूप राज्य के विकास में एक नया अध्याय आरम्भ होगा ।

डॉक्टर लोकनाथन ने अपने भाषण में व्यावहारिक अर्थ-शास्त्र तथा गवेषणा की राष्ट्रीय परिषद् के कार्यकलापों का वर्णन करते हुए कहा कि इस संस्था का जन्म देश में व्यापक रूप से प्रचलित इस धारणा से हुआ है कि व्यावहारिक अर्थ-शास्त्र की दृष्टि से एक स्वतन्त्र संस्था द्वारा भारत की समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाना आवश्यक है । यह परिषद् अनेक सर्वेक्षण करती है और निश्चित् प्रश्नों पर योजना-प्रतिवेदन भी प्रस्तुत करती है । इसने हाल ही में बिहार का तान्त्रिक-आर्थिक सर्वेक्षण पूरा किया है । इसके पास सुविज्ञ अर्थ-शास्त्रियों, अभियन्ताओं, विशेषज्ञों का एक बड़ा दल है ।

मध्यप्रदेश का सर्वेक्षण निश्चित् रूप से कितना व्यापक रहेगा इस पर प्रकाश डालते हुये उन्होंने कहा कि मुख्य रूप से राज्य की औद्योगिक उन्नति की सम्भावनाओं पर ध्यान दिया जायगा । यह परिषद् सभी समस्याओं का एकीकृत दृष्टिकोण से अध्ययन करेगी और वह उन सब संबंधित तथ्यों पर विचार करेगी, जिनका राज्य के उद्योगों के विकास पर प्रभाव पड़ता है । पहला प्रतिवेदन छः प्रदेशों में प्रस्तुत किया जायगा । इसमें इस बात की समीक्षा की जायगी की राज्य में कितने मानवीय तथा भौतिक साधन उपलब्ध हैं । यह एक प्रकार से मध्यप्रदेश सम्बन्धी सामान्य आर्थिक प्रतिवेदन होगा । यह अनेक दृष्टियों से एक विस्तृत प्रतिवेदन रहेगा ।

दूसरा प्रतिवेदन, जो सर्वेक्षण समाप्त होने के पश्चात् प्रस्तुत किया जायगा, वह प्रथम प्रतिवेदन का अनुसरण करेगा । प्रथम प्रतिवेदन में जिन उद्योगों का उल्लेख किया जायगा, दूसरे प्रतिवेदन में उनमें एक-एक पर पृथक् रूप से विस्तारपूर्वक विचार किया जायगा । यह अध्ययन तीन भागों में होगा । प्रथम भाग में वर्तमान उद्योगों का अध्ययन रहेगा और इस बात पर विचार किया जायगा कि उनका किस सीमा तक विस्तार हो सकता है, दूसरे भाग में उन नये उद्योगों का निर्देश रहेगा, जिनका विकास किया जा सकता है । तीसरे भाग में उन उद्योगों की चर्चा रहेगी, जिनका विकास किया जा सकता है, किन्तु जिनके लिए पूर्व आवश्यकता के रूप म कुछ अन्य बातें अनिवार्य हैं ।

डाक्टर लोकनाथन ने स्पष्ट किया कि मध्यप्रदेश में यह सर्वेक्षण श्री एम. वी. डिवेटिया, संचालक, तान्त्रिक-आर्थिक सर्वेक्षण, मध्यप्रदेश के अधीन होगा । उन्हें चार अर्थ-शास्त्री, तीन अभियन्ता, एक परिवहन अर्थ-शास्त्री और एक विद्युत् अर्थ-शास्त्री सहायता देंगे । क्षेत्र विशेषज्ञ के रूप में दो विशेषज्ञों की सेवाएँ प्राप्त करने के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ से अनुरोध किया जायगा । प्रारम्भिक प्रतिवेदन के प्रकाश में, अन्य विदेशी सलाहकारों की सहायता भी प्राप्त की जायगी । परिषद् ने पहले ही अपना स्थानीय कार्यालय भोपाल में खोल दिया है और उसके क्षेत्रीय कर्मचारियों ने अपना प्रारम्भिक शोध संबंधी सर्वेक्षण पूरा कर लिया है जो प्रथम प्रतिवेदन के कार्य को सुलभ बनायगा । परिषद् शीघ्र ही औद्योगिक शक्ति, परिवहन आदि के संबंध में एक व्यापक प्रश्नावली प्रकाशित कर रही है, जिसका विस्तृत प्रचार किया जायगा ।

इस सर्वेक्षण में औद्योगीकरण संबंधी सभी बातों पर विचार किया जायगा यथा कच्चे माल, शक्ति, पानी, मजदूर, प्रशिक्षण, आवागमन और धन की पूर्ति । योजना-प्रतिवेदनों में सम्भावित उद्योगों की स्थापना के लिए स्थान भी निर्दिष्ट किए जायंगे ।

इस सर्वेक्षण में 'जनमत का सर्वेक्षण' भी सम्मिलित होगा । सभी मानवीय व्यापार पर जनता की आदतों और सम्मति का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है और औद्योगीकरण के लिए उनका अभिमत जानना लाभकारी होगा ।

डॉक्टर लोकनाथन ने राज्य की अनेक प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख किया । उन्होंने कहा कि राज्य में आबादी के अल्प घनत्व के कारण अर्ध-यान्त्रिक तरीकों के उपयोग से विकास के लिए अवसर है । वन और खनिज साधन अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं । आपने अपना मत व्यक्त किया है

कि विद्युत् विकास को, जो औद्योगीकरण की कुंजी है, उच्च प्राथमिकता देना आवश्यक है । इसी परिवहन के विकास, जनशक्ति के प्रशिक्षण और अन्य सामाजिक बातों पर ध्यान देना होगा । आधुनिक विचारधारा के अनुसार अन्य बातों पर विचार न करके, पृथक् रूप से औद्योगीकरण के कार्यक्रम का अधिक महत्त्व नहीं है । औद्योगीकरण की सफलता पर सामाजिक और अन्य परिस्थितियों का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है और उन्हें ध्यान में रखना आवश्यक है ।

अन्त में डाक्टर लोकनाथन ने अधिकारियों से आग्रह किया कि वे इस सर्वेक्षण में पूर्ण सहयोग दें, जिससे कि परिषद् सही निष्कर्षों पर पहुंच सके । उन्होंने सर्वेक्षण के लिए दी गई सुविधाओं के लिए राज्य सरकार के प्रति आभार प्रगट किया और यह आशा प्रगट की कि प्रतिवेदन के फलस्वरूप राज्य और भी अधिक प्रगति कर सकेगा ।

राजस्व उप-मंत्री सिवनी जिले में

उप-राजस्व मंत्री श्री जगमोहनदास ने दिनांक २ जुलाई को जबलपुर जिले से लगभग ६८ मील दूर सिवनी जिले के काइनी ग्राम में गाँववालों के समक्ष भाषण करते हुए विशाल एवं रचनात्मक दृष्टिकोण का विकास करने पर बल दिया । श्री जगमोहनदास एक पंचायत-घर का उद्घाटन कर रहे थे, जो जनता तथा घनसौर-विकास-खंड के समवेत प्रयासों द्वारा ४,२०० रुपये की कुल लागत से बनाया गया है। लागत का आधा अंशदान जनता ने दिया है । यह भवन स्थानीय निवासियों के अथक रचनात्मक उत्साह का प्रतीक है, जो ३१ साल के बाद अपना एक पंचायतघर बनाने में समर्थ हुए हैं । इस गाँव में ग्राम-पंचायत की स्थापना सन् १९२७ में हुई थी और इतने अरसे तक इसका अपना कोई भवन नहीं था ।

ग्राम में अब एक पंचायत-भवन और गांधी चबूतरा है । इसके अतिरिक्त दो नई ग्राम सड़कें और दो पक्की नालियाँ हैं । प्राथमिक शाला-भवन की भी मरम्मत की जाचुकी है । ये सभी कार्य कुल १७,६३४ रुपये की लागत से पूरे हुए हैं, जिसमें ८,००० रुपये से ज्यादा जनता का अंशदान है ।

इसके पश्चात् उप-मंत्रीजी ने कहानी पल्लीरी सड़क के निर्माण-कार्य का निरीक्षण किया, जो अभाव निवारक-सहायता-कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रगति पर था । दस हजार से अधिक मजदूर इसमें कार्यरत हैं । उन्होंने माध्यमिक शाला-भवन के प्रांगण में एक नीम का पौधा लगाया ।

श्री जगमोहनदास लखनादौन भी गये, जहाँ उन्होंने स्थानीय उच्च पाठशाला के विद्यार्थियों के समक्ष भाषण दिया और तहसील भवन के अहाते में एक पौधा लगाया ।

प्राथमिक एवं मिडिल कक्षाओं का नया पाठ्यक्रम

संचालक लोक शिक्षण मध्यप्रदेश ने सूचित किया है कि प्राथमिक और पूर्व माध्यमिक (मिडिल) शालाओं की कक्षा १ से ८ के लिए, जो पाठ्यक्रम भाग १ व २ में फरवरी १९५८ में मुद्रित किया गया था, वह निरस्त किया गया है और उसमें आवश्यक संशोधन कर उसे शासकीय मुद्रणालय में मुद्रणार्थ भेजा जारहा है । इस पाठ्यक्रम के भाग १ कक्षा १ से ५ तथा भाग २ (कक्षा ६ से ८) की प्रतियां अधीक्षक, राजकीय मुद्रणालय, मध्यप्रदेश, भोपाल से इस मास के अन्त तक मुद्रित होने पर उनके द्वारा निर्धारित मूल्य पर उपलब्ध हो सकेंगी ।

कक्षा ६, ७ व ८ में संस्कृत को राष्ट्रीयकृत पुस्तकें

संचालक, लोक शिक्षण, मध्यप्रदेश, भोपाल ने सूचित किया है कि सत्र १९५८-५९ से कक्षा ६-७ व ८ में संस्कृत विषय की पुस्तकें राष्ट्रीयकृत रहेंगी और इस विषय की जो पुस्तकें मध्यप्रदेश के भिन्न-भिन्न संभागों में १९५७-५८ में चल रही थीं, उनका चलन निरस्त किया जाता है।

सेवा-निवृत्त सैनिकों में सहकारिता . सहकारी समितियों की स्थापना

ग्वालियर सम्भाग के सैन्य पर्षद् (सोल्जर बोर्ड) के सेक्रेटरी द्वारा बताया गया है कि पूर्व सैन्य अधिकारियों में सहकारिता की भावनाएं सजग हैं तथा इस दिशा में शासन की ओर से भी यथोचित सहयोग दिया जा रहा है । ग्वालियर सम्भाग के शिवपुरी जिले के चक कमलपुर स्थान पर सैनिक सहकारी समिति स्थापित हुई है । उक्त संस्था उचित धनराशि की व्यवस्था न होने के कारण हानि उठा रही थी । ग्वालियर सम्भाग के आयुक्त द्वारा उक्त सहकारी संस्था के विकास तथा ऋण-व्यवस्था की अनुशंसा शासन की ओर प्रेषित करने पर उक्त समिति को ३,००० रुपये निःशुल्क सहायता तथा ८,६०० रुपये की धनराशि ट्रेक्टर आदि आवश्यक कृषि-यंत्र क्रय करने के लिए ऋण स्वरूप स्वीकृत हुई है ।

मुरैना जिले के बागचीनी स्थान पर कार्यरत सामूहिक कृषि सहकारी संस्था (मर्यादित) इसी वर्ष स्थापित हुई । पूर्व सैनिकों की उक्त सहकारी संस्था के लिए ८० एकड़ भू-क्षेत्र की एक वर्ष के लिए व्यवस्था की गई थी, उक्त भू-क्षेत्र में वृद्धि की मांग भी शासन की ओर प्रेषित की गई है । हाल ही में शासन द्वारा १,२५० रुपये की धनराशि उक्त सहकारी संस्था के लिए बैल क्रय करने के लिये स्वीकृत की गई है ।

गुना जिले की लक्ष्मी मुक्त औद्योगिक सहकारी समिति तथा मुक्त सैनिक कृषि और औद्योगिक सहकारी समिति तथा मुरार की सैनिक फर्म तथा लश्कर में रिट्रेन्चड मिलिट्री ऑफिसर्स एग्रीकल्चर फार्म उक्त सैन्य पर्षद् (सोल्जर बोर्ड) के अन्तर्गत कार्य कर रही हैं ।

भिण्ड जिले में अटेर भटपुरा सैनिक सहकारी समिति (मर्यादित) हाल ही में स्थापित हुई है । ईंट-निर्माण कार्य उक्त समिति द्वारा शीघ्र प्रारम्भ किया जायगा ।

तम्बाकू को फसल

मध्यप्रदेश के १९५७-५८ वर्ष के वित्तीय पूर्वानुमान के अनुसार चालू वर्ष में राज्य में १२,४७६ एकड़ भूमि पर तम्बाकू की खेती की गई । यह क्षेत्र विगत वर्ष के तम्बाकू के उत्पादन-क्षेत्र १५,९१८ एकड़ से २१.६ प्रतिशत कम है । उत्पादन क्षेत्र में हुई इस कमी का कारण इसकी बोनी के समय अपर्याप्त वर्षा होना है।

सामान्य फसल की स्थिति

१५ फरवरी, १९५८ के उपरान्त मौसम आंशिक रूप से स्वच्छ तथा आंशिक रूप से मेघाच्छादित था, इसके साथ राज्य के कुछ जिलों में आकस्मिक वर्षा भी हुई, इसका फसल पर न्यूनाधिक प्रभाव पड़ा ।

समस्त राज्य की फसल का उत्पादन २,४७९ टन अनुमानित किया गया है, जो विगत वर्ष के ३,८५७ टन उत्पादन से ३५.७ प्रतिशत कम है। उत्पादन में इस कमी का कारण अंशतः उत्पादन-क्षेत्र में कमी तथा अंशतः अपर्याप्त वर्षा है।

राजधानी में परीक्षा-मूल्यांकन-संगोष्ठी संपन्न

अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षा-परिषद् द्वारा आयोजित दस दिवसीय परीक्षा-मूल्यांकन-संगोष्ठी का उद्घाटन भोपाल में केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के सचिव श्री के. जी. सैंयदेन ने किया ।

शिक्षा मंत्री डॉक्टर शंकरदयाल शर्मा ने मूल्यांकन-विशेषज्ञों का राज्य-शासन की ओर से स्वागत किया। डॉक्टर शंकरदयाल शर्मा ने वर्तमान परीक्षा-प्रणाली के दोषों का उल्लेख किया और आशा व्यक्त की कि शीघ्र ही ऐसी परीक्षा-प्रणाली का विकास होगा, जिसमें परीक्षा-निरीक्षकों (इन्विजिलेटर) की आवश्यकता नहीं रहेगी। फिर भी, किसी प्रकार की परीक्षा की उपयोगिता रहती है, क्योंकि परीक्षा में परीक्षार्थी के कुछ ऐसे गुण उभर आते हैं, जो कि व्यक्ति के भावी जीवन में काफी उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। डॉक्टर शर्मा ने, परीक्षाएँ लेने तथा परीक्षा-मंडलों द्वारा प्रश्न-पत्र तैयार करने के लिए मार्ग-दर्शिकायें बनाने के लिए छोटी एव स्वतंत्र इकाइयां गठित करने का सुझाव दिया ।

श्री के. जी. सैंयदेन न अपने उद्घाटन भाषण में, देश में वर्तमान शिक्षा-प्रणाली की आलोचना, जो कि अकसर निंदात्मक होती है, का उल्लेख करते हुए कहा कि इसे सुविचारित और सुनियोजित तरीके से बदलने का कोई प्रयत्न नहीं होरहा है । फिर भी, आपने स्मरण दिलाया कि बेहतर परीक्षा-प्रणाली का प्रारंभ, परीक्षा-मंडलों को प्रणाली में परिवर्तन करने के आदेश देने मात्र से नहीं किया जा सकता है। आपने कहा कि शासन का प्रस्ताव है कि परीक्षा-मूल्यांकन के इस नये आंदोलन का, शिक्षक किन उद्दश्यों के लिए कार्य करे, उन्हें निर्दिष्ट करने के एक नये और प्रभावपूर्ण माध्यम के एक व्यापक कार्य के रूप में उपयोग किया जाय। श्री सैंयदेन ने आशा व्यक्त की कि यह आंदोलन संपूर्ण शिक्षा-पद्धति को नया स्वरूप प्रदान करने के प्रयत्न का प्रारंभ होगा।

डॉक्टर वेञ्जामिन एस. ब्लूम, अध्यक्ष, परीक्षक मंडल, शिकागो विश्वविद्यालय तथा मूल्यांकन कार्य के विशेषज्ञ, जो कि विचार-संगोष्ठी के संचालक हैं, ने भी उक्त अवसर पर भाषण दिया । भारत की शिक्षा-प्रणाली के व्यक्तिगत अध्ययन के आधार पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि परीक्षाओं के परिणाम, शिक्षकों तथा छात्रों की मेहनत और प्रयत्नों के अनुरूप नहीं हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा की पद्धति एकाएक नहीं बदली जा सकती। उसके लिए क्रमशः एक के वाद दूसरा कदम उठाना पड़ेगा और इसमें यह भी ध्यान रखना होगा कि मूल्यांकन की दिशा में किए जारहे सभी प्रयत्नों में सामंजस्य रहे।

डॉक्टर ब्लूम ने एक ओर मूल्यांकन-अधिकारियों और शिक्षक तथा दूसरी ओर शिक्षक और प्रशासक के बीच निकट संपर्क की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि परीक्षा-प्रणाली में परिवर्तन के साथ ही कक्षा में शिक्षण की पद्धति भी बदलना चाहिये ।

विचार-संगोष्ठी में १५ मूल्यांकन-विशेषज्ञों ने भाग लिया। इनमें से ५ मूल्यांकन अधिकारी हैं, जिन्हें अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षा मंडल ने नियुक्त किया है तथा १० शिक्षा-शास्त्री हैं. जिन्हें डॉक्टर ब्लूम के पास शिक्षण ग्रहण करने के लिए शिकागो विश्वविद्यालय भेजा गया था। ५ मूल्यांकन अधिकारियों को ५ विभिन्न क्षेत्र, जिनमें देश विभक्त किया गया है, सौंपे गये हैं। विचार-संगोष्ठी ५ क्षेत्रों में से प्रत्येक में एक इकाई स्थापित करने की योजना बनाएगी। प्रत्येक इकाई में ३ अधिकारी रहेंगे, जो कि मूल्यांकन कार्य के संवंध में शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करेंगे। विशेषज्ञगण आगामी वर्ष के लिए एक विस्तृत योजना तैयार करेंगे।

स्मरणीय है कि मूल्यांकन अधिकारियों में से प्रत्येक ने अपने-अपने क्षेत्र में ४० से ६० तक कार्यशालाओं का संचालन किया है, जहाँ माध्यमिक शालाओं के शिक्षकों को मूल्यांकन-कार्य में प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

भारत सरकार के उप शिक्षा सलाहकार श्री ए. के. कपूर ने आगत विशेषज्ञों के लिए मध्यप्रदेश शासन द्वारा की गई उत्तम व्यवस्था के लिए आभार व्यक्त किया ।

'परीक्षा मूल्यांकन विषय' पर आयोजित १० दिवसीय संगोष्ठी दिनांक ४ जुलाई को यहां समाप्त होगई । इस संगोष्ठी ने अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् की परीक्षा इकाई के प्रथम वर्ष के लिए एक विस्तृत योजना बनाई है । इस दस दिवसीय संगोष्ठी की प्रमुख व्यवस्था एक "परीक्षण कार्यशाला" थी, जिसे डॉक्टर बैंजामिन, एस. ब्लूम, अध्यक्ष परीक्षक मंडल, शिकागो विश्वविद्यालय तथा डॉक्टर मेंडिप हाल ने जोकि मूल्यांकन कार्य के एक माने हुए विद्वान् हैं, भोपाल-क्षेत्र के शिक्षकों के सहयोग से संचालित किया। "परीक्षण कार्यशाला" का आयोजन परीक्षकों को प्रशिक्षण का सुअवसर प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया। यह एक प्रसन्नता की वात है कि दो-तिहाई से अधिक शिक्षकों ने यह इच्छा प्रगट की है कि यह "परीक्षण कार्यशाला" चालू रखी जाय, जिससे जो ज्ञान यहाँ मिला है, उस पर वे अधिकार प्राप्त कर सकें।

मूल्यांकन अधिकारियों ने निम्नलिखित क्षेत्रों में महत्वपूर्ण शैक्षणिक प्रयोजनों के लिए परीक्षा सामग्री की रूपरेखा तैयार करने की योजना बनाई है:—

१. सामान्य विज्ञान और भौतिक शास्त्र,
२. सामान्य गणित और रेखा गणित,
३. सामाजिक अध्ययन और भूगोल,
४. अंग्रेजी और हिन्दी।

परीक्षा की सामग्री तैयार करने का कार्यक्रम

यह परीक्षा-सामग्री समस्त भारत के चुने हुये शिक्षकों के साथ सघन कार्य करने के पश्चात् तैयार की जायगी। यह शिक्षा-सामग्री माध्यमिक मंडलों को बाह्य मूल्यांकन के लिए और शिक्षकों को आन्तरिक मूल्यांकन के लिए उपलब्ध की जायगी ।

डॉक्टर ब्लूम ने आशा व्यक्त की कि प्रशिक्षण महाविद्यालयों के स्तर पर और विस्तार-सेवा संयोजक स्तर पर विषय-विशेषज्ञ शिक्षकों को उन महान् उद्देश्यों की शिक्षा देने की कुशलता प्राप्त करने में सहायता देंगे, जिन पर पाठ्यक्रम में जोर दिया गया है ।

कृषक सप्ताह

शहडोल । सघनोत्तर विकास खण्ड कोतमा के अन्तर्गत अधिक उपज बढ़ाने हेतु कृषक-सप्ताह का आयोजन किया गया। इस सप्ताह के अन्तर्गत, क्षेत्र के सात ग्रामों में कार्यक्रमों की आयोजना थी, जिसमें खाद के गड्ढे बनाना, कृषि-प्रदर्शन, किसानों से सम्पर्क बढ़ाना, तथा उपज बढ़ाने हेतु चर्चा आदि की गई । हरी खाद के सफल प्रयोग के बारे में किसानों को ज्ञान कराया गया ।

श्री शंवन्दे

विश्व-कल्याणार्थ

अ. भा. श्री मारुति अध्या. महा मंडल द्वारा
आयोजित पुरुषोत्म मास जप यज्ञ में
भागीदार बनिये ।

स्वार्थ और परमार्थ का सरल साधन-दोनों श्रावण और भादों में 'हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे—हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्णा कृष्णा हरे हरे" इस महामंत्र का लेखी जप करने से सर्व सुलभ है। आवश्यक जानकारी निम्नलिखित पते से प्राप्त कीजिये ।

पता.—मारुति भवन मुनहड़ा, पोस्ट अशोखर
व्हाया ग्वालियर, मध्यप्रदेश

३०८–(३१)

नोटिस

कम्पूरीबाई पुत्री बल्देव, काछी श्यामपुर हाल विजयपुर । बनाम

रामकिशोर पुत्र गंगाविशन, काछी गोवरदा, परगना विजयपुर ।

मैं कम्पूरीबाई पुत्री बल्देव, काछी, निवासी श्यामपुर, परगना विजयपुर की हूँ । मेरी शादी रामकिशोर पुत्र गंगाविशन, काछी निवासी गोरवदा, परगना विजयपुर के साथ हुई थी। तीन बच्चे भी हो चुके लेकिन मेरा पति सदा से ही मुझे भूखी-प्यासी मारता तथा हर किस्मी तकलीफ देता रहा है । अब करीबन २ साल से मुझे घर से निकाल दिया है। अब मैं विजयपुर में आकर अपने मौजूदा दो बच्चों की परिवरिश कर रही हूँ । अब मैं १० योम का म्यादी नोटिस देकर जाहिर करती हूँ कि मुझे अन्दर म्याद खाने-कपड़े बेचने व जान-जोखम की जमानत अदालत में रजिस्ट्री शुदा किसी खास मुआज्जिज आदमी की कराके लेजाये, वरना बाद गुजरने म्याद मेरे विवाहिता पति का कोई उज्र समाअत नहीं होगा। फिर मैं चाहे जिस सख्श के साथ नात्रा धरीचा कर लूंगी । इति.

—कम्पूरी बाई

भारत सरकार से "रजिस्टर्ड"

सफेद दाग का शत्रु

इस रामबाण दवा से स्त्री, पुरुष या बालकों के शरीर पर के सफेद दाग ऐसे निकल जाते हैं कि वे कहाँ थे इसका पता भी नहीं लगता, हजारों ने अनुभव करके प्रशंसा-पत्र भेजे हैं। मूल्य ५), अधिक विवरण मुफ्त मंगाकर देखिये। वैद्य के. आर. बोरकर, (मध्य.) मु. पो. मंगरूल-पीर, जिला अकोला, (विदर्भ)। २७९–(२८-३०)

उद्योग संचालक, मध्यप्रदेश

निम्नलिखित पदों के लिये आवेदन-पत्र आमंत्रित किये जाते हैं । यह पद अस्थायी है, लेकिन भविष्य में भी पूर्ववत् रहेंगे, ऐसा अनुमान है। अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों को अधिमान (Preference) दिया जावेगा। हिन्दी का ज्ञान होना आवश्यक है। आवेदन-पत्र ३० जुलाई, १९५८ तक इस कार्यालय को प्राप्त हो जाना चाहिये। आवेदक को स्वयं के व्यय से समक्ष भेंट (Interview) के लिये उपस्थित होना पड़ेगा। निम्नलिखित ब्योरे के साथ आवेदन-पत्र आवेदक द्वारा हस्तलिखित हिन्दी या अंग्रेजी में होना चाहिये। सर्टिफिकेट व प्रशंसा पत्रों की प्रतिलिपियाँ भेजना आवश्यक है।

१. पद का नाम जिसके लिये आवेदन है ।
२. उम्मीदवार का पूरा नाम ।
३. पिता का नाम, धंधा एवं वर्तमान पता ।
४. उम्मीदवार का पता ।
५. जन्म तारीख एवं जन्म स्थान ।
६. राष्ट्रीयता ।
७. शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभव का विस्तृत ब्योरा दीजिये ।
८. खेल-कूद, डिबेट आदि व जिसमें भाग लिया व अन्य योग्यतायें ।
संलग्न सर्टिफिकेट व प्रशंसा पत्रों की सूची ।

१. निम्नलिखित धंधों में शिक्षक

वेतनमान रुपये ८०-५-१३० ।

शैक्षणिक योग्यता:—मिडल पास । किसी मान्यता प्राप्त संस्था का सर्टिफिकेट एवं दो वर्ष का अनुभव । योग्य एवं निपुण उम्मीदवारों के लिये शैक्षणिक पात्रता कम की जा सकती है ।

पद जिसके लिये आवश्यकता है	पदों की संख्या
फिटींग इन्सट्रक्टर	१
शीट मेटल इन्सट्रक्टर	१

२. लुहार एक

वेतनमान रुपये ५०-३-९५

शैक्षणिक पात्रता:—किसी मान्यता प्राप्त संस्था का लुहारी में सर्टिफिकेट एवं दो वर्ष का अनुभव। विशेष अनुभवी एवं निपुण आवेदक के लिये शैक्षणिक पात्रता कम की जा सकती है ।

३. वेल्डर एक

वेतनमान रुपये ५०-३-८०

शैक्षणिक योग्यता:—किसी मान्ता प्राप्त संस्था का सर्टिफिकेट एवं दो वर्ष का अनुभव । विशेष अनुभवी एवं निपुण आवेदक के लिये शैक्षणिक पात्रता कम की जा सकती है ।

सी० एम० खार,
अधीक्षक,
उद्योग विभाग, ग्वालियर म. प्र.

३०७–(३१-३२)

बाघ गुहाओं का स्तम्भ-शिल्प

(पृष्ठ ६ का शेष)

हुई है। तत्पश्चात् के पुनरुत्थान प्रयास यहाँ असंबद्ध हैं।

स्तंभों की आकृति एवं कलात्मकता के संबंध में प्राचीन साहित्य अभिव्यक्तिपूर्ग है। अथर्ववेद उनकी स्थूलता एवं गोलाई का वर्णन उपर्युक्त रूप से करता है और रावण के चैत्य प्रासाद के हेम परिष्कृत स्तंभों को आदिकवि ने शतधार, सौ पहलों युक्त, कहा है (वा० रा० ६।४३।१८), जहां शत बहुलता का द्योतक है तथा पहलों की निश्चित संख्या का जहां उल्लेख हुआ है, उन्हें अष्टास्र (अठपहलू) कहा गया है (वा० रा० १।१४।२६)। गणना की अष्टक प्रणाली सांस्कृतिक इतिहास में द्राविड़ मूल की प्रसिद्ध है और प्रतीत यह होता है कि ऋग्वेद का अष्टकों मे विभाजन, आयुर्वेद एवं योग के अष्टांग, आठ योगैश्वर्य, आठ प्रहर, षोडशकला, षोडशोपचार, चौंसठकला आजि दिस प्रकार संस्कृति की द्राविड़ता के अवशेष हैं, साहित्य के एवं अवशेषों के स्तम्भों की आठ, सोलह और चौबीस पहलें उसी वत्सल गोद की सूचना देती हैं, जिसमें उनके शिल्प का विकास हुआ। अत्यंत प्राचीन काल से उन स्तंभों के, जो यदि आदिम निष्पादन प्रणाली में गोल या समग्रतः चौकोर नहीं हैं, अवशेष मिलने लगते हैं जिनकी पहलें अष्टकों में गिनी जा सकती हैं। भोपाल के पुरातत्व संग्रहालय में मौर्यकालीन शिल्प निष्पत्ति का एक पाषाण पात्र क्र० क १० पर संग्रहीत है, जिसका वर्गाकार चौकी पर आधारित दण्ड अष्टास्र है तथा कटक की मौर्यकालीन गणेश गुहा के चौकोर स्तंभ बीच में आठ पहलों में निर्मित हैं (फर्गुसनः वही, आकृति २६७)। अनुराधापुर (श्रीलंका) के धुपाराम दागबा में ईसा पूर्व तीसरी शती के अत्यन्त परिष्कृत रचना के अष्टास्र स्तंभ प्राप्त हैं (वही, आकृति १३१)। शुंगकाल में विदिशा के हेलियोदोर स्तंभ का सौन्दर्य वर्धन पहलों द्वारा किया गया है। इसकी नीचे के भाग में निर्मित आठ या छह पहलें मध्य में दोगुनी हो गयी हैं और एक अलंकरण पट्टी से ऊपर ये पुनः द्विगुणित हुई हैं (म० भा० का इतिहास, खंड १, पृष्ठ ३९३ के सामने का चित्र) तथा कार्ली के गुहा चैत्य में जहां भीतर अठपहलू स्तंभों की पंक्तियां निर्मित हैं, इसके आगे खड़े किये गये स्तंभ को सोलह पहलों में बनाया गया है (फर्गुसनः वही, आकृति ६९)। शुंगकाल में निर्मित भाजा गुहा समह के पश्चिम में स्थित एक गुहा विहार में (वही, आकृति ९७), राजसन में रक्षित स्तंभ में (आर्क० सर्वे ऑव इंडिया, वार्षिक प्रतिवेदन, १९१८-१९, भाग १, फलक ९ ख), नासिक के गुहा चैत्य की खुम्भियों में (फर्गुसनः वही, आकृति ६६), बेदसा के गुहा चैत्य के अलिंद में (कुमारस्वामीः वही, चित्र ३३) तथा अजण्टा के गुहाचैत्य क्र० ९ में (देबल मित्रः अजण्टा पृष्ठ ३१) स्तंभों की अष्टास्र आकृति मिलती है। नासिक के नहपान विहार में (ईसवी प्रथम शती) और गौतमी पुत्र विहार में (दूसरी शती) (फर्गुसनः वही, आकृति १०३ और १०४) तथा उसके पश्चात् भी अष्टास्र स्तंभ मिलते रहते हैं (कुमारस्वामी : वही, चित्र १५१ तथा देबलमित्र : अजण्टा)। इस संक्षिप्त विहंगावलोकन से ज्ञात होता है कि आठ पहलों द्वारा स्तंभों की सौन्दर्यवृद्धि की परंपरा यद्यपि प्रागैतिहासिक युग से प्रारंभ होकर बहुत पीछे के काल तक चली है, केवल पहलों की बहुलता सुस्थित प्राचीनता की द्योतक है। तदनन्तर उसका स्थान भास्कर्य अन्य वास्तुअलंकरणों ने लिया था अथवा उसकी सहायतार्थ उन अनेक आकृतियों का विनियोग होता था, जिनकी अवरकालीनता सुस्थापित है। यह विशेषता अजण्टा की पिछली गुहाओं में प्रेक्षणीय है।

वाल्मीकि ने अष्टास्रता का उपर्युक्त कथन उन इक्कीस स्तंभों के बारे में किया है जिनका उच्छ्रयन दशरथ के यज्ञ में शोभार्थ (केवल सौन्दर्य दृष्टि से) किया गया था। शिल्पियों ने विभिन्न लकड़ियों के इन इक्कीस हाथ ऊँचे एवं फैली बाहों में पकड़े जाने योग्य स्तंभों को दृढ़, चिकना और सुन्दर बनाया था तथा इन्हें सुवर्ण से मढ़ा था और पुष्प एवं वस्त्रों से अलंकृत किया था (वा० रा० १।१४।२४-२७)। केवल शोभार्थ, यज्ञ विधान में नहीं, प्रजापति द्वारा कराए गये स्वर्णमय चैत्य एवं मणिमय यूपों के निर्माण का उल्लेख महाभारत में मिलता है तथा पौरव सुहोत्र के काल में ऐसे चैत्य एवं यूप सैकड़ों हजारों की संख्या में निर्मित हुए थे (म० भा० २।३।१२-१३; १।९४।२९)। विशेष पर्वों पर भी स्तंभ खड़े किये जाते थे और नवीन वर्ष के प्रथम दिन उच्छ्रित की जानेवाली इन्द्रमह उत्सव की यष्टि को मालाओं एवं आभूषणों से अलंकृत किया जाता था (म० भा० १।६३।२०-२१)। मौर्यकालीन स्तंभ इन यूप एवं यष्टियों के शोभन अवशेष हैं तथा ऊपर से किये गये उक्त अलंकरणों का अनुवाद स्थापत्य में भी हुआ था, यह साँची स्तूप के अवशेषों से ज्ञात होता है। इसके उत्तरी तोरण के बाएँ स्तंभ के भास्कर्य में ऐसे एक स्तंभ को अंकित किया गया है, जिस पर लटकते न्यूनतम अठारह कण्ठहार गिने जा सकते हैं (फर्गुसनः वही, आकृति ३९)। इस अलंकृतता एवं सौन्दर्य दृष्टि का पुंजित विनियोग, प्रतीत होता है, तोरण स्तंभों पर होता था और साहित्य में जहाँ तोरण का उल्लेख आता है, यह प्रकट हो जाता है कि कवि किसी अत्यन्त सुकृत वास्तु-अभिप्राय के सौन्दर्य को व्यक्त करना चाहता है। वाल्मीकि ने किष्किन्धा के प्रासादों के तोरणों को दिव्य पुष्पों से अलंकृत एवं तपे हुए स्वर्ण की प्रभायुक्त एवं रावण के अन्तःपुर के तोरणों को सुवर्ण निर्मित कहा है और स्वयं रावण का प्रासाद ऐसे अनेक तोरणों से आवृत था जो चांदी, सुवर्ण एवं चित्रांकनों से अलंकृत थे (वा० रा० ४।३३।१७; ५।४।२४ और ५।५।४) तथा महाभारत के रचयिताओं ने उन तोरणों का विशेष रूप से उल्लेख किया है जिनसे द्रौपदी के स्वयंवर की भूमि सजाई गयी थी और जो वरुण की देवसभा को सुशोभित करते थे (म० भा० १।१८४।१७; २।९।५)। बाघ गुहा क्र० ४ के सभामंडप में अवशिष्ट तोरण, जिनके स्तंभ मणिमेखलाकृतियों से अलंकृत हैं, शोभार्थ निर्मित इन स्तंभों एवं तोरणों के उत्तराधिकारी हैं।

बाघ के तोरण स्तंभों में धातु स्तंभों के गढ़ाई के शिल्प का सौष्ठव लाने का प्रयास किया गया है, जिससे इनके निर्माण काल म इस प्रकार के मूल अभिप्रायों का, जिनकी ये अनुकृति हैं, अस्तित्व प्रकट होता है। भारत की संस्कृति के प्राचीनतम उल्लेख वैदिक साहित्य में मिलते हैं, जहां अश्न नामक असुर के आयस (धातु) निर्मित पुर (गोपुर या तोरण) का इन्द्र द्वारा विध्वंस किया जाना वर्णित है (ऋग्वेद २।२०।८)। आर्य आधिपत्य के पश्चात् भी असुर वास्तु में धातुमय तोरणों का निर्माण होता था यह रावण के प्रासाद के उपर्युक्त वाल्मीकि कृत वर्णनों से प्रकट है। महाभारत के रचनाकाल में भी धातु शिल्प उन्नत होने का साक्ष्य द्रौपदी के स्वयंवर में निर्मित धातु के घूमते हुए वराह के उल्लेख में मिलता है (म० भा० १।१३४।२३) तथा पतंजलि-

द्वारा लोहशास्त्र की रचना किये जाने से शुंग-काल में धातु-शिल्प के विकास का पता चलता है (लेखक कृतः पतंजलि और उनकी जन्मभूमि, 'मध्य प्रदेश संदेश', २ मार्च १९५७, पृष्ठ १४)। इन युगों के धातु के वास्तु अभिप्रायों का उत्तरवर्ती पीढ़ियों की आवश्यकताओं के अनुरूप सामग्री में तदनंतर परिवर्तित होना स्वाभाविक था, किन्तु प्राचीन भारत की इस शिल्प-समृद्धि के स्मारक के रूप में कुछ पीछे के काल का (ईसवी तीसरी शती का अंत) अधिराज भवनाग द्वारा बनवाया महरौली में स्थित शुद्धतम लोह से निर्मित लगभग १६५ मन का कलापूर्ण स्तंभ (लेखक कृतः अधिराज श्री भवनागः इतिहास की सामग्री, भारती, १९५६, पृष्ठ ७२१ तथा आगे) और सुल्तानगंज में मिली (निर्माणकाल चौथी शती) उसी शुद्धता के ताम्र से निर्मित लगभग २७॥ मन की सुकृत बुद्ध मूर्ति अवशिष्ट है (स्मिथः ए हिस्ट्री ऑफ फाइन आर्ट इन इंडिया एण्ड सीलोन, १९३० का संस्करण, पृष्ठ ८२)। एक विशाल लौह-स्तंभ का ठूंठ जिस पर ब्राह्मी लिपि के अक्षर अवशिष्ट हैं (प्रशान्तः अन्तः सलिला देविका, योजना मासिक (जम्मू-काश्मीर), जून १९५८), लगभग इसी काल का प्राचीन काल में नाग संस्कृति के प्रमुख केन्द्र रहे काश्मीर में भी डुगार के शुद्ध महादेव के मंदिर में खड़ा हैं। शताब्दियों के पदनिक्षेपों के साथ विशाल अभिप्रायों की दृष्टि से धातुशिल्प का भारत में तदनंतर ह्रास हुआ था, यह इतिहास से प्रकट है और धातु के तोरण या गोपुर निर्मित होने के उल्लेख परवर्ती साहित्य में नहीं मिलते। बाघ की गुहा क्र० ४ के तोरण स्तंभों में उनकी अनुकृति प्राचीनता की द्योतक है और अजण्टा की गुहाओं में प्राप्त बाघ के इन स्तम्भों की सूक्ष्मतर एवं अलंकृततर उत्तरकालीन अनुकृति की प्रवृत्ति ने (फर्गुसनः केव टेम्पल्स ऑफ इंडिया, फलक ३८, चित्र २ और ३; तथा कुमारस्वामीः वही, चित्र १५४ और १५६) वाकाटकों के साथ दक्षिण प्रवास किया प्रकट होता है।

बाघ के स्तंभों पर उत्कीर्ण मणिमेखला का अलंकरण, जिसका मूल आभरण भारतीय नारी द्वारा धारण किये जाने की परंपरा सिन्धुघाटी की संस्कृति जितनी प्राचीन है (पुसालकरः वही पृष्ठ १७५), यह देखा जा चुका है, सांची के तोरण स्तंभ का प्रकृतदायाद है और इसके समानार्थी बटी हुई रस्सी एवं 'कंठा' के अलंकरणों की पूर्व परंपरा अशोक स्तंभों जितनी प्राचीन है। इस अलंकरण का संख्या एवं विवरणों में अनंतर पल्लवन अजंटा की गुहा क्र० १, २, २६ और २९ में (फर्गुसनः वही, आकृति ११२ और ७७ तथा कुमारस्वामीः वही, चित्र १५४ और १५६) तथा पराकाष्ठा गुहा क्र. १६ में (फर्गुसनः वही, आकृति १०८) प्राप्त होती है।

स्तंभ शीर्षों की कमल की आकृति, जो बाघ के स्तंभों में निर्मित हुई है, अशोक स्तंभों में सर्वत्र प्राप्त होने से, उसकी प्राचीनता प्रतिपादन निरपेक्ष है, यद्यपि वह पीछे के काल तक प्राप्त होती रहती है, किन्तु उससे ऊपर की आमलक की आकृति युग-विशेष की सूचक है। भारतीय स्थापत्य में वह उस अत्यन्त प्राचीन काल का अवशेष है, जब भारत से सीरिया तक संस्कृति का अविभाजित सागर लहराता था। अनंतगर्भ गुहा की खुंभी के शीर्ष पर निर्मित आमलक इसका मौर्यकालीन अवशेष है (वही, आकृति २७१) और तदनंतर यह आकृति वेदसा के गुहा चैत्य के आगे खड़े स्तंभों के शीर्ष पर प्राप्त होती है, जहां अधोमुख कमल पर कंठे के अलंकरण के ऊपर चौखट के भीतर आमलक निर्मित हुआ है, (वही, आकृति ६४)। इसकी कलियों की लम्बीय गोलाई अर्धवृत्ताकार है, जो बाघ गुहा क्र० ४ के समान है। ईसवी तीसरी शती के अंत के लगभग निर्मित उक्त महरौली स्तंभ में आमलक की आकृति में यद्यपि अन्तर नहीं आया है, किन्तु वह तिहरा निर्मित हुआ है। नीचे ऊपर सँकड़े आमलक बने हैं और बीच में एक बड़ा आमलक है। अजण्टा के स्तंभों में यह विकास क्रम दिखाई नहीं देता और उनमें बाघ की इस आकृति का सीधा अनुकरण किया गया है। पीछे की शताब्दियों में यह मंदिरों के शिखरों पर निर्मित मिलता है, किन्तु वहां इसकी लम्बीय गोलाई में अन्तर आया है। आमलक की कलियाँ नुकीली होती गयी हैं और इसने चपटा, लगभग चकरी का आकार ग्रहण किया है।

बाघ के स्तंभ शीर्षों की जान्तव भास्कर्य युक्त टोड़ियां भी अपनी विशाल परंपरा एवं निर्माणकाल का व्याख्यान करती हैं। जान्तव लांछनों का आर्य जीवन से संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता, उनका प्रारंभ आग्नेय (निषाद) मूल का है, जिसमें उन्हें देवत्व मिला तथा द्राविड़ संस्कृति में अहि, शौनक, गय, सस, भरद्वाज, कश्यप, मत्स्य, ऋषभ, वृषगण, व्याघ्रपाद, त्रिशिरा (तीन फनवाला नाग), ऐरावत, शार्ंग, द्रोण, ताक्ष्र्य, सुपर्ण, कपोत, श्येन (ऋग्वेद १।३२।३; २।१-३; ५।९-१०, २१; ६।१-३; ८।२९, ५६; ९।७१; ९।९७।७, १६; १०।८, ७६, १४२, १४४, १६५, १७८, १८८), कापेय (ताण्डय ब्राह्मण २०।१२।५), माण्डूकेय (ऐतरेय आरण्यक ३।१।१), हारीत (शांखायन आर० ८।१०), भालुकि, क्रौंचिक (बृहदा० उपनिषद् ६।५।१-४), बालाकि, मृग, नाकुलि, गार्दभि, आश्वायनि, क्रोष्ट, वाराहि, महाकपि, द्रोणि, मार्कटि, हंसजिव्ह, तित्तिरि, ऋक्ष, ऊर्णनाभि, आजिहायन, हास्तिकर्ण, मातंगी, कपिंजल, नागेय (मत्स्य पुराण अ० १९५-२००), नाग (मार्कण्डेय पु० १३७।६) और आहिक (मध्यभारत का इतिहास, प्रथम खंड, पृष्ठ १८५) आदि जान्तव प्रतीकों को गोत्र या वंशनाम के रूप में महत्त्व मिला था। इनमें से कुछ विशेषतया वे जिन्हें बाघ की शीर्ष टोड़ियों पर उत्कीर्ण किया गया है, सिन्धुघाटी के उत्खनन में प्राप्त पशुपति की मुद्रा पर अपने 'एको देव' (ऋग्वेद १।३२।१२) के उपस्थायक या आराधक के रूप में अंकित मिलते हैं। साहित्य से ज्ञात होता है कि वह गणराज्यों का युग था और ये आकृतियां विभिन्न गणों की प्रतीक प्रतीत होती हैं, जो राजनैतिक, व्यापारिक आदि सामान्य उद्देश्यों से संयुक्त हुए थे। ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दी में आर्य सम्राटों का वर्चस्व समाप्त होने पर जब सांस्कृतिक पुनरुत्थान हुआ, ये जान्तव प्रतीक स्तंभ शीर्षों पर आरूढ़ हुए थे। यह उन स्तंभों से ज्ञात होता है जिन पर अशोक के धर्मलेख प्राप्त होते हैं। उनके निर्माण की पृष्ठभूमि में एक अविच्छिन्न सांस्कृतिक सूत्र था और सौन्दर्य दृष्टि से अधिक कुछ तत्त्व उनके साकार होने में प्रेरक थे, इसके निदर्शन का यह स्थल नहीं है। उड़ीसा की अनंत गुंफा एवं बाघ गुंफा की खुंभियों पर जान्तव शीर्ष प्राप्त होते हैं तथा उत्तरोक्त के शीर्षों पर सपक्ष हाथी निर्मित हुए हैं (फर्गुसनः वही, आकृति २७१ तथा भाग २, पृष्ठ १७)। ईसा पूर्व लगभग दूसरी शती की भारहुत स्तूप की बागड़ के अष्टास्र स्तंभ युग्म के शीर्ष पर जान्तव प्रतीक निर्मित हुए हैं, भाजा के विहार की खुंभी एवं स्तंभ के शीर्षकल्पना प्रवण हैं और उन पर नारी उर्ध्वार्धयुक्त पशु आकृतियां निर्मित हुई हैं तथा ईसा पूर्व लगभग पहली शती के वेदसा की गुहा के आगे के स्तंभों के शीर्ष पर हाथी और घोड़े आरोहियों सहित मिलते हैं, (वही, आकृति ३२, ९७ और ६४) और कार्ली के गुहा चैत्य के तीस स्तंभों के शीर्षों पर आगे की ओर दो-दो हाथी बठे हैं, जिन पर दो-दो मानव आकृतियां, बहुधा पुरुष एवं स्त्री आरूढ़ हैं तथा पीछे की

ओर घोड़े और व्याघ्र हैं, जिन पर एक-एक आरोही निर्मित हैं (फर्गुसन : केव टेम्पल्स ऑफ इंडिया, फलक १२ और १४; आर्कलॉजिकल सर्वे ऑफ वेस्टर्न इंडिया, भाग ४, फलक १३)। इस चैत्य के सामने खड़े अष्टास्र स्तंभ के शीर्ष पर भी चौमुख सिंह निर्मित हैं (फर्गुसनः हिस्ट्री ऑफ इं० एण्ड ई०आर्कि० द्वितीय संस्करण, आकृति ६९ तदनंतर अमरावती के प्रसिद्ध स्तूप एक प्रस्तर पट्ट पर दो स्तंभों के भास्कर्य मिलते हैं, जिनके शीर्ष पर दोहरे पशु निर्मित हैं (वही, आकृति ४४)। जान्तव स्तंभ-शीर्षों की यह परंपरा अधिकतम ईसवी दूसरी शती तक चलती है, जिसके अवशेष नासिक के नहपान विहार एवं तदनंतर गौतमी पुत्र विहार में प्राप्त हैं (वही, आकृति १०३ और १०४)। पवाया के जान्तव आकृतियों के अवशेष इसी परंपरा के हैं और उनके अभिप्रायों एवं शैली पर से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि उनका निर्माण ईसवी सन् की प्रारंभिक शताब्दियों में नाग राज्यकाल में हुआ था। उसके पश्चात् स्तंभ शिल्प में अनंतर सूक्ष्मता, लालित्य एवं मार्दव अवश्य मिलता है किन्तु स्तंभशीर्षों पर जान्तव अभिप्रायों के निर्माण की प्रवृत्ति बाघ के प्रदेश में दिखाई नहीं देती। तदनंतर दक्षिण भारत में अजण्टा की गुहा क्र० ४ के द्वार पर आरोही युक्त शार्दूलों की टोड़ीनुमा आकृतियां और गुहा क्र० १९ की कुछ टोड़ियों पर हाथी या शार्दूल निर्मित हैं तथा गुहा क्र० १७ में दो स्तंभों की आधार चौकियों पर चारमुख युक्त आठ सिंह और गुहा क्र० ११ की एक देहली के छोरों पर सिंह मुख मिलते हैं (देबल मित्रः अजंटा, पृष्ठ २७, ३६, ४३ और ५६), किन्तु वे पूर्वोक्त व्यापक प्रवृत्ति के उत्तरवर्ती अपवादात्मक विरल अवशेष हैं तथा उनका अधिकांश श्रेय वाकाटक राज्य काल में बाघ के प्रदेश की गणराज्यों के काल की कला प्रवृत्तियों के दक्षिण भारत में सीमित होने को दिया जा सकता है, जिसका निर्भ्रान्त साक्ष्य अजण्टा की गुहा क्र० १७, २० और २७ में उत्कीर्ण मकरवाहिनी गंगा की आकृति में मिलता है (देबालमित्रः अजण्टा, पृष्ठ ४३, ५८ और ६३), जिसने नाग गणराज्यों के राजचिन्ह पर आसीन रहने के पश्चात् वाकाटकों के साथ दक्षिण प्रवास किया था। यह केवल आकस्मिक संयोग नहीं है कि बाघ स्तंभ शीर्षों की जान्तव आकृतियाँ नाग ताम्र-मुद्राओं पर प्राप्त होती हैं (मध्यभारत का इतिहास, प्रथम खंड, पृष्ठ ४७०), जिनमें हाथी की आकृति अबतक प्राप्त नहीं थी। आरक्षी अधिकारियों को लहार (भिंड) के समीप जमुहा नामक गांव में नाग रजत मुद्राओं का अभी एक संग्रह मिला है, जिनमें से कुछ पर हाथी की आकृति मुद्रित कही जाती है। उड़ीसा की बाघ गुफा पर लिखते हुए फर्गुसन ने समीचीन प्रेक्षा की है कि स्तंभ शीर्षों पर की जान्तव आकृतियां निर्माण काल की प्राचीनता की द्योतक हैं (वही, भाग २, पृष्ठ १७) तथा बाघ गुहा क्र० ४ की टोड़ियों के संबंध में इससे भिन्न कहने का आधार नहीं है।

पुरातत्व के अवशेषों में अपवादात्मक उदाहरणों का अपवर्जन करते हुए स्तंभ शिल्प में ठेठ मौर्यकाल से लेकर तनुता, अलंकरणात्मकता एवं मार्दव की प्रवृत्ति क्रमशः बढ़ती हुई प्राप्त होती है तथा ईसवी सन् की शताब्दियों की व्यपगति के साथ निष्पादन के प्रतिमानों में एवं कला कल्पना में लक्षित परिवर्तन दिखाई देता है, जिसके निदर्शक अवशेष सौभाग्य से प्राप्त हैं। इस प्रवृत्ति को स्थूलता और तक्षण अलंकरण के विभागों में देखा जा सकता है।

स्थूलता में बाघ के स्तंभों की तुलना अशोक स्तंभों से या हेलियोदोर स्तंभ से करणीय नहीं है। वे शोभायूप हैं और स्वभावतः उन्हें अस्थूल बनाया गया है, । ईसवी सन् से पूर्व के उपर्युक्त समस्त वास्तुशेषों के आधार स्तंभ अपेक्षाकृत स्थूल हैं और प्राचीनों की दृष्टि दृढ़ता अर्थात् स्थूलता की ओर भी यह अथर्ववेद, वाल्मीकि एवं आश्वलायन के उल्लेखों से भी प्रकट है तथा वह बाघ में भी विद्यमान है। ये स्तंभ यद्यपि पर्याप्त ऊँचे हैं, किन्तु इनकी अनुतापारिक्त मोटाई श्रीयज्ञ गुहा के या तदनंतर परवर्ती अजण्टा गुहाओं के स्तंभों की तनुता की तुलना में लालित्य-विरोधी है और इन्हें ईसा पूर्व के स्तंभों के वर्ग में स्थापित करने की ओर प्रवृत्त है। किन्तु बाघ में भीतर की ओर झुके स्तंभ प्राप्त नहीं हैं, जो प्रवृत्ति मौर्य एवं शुंग कालों में क्रमशः घटती मिलती है। अतः इन्हें ईसवी सन् के प्रारंभ में रखा जाना उचित है।

तक्षण अलंकरण की दृष्टि से अजण्टा की गुहा क्र० १७ की टोड़ियां मानवाकृति निर्मित हुई हैं तथा गुहा क्र. १६ के स्तंभों की शीर्ष-चौकियों की मुहारों पर प्रतीक पूजा के संश्लिष्ट अंकन हुए हैं (फर्गुसनः वही, आकृति ११० और १०८) और टोड़ियों के रूप में गण, गायक एवं गगनचारी उत्कीर्ण हुए हैं (देबलमित्रः अजंटा, पृष्ठ ३९)। गुहा क्र० २४ के आमलक युक्त स्तंभों पर लालित्य को अधिकतम पुंजित करने का प्रयास किया गया है, उनकी पहलों पर अत्यंत सूक्ष्म रेखाओं में देवाकृतियाँ उभारी गयी हैं; गुहा क्र० १ के स्तंभ शीर्षों पर उपासकों सहित बुद्ध निर्मित हैं, इसके अलिंद के स्तंभों की तिहरी अलंकरण पट्टियाँ बाघ के पूर्वोक्त तोरण स्तंभों की आकृति पर वाकाटक राज्यकाल की अति सज्जा की प्रवृत्ति का अभिभावी होना प्रकट करती हैं तथा गुहा क्र० २ की स्तंभ पंक्तियों के बीच के इसी आकृति के स्तंभों के सूक्ष्म तक्षण में अलंकरणात्मकता का अतिरेक हुआ है (देबल मित्रः अजंटा, फलक २ और पृष्ठ २०)। गुहा क्र० ६ में यक्ष आकृतियों पर आधारित खुंभियां और गुहा क्र० १९ की टोड़ियों पर शालभंजिकाएं, गगनचारी युग्म, साधु एवं गायक तथा गुहा क्र० २० की टोड़ियों पर शालभंजिकाएं उत्कीर्ण हैं (वही, पृष्ठ २८, ५६ और ५८)। ईसवी दूसरी शती के अंत में निर्मित कान्हेरी के गुहा चैत्य के स्तंभ शीर्ष भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं, जिनके सीमित आयाम पर पूरे दृश्य अंकित हुए हैं (फर्गुसन : वही, आकृति ८५)। अलंकरण प्रवृत्ति के इस क्रम में बाघ के स्तंभ शिल्प की पूर्वकालिकता निर्भ्रान्त है।

इस प्रसंग पर मौन होने से पूर्व बाघ में प्राप्त सपल्लव कलश आकृति पर चर्चा आवश्यक है, जो विद्वान् मार्शल को पूर्वोक्त रूप में ईसवी ७ वीं एवं ८ वीं शती की सीमित कालावधि में ही प्राप्त हुई थी। वैदिक साहित्य से ज्ञात होता है कि साम्पत्तिक समृद्धि का स्रोत समुद्र था (ऋग्वेद ४।५५।६; ९।३३।६) और कलश इस निधि का प्रतीक था। (वही, ९।२९।६)। ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दी के प्रारंभिक भाग में ग्राम प्रतिष्ठा के समारोहों पर धान्यराशियों एवं शिल स्तंभों पर अंकुरयुक्त कलश स्थापित किये जाते थे और सपल्लव कुंभों से सर्वत्र सजावट की जाती थी। क्षत्रिय के अभिषेक का स्थान फल, पुष्प, किसलय एवं पुष्पगुच्छों से तथा सपल्लव कुंभों से सजाया जाता था। ऐतरेय विधान के अनुसार किये जानेवाले महाभिषेक की अलंकरण सज्जा भी यही थी तथा

पुण्याभिषेक में भी वह प्रत्यक्ष होती थी (शौनकीयम् १।६।२३, २७-२९; २।१।१०-११; २।४।३-४ तथा २।१८।४-५)। तदनंतर गृह-प्रतिष्ठा के समय चार दूर्वायुक्त शिला स्तंभों पर जलकलश (मणिक) स्थापित किये जाने का उल्लेख मिलता है (आश्वलायन गृह्यसूत्र २।९)। पुरातत्व के अवशेषों में कलश का यह स्थान मौर्यकाल से ही मिलने लगता है। अनंतगर्भ गुहा की खुंभियों की तीन अवसर्पिणी वर्गाकार चौकियों पर कलश निर्मित है, जिसके मुख में से पल्लवित एवं कुसुमित लता-स्तंभ दंड के सहारे ऊपर को गयी है, उसके सिरे पर आमलक के ऊपर शतदल खिला है और उसके ऊपर फिर सिंह निर्मित है तथा बाघ गुफा की खुंभियों की आधार पीठ भी कलशाकृति है (फर्गुसनः वही, आकृति २७१ और भाग २, पृष्ठ १७)। इससे मिलती जुलती खुंभियाँ अमरावती से लगभग ३० मील पर जग्गयपेट के ईसा पूर्व पहली या दूसरी शती के स्तूपावशेषों में मिली हैं। इनमें कलश के ऊपर बेल के स्थान पर मकरवाहिनी गंगा की आकृति निर्मित है (कुमारस्वामीः वही, चित्र १४२ और १४३)। नासिक गुहा चैत्य के सामने के भाग में इन खुंभियों के समान चौकियों पर निर्मित कलश स्तंभों को आधार देते हैं तथा कार्ली के चैत्य में भी यह आकृति मिलती है (वही, आकृति ६६ और ७०)। ईसवी सन् के प्रारंभ के साथ जुन्नर के समीप मानमोद पहाड़ी पर निर्मित गुहा चैत्य में स्तंभों के आधार एवं शीर्ष कलशाकृति निर्मित हुए थे और नासिक के नहपान विहार की स्तंभ पंक्ति के आधार भी इसी आकृति के हैं (वही, भाग १, पृष्ठ १५१ और आकृति १०३)। दूसरी शती में गौतमीपुत्र विहार के स्तंभ शीर्षों पर अधोमुख कमल का स्थान कलशाकृति ने लिया था तथा श्रीयज्ञ विहार के गर्भगृह के आगे के स्तंभ युग्म के कलश-शीर्षों के मुख से लटकते सुमन पल्लवों की अत्यन्त कलापूर्ण आकृति नीचे झुमकर कलश की आधार भूमि का चुंबन करती है (वही, आकृति १०४ और १०६)। एरण के लगभग ईसवी चौथी शती के अवशेषों में स्तंभों के आधार एवं शीर्ष सपल्लव कलश की मनोज्ञ आकृति के मिलते हैं (वही, आकृति १६६) तथा अजण्टा की गुहा क्र० ६ की अवशिष्ट खुंभी का आधार कलशाकृति है और शीर्ष पर सपल्लव कलश निर्मित है। गुहा क्र० १ के अलिंद के बीच के स्तंभ शीर्ष भी सपल्लव कलश युक्त हैं (देबल मित्रः अजण्टा, पृष्ठ २८ और फलक २) तथा गुहा क्र० २४ के स्तंभ शीर्ष में इस आकृति का सूक्ष्मतम निष्पादन हुआ है (फर्गुसनः वही, आकृति १११)। फिर वह काल आ जाता है जिसमें मार्शल ने इस आकृति को देखा था। इस विद्वान् ने, साहित्य के उपर्युक्त उल्लेखों को यदि छोड़ भी दिया जाए, कम से कम इन अवशेषों को न देखा हो, यह अनुमान असंभव है और भारतीय पुरातत्व के इस अग्रदूत ने प्रतीत होता है कि बाघ गुहाओं का निर्माण-काल पीछे को किसी शताब्दी में स्थापित करने के उत्साहातिरेक में पूर्वोक्त प्रेक्षा की थी, जो साहित्य एवं अवशेषों में से किसी के भी द्वारा समर्थित नहीं है तथा बाघ गुहाओं की खुम्भियों पर प्राप्त सपल्लव कलश की आकृति में इनके शिल्प के काल-निर्णय का युक्तियुक्त आधार प्राप्त नहीं होता।

गगन में सघन मेघ मुसका रहे हैं

मनुज का हृदय स्नेह-कण से भिगोने,
विषमता के सारे कलंकों को धोने,
धरा पर सृजन के नए बीज बोने—
गगन में सघन मेघ मुसका रहे हैं !

बुझी हैं कृषक की ज्वलित आज आहें,
बहीं सुखमयी शान्ति की अब हवाएँ,
महकता धरा का मधुर, मुक्त मधुवन-
कि जीवन-सुमन अब खिले जा रहे हैं !

हुआ तृप्त मानव, हुई तृप्त धरती,
मधुर स्नेह-धारा यहाँ आज बहती,
नई चेतना प्राण में है विहँसती—
नये गीत अधरों पै इठला रहे हैं !

लहरते नई जिन्दगी के नए स्वर,
उभरते नए बीज उर्वर धरा पर,
घुमड़ते विपुल नीर ले श्याम घन ये—
उमड़ कर अमिय आज बरसा रहे हैं !

—श्री देवव्रत देव

उज्जैन नगर में ५२॥ हजार रुपये के बचत सर्टिफिकेट्स क्रय किये गये

गत जून मास में उज्जैन नगर में अल्प-बचत विभाग द्वारा उल्लेखनीय कार्य किया गया। उक्त विभाग के कार्य के फलस्वरूप विनोद-मिल के श्रमिकों की प्राविडेन्ट फंड संस्था ने चालीस हजार रुपये के राष्ट्रीय योजना-बचत-सर्टिफिकेट क्रय किये। इसी प्रकार जनस्वास्थ्य विभाग के ठेकेदारों द्वारा पाँच हजार रुपये के योजना बचत-सर्टिफिकेट्स क्रय किये गये। इसके पूर्व डिस्ट्रिक्ट को-ऑपरेटिव बैंक द्वारा ७,५०० रुपये के ट्रेझरी-सेविंग्स डिपाजिट सर्टिफिकेट्स क्रय किये गये।

इसी प्रकार इस मास में कुल साढ़े बावन हजार रुपये के राष्ट्रीय बचत सर्टिफिकेट्स क्रय किये गये।

नृत्य-समारोह

पचमढ़ी। मध्यप्रदेश कला-परिषद् द्वारा ललित कला-केन्द्र, ग्वालियर एवं इन्दौर नृत्य-दल के सहयोग से राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के समक्ष नृत्य-समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के राज्यपाल महोदय तथा मुख्य मंत्रीजी भी थे।

इस समारोह में राज्यपाल महोदय ने निम्नलिखित छात्राओं एवं छात्र को रजत-मंजूसा पुरस्कार स्वरूप भेंट की:—

कुमारी दयमन्ती काचर, पुष्पा पाल, शोभा चौहान, पुष्पा जाधव, लेखा मुकर्जी, सुनीता पंडित, पुष्पा गंजवार, नाजू गोदरेज, सुभद्रा चौहान, ऊषा खादीवाला, इन्दु खादीवाला, सुलोचना गाँधी, प्रार्थना यादव और श्री श्याम अग्रवाल।

श्रमदान पक्ष में ५५,९०५ रु. का जन-सहयोग

गुना। राष्ट्रीय विस्तार सेवा विकास-खंड, गुना के अन्तर्गत गत फरवरी में आयोजित श्रमदान-पक्ष में जनता ने ग्राम-विकास-कार्यों में नगद व श्रमदान द्वारा कुल ५५,९०५ रुपये का जन सहयोग प्रदान किया।

उक्त श्रमदान पक्ष में ११२ मील लम्बी मौसमी सड़कों की मरम्मत की गई। १३२ ग्रामों में सामूहिक स्वच्छता अभियान जारी किया गया। खंड के विभिन्न ग्रामों में १३२ सोख्ते, ८२ खाद के गड्ढे, ४ कच्चे कुए, ६ चबूतरे और २० मूत्रालयों का निर्माण किया गया। कीचड़ की कठिनाइयों के निराकरण हेतु ६,००० वर्गफुट में खरंजों का निर्माण किया गया। इसके अतिरिक्त २० शाला-भवनों की मरमत और सफाई की गई।

महिला-संसार

गृह-स्वामिनी का आर्थिक पहलू

—सुश्री हीरादेवी चतुर्वेदी

घर की रानी और गृहदेवी की संज्ञा से विभूषित भारतीय नारी की आर्थिक स्वाधीनता का पहलू बड़ा रहस्यपूर्ण है। कहने के लिए तो भारतीय नारी घर की स्वामिनी है; परन्तु स्वेच्छापूर्वक किसी प्रकार का खर्च करने का उसे अधिकांश घरों में तनिक भी अधिकार नहीं होता। गृहस्वामी की आज्ञा के बिना वह कुछ व्यय नहीं कर सकती है। यदि कभी आवश्यक व्यय भी करती है। तो उसकी कैफियत भी उसे देनी पड़ती है। क्या सम्पन्न, क्या मध्यम और क्या श्रमजीवी, सभी वर्गों में यह बात किसी न किसी रूप में पाई जाती है।

सम्पन्न और मध्यम वर्ग में तो भारतीय नारी का अर्थोपार्जन करना एकदम वर्जित है। इस कारण स्वेच्छापूर्वक उसके द्वारा खर्च किए जाने पर ऐसा प्रतिबन्ध कदाचित् अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता। परन्तु श्रमवीजी वर्ग में, जहाँ नारी स्वयं एड़ी-चोटी का पसीना बहाती और अर्थोपार्जन करती है, वहाँ भी जब ऐसा ही प्रतिबन्ध देखा जाता है, तब भारतीय नारी की आर्थिक स्वाधीनता को एक विडम्बना से अधिक कहा ही क्या जा सकता है?

यह सब कदाचित इसलिए है कि हिन्दू न्याय-शास्त्र के सुप्रसिद्ध भाष्यकार ऋषि वात्स्यायन ने लिखा है—"यदि स्त्री अपने प्रयत्नों से कोई धन प्राप्त करे, या उसे किसी से कुछ दान मिले, तो उस पर उसके पति का भी पूरा अधिकार है।'

लेकिन, यह कैसा अन्याय है कि जो नारी स्वयं उपार्जन करती हो, उसे भी वह स्वेच्छापूर्वक खर्च करने की अधिकारिणी नहीं; प्रत्युत चुपचाप पति कहे जानेवाले व्यक्ति को अपना वेतन सौंप देने के लिए बाध्य है। क्यों न हो, जब स्त्री के शरीर पर ही उसके पति का पूर्णाधिकार स्वीकार किया गया है, तब उसके द्वारा उपार्जित द्रव्य पर पति का अधिकार क्यों न माना जाता?

प्राचीनकाल से ही नारी को बचपन से लेकर मृत्यु पर्यन्त इसी प्रकार पुरुष के अधीन रखा गया है। पुत्री, पत्नी, माता और बहिन—सभी रूपों में उसे पिता, पति, पुत्र अथवा भाई के अधीन रहना पड़ता है। इतनी विकट परतंत्रता के बीच जिस प्राणी को जीवन की साँसें लेनी पड़ती हों, उसे किसी भी तरह की स्वाधीनता आखिर मिलती कैसे! परिणाम यह हुआ कि समर्पण की भावना लेकर नारी को पुरुष पर पूर्णतः आश्रित रहने के लिए विवश हो जाना पड़ा।

परन्तु युग ने करवट ली और नारी-स्वतंत्रता का वातावरण उत्पन्न हुआ। शाब्दिक जाल की मिथ्या उपाधियों—घर की देवी, घर की रानी आदि—को उसने ठुकरा दिया। घर की रानी के नाम पर घर की गुड़िया बनकर अस्तित्त्वहीन हो जाना उसे असह्य प्रतीत होने लगा। घर की चहारदीवारी से बाहर आकर नारी ने अपनी कर्त्तृत्व-शक्ति का परिचय देकर पुरुषवर्ग को चकित कर दिया। शिक्षित होकर अनेक सामाजिक अधिकार भी उसने प्राप्त कर लिये। परन्तु, आर्थिक स्वाधीनता का प्रश्न अब तक नारी के लिए एक समस्या है! जो थोड़ी-सी बहिनें आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त कर चुकी हैं, उनकी स्थिति भी बहुत-कुछ श्रमजीवी-वर्ग की नारियों से मिलती-जुलती है।

स्वाधीनता का अर्थ है अपनी पृथक् सत्ता का अनुभव करना। जब तक नारी अपनी पृथक् सत्ता का अनुभव न करने लगे, उसका सर्वांगीण विकास असम्भव है और, जब तक भारतीय नारी का सर्वांगीण विकास नहीं हो जाता, हमारे समाज और राष्ट्र का भी सर्वांगीण विकास असंभव है।

नारी की आर्थिक स्वाधीनता का आमतौर पर विकृत अर्थ लगाया जाता है। कहा जाता है कि नारी जब अर्थोपार्जन और खर्च भी स्वेच्छा से करने लगेगी, तब सामाजिक मर्यादा विशृंखल हो जायगी। नारी किसी के नियंत्रण में रहना स्वीकार न करेगी और समाज में उच्छृंखलता की लहर बह पड़ेगी।

परन्तु, ऐसा कहनेवाले पुरुष यह भूल जाते हैं कि मानव होकर यदि उन्हें स्वाधीनता का उपभोग करने का अधिकार है, तो मानवी होकर नारी क्यों इस अधिकार से वंचित रक्खी जाए? जो नारी अपने भरण-पोषण के लिए भी अर्थोपार्जन न कर सके, और दूसरों के आश्रय की मुँहताज रहे, उसका पृथक् अस्तित्व ही क्या हो सकता है? और, जिसका अपना अस्तित्व नहीं, उसका बौद्धिक विकास क्या होगा तथा उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा क्या होगी?

आर्थिक स्वाधीनता के अभाव में सम्पन्न और मध्यम वर्ग की नारियों की दशा तो उनके पति के निधन पर इतनी दयनीय हो उठती है कि देखने-सुननेवालों को भी कष्ट होने लगता है। कारण, पति की कमाई को किसी खजांची की तरह सुरक्षित रखनेवाली और उसी के संकेतों पर खर्च करनेवाली इस सम्पन्न अथवा मध्यम वर्ग की नारी में अर्थोपार्जन करने की कोई क्षमता नहीं होती। पति के निधन पर ऐसी नारियों को परिवार के अन्य कमाऊ सदस्यों की आश्रिता होकर जीवन की साँसें गिननी पड़ती हैं और रात-दिन दूसरों पर भार बनकर रहना पड़ता है। यह स्थिति जहां स्वयं नारी के लिए कष्टप्रद होती है, वहीं दूसरों के लिए भी बड़ी बोझिल प्रतीत होने लगती है।

बहुधा देखा जाता है कि असमय ही पति का निधन होजाने पर मध्यम वर्ग की नारियाँ अपने

दो-एक बच्चों का भी पालन-पोषण करने में असमर्थ रहती हैं। ऐसी स्थिति में या तो इन बहिनों को विपथगा हो जाना पड़ता है अथवा अपनी सन्तान—राष्ट्र के भावी स्तम्भों—को अशिक्षित रहने और आवारा जिन्दगी बिताने पर छोड़ देना पड़ता है। प्रकारान्तर में समाज और राष्ट्र को भी इस स्थिति में बड़ी हानि उठानी पड़ती है।

एक सामाजिक प्राणी के नाते नारी के अधिकारों की रक्षा के लिए, उसके व्यक्तित्व और अस्तित्व की रक्षा के लिए अर्थ की आवश्यकता अपरिहार्य्य है। अर्थोपार्जन न कर सकनेवाली नारी, जहाँ स्वयं अपने लिए घातक है, वहीं अपने परिवार और राष्ट्र के लिए भी एक बोझ है।

आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त हो जाने पर ही भारतीय नारी सच्चे अर्थों में घर की देवी बन सकेगी। स्नेह, त्याग, मातृत्व और वात्सल्य की प्रतिमा यदि आर्थिक स्वाधीनता के वातावरण में साँसें लेने लगे, तो निश्चय ही हमारे परिवार स्वर्गोपम शान्ति और सुख-समृद्धि को भी मात कर सकते हैं। उस स्थिति में न तो नारी किसी परिवार में बोझिल बनकर दूसरों के कष्ट का कारण बन सकेगी, न उसे स्वयं आठ-आठ आँसू बहाकर और घुट-घुटकर मरना पड़ेगा।

आर्थिक स्वाधीनता का यह अर्थ नहीं है कि प्रत्येक नारी अनिवार्यतः उपार्जन करने लगे। आवश्यकता यह है कि प्रत्येक नारी में इतनी योग्यता एवं इतनी क्षमता अवश्य रहे कि समय पड़ने पर वह इतना अर्थोपार्जन कर सके कि अपना और अपनी सन्तान का भरण-पोषण आसानी से कर सके। उसके लिए नारी का शिक्षित होना अनिवार्य होना चाहिये। साथ ही गृह-उद्योगों में भी उसे निपुण होना चाहिए। चर्खा चलाकर सूत कातना, कपड़े सीना, रंग करना, कसीदा काढ़ना, कागज के फूल-पत्ते बनाना आदि अनेक कार्य ऐसे हैं, जिनका अभ्यास नारियों को अनिवार्य रूप से कराया जाय, जो समय पड़ने पर —निराश्रित होने पर—वे अपना अस्तित्व आसानी से कायम रख सकती हैं। इससे न केवल उनके व्यक्तित्व का विकास होगा, प्रत्युत उनकी सन्तान और राष्ट्र का भी समुचित उत्थान होगा।

बच्चों के स्वास्थ्य-संबंधी शिक्षण, गर्भवती स्त्रियों की स्वास्थ्य-रक्षा, अशिक्षित नारियों में संयम और सन्तान-निग्रह का ज्ञान-प्रसार आदि कितनी ही ऐसी बातें हैं, जिनमें नारियों को अपेक्षाकृत अधिक सफलता मिल सकती है। यदि प्रारंभ से ही माता-पिता अपनी पुत्रियों को इस प्रकार की शिक्षा देने का समुचित ध्यान रखें कि आगे चलकर वे स्वावलंबिनी बन सकें, तो नारी की आर्थिक स्वाधीनता का युग आने में अधिक विलंब की आशंका नहीं है। अब तो हमारी अपनी राष्ट्रीय सरकार है, जो इस दिशा में क्रियात्मक पग भी बढ़ा चुकी है।

आर्थिक स्वाधीनता का अर्थ नारी के लिए भी ठीक वैसा ही होना चाहिए, जैसा पुरुष के साथ प्रयुक्त होता है। नारी जो उपार्जन करे, उस पर उसका ही पूर्णाधिकार रहे। वह स्वेच्छापूर्वक अपना उपार्जित धन खर्च करने की अधिकारिणी भी रहे।

यह चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं कि नारी विपथगा हो जायगी और सामाजिक विश्रृंखलता बढ़ जायगी। आखिर नारी भी तो पुरुषों की तरह बुद्धिजीवी है न! यदि वयस्क पुरुष अपना भला-बुरा स्वयं सोच सकता है और उपार्जन करने तथा उपार्जित धन का व्यय करने में सर्वथा मुक्त-स्वच्छन्द रह सकता है, तो कोई कारण नहीं कि नारी इस दिशा में स्वच्छन्द न रहे।

फिर, गलती करनेवाले को प्रकृति जिस प्रकार स्वयं दंडित करती है, नारी भी यदि अनुचित और गलत कदम बढ़ाएगी, तो उसका प्रायश्चित भी उसे ही करना पड़ेगा न! पुरुष क्यों सरदर्द मोल लेने का कष्ट करता फिरे?

आर्थिक स्वाधीनता आज की भारतीय नारी की पहली आवश्यकता है। इसके अभाव में हमारा राष्ट्र समुन्नत नहीं हो सकता, हमारा समाज विकसित नहीं हो सकता और हमारा परिवार सच्चे अर्थों में सुखी नहीं हो सकता।

THE $4\frac{1}{2}$ PER CENT MADHYA PRADESH STATE DEVELOPMENT LOAN 1970

The Government of Madhya Pradesh are floating a loan of Rs. 2 crores in order to finance development schemes under the Second Five Year Plan. The main terms of the loan are that the issue price will be Rs. 99.00 Np. for every Rs.100 of the loan applied for. The loan has a currency of 12 years from the 15th July 1958 and will be repaid at par on the 15th July 1970 and will bear interest at the rate of $4\frac{1}{2}$ per cent. per annum from the 15th July 1958 payable half yearly on 15th January and 15th July and will be subject to Incometax. Subscriptions for the loan can be made in the form of cash or cheque and will be received at the Offices of the Reserve Bank of India, Bombay, Calcutta, New Delhi, Madras and Bangalore the branches of the State Bank of India within the State of Madhya Pradesh and the Government treasuries and sub-treasuries in the State of Madhya Pradesh where there is no branch of the State Bank of India.

Full details of the loan are contained in Finance Department Notification No. 914/IV-B-6-58, dated the 24th June, 1958, published in the Extraordinary issue of Madhya Pradesh Gazette of that date, copies of which with the application form are obtainable at the Receiving Offices mentioned above.

(300-31)

आदिम जाति कल्याण विभाग मंडल गुना म. प्र.

विज्ञप्ति

आदिम जाति कल्याण विभाग, मंडल गुना के अंतर्गत एक पद हरिजन-सेवक का रिक्त है, जिसके लिये आवेदन-पत्र आमंत्रित किये जाते हैं।

वेतन श्रेणी ५०–३–८०.

पद—अस्थायी है। नियमानुसार मँहगाई भत्ते के अतिरिक्त २५ रु. परमानेण्ट दौरा भत्ता दिया जावेगा।

शैक्षणिक योग्यता:——आवेदक कम से कम मैट्रिक या समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। हरिजन व आदिवासियों में उत्थान कार्य करनेवाले योग्य अनुभवी व्यक्ति को प्राथमिकता दी जावेगी।

पदाभिलाषी अपना आवेदन-पत्र दिनांक १५ जलाई, १९५८ तक इस कार्यालय में प्रस्तुत करें।

कलेक्टर,
आदिम जाति कल्याण विभाग, मंडल गुना (म. प्र.)

(३०२–२१)

OFFICE OF THE DIRECTOR OF PUBLIC INSTRUCTION, MADHYA PRADESH

ADVERTISEMENT

Recruitment of Teachers for Secondary Schools.

The recruitment of teachers for Secondary Schools is being made in different regions of the State according to the procedure obtaining in each region prior to the re-organisation. It is necessary to introduce uniformity in the procedure for recruitment. It has therefore, been decided that every Divisional or Regional Educational Officer (Deputy Director of Public Instruction and Instpectresses of Schools of the region in Madhya Bharat, Assistant Director of Public Instruction, Rewa, Divisional Superintendents of Education and Inspectresses of Schools in Mahakoshal and Deputy Director of Public Instruction in charge of the Bhopal Region, Bhopal) will maintain a register of candidates for the post of Secondary School teachers. The register will be maintained for each academic session *i. e.* from 1st July to 30th June. Applications will be entered in the register as and when they are received and acknowoledgements will be sent to the aplicants (if they send a self-addressed stamped envelopes with the applications) showing the serial number at which their names have been registered.

2. The candidates for appointment will be selected by a Selction Committee according to the procedure which will be issued shortly.

3. Candidates who desire to be registered for appointment to the post of Secondary School teachers should submit their applications to the appointing Officer concerned in the region in which they want to serve so as to reach that Office on or before the 15th July, 1958 giving the following details with supporting documents.—

(*a*) Full name and address,

(*b*) Age and domicile.

(*c*) Full details of several examinations passed particularly the number of marks obtained at the last examination.

(*d*) Experience of teaching in a recognised School.

(*e*) Special qualifications like a recognised certificate in Drawing, for Physical Education, as a Scout Master, as N. C. C. cadet or Officer, as representing the Games and sports for District, Division or the State etc.

(*f*) Whether the candidate is a member of the Scheduled Caste or Tribe.

Note.—(*i*) If a candidate wants to be considered in more divisions or regions or than one he will have to apply to each of the offices of the appointing authority concerned.

(*ii*) The academic attainments of students will be given the highest priority in making the selection. Therefore, full details should be furnished. In the absence of details an adverse presumption will be drawn.

(297—30-31)

E. W. FRANKLIN,
Director of Public Instruction,
Madhya Pradesh.

कोमल चमड़ीके
बाल निकालनेके लिये..
बादशाही
साबू, पावडर, लोशन
सर्वोत्तम है..
र नं ५२७

सी. सी. महाजन एन्ड कम्पनी, बम्बई-२

सर्व-साधारण को सूचना

सर्व सावारण जनता को सूचित किया जाता है कि महिला छुटकी, विधवा तेजपाल दर्जी, निवासा ग्राम अमाइन, परगना महगवां, जिला भिंड ने दिनांक ११ जून, १९५७ को मुसम्मी नाथूराम पुत्र गोधन दर्जी , निवासा डबरामंडी तथा मौजा खड़ुआ, परगना पिछोर, जिला गिर्द को अपना मुख्त्यारआम नियुक्त किया था परन्तु अब महिला छुटकी मजकूर को उक्त नाथूराम को मुख्त्यारआम रखना स्वीकार नहीं है। इसलिये आज दिनांक से उसका मुख्त्यारपत्र निरस्त किया जाता है। उक्त नाथूराम द्वारा किया गया कोई व्यवहार आज दिनांक से महिला छुटकी मजकूर पर बाध्य अथवा पालन योग्य न होगा। इस संबंध में मुसम्मी नाथूराम मजकूर को भी प्रथक् सूचना दी गई है। दिनांक ४ जुलाई १९५८। अज तरफ महिला छुटका विधवा तेजपाल दर्जी निवासी ग्राम अमाइन परगना महगवां, जिला भिंड ।

३०२-(३१)

सफेद दाग

यह ऐसे निकल जाते हैं कि वे कहां थे इसका पता भी नहीं लगता। भगवान जी जैन पाचोरा (खानदेश) की पुत्री के सफेद कोढ के दाग अच्छे हो गये और आपने हमको ५१) इनाम दिया। ऐसे कई इनाम मिले। मू० ६), विवरण-पत्र मुफ्त मंगावें। **नक्कालों से सावधान रहें।**

वैद्य बी. आर. बोरकर. आयुर्वेद भवन (२५)
म. पो. मंगरूलपीर, जि. आकोला (विदर्भ)

कार्यालय कार्यपालन यंत्री, लोक निर्माण विभाग, भवन तथा मार्ग, गुना मंडल मध्यप्रदेश

टेण्डर विज्ञप्ति

मध्यप्रदेश पी. ड. डी. के समस्त ठेकेदारों को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित कार्य के लिये परसेन्टेज आन शिड्यूल ऑफ रेट टेण्डर दिनांक ३० जुलाई १९५८ को ३ बजे दिन के कार्यालय कार्यपालन यंत्री, लोक निर्माण विभाग, (भवन तथा मार्ग), गुना में प्राप्त किये जावेंगे.

२. ठेकेदारान को आवश्यक जानकारी, स्पेसिफिकेशन तथा ड्राइंग्स कार्यालय के समय में कार्यपालन यंत्री, गुना के कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं।

३. अर्नेस्टमनी की रकम निम्नलिखित कार्य के सामने अंकित की गई है वह गवर्नमेन्ट ट्रेझरी में कार्यपालन यंत्री, गुना के नाम से जमा कर चालान टेन्डर के साथ प्रस्तुत करना होगा। अर्नेस्टमनी नेशनल सर्टिफिकेट के रूप में भी मान्य की जा सकती है। नकद रकम अर्नेस्टमनी के रूप में स्वीकार नही की जावेगी।

४. टेन्डर फार्म प्रस्तावित-मूल्य पर से कार्य पालन यंत्री, लोक निर्माण विभाग, गुना में दिनांक २९ जुलाई, १९५८ तक प्राप्त किये जा सकते हैं.

५. टेन्डर के साथ इन्कमटॅक्स सर्टिफिकेट, अथवा इस वर्ष की रिन्युअल फीस जमा करने का प्रमाण-पत्र होना आवश्यक है। बिना इसके टेण्डर पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

६. ऐस्टीमेट के अतिरिकत यदि कोई अन्य आयटम की गई तो वह मंजूरशुदा ऐस्मेटीट के अनुसार शिडयूल ऑफ रेट से अधिक व कमी परसेन्टेज से पेमेन्ट की जावेगी। शिडयूल आफ रेट के बाहर की आयटम ऐक्चुअल डेटा के अनुसार ठेकेदार को प्रथम कार्यालय की मंजूरी लेने के बाद करना चाहिए।

७. शर्तिया टेन्डर पर कोई विचार नहीं किया जावेगा, न कोई किसी तरह की शर्त मान्य की जावेगी।

८. टेन्डर्स संभवत: उसी रोज उपस्थित ठेकेदारों के समक्ष खोले जावेंगे, और टेन्डर स्वीकार करनेवाले अधिकारी को पूर्ण अधिकार होगा कि वह किसी भी टेन्डर को स्वीकार करे या सब अमान्य करदे। जिसका कारण बताने को विभाग बाध्य न होगा।

९. ठेकेदार को टेन्डर लेने के पूर्व कार्य संबंधित स्पेसिफिकेशन तथा क्वारी जहां से मेटेरियल आना हो, पूर्व से अवलोकन कर लेना चाहिये। आक्ट्राय ड्यूटी इत्यादि ठेकेदार को देना होगा।

१०. अर्नेस्ट मनी टेन्डर आमंत्रित करने के दिनांक से चार माह तक प्रभावशील रहेगी।

११. सीमेन्ट, लोहा, कोयला, एवं कन्ट्रोल की मटेरियल, पी. ड. डी. स्टोर में उपलब्ध नहीं होगा तो कार्यालय मेटेरियल देने का जिम्मेदार न होगा। यदि मेटेरियल पी. ड. डी., स्टोर में उपलब्ध होगा तो पी. ड. डी. स्टोर के नियमानुसार दिया जा सकेगा:—

क्र.	नाम काम.	अनुमानिक लागत.	अर्नेस्टमनी.	कार्य आरंभ करने की तारीख	कार्य समाप्त करने की तारीख.
		रुपये.	रुपये.		
१	निर्माण तहसील बिल्डिंग, मुंगावली ..	१,००,०००	२,०००	आदेश प्राप्त होने के एक हफ्ते बाद ..	आदेश प्राप्त होने की तिथि से एक वर्ष में पूर्ण करना होगा.

(३०१–३१)

एस. डी. ओढेकर,
कार्यपालन यंत्री,
लोक निर्माण विभाग (भवन तथा मार्ग),
गुना मंडल गुना म. प्र.

6. Selected candidates will be required to execute a bond that in the event of his failure to maintain satisfactory progress with a vowed object of completing the course and success at the examination or his leaving the College in the middle of the session, he will be liable to refund such sum as may be adjudged by the competent authority is discretion.

7. Selected candidates will be posted to the Police Training College, Sagar, on 1st January, 1959 for a course of training upto December, 1959. During this period they will be entitled to a stipend of Rs. 40/- per month. On completion of the training, candidates declared successful will be appointed as Probationer Sub-Inspectors, subject to the vacancies available on the 1st January, 1960, for a period of two years in the scale of pay of Rs. 80-80-5-130-130-3-160 (subject to the orders that the Government may pass with regard to pay scales). Subject to suitability and successful completion of the training during probationery period, they will be Confirmed in their appointments.

K. F. RUSTAMJI,
Inspector General of Police,
Madhya Pradesh, Bhopal

(299-31)

कार्यालय कलेक्टर, मंडल भिण्ड म. प्र.

मेरिज ऑफिसर भिड.

मि० नं० २१५८ मेरिज एक्ट.

पन्नालाल पुत्र मेवालाल, जाति कायस्थ, लावन .. .. .. पति

महिला रामकली, पुत्री खुशीलाल, जाति कायस्थ लावन .. .. पत्नी

नोटिस

उपरोक्त विषय में प्रार्थीगण ने निम्नलिखित आशय का आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है:—

१. पक्षों के नाम.—

(१) पति पन्नालाल पुत्र मेवालाल जाति कायस्थ, सा. लावन, परगना भिड।

(२) पत्नी रामकली, पुत्री खुशीलाल, जाति कायस्थ, सा. लावन, परगना भिड।

२. आयु तथा जन्म का दिनांक.—

(१) पति पन्नालाल आयु ५३ साल।

(२) पत्नी महिला रामकली, आयु ३० वर्ष।

३. स्थाई निवास स्थान यदि कोई हो.—

(१) पति का.—लावन परगना भिड।

(२) पत्नी का.—लावन परगना भिड।

वर्तमान निवास स्थान.—लावन पर. भिड।

४. पक्षों का विवाह से पूर्व का परस्पर संबंध यदि कोई हो.— कोई नहीं

५. पन्नालाल तथा महिला रामकली, के बीच सन् १९५२ में लावन परगना भिन्ड में विवाह आर्य समाज की रीति से हुआ था और हम घोषणा करते हैं कि ऊपर लिखे दिनांक से हम पति और पत्नी के रूप में साथ-साथ रह रहे हैं तथा उक्त दिनांक से मुझ प्रार्थी पन्नालाल से रामकली को एक पुत्र शंकरलाल व कन्या सुरजमुखी उत्पन्न हुए, शेष दो पुत्र उत्पन्न हुए थे वे मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। और वर्तमान अवस्था में भी महिला रामकली गर्भवती है और हम घोषणा करते हैं कि ऊपर लिखे दिनांक से हम पति और पत्नी के रूप में साथ-साथ रह रहे हैं हम इसके द्वारा यह घोषणा करते हैं कि:—

(१) इस आवेदन पत्र में उल्लिखित दिनांक से हम में से किसी के भी एक से अधिक जीवित पति या पत्नी नहीं थी और न हम रजिस्ट्रेशन के समय ऐसा पति या पत्नी रखेंगे। चूँकि महिला रामकली और प्रार्थी पन्नालाल दोनों विवाह सूत्र में पूर्व में ही बँध चुके हैं और हम दोनों से संतान उत्पन्न हो चुकी है। भविष्य में मुझ पन्नालाल की समस्त जायदाद के संबंध में स्वार्थवश कोई भी व्यक्ति अनुचित लाभ उठाने का प्रयत्न न करे, इसलिये स्पष्ट रूप से हम दोनों अपनी शादी की रजिस्ट्री विधिवत् कराने हेतु यह आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है, जिसके लिये हम दोनों पूर्णतः सहमत हैं।

(२) उनमें से कोई भी मूढ़ या विक्षप्ति नहीं है।

(३) रजिस्ट्रेशन के दिनांक को उन दोनों ने इक्कीस वर्ष की आयु पूर्ण करली है।

(४) वह निषेधित संबंधों की पीढ़ी के अन्तर्गत नहीं आते हैं। उनका विवाह स्पेशल मेरिज एक्ट १९५४ (विधान क्र. ४३ सन् १९५४) के प्रभावशील होने के पश्चात् संपन्न हुआ है तथा उन दोनों को शासित करने वाली विधि अथवा विधि का प्रभाव रखनेवाली रीति-रिवाज के अनुसार उनका विवाह संबंध अनुज्ञापित है।

(५) वह दोनों का विवाह पदाधिकारी के विचाराधिकार के भीतर ग्राम लावन में ऐसे काल से निवास कर रहे हैं, जो इस आवेदन-वत्र के दिनांक से ठीक पूर्व तीस दिन से कम का नहीं है।

धारा १६ दी स्पेशल मेरिज एक्ट के अनुसार रजिस्ट्रेशन का सर्टिफिकेट दिया जावे एवं हमारे पुत्र शंकरलाल व पुत्री सूरजमुखी का लेखा मेरिज बुक में किया जावे।

वह यह भी घोषणा करते हैं कि उपरोक्त विवरण उनके अधिकतम ज्ञान तथा विश्वास से सही है।

अतएव धारा १६ दी स्पेशल मेरिज एक्ट के तेहत जर्ये नोटिस हाजा हर आम व खास को सूचना दी जाती है कि इस रजिस्ट्रेशन शादी में जिसको उज्र हो वह तारीख इशायत से ३० दिन के अन्दर अपनी आपत्ति पेश करें, नियत अवधि के पश्चात् फिर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

आर. सी. राय,
मेरिज ऑफिसर,
जिला भिड. म. प्र.

२९८-(३१)

सूखामृत (रजिस्टर्ड)

सूखा व अन्य बाल रोगों की अत्यन्त लाभप्रद औषध बच्चों के दांत आसानी ने निकलते हैं। समस्त मध्यप्रदेश में एजेन्टों की आवश्यकता है।

श्री घनसिंह आयुर्वेद भवन, बरई-ग्वालियर भोपाल, रतलाम, रीवां, छतरपुर व समस्त भारत में एजेन्सी देना है

नोटिस इत्तला नामा

भोले पुत्र वल्देव, जाति ब्राह्मण, निवासी ग्राम अचलपुरा, परगना लहार, मंडल भिण्ड, पोस्ट अचलपुरा।

हर खास आम जनता को सूचित किया जाता है कि मेरे चाचा सुन्दर पुत्र रामलाल मेरे पिता के खास भाई हैं और सौदयाल पुत्र गौरीशंकर मेरे चाचा, जात खास भाई हैं, इन दोनों के कोई भी औलाद नहीं है और इन दोनों की पत्नी भी फोत हो चुकी हैं। अब इनकी उम्र भी जईफ यानी बुड्ढे हो चुके हैं, लोगबागों ने इनको बहका दिया है, मुझे जान पड़ता है कि इनके नाम जो खाता मौरूसी मेरे बुर्जुगों के समय की है, उसको ये दोनों नष्ट करना चाहते हैं या बेचना अथवा फर्जी वेनामा मकान आदि मेरी चल-अचल सम्पत्ति को बरबाद करने पर उतारू हैं। इनके मेरे सिवाय अन्य कोई भी वारिश नहीं है। इनके पश्चात् कुल जायदाद का मैं कुल हक्कदार हूँ, इसलिये मुझे अन्देशा है कि कोई इनसे किसी किस्म की कार्यवाही नाजायज तौर से बिना मेरी रजामन्दी के करावेगा या कर्जा देकर दस्तावेज को रोक देगा या पट्टा आदि जमीन का करावेगा तो नाजायज माना जायगा। इनके पास खाने-पीने के लिये इन्तजाम है तथा मैं इनको १०० रुपये माहवार खर्चे खानगी आदि को देता हूँ। अतः सर्वसज्जनों से निवेदन है कि ऊपर लिखे मुताबिक कोई इनसे किसी किस्म की कार्यवाही न करावे नहीं मैं जिम्मेवार नहीं हूँ, अगर करावेगा तो मन्सूख नाजायज समझा जावेगा। आज तक मैंने इनकी खुशामद सेवा आदि की है और जीवन-पर्यन्त करने को तैयार हूँ। मौजा रहावली बेहड़ में कुल खाता १८ बीघा है तथा मौजा अचलपुरा में कुल खाता १२ बीघा है उसको कोई भी सज्जन मेरे बिना वयनामा रहननामा वक्सस नामा गोद नामा वसीयत नामा आदि कराने का कष्ट न करें।

भोले पुत्र वल्देव, ब्राह्मण, निवासी
ग्राम अचलपुरा मंडल भिण्ड, परगना लहार
पोस्ट अचलपुरा।

(३०५-३१)

'मध्यप्रदेश संदेश' में
विज्ञापन दीजिए

Advertisement

Applications are invited from candidates desirous of under going training as Sub-Inspectors of Police at the Madhya Pradesh Police Training College, Sagar, for the session commencing from the 1st January, 1959.

2. Every candidate must:—

(*a*) be a citizen of India (as defined in Articles 5 to 8 of the Constitution of India),

(*b*) be between the ages of 19 and 24 on the 1st of January, 1959, exception being made only in the cases of candidates belonging to the Scheduled Castes and Scheduled Tribes, who are eligible upto the age of 27 years. Ex-servicemen will be allowed to deduct the entire period of War-Service from their age for the purpose of the maximum age-limit. Temporary Government servant in subordinate, ministrial and inferior service will be allowed to deduct their continuous temporary service upto two years from their age for purpose of maximum age limit,

(*c*) be of good character and antecedents,

(*d*) have passed the Intermediate examination or should have successfully completed the first year course of the three year degree course of the Sagar University after passing the pre-University (Preparatory) examination of one year's duration, except that in the cases of Scheduled Castes and Scheduled Tribes, it should be Matriculation, or equivalent examination of any recognised Board or University. Preference will be given to those who have continued their education at any recoguised University after passing the Intermediate examination (Matriculation Examination in the cases of Scheduled Castes and Scheduled Tribes candidates) or who have acquired traiuing in the U.O.T.C. or National Cadet Crops.

(*e*) not be less tha 5'-5" is height and not be less than 32" in chest measurement (unexpanded),

(*f*) be able to read and write Deonagri characters with facility.

and (*g*) **must not have been rejected by the Central Committee in the past.**

3. Applications in the prescribed form must reach the District Superintendent of Police of the District, in which the candidate resides by 1st August, 1958 Candidates belonging to Scheduled Castes or Scheduled Tribes, displaced persons and ex-war-servicemen are exempted from the application fee. The application form with copy of rules will be available with the District Superintendent of Police of Madhya Pradesh State districts on production of a challan in token of having credited the fee under Head XXIII-Police-Miscellaneous. The application fee will not be refanded in any case.

4. Candidates will have to appear for interview before th District and Central Committees at their own expenses.

5. On appointment the candidates will have to execute a declaration that he shall abstain from drinking liquor and that in the event of his consuming liquorat any time except on medical advice, he shall be liable for disciplinary action

(Continued on page 31)

दो करोड़ रुपये का विकास-ऋण जारी

(पृष्ठ ४ का शेष)

इन व्यय अंकों में द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विकास-योजनाओं पर व्यय सम्मिलित है।

सुरक्षित विधियों में शेष रकमें

भारत सरकार की सिक्युरिटीज हिस्सों, ऋण-पत्रों इत्यादि में जो विभिन्न सुरक्षित निधियां लगाई गईं, उनकी शेष राशि १९५७-५८ वर्ष के अन्त में १२.४७ करोड़ रुपये थी।

ऋण-सम्बन्धी स्थिति

संशोधित अनुमान के अनुसार ३१ मार्च, १९५८ को मध्यप्रदेश सरकार की ऋण-सम्बन्धी स्थिति निम्न प्रकार थी :—

(लाख रुपयों में)

ऋण का प्रकार	३१-३-५८ को ऋण की रकम
स्थायी ऋण	७८६.५५
भारत सरकार से ऋण	६,६८९.८७
अन्य ऋण	९६.९४
बगैर फंड का ऋण (अनफन्डेड)	३७४.६९
कुल ..	७,९४८.०५
घटाइये—राज्य सरकार के अदत्त ऋण और अग्रिम राशियाँ	४,५०७.५३
शुद्ध ऋण ..	३,४४०.५२

स्थायी ऋण:—इसके अन्तर्गत वे ऋण हैं, जो पूर्व मध्यप्रदेश और मध्यभारत सरकारों ने पिछले वर्षों में जारी किये थे।

केन्द्रीय सरकार से ऋण :—इसके अन्तर्गत वे ऋण हैं, जो केन्द्रीय सरकार ने मध्यप्रदेश, मध्यभारत, विन्ध्यप्रदेश और भोपाल के भूतपूर्व राज्यों तथा नये मध्यप्रदेश राज्य को उत्पादक-योजनाओं, (जैसे अधिक अन्न उत्पादन-योजनाओं,) सिंचाई और बिजली योजनाओं, जिसमें चम्बल-योजना सम्मिलित हैं, सामुदायिक योजना आदि पर पूंजीगत व्यय के लिए, तथा स्थायी सम्पत्ति के निर्माण के लिए, जैसे भोपाल में राजधानी का निर्माण, समय-समय पर स्वीकृत किये हैं।

बगैर फण्ड का ऋण :—इसके अन्तर्गत सरकारी कर्मचारियों के लिए भविष्य निधि की शेष राशियाँ आती हैं।

सरकार की सम्पत्ति :—भारत सरकार अथवा अन्य साधनों से लिए गये सभी ऋणों का उपयोग प्रमुख रूप से लाभदायक सम्पत्ति के निर्माण के लिए किया गया है, जैसे सिंचाई के लिए बाँधों, नहरों, तालाबों, कुओं आदि का निर्माण, आवागमन एवं परिवहन सेवाओं में सुधार, व्यापारिक कारखानों में विनियोजन, जैसे नेपा मिल्स, मध्यप्रदेश विद्युत् मंडल तथा स्थानीय संस्थाओं आदि के सदृश्य अन्य तीसरी पार्टियों को ऋण, जो ऋण का भुगतान ब्याज सहित किस्तों में करेंगी। यद्यपि राज्य सरकार की भौतिक सम्पत्ति का कोई वास्तविक मूल्यांकन नहीं किया गया है, फिर भी यह बिना किसी आशंका के माना जा सकता है कि वह राज्य सरकार के न चुकाये गये दायित्वों से बहुत अधिक है।

स्थानीय समाचार

जनता उदारता से योगदान दे

ग्वालियर सम्भाग के आयुक्त श्री मेहता का अनुरोध

ग्वालियर सम्भाग के आयुवत श्री एस. वी. मेहता, आई. ए. एस. ने एक विज्ञप्ति में ग्वालियर सम्भाग के भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर, शिवपुरी, गुना तथा दतिया जिलों की जनता, उद्योग संचालकों तथा प्रमुख व्यवसाइयों से अनुरोध किया है कि हाल ही में मध्यप्रदेश शासन द्वारा द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत विभिन्न विकास-योजनाओं की आर्थिक पूर्ति के लिए जारी किए गए दो करोड़ रुपयों के ऋण (१९७०) में अपना अधिकाधिक अंशदान देकर अपनी उदारता तथा राष्ट्रीयता का श्रेष्ठ परिचय द। पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत चलाए जा रहे विभिन्न निर्माण-कार्यों में ही जन-कल्याण निहित है तथा उनको शीघ्र क्रियान्वित करने के लिए स्वतन्त्र देश के नागरिक के नाते ऋण स्वरूप धनराशि की व्यवस्था करना जनता का पुनीत कर्त्तव्य है।

ग्वालियर की ऐतिहासिक परंपरा एवं गौरवशाली अतीत पर प्रकाश डालते हुए श्री मेहता ने कहा कि देश के द्वितीय बड़े राज्य मध्यप्रदेश को विभिन्न योजना-कार्यों के अन्तर्गत पुनर्जीवन दिलान तथा उक्त नई ऋण योजना का अधिकतम प्रचार करने में ग्वालियर संभाग की जनता का अग्रगण्य रहना आवश्यक है।

उक्त नई योजना के सम्बन्ध में राज्य के मुख्य मंत्री डॉ० कैलासनाथ काटजू द्वारा मध्यप्रदेश की जनता से की गई अपील पर बल देते हुए श्री मेहता ने कहा है कि उद्योगपतियों, व्यवसाइयों तथा विभिन्न धार्मिक संस्थाओं आदि के लिए प्रगतिशील शासन की शुभयोजनाओं के सफल बनाने का यह सुअवसर है।

उक्त ऋण को आकर्षक एवं पुनीत कार्य से भी श्रेष्ठ ठहराते हुए अंत में श्री मेहता ने अनुरोध किया है कि उक्त ऋण में लगाई जानेवाली धनराशि कल्याणकारी निर्माण-कार्यों से होनेवाली जन-समृद्धि के लिए एक पवित्रतम् योगदान है तथा जिसकी निर्धारित समय में ब्याज-सहित अदायगी के लिए मध्यप्रदेश शासन पूर्णरूपेण उत्तरदायी है।

वन-महोत्सव आयोजन पर चर्चा

जिलाधीशों की विचार गोष्ठी में विकास ऋण की लक्ष्य-प्राप्ति के अतिरिक्त ग्रामों को अधिक हरा-भरा बनाने तथा प्राकृतिक सौंदर्य के स्थलों का संरक्षण वन-महोत्सव के अन्तर्गत करने पर भी विचार किया गया। उक्त महोत्सव को जिलों में अधिकाधिक सफल बनाने के विभिन्न पहलुओं, नवीन वृक्ष रोपने, उनकी सुरक्षा, उनसे भविष्य में होनेवाले लाभ तथा बढ़ते हुए सूखे एवं बीहड़ों पर नियंत्रण लगाने आदि आवश्यक विषयों पर चर्चा की गई।

शासन की गतिविधि

माध्यमिक तथा उच्च शालाओं में प्रवेश देने से इन्कार नहीं किया जाय

राज्य शासन ने गत वर्ष लिए गये इस आशय के निर्णय पर पुनः जोर दिया है कि ऐसे किसी भी विद्यार्थी को जो शासकीय तथा मान्यता प्राप्त गैर सरकारी उच्च शाला में प्रवेश प्राप्त करना चाहता है, प्रवेश देने से इन्कार नहीं किया जाना चाहिये।

गत वर्ष लिया गया निर्णय निम्नानुसार है :–

(१) समूचे राज्य में किसी भी विद्यार्थी को किसी भी शासकीय माध्यमिक तथा उच्च शालाओं और मान्यता प्राप्त गैर सरकारी माध्यमिक तथा उच्च शालाओं में प्रवेश देने से इन्कार नहीं किया जाना चाहिये।

(२) शासकीय माध्यमिक तथा उच्च शालाओं में अतिरिक्त कक्षाएँ खोली जाना चाहिये और जहाँ आवश्यक है अतिरिक्त पालियाँ आरम्भ करना चाहिये।

(३) मान्यता प्राप्त गैर शासकीय माध्यमिक तथा उच्च शालाओं के प्रबन्ध-मंडलों को अतिरिक्त कक्षाएँ खोलना चाहिये, जिसके लिए उन्हें नियमों के अनुसार सहायतानुदान दिया जायगा। जहाँ आवश्यक हो, वहाँ उन्हें अतिरिक्त पालियाँ आरम्भ करना चाहिये।

संचालक, लोक शिक्षण, मध्यप्रदेश को तदनुसार हिदायतें जारी कर दी गई हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में एक हजार मातृकी सदन

चालू वित्तीय वर्ष १९५८-५९ में ग्रामों में स्वच्छ एवं सुरक्षित प्रसूति गृहों की स्थापना तथा व्यवस्था के लिए शासन द्वारा पाँच लाख रुपये का प्रावधान किया गया है । ग्रामों में प्रसूति स्त्रियों और शिशुओं की देखभाल करने की योजना के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग एक हजार मातृकी सदन स्थापित किये जायँगे तथा उक्त गृहों के संचालन एवं साज-सज्जा की व्यवस्था शासन द्वारा की जायगी । उक्त मातृकी सदनों की महत्ता जन-साधारण तक पहुँचाने की दृष्टि से उन स्थानीय दाइयों को, जो प्रसूति के लिए बहनों को शासकीय मातृकी सदनों में लाकर उनकी जचकी करेंगी, शासन द्वारा प्रत्येक जचकी पर एक निर्धारित पारिश्रमिक भी दिया जायगा ।

उक्त मातृकी सदन कच्चे, पक्के या टट्टे के बने होंगे, जो जनता के सहयोग से बनाये जायँगे। उक्त मातृकी सदनों में स्थानीय ग्रामीण दाइयों को प्रशिक्षण प्राप्त दाइयों द्वारा प्रशिक्षित करने की भी व्यवस्था होगी ।

शहडोल जिले में सहायता-कार्य

शहडोल जिले के अनावृष्टि-ग्रस्त क्षेत्रों के लोगों को सहायता देने के उद्देश्य से राज्य-सरकार ने जून १९५८ तक इस जिले के लिए कुल ७,०६,२५० रुपये की स्वीकृति दी है, जिसमें इस रकम में से अभी तक ४,९०,००० रुपये खर्च किये जाचुके हैं।

अभी तक आरम्भ किये गये ३३२ कार्यों में से १५० सहायता-कार्य पूरे होचुके हैं और शेष १८२ कार्यों की प्रगति सन्तोषजनक है। इन पर १९,५०० मजदूर कार्यरत हैं। इन सहायता-कार्यों के अन्तर्गत मुख्य रूप से सिंचाई-कार्यों और पीने के पानी के कुओं के निमार्ण का कार्य सम्मिलित है।

इसके अतिरिक्त, इस क्षेत्र के १४० निरीह एवं वृद्ध व्यक्तियों में ७९० रुपये वितरित किये गये हैं। जिले में अभी तक ५५ उचित मूल्य की दूकानें खोली गई हैं और वर्षा ऋतु में, दूरस्थ देहाती क्षेत्र की दूकानों को खाद्यान्नों की पर्याप्त पूर्ति के लिए व्यवस्था की जाचुकी है।

सतना जिले में

सतान जिले के अन्तर्गत भी स्थानीय विकास-कार्यों के निमित्त ४७,००० रुपये की धनराशि राज्य-शासन द्वारा वित्तीय वर्ष १९५८-५९ के लिए निर्धारित की गई थी। इसमें से केवल ७,६२४ रुपये की धनराशि के विकास-कार्य स्वीकृत किये जाने-हेतु शेष थे, क्योंकि पूर्व में ३,९३६ रुपये की धनराशि स्वीकृत की जा चुकी थी। उक्त शेष धनराशि में से जिला-शासन द्वारा जून मास के द्वितीय सप्ताह में ७,२४२ रुपये की धनराशि के ११ विकास-कार्य स्वीकृत किये गये हैं, जिनको पूर्ण करने-हेतु स्थानीय जनता ने कुल ३,६२१ रुपये की धनराशि सहयोग के रूप में चंदा करके भेंट की है ।

स्वीकृत किए गये विकास-कार्यों में पेय-जल के कुओं को प्राथमिकता दी गई । रघुराज नगर तहसील के अन्तर्गत एक तालाब एवं चार कुए पूर्ण किये जायँगे, दो कुए गहरे किये जायँगे तथा दो कुओं का नव-निर्माण होगा । यहाँ की जनता ने ३,०१९ रुपये का सहयोग किया है तथा जिला-शासन ने ६,०३८ की धनराशि सहायता के रूप में स्वीकृत की है । अमरपाटन एवं रघुराजनगर तहसील के अन्तर्गत एक-एक कुए का नव-निर्माण स्वीकृत किया गया है, जिसमें जनता ने प्रत्येक के लिए ३०१ रुपये की धनराशि सहयोग के रूप में दी है तथा जिला-शासन ने प्रत्येक के लिए ६०२ रुपये की धनराशि सहायता के रूप में स्वीकृत की है । शेष धनराशि को भी स्थानीय विकास-कार्यों-हेतु स्वीकृत करने के लिए कार्यवाही चल रही है ।

नवीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तकों में कोई परिवर्तन नहीं

शिक्षा विभाग को यह ज्ञात हुआ है कि मध्यभारत, विन्ध्यप्रदेश और भोपाल क्षेत्रों के उन हाईस्कूलों में, जो कि मध्यभारत माध्यमिक-शिक्षा परिषद् के अधिकार-क्षेत्र में आते हैं, नवीं कक्षा में जो पुस्तकें इस वर्ष पढ़ाई जावेंगी उनके सम्बन्ध में सम्बन्धित व्यक्तियों में भ्रम उत्पन्न हो गया है। अतः यह सामान्य सूचनार्थ स्पष्ट किया जाता है कि मध्यभारत बोर्ड द्वारा हाईस्कूल-परीक्षा १९६० के लिए जो पुस्तकें निर्धारित की गई हैं उन्हें इस वर्ष नवीं कक्षा में पढ़ाया जायगा, उनमें कोई परिवर्तन नहीं किया जारहा है।

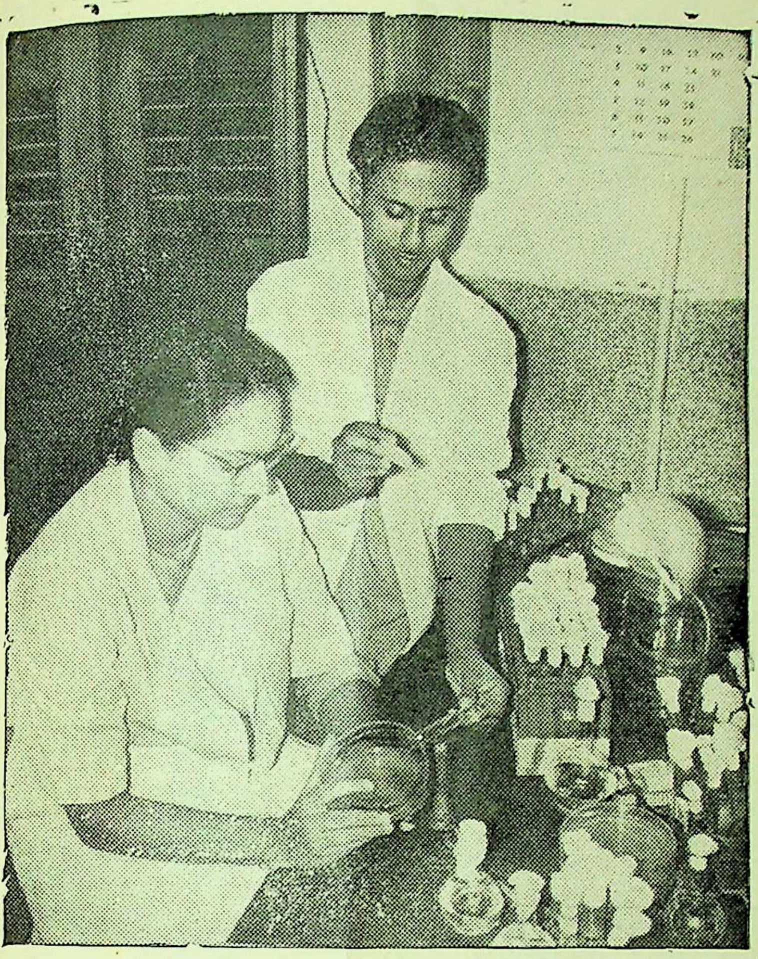

कलकत्ता स्थित 'इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ बायोकेमिस्ट्री एण्ड एक्सपेरिमेंटल मेडिसन' संस्था में, जिसमें मुख्यतः जीवन रसायन औषधि संबंधी अध्ययन और प्रयोग आदि किये जाते हैं, गवेषक जीवाणुओं की विभिन्न पद्धतियों का अध्ययन कर रहे हैं

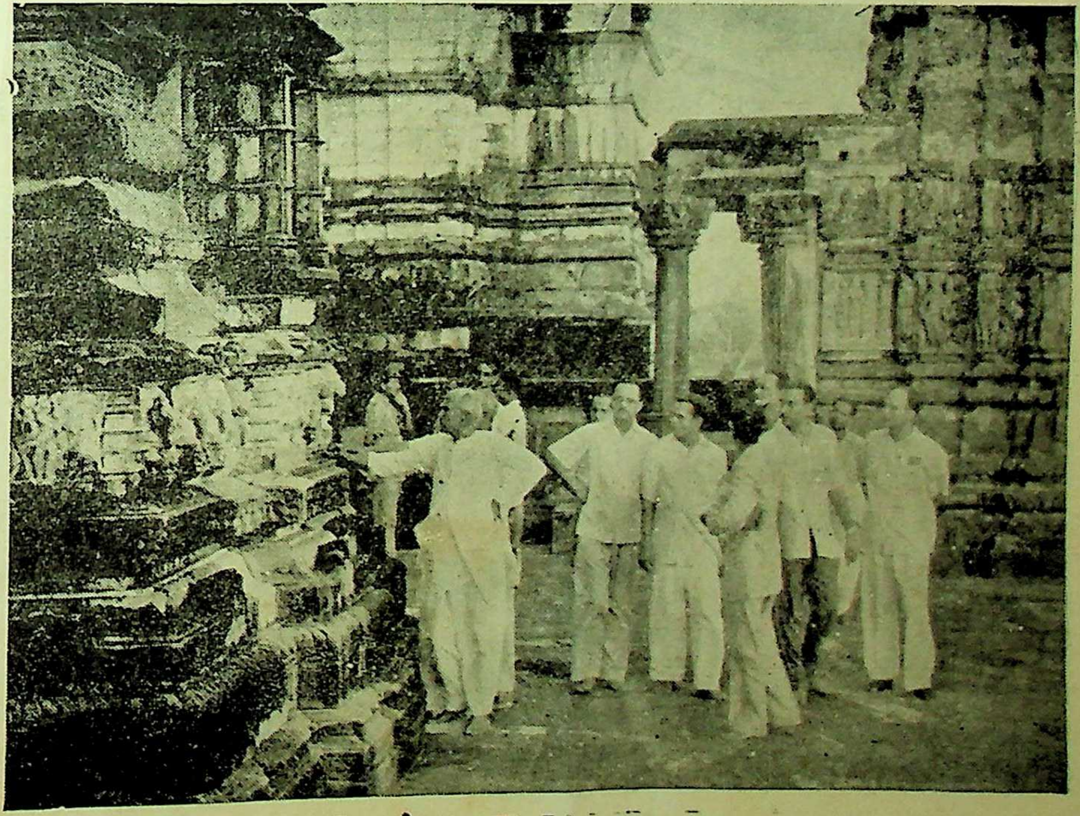

मुख्य मंत्री डॉ० कैलासनाथ काटजू विश्वप्रसिद्ध खजुराहो के मन्दिरों का अवलोकन करते हुए

Registered No. J. 158
Licenced to post without prepayment
MADHYA PRADESH SANDESH
वार्षिक मूल्य छः रुप
Licence No. P. P.

ENERGY FOOD
J. B. MANGHARAM'S
ENERGY FOOD

भारत की शान--
जे० बी० मंघाराम के ताजे कुरकुरे बिस्कुट

तैरना

...बच्चों को मजबूत और स्वस्थ बनाने के लिए श्रेष्ठ व्यायाम है।

बढ़ते हुए बच्चों की एक और अच्छी आदत है जे. बी. मंघाराम के एनर्जी फूड बिस्कुटों को खाने की; जो स्वास्थ्यप्रद ढंग से धूप में पके हुए गेहूँ, माल्ट, ग्लूकोज, दूध आदि से तैयार किये जाते हैं।

जे॰ बी॰ मंघाराम के
एनर्जी फूड
बिस्कुट

जे. बी. मंघाराम एण्ड कं.
ग्वालियर, भारत

रेडियो सीलोन मिलाइए—जे. बी. मंघाराम का नया शो "जे. बी. मंघाराम का संगीत खजाना" प्रत्येक रविवार को प्रातः १० बजे से १०.४५ बजे तक सुनिये और १००) का नगद पुरस्कार लीजिये

स्थानीय एजेन्ट--प्रीतम स्टोर्स, जयाजी चौक व पाटनकर बाजार, लश्कर

प्रतिवाद

सर्व-साधारण एवं सम्बन्धित व्यक्तियों के सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि पं० परशराम बेहरूकिया पुत्र अजुध्याप्रसाद ब्राह्मण, पिछोर, जिला ग्वालियर के नाम से जो नोटिस दिनांक २८ जून, १९५८ पृष्ठ २८ मध्यप्रदेश सन्देश में प्रकाशित हुआ है वह असत्य एवं अवैधानिक है। उसमें पं० भास्कर के यहां मेरे गोद जाने की बात कतई गलत लिखाई है। पंडित परशराम मेरे पिता हैं तथा उनके कब्जे में जो चल एवं अचल सम्पत्ति है वह सब मुश्तर्का खानदानी है और उसका रहन-बय वसीयत करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है, उक्त जायदाद में मेरा हिस्सा है तथा उक्त जायदाद को भगवानदास, केशरबाई अथवा अन्य किसी व्यक्ति के हित में उक्त जायदाद को वसीयत, रहन, बय, हिवा करना निःसार है और ऐसी कार्यवाही कानून के विरुद्ध होगी तथा मेरे [illegible] प्रभाव नहीं होगा।

द. [illegible] परशराम, निवासी
[illegible] ग्वालियर।

(३०६-३१)

ग्राहकों से निवेदन

ग्राहकों से निवेदन है कि पत्र-व्यवहार कर
समय वे ग्राहक नम्बर देना न भूलें। ऐसा
करने की दशा में उनकी ओर से प्राप्त पत्रों
उचित समय में ठीक कार्यवाही करने में कार्या
लय को कठिनाई होती है और कतिपय पत्रों
कार्यवाही करना ही असम्भव होजाता है।

मैनेजर

प्रबंध-सम्पादक--ईश्वरसिंह परिहार, संचालक, सूचना एवं प्रकाशन संचालनालय, मध्यप्रदेश.
सम्पादक--अनन्त मराल शास्त्री
प्रकाशक--गुरुप्रसाद दुबे, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय, म० प्र
मुद्रक--गवर्नमेण्ट रीजनल प्रेस, ग्वालियर
एक प्रति का मूल्य-१३ नये पैसे

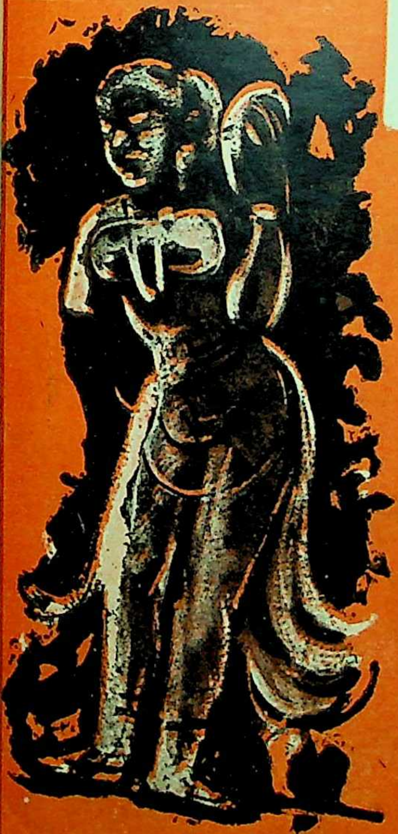

मध्यप्रदेश सन्देश

ग्वालियर, शनिवार, २६ मार्च, १९६०
वर्ष ४] ६ चैत्र, १८८२ [अंक १२

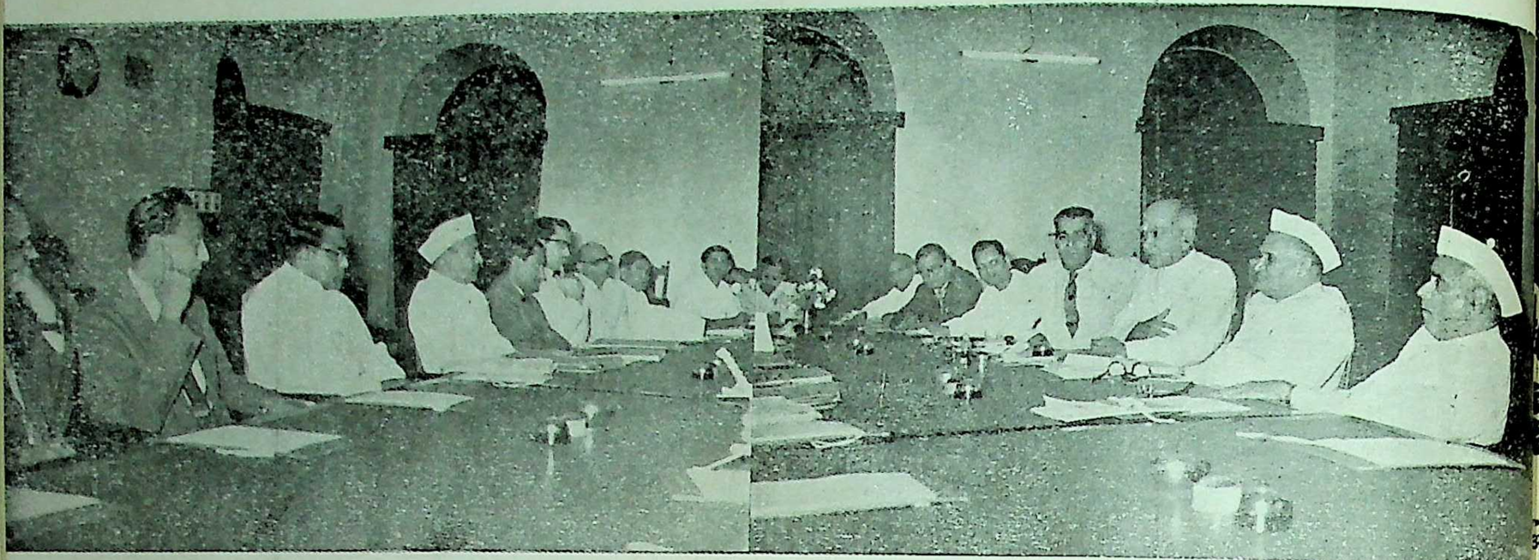

मध्यप्रदेश उद्योग मण्डल और खनिज साधन की प्रथम बैठक में उद्घाटन-भाषण करते हुए मुख्य मंत्री डॉ० कैलासनाथ काटजू । आपके बाईं ओर राजस्व मंत्री श्री भगवंतराव मण्डलोई तथा वन और नैसर्गिक मंत्री श्री शम्भूनाथ शुक्ल बैठे हैं

★

बन्दियों के कल्याण-दिवस के अवसर पर भोपाल के केन्द्रीय कारागार में बन्दियों द्वारा प्रस्तुत नाटक देखते हुए मुख्य मंत्री डॉ० कैलासनाथ काटजू, अन्य मंत्री तथा उप-मंत्रीगण

Digitized by [illegible] Foundation Chennai and eGangotri

सचित्र साप्ताहिक

मध्यप्रदेश सन्देश

बहु-उद्देशीय तवा नदी घाटी योजना

हमारे राष्ट्र की सुख-समृद्धि के लिए कृषि और उद्योगों की उन्नति होना सर्वाधिक आवश्यक समझा गया है। इसी उद्देश्य की पूर्त्ति के हेतु देश में पंचवर्षीय योजनाओं को कार्यान्वित किया जा रहा है। प्रथम और द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि और उद्योग के विकास को ही प्रधानता दी गई और आगामी तृतीय पंचवर्षीय योजना में भी इसके महत्त्व और आवश्यकता का विशेष ध्यान रखे जाने की संभावना है।

कृषि और उद्योगों के क्षेत्र में हमारे राज्य में प्रथम और द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत विकास के अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य हुए हैं। उद्योगों की उन्नति के उद्देश्य से जहां भिलाई इस्पात कारखाना, कागज निर्माण के लिए नेपा मिल्स तथा विद्युत् की भारी सामग्री बनाने के हेतु भोपाल में कारखाने की स्थापना हुई है, वहां कृषि की उन्नति के लिए चम्बल बांध और तवा बांध जैसी विशाल योजनाएँ कार्यान्वित की जा रही हैं। इन बांध योजनाओं के पूर्ण होने पर राज्य की लाखों एकड़ भूमि की सिंचाई होने से जहां एक ओर कृषि के क्षेत्र में अन्नोत्पादन की असाधारण वृद्धि होगी, वहां दूसरी ओर बिजली उत्पन्न किये जाने से निकटवर्ती क्षेत्रों के अन्तर्गत मध्यम उद्योगों को चलाने के लिए शक्ति और प्रकाश की उपलब्धि होगी।

तवा बहुउद्देश्यीय योजना मध्यप्रदेश की दूसरी सबसे बड़ी नदी-घाटी योजना है। इसके अन्तर्गत नर्मदा की सहायक नदी तवा पर एक जलागार बनाया जावेगा, जो उसको सहायक देनवा नदी से उसके संगम से प्रवाह की दिशा में लगभग आधे मील दूर पर स्थित होगा। इस योजना का व्यय अनुमानतः २७.५ करोड़ रुपये है। पूर्ण हो जाने की स्थिति में तवा बांध ५,३१५ फुट लंम्बा होगा। दाहिने और बायें किनारे पर मुख्य नहरों की लम्बाई १२३ मील होगी। शाखा-नहरों और जल-वितरक प्रणालियों के जाल के अन्तर्गत ७०० मील जल-मार्ग रहेंगे। इस योजना के पूर्ण हो जाने पर उससे बायें किनारे पर ६ लाख एकड़ और दाहिने किनारे पर १.५ लाख एकड़ भूमि पर सिंचाई होने की आशा की जाती है। इस सिंचाई के फलस्वरूप प्रति वर्ष २ लाख टन से अधिक अतिरिक्त खाद्यान्न और लगभग ४ लाख टन गन्ना उत्पन्न होगा। इस योजना में दो बिजली-घर-केन्द्र रहेंगे, जिनमें से प्रत्येक केन्द्र द्वारा ६० प्रतिशत लोड फैक्टर पर २०,००० किलोवाट बिजली उत्पन्न होगी। बायें किनारे पर स्थित पहला बिजली-केन्द्र सिंचाई में पानी के उपयोग के पूर्व उस पानी से बिजली पैदा करेगा। दूसरे बिजली-केन्द्र का उपयोग सिंचाई की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए उस समय किया जाएगा, जब सिंचाई की नहरों का प्रवाह पूर्ण क्षमता से न हो रहा हो।

राज्य की इस दूसरी महत्त्वपूर्ण योजना का प्रारम्भिक कार्य आरम्भ किया जा चुका है। बाँध-स्थल, बिजलीघरों के निर्माण-स्थान तथा नहरों के प्रवाह की दिशा के सम्बन्ध में जांच पूरी हो चुकी है। कर्मचारियों और श्रमिकों के लिए अस्थायी क्वार्टर बन चुके हैं। यंत्रों को लाने ले जाने के लिए ४० मील खुले मौसम की सड़क पूर्ण हो चुकी है। प्रस्तावित उप-नगर की अर्ध-स्थायी इमारतों के लिए कुल १० लाख रुपये का ठेका भी दे दिया गया है। इसी प्रकार अन्य तत्सम्बन्धी आवश्यक कार्य प्रारम्भ किये जा चुके हैं। क्रमशः साकार रूप ग्रहण करती हुई राज्य की इस बहुउद्देश्यीय तवा नदी घाटी योजना के प्रारम्भिक कार्य को एवं तवा बांध-स्थल तथा बस्ती का मुख्य मंत्री डॉ. काटजू और लोक-निर्माण मंत्री श्री शंकरलाल तिवारी तथा उपमंत्री श्री दशरथ जैन ने हाल ही में निरीक्षण किया है। यह बांध तवा और देनवा के संगम-स्थल से लगभग आधे मील की दूरी पर नीचे की ओर रानीपुर गांव के पास बनाया जा रहा है। इसके निकट का रेलवे स्टेशन बेलवाड़ा है, जिसका पुनः निर्माण किया जा रहा है। इटारसी रेलवे जंकशन से यह बाँध-स्थल केवल १५ मील के अन्तर पर है। तवा-योजना तान्त्रिक दृष्टि से निर्दोष होने के प्रमाण-पत्र की प्राप्ति के लिए भारत सरकार को प्रस्तुत करदी गई है। इस योजना का प्रारम्भिक कार्य आरम्भ हो जाने से इस राज्य की जनता में अपने और देश के समृद्धिपूर्ण भविष्य की आशा बलवती होना स्वाभाविक ही है; क्योंकि इस प्रकार के विशाल निर्माण-कार्य पूर्ण होने के फलस्वरूप ही हमारा राष्ट्र आत्म-निर्भर, शक्तिशाली एवं समृद्ध हो सकेगा।

मुखपृष्ठ का चित्र

मलेरिया की जांच-हेतु एक शिशु की रक्त-परीक्षा का दृश्य

निर्माण की दिशा में

थोड़े परिश्रम से भारत को अन्न की कमी दूर हो सकती है, भले ही अन्य देशों के प्रमाण में अन्न की पैदावार भारत में आज कम हो। भारत के कृषक यदि थोड़ा ध्यान देकर, पुराना अनुभव सामने रखकर और नये विज्ञान की सहायता लेकर आगे बढ़ेंगे तो अपने देश की खेती की तरक्की निकट भविष्य में हो जायगी।

"सच्चा भारत किसानों का है" भारत के किसान समझें कि यदि वे अन्न की पैदावार बढ़ाएंगे तो "एक पन्थ दो काज" बन सकता है।

भारत में ७० से ७५ प्रतिशत आबादी किसानों की है। यदि कृषकों का विचार किसी भी योजना में नहीं होगा तो वह विचार भारत में पागलपन का विचार कहा जाएगा। भारत की उन्नति याने गांव की उन्नति और गांव की उन्नति याने किसानों की उन्नति है।

भारत में खेती का काम तब से हो रहा है, जब दुनिया में अन्य लोग खेती करना भी नहीं जानते थे।

—डॉ० राजेन्द्रप्रसाद

अपनी शिक्षा से व्यक्ति केवल तभी सन्तुष्ट हो सकता है, जब वह अपने आपको समझने के योग्य हो जाए। अपनी आत्म-सम्पत्ति से बढ़कर मनुष्य के पास और कोई सम्पत्ति नहीं है। असली बड़प्पन इस बात में है कि आदमी का अपने ऊपर कितना नियन्त्रण है। व्यक्ति का महत्त्व उसकी बौद्धिक क्षमता या उसकी भौतिक समृद्धि के कारण नहीं, किन्तु, उसके मानसिक विकास के कारण है।

यदि आप हरएक को ईश्वर का अवतार समझकर उसके साथ समानता का बर्ताव करें—तब आप भारत की प्राचीन परम्परा की विशेषता का पालन करेंगे। इस अवस्था को पाने के पश्चात् हरएक को मानव से मानवोत्तर बनने का प्रयत्न करना चाहिए और इस परिवर्तन में किसी सम्प्रदाय या धर्म की बाधा नहीं होना चाहिए।

*

हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक इस देश का जितना भौगोलिक विस्तार है, उससे भी कहीं अधिक विस्तार उसके आध्यात्मिक ढांचे का है। इसका आध्यात्मिक विस्तार सारे संसार तक फैला हुआ है। जब हम भारतमाता की बात करते हैं तब हमारा मतलब उस भू-खंड स ही नहीं होता, जिस पर हम रहते हैं, किन्तु हमारा मतलब भारत की अतीत परम्पराओं से भी होता है। जब तक हम उन परम्पराओं का पालन करते हैं तब तक देश की आत्मा को प्रतिध्वनित करते हैं। जिस क्षण हम उन परम्पराओं से अलग हो जाते हैं, हम भारतीय नहीं रहते।

—डॉ. राधाकृष्णन्

भूतकाल में जनता सामान्यतः राजा-महाराजाओं की सनक और इच्छाओं तथा उनकी लड़ाई-भिड़ाई के इतिहास से ही संतुष्ट रहा करती थी। परन्तु वर्तमान युग में इतिहास निर्माण का समूचा आधार ही बदल गया है।

भूतकाल के इतिहासज्ञ जिस बात पर बल देते थे, वे उससे बदल भी नहीं सकते थे, क्योंकि वे स्वयं भी कुछ सीमा तक व्यक्ति की घटनाओं के ही आदी हो गए थे। राजा क्या करते थे तथा क्या कहते थे, महत्त्वपूर्ण है, किन्तु आज यह बात कम महत्त्व हो गई है।

*

जब इतिहासकार किसी काल से सम हो जाता है, तब उसका लेखन पूर्णतः के निरपेक्ष नहीं रह जाता है। यदि कोई इ हासकार यह समझता है कि उसे केवल त प्रेषक के समान घटनाओं का चित्रण करना तो वह केवल घटनाएं और उनकी तिथियां दे सकेगा और उसकी पुस्तक को भी पेशेवर इतिहासकार ही पढ़ सकेगा। वह एक नीरस होगा। यदि आप इतिहास की व्या में जीवन लाना चाहते हैं, तो लेखक को भूत वर्तमान दोनों में रहना चाहिए। यदि लेखक नहीं कर सकता तो उसका लेखन-कार्य नी होगा। इसका घटनाओं की एक सारिणी मा रूप में ही उपयोग होगा। इसमें कोई मान मूल्य नहीं होगा।

—श्री जवाहरलाल

इस अंक में

क्र. शीर्षक एवं लेखक पृष्ठ
१ बहु-उद्देशीय तवा योजना . .
२ मोड़ हैं अनजान कितने (कविता)
—प्रा. रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'
३ बच्चों की अद्भुत मनोवृत्तियां
—श्री रमन राजू
४ बड़ा मनहूस कौन ? . .
—डॉ. वृन्दावनलाल वर्मा
५ तीसरी योजना और समाज-कल्याण
—श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख
६ गीत (कविता) . . . .
—श्री शांतिस्वरूप 'चाचा'
७ दक्षिण की पुराण-कथाएँ . .
—श्री आर. एन. दाण्डेकर
८ सहकारिता शिक्षण कार्यक्रम . .
—श्री शिवरत्न पाराशर
९. दूसरी योजना के आखिरी साल का बजट

नर्मदाघाटी के विकास-हेतु—

बहु-उद्देशीय तवा-योजना

मध्यप्रदेश जिस प्रकार कोयला, बॉक्साइट, हा एवं मेंगनीज जैसे खनिज-भण्डारों के त्र में सर्वाधिक सम्पन्न राज्य है, उसी प्रकार र्मदा, ताप्ती, महानदी, चम्बल और बेतवा जैसी त-सी बड़ी-बड़ी नदियों के रूप में उसे विशाल स्रोत भी प्राप्त हैं। इन नदियों में से महानदी सिंचाई के उपयोग में लाया गया है। लगभग लाख किलोवाट विद्युत्-शक्ति उत्पन्न करने-ी एवं १४ लाख एकड़ भूमि की सिंचाई नेवाली चम्बल घाटी विकास-योजना पहले ही प्रगति पथ पर है। उत्तर प्रदेश में बेतवा पर माता टीला बांध का निर्माण हो चुका है, से मध्यप्रदेश की लगभग ६५,००० एकड़ सींची जा रही है और नदी के ऊपरी भाग उसकी सहायक नदियां जैसे हलाली, बाह सागर को उपयोग में लाने के लिए जांच-ताल की जा रही है, जो शीघ्र ही समाप्ति पर ताप्ती नदी का उपयोग बम्बई राज्य द्वारा ा जा रहा है। केवल विशाल नर्मदा नदी के ास हेतु विस्तृत एवं सम्पूर्ण जानकारी एकत्र ा शेष रह गया है।

नर्मदा बम्बई राज्य के भड़ौच जिले में अपने ह के दौरान में किनारों को लांघ जाती है वहां उसे विध्वंसनी कहा जाता है। अतः ा की बाढ़ को नियंत्रित करने की ओर उस य का ध्यान आकर्षित हुआ। चूंकि नर्मदा प्रदेश के बहुत बड़े भू-भाग में से प्रवाहित है। अतः बम्बई राज्य ने मध्यप्रदेश शासन नुरोध किया कि भारत सरकार के केन्द्रीय एवं विद्युत्-शक्ति आयोग के सहयोग से ी शक्ति के उपयोग की संभावनाओं की जांच-ल करने के लिए क्या-क्या सम्मिलित प्रयास जा सकते हैं। इस पर मध्यप्रदेश शासन सहमत हो गया। अतः सन् १९४७ में केन्द्रीय जल एवं विद्युत्-शक्ति आयोग ने जांच-पड़ताल का कार्य हाथ में ले लिया।

नर्मदा मध्यप्रदेश में अमरकंटक के निकट मेकल पर्वत श्रेणियों से निकलकर जबलपुर, होशंगाबाद और विन्ध्य एवं सतपुड़ा की लम्बी घाटियों के मध्य में होती हुई, भड़ौच के पास खंभात की खाड़ी में विलय हो जाती है। यह लगभग आठ सौ मील लम्बी और आधा मील चौड़ी है। मुहाने के निकट ही नदी को नौ-परिवहन के उपयोग में लाया जा सकता है, लेकिन ऊंचाई पर इसके तीव्र प्रवाह, चट्टानों, प्रपातों तथा ग्रीष्मकाल में जल की न्यूनता के कारण नौ-परिवहन के उपयोग में नहीं लाया जा सकता।

कछारों के प्रारंभिक पर्यवेक्षण तथा अध्ययन से यह विदित हुआ कि मुख्य नदी तथा उसकी सहायक नदियों पर जलाशययोग्य अच्छे स्थान थे। इन स्थानों का उपयोग कर मध्यम ऊंचाई के बांध बनाकर विभिन्न क्षमतायुक्त जलाशय तैयार हो सकते थे। इन जलाशयों में वर्षा के जल को संचय कर सिंचन, विद्युत् उत्पत्ति, नौ-परिवहन एवं बाढ़-नियंत्रण के कार्यों में प्रयुक्त किया जा सकता था। इन जलाशयों के ऊपरी भागों को (absorption) जलावरोध के हेतु सुरक्षित किया जाकर भड़ौच क्षेत्र में आनेवाली बाढ़ों को अधिक नियंत्रित किया जा सकता है। अतः इस प्रकार के सात स्थान चुने गये तथा उनके लिए व्यय अनुमान-पत्रक तैयार किए गये एवं तत्पश्चात् उनमें से केवल चार स्थानों को विस्तृत अध्ययन के लिए चुना गया, जिनके अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी होने की संभावना पाई गई। इनके नाम हैं—(१) बारगी, (२) तवा, (३) पुनासा एवं (४) नौगांव।

नर्मदा तीन पठारों में से प्रवाहित होती है। पहला पठार जबलपुर में है, जिसकी लम्बाई २०० मील और चौड़ाई २० मील है। इस पठार का पूर्वी अर्द्ध भाग जबलपुर के निकट मुख्य नदी के बारगी बांध से तथा उत्तरी भाग बरना नामक सहायक नदी से सींचा जा सकता है। होशंगाबाद के ऊपरी तथा निचले हिस्से को दक्षिण की सहायक नदी तवा पर बांध बनाकर सींचा जा सकता है। दूसरा पठार, जोकि निमाड़ के नाम से जाना जाता है, सकरा और बहुत छिन्न-भिन्न है। नर्मदा द्वारा प्रवाह-सिंचन की सम्भावनाएं इस पठार के लिए बहुत कम हैं, किन्तु, नदी पर पुनासा के निकट बनाये जानेवाले बांध से इस पठार को सस्ती विद्युत्-शक्ति तथा उर्त्सिचन की सम्भावनाएं उपलब्ध हो सकेंगी। तीसरा और सबसे बड़ा पठार बम्बई में गोरा घाटी के नीचे है।

इन चारों योजनाओं की विस्तृत जांच-पड़ताल सन् १९४८ में प्रारंभ की गई, किन्तु, इनमें से बारगी से सम्बन्धित जांच-पड़ताल सन् १९५० में बन्द करदी गई, जबकि तवा, पुनासा एवं नौगांव संबंधी जांच-पड़ताल का कार्य जारी रहा।

खण्डवा के निकटस्थ पुनासा से शत-प्रतिशत भारकारक (लोड फेक्टर) की दर से दो लाख किलोवाट विद्युत्-शक्ति उत्पन्न करने की संभावना थी एवं बरवानी के निकट हरिनफल से २५० फुट ऊंचा बांध बनाकर शत प्रतिशत भारकारक (लोड फेक्टर) की दर से लगभग तीन लाख किलोवाट विद्युत्-शक्ति उत्पन्न होने की संभावना थी। इसके अतिरिक्त तवा से भी लघु विद्युत्-शक्ति प्राप्य हो सकती थी।

तवा एवं नर्मदा पर पुनासा के निकटस्थ बांध बन जाने से बाढ़-नियंत्रण का कार्य पूर्ण हो

जायगा । परिणामतः भड़ौंच सुख की नींद सो सकेगा ।

तवा जलाशय परियोजना

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि नर्मदा घाटी विकास हेतु उसकी सबसे बड़ी सहायक नदी तवा को उपयोग में लाना उपर्युक्त चार योजनाओं में से एक है । इस योजनान्तर्गत तवा नदी पर एक बांध का निर्माण होगा, जिससे नर्मदा के दक्षिण में स्थित होशंगाबाद के मैदानों में सिंचन-सुविधाएं उपलब्ध होंगी तथा कुछ मात्रा में विद्युत्-शक्ति भी उत्पन्न होगी । तवा नदी का क्षेत्र अनुमानतः २,३०० वर्गमील है, जिसमें पचमढ़ी पर्वतमाला का कुछ क्षेत्र भी सम्मिलित है । यह नदी हरियागढ़ रेलवे स्टेशन के पास सतपुड़ा पर्वत-श्रेणियों से २,५०० फुट ऊंचाई से निकलती है एवं अपने १०५ मील लम्बे प्रवाह के दौरान, ८१ मील वन-क्षेत्र से गुजरती है तथा २४ मील नर्मदा के पठारों में से होती हुई होशंगाबाद से ७ मील ऊपर बन्दराभान के पास नर्मदा में मिल जाती है । तवा की प्रमुख सहायक नदी देनवा पचमढ़ी पहाड़ियों के दक्षिणी भागों में से बहती है, जहां कि अनुमानतः ८० इंच वर्षा होती है ।

बांध

यह बांध देनवा और तवा के संगम-स्थान से आधे मील नीचे की ओर रानीपुर ग्राम के निकट बनाया जा रहा है । यह स्थान बम्बई-जबलपुर रेलवे लाइन के चार मील के दायरे में स्थित है । इसका समीपस्थ रेलवे स्टेशन बेलवाड़ा है, जिसका पुनः निर्माण किया जा रहा है, जो नदी के बायें किनारे पर अवस्थित है । इटारसी रेलवे जंक्शन से यह बांध-स्थल केवल १५ मील दूर है ।

इस बांध की लम्बाई लगभग एक मील होगी । लगभग ४,५०० फुट लम्बे पूर्वी भाग में से लगभग ३,४०० फुट जलद्वार (स्पिल वे) बायीं ओर तथा शेष दायीं ओर रहेगा । मुख्य प्रवाह पर बांध की अधिकतम ऊंचाई नदी तल से लगभग १७७ फुट और नींव से लगभग २०० फुट होगी । जलद्वार की रूपरेखा इस तरह की होगी, जिसमें ४० × ५० फुट ऊंचे नौ द्वारों में से ४,५०,००० क्यूसेक पानी प्रवाहित हो सके । मुख्य बांध के अतिरिक्त दो छोटे सेडिल होंगे, जिन्हें भरा जा सकेगा ।

विद्युत् स्टेशन तथा बाईं ओर की नहर सम्भवतः पहली सेडिल में रहेगी । मूलतः तवा नदी के जल को उसके बाईं ओर ले जाकर लगभग छह लाख एकड़ भू-क्षेत्र की सिंचाई करने का विचार किया गया था । इस सम्बन्ध में की गई जांच-पड़ताल से इस निर्णय पर पहुंचा गया कि जलाशय की क्षमता बढ़ाए बिना ही तवा के जल को दायीं ओर भी ले जाकर १०५ एकड़ भू-भाग सींचा जा सकता है ।

जलाशय १०६ वर्गमील का होगा । इसके अन्तर्गत आनेवाली भूमि अधकांशतः वन-क्षेत्र है । कृषि-योग्य कोई भी भूमि इसके अन्तर्गत नहीं आएगी । इससे केवल ४९ गांव ही प्रभावित होंगे, जिनमें चन्द झोंपड़ियां ही हैं । वहां के निवासियों के नुकसान के लिए उदारतापूर्वक मुआवजा देने की व्यवस्था की गई है । जलाशय की सम्पूर्ण जलसंग्रह क्षमता २९.५५ लाख एकड़ फुट होगी । जलाशय की रूपरेखा में सौ वर्ष तक के लिए दलदल को साफ करने की भी व्यवस्था है ।

सिंचाई

जलाशय से दो नहरें निकलेंगी । बायीं नहर का तल (c.ll) आर. एल. १,०९१ पर होगा और यह नहर नदी के साथ-साथ करीब चार मील उत्तर की ओर जायगी एवं तत्पश्चात् पश्चिम की ओर मुड़कर रूपरेखा चलेगी । इसकी लम्बाई के काफी अधिक भाग तक यह नहर होशंगाबाद, होशंगाबाद जिले की सिवनी-मालवा और हरदा तहसीलों एवं निमाड़ जिले की हरसूद तहसील से होती हुई अपनी लम्बाई के काफी भाग तक केन्द्रीय रेलवे के दक्षिण से जायगी । नर्मदा और इस नहर के अन्तर्गत आनेवाला क्षेत्र अनुमानतः नौ लाख एकड़ है । इस नहर की लम्बाई करीब ९० मील है तथा इसकी जलप्रदाय क्षमता अनुमानतः ३,५०० क्यूसेक है ।

दायीं ओर की नहर जलाशय से निकलकर ढाई मील लम्बी सुरंग में होती हुई देनवा और नर्मदा के मध्य किनारे को पार करेगी । लगभग सेमरी के पास नर्मदाघाटी में सुरंग विलीन हो जायगी । यहां से दो शाखाएँ प्रारंभ होंगी, जिनमें से पहली पूरब की ओर तथा दूसरी पश्चिम की ओर जायगी । पश्चिमी शाखा तवा तक जायगी और पूर्वी पिपरिया और उसके कुछ आगे तक । इस नहर की सम्पूर्ण लम्बाई लगभग ४० मील होगी । इसके द्वारा लगभग १.५ लाख ए भूमि का सिंचन होगा । तवा द्वारा सम् सिंचित-क्षेत्र की संभावना लगभग ७.५० ल एकड़ है । खेतों में पानी पहुंचाने के लिए मु नहर से सहायक और छोटी नहरें निकलें जिनकी सम्पूर्ण लम्बाई स्थूल रूप से एक ह मील होगी ।

देश के इस भाग में किसान गेहूं की फसल सींचने के प्रति सामान्यतः उदासीन रहे है अधिकांशतः कृषक यह विश्वास करते हैं गेहूं के सींचने से उसमें गेरुआ रोग लग जाता पवाड़खेड़ा स्थित शासकीय कृषि फार्म ने सफल पूर्वक गेहूं की एक ऐसी किस्म निकाली है, जो गेरुआ निरोधक है । इस बीज ने यह सिद्ध दिया है कि समुचित खाद और समयानुसार देने पर एक एकड़ भूमि में इस समय होने ५०० पौंड के स्थान पर १ टन गेहूं की फ हो सकती है । कृषकों को गेहूं की सिंचाई लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शासन ने क्षेत्र में दो प्रारंभिक योजनाएँ बनाईं । बैतूल निकट सांपना का निर्माण हो चुका है, जि लगभग दस हजार एकड़ क्षेत्र में गेहूं की सिं की व्यवस्था है और पिपरिया के पास डुकरीं का भी निर्माण हो चुका है, जो ६,५०० ए भूमि की सिंचाई करेगी । वर्ष १९५८-५९ इन दोनों तालाबों से ५,००० एकड़ भू-क्षेत्र सीं गया । ऐसा स्पष्टतः दृष्टिगोचर होने लगा कि कृषक लाभ को अनुभव करने लगे हैं । इस आशा की जाती है कि तवा-सिंचाई योजना द्रुतगति से विकास होगा ।

विद्युत्-शक्ति

दो विद्युत्-गृह होंगे एक बायीं नहर ऊपर और दूसरा कुछ दूरी पर नीचे की ओ सिंचाई के मौसम में प्रथम विद्युत्-गृह में प्र विद्युत्-शक्ति उत्पन्न होगी, तत्पश्चात् जल सिं के लिए छोड़ा जायगा । दूसरे विद्युत्-गृह उपयोग ऐसे समय में विद्युत्-शक्ति को सन्तु करने के लिये किया जायगा, जबकि और मौसम के अनुसार सिंचाई-हेतु जलपूर् घट-बढ़ होगी । दोनों विद्युत्-गृह १०० कारक (लोड फेक्टर) पर १,२०० किलो विद्युत् उत्पन्न करेंगे ।

(शेष पृष्ठ ३० पर)

साहित्य, संस्कृति, कला, ज्ञान-विज्ञान आदि का विशेष-अंश

इस अंश के संपादन परामर्शदाता – श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द

विशेष कविता

मोड़ हैं अनजान कितने

प्रा० रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

मोड़ हैं अनजान कितने पंथ में मेरे !

हो गई जैसे मिलन की बाँसुरी खाली;
अब न मिलती है स्वरों को छांह रसवाली।
छोड़कर मुझको गया है गीत बनजारा;
प्राण रोते, पर, न बहती अश्रु की धारा।

गोद सूनी है गगन की, मर गए बादल;
एक-दो क्षण झूलते बस पांथ पंछी-दल।
कामना की ओ प्रतिध्वनि! क्यों मुझे घेरे!
मोड़ हैं अनजान कितने पंथ में मेरे!

जागती है रात मेरी, सो गया सपना;
तोड़ लीं किरणें किसी ने, चांद शून्य बना।
याद किसकी है चली आती दुराशा-सी!
काँप उठती है हवा अभिसार की प्यासी।

काँपते हैं पेड़ जो, उनको सिहरने दो!
बंद करलो आस मन की, प्यास भरने दो!
सुन न पाऊँ सनसनी में श्वास की तेरे!
मोड़ हैं अनजान कितने पंथ में मेरे।

विशेष लेख

बच्चों की अद्भुत मनोवृत्तियाँ

—श्री रमन राजू

क्याकभी आपने अपने बच्चों की उन मनोवृत्तियों पर ध्यान दिया है, जो देखने-सुनने में अत्यधिक लघु प्रतीत होती हैं, परंतु, जिनके परिणाम लघु नहीं, बहुत बड़े हो सकते हैं। मनोवैज्ञानिकों का परामर्श है कि ऐसी मनोवृत्तियों के संमुख आने पर आप कभी उन्हें टालने का प्रयत्न न कीजिए। उसी समय उन पर विचार कीजिए और संभावित परिणामों को दृष्टिगत रखते हुए ऐसे हल निकालिए, जिनसे बच्चों को सुमार्ग प्राप्त होने के साथ-ही-साथ राष्ट्रोन्नति भी हो सके। यहाँ ऐसी ही कुछ मनोवृत्तियाँ आपके संमुख प्रस्तुत की जाती हैं, जो अत्यधिक लघु, किंतु, परिणाम में बहुत बड़ी हैं।

मेरी चार वर्ष की बच्ची, सुषमा, कच्ची पहली कक्षा में पढ़ रही थी। अभी केवल चार ही मास पाठशाला में उसने काटे थे। इतने कम समय में अध्ययन के क्षेत्र में हुई उसकी प्रगति से मैं पूर्णरूपेण संतुष्ट था। एक रात्रि को अचानक ही वह अत्यधिक शोर करने लगी। मैंने उसे मना करने के पूर्व उसका कारण खोजा। विचारमग्न तो था ही। मैंने सुना—

'पी-पी-पी-पी डरा-डरा डम ;
नन्हें-मुन्ने सैनिक हम।'

यह गायन गाया जा रहा था। यह मेरे पड़ोसी की छोटी बालिका की ध्वनि थी। वह पक्की पहली में पढ़ती थी। सुषमा और वह दोनों ही स्कूल साथ-साथ आया-जाया करती थीं। आज उसके चाचाजी घर आए हुए थे। बड़ी दूर से, करनाल से। वह उनके संमुख गायन के रूप में अपनी प्रगति प्रदर्शित कर रही थी। एक गायन समाप्त हुआ। दूसरा प्रारंभ हुआ। गायन के पश्चात् ए, बी, सी, डी से लेकर जेड तक वह बोल गई। इसी तरह गिनती आदि भी सुनाई उसने। इस बीच सुषमा प्रारंभ ही की भाँति निरंतर कुछ-न-कुछ अनर्गल बोलती रही। मुझे अब उसकी मनोवृत्ति समझने में देर न लगी। मैंने उसे अपने समीप बुलाया; कहा—सुषमा, आज तूने स्कूल में कौन-सा नया गायन सीखा ?

सुनाऊँ, पिताजी!—सुषमा उचकती हुई कह गई।

हाँ-हाँ, अवश्य। सुनने के लिए ही तो मैंने पूछा है।—मैंने उसको प्यार करते हुए कहा।

ढोल बजाने जैसा अभिनय करती हुई वह गाने लगी—

'पी-पी-पी-पी डरा-डरा डम।
नन्हे-मुन्ने सैनिक हम।'

यद्यपि यह गायन नवीन न था, फिर भी, मैंने सुना। सुषमा की मनोवृत्ति ही उससे पड़ोस की बालिका की नकल करा रही थी। एक गायन के पश्चात् दूसरा प्रारंभ हुआ। उसने ए, बी, सी, डी से जेड तक भी सुनाया। गिनती आदि भी सुनाई। तात्पर्य यह कि जो कुछ पड़ोस की बालिका ने अपने चाचाजी को सुनाया था, वही सुषमा ने मुझे सुनाया। दोनों बालिकाएँ अब शांत थीं। उसके चाचा उधर पड़ोस की बालिका की प्रशंसा कर रहे थे, इधर सुषमा मेरे द्वारा अपनी प्रशंसा सुनकर फूली नहीं समा रही थी। एक ओर तो कहाँ वह अनर्गल बोल रही थी और दूसरी ओर अब अत्यधिक प्रसन्नता में सारे मकान ही को अपने सिर पर उठाए जा रही थी।

एक दिन सुषमा को खाँसी-जुकाम के कारण चिकित्सालय ले जाना पड़ा। चिकित्सक ने उसको देखने के पश्चात् दवा लिख दी। हम दवा लेकर घर वापस आ गए। दूसरे दिन प्रातः मैं आलस्य में डूबा हुआ बिस्तर पर पड़ा था। सुषमा अपनी छोटी बहन दिव्या की निद्रा भंग करती हुई बोली—उठो, दवा नहीं लेनी।

दिव्या आँखों को मलते हुए उठ गई। सुषमा ने उसका हाथ देखा। एक कागज पर पेंसिल से कुछ आड़ी-टेढ़ी लाइनें खींची। वह कागज दिव्या के हाथ पर रख दिया। कमरे की खिड़की की ओर इशारा करते हुए उसने कहा—दवा वहाँ मिलेगी।

दिव्या कुछ न समझी। वह तो कुछ नींद के झोंके ले रही थी। सुषमा ने उसे खिड़की के पास ले जाकर खड़ा कर दिया। स्वयं खिड़की के दूसरी ओर चली गई। कुछ क्षण पूर्व डॉक्टर बनी हुई सुषमा अब कंपाउन्डर के रूप में दिव्या को दवा दे रही थी। मैं शांत पड़ा हुआ सब देख रहा था। एक चिंता-सी उत्पन्न हुई। मध्यम-श्रेणी का घर। उसपर लड़की का झुकाव डॉक्टर बनने की ओर। जितना ही मैं इसपर सोच रहा था, उतना ही विचारों में डूबा जा रहा था। इसी गति के साथ सुषमा डॉक्टर भी बनती जा रही थी। अब उसके पास-पड़ोस के एक-दो बच्चे भी दवा लेने आ गए थे। उसकी लगन पूर्ण करनी ही होगी—विचार मस्तिष्क में आते ही मैं नित्य के कार्यक्रम में व्यस्त हो गया।

एक दिन सुषमा जब स्कूल से लौटी, तब उसके हाथ में दो छोटी-छोटी गुड्डियाँ थीं। मैंने पूछा—सुषमा, आज ये गुड्डियाँ किसने दे दीं ?

सुषमा शांत थी। उसके उत्तर न देने के कारण मेरे मन में भाँति-भाँति के विचार उत्पन्न होने लगे। मैंने प्रेम से उस पर विजय प्राप्त की। ज्ञात हुआ कि स्कूल में कहीं छह नए पैसे पड़े हुए थे। उनके द्वारा ही दो गुड्डियाँ आज वह लाई थी। मैंने उसे समझाया—यह एक प्रकार की चोरी हुई। चोरी की परिभाषा भी अभी वह नहीं जानती थी। वह भी उसे उदाहरण देकर समझाई। कुछ दिनों पश्चात् सुषमा ने मुझसे कहा—पिताजी, आज स्कूल में एक रुपए का नोट मुझे मिला था। वह मैंने 'आँटीजी' को दे दिया था। उन्होंने मुझे दो चाकलेट मँगाकर दिए, बदले में।

और वे दोनों चाकलेट वह घर ले आई थी। मैंने उनमें से एक दिव्या को दे दिया। उन दोनों ने बड़े प्रेम से उन्हें खाया।

मनोविज्ञान के अध्येताओं का परामर्श यही हो सकता है कि इन प्रवृत्तियों पर विचार कीजिए! शिशुओं की उपर्युक्त मनोवृत्तियाँ कितनी लघु देखने-सुनने में हैं, किंतु, परिणाम में इनसे क्या-से-क्या प्राप्त नहीं हो सकता ?

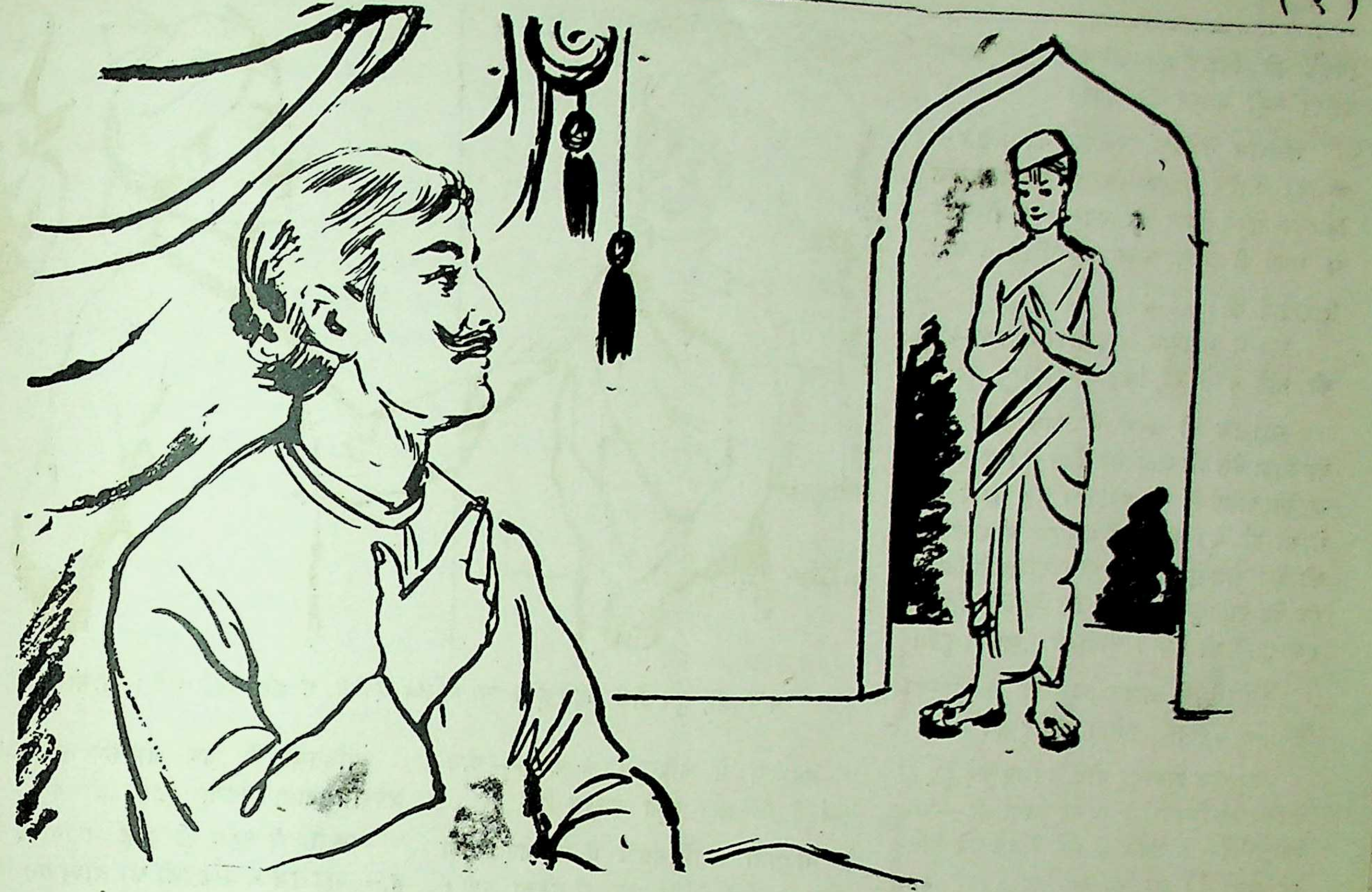

बड़ा मनहूस कौन?

—डॉ० वृन्दावनलाल वर्मा

विशेष कहानी

दतिया मध्यप्रदेश का एक जिला है। पहले बुंदेलखंड का यह एक बड़ा राज्य था। दतिया राजधानी थी। अब कलेक्टर और अन्य ऊंचे पदाधिकारियों का सदर स्थान है।

साठ वर्ष पहले दतिया के राजा महाराज भवानीसिंह थे। उन्हें शिकार, कुश्ती-पहलवानी और संगीत का बहुत शौक था। वह चित्रकारी में भी रुचि रखते थे और स्वभाव के बड़े उदार थे। शिक्षा उन्होंने हिंदी, उर्दू और फारसी की पाई थी। अंग्रेजी शायद थोड़ी-सी ही जानते थे। बड़े उदार तो थे ही, निर्भीक और धर्म पर विश्वास करनेवाले भी थे। अंधविश्वासी वह बिलकुल न थे। सभा, समारोह और दरबार की गपशप में रुचि रखते थे।

उस युग में आज से कहीं अधिक अंधविश्वास थे। एक दिन, उनके एक दरबारी ने, जैसा कि प्रसिद्ध है, दतिया निवासी एक पंडित का नाम लेकर महाराज भवानीसिंह से कहा—'महाराज, वह पंडितजी बहुत ही मनहूस हैं। सवेरे-सवेरे उनका कोई मुंह देख ले तो उसे दिन-भर खाने को नहीं मिलता है।'

भवानीसिंहजी ने टिप्पणी की—'योंही बकते हैं लोग! जिनसे पंडितजी की पटती न होगी, वही उनकी बदनामी कर रहे होंगे।'

'ऐसा नहीं है, सरकार, नगर में बहुत ऐसे हैं, जो अपनी भुगती का बखान करते हैं'—दरबारी ने कहा।

महाराज बोले,—'मैं बिलकुल नहीं मानता। पर, यदि तुम और तुम्हारे सरीखे लोग इस बात का विश्वास करते हैं, तो मैं स्वयं परीक्षा लूंगा।'

महाराज ने उन पंडितजी को एक दिन अपने महल में बुलाया और कहा,—'पंडितजी, आज यहीं ठहर जाओ! सोना भी यहीं। कुछ बातें करेंगे। भोर कलेवा करके घर चले जाना।'

पंडितजी इस आदर को पाकर बहुत प्रसन्न हुए और महल में उस रात महाराज के पास ही ठहर गए। उन्होंने पंडितजी का पलंग अपने

निकट ही बिछवाया। पंडितजी को इसका उद्देश्य नहीं मालूम हो सका।

महाराज ने अपने रसोइये को अकेले में बुलाकर आदेश दिया—'बहुत बढ़िया हलवा बिलकुल सवेरे तैयार कर रखना। मैं पौ फटने के समय ही कलेवा करूंगा।' रसोइये ने आज्ञा शिरोधार्य की।

रात में महाराज और पंडितजी इधर-उधर की बातें करते रहे, फिर सो गए।

महाराज पौ फटने के पहले जाग पड़े। वह प्रातः वैसे भी जल्द उठ बैठते थे। जागते ही उन्होंने पंडितजी को पुकारा। वह गहरी नींद में सो रहे थे। जाग पड़े। महल में शमादानों की तेज रोशनी हो रही थी। पंडितजी बिस्तर पर बैठ गए। महाराज तो बैठे ही थे। दोनों ने एक दूसरे को देखा। थोड़ी-सी बातचीत हुई।

रसोइये ने आकर महाराज से निवेदन किया,—'सरकार, कलेवा तैयार है।'

महाराज हाथ-मुंह धोने के लिए खड़े हुए ही थे कि उनके शिकारी ने आकर सूचना दी,—'सरकार, निकट के जंगल में शेर ने एक बड़े सांभर को मारा है। वह उसे खा रहा है। मैं बैठक का बंदोबस्त कर आया हूं। आप वहां पहुंचे नहीं कि शेर हाथ लग जायगा।'

महाराज ने हाथ मुंह ही धोया। शिकारी पोशाक पहनी, बंदूक ली और तत्काल घोड़े पर सवार होकर शिकारी के साथ हो लिए। पंडितजी से कहते गए,—'ठहरे रहना, मैं आता हूं।'

जब शिकारी के बतलाए स्थान पर पहुंचे तब देखा, तो शेर गायब! विश्वास था कि सांभर को खाकर वहीं कहीं जा पड़ा होगा। हांका करनेवाले बुलाए गए। जंगल का विस्तार बड़ा था। हांके पर हांके होते रहे, पर, शेर हाथ न लगा, न लगा, संध्या के समय महाराज को निराश होकर महल लौट आना पड़ा। वह दिन-भर निराहार रहे। पंडितजी महल में मौजूद थे।

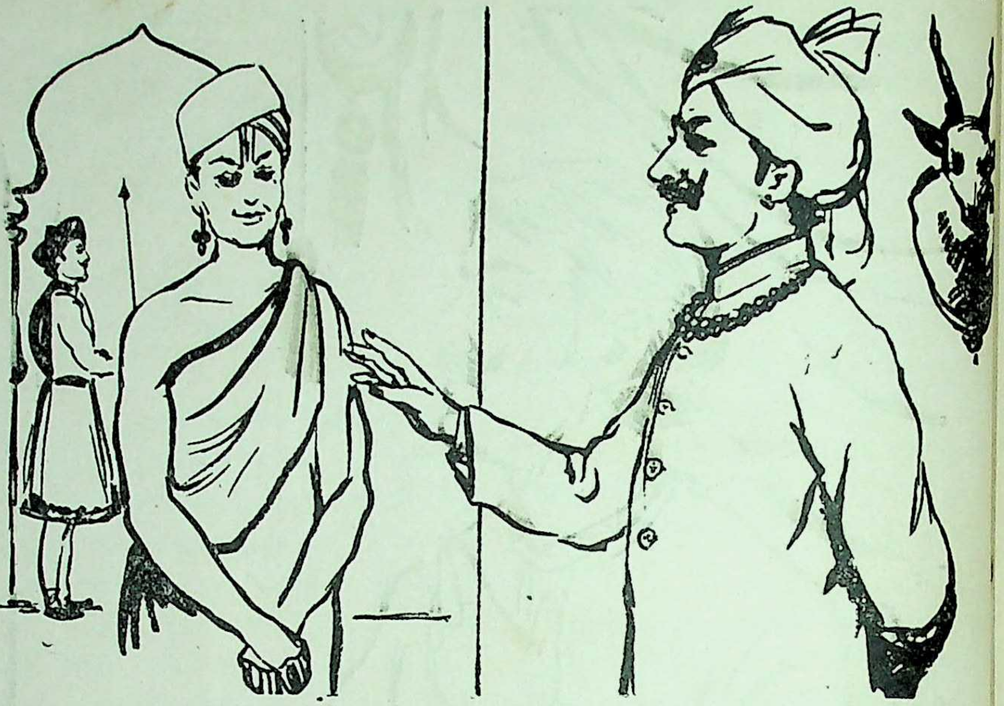

'पंडितजी, तुम ठीक कहते हो। मानव सब एक-से, मनहूस कोई नहीं। जाओ घर।'

महाराज ने पंडितजी से कहा,—'लोग कहते हैं कि आप बहुत मनहूस हैं।'

पंडितजी बेचारे सन्नाटे में आ गए। दबी जबान से बोले,—'महाराज, मैं समझा नहीं।'

महाराज ने कहा—'लोग कहते हैं कि बड़े भोर आपका कोई दर्शन करले, तो उसे दिन-भर खाने को नहीं मिलता। मैंने पहले इसे नहीं माना था, पर, आज मेरे ऊपर ही जैसी गुजरी है, उससे आपका मनहूसपन साबित हो गया।'

पंडितजी ने सिर नीचा कर लिया। महाराज कहते गए—'ऐसे मनहूस का दतिया में रहना बिलकुल हानिकारक है। आपको दतिया राज्य से निकाला जाता है। कल दिन में डेरा-डंगर लेकर चले जाइए।

अब पंडितजी ने सिर उठाया और बोले,—'महाराज, मैं कुछ विनती कर सकता हूं?'

'जो कहना चाहो, कहलो,' अनुमति मिली।

पंडितजी ने हाथ जोड़कर कहा,—'मेरा अपराध क्षमा किया जाय, तो कहूं?'

'कहो, मै पहले ही तुम्हें भरोसा दे चुका हूं,–. महाराज ने पंडितजी को आश्वासन दिया।

पंडितजी ने वैसे ही हाथ जोड़े अपनी बात प्रस्तुत की—'महाराज का कहना उचित है कि मैं मनहूस हूं, क्योंकि श्रीमान् ने आज प्रातःकाल सबसे पहले मेरा मुंह देखा था, इस कारण आपको शेर नहीं मिला, भूखे रहना पड़ा, आप हाथ-मुंह ही धो पाए। परंतु, श्रीमान् का सबसे पहले दर्शन करने पर मुझे तो देश-निकाला मिल रहा है। मैं पूछना चाहता हूं कि ज्याद बड़ा मनहूस कौन है—मैं या आप?

महाराज सुनकर दंग रह गए। फिर एक क्षण बाद खिलखिलाकर हंस पड़े। बोले,—'पंडितजी, तुम ठीक कहते हो मानव सब एक-से मनहूस कोई नहीं। जाओ घर।'

पंडितजी बच गए।

पैसा बचाने की नयी योजना—इनामी बांड

आगामी १ अप्रैल से इनामी बांडों की बिक्री शुरू हो रही है। वास्तव में यह जनता के लिए पैसा बचाने की एक नयी और बहुत आकर्षक योजना का समारम्भ है। यू तो हमारे देश में एक बार पहले भी यानी दूसरे महायुद्ध के दौरान दो वर्षों के लिए इनामी बांडों की योजना चलाई जा चुकी है, लेकिन इनाम की राशि और इनकी संख्या तथा जीतने के अवसर कम होने के कारण उस समय यह अधिक लोकप्रिय न हो सकी। वैसे अब इनामी बांड शुरू करनेवाला भारत तीसरा देश है। ब्रिटेन और फ्रांस में भी इस तरह के बांड बिकते हैं।

वर्तमान इनामी बांड योजना में वे सब कमियाँ दूर कर दी गयी हैं, जो पहले इसमें थीं। ये बांड १०० रुपये और ५ रुपये के वीयरर बांडों के रूप में जारी किए जाएंगे। इन पर कोई सूद नहीं दिया जाएगा, परंतु प्रति वर्ष हर तिमाही यानी १ जून, १ सितंबर, १ दिसम्बर, और १ मार्च, को इनाम देने के लिए पर्चियां उठायी जाएँगी। हर तिमाही पर १०० रुपये के बांडों की हर सीरीज पर कुल ९२ हजार रुपए के ४० इनाम और ५ रुपए की हर सीरीज पर कुल ४६ हजार रुपए के २७८ इनाम दिये जायेंगे। १०० रुपये के बांडों की प्रत्येक सीरीज में पहला इनाम २५,००० रुपए का और ५ रुपए के बांडों की सीरीज का पहला इनाम ७,५०० रुपए का होगा। ये इनाम ५ वर्ष तक हर तिमाही में दिये जाएंगे। उदाहरणार्थ, अगले तीन महीनों में खरीदे गये बांड पर इनाम जीतने के १९ अवसर मिलेंगे। साथ ही उस बांड पर भी अगली बार इनाम मिल सकता है, जिस पर पहले एक बार इनाम मिल चुका है। जिस महीने में बांड खरीदा जाएगा, उसके बाद दो कलेंडर महीने और पूरे होने पर प्रत्येक बिका हुआ बांड, इनाम के लिए होनेवाली हर लाटरी में शामिल किया जाएगा। इन बांडों के इनामों पर आय-कर नहीं लगेगा। ५ साल पूरे होने पर यानी १ अप्रेल, १९६५ को या इसके बाद बांड खरीदनेवाले को इसका मूल्य लौटा दिया जाएगा। इस पर व्याज नहीं मिलेगा, क्योंकि सारा व्याज जो ३॥ प्रतिशत बैठता है, इनाम के रूप में दिया जा चुका होगा।

इनामी बांड खरीदने के लिए कुछ अधिक नहीं करना पड़ेगा, जहाँ भी ये बांड मिलते होंगे, वहां नकद रुपया देकर इन्हें फौरन खरीदा जा सकेगा। बांड पर नाम नहीं लिखा जाएगा, इसलिए जिसके पास ये बांड होगा, वही इसका मालिक माना जाएगा। जिसके पास बांड होगा, उसी को इनाम और मूलधन दिया जाएगा। इसी प्रकार नष्ट या खोए हुए बांडों के लिए कोई दावा नहीं किया जा सकेगा। ये बांड कितनी भी राशि के खरीदे जा सकेंगे। ५ वर्ष से पहले बांड का मूल्य नहीं लौटाया जाएगा।

देश का धन देश के विकास के लिए

देशवासियों के अनुरोध पर ही यह इनामी बांडों की योजना शुरू की जा रही है, इसलिए यह जनता की ही योजना है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि जनता का पैसा देश के विकास की योजनाओं के काम आएगा। इनाम जीतनेवालों को सारी एकत्रित राशि का व्याज इनाम के रूप में मिल ही जायगा और यदि इनाम नहीं मिलता, तो भी बांड का मूल्य खरीदार को मिल ही जायगा। हर बांड का मूल्य १ अप्रैल, १९६५ को या बाद में ५ साल पूरे होने पर खरीदार को लौटा दिया जायगा।

तिमाहीं लाटरियाँ भारत सरकार की देख-रेख में निकाली जाएंगी और पहली लाटरी १ सितम्बर, १९६० को निकलेगी। इनाम पानेवाले बांडों का ब्यौरा भारत के गजट में और अखबारों में प्रकाशित हुआ करेगा।

इस योजना का उद्घाटन वित्त मंत्री, श्री मोरारजी देसाई, दिल्ली के जनरल पोस्ट ऑफिस में १ अप्रेल, १९६० को करेंगे।

ग्राम सड़कों के ५०,००० रुपए स्वीकृत

उज्जैन जिले में १४ ग्राम सड़कों के निर्माण के लिये शासन ने ५०,००० रुपए की एक राशि स्वीकृत की है। जिले की बडनगर, तराना, खाचरौद तथा उज्जैन तहसीलों में शीघ्र ही इन सड़कों पर कार्य आरम्भ किया जायगा। बडनगर, तराना और खाचरौद तहसीलों में से प्रत्येक में ३-३ सड़कें तथा शेष ५ सड़कें उज्जैन तहसील में बनाई जायगी। इनमें से ३ सड़कें, जो पंथ पिपलाई माटीसुडा और नयाखेडा ग्रामों में बनाई जानेवाली हैं, कान्क्रीट की रहेंगी।

क्या आप जानते हैं ?

(१) बीसवीं सदी के मध्य से भारत में नये-नये उद्योग खोले जाने लगे थे।

(२) देश में जितना उत्पादन है उसका केवल १० प्रतिशत उत्पादन संगठित उद्योग क्षेत्र में होता है, फिर भी हमारे उद्योग कई मानों में यूरोप के उद्योगों के मुकाबले के हैं।

(३) सूती कपड़ा मिलों का इतिहास सौ साल से भी अधिक पुराना है। जूट, चीनी, कागज, सीमेंट और लोहा तथा सीमेंट उद्योगों ने भी काफी, प्रगति की है।

(४) यह ऐतिहासिक तथ्य रहा है कि जैसे-जैसे देश की अर्थ-व्यवस्था उद्योग बहुल होती जाती है वैसे-वैसे पूंजीगत उद्योग के अनुपात में उपभोक्ता वस्तु-उद्योग का विकास घटता जाता है।

(५) सन् १८४० और १९६० के बीच में पूंजीगत उद्योग के विकास और उपभोक्ता वस्तु उद्योग के विकास में बहुत विषमता आ गई है। जापान और जर्मनी में पूंजीगत उद्योगों के विकास की अपेक्षा उपभोक्ता वस्तु उद्योगों का विकास तेजी से घटा, जबकि ब्रिटेन, फ्रांस, बेल्जियम, आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका में उपभोक्ता वस्तु उद्योग का विकास धीमी गति से कम हुआ और अमेरिका, कनाड़ा, अर्जेंटाईना और डेनमार्क में तो बहुत ही धीमी गति से घटा।

(६) भारत में १९४८ से १९५६ के आंकड़े के अनुसार यह पता चला है कि इन वर्षों में उपभोक्ता वस्तु उद्योग का विकास पूंजीगत उद्योगों की अपेक्षा बहुत तेजी से कम हुआ।

(७) इन दोनों उद्योगों के विकास के अनुपात में इस विषमता का महत्त्व यह है कि यह इस बात का परिचायक है कि देश पूंजीगत उद्योगों के महत्त्व को समझ गया है। यह ठीक है कि शुरू में पूंजीगत उद्योग से एकदम फायदा नहीं होता, किन्तु आगे चलकर इन्हीं के बदौलत उपभोक्ता वस्तु का उत्पादन दुगुना-चौगुना होने लगता है और इससे रहन-सहन का स्तर ऊंचा होने में काफी सहायता मिलती है।

मध्यप्रदेश का तीव्र औद्योगिक विकास

डॉ॰ काटजू द्वारा राज्य मण्डल से यथार्थवादी योजना के निर्माण का आग्रह

राज्य के मुख्यमंत्री डाक्टर कैलासनाथ काटजू ने सचिवालय में, मध्यप्रदेश उद्योग मण्डल और खनिज साधन की प्रथम बैठक का उद्‌घाटन किया। राज्य के राजस्व मंत्री श्री बी. ए. मण्डलोई, वन और नैसर्गिक साधन मन्त्री श्री एस. एन. शुक्ल भी इस अवसर पर उपस्थित थे और उन्होंने इस बैठक में भाषण दिए।

इस अवसर पर मुख्य मंत्रीजी ने मण्डल को सम्बोधित करते हुए कहा कि राज्य के औद्योगिक तथा खनिज साधनों के पूर्णतम् उपयोग के सम्बन्ध में सरकार को परामर्श देने के लिए एक उच्च-अधिकार प्राप्त मण्डल की आवश्यकता बहुत समय से अनुभव की गई है। यह स्पष्ट है कि यदि राज्य को अपने साधनों का पूर्णतम उपयोग करना है तो इस सम्बन्ध में एक सुविचारित तथा संयुक्त प्रयत्न आवश्यक है। राज्य ने औद्योगिक विकास की सम्भावनाओं की समीक्षा करने के लिए अभी तक अनेक समितियां गठित की हैं। अनेक सर्वेक्षणों का आयोजन भी किया गया है। राज्य तथा क्षेत्रीय आधार पर दो सर्वेक्षण (तान्त्रिक, आर्थिक तथा वीकन के सर्वेक्षण) किये जा चुके हैं और उनके प्रतिवेदन छप रहे हैं। परन्तु उसके पास कोई ऐसा शक्तिशाली संगठन नहीं था जो देश में चल रहे विकास की प्रवत्तियों से निरन्तर सम्पर्क रख सके, विकास की सम्भावनाओं को सर्वाधिक प्रभावकारी विधि से आंक सके, निश्चित् योजनाएं तैयार करके सरकार तथा गैर-सरकारी उद्योगतपतियों के उपक्रमों को इस राज्य की ओर आर्कषित कर सके।

यह स्पष्ट है कि एक के बाद दूसरी पंचवर्षीय योजनाओं के कारण औद्योगीकरण पर निरन्तर अधिकाधिक जोर दिया जायगा। इस समय चिह्न दिखाई दे रहे हैं कि सार्वजनिक क्षेत्र में बड़े उद्योगों पर काफी खर्च होगा। विकास कार्यक्रम के इस बड़े आकार तथा विस्तार के कारण यह आवश्यक होगा कि राज्य स्तर पर योजना-निर्माण की विधि और अधिक तीव्र तथा सुदृढ़ हो जाए। विकेन्द्रीकृत योजना-निर्माण की अपनी नीति के फलस्वरूप योजना-आयोग को राज्यों से ऐसी योजनाओं की आवश्यकता होगी जो सुसम्बद्ध हो तथा जिनके कार्यान्विय की रूपरेखा पूर्ण रूप से निश्चित हो। सार्वजनिक विनियोजन निधियों में से मध्यप्रदेश को उचित हिस्से के निर्धारण तथा निजी क्षेत्र की कार्यवाहियों में निश्चित् किये गये लक्ष्यों को पूरा करने की सामर्थ्य में राज्य के योजना-प्रयास का प्रभावशील होना एक महत्वपूर्ण तथ्य होगा।

मध्यप्रदेश का विकास

राज्यों की अर्थ व्यवस्था के अधिकतम विकास को सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक होगा कि प्रत्येक पंचवर्षीय योजना समस्त साधनों के यथार्थ ज्ञान, सभी महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में पूर्णतम विकास की सम्भावनाओं तथा उत्पादन के वर्त्तमान साधनों के क्षमतानुसार सम्बद्ध विकास के लिए परिवहन, यातायात, श्रम, तान्त्रिक कुशलताओं और पूंजी की सम्बद्ध आवश्यकताओं पर आधारित हो। स्थानीय परिस्थितियों और आवश्यकताओं के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में विनियोजन के प्राथमिकता-क्रम निश्चित करने के लिए ऐसा व्यापक तथा वस्तु-स्थिति पर आधारित योजना कार्यक्रम आवश्यक है। यह भी आवश्यक है कि इस योजना-कार्यक्रम पर आधारित राज्य के लिए एक योजना की रूपरेखा तैयार की जाए जिससे विकास, उत्पादन और रोजगार के उच्चतम स्तर की प्राप्ति की व्यवस्था हो सके। इस प्रकार की योजना से विस्तृत विभागीय योजनाओं के मार्ग-दर्शन के लिए एक वैज्ञानिक आधार सुलभ होगा। राज्यों की योजनाओं को अन्तिम स्वरूप देने के पहले केन्द्रीय योजना-आयोग से चर्चा के लिए भी यह आवश्यक होगा।

संयुक्त प्रयास

इसी उद्देश्य को दृष्टि में रखकर यह मण्डल गठित किया गया है और इस प्रकार राज्य की योजना-व्यवस्था में एक बड़ी कमी दूर हो गई है। मैं समझता हूं कि इस संगठन के निर्माण के लिए यह समय बहुत उपयुक्त है। इस समय हम दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्तिम चरण में और तीसरी योजना के प्रवेश-द्वार पर हैं। तीसरी योजना के कार्यक्रम पर विभिन्न स्तरों पर चर्चा हो रही है और शीघ्र ही योजना आयोग विभिन्न राज्यों के साथ इस योजना के विस्तृत विवरण के सम्बन्ध में चर्चा करेगा। अतः इसी समय हमें अभी तक प्राप्त सफलताओं की समीक्षा करना तथा दूसरी योजना में जो कार्य किया जा सकता है उसके लिए एक यथार्थवादी योजना तैयार करना आवश्यक होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस प्रश्न पर मण्डल सर्वप्रथम ध्यान देगा तथा उसका परामर्श राज्य के लिए बहुत मूल्यवान होगा।

इस मण्डल के गठन में, विभिन्न क्षेत्रों अर्थात् सरकारी संगठनों, निजी उद्योग तथा लोकमत को एक साथ लाने का प्रयत्न किया गया है, क्योंकि इन्हीं क्षेत्रों के संयुक्त प्रयत्न पर राज्य की विकासगति अन्त में निर्भर रहेगी। मुझे विश्वास है कि इन सब क्षेत्रों को अपने संयुक्त प्रयत्नों के लिए समान उद्देश्य सुलभ हो जायगा।

प्रारम्भिक कठिनाइयाँ

मैं अनुभव करता हूं कि इस समय यद्यपि राज्य के साधनों की क्षमतायें बहुत विशाल हैं, फिर भी उसके मार्ग में अनेक बाधाएं हैं। निजी उद्योगपतियों को इस राज्य में विकास का उपक्रम करने के हेतु इनकी समीक्षा आवश्यक है। उद्योगों, विशेषकर बड़े उद्योगों के लिए जितनी अधिक मात्रा में पानी आवश्यक है, वह हमेशा प्राप्त नहीं होता। अभी तक किये गये प्रशंसनीय प्रयत्नों के बावजूद बिजली की पूर्ति सभी जगह अपर्याप्त है। इन प्रारम्भिक कठिनाइयों को, जो अधिकांशतः हमारे राज्य के अपर्याप्त साधनों के कारण उत्पन्न होती हैं, दूर करने के लिए इन क्षेत्रों में बहुत ही साहसपूर्ण नियोजन आवश्यक होगा।

विशाल साधन

वर्तमान कारखानों के अतिरिक्त, सार्वजनिक क्षेत्र में भिलाई इस्पात कारखाना, हैवी इलैक्ट्रिकल्स, सिक्युरिटी पेपर मिल इत्यादि के समान नवीन कारखानों की स्थापना से राज्य

(शेष पृष्ठ २९ पर)

तीसरी योजना और समाज-कल्याण

—श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख

"समाज-कल्याण" के माने किसी व्यक्ति विशेष की भलाई नहीं है, बल्कि पूरे समुदाय की भलाई करना है। सारे समाज का उत्थान ही इसका मुख्य उद्देश्य है। किन्तु अभी पहले इस बात की जरूरत है कि सामाजिक या आर्थिक रूप से पिछड़े या शारीरिक रूप से अशक्त या अविकसित मस्तिष्कवालों के लिए उन सभी नागरिक सुविधाओं की व्यवस्था की जाए, जो या तो उन्हें मिल नहीं पाती है या जिनका वे उपभोग नहीं कर पाते हैं।

समाज-कल्याण का काम गैर-सरकारी संस्थाएं और समाजसेवी कार्यकर्ता करते आये हैं। पहली योजना में सरकार ने इस काम को अपने हाथ में लेने का निर्णय किया और इसे योजना में शामिल कर दिया गया।

समाज-सेवा के कामों में एकरूपता नहीं थी और इसके लिए कुछ सरकारी तथा कुछ गैर-सरकारी संस्थाओं को अलग-अलग सहायता दी जाती थी। केन्द्रीय सरकार ने केन्द्रीय समाज-कल्याण मंडल की स्थापना की, जो स्त्रियों, बच्चों तथा अशक्तों की भलाई के लिए जिम्मेदार था। कुछ कल्याण-कार्य विभिन्न मंत्रालयों को सौंपे गये। इसी प्रकार राज्य सरकारों ने अपने यहां भी समाज-कल्याण मंत्रालयों तथा विभागों की स्थापना की, किन्तु इनकी स्थापना बहुत व्यवस्थित रूप से नहीं की जा सकी। इसके बाद इन राज्यों ने केन्द्रीय समाज-कल्याण मंडल के कार्यक्रम को चलाने के लिए समाज-कल्याण सलाहकार मंडलों की स्थापना की।

ये सब काम पहली योजना के बाद के दो वर्षों में किये गये। दूसरी योजना की अवधि में इस क्षेत्र में कई तरह के प्रयोग किये गये हैं। पहले लोगों को यह भी स्पष्ट न था कि सामान्य समाज-सेवा तथा समाज-कल्याण कार्य में क्या अंतर है।

दूसरी योजना में समाज-कल्याण

दूसरी योजना में समाज-कल्याण के लिए योजना तैयार करने तथा उसके लिए धन की व्यवस्था करने में कई कमियां रह गईं, जैसे कि पहली योजना की तरह दूसरी योजना में भी राज्य सरकारों ने समाज-कल्याण के कई काम शामिल नहीं किये। इसके अलावा इस मद के लिए जो रुपया दिया गया, वह विभिन्न विभागों के बजट में शामिल किया गया था। इसलिए यह पता लगाना कठिन था कि इसके लिए कुल कितना रुपया रखा गया है। आसाम, उड़ीसा, आदि में कोई ऐसा विभाग नहीं था, जिसे समाज-कल्याण की योजनाएं बनाने, उनका निरीक्षण करने या विभिन्न योजनाओं में समन्वय लाने का काम सौंपा गया हो। कुछ राज्यों को तो यह भी नहीं मालूम था कि इस मद में किस काम के लिए कितने रुपये की व्यवस्था की गई है और इस प्रकार पूरे धन का उपयोग नहीं हो पाता था।

आवश्यकता का अन्दाज

योजना को चलाने के लिए किस तरह के कितने कर्मचारियों की जरूरत पड़ेगी, इस सम्बंध में भी आंकड़े नहीं जमा किये गये थे और न ही इन्हें ट्रेनिंग देने की कोई सुनियोजित व्यवस्था थी। कर्मचारियों की ट्रेनिंग के भिन्न-भिन्न पाठ्यक्रम और अलग डिप्लोमा तथा डिग्रियां थीं। आंकड़े जमा करने की या सर्वेक्षण या अनुसंधान की कोई व्यवस्था नहीं थी।

अधिकांश राज्यों में समाज सम्बंधी कानूनों को या ऐसे ही नये कानून को लागू करने के लिए कोई संगठन नहीं था। वहां पिछड़े क्षेत्रो की आवश्यकताओं पर भी विशेष जोर नहीं दिया गया था।

इन त्रुटियों को देखते हुए यह जरूरी है कि तीसरी योजना बनाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि उसमें ये त्रुटियां न रहने पाएं। यदि हम यह कर पायें तो समझना चाहिए कि बहुत कुछ कर लिया है। जरूरी यह है कि योजना बनाते समय यह स्पष्ट होना चाहिए कि कौनसा काम किसको सौंपा जाए तथा विभिन्न संस्थाओं में समन्वय तो हो, किन्तु ऐसा न हो कि एक संस्था के काम को दूसरी संस्था भी करे।

सबसे अच्छा रास्ता यह है कि पास किये गये सामाजिक कानूनों को लागू करने, उनकी समीक्षा करने तथा समय-समय में उनमें सुधार करने का सुझाव देने का काम सरकारी संस्था को सौंपा जाए तथा अन्य क्षेत्रों का सारा काम गैर-सरकारी संस्थाओं को सौंपा जाए, जो सरकार के सहयोग तथा उसकी देखरेख में काम करें। समाज-कल्याण मंडल की स्थापना इसी उद्देश्य से की गई थी। किन्तु तीसरी योजना में इस दिशा में और भी तेजी से प्रगति की जा सकती है।

मुख्य उद्देश्य

तीसरी योजना में समाज-कल्याण योजनाओं का मूल उद्देश्य तो वही रहेगा, जो पहली दो योजनाओं में था, किन्तु पुराने अनुभवों के आधार पर उसकी नीति तथा कार्यक्रमों में अवश्य ही परिवर्तन किया जाएगा। इसका मुख्य उद्देश्य वर्तमान सेवाओं का एकीकरण, सभी संस्थाओं के काम में समन्वय और कल्याण-सेवा के विभिन्न कामों को "समाज-कल्याण" के अन्तर्गत लाना होगा।

"समाज कल्याण" कार्यों के लिए सीमित रकम है, इसलिए आवश्यकतानुसार कामों को प्राथमिकता दी गई है। बच्चों की आवश्यकता को प्राथमिकता दी गई है, क्योंकि वे हमारे

राष्ट्र के भावी नागरिक हैं। बच्चों की स्कूल के पहले की शिक्षा, दोपहर का खाना, स्वास्थ्य सम्बंधी देख-भाल, शारीरिक या मानसिक रूप से दुर्बल या अशक्त, अपराधी प्रवृत्ति या उपेक्षित बच्चों को सुधारने और काम दिलाने आदि का काम "समाज-कल्याण" के अंतर्गत लाने का प्रस्ताव है।

स्त्रियों की भलाई

दूसरा स्थान स्त्रियों की आवश्यकताओं को दिया गया। खासतौर-से उनकी शिक्षा और रोजगार को, जिनसे उन्हें समाज में उचित स्थान मिलता है। स्त्रियों को ऐसे काम देने की व्यवस्था की गई है, जिनसे परिवार की आय बढ़े। इसके अलावा, उन्हें कुछ मान्यता प्राप्त परीक्षाओं के लिये तैयार करना, आवास बनाना, गरीब स्त्रियों के परिवारों के लिए सस्ते मकान देना और उन्हें कानूनी सहायता पहुंचाना आदि के काम सुझाये गये हैं।

पहली पंचवर्षीय योजना में कुछ कल्याण-विस्तार योजनाएं शुरू की गई थीं। इनके अधीन गांवों में प्रसूति सम्बंधी देख-भाल की जाती है और दस्तकारियों की शिक्षा, बच्चों के लिए बाल-वाड़ियां आदि का प्रबंध किया जाता है। तीसरी योजना में इस काम को, सामुदायिक विकास कार्य के साथ सारे देश में फैलाया जाएगा।

स्त्रियों और बच्चों की रक्षा

"समाज-रक्षा" यानी स्त्रियों और बच्चों को पतित और अपराधी जीवन और व्यक्तियों के चंगुल से बचाने के प्रयत्न भी भविष्य में और बढ़ाये जाएंगे। स्त्रियों के अनैतिक व्यापार को रोकनेवाला कानून इसी दिशा में एक कदम है। जेलों में सुधार, भीख मांगने को रोकने और कैदी स्त्रियों के बच्चों की अच्छी देखभाल करने की योजनाएं आगे बढ़ाने का विचार है।

अंधों, बहरों, गूंगों, विकलांगों, कमजोर दिमागवालों, बूढ़ों और अशक्तों को तीसरी योजना में पहली दो योजनाओं से अधिक राहत और सहायता दी जाएगी।

छात्र-वर्ग के अलावा दूसरे युवकों के लिए आवास, नेतृत्व शिक्षा, दस्तकारियों और खेती-बाड़ी की शिक्षा तथा गंदी बस्तियों के कल्याण-कार्यों को भी योजना में पहली बार स्थान मिलेगा। गंदी बस्तियों में बच्चों की देख-भाल और प्रसूति की अच्छी व्यवस्था की जाएगी।

कर्मचारियों की ट्रेनिंग

हर तरह के समाज-कल्याण कार्य के लिए सीखे हुए कर्मचारियों की आवश्यकता है। इसलिए इनकी शिक्षा पर उचित ध्यान दिया जाएगा। सर्वत्र कर्मचारियों को अधिक उपयोगी और ऊंचे दर्जे की ट्रेनिंग देने की आवश्यकता अनुभव की गई है। इनकी शिक्षा के सम्बंध में अनुसंधान करने का भी सुझाव दिया गया है।

समाजसेवी संस्थाओं को सहायता देने के सर्वसुलभ और सरल नियम बनाने की बहुत जरूरत है। इस बारे में काफी समय से विचार किया जा रहा है। इसी प्रकार एक ऐसे संगठन की भी जरूरत है, जो स्थान-स्थान पर इन संस्थाओं को आवश्यक सलाह दे सके। ढंग से काम करने से साधनों का समुचित उपयोग होगा और काम भी तेजी से होगा।

गैर-सरकारी सेवा संस्थाओं के काम की जांच करनेवाले अध्ययन-दल ने यह सुझाव दिया है कि इन संस्थाओं को भी उसी तरीके से सहायता दी जाए, जिस तरीके से राज्य सरकारें स्कूल-कालेजों आदि को सहायता देती हैं। यह बहुत अच्छा सुझाव है और इस पर जल्दी से जल्दी अमल होना चाहिए। इसके साथ ही स्थान-स्थान पर सलाह देनेवाले संगठन खड़े कर देने से समाजसेवी संस्थाएं निस्संदेह बहुत अच्छा काम कर सकेंगी।

सारांश यह है कि दूसरी योजना के अंत तक समाजसेवी संस्थाएं अपने पैरों पर खड़ी हो जाएंगी और तीसरी योजना का चाहे जो आकार हो, उस पर अमल करने में इन संस्थाओं का बड़ा हाथ होगा। हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि ये अवश्य अपना उत्तरदायित्व निबाहेंगी।

गीत

अपना प्राण महान् रहेगा,
सबका प्राण महान् रहेगा,
शुभ संकल्पों की छाया में,
बढ़ता ही अभियान रहेगा।

तार-तार झंकृत हो जाए,
स्वर में ही स्वरकार समाए,
वीणा की कल्याणी गत पर,
झूम-झूम मानवता गाए,
सत्यं शिवं सुन्दरं का ही,
मंगल स्वर संधान रहेगा।
अपना प्राण महान् रहेगा॥

निखिल सृष्टि का ज्ञान प्रयोगी,
धरती क्या अंबर उपयोगी।
उत्पादन की सैन्य सजी तो,
क्या अभाव पर विजय न होगी?
सुख-समृद्धि के संवर्द्धन में,
क्रियाशील विज्ञान रहेगा।
अपना प्राण महान् रहेगा॥

श्रम के साथ बुद्धि आएगी,
पायेगी जो भी चाहेगी,
गूंजेगी घर-द्वार बधाई,
गोद सृजन से भर जाएगी,
सुजला सुफला शस्यश्यामला,
का धानी परिधान रहेगा।
अपना प्राण महान् रहेगा॥

मानव का दर्शन उन्नत हो,
जीवन का आसन उन्नत हो,
उन्नत हो कल, कला, कर्म, कृषि,
उन्नति का साधन उन्नत हो,
उन्नति के सावेग चरण से,
ठुकराया व्यवधान रहेगा।
अपना प्राण महान् रहेगा॥

—श्री शांतिस्वरूप 'चाचा'

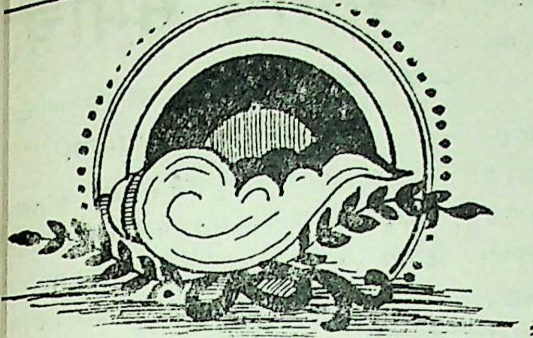

दक्षिण की पुराण कथाएं

—श्री आर० एन० दांडेकर

किसी समय ऐसा समझा जाता था कि आध्यात्मिक दृष्टि से दक्षिण भारत पर उत्तर का हुत ऋण है। परन्तु भारत की संस्कृति के इतिस के सूक्ष्म अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि र्यों ने भारत में आकर यहां पर अपनी जितनी प डाली, उससे कहीं अधिक छाप आर्यों पर रत ने डाली।

धर्म का ही उदाहरण लीजिए। आर्यों के धर्म साधारणतया ब्राह्मण धर्म या वैदिक धर्म कहा ता है। इस धर्म का पूर्ण विकास संहिता, ब्राह्मण र उपनिषद् कालों में हुआ। संहिताओं प्रकृति की शक्तियों को देवरूप दिया गया, ह्मण ग्रंथों के समय में कर्मकांड आया और पनिषदों में ब्रह्म या अध्यात्म का रहस्य बताया था। परन्तु साधारण लोगों का काम फिर भी र्म के इस रूप से नहीं चल सकता था।

यद्यपि आर्यों की विजय के बाद ब्राह्मण धर्म त्तर भारत पर छा गया, पर शीघ्र ही इसका भाव घटने लगा। प्रमुख उपनिषदों के बाद के मय में ही उत्तर भारत में नए धार्मिक पंथ शुरू ी गए। वैसे ये पंथ पहले ही से चले आते थे। पर विजयी आर्यों के धर्म ने इन्हें दबा दिया था। वास्तव में आर्यों के धर्म को ही नया कहना चाहिए। पर वैदिक धर्म का बोलबाला अधिक समय तक न रहा। उपनिषद् काल के बाद वेद-विरोधी बौद्ध और जैन धर्मों का उदय हुआ।

आज के प्रचलित हिन्दू धर्म का उदय भी वैदिक धर्म की प्रतिकृपा से हुआ। इस प्रतिकृपा के प्रवर्तकों ने यह देखा कि वरुण और इन्द्र आदि वैदिक देवता, वैदिक कर्मकांड और उपनिषदों की गुह्य शिक्षाओं में सर्व-साधारण की रुचि नहीं है और लोग फिर से वेद से पहले के धर्मों की ओर झुकने लगे हैं। वे यह भी अच्छी तरह जानते थे कि कुछ प्रभावशाली वर्गों की अभी भी वेदों में परम आस्था है। अतः खुले रूप से वेद-विरोधी मत को सफलता मिलनी सम्भव नहीं। अतः उन्होंने उस समय जनता में प्रचलित धार्मिक विश्वासों और पूजा-पाठ आदि की प्रमुख बातों को लेकर एक नया रूप दिया, जिसे हिन्दू धर्म कह सकते हैं। इस हिंदू धर्म ने वेदों को प्रामाण्य माना। यद्यपि यह मान्यता नाम ही की थी, परन्तु इस प्रकार जनता में प्रचलित अनेक प्रकार के धार्मिक विश्वासों और अनुष्ठानों का एकीकरण हुआ।

मूल ब्राह्मण धर्म के उन कट्टर अनुयाइयों ने भी, जो वेद-विरोधी या अवैदिक धर्मों के प्रभाव से प्राणपण से लड़ रहे थे, अन्त में यह देखा कि इस नए लोकप्रिय धर्म के रूप में ही वे पुराने आर्य धर्म और संस्कृति की बहुत-सी बातों को बनाए रख सकते हैं। यदि आज के पुराण और धार्मिक कथाओं का विश्लेषण किया जाए, तो इसमें बहुत से ऐसे तत्त्व मिलेंगे, जो आर्य या वेद धर्म में नहीं थे।

संभवतः हिन्दू धर्म को दक्षिण भारत की सबसे बड़ी देन भगवान शिव हैं; दक्षिण भारत का आदि धर्म एक प्रकार का शमन या पशुबलि का धर्म था। आदि या प्राक् द्राविण भाषा में "शिव" का अर्थ "लाल" होता है। इसीसे शायद लाल रक्त से अर्चित देवता को शिव कहा गया। इस देवता के प्रतीक रक्तरंजित अनगढ़ पत्थर की मूर्ति लिंग तथा नंदी या सांड होते थे। इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि आर्यों के आगमन से पहले देश के अधिकांश भागों में किसी न किसी रूप में यहां आदि देव "शिव" की विभिन्न नामों से पूजा का प्रचार हो गया था। दक्षिण में इस देवता को "शिव" कहते थे, सिंधु घाटी में पशुपति, वाहीकों में भाव और पूरब में, "शर्व" कहते थे। शिव-पूजा के कुछ विधान वैदिक धर्म के लिए गर्हित थे, परन्तु लोकमत के सामने वैदिकों को झुकना पड़ा और रुद्र के नाम से शिव को अपने देवताओं की मंडली में शामिल करना पड़ा।

वैदिक कथाओं से स्पष्ट है कि वैदिक ऋषियों ने बहुत दिन तक शिव को अपने देवताओं से अलग रखने का प्रयत्न किया। पर प्रचलित हिन्दू धर्म के प्रचार के साथ शिव को अन्ततः प्रमुख देवताओं में स्थान मिल ही गया और "शिव" का अर्थ बदलकर शुभ हो गया। शैव धर्म को पूजा, बलि योग आदि मूलतः अवैदिक क्रियाओं को भी हिन्दू धर्म ने ग्रहण किया और शिव तथा उनके गणों और सम्बंधी देवताओं को लेकर अनेक पुराण रचे गए।

मोटे तौर पर यह कह सकते हैं कि १,००० ई. पू. में दक्षिण भारत का आर्यीकरण शुरू हुआ और अशोक के समय तक यहां आर्य संस्कृति पूरी तरह प्रतिष्ठित हो गई थी। पुराणों में अगस्त्य ऋषि की कथाएं इसी ऐतिहासिक क्रिया को दर्शाती हैं। तमिल साहित्य में भी अगस्त्य ऋषि सम्बन्धी बहुत-सी कथाएं हैं। एक तमिल कथा है कि भगवान् शिव और पार्वती के विवाह के समय समस्त देवता और ऋषि-मुनि हिमालय पर इकट्ठा हुए। इन लोगों के भार से पृथ्वी उत्तर की ओर झुक गई। इस पर देवताओं और ऋषियों ने अगस्त्य ऋषि को दक्षिण भेजा, जिससे पृथ्वी का सन्तुलन ठीक हो जाए। दक्षिण जाने से पहले अगस्त्य ऋषि गंगाजी के पास गए और उनसे "कावेरी" को मांग लिया। फिर उन्होंने लोपामुद्रा को विवाहा और जमदग्नि ऋषि के पुत्र तृणधूमाग्नि को अपना शिष्य बनाया। इनके अलावा उन्होंने द्वारका के वृष्णि वंश के १८ व्यक्तियों और १८ करोड़ वेलिर और अरुवालरों को भी अपने साथ दक्षिण जाने को राजी कर लिया। इन लोगों के साथ अगस्त्य ऋषि विंध्याचल को पार करके दक्षिण आए और विस्तीर्ण जंगलों को काटकर, कावेरी की सहायता से बड़ी-बड़ी बस्तियां बसाईं। अन्त में उन्होंने अपना आश्रम पश्चिमी घाट के दक्षिण मार्ग में पोटियल पहाड़ी पर बनाया।

एक कथा के अनुसार अगस्त्य के शिष्य तृणधूमाग्नि को सबसे प्राचीन तमिल व्याकरण तोलकाप्पियम् का रचयिता माना जाता है। इस समय तक तृणधूमाग्नि का नाम तोलकाप्पियर पड़ गया था। एक अन्य कथा में अगस्त्य ऋषि को प्रथम पांड्य शासक का कुलगुरु बताया गया है। ये पांड्य शासक अपने को भगवान शिव का वंशज कहते थे। इन तमिल कथाओं से भी आर्यों के दक्षिण प्रवेश की ऐतिहासिकता की पुष्टि होती है।

दक्षिण भारत में आर्य धर्म उतना नहीं फैला, जितनी उनकी समाज-व्यवस्था खासकर जाति प्रथा। इस प्रक्रिया का दक्षिण में विरोध नहीं हुआ, बल्कि चाव से यह समाज-व्यवस्था अपनाई गई। इसके अलावा आर्य-संस्कृति के फैलाव ने दक्षिण की भाषा और धार्मिक-संस्कृति को नष्ट भी नहीं किया। दोनों ने एक-दूसरे से बहुत लिया और दिया। सम्भवतः द्रविड़ों ने दिया ही अधिक। जैसे शुद्ध, भक्ति दक्षिण भारत में प्रवर्तित हुई। पद्मपुराण के अनुसार, भक्ति की धारा द्रविड़ देश से चली और महाराष्ट्र होती हुई मथुरा पहुंची।

तेवारम् और प्रबन्धम् आदि तमिल सन्तों की रचनाओं और महाभागवत-पुराण में द्रविड़ देश के बहुत से भक्तों की कथाएं हैं। चार देवताओं का विशेष रूप से वर्णन आता है। नीलकंठ, रक्ताभ या रक्तवर्ण-शिव, हलमूसलधारी ताड़-वृक्ष चिह्नित ध्वजावाले श्वेतवर्ण बलदेव, गरुण ध्वज नीलवर्ण-कृष्ण और गजारूढ़ मयूर ध्वजाधारी सुब्रम्हण्य। नक्कीरर ने अपने काव्य में जिस रूप में इन देवताओं का वर्णन किया है, उससे लगता है कि वे इन्हें तमिल देवता मानते थे।

धार्मिक सह-अस्तित्व

दक्षिण भारत में हिन्दू देवताओं की पूजा के साथ-साथ वैदिक कर्मकांड भी होते थे और बौद्धों तथा जैनों को अपने धर्म के पालन की पूर्ण स्वतंत्रता थी। पर वस्तुतः दक्षिण भारत का मूल धर्म ग्राम-देवताओं की पूजा के रूप में जीवित रहा। उत्तर भारत के धार्मिक प्रभाव के होते हुए भी दक्षिण भारत की ८० प्रतिशत जनता अपने आदि-ग्राम-देवताओं को ही पूजती रही।

आज भी दक्षिण भारत के प्रत्येक गांव में ग्राम-देवता का मन्दिर अवश्य मिलेगा। महामारी, अकाल और अन्य ईति भीति से रक्षा के लिए आज भी इन ग्राम-देवताओं की पूजा सामूहिक रूप से की जाती है। इस धर्म का कोई खास दर्शन या कर्मकांड नहीं है, पर अपनी पौराणिक कथाएं अवश्य हैं। इनमें ग्राम-देवताओं के माहात्म्य का वर्णन है।

एक कथा में मदुरा की ग्राम-देवी मीनाक्षियम्मन् का वर्णन है, जिन्होंने दुर्गा का रूप धारण करके एक दुष्ट पांड्य राजा का वध किया। एक अन्य कथा में बताया गया है कि ग्राम-देवी अम्मावरु या अनकम्मा ने एक अंडा दिया, जिससे ब्रह्मा, विष्णु और महेश का जन्म हुआ। इन देवताओं ने बड़े होने पर अम्मावरु की पूजा करना छोड़ दिया। इस पर अम्मावरु ने इनको दंड दिया। इस कथा से ग्राम-देवी और त्रिमूर्ति की खींचतान का पता चलता है।

दक्षिण भारत में सबसे अधिक व्यापक ग्राम-देवी मरिअम्मा हैं। इस देवी की उत्पत्ति के बारे में बहुत-सी कथाएं प्रचलित हैं। एक कथा इस प्रकार है—जमदग्नि ऋषि की पत्नी और परशुराम की माता अपने पतिव्रत के प्रभाव के कारण बिना बर्तन ही के पानी ले जा सकती थीं। उनके गीले वस्त्र बिना किसी चीज पर टंगे हवा में सूखते थे। एक दिन किसी दोष के कारण उनकी यह शक्ति नष्ट हो गई। इस पर जमदग्नि ऋषि बहुत क्रोधित हुए और उन्होंने परशुराम को अपनी माता को जंगल में ले जाकर सिर काट लेने की आज्ञा दी। परशुराम अपनी माता को लेकर जंगल चल दिए। वे वध के स्थान पर पहुंचे ही थे कि एक अछूत स्त्री ऋषि-पत्नी को बचाने के लिए आकर उनसे लिपट गई। परशुराम बहुत घबड़ाए पर अपने पिता की आज्ञा पालन करने के लिए उन्होंने दोनों के सिर काट लिए। पिता ने प्रसन्न होकर पुत्र से वर मांगने को कहा। परशुराम ने माता के फिर से जीवित होने का वर मांगा। जमदग्नि ऋषि ने उन्हें एक बर्तन में कुछ जल और एक बेंत देकर कहा कि माता के सिर को धड़ से लगाकर पानी छिड़कना और यह बेंत छुआ देना। परशुराम ने अपनी माता को जीवित करने की शीघ्रता में अछूत स्त्री का सिर अपनी माता के धड़ पर और माता का उस स्त्री के धड़ पर जोड़ दिया और दोनों को जीवित कर दिया। ब्राह्मण सिर और अछूत शरीरवाली स्त्री मरिअम्मा के नाम से और अछूत सिर और ब्राम्हण शरीरवाली स्त्री येलम्मा के नाम से पूजी जाने लगीं। यह कथा आदिम या मूल भारतीय और वैदिक या ब्राह्मण कथाओं और धर्म-कर्म के मिश्रण का बहुत अच्छा उदाहरण है।

स्थानीय समा

मुख्यमंत्री जी का आगमन

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. कै
काटजू तथा जन-कार्य मंत्री श्री शंकरलाल
दिनांक १५ मार्च १९६० को सायंकाल
ग्वालियर विशेष वायुयान द्वारा पधारे।
महाराजपुरा यान-निलय पर राज्य के
मंत्री श्री श्यामसुन्दर नारायण मुशरान
वरिष्ठ शासकीय अधिकारियों ने आपका
किया।

मुख्यमंत्री डॉ. काटजू एवं जन-का
श्री तिवारी ने पूर्वान्ह में विशेष वायुया
ग्वालियर से भोपाल के लिए प्रस्थान
महाराजपुरा यान-निलय पर उप-कृ
श्री एस. एन. मुशरान तथा वरिष्ठ शासकीय
कारियों ने आपको विदाई दी।

उप-स्वास्थ्य मंत्री श्री मुशरान ग्वालि

मध्यप्रदेश के उप-स्वास्थ्य तथा उप-कृ
श्री श्यामसुन्दर नारायण मुशरान ग्वालियर
आयुर्वेद महाविद्यालय के छात्रों ने आपसे
किया तथा आपने उनकी कठिनाइयों की
जानकारी प्राप्त की। छात्रों द्वारा गत लंबी
से की जा रही हड़ताल उप-मंत्री श्री मुशरा
हुई वार्ता के पश्चात् तुरन्त समाप्त करदी

आपने छात्रों को परामर्श दिया कि वे
से कार्य करें। आयुर्वेद की महत्ता पर
डालते हुए आपने छात्रों से अनुरोध कि
भारतीय परिपाटी को अपनाकर अपने
का पालन योग्य नागरिक के नाते करें।
कहा कि स्वतंत्र भारत में चिकित्सकों का
उज्ज्वल है तथा उन्हें प्राप्त अवसरों का
लाभ उठाना चाहिए। उक्त अवसर पर उ
श्री मुशरान के सम्मान में स्वल्पाहार का
जन भी छात्रों द्वारा किया गया था।

आपने महाविद्यालय के भवन तथा
वर्ती क्षेत्रों का निरीक्षण कर आवश्यकता
जानकारी प्राप्त की तथा सम्बधित अधिका
इस सम्बध में संपर्क कर आवश्यक आदे
तथा छात्रों को उनकी मांगों के निराकरण
उचित शासकीय सहायता का आश्वासन

सहकारिता:

शिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

--श्री शिवरत्न पाराशर

सहकारिता को राष्ट्र के पुनर्निर्माण में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो रहा है। अंत में समाजवादी ढंग के समाज द्वारा सहकारी-स्वराज्य हमारी कल्पना का केन्द्र-बिंदु है। देश के योजना-आयोग एवं राष्ट्रीय विकास परिषद् ने इस संबंध में स्पष्ट दिशा-संकेत दे दिया है।

क्या देशवासियों ने इस प्रकार के अभीष्ट परिवर्तन को समाज में संस्थापन करने के हेतु पूरी तौर पर तैयारी करली है? यह प्रश्न है, जो कभी-कभी सहकारिता आंदोलन में कार्य करनेवाले सहकारी बंधुओं के सामने आ उपस्थित होता है। उत्तर स्पष्ट है।

व्यवहार में सहकारिता कोई नई वस्तु अथवा प्रणाली नहीं है। साधारण बोल-चाल की भाषा में "सहकारिता" का अर्थ, मिल-जुलकर काम करना है। मानव सभ्यता के आरंभ से ही समाज ने सहकारिता के तत्त्व को अपने जीवन में उतारा है। सहकारिता के सिद्धांत इतने मोटे हैं कि उन्हें समझने के लिये किसी बड़ी विद्वत्ता की आवश्यकता नहीं है और न किसी को उन पर मतभेद हो सकता है।

परस्पर सहयोग करना, ईमानदार होना, शोषण न करना, इतनी पूंजी न एकत्रित करना कि दूसरों को थोड़ा या बिल्कुल न मिले, सबके हित में अपना हित समझना, सबसे प्रेम करना, सेवा अपना धर्म समझना, अपने स्वयं के परिश्रम से, ईमानदारी के साथ जीविका अर्जन करना, समाज के हितों की रक्षा करना, उसके अनुशासन का पालन करना और सामूहिक रूप से जीवन को संगठित करना, यह सब, छोटे-छोटे उद्देश्य हैं, जिनसे मनुष्य का आदि से अंत तक सम्बंध है। उत्तरदायित्त्व और अनुशासन समाज के लिये बहुत आवश्यक है। इन्हीं का दूसरा नाम सभ्यता है और अनेक अर्थों में, इन्हीं सिद्धांतों का पालन "सहकारिता" कही जा सकती है।

एक विशिष्ट प्रकार के आंदोलन के रूप में, "सहकारिता" को जिन अर्थों में आगे प्रयुक्त किया जा रहा है, वह हमारे देश में, लगभग ५० वर्ष से अधिक समय पूर्व, प्रविष्ट हुई। कि तु, पराधीनता-काल में आंदोलन को प्राणवान बनाए जाने के समस्त साधन नहीं जुटाए जा सकते थे। विदेशी शासन काल में ८० से ८५ प्रतिशत देशवासियों को शिक्षा का अभाव रहा। देश की गरीबी सर्वविदित रहते हुए, विदेशी शासन से आंदोलन को पर्याप्त सहायता प्राप्त होने की आशा भी नहीं की जा सकती थी। परिणामतः यह आंदोलन, गांवों में कुछ सहकारी साख-समितियों, कुछ अन्य समितियों एवं कुछ सहकारी केन्द्रीय बैंकों के खुल जाने तक ही सीमित रहा। देश के सम्पूर्ण जन-जीवन से इसका कोई उल्लेखनीय सम्बंध नहीं रह सका। राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्ति के बाद, हमारा ध्यान, इस ओर जाना स्वाभाविक था।

प्रयुक्त अर्थों में, सहकारिता आंदोलन, व्यवहार में एक व्यवसायिक प्रणाली होने के साथ-साथ, मनुष्य के विचारों का आंदोलन है। विचारों का सम्बंध बहुत कुछ मनुष्य की शिक्षा-दीक्षा से है। एक महान् विचारक के शब्दों में सहकारिता एक आर्थिक आंदोलन है, जो शिक्षा के कार्यक्रम को अपनाता है। इस विचार को उलटकर, इस प्रकार भी रखा जा सकता है, कि सहकारिता एक शैक्षणिक आंदोलन है, जो आर्थिक कार्यक्रम को अपनाता है। इस प्रकार सहकारिता आंदोलन में शिक्षा के महत्त्व को पर्याप्त रूप से स्वीकार किया गया है। हमारे देश म जहां ८० प्रतिशत जनता में, अभी शिक्षा की ही भूख बनी हुई हो, वहां उसके द्वारा सहकारिता आंदोलन में निहित, नैतिक मूल्यों का उचित माप किया जा सकना, तुरंत ही संभव नहीं जान पड़ता। शिक्षा सहकारिता का आवश्यक अंग है।

देश की राष्ट्रीय विकास परिषद् ने सहकारिता पर अपने नीति-विषयक प्रस्ताव में, इसीलिये, यह सामयिक और उचित आशय का उद्बोधन कराया है कि विशाल पैमाने पर सहकारी विकास कार्यक्रमों के आयोजन की कल्पना, तभी सफल एवं साकार हो सकती है, जब कि सहकारी-समितियों और ग्राम-पंचायतों के नेताओं, स्कूल के शिक्षकों और ग्रामीण नवयुवकों के लिये जो ग्रामीण संस्थाओं में सचिव का कार्य कर सकते हैं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों का समायोजन किया जावे। परिषद् ने परामर्श दिया है कि सहकारिता आंदोलन को स्वेच्छा से चलाये जाने हित में, काफी बड़ी संख्या में अशासकीय अवैतनि कार्यकर्ताओं को उचित शिक्षण देकर, सहकारित क्षेत्र में लाया जाना चाहिये।

यह निश्चित बात है कि देश में सहकारित आंदोलन यदि केवल-मात्र शासन एवं शासनाधि कारियों के आश्रय से ही संचालित किया जात रहा, तब अनिश्चित काल तक जनता में आंदोलन के प्रति सजगता एवं स्वयं-स्फूर्ति पैदा न हो सकेगी प्रारंभ में कुछ कार्य ऐसे हो सकते हैं, जिनमें देश की आर्थिक समुन्नति के लक्ष्य से प्रभावित होकर शासन मार्ग-निर्देशन एवं वित्तीय तथा अन्य आवश्यक सहायता दे, किन्तु देश के करोड़ों मनुष्यों को सहकारिता के मूलभूत सिद्धांतों और एक निश्चित कार्य-पद्धति से उसे परिचित कराने का कार्य विचारकों, आंदोलनों के कार्यकर्त्ताओं और उनके स्वयं के सामूहिक संगठनों पर अधिक निर्भर करता है।

शासन ने इस तथ्य को बहुत कुछ अंशों में समझा और मान्य किया है। जो जानकारी हमें मिलती हैं, उसके आधार पर लाखों व्यक्तियों को सहकारिता से सम्बंधित न्यूनाधिक जानकारी एवं शिक्षण दिये जाने का एक योजनाबद्ध कार्यक्रम, देशभर में आरंभ किया गया है। इसके अनुसार, देश में सहकारी समितियों के सदस्यों, पदाधिकारियों एवं अन्य कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी, सहकारी कार्यकर्ताओं के अखिल भारतीय एवं राज्य सहकारी संघों को सौंपी गई है। योजना के अंतर्गत समिति के सदस्यों और कार्यकर्ताओं को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। उनके लिये विभिन्न अवधि के पाठचक्रमों का निर्धारण किया गया है। शिक्षण देने हेतु प्रशिक्षित कर्मचारी अनेक ग्राम-समूहों एवं विकास-खंडों में नियुक्त किये जा रहे हैं।

(शेष पृष्ठ २९ पर)

दूसरी योजना के आखिरी साल का बजट

वित्त मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने लोकसभा १९६०-६१ का बजट पेश करते हुए राष्ट्र से ह याद रखने को कहा कि अगला वित्त वर्ष सरी योजना का आखिरी वर्ष होगा और इस ात की सावधानी रखनी पड़ेगी कि जब वर्ष माप्त हो और तीसरी योजना शुरू हो, तब देश ो अर्थ-व्यवस्था भलीभांति सन्तुलित रहे। ालू वर्ष के बजट में ७८०.१० करोड़ रु. के ाजस्व और राजस्व से किये जानेवाले व्यय के लए ८३९.१८ करोड़ रु. की व्यवस्था की गई ी, जिससे राजस्व खाते में ५९.०८ करोड़ की कमी रही। वास्तविक आय की प्रवृत्ति को ेखते हुए अब अनुमान है कि ८३८.६६ करोड़ रु. की राजस्व-प्राप्ति होगी और ८५४.०५ करोड़ रु. का व्यय होगा और कमी केवल १५.३९ करोड़ रु. की रह जाएगी।

राजस्व में ५८.५६ करोड़ रु. की वृद्धि का मुख्य कारण यह है कि सीमा-शुल्क और केन्द्रीय उत्पादन-शुल्कों से अधिक प्राप्ति हुई । अब अनुमान है कि सीमा-शुल्कों और केन्द्रीय उत्पादन-शुल्कों से ५१०.८२ करोड़ रु. की प्राप्ति होगी। इनमें से ३५०.८२ करोड़ रु. की प्राप्ति उत्पादन-शुल्कों से ही हो जाएगी। उत्पादन के बढ़ते जाने से राजस्व में सभी ओर सुधार हुआ है। आयकर की प्राप्ति में, जिसमें निगम-कर भी शामिल है, सम्भवतः ५ करोड़ रु. की वृद्धि होगी, लेकिन सम्पत्ति-कर, व्यय-कर और दान-कर से होनेवाली कुल प्राप्ति में १.६ करोड़ रु. की कमी रहेगी। लोहे और इस्पात के अधिभार (सरचार्ज) से जो लोहा और इस्पात समकरण निधि को दे दिया जाता है, ९ करोड़ रु. अधिक प्राप्त होने की सम्भावना है, जबकि पी. एल. ४८० कार्यक्रम के अनुसार, अमरीकी सरकार से १३ करोड़ रु. कम अनुदान प्राप्त होंगे।

अब इस वर्ष ६१०.३५ करोड़ रु. का असैनिक व्यय होने का अनुमान है, जबकि मूल बजट में ५९६.५० करोड़ रु. का अनुमान किया गया था। प्रतिरक्षा व्यय का अनुमान २४३.७० करोड़ रु. है, जबकि मूल बजट में २४२.६८ करोड़ रु. का अनुमान किया गया था।

असैनिक व्यय में १३.८५ करोड़ रु. की वृद्धि कई मदों के अन्तर्गत होनेवाले परिवर्तनों का प्रभाव है।

मंत्री महोदय ने कहा कि चालू वर्ष में राजस्व से किये जानेवाले वास्तविक प्रतिरक्षा व्यय के संशोधित अनुमान में बजट-अनुमान की अपेक्षा १.०२ करोड़ रु. की वृद्धि दिखलाई गई है। इसका कारण वायुसेना के बजट में वृद्धि है, जो मुख्यतः विदेशों में खरीदे गये सामान के सम्बन्ध में १९५८-५९ से आगे लाई गई देनदारियों और वर्ष के अन्दर मंजूर किए गए नए प्रस्तावों के कारण हुई है। जलसेना के व्यय में कमी हुई है, जिसका मुख्य कारण सामान की खरीद में कमी होना है।

वित्त वर्ष १९६०-६१

अगले वर्ष (१९६०-६१) के अनुमानों का उल्लेख करते हुए आपने कहा कि वर्तमान कर-व्यवस्था के आधार पर अगले वर्ष ८९६.४५ करोड़ रु. की राजस्व प्राप्ति और ९८०.३५ करोड़ रु. के व्यय का अनुमान है। इस प्रकार राजस्व खाते में ८३.९० करोड़ रु. का घाटा रहेगा। सीमा-शुल्कों से १६० करोड़ रु. की राजस्व प्राप्ति होगी। केन्द्रीय उत्पादन-शुल्कों से ३५८.९१ करोड़ रु. की प्राप्ति का अनुमान है, जो संशोधित अनुमान से ८.०९ करोड़ रु. अधिक है। आय-कर और निगम-कर की प्राप्तियों में १० करोड़ रु. की वृद्धि की संभावना है। सम्पत्ति-कर में ५ करोड़ रु. की कमी होगी। ब्याज प्राप्तियों में ७.४४ करोड़ की वृद्धि होगी, जिसका मुख्य कारण दो इस्पात कम्पनियों और खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग से होनेवाली अनुमानित प्राप्तियां हैं।

अगले वर्ष में ९८०.३५ करोड़ रु. खर्च होने का अनुमान है। इसमें से २७२.२६ करोड़ रु. प्रतिरक्षा सेवाओं पर और ७०८.०९ करोड़ रु. असैनिक कार्यों पर खर्च होगा। उन्होंने बताया कि असैनिक व्यय में, संशोधित अनुमानों की अपेक्षा, अगले साल ९७.७४ करोड़ रु. की वृद्धि दिखलाई गई है। देशी और विदेशी ऋणों में वृद्धि होने से ऋण की अदायगी पर ९.४५ करोड़ रु. अधिक खर्च होने की संभावना है। विकास और सामाजिक सेवाओं पर, जिनमें सामुदायिक विकास सम्मिलित है, २७ करोड़ रु. रु. अधिक खर्च होने का अनुमान है। लोहे और इस्पात सम्बन्धी अधिभार की अपने आप सन्तुलित होनेवाली दो मदों और पी. एल. ४८० कार्यक्रम के अन्तर्गत अमरीका से प्राप्त होनेवाले अनुदानों के कारण १५ करोड़ रु. की वृद्धि हुई है। आयकर में राज्यों के हिस्से में कमी होने से उन्हें क्षतिपूर्ति के रूप में दिये जानेवाले अनुदानों में अगले वर्ष २८ करोड़ रु. की वृद्धि होगी।

अगले वर्ष प्रतिरक्षा व्यय २७२.२६ करोड़ रुपये होगा, जो २४३.७० करोड़ रुपये के संशोधित अनुमान की तुलना में २८.५६ करोड़ रुपये अधिक है। स्थल सेना और जलसेना के अनुमानों में वृद्धि होगी, जबकि वायुसेना के खर्च में कमी होगी।

प्रतिरक्षा सेवाओं के अनुमान हमारी सीमाओं के मौजूदा खतरों को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं। हो सकता है, बाद में इसी वर्ष परिस्थितिवश आवश्यकता पड़ने पर, लोकसभा से अतिरिक्त रुपयों की माँग करनी पड़े ।

आयोग की सिफारिशों पर अमल करने में सरकार को वार्षिक रूप से कुल मिलाकर, जिसमें पहले ही मंजूर की जा चुकी अन्तरिम सहायता भी शामिल है, ४४ करोड़ रुपये खर्च करना पड़ेगा। इस रकम के बढ़कर लगभग ५५ करोड़ रुपये तक पहुंच जाने की सम्भावना है। सरकार ने आयोग की जो सिफारिशें स्वीकार की हैं, वह १ जुलाई, १९५९ से लागू हैं। लेकिन इस बारे में चालू वर्ष के बजट-अनुमानों में कोई व्यवस्था नहीं की गई, क्योंकि सारी अदायगियां १९६०-६१ में की जाएंगी। इस प्रकार नए वर्ष के बजट में इस खर्च के लिए एक वर्ष से ज्यादा की व्यवस्था की गई है ।

पूंजीगत व्यय

चालू वर्ष में पूंजीगत आवश्यकता का संशोधित अनुमान ३६२.८५ करोड़ रुपये, अर्थात् ५७.२९ करोड़ रुपये कम है । बचत मुख्यतः दो मदों में हुई है । अब रेलें १२१.८१ करोड़ रुपये के मूल अनुमान की तुलना में केवल ८५.०३ करोड़ रुपये खर्च करेंगी। अन्न की खरीद के वास्तविक व्यय में २१.०१ करोड़ रुपये की कमी होगी।

अगले वर्ष के लिए ३७०.८४ करोड़ रुपये की व्यवस्था है। औद्योगिक विकास का परिव्यय मुख्यतः कोयला और तेल के विकास का खर्च ३०.५६ करोड़ रुपये अधिक होगा। रेलें और डाक तथा तार विभाग भी चालू वर्ष की अपेक्षा क्रमशः ३५,७८ करोड़ रुपये और ३.६० करोड़ रुपयें अधिक खर्च करेंगे। अनाज के लेनदेन के वास्तविक व्यय में १९.४१ करोड़ रुपये की वृद्धि होगी । इसके अलावा राज्यों को ऋण देने के लिए अनुमानों में इस वर्ष २८३.१८ करोड़ रुपये और अगले वर्ष ३३१.५१ करोड़ रुपये रखे गए हैं। अन्य पार्टियों को, जिनमें पोर्ट ट्रस्ट, सरकारी स्वामित्व वाले निगम और विदेशी सरकारें शामिल हैं, ऋण देने के लिए इस साल २२१.७४ करोड़ रुपये और अगले साल १७६.७४ करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है ।

योजना के लिए धन

योजना को चलाने के लिए अगले वर्ष के अनुमानों में कुल ८८९ करोड़ रुपये की व्यवस्था है, जिसमें से १७३ करोड़ रुपये राजस्व बजट में और ७१६ करोड़ रुपये पूंजी बजट में हैं । इसमें से ६४ करोड़ रुपये राजस्व बजट में और १७५ करोड़ रुपये पूंजी बजट में राज्यों की सहायता के लिए ह । इसके अलावा अपने साधनों से रेलें ३४ करोड़ रुपये और राज्य २५१ करोड़ रुपये खर्च करेंगे । इस प्रकार १९६०-६१ का सम्पूर्ण योजना परिव्यय १,१७४ करोड़ रुपये होगा । व्यय में साधारणतः होने वाली कमी को छोड़ते हुए, सरकारी क्षेत्र में योजना की ५ वर्ष की अवधि में लगभग ४,६०० करोड़ रुपये का वास्तविक व्यय होगा ।

उधार लेने का कार्यक्रम

वित्त मंत्री ने सरकार के उधार लेने के कार्यक्रम की सफलता का उल्लेख किया और कहा कि अगले वर्ष २५० करोड़ रुपये का बाजार ऋण लिया जाएगा। उन्होंने घोषणा की कि सरकार ने इनामी बौंड जारी करने का निश्चय किया है। यह इनामी बौंड १ अप्रैल, १९६० से बेचे जाएंगे और दो रकमों के——१०० रुपये और ५ रुपये——के होंगे। इन बौंडों पर ब्याज नहीं मिलेगा और ये ५ साल बाद चुका दिए जाएँगे । लेकिन बौंडों के खरीदारों को उन लाटरियों में शामिल किया जाएगा, जिन्हें डालकर हर तिमाही पुरस्कार विजेताओं के नाम निकाले जाएंगे। पुरस्कार पर आयकर नहीं लगेगा ।

छोटी बचतों के सम्बंध में वित्त मंत्री ने कहा कि हाल के वर्षों में छोटी बचतों में बराबर वृद्धि हुई है । इस वर्ष ८२ करोड़ रुपये तक इकट्ठा होने का अनुमान है । जबकि बजट अनुमान ८५ करोड़ रुपये हैं । अगले वर्ष के बजट में छोटी बचतों की वास्तविक रकम ९० करोड़ रुपये रखी गयी है ।

आर्थिक स्थिति की समीक्षा

चालू वर्ष में देश की आर्थिक स्थितिः——

चालू वर्ष में खेती की पैदावार के लक्षण अच्छे हैं। आशा है, १९५९-६० में अन्न की पैदावार का स्तर प्रायः उतना ही ऊंचा रहेगा, जितना १९५८-५९ में था । कपास और जूट की उपज में कुछ कमी हो सकती है ।

औद्योगिक उत्पादन में १९५९ के पहले दस महीनों में लगभग ७.४ प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो पिछले दो वर्षों के मुकाबले काफी अधिक है । इस वर्ष की एक बड़ी विशेषता यह रही कि लोहे, इस्पात और एलुमिनियम के उत्पादन में वृद्धि हुई । औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि का कारण क्षमता का पहले से अधिक उपयोग किया जाना है । बहुत से उद्योगों में कुल उत्पादन-क्षमता भी बढ़ी है । तैयार मशीनों और साज-सामान के उत्पादन में भी प्रगति हो रही है । भोपाल में बिजली के भारी यन्त्र बनाने के कारखाने के निर्माण का पहला चरण प्रायः समाप्त हो रहा है । रांची में भारी मशीनें बनाने के कारखाने की क्षमता भी इतनी बढ़ाई जानी है कि प्रतिवर्ष ८० हजार टन की मशीनें बनाई जा सकें ।

चालू वर्ष में जहाजों की संख्या में बराबर वृद्धि होती जा रही है। १९५९ के अन्त में भारतीय जहाजों का कुल टन भार ७ लाख ४० हजार था और अनुमान है कि १९६०-६१ के अन्त तक यह टन भार योजना के लक्ष्य-९ लाख——तक पहुंच जाएगा ।

यह जरूरी है कि दूसरी योजना के अन्त तक विकास की जो गति हो जाएगी, उसे केवल ज्यों की त्यों ही न रहने दिया जाए, बल्कि उसे और भी तेज किया जाए । तीसरी पंचवर्षीय योजना का यही महत्त्वपूर्ण काम है । इस दिशा में सफलता पाने के लिए खेती की पैदावार बढ़ाना सबसे जरूरी है । किन्तु यदि अगले दस या पन्द्रह वर्षों में अर्थ-व्यवस्था को काफी तेजी से बढ़ाना है, तो उद्योग, खनिज उत्पादन, बिजली, परिवहन और संचार जैसे दूसरे क्षेत्रों का भी तेजी से विकास करना पड़ेगा ।

इस समय यह बात सबसे ज्यादा जरूरी है कि हम उन लोकतंत्रात्मक सिद्धांतों को, जिनसे हमें हार्दिक प्रेम है, सुरक्षित और सुदृढ़ करने के लिए आर्थिक विकास के महत्त्व को अच्छी तरह समझें और यह भी अनुभव करें कि विकास तब तक सम्भव नहीं, जब तक चीजों की खपत पर थोड़ा-सा नियंत्रण न रखा जाए और हम राजस्व और मुद्राविषयक ऊंचा अनुशासन न मानें ।

सिंगमन री चौथी बार राष्ट्रपति

सियोल। दक्षिणी कोरिया के राष्ट्रपति श्री सिंगमन री चौथी बार भी राष्ट्रपति चुन गए।

गुजरात राज्य की अस्थायी राजधानी अहमदाबाद में

अहमदाबाद। अधिकृत सूत्रों के अनुसार इस ५०० वर्ष पुराने नगर में प्रस्तावित नव-गुजरात राज्य की सरकार को अस्थायी रूप से स्थान देने सम्बधी व्यवस्था प्रायः पूर्ण हो गई है।

चित्र व मूर्तिकला के लिए पुरस्कार

नई दिल्ली, २० मार्च। यहां अधिकृत तौर पर की गई एक घोषणा के अनुसार ललित-कला अकादमी की ओर से प्रतिवर्ष चित्रकला और मूर्तिकला के लिए जो पुरस्कार दिए जाते हैं, उसके लिए ५ कृतियां चुनी गई हैं।

कला सम्बंधी छटी राष्ट्रीय प्रदर्शनी, १९६० की चुनाव करने तथा निणंय करनेवाली समिति ने अकादमी के उस सोनेवाली तश्तरी को रोक लिया, जोकि किसी अद्वितीय कृति के लिए ी जाती है।

जो पांच कृतियां पुरस्कार के लिए चुनी गई हैं, वे इस प्रकार हैं :—

चित्रकला : श्री सोमनाय होरे—'साथी', श्री हिम्मतलाल शाह—"गतिशून्य जीवन"।

मूर्तिकला : श्री नरेन्द्र एम. पटेल—"आकृतियां", श्री एस. धरमणि—"परिवार", और श्री रजनीकांत आर. पंचाल—'तांगा'।

इन पांचों कृतियों को उन १०४ चित्रों और २३ मूर्तियों में से चुना गया था; जिनपर पुरस्कार की दृष्टि से विचार किया गया था तथा ये सभी प्रतियोगिता के लिए आई कुल १,४४६ कृतियों में से चुनी गई थीं, इसमें कुल ६२४ कलाकारों ने अपनी कृतियां भेजीं। कुछ कलाकारों की कृतियों को अंतिम रूप से राष्ट्रीय प्रर्दाशनी के लिए चुन लिया गया है; जिसका उद्घाटन यहां ३० मार्च को उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् करनेवाले हैं।

भिलाई कारखाने की तीसरी खुली भट्टी तैयार

नई दिल्ली, १९ मार्च। भिलाई इस्पात कारखाने की तीसरी खुली भट्टी (ओपन हर्थ फार्मस) बनकर तैयार हो गई है। इस भट्टी में आग जलाई जा चुकी है। अब शीघ्र ही इसमें इस्पात बनने लगेगा।

साप्ताहिक समीक्षा

यह भट्टी एक बार में २५० टन इस्पात बना सकती है। इससे पहले जो दो भट्टियां चालू हुई हैं, उनमें भी इतना ही इस्पात बनता है। यह तीसरी भट्टी प्रतिदिन दो पारियों में ५०० टन इस्पात बनाएगी।

चौथी खुली भट्टी भी तैयार की जा रही है। इस भट्टी पर पानी ठंडा करने की मशीन लगाई जा रही है। भिलाई कारखाने में ऐसी ६ खुली भट्टियां होंगी। इनमें सें प्रत्येक में २५० टन इस्पात बन सकेगा।

९,९५० करोड़ रुपये की तीसरी योजना पर सहमति

नई दिल्ली, १९ मार्च। राष्ट्रीय विकास परिषद् द्वारा तीसरी पंचवर्षीय योजना में ९,९५० करोड़ रुपये के खर्च की बात और मूल्यों का स्तर स्थिर रखने की आवश्यकता स्वीकार कर ली गई।

राज्यों के मुख्य मंत्रियों ने यह भी स्वीकार कर लिया बताते हैं कि तीसरी योजना में ५०० करोड़ रुपए के अतिरिक्त कर जुटाना राज्यों की जिम्मेदारी है। इसके अलावा १,१५० करोड़ रुपये के अतिरिक्त कर केन्द्रीय सरकार जुटाएगी।

बादशाह बाबर के शिलालेख ताजिकिस्तान में मिले

नई दिल्ली, २० मार्च। मुगल साम्राज्य के संस्थापक बादशाह बाबर के कुछ शिलालेख ताजिकिस्तान (सोवियत संघ) में जेरावशन नदी के पास पाए गए हैं। एक शिलालेख तो महान् प्राच्य कवि सादी की गजलों का बताया जाता है।

बादशाह बाबर की जो 'ताजिके बाबरी' है, उसमें इस शिलालेख का वर्णन भी मिलता है। पर उसके समय का कुछ पता हाल तक नहीं था। अब ज्ञात हुआ है कि उसका समय १५०१ और १५०२ के बीच का है।

यह कहना मुश्किल है कि चट्टानों पर ये लेखांकन स्वयं बाबर ने किया या हुकुम देकर करवाए, परन्तु हर लेखांकन के नीचे कहा गया है 'बाबर का लिखा'। वैज्ञानिकों का है कि ये शिलालेख बड़े महत्त्व के हैं।

विदेशी पर्यटकों से होनेवाली आय

बम्बई, २१ मार्च। प्राप्त आंकड़ों सार विदेशी पर्यटकों से इस वर्ष फरव में करीब १४ लाख रुपए की आय हुई है।

१९५१ की अपेक्षा अब भारत में अ पर्यटकों की संख्या ५ गुना अधिक बढ़ गत वर्ष करीब एक लाख पर्यटक भारत आ

१९५५ के दौरान पर्यटकों से हों आय १०.६ करोड़ रुपये आंकी गई थी। ५७-५८ में रिजर्व बैंक द्वारा पर्यटकों से हों आय क्रमशः १५.५ करोड़, १६ करोड़ १७.५ करोड़ रुपये आंकी गई है।

हिन्द महासागर में ३ हजार मीटर पर्वत

नई दिल्ली, २० मार्च। सोवियत वैज्ञा ने यह पता लगाया है कि मेडागास्कर से २० की दूरी पर हिन्द महासागर में एक विशा है, जो महासागर के तल से ३,००० मीटर है। उस क्षेत्र में महासागर की न्यूनतम १,५३० मीटर की है।

'वित्तवाड' नामक एक अनुसंधान ज द्वारा सोवियत वैज्ञानिकों ने हिन्द महा के बारे में विभिन्न प्रकार के पहलुओं का पता लगाया है। यह जलयान अभी महासागर में ही कार्यरत है।

हिन्दी प्रचार के लिए केन्द्रीय निदे

हिन्दी का प्रचार तथा प्रसार करने के केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय में केन्द्रीय हिन्दी शालय की स्थापना की गई है। सरकार के पारिभाषिक शब्दों, हिन्दी के प्रचार प्रसार, विदेशी समझौतों के अनुवाद, कोष तैयार करने के बारे में जो निर्णय करेगी लागू करने की सारी जिम्मेदारी इस निदे पर होगी।

सामुदायिक विकास कार्य-क्रम

सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय (सामुदायिक विकास विभाग) की वार्षिक रिपोर्ट, सन् १९५९-६० में कहा गया है कि इस वर्ष देश के गांवों के लगभग १७ करोड़ ९० लाख व्यक्ति यानी करीब ६१ प्रतिशत जनता सामुदायिक विकास कार्यक्रम से लाभान्वित होने लगी।

सन् १९५२ में इस कार्यक्रम के प्रारम्भ होने के बाद से ३० सितम्बर, १९५९ तक जनता ने श्रम, धन तथा सामग्री के रूप में ७९ करोड़ ७८ लाख रुपये दिये। सरकार ने इस कार्यक्रम पर १ अरब ५३ करोड़ ९७ लाख रुपये खर्च किये। इसमें से १ अरब ७ करोड़ ९ लाख रुपये दूसरी पंचवर्षीय योजना के पहले ३॥ सालों में खर्च किये गये। इस वर्ष सामुदायिक विकास कार्यक्रम की सबसे स्मरणीय घटना पंचायतराज योजना का लागू होना है। खण्डों में पंचायत समितियों और जिलों में जिला परिषदों की स्थापना से धीरे-धीरे सामुदायिक विकास कार्य की योजना और अमल की सारी जिम्मेदारी ग्रामीण जनता के हाथ में सौंपी जा रही है। राजस्थान में पंचायतराज कानून लागू हो गया है और अन्य राज्यों में इस प्रकार के कानून शीघ्र ही बन जायेंगे।

इस वर्ष गांवों में १ लाख २ हजार मील लम्बी कच्ची सड़कें बनाई गईं। ग्राम सहायकों की शिक्षा को आकर्षक बनाने के लिए लगभग ५ हजार ८०० ग्राम सहायकों को भारत-दर्शन यात्रा की सुविधा दी गई। इसी प्रकार देश के भिन्न-भिन्न राज्यों के विकास खण्डों से लगभग २० हजार किसान विश्व-कृषि-प्रदर्शनी देखने लाये गये।

हिन्दू धर्मस्व निधि आयोग

हिन्दू धर्मस्व निधि आयोग ने मंदिरों और मठों की देखभाल, उनके कोष के उचित उपयोग और उनके भविष्य के विषय में रुचि रखनेवाले सब व्यक्तियों को अपनी टीका-टिप्पणी भेजने का नमंत्रण दिया है। ऐसी टीका-टिप्पणी दो महीने के अन्दर निम्नलिखित पते पर भेज देनी चाहिए :

चिव, हिन्दू धर्मस्व निधि आयोग, विधि मंत्रालय, ॉर्थ ब्लॉक, नई दिल्ली।

उन लोगों को जो आयोग के सामने गवाही ी देना चाहते हैं, अपने नाम १५ जन, १९६० तक चिव को भेज देने चाहिएं।

६०,००० केन्द्रीय कर्मचारियों ने हिन्दी सीखी

भारत सरकार ने अपने कर्मचारियों को हिन्दी सिखाने के लिए देश भर में जो ५६ केन्द्र चालू किये हैं, उनमें अब तक ६०,००० कर्मचारियों ने हिन्दी सीखी है।

आशा है कि १९६१-६२ तक केन्द्रीय स्वराष्ट्र मंत्रालय की हिन्दी शिक्षा योजना के अन्तर्गत ३ लाख से भी अधिक कर्मचारी हिन्दी सीखेंगे। चालू वर्ष की पहली तिमाही में हिन्दी सीखनेवाले कर्मचारियों की संख्या १०,००० थी।

कुछ समय पहले तक रेल विभाग का अपने कर्मचारियों को हिन्दी सिखाने का अलग प्रबन्ध था। परन्तु अब वे भी स्वराष्ट्र मंत्रालय की योजना के अन्तर्गत हिन्दी सीखते हैं। लगभग १,००० रेल कर्मचारी हिन्दी कक्षाओं में शामिल हो चुके हैं।

कर्मचारियों के लिए ९–९ महीने के ३ पाठचक्रम—प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ—हैं। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। प्रबोध पाठचक्रम उन कर्मचारियों के लिए है, जो दक्षिण भारतीय भाषाएं अथवा अंग्रेजी बोलते हैं। प्रवीण पाठचक्रम मराठी, गुजराती, बंगाली, असमी या सम्बद्ध भाषाएं बोलनेवालों के लिए है। प्राज्ञ पाठचक्रम मैट्रिक के स्तर का है। यह पाठचक्रम उन कर्मचारियों के लिए है, जिनकी मातृभाषा पंजाबी, उर्दू, कश्मीरी, सिंधी, पश्तो या कोई अन्य संबद्ध भाषा है।

सरकारी कर्मचारियों को व्यावहारिक शिक्षा

इस साल के अन्त तक केन्द्रीय सचिवालय सेवा के ४६ सरकारी अधिकारियों ने विभिन्न राज्यों में व्यवहारिक शिक्षा समाप्त करली है। इस समय १३ अधिकारियों का दल विभिन्न राज्यों में ट्रेनिंग ले रहा है।

सरकारी कर्मचारी विभिन्न राज्यों में २ साल के लिए भेजे जाते हैं, जिससे वे गांव से लेकर राज्य सचिवालय के विभिन्न कामों की जानकारी प्राप्त कर सकें। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि इन अधिकारियों को राज्यों की विभिन्न समस्याओं का ठीक से पता चल सके।

तपेदिक रोगियों को रेल-भाड़े में रिआयत

आजकल तपेदिक रोगियों को उन तपेदिक अस्पतालों, सेनेटोरियमों और चिकित्सालयों तक आने-जाने में रेल के भाड़े में रियायत मिलती है, जो उनके अपने राज्य में बसे होते हैं। अब रेल मंडल ने यह रिआयत अन्य राज्यों में भी आने-जाने के लिए देने का निश्चय किया है।

रजिस्टरशुदा डाक्टरों के प्रमाण-पत्र पेश करने पर यह रिआयत दी जाती है। अगर कोई रोगी अकेला यात्रा करे तो उसे केवल एक चौथाई भाड़ा ही देना पड़ता है। अगर वह किसी अन्य व्यक्ति के साथ यात्रा करे तो दोनों को एक टिकट ही लेना पड़ता है।

नमूने के तौर पर प्रतिवर्ष जनगणना

विभिन्न राज्यों में हर साल नमूने के तौर पर जनगणना हुआ करेगी, जिससे यह पता लगाया जाएगा कि प्रतिवर्ष देश की आबादी में कितनी वृद्धि होती है। यह जनगणना इसी साल से शुरू हो जाएगी।

इस नमूने की जनगणना के लिए जनगणना कमिश्नर के दफ्तर ने प्रश्नावली तैयार की है। इसमें मुख्य रूप से बच्चों के जन्म और आयु के बारे में जानकारी इकट्ठी की जाया करेगी। इस जनगणना से यह भी पता चल सकेगा कि जनसंख्या कम करने के उपायों का, जैसे परिवार आयोजन आदि का लोगों पर क्या असर पड़ रहा है। इसके अलावा बच्चों की आयु से यह पता चलेगा कि देश की औरतें औसतन किस उम्र से, कितने-कितने समय के अन्तर पर और कितने बच्चे पैदा करती हैं।

यह नमूने की जनगणना प्रतिवर्ष देश के लगभग १ प्रतिशत लोगों के बारे में की जाया करेगी, जिसके लिए सब तरह के गांवों और शहरों से कुछ क्षेत्र चुने जाया करेंगे।

साहित्य-समालोचना

अर्चना—(वार्षिक पुष्प)—प्रकाशक बी. सी. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लश्कर (म. प्र.) मुख्य सम्पादक—श्री रामस्वरूप पथिक।

प्रस्तुत अंक में उक्त विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा लिखित रचनाओं का संकलन है। इस अंक को हिन्दी, अँग्रेजी और मराठी भाषा के तीन विभागों में विभाजित किया गया है। अनेक विद्यार्थियों की रचनाएँ रोचक एवं प्रारम्भिक लेखन-प्रतिभा की परिचायक प्रतीत हुई। इस वार्षिक अंक का सम्पादन सुरुचिपूर्ण तथा मुद्रण सुन्दर और साफ-सुथरा है। निस्सन्देह प्रस्तुत अंक विद्यार्थियों के लिए उपादेय है।

विविध समाचार

दो पुलिस अधिकारियों को वीरता के पदक

राष्ट्रपति ने वीरता के लिए मध्यप्रदेश पुलिस के डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट श्री आर. पी. मोदी को पुलिस और अग्नि-सेवा पदक तथा असिस्टेंट कमांडेंट श्री माधोसिंह को पुलिस पदक दिया है।

सरकारी सूचना-पत्र में उक्त घोषणा की गयी है। इसमें कहा गया है कि इन अधिकारियों ने डाकुओं के साथ एक मुठभेड़ में वीरता, साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया था।

प्रशस्ति

१३ नवम्बर, १९५९ को भिंड के डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस श्री राजेन्द्रप्रसाद मोदी को यह सूचना मिली की गब्बरसिंह और दुलारे डाकुओं का एक दल धूप-का-पुरा गांव के पास एक गड्ढ़े में छिपा हुआ है। उन्होंने तुरन्त ही वायरलैस द्वारा उस क्षेत्र के सभी पुलिस अधिकारियों को सावधान रहने को कहा और कुछ कांस्टेबलों आदि को धावे के लिए तैयार किया।

श्री माधोसिंह

इसके बाद श्री मोदी और विशेष सशस्त्र पुलिस के असिस्टेन्ट कमांडेंट श्री माधोसिंह के नैतृत्व में एक दल उस गड्ढ़े के पास जा छिपा। जब डाकुओं को इसका पता चला तो उन्होंने गोली चलाई और एक पहाड़ी टीले की ओर भागना शुरु किया। उस टीले पर पुलिस का एक और दल छिपा हुआ था।

जब डाकू भाग रहे थे तो श्री मोदी ने उन पर गोली चलाई और कुछ को मार दिया और कुछ डाकू घायल हो गए। इसी बीच श्री माधोसिंह ने उन डाकुओं पर बाईं ओर से धावा बोला और उन्हें उस ओर भागने को मजबूर कर दिया जहाँ पुलिस का दूसरा दल छिपा हुआ था। वहां उस दल ने भी गोली चलानी शुरू कर दी। कोई चारा न देखकर डाकू घनी झाड़ियों में जा छिपे। उन पर चारों ओर से गोली चलती रही, किन्तु डाकू बाहर न निकले।

इसी प्रकार धीरे-धीरे रात का अंधेरा होने लगा और वहाँ कुछ दर्शक भी इकट्ठे हो गये। श्री मोदी ने सोचा कि कहीं अंधेरे में पुलिसवाले एक दूसरे पर या दर्शकों पर ही गोली न चला दें। और फिर यह भी डर था कि कहीं डाकू अंधेरे में एकदम निकलकर पुलिसवालों पर हमला बोलकर भाग न जाएँ। अतः श्री मोदी ने उन डाकुओं पर झाड़ी के अन्दर घुसकर सीधे हमला करने का निश्चय किया।

वे कुछ लोगों को लेकर आगे बढ़े। डाकुओं ने उन पर धड़ाधड़ गोलियां चलाईं। इस सबकी परवाह न करते हुए श्री मोदी डाकुओं के लगभग २० गज पास पहुंच गए। इधर से माधोसिंह के दल ने भी डाकुओं पर गोली चलानी शुरू करदी।

ऐसे में पहाड़ी पर छिपे कुछ कांस्टेबलों ने श्री माधोसिंह को डाकू समझकर उन पर ब्रेनगन चलादी। श्री माधोसिंह ने वहीं खड़े रहकर उन कांस्टेबलों को रुकने का इशारा दिया। इसी बीच श्री मोदी और आगे बढ़ गए। श्री माधोसिंह ने लेटकर डाकुओं पर गोली चलानी शुरू करदी हालांकि वे स्वयं बड़ी मुसीबत में थे।

श्री राजेन्द्रप्रसाद मोदी

उसी समय घास में छिपे श्री मोदी ने अपना हथगोला फेंकना चाहा, किन्तु उसकी पिन कहीं अटक गयी। उन्होंने बड़ी सावधानी से अपनी राइफल की नोंक से हथ-गोले की पिन निकाली और गब्बरसिंह डाकू पर वह गोला फेंक दिया। उनके स्वयं के दल में तब तक केवल दो व्यक्ति ही बचे थे। श्री मोदी उन दो व्यक्तियों को लेकर ही उस जगह पहुंच गए जहां डाकू छिपे हुए थे। वहां उन्होंने देखा कि सारे डाकू मर चुके थे।

इस मुठभेड़ में गब्बरसिंह और दुलारे डाकुओं सहित उनके सब साथी मारे गए। कुल ११ डाकू मरे और वहां से चार राइफलें, दो पिस्तोलें, चार बन्दूकें और बहुत-सा गोला-बारूद बरामद हुआ।

इंदौर और भोपाल केन्द्र के प्रसारण-मीटर

प्राप्त सूचना के अनुसार आकाशवाणी के इंदौर और भोपाल केन्द्रों से निम्नलिखित मीटरों पर कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं :—

	मीटर	किलोसाइकिल्स	
इंदौर	४६१.५	६५०	मीडियम वेव
भोपाल—			
प्रातः	४१.९०	७१६०	सार्ट वेव
दोपहर	३१.०२	९६७०	”
शाम	६२.२४	४८२०	”

डॉ. काटजू द्वारा तवा बांध-स्थल तथा बस्ती का निरीक्षण

राज्य के मुख्यमंत्री डॉ॰ कैलासनाथ काटजू ने क्रमशः साकार रूप ग्रहण करती हुई मध्यप्रदेश की बहु-उद्देश्यीय नदी घाटी योजना को उस समय देखा जब उन्होंने होशंगाबाद जिले के रानीपुर गांव के पास तवा बांध स्थल तथा बस्ती का निरीक्षण किया। राज्य के लोक निर्माण मंत्री, श्री शंकरलाल तिवारी, उप-मंत्री श्री दशरथ जैन, मुख्य इंजीनियर सिंचाई, अधीक्षक इंजीनियर तवा योजना तथा जिलाध्यक्ष उनके साथ थे।

बांध स्थल, बिजली घरों के निर्माण स्थान तथा नहरों के प्रवाह की दिशा के संबंध में जांच पूरी हो चुकी है तथा योजना तांत्रिक दृष्टि से निर्दोष होने के प्रमाण-पत्र की प्राप्ति के लिए भारत सरकार को प्रस्तुत कर दी गई है। एक कार्यपालक इंजीनियर समेत एक पूर्ण कर्मचारी मंडल बांध-स्थल पर नियुक्त कर दिया गया है। कर्मचारियों और श्रमिकों के लिए अस्थायी क्वार्टर भी बन चुके हैं। यंत्रों को लाने ले-जाने के लिए ४० मील खुले मौसम की सड़क पूर्ण हो चुकी है। प्रस्तावित उपनगर की अर्ध-स्थायी इमारतों के लिए कुल १० लाख रुपये का ठेका भी दे दिया गया है। बागरा रेल्वे स्टेशन से बांध-स्थान तक की सड़क का प्रारंभिक काम शुरू हो गया है। तवा नदी पर एक जलमग्न हो जानेवाले पुल के लिए टेन्डर आ चुके हैं और उन पर विचार किया जा रहा है।

तवा बहु-उद्देश्यीय योजना मध्यप्रदेश की दूसरी सबसे बड़ी नदी घाटी योजना होगी। इसके अन्तर्गत नर्मदा की सहायक नदी तवा पर एक जलागार बनाया जाएगा जो उसकी सहायक देनवा नदी से उसके संगम से प्रवाह की दिशा में लगभग आधे मील दूर पर स्थित होगा। इस योजना का व्यय अनुमानतः २७.५ करोड़ रुपये है। पूरा हो जाने पर तवा बांध ५,३१५ फुट लंबा होगा, जिसमें से लगभग १,००० फुट का भाग पत्थर तथा शेष भाग मिट्टी का होगा। मुख्य नहरें, बायें किनारे पर ९० मील और दाहिने किनारे ३३ मील। इस प्रकार १२३ मील लम्बी रहेंगी तथा उनका विस्तार सेन्ट्रल रेल्वे के हरसूद स्टेशन से पिपरिया स्टेशन तक रहेगा। शाखा-नहरों और जल वितरक प्रणालियों के जाल के अन्तर्गत ७०० मील जल मार्ग रहेंगे।

इस योजना के पूरे हो जाने पर उससे बायें किनारे पर ६ लाख एकड़, और दाहिने किनारे पर १.५ लाख एकड़ जमीन पर सिंचाई होने की आशा है। इस सिंचाई के फलस्वरूप प्रति वर्ष २ लाख टन से अधिक अतिरिक्त खाद्यान्न और लगभग ४ लाख टन गन्ना उत्पन्न होगा।

इस योजना में दो बिजलीघर केन्द्र रहेंगे जिनमें से प्रत्येक केन्द्र द्वारा ६० प्रतिशत लोड फैक्टर पर २०,००० किलोवाट बिजली उत्पन्न होगी। बायें किनारे पर स्थित पहला बिजली-केन्द्र सिंचाई में पानी के उपयोग के पूर्व उस पानी से बिजली पैदा करेगा। दूसरे बिजली केन्द्र का उपयोग सिंचाई की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए उस समय किया जाएगा, जब सिंचाई की नहरों का प्रवाह पूर्ण क्षमता से न हो रहा हो। इसके पूर्व रानीपुर जाते हुए मुख्यमंत्री ने बाबई गांव में एक नलकूप देखा।

मध्यप्रदेश के श्री हरीसिंह सर्वोत्तम कैडेट घोषित

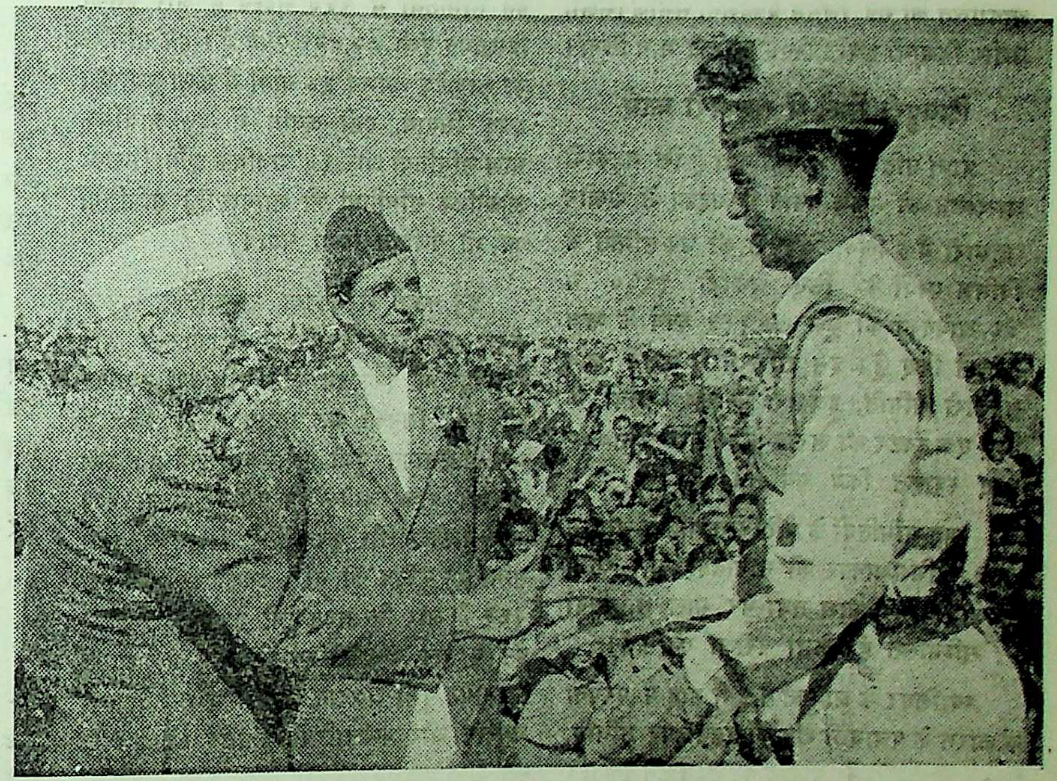

प्रधान मंत्री श्री नेहरू केडेट हरीसिंह को छड़ी प्रदान करते हुए

इस वर्ष नई दिल्ली में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर होनेवाली एन. सी. सी. दिवस रेली में मध्यप्रदेश की आठवीं बटेलियन एन. सी. सी. (महारानी लक्ष्मीबाई कॉलेज, ग्वालियर) के वरिष्ठ अवर-अधिकारी श्री हरीसिंह सर्वोत्तम केडेट निर्णीत किए गए।

भारत के १४ वृत्तों से आए हुए ३१५ केडेटों ने, न केवल गणतंत्र दिवस की परेड में भाग लिया, बल्कि विविध प्रतियोगताओं में भी हिस्सा लिया।

कठिन परीक्षाओं के उपरान्त श्री हरीसिंह सर्वोत्तम केडेट घोषित किए गए। इस प्रदत्त विशेष योग्यता के कारण इन्होंने १४ वृत्तों की सामूहिक परेड का संचालन किया। इस अवसर पर श्री हरीसिंह को सर्वोत्तम केडेट ट्राफी जो एक एन. सी. सी. केडेट की प्रतिरूप है, पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त आपको नेपाल के प्रधानमंत्री की ओर से एक 'केन' भेंट दिया गया तथा प्रधान मंत्री श्री नेहरू ने अपनी निजी हाथीदांत की छड़ी प्रदान की।

सीधी जिले में सरपंच प्रशिक्षण शिविर

सीधी जिले का एक ७ दिवसीय सरपंच प्रशिक्षण शिविर हाल ही में सेमरिया ग्राम में हुआ। लगभग १९ ग्राम पंचायतों ने इस शिविर में भाग लिया। प्रशिक्षणार्थियों को ग्राम पंचायतों के महत्व से संबंधित विषयों तथा राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण की दिशा में उनके योगदान के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया।

इस अवधि में शिविरार्थियों ने श्रमदान किया और चगरहा और सेमरिया गांवों को जोड़नेवाली आधा मील लंबी पहुंच-सड़क बनाई। उन्होंने कुछ मिश्रखाद कूप भी तैयार किए।

इस अवसर पर एक योजना-प्रदर्शनी भी आयोजित की गई, जिसमें प्रकाशन, समाज शिक्षा, उद्योग विभागों तथा विकास खण्ड ने भाग लिया।

शिवपुरी जिले में सहकारी कार्य

प्राप्त प्रतिवेदन में कहा गया है कि सहकारी आन्दोलन को सफल बनाने के उद्देश्य से केन्द्रीय सहकारी बैंक लि०, शिवपुरी की उप-समिति ने विभिन्न कार्यों के लिए जनवरी १९६० में ४६ आवेदकों को कुल ७७,११५ रुपये के ऋण स्वीकृत किए हैं। इस राशि में से उत्तम कृषि सहकारी समिति, इजवारा के सब सदस्यों के लिए एक ट्रेक्टर की खरीद के निमित्त १५,००० रुपए स्वीकृत किये गये हैं।

उक्त समितियों के अतिरिक्त माह के अन्त में १७३ विभिन्न प्रकार की समितियों की, जिनमें १५७ प्राथमिक साख तथा गैर साख समितियां भी सम्मिलित हैं, लेखा परीक्षा की गई।

ग्वालियर के आयुक्त ने इसी माह में परगना कोलारस के पचावली खंड की बृहताकार समिति, लि०., के नवनिर्मित गोदाम का उद्घाटन किया। लगभग ४०० ग्रामीणों ने, जिसमें समिति के सदस्य भी सम्मिलित थे, इस समारोह में भाग लिया।

मिडिल परीक्षा क केन्द्र में परिवर्तन

रजिस्ट्रार, शिक्षा विभागीय परीक्षाएं, ग्वालियर सूचित करते हैं कि पूर्व माध्यमिक (मिडिल) परीक्षा का परीक्षा केन्द्र विजयाराजा कन्या महाविद्यालय, उज्जैन से माध्यमिक कन्या शाला, माधवनगर, उज्जैन में परिवर्तित किया गया है। विजयाराजा कन्या महाविद्यालय, उज्जैन से पूर्व माध्यमिक (मिडिल) परीक्षा सन् १९६० में सम्मिलित होनेवाले नियमित एवं प्रायवेट परीक्षार्थियों से माध्यमिक कन्याशाला, माधवनगर, उज्जैन केन्द्र पर परीक्षा के हेतु उपस्थित होने का अनुरोध किया गया है।

भेलसा जिले में सहकारिता की प्रगति

प्राप्त एक प्रतिवेदन में कहा गया है कि १ जुलाई, १९५९ से ३१ जनवरी, १९६० तक भेलसा जिले में सहकारिता के क्षेत्र में तीव्र प्रगति की गई है। भेलसा विकास खण्ड में वर्तमान प्राथमिक कृषि सहकारी साख समितियों को परिवर्तित कर कुल मिलाकर २० सेवा सहकारी समितियों का पंजीयन किया गया। इन समितियों में ९५३ सदस्य हैं और इसकी हिस्सागत पूंजी ८२,८२६ रुपये है। इन समितियों का कार्यक्षेत्र लगभग ५० गांवों में फैला हुआ ह। इसके सिवाय, इसी अवधि में ४७ प्राथमिक साख समितियों और १० प्राथमिक कृषि (जिसमें औद्योगिक समितियां भी शामिल हैं) समितियों का भी पंजीयन किया गया।

इन कार्यों के अलावा, राजेधौधार, पिपलखेड़ा, कच्छपुरा, करारिया, अंडियाकला और बिशनपुर में ६ उत्तम कृषि समितियां स्थापित की गईं, जिनकी कुल सदस्य संख्या २०८ है और हिस्सागत पूंजी १२,४८७ रुपये है। कुल ६,५५९ बीघा जमीन का पंजीयन किया गया और बासोदा और कुरवाई में २ हाट सहकारी समितियां गठित की गईं। इनकी सदस्य संख्या १६५ है और हिस्सागत पूंजी १९,४८० रुपये है। इन २ हाट सहकारी समितियों में प्रत्येक को हिस्सागत पूंजी अंशदान, गोदाम-ऋण, गोदाम-अनुदान और कर्मचारियों के लिए अंशदान के रूप में ४८,५०० रुपये की कुल सहकारी सरकारी दी गई।

रायगढ़ जिले में सहकारिता आन्दोलन

रायगढ़ जिले में सहकारिता आन्दोलन अधिकाधिक लोकप्रिय होता जा रहा है। हाल के एक प्रतिवेदन में कहा गया है कि फरवरी, १९६० में गाला तथा समनियां ग्रामों की २ उन्नत कृषि सहकारी समितियों का पंजीयन किया गया तथा बरमकेला खण्ड की १० प्राथमिक सहकारी समितियों को सेवा सहकारी समितियों के रूप में पुनर्गठित किया गया। आलोच्यावधि में कोंडा तराई ग्राम में १ बुनकर सहकारी समिति तथा १ तेलघानी औद्योगिक सहकारी समिति का भी पंजीयन किया गया।

जिले में २ स्वतंत्र हाट व्यवस्था सहकारी समितियों का भी गठन किया गया है। ये समितियां अपने क्षेत्रों की कृषि उपज की खरीद तथा बिक्री की व्यवस्था करेंगी।

इसके अतिरिक्त रायगढ़ खंड में २ सहकारिता-संगोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिनमें विभिन्न सेवा सहकारी समितियों के ५० सदस्यों ने भाग लिया। ये संगोष्ठियां सहकारिता के महत्त्व को बताने के लिए आयोजित की गई थीं।

इन्दौर में बाल संगीत सभा का आयोजन

मध्यप्रदेश के बच्चों में छिपी संगीत प्रतिभा को सामने लाने के लिए तथा उसे प्रोत्साहित करने के लिए इन्दौर के बाल-संगठन अंकुर द्वारा १० मई, १९६० को एक बाल संगीत सभा का आयोजन किया जा रहा है। संगीत सभा में पन्द्रह वर्ष तक के बच्चों का सुगम, शास्त्रीय गायन और वाद्य-संगीत प्रस्तुत किया जायगा।

शिक्षकों, अभिभावकों तथा नागरिकों से अनुरोध ह कि सस्वर तथा वाद्य संगीत में कुशलता रखनेवाले जो बालक-बालिका उनकी जानकारी में हों, उनके बारे में वे संयोजक "अंकुर", राजमोहल्ला, इन्दौर को १० अप्रेल, तक सूचित करें। अंकुर उनका आभारी होगा।

हर ग्राम में मुफ्ती दवाखाना

स्त्री पुरुष एवं बालकों के प्राय: सभी रोगों की सहस्रोनुभूत सफल १७५) रुपये की बहुमूल्य १४० प्रकार की दवाइयों से परिपूर्ण २५ सेर वजन के "बाहुबलि चिकित्सा बाक्स" सेवन विधि की सरल पुस्तकों सहित मात्र शीशी बोतल पैंकिग पेटी आदि खर्च ३८) रुपये में पूरा दवाखाना मुफ्त मंगाले। ८) रुपये पेशगी शेष ३०) की वी. पी. मंजूरी तथा पास की स्टेशन सहित पूरा पता लिखें। दवाइयां करीब ५ ००० रोगियों को पर्याप्त होती हैं विज्ञ चिकित्सकों, सरपंचों, से ट्रियों, लेखपालों तथा अध्यापकों को कम से कम १-१ बाक्स अपने यहां अवश्य मंगाकर इस सुलभ योजना से लाभ उठाना चाहिए। अनेकों पंचायतों में कई वर्षों से ये बाक्स नियमित रूप से पहुंच रहे हैं।

व्यवस्थापक,
अखिल हिन्द बाहुबलि औषधालय
(१३२–१४) ललितपुर (झांसी)

CHAMBAL VALLEY DEVELOPMENT, CHAMBAL CANAL CIRCLE, SHEOPURKALAN, M.P.

Tender Notice No. 2/C/60.

Sealed item rate tenders are invited from the registered Contractors in appropriate Class of P.W.D., M.E.S., C.P.W.D and Railways for the following works separately for each work so as to reach the undersigned not later than 4.00 P.M. on 16th April, 1960.

S. No.	Name of works.	Approximate cost of work on works. portion.	Earnest money to be dposited	Time for completion of work from the date of issue of work order.
1	2	3	4	5
	Upper Main Canal Group No. I	Rs.	Rs.	
1.	Construction of Drainage Syphon at Ch. 3,469.11 of Right Main Canal Upper	73,600.00	1,500.00	12 months.
	Group No. II			
2.	Construction of Drainage Syphon at Ch. 5283.10 of Right Main Canal Upper	3,32,405.00	6,648.00	12 months.
3.	Construction of Fall cum D.R. Bridge at Ch. 5391.50 of Right Main Canal Upper.	1,31,800.00	2,640.00	12 months.
4.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 5540.00 of Right Main Canal Upper ..	37,990.00	7,60.00	6 months.
5.	Construction of Drainage Syphon at Ch. 5488.15 of Right Main Canal Upper	1,82,058.00	3,640.00	12 months.
	Lower Main Canal Group No. III.			
6.	Construction of Drainage Syphon at Ch. 694.56	1,00,000.00	2,000.00	12 months.
7.	Construction of Aqueduct at Ch. 1401.95	2,81,464.00	5,630.00	15 months.
8.	Construction of Drainage Syphon at Ch. 1536.12	72,531.00	1,450.00	12 months.
9.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 675.90	28,065.00	560.00	9 months.
10.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 728.79	28,430.00	570.00	9 months.
11.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 732.20	90,827.00	1,820.00	12 months.
12.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 783.75	29,533.00	590.00	9 months.
13.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 945.71	29,725.00	600.00	9 months.
14.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 1001.57	25,120.00	500.00	9 months.
15.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 1061.50	27,993.00	560.00	9 months.
16.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 1135.78	54,704.00	1,100.00	9 months.
17.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 1180.00	26,763.00	540.00	9 months
	Ambah Branch Canal Group No. IV.			
18.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 605.00	29,500.00	590.00	9 months.
19.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 691.00	25,900.00	520.00	6 months.

S. No.	Name of wocks.	Approximate cost of work on works portion.	Earnest money to be deposited.	Time for completion of work from the date of issue of work order
1	2	3	4	5
		Rs.	Rs.	
20.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 805.00	31,800.00	640.00	9 months.
21.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 1251.00	27,000.00	540.00	9 months.
22.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 1122.00	27,600.00	550.00	9 months.
23.	Construction of V.R. Bridge at Ch. 1512.00	26,100.00	520.00	9 months.
24.	Construction of 3'-0" straight Glacis Fall cum V.R. Bridge at Ch. 996.00 ..	55,300.00	1,100.00	9 months.
25.	Construction of 5'-0" straight Glacis Fall cum V.R. Bridge at Ch. 1038.00 ..	50,800.00	1,020.00	9 months.
26.	Construction of 2'-0" straight Glacis Fall cum V.R. Bridge at Ch. 1642.00.	47,100.00	940.00	9 months.
27.	Construction of 2'-0" straight Glacis Fall cum V.R. Bridge at Ch. 1642.00 ..	48,400.00	970.00	9 months.
28.	Construction of 1'-0" Vertical Fall at Ch. 387.00	11,240.00	225.00	8 months.
	Group No. V			
29.	Construction of 16 Nos. E. type permanent quarters in Canal Colony at Morena.	1,20,000.00	2,400.00	9 months.
	Group No. VI			
30.	Construction of one C-1 and two D- type permanent quarters in Canal colony at Jora.	30,374.00	608.00	9 months.
31.	Construction of 6 Nos. E. type and 6 Nos. G. type permanent quarters in Canal Colony at Jora.	60,108.00	1,200.00	9 months.

Note:—If the Contractors tender for all the works included in any group, they have to give the percentage rebate on rates offered by them for works in that Group except for Groups I, V and VI, in case all the works in that Group are allotted to them.

Tenders should be accompanied with full amount of earnest money noted against each work in the form of receipted Treasury Challa or N.P.S.Cs. pledged to the Executive Engineer, Canal Construction Division II, Sheopurkalan, District Morena, M.P. for item 1 and the Executive Engineer, Canal Construction Division III, Birpur, District Morena, M. P. for item 2 to 5 and Executive Engineer, Canal Construction Division IV, Sabalgarh for item 6 to 31. The tender documents will be sold by the respective Executive Engineers only in their offices during office hours from 31st March, 1960 to 15th April 1960 on payment of Rs. 5/00 per each set which will be nonrefundable. The tenders will be opened in the office of the undersigned at 4-30 P.M. on 16th April, 1960 in presence of such of the tenderers or their representatives who may be present.

The right to accept any or reject all the tenders rests with the Department.

Y. G. MANE,
Superintending Engineer.

139 (14-15)

और अब तरल पदार्थ मापने के मेट्रिक पैमाने

तरल पदार्थ मापने के मेट्रिक पैमाने—लिटर—का प्रयोग अप्रैल, १९६० से शुरू हो जायगा। जबकि रंग-रोगन और पेट्रोल उद्योग मेट्रिक प्रणाली अपना लेंगे।
तब से रंग-रोगन लिटरों के हिसाब से बिका करेगा और पेट्रोल का वितरण भी लिटरों के हिसाब से होगा।

परिवर्तन तालिका

१ गैलन = लगभग ४½ लिटर

१ लिटर = १,००० मिलिलिटर

तरल औंस	मिलिलिटर (मिलि०) (निकटतम मिलि० तक)
१	२८
२	५७
३	८५
४	११४
५ (=१ गिल)	१४२

गिल	मिलिलिटर (मिलि०) (निकटतम मिलिलिटर तक)
१	१४२
२	२८४
३	४२६
४ (=१ पिण्ट)	५६८

पिण्ट	लिटर (लि)	मिलिलिटर (निकटतम मिलि० तक)
१	...	५६८
२(=१ क्वार्ट)	१	१३६

क्वार्ट	लिटर	मिलिलिटर (निकटतम मिलि० तक)
१	१	१३६
२	२	२७३
३	३	४०९
४ (=१ गैलन)	४	५४६

मिलिलिटर	तरल औंस निकटतम ⅓ (तरल औंस तक)
१०	⅓
२०	⅔
३०	१
४०	१⅓
५०	१⅔
६०	२
७०	२⅓
८०	२⅔
९०	३⅓
१००	३⅔

मिलिलिटर	पिण्ट	गिल	तरल औंस (निकटतम ½ तरल औंस तक)
२००	–	१	२
३००	–	२	½
४००	–	२	४
५००	–	३	२½
६००	–	४	१
७००	१	०	४½
८००	१	१	३
९००	१	२	१½
१०००(=१ लिटर)	१	३	–

गैलन	लिटर	मिलिलिटर (निकटतम १० मिलि० तक)
१	४	५५०
२	९	९०
३	१३	६४०
४	१८	१८०
५	२२	७३०
६	२७	२८०
७	३१	८२०
८	३६	३७०
९	४०	९१०
१०	४५	४६०

गैलन	लिटर	मिलिलिटर (निकटतम १०० मिलि० तक)
२०	९०	९००
३०	१३६	४००
४०	१८१	८००
५०	२२७	३००
६०	२७२	८००
७०	३१८	२००
८०	३६३	७००
९०	४०९	१००
१००	४५४	६००

लिटर	गैलन	क्वार्ट	पिण्ट	गिल (निकटतम गिल तक)
१	–	–	१	३
२	–	१	१	२
३	–	२	१	१
४	–	३	१	–
५	१	–	–	३
६	१	१	–	२
७	१	२	–	१
८	१	३	–	–
९	१	३	१	३

लिटर	गैलन	क्वार्ट	पिण्ट (निकटतम पिण्ट तक)
१०	२	१	–
२०	४	१	१
३०	६	२	१
४०	८	३	–
५०	११	–	–
६०	१३	१	–
७०	१५	१	१
८०	१७	२	१
९०	१९	३	–
१००	२२	–	–

अपनाइये मेट्रिक प्रणाली

सरलता व एकरूपता के लिए

● भारत सरकार द्वारा प्रसारित

DA 59/377

सिविल जज द्वितीय श्रेणी करेरा, का न्यायालय

रूप क्रमांक ४ दीवानी.

वाद कारणों की नियत करने के लिये आव्हान-पत्र

(समन्स)

(संपत्ति संबंधी विधि के संग्रह की धारा ६४ व ६६ देखिये)

प्र. क्र. ९७।५८ (सीगा) इ. दी.

उनवान मुकद्दमा

नाम १. बाबूलल, २. विष्णुचरण पिता का नाम १. पन्नालाल, २. प्यारेलाल, जाति १. वैश्य. २ ब्राह्मण, निवासीगण करेरा––वादी।

विरुद्ध

नाम धन्नूसिह आदि पिता का नाम सुल्तानसिंह आदि, जाति ठाकुरान, निवासी कडोरा--प्रतिवादो

वाद का विवरण ६२५.६० न. पै.

नाम करनसिंह पुत्र धन्नूसिंह, ठाकुर, निवासी हाल छोटी ग्वाल टोली, इन्दौर के नाम प्रकट हो कि वादी ने आपके नाम एक वाद ऋण के विषय में प्रस्तुत किया है।

इसलिये आपको आज्ञा दी जाती है कि आप दिनांक८अप्रेल,१९६० को दोपहर के पूर्व ११ बजे स्वयं या नियमानुसार सक्षम वकील के द्वारा जो मामले से अवगत वाकिफ किया गया हो और जो मामले से संबंधित सब बातों का उत्तर दे सके या जिसके साथ कोई और व्यक्ति हो जो सब प्रश्नों का उत्तर दे सके उपस्थित हो और उक्त वादी के वाद का उत्तर दो।

और आपको अनिवार्य है कि उसी दिन ऐसी सब लिखतमें प्रस्तुत करें जिनके आधार पर आप अपने विवाद का समर्थन करना चाहते हैं।

और आपको सूचित किया जाता है कि यदि उक्त दिन आप उपस्थित न होंगे तो आपकी अनुपस्थिति में मामले की सुनवाई और निर्णय होगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा से आज दिनांक १५ मार्च, १९६० को जारी किया गया।

सिविल जज द्वितीय श्रेणी,
करेरा (मध्यप्रदेश)

(१४६-१५)

नोटिस

अदा. तेह. भिण्ड रजि० शुदा दिनांक १५ अक्टूबर, १९५९ ई० का द० प्रमाण पत्र मि० नं० ४७।५७ इ० फौ० विरोध में निरस्त हो कोई सा० ऋगदता न बने जब तक तारीख १६ जनवरी, १९६० ई० का नोटिस निर विरोध प्रकाशित न हो अवधि ३० योम की प्रदान की जाती है। फक्त ता० १४ मार्च, १९६० ई० अकोढ़ा।

द. केदारनाथ कॉं०

खजुराहो

विश्वविख्यात स्थापत्यकला की अनुपम देन

यदि आपने कभी खजुराहो के विख्यात मंदिर नहीं देखे, तो यह पुस्तक अवश्य देखिये

यदि देखे हैं

तो उनकी स्मृति इस पुस्तक से ताजा रखिये

रायल अठपेजी, आर्ट पेपर पर मुद्रित १०२ प्लेट

अंग्रेजी और हिन्दी में

मंदिरों के इतिहास का मनोरंजक परिचय

नयनाभिराम मुद्रण : आकर्षक जिल्द : मूल्य १० रुपये

प्राप्तिस्थान

व्यवस्थापकः––प्रकाशन शाखा, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय,
जयाजी चौक, ग्वालियर, म० प्र०

कोमल चमड़ीके बाल निकालनेके लिये..
बादशाही
साबू, पावडर, लोशन
सर्वोत्तम हैं...

सुवासित बादशाही बालसफा पाउडर के इस्तेमाल से फालतू बाल भली भाँति बिना किसी कठिनाई के निकल जाते हैं।

आधुनिक ढंग से दुर्गन्ध निकाल कर खुशबू से प्रभावित किये हुए बादशाही पाउडर को इस्तेमाल कर अपनी मुलायम चमड़ी को सुरक्षित रखें।

सी. सी. महाजन,
एण्ड कम्पनी, बम्बई.—२

सफेद दाग

सतत् परिश्रम एवं खोज के बाद सफेद दाग की औषधि का निर्माण किया गया है। सन् १९३५ से हजारों ने इसका अनुभव करके लाभ उठाया है। दवा का मूल्य ६ रुपया विशेष जानकारी के लिए विवरण पत्र मुफ्त मंगाकर देखें। नक्कालों से सावधान रहें। (२५)
वद्य बी. आर. बोरकर, आयुर्वेद भवन
मु. पो. मंगरूलपीर, जिला अकोला (विदर्भ)

मध्यप्रदेश का तीव्र औद्योगिक विकास

(पृष्ठ १२ का शेष)

में औद्योगिक विकास की चिनगारी प्रज्वलित होने लगी है। सार्वजनिक क्षेत्र में उर्वरक कारखाने की स्थापना की भी सम्भावना है। निजी क्षेत्र में भी, कागज की मिलें, सीमेन्ट कारखाने, उर्वरक कारखाना, गन्धक अम्ल कारखाना जैसे नये कारखानों की स्थापना की सम्भावना है। राज्य में खनिज, वन तथा कृषि-सम्बन्धी जिन महान् साधनों का अभी विकास करना है, उन्हें ध्यान में रखते हुए हम अत्यधिक प्रगति करके अतीत से भी अधिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं। यहां राऊघाट तथा बैलाडिला क्षेत्र में अशोधित लोहे के भण्डार तथा अमरकंटक क्षेत्र के बाक्साइट भण्डार भी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये भण्डार विशाल तथा उत्कृष्ट कोटि के हैं। यदि इन खनिजों के विकास के लिए इन भण्डारों के निकट उद्योग आरम्भ किये जा सकें तो उनसे न केवल देश की अतिवांछित आवश्यकताओं की पूर्ति होगी, बल्कि अभी जो अविकसित क्षेत्र हैं, उनका भी विकास होगा और लोगों को अति आवश्यक रोजगार मिलेगा।

चम्बल ग्रिड क्षेत्र में

चम्बल घाटी योजना से लगभग ७ लाख एकड़ भूमि की सिंचाई सम्भव हो सकेगी, एवं लगभग २.१२ लाख किलोवाट विद्युत्शक्ति उपलब्ध हो सकेगी (इसका आधा हिस्सा अर्थात् १.५ लाख किलोवाट विद्युत् मध्यप्रदेश को प्राप्त होगी)। इस कार्य के लिये सर्वेक्षण कार्य आरम्भ किया जा चुका है तथा इस सर्वेक्षण के आधार पर मण्डल को इस बात की जांच करनी पड़ेगी कि इस क्षेत्र में उद्योगों के विकास के लिये कौन से कदम उठाए जा सकते हैं।

ग्रामीण औद्योगिक संस्थान

किन्तु हमारे सामने इससे भी अधिक महत्वपूर्ण समस्या, पिछड़े हुए क्षेत्रों का विकास करना है। पूर्व में बस्तर तथा रायगढ़ क्षेत्र एवं पश्चिम में अलीराजपुर तथा झाबुआ क्षेत्र जैसे राज्य के विशाल भूखण्ड विकास की अत्यन्त प्रारम्भिक अवस्था में हैं। राज्य के औद्योगिक विकास के लिये कोई भी योजना बनाते समय इन पिछड़े भू-भागों के विकास की ओर विशेष ध्यान देना पड़ेगा।

मुझे जरा भी सन्देह नहीं है कि मण्डल इन विभिन्न पहलुओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेगा तथा राज्य के शीघ्र विकास के लिये एक व्यावहारिक योजना तैयार करेगा तथा इसे तीव्र गति से कार्यान्वित करने हेतु प्रभावशाली सुझाव देगा। जब तक कोई योजना व्यावहारिक नहीं होती अथवा उसे कार्यान्वित नहीं किया जाता, उसका कोई अर्थ नहीं होता। हमारे समक्ष बहुत बड़ा कार्य है, परन्तु उसे सभी ओर से सुनिश्चित् प्रयास किए जाने पर ही पूरा किया जा सकता है।

शिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

(पृष्ठ १७ का शेष)

योजनानुसार, एक वर्ग में, इन क्षेत्रों में सहकारी समितियों के वर्तमान सदस्यों एवं संभावित सदस्यों को एकत्रित्त किया जाकर, एक ही स्थान पर, तीन दिन तक शिक्षण दिया जाता है। दूसरे वर्ग में प्रबंधक कमेटियों के सदस्यों, जिन पर सहकारी समितियों के संचालन की जिम्मेदारी आयद होती है, उन्हें उनके कर्त्तव्यों एवं अधिकारों के सम्बन्ध में शिक्षण की व्यवस्था की गई है। इस पाठ्यक्रम की अवधि एक सप्ताह रखी गई है। तीसरे वर्ग में उन पदाधिकारियों के शिक्षण का प्रबंध निर्धारित किया गया है, जिनके कंधों पर, सहकारी-आंदोलन को उस क्षेत्र में सक्षमता के साथ अग्रसर करने की और भी अधिक जिम्मेदारी है। यह पदाधिकारीगण, प्राथमिक सहकारी समितियों के अध्यक्षणगण, अवैतनिक मंत्री आदि हैं, जिन्हें सहकारिता के सिद्धांतों एवं कार्यप्रणाली की समुचित जानकारी के साथ-साथ सहकारी अधिनियम, व्यवसाय और हिसाब-किताब संबंधी शिक्षा की व्यवस्था की गई है। इनके प्रशिक्षण-काल की अवधि ५ सप्ताह रखी गई है।

उक्त शिक्षण योजनाओं को, अपने-अपने क्षेत्र में, राज्यों में सहकारी कार्यकताओं के संघ तथा संभागीय संघ, अखिल भारतीय सहकारी संघ के मार्ग-दर्शन में संचालित करते हैं। प्रत्येक प्रशिक्षण वर्ग में वर्गों की संख्या और उसके अंतर्गत शिक्षित किये जानेवाले सदस्य तथा पदाधिकारियों की संख्या के वार्षिक लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं, जिससे कार्यक्रम की सार्थकता के बारे में निश्चित् जानकारी प्राप्त होती रह सके।

सहकारिता शिक्षण के इन वर्गों के अलावा सहकारी सम्मेलनों, परिसंवाद गोष्ठियों, सामूहिक चर्चाओं एवं सहकारी विद्वज्जनों के भाषण इत्यादि का भी आयोजन किया जाता है, जिससे जनता में आंदोलन के प्रति सजगता बनी रहे और वे अधिकाधिक संख्या में सहकारी समितियों के सदस्य बनें। शिक्षण कार्य को सुलभ एवं प्रभावपूर्ण बनाने के हेतु छोटी पुस्तिकाओं के प्रकाशन एवं अन्य शिक्षा-साधनों को प्रयुक्त किया जाता है।

मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ ने सहकारिता विषयक जन-शिक्षा की इस विशाल योजना को कार्यान्वित करने का भार अपने पर लिया है, जिसमें उसे अखिल भारतीय सहकारी संघ एवं राज्य शासन से समुचित सहायता प्राप्त होकर उत्साहवर्द्धक सफलता प्राप्त हो रही है। राज्य सहकारी संघ, इस कार्य को अनेक विकास-खंडों और ग्राम-समूहों, में, संभागीय सहकारी संघों की देख-रेख में पूरी कर रहा है।

इस संदर्भ में यह अपेक्षा की जा रही है कि राज्य शासन स्कूल और कालेजों में छात्रों को सहकारिता के सैद्धांतिक और व्यवहारिक प्रशिक्षण के लिये मार्ग प्रशस्त किये जाने पर समुचित विचार करेगा, ताकि कल के नागरिक यह छात्र सहकारिता के प्रारंभिक ज्ञान को इन शिक्षण-शालाओं में प्राप्त कर सकें। आगे आनेवाले उत्तरदायित्व का वे भली प्रकार निर्वाह कर सकेंगे और पारस्परिक सहयोग की भावना का पाठ उन्हें इन शालाओं से ही प्राप्त हो सकेगा।

(ग० रजि०) बोर्ड का डिप्लोमा एवं शिक्षा प्राप्त कर सफल चिकित्सक बनिये

१५ दिन में इन्जेक्शन लगाना, बनाना, स्टेथिस्कोप, थर्मामीटर, डूस (एनीमा), मूत्र परीक्षा, वक्षपरीक्षा, नाड़ी परीक्षा एवं अन्य चिकित्सोपपयोगी विषयों का लेखन एवं प्रत्यक्ष कर्माभ्यास के द्वारा पर्याप्त ज्ञान करके (ग. रजि.) बोर्ड का डिप्लोमा, सिरेज नीडिल, मूत्र परीक्षा नली तथा ४८ उपयोगी इन्जेक्शनन्स मुफ्त भेंट स्वरूप प्राप्त कीजिये। फीस ५१।।) रुपये है। ठहरने की उत्तम व्यवस्था फ्री है।

शीघ्र ही १०) रुपये भेज कर प्रवेश स्वीकृति मंगा लें। अनुभवी चिकित्सक घर बैठे ही वैद्य, विशारद, भूषण, शास्त्री, रत्न, तथा होम्योपैथिक और यूनानी डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए नियमावली फार्म आदि मुफ्त मंगा लें।

अ० भा० एस० एस० विद्यापीठ बी परीक्षा बोर्ड,
(१३३-१४) ललितपुर (झांसी)

बहुउद्देशीय तवा योजना

(पृष्ठ ६ का शेष)

प्रगति

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में इस योजना के निर्माण के लिए ४.०० करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया। राज्य ने अपनी प्रशासकीय स्वीकृति अगस्त, ५६ में दे दी और कार्य को हाथ में लेने का निर्देश दे दिया। मूल प्रस्ताव मुख्य प्रवाह-स्थल के दोनों ओर पर मिट्टी की दीवार से कांक्रीट बाँध निर्माण करने का था। पिछले दो मौसमों के विस्तृत पर्यवेक्षण से विदित हुआ कि दायीं ओर जलद्वार का निर्माण करना और मुख्य प्रवाह-स्थल से जलद्वार तक मिट्टी के बांध का निर्माण-कार्य जारी रखना सुरक्षित एवं मित-व्यीय रहेगा। इसी प्रकार बांध के जलद्वार के निर्माण में सीमेन्ट कांक्रीट के स्थान पर सीमेन्ट में ईंट और पत्थर मिलाकर प्रयोग किया जाय, तो अच्छा रहेगा। निर्माण की बाद की यह पद्धति देश की मुद्रा को विदेशी मुद्रा-विनिमय से बचाएगी, नहीं तो अगर सीमेन्ट से बांध निर्मित किया गया, तो प्रयोग में आनेवाली सामग्री आयात करनी पड़ेगी। अच्छे पत्थरों की खानों की खोज एवं व्यवस्था की जा चुकी है। अच्छे किस्म की बहुत-सी बालू भी स्थानीय रूप से प्राप्य है। बांध के लिए जिस प्रकार की मिट्टी की आवश्यकता है, उस प्रकार की विभिन्न गुणोंवाली मिट्टी की खदानों की खोज हो चुकी है और उन मिट्टियों का विश्लेषण किया जा चुका है। बांध के नीचे की ओर तवा पर बनाए जानेवाले पुल के रेखाचित्र, एवं व्यय के प्राक्कलन का कार्य भी समाप्त हो चुका है। आशा की जाती है कि बांध के निर्माण के समय यह पुल आदमियों एवं सामान को एक किनारे से दूसरे किनारे पर लाने-लेजाने के लिए सुविधाजनक रहेगा। लगभग दस हजार मजदूरों और अधिकारियों की आवास-व्यवस्था हेतु बस्ती-निर्माण के प्रारंभिक प्रस्ताव भी पूरे हो चुके हैं। बस्ती-निर्माण के अभिन्यास का कार्य शासकीय वास्तु-कला विशेषज्ञ के सहयोग से किया जा चुका है। बांध तक जानेवाली सम्पर्क-सड़क के लिए, पर्यवेक्षण, भू-मापन, प्ररचन तथा व्यय प्राक्कलन का कार्य समाप्त हो चुका है। उपयोगी वस्तुओं जैसे पत्थर, सीमेन्ट और अन्य आवश्यक वस्तुओं को होशंगाबाद की पत्थर की खदानों से बांध-स्थल तक लाने ले जाने के लिए रेलवे क्या सुविधा देगी, इस पर रेलवे अधिकारियों से वार्ता प्रारंभ हो गई है। मध्यप्रदेश विद्युत्-मंडल ने इटारसी से कार्यस्थल तक करीब १५ मील की दूरी में निर्माण-कार्य को विद्युत्-शक्ति की पूर्ति हेतु बिजली की लाइन डालना प्रारंभ कर दिया है।

केन्द्रीय जल एवं विद्युत् आयोग ने बांध तथा अन्य निर्माण-कार्य के लिए विस्तृत रूप-रेखा प्रदान करने का कार्य अपने हाथ में ले लिया है। आयोग के अधिकारियों ने विभिन्न अवसरों पर कार्य-स्थल का निरीक्षण किया है और स्थानीय अधिकारियों से परामर्श के उपरान्त योजना की रूपरेखा तैयार करने में सहायता पहुंचानेवाली समस्त आवश्यक सामग्री एकत्रित की है।

योजना का प्रतिवेदन एवं संशोधित अनुमान तैयार किया जा रहा है, जिसके कि शीघ्र ही पूर्ण होने की आशा की जाती है, तत्पश्चात् उसे क्रियान्वित करने के लिए कदम उठाए जायंगे। ऐसी आशा की जाती है कि प्रारंभिक कार्यों जैसे—सम्पर्क-सड़कें, निर्माण-पुल, बस्ती-निर्माण आदि की क्रियान्विति आगामी शीतकाल से प्रारम्भ कर दी जायगी और बांध का निर्माण-कार्य १९६० के शीतकाल तक प्रारम्भ हो सकेगा।

सूचना

हमने जगन्नाथप्रसादजी पुत्र छुट्टोलालजी, ब्राह्मण, निवासी चांचौड़ा को मुख्त्यारआम नियुक्त किया था उन्होंको मुख्त्यारआम से तथा नौकरी से अलग कर दिया है जिसे एक मास व्यतीत हो चुका है यदि हमारे नाम से कोई व्यवहार या ट्रान्जेक्शन करेंगे तो हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं होगी और हमारे नाम पर कोई कारोबार करने, लेनदेन करने का कोई अधिकार नहीं रहा। आम लोगों के सूचनार्थ यह प्रकाशन किया जाता है। फ. ता. ८-३-६० ।

(१) महिला भत्तरी विधवा घीसालालजी, ब्राह्मण पंडा, निवासी चांचौड़ा, (२) राजकुमार उर्फ देवकीनन्दन दत्तक पुत्र घीसालालजी, ब्राह्मण पंडा, निवासी चांचौड़ा।

१४९—१५

II—217
C.J.E.

SUMMONS FOR SETTLEMENT OF ISSUES TO APPEAR IN PERSON

सिविल जज द्वितीय श्रेणी चाचौडा मध्यप्रदेश

(Code of Civil Procedure,
OrderV.Rules 1 and 5
Rule 7)

Civil Suit No. 2/60 of 1960.

In the Court of Civil Judge II class Chanchora.

Noor Mohd.Punjare Kumbraj Plaintiff.

Vs.

Afatshai Faqierunarsee .. Defendant

To Afat Sahi S/oBahadur Sha, Faquir Kunbraj at Present. unarsee Tehsil, Raghogarh, Near Kaladeve.

Whereas the plaintiff above named has instituted a suit against you for Rupees two hundred you are hereby summoned to appear in this Court in person or by pleader duly instructed and able to answer (or accompanied by person able to answer) all material questions relating to the suit on the 4th April, 1960 at 11 A. M. to answer the claim and you are directed to produce on that day all the documents upon which you intend to rely in support of your defence.

Take notice that in default of appearance as afore-said, the suit willbe heard and determined in your absence.

Given under the seal of the Court, this 10th March, 1960.

व्ही. डी. वाजपेयी,
सिविल जज द्वितीय श्रेणी,
चांचोड़ा मध्यप्रदेश.

भारत सरकार से "रजिस्टर्ड"

सफेद दाग

यह हमारी दवा सन् १९३६ से प्रसिद्ध है इस दीर्घकाल में हजारों ने इसकी परीक्षा की और प्रशंसा-पत्र भेजे हैं। आप भी एकबार अनुभव कर देखें। मूल्य ५ रुपये। अधिक विवरण मुफ्त मंगाकर देखिये।

वैद्य के. आर. बोरकर (मध्य.),
मु. पो. मंगरूलपीर, जि. अकोला (विदर्भ)

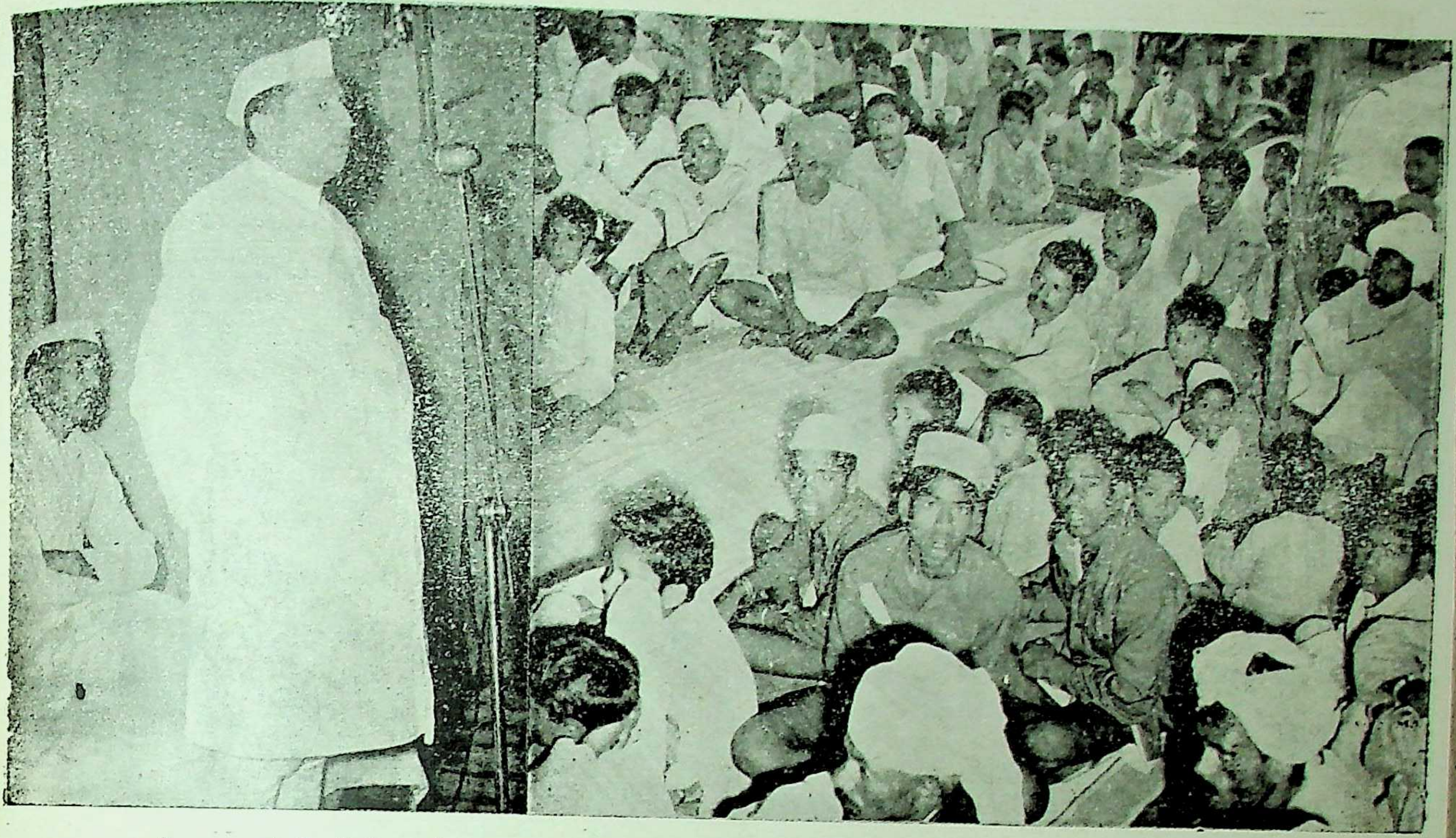

नाहं बाग फार्म में कृषि-दिवस के अवसर पर कृषकों के समक्ष भाषण देते हुए उप-कृषि मंत्री श्री श्यामसुन्दर नारायण मुशरान

उप-वन मंत्री श्री सज्जनसिंह विश्नार बसवाडा ग्राम में सिख-बंजारसम्मेलन के अवसर पर भाषण देते हुए

Registered No. J. 158
Licenced to post Without Prepayment

MADHYA PRADESH SANDESH

वार्षिक मूल्य छः रुपये
Licence No. P. P 1.

झांसी की वीरांगना लक्ष्मीबाई का

तिरंगा चित्र खरीदिये

आकार १३×१९ इंच आर्ट पेपर पर मुद्रित

मूल्य एक रुपया मात्र

डाक-व्यय पृथक् ७५ नये पैसे

प्राप्ति-स्थानः—प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग,

जयाजी चौक, लश्कर (ग्वालियर)

यदि आप भारत के हृदयस्थल मध्यप्रदेश के

गौरवमय अतीत की गाथाओं से परिचय प्राप्त करना चाहते हैं तो इस विभाग द्वारा प्रकाशित

'मध्यभारत का इतिहास (प्रथम भाग)' पढ़िये।

(पृष्ठ संख्या ६३८, चार रंगों का कलापूर्ण आकर्षक आवरण, बाग गुफा के ३ तिरंगे चित्र व
अन्य अनेक अप्राप्य प्राचीन चित्रों से सुसज्जित)

मूल्य चौदह रुपये (डाक-व्यय दो रुपये अतिरिक्त)

प्राप्ति स्थानः—व्यवस्थापक, प्रकाशन शाखा, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय,
जयाजी चौक, ग्वालियर म० प्र०

प्रबंध सम्पादक—ईश्वरसिंह परिहार, संचालक, सूचना एवं
प्रकाशन संचालनालय, मध्यप्रदेश
सम्पादक—अनन्त मराल शास्त्री

देवेन्द्र नारायण वाजपेयी, मुख्य सम्पादक, सूचना-प्रकाशन संचालनालय म. प्र.
द्वारा प्रकाशित तथा गवर्नमेंट रीजनल प्रेस, ग्वालियर द्वारा मुद्रित
एक प्रति का मूल्य—१३ नये पैसे

6-4-60

GURUKULA KANGRI LIBRARY

14 82
4 60
22

मध्यप्रदेश सन्देश

ग्वालियर, शनिवार, २ अप्रैल, १९६०
वर्ष ४] १३ चैत्र, १८८२ [अंक १६

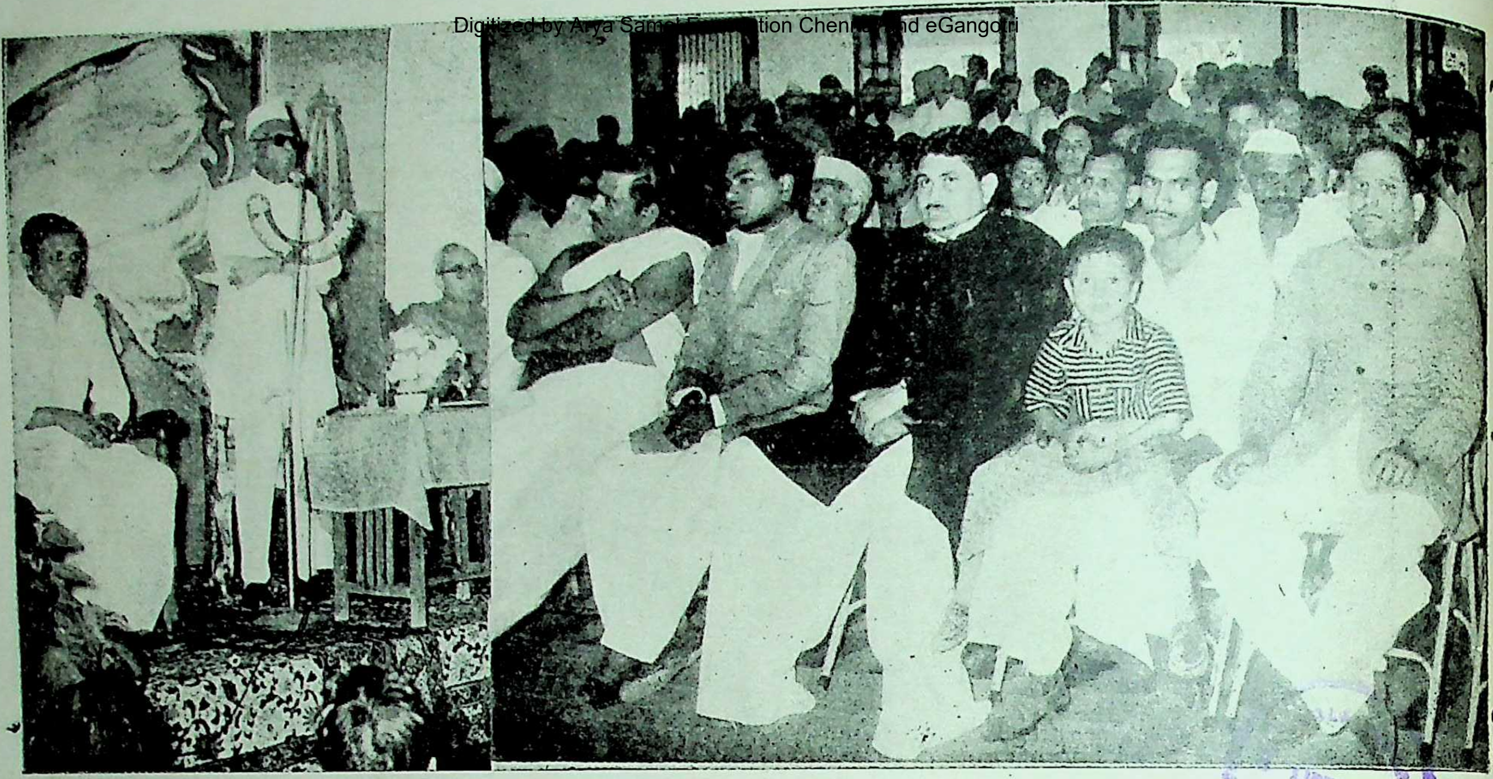

छतरपुर नगरपालिका द्वारा आयोजित एक सभा में भाषण करते हुए मध्यप्रदेश के राज्यपाल श्री हरि विनायक पाटसकर

* * *

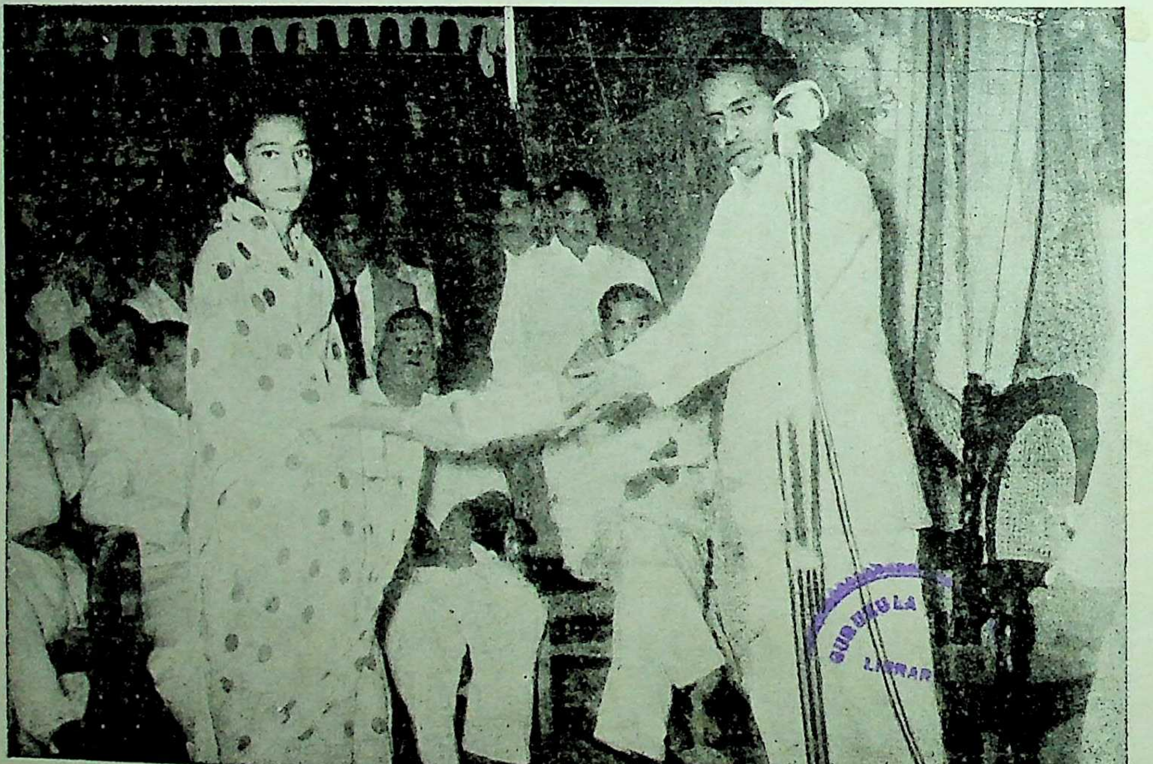

महाराजा महाविद्यालय, छतरपुर के रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर पुरस्कार वितरित करते हुए
उप-लोककर्म मंत्री श्री दशरथ जैन

सचित्र साप्ताहिक
मध्यप्रदेश सन्देश

भारतीय वायुसेना-दिवस

आधुनिक युग में किसी भी राष्ट्र की शक्ति के न्यूनाधिक की जानकारी उसकी वायुसेना के बल द्वारा ही प्रगट होती है। आज के युग में वायुसेना का बहुत अधिक महत्त्व है। संसार के शक्तिशाली राष्ट्रों में वायुबल की वृद्धि की प्रतियोगिता रही है, जो अब भी जारी है। वायुसेना के विमानों की उपयोगिता केवल युद्ध के लिए ही नहीं होती, हमारे देश के किसी क्षेत्र में जब-जब भयंकर बाढ़ आई है तो घिरे हुए बाढ़-पीड़ितों को भोजन आदि सामग्री शीघ्रातिशीघ्र पहुंचाने का कार्य वायुयानों से लिया गया है। अतः वायुसेना का शान्तिकाल में भी महत्त्व है।

वायुसेना-दिवस मनाने से हमें इस बात का पता चलता है कि वायुसेना की स्थापना के दिन से आज तक इस क्षेत्र में क्या कार्य हुआ है और किस गति से प्रगति हो रही है। वायुसेना अवस्था में हमारी सब से छोटी सेना है, जिसने अपने जीवन के २७ वर्ष पूर्ण कर लिये हैं, किन्तु इन सत्ताईस वर्षों में उसने जो कार्य किया है, उसपर सारे देश को गर्व है। इसका जन्म सत्ताईस वर्ष पूर्व १ अप्रैल १९३३ को हुआ था, जबकि इसमें केवल ६ चालक, १९ वायुसैनिक और केवल ४ पुराने विमान ही थे। धीरे-धीरे इसका विस्तार होता रहा। दूसरा महायुद्ध समाप्त होने तक वायुसेना में नौ स्क्वाड्रन हो गये। किन्तु देश की स्वतंत्रता के बाद, विभाजन के कारण वायुसेना की काफी क्षति हुई। इसके अतिरिक्त इसका संगठन भी काफी अस्तव्यस्त हुआ, किन्तु इसे फिर से सुसंगठित करने के लिए यथाशक्ति प्रयास किये गए और इसे संभलने में अधिक देर नहीं लगी।

सन् १९४९ में भारतीय वायुसेना का पुनर्गठन हुआ और प्रादेशिक कमानों को समाप्त करके इसे ट्रेनिंग और परिचालन कमानों में बांटा गया। सन् १९५५ में मेन्टेनेन्स (मरम्मत) कमान स्थापित की गई। कुछ समय पूर्व ही पूर्वी एयर कमान स्थापित की गई है। फलस्वरूप भारतीय वायुसेना का संगठन और भी उत्तम हो गया है।

आजकल वायुसेना में जेट वायुयानों का महत्त्व बढ़ गया है। अतः संसार के सभी उन्नत राष्ट्रों की वायुसेनाएँ जेट विमानों से सुसज्जित की गई हैं। भारतीय वायुसेना में भी उनके महत्त्व को ध्यान में रखकर जेट विमानों का समावेश किया गया। फलस्वरूप अब हमारे देश की वायुसेना में सभी जेट विमान हैं। पहले भारतीय वायुसेना में हार्ट, हरिकेन, डकोटा, वेजेंस, स्पिटफायर और टेम्पेस्ट आदि सभी विमान बारी-बारी से आए। सन् १९४९ में इसमें जेट-चालित 'वैम्पायर' विमान आए। तब से इसमें बराबर नये ढंग के विमान लिये जा रहे हैं। इस समय भारतीय वायुसेना में तूफानी, मिस्टर, हन्टर, नैट और कैनबरा जैसे संसार के उत्तम से उत्तम विमान हैं। इसके अतिरिक्त फेयर चाइल्ड सी-११९ और वाइकाउंट परिवहन विमान भी हैं।

वायुसेना की शक्ति को पूर्ण रूप देने के लिए वायुसैनिकों को युद्ध-कौशल की उत्तम से उत्तम ट्रेनिंग देना आवश्यक होता है। इसके लिए सन् १९४९ में हर प्रकार की ट्रेनिंग देने की योजना बनाई गई। फलस्वरूप यहां विमानों को उड़ाने, उनकी देखभाल करने और उनके शिल्प की शिक्षा के अनेक केन्द्र खुले। इनमें पर्याप्त संख्या में देश के सैनिकों को ट्रेनिंग देने के साथ ही पड़ोसी देशों के सैनिकों को भी ट्रेनिंग दी जाती है। फलस्वरूप हमारे देश में अब अफगानिस्तान, बर्मा, मिश्र और इंडोनेशिया के वायुसैनिक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

भारतीय स्थल सेना और नौसेना की भांति वायुसेना में भी छात्र-सैनिक और सहायक सैनिक दस्ते खोले गये। छात्र सैनिक दस्तों में छात्रों को वायुसेना का काम सीखने का मौका मिलता है और सहायक दस्तों की स्थापना से देश में दूसरी पंक्ति तैयार हुई है।

भारतीय वायुसेना की शक्ति को बढ़ाने के लिए हमारी राष्ट्रीय सरकार पर्याप्त ध्यान दे रही है। इसकी उन्नति एवं कुशलता का श्रेय इसके ट्रेनिंग केन्द्रों, इंजीनियरी तथा सामान विभागों, आधुनिक ढंग के हवाई-अड्डों और अन्य अंगों को है। भारतीय वायुसेना अपनी कार्य-कुशलता में संसार के किसी भी राष्ट्र की वायुसेना से कम नहीं है। कश्मीर-युद्ध में, अकाल और बाढ़-ग्रस्त इलाकों में सामान गिराने में और अन्य कार्यों में उसने अपनी असामान्य दक्षता का परिचय दिया है। इस प्रकार हमारी वायुसेना निरन्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर हो रही है। वह देश की स्वतंत्रता की सजग प्रहरी है। हमें आशा करनी चाहिए कि हमारी वायुसेना की गणना संसार के बड़े राष्ट्रों की वायुसेना के साथ निकट भविष्य में ही हो सकेगी।

मुखपृष्ठ का चित्र

मन्दसौर में यशोधर्मन का स्तम्भ

निर्माण की दिशा में

आज यह बात भी विद्वान् समझने लग गए हैं कि बच्चों की शिक्षा में संगीत बड़ा काम कर सकता है। शिक्षा-शास्त्री मानते हैं कि भय और दंड के वातावरण में व्यक्ति उतनी शीघ्रता और संलग्नता से ज्ञानअर्जन नहीं कर पाता, जितनी उस वातावरण में वह कर सकता है, जो उसके लिए आनन्दप्रद भी हो। इसलिए शिक्षाक्रम में कला के विभिन्न स्वरूपों को इस प्रकार बुना जाता है कि कलात्मक वातावरण से उत्पन्न आनन्दसे स्फूर्ति पाकर विद्यार्थी वहां सरस्वती की उपासना कर सकता है। अभी हमारे देश में विद्यालयों में इस पर उतना ध्यान नहीं दिया गया है और हमारी शिक्षा-व्यवस्था में कला तथा शिक्षा का इस प्रकार का गठबंधन करने का प्रयास नहीं किया गया है, जो संस्कृति और शिक्षा दोनों के लिए अत्यन्त हितकर है। अब समय आगया है, कि इस बारे में हम मौलिक रीति से विचार करें और कला का शिक्षा-पद्धति से ऐसा समन्वय करें, जिसमें नई पीढ़ी सुशिक्षित भी हो और सुसंस्कृत भी।

—राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसाद

मानव जाति एक है और लोगों को जाति, रंग तथा विभिन्न प्रभावों की उच्चता को त्यागना चाहिए। मानव का शरीर एक-सा है तथा उनके मानसिक प्रभाव की प्रायः एक जैसा ही है। अतः हमें अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति की स्थापना में इन बातों पर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

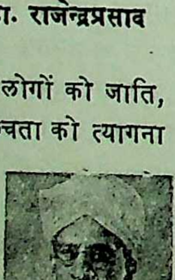

—डा० राधाकृष्णन्

देश के सीमावर्ती संकट से जनता को आर्थिक मोर्चों पर शिथिलता नहीं दिखानी चाहिए। किन्तु मैं एक कदम आगे बढ़कर कहूँगा कि उस संकट के कारण ही हमें अपना आर्थिक उत्पादन और बढ़ाना चाहिए। असल में तो देश की असली रक्षा आर्थिक और औद्योगिक मोर्चों पर आगे बढ़ने से ही होती है।

*

युवकों को चाहिए कि वे अनुशासन, संयम और श्रम की प्रतिष्ठा करना सीखें ; क्योंकि उन्हीं को निकट भविष्य में देश की प्रगति की बागडोर संभालनी है। भारत गाँवों में बसा है, इसलिए आप लोगों को गाँवों की ओर जाना चाहिए। भारत केवल तभी तरक्की कर सकता है, जबकि उसके गांव समृद्धि की ओर अग्रसर होंगे।

*

हमारी पीढ़ी के लोग अपने जीवन की संध्या की बेला में पहुंच गए हैं। अतएव देश के युवकों को अपनी वह जिम्मेदारी महसूस करनी चाहिए, जो उनके कंधों पर आनेवाली है। अतएव, अब उन्हें स्वयं का ऐसे ढ़ंग से निर्माण करना है कि वे इन भावी जिम्मेदारियों को अपने ऊपर ले सकें।

*

भाषाई विवाद, प्रांतीयता, जातीयता तथा विचारों की संकीर्णता देश को महज कमजोर बनानेवाली है। देश के युवकों को इन कमजोरियों से अपनी रक्षा करनी है तथा जो व्यक्ति गुमराह हैं, उनको प्यार, दुलार के साथ सही रास्ते पर लाना है। यदि लोगों ने अनुशासनहीनता तथा आपसी झगड़ों में ही अपने को फंसा लिया तो देश तो कमजोर होगा ही, साथ ही उसकी आजादी भी खतरे में पड़ जाएगी।

—श्री जवाहरलाल नेहरू

कोई भी देश तब तक आगे नहीं बढ़ सकता जब तक कि वह शिक्षा-क्षेत्र में प्रगति न कर रहा हो। विशेषतया महिलाओं में शिक्षा का प्रचार किया जाना हमारे देश के लिए बहुत आवश्यक है, क्योंकि स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् देश के कार्यो में प्रगति लाने के लिए सबसे प्रमुख कार्य उस दिशा में कदम बढ़ाना है।

*

जब कभी हमारे नेता विदेश जाते हैं तो उनसे खास-तौर पर भारत में महिलाओं के सम्बन्ध में पूछा जाता है कि सामाजिक तथा शैक्षणिक दिशा में भारत की महिलाएँ कहां तक पहुंची हैं। इससे स्पष्ट है कि बाहर के देश भारत के उत्थान के कार्यो की ओर बड़ी दिलचस्पी से देखते रहे हैं। हमें नवभारत का निर्माण करना है। हमारी भावी संतान पर ही भारी जिम्मेदारी आनेवाली है। अतः उन्हें विशेष तौर पर इसके लिए तैयार करना चाहिए।

—श्रीमती इन्दिरा गांधी

इस अंक में

क. शीर्षक एवं लेखक पृष्ठ संख्या
१. भारतीय वायुसेना की निरंतर उन्नति ५
२. मार्कण्डेय के वनराज सिंहशार्दूल ६
—श्री विजयगोविंद द्विवेदी
३. नाभिकमल की शक्ति (कविता) ७
—श्री नरेंद्र शर्मा
४. प्राचीनतम कथा के नवीनतम संकेत ८
—प्रा. राजनाथ पांडेय
५. किए का दुःख : इनकार की पीड़ा ! १०
—श्री प्रह्लादनारायण मित्तल
६. मालवी साहित्य में लोक पहेलियों का स्थान १६
—श्री तेजकुमार 'निर्मोही'
७. सिंचाई का अधिकाधिक उपयोग . . १७
८. मानव-सम्यता और संस्कृति पर विज्ञान का प्रभाव १८

भारतीय वायुसेना की निरंतर उन्नति

--विंग कमाण्डर वेद पी० भसीन

पहली अप्रैल १९३३ को ४- पुराने विमान, क्रोवेल में शिक्षित ६ अधिकारी और १९ हवाई सिपाहियों की एक टुकड़ी से भारतीय वायुसेना की शुरूआत की गई।

५ साल बाद इसमें दो और टुकड़ियां जोड़ी गईं और इस प्रकार इसके नम्बर १ स्क्वाड्रन की स्थापना हुई।

उस समय वायुसेना का मुख्य काम सेना को सहयोग देना था और इसी की ट्रेनिंग वायुसैनिकों को दी जाती थी। १९३७ और १९३९ में उत्तर-पश्चिमी सीमांत में कबायलियों से लड़ाई के समय वायुसेना के सैनिकों को पहली बार युद्ध का अनुभव हुआ। यह प्रदेश बड़ा दुर्गम है और यहां उड़ान में बड़ी कुशलता की जरूरत पड़ती है।

दूसरे विश्वयुद्ध तक वायुसेना का अधिक विस्तार नहीं हुआ। १९३९ में भी इसमें केवल १६ अधिकारी, २६९ वायुसैनिक और कुछ विमान थे। जब दिसम्बर १९४२ में, जापानी सेना बिल्कुल निकट आ गई, तब यहां शासन ने वायुसेना को बढ़ाने की कार्रवाई की।

फलतः सैनिकों को उड़ान सिखाने के लिए ट्रेनिंग स्कूल खोला गया और तटवर्ती प्रदेश की रक्षा के लिए कराची, जुहू, दमदम, मद्रास, कोचीन और विशाखापत्तनम् में हवाई दस्ते बनाए गए। इस प्रकार दो साल के अन्दर भारतीय वायुसेना में ९ स्क्वाड्रन हो गए, जिनमें ७ के पास हरिकेन विमान और दो के पास वेनजेंस बमवर्षक विमान थे।

विश्वयुद्ध में भारतीय वायुसेना

भारतीय वायुसेना बहुत छोटी थी और उसके साधन भी सीमित थे, फिर भी उसने दूसरे विश्वयुद्ध में बर्मा की लड़ाई में शत्रु सेना पर हमला करने, चित्र लेने और संदेश भेजने का काम बड़ी खबी से किया। इम्फाल और अराकान में इसने १४वीं सेना की बहुत मदद की। शत्रु के मोरचों, सामग्री-भण्डारों और रेलों आदि पर इसने बड़ी सफलता से हमले किए।

वायुसेना के इस कार्य के सम्मान में उसके नाम के आगे 'शाही' (रायल) शब्द जोड़ दिया गया (भारत गणराज्य बनने पर यह शब्द हटा दिया गया) युद्ध के बाद जापान पर अधिकार करने के लिए जो ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल की सेना भेजी गई, उसमें भारतीय वायुसेना का भी एक दस्ता शामिल किया गया।

विश्वयुद्ध के बाद

विश्वयुद्ध के खतम होने तक इसके ९ दस्तों में एक ट्रान्सपोर्ट (परिवहन) दस्ता भी जुड़ गया था और इसके अनेक ट्रेनिंग केन्द्र और मरम्मत डिपो आदि खुल गए थे। युद्ध के पहले की अपेक्षा, काफी बड़ी हो जाने पर भी देश की जरूरत को देखते हुए यह छोटी-ही थी।

युद्ध के बाद, इसमें ब्रिटिश वायुसेना के अफसरों, शिक्षकों और कारीगरों के स्थान पर भारतीयों को नियुक्त करने पर विशेष जोर दिया गया और अगस्त १९४७ तक इसका काफी भारतीयकरण हो चुका था। सन् १९५४ में एयर मार्शल सुब्रत मुकर्जी इसके पहले भारतीय सेनाध्यक्ष बने और यह पूर्ण रूप से भारतीय बन गई।

भारत के विभाजन से वायुसेना को भी काफी नुकसान हुआ। इसके दो दस्ते और अनेक केन्द्र पाकिस्तान में चले गए। इसके अलावा इसका संगठन भी काफी अस्त-व्यस्त हुआ, परन्तु इसे फिर से सुसंगठित करने के लिए डटकर प्रयत्न किए गए और इसे संभलने में ज्यादा देर नहीं लगी।

१९४९ में भारतीय वायुसेना का पुनर्गठन हुआ और प्रादेशिक कमानों को खतम करके इसे ट्रेनिंग और परिचालन कमानों में बांटा गया। सन् १९५५ में मेण्टेनेंस (मरम्मत) कमान स्थापित की गई। कुछ ही महीने पहले, पूर्वी एयर कमान स्थापित की गई है, जिससे इसका संगठन और अच्छा हो गया है।

नए विमान और ट्रेनिंग

भारतीय वायुसेना में अब सभी जेट विमान हैं। पहले इसमें हार्ट, हरिकेन, डकोटा, वेंजेंस, स्पिटफायर और टेम्पेस्ट आदि सभी विमान बारी-बारी से आए। सन् १९४९ में इसमें जेटचालित 'वैम्पायर' विमान आए। तब से इसमें बराबर नए ढंग के विमान लिए जा रहे हैं। इस समय इसमें तूफानी, मिस्टर, हण्टर, नैट और कैनबरा जैसे दुनिया के अच्छे से अच्छे विमान हैं। इसके अलावा फेयर चाइल्ड सी–११९ और वाइकाउन्ट परिवहन विमान भी हैं।

सैनिकों को युद्ध-कौशल की अच्छी से अच्छी ट्रेनिंग देना आवश्यक है। इसके लिए सन् १९४९ में हर प्रकार की ट्रेनिंग देने की योजना बनाई गई। फलस्वरूप यहां विमानों के उड़ाने, देख-भाल करने और उनके शिल्प की शिक्षा के अनेक केन्द्र खुले। इनमें पर्याप्त संख्या में देश के सैनिकों को ट्रेनिंग देने के साथ ही पड़ोसी देशों के सैनिकों को भी ट्रेनिंग दी जाती है।

भारतीय वायुसेना के दस्तों ने मित्र देशों की यात्राएं की हैं। कोरिया और हिंदचीन में इसने शांति कराने में भी सहायता दी।

स्वराज्य के बाद वायुसेना में भी छात्र-सैनिक और सहायक सैनिक दस्ते

(शेष पृष्ठ २९ पर)

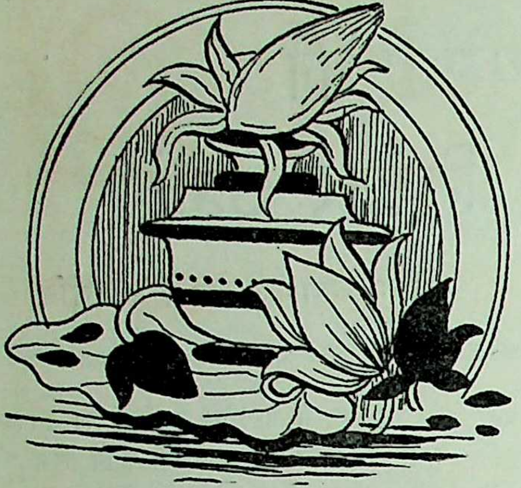

मार्कण्डेय के वनराज सिंहशार्दूल

--श्री विजयगोविंद द्विवेदी

मार्कंडेय पुराण का रचनास्थल विंध्याचल पर्वत का पृष्ठ देश है जिसके वनों की सिंहशार्दूल जुष्ट होने की प्रसिद्ध रही है (वाल्मीकि रामायण ४।५०।२)। पुराण के रचनाकाल के भारतीय वनों में सिंह और व्याघ्रों की बहुलता है (मार्कं. पुराण ७१।१४)। इन हिंस्र प्राणियों की विभीषिका इनके श्वापद (वही १।४५), अर्थात् कुत्ते जैसे पंजोंवाले होने के कारण अधिक रही है। श्वापद जंतुओं की श्रेणी का नाम सिंहशार्दूल जैसे महत्त्वपूर्ण जीवों को छोड़कर और सिंहपद या शार्दूलपद न पड़कर श्वापद पड़ने में यह तथ्य गर्भित है कि श्वापदों में श्वान वह प्राणी है, जिससे मानव ने सबसे पहले घनिष्ठ संपर्क स्थापित किया था और जिसका पता मध्य पाषाण युग की समाधियों से चलता है। इनमें मानव अस्थियों के साथ-साथ कुत्ते के पूरे पंजर मिले हैं (मध्य भा. का इति., १, पृष्ठ ५४)। सिंहशार्दूलों की श्वापद विशेषता के कारण अपने वध्यों को अचानक धर दबोचने की सुविधा उन्हें अत्यंत प्राचीनकाल से ही रही है। शिव के क्रोध से इनका उद्भव हुआ था और इनने प्रजापति दक्ष के यज्ञ का विध्वंस कर डाला था (वायु पु. १०१।२९५), इस पौराणिक कथन से सिंह की घातक शक्ति का अनुमान होता है। यास्क ने सिंह का नामकरण अन्य प्राणियों का अभिभव, हिंसा, हनन, संहार और पास जाकर वध करनेवाला होने के कारण हुआ तथा व्याघ्र का नाम सूंघकर या मुंह फैलाकर हनन करनेवाला होने से पड़ा बतलाया है (निरुक्त ३।४।१)। इन विशेषताओं के परिणामस्वरूप मृग आदि प्राणी इन प्रबल-पराक्रम जंतुओं से भयभीत रहते हैं (मा. पु. १२१।१८) और ऋषियों की गायें इनका कवल बन जाती हैं (मत्स्य पु. २०।१०; रघु. २।२७)। सिंहों के आगे हाथियों के समूह सूर्य के सामने पड़े अंधकार के समान भागते दिखाई देते हैं (हरिबंश २।१०६।२१)। इस घातक शक्ति के आधार पर शार्दूल ने वनराज विरुद अर्जित किया था। (वायु. पु. ३५।६; ७०।१०) और पुराणकाल के जंगलों पर सिंहशार्दूलों का आतंक पूर्ण राज्य स्थापित दिखाई देता है।

अधिराज शरभ

वनों पर सिंहशार्दूलों का यह शासन तथापि निरंकुश या सर्वोच्च नहीं था। यह देखा जा चुका है कि भारतीय वनों के इतिहास में शरभ नामक जंतु का आस्तित्त्व रहा है जो सिंहघाती था (मध्य प्र. सं., ९ जनवरी १९६०)। मथुरा के समीप सुयामुन पर्वत पर द्रुमिल नामक दानव ने शरभ देखा था (हरि. २।२८।७५)। यह आठ पैरोंवाला बलोदग्र प्राणी अपने नखों एवं डाढ़ों के आयूधों से सिंहों के साथ युद्ध करके उन्हें वायु द्वारा बादलों को उड़ाए जाने के समान खदेड़ देता था (वही २।१०६।२६)। प्राचीन वाङ्मय में इसके उत्पादक और कुंजरारातिनाम भी मिलते हैं (डाउसन : एकनामिकल डिक्शनरी ऑफ हिंदू माइथॉलॉजी, पृष्ठ २८२)। इसका उत्पादक, अर्थात्, ऊपर को पैरोंवाला, नाम उस तथ्य का सूचक है जिसे चरक संहिता के टीकाकार चक्रदत्त ने इसे पृष्ठगत चतुष्पाद कहकर व्यक्त किया था (सूत्रस्थान २७।४३-४४) और जिसे मुहेंजो-डेरो के उत्खनन में मिली मुद्रा के अवरेखक ने इस जंतु की पीठ पर चार ऊर्ध्वंगामी रेखाओं द्वारा निर्दशित किया था (मॅकेः फर्दर एक्सकॅवेशंस एट मुहें-जो-डेरो, खंड २, फलक ९१, मुद्रा ४)। कुंजरारााति नाम इसके अपार देहबल का बखान करता है। काश्मीर के प्राचीन इतिहासकारों के लेख से ज्ञात होता है कि हाथियों से युद्ध करते हुए यह उनमें से एक को पीठ पर लादकर चल देता था और फिर भूल जाता था कि उसकी पीठ पर कुछ रखा भी है (राजतरंगिणी ८।२५।७५)। इस जंतु की महासारता का संस्कृति पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा था। शरभ नामक दानव (ब्रह्माण्ड पु. ३।६।१२; वायु, ६८।१२) के अतिरिक्त ऋक्षराज जांबवंत के एक पुत्र का नाम शरभ रखा गया था जिस पर से वानरों की एक अवांतर शाखा का नाम शरभ पड़ा था (ब्रह्माण्ड ३।७।३०४, ३१९)। ये शरभ वानर विंध्य पर्वत पर निवसित थे और हैहय राजा ने इनका संहार किया था। इनकी उत्पत्ति हरि और पुलह से भी बतलाई जाती थी (वही ३।७।१७४, ३१९; २६।३०; ३५।२१; ५१।११; ४।२९।४१)। अनुमान होता है कि किसी अत्यंत प्राचीन काल में ऋक्षवान पर्वत पर शरभों का जनपद बसा था, जिन्हें कैष्किन्धकों के समान वानर कहा जाता था और हैहयों के विजय अभियानों में वे निःशेष हो गये। रुक्मिणी से उत्पन्न वासुदेव कृष्ण के एक पुत्र का नाम भी शरभ रखा गया था (वही ३।७१।२४५; वायु. ९६।२३७)। शरभ की सिंहघाती शक्ति के प्रतीक के रूप में शंकर की शरभेश्वर मूर्तियों की तमिल प्रदेश में आज भी पूजा होती है। उनके संबंध में धर्म कथा यह है कि विष्णु का नृसिंह अवतार हिरण्यकशिपु के वध के पश्चात् जब

(शेष पृष्ठ १९ पर)

साहित्य संस्कृति कला ज्ञान-विज्ञान आदि का विशेष-अंश

इस अंश के संपादन परामर्शदाता – श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द

विशेष कविता

नाभिकमल की शक्ति

श्री नरेंद्र शर्मा

GURUKULA KANGRI LIBRARY

ठंढा अंधकार है, अंधा शीत, असह्य ठिरन !
उमड़ पड़ा पाताल गगन की ओर, अदृश्य किरन !
मटमैला, गेरुआ सूर्य है, छाया निज निस्तेज,
महाव्याघ्र से हो विदीर्ण ज्यों घायल पड़ा हिरन !

ज्योतिकेंद्र रवि रहा न रवि अब, दिवस न रहा दिवस !
ऐसा लगता है--प्राणों का रस हो गया विरस !
चढ़ा चला आता कबंध-सा तिमिर पसारे बाहु;
दाह-दीप्ति की क्षमतावाला पिंड हो गया विवश !

रहा नहीं वर्चस्व व्यक्ति में, केवल रहा अहम् !
जो प्रकाश देता था, दिन वह भिक्षुक बना अधम !
नभ का भिक्षापात्र सूर्य है, हे अव्यक्त पुरुष,
प्रज्ञागीत प्रकाश-किरण निज कर दो पुनः सुगम !

हे केंद्रों के केंद्र ! व्यक्तियों के अखंड चिरव्यक्ति !
मुरझाए रवि-कवि को दो फिर नाभिकमल की शक्ति !

विशेष लेख

प्राचीनतम कथा के नवीनतम संकेत

—प्रा० राजनाथ पांडेय

इधर कुछ दिनों से राम-कथा को लेकर कतिपय संकुचित दृष्टिकोण से विचार करनेवालों ने 'दशरथ दौर्बल्य', 'राम का मनस्ताप', 'कैकेयी की ट्रैजेडी', 'सीता की अग्नि-परीक्षा' आदि-आदि शीर्षकों से पर्याप्त बुद्धिमत्ता के साथ विषय का विवेचन करना आरंभ किया है। किंतु, संभवतः, अध्ययन की लघुता एवं "फ्रायेड" का पिछलगा बनने के हौसले की अतिशयता के कारण मेरी राय में, इनका विवेचन प्रायः छिछला और पंकिल होकर रह जाता है और नई परंपरा का निर्माण करने की क्षमता न होने के कारण आस्था और निश्चित विचारधारा पर आघात करके एक प्रकार के सांस्कृतिक-स्खलन का खतरा पैदा करता है। ऐसे ही नए मसीहों में से एक अभी उस दिन यह कहते हुए सुने गए कि "सीता रावण की कन्या थीं!" ऐसे यह बात सर्वथा नई, विचित्र और अचंभे में डाल देनेवाली तो नहीं है, क्योंकि कहीं-कहीं (जैन ग्रंथों और बौद्ध जातकों में) प्राचीनकाल ही से इसके कुछ संकेत मिलते हैं; फिर भी, जिस ढंग से और जिस अध्ययनशीलता के स्तर से यह बात आज कही जा रही है, उसके कारण इस प्रकार के उद्गार में एक कड़आहट तथा अभद्रता पाई जाती है। इन सब "गंभीर" (!) प्रश्नों का उत्तर एक साँस में देना संभव नहीं है। पर, "सीता रावण की कन्या थीं!" इस वक्तव्य की गूंज पिछले कई महीनों से कानों को अस्थिर किए रही है, जिसके परिणामस्वरूप अत्यंत तटस्थता के साथ यह विवेचन प्रस्तुत करने का यत्न किया जा सकता है।

"रामायण" में वर्णित राम-कथा का तीसरा खंड यानी युद्ध-कांड ऋग्वेद के सरमा-पणि वाले वृत्त ही का एक आकार है। उसी "वस्तु" (Matter), अर्थात् प्रकाश की देवी का प्रतिरूप सरमा का अंधकार के स्वामी के प्रतिरूप पणि द्वारा अपहरण, के विवृत अपने इतर योरपीय आकारों, विशेषतः होमर के "इलिएड" और "ओडेस्सी" महावदानों (Epics) में प्रतिष्ठित रूपों, में वह सबके बाद का विकसित जान पड़ता है। वर्तमान राम-कथा के तीनों खंडों—बाल, अयोध्या और युद्धकांडों—में मानव-बुद्धि के विकास-क्रम की दृष्टि से वह सर्वाधिक प्राचीन भी है। कालांतर में सरमा और पणि के रूप में प्रकाश की देवी और अंधकार के स्वामी का वह विकट और भयावह व्यवहार अपनी भयावहता खोकर इतना अनुकूल और निकटतर होता रहा कि कथानकों में सुन्दरी राजकुमारी किसी दानव या पराक्रमी राजा की कन्या ही स्वीकार की जाने लगी होगी, और उसे प्राप्त करने के लिए सूर्यवंशीय राजकुमारों को अपनी योग्यता प्रमाणित करनी पड़ती रही होगी। महाकवि जायसी ने "पद्मावति" (पूर्वार्ध) के लिए कथा-वस्तु को इसी अवस्था में ग्रहण किया था। इससे इतना तो स्पष्ट होता ही है कि इस मूल-कथा के जिस विकास की हम चर्चा कर रहे हैं, वह वाल्मीकि के युग तक अपना स्पष्ट आकार ग्रहण कर चुका था। दूसरे शब्दों में प्रकाश की देवी का प्रतिरूप सुन्दरी राजकुमारी बड़े बलवान् राजा की अब कन्या होने लगी थी। किंतु, वाल्मीकि और जायसी के कथानक में एक अंतर अवश्य है।

राजकुमारी को प्राप्त करने के लिए "पद्मावति" वाले रतनसेन को, एक ही बार, राजकुमारी के पिता के नगर ही में, सारे कष्ट उठा लेने पड़े हैं, किंतु, वाल्मीकि के राम को "अजकव" तोड़ने का विकट कर्म जनकपुरी में, और रावण से लोहा लेने का विकट कर्म लंकापुरी में, यानी दो पुरियों में, दो बार में संपादित करने पड़े हैं। इस प्रकार जब कथानक के विकसित रूप में, अर्थात् राजकुमारी के पिता में, कथानक के आदिम रूपवाले राजकुमारी (प्रकाश की देवी) को चुरा ले जानेवाले पणि, पैरिस आदि निशाचर-पतियों का तिरोभाव हो चुका है, वाल्मीकि ने कथानक के इस विकसित आकार में से, राम के विवाह वाले अंश को, कथानक के तत्कालीन रूप में लेते हुए भी, युद्ध-कांड में इसी कथानक को इसके आदिम मूल-रूप में पुनः अलग से वर्णित करके, मानो, नवीन की धमनियों में प्रवाहित उसके प्राचीन को चीरकर—दूसरे शब्दों में, रावण-पिता में तिरोहित रावण अपहर्ता को अलग करके—प्रथम को जनक के नाम से सीता के पिता के रूप में, और दूसरे को रावण के नाम से सीता के अपहर्ता के रूप में, एक ही कथानक को दो रूप देकर भी, पुनः दोनों को, जिस अद्भुत कौशल से संश्लिष्ट कर दिया है, उसके लिए उनके संमुख नतमस्तक होना ही पड़ेगा। सीता इस रूप में निश्चय ही रावण की कन्या ठहरती है। बस, इस सूक्ष्म दृष्टिमत्ता से विवेचन करके ही; अन्य किसी भौतिक नाते से नहीं।

जान पड़ता है कि किन्हीं विशेष परिस्थितियों के आग्रह ही से महर्षि वाल्मीकि को यह दुष्कर कार्य संपादित करना पड़ा था। काल के गहन अंधकार में तिरोहित उस गूढ़ परिस्थिति का निरूपण तो होना ही चाहिए। जो बातें अभी-अभी कही गई हैं, उनका तनिक स्पष्टीकरण भी हो जाना चाहिए। मान लीजिए कि सचमुच ही सीता रावण की कन्या थीं। तब यदि राम का विवाह जनकपुरी में न होकर 'सिंहल' (लंका) में हुआ होता, जैसे कि चित्तौड़ के राजा रतनसेन का सिंहल के राजा गंधर्वसेन की पुत्री पद्मावति के साथ हुआ, तब तो उन्हींकी तरह राम को भी सीता की प्राप्ति के लिए सारा संघर्ष, एक ही किस्त में, एक ही स्थान में, कर गुजरना आवश्यक हुआ रहता। "सीता रावण की कन्या थीं" इस 'कथनी' से इतना तो पता चलता ही है कि "रामायण" की रचना के समय

मानव-मानसिकता बुद्धि-विकास की उस भूमिका पर अवश्य जा पहुंची थी, जहां से रावण (अंधकार के स्वामी) के सीता (प्रकाश की देवी) के पिता होने की कल्पना की जा सकती थी। मानव के बुद्धि-विकास की यह निश्चित रूप से चौथी सीढ़ी थी। उस विकास की पहली सीढ़ी पर वहाँ ऋग्वेद की सरमा और पणि थे, जहाँ पणि इंद्र की गायों को बलपूर्वक चुरा ले जाते, और सरमा के पीछा करने पर इन्द्र को निर्बल बताकर उसे अपनी "बहन" बनाने के लिए तरह-तरह से फुसलाते थे। संभवतः, बहन बनाने का उनका प्रस्ताव जीवन-संगिनी बनाना ही था। कुछ लोगों की राय में संभव यह भी है कि उस समय मानव-समाज में बहन और भाई ही परस्पर एक दूसरे के जीवन-संगी हुआ करते थे! होमर के प्रथम महावदान 'इलिएड' की हेलेन और 'इलिओं' के राजकुमार पैरिस का वृत्तांत करीब-करीब उसी धरातल (प्रथम सीढ़ी) की उपज है। यद्यपि यह मननीय है कि होमर का काव्य ऋग्वेद के बाद का है, क्योंकि, अब सरमा-पणि के प्रस्तावित भाई-बहन के वेदवाले रिश्ते ने पति-पत्नी का रूप प्राप्त कर लिया है। इतने विकास में अनगिनत शताब्दियाँ बीती ही होंगी।

इस कथा-विकास-क्रम की दूसरी सीढ़ी पर होमर के द्वितीय काव्य औडेस्सी का कथानक है, जहाँ अंधकार के प्रतिनिधि वेदोंवाले पणि और इलिएड के पैरिस के प्रतिरूप वे विवाहोन्मत्त राजे हैं, जो इथाका की रानी पेनिलौप को, उसके पति की अनुपस्थिति में, वरण कर ले जाना चाहते हैं। और यह विकास अपनी तीसरी सीढ़ी पर प्राचीनतम जर्मन महा-गाथाओं "वौलसंगा-सागा" में पहुँचता है, जहाँ "काफनीर" जैसा कोई अंधकार का स्वामी अपने युग की सर्व सुंदरी किसी "ब्रिन-हिल्ड-वाल्कीरी" का अपहरण, उसे अपनी पत्नी बनाने के उद्देश्य से नहीं, वरन् उस युग के सिगर्ड जैसे तरुण को उसे छुड़ा ले जाने की चुनौती देने के लिए करता है। और चौथी सीढ़ी की झलक उन कथाओं में मिलती है, जहाँ कोई अपूर्व सुंदरी किसी बड़े दानव की कन्या ही हो गई है और उसका दानव-पिता उसे ऐसी जगह छिपाकर रखता है, जहाँ उस पर किसी तरुण की निगाह ही न पड़ सके।

दिन के पश्चात् रात्रि के, और रात्रि के पश्चात् दिन के आगमन को एक अटल अनुक्रम के रूप में अवश्यंभावी समझ लेने के बाद ही मानव की भावना पहले की तरह दिन और रात को परस्पर-विरोधी न मान, किसी निश्चित योजना और विधान के समानरूपेण सहयोगी और अनुयायी। अतः एक दूसरे से संबद्ध समझने लगी होगी। तभी उषा, अहन् (या यूनानी डफ ने और अँग्रेजी डॉन) आदि प्रकाश की देवियां रात्रि-रूपी दानव के गर्भ से उत्पन्न उसी की संतान मानी जा सकी होंगी। सीता का रावण की कन्या होने का उल्लेख संभवतः राम-कथा के इस अंश का यही चौथा विकास-क्रम सूचित करता है। इसी धरातल की किसी-किसी कहानी में दानव की पुत्री किसी तरुण से परिचित होते ही अपनी मुक्ति के लिए अपने दानव पिता के संहार तक में उस तरुण का साथ देती है। और यदि रावण सचमुच ही सीता का पिता था, तब तो राम-कथा के रूप में इसी धरातल की यह एक ऐसी कहानी भी हमें उपलब्ध है, जहाँ जनक जैसे धर्मपिता ही को कोई कठोर शर्त रखकर संभाव्य जामाता के पौरुष की परीक्षा का आयोजन करना पड़ा है! और कथानक का विकास-क्रम अपनी पाँचवीं सीढ़ी पर तब पहुँचता है, जब प्रकाश और अंधकार की शत्रुता के भाव एकदम छँटकर रूपवती राजकुमारी अर्थात् प्रकाश की देवी किसी दानव की नहीं, वरन् किसी ऐसे मानव राजा ही की पुत्री होती है, जो अपने ऐश्वर्य के अहंकार के कारण किसी भी राजकुमार को अपनी कन्या के योग्य मानने को राजी ही नहीं होता। अथवा उसकी कन्या ही ऐसी विदुषी होती है कि चतुर से चतुर राजकुमार भी उसके प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाते। अतः, लज्जित होकर अपना-सा मुँह लेकर लौट जाते हैं। जायसी के "पदुमावति" काव्य का पूर्वार्ध जो राम-कथा के सीता-राम-विवाहवाले खंड के इतर स्वतंत्र योरपीय मूल-रूप से बहुत-कुछ मिलता जुलता है, इस तत्त्व का सर्वोत्तम उदाहरण है। जायसी ने इस प्रकार के पिता के गर्व और कन्या की व्युत्पन्नमति दोनों ही का एक ही जगह बड़े कौशल से उल्लेख किया है:—

भइ पदुमावति पंडित गुनी।
चहूँ खंड के राजन्ह सुनी॥
सात दीप के बर जो आवहिं।
उतर न पावहिं फिरि-फिरि जावहिं॥

राजा कहइ गरब कइ, अहऊं इनर सिउ लोक।
को सरवरि होइ मोरे, कासउं करउं बरोक।

(२)

इस कथानक के विकास-क्रम को तनिक विस्तार से (पांच सीढ़ियों तक पहुंचा हुआ) दिखाने का उद्देश्य यही है कि इसे देखकर पाठक उन विशेष कारणों की जानकारी के लिए उत्सुक हों, जिनसे संसार-भर में तो समय के परिवर्तन के साथ-साथ अंधकार के स्वामियों के रूप और स्वभाव में उत्तरोत्तर मानवीयता की प्रतिष्ठा होती जा रही थी, किंतु, भारत-जैसी पुण्यभूमि में वह अंधकार का स्वामी निशाचर-पति रावण वेदों के पणियों से भी भयावह और इंद्र को उत्पीड़न देनेवाला साबित हो रहा था। पणियों को तो इंद्र ने अकेले ही काट-कूटकर भुरकुस कर डाला था, किंतु, नए पणि रावण के संमुख आने को कौन कहे, रावण के पुत्र ही से पराजित होकर इंद्र भाग खड़े हुए थे! और मेघनाद इंद्रजित कहलाने लगा था। इंद्र के दाहिने हाथ पवन को रावण की वाटिका में संचरण करते समय इस डर के मारे फूंक-फूंककर पावँ रखना पड़ता था कि यदि वृक्षों के पुराने पड़ गए पीले पत्ते भी डाल से गिर गए, तो रावण के सामने जवाबदेही के लिए उन्हें पेश हो जाना पड़ेगा। वह नई परिस्थिति, जिसके कारण वाल्मीकि को राम-कथा के अंतिम खंड में से अलग करके एक नवीन रूप में प्रथम खंड का निर्माण करना पड़ा, अन्य कुछ नहीं, इंद्रजित मेघनाद के पिता ऐसे नवीन पणि रावण ही का आविर्भाव था।

रवन्न या रावण काल्डिया-वासियों का वर्षा-बिजली और युद्ध का वैसा ही प्रधान पौराणिक देवता था, जैसा हमारे वेद में आर्यों के देव इंद्र थे। काल्डिया की सम्यता की मार्मिकता एवं प्राचीनता का परिचय केवल एक शब्द—"इश्टर"—से (जो उस जाति की अधिष्ठात्री देवी का नाम था) लग जाता है। काल्डियाई "इश्टर" ही, फोनीरीयाई "ऐश्टोरेथ", बवेरूई "अस्तर", यूनानी "ऐफ्रोडिटी", अरबी "मुश्तरी", रूमी "ऐंस्टार्ड", सीरियाई "ऐस्तर गेल्सि", गैलिक (आइरिश) "ऐस्टर" और इँगलिश "ऐस्ट्रा" है। यही वैदिक "ईशित्ट" है!

यह बात सर्वविदित है कि वेद-त्रयी में ऋक्, यजुः और साम ही की पहले गणना थी। अथर्व-वेद नाम के एक चौथे वेद की मान्यता तो बहुत बाद की घटना थी। काल्डियाइयों के पुरोहित

(शेष पृष्ठ १३ पर)

विशेष कहानी

सदाशिव अध्यवसायी लड़का है। जगराम बाबू कहीं भी उसकी तारीफ करने से नहीं चूकते। विश्वास की इसी डोर के सहारे सदाशिव आज जगराम बाबू के पास आया है। मेडिकल सिलेक्शन म वह चुन लिया गया है। कल फीस जमा करने का आखिरी दिन है। टाइमपीस और साइकिल बेचने के बाद भी अभी कुछ रुपए कम पड़ रहे हैं।

जगराम बाबू दातौन कर रहे थे। सदाशिव की बात सुनकर वह नीम की दातौन को कुछ देर और भी रगड़ते रहे। सदाशिव अपनी बात कहकर अपने ही में संकुचित हो रहा था; परंतु, बिना कुछ जवाब लिए चल देने में उसे न जाने कैसी ग्लानि प्रतीत हो रही थी। आखिर जगराम बाबू ने नीम के कड़ुए थूक को उगलकर कहा—"किताबें क्यों नहीं बेच देते ? अब कुछ काम तो नहीं आयँगी। तुम कहते हो सत्तर-अस्सी की हैं; पचास रुपए तो मिल ही जायँगे !"

"हाँ, लेकिन, किताबें मैं बेच नहीं सकूंगा।"

"क्यों ?"

सदाशिव की आँखें झुक गईं—"किताबें मेरी नहीं हैं; उधार ली हुई हैं, लौटानी होंगी।"

जगराम बाबू व्यंग से मुसकराए—"तो उधार की चीज मेरे यहाँ बंधक रखने आए हो, सदाशिव ?"

सदाशिव का मुंह उतर गया। फिर भी, कहे बिना उससे रहा नहीं गया—"कल फीस जमा न होने से मेरा सारा 'कैरियर' बरबाद हो जायगा। घर में कुछ इंतजाम न होने ही से आपके पास आना पड़ा है; आपका रुपया मैं जरूर..."

जगराम बाबू बीच ही में बोल उठे—"नहीं, सो बात तो नहीं, लेकिन, इतना रुपया एक साथ जुटाना संभव नहीं है। कहीं और भी कोशिश करो। दस-पांच रुपए मैं भी दे दूंगा। इससे ज्यादा इस समय हो नहीं सकेगा।"

सदाशिव फिर कुछ न बोल सका। उसकी आँखें गीली हो गईं।

*

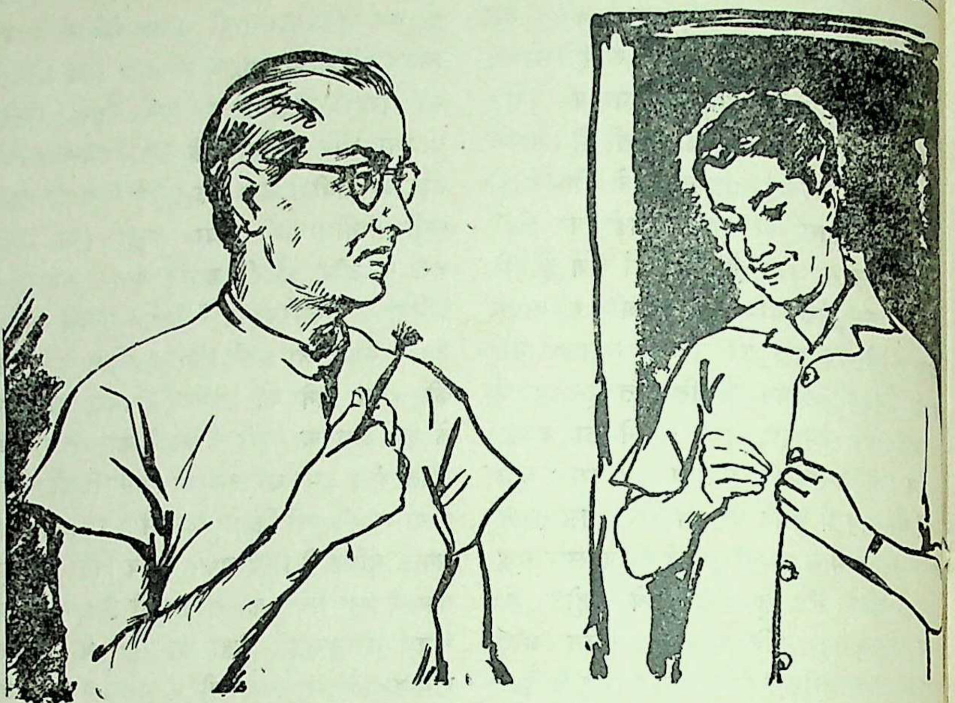

किए का दुःख: इनकार की पीड़ा!

—श्री प्रह्लादनारायण मित्तल

जगराम बाबू के कमरे के सामने नीम के पेड़ों की हरी पट्टी से पीठ सटाए ऊँचे टीले पर बिछी लोह की पटरियों पर दिन-रात दौड़ती गाड़ियों की खड़खड़ाहट जगराम बाबू की दिनचर्या में मध्यवित्ती परिवारों में महँगाई की भांति घुलमिल गई है। अपने इसी कमरे में रिटायर्ड, विधुर जगराम बाबू सामने लंबी रेलिंग पर उद्घाटन करने से 'अप-डाउन' होते सिगनल को देखते रहते हैं। लंबे भाषण-सी ऊब वाली कलारी और बुक स्टाल और उसकी बगल से गुजरने वाली स्टेशन रोड़ सभी कुछ जगराम बाबू से हिलमिल गए हैं। दातौन से निबटकर जगराम बाबू अखबार पढ़ रहे थे। सहारनपुर की खबर थी—गरीबी से तंग एक परिवार ने अपने दो बच्चों सहित आत्महत्या करली। तीन-चार दिन से भूखे इस परिवार को पास-पड़ोस कहीं से भी दस-पांच रुपए उधार नहीं मि सके !

जगराम बाबू की आँखों में अँधेरा छा गया। छोटे-छोटे बच्चों की अनजानी सूरतों के ह उनकी आँखों के परदे में मंडराने लगे—किस तर तड़प-तड़प कर मरे होंगे बच्चे ! उन्हें तो को न कोई पाल ही लेता। नहीं, अच्छा हुआ; उ भी मार गए नहीं तो वे गलियों में ताशे बजा और किसी अनाथालय के नाम का डंका पीटते पर, वे लोग आखिर मरे ही क्यों ? दिल के बहु कमजोर थे !

उनकी दृष्टि नीम के पेड़ों की हरी पट्टी से पीठ सटाए छोटे-से टीले पर जा पहुँची, ज ऊँची रेलिंग के सहारे टिका हुआ सिगनल अभी अभी 'डाउन' होकर ठंढ खाए व्यक्ति की त काँप रहा था।

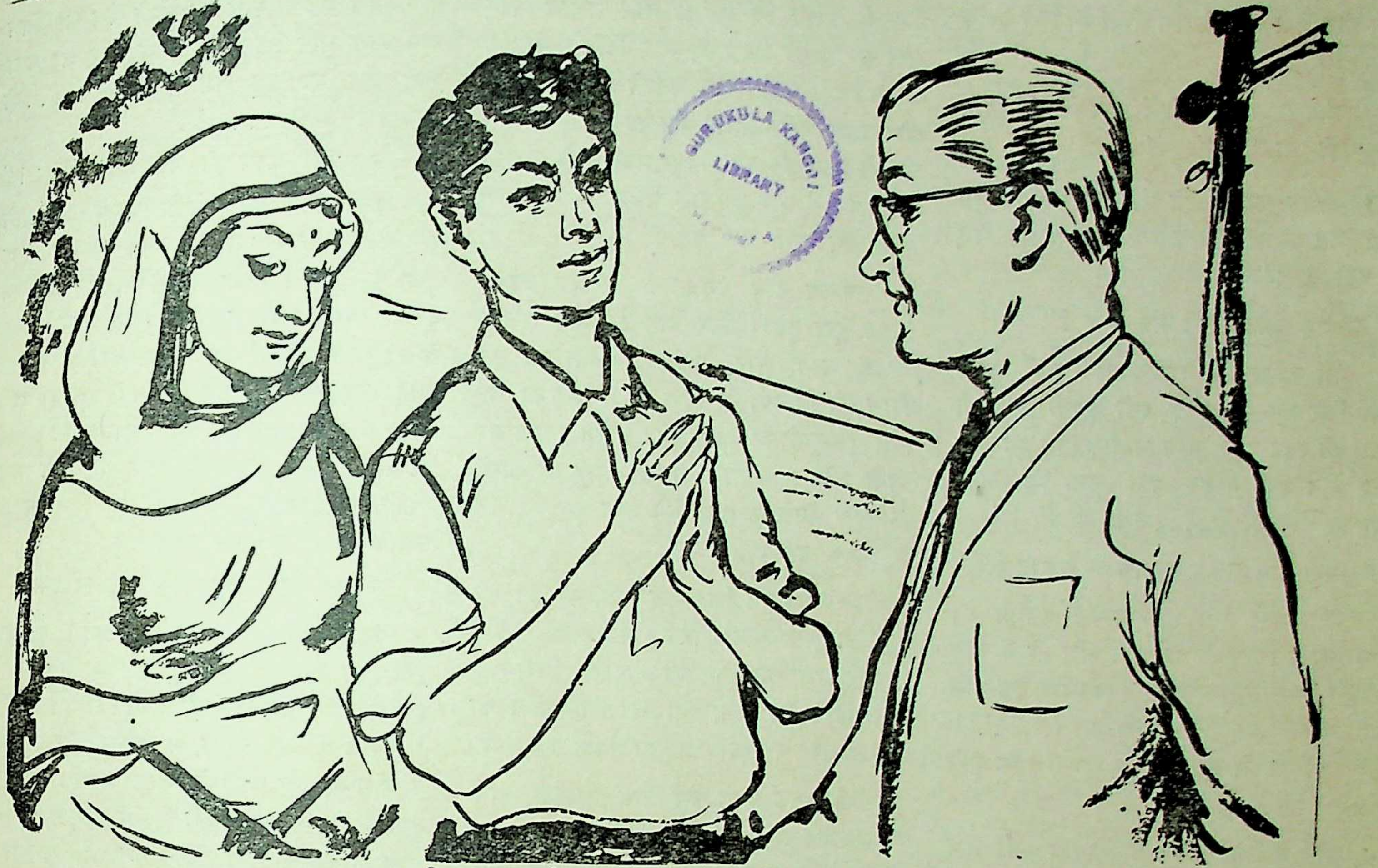

GURUKULA KANGRI LIBRARY

वह व्यक्ति कुछ समीप आकर बोला—"जी क्या बताऊँ. . . ."

'अब तीन-चार गाड़ियाँ लगातार आयँगी'– उन्होंने अखबार सरकाकर मन में सोचा–'पहले दो मालगाड़ियाँ, फिर फास्ट पैसेंजर, एक लोकल और फिर मद्रास मेल ! कैसा दानव की तरह धड़धड़ाता आता है ! पिछली बार एक भैंस चक्कर में आ गई थी–' उन्हें याद आया—'कैसी मोटी-ताजी, ग्याभन थी । पेट यों पिचक गया था, जैसे बहुत बड़े गुब्बारे से हवा निकल गई हो !' रोमांच से वह सिहर उठे–'ऐंजिन के पहियों में किस बुरी तरह फँस गई थी कि गाड़ी पूरी दो घंटे वीरान में खड़ी रही । और उस भैंस के पेट के अंदर का वह बच्चा ! जैसे कोई बहुत-बहुत बड़ा तरबूज कुचल कर बिखर गया हो ! अनायास ही एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर उनकी स्मृति का खुला द्वार सहारनपुर के उस अपरिचित आँगन में झाँकने लगा–क्या मालूम वे लोग जहर खाकर मरे या ट्रेन के नीचे कटकर ! जहर ही खाया होगा ! यह कोई सत्याग्रह थोड़े ही था कि ट्रेन के पहियों के नीचे कटने के लिए छोटे-छोटे बच्चे यों शांत भाव से पड़े रहें !'

उन्होंने गहरी साँस भरी–हे प्रभो !

सिगनल से उतरकर उनकी निगाह एक बारगी ही अपने कमरे में लौट आई । वहाँ से वह जंगले की राह से उनके अहाते के गेट पर अटक गई । देखा—एक सज्जन संकोच भरी दृष्टि से उन्हीं की ओर देख रहे हैं । जगराम बाबू को कुछ कुतूहल हुआ । एक बार मन में आया कि पूछें । फिर खयाल आया कि शायद किसी की राह में खड़े-खड़े सूनी निगाहें इधर-उधर दौड़ा रहे हैं । जगराम बाबू ने अपनी निगाह फिर नीम के पेड़ों के पार घुमाई और एक पल वहाँ टिककर वह पुनः उस व्यक्ति की अपनी ओर देखती दृष्टि से जा मिली ।

जगराम बाबू को अब उठना पड़ा । पूछा– "आप किसी को खोज रहे हैं क्या ?" खड़े-खड़े दीख पड़ा कि उस व्यक्ति के पीछे आधे माथे तक घूंघट काढ़े कोई स्त्री भी खड़ी है । स्त्री सुंदर दीख पड़-रही थी ।

वह व्यक्ति कुछ समीप आकर बोला–"जी क्या बताऊँ. . . . ."

जगराम बाबू ने अपनी पचास-साला निगाह से ताड़ा—औरत गर्भवती है। शायद सुबह-शाम ही में उसके बच्चा हो जाय ! उनकी दृष्टि उस औरत की उदास दृष्टि से जा मिली । उसने पसोपेश में इधर-उधर देखा; फिर हाथ से गेट का सहारा लेकर जमीन पर बैठने का उपक्रम किया ।

जगराम बाबू सहसा बोल उठे–"देखिए, शायद उन्हें तकलीफ हो रही है । ऐसा करें, उन्हें लेकर कमरे में आ जायँ; फिर बातचीत होगी ।"

कृतज्ञता में उस स्त्री की निगाह जगराम बाबू की दृष्टि में समा गई । जगराम बाबू एकाग्रचित्त उसी ओर देखते रहे ।

"–जी, कुछ बहुत ही बुरे मुहूर्त में हम लोग घर से निकले । इनके बाल-बच्चा होनेवाला है । हालत अब-तब हो रही है और ट्रेन से उतरकर अब तक जो बीती है, भगवान् न करे, वह किसी पर. ." शब्द उनके गले में घुट गए। ऐसा लगा– वह रो उठेंगे ।

जगराम बाबू कुछ कहें कि पीछे से स्त्री के सुबकने की आवाज आई । वह साड़ी के छोर से अपने आँसू पोंछ रही थी । वह गहरी सहानुभूति

और प्रश्न भरी दृष्टि से उन दोनों की ओर देखते रहे ।

सामने पटरी पर दोनों ओर से धीमे-धीमे मालगाड़ी आ-जा रही थीं ।

"स्टेशन पर उतरते ही जब इसे मालूम हुआ, यह बराबर रो-रोकर अपनी जान दिए दे रही है !"

"कोई दुर्घटना हो गई क्या ?"

"यों कहिए कि बरबाद हो गए–" उनके शब्द फिर रुँधे—'आपके इसी मुहल्ले में इनकी रिश्ते की बहन रहती थीं । उन्हींके पास हम लोग आए थे । यहाँ आकर पता चला कि उनका 'ट्रांसफर' होगया है....अभी परसों !"

"क्या आप बाबू शंभुदयाल जी के साढ़ू हैं ?"

"जी, मेरी बड़ी साली उनको ब्याही हैं। बात यह है कि इनके दो बच्चे सौर ही में जाते रहे हैं। इस बार सोचा था कि इनकी बहन देख-भाल कर लेंगी, लेकिन, किस्मत की बात कि.... ! बच्चा तो खैर जो कुछ हो, मुझे लगता है कि कहीं इनकी जान...."

पीछे से फिर सुबकने की आवाज आई और पीड़ा भरी कराह उठी । एक हाथ से पेट दबाकर उन महाशय की पत्नी कमरे की दीवार से उठंग गई ।

प्रसवपीड़ा से तड़पती उस नारी को देखकर जगराम बाबू दयार्द्र हो उठे । कहीं वह कमरे ही में बच्चे को जन्म न देदे । बोले—"आप तुरंत अस्पताल चलें इन्हें लेकर । लेकिन, आपका सामान-वामान......?"

वह सज्जन एक क्षण चुप रहे । जगराम बाबू की निगाहों में उतरते हुए उन्होंने धीरे-धीरे कहा–"वही दुर्भाग्य की बात तो मैं आपसे कह रहा था । यों तो अभी इनको महीना-बीस दिन रहते हैं, परंतु, इनके दिल पर सदमा बैठ गया है। उसी की वजह से इनकी तबीयत यकायक बिगड़ गई है !"

जगराम बाबू को सहसा याद आया—"हाँ, वह क्या कह रहे थे आप ?"

कुछ परेशान-से वह सज्जन बोले—"जी, ट्रेनों में भीड़भाड़ और गुंडेबाजी के डर से एहितयातन् इनके गहने कपड़ों के बक्स में रख दिए कि चार की निगाह में पड़ें, तो क्या फायदा । बेवकूफी कहिए कि जेब में तीस-चालीस रुपए छोड़ कर बाकी सब रुपए और टिकिट भी ट्रंक में रख दिए। यहाँ आकर उतरने लगे, तो भीतर और बाहर के रेले में यह फँस गईं । बुरी हालत । ट्रंक की फिक्र छोड़कर इन्हें बचाकर नीचे लाया । तब तक ट्रंक और होल्डाल गायब ! चार-पाँच हजार की चपत लग गई ।"

जगराम बाबू एकबारगी ही कह उठे—"बहुत बुरा हुआ" फिर आप ही आप उनकी निगाह, अपनी ओर एकटक देखती हुई उस औरत की निगाहों में अटक गई । क्षणभर वह दोनों एक-दूसरे को देखते रहे। औरत ने लजाकर अपनी दृष्टि झुका ली । जगराम बाबू की आँखों की पहुँच जँगले के पार नीचे झुके हुए सिगनल पर अटक गई ।

उस व्यक्ति ने फिर कुछ कहा, जो ट्रेन की सीटी की तीखी आवाज में बह गया । वह देखते-रहे एक तेज घिस-घिस की जोरदार आवाज के साथ मद्रास मेल धीमा पड़ा और फिर अपंग की तरह कुछ दूर तक घिसटता हुआ अंत में रुक गया।

"खैर, उसका तो कोई खास गम नहीं, हाथ-पैर सलामत रहें। सबसे ज्यादा फिक्र मुझे इनकी हो गई है"—उनकी आँखों में आँसू छलक आए–"यहाँ जिस भरोसे आए थे, अब वह सहारा भी नहीं रहा ।"

जगराम बाबू ने भरपूर निगाह से औरत की ओर देखते हुए कहा—"बाबू शम्भूदयाल अपने ही आदमी हैं, आप दो-चार दिन मेरे यहाँ ठहर जायँ।"

"आपकी बड़ी कृपा है । अगर आप इनकी बहिन को 'टेलीग्राम' कर दें, तो वह तार से कुछ रुपया आपकी मारफत भेज देंगी । चार-पाँच रुपए अभी मेरे पास बचते हैं । पता तो उनका आपके पास होगा ही ।"

जगराम बाबू की निगाह उनकी पत्नी की सारी देह की परिक्रमा कर रही थी । उनका बाह्य-चेतन टेलीग्राम की बात सुन रहा था, परंतु, अंतर्मन शायद कहीं खो गया था । इसलिए वह सुनकर भी कुछ समझ न सके । कभी-कभी निगाह जँगले के पार भी फेंक देते थे, जैसे उनका ध्यान किसी विशेष विंदु के प्रति सचेष्ट नहीं है । देखा—मद्रास मेल बीच ही में खड़ा हो गया है । शायद अगला सिगनल नहीं मिला है । यात्री डिब्बों से उतर-उतर कर पुल के ऊपर से जाती हुई पटरी के पास भीड़ बनाकर जमा हो गए हैं । और उनके मन के परदे पर मोटी भैंस का चित्र नाच गया और फिर सहसा ही याद आ गया सहारनपुर का वह अभागा परिवार....दो छोटे-छोटे बच्चे.... !

"यह क्या करते हो, शर्म नहीं आती !"

औरत हलके, दबे गुस्से के स्वर में अपने पति को झिड़क रही थी । पति ने उसके बदन पर पड़ा हुआ शाल खींच लिया था । जगराम बाबू की दृष्टि अनायास ही साड़ी में लिपटे उस औरत के बढ़े हुए पेट पर जा टिकी, जो शाल के हट जाने से झीनी साड़ी के आवरण में छिप नहीं पा रहा था। औरत ने शाल छीनकर पुनः अपना पेट ढाँकने का प्रयास किया । जगराम बाबू की दृष्टि मधु मक्खी की तरह वहाँ रुकी हुई थी । औरत ने लजाकर फिर झिड़का–"छोड़ो !"

जगराम बाबू सचेत हुए–"अरे, यह क्या।"

वह सज्जन कुछ अप्रतिभ हो गए । मुंह पर झूंठी हँसी लाकर उन्होंने कहा–"यह शाल नहीं देना चाहती । अकेली साड़ी में रहने से शर्म लगती है । पास में जो रुपए थे, वे टिकिट और जुर्माने में खत्म हो गए । इनकी बहन के पास से रुपए आने में देर भी हो सकती है । मैं चाहता था कि आज शाम की गाड़ी ही से हम लोग घर चले जायँ तो सब ठीक कर लें ।"

औरत की लज्जित आँखों में झाँकते हुए जगराम बाबू ने प्रश्न किया–"लेकिन उन्हें बेपरदा क्यों कर रहे हैं ?" निगाह फिर उधर चली गई। उन महाशय की पत्नी कृतज्ञ भाव से उन्हें देख रही है, यह जानकर जगराम बाबू को थोड़ा आत्म-संतोष हुआ । उन्होंने जंगले के पार निगाह फेंकी—मद्रास मेल अभी खड़ा था । भीड़ कुछ ज्यादा हो गई थी ।

"अब आपसे कहे बगैर काम नहीं चलेगा"–उस व्यक्ति ने कहा–"गहना तो इनके बिछुवों के अलावा अब कुछ बचा नहीं है । यह शाल रखलें और पचास रुपयों का इंतजाम कर दें। इन्हें घर पहुँचाकर मैं दुबारा आकर आपका रुपया लौटा जाऊँगा । नहीं तो, फिर बाबू शंभूदयाल जी......"

जगराम बाबू थोड़ी दुविधा में पड़े । दया और सहानुभूति से वे आर्द्र हो उठे। उनकी निगाह फिर एक बार उसकी पत्नी की ओर उठी–आँखों में आँसू भरे हुए वह जगराम बाबू की ओर ही देख रही थी । जगराम बाबू को लगा कि

उन आँसुओं में एक विनम्र प्रार्थना है–अपने और अपने उदरगत शिशु की प्राणरक्षा की याचना करते हुए !

जगराम बाबू मना न कर सके–"आप शंभूदयालजी के रिश्तेदार हैं । शाल रखने की बात कहकर शरमिंदा न करें । पचास रुपयों की क्या बात है !

उन्होंने उन्हें रुपए दे दिए और वे दोनों चले गए ।

*

मद्रास मेल अभी भी खड़ा था । जगराम बाबू जंगले में खड़े-खड़े हरी पट्टी के पार ताक रहे थे कि उनके शतरंजी दोस्त और पड़ौसी पाँडे जी ने कहा–"कुछ सुना तुमने जगराम बाबू, अपना वह सदाशिव....!"

जगराम बाबू का दिल धड़क उठा–"सदाशिव ! सदाशिव क्या ....?" .

"वह मद्रास मेल नहीं देखते सामने ! ओह राम ! ऐक्सीडेंट.....!"

जगराम बाबू का मुंह सफेद हो गया । पैर लड़खड़ाने लगे । उन्होंने पाँडे जी का कंधा पकड़कर कहा–"पाँडे, मैं चलूंगा ! मुझे वहाँ अभी ले चलो.......!"

कलारी की बगल से गुजरते हुए देखा कि बाबू शंभूदयाल जी के रिश्तेदार की पत्नी जो शाल अब तक ओढ़े हुए थी, उसकी गठरी बनाए अपने दाहिने हाथ में लटकाए हुए है । उसका फूला हुआ पेट अब समतल हो गया था । पति-पत्नी दोनों हँसते हुए कलारी में घुस रहे थे ।

जगराम बाबू लड़खड़ाए और वह सड़क पर गिरें कि इससे पहले सामने से आते हुए सदाशिव ने उन्हें अपनी बाँहों में थाम लिया ।

जगराम बाबू का दिल जोर से धड़क रहा था । सदाशिव को सकुशल अपने सामने खड़ा देखकर उनकी जान में जान आई ।

पाँडेजी ने कहा–"भैया, आज सदाशिव नहीं होता, तो ऐक्सिडेंट हो ही गया था । सदाशिव ने अपनी जानपर खेलकर बूढे कुंजड़े को इंजिन के सामने से खींच लिया, नहीं तो आज न जाने... और सुनो तो, कितना शरमीला ह यह लड़का ! मेडिकल की फीस जमा करने के लिए इसने क्या किया, सो जानते हो जगमोहन भैया ? रात को दो-दो, तीन-तीन बजे तक रिक्शा चलाता रहा है यह एक महीने तक ! अरे, तुम्हीं से माँग लिए होते कुछ रुपये, चुकाता रहता धीरे-धीरे...."

जगराम बाबू एकटक सदाशिव की चमकती पुतलियों में अपनी धुंधली आकृति देखते रहे ।

(पृष्ठ ९ का शेष)

मग या मागी कहलाते थे, जो विशेषतः योग-समाधि, रहस्य-चिंता तथा वैज्ञानिक-प्रयोगों के अभ्यासी थे । मंत्र-तंत्र के प्रयोगों और सिद्धियों में उनकी प्रवीणता का प्रमाण अँग्रेजी का "मागिक" (Magic) शब्द ही है, जिसे "मैजिक" (जादू-टोना के अर्थ में) भी कहा जाता है । कालांतर में जन-समाज में, विशेषतः सभी देशों में मार्गी लोग जादू-टोटके और अनाचारों के आचार्य समझे जाने लगे थे । अरबी का मक्र, मक्कारी आदि शब्द उनके प्रति तत्कालीन समाज की इसी कुत्सित भावना का परिचायक है ।

आर्य-संस्कृति और मागी-संस्कृति का संघर्ष, जान पड़ता है, सदियों तक चला था और इस संघर्ष के परिणाम-स्वरूप बहुत-से मगों ने आर्य-धर्म में प्रवेश भी किया था । वे लोग अपने साथ जो परंपरागत, फलवती 'रहस्यविद्या' और विज्ञान तथा ढकोसला भी प्रचुर मात्रा में लेकर आए थे, उसे उचित स्थान और संमान देन के लिए चौथे वेद––अथर्ववेद––का विधान अनिवार्य हो गया । साथ ही यह भी हुआ कि आर्य-संस्कृति में प्रविष्ट होने की उत्कट अनिच्छा रखनेवाले मग भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर आर्यों के द्वारा दबाए जाने पर धीरे-धीरे दक्षिण की तरफ बढ़ने ले और विंध्य के नीचे-नीचे होकर छोटा नागपुर होते हुए भारत के पूर्वी भाग––बिहार–– तक जा फैले, जो उन्हीं की अधिकता के कारण "मगध" कहलाने लगा । वहां इन्होंने अपने कई संस्थान स्थापित किये ।

जान पड़ता है कि दक्षिण काल्डियाई संस्थान के अधिपति रावण और पूर्वी मगों के मुखिया महाजनक विदेह में जो नैकट्य था, उसका यही रहस्य था । एक दो बातें इस नैकट्य को प्रमाणित करती ही हैं, जैसे सीता का रावण की कन्या होने और जनक का उसका लालन-पालन करने का कथित जनापवाद । दूसरे, रावण के शिव के अनन्य उपासक होने पर भी रावण का शिव के "अजकव" को अपने यहां न रखकर जनक के यहां रखना । यह बात भी प्रसिद्ध ही है कि विदेहराज जनक अपने युग में रहस्य-विद्या या ब्रह्म-विद्या के आचार्य माने जाते थे और प्रायः ब्राह्मण ऋषि भी उनके पास ब्रह्मज्ञान के उपार्जन के लिए जाया करते थे । योगाभ्यास द्वारा मृत्यु के भय से रहित होना रहस्य-विद्या या ब्रह्मज्ञान का एक मुख्य लक्ष्य था । जान पड़ता है कि काल्डियाई रहस्य-विद्या, योग-विद्या या जादुई-विद्या का प्रसार पूर्व में मगध और पश्चिम में यूनान और रोम तक किसी-न-किसी रूप में सुदूर अतीत में था । मैं यूनानी शब्द 'पियैगोराख' को किसी 'बुद्धगुरु' '(?) का यूनानी रूप न मानकर प्राकृत 'तित्थायिरा' (––तीर्थंकर) ही का यूनानी रूप मानता हूँ; और 'पाइथागोरियन संप्रदाय' को श्वेतांबर जैनशाखा का आदिरूप । इसके कई और प्रमाण भी मुझे उपलब्ध हुए हैं, किंतु, यहां वह चर्चा अभीष्ट नहीं है । इतना कहना ही पर्याप्त मानिए कि यदि 'नाथ' शब्द शिव ही का एक पर्यायवाची है, तो 'आदिनाथ' जो जैनों के प्रथम 'तित्थायिरा' हैं, मेरी राय में, शिव के अतिरिक्त और कोई नहीं हैं । हो न हो, यूनान से मिथिला तक फैली हुई यह ईशान या ईशिन्ट (––काल्डियाई इश्टर) की उपासनावाली योग-प्रधान साधना जैन-धर्म ही का प्राचीनतम रूप रही हो । यदि इस कल्पना में कुछ भी सत्य है, तो कतिपय जैन-ग्रंथों का यह कहना कि राजा जनक जैन थे, एकदम गलत नहीं माना जा सकता । जो कुछ हो, इतना स्वीकार करने में किसी को अड़चन न होगी कि इस काल्डियन सभ्यता का किसी समय बड़ा बोलबाला था और समाज की इसके प्रति आस्था भी खूब ही थी । अनेक विचारकों का मत है कि रावण इसी सभ्यता और समाज का एक सुदृढ़ स्तंभ था । वह बड़ा विज्ञानवेत्ता था और उसने एक बड़ी भारी "प्रयोगशाला" (Laboratray) भी स्थापित कर रखी थी । आर्यों की लगन और जिजीविषा के रहस्य से परिचित होने के लिए वह अपने वैज्ञानिक प्रयोगों के हेतु आर्य-ऋषियों का रक्त परीक्षण के लिए संभवतः एकत्र करता रहा होगा; अथवा, अनार्यों में "ब्लड ट्रान्स्फ्यूजन" के लिए उसने भी आर्यों के रक्त का एक 'ब्लड-बैंक' कायम कर रखा हो !

इसी रावण का पुत्र मेघनाद उस युग में 'इंद्रजित' अभिहित हो रहा था। रावण के पुत्र मेघनाद का इंद्रजित होना एक प्रतीकात्मक उक्ति ही मान ली जाय, तो भी कुछ हर्ज नहीं है। इससे इतना तो पता लगता ही है कि आर्य-इतिहास के अतीत में एक युग ऐसा आया था, जब इस कोटि के इंद्रजितों के कारण आर्य-जाति और आर्य-सभ्यता के समूल नष्ट हो जाने का खतरा पैदा हो गया था। आर्य-जीवन के उस संक्रांति-युग में महर्षि वाल्मीकि का अवतरण हुआ। रावण नाम का कोई राजा रहा हो या न रहा हो, परंतु, जन-समाज के बौद्धिक और भावनात्मक जगत् में रावणवाद का विकट रोब और एकछत्र साम्राज्यवाद स्थापित था। और यह भी मानना पड़ेगा कि उस साम्राज्यवाद का विध्वंस किए बिना आर्य धर्म की प्रखर कर्मण्यता की जन-समाज के हृदयों में प्रतिष्ठा संभव नहीं थी। उस विकट साम्राज्यवाद से लोहा लेने के लिए वाल्मीकि सामने आए और अपने राम का नाम लेकर उस समय के उस प्रचंड रावणवाद का, बौद्धिक कुहासे और अंधकार के दर्प से अंधे, जड़ विज्ञानवाद का, उन्होंने संहार कर भी डाला। इस महान् कार्य के संपादन में उन्हें कितना पुरुषार्थ, कितनी जागरूकता और कितनी बौद्धिक व्यूह-रचना करनी पड़ी होगी! इसकी कल्पना करते ही उस महर्षि की स्मृति के संमुख नतमस्तक हो जाना पड़ता है।

(३)

सर्वज्ञ (शिव) के नाते ब्रह्मज्ञानी जनक तथा वैज्ञानिक रावण गुरु-भाई ही तो थे। अतः, उस भाई-चारे के आधार पर, मित्र की कन्या अपनी ही कन्या होती है, इस नाते, यदि सीता को रावण की बेटी कोई कहना ही चाहे, तो इसमें किसीको क्या आपत्ति हो सकती है? परंतु, वाल्मीकि को इसमें भारी आपत्ति थी। उनके राम, रावण के नगद-दमाद हों, यह बात वाल्मीकि को कतई पसंद न थी। जनक ने सीता के विवाह के लिए शिव के धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने की शर्त क्यों रखी थी? इसका कोई संतोषजनक कारण बताया नहीं गया है, अतः, इस संबंध में कल्पना तो करनी ही चाहिए। खैर, यह आगे की बात है। इस प्रत्यंचा-चढ़ाई के संदर्भ में इतना तो कहा ही जा सकता है कि उस धनुष को तुड़वा डालने की मंशा जनक की कदापि न रही होगी। जान पड़ता है कि राम के हाथों शिवजी के धनुष का भंजन वाल्मीकिजी ही ने कराया, क्योंकि, ठीक उसी तरह राम के हाथों रावण का संहार करना जो उन्हें अभीष्ट था। यहां यह कह देना जरूरी है कि वाल्मीकिजी व्यक्तिगत मानापमान की उपेक्षा करने के कारण, ऋषि, मुनि, वीतराग, और सब कुछ भले ही रहे हों, राष्ट्रीय अपमान का बदला वह सेर का सवा सेर नहीं, सवा मन चुकाते थे। इंद्र का अपमान पत्रि (रावण) के पुत्र (मेघनाद) से कराया गया था। उसका बदला एक मामूली राजा (दशरथ) के पुत्र राम के हाथों रावण की दसों गरदनें कटवाकर उन्हें चुकाया गया। रावण के अशोकवन में बेचारे मरुत् (पवन) को डर के मारे पैर दबा-दबाकर चलना पड़ता था। पवन के अपमान का बदला वाल्मीकि ने पवन-पुत्र हनुमान द्वारा अशोक-वन को तहस-नहस कराकर लिया!

वास्तव में इस धनुष-भंग की एक योजना द्वारा वाल्मीकि ने एक ही तीर में चार-चार निशाने मारे। ऐसा आभास होता है कि पछाँही आर्य क्षत्रियों के तो विध्वंसक थे, किंतु, तब तक आर्य-धर्म में पूर्णतया दीक्षित नहीं हुए रहस्य-विद्या-वादी पूरबी क्षत्रियों से, जिनके अगुआ जनक जी थे, उनका वैमनस्य न था। पछाँही आर्य-क्षत्रियों में वशिष्ठ ब्राह्मण का बड़ा बोल-बाला था। हो सकता है कि पूरबी क्षत्रिय विश्वामित्र और पछाँही ब्राम्हण वशिष्ठ की प्रति-द्वंद्विता और संघर्ष के मूल में यही बात रही हो। वस्तुतः, वह उतना व्यक्तिपरक मनोमालिन्य न था, जितना पूरब-पच्छिम का मनोमालिन्य था। यह पूरब-पश्चिम का मनोमालिन्य, प्रकाश-अंधकार का मनोमालिन्य, एशियाई-योरपीयों का मनोमालिन्य, बौद्धों और कर्म-कांडियों का मनोमालिन्य, प्रतिभाशीलों और तिकड़मबाजों का मनोमालिन्य, कर्मण्य संपन्नों और प्रमादी-द्वेषी-लुटेरों का मनोमालिन्य—एक शब्द में सूर्य को प्रकाशित करके ले आनेवाले गौरवपूर्ण पूर्व से सूर्य को डुबानेवाले विजयोन्मत्त और अभिमानी पश्चिम का द्वेष और मनोमालिन्य है। जब तक पूर्व में सूर्य के उदय और पश्चिम में सूर्य के दिवंगत होने की घटना, दुर्घटना, अथवा भ्रांति का निवारण नहीं होता, तब तक यह मनोमालिन्य भी दूर नहीं हो सकता। बीसवीं सदी की मानवता ने बहुत अंशों में इस मनोमालिन्य को दूर करने का जोरदार कदम उठाया ही था कि बीच में "उत्तर" ही "पश्चिम" का सूर्य-डुबाऊ प्रतिनिधि बनकर बीच गगन ही में पूरब के सूर्य को निगल जाने की चेष्टा करने के लिए मुंहबाए चला आ रहा है। यह दूसरी बात है कि अपर पक्ष की सामयिक सतर्कता के कारण उसे अपनी इस चेष्टा में सफलता न मिल सके।

जिस धर्म-ग्लानि की व्याप्ति पर गीता में भगवान् के अवतार की बात कही गई है, वह धर्म-ग्लानि अन्य कुछ नहीं, इसी प्रकार के व्यर्थ और असंतुलित दंभ की वृद्धि ही हुआ करती है। इसे दूर करने का अपने-अपने युग में त्येक युग-चेता प्रयास करता है, किंतु, सदा-सर्वदा के लिए कोई भी एक युग-चेता इसे कभी मिटा नहीं पाया है। शायद सदा के लिए इसके मिट जाने से सृष्टि-संचालन में विधाता को कुछ अड़चन पड़ती हो, अतः, इसका मिट जाना खुद उन्हीं को मंजूर न हो। विधाता की इसी योजना से झुंझलाकर हमारे एक महाकवि ने अपना आत्म-रुदन निम्न शब्दों में व्यक्त किया है:—

न था मैं, तो खुदा था; मैं न होता, तो खुदा होता।
डुबोया मुझको होने ने, न मैं होता तो क्या होता?*

महाभारत-काल में इसी संघर्ष के प्रतीक कृष्णार्जुन और दुर्योधन हुए थे। समस्त पूर्वी राजे महाभारत-युद्ध में अर्जुन की तरफ से लड़े थे और सारे पछाँही राजे दुर्योधन की ओर से, और इन्हीं हारे हुए पछाँहियों ने द्वारका में फूट पैदा कराकर, यादवों का संहार करवाकर और अर्जुन के स्कंधावार को लूटकर पुराना बदला चुकाया था! इसी मनोमालिन्य की प्रतिक्रिया महावीर और सिद्धार्थ गौतम का अवतरण हुआ था। जन-जीवन में, विशेषतः तरुण वर्ग में, यही असंतुलन और जीवन की एंकागदर्शिता, मेरी राय में, आज के "फ्रस्ट्रेशन" और "इनडिसिप्लिन" का रूप धारण कर रही है। कहे तो कह सकते हैं कि 'सन् ५७ (१८५७) तथा सन् ४२ (१९४२)' में भी पश्चिमी सत्ताधारी के विरुद्ध सबसे तेज आंधी पूरब ही ने उठाई थी। आज

---

*इस संदर्भ में महाकवि इब्सन (जी हां, प्रसिद्ध नाटककार हेनरिक इब्सन) की एक कविता की निम्न पंक्तियां दृष्टव्य हैं:—

विलकद स्किल्द बर्ग, देर सीग होयनार।
फ्रा दित्त लिल्ल, ओर्द: "अत लेवे!"

(अर्थात्: उस 'लिटिल वर्ड' "अतलेवे"—होने से, पाप का कितना विशाल पर्वत खड़ा हो गया रे विधाता!)

वह संघर्ष-क्षेत्र पूरब से दक्षिण की ओर खिसका जरूर दिखाई पड़ रहा है, किंतु, कोई गाफिल न हो! खतरे का 'सिगनल' (या सिंघल!) पूरब कभी उठा सकता है। क्योंकि, नया प्रकाश सदा पूरब ही से तो आता है। चिंता केवल इसी बात की है कि तब तो किसी भी आँधी को सँभालनेवाला एक (गाँधी) अपने बीच था। आज उस आँधी को सँभालने के लिए कौन अभिनव वाल्मीकि या गाँधी सामने आयगा ? अस्तु।

(४)

जान पड़ता है कि उस समय के सबसे महान् युग-चेता और सच्चे राष्ट्र-निर्माता विश्वामित्र-जी थे, जैसे अपने युग के राष्ट्र-निर्माता कृष्ण, और बहुत बाद में अपने युग के अनुरूप रामकथा के निर्माता, राष्ट्र निर्माता वाल्मीकि हुए थे। विश्वामित्र एक पुरबिया क्षत्रिय थे; किंतु, यदि नहीं थे, तो भी इनका आश्रम तो मलद (वर्तमान मालवा जिला) में होने के कारण पूरबी क्षत्रियों से इनका विशेष संपर्क निश्चित ही था। शायद इसी कारण इनकी महत्ता स्वीकार करने में पछाँही ब्राह्मण वशिष्ठ को बड़ा तकल्लुफ था। तकल्लुफ ही नहीं विश्वामित्र के पूरब-पच्छिम में ऐक्य-स्थापन के कार्य को उनका 'क्रांतिकारी' 'रोल' मानने के कारण बहुत दिनों तक वशिष्ठ उन्हें पग-पग पर विफल करने के लिए सभी प्रकार की चालें भी चलते रहे। अब यहाँ यह प्रश्न उठता है कि यदि वशिष्ठ विश्वामित्र से इतनी अधिक बुराई रखते थे, तो उन्होंने राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ जाने से रोक क्यों नहीं दिया ? दशरथ ने तो राम-लक्ष्मण को भेजने से इनकार कर दिया था। वास्तव में वशिष्ठ ही ने दशरथ को समझा-बुझाकर राजी किया था।

इस प्रश्न के उत्तर में तीन बातें उल्लेखनीय हैं। प्रथम यह कि जिस समय विश्वामित्रजी राम-लक्ष्मण को साथ लिवा जाने के लिए पधारे थे, उस समय तक वशिष्ठ और विश्वामित्र का संघर्ष समाप्त हो चुका था। वास्तव में विश्वामित्र की नेकनीयती ने वशिष्ठ के उनके प्रति भीषण संदेह और द्वेष के दुर्ग को ढहा दिया था और वशिष्ठ विश्वामित्र के उपासक ही हो चुके थे। उन्होंने विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि मान लिया था। दूसरे यह कि शरणागत होकर सहायता की याचना करनेवाले को प्राणों पर संकट झेलकर भी सहायता देना आर्यों का प्रधान गुण था और आज भी है (और नहीं है, तो होना चाहिए) और तीसरे यह कि वशिष्ठ को विश्वास था कि विश्वामित्र से राजकुमारों को कुछ-न-कुछ सिद्धियां अवश्य ही प्राप्त होंगी, क्योंकि, एक नवीन सृष्टि ही कर डालना आरंभ करके विश्वामित्रजी संसार को अपनी अलौकिक प्रतिभा एवं निर्माण-कारिणी शक्ति का परिचय दे चुके थे!

विश्वामित्र के वास्तविक उद्देश्य का पता तो तब चला, जब कालिदास के गूढ़ शब्दों में "वरुण-समान जनक" और "इंद्र-समान दशरथ" में (नहीं, नहीं, उनकी संतानों में!) गठ-बंधन करा देने में वह सफल-मनोरथ हुए। गरिमा, लघिमा आदि सिद्धियां देनेवाली वे सब योग-क्रियाएँ, जिन्हें दक्षिण के अंगद और हनुमान आदि 'वानर' तक जानते थे, विश्वामित्र को ज्ञात थीं। विश्वामित्रजी ने वह सब (परा-अपरा) विद्या राम को मार्ग ही में सिखा दी थीं। वहीं, तो कह सकते हैं कि शिव के धनुष को (भारी चीज को) अनायास उठा लेने और इच्छानुसार तीन या चार टुकड़ों में उसे खंडित कर देने की युक्ति भी उन्होंने राम को (और लक्ष्मण को भी, तभी तो लक्ष्मण कच्चे घड़े की तरह ब्रह्मांड को तोड़ डालने का उद्घोष धनुष-यज्ञ-शाला में करता था) बता दी थी। और फिर शिव का धनुष टूटते ही एक ओर तो रावण की अजेयता पर जनक का अटूट विश्वास टूटा; और दूसरी ओर मोह-निशा में रावण की अहंकार-रूपी नींद का सपना भी कि जिस पिनाक को वह योजनों उठा ले आया था, देखें उसे तोड़ने, क्या उठा सकनेवाला भी, कोई उत्तरी भारत में है क्या, टूट गया! और उसके साथ ही साथ परशुरामजी का संदेह भी मिट गया और वह सदा-सदा के लिए ठंडे पड़ गए। शिव का धनुष टूटा होता, न वह जनकपुर पधारकर, "राम रमापति कर धनु लेहू! खैंचहु चाप मिटहि संदेहू।" कहते हुए राम के सामने अपना धनुष बढ़ाते और न राम उनके धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर उनका संदेह और दर्प चूर्ण करते! दशरथ और जनक के बीच की दूरी मिटाने और उन्हें एक-दूसरे का हृदयस्थ बनाने के प्रयास में सफल होने का श्रेय जैसे विश्वामित्रजी को मिला था, जान पड़ता है वैसा ही श्रेय लेने के लिए वाल्मीकि के पूर्व किसी 'तत्ता-थम्मा' करानेवाले कवि या सूत ने कोई काव्य रचकर (जो बाद में वाल्मीकि की "रामायण" रूपी अग्नि के संस्पर्श ही से घास-फूस की ढेरी की तरह जलकर राख हो गया होगा) या कोई आख्यान गढ़कर, आर्य विरोधी सभ्यता के प्रतीक निशाचर-नरेश रावण, और आर्य-सभ्यता के मार्तंड राम के बीच "निकटतम-संबंध-संस्थापना-थाय", "सीता रावण की कन्या हैं, अतः, राम रावण के जामाता हैं", ऐसा नारा बुलंद किया हो। संभव है, किसी इसी कोटि के "अगुए" ने रावण और राम के बीच साला-बहनोई का रिश्ता स्थापित कराने की अपनी अभिलाषा से पंचवटी में शूर्पणखाजी को भी भिजवाया रहा हो। हो, तो हो! यह कोई नई बात तो है नहीं। दुश्मन के साथ साले-बहनोई का रिश्ता जोड़कर मित्रता के नारे बुलंद करके विद्वेषों और संघर्षों को मिटा डालने का सपना अतीत में भी सच हुआ हो, और भले ही आज भी सच हो जाय; और भले ही हमारे ही देश में एक राजा दूसरे राजा का पहले बहनोई और बाद में उसका फिर जामाता वर्तमान युग में भी होता रहा हो*, वाल्मीकिजी की न तो ऐसे थोथे नारों ही पर आस्था थी, और न अपने राजा राम को वह इस प्रकार रावण महाराज का प्रथम जामाता और बाद में उन्हीं का बहनोई बनाना ही उन्हें पसंद था। वह आर्य जो थे! इसी कारण उन्होंने, ऐसा कुछ तथ्य रहा भी हो, तो, उसके आधार पर, राम के प्रति रावण की प्रीति जुड़ने की संभावना ही को तोड़-ताड़कर चूर्ण कर दिया। यह उनके उस तीर का चौथा शिकार था। पंचवटी से शूर्पणखा को नकटी-बूची करके भेजा। तात्पर्य यह कि वह किसी भी शर्त पर रावण के साथ राम का समझौता नहीं चाहते थे। वह केवल चाहते थे राम के हाथों रावण का संहार और रावणवाद का परिपूर्ण विनाश। वह रावण के संहार और रावणवाद के विनाश में पूर्णतया सफल भी हुए। इसके लिए उन्होंने जो कुछ उपाय निकाले, वे सभी पवित्र और वर्णीय हैं; और उन्हें ठीक-ठिकाने से समझे बिना तरह-तरह के कुतर्क और कुप्रश्न उठाना मूर्खता तो है ही, हृदयहीनता भी है!

---

*कहते हैं कि राजस्थान के एक नरेश वहीं के एक अन्य नरेश के प्रथम बहनोई हुए और फिर उन्हींकी कन्या से विवाह करके उनके जामाता हुए थे। उन दोनों रियासतों के बीच शायद यही परंपरा रही हो।

—लेखक।

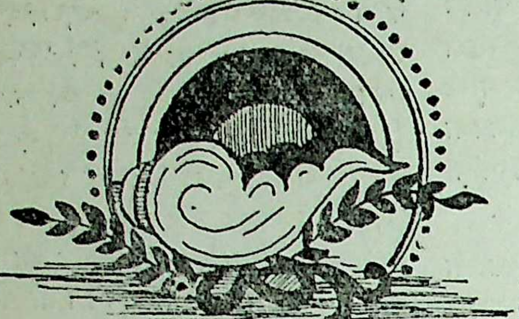

मालवी साहित्य में—

लोक-पहेलियों का स्थान

--श्री तेजकुमार 'निर्मोही'

भारतीय लोक-साहित्य में जो स्थान लोकगीत, लोक-कहावतों एवं लोक-कथाओं का है, वही लोक-पहेलियों को भी उपलब्ध है। लोक-पहेलियां मानव के ज्ञान-वैभव का अनन्त प्रदर्शन है। इस दिशा में सांसारिक वस्तुओं को अपने ढंग से परखने का, जनसामान्य का प्रयास एक विशेष महत्त्व रखता है। पहेलियों की परम्परा अति प्राचीन है। सम्पूर्ण विश्व की विभिन्न जातियों में इनका प्रचलन पाया जाता है।

जनपदों से सम्बन्ध रखनेवाली इन पहेलियों के सम्बन्ध में लोक-साहित्य के विद्वान फ्रेजर महोदय का कथन है कि—"पहेलियों का उद्गम उस समय हुआ होगा, जब किन्हीं कारणों से वक्ता को अपनी बात कहने में असुविधा या अड़चनें पड़ी होगीं। परन्तु जब हम विभिन्न भाषाओं की पहेलियों का इतिहास देखते हैं, तो हमें ज्ञात होता है कि—"जानकार मनुष्य, दूसरे मनुष्य के ज्ञान का परीक्षण करता है।" उस समय हमारा असाधारण ज्ञान, अज्ञानियों के लिये कौतूहल का विषय बन जाता है।

मेरे अपने मत में यह एक प्रकार से मानव के "बुद्धि-वैभव का खेल" है; क्योंकि प्रायः मानव की बुद्धि-कुशलता तथा वाक्-चातुर्य को ही इसमें प्राथमिकता पाते देखा गया है। इसलिए यदि हम इन पहेलियों को ज्ञान-परीक्षण के साथ-साथ बुद्धि-वैभव का खेल भी कहें तो अनुचित न होगा।

पहेलियों में मानवी ज्ञान की अनन्त-गहराइयां समाहित हुई हैं। जिसमें जीवन के सामने से होकर गुजरनेवाली घटनाएं, उनका रूप, वैभव तथा मूल सौन्दर्य छिपा रहता है।

मालव जनपद का लोक-साहित्य अपनी व्यापकता लिए हुए है, परन्तु सरिता की तरह उसमें अलगाव नहीं, अपितु वह तो यत्रतत्र बिखरा पड़ा है। उसके शोध-पर्यवेक्षण की जरूरत है। पिछले कुछ शतक से मालव के साहित्यकारों में गवेषणात्मक चेतना का संचार हुआ है और वे इस दिशा में 'सत्रें' अर्थात् शोधकार्य कर रहे हैं। मालव की अति प्राचीन संस्कृति को सुरक्षित रखना हमारा कर्तव्य हो जाता है। मालव की सांस्कृतिक गरिमा के साथ ही विक्रम-कालिदास जैसी विश्वप्रसिद्ध विभूतियों की पृष्ठभूमि जुड़ी हुई है।

यहां पर हम मालवी की उन लोक-पहेलियों को प्रस्तुत कर रहे हैं, जिसके साथ मालव की संस्कृति बोलती प्रतीत होती है।

एक पहेली में मानव-ज्ञान के परीक्षण के लिए किए गए प्रयोग को देखिए—

"एक अचम्भो म्हे सुन्यों जी, मुर्दो आटो खाय।
बोलो तो बोले नहीं, मारो तो चिल्लाय॥"
(मृदंग)

(एक आश्चर्य मैंने सुना है कि मुर्दा आटा खाता है। उससे बोलते हैं तो वह बोलता नहीं है। उसे जब मारते हैं तो वह चिल्लाता है।)

इतना ही नहीं ज्ञान के परीक्षण पर खरी उतरनेवाली एक अन्य पहेली को देखिए—

"एक अचम्भो म्हें सूण्यो जी, पिण्डली ग्याबन होय।
पिण्डी बेटा जन्म दियो, अब दूध कहां से होय॥"
((नारू).

(हमने एक आश्चर्य सुना है कि पैर की पिण्डली को भी प्रसव होता है, और तो ओर उसने एक बेटे को जन्म भी दिया है। अब उसके लिए दूध का प्रबन्ध कहां से हो।)

'रूपकों' की ढ़लान में पलनेवाली एक मालवी पहेली का अवलोकन कीजिए—

"लीली दरोप री कांचरी, पेरू बार तेवार।
कसवा बादू खेंचमा, फूंदा लाल-गुलाल॥
(मेंहदी)

मालव की संस्कृति तथा परम्परा का रूप प्रकट करनेवाली पहेली का अवलोकन कीजिए—

"छूम छुमारा चूमरी, पड़ी आंगन बीच।
हेड़ू तो हिटे नहीं, हुइगइ धरती समान॥
(माण्डने)

लोक-विश्वास पर खरी उतरनेवाली एक पहेली का अवलोकन कीजिए—

"मोती बिखरे, चंदन चौक में,
म्हारी बाई से समेटचा नी जाय॥"
(अग्नि)

इस प्रकार से मानवी-जीवन की अगाध गहराई लेकर ये पहेलियां हमारे लोक-जीवन में समाहित हो गई हैं।

कुछ ज्ञातव्य बातें

१. सबसे पहले मद्रास राज्य में सन् १९०४ में पोर्टलैंड सीमेंट बनाने का कारखाना खोला गया था, परन्तु अन्ततः वह कारखाना असफल ही रहा।

२. इसके ९ वर्ष बाद पोरबन्दर में दूसरा छोटा कारखाना खोला गया, जो अब तक चल रहा है। इसके बाद ही लखेड़ो और कटनी में भी कारखाने खोले गए। उस समय पहला विश्वयुद्ध शुरू हो गया, इसलिए ये कारखाने सफलतापूर्वक चलने लगे।

३. तटकर आयोग के सुझाव पर, सन् १९२६ में भारतीय सीमेंट निर्माता संघ स्थापित किया गया।

४. सीमेंट की खपत बढाने के लिए सन् १९२७ में कंकरीट संघ और कारखाने में बने सीमेंट की बिक्री के लिए सन् १९३० में सीमेंट बिक्री संघ बना।

सिंचाई का अधिकाधिक उपयोग

दूसरी पंचवर्षीय योजना के पहले तीन वर्षों में, बड़ी और मध्यम सिंचाई योजनाओं से मिलनेवाले पानी का उपयोग काफी बढ़ा है। पहली और दूसरी योजनाओं में सिंचाई की जो व्यवस्था की गई सन् १९५८–५९ के अन्त तक उसका ८२ प्रतिशत इस्तेमाल हो रहा था, अर्थात् ७२ लाख एकड़ जमीन की सिंचाई की क्षमता थी, जिसमें से ५९ लाख एकड़ जमीन सींची जा रही थी। सन् १९५७–५८ में यह उपयोग था ६९ प्रतिशत अर्थात् ६२ लाख एकड़ क्षमता में ४९ लाख एकड़ और १९५७–५८ में ६४ प्रतिशत यानी ५३ लाख एकड़ में से ३४ लाख सींची गई थी।

ये आंकड़े केंद्रीय सिंचाई तथा बिजली मंत्रालय के १९५९–६० के काम की रिपोर्ट में दिये गये हैं।

रिपोर्ट में बतलाया गया है कि इस बात की कोशिश की गई कि सिंचाई की जो योजनाएं पूरी हुई हैं उनका पूरा उपयोग हो। विभिन्न राज्यों में सिंचाई का कितना प्रबंध है और उसका कैसे उपयोग हो, इस विषय में सलाह देने के लिए दो अवकाश प्राप्त मुख्य इंजीनियरों को नियुक्त किया गया। पहली पंचवर्षीय योजना के अन्त में ५३ लाख एकड़ की सिंचाई के लायक व्यवस्था हो चुकी थी, पर केवल २९ लाख एकड़ में ही सिंचाई की गई। दूसरी योजना के अन्त तक १ करोड़ ३० लाख एकड़ में सिंचाई का प्रबंध हो जायगा।

इस वर्ष राष्ट्रीय योजना निर्माण-निगम ने दिल्ली में यमुना पर वजीराबाद बांध का निर्माण पूरा किया। इस बांध से दिल्ली में पानी का कष्ट दूर हो गया। इस निगम को १९५८–५९ में ३,७३,८९५ रुपये का फायदा हुआ और इसने ३॥ प्रतिशत का लाभांश दिया।

बड़ी योजनाओं की प्रगति

रिपोर्ट मे देश की बड़ी-बड़ी सिंचाई और बिजली योजनाओं जैसे, हीराकुड, दामोदर घाटी निगम, भाकड़ा-नंगल, तुंगभद्रा, कोसी, कोयना, रैंड, चंबल, नागार्जुनसागर, राजस्थान नहर और डक के निर्माण की प्रगति का भी उल्लेख है। इसमें बताया गया है कि इस साल जितना काम करने का लक्ष था वह प्रायः पूरा हो गया।

इस मंत्रालय ने इस बात पर बराबर ध्यान रखा कि सिंचाई और बिजली योजनाओं का काम ठीक चल रहा है और खर्च अनुमान से बढता तो नहीं। पंचवर्षीय योजना में शामिल करने के लिए राज्यों की योजनाओं की जांच मंत्रालय का दूसरा काम है। तीसरा काम इस बात का ध्यान रखना है कि राज्य सरकारों और विभिन्न योजनाओं में बरती हुई मशीनों का और जगह भी अधिक से अधिक इस्तेमाल किया जाय। योजनाओं के लिए विदेशी मुद्रा का प्रबंध भी मंत्रालय काम है।

सिंचाई और बिजली की योजनाओं के काम में आनेवाली कठिनाइयों को हल करने के लिए मंत्रालय ने ४ प्रमुख इंजीनियरों को सलाहकार नियुक्त किया।

भारत–पाक नहरी पानी झगड़ा

मंत्रालय की रिपोर्ट में भारत और पाकिस्तान के नहरी पानी के झगड़े के बारे में संक्षिप्त ब्यौरा देते हुए बताया गया है कि दिसंबर १९५८ से अप्रैल १९५९ तक वाशिगटन में दोनों पक्षों में क्या बातचीत हुई और पाकिस्तान के प्रतिनिधि ने २१ मई, १९५६ को पहली बार स्पष्ट रूप से १९५४ के विश्व-बैंक के प्रस्ताव को स्वीकार करने की घोषणा की। १७ अप्रैल १९५९ को दोनों देशों के प्रतिनिधियों ने १ अप्रैल, १९५९ से ३१ मार्च, १९६० तक के लिए नहरी पानी के उपयोग की अन्तरिम व्यवस्था के बारे में समझौता किया।

मई, १९५९ में विश्व-बैंक के अध्यक्ष श्री यूजीन ब्लैक बातचीत के लिए भारत और पाकिस्तान आए। इस बातचीत में जो सहमति हुई, उसके आधार पर ५ अगस्त १९५९ से लंदन में फिर बातचीत हुई और इसके फलस्वरूप समझौते के कुछ आधार तैयार हुए। इन्हीं के आधार पर भारत-पाकिस्तान जल संधि-पत्र बनाया जायगा।

जल साधनों का विकास

केंद्रीय जल विद्युत् आयोग की जलशाखा यह अध्ययन करती रही कि देश की नदियां और सिंचाई की क्या व्यवस्था हो सकती है। जिन नदियों में नावें चल सकती हैं उनके बारे में एक रिपोर्ट तैयार की गई। लखनऊ से लेकर गंगा संगम तक गोमती नदी का सर्वे किया गया। २ योजनाओं की शिल्पिक जांच करके, राज्य सरकारों को प्रारंभिक राय दी गई। १४ योजनाओं पर पक्की टिप्पणी दी गई।

मंत्रालय के यंत्र और मशीनरी विभाग ने ७९ लाख रुपये की मशीनों को दूसरी योजनाओं में इस्तेमाल के लिए भिजवाया। १० लाख रुपये के मूल्य के फालतू पुर्जे बेचें गये। नागार्जुनसागर बांध के लिए एक लकड़ी का पुल और कोसी योजना के लिए पानी निकालने के फाटक आदि के डिजाइन और ड्राइंग आदि तैयार किये गये।

कोसी बांध और उड़ीसा के मुंडाली बांध के नक्शे और महानदी के आरपार जोबरा और बीरपुर बांधों के पुनर्निर्माण के नक्शे भी तैयार किये गये। नेवेली के ताप बिजलीघर का नक्शा और खर्च के अनुमान तैयार करके भेजे गये। इसी प्रकार रांची के पास बनने वाले ३०० एम.

(शेष २९ पृष्ठ पर)

मानव-सभ्यता और संस्कृति पर विज्ञान का प्रभाव

विज्ञान की शक्ति अपार है। समय और समाज की आवश्यकताओं के फलस्वरूप विज्ञान का विकास हुआ है और वर्तमान युग पर विज्ञान का कितना अधिक प्रभाव है, यह किसी से छिपा नहीं। मानव-जीवन और मानव-सभ्यता के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान का आधिपत्य है और यह भी पूरी तरह निश्चित् है कि संसार के भावी स्वरूप का निर्माण भी विज्ञान ही करेगा। विज्ञान मनुष्य की शक्ति, क्षमता और बुद्धिमत्ता का प्रतीक है, लेकिन इसके साथ ही उसने मानव की दुर्बलताओं और सीमाओं को भी पूरी तरह स्पष्ट कर दिया है।

यदि मनुष्य अभावग्रस्त न होता तथा जीवन व्यतीत करने के लिए उसे कई प्रकार की वस्तुओं की आवश्यकता न पड़ती, तो संसार विज्ञान के आलोक से रहित होता। न विज्ञान का विकास होता और न मनुष्य की बुद्धि आविष्कारों की ओर प्रवृत्त होती। तथ्य यह है कि अभावग्रस्त होते हुए भी मनुष्य साहस, शक्ति और स्फूर्ति से ओत-प्रोत था और इसलिए उसने संसार की सभी विघ्न-बाधाओं को भेदकर अपना मार्ग ढूंढ निकाला।

अमेरिका के महापुरुष श्री फ्रैंकलिन और श्री जेफर्सन की गणना ऐसे व्यक्तियों में की जाती है, जिसमें सच्चे वैज्ञानिक की आत्मा निवास करती थी। इन दोनों महापुरुषों ने अपने अथक परिश्रम द्वारा ऐसे आधारभूत सत्यों की खोज की, जो आज समस्त मानव जाति का पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं। ये दोनों महापुरुष कोरे राजनीतिज्ञ ही न थे। वह यह समझते थे कि देश की प्रगति और समृद्धि की दृष्टि से विज्ञान का क्या महत्त्व है। उन्होंने यह अनुभव कर लिया था कि दल, दरिद्रता और अभाव के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए विज्ञान एक अत्यधिक शक्तिशाली साधन है। उनका यह सोचना सर्वथा उचित था कि विज्ञान उनके देशवासियों का जीवन-स्तर सुधारने में महत्त्पूर्ण योग देगा तथा अन्धविश्वास और अज्ञानता को पूरी तरह नष्ट कर देगा। उन्हें यह भी विश्वास हो गया था कि अत्याचार, बर्बरता, दमन, धार्मिक उत्पीड़न इत्यादि से मानव जाति को मुक्त करने की क्षमता विज्ञान में ही है।

इन महापुरुषों ने आज से २०० वर्ष पूर्व जो भविष्यवाणियां की थीं, वह बिलकुल सही निकलीं। इस अवधि में उनका स्वप्न ही पूरा नहीं हुआ, बल्कि मानव जीवन और सभ्यता के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान की सहायता से आश्चर्यजनक प्रगति की गई है। कृषि उद्योग, व्यवसाय, चिकित्सा और जीव-विज्ञान इत्यादि के क्षेत्र में इतनी अभूतपूर्व क्रान्ति हो गई है जिसकी सम्भवतः इन महापुरुषों ने भी कभी कल्पना न की होगी। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान का सहारा लेकर मनुष्य ने आश्चर्यजनक सफलताएं प्राप्त की हैं। विज्ञान के बल पर पृथ्वी-मण्डल की सीमाओं को भेद कर अन्तरिक्ष में उड़ान भरने और अन्य ग्रहों और उपग्रहों पर मानव-सभ्यता का ध्वज लहराने के स्वप्न हम देख रहे हैं। वह दिन भी दूर नहीं जब जीवन के रहस्य को भी हम सुलझा लेंगे। विज्ञान की सहायता से मनुष्य ने मोटर, रेडियो, टेलिविजन, टेलीफोन इत्यादि आधुनिक सुख-सुविधा की तरह-तरह की वस्तुएं और रोगाणुनाशक आश्चर्यजनक औषधियां तैयार की हैं तथा बहुत से घातक रोगों पर उसने विजय प्राप्त की है। संक्षेप में, विज्ञान ने मनुष्य के जीवन को हर प्रकार से सुखी बनाने का प्रयत्न किया है।

लेकिन यह पर्याप्त नहीं कि संसार के कुछेक देश ही विज्ञान के आलोक से आलोकित रहें तथा शेष संसार पहले की तरह अभावग्रस्त और अन्धकारपूर्ण बना रहे। समय की मांग है कि संसार के अन्य भागों को भी विज्ञान से पूरा-पूरा लाभ प्राप्त हो। यह सम्भव नहीं कि आधा विश्व विज्ञान के अन्धकार से मुक्त और सुखी हो तथा शेष संसार में अज्ञानता और अन्ध-विश्वास का अखण्ड साम्राज्य हो। यह ठीक है कि एशिया और अफ्रीका के देशों में नवजागृति के लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे हैं तथा शीघ्र ही अन्धकार ग्रस्त क्षेत्रों में भी ज्ञानरूपी प्रकाश की किरणें फूट निकलेंगी। परन्तु इसके लिए प्रयत्न, साहस और प्रोत्साहन की अत्यधिक आवश्यकता है। मनुष्य ने जो ज्ञान और जानकारी प्राप्त की है उसका उस समय तक लोप नहीं हो सकता जब तक पृथ्वी-मण्डल पर मानव जाति रहती है। जब तक मानव जाति जीवित है, यह अज्ञान और अन्धविश्वास के अन्धकार को भेदने के अपने प्रयत्न को बराबर जारी रखेगी।

विज्ञान जहां मानव जाति के लिए एक वरदान सिद्ध हुआ है, वहां उसने बहुत-सी समस्याओं को भी जन्म दिया है। इसमें दो समस्यायें सबसे अधिक जटिल हैं। पहली समस्या तो यह है कि विज्ञान ने मनुष्य को अपार शक्ति प्रदान की है। इस शक्ति का उपयोग अच्छे तथा बुरे कार्यों के लिए समान रूप से किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, अणुशक्ति को लीजिये, आणविक शस्त्रास्त्रों के निर्माण के फलस्वरूप एक प्रलयंकारी शक्ति, जो मानव जाति के लिए एक वरदान सिद्ध हो सकती थी, आज समस्त मानव जाति के लिए एक अभिशाप बन गई है और मानव जाति के विनाश का भय उत्पन्न हो गया है। संसार के विभिन्न देशों की विभिन्न शासन-प्रणालियों पर आधारित सरकारें इस समस्या को नहीं सुलझा सकतीं, क्योंकि वह अपने स्वार्थों और सिद्धान्तों को दृष्टि में रखकर ही उस पर विचार करती हैं। हम केवल यह आशा कर सकते है कि ऐसे अंतर्राष्ट्रीय समाजों का निर्माण हो, जो एक दूसरे के प्रति सहानुभूति, सहिष्णुता और मित्रता की भावना रखते हों। समाज ही इस समस्या को सुलझा सकेगा।

दूसरी समस्या यह है कि विज्ञान की प्रगति के फलस्वरूप प्रत्येक वस्तु का स्वरूप बदल गया है और भविष्य में भी उसमें निरन्तर परिवर्तन होना है। ज्ञान की कोई सीमा नहीं और न वह किसी एक पुस्तक में सीमित किया जा सकता है। ज्ञान में निरन्तर विस्तार होता रहता है तथा सभ्यता और संस्कृति के मापदण्डों में भी उसी के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं।

यदि हम स्वतन्त्र, रहना चाहते हैं, तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि जीवन का बलिदान करके की अपनी स्वतन्त्रता बनाए रखें। मनुष्य के हृदय में ज्ञानोपार्जन की तीव्र लालसा और उत्कण्ठा जगा कर ही हम ससार और मानव सभ्यता का वास्तविक कल्याण कर सकते हैं। विज्ञान ने आज समस्त संसार को विशाल परिवार में परिणित कर दिया है। प्रेम, सहिष्णुता, निष्ठा, विश्वास और सहयोग के बल पर ही यह विशाल परिवार फल-फूल सकता है।

('विज्ञान' से साभार)

मार्कण्डेय .....

(पृष्ठ ६ का शेष)

उन्मद होकर अपेक्षित से अधिक निर्विवेक संहार में प्रवृत्त हुआ, करुणानिलय शिव ने तब शरभ-मूर्ति होकर उस अवतार का दमन किया। उस प्रदेश में 'शरभमूर्ति' व्यक्ति नाम बड़ी श्रद्धापूर्वक रखे जाते हैं। शरभ का सांस्कृतिक प्रभाव यद्यपि सिंधु सभ्यता के युग से, जब उपर्युक्त मुद्रा पर उसका अंकन उसके द्वारा मारे गये व्याघ्र के साथ किया गया था, आज के तमिल शरभमूर्ति नामों तक सतत मिलता है। किंतु दसवीं शती में चक्रदत्त उसे काश्मीर में प्रसिद्ध बतलाता है तथा अलबेरूनी के यात्रा वर्णन से प्रकट होता है कि उसके काल में अनेक हाथियों से ज़ूझ सकने और उनमें से एक को पीठ पर लाद ले जा सकने वाला शरभ कोंकण के वनों में विद्यमान माना जाता था (खंड १, पृष्ठ २०३)। इससे ज्ञात हता है कि चक्रदत्त के काल तक शरभ की केवल कहानी ही बच रही थी और वनराज सिंह शार्दूल को अंकुशित करनेवाला उनका यह अधिराज भारतीय वनों से बहुत पहले निःशेष हो चुका था।

सिंहशार्दूलों की मृगया

वनराज सिंहशार्दूलों का यह आतंक जंगलों या पशुओं तक ही सीमित नहीं था और पुराणकाल में यह लक्षित किया गया था कि विशाल मुख एवं बड़ी-बड़ी डाढ़ोंवाला यह भयानक जंतु (मा. पु.) हनन करने की इच्छा उत्पन्न होने पर उचित एवं अनुचित का विचार नहीं करता (वही १२५।११) विपत्तिग्रस्त राजा हरिश्चन्द्र को, स्वप्न में ही सही, खाने के लिए यह मुंह फाड़कर आ ही गया तथा (वही ८।१५०)। अपने शिष्यों को व्याकरण का ज्ञान देते हुए पाणिनि को व्याघ्र द्वारा खा लिये जाने की अनुश्रुति प्रसिद्ध है। सिंहशार्दूलों को इस प्रवृत्ति ने इनकी मृगया का सूत्रपात किया प्रतीत होता है। ऋचाओं में व्याधों द्वारा वन में सिंहों को ताड़ित किये जाने का उल्लेख मिलता है। (ऋग्वेद ५।७४।४) और पुराण के सम्राट अवीशित ने भी वन में दंष्ट्राओंवाले शार्दूल आदि की मृगया की है (मा० पु० १२७।१)। दशरथ की अयोध्या के महारथी सिंह एवं व्याघ्रों का पैने शस्त्रों से अथवा केवल बाहुबल से हनन कर डालते थे (वा० रा० १।५।२१)। कौटल्य के वर्णन से ज्ञात होता है कि मौर्य राज्य-काल में व्याघ्रों का आतंक समाप्त करने के लिए मदन के रस से मिश्रित पशु देह को अथवा मृत बछड़े के शरीर में मदन या कोदों का स्वरस भरकर उपयुक्त स्थान पर डाल दिया जाता था। कवच धारी व्यक्ति अयोध्या के महारथियों के समान ही व्याघ्रों को बाहुबल से ही मार डालते थे। व्याघ्र उन्हें जालों में फंसाकर पकड़ लाते थे। सिंह शार्दूलों के इस प्रकार पकड़े गये बच्चे पालतू बनाए जाते रहे होंगे और फिर उनका विदेशों को निर्यात किया जाता था (मध्य प्र० सं०, ५ मार्च १९६०)। भारतीय राजदूत विदेशी सम्राटों को उन्हें उसी प्रकार भेट में देते थे (देखिए; वार्मिग्टन: दी कॉमर्स बिट्वीन दी रोमन एम्पायर एंड इंडिया), जिस प्रकार भारतीय हाथी आज विदेशों को उपहार में भेजे जाते हैं। व्याघ्र का वध करनेवाले व्यक्ति को पुरस्कृत किया जाता था तथा व्याघ्र के पंजे में फंसे मनुष्य को बचाने में उपेक्षा करनेवाले को मौर्य राज्य काल में अर्थदंड दिया जाता था। (अर्थशास्त्र ४।३)। कालिदास ने किसी पूर्व अनुश्रुति के अनुसरण में दशरथ द्वारा सिंह की मृगया की जाने का वर्णन किया है। दुर्गावाहन सिंह को शैव देव परिवार का सदस्य होने का, जिसका प्रकारांतर से संकेत उसके काव्य में भी मिलता है (रघुवंश २।३५-३६), और नृसिंह विष्णु के रूप का उपासना परक महत्त्व प्राप्त रहने का तारतम्य अविच्छिन्न मिलता है। राष्ट्रीय चिह्न के रूप का गौरव उसमें प्रागार्य परंपरा में प्रतिष्ठित चला आता था, यह शंबरासुर के तोरण पर स्थापित ध्वज पर सिंह निर्मित मिलने से ज्ञात होता है (हरि० २।१०४। ३७)। कालिदास के काल की राष्ट्रीय परिस्थितियों में गणराज्य पद्धति का देश में पुनरुत्कर्ष हुआ था तथा सातवाहन राजाओं ने और नाग गणराज्यों ने सिंहशार्दूलों की राजचिह्न की गरिमा पर पुनर्प्रतिष्ठा की थी (म० भा० का इति., १, पृष्ठ ४७१)। अतः सिंह को मिले इस दुहरे महत्त्व के कारण दशरथ की सिंह मृगया का कालिदास को स्पष्टीकरण देना पड़ा है (रघु० ९।६५)। मौर्य राज्य काल में सम्राटों की मृगया बड़े ठाठबाट और सुरक्षा के प्रबंधपूर्वक होती थी (म० भा० का इति०, १, पृष्ठ २०६)। कालिदास का संकोच और राज मृगया की मेगास्थने द्वारा देखी गई सजधज सिंह की मृगया के साथ अवीक्षित की शार्दूल मृगया का पुराणकार द्वारा निर्विशेष सीधा सादा कथन किये जाने के काल के पश्चात् जुड़ी प्रतीत होती है।

सिंहासन

सिंहशार्दूलों की मृगया की महत्त्वपूर्ण प्रतिपत्ति सिंहासन था (मा०पु०१०९।४४)। जिसका मूल रूप वनराज का चर्म रहा प्रतीत होता है। पशु जगत् उत्पत्तिकाल के प्रक्रम पर आज भी स्थित है और मनुष्य ने उसके देखादेखी अनेक दिशाओं में विकास किया है। शंकर की मूर्ति व्याघ्रचर्म धारण किये साकार हुई थी (मत्स्य० २१७।५; २५९।६) तथा प्राचीन भारत के सम्राटों को अभिषेक के समय व्याघ्र से अभिन्न होने का आशीर्वाद देते हुए व्याघ्रचर्म पर पद-निक्षेप करने को कहा जाता था (अथर्ववेद ४।८।४)। उसे ऊमर की लकड़ी की आसंदी पर बिछे व्याघ्रचर्म पर, जिसके रोम ऊपर को और ग्रीवा पूर्व दिशा को रखी जाती थी, बिठाकर इस आशंसा से अभिषिक्त किया जाता था कि वह क्षत्रियों में उसी प्रकार श्रेष्ठ हो जिस प्रकार आरण्यक पशुओं में व्याघ्र होता है (ऐतरेय ब्राह्मण ८।२।५-६)। नृपासन, जिस पर बैठकर राजा मुकुट धारण करता था, व्याघ्र चर्मयुक्त होता था (शौनकीयम् २।१।२२, २३, २७)। इन उपचारों के आग्रह ने सांस्कृतिक विकास क्रम में मार्कण्डेय द्वारा तथा अन्यत्र बहुशः उल्लिखित कलापूर्ण सिंहासनों (ब्रम्हाण्ड० ३।२६।२१) को साकार किया होगा। देवता (वही ४।१४।१२), असुर (मत्स्य० १४८।२९) तथा पाण्डवों जैसे मानवों के भव्य सिंहासनों का वर्णन मिलता है (वही १०३।१८)। सिंह प्रासादों का निर्माण भी प्राचीन काल में होता था जिनकी आकृति सिंह जैसी और जिनके तोरण की ऊँचाई सोलह हाथ होती थी (वही २६९।३६, ४९)। महासेन कार्तिकेय सिंहरथ पर आसीन होते थे (वायु. ४१।३८) और राजाओं के रथ व्याघ्रचर्म से मढ़े जाते थे (हरि० २।१०५।१३)।

उपमान सिंह शार्दूल

यह सब साजसज्जा पुरुष-सिंह, या नर-शार्दूल बनने की उस मनोभिलाषा को ठोस आधार देने के लिए की जाती थी जिसकी अभिव्यक्ति अथर्ववेद और ऐतरेय के ऋषियों ने की थी। मनुष्य ने वन पशुओं पर सिंहशार्दूल

का सर्वोच्च प्रभाव देखा था और स्फुरित केसर-युक्त सिंह का शत्रुओं के हृदय को दहला देनेवाला नाद उसके कानों में गूंजता था (मा०पु० ८२।६७)। इस सर्वोच्च एवं ओजस्वी व्यक्तित्व की अवतारणा वह स्वयं में करना चाहता था और वासुदेव कृष्ण अरिष्टासुर एवं चाणूर से भिड़ने से पूर्व सिंहनाद करते सुन पड़ते हैं विष्णु पु० ५।१४।८; ५।२०।२५), जिसका रूप युद्ध घोष का था (ब्रह्माण्ड० ४।२९।२८)। महाभारत काल के योद्धा रणभूमि में सिंहनाद करते हैं (श्रीमद्भगवत्गीता १।१२)। सरस्वती पुत्र वाक्कारु सिंहशार्दूलत्व की स्थापना अपने इष्टतम में करते थे और ऋचाओं में सिंह को संमान्य स्थान प्राप्त है। यास्क सिंह एवं व्याघ्र को उन वैदिक उपमानों में निरूपित करते हैं जिनका प्रयोग पूजा में (पूजायां) होता था (निरुक्त ३।४।१)। काव्यशिल्प का आदिम अवस्था में जब काव्य प्रतीकों में अपेक्षाकृत अधिक अभिव्यक्ति शक्ति प्रतिष्ठित थी, ऋषि-शार्दूल, पुरुष सिंह और नरव्याघ्र जैसे प्रयोग कल्पना पट पर लोकोत्तर पराक्रमी व्यक्तित्व को उभार देते थे। पाणिनि ने व्याघ्र को साधारण धर्म का प्रयोग न होने पर उपमेय पुरुष के साथ जुड़कर पुरुष व्याघ्र जैसे समास बनाते देखा था (अष्टाध्यायी २।१।५६) तथा उपमान के रूप में सिंह का उल्लेख किया है (वही ६।२।७२), जिससे प्रकट होता है कि नंदराजाओं के काल तक अभिव्यक्ति में प्रेषणीयता लाने के लिए व्याघ्र एवं सिंह के उपमान साहित्य में अत्यंत लोकप्रिय थे। वाल्मीकि एवं व्यास की कृतियों में इन प्रयोगों की बहुलता है और मार्कण्डेय पुराण में भी जहां काव्यशिल्प नियोजित हुआ है, ये प्रयोग उन्मुक्त मिलते हैं (मा० पु० १।२३; ८।१९५; १४।७६; १५।४९ आदि)। कालिदास में उनके क्वचित् अवशेष हैं और अश्वघोष एवं तदनुवर्ती प्रवरसेन की रचनाओं में वे नहीं मिलते। काव्यशिल्प के क्रमिक विकास के साथ उसकी रेखाओं के ओज एवं दृढ़ता का स्थान नति एवं सूक्ष्मता द्वारा ग्रहण किये जाने से यह परिवर्तन हुआ प्रतीत होता है। प्राचीन वाङ्गमय की पूर्वापरता के निर्धारण में इन प्रयोगों का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है।

नृसिंह व्याघ्रमुख और व्याघ्रग्रीव

भारत की प्राचीनतम उपासनाओं में शैव आगम की अद्वैत साधना का प्रमुख स्थान है और उसकी प्रभा ने लौकिक जीवन को भी उद्भासित किया है। यास्क और पाणिनि ने जिन्हें उपमा कहा है, वे वस्तुतः रूपक हैं, जिनमें उपमेय उपमानों के साथ एकाकार होगये हैं। सिंहशार्दूलों के अद्वैत की यह स्थापना व्यक्तियों तक सीमित नहीं रही थी और उसकी सामष्टिक व्याप्ति का पता चलता है। मार्कण्डेय के काल में भारत के पूर्वी भाग में व्याघ्रमुख नाम धारी जनपद स्थित था (मा०पु० ५८।११)और त्रिपुर (तेवर) के समीप व्याघ्रग्रीव बसते थे (वही ५८।१७)। पश्चिमोत्तर भारत में नृसिंहों की बस्ती थी (वही ५८।३९)। मनुष्य देहधारी व्याघ्रों एवं सिंहों के अनुरोध से विष्णु ने नृसिंह रूप धारण किया होगा (ब्रह्मांड० ३।३३।२६) और व्याघ्रमुखी मातृकाएं साकार हुई होंगी (हरि० २।१०९।५४)तथा गणराज्यों के काल में सिंह एवं व्याघ्र आकृतियां जानपद राज्य चिह्नों के रूप में मुद्राओं पर आदृत हुई थीं (म०भा० का इतिहास., १, पृष्ठ ४७१)। व्याघ्र मुखों एवं व्याघ्रग्रीवों के नाम का उत्तराधिकारी संभवतः बघेलखंड अभिधान है। बघेले राजपूतों के वंश नाम का संबंध उक्त प्राचीन जनपदों से तथा अनुवर्ती बघेलखंड से समानतया हो सकता है।

सांस्कृतिक एकता के प्रतीक सिंहशार्दूल

दक्षिण-पूर्व भारत के व्याघ्र मुख एवं व्याघ्रग्रीव तथा उत्तर-पश्चिम भारत का नृसिंह जनपद पशुराज की व्याघ्र (शार्दूल) एवं सिंहजातियों द्वारा निवसित प्रदेशों के सूचक हैं जिनके प्रभाव से ये नाम धारण किये गये होंगे। पश्चिम भारत में आज की ही भांति केसरी सिंह निवास करता था, जिसका ऋग्वेद में बहुलता से उल्लेख हुआ है। ऋचाओं में व्याघ्र का साक्षात्कार नहीं होता। वनराज की यह जाति आज के समान ही पूर्व एवं दक्षिण भारत में निवसित थी। ऋचाओं के सांस्कृतिक चित्र में प्रारंभिक आर्य राजत्व काल का सवशउशीर जनपदवाली कुरु-पंचाल की ध्रुवा या मध्यमा दिशा का (ऐतरेय ब्रा० ८।३।१४)एकदेशीय जीवन प्रतिच्छवित है, जिसमें व्याघ्र या शार्दूल नहीं थे। सिंधुघाटी के अवशेषों में इनकी अंकनयुक्त मुद्राएं बहुलता से मिली हैं। वह अंकन सिंधु सभ्यता की सार्वदेशिकता के कारण हुआ है, जिस प्रकार पुराणों में सिंह शार्दूल जुड़वां अभिव्यक्ति मिलती है। सिंहशार्दूल पद को, जिसका शार्दूल घटक प्रागार्य द्राविड़ भाषा के मूल का है, यमल संतति के रूप में विंध्याचल ने जन्म दिया प्रतीत होता है। इसकी पश्चिम कोटि काठियावाड में जा पहुंची है जहां सिंह विहार करता आ रहा है और इसके पूर्वी वन शार्दूलों की लीलाभूमि रहे हैं। इसी कारण विंध्य की गुहाओं एवं वनों की विस्तृत एवं वत्सल गोद को रामायण के अत्यंत प्राचीन रचनाकाल से प्रारंभ में उल्लिखित रूप से सिंहशार्दूल जुष्ट कहा जाता रहा है जो बतलाता है कि यह कुल पर्वत पश्चिम से नित्य नूतन प्रवेश करनेवाली और देश की प्राचीन तर संस्कृति का समन्वय स्थल रहा है तथा सांस्कृतिक भारत का शाश्वत मेरूदंड है। पुराण में जो केवल शार्दूल मृगया का उल्लेख मिलता है, उससे पुराण का रचनास्थल विंध्याचल का पूर्वी भाग रहा होना प्रकट होता है।

——पिछड़े वर्गों की भलाई की योजनाओं पर सन् १९५८-५९ में हर महीने औसतन १ करोड़ २० लाख रुपए खर्च किये गये। चालू वर्ष में इसके लिए प्रति मास १ करोड़ रुपए के खर्च की व्यवस्था है।

——अंडरोत, अमीनद्वीप और कवराती द्वीपों में तीन नये बेतार-केन्द्र खुल जाने से भारत और लक्षद्वीप समूह और निकट आ गये हैं। ये बेतार-केन्द्र डाक-तार विभाग ने स्थापित किये हैं। मिनिकाय में एक बेतार-केन्द्र पहले से काम कर रहा है।

हर ग्राम में मुफ्ती दवाखाना

स्त्री पुरुष एवं बालकों के प्रायः सभी रोगों की सहस्रोनुभूत सफल १७५) रुपये की बहुमूल्य १४० प्रकार की दवाइयों से परिपूर्ण २५ सेर वजन के "बाहुबलि चिकित्सा बाक्स" सेवन विधि की सरल पुस्तकों सहित मात्र शीशी बोतल पैकिंग पेटी आदि खर्च ३८)रुपये में पूरा दवाखाना मुफ्त मंगाले। ८) रुपये पेशगी शेष ३०) की वी. पी. मंजूरी तथा पास की स्टेशन सहित पूरा पता लिखें। दवाइयां करीब ५००० रोगियों को पर्याप्त होती हैं विज्ञ चिकित्सकों, सरपंचों, सेक्रेट्रियों, लेखपालों तथा अध्यापकों को कम से कम १-१ बाक्स अपने यहां अवश्य मंगाकर इस सुलभ योजना से लाभ उठाना चाहिए। अनेकों पंचायतों में कई वर्षों से ये बाक्स नियमित रूप से पहुँच रहे हैं।

व्यवस्थापक,
अखिल हिन्द बाहुबलि औषधालय
(१३२–१४) ललितपुर (झांसी)

साप्ताहिक समीक्षा

दिल्ली में राष्ट्रपति नासिर का स्वागत

नई दिल्ली । संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति श्री गमाल अब्दुल नासिर २९ मार्च ो सायंकाल नई दिल्ली पहुंचे । जैसे ही श्री नासिर वायुयान से उतरे सर्व प्रथम भारत के राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसाद ने उनका स्वागत किया। जब उन्होंने प्रधान मंत्री नेहरूजी से हाथ मिलाया तो २१ तोपों ने उन्हें सलामी दी और कबूतर उड़ा दिए गए । नेहरूजी ने बाद में श्री नासिर को उप-राष्ट्रपति डा. राधाकृष्णन् का परिचय कराया।

भारतीय नौसेना के बैंड ने संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रगीत की और जन-मनगण की धुन बजाई। इसके बाद श्री नासिर ने संयुक्त सैन्य सर्विसों की सलामी ली।

दुअन्नी और आध आने के निकिल सिक्के १ अक्टूबर से ग्राहच नहीं रहेंगे

भारत सरकार की हाल ही की एक अधिसूचना के अनुसार तांबा–निकिल की दुअन्नियां और तांबा-निकिल के अधन्नों के सभी सिक्के, जिन दोनों में ७५ प्रतिशत तांबा तथा २५ प्रतिशत निकिल होता है, १ अक्टूबर, १९६० से कानूनी रूप से ग्राहय नहीं रहेंगे। फिर भी ये सिक्के रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के सभी आफिसों, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के उन सभी एजेन्सी बैंकों, में जो सरकारी कारोबार करते हैं और सब सरकारी खजानों और उप खजानों में ३१ मार्च, १९६१ तक कानूनी रूप से ग्राहय बनें रहेंगे और इस अवधि में सभी डाक तथा तारघरों और सब रेलवे आफिसों में रुपयों के भुगतान के लिए स्वीकार किये जायँगे।

ये सिक्के बंबई, कलकत्ता, मद्रास, कानपुर, नई दिल्ली, बंगलौर और नागपुर स्थित रिजर्व-बैंक ऑफ इंडिया के निर्गम विभाग के आफिसों में आगामी सूचना तक कानूनी रूप से ग्राहय बने रहेंगे।

२,२६८ संस्थाओं को ३५ लाख रुपए का अनुदान

नई दिल्ली, २६ मार्च। केन्द्रीय समाज कल्याण मंडल ने अपनी पिछली बैठक में समाज-के हित के काम करनेवाली २,२६८ संस्थाओं को ३५ लाख ३५ हजार रुपए के अनुदान मंजूर किए।

६८९ संस्थाओं को पहली बार ही अनुदान दिया गया।

८९३ बाल हितकारी संस्थाओं को १३ लाख ५४ हजार ८०० रुपए और स्त्रियों की भलाई के काम करनेवाली ८१५ संस्थाओं को १३ लाख १९ हजार रुपए अनुदान में दिये गए।

अपंगों की देख-भाल का काम करनेवाली ३६ संस्थाओं को कुल १ लाख ३१ हजार रुपए का अनुदान दिया गया। मंडल ने सार्वजनिक हित के काम करनेवाली ५२६ अन्य संस्थाओं को ७ लाख ३० हजार रुपए दिये।

केन्द्रीय मंडल सामुदायिक विकास, शिक्षा के प्रसार, डाक्टरी सहायता, प्रशिक्षित कर्मचारियों की नियुक्ति और विशेष साज-समान खरीदने के लिए सेवा संस्थाओं को अनुदान देता है ।

मंडल ने १९५९ के अन्त तक बच्चों, स्त्रियों और अपंगों के हित के काम करनेवाली ५,१७० संस्थाओं को २ करोड़ ९७ लाख रुपए की सहायता दी ।

बम्बई राज्य विघटन विधेयक

नई दिल्ली, २८ मार्च। गृहमंत्री पंतजी ने लोकसभा में वर्तमान बम्बई राज्य को दो राज्यों—बम्बई और गुजरात राज्य में विभाजित करने के संबंध में विधेयक उपस्थित कर दिया। बम्बई पुनर्गठन विधेयक के अनुसार उक्त दो नए राज्यों की स्थापना पहली मई को होगी।

अच्छे डिजाइन का पानी का मीटर

भारतीय विज्ञान संस्था ने अच्छे डिजाइन का पानी का मीटर बनाया है। यह मीटर पानी का बहुत धीमा बहाव भी रिकार्ड कर लेता है। आशा है, यह मीटर पुराने किस्म के मीटरों से हल्का और सस्ता होगा।

आजकल देश में पांच फर्मे विदेशी फर्मों की सहायता से पानी के मीटर बना रही हैं। यह उत्पादन देश की आवश्यकता पूरी करने में असमर्थ है। सन् १९५८ में यहां केवल ४०,५०० मीटर बने थे।

वैसे पानी के मीटर बनाने में कुछ खास मशीनें आदि की जरूरत नहीं पड़ती। गरारी काटनेवाली छोटी मशीन, एक खराद और ढलाई की एक छोटी-सी मशीन से ही इनका उत्पादन किसी भी कारखाने में आसानी से शुरू किया जा सकता है।

जो लोग व्यापारिक स्तर पर पेटेण्ट मीटर बनाना चाहते हैं, उन्हें 'सेक्रेटरी, नेशनल रिसर्च डेवलपमेन्ट कारपोरेशन ऑफ इंडिया, मण्डी हाऊस, लिटन रोड, नई दिल्ली' से पत्र-व्यवहार करना चाहिए।

स्थानीय समाचार

बचत-कार्य

ग्वालियर संभाग में (गुना जिले के अतिरिक्त) अल्प-बचत योजना के अंतर्गत गत फरवरी मास में ५,५९,०२५ रुपये १९ नए पैसे की धनराशि एकत्र की गई। ग्वालियर संभाग की जनता द्वारा दिया गया योगदान संतोषजनक बताया गया है तथा जनता द्वारा वापस ली गई धनराशियों के पश्चात् ६४,९६० रुपये ३८ नए पैसे की धनराशि की बचत आलोच्य अवधि में हुई। चालू वर्ष में अल्प-बचत योजना के विभिन्न पक्षों द्वारा एकत्र शुद्ध धन १९,५५,८१४ रुपये ७३ नए पैसे है।

वृक्ष न काटने का अनुरोध

मध्यप्रदेश विद्युत् मंडल के ग्वालियर क्षेत्र के विद्युत् अभियंता द्वारा जनता से विद्युत्, संचार व्यवस्था में हार्दिक योगदान देने का अनुरोध किया गया है । इस संबंध में अनावश्यक रूप से वृक्षों को काटने तथा पशुओं को खिलाने के हेतु पत्तियों आदि काटने पर विद्युत् संचार तारों आदि पर आघात होने से विद्युत् व्यवस्था में होनेवाली रुकावट समाप्त करने का अनुरोध किया गया है। साथ ही विशेष कारणों के अन्तर्गत शाखाओं के काटे जाने की पूर्व सूचना विद्युत् कार्यालय का देना भी आवश्यक होगा तथा शाखाएं काटे जाने के समय विद्युत् संचार व्यवस्था रोकने की व्यवस्था भी आवश्यकतानुसार हो सकेगी ।

विविध समाचार

लघु उद्योगों के लिए औद्योगिक ऋण

प्राप्त एक प्रतिवेदन में कहा गया है कि छतरपुर और टीकमगढ़ जिलों में लघु उद्योगों को प्रोत्साहित करने की दष्टि से, जिला उद्योग कार्यालय, छतरपुर द्वारा २२ दलों को १७,४०० रुपए का औद्योगिक ऋण वीकृत तथा वितरित किया गया।

छतरपुर जिले में, १४ दलों जिनमें २ औद्योगिक सहकारी समितियां भी सम्मिलित हैं, को १२,००० रुपए का ऋण दिया गया। जिन उद्योओं को ऋण दिया गया है, उनमें—लोहा, और इस्पात, लकड़ी तथा फर्नीचर, बांस, सुनारी, ईंटें बनाने, पीतल के बर्तन बनाने और चमड़ा उद्योग सम्मलित है ।

इसी प्रकार टीकमगढ़ जिले के ८ दलों, जिसमें एक औद्योगिक सहकारी समिति "बसोर बन्धु सहकारी समिति" (बांस उद्योग) निवारी भी शामिल है, को ५,४०० रुपए का ऋण दिया गया। कुल राशि में से, उक्त सहकारी समिति को १,५०० रुपए का ऋण दिया गया, जबकि शेष राशि जिले के अन्य लघु उद्योगों के लिए वितरित की गई।

शिवपुरी में योजना प्रदर्शनी

बानगंगा तथा सिद्धेश्वर मेला के अवसर पर हाल ही में प्रकाशन विभाग द्वारा शिवपुरी में एक योजना प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में प्रथम पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत विभिन्न विभागों द्वारा की गई प्रगति तथा द्वितीय योजना के अंतर्गत किये जा रहे कार्य रेखा-चित्रों, फलकों तथा नमूनों ारा अत्यंत आकर्षक ढंग से प्रदर्शित किये गये थे। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय बचत योजना की प्रगति भी प्रदर्शित की गई थी।

टीकमगढ़ जिले में रबी अभियान

टीकमगढ़ जिले में आयोजित रबी अभियान के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दृष्टि से संपूर्ण शक्ति से प्रयत्न किये गये । किसानों को, विभिन्न कार्यों के लिये ३,२२,८०५ रुपये के तकाबी ऋण स्वीकृत किये गये ।

प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ाने के लिए १,४०,२३५ एकड़ भूमि रबी क्षेत्र के अंतर्गत लाई गई । जिले में २,३८५ एकड़ भूमि में विस्तुत कृषि के तरीके भी अपनाए गये। आलोच्य अवधि में किसानों को ५०० टन रबी के सुधरे हुए बीज, २८२ टन उर्वरक और रासायनिक द्रव्य वितरित किये गये ।

इसके अतिरिक्त ९,८१५ घनफुट टन ग्रामीण तथा शहरी खाद का उत्पादन किया गया और किसानों को ६,००० घनफुट खाद बांटी गई ।

किसानों को कृषि के आधुनिक तरीकों से परिचित कराने की दृष्टि से १,९०४ कृषि-प्रदर्शन भी आयोजित किये गये ।

तकावी ऋण स्वीकृत कर स्थल पर ही बांटने की पर्याप्त व्यवस्था की गई ।

राजनगर खण्ड में सहकारी कार्य

छतरपुर जिले के राजनगर खंड में फरवरी, १९६० में सहकारी कार्यों की संतोषजनक प्रगति हुई । इस अवधि में चार नई सहकारी समितियां संगठित की गई और १,१७५ नये सदस्य बनाये गये ।

आलोच्य अवधि में समितियों के सदस्यों ने १६,००० रुपए जमा किये और १०० शावास हल, जिनकी कीमत २,३०० रुपए है बेचे ।

ग्रामीण ने कुख्यात डाकू को मार डाला

पुलिस स्टेशन बल्देवगढ़ के चौबारा ग्राम का कुख्यात डाकू नूरिया नट कुछ दिनों पूर्व जब एक ग्राम में अपने साथियों के साथ डकैती कर रहा था, उस समय एक उत्साही शिकारी श्री लक्ष्मणसिंह द्वारा मार डाला गया ।

ग्रामीणों द्वारा हल्ला मचाने पर, निकटवर्ती ग्राम के श्री लक्ष्मणसिंह तत्काल स्थल पर दौड़े आए और अनुकरणीय साहस का परिचय देते हुए उन्होंने अपनी .१२ बोर बन्दूक से डाकुओं के गिरोह पर गोलियां चलाईं। वे डाकुओं को भगाने में सफल हुए, उनमें से एक डाकू जो बुरी तरह घायल हो गया था बाद में मर गया। घायलावस्था में डकैत ने अपने साथियों के नाम बताए । जिनका टीकमगढ़ पुलिस बड़ी तेजी से पीछा कर रही है ।

कोण्डागांव विकास खण्ड में विकास गतिविधियां

एक प्रगति प्रतिवेदन के अनुसार बस्तर जिले के कोण्डागांव द्वितीय चरण विकास खण्ड के किसानों ने फरवरी, १९६० में ७४ एकड़ से अधिक भूमि को कृषि-योग्य बनाया । इसके अतिरिक्त उन्होंने २२७ एकड़ भूमि पर मेड़े बनाई, इस माह में कुल मिलाकर ४२२ मिश्रखाद कूप खोदे गये तथा ८३ कूप भरे गये। इसी माह में एक श्रमदान पक्ष भी बनाया गया। जिसमें जनता द्वारा ६०,९११ रु. के मूल्य का योगदान प्राप्त हुआ।

दमोह जिले में पंच-सम्मेलन

दमोह जिले के पंचों और सरपंचों का पहला जिला स्तरीय सम्मेलन पथरिया विकास खंड के सादगावन गांव में २२ मार्च १९६० को समाप्त हुआ । सम्मेलन में लगभग ७० पंचों ने भाग लिया ।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए दमोह के जिलाध्यक्ष ने कहा कि पंचायतों के बढ़ते हुए उत्तरदायित्वों के कारण पंचों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे ग्राम-प्रबंध में तीव्र रुचि लें। उन्होंने आशा प्रकट की कि जिले की प्रत्येक पंचायत स्वस्थ भावना से युक्त होकर एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करती हुई आगे बढ़ेगी ।

इस सम्मेलन में पंचायतों के कार्य-संचालन तथा उनके मार्ग में आनेवाली कठिनाइयों के सम्बंध में चर्चा की गई । सादगावन पंचायत के सरपंच ने गांव की ओर से जिलाध्यक्ष को १,१११ रु. की थैली भेंट की । इस राशि का उपयोग इसी गांव के किसी कल्याणकार्य में किया जाएगा ।

इस अवसर पर जिला प्रचार कार्यालय सागर और कल्याण कार्यालय दमोह ने एक प्रदर्शनी आयोजित की । संध्या समय खेलों का आयोजन किया गया तथा रात्रि को चलचित्र प्रदर्शन हुआ।

कुख्यात दस्यु लच्छी के गिरोह का सदस्य हरदयाल जो मध्यप्रदेश पुलिस के साथ पीरा खोह (थाना तिगरा, जिला, ग्वालियर) के समीप मुठभेड़ में दिनांक १३ मार्च, १९६० को मारा गया।

एन. सी. सी. के कैडेटों के लिए नई योजना

जल, थल तथा वायु सेनाओं में जिन अधिकारियों को स्थायी कमीशन दिये जाते हैं, उनके स्तर को सुधारने और तीनों सेवाओं के लिए क्षमतायुक्त अधिकारियों का एक आरक्षित दल तैयार करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने एन. सी. सी. में अधिकारी प्रशिक्षण यूनिटें तैयार करने का निर्णय किया है।

इन यूनिटों में प्रवेश महाविद्यालयों के विद्यार्थी-कैडेटों को दिया जायगा। यह प्रवेश पूर्णतया स्वैच्छिक रहेगा। एक तिहाई छात्र इंजीनियरिंग संस्थाओं तथा शेष छात्र मेडिकल तथा अन्य महाविद्यालयों से लिये जायेंगे। जो छात्र अधिकारी-प्रशिक्षण-यूनिटों में प्रवेश के इच्छुक हों, उनके माता-पिताओं या अभिभावकों को यह वचन देना होगा कि ये कैडेट, अपने प्रशिक्षण की समाप्ति पर, जब भी उनसे कहा जायगा स्थल सेना, नौ सेना तथा वायु सेना, प्रादेशिक सेना या अधिकारियों के आरक्षित दल में सम्मिलित होंगे।

अधिकारी-प्रशिक्षण यूनिटों में दिया जानेवाला प्रशिक्षण एन. सी. सी. के सीनियर डिवीजन के प्रशिक्षण से अधिक उच्च तथा सघन रहेगा। १४ दिवसीय शिविर की तुलना में इस प्रशिक्षण में ६ सप्ताहों का एक वार्षिक शिविर सम्मिलित रहेगा, जो महाविद्यालय के ग्रीष्मावकाश में आयोजित किया जायगा।

कैडेट के पास एक डिग्री सर्टिफिकेट रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे एक नवीन प्रचलित परीक्षा-सार्टीफिकेट डी१–उत्तीर्ण करनी होगी। भारतीय सैनिक अकादमी देहरादून में प्रवेश पाने के लिये ये दोनों योग्यताएं आवश्यक हैं।

भारतीय सैनिक अकादमी में प्रवेश विशुद्ध रूप से अधिकारी-प्रशिक्षण यूनिटों में तथा सेवा चुनाव मण्डलों के समक्ष कैडेटों द्वारा प्रदर्शित योग्यता के क्रमानुसार होगा, परन्तु चूंकि इन कैडेटो को सीनियर डिवीजन एन. सी. सी. के प्रशिक्षण से अधिक उच्च प्रशिक्षण प्राप्त होगा। इसलिए वे भारतीय सैनिक अकादमी में एक वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। उन्हें १८ महीनों का प्रशिक्षण नहीं दिया जायगा, जैसा कि इस समय एन. सी.सी. के प्रवेशार्थी उम्मीदवारों को दिया जाता है। प्रसंगतः यह भी कहना आवश्यक है कि एन. सी. सी. कैडेटों को भारतीय सैनिक अकादमी में एकमात्र अधिकारी प्रशिक्षण यूनिटों के माध्यम से प्रवेश मिलेगा। यह अकादमी इन कैडेटों के लिये कुल स्थानों का १५ प्रतिशत बढ़ा देगी। इस समय एन. सी. सी. प्रवेशार्थी कैडेटों को १० प्रतिशत स्थान ही प्राप्त है।

भारतीय सैनिक-अकादमी में एक-वर्षीय पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा कर लेने के पश्चात् कैडेटों को सेना में कमीशन दिये जायें। अधिकारी प्रशिक्षण यूनिटों के कुछ शेष केडेटों को जल तथा वायु सेना के मेडिकल कोर तथा तान्त्रिक शाखाओं में कमीशन दे दिये जायेंगे, तथा शेष कैडेटों को प्रशिक्षण सेना तथा अधिकारी-आरक्षित दल में ले लिया जायगा।

जब एक उम्मीदवार एक बार चुनाव मण्डल द्वारा चुन लिया जाकर अधिकारी प्रशिक्षण यूनिट में प्रवेश प्राप्त कर लेता है, तब उसे यह आश्वासन दिया जा सकता है कि उसका भविष्य सुरक्षित है। इस प्रकार अपने भविष्य के सम्बंध में विद्यार्थी की चिन्ता दूर हो जाएगी।

कुख्यात दस्यु भवानी बारी मारा गया

कुख्यात दस्यु भवानी बारी दिनांक २२ मार्च, ६० को भिन्ड जिले के गोरमी थाने के अंतर्गत स्थित हसनपुरा ग्राम में राज्य पुलिस से हुई एक मुठभेड़ में मारा गया। २२ मार्च, ६० की संध्या को उक्त दस्यु की उपस्थिति की सूचना प्राप्त होते ही गोरमी थाने के स्टेशन ऑफीसर पुलिस दल सहित ग्राम हसनपुरा पहुंचे और जिस घर में कुख्यात दस्यु भवानी बारी छिपा हुआ था, उसे चारों-ओर से घेर लिया। देर तक उक्त दस्यु तथा पुलिस दल में गोलियों के आदान-प्रदान के फलस्वरूप कुख्यात दस्यु भवानी बारी धराशायी हुआ। उक्त दस्यु कुख्यात मृत दस्यु कल्ला के दल का सक्रिय सदस्य था, जिसको मृत अथवा जीवित प्राप्त करने के लिये राज्य शासन द्वारा ५०० रु. का पुरस्कार घोषित किया गया था। उक्त मुठभेड़ में राज्य पुलिस के दो बहादुर सिपाही गनेशसिंह तथा सुखदेवराव घायल हुए। उक्त दस्यु से ३०३ बोर की एक बन्दूक ८८ कारतूसों सहित बरामद की गई।

श्री अनंत द्वारा पंचायतों को पुरस्कार

मध्यप्रदेश के समाज-कल्याण मंत्री श्री गणेशराम अनंत ने रींवा में १९ मार्च १९६० को आयोजित एक समारोह में पन्ना जिले की सुनहरा-ग्राम-पंचायत के अध्यक्ष को १,००० रुपये का नगद पुरस्कार तथा एक शील्ड प्रदान की। सुनहरा ग्राम पंचायत रीवा संभाग में सर्वश्रेष्ठ ग्राम-पंचायत घोषित की गई है। श्री अनंत ने अगडाल ग्राम पंचायत को जो रींवा संभाग में द्वितीय सर्वश्रेष्ठ पंचायत मानी गई है, एक सचल-शील्ड दी तथा अन्य ग्राम-पंचायतों को प्रमाण-पत्र वितरित किये। लगभग १०० ग्राम-पंचायतों के अध्यक्षों ने इस समारोह में भाग लिया।

सशस्त्र सेना में भर्ती

उप-भर्ती-कार्यालय, बिलासपुर के भर्ती दल, थल, जल सेना में क्षमतायुक्त व्यक्तियों की भर्ती करने का चुनाव करने के लिए इस माह में निम्नलिखित स्थानों का दौरा करेंगे :—

जिला	स्थान	तिथि
बिलासपुर	शिवरीनारायण	४-४-६०
रायगढ़	सारंगढ़	५-४-६०
	रायगढ़	२५-४-६०
	लवाकेरा	२७-४-६०
	जशपुरनगर	२८-४-६०
रायपुर	सरायपाली	६-४-६०
बस्तर	जगदलपुर	२२-४-६०

दतिया जिले में पंच-प्रशिक्षण-शिविर

दतिया जिले के बसई ग्राम में हाल ही में एक ७ दिवसीय पंच-प्रशिक्षण-शिविर आयोजित हुआ। इस शिविर में निकटवर्ती ग्रामों के ३४ प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

शिविरावधि में, प्रतिनिधियों को पंचायतों की कार्यप्रणाली के विभिन्न अंगों का प्रशिक्षण दिया गया। पंचायतों की प्रगति से सम्बन्धित विषयों पर आयोजित चर्चाओं के अतिरिक्त शोषण-कूप तथा मिश्रखाद-कूप खोदने के प्रदर्शन आयोजित किए गए। जिला शासन कार्यालय द्वारा इस अवसर पर कव्वाली का एक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

इसके पूर्व, थरेट और बड़ोनी में इसी प्रकार के दो ७-दिवसीय शिविर आयोजित हुए, जिसमें लगभग ६० पंचों ने हिस्सा लिया।

दमोह में सहकारिता गतिविधियां

दमोह जिले में सहकारिता सम्बन्धी गतिविधियों की सन्तोषजनक प्रगति हो रही है। प्राप्त एक प्रतिवेदन में कहा गया है कि विभिन्न कार की २९९ सहकारी समितियां, जिनमें २१७ प्राथमिक सहकारी साख समितियां भी सम्मिलित हैं, जिले भर में सन्तोषजनक ढंग से कार्य कर रही हैं।

इसके अतिरिक्त दमोह जिला केन्द्रीय सहकारी तथा भूमि रहन बैंक, जिसकी हटा तथा पथरिया में २ शाखायें हैं, जिले के किसानों की आवश्यकताओं को पूरा कर रही है। इस बैंक के २४९ व्यक्ति हिस्सेदार तथा २१८ समितियां इसकी सदस्य हैं। बैंक की कुल चुकाई हुई हिस्सागत पूंजी ४,५७,४२० रुपए है, जिसमें से १,७९,००० रुपए शासन द्वारा दिया गया है।

सहकारी साख समितियों की कुल सदस्य संख्या ११,५३८ है, तथा प्रत्येक समिति की औसत सदस्य संख्या ४९ है।

शिवपुरी तथा मुरैना जिलों के लिए अनुदान

ग्वालियर संभाग के कार्यवाहक आयुक्त ने शिवपुरी तथा मुरैना जिलों को अग्निकांड, बाढ़ तथा उपलवृष्टि के प्रकरणों के हेतु क्रमशः ५०० रुपए तथा २०० रुपए की धनराशियां पुनर्निर्धारित की हैं।

मौसम तथा फसल की साप्ताहिक रिपोर्ट

भू-अभिलेख संचालनालय के मौसम, फसल एवं पशु-स्थिति संबंधी ९ मार्च को समाप्त होनेवाले सप्ताह के प्रतिवेदन के अनुसार मुरैना, अम्बाह, श्योपुर, गिर्द, पिछोर, शिवपुरी, सेवढ़ा आदि स्थानों में बहुत कम वर्षा हुई। मुरैना जिले में कहीं-कहीं ओला भी गिरा, किन्तु कोई हानि प्रतिवेदित नहीं की गई। ग्वालियर जिले में कहीं-कहीं ओलों से तथा दतिया जिले के सेवढ़ा तहसील में असामयिक वर्षा से रबी की फसलों को क्षति पहुंची। भिंड तथा शिवपुरी जिलों में कटाई का कार्य प्रगति पर था। करेरा तथा पिछोर (शिवपुरी) को छोड़कर सर्वत्र सिंचाई के लिए पानी पर्याप्त था। खेतिहर श्रमिक मुरैना, ग्वालियर और गुना जिलों में महंगे तथा ग्वालियर और गुना में कठिनता से उपलब्ध हुए।

कुख्यात दस्यु चेऊ चमार अपने साथी सहित मारा गया

कुख्यात दस्यु चेऊ चमार, जो अनेक डकैती, हत्या तथा अपहरण जैसे जघन्य प्रकरणों के लिए उत्तरदायी था, राज्य पुलिस द्वारा दिनांक २१ मार्च, ६० को अपने साथी दस्यु रामदयाल चमार के साथ मुरैना जिले के मुरैना थाने के छोंदा तथा महाराजपुर ग्रामों के निकट मारा गया। उक्त दस्यु-दल की उपस्थिति की सूचना प्राप्त होते ही मुरैना जिले के जिला आरक्षी अधीक्षक, उप-जिला आरक्षी अधीक्षक तथा सहायक जिला आरक्षी अधीक्षक उपलब्ध पुलिस जवानों को लेकर उक्त स्थान पर २१ मार्च, की सायंकाल पहुंचे तथा दस्युदल की उपस्थिति के स्थान को घेर लिया। दस्युदल ने मोर्चा लेकर पुलिस पर गोली बरसाना प्रारम्भ कर दिया। राज्य पुलिस ने इसके उत्तर में गोली चलाई, जिसके फलस्वरूप कुख्यात दस्यु चेऊ चमार धराशायी हुआ। उक्त दस्यु-दल के ३ शेष सदस्यों ने, जो निकट की झोपड़ियों में छिपे हुए थे, राज्य पुलिस पर गोली चलाना जारी रखा। रात्रि में प्रकाश-हेतु राज्य पुलिस को पिस्तोल के कुछ हल्के फायर करने पड़े जिससे पास की कुछ झोपड़ियों में आग लगने से उक्त छिपे दस्यु भाग निकले। किन्तु राज्य पुलिस द्वारा उनका निरन्तर पीछा करने से दस्यु रामदयाल चमार गोलियों का शिकार हुआ। उक्त अग्नि को तुरन्त राज्य पुलिस द्वारा बुझा दिया गया तथा अग्नि के फलस्वरूप हुई क्षति के संबंध में जिला कलेक्टर द्वारा आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। उक्त मुठभेड़ में राज्य पुलिस को ३०३ बोर की एक बन्दूक ३२ कारतूसों सहित तथा हेनरी मारटिनी बन्दूक १२ कारतूसों सहित बरामद करने में सफलता मिली। उक्त मृत दस्युओं से पुलिस द्वारा ४२० रुपए नकद एवं अन्य विशेष सामग्री बरामद की गई।

महिला प्रशिक्षण शिविर

राष्ट्रीय विस्तार सेवा खंड, अटेर द्वारा ग्राम चितावली में एक पन्द्रह दिवसीय ग्राम लक्ष्मी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन २४ फरवरी, से ९ मार्च, तक किया गया, जिसमें ४ ग्रामों की ५० महिलाओं ने भाग लिया। शिविर में सामूहिक विकास कार्यक्रम, महिलाओं एवं बच्चों की कल्याणकारी योजनाएँ, फेमिली प्लानिंग, कृषि, गृहोद्योग, नागरिकता, धूम्ररहित चूल्हा, कम्पोस्ट खाद आदि अनेक विषयों के संबंध में जानकारी दी गई।

प्रशिक्षण शिविर

ग्वालियर संभाग के राष्ट्रीय विकास सेवा खंडों की समितियों के अशासकीय सदस्यों का षष्ठम शिविर भारत सेवक समाज के तत्वावधान में ग्वालियर में कांटे साहव के बाड़े में दिनांक २० मार्च, ६० से प्रारम्भ होगया है। उक्त शिविर में ३४ प्रशिक्षार्थी भाग ले रहे हैं।

जीवन बीमा विभाग का प्रगति-कार्य

राज्य के जीवन बीमा विभाग के फरवरी, मास के प्रगति प्रतिवेदन के अनुसार विभाग द्वारा ३,१९,२९,६०० रुपए बीमा-धन के, १४,८६,१०० रुपये वार्षिक बीमा शुल्क के, ३३,४७४ बीमा-पत्र अब तक प्रभावित किए गए हैं। उक्त मास में विभाग द्वारा ११३ प्रस्ताव-पत्र प्राप्त हुए तथा गत मास के प्रतिवेदन के अनुसार शेष प्रस्ताव-पत्रों की संख्या ६,५२३ थी जिनमें से ४०० बीमा-पत्र जारी किए गए। उक्त बीमा-पत्रों का बीमा-धन तथा मासिक बीमा शुल्क क्रमशः ४,६०,२९४ रुपये तथा २,०२४ रुपए है। उक्त प्रस्ताव-पत्रों में से ४३ निरस्त किए गए।

मिडिल के परीक्षार्थियों को सूचना

रजिस्ट्रार, शिक्षा विभागीय परीक्षाएं, ग्वालियर सूचित करते हैं कि पूर्व माध्यमिक (मिडिल) परीक्षा में जो ६ अप्रैल, ६० से राज्य के मध्यभारत क्षेत्र और भोपाल संभाग में विभिन्न केन्द्रों पर प्रारम्भ हो रही है, सम्मिलित होनेवाले परीक्षार्थियों के प्रवेश-पत्र उनके आवेदन-पत्र प्रमाणित करनेवाले अधिकारियों की ओर प्रेषित किए जा चुके हैं, जहां से वे प्राप्त कर परीक्षा में सम्मिलित हों। यदि आवेदन-पत्र प्रमाणित करनेवाले अधिकारी से संपर्क किए बिना सीधे संयोजक (रजिस्ट्रार) कार्यालय से प्रवेश-पत्रों की मांग के हेतु पत्रादि भेजे गए तो उनकी ओर ध्यान नहीं दिया जावेगा और न कोई उत्तर ही दिया जावेगा।

CENTRAL STORES
CHAMBAL HYDEL SCHEME.
Tender Notice No. T/9/60.

Sealed tenders are invited for supply and delivery of nine Lakhs ten thousand litres of "Light Diesel Oil" for use in Chambal Hydel Scheme, Gandhi Sagar upto 4.00 P.M. on 25th April. 1960, Tenders will be opened on the same day at 4.30 P.M.

The approximate cost of the purchase is Rs. Three Lakh sixteen thousand. Earnest money of Rs. 6,320. (Rs. Six thousand three hundred and twenty only) should accompany the tender in the form of Cash, National Saving Certificate or Bank Bank Draft. Cheques will not be accepted . Tenders not accompained by earnest money are liable to be rejected.

Rate quoted should include all charges such as excise duty, Octri Sales tax, Insurance charges etc., and should be for delivery at Chambal Hydel Works, Construction Camp Power House at a distance of about 33 miles from the nearest Railway Station *i. e.* Jhalawar Road (Western Railway).

Detailed specifications, terms and conditions etc., can be had from the undersigned on payment of Rs. 10/- per set (non-refundable) by Cash, Money order or uncrossed postal order.

The Competent authority reserves the right to reject any or all the tenders without assigning any reason thereof and to place order for part or full quantity.

R. A. RANGASWAMY.
Stores Officer,
Chambal Hydel Scheme,
P. O. Gandhi Sagar Colony,
Madhya Pradesh
(*Via*) Jhalawar Road Rly. Station.

156—16

प्रकाशित होगया
'मध्यभारत का इतिहास'
(चतुर्थ खण्ड)

यदि आप—

पूर्व मध्यभारत क्षेत्र की सांस्कृतिक, सामाजिक, साहित्यिक तथा राजनीतिक गतिविधियों का पूर्ण परिचय प्राप्त करना चाहते हैं, तो मध्यभारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) अवश्य पढ़िये। पृष्ठ संख्या ४३५ तथा चित्र संख्या ११६ है। मूल्य १० रुपये (डाक व्यय २ रुपये अतिरिक्त)

लिखये:-
व्यवस्थापक, प्रकाशन शाखा,
सूचना तथा प्रकाशन, जयाजी चौक, ग्वालियर (म० प्र०)

नोटिस

जयें हाजा समस्त जनता को सूचित किया जाता है कि शिवपुरी में एक सिनेमा हाउस दुर्गा टॉकीज के नाम से कायम है और इस टॉकीज में मैं मदनलाल अन्य पार्टनर्स के साथ दुर्गा टॉकीज का पार्टनर हूं, जिसकी रजिस्ट्री बरवक्त हो चुकी है।

इस टॉकीज में मुझ मदनलाल की १४,५००० रुपये पूंजी लगी हुई है और आज तक बदस्तूर वह पूंजी दुर्गा टॉकीज में मौजूद है मेरे ऊपर किसी का कोई कर्जा नहीं था न मैंने किसी कर्जख्वाह को उपरोक्त पूंजी मुन्तकिल की है चूंकि मेरे पिताजी श्री राधेलालजी पर मुसीबत आ गई है और इस टॉकीज के पार्टनर्स मोहनलाल, भगवतशरण व श्यामसुंदर ने मुझे यह कहकर कि तुम्हारी पूंजी सुरक्षित रह जावेगी इसलिये एक दस्तावेज दिनांक १३ फरवरी, १९६० को मु० धन्नीबाई के हक में रुपये १४,००० चौदह हजार रुपये की लिखवाकर मेरी पूंजी मुन्तकिल करने की कोशिश की है वास्तव में मेरे ऊपर न तो कोई रुपया धन्नीबाई का है और न मैंने धन्नीबाई से कोई रुपया लिया है न अपनी पूंजी दुर्गा टॉकीज की उसके हक में मुन्तकिल की है न कोई हुंडी मैंने मुसम्मात के हक में लिखी है। नाजायज से दोस्ताने की आड़ में कतई झूठो दस्तावेज लिखवाई गई है जिस बवक्त मैंने अन्य पार्टनर्स व धन्नीबाई को रजिस्टर्ड पोस्ट से नोटिसेज भी दे दिये हैं वह दस्तावेज कतई फर्जी व नाजायज व बिला बदल है और किसी प्रकार से मुझे मदनलाल को हिस्से व पूंजी को, जो दुर्गा टॉकीज में है व लगी है उसे समाप्त नहीं कर सकती है।

लिहाजा कोई भी शख्स दुर्गा टॉकीज को क्रय, रहन आदि बगैर मेरी रजामंदी व जानकारी के करेगा तो वह उक्त टॉकीज में जो मेरा हिस्सा व पूंजी का रुपया है न पा सकेगा और उसके अदायगी की कुल जिम्मेदारी रहेगी व हरकिस्मी इन्तकाल नाजायज व गलत होगा। दिनांक २८ मार्च, १९६०

हस्ताक्षर मदनलाल
मदनलाल पुत्र राधेलाल,
पार्टनर्स, दुर्गा टॉकीज,
शिवपुरी म० प्र०

(१५४–१६)

कार्यालय तहसील परगना भांडेर

मि. नं. १०।५९-११६

विषय

मनोरे पुत्र मलखान, जाति अहीर, निवासी ग्राम खेरीदेव भांडेर .. .. वादी।

बनाम

मु० प्यारी बहू बेवा सिबू, जाति अहीर, निवासी खेरीदेव, पर० भांडेर लावारिस फौत काम मुकाम शासन द्वारा, तहसील भांडेर .. प्रतिवादी।

विज्ञप्ति

इस विज्ञप्ति द्वारा सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि वादी मनोरे पुत्र मलखान, जाति अहीर, निवासी खेरीदेव ने धारा ११६, लेंड रेवेन्यू कोड मध्यप्रदेश, के अन्तर्गत ग्राम खेरीदेव के भूमि मानाक ३६३-१ऽ४ व ३६५-१।।ऽ कुल २।।ऽ४ के सम्बन्ध में लेखा शोधन कागजात पटवारी संवत् २०१५ का वाद-पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया है। प्रतिवादिया महिला प्यारी बहू बेवा सिबू, जाति अहीर, निवासी खेरीदेव को मृतक अंकित किया जाकर लावारिस काम मुकाम शासन द्वारा तहसील भांडेर बनाया है। प्रकरण में सुनवाई का दिनांक ७ मई, १९६० नियत किया गया है। अतएव जो व्यक्ति स्वयं को प्रतिवादिया प्यारी बहू बेवा सिबू, जाति अहीर, निवासी खेरीदेव का उत्तराधिकारी होना समझता हो वह नियत दिनांक को न्यायालय में उपस्थित होकर प्रकरण में स्वयं अथवा अपने अभिभाषक द्वारा पक्ष-समर्थन करे। नियत दिनांक के पश्चात् अन्यथा इस सम्बन्ध में कोई आपत्ति श्रवण योग्य न होगी।

लक्ष्मीनारायण करैया,
तहसीलदार,
(१५५-१६) परगना भांडेर (म. प्र.)

भारत सरकार से "रजिस्टर्ड"

सफेद दाग

यह हमारी दवा सन् १९३६ से प्रसिद्ध है इस दीर्घकाल में हजारों ने इसकी परीक्षा की और प्रशंसा-पत्र भेजे हैं। आप भी एकबार अनुभव कर देखें। मूल्य ५ रुपये। अधिक विवरण मुफ्त मंगाकर देखिये।

वैद्य के. आर. बोरकर (मध्य.),
मु. पो. मंगरूलपीर, जि. अकोला (विदर्भ)

खजुराहो

विश्वविख्यात स्थापत्यकला की अनुपम देन

यदि आपने कभी खजुराहो के विख्यात मंदिर नहीं देखे, तो यह पुस्तक अवश्य देखिये

यदि देखे हैं

तो उनकी स्मृति इस पुस्तक से ताजा रखिये

रायल अठपेजी, आर्ट पेपर पर मुद्रित १०२ प्लेट

अंग्रेजी और हिन्दी में

मंदिरों के इतिहास का मनोरंजक परिचय

नयनाभिराम मुद्रण : आकर्षक जिल्द : मूल्य १० रुपये

प्राप्तिस्थान

व्यवस्थापकः--प्रकाशन शाखा, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय,
जयाजी चौक, ग्वालियर म० प्र०

न्यायालय सिविल जजी प्रथम श्रेणी, मुरैना म० प्र०

प्र. क्र. ३।६० सक्सेशन.

विषय.--आवेदन-पत्र प्राप्त करने विरासत सर्टिफिकेट बाबत जायजाद मृतक घासी वल्द ऊंकार, जाति मीना, निवासी ग्राम ठीकरिया मौजा राधापुरा, परगना श्योपुर का क्षतिपूर्ति धन ३०५।।≡) पुनर्वास अनुदान।

विज्ञप्ति

सर्व-साधारण जनता एवं संबंधित व्यक्तियों को इस विज्ञप्ति द्वारा सूचित किया जाता है कि प्रार्थी मथुरालाल वल्द घासी व धन्नालाल, लड्डूलाल, रामनाथ, चतरु पिसरान सीताराम, जाति मीना, निवासी ठीकरिया, परगना श्योपुर, जिला मुरैना ने न्यायालय में आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया है कि प्रार्थीगण के पिता व बाबा घासी वल्द ऊंकार, जाति मीना, निवासी ग्राम ठीकरिया, मौजा राधापुरा, परगना श्योपुर, जिला मुरैना की मृत्यु दिनांक १८ नवम्बर, १९५९ को स्थान ठीकरिया, मौजा राधापुरा, परगना श्योपुर में होचुकी है मृतक का ऋण तथा सेक्यूरेटीज (क्षतिपूर्ति धन ३०५।।≡) व पुनर्वास अनुदान) प्राप्त करना है तथा इसी आशय का सक्सेशन सर्टिफिकेट की आवश्यकता है।

अतएव जिस व्यक्ति को आवेदन के संबंध में कोई आपत्ति हो तो वह अपना आपत्ति-पत्र इस न्यायालय में दिनांक ५ मई, १९६० को प्रस्तुत करें। दिनांक १४ मार्च, १९६०।

अनवर अहमद,
सिविल जज, प्रथम श्रेणी,
(१४३-१५) मुरैना (म. प्र.)

ग्राहकों से निवेदन

ग्राहकों से निवेदन है कि पत्र-व्यवहार करते समय वे ग्राहक नंबर देना न भूलें। ऐसा न करने की दशा में उनकी ओर से प्राप्त पत्रों पर उचित समय में ठीक कायवाही करने में कार्यालय को कठिनाई होती है और कतिपय पत्रों पर कार्यवाही करना ही असम्भव हो जाता है।

—मैनजर

कार्यालय तहसील राघोगढ़ मंडल गुना मध्यप्रदेश

मि० ६७।५९—२१

रूघनाथसिह, अहीर, ककरिपाई.

विरुद्ध

खूबसिंह अहीर व मुल्ली, चमार, ककरिपाई.

विज्ञप्ति

बनाम:—खूबसिंह पुत्र गोरेलाल, अहीर व मुल्ला पुत्र अनूपा, चमार, निवासी ककरपाई.

तुमको सूचित किया जाता है कि ग्राम ककरपाई, आराजी नं. ५८—१-२-३, ५८—१-४-५-७, ५८—८, रकबा १५।।।४ पर रूघनाथसिह पुत्र असेसिंह, अहीर, ककरियाई प्रार्थी ने बजाय खूबसिंह, पुत्र गोरेलाल, व मुल्ला पुत्र अनूपा, चमार, प्रतिप्रार्थी के पक्के कृषक के स्वत्व प्राप्ती का दावा किया है अतः तुम व तुम्हारे वारिसान या अन्य संबंधित जो भी कोई जहां कहीं भी हों नियत दिनांक २४ अप्रेल, १९६० तक या को तहसील राघोगढ़ में उपस्थित होकर जवाब या आपत्ति पेश करो पश्चात् कोई सुनवाई नहीं की जावेगी और उचित आदेश दे दिया जावेगा।

ता. १८ मार्च १९६०.

बृजबिहारीलाल सक्सेना,

तहसीलदार,

(१५४—१६) राघोगढ़, मंडल गुना म० प्र०

न्यायालय सिविल जज प्रथम श्रेणी, मुरैना मध्यप्रदेश

प्र. क्र. १४।६० सक्सेशन.

विषय.—आवेदन-पत्र प्राप्त करने विरासत सर्टिफिकेट बाबत।

मुआवजा जमींदारी मृतक चतुर्भुज पुत्र बिहारीलाल, जाति ब्राह्मण, साकिन सबलगढ़।

विज्ञप्ति

सर्व-साधारण जनता एवं संबंधित व्यक्तियों को इस विज्ञप्ति द्वारा सूचित किया जाता है कि प्रार्थी श्रीलाल पुत्र भगवानलाल, जाति ब्राह्मण, साकिन सबलगढ़, जिला मुरेना ने न्यायालय में आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया है कि मेरे चाचा चतुर्भुज पुत्र बिहारीलाल, जाति ब्राह्मण, साकिन सबलगढ़, की मृत्यु सन् १९३६ को स्थान सबलगढ़, परगना सबलगढ़ में हो चुकी है मृतक को मुआवजा जमींदारी मौजा सुनहैरा, परगना सबलगढ़ रकम १५५।।।=) कम्पशेसन विभाग सबलगढ़ से प्राप्त करना है तथा इसी आशय के लिए सक्सेशन सर्टिफिकेट की आवश्यकता है।

अतएव जिस व्यक्ति को आवेदन के संबंध में कोई आपत्ति हो वह अपना आपत्ति-पत्र इस न्यायालय में दिनांक ५ मई, १९६० को प्रस्तुत करे. दिनांक १४ मार्च, १९६०।

अनवर अहमद,

सिविल जज प्रथम श्रेणी

(१४४—१५) मुरैना म० प्र०

कार्यालय तहसील राघोगढ मंडल गुना मध्यप्रदेश

मि० नं० ६५।५९—२१

रूघनाथसिह पुत्र असेसिह, अहीर, ककरपाई.

विरुद्ध

प्यारा पुत्र मोती, शहर, ककरपाई.

विज्ञप्ति

बनाम:—प्यारा पुत्र मोती, शहर (फौत) वारिस जो भी हो, ककरपाई व अन्य संबंधित.

तुमको सूचित किया जाता है कि ग्राम ककरपाई, आराजी नं. ४८—६-२, ४९—३, ५२—२, रकबा ६।।।४ व रूघनाथसिह, अहीर प्रार्थी ने बजाय प्यारा पुत्र मोती, शहर के पक्के कृषक के स्वत्व प्राप्ती का दावा किया है. अतः प्यारा, शहर के वारसान या अन्य संबंधित जहां कहीं भी हों नियत दिनांक २४ अप्रेल, १९६० को तहसील राघोगढ़ में उपस्थित होकर जवाब या आपत्ति पेश करो पश्चात् कोई आपत्ति नहीं सुनी जाकर और आदेश दे दिया जावेगा.

दिनांक १८ मार्च १९६०.

बृजबिहारीलाल सक्सेना

तहसीलदार,

(१५३—१६) राघोगढ़, जिला गुना म० प्र०

कार्यालय तहसील पोहरी

प्र० क्र० २३८।५९—२१

शीर्षक

भगवानलाल, सुन्दरलाल, धनपाल आत्मज चन्द्रहंस, ब्राह्मण, पिपरौदा, कटरा, परगना पोहरी.

बनाम

नारायण गंगाधर ब्राह्मण, निवासी एंचबाड़ा. लापता.

सम्बोधित:—नारायण गंगाधर ब्राह्मण, नि. एंचबाड़ा, (लापता).

उक्त प्रकरण में सूचित किया जाता है कि वादीगण ने आपके विरुद्ध जा. स. वि. की धारा २१ के तहत (पक्के कृषकत्व प्राप्त करने के संबंध में) आराजी क्र. १८६, क्षेत्र. ३।२, लगानी ४≡) के प्रति दावा किया है.

अतः आपको यदि उक्त संबंध में किसी प्रकार की आपत्ति हो तो स्वयम् या अभिभाषक द्वारा नियत दिनांक ३० अप्रेल, १९६० को कार्यालय तहसील में उपस्थित होकर पेश करो। इसके पश्चात् कोई आपत्ति श्रवनीय नहीं होगी। दिनांक २२-३-६०.

एस. सी. मुकरजी,

तहसीलदार,

(१५०—१६) परगना पोहरी, मण्डल शिवपुरी.

न्यायालय कोर्ट तहसीलदार परगना शिवपुरी मध्यप्रदेश

प्र० क्र० २।६०:११६

शीर्षक

अर्जनलाल, लोहरे आत्मज प्यारे किरार, निवासी चोरपुरा, कृषक चुरेलखेड़ा, परगना शिवपुरी (वादी).

बनाम

पटवारी ग्राम चुरेलखेड़ा तथा कल्लू (मृतक) पुत्र दरयाव, किरार, निवासी चोरपुरा, कृषक, चुरेलखेड़ा (प्रतिवादी).

वादः—दुरुस्ती इन्द्राज.

विज्ञप्ति

इस विज्ञप्ति द्वारा सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि वादी ने इस न्यायालय में वादपत्र वास्ते दुरुस्ती इन्द्राज प्रस्तुत किया है प्रतिवादी कल्लू वल्द दरयाव, किरार, चोरपुरा फौत होकर उत्तराधिकारियों का कोई पता नहीं है. अतः मृतक कल्लू कृषक चुरेलखेड़ा का जो कोई भी उत्तराधिकारी हो वह नियत दिनांक १६ अप्रेल, १९६० को इस न्यायालय में समय १०।। बजे दिन उपस्थित होकर प्रकरण में पक्ष समर्थन करें अनुपस्थिति की दशा में एकपक्षीय आज्ञा उक्त वाद में दे दी जावेगी.

मेरे हस्ताक्षर व मुद्रा सहित आज दिनांक २२ मार्च, १९६० को जारी किया गया.

एन. एम. माथुर,

तहसीलदार,

(१५२—१६) परगना शिवपुरी जिला शिवपुरी.

कार्यालय तहसील टप्पा बड़ोद

मि० नं० ६५।५९—३८

नगाजी पुत्र सरूपजी, जाति सुतार, नि. बड़ोद—वादी.

विरुद्ध

सदाशिवराव फोत वारिस गोविंदराव, दफ्तरदार, महक्मा पुलिस, जिला भेलसा पेंश्नर व सोनूराव पुत्र सदाशिवराव, नि. बड़ोद हाल मुलाजिम रेलवे कारखाना, उज्जैन व दामोदरराव, शंकरराव, दिनकरराव आत्मज वामनराव, जाति दक्षिणी ब्राह्मण, नि. बड़ोद, हाल मुकाम शुजालपुर—प्रतिवादीगण.

वादधारा ३८, ज. स. वि.

सूचनापत्र

बनाम :—शंकरराव, दिनकरराव आत्मज वामन राव, नि. बड़ोद हाल मुकाम शुजालपुर व सोनूराव पुत्र सदाशिवराव, नि. बड़ोद हाल मुलाजिम रेलवे कारखाना, उज्जैन.

उपरोक्त प्रकरण में वादी ने तुम्हारे विरुद्ध ज. स. वि. की धारा ३८ के अन्तर्गत बड़ोद की भूमि क्रमांक १९३१–२।।ऽ, १९३३–।२, १९३५–।३ जुम्ला नं. ३–३।ऽ की आराजी पर पक्के कृषक के स्वत्व प्राप्त होने बाबत आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया है जिसकी सुनवाई का नियत दिनांक २३ अप्रेल, १९६० है.

अतः आप स्वयं या अपने कानूनी अभिभाषक द्वारा नियत दिनांक को कार्यालय हाजा में उपस्थित होकर जवावदेही करो अन्यथा तुम्हारी अनुपस्थिति में एकपक्षीय सुनवाई की जावेगी और बाद में कोई आपत्ति मान्य न होगी.

शंकरलाल धनोंत्या
नायब तहसीलदार,
टप्पा बड़ोद म. प्र.

सफेद दाग

सतत् परिश्रम एवं खोज के बाद सफेद दाग की औषधि का निर्माण किया गया है। सन् १९३५ से हजारों ने इसका अनुभव करके लाभ उठाया है। दवा का मूल्य ६ रुपया विशेष जानकारी के लिए विवरण पत्र मुफ्त मंगाकर देखें। नक्कालों से सावधान रहें। वद्य बी. आर. बोरकर, आयुर्वेद भवन (२५) मु. पो. मंगरूलपीर, जिला अकोला (विदर्भ)

ग्वालियर पाटरींज, ग्वालियर

कोयले का टेन्डर

इस कार्यालय में दिनांक २८ अप्रेल, १९६० को दो बजे दोपहर तक लगभग २२० टन प्रति मास के अनुसार (लगभग २७०० टन वार्षिक के हिसाब से) २ वर्ष की अवधि के लिये स्टीम कोल की सप्लाई के हेतु सीलबन्द टेन्डर्स ५०० रु. अर्नेस्ट मनी के डिपाजिट ड्राफ्ट या चालान के साथ स्वीकार किये जावेंगे। डिपाजिट स्टेट बैंक आफ इंडिया, ग्वालियर पर संस्था के हिसाब में देय डिमान्ड ड्राफ्ट या ट्रेझरी चालान द्वारा जमा की जा सकती है। ट्रेझरी में जमानत (रेवेन्यू डिपाजिट टेन्डर आफ कोल इन फेवर आफ ग्वालियर पाटरीज, ग्वालियर) के हेड में जमा की जावे। बिना डिपाजिट के टेन्डर स्वीकार नहीं होंगे। रेट प्रति टन एफ. ओ. आर. कम्पू कोठी रेलवे स्टेशन तथा एफ. ओ. आर. लोडिंग स्टेशन होना चाहिये। कोयले की क्वालिटी सिलेक्टेड 'ए' ग्रेड हाई वालटाइल, नान कोकिंग, पोनियाटी देशरगढ़ क्षेत्र का बड़े टुकड़ों में होना चाहिये। कोयले की मात्रा सम्बन्धित अधिकारियों के आदेशानुसार कम या ज्यादा हो सकती है। किसी भी कारण के दिये बिना कोई या सभी टेन्डर अस्वीकार किये जा सकते हैं। सफल प्रतियोगी को अनुबन्ध लिखना होगा। टेन्डर्स स्वीकृति के हेतु तीन माह तक वैध रहेंगे।

विक्रमादित्य भार्गव,
जनरल मैनेजर,
ग्वालियर पॉटरीज, ग्वालियर.

(१५८–१६)

(ग० रजि०) बोर्ड का डिप्लोमा एवं शिक्षा प्राप्त कर सफल चिकित्सक बनिये

१५ दिन में इन्जेक्शन लगाना, बनाना, स्टेथिस्कोप, थर्मामीटर, डूस (एनीमा), मूत्र परीक्षा, वक्षपरीक्षा, नाड़ी परीक्षा एवं अन्य चिकित्सोपपयोगी विषयों का लेखन एवं प्रत्यक्ष कर्माभ्यास के द्वारा पर्याप्त ज्ञान करके (ग. रजि.) बोर्ड का डिप्लोमा, सिरेज नीडिल, मूत्र परीक्षा नली तथा ४८ उपयोगी इन्जेक्शनन्स मुफ्त भेंट स्वरूप प्राप्त कीजिये। फीस ५१।।) रुपये है। ठहरने की उत्तम व्यवस्था फ्री है।

शीघ्र ही १०) रुपये भेज कर प्रवेश स्वीकृति मंगा लें। अनुभवी चिकित्सक घर बैठे ही वैद्य, विशारद, भूषण, शास्त्री, रत्न, तथा होम्योपैथिक और यूनानी डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए नियमावली फार्म आदि मुफ्त मंगा लें।

अ० भा० एस० एस० विद्यापीठ बी. परीक्षा बोर्ड,
(१३३–१४)   ललितपुर (झांसी)

—जनवरी, १९६० में कामदिलाऊ दफ्तरों ने कुल २२,१०६ लोगों को काम दिलाया और ७,६३३ मालिकों ने कामदिलाऊ दफ्तरों की मार्फत कर्मचारी भर्ती किये। इस महीने ९ नये कामदिलाऊ दफ्तर खुले।

AMMENDMENT OF THE TENDER NOTICE OF KOTHADI TANK CHAMBAL PROJECT, M.P.

Time of completion the work is extended as below:—

1. Bund—12 Months.
2. Outlet—8 Months.
3. Surplus channel —8 Months.
4. Sate Weir—8 Months.

TILLURAM,
Executive Engineer,
Rehibilitation Division
Chambal Hydel and Irrigation Scheme
(159—16) P.O. Gandhi Sagar Colony.

---

१०. अनुमान है कि सन् १९६२ तक देश के कारखानों से ही देश की सीमेंट की अधिकांश माग पूरी होने लगेगी।

११. सीमेंट के निर्यात को बढ़ाने का भी प्रयत्न किया जा रहा है। निर्यात के लिए जो ४ लाख टन सीमेंट रखा गया था, जनवरी १९६० के अन्त तक ३,०१,४१० टन सीमेंट बाहर भेजने के बारे में कार्रवाई हो चुकी है और लगभग २,३९,००० टन सीमेंट भेज दिया गया।

भारतीय वायुसेना....

(पृष्ठ ५ का शेष)

खोले गए। छात्र-सैनिक दस्तों में छात्रों को वायुसेना का काम सीखने का मौका मिलता है और सहायक दस्तों की स्थापना से देश में दूसरी पांत तैयार हुई है। इनको और बढ़ाने से देश की रक्षा की व्यवस्था और दृढ़ होगी।

देश ने फौजी सामान बनाने में भी काफी उन्नति की है। अनेक औजार और मशीनें अब देश में बनने लगी हैं तथा एम. टी. गाड़ियां और विमान बनाने का काम भी शुरू हो गया है, जो अभी तक विदेशों से मंगाई जाती थीं।

सुसंगठित सेना

भारतीय वायुसेना की उन्नति और कुशलता का श्रेय इसके ट्रेनिंग केन्द्रों, इंजीनियरिंग तथा सामान विभागों, आधुनिक ढंग के हवाई-अड्डों और अन्य अंगों को है।

भारतीय वायुसेना दुनिया की किसी भी सेना से कुशलता में टक्कर ले सकती है। कश्मीर युद्ध में, अकाल और बाढ़ग्रस्त इलाकों में सामान गिराने में और अन्य कामों में उसने अपनी कुशलता का परिचय दिया है।

वायुसेना देश की स्वतंत्रता की सजग प्रहरी है। स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए भारतीय वायुसेना हर प्रकार का त्याग करने के लिए तैयार है।

सिंचाई का उपयोग

(पृष्ठ १७ का शेष)

डब्ल्यू. का कोयले के बिजलीघर के डिजाइन और नक्शे आदि बनाए गये। नाहरकटिया (आसाम) के तेल के कुओं से निकलने वाली गैस से चलने वाले बिजली-घर की प्रारंभिक योजना भी तैयार की जा रही है।

नेपाल में त्रिशूली बिजलीघर से काठमांडू तक ६६ किलोवोल्ट की बिजली की लाइन लगाने के बारे में भी आवश्यक पड़ताल की गई। इसके अलावा बहुत-सी अन्य योजनाओं के बारे में भी राय दी गई। इनमें गांवों में बिजली की ६९ योजनाएं भी थीं, जिनपर ३३.२६ करोड़ रुपये खर्च का अंदाज है।

बिजली-उत्पादन के लक्ष्य

रिपोर्ट में बताया गया है कि दूसरी योजना में बिजली की उत्पादन-क्षमता ३५ लाख किलोवाट बढाने का लक्ष्य है, लेकिन विदेशी मुद्रा की कमी के कारण शायद इसकी पूर्ति संभव न हो। दूसरी योजना के पहले तीन सालों में उत्पादन-क्षमता ९ लाख किलोवाट बढ़ी और आलोच्य वर्ष में ५,५७,००० किलोवाट और बढ़ाने की संभावना है।

सन् १९१० के भारतीय बिजली कानून में कुछ संशोधन होने से केंद्रीय बिजली मंडल का पुनर्गठन किया जा रहा है। अब इसमें राज्यों के बिजली मंडलों, भारतीय मानक संस्था, निजी बिजली कंपनियों और केंद्रीय सरकार के कुछ विभागों के प्रतिनिधि लिये जायेंगे।

बाढ़-नियंत्रण

१२ राज्यों में बाढ़-नियंत्रण मंडल और ब्रह्मपुत्र, गंगा, उत्तर पश्चिमी नदियों और मध्य भारत की नदियों के लिए चार आयोग काम कर रहे हैं।

सन् १९५४-५५ में बाढ़-नियंत्रण के जो काम किये गये, उनसे ६० लाख एकड़ भूमि और ४६ शहरों का बचाव हुआ है। उत्तर प्रदेश में ४,२०० गांवों को ऊंचाई पर बसाया गया। पिछले सालों में बाढ़ों से बचाव के लिए जो पुश्ते और बंध आदि बनाए गये हैं, वे सन् १९५९ की बाढ़ों में पूरे उतरे। केंद्रीय जल-विद्युत् आयोग की बाढ़ शाखा ने राज्य सरकारों को बाढ़ों की रोकथाम के बारे में आवश्यक सलाह दी और ८३ नदियों के कांठों के बारे में जरूरी जानकारी इकट्ठी की।

विविध समाचार

दतिया जिले में सहकारी आन्दोलन

दतिया जिले में सहकारिता आन्दोलन की प्रगति सन्तोषजनक ढंग से हो रही है। हाल ही के एक प्रतिवेदन के अनुसार फरवरी १९६० में दो औद्योगिक सहकारी समितियां गठित की गईं तथा जिले की सहकारी समितियों की सदस्य संख्या में ४० नवीन सदस्यों की वृद्धि हुई।

सहकारी बैंक द्वारा आलोच्य मास में १,१८,४०५ रु. के ऋण भी सहकारी समितियों के सदस्यों को दिये गये।

पन्ना जिले में पंचायत-प्रशिक्षण शिविर

पन्ना जिले के खोदा ग्राम में हाल ही में सात-दिवसीय पंचायत सदस्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्देश्य जिले की विभिन्न पंचायतों के ५० सदस्यों को पंचायतों के विषयों तथा कार्यों, उनके अधिकारों तथा कर्त्तव्यों और योजनाओं की सफलता के लिये पंचायतों के दायित्वों के संबंध में प्रशिक्षण प्रदान करना था।

शिविर में भाग लेने वाले सदस्यों ने आलोच्य अवधि में एक सड़क का निर्माण किया।

पशुरोग चिकित्सा अंक

नुनहड़ (गोहद-भिंड) से प्रकाशित होने वाले मासिक-पत्र 'मारुति संजीवन' का विशेषांक 'पशुरोग चिकित्सा अंक' के रूप में प्रकाशित होने जारहा है। मारुति संजीवन चिकित्सा, अध्यात्म तथा नैतिक उत्थान की दिशा में काम कर रहा है। पशुरोग चिकित्सा ग्रामीण जीवन एवं किसानों के लिए लाभदायक है। लेखकों एवं अनुभवी चिकित्सकों से सहयोग की प्रार्थना की गई है।

—भारतीय भाषाओं में उच्च श्रेणी की विज्ञान-संबंधी पुस्तकों के प्रकाशन को प्रोत्साहन देने के लिए केन्द्रीय वैज्ञानिक अनुसंधान और संस्कृति मंत्रालय ने प्रतिवर्ष १०,००० रुपये का इनाम देने की घोषणा की है। यह इनाम इसी साल से किसी एक प्रकाशक को दिया जायगा।

देश के औद्योगीकरण तथा विकासशील विदेशी व्यापार के लिए

नाप-तौल की मीटरिक प्रणाली की आवश्यकता है

नाप-तौल की इस सरल एवं सुविधाजनक प्रणाली को अपनाइये

शासन की गतिविधि

मध्यप्रदेश में ७ रोजगार दफ्तर

मार्च, १९६० में मध्यप्रदेश में रोजगार दफ्तर के ७ और कार्यालय खोले जायेंगे। खरगोन में यह कार्यालय १५ मार्च, मन्दसौर में २१ मार्च, बालाघाट में २२ मार्च, सतना तथा बैतूल में २३ मार्च तथा छतरपुर और जगदलपुर में ३० मार्च को खोले गये।

मध्यप्रदेश में इस वर्ष फरवरी के अन्त तक रोजगार दफ्तरों की कुल संख्या १८ थी, जिनमें कोयला क्षेत्रों के लिए खोले गये ३ कार्यालय भी शामिल हैं । तृतीय योजनाकाल में और अधिक कार्यालय खुल जाने के उपरान्त प्रत्येक जिले में एक रोजगार दफ़्तर खुल जाने की आशा है।

यह स्मरणीय है कि राष्ट्रीय रोजगार सेवा संगठन पहिले भारत शासन के प्रशासनात्मक नियन्त्रण में था, परन्तु १ नवम्बर, १९५६ से यह संगठन राज्य के श्रम विभाग के अन्तर्गत आ गया है, और तब से यह संगठन बेरोजगारों को काम दिलाने तथा सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के विभिन्न मालिकों, को उनकी आवश्यकतानुसार कर्मचारी सुलभ करने में सहायता करता रहा है।

सन् १९५९ में मध्यप्रदेश के रोजगार दफ्तरों ने १,४४,८७६ बेरोजगारों का पंजीयन किया और ३२,७४३ व्यक्तियों के लिए रिक्त ान की सूचना प्राप्त की।

इस संगठन की एक महत्त्वपूर्ण योजना, जो जबलपुर में कार्यान्वित की जा रही है, धन्धा सम्बन्धी मार्ग दर्शन तथा रोजगार सम्बन्धी सलाह है। इस योजना के अन्तर्गत रोजगार दफ्तर विभिन्न तरुणों और प्रौढ़ों को धन्धे के लिए उनकी विशेष योग्यता पर विचार करके उन्हें परामर्श देते हैं कि वे कौन-सा उपयुक्त धन्धा या काम चुनें। यह योजना इन्दौर और भोपाल में भी शीघ्र ही आरम्भ की जाएगी।

सोनकच्छ तथा डोंगरगढ़ नगरपालिका को ऋण

राज्य सरकार ने सोनकच्छ तथा डोंगरगढ़ नगरपालिकाओं को चालू वित्तीय वर्ष में शहरी मिश्र खाद योजना के अंतर्गत ट्रैक्टर तथा ट्रेलर खरीदने के लिए सामान्य शर्तों पर क्रमशः १५,००० तथा २०,००० रुपये का ऋण देना स्वीकृत किया है ।

ग्रामीण सेवाओं के डिप्लोमा को मान्यता

मध्यप्रदेश सरकार ने राष्ट्रीय ग्राम्य उच्च शिक्षा परिषद् द्वारा दिये जानेवाले ग्रामीण सेवाओं के डिप्लोमा को मान्यता प्रदान कर दी है और उसे राज्य सरकार के अन्तर्गत सेवाओं में और पदों पर नियुक्ति के लिए किसी मान्य विश्वविद्यालय की पहली डिग्री के समकक्ष मान लिया है।

यह मान्यता प्रथमतः ३० सितम्बर १९६३ तक दी जावेगी।

किसानों को वित्तीय सहायता

राज्य सरकार ने दुर्ग जिले की बमेतरा तहसील में फसल को क्षति पहुंचने के कारण तहसील के १८ गांवों के लिए १९५९-६० वर्ष की खरीफ किस्त में से ६,२७८.०८ रुपये के भू-राजस्व की छूट देने की मंजूरी दी है।

सीधी जिले में आदिमजाति कल्याण-कार्य

सीधी जिले के हरिजनों तथा आदिमजाति लोगों के सुधार की दृष्टि से शासन ने चालू वित्तीय वर्ष में १,००,००० रु० की राशि मंजूर की है। इसमें से १०,००० रु० पेय जल की सुविधाओं में वृद्धि के लिए तथा २५,५०० रु. आदिवासियों और हरिजनों के लिए ३४ मकानों के निर्माणार्थ मंजूर किये गये हैं । इसके अतिरिक्त ६ औषधालयों और एक चिकित्सालय के लिये ३०,००० रुपए की रकम मंजूर की गई है। १६,१५७ रुपए की दूसरी राशि १५१ मील लंबी कच्ची सड़कों की मरम्मत के लिए स्वीकृत की गई है।

शिक्षा के क्षेत्र में २२ रात्रि-शालाओं के लिए ७,२०० रुपए तथा दो आश्रमों के लिए १२,५२२ रुपए मंजूर किये गये हैं। दो सामुदायिक केन्द्रों के लिए भी ३,३४८ रु. की राशि स्वीकृत की गई है।

उत्तम कृषि समितियों को सरकारी सहायता

एक प्रतिवेदन के अनुसार पूर्वी निमाड़ (खण्डवा) जिले में सरकार ने बोथिया उत्तम कृषि समिति और सतपैरी उत्तम कृषि समिति में से प्रत्येक को ३००० रुपये का अंशदान दिया है ।

इसके अतिरिक्त, खण्डवा खण्ड में १० सेवा सहकारी समितियां संगठित करने की एक योजना तैयार की गई है ।

इस कार्यक्रम के अनुसार ये सहकारी समितियां सिहादा, बडगांवमाली, सतवोड़ा, सानखेड़ा, जुनापानी, सिरपुर, पोशानी, पंजारिया, टिग्रियां तथा वामनगांव आख्या गांवों में स्थापित की जावेंगी ।

छतरपुर जिले में आदिम कल्याण-कार्य

छतरपुर जिले में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लड़कों और लड़कियों को शिक्षा-सुविधायें प्रदान करने के लिये सक्रिय कदम उठाये गये। प्राप्त एक प्रतिवेदन के अनुसार ६ आश्रमों, एक हरिजन छात्रावास और केजड़पुर में एक सामुदायिक केन्द्र भवन की मरम्मत के लिए ३,२८० रुपए मंजूर किये गये।

इसके अतिरिक्त, १५ हरिजन परिवारों को गृह-निर्माण के लिये ११,२५० रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। प्रत्येक परिवार को ७५० रुपये की राशि दी गई।

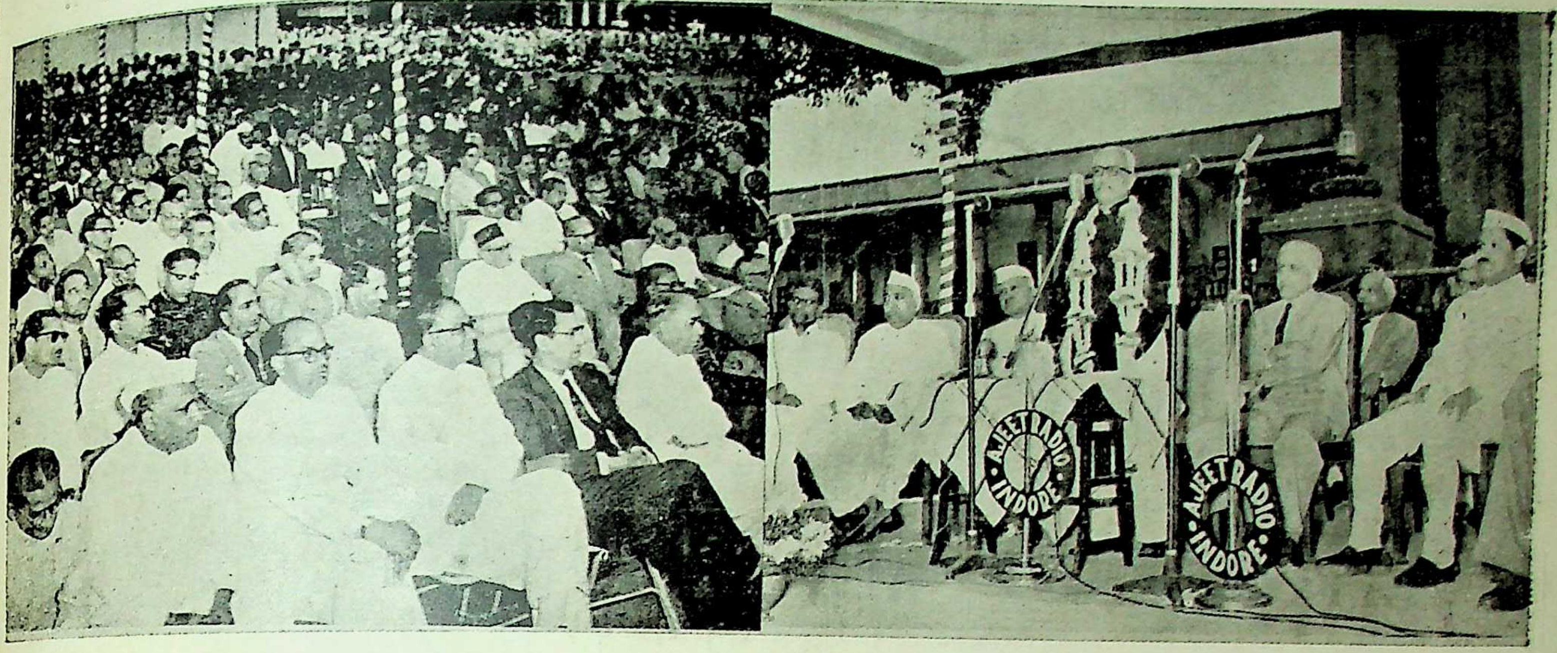
AJEET RADIO INDORE
AJEET RADIO INDORE

इन्दौर में उच्च न्यायालय की इन्दौर बेंच के नवनिर्मित भवन के उद्घाटनोपरान्त भाषण देते हुए भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री भुवनेश्वरप्रसाद सिन्हा। आपकी बायीं ओर राज्य के मुख्य न्यायाधीश तथा विधि मंत्री एवं दायीं ओर मुख्य मंत्री, वित्त मंत्री तथा श्रम मंत्री बैठे हैं

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

★

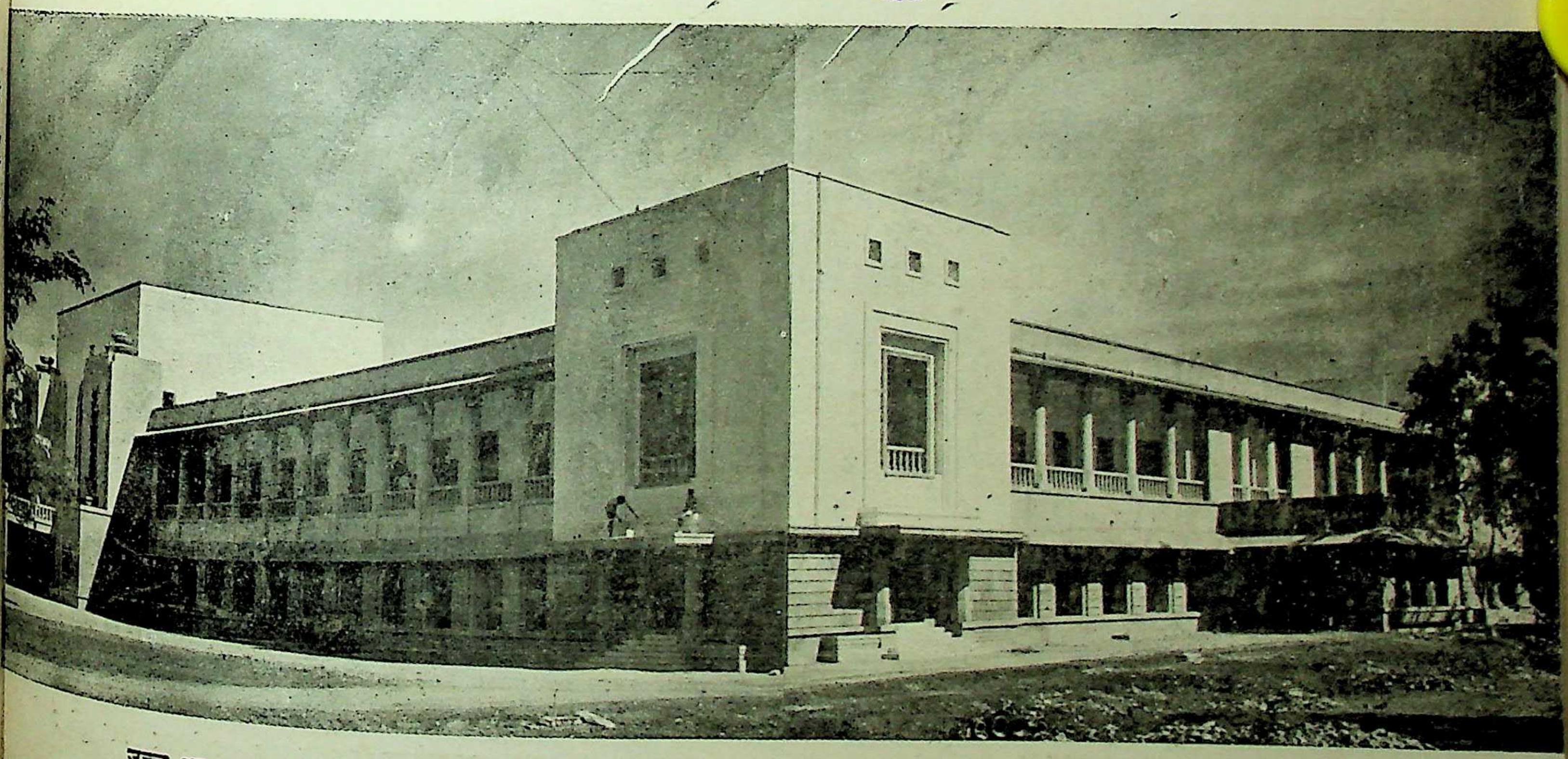

उच्च न्यायालय की इन्दौर बेंच के भवन का दृश्य। इसका उद्घाटन हाल ही में भारत के मुख्य न्यायाधीश द्वारा किया गया

Registered No. J. 158
Licenced to post Without Prepayment

MADHYA PRADESH SANDESH

वार्षिक मूल्य छः रुपये
Licence No. P. P 1.

झांसी की वीरांगना लक्ष्मीबाई का

तिरंगा चित्र खरीदिये

आकार १३×१९ इंच आर्ट पेपर पर मुद्रित

मूल्य एक रुपया मात्र

डाक-व्यय पृथक् ७५ नये पैसे

प्राप्ति-स्थान:—

प्रकाशन शाखा, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय,
जयाजी चौक, लश्कर (ग्वालियर)

यदि आप भारत के हृदयस्थल मध्यप्रदेश के गौरवमय अतीत की गाथाओं से परिचय प्राप्त करना चाहते हैं तो इस विभाग द्वारा प्रकाशित

'मध्यभारत का इतिहास (प्रथम भाग)' पढ़िये।

(पृष्ठ संख्या ६३८, चार रंगों का कलापूर्ण आकर्षक आवरण, बाघ गुफा के ३ तिरंगे चित्र व अन्य अनेक अप्राप्य प्राचीन चित्रों से सुसज्जित)

मूल्य चौदह रुपये (डाक-व्यय दो रुपये अतिरिक्त)

प्राप्ति-स्थान:—

व्यवस्थापक, प्रकाशन शाखा, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय,
जयाजी चौक, लश्कर ग्वालियर म० प्र०

प्रबंध सम्पादक—इन्दरसिंह परिहार, संचालक, सूचना एवं प्रकाशन संचालनालय, मध्यप्रदेश
सम्पादक—अनन्त मरालशास्त्री

देवेन्द्र नारायण वाजपेयी, मुख्य सम्पादक, सूचना-प्रकाशन संचालनालय म.प्र. द्वारा प्रकाशित तथा गवर्नमेंट रीजनल प्रेस, ग्वालियर द्वारा मुद्रित
एक प्रति का मूल्य—१३ नये पैसे

२२ ८/५२

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

मध्यप्रदेश सन्देश

१ जुलाई, १९६१
१० आषाढ़, १८८३

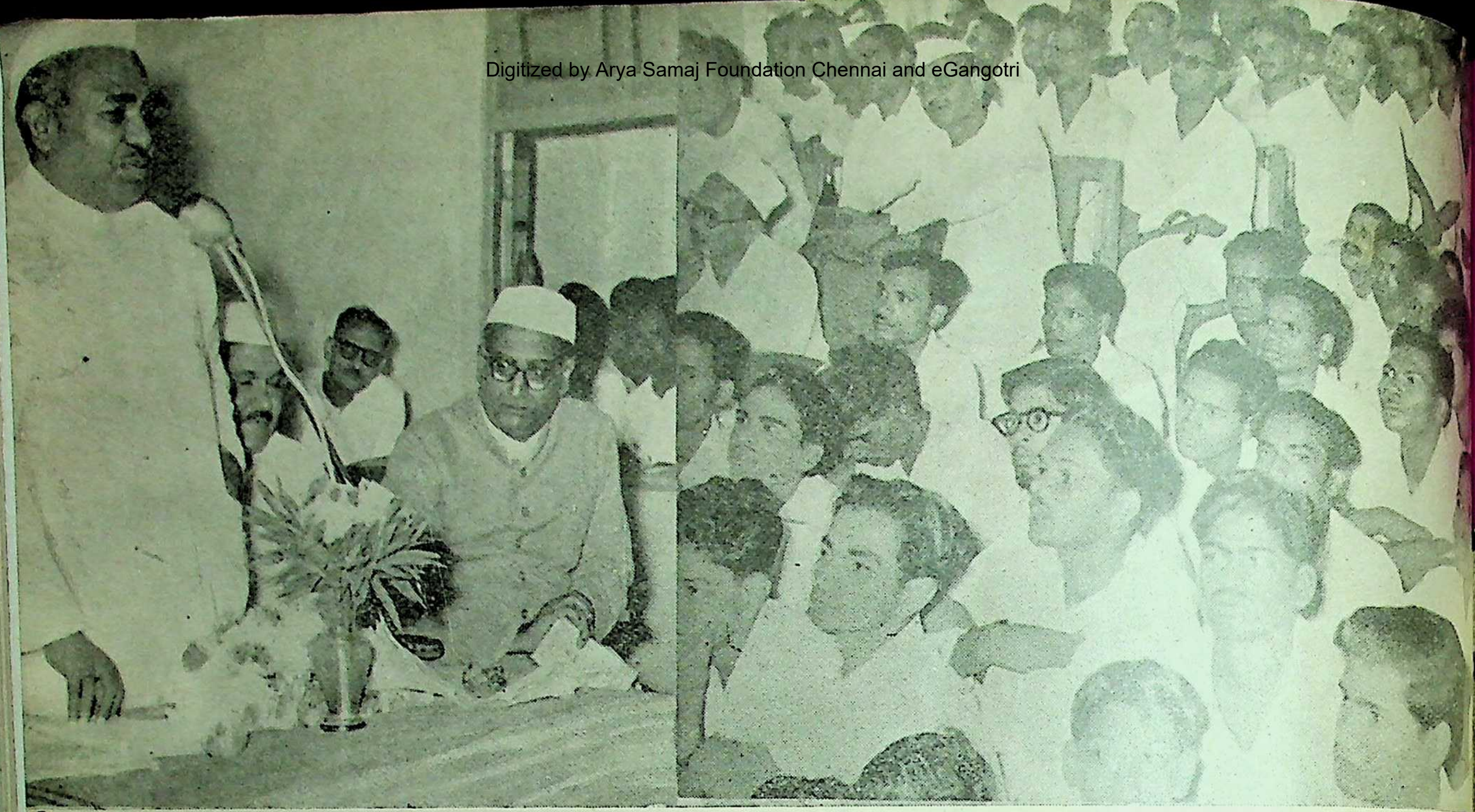

गत १२ जून को मण्डला में रानी दुर्गावती कॉलेज का शिलान्यास करने के उपरान्त भाषण देते हुए रेल मंत्री श्री जगजीवनराम

* * *

उसी अवसर पर जन-समूह को सम्बोधित करते हुए राज्य के शिक्षा मंत्री डॉ० शंकरदयाल शर्मा

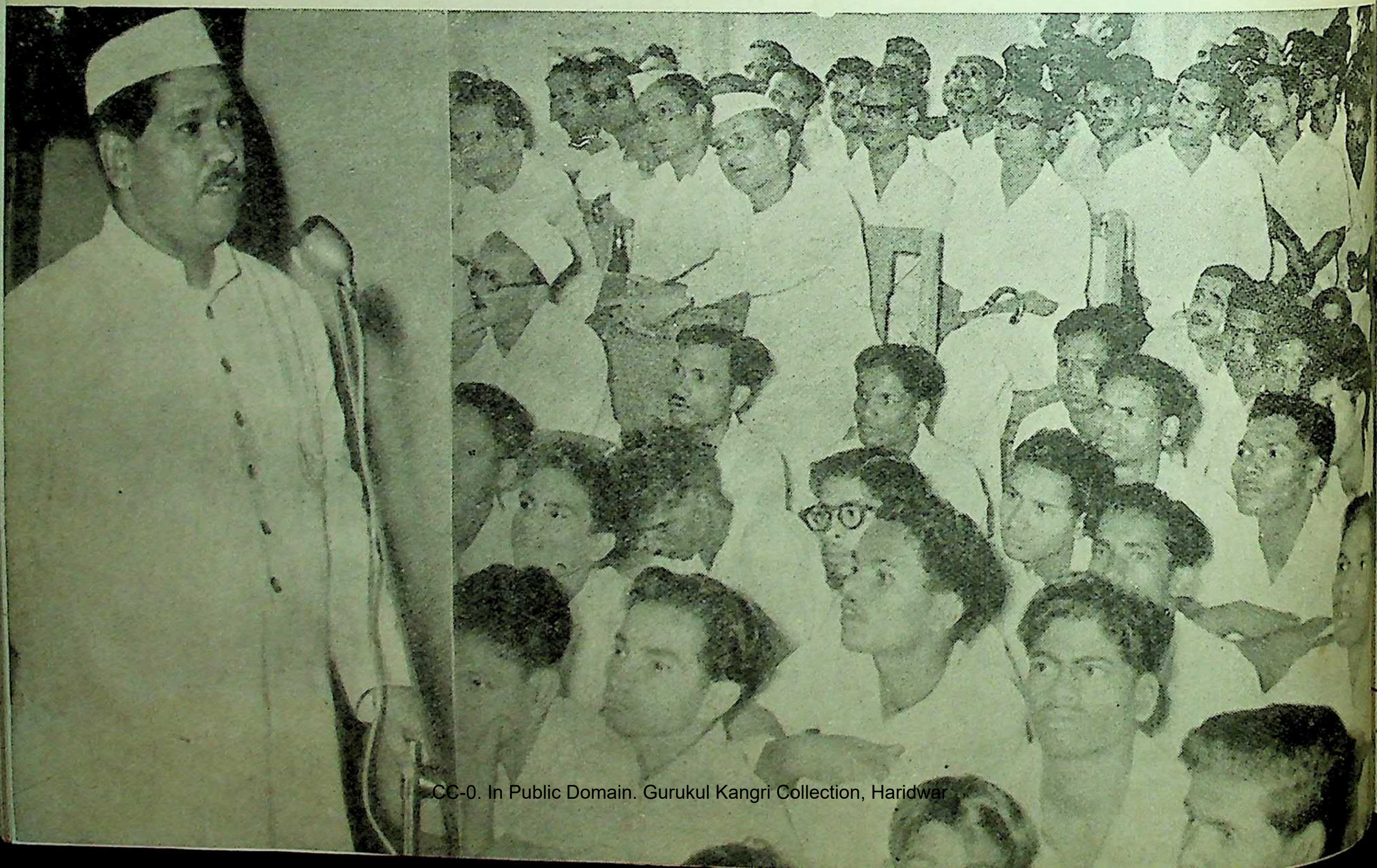

मध्यप्रदेश सन्देश

प्रकाशन का ५९ वां वर्ष

इसमें जयाजी प्रताप तथा मध्यभारत सन्देश सम्मिलित हैं

अल्प बचत अभियान

हाल ही में हमारे राज्य के मुख्य मंत्री डॉ. कैलासनाथ काटजू ने राष्ट्रीय बचत राज्य परामर्श मंडल की बैठक में भाषण देते हुए यह सुझाव दिया है कि सन् १९६१-६२ वर्ष में धनराशि संग्रह का लक्ष्य साढ़े पाँच करोड़ रुपये निश्चित किया जाना चाहिए तथा इस लक्ष्य की पूर्ति के हेतु अभियान को तीव्र किया जाना चाहिए।

उक्त मंडल की बैठक में यह भी निश्चित किया गया कि ग्रामवासियों को विभिन्न योजनाओं के लाभों से परिचित कराने के लिए पर्याप्त प्रचार के साधन अपनाये जाएँगे। अल्प बचत के प्रति जन-उत्साह उत्पन्न करने के लिए यह निश्चय किया गया कि वर्ष में अधिकतम राशि एकत्रित करनेवाले जिले के कार्य की प्रशंसा के प्रतीक के रूप में एक शील्ड पुरस्कारस्वरूप दी जानी चाहिए। इस मंडल के सदस्य, जिलों का दौरा करेंगे तथा समस्त कार्य-रत एजेन्सियों से सम्पर्क स्थापित करेंगे तथा अल्प बचत योजनाओं में अधिक नियोजन कराने में उनका मार्ग-दर्शन करेंगे! इस वर्ष पुनः एक जिले को राज्य में एक आदर्श जिला बनाने के लिए चुना जावेगा। पंचायतों व्यावसायिक संघों, सरकारी बैंकों की शाखाओं तथा अन्य संस्थाओं से सम्पर्क स्थापित कर अधिकृत एजेन्टों की संख्या में भी एक बड़ी हद तक वृद्धि की जावेगी।

राष्ट्रीय बचत राज्य परामर्श मंडल की बैठक में यह बताया गया कि सन् १९६०-६१ वर्ष में राष्ट्रीय बचत प्रतिभूतियों तथा इनामी बाण्डों को मिलाकर कुल ३५३.५४ लाख रुपये एकत्र किये गये थे। द्वितीय पंचवर्षीय योजनाकाल के किसी भी अन्य वर्ष की तुलना में इस वर्ष एकत्रित धनराशि अधिक है। यह उत्साहवर्धक प्रगति है।

देश में चल रही पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विभिन्न विकास कार्यों की लक्ष्य-पूर्ति के लिए राष्ट्रीय बचत अभियान का महत्त्व अत्यधिक है।

राष्ट्रीय बचत की अनेक योजनाएँ हैं, जिनमें बड़े-छोटे सभी प्रकार के साधनों वाले व्यक्ति भाग ले सकते हैं। राज्य की जनता ने अल्प-बचत अभियान में अब तक जो भाग लेकर उत्साह प्रदर्शित किया है, वह प्रशंसनीय है। हम आशा करते हैं कि मुख्य मंत्री डा० काटजू नें सन् १९६१-६२ वर्ष के लिए साढ़े पाँच करोड़ रुपये की धनराशि अल्प-बचत द्वारा संग्रह किये जाने का जो लक्ष्य प्रगट किया है, उसकी पूर्ति के लिए राज्य की जनता पूर्ण सहयोग देकर देश के विकास के लिए अपने कर्त्तव्य का पालन करेगी।

कोलम्बो योजना-दिवस

१ जुलाई को कोलम्बो योजना-दिवस का अपना विशेष महत्त्व है। कोलम्बो योजना, वह अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्वपूर्ण योजना है, जिसके अन्तर्गत एक क्षेत्र विशेष के अविकसित देशों को उनके विकास के लिए समृद्ध राष्ट्रों द्वारा आर्थिक, शिल्पिक, औद्योगिक, कृषि-वृद्धि सम्बन्धी आदि सहायता पहुँचाना हैं। इस योजना के अन्तर्गत समृद्धिशाली देश—अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया, जापान, न्यूजीलैण्ड आदि भारत, इण्डोनेशिया, पाकिस्तान, बर्मा, फिलिपीन, थाई देश, वियतनाम, कम्बोडिया, नेपाल, श्रीलंका आदि दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी एशिया क्षेत्र के अविकसित देशों को आर्थिक और शिल्पिक सामग्री द्वारा सहायता करते हैं।

हमारे देश के विकास के लिए पहली और दूसरी पंचवर्षीय योजनाओं के पश्चात् तीसरी पंचवर्षीय योजना प्रारम्भ हो चुकी है। इस योजना का उद्देश्य राष्ट्रीय आय में प्रतिवर्ष ५-६ प्रतिशत वृद्धि करने का है। तीसरी योजना के अंतर्गत जहाँ कृषि-उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना है, वहाँ १ करोड़ से अधिक बेकारों को नौकरियाँ दिलाने का लक्ष्य भी है। इस प्रकार तीसरी योजना हर प्रकार से देश के आर्थिक विकास में विशेष महत्त्व रखती है। इससे देश की अर्थ-व्यवस्था स्वावलम्बी हो जायगी, ताकि आगे चलकर आर्थिक विकास तेजी से हो सके। कोलम्बो-क्षेत्र के देशों में हमारे देश के विकास की प्रगति पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत अत्यन्त उत्साहवर्धक है, इसमें सन्देह नहीं।

मुखपृष्ठ

वर्षा के अभाव में

ग्वालियर, शनिवार, दिनांक १ जुलाई, १९६१ आषाढ़, १०, १८८३ अंक २९

निर्माण की दिशा में

यह आवश्यक है कि देश की सभी भाषाएं साथ-साथ फूलें-फलें और एक दूसरे के विकास में सहायता दें। देश की सभी भाषाएं मिलकर एक गुलदस्ते के समान हैं और गुलदस्ते के हर फूल का अपना अलग-अलग व्यक्तित्व है। गुलदस्ते का एक फूल भी यदि मुरझा जाता है, अपनी मृदुता खो देता है या गुलदस्ते से टूट कर अलग जा गिरता है तो सिर्फ एक गुल नहीं, पूरा गुलदस्ता बदनुमा हो जाता है। इसलिए किसी भी भाषा को किसी तरह की क्षति पहुंचेगी तो सारी भाषाओं का अहित होगा।

✱

देश में बहुतेरी भाषाएँ हैं। हमारे संविधान ने सभी को समान मान्यता प्रदान की है और सभी के विकास-समृद्धि के लिए संविधान ने दृढ़ संकल्प किया है। अनेक भाषाएं हैं, पर देश एक है, पूरा भारत सिर्फ भारत है। हमें इस विभिन्नता के बावजूद स्थायित्व एकता को बरकरार रखना है।

--राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्रप्रसाद

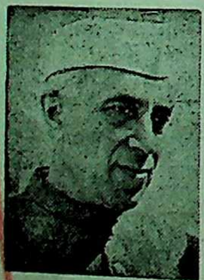

विगत कई सौ वर्षों से जात-पांत देश के लिए अभिशाप रही है। उससे देश कमजोर और पतित हुआ है, इससे हममें फूट उत्पन्न हो गई और हम विदेशी आक्रान्ताओं के गुलाम बन गए। हममें एकता की भावना नष्ट हो गई। अतीतकाल में इसकी उपयोगिता भले ही रही हो, लेकिन आज देश में इसके लिए कोई स्थान नहीं रहा।

हर एक का धर्म एक-सा है, ऐसा मैं नहीं मानता। आप धर्म को हर मामलों में लें, रोज के काम में क्या धर्म है, यह सोचें। खाली पूजन तो धर्म नहीं है। हर युग का अलग धर्म होता है। यदि आप उस युग के धर्म का पालन नहीं करते, तो निर्बल हो जाएंगे, पिछड़ जाएँगे। आप विज्ञान को लीजिए, उसमें कितनी तेजी से और मुल्क बढ़ रहे हैं। हमें भी उनके साथ आगे बढ़ना है।

--श्री जवाहरलाल नेहरू

धर्म वही है, जो सबको धारण करता है। अलग-अलग रहने पर धर्म नहीं बनता। सब एक हो जाते हैं, तभी धर्म बनता है। तभी धर्म की जरूरत भी है। क्रोध नहीं आना चाहिए, यह धर्म है। परन्तु यह कैसे पहचाना जाए? गुस्सा करना हो, तो भी दूसरा मनुष्य सामने चाहिए। सहकार धर्म है, पर अकेले रहने पर क्या सहकार होगा? समाज होगा, तभी तो सहकार होगा और धर्म पहचाना जाएगा! सत्य और प्रेम धर्म हैं, पर अकेले रहें, तो प्रेम किस पर किया जायगा? प्रेम-धर्म तभी प्राप्त होगा, जब समाज में हम रहेंगे।

इस तरह देखा जाय, तो ध्यान में आएगा कि मानव में जितने धर्म हैं, सब समुदाय में ही हैं। लेकिन, आज समुदाय बनता ही नहीं! हाँ, परिवार अवश्य बनता है। अगर इतना भी नहीं बनता, तो हम जंगल के जानवर के समान हो जाते! परिवार में भी कुछ धर्म है, परन्तु वह छोटा है। लेकिन, परिवार में कितनी धर्म-परीक्षा होगी? परिवार जितना व्यापक होगा, उतनी ही धर्म-परीक्षा ज्यादा अच्छी होगी।

--आचार्य विनोबा भावे

संस्कृत-साहित्य में ज्ञान देनेवाले अनेक स्त्रोत विद्यमान हैं। इसलिए हमें कोई ऐसा मार्ग निकालना चाहिए, जिससे संस्कृत की प्रगति हो सके और उसके वास्तविक गौरव को लोग समझ सकें।

--श्री दिवाकर

इस अंक में

क. शीर्षक एवं लेखक पृष्ठ संख्या

१. विन्ध्याचल की काव्य-गाथा ..
--प्रा० लक्ष्मीनारायण दुबे

२. त्रयी (कविता) .. ..
--डॉ० राजेश्वर गुरु

३. परतें (कहानी) .. ..
--श्री जगदीशचन्द्र पांडेय

४. मिलन और विरह : एक तात्विक विवेचन
--प्रा० सद्गुरुशरण अवस्थी

५. धरती गाया करती है (कविता)
--श्री देवव्रत देव

६. प्राचीन भारतीय शैल स्तम्भों के शीर्ष परगहे
--श्री गोपीचन्द श्रीनागर

७. चुम्बकीय तरल से धातु की परख
--श्री के. सी. श्रीवास्तव

८. कोलम्बो योजना-देशों की सबसे बड़ी समस्या : जनसंख्या वृद्धि

९. कोलम्बो योजना और अन्य देशों की आर्थिक योजनाएँ

१० साहित्य समालोचना

आगामी अंक के आकर्षण

१. गोस्वामी तुलसीदास का जन्म-स्थान
--श्री वेंकटेशनारायण तिवारी

२. विसर्जन (कविता)
--श्री जानकीवल्लभ शास्त्री

३. वचन की हत्या (कहानी)
--सुश्री उषादेवी मिश्रा

४. संस्कृति संगम
--आचार्य क्षितिमोहन सेन

आदि रचनाओं के अतिरिक्त स्थायी

विन्ध्याचल की काव्य-गाथा

—प्रा० लक्ष्मीनारायण दुबे

हमारे मध्यप्रदेश का मुकुट-मणि विन्ध्याचल भूगोल, संस्कृति एवं साहित्य के लिए अनुपमेय निधि प्रमाणित हुआ है। इस पर्वत की महत्ता सिर्फ भूगोल-विज्ञान तक ही सीमित नहीं है; प्रत्युत् यह साहित्य तथा संस्कृति के इतिहास में भी अपनी पावन आभा बिखेरता है। वन, सरिता, पर्वत, सर, गव्हर आदि का विपुल रूप हमारे देश में फैला पड़ा हुआ है। इन उपादानों के कारण प्रकृति का लावण्य और आनंद उमड़ा पड़ता है और जीवन को निराली ज्योति प्राप्त होती है। भूगोल के दृष्टिकोण से ये तत्त्व प्रदेश या भूमिभागों की सीमाओं का निर्धारण करते हैं और अपने अंकों में नाना प्रकार के स्थानों को सुरक्षित रखते हैं। पर्वत अपने रूप और व्याप्ति में विशालकाय होता है। उसमें सहज ही सौंदर्य तथा आतंक, दोनों की एकसाथ अवस्थिति होती है और इसकी कल्पना भी की जा सकती है। उनका सामान्य डीलडौल ही उनको "भूधर" की संज्ञा के उपयुक्त बना दिया करता है। श्री सुमित्रानंदन पंत ने एक सामान्य पर्वत का रूप गजराज के माध्यम से स्पष्ट किया है—

"द्विरत दन्तों से उठ सुन्दर,
सुखद कर सीकर से बढ़कर।
भूति से शोभित शिखर फैल,
फिर कटि के से पोखर।
बदल यों विविध वेश जलधर,
बनाते थे गिरिको गजवर।"

सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भारत में दो पर्वतों को अप्रतिम श्रेय तथा गरिमा प्राप्त हुई है—हिमालय और विन्ध्याचल। प्राचीन भारत में ये दो पर्वत महान् रक्षक तथा सजग प्रहरी के समान खड़े रहते थे। अपने-अपने प्रदेशों का समग्र दायित्व, गौरव और चेतना के ये मानो एकत्रीभूत पुंज थे। 'विन्ध्याचल' अपने सार्थक नाम में निहित 'अचल' शब्द का वास्तविक रूप बनकर, दक्षिणपथ का मनोरम द्वार था। आज भी यह मध्यप्रदेश की ग्रीवा का हार है। अटूट वन-संपदा इसकी उपत्यका में भरी पड़ी है। इसके आंचल के निवासियों की जिन्दादिली का तो यह उत्कृष्ट दृष्टान्त है कि गोस्वामी तुलसीदास को भी अपनी हास-परिहास की वृत्ति की अभिव्यंजना 'विन्ध्य के वासी' के माध्यम से ही करनी पड़ी है।

पुरातनकाल में विन्ध्याचल संभवतः हिमालय से भी अधिक ऊँचा था। पृथ्वी के अंतराल में सतत सक्रिय वात्याचक्रों से वसुधा के बाह्य स्वरूप में भी परिवर्तन-परिवर्द्धन होता चला जाता है। हिमालय एक भयंकर भूचाल की समष्टिगत उत्पत्ति है। वह आज भी बढ़ता चला जा रहा है। किसी पश्चात्कालीन भूकंप ने हमारे विन्ध्याचल को महान् से कुछ लघु रूप में परिणत कर दिया हो। फिर भी, इस गिरि के पीछे अपनी परंपरा व इतिहास की सुन्दर श्रृंखला है। उत्तर व दक्षिण का गठबंधन इसी पर्वत की उपत्यका में सम्भव हुआ करता था। दोनों विशाल भू-भागों की पृथकत्व निरूपक रेखा ही इस विशाल पर्वत का वैभव प्राप्त कर गई है। आदि जातियों का प्रसार भी दक्षिण भारत में अधिक था। महर्षि अगस्त्य ही प्रथम महापुरुष थे, जिन्होंने इस पर्वत को लाँघकर, दक्षिण-भारत में प्रवेश किया था और विन्ध्याचल, इसके बाद, अपने छोटे-से ही रूप में रह गया। इस पौराणिक आख्यान के गर्भ में एक प्रतीक अन्तर्हित है—आर्य सभ्यता के प्रसार का। क्रमशः पर्वत, नदी-नाले, निबिड़ वन आदि को पार करती हुई यह संस्कृति किस द्रुत गति के साथ अग्रसर हुई है; इसकी गाथा का रूप विन्ध्याचल में मुखर हो पड़ता है। विन्ध्याचल को पार करके इस सभ्यता के प्रसार में वृद्धि प्रारम्भ हुई। सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रभाव का आदान-प्रदान प्रारम्भ हुआ। फलस्वरूप सांस्कृतिक एकता के प्रसार से भारत के मन व तन का स्वरूप परिवर्द्धित एवं परिवर्तित हो गया।

रामायण की कथा के द्वारा 'रामत्व' के उदय तथा प्रतिष्ठा और 'रावणत्व' के विनष्ट व विध्वंस होने का रूप हमारे समक्ष आया है। भगवान् राम ने अपनी विलक्षण व्यावहारिक प्रज्ञा द्वारा आर्य-संस्कृति का विस्तार दक्षिण में किया। उनकी अवतारणा से भारत पर स्वर्ग का भी अवतरण हो गया। राम-वन-गमन में आर्य-संस्कृति के दक्षिण में प्रवेश की ऐतिहासिक व जन-मन-रंजनकारी कथा समाहित है। श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के महाकाव्य 'उर्मिला' के नायक सुमित्रानंदन इसी प्रयोजनवश विन्ध्याचल को लाँघना चाहते थे। वे इस 'अलंघ्य' पर्वत को 'लंघनीय' में परिवर्तित करना चाहते थे—

वन दुर्गमता, सहज अटन में, अहो—देवि,
परिणत होगी,
उस दुर्लंघ्य विन्ध्य की चोटी, रामलखन पद
नत होगी।
उत्तर-दक्षिण का गठबंधन, करे हमारी पद-
रेखा,
जग वह देखे, जिसको उसने, अब तक कभी
नहीं देखा।"

भारतीय संस्कृति के अधिकाधिक रूप में दक्षिण में ही सुरक्षित रहने का मूल श्रेय भी विन्ध्याचल को ही है। विन्ध्याचल की उपत्यका का प्राकृतिक रूप मानो नंदनवन की शोभा-श्री के पथ का अनुगमन करता है। महर्षि वाल्मीकि के राम, जानकी व लक्ष्मण को इसकी मनोहरता की छटा दिखला रहे हैं—

"आदीप्तानिव वैदेहि सर्वतः पुष्पितान्नगान्।
स्वैः पुष्पैः किंशुकान्पश्य मालिनः शिशिरात्यये।

पश्य भल्लातकान्बिल्वान्नरैरनुपसेवितान्,
फलपुष्पैरवनतान्नूनं शक्ष्याम जीवितुम्
पक्ष्य द्रोणप्रमाणानि लम्बमानानि लक्ष्मण
मधूनि मधुकारीभिः संभृतानि नगे नगे।"

—"वाल्मीकि रामायण", अयोध्याकांड, श्लोक ६–८।

भगवान् राम के युग-निर्माता चरणों का पवित्र स्पर्श पाकर विंध्याटवी कृतकृत्य हो गई। इसी क्षेत्र का नैसर्गिक सौन्दर्य ठाकुर जगमोहनसिंह ने भी चित्रित किया है—

"याही मग ह्वै कै गए दंडक वन श्रीराम।
तासों पावन देश यह विन्ध्याटवी ललाम ॥
विन्ध्याटवी ललाम तीर तरुवर सों छाई।
केतकि कैरव कुसुम कमल कै बदन सुहाई ॥
मन जगमोहनसिंह न शोभा जात सराहो।
ऐसो बन रमनीय गए रघुबर मग याही ॥"

राष्ट्र-भक्ति व देश-प्रीति के प्रबल ज्वार ने हमारे देश के प्रत्येक अंग-प्रत्यंग की स्तुति को वाणो प्रदान की। भारत के वैभव व महानता का गुणगान पूर्ण निष्ठा के साथ किया गया। देश के महान् चिह्न व प्राकृतिक उपलब्धियों में विन्ध्याचल का विस्मरण नहीं किया जा सकता। श्री रामचरित उपाध्याय ने हिमालय व विन्ध्या को हमारे अटल व अजेय दुर्गों के रूप में ग्रहण किया है—

"जय-जय भारत पुन्य निधान।
इस त्रिभुवन में अन्य देश क्या तेरे सम मान।
दुर्गम दुर्ग बने हैं तेरे विन्ध्य-हिमाचल अचल अभी।
अविचल खाई है वारिधि की, तनिक न होना विकल कभी।"

हमारे उत्तम देश की उत्कृष्टता में विन्ध्याचल का भी अपना स्थान है। यह अपूर्व प्राकृतिक प्रदेय है। श्री राधाचरण गोस्वामी की मंगलकामनाएँ हमारे राष्ट्र के साथ हैं—

"हमारो उत्तम भारत देस।
जाके तोन ओर सागर हैं, उत हिमगिरि अति-वेष ॥
श्री गंगा यमुनादि नदी हैं, विन्ध्यादिक परवेश।
राधाचरण नित्य प्रति बाढ़ौ, जब लौं रवि-राकेश ॥"

विन्ध्याचल की विविध वेश-भूषा सम्पन्न उपत्यका में हमारे कवियों का मन रम गया है। वाल्मीकि से लेकर बीसवीं शताब्दी के कवियों तक ने इस भूमि-भाग व पर्वत को इयत्ता का सुन्दर स्तवन किया है। महाकवि कालिदास ने हिमालय को पृथ्वी का मानदंड कहा है। श्री माखनलाल चतुर्वेदी ने हिमालय की अपेक्षा विन्ध्याचल को अधिक महत्त्व प्रदान किया है। कवि विन्ध्याचल के मापदंड से, वसुधा के मानदंड को नापना चाहता है—

हाथों में मेंहदी, ओठों पर पान सजाये कौन हँस उठा,
रात है कि नाराज हो गई प्रात है कि छवि बीच-बस उठा।
खुल-खुल बन्द हुए जाते हैं नयन सहस्रों धारकर,
वृन्दावन के हिंडोलों में कभी रूप रच कभी नाद भर।
दर्शन में अधमुंदे नेत्र से रूप जला तापा करता है,
विन्ध्या का ले माप हिमालय को मापा करता है।"

विन्ध्याचल संस्कृति की सात्विक धरोहर है। इतिहास को इतिवृत्तात्मक कहानी-शैली है। काव्य का उदात्त रूप उसमें समाहित है। भूगोल को वह भव्य कृति है। हमारे कवीन्द्र-रवीन्द्र ने अपने अभिवंदनीय 'राष्ट्र-गोत' में देश के विशाल रूप—आवरण में विन्ध्याचल को जय-गाथा भी हमें सुनाई है—

"जन-गण-मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा, द्राविड़ उत्कल वंग।
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा, उच्छल जलधि तरंग,
तव शुभ नामे जागे तव शुभ आशिष मांगे
गावे तव जय गाथा।"

गीत

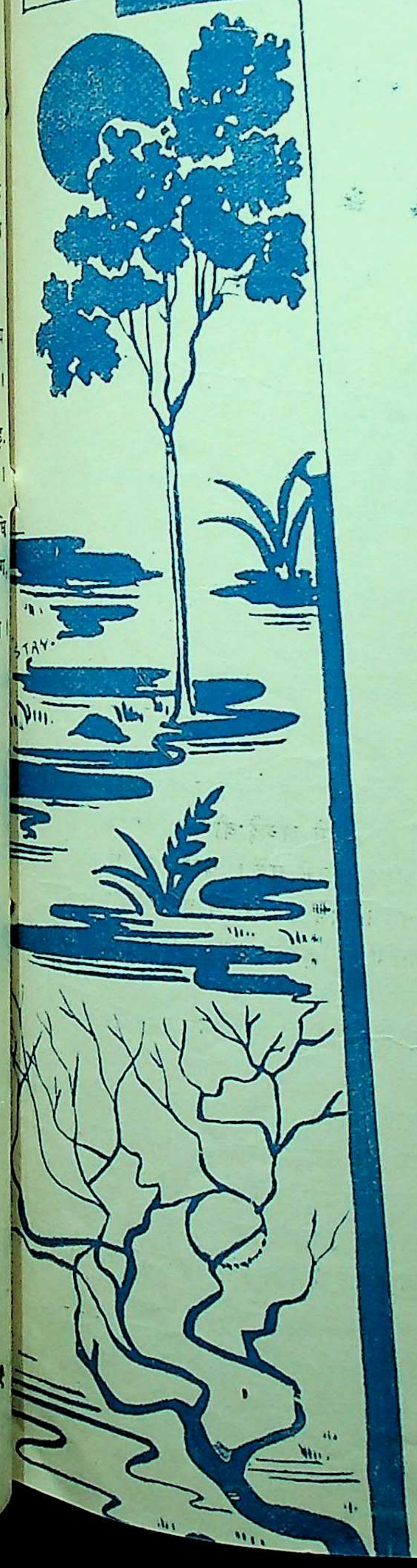

बहुत दिनों से नहीं लिखा है गीत नया,
जैसे सब रस सूख गया मन रीत गया ।
जब पावस के स्निग्ध पयोधर घिरते थे,
वह भी युग था—आया, बरसा, बीत गया ।

अमल शरद के अभ्रहीन आकाश तले,
अमृत किरन झर तरुण चाँद के हास तले ।
धरती ने केशर कुंकुम से माँग भरी,
सपन बीज अंकुराये फूले और फले ।

यह ढलती हेमन्ती दुपहरिया का पल,
जैसे अलसाई अंखियाँ हों बिन काजल ।
पर गीतों की गगरी है अब भरी भरी,
बीत चुका है कब का व्यर्थ स्वरों का छल ।

-- डॉ० राजेश्वर गुरु

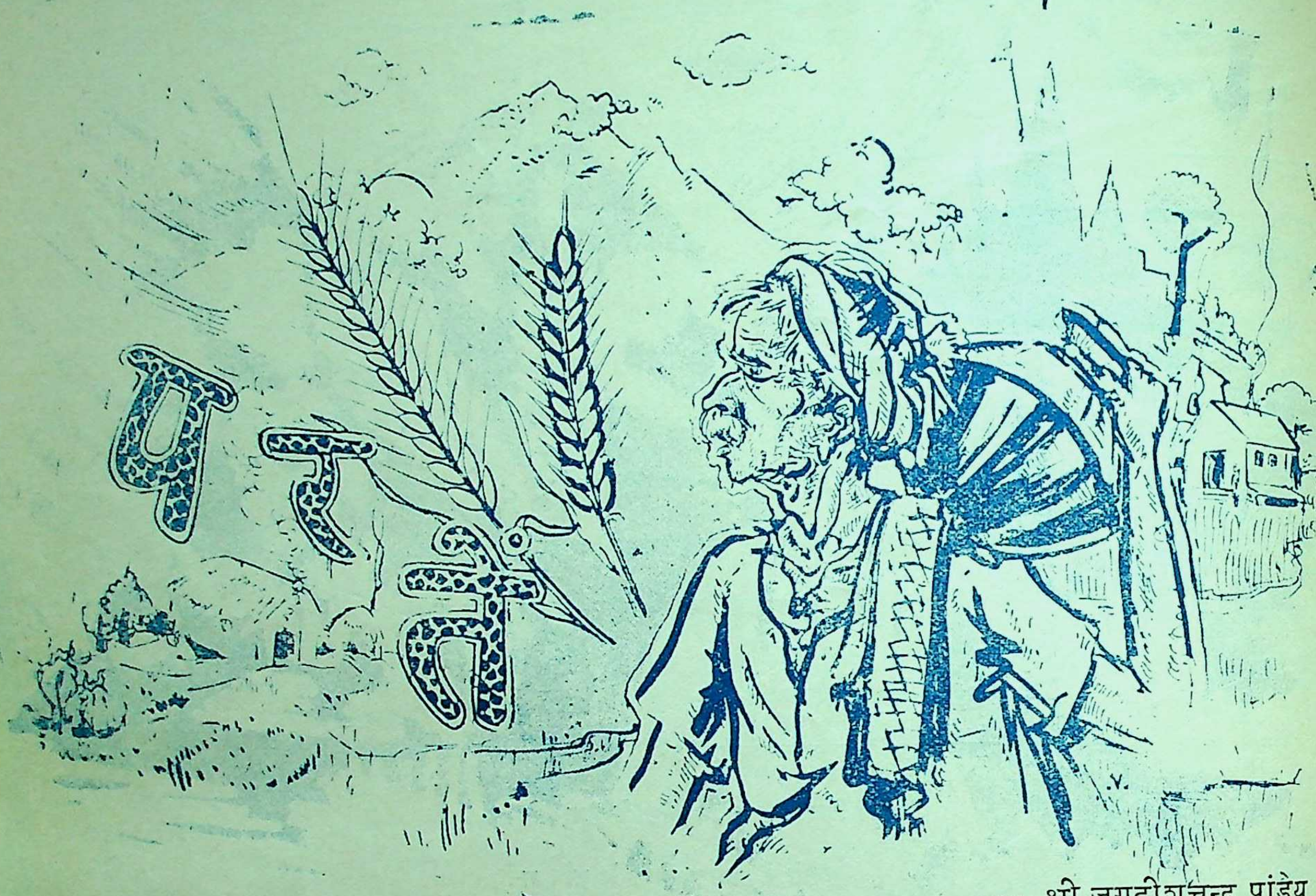

परतें

—— श्री जगदीशचन्द्र पांडेय

झुटपुट! झुटपुट!!

धनुवा गागर लिए, पानी लेने नाले जा रहा था। रात नींद न आ सकने के कारण सिर भारी हो आया था। रातभर उसे ये ही विचार आते रहे——सचमुच मैं सेठ को बहुत मारता हूँ। जब मैं दूसरों के काम पर जीवित हूं तो मुझे किसी से कुछ कहने का अधिकार नहीं। इसी कारण वह पौ फटते समय ही गागर लिए चला आया था। यद्यपि, कमजोरी के कारण उसे सन्देह था——गागर भरकर मैं ला सकूंगा या नहीं। ——एकाएक लमखेत के पास पहुँचते ही वह ठिठककर खड़ा ही रह गया। एकटक देखने लगा——गेहूं की लम्बी लम्बी व मोटी-मोटी बालों को। हल्की-हल्की हवा के झोकों से लमखेत (लम्बा खेत) की बालें हिल रही थीं। जो चाँदनी में और भी भली लग रही थीं।

इस इलाके में लमखेत बहुत प्रसिद्ध है। लमखेत का पश्चिमी छोर जहां एक ओर जंगल से मिलता है, वहां पूर्वी छोर गांव के मध्य भाग को छूता है। लम्बाई कोई दो-सौ गज के करीब ही होगी। भले ही चौड़ाई कहीं-कहीं सिमटकर चार-पाँच गज ही रह जाती है। यह खेत सौंकार त्याङ्ज्यू का है। जैसा उनका यश है, वैसी ही एक इकाई यह खेत अन्य खेतों के बीच है। आकार में में भी, फसल की दृष्टि से भी।

धनुवा ने गौर से लमखेत के बगल वाले अपने खेत की ओर देखा। उसके चेहरे का रंग फीका पड़ गया। उसमें अभी बालें नहीं आई थीं। कुछ अन्य खेतों में बालें अवश्य आगई थीं, पर उसे उन बालों की अपेक्षा लमखेत की बालें बहुत भली लगीं। सहसा उसके मन में विचार आया——काश ऐसे गेहूँ मेरे खेतों होते।

वह वर्षों से यही सोचता आ रहा है—अ मैं खेतों में अच्छे बीज बोऊँगा। चाहे बीज कह से भी लाने पड़ें। चाहे कितना ही श्रम क्यों करना पड़े। खेतों में हर हालत में अच्छी फस होनी चाहिए। गाँव व इलाके भर में वह जिस भी अच्छी फसल देखता है, बीज मांगने की इच्छ से रोज ही उसके यहाँ चक्कर लगाने लगता है

उसके कुछ न कहने पर भी लोग उसके की बात को समझ लेते हैं। इसी कारण लो उसकी इच्छा की पूर्ति के बदले अनेक काम करवा हैं। कभी-कभी तो लोग उससे दिनभर क करा लेने पर एक पैसा भी उसे मजदूरी नहीं

हैं। वह भी मजदूरी नहीं माँगता। हाँ, फसल कटते समय बीज माँगता है। बीज मिलने पर इतना प्रसन्न हो जाता है, जैसे उसे कोई अमूल्य निधि मिल गई हो।

लोग, धनुवा की इस आदत की हँसी उड़ाते हैं। पर वही जानता है, जब किसी खेत में अच्छी फसल देखता है, तो उसे अपने पिता की याद हो आती है। दिन-दिनभर अथक श्रम करने पर भी उसके पिता हमेशा अच्छी फसल देखने की साध लिए चल बसे थे। जब तक वे काम कर सकते थे, तब तक तो उनके खेतों में अच्छी फसल कभी-कभी हो भी जाती थी। पर जब से वे बीमार हुए, न जाने खेतों को क्या हुआ, अच्छी फसल होती ही नहीं थी। इसी कारण वह हमेशा यही चाहता था––पिताजी तो अपनी इच्छा पूरी नहीं कर पाये, मैं प्रयत्न करूँगा। यदि मझे सफलता मिली तो उनकी आत्मा को शान्ति मिलेगी। और उसकी आँखों के सामने वह दृश्य उभर आता, जब उसे चालीस वर्ष पूर्व अपने पूर्वजों का घर भी छोड़ना पड़ा था––पिता की ही मृत्यु के कारण, क्योंकि, उस गाँव के लोगों ने उसकी कच्ची उम्र देख, काम नहीं कर सकेगा, यह सोच, उनसे खेत छुड़ा लिए थे। नौ वर्ष की उम्र में वह हल जोतता भी कैसे। तब कई दिनों तक उसकी माँ उसका हाथ पकड़ गाँव छोड़ दर-दर घूमती रही थी। अन्त में सौंकार त्याड्ज्यू के कारण वह इस गाँव में रहने लगी थी। तभी उसे मिली थी, बपौती के रूप में––अच्छी फसल देखने की साध।

धनुवा ने लमखेत की बालों को देखा। फिर एकाएक एक झटके के साथ मुंह मोड़कर भटकोट पहाड़ की ओर देखने लगा। वैसे तो हल्के-सफेद व मटमैले रंग की चाँदनी छिटक रही थी। आम, काफल, चीड़ व बेड़ अभी अलसाये-से काली चादर ओढ़े सोये थे, पर सामने दूर्णागिरि व भटकोट पहाड़ खंडित मेघों की मैली रजाई लपेटे सोये थे। लग रहा था––गहरी नींद में सोये हैं, होंठों -ही-होंठों में धनुवा फुसफुसाया––बादलों के कारण सप्तऋषियों का पता भी नहीं चल रहा है। जाने कितनी रात है। हमारी घड़ी तो तारे हैं। हम तो इनसे ही अन्दाज लगाते हैं, कितनी रात है।

तभी शिवालय में घंटी बज उठी––टन्-टन्-टन्-टन्। रोज की चिरपरिचित घंटी। रोज एक-सी आवाज। सारे गांव वाले कहते हैं––सौंकार त्याड्ज्यू को खुद तो नींद आती नहीं। सारे गाँववालों की नींद भी हराम कर रखी है। ऊपर से मन्तर-तन्तर अलग––ओम् हरिहरि, ओम् विष्णु-विष्णु।.........

अब उजाला होने ही वाला है। सौंकार त्याड्ज्यू तो शिवालय में पूजा-पाठ करने लग गए हैं। लगता है, नहा लिया है उन्होंने। सोचते ही, धनुवा ने गागर नीचे रख दी। लमखेत में जाकर, बालों में हाथ लगाकर परखने लगा कि बालें वास्तव में इतनी ही बड़ी हो रही हैं या वर्षों से अच्छी बालें देखने की तृष्णा से आकुल मेरी आंखें तो धोखा नहीं दे रही हैं?

आंख से जरूर कम देखता हूं। पर इतनी कम नहीं, रे धनुवा, वह स्वयं ही अपने से कहने लगा। उसने गागर उठा ली और मुड़मुड़ कर लमखेत की बालों को देखते हुए नाले को चलने लगा। सोचने लगा––लमखेत के गेहूं के पौधों के आसार पहले भी ऐसे ही दिखाई दे रहे थे। मंसीर लगने पर गेहूं बोये थे। पूस के महीने में ही पौधे बहुत अच्छे हो आये थे। लेकिन इतनी जल्दी, याने चैत के शुरू में ही, इतनी लंबी-लंबी बालें निकल आयेंगी, यह आशा मुझे नहीं थी। मुझे क्या, किसी को भी हो ही नहीं सकती थी। हो सकता है, बारिश होने के कारण बालें जल्दी निकल आई हों।....हां, बारिश के कारण ही। नहीं तो केवल आठ दिन में ही ऐसी बालें न आ पातीं। पर सभी खेतों को धूप-बरखा, हवा एक-सी ही मिलती है। अकेले लमखेत को तो नहीं। सौंकार त्याड्ज्यू ने खाद भी अधिक नहीं डाली थी इस खेत में। उनसे तो ज्यादा खाद मैंने डाली थी, अपने खेतों में।

दो-चार ही कदम चल पाया था कि पांव सहसा रुक गए। उसकी तो इच्छा हो रही थी, यहीं पर खड़ा रहूं। लमखेत की सुन्दर बालों को ही देखता रहूं। पर सौंकार त्याड्ज्यू के घर को लौटने की कल्पना करते ही, वह घबरा उठा था, क्योंकि, सौंकार त्याड्ज्यू उसे लमखेत पर खड़ा देख उससे कई बातें पूछ बैठते। हैं भी तो वे बहुत ही शक्की।

शिवालय में पुनः जोर-जोर से घण्टी बज उठी––टन्न्-टन्न्-टन्न्। साथ ही––ओम् हरहर हर हर महादेव––स्वर पश्चिमी हवा के साथ ही चारों ओर फैल गया।

वे तो अब आने ही वाले हैं। 'हर हर हर हर महादेव'––वे घर आते समय कहा करते हैं। ––सोचते ही धनुवा तेजी से नाले की ओर बढ़ा। रह-रहकर उसके मन में विचार उठ रहे थे––काश! मेरे खेतों में भी ऐसे ही गेहूं होते। काश! सौंकार थोड़ी देर बाद ही आते। जी-भर गेहूं की सुन्दर बालों को देख तो पाता।

धनुवा नहाया नहीं। गागर भरी, सिर पर उठाने में सुविधा होगी सोच, नाले की दीवाल पर रख दी। उठाने लगा। गागर बहुत बड़ी तो नहीं थी, पर, कई दिनों की बीमारी के कारण, आज उसके लिए बड़ी हो गई थी। सिर के बालों पर हाथ फेरा। चारों ओर देखने लगा। सहसा उसे पनुली की मां के शब्द स्मरण हो आये––जैसे तुम्हीं खिला-पिला रहे हो। ––उसकी आंखें डबडबा आईं। बुदबुदाया––तीन महीनों से मैं दूसरों की रोटी तोड़ता रहा। पर अब बिना काम किये एक टुकड़ा भी मुंह में नहीं डालूंगा। भावावेश में गागर उसने सिर पर रख ही ली। पर पांव लड़खड़ाने लगे। गागर का भार हल्का करने के लिए, अपने से ही कहने लगा––हाँ रे धनुवा, फिकर न कर, घर है ही कितनी दूर। जब गागर सिर पर रख ही ली, फिर भार से डरना कैसा?

चांदनी, रातभर की थकान के कारण फीकी पड़ चुकी थी। पेड़ रात की काली चादर को हटाकर, शीतल वायु के झोंकों के साथ अंगड़ाई लेने लगे थे। किन्तु दूर्णागिरि व भटकोट आदि पर्वत अभी भी बादलों को रजाई में पड़े थे। किंतु अबर रजाई का रंग बदल कर, धीरे-धीरे उजला होता जा रहा था। सामने पश्चिम की ओर छोटे-छोटे पहाड़ अलसाते-से अभी-भी काली चादर ही ओढ़े थे। केवल मुंह पर से चादर हटाने का प्रयत्न-सा कर रहे थे, वे भी। शायद सोच रहे हों––लोग क्या कहेंगे। जाने कितनी देर तक सोते रहते हैं। जाने कैसी अनोखी नींद है। सोये भी हमसे पहले ही थे। अब तो पशु-पक्षी सभी जाग गए हैं। और तो और छोटे-छोटे बच्चे तक उठने लग गए हैं, पर इतने बड़े पहाड़ अभी भी सोए पड़े हैं।

लमखेत के पास पहुंचते ही, धनुवा पुनः खड़ा हो गया। उसे इस बात का भी ध्यान नहीं

रहा कि सिर पर गागर है। अपलक गेहूं की बालों को ही देखता रहा। बालें आज शीतल वायु के झोंकों से डरकर व उजाला होने की उत्सुकता में एक-दूसरे से बातें करने के लिए अकुला रही थीं। कुछ ऐसे जैसे, सुबह छोटे-छोटे बच्चे नींद से उठकर इधर-उधर देखते हैं, आंख मींचते हुए। किसी को पास देख, रोते हुए उसीकी ओर बढ़ते हैं। ताकि वह उठाकर गोद में ले ले। प्यार करे और चुप कराये।...अपने खेत के गेहूं की बालों को देखते ही, उसकी भौंहों में निराशा का तनाव बढ़ आया।

गागर चाख (बैठक के कमरे) में रख दीं और छज्जे पर आकर, बैठ गया। उसका दम फूल आया था और वह उखड़ी-उखड़ी सांसें लेने लगा था। पनुली की ईजा का भी नाले जाने का समय हो आया था। चाख में भरी गागर देखते ही, उसे यह समझते देर नहीं लगी कि धनुवा पानी ले आया है। सतृष्ण-नेत्रों से उसने धनुवा को देखा। उसकी पलकें गीली हो आईं। एक-दो क्षण धनुवा को देखती रही। मानो वह अपने जैसे तुम्हीं खिला-पिला रहे हो—शब्दों पर क्षमा मांगना चाहती हो और कहना चाहती हो—जाने उस समय मेरे मुंह से कैसे निकल गया। परिवार में तो यह होता ही है। यों सभी एक-दूसरे को खिलाते हैं, यों कोई किसी को नहीं खिलाता। यदि खिलाता भी है तो अपना कर्त्तव्य ही निभाता है। किसी के ऊपर अहसान नहीं करता। तुम तो मुझे वर्षों से खिला-पिला रहे हो।

पक्षी रात-भर के विश्राम के कारण ताजगी अनुभव कर रहे थे। कभी एक पेड़ से उड़ते, कभी दूसरे पर। मानो नये दिन के कार्यक्रम को निश्चित करना चाहते हों और यह सोचकर चिंतित हों कि आज का दिन कैसे कटेगा। आज के खाने की क्या व्यवस्था होगी? आदमी तो कई दिनों की व्यवस्था किये रहता है, मगर हमारे पास तो ऐसी कोई व्यवस्था नहीं।

पनुली की ईजा नाले को जा चुकी थी। तभी एक कौवा आकर आम के पेड़ पर बैठा—का..का...का...।

—भैय्या कौवे, आवाज लगाकर किसी को बुला नहीं। मैं उसका सत्कार कहां कर सकता हूं। धनुवा ने कौवे को घूरकर देखते हुए कहा। सहसा कौवा उड़कर गांव की ओर चला गया। शायद, किसी ओर को अतिथि के आने की सूचना देना चाहता हो। धनुवा पूर्ववत् आम के पेड़ों को देखता ही रहा। उसे वे दिन याद हो आये, जब उसने पेड़ लगाये थे। कितनी तमन्ना थी, आम के पेड़ों की उसके मन में। आज बौर से लदे पेड़ उसे भले लगने लगे। सोचने लगा—पिछले साल आम कम आये थे। इस बार जरूर अधिक आएंगे। हर तीसरे साल आम अच्छे फलते हैं। पूरे सवा सौ से भी अधिक रुपए मिलेंगे। चार-पांच महीनों का नमक-तेल का खर्चा भी चल जाएगा। काश, ऐसेही मेरे और भी आम के पेड़ होते।.. सहसा उसे पुनः लमखेत के गेहूं की बालों की याद हो आई। सिर के बालों पर हाथ फेरते हुए, उसने आम के पेड़ों पर से नजर हटा ली। चाख की एक-एक चीज को देखने लगा।

चाख में गागर के पास ही दो लोटियां रखी थीं। दूसरे कोने में पच्चीस वर्ष पुराना कम्बल व गुदड़ी (गद्दा) रखी हुई थी। तीसरे व चौथे कोने में कुछ भी नहीं था। वह खीझ उठा। छत को देखने लगा। छत, बल्लियां व उसमें जमी धुंवास की काली-काली परतें उसकी आंखों की उजास को धूमिल करने लगीं। वह कुछ ऐसा अनुभव करने लगा, जैसे छत पर अभी धुंवास की काली-काली परतें की तरह उसके अतीत की परतों—पर परतें हैं, जो उसे चैन तक नहीं लेने देती हैं। पांव में चुभे कांटे की तरह उसके हृदय को हमेशा पीड़ित किये रहती है।.. चाय का ध्यान आते ही धनुवा निराशा भरे स्वर में आवाज लगाने लगा—हं वे, पनुली की ईजा। चहा की टाप लगी है। जरा चहा बना तो।

चाय पीने से जैसे उसका दुःख कुछ कम हो जाता हो या चाय के गरम घूंटों से उसके मन पर लगी धुंवास धुल जाती हो और वह कुछ ताजगी अनुभव करता हो। चाय के नशे के कारण।

पनुली की ईजा नाले गई थी। पनुली भैंस दुह रही थी। घर पर केवल सेरु ही था, जो अभी तक सोया हुआ ही था। धनुवा कुछ समय तक प्रश्न भरी आंखों से उसे देखता रहा। उसकी भौंहें तन आईं। उसके मन में विचार आया—सेरु को उठा दे। दोपहर हो आई अभी तक सोया ही है। काम-धाम कुछ करता नहीं। सोया रहता है। साला! खाना चाहिए सा को। —किंतु पनुली की ईजा के शब्दों की या आते ही, एक गहरी निश्वास लेकर रह गया। एकटक सोये सेरु को देखता रहा। कुछ ऐ जैसे अन्दर ही अन्दर क्रोध की ज्वाला धध रही हो। पर, चुप रहने को विवशता जैसे होंठ को सिए दे रही हो।

आग जलाने के लिए उसने दियासला ढूंढ़ी, पर उसे मिलो ही नहीं। उल्टे पा लौटकर वह छज्जे पर बैठ गया। —को घर में चीजें रखी भी कहां रहती हैं। मुझे तो ज भी किसी चीज की जरूरत पड़ती है। मिलती ही नहीं। अजीब हालत है। —कहते हुए, व गांव की ओर देखने लगा।

गांव का जो भाग धनुवा के छज्जे से दिखा देता है, वहां सभी उसो को बिरादरी के रह हैं। कुल लगाकर छोटे-छोटे मकान सोलह-सत्र ही हैं, वहां। दस-बारह वर्ष पहले वह भी व रहता था। पांच-छह मकानों के बीच वा मकान में रहना उसे ठीक नहीं लगता था कई वर्षों से वह सोच रहा था—कहीं पर ए छोटा-सा मकान बनाऊं। स्वयं मकान बना जानने के कारण तो उसकी इच्छा क्षण-प्रतिक्ष बढ़ती ही जाती थी। अड़ोस-पड़ोस वाले मन-मुटाव हो जाने के कारण उसकी इच्छा औ भी अधिक हो गई थी।...

गांव में सभी उठ गए थे, क्योंकि सभी घ से लच्छे बनाता धुंवा उठ रहा था, जो सम्मिलि होकर बहुत ऊंचाई तक उठता और बादलों रूप धारण कर सारे गांव में छा जाता। के घेरे को देखने से लग रहा था—यह कोई नहीं, बल्कि किसी फैक्ट्री के पास वाला इला है, जहां दिशा खुलते ही मशीनें चलने लगती और वास्तव में, कलकल निनाद करती नदी की ध्वनि मशीनों की आवाज के समान लगती थी, जो बढ़ते दिन के कोलाहल में धी धीरे कम हो जाती है।

ब्राह्मण व जिमदारों (क्षत्री) के शिल्पकारों के घरों से अधिक ऊंचाई पर उनके घरों का धुंवा और भी ऊंचाई तक धनुवा अपलक धुंवे को देखता रहा। उसे जैसे धुंवा भी, अपनी श्रेष्ठता को समझता ब्राह्मण व जिमदारों के घरों का धुंवां यह है कि उसे शूद्रों के घरों के धूंवे से कहीं ऊपर उठना चाहिए; क्योंकि ब्राह्मणों

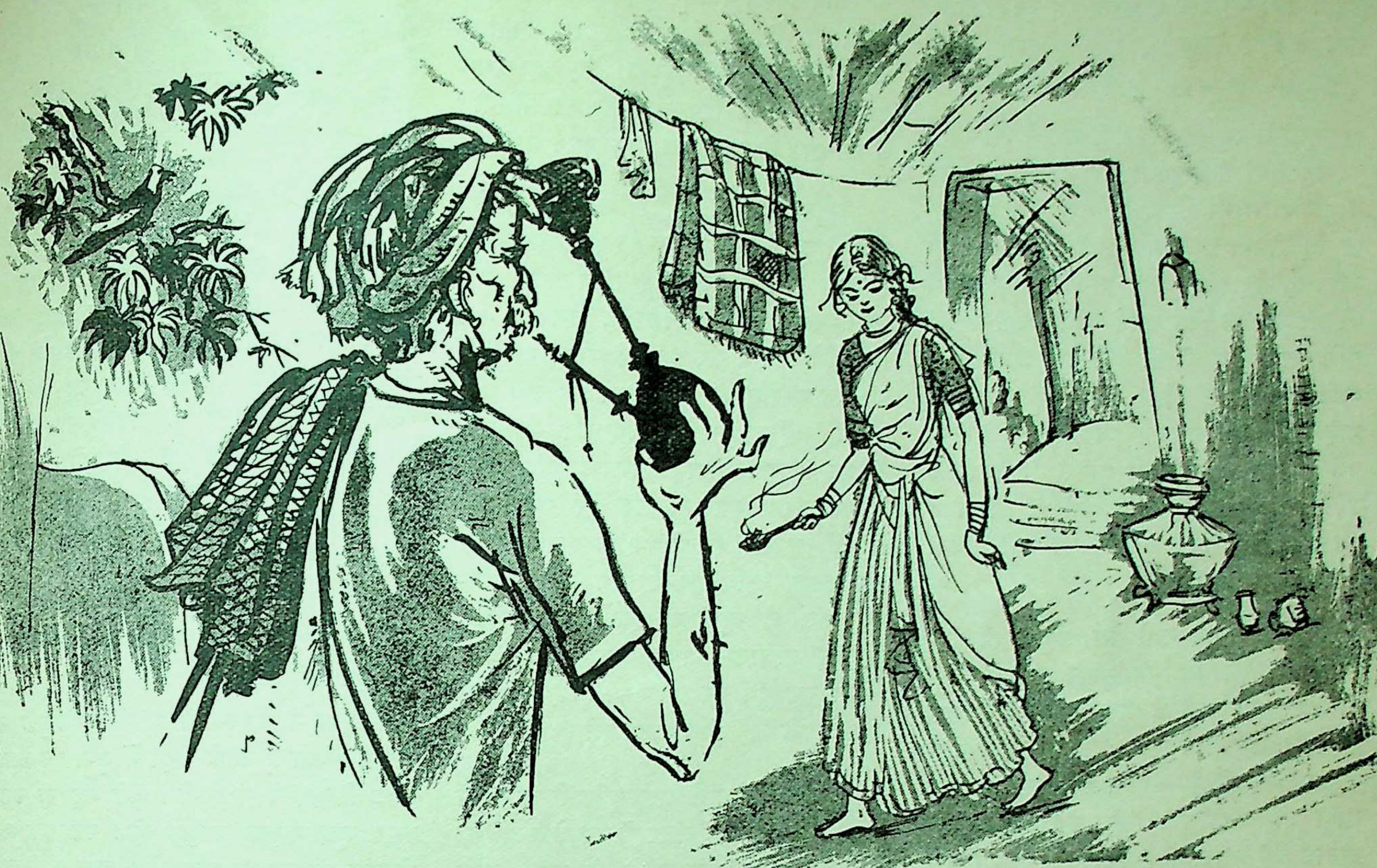

तभी उसे पास ही आग लाती पनुली दिखाई दी

जिमदारों को शूद्रों से ऊंचे स्थान पर रहने का अधिकार है। कई युगों से मिला हुआ है। शूद्रों के घरों का धुंवा कभी भी हमारी बराबरी नहीं कर सकता, यदि बराबरी करने लगे तो युगों से चली आ रही हमारी सभ्यता व संस्कृति का अन्त हो जाएगा। वह भी ऐसी सभ्यता व संस्कृति, जिसे दूसरी सभ्यता चाहते हुए भी समाप्त न कर सकी।

थोकदार साहब के यहाँ से क्यों न आग ले आऊँ। सोचते ही, धनुवा ने पास ही से हुक्का उठाया। चलना ही चाहता था कि मन में विचार आया कहीं थोकदार साहब घर आये न हों। घर पर होने पर तो वे जरूर कुछ-न कुछ काम बता देंगे।... वह खड़ा ही रह गया। तभी उसे पास ही आग लाती पनुली दिखाई दी। वह समझ गया—घर में दियासलाई है ही नहीं। इसीलिए यह गाँव से आग माँगकर ला रही है। फिर वह अपनी जवान होती चली जा रही बेटी पनुली को देखता रह गया।

पनुली अब काफी सयानी लगने लग गई है। उम्र भी तो दिन-पर-दिन बढ़ती जा रही है। धनुवा कई दिनों से उसकी शादी करने की बात सोच रहा है। पर, कर नहीं सकता है, अपनी गरीबी के कारण। वह हमेशा यही सोचकर रह जाता है—जाने इस बुढापे में क्या-क्या देखना है। घर में कुंवारी लड़की है। जमाना बुरा है। लोगों की नजरें खराब हो गई हैं। भगवान् ही मालिक है। सारी बातें सोचते-सोचते वह फटी-फटी आँखों से आसमान की ओर देखने लगा।

आसमान में उड़ते मल्याओं का झुण्ड भटकोट पहाड़ की ओर जा रहा था। सूर्य की किरणें अधिक ऊँचाई पर न होने के कारण सीधे उनके पंखों पर पड़ रही थीं। जिसके कारण पंख सोने के-से लग रहे थे, नीलाकाश में चमकते व लुभावने। दूर जूहों पक्षी का करुण स्वर सुनाई दे रहा था——जुंहो..जुंहो को जुंहो को को..। तथा उसीके साथ एक दूसरे पक्षी का स्वर सुनाई दे रहा था:—भो..भो.भो...भो। मानो जूंहो पक्षी अपनी नई सास प्रकृति से अपने पीहर जाने की अनुमति मांग रही हो और उसकी सास उससे झिड़क कर कह रही हो—कल..कल...कह जो दिया आज नहीं कल...चली जाना। —लेकिन, वह जाने वाला कल कभी भी न आ पा रहा हो।..

धनुवा की आंखें भर आई। उसे जूंहो पक्षी वाली लोककथा याद हो आई। जिसे उसने बचपन में सुना था कि—एक नवविवाहिता हमेशा अपनी सास से मायके जाने को कहती, पर सास टाल देती। इसी तरह वर्षों बीत गए। उसे मायके की याद हमेशा सताया करती। भाई से मिलने की अगाध इच्छा थी उसके मन में। वर्षों तक भाई भी उसके पास नहीं आया। एक बार आया तो वह फूली नहीं समाई। सास ने दूसरे ही दिन भाई के साथ मायके जाने की अनुमति दे दी। रात-भर वह मायके जाने के अनेक स्वप्न संजोती रही, पर दूसरा दिन उसके लिए और भी करुण दिन था। भाई को रात में सांप काट गया था। भाई को मृत्यु का पता चलते ही, वह बेहोश हो गई। बेहोश भी ऐसी हुई कि फिर हमेशा के लिए चल बसी। मायके फिर भी न जा पाई। कहते हैं, तबसे उसकी आत्मा पक्षी

योनि में चली गई और इसीलिए वह हमेशा पीहर जाने के लिए बेताब रहती है—"जूंहो, जूंहो" (जाऊं हो, जाऊं हो?) करती है।

पनुली अन्दर जाकर चूल्हा जलाने लग गई। पर धनुवा आंगन में पूर्ववत् खड़ा ही रहा। अतीत व धूमिल भविष्य की परतों के बीच दबा हुआ-सा वह सोचता रह गया—जंहो के बारे में कहा जाता है, वह कोई अछूत थी। तो क्या पनुली को भी ऐसे ही दिन देखने पड़ेंगे। क्या उसकी अभिशप्त आत्मा को भी जूंहों जैसी किसी पक्षी योनि में जन्म लेना पड़ेगा. . . .नहीं, नहीं. . . . चाहे कुछ भी मुझे करना पड़े, मैं उसकी शादी किसी भले आदमी से करूँगा। हमारी बिरादरी के कई लोग लड़कियों के पैसे लेते हैं, लेकिन मैं एक पैसा नहीं लूंगा, मगर किसी भले आदमी से शादी करूँगा।

चूल्हे पर चाय रखी देख, पनुली की ईजा ने संतोष की साँस ली। फटी-फटी आंखों से पनुली को देखते हुए चूल्हे के पास ही बैठ गई। कुछ इस तरह, जैसे अपने मूक अभिनय से वह पनुली से पूछना चाहती हो—खाना क्या बनाऊं। आज खाना भी जल्दी बनाना है। दूध लियानौले बाजार देने जाना है, उन्हें। . . .एक-दो क्षण तक वह पूर्ववत् बैठी रही। तभी उसे याद हो आया—आज झुडरा भी कूटा हुआ नहीं है। भात कैसे बनेगा? पर उसकी इच्छा वहाँ से उठने की हो ही नहीं रही थी। वह तो चाहती थी, किसी बहाने धनुवा से बातें करूँ। और अपने कटु-शब्दों के लिए क्षमा माँगूं। किंतु, उसे साहस ही नहीं हो पा रहा था।

चाय उबलने में अभी कुछ देर थी। इसलिए पनुली की ईजा ने सोचा, तब तक क्यों न ऊखल साफ कर लूं। झुड़रा लिए वह ऊखल पर चली आई। पिरूल (चीड़ की पत्तियों) से बने झाड़ू से वह ऊखल साफ करन लगी।

धनुवा को चाय की 'टाप' तो लगी थी ही। वैसे भी उसके लिए अधिक प्रतीक्षा करना कठिन हो गया था। पनुली की ईजा का झुडरा लिए ऊखल पर जाना, उसे बहुत ही अखरा। उसे लगा जैसे काम न कर सकने के कारण वह दिन-पर-दिन उपहास का पात्र बनता जा रहा है। उसकी भौंहें तन आईं। सोचने लगा—आजतक मैंने इन्हें पाला-पोसा। आजकल जरा मेरी तबियत खराब क्या हुई कि मेरी कुछ वकत ही नहीं रह गई। उसके मन की परतों के बीच दबा उसका आत्म-सम्मान जाग उठा। घृणा-भरी आँखों से पनुली की ईजा की ओर देखते हुए वह झल्लाया—आधी रात से चहा-चहा चिल्ला रहा हूं। पर सुने कौन? एक गिलास चहा का भी नहीं मिल पाता मुझे।

पनुली की ईजा ने कातर-दृष्टि से धनुवा को देखा। वह धनुवा के अंतर में उमड़ते भावों को ताड़ गई। बिना कुछ बोले ही अन्दर चली गई। उसके चलने से लग रहा था, जैसे वह धनुवा से क्षमा माँगना चाहती है, और कहना चाहती है—जाने मुझे उस समय क्या हो गया। मैं अपना आपा खो बैठी। नहीं तो मैंने आज तक कभी भी तुम्हारे खिलाफ एक शब्द नहीं कहा था, कल ही क्यों कहती। मुझे माफ कर दो। किन्तु, उसे उचित शब्द ही नहीं मिल पा रहे थे या कि बोलने का साहस ही नहीं जुटा पा रही थी। और जैसे वह आंखों-ही-आंखों में इशारे से कहना चाहती हो—मैं क्या कर सकती हूँ। काम न करने से कैसे मिलेगा खाना? कहां से मिलेगा?

चाय उबल आई थी। पनुली ने चाय नीचे रखदी, और उसकी मां गुड़ ढूंढ़ने लगी। पर गुड़ तो था ही नहीं। वह गहरी निश्वास भर कर रह गई। सोचती रही—अब उन्हें बिना गुड़ की चाय कैसे दी जाए? सहसा उसे याद आया—चार-पांच दिन पहले जब वह किसी के यहां काम करने गई थी तो चाय के साथ उन्होंने उसे मिसरी दी थी। सेरु को दूंगी, सोचकर वह उस मिसरी को बचा लाई थी, जो अभी तक रखी हुई थी। मिसरी की याद आते ही, उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। मिसरी के चार टुकड़े किये। एक टुकड़ा व चाय का गिलास लिए वह बाहर चली आई। बिना कुछ बोले ही धनुवा को दे दिया।

धनुवा ने प्रश्न-भरी आंखों से पनुली की ईजा को देखा। उसके चेहरे में घृणा की रेखाएं स्पष्ट दिखाई दे रही थीं। जैसे वह भी उससे बहुत कुछ कहना चाहता हो। पर क्या कहूँ सोचकर, ही चुप रह जाता हो। चाय का गिलास हाथ में लेकर पनुली की ईजा के चेहरे पर से नजर हटाकर, वह बाहर को देखने लगा, चाय की चुस्कियां लेते हुए—और उसे लगा, जैसे गरम चाय की ऊपरी परतों पर लमखेत की गेहूँ की बालों का प्रतिबिम्ब उभरता चला आ रहा है—उभरता चला आ रहा है, उभरता चला आ रहा है।

मिलन और विरह

-एक तात्त्विक विवेचन-

—प्रा० सद्गुरुशरण अवस्थी

मिलन और विरह विश्व का शाश्वत संगीत है। आकर्षण और विकर्षण संसार का अमर स्वर है। मिलन की प्रेरणा ही से परिमाणुओं में आकर्षण उभर आता है और वे संघात करते हैं। विश्व में रूपों का व्यक्तीकरण होता है। विरह की दीक्षा में विकर्षण आगे आ जाता है, संघात छिपता है और रूपों का विलय होने लगता है। मिलन, सृष्टि की व्याख्या है, विरह, प्रलय की पुलक है। मिलन, दो से एक की ओर बढ़ता है परन्तु अनेक की सृष्टि करता है। विरह अनेक से घबड़ाता है, एक की ही उपासना करता है। मिलन के उत्सर्ग में विस्तार है, विरह की आराधना में एकांतता है। मिलन में थकावट है और विलगाव का अंतरहित अभिशाप है। विरह में लगन है और मिलन की स्पष्ट आकांक्षा है। मिलन के विस्तार में ध्वंस का वरदान है; विरह की आराधना में निर्माण का विहान है। मिलन के परिरम्भ में काम है, प्रेम है और संसार है, विरह के क्रोड़ में परछाहीं है, क्रोड़ है और क्षितिज है। मिलन में पार्थिव मिठास है विरह में अपार्थिव जगमगाहट है। मिलन वास्तविकता से मिलता है और ठोस में रमण करता है। विरह अवास्तविकता को यथार्थ बनाकर खेलना चाहता है। मिलन, भूमि से बँधा है। विरह स्वप्न में विचरता है। संसार के स्वादों का दूसरा नाम मिलन है, संसार की प्रतिक्रिया का दूसरा नाम विरह है। अतृप्त तृप्ति का सुख मिलन का सर्वस्व है। अनागत सुख का साक्षात्कार विरह की आकांक्षा है। मिलन द्वैत की अपेक्षा करता है और संसार में विचरता है; विरह द्वैत की असंभावना में प्राण खींचता है और कल्पना से खेलता है। परिमाणुओं की संघातप्रियता को आकर्षण कहा है; यही मिलन की जन्मभूमि है; परिमाणुओं की विघटनप्रियता को विकर्षण कहा है। यही विरह की प्रलय है। सृष्टि में सृजन और ध्वंस का आवर्त्तन है; संसार में मिलन और विरह का परिवर्त्तन है।

परन्तु वह कौनसी बात है, जिसके कारण किसी के लिए हमारी भुजाएँ फैल जाती हैं, नेत्र हँसने लगते हैं, कान वाणी की मिठास से तृप्त नहीं होते, सुषुमा का सब ओर क्षरण होने लगता है और फिर वह कौनसी ग्रंथि है, जिसके कारण हम किसी से मुंह फेर लेते हैं, नेत्र अपने में समा जाते हैं, कान बंद हो जाना पसंद करते हैं और स्वासावरोध का वातावरण स्थूल हो उठता है। "बिछुरत एक प्राण हरि लेही, मिलत एक दारुण दुख देही" मिलन में यह दुख कैसा? बिछुड़ते समय प्राण का जाना तो समझ में आता है। हम संसार की गति में योग देने के लिए जीवन धारण करते हैं। यही विकास की टीका है। विश्वात्मा के आकार ग्रहण करने की चेष्टा का नाम जीवन है। यही चेष्टा विकास की प्रेरणा है। सामंजस्य का व्यवहार पक्ष ही विकास है। इसी से गति को चिकनापन मिलता है। खुरखुराहट पाप है। उसका कारण अहंकार है। विश्व एक महान् गत्यात्मक पिंड है। इस विराट् स्वरूप में सभी अंगों की सार्थकता है। एक महान् यंत्र की प्रत्येक कील अपने स्थान पर उपयोगी और आवश्यक है, परन्तु उसका पुरुषार्थ महान् यंत्र का कुशल संचालन में योग देना है, खुरखुराहट उत्पन्न करना नहीं। खुरखुराहट अहंकार है, यही पाप है। ऐसे ही व्यक्ति से संसार में पाप होते हैं और विराट् को कष्ट पहुँचता है, समाज दूषित होता है और प्रत्येक व्यक्ति ऐसे व्यक्ति के संपर्क में आना पसंद नहीं करेगा। मिलन के लिए तो यह शत्रु है ही, विरह की पवित्रता भी अपने को उसके लिए कलुषित करना पसंद न करेगी।

शुद्ध से शुद्ध मिलन की प्रेरणा में वासना काम करती है। विरह में भी मिलन की तीव्रता रहती है, परन्तु मिलन को पनपानेवाला विरह सच्चा विरह नहीं। वह तो साहित्यशास्त्रियों का वियोग-शृंगार है। सच्चा विरह करुण रस है। उसमें गति है, गन्तव्य नहीं; उसमें आक्रोश है, केन्द्र नहीं। उसमें स्थिरता है तपन और जलन नहीं। पके हुए करुण रस को ही विरह कहते हैं। इसके अभ्यास से ही परिमाणुओं के पुञ्ज मानस में विघात की स्पृहा उत्पन्न होती है। ऐसा विघात जो फिर संघात न करे। यही तो मुक्ति है। किसी भी स्तूप के परिमाणुओं से उनका राग ऋण कर लेना ही तो सच्ची मुक्ति है। तभी तो वे न संघात करेंगे और न रूप धारण करेंगे। ससीम को असीम में यही विलय होने का साधन है। सामूहिक रूप से इसकी प्राप्ति प्रलय है; एकांत रूप से इसकी उपलब्धि निर्वाण है। जब तक विरह में मिलन छिपा है, वह भौतिक है; वह राग-द्वेष का आखेट है, वह बार-बार जन्म लेने और बार-बार मरने का खेल खेलता है; संसार के कष्टों को झेलता है। यहीं जगत् में सना रहता है। वह उड़ नहीं सकता; उसके लिए राग-द्वेष-विहीन सच्ची साधना संभव नहीं; सच्चे विरही के लिए प्रिय भोग्य नहीं है, वह भगवान है, आकार में बँधा नहीं वह निराकार है; तभी तो वह कह उठता है—

> "मोंहि भोग सों काज न बारी,
> सौंह दीठि को चाह न हारी।

उसके मिलन का सच्चा रूप तो परमतत्त्व में समा जाना है, अनेक का आकर्षण और भौतिक रूप व्यापारों का ममत्व उसे छोड़ देते हैं। विरह के अभ्यास में ज्ञान का उदय होता है। वह भौतिक माण्डों के दाव-पेंच से ऊपर उठ जाता है। निस्सीम जानकारी उसे क्रोड़ में ले लेती है; उसकी कृपा की वर्षा होने लगती है; वह स्वयं ज्ञानमय हो जाता है—

> "जानत तुमहिं तुमहि होइ जाई"

पर यह तभी सम्भव है, जब ससीम की योग्यता निस्सीम को द्रवित कर सके—

> "सो जाने जेहि देव जनाई"

विरह में मिलन सुख तभी तो होता है गोस्वामीजी ने विरही को अभ्यास की दीक्षा कैसी दी है—

> "नाम पाहरू दिवस निसि,
> ध्यान तुम्हार कपाट
> लोचन निज पद जंत्रित,
> प्राण जाहिं केहि बाट"

सच्चे विरही का प्रेम तत्व परमात्मा की धरोहर है; यह वह सम्बल है, जो क्षीण नहीं होता—

"तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा,
जानत प्रिया एक मन मोरा ।
सो मन सदा रहत तोहि पाहीं,
जानु प्रेम रस इतनेहि पाहीं।"

यह अनन्य उपासना विरह की पुण्य प्रतिभा है । आत्म नकार में ही परमात्मा दिखाई देता है । गालिब कहते हैं—

"बीरां किया जब आपको, बस्ती नजर पड़ी
जब आप नेस्त हम हुए, हस्ती नजर पड़ी ।"

विरह की यही सबसे बड़ी साधना है । इसी शरीर में यह सम्भव है और मिलन की परिपाटी इसमें सहायता देती है । कबीर कहते हैं—

"मूये पीछे मत मिलो, कहै कबीरा राम
लोहा माटी मिल गया, तब पारस केहि काम ।"

विरह की साधना और उसकी सफलता के लिए शरीर अमोघ अस्त्र है । संस्कृत कवि भवभूति विरह के उत्तम साथी प्रेम के लिए क्या कहते हैं—

अद्वैतं सुखदुखयोरनुगुणं सर्वास्ववास्थासु यद्
विश्रामो हृदयस्य यत्र जरसा अस्मिन्नहार्यो रसः
कालेनावरणत्ययात् परिणते यत् स्नेह सारे स्थितम्
भद्रं प्रेम सुभानुषस्य कथमप्येकं हितत् प्राप्यते।

कोई विरला उत्तम पुरुष ऐसा प्रेम प्राप्त कर सकता है, जो सुख-दुख में एक रस रहे, सभी परिस्थितियों में सम रहे, हृदय जहां शांति से टिक सके, बुढ़ापा जहाँ व्यवधान न बने, प्रतिक्षण जिसका रंग बढ़ता रहे । आप स्वयं इस श्लोक की मीमांसा करें । क्या यह ईश्वर के प्रेम से इतर किसी मानव के लिए सम्भव है ? यह भोग पर आधारित ही नहीं; यह विरह-मिलन की जलन से दूर है । जायसी कहते हैं—

"ना मैं सरग क चाहौं राजू
ना मोहि नरक सेति कछु काजू,
चाहौं ओहि कर दरसन पावा,
जेहि मोहि आनि प्रेम-पथ लावा ।"

सच्चे विरह में मृत पिंडों से कोई सरोकार नहीं रहता । उसमें तो चौबीसों घंटों का परमतत्त्व से मिलन ही मिलन रहता है; परन्तु शर्त यह है कि संसार न झांके—

"तुम मेरे पास होते हो गोया
जब कोई दूसरा नहीं होता ।"
—गालिब

यही एकांत साधना विरह का पवित्र रूप है, यही शांति की कुंजी है—

"कबिरा या जग आइके, कीन्हें बहु तक मिन्त्र
जिन दिल बाँधा एक से, ते सोये निश्चिंत ।"

अनन्योपासना से ही पत्थर में भगवान उभर आते हैं । सियाराम सारे संसार में दिखाई देने लगते हैं । भौतिक मिलन और शारीरिक भोग उसके समक्ष नीरस पड़ जाता है । वह भोग में आकार्णनमज्जित होकर भी विरह का ही आनंद लेता रहता है और अभ्यास करता है—

"लगती नहीं पलक से पलक,
वस्ल में भी आह !
आंखों को पड़ गया है मजा इंतजार का ।"

कबीरदास भी विरह के प्रति क्या कहते हैं—

"विरहा मुझसे यों कहे गाढ़ा पकड़ो मोहि,
प्रेमी के ही गोद में, मैं पहुँचाऊँ तोहि ।"

यह रोने और कराहनेवाला प्रेमी नहीं है; यह तो साक्षात् ईश्वर के ही लिए कहा गया है ।

संसार के मिलन की थकान, उसके आक्रोश से ही यह सच्चा विरह उत्पन्न होता है—

"सांझ भये दिन अथवा चकई दीन्हा रोय
चल चकवा वा देश को, जहाँ रैनि नहिं होय ।"

परन्तु वह विरही वैकुंठ के भोग से भी दूर भागता है—

"राम बुलावा भेजिया कबिरा दीन्हा रोय
जो सुख प्रेमी संग म सो बैकुण्ठ न होय "

यही अनन्य भक्ति है, जो भगवान को प्रेमी बना देती है । परन्तु इस प्रेमी के लिए विरह की साधना बड़ी कड़ी है—

"मांस गया पंजर रहा, ताकन लागे काग,
साहब अबहूं न आइयां मंद हमारे भाग ।"

एक बार विरह का स्वाद मिल जाने पर मिलन की भौतिकता स्वयं तिरोहित हो जाती है ।

"मन पंछी तब लग उड़े विषय वासना मांहि
विरह बाज की झपट में, जब लगि आयो नाहिं।"

विरह की अंतिम सफलता के विषय में संत प्रवर दरिया साहब लिखते हैं—

"प्रियतम को पति या लिखूं जो कहँ होय विदेश,
तन में, मन में, देह में, वाको कौन संदेश ।"

सूरदासजी का भी यही आशय है, जब कहते हैं—

"नाहिन रह्यो मन में ठौर
नंद-नंदन अछत कैसे आनिये उर और ?"

परन्तु यह परिस्थिति एक दिन में उपलब्ध नहीं होती । यह तो साधना का वरदान है, जिसमें 'अहम्' के पूर्ण लय करने की सतत चेष्टा होनी चाहिए । चाहे कबीर की भाँति यों कहें—

"जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु हैं, हम नाहिं,
प्रेम गली अति सांकरी, जा में द्वै न समाय ।"

चाहे जायसी के स्वर में स्वर मिलाकर यों कह उठें—

"बुंद समुद्र समान, यह अचरज कासों कहौं,
हेरनहार हिरान, मोहमद आपुहि आप में ।"

विरह का अंतिम वरदान तो परमात्मा को विरही बनाना है; तभी तो वह भक्त के पीछे-पीछे दौड़ेगा—

"आसिक मासुक ह्वै गया
इसक कहावै सोय ।"

मिलन और विरह के इस तत्त्व को आध्यात्म का सुख और जीवन का लक्ष्य समझकर ही आगे बढ़ना चाहिए ।

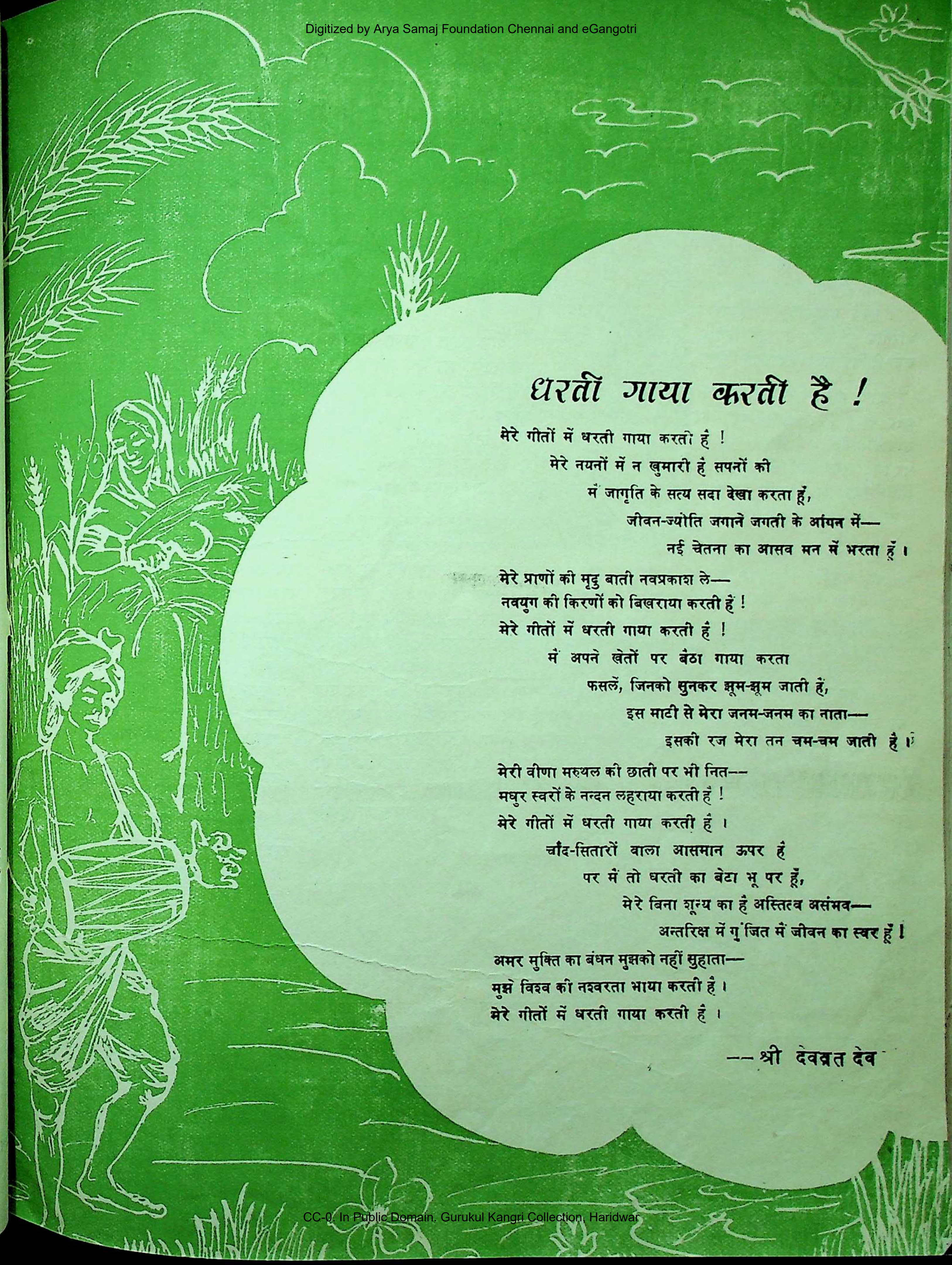

धरती गाया करती है !

मेरे गीतों में धरती गाया करती है !
मेरे नयनों में न खुमारी है सपनों की
मैं जागृति के सत्य सदा देखा करता हूं,
जीवन-ज्योति जगाने जगती के आंगन में—
नई चेतना का आसव मन में भरता हूं ।

मेरे प्राणों की मृदु बाती नवप्रकाश ले—
नवयुग की किरणों को बिखराया करती है !
मेरे गीतों में धरती गाया करती है !
मैं अपने खेतों पर बैठा गाया करता
फसलें, जिनको सुनकर झूम-झूम जाती हैं,
इस माटी से मेरा जनम-जनम का नाता—
इसकी रज मेरा तन चम-चम जाती है ।

मेरी वीणा मरुथल की छाती पर भी नित—
मधुर स्वरों के नन्दन लहराया करती है !
मेरे गीतों में धरती गाया करती है ।
चांद-सितारों वाला आसमान ऊपर है
पर मैं तो धरती का बेटा भू पर हूं,
मेरे बिना शून्य का है अस्तित्व असंभव—
अन्तरिक्ष में गुंजित मैं जीवन का स्वर हूं !

अमर मुक्ति का बंधन मुझको नहीं सुहाता—
मुझे विश्व की नश्वरता भाया करती है ।
मेरे गीतों में धरती गाया करती है ।

—श्री देवव्रत देव

प्राचीन भारतीय शैल स्तम्भों के — शीर्ष परगहे

—श्री गोपीचन्द श्रीनागर

एक सम्पूर्ण भारतीय प्राचीन शैल-स्तम्भ कला की पूर्ण अभिव्यक्ति और अप्रतिम निधि । इनके तरह-तरह के सुन्दर शीर्ष परगहे भारतीय मूर्तिकला के ऐसे सितारे हैं, जिनसे कला-क्षितिज सदैव प्रकाशवान रहता है ।

प्राप्त भारतीय स्तम्भों के शीर्ष परगहे बौद्ध और हिन्दू हैं । भगवान बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित और बौद्ध जीवन के महत्वपूर्ण स्थानों पर जिन प्रस्तर लाटों की उपलब्धि हुई है, उनके शीर्ष परगहों का दर्शन कर विश्व के कला मर्मज्ञ दांतों तले अंगुली दबाते हैं ।

अशोककालीन स्तंभों के शीर्ष अलंकरण की पशु प्रतिमाएँ पशु-जीवन को ऐसी प्रतिष्ठा प्रदान करती हैं, जो केवल बौद्ध धर्म द्वारा ही संभव थी। पशुओं को अहिंसा द्वारा अभयत्व प्रदान कर तथा उनकी मुख्य स्थानों पर प्रतिष्ठा कर, बौद्ध धर्म ने संसार के सामने पशुधन की कलापूर्ण व्याख्या की है । इन ललित पशु-मूर्तियों की स्थापना कमल, कलश या पीष्ठ पर की गई है। जीवनोपयोगी पशुओं का सम्मान पाशविक शक्ति पर धर्म की वरीयता, हिंसा पर अहिंसा की अंततोगत्वा विजय, यही इन स्तम्भों का सन्देश है।

प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहयान (५ वीं शती) ने एक सिंहीय परगहेवाले स्तम्भों (एक पटना के निकट तथा दूसरा सांकास्य में) तथा जेतवन संघाराम के दो स्तम्भों का जिक्र किया है, जिन पर धर्मचक्र और वैलयुक्त परगहे थे। कलकत्ते के राष्ट्रीय संग्रहालय के भरहुत कक्ष में संग्रहीत भरहुत स्तूप की वेदिका आदि में अनेक जातक कथाएँ उत्कीर्ण हैं। इस अद्भुत चित्रावलि में गज, धर्मचक्र और सिंहयुक्त शीर्ष-परगहोंवाले स्तम्भों के दर्शन होते हैं। इसी संग्रहालय में एक स्तम्भ के परगहे में दो मानवमुखी सिंह धर्मचक्र को उठाए दिखाए गए हैं। एक स्थान पर गरुड़ शीर्षवाले दण्ड को ले जाते हुए एक मानव का तक्षण हुआ है । एक स्तम्भ पर सूर्य देवता आसीन हैं ।

सारनाथ में प्राप्त चहार दीवारी के स्तम्भों पर धर्मचक्र युक्त स्तम्भों का अंकन मिलता है। इसी प्रकार सांची में भी जगह-जगह शैल-स्तम्भों का परगहा सहित आलेखन हुआ है । इसके अलावा सांची के तोरण द्वारों के खम्भों के सिरों पर बौने पुरुषों, खड़े हाथियों या सिंहमुखों का लोक-शैली में अलंकरण हुआ है ।

मथुरा संग्रहालय में एक स्तम्भ (सन् ३८० ई०) है, जिसके मस्तक पर त्रिशूल आलेखित है तथा नीचे लकुलीश की मूर्ति बनी है। यह चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय का है । श्री कृष्णदत्त वाजपेयी के अनुसार —"तत्कालीन मथुरा में शैवधर्म की विद्यमानता का इसके द्वारा प्रमाण मिलता है।" ('मथुरा' पृष्ठ २०)। इसी संग्रहालय में एक यज्ञीय स्तम्भ है, जिसका मस्तक मुड़ा हुआ है और उस पर एक फूलमाला उत्कीर्ण ह। यहां कुछ विशाल पत्थर के बौद्ध भिक्षापात्र तथा छत्र संग्रहीत हैं। ऐसा लगता है कि ये भी कभी स्तम्भों के परगहे स्वरूप रहे हैं। श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी की मान्यता है कि सोमनाथ के आदि मन्दिर के विशाल प्रांगण में बैल शीर्षवाले दो स्तम्भ थे ।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के आशुतोष संग्रहालय में ईसा पूर्व प्रथम शती के एक जैन आयागपट्ट (मथुरा में प्राप्त) की प्रतिकृति लगी है, जिसके दोनों किनारों पर दो स्तम्भ बने हैं और इन स्तम्भों पर चक्र और हाथी के शीर्ष परगहे हैं। इसी प्रकार का एक जैन आयागपट्ट लखनऊ के राजकीय संग्रहालय में है, जिस पर क्रमशः सिंह और धर्मचक्र उत्कीर्ण हैं।

शैल स्तम्भों पर कलामय अनुपम पशुमूर्तियों की स्थापना का श्रेय अशोक को मिलेगा। अशोक स्तम्भ के परगहों की कुछ पशु-मूर्तियां विश्व की अनमोल कलाकृतियां हैं। सारनाथ के चार सिंहोंवाला परगहा सर्वोत्तम है। मौर्यकालीन कलाकारों की जादूगरी की यह विलक्षण सिद्धि है । "सर्वोत्कृष्ट नमूनों में से एक, सारनाथ का यह सर्वविदित सिंह-परगहा पशु की प्रभावशाली वास्तविकता एवं गांभीर्य को प्रदर्शित करता है," (अजित मुखर्जी 'आर्ट ऑफ इण्डिया,' पृष्ठ १७) । यह भारतीय आदर्शों की पशु की वास्तविकता के साथ-साथ एक सशक्त अभिव्यक्ति है । "चार सजीव केसरी पीठ से पीठ मिलाए चारों दिशाओं की ओर मुंह किए दृढ़ता से बैठे हैं । उनकी आकृति भव्य, दर्शनीय और गौरवपूर्ण है, जिसमें कल्पना और वास्तविकता का बड़ा मधुर सम्मिश्रण है। उनके गठीले अंग-प्रत्यंग समविभक्त हैं और बड़ी सफाई से गढ़े गए हैं। न एक छैनी कम लगी है न अधिक। उनके फहराते हुए लहरदार केसर का एक-एक बाल बड़ी बारीकी और चारुता से दिखाया गया है, जो उनके सोन्दर्य को दूना कर देता है। चारों मूर्तियों में नपी हुई समानता है।

(राय कृष्णदास 'भारतीय मूर्तिकला पृष्ठ ४२)

इन सिंहों के नेत्रों में कभी मणियां जड़ रहती थीं। सिंहों के ऊपर धर्मचक्र प्रतिष्ठित था। श्री एन. जी. मजूमदार के अनुसार 'सम्पूर्ण सं जन जैसी कि उसकी यहां कल्पना की गई है पूरे भारतीय कलाक्षेत्र में अपने ढंग का अ जित है।' इसी प्रकार का एक गरगहा सांची में भी प्राप्त है. जो इसकी अनुकृति मात्र है और जिसमें मौलिकता की सजीवता का नित अभाव है। यह सारनाथवाले परगहे से ट नहीं ले सकता। वैसे इसका भी अलंकरण उ है। सर जान मार्शल जैसे यूनानवादी भी सिंहों के अंग-प्रत्यंग के अद्भुत आलेखन को दंग रह गए थे।

राज्य के लगभग ७०,००० गां
जनता योजनाबद्ध विकास के संदेश से
होकर अपना भाग्य अपने ही हाथों निर्मा
के लिए कटिबद्ध है । मुरैना जिले का
ग्राम भी इसी प्रकार का एक गांव है
निवासियों ने दृढ़ निश्चय और लगन से
रूप ही बदल दिया है । ७,५०० रुपये की
से बने इस आयुर्वेद चिकित्सालय तथा प्र
में ग्रामवासियों का योगदान ४,००० रुपये

★

घुसगवाँ की जनता शिक्षा की आवश्यकता को समझती है । ग्राम के बालक-बालिकाओं को नवनिर्मित प्राथमिक पाठशाला भवन में शिक्षा दी जाती है

★

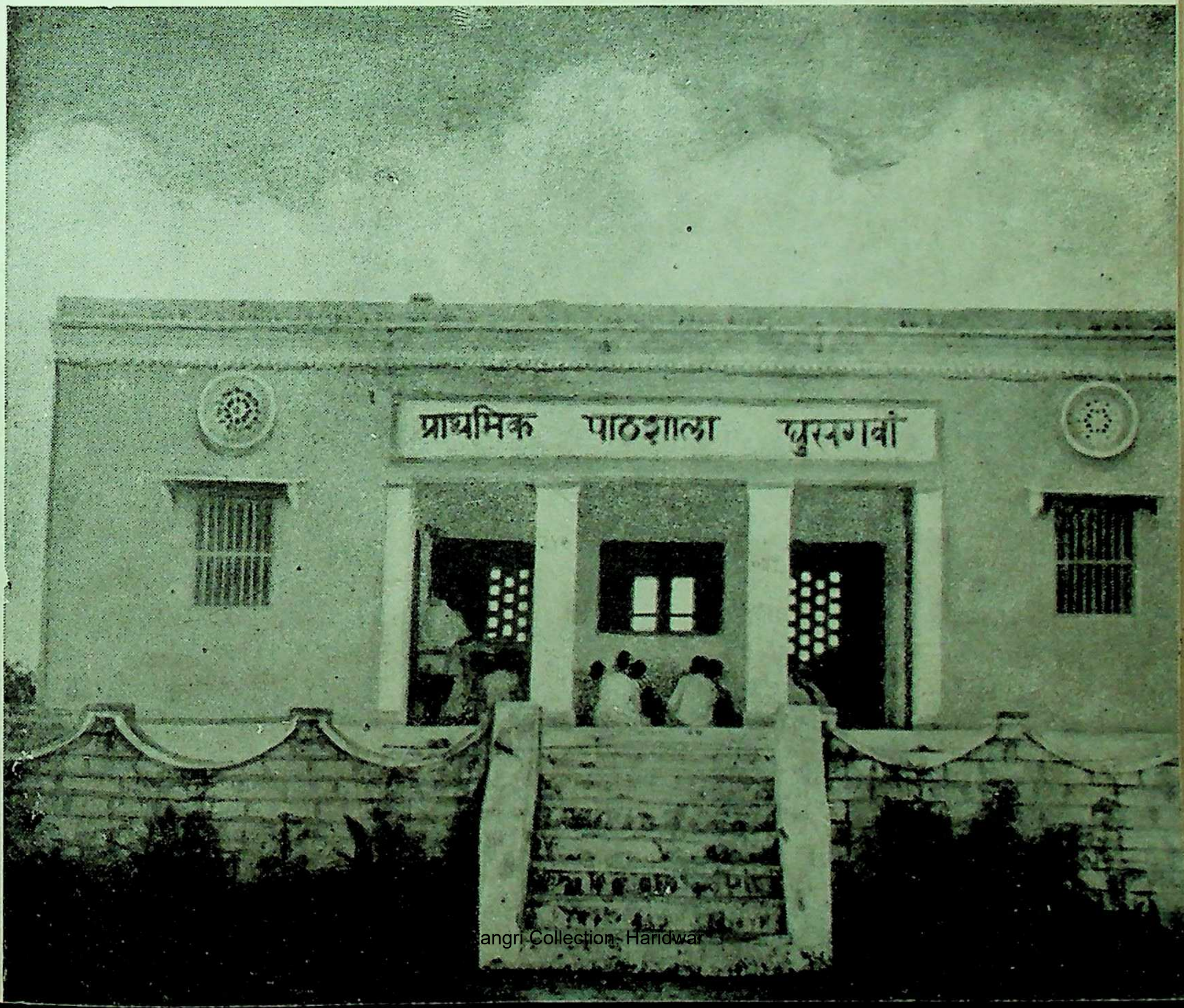

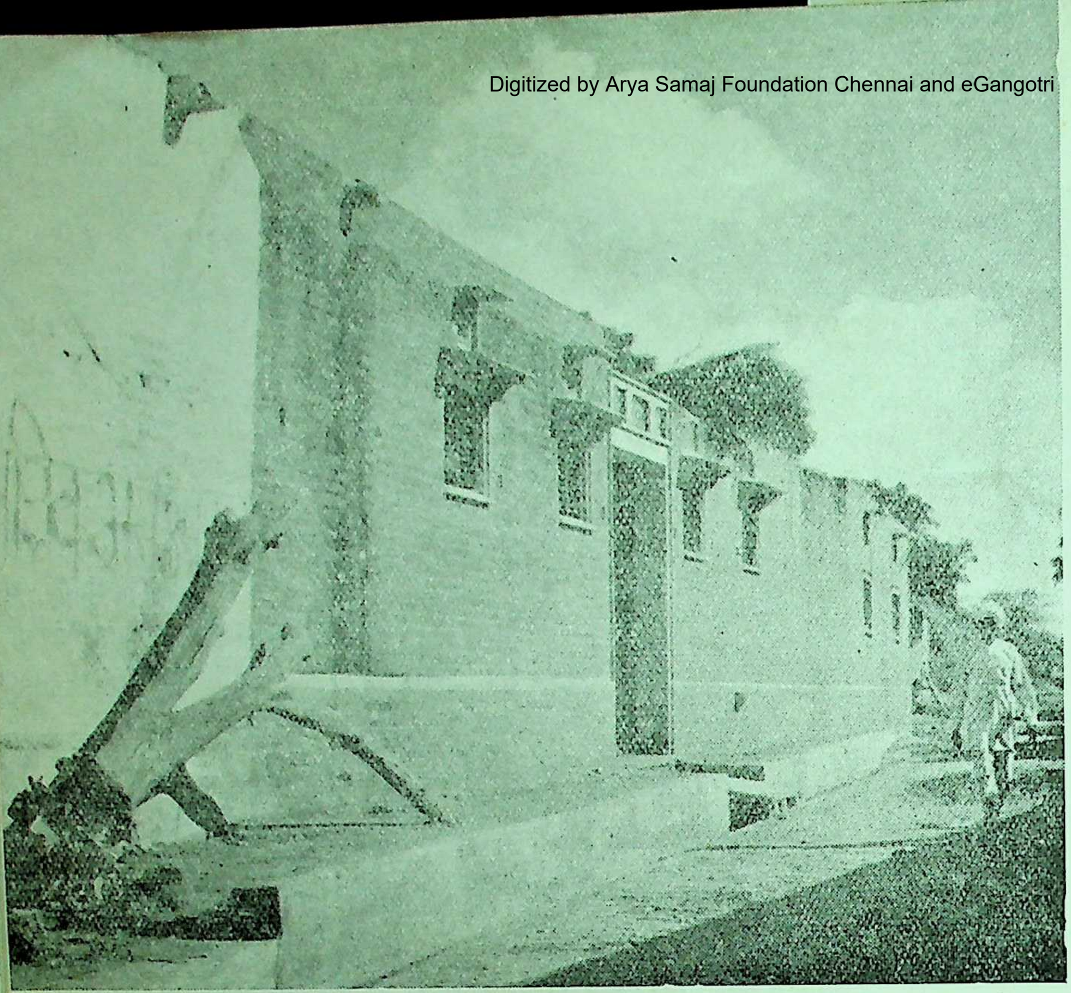

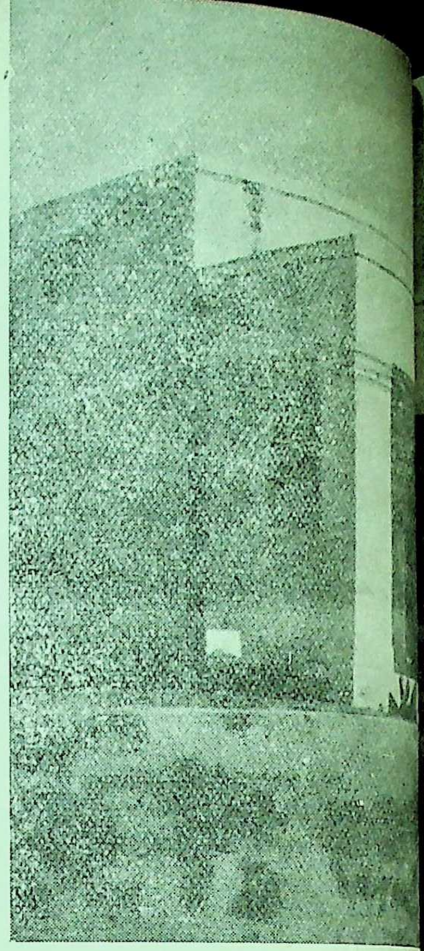

प्रगतिशील ग्राम की

★

हिनी ओर--

गाँव की जनता अपने ग्राम में नई चेतना लाने को सदैव उत्सुक रहती है। ग्राम सेवक के निर्मित निवास-स्थान, जिसके निर्माण का आधा व्यय ग्राम की जनता ने सहर्ष दिया

कारिता प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक है। घुसगवाँ के लोगों की सहकार्य-भावना का प्रतीक यह कारिता-भवन, जहाँ वे अपना खाद तथा बीज आदि सामूहिक रूप से संग्रह करते हैं

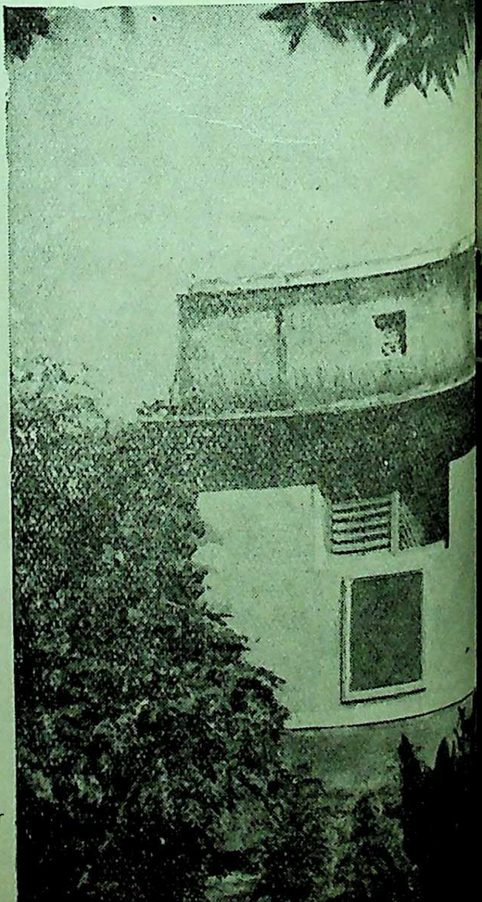

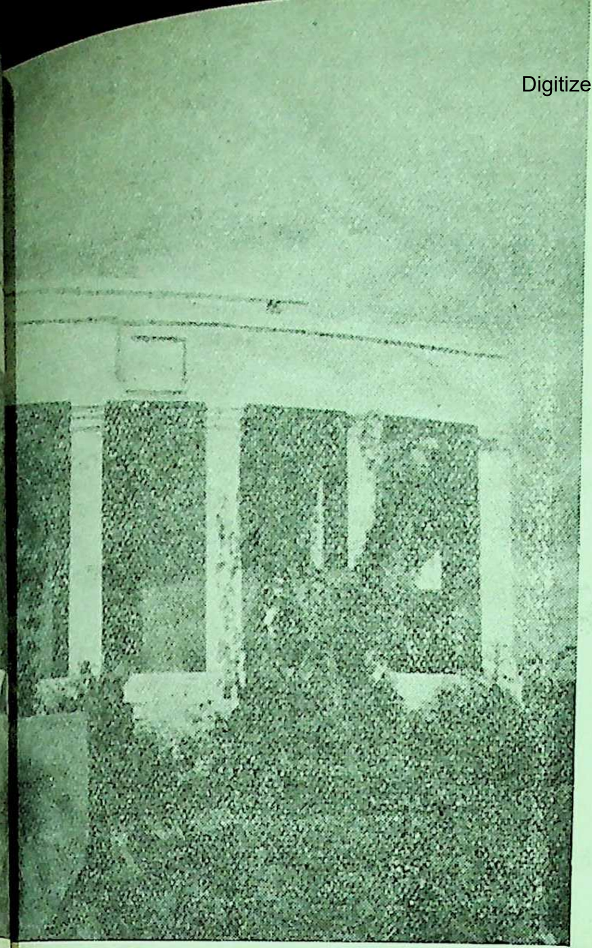

बाई ओर--

....और गाव के एक हरिजन ने भी स्वच्छ तथा हवादार मकान बनाकर गाँव के विक
में योग दिया

इस ग्राम के लोग न केवल जन-स्वास्थ्य का ध्यान ही रखते है, अपितु वे पशुओं की चिकित
एवं सुधार भी चाहते हैं। ग्रामवासियों ने ४,००० रुपए से बना यह पशु-चिकित्सालय ग्रा
की भलाई के लिए दान में दिया है

की एक झलक

*

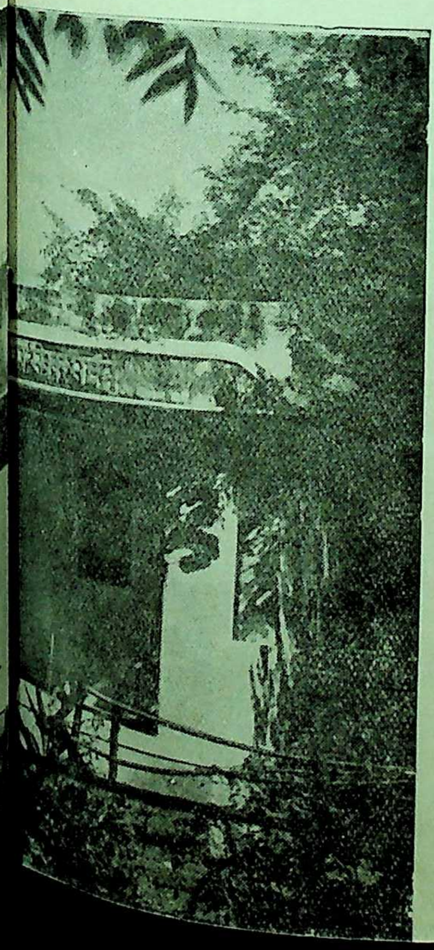

यातायात के साधनों द्वारा ही गाँव की
सम्भव है । अपने ग्राम की उन्नति
ग्रामवासी ३,००० पए का योगदान
खरंजा तैयार करवा रहे हैं

★

द्ध पेय जल की उपलब्धि भी तो प्रत्येक ग्राम
लिए आवश्यक है । घुसगवाँ में निर्मित यह
वीन कूप उक्त ग्राम के लिए स्वच्छ पेय जल
पूर्ति करने में समर्थ है

★

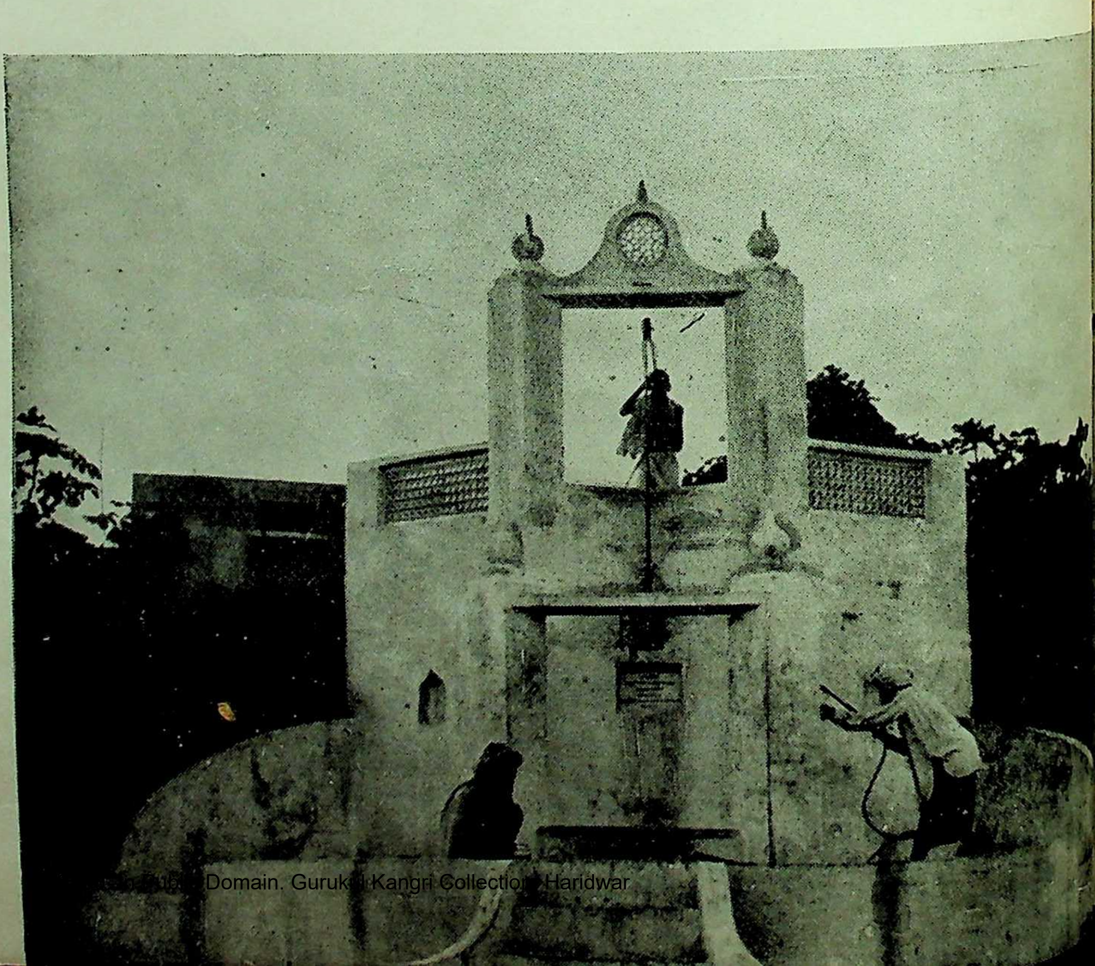

चार सिहोंवाले परगहों के अतिरिक्त वैशाली, लौरिया नन्दनगढ़ (चम्पारन) और रामपुरवा (चम्पारन) में एक सिहीय परगहे मिले हैं। रामपुरवा का सिह, जो अब राष्ट्रीय संग्रहालय, कलकत्ता में है, अच्छा बन पड़ा है। वह ऐसे चैतन्य एवं शक्तिपुंज से मंडित है, जो उसे मौर्यकाल की सर्वोत्कृष्ट मूर्तियों की पंक्ति में ला बिठाता है। सांकास्य (फर्रुखाबाद) में एक गजयुक्त परगहा मिला है। सिहों के बाद अशोककालीन स्तम्भों के पगरहों में रामपुरवा के बैल-मूर्ति की बारी आती है। यह आजकल राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली में सुरक्षित है। वृषभराज की शालीनता का अचूक तक्षण इस परगहे में हुआ है। भारतीय किसान के धनधान्य के देवता वाचाल हो उठे हैं। 'मोहन-जो-दड़ो के टिकरों के बाद, रामपुरवा का बैल, पशु की प्रबलतम प्रारम्भिक अभिव्यक्ति है।' (सी. शिवराममूर्ति, 'ए गाइड टु दि आर्केलोजिकल गैलरीज ऑफ दि इण्डियन म्यूजियम' पृष्ठ १)।

रुम्मनदेई (लुम्बिनी) के परगहे पर कभी अश्व शोभायमान था। ये 'जीती-जागती मूर्तियां हैं, जिनकी पालिश में आप अपना मुंह देख लें, जिनकी चिकनाहट पर हाथ रखते आपकी उंगलियां फिसल जाएं, जिनकी उभरी हुई नसें जानदार होने का भ्रम पैदा कर दें' (श्री भगवत शरण उपाध्याय, 'भारतीय मूर्तिकला की कहानी' पृष्ठ २०)। अशोककालीन लाटों के शीर्ष परगहों पर शानदार चमक है, जो ओप (पालिश) की वजह से मुमकिन हो सकी है। इन मूर्तियों की सजीवता का अत्यन्त रोचक वर्णन फाहयान ने अपने यात्रा-वृत्तान्त में किया है। सांकास्य के एक सिहयुक्त परगहेवाले अशोक लाट के आस-पास अनेक बौद्ध भिक्षु रहने लगे थे, जिन्हें एक दिन एक साधु ने शास्त्रार्थ में हरा दिया, परन्तु बौद्धधर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने को परगहे का सिह गर्जना कर उठा। साधु अपने प्राण लेकर भागा। इस कथा से सिह-मूर्त्ति की सजीवता का अन्दाज भलीभांति लगाया जा सकता है।

अशोककालीन स्तम्भों के परगहों को पशु-मूर्तियों की गद्दी के मुख्यतया चार भाग क्रमशः मेखला, उलटी कमल आकृति, कंठा और चौकी हैं। इन चौकियों पर धर्मचक्र, सिह, गज, बैल, अश्व, कमल, उड़ते हुए हंस, बैल आदि उत्कीर्ण हैं। रामपुरवा के बैलवाले परगहे की चौकी पर एक बैल उरेही गई है।

श्री राय कृष्णदास के अनुसार बखीरा (मुजफ्फरपुर) का एक सिहवाला शैल-स्तम्भ अशोककाल के पहले का है। सांची में चार सिहोंवाले अशोककालीन परगहें के अलावा एक शुंगकालीन (एक सिहवाला) परगहे के होने का भी अनुमान है। गुप्तकाल के एक सिहीय दो परगहों के अवशेष यहां मिले हैं। एक परगहे में सिह के ऊपर धर्मचक्र भी आलेखित है। इसी स्थान पर गुप्तकालीन बोधिसत्व वज्रपाणि की एक खड़ी मूर्त्ति एक स्तम्भ के टुकड़ों के पास मिली थी, जो कनिंघम, मेसे तथा जॉन मार्शल के अनुसार कभी स्तम्भ के परगहे को सुशोभित करती रही होगी।

शुंगकाल में भी कुछ स्तम्भों के उत्तम परगहे देखने को मिलते हैं। कलकत्ते के राष्ट्रीय संग्रहालय में एक कल्पद्रुम (बेसनगर, मध्यप्रदेश में प्राप्त) की मूर्ति है, जिसके बारे में अनुमान किया जाता है कि यह किसी स्तम्भ का ऊपरी साज है। कल्पद्रुम धन की थैलियों, शंखों तथा कमलादि पुष्पों से सजा हुआ है। मूर्ति के नीचे चारों ओर सांची की वेदिका की-सी अनुकृति है। श्री सी. शिवराम मूर्त्ति इसे किसी कुबेर मन्दिर के स्तम्भ का परगहा मानते हैं। श्री एन. जी. मजूमदार के अनुसार यह भारतीय परम्परागत मान्य कल्पद्रुम की मूर्ति है, जो मानव की प्रत्येक इच्छा की पूर्ति करता है। लेकिन सांची की बौद्ध वेदिका की तरह का प्रयोग एक संशय पैदा करता है। उस स्थिति में यह प्रतिमा कल्पद्रुम की न होकर बोधि वृक्ष की अर्चना जान पड़ती है, जिस पर महाजनों का पत्र-पुष्पम् भी अंकित है। बोधि वृक्ष की पूजा करते हुए भक्तों का एक अंकन भी ग्वालियर के गूजरी महल के संग्रहालय में सुरक्षित है।

इसके अलावा बेसनगर से ही प्राप्त शुंगकालीन स्तम्भों के दो सुन्दर परगहे गूजरी महल में हैं। एक में कमलाकार शिखर है, जो सांची की बौद्ध वेदिका के डिजाइन पर आधारित है। ऊपर खांचे के लिए एक खूंटी है, जिससे प्रतीत होता है कि इसके ऊपर भी कोई मूर्ति रही होगी। एक गरुड़ शिखर के अवशेष हैं। लगभग इसी समय का विदिशा में एक स्तम्भ है, जिसके शीर्ष पर कभी गरुड़ की मूर्ति रही होगी। उस समय विदिशा वैष्णव सम्प्रदाय का एक प्रमुख गढ़ रहा होगा। कहा जाता है कि इस स्तम्भ का निर्माण पंजाब के यूनानी राजा अन्तलिखिद के दूत हेलियोदोर ने करवाया था।

गूजरी महल, ग्वालियर के संग्रहालय में कुछ उत्तम स्तम्भ परगहे प्रदर्शित हैं। पवाया के एक गुप्तकालीन परगहे पर सप्रभ दोहरे मुख-वाली सूर्य-प्रतिमा है, एक ओर उसका एक हाथ अभय मुद्रा में है, दूसरी ओर दोनों हाथ कमर पर टिके हैं। पवाया से ही प्राप्त स्तम्भ का एक शीर्ष परगहा यहां है, जिस पर ताड़ वृक्ष का सुन्दर तक्षण है। यह अपने तरह की एक निराली ही कल्पना है। इस गुप्तकालीन ताड़ वृक्षाकार परगहे की भांति ही एक शुंगकालीन परगहा भी यहां है, जो बेसनगर में मिला था। अशोककालीन शैलस्तम्भों के पशु प्रधान परगहों के विपरीत बेसनगर के कलाचार्यों ने वनस्पति को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। प्रकृति के इस सुकुमार अंग पर इनकी दृष्टि विशेष रही।

उदयगिरि से मिले पांचवीं शताब्दी के स्तम्भ का एक चार सिहोंवाला भी परगहा यहां है। एक स्तम्भ के चारों ओर, चारों दिशाओं की ओर मुंह किए चार सिह बैठे हैं। चौकी पर राशियों का चित्रण हुआ है। उदयगिरि से ही प्राप्त एक सिहवाला एक परगहा भी है। सिह की पूंछ एक पैर के नीचे से निकलकर पीठ पर पड़ी है। परगहे की चौकी पर विभिन्न पशुओं का अंकन हुआ है।

कार्ली की बौद्ध गुफा के सामने के शैल स्तम्भ पर चार सिहोंवाला परगहा है। परगहा क्षेत्रीय कला का उतम नमूना है। एक अन्य स्तम्भ पर धर्मचक्र था, जो अब नहीं है। एक स्थान पर, भित्ति पर एक धर्मचक्र युक्त स्तम्भ अंकित है। एलोरा के कैलाश मन्दिर के ध्वज-स्तम्भों पर त्रिशूल थे, ऐसी डॉ० जेम्स बरगेस की धारणा है।

दिल्ली के लौह स्तम्भ पर भी गरुड़ की मूर्ति कभी थी। भुवनेश्वर के भाष्करेश्वर मन्दिर का शिवलिंग श्री के. सी. पाणिग्राही के अनुसार अशोक का सिह पगरहेवाला शैल-स्तम्भ है, जिसे विकृतकर शिवलिंग का रूप दिया गया है। यहां के अन्य मन्दिरों में गरुड़ अथवा बैलयुक्त शैल-स्तम्भ हैं। पुरी के जगन्नाथ जी के मन्दिर में गरुड़ युक्त स्तम्भ हैं।

(शेष पृष्ठ २९ पर)

चुम्बकीय तरल से धातु की परख

—श्री के० सी० श्रीवास्तव

लोहा, इस्पात, निकेल और कोबाल्ट आधारित उन मिश्र धातुओं के माल को, जो काफी मात्रा में चुम्बकीय गुण दर्शाते हैं, अ-नाशक विधि से परखने के लिए चुम्बकीय तरल के कणों के निरीक्षण की रीति सबसे अधिक व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाती है। इस विधि का उपयोग करने से दरारें, अपद्रव्यों की उपस्थिति, निर्माण की खराबी तथा थकन के चिह्न, जैसे वे ऊपरी तथा भीतरी दोष, जो आंख से अथवा रेडियोग्राफी से नहीं देखे जा सकते, स्पष्ट हो जाते हैं। परख में चुम्बकीय तरल का उपयोग लोहा और इस्पात, मशीन और औजार, रसायन, मोटरकार, बाइसिकल, हवाई जहाज, बाल और रोलर बेयरिंग, मोटर और डीजल इंजन, छुरी-कांटे, पानी के जहाज और रेल आदि के उद्योगों में होता है।

इस विधि की विशेषता यह है कि यह बहुत सरल है, इसके नतीजों पर पूरा विश्वास किया जा सकता है, दोषों की प्रकृति का ठीक ज्ञान हो जाता है। इस विधि को बहुत-सी या एक अकेली वस्तु को परखने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला में चुम्बकीय तरल बनाने का जो प्रयोग-यंत्र लगाया गया है, उसमें १०० गैलन से अधिक तरल तैयार किया जा चुका है और कुछ उद्योगों को उपयोग के लिए दिया गया है। उद्योगों ने इसका उपयोग किया है और इसे संतोषजनक पाया है। अनुमान किया जाता है कि १९६०-६१ तक चुम्बकीय तरल की मांग लगभग ८ हजार गैलन और तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक १२ हजार गैलन होगी।

तरल का उपयोग

जिस वस्तु की परीक्षा करनी होती है, उसको पहले चुम्बक बनाया जाता है और फिर उसके ऊपर चुम्बकीय तरल लगाया जाता है। यदि वस्तु में दरार अथवा तरेर उपस्थित होती है तो तरल के कण आकर्षण के कारण दोष के क्षेत्र के चारों ओर इकट्ठे हो जाते हैं। राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला में एक ऐसा विद्युत् चुम्बक बनाया गया है, जिसकी सहायता से किसी वस्तु में चुम्बकीय क्षेत्र उत्पन्न किया जा सकता है। यह उपकरण हल्का और सुगठित है तथा किसी भी आकृति और आकार की वस्तु को चुम्बक बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

अभी पिछले दिनों तक भारत में चुम्बकीय तरल तैयार नहीं किया जा रहा था। राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला में इसका निर्माण करने के लिए दो विधियां निकाली गई हैं। इनका पेटेन्ट नम्बर ५०,५७४ और ६१,७७४ है।

राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला की विधियाँ

भारतीय पेटेन्ट नम्बर ५०,५७४ की विधि में मैग्नेटाइट नामक खनिज, जो भारत में बहुतायत से मिलता है, इस्तेमाल किया जाता है। खनिज को कूटा जाता है और मिट्टी तथा धूल अलग करने के बाद बारीक पीस लिया जाता है। चुम्बकीय विलगावक की सहायता से अचुम्बकीय पदार्थ अलग कर दिए जाते हैं। लौह आक्साइड के साथ जो कुछ बारीक धूल चिपकी रह जाती है, उसको पानी से धो दिया जाता है। शोधित आक्साइड को भट्टियों में इतना गर्म किया जाता है कि उन्हें और पीसने का काम सरल हो जाता है। अंतिम पिसाई एक बंद सरकिट बाल मिल में की जाती है। आरम्भ में पानी का इस्तेमाल किया गया था, पर बाद को मिट्टी का तेल इस काम में लाया गया। पानी को अलग करने में बहुत देर लगती थी और कभी-कभी लौह आक्साइड के गुठले बन जाते थे। मिट्टी के तेल से यह कठिनाई नहीं होती। तैयार किया हुआ आक्साइड पात्रों में जमा किया जाता है। जब उपयोग के लिए आवश्यकता होती है तो आवश्यक अनुपातों में आक्साइड को मिट्टी के तेल, एलमुनियम स्टियरेट और कैल्शियम ओलियेट के साथ लगभग १६-२० घंटे तक ८०-९० डिग्री से० पर निरन्तर हिलाते हुए उस समय तक मिलाया जाता है जब तक कि आवश्यक चुम्बकीय तरल तैयार नहीं हो जाता। तरल को अच्छी तरह हिलाया जाता है और फिर परखे जानेवाले पदार्थ पर लगाया जाता है।

इस विधि से एक हजार गैलन चुम्बकीय तरल प्रति मास बनाने के लिए जिस यंत्र की आवश्यकता होगी उस पर, अनुमान किया जाता है कि २० हजार रुपए की लागत आएगी। कच्चे माल का मूल्य बहुत कम होता है पर उपचार की लागत मोटे तौर से लगभग नौ रुपए पड़ेगी।

दूसरी विधि

चुम्बकीय तरल बनाने की एक दूसरी विधि, जिसका भारतीय पेटेंट नं० ६१,७७४ है, सरल और सस्ती है। इसमें देशी फैरस सल्फेट और आक्सैलिक एसिड इस्तेमाल किए जाते हैं। इनके अलग-अलग पानी में घोल तैयार कर लिए जाते हैं, उन्हें हल्का गर्म किया जाता है और फिर अच्छी तरह मिला दिया जाता है। फैरिस आक्जेलेट का अवक्षेप बनता है। उसको पानी से गाढ़ा करके या निथार कर अलग कर लेते हैं। आक्जेलेट को १५० डिग्री से० पर सुखाते हैं और पात्रों में रख लेते हैं। इसको अब बिजली की मफल भट्टी में, जिसमें माल को हिलाने की व्यवस्था होती है २००-२५० डिग्री से० पर निष्क्रिय वातावरण में गर्म किया जाता है। जब फैरिस आक्जेलेट पूर्णतया लोहे के चुम्बकीय आक्साइड में परिवर्तित हो जाता है तो भट्टी को ठण्डा होने दिया जाता है। यह आक्साइड अब चुम्बकीय तरल बनाने के काम में लाया जा सकता है।

इस विधि से बड़े अथवा छोटे पैमाने पर चुम्बकीय तरल बनाया जा सकता है। प्रति मास एक हजार पौंड माल बनानेवाले यंत्र पर केवल आठ हजार रुपए की पूंजी लगेगी। इसे चलाने की लागत, जिसमें कच्चा माल, मजदूरी, घिसाई और नियत खर्चे शामिल हैं, २,६०० रुपए आएगी और लोहे के चुम्बकीय आक्साइड की लागत २ रुपए २६ नए पैसे प्रति पौंड पड़ेगी। इसके उपयोग से जो चुम्बकीय तरल तैयार होगा उसकी लागत चार रुपए प्रति गैलन से अधिक नहीं होगी। विदेश से मंगाया हुआ ऐसा तरल इससे लगभग ६ गुने मूल्य पर बिकता है।

इस विधि को ऐसा ही लोहे के दूसरे आक्साइड के उत्पादन के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। ये आक्साइड कांच, धातुओं आदि वस्तुओं पर पॉलिश करने के मसाले बनाने के लिए काम में लाए जा सकते हैं।

('विज्ञान प्रगति' से, साभार)

कोलम्बो योजना-देशों की सबसे बड़ी समस्या : जनसंख्या वृद्धि

दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी एशिया के कोलम्बो योजना देशों के पास संसार की केवल सोलहवां हिस्सा भूमि है, पर आवादी कुल संसार की आबादी की एक-चौथाई है। १९२० में इन देशों की आवादी संसार की आवादी का २३ प्रतिशत थी जो १९५६ में वढ़कर २५ प्रतिशत हो गई। दुनिया में खेती योग्य भूमि पर रहनेवालों की औसत संख्या १९८ प्रतिवर्ग किलोमीटर है, जब कि दक्षिणी और दक्षिण पूर्वी एशिया के कोलम्बो योजना देशों में इससे लगभग दुगुनी अर्थात् ३७५ है।

इन देशों में गांवों में रहनेवालों की औसत संख्या भी अन्य देशों से कहीं अधिक है, परन्तु पैदावार बहुत ही कम है। वैसै भूमि सुधार, सिंचाई, खेती के आधुनिक तरीके अपनाने से पैदावार काफी वढ़ाई जा सकती है और वढ़ाई जा रही है।

इन देशों तथा संसार के अन्य देशों की आवादी में सन् १९२० से १९५० तक औसतन १ प्रतिशत वृद्धि होती रही, पर एशिया के देशों में १९५० से १९५६ तक यह औसत बढ़कर १.५ प्रतिशत हो गया। इसके बाद भी यह बढ़ा और कुछ देशों में तो २ प्रतिशत तक हो गया।

भारत मे सबसे अधिक

दक्षिणी और दक्षिणी-पूर्वी एशिया के देशों में सवसे अधिक आबादी भारत में है। १९५१ की जनगणना के अनुसार इससे पिछले दस वर्षों में भारत की आबादी १.३ प्रतिशत बढ़ी। बाद में नमूने के तौर पर पड़ताल करने से पता चला कि आवादी में १.९ प्रतिशत वृद्धि हुई है।

अब, १९६१ में, कुछ अन्य देशों की तरह भारत में भी जनगणना हुई। इसके पता चला है कि १९६१ के आरम्भ में भारत की आबादी में आशातीत २.१५ प्रतिशत वृद्धि हुई, अर्थात् अब इसकी आबादी ४३ करोड़ ८० लाख से भी अधिक हो गई है। भारत के बाद इन्डोनेशिया और पाकिस्तान का नम्बर आता है। दूसरी ओर उत्तरी बोर्नियो है, जहां ७६, ११२ वर्ग किलोमीटर में केवल ४ लाख २९ हजार आबादी है। सारवाक में भी १,२३,०२५ वर्ग किलोमीटर में केवल ७ लाख ४४ हजार लोग हैं।

१९६० में इन्दोनेशिया की आवादी ९ करोड़ २६ लाख आंकी गई थी। पिछले कुछ वर्षों में वहां आवादी में २ से २.३ प्रतिशत तक वृद्धि हुई।

पाकिस्तान में १९५१ की जनगणना के अनुसार ७ करोड़ ५८ लाख आवादी थी, जो १९६१ में २.३७ प्रतिशत से बढ़कर ९ करोड़ ३८ लाख १२ हजार हो गई।

फिलिपीन गणराज्य की आवादी १९५९ में २ करोड़ ४७ लाख १८ हजार थी। १९५७ तक वहां अनुमानतः १.९ प्रतिशत आवादी बढ़ी। १९६० में आवादी बढ़कर २ करोड़ ७४ लाख ७३ हजार हो गई।

थाई देश की आवादी १९५९ में २ करोड़ १८ लाख ८१ हजार थी, जो १९६० में बढ़कर २ करोड़ ५५ लाख हो गई। यह वृद्धि २.७५ प्रतिशत आंकी गई है।

वियतनाम की आवादी १ करोड़ ४० लाख से कम है। वहां आवादी की वृद्धि १.८ प्रतिशत आंकी गई है।

कम्बोडिया में केवल १९२१ में जनगणना हुई थी और अब १९६१-६२ में होगी। तब आवादी की वास्तविक स्थिति जानी जा सकेगी, पर १९५९ में यह ४९ लाख आंकी गई थी।

नेपाल म हाल में आवादी में हर साल १.५ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। १९५९-६० में वहां की आवादी ९० लाख आंकी गई।

वर्मा में १९६१ में जनगणना होगी। १९५९ में वहां की आवादी २ करोड़ ४ लाख ५७ हजार और १९६० में २ करोड़ ६ लाख ६२ हजार आंकी गई थी।

लंका में १९५३ में ८० लाख ९७ हजार ८९५ और १९५९ में ९६ लाख आंकी गई। इस प्रकार वहां जनसंख्या में एशियाई देशों में सबसे अधिक ३.०१ प्रतिशत वृद्धि हुई। १९६१ में वहां की आवादी लगभग १ करोड़ होगी।

आवश्यकताएँ

इस प्रकार दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों की आय में जो भी वृद्धि होती है, वह बढ़ती हुई आवादी के खाने-पीने, रहने आदि पर खर्च हो जाती है। इस प्रकार आय भले ही बढ़े, पर देश की माली हालत में कोई परिवर्तन नहीं हो पाता है। न तो रहन-सहन का स्तर ऊंचा हो पाता है और न विकास-कार्यों पर ही पूंजी लगाई जा सकती है।

ये सभी देश अब इस समस्या के प्रति सचेत हो गए हैं। वे अब अपनी योजनाएं बनाते समय, बढ़ती हुई आवादी पर नियंत्रण रखने, अपनी आय के साधन बढ़ाने, भरपूर खेती करने, बेकारों को रोजगार देकर जनशक्ति का पूरा उपयोग करने और शिक्षा तथा टेक्निकल ट्रेनिंग की सुविधाएँ बढ़ाने पर विशेष ध्यान देते हैं।

उन्हें अपने इन सभी प्रयत्नों के लिए कोलम्बो योजना के अन्तर्गत बाहरी और उन्नत देशों से काफी मदद मिलती है।

कोलम्बो योजना और अन्य देशों की आर्थिक योजनाए

कोलम्बो योजना के अनेक लाभों में सब से बड़ा लाभ यह हुआ है कि दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में योजनाबद्ध विकास की बात घर कर गई है। १० वर्ष पूर्व इस क्षेत्र के देशों में योजनाबद्ध आर्थिक-विकास एक नई और अजीब चीज समझी जाती थी। पर आज हर देश ने अपने विकास के लिए योजनाएं बना रखी हैं। बहुत से देशों में आयोजन की कारगर विधियां निकाली गई हैं और शासन-व्यवस्था सुधारी गई है।

पूंजी नियोजन

भारत अपनी तीसरी पंचवर्षीय योजना को हाथ में ले चुका है। तीसरी योजना का उद्देश्य राष्ट्रीय आय में प्रतिवर्ष ५-६ प्रतिशत वृद्धि करने का है। तीसरी योजना की अवधि में १०,२०० करोड़ रुपए लगाने का विचार है। यह राशि पहली और दूसरी पंचवर्षीय योजनाओं के खर्च के लगभग बराबर है। सरकार की ओर से ६,२०० करोड़ रुपए की पूंजी लगाने की योजना के अलावा १,०५० करोड़ रुपये चालू मदों पर खर्च होंगे और इस प्रकार सरकारी क्षेत्र में ७,२५० करोड़ रुपये खर्च करने का विचार है। तीसरी योजना में खेती के अलावा दूसरे धंधों में १ करोड़ १० लाख तक नौकरियां दिलाने का लक्ष्य है। इस प्रकार तीसरी योजना हर तरह से देश के आर्थिक-विकास में खास महत्व रखती है यानी देश की अर्थ-व्यवस्था स्वावलम्बी हो जाएगी, ताकि आगे चलकर आर्थिक-विकास तेजी से हो सके।

कम्बोडिया की योजना

कम्बोडिया की सरकार ने पहले अपने देश के लिए २ साल की योजना बनाई थी और १९६० के आरंभ में उसने पहली पंचवर्षीय योजना का आरम्भ किया। इस योजना में अधिक ऊंचे लक्ष्य रखे गये हैं और योजना को कार्यान्वित करने के सारे शासन-यंत्र को सुधारा और बढ़ाया गया है। इस पंचवर्षीय योजना पर कम्बोडिया ८०० करोड़ रियल खर्च करेगा।

अपनी पहली पंचवर्षीय योजना (१९५६-६०) पूरी कर लेने पर इन्डोनेशिया इस वर्ष अपनी पहली सम्पूर्ण राष्ट्रीय विकास योजना आरम्भ कर रहा है। यह योजना ८ वर्ष की होगी।

लाओस ने १९५८ में अपनी पंचवर्षीय योजना आरम्भ की थी। इस पर प्रति वर्ष १ करोड़ ४५ लाख अमरीकी डालर खर्च होता है। इसमें से ४० प्रतिशत समाज कल्याणकारी कामों पर, ४० प्रतिशत परवहन, संचार तथा निर्माण कार्यों पर और २० प्रतिशत खेती, उद्योगों और दूसरे कामों पर खर्च किया जा रहा है। लाओस में राष्ट्रीय पूंजी के अभाव में निजी और सरकारी क्षेत्र में विदेशी पूंजी ही लगाई जा रही है। शिल्पियों के बारे में भी यही बात है।

दसवर्षीय योजना

लंका की आबादी प्रति वर्ष ३ प्रतिशत बढ़ जाती है। अपनी इस बढ़ती हुई आबादी के लिए वहां की सरकार ने आर्थिक विकास की १० वर्षीय योजना (१९५९-६८) बनाई है। १९६१ से ६३ तक के तीन वर्षों के लिए काम की रूपरेखा तैयार की जा चुकी है।

मलाया की पहली पंचवर्षीय योजना १९५६ से ६० तक की थी। इसमें रबड़ और कृषि उद्योग की उत्पादकता बढ़ाने, तरह-तरह के उद्योग खड़े करने और समाज-सेवाओं को उन्नत करने का यत्न किया गया। मलाया की दूसरी योजना आजकल तैयार की जा रही है।

नेपाल की पहली पंचवर्षीय योजना पूरी हो चुकी है और एक अन्य तीन वर्षीय योजना तैयार की जा रही है। दिसम्बर, १९५९ में उत्तरी बोर्नियो की १९५९ से १९६४ तक की योजना के लिए ७ करोड़ १० लाख मलाया डालर मंजर किया गया था, जिसमें से २ करोड़ ८ लाख मलाया डालर सड़कों के लिए रख गया था।

पाकिस्तान की योजना के लक्ष्य

जुलाई, १९६० में पाकिस्तान की दूस पंचवर्षीय योजना शुरू हुई। इस पर ११ अर रुपए खर्च होने का अनुमान है। इस अव में अनाज की उपज २१ प्रतिशत बढ़ाने औ कपास की २३ लाख गांठ और पटसन की ७३ ला गांठ करने का प्रयत्न होगा। इसी प्रकार उद्यो का उत्पादन लगभग ४७ प्रतिशत बढ़ाने क लक्ष्य है। सड़कें और नहरें भी काफी बढ़ा जाएंगी।

वर्मा में देश के सब आर्थिक साधनों को जुटा कर चौमुखी प्रगति के लिए चार वर्षों की योज तैयार की जा रही हैं।

आर्थिक और सामाजिक कल्याण

इसी प्रकार सारावाक में १९५९ से १९६ तक के लिए खेती की फिलीपींस में १९५९ १९६४ तक के लिए उद्योगों और खेती की उन्न के लिए योजनाएं बनाई गई हैं। फिलीपीं में होनेवाले कामों पर ८६ करोड़ ९६ लाख पेस. खर्च होगा। पांचों सालों में ६७ करोड़ ५३ लाख पेस. के बराबर विदेशी मुद्रा जरूरत पड़ेगी।

सिंगापुर की पंचवर्षीय योजना का उद्दे पूंजी नियोजन ११ प्रतिशत से बढ़ा राष्ट्रीय आय का २० प्रतिशत करना है। देश में ६ वर्षीय योजना द्वारा देश की बढ़ हुई आबादी और कम रोजगार की सम को हल किया जाएगा।

विदेशी सहायता

सब देशों के आर्थिक-विकास के लिए विदे सहायता की बहुत आवश्यकता है। दू जरूरत है, शिल्पियों, विशेषज्ञों और वैज्ञानि की। कोलम्बो योजना इन दोनों जरूरतों पूरा करने का साधन है। सबसे बड़ी बात यह कि दक्षिण-पूर्वी एशिया से बाहर के देश आस्ट्रेलि कनाडा, जापान, न्यूजीलैंड, ब्रिटेन और अमेरि जरूरतमंद देशों को हर तरह से पूरी सहा दे रहे हैं।

साहित्य समालोचना

संगीताचार्य बैजू और गोपाल । लेखक–श्री प्रभूदयाल मीतल। प्रकाशक––साहित्य संस्थान, मथुरा। आकार––डबल क्राऊन १६ पेजी, पृष्ठ संख्या ८४, मूल्य १।। रुपया ।

भारतीय संगीत में ध्रुपद शैली अपनी एक विशिष्ट परम्परा रखती है । इस शैली का उदय मूलतः उत्तरी भारतवर्ष में होना इतिहास-सम्मत है । मुगलकालीन सम्राट् अकबर के कुल ३६ दरबारी संगीताचार्यों में तानसेन इस शैली के मूल उन्नायक माने जाते हैं । यद्यपि बैजू बावरा और गोपाल शायद साधना की दृष्टि से इनसे किसी कदर कम नहीं थे। प्रत्युतः यह दोनों ही शास्त्रज्ञों और उपलब्ध साधन सामग्री के आधार पर इनके उत्तम प्रतिस्पर्धी कहे जाते हैं। लेखक ने अपनी पुस्तक में इन्हीं दो महान् संगीताचार्यों की जीवनी पर यथासाध्य प्रकाश डालने का प्रयास किया है और इसके लिए अब तक उपलब्ध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों, साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाओं, शासकीय तथा साहित्य और संगीत-सम्बन्धी विविध रचनाओं एवं किंवदन्तियों से सहायता ली है। पुस्तक प्रणेता अपने नायक पात्रों के संबंध में जो कुछ संकलन कर पाए हैं, वह अभी पर्याप्त नहीं है । प्रयास स्वागतार्ह इसलिए है कि इससे उन महानुभावों को प्रेरणा और मार्गदर्शन मिलता है, जो संगीत और साहित्य के अनन्य उपासक हैं और इतिहास तथा अन्वेषण के प्रति हार्दिक अभिरुचि रखते हैं ।

भारतीय इतिहास के आधार पर स्पष्टतया यह कहा जा सकता है कि भारतीय संगीत का र्णयुग १३ वीं शताब्दि से आरम्भ होकर १६वीं ताब्दि के अन्त तक अपने चरम बिन्दु पर पहुँचा ा। इसका खास कारण तत्कालीन शासकों का, ामयिक कलाकारों और संगीताचार्यों को राजाय मिलना था । तेरहवीं शताब्दि में अलाद्दीन खिलजी पहला बादशाह था, जो संगीतज्ञों ा महान् पुरस्कर्ता और प्रेमी था । उसने भारत ार ईरान के संगीत को मिलाकर नवीन रागों का प्रचलन किया, जिनमें साजगिरी, उश्शाक, जिला, सरपरदा आदि विशेष उल्लेखनीय हैं । इसीके जमाने में कव्वाली शैली का जन्म हुआ तथा भारतीय वीणा का रूपान्तर सहतार अर्थात् सितार में किया गया। उपरान्त १६ वीं शताब्दि में मुगल सम्राट् अकबर संगीत और संगीतज्ञों के अनन्य भक्त रहे हैं । इनके शासनत्व में प्रायः ३६ संगीताचार्य राजाश्रित रहे हैं, जिनमें इतिहास-प्रसिद्ध तानसेन सबका शिरमौर था । इस महान् गायक ने ध्रुपद शैली को आगे बढ़ाया । बैजू बावरा और गोपाल इस शैली के धुरन्धर कलाकार और तानसेन के प्रतिद्वन्द्वी होना, उपलब्ध साधन सामग्री और उनकी रचनाओं से स्पष्ट है । दैव-दुर्विपाक से इन दोनों के अस्तित्वकाल के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक आधार आज उपलब्ध नहीं है, न उनके आद्योपान्त जीवन के सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी है । मुगलकालीन शासकीय इतिहासकार अबुल फजल, मुल्ला कादिर बदायूनी और फकीरुल्ला के इतिहास-ग्रंथों में, जहाँ तानसेन, बक्सू, रामदास, गोपाल, महमूद, पांडवीय, कर्ण और हरिदास आदि जैसे धुरन्धर संगीताचार्यों का उल्लेख है वहाँ बैजू बावरे जैसे दैवी प्रतिभा-संपन्न कलाकार का नाममात्र के लिए भी उल्लेख न होना एक आश्चर्य का विषय है । प्रत्युत यह उनकी प्रामाणिक जीवनी की एक विषम और जटिल समस्या बन जाती है । अलबत्ता इस संबंध में एक आशंका यह पैदा होती है कि फारसी लिपि की घसीट लिखावट में "बैजू" को सरलतापूर्वक बख्शू पढ़ा जा सकता है । दोनों की संगीतज्ञता, गायन-शैली, काल, और आश्रय में भी बहुत कुछ साम्य है, जिससे हमारी इस धारणा की पुष्टि होती है । फिर भी यह प्रामाणिक आधार नहीं माना जा सकता । कुल परिस्थितियों पर मार्मिक विचार करने से प्रतीत तो यह होता है कि १३ वीं शताब्दि से लेकर १६ वीं शताब्दि के अन्त तक प्रायः ३०० वर्ष भारत अनेकानेक संगीतज्ञों और कालान्तरों से भरा पूरा देश रहा है। इस अवधि में ऐसे भी, प्रसिद्धि परांगमुख मूक साधक गायनाचार्य रहे हैं, जिनका नामोल्लेख तत्कालीन राजाश्रित इतिहासकारों के ग्रंथों में शायद ही मिलता हो । बैजू बावरा के सम्बन्ध में ऐसी ही उपेक्षावृत्ति शायद तत्कालीन दरबारी इतिहासज्ञों द्वारा बरती गई हो तो कोई आश्चर्य का विषय नहीं है ।

ठीक इसी प्रकार की भ्रामक परिस्थिति गोपाल के सम्बन्ध में हुई जान पड़ती है । १३ वीं शताब्दि से १६वीं शताब्दि के अन्त तक गोपाल नाम के दो धुरन्धर गायक हुए हैं, जिनमें से प्रथम गायक गोपाल नायक के नाम से प्रसिद्ध है, जो अलाउद्दीन के दरबार में राजाश्रित रहा है । यह दाक्षिणात्य था, तो दूसरा गोपाल लाल नाम से १६ वीं शताब्दि में कीर्तिमान हुआ । बैजू बावरा और यह गोपाल समकालीन और ध्रुपद शैली के प्रकोण्ड पण्डित माने गए हैं । बैजू बावरा और इस गोपाल में गुरु शिष्य सम्बन्ध होना किंवदंतियों से स्पष्ट है, किन्तु इतिहासकारों ने दोनों गोपालों के सम्बन्ध में ऐसी भ्रामक परिस्थिति निर्माण कर ी है कि गोपाल एक हुआ या दो, एक समस्या का विषय बना है और उसके अस्तित्व का काल निर्णय एक पहेली-सी बन गई है। तात्पर्य यह कि लेखक ने अपनी पुस्तक में सम्पूर्ण संभाव्यताओं का सोपपत्तिक उल्लेख करते हुए प्राप्त जानकारी का एकत्रीकरण किया है और तर्क के आधार पर दोनों के जीवनी की प्रारम्भिक भूमिका प्रस्तुत ग्रंथ में अंकित की है । अन्त में पुस्तक के प्रमुख पात्र बैजू बावरा, गोपाल और बख्सू की उत्कृष्ट रचनाओं का भी संकलन है, जो सुश्राव्य और संग्रहणीय है ।

चौपाल चर्चा लेखक––श्री रामकुमार 'भ्रमर' । प्रकाशक,––जबलपुर प्रकाशन गृह, जबलपुर । आकार डिमाई अठपेजी, पृष्ठ संख्या ५४, मूल्य १ रुपया मात्र ।

हिन्दी की नई पीढ़ी के लेखकों में श्री रामकुमार 'भ्रमर' कहानीकार के रूप में यशस्वी कदम बढ़ा रहे हैं, इसमें संदेह नहीं । ग्राम्य-जीवन तथा ग्रामीण समस्याओं पर उन्होंने काफी विचार किया और लिखते रहे हैं । प्रस्तुत चौपाल चर्चा आपकी उन ११ वार्ताओं का संकलन है, जो मध्यप्रदेश सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक 'ग्राम सुधार' में यथावकाश प्रकाशित हो चुकी हैं ।

वस्तुतः गांव का चौपाल एक ऐसा अनूठा माध्यम है, जहाँ ग्रामीण जनता नित्य प्रति अपने अवकाश के समय एकत्रित होती और विभिन्न समस्याओं पर मुक्त हृदय हो विचार-विनिमय करते हुए उनका हल निकाला करती हैं । लेखक ने इस माध्यम द्वारा प्रौढ़ शिक्षा, किफायतसारी, छुआछूत, पंचायत, न्याय, सहकारिता, स्वच्छता, बाल-विवाह, नशेबाजी आदि जैसी समस्याओं को वार्ताओं के साँचे में सुन्दरतापूर्ण ढंग से ढाला और प्रचलित तथा परम्परागत अन्ध धारणाओं को स्पष्ट करते हुए उन्हें उचित मोड़ देकर एक नये और ऐसे मार्ग की ओर संकेत किया है, जो ग्रामों और ग्रामीणों के वास्तविक उत्थान और उन्नति के नाते काफी प्रभावक्षम सिद्ध होंगी । हम इस सुझाव के साथ लेखक का हार्दिक स्वागत करते हैं कि जहाँ तक भाषा का प्रश्न है, निरक्षर कृषकों और ग्रामीण जनता के नाते वह अधिक सुगम और सुबोध होनी चाहिए ।

सावित्री—लेखक—श्री चन्द्रप्रकाश वर्मा । प्रकाशक : यूनीवर्सल बुक डिपो, ग्वालियर । पृष्ठ-संख्या ६३, मूल्य १.५० न. पैसे

श्री चन्द्रप्रकाश वर्मा हिन्दी के सुपरिचित कवि ह । हाल ही में प्रकाशित 'सीता' महाकाव्य में उनकी प्रतिभा का सभी ओर स्वागत किया गया था । लेखक के अनुसार 'सीता' के पश्चात् ' 'सावित्री' का सृजन उसके 'भावात्मक जगत् की सहज-स्वाभाविक प्रतिक्रिया' है । सीता यदि समर्पण की प्रतिमूर्ति है, तो सावित्री आक्रमण और विद्रोह की प्रतीक । सीता और सावित्री को मिला-कर ही नारीत्व के प्रति भारतीय दृष्टिकोण का चक्र पूरा होता है । लेखक ने आमुख में सावित्री का परिचय देते हुए लिखा ह, "सीता अश्रु को मान्यता दे अमर हो गई । मेरा अमरत्व अश्रु के विरोध में है ।'

सावित्री की कथा-वस्तु का आधार महा-भारत में उल्लेखित तथा प्रचलित कथाएँ ही हैं, किन्तु उन्हें लेखक ने अपने दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है । भगवान बुद्ध के समान ही सावित्री का हृदय भी मृत्यु के प्रत्यक्ष दर्शन से हिल उठता है । मृत्यु की इस निरंकुशता के प्रति वह विद्रोह कर उठती है । आगे चलकर वह यमराज से कहती है—"सावित्री मृत्यु का नहीं, मृत्यु की निरंकुशता का विरोध कर रही हैं । इस विद्रोह के लिए उसका संबल है अखंड प्रेम । इसी संबल से वह स्वर्ग के कपाट भी खटखटा देती है और यमराज को विवश होकर सावित्री के विजय-अभियान की सफलता घोषित करना पड़ती है । सावित्री के चरित्र पर इससे एक नया प्रकाश पड़ा है, इसमें सन्देह नहीं ।

लेखक मूलतः कवि हैं और इसी कारण नाटक के कथोपकथन भी पद्यात्मक बन पड़े हैं । लेखक की यह पद्यात्मकता कथोपकथन को अत्यंत सरस और प्रभावशाली बना देती है । एक पुत्री का पिता पुत्री के भविष्य के लिए किस प्रकार चिन्तित रहता है । इसे लेखक ने इस प्रकार व्यक्त किया है, 'भागीरथी को सिंधु-करों में सौंपकर भी वृद्ध पिता हिमगिरि का हृदय अभी भी देवी गंगा के कल्याण की चिन्ता से बार-बार विगलित हो उठता है । हिमगिरि को क्या ज्ञात कि भागी-रथी ने नील-सिन्धु को भी तीर्थ बना दिया है । कल्पना के इस अछूतेपन की सराहना किए बिना नहीं रहा जा सकता । कहीं-कहीं संवादों में सूत्ररूप में बड़ी-बड़ी बातें कह दी गईं हैं । "सौदामिनी, मृत्यु को मैं आत्मा के विकास का अवसर मानती हूँ, दुर्घटना नहीं ।" अथवा "समस्या हँस देने पर समस्या नहीं रह जाती । चिंतन से कीजिए गांठ पर गांठ पड़ती जाती है 'हर सरलता कला है आदि । संवादों में भी है और शिष्टता भी । भाषा काव्यमय है जटिल नहीं ।

अतः जीवन-दर्शन और काव्यगत दृष्टि से यह नाटक पूर्णतः सफल है । कथावस्तु का इतना सफल उपयोग देखने में नहीं आया । नाटक को पढ़ने भी अनुभव होता है कि प्रत्येक चरित्र को संपूर्णता के साथ प्रस्तुत करने के लिए ने कथोपकथन का माध्यम चुना है और इस उद्देश्य में वह सफल भी हुआ है । नाटक के साथ ंगमंच भी जुड़ा हुआ और यह कहा जा सकता है कि रंगमंच दृष्टि से यह नाटक बहुत सफल नहीं है । लेखक ने इस दृष्टि से उसे लिखा भी नाटक के ३ अंक हैं । प्रथम में और सत्यवान का प्रणय प्रदर्शित किया है । द्वितीय अंक में विवाह के पश्चात् का जीवन अकित है और तृतीय अंक में और सावित्री का संघर्ष तथा सावित्री की वर्णन है । विशेषकर द्वितीय अंक का तृतीय तथा द्वितीय अंक का प्र म दृश्य । यद्यपि दर्शन और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से नाटक जान है, तथापि उन्हें रंगमंच पर उतारना ही कठिन है । इसीलिए यदि लेखक काव्य गीति-नाट्य का टैकनिक अपनाता तो उसे और भी सफलता मिल सकती थी । भी, वर्माजी की इस गद्य-कृति का स्वागत संसार में अवश्य किया जावेगा । विशेषकर के युग में सावित्री का चरित्र-चित्रण महिलाओं को एक नया आत्म-विश्वास स्वावलम्बन की प्रेरणा देने में सहायक

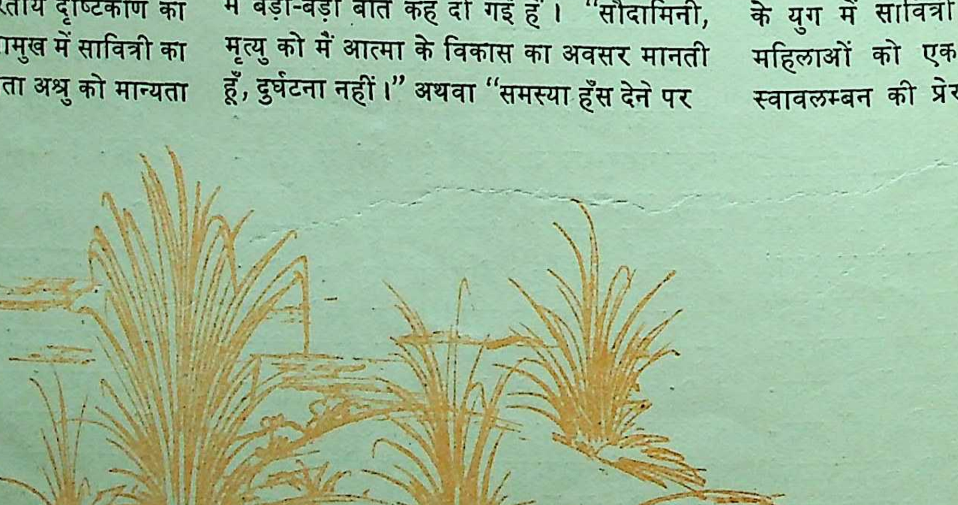

विविध समाचार

कृषि-गवेषणा कर्ताओं को डॉक्टर काटजू की सलाह

राज्य के मुख्य मंत्री डॉक्टर कैलासनाथ काटजू ने कृषि गवेषणा में संलग्न गवेषणा कार्यकर्ताओं से जोरदार आग्रह किया कि वे गवेषणा के लाभ गांवों और खेतों तक पहुंचाएं। मुख्य मंत्री ने गत २३ जून को भोपाल में राज्य कृषि गवेषणा समिति की दूसरी बैठक का उद्‌घाटन किया। यह ज्ञातव्य है कि राज्य कृषि गवेषणा समिति राज्य में कृषि गवेषणा कार्य को समन्वित करने तथा आगे बढ़ाने के लिए गत वर्ष गठित की गई थी।

डॉक्टर काटजू ने कहा कि नए प्रकार की फसलें तथा आधुनिक कृषि प्रणालियां इस प्रकार की होनी चाहिएं कि वे किसानों द्वारा अपनाई जा सकें तथा उनसे अधिक उत्पादन हो। महाविद्यालयों के प्राध्यापकों और विद्यार्थियों को गवेषणा कार्य से सम्बद्ध करने के लिए जो उपाय किए गए हैं, उनकी मुख्य मंत्री ने प्रशंसा करते हुए यह आशा प्रकट की कि कृषि महाविद्यालय एक ऐसा उचित वातावरण निर्मित करेंगे, जिसमें उनके सफल स्नातक नौकरी की अपेक्षा कृषि कार्य अधिक पसंद करेंगे। मुख्य मंत्री ने सहकारी कृषि को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया, जिससे कि आधुनिक कृषि प्रणालियों के प्रयोग में सुविधा हो। भाषण के अंत में डॉक्टर काटजू ने इस वर्ष गवेषणा कर्ताओं द्वारा किए गए उत्तम कार्य के लिए उनकी सराहना की।

इसके पूर्व, राज्य के कृषि उप मंत्री श्री श्यामसुन्दरनारायण मुशरान ने अपने भाषण में १९५६ में राज्य के गठन के पश्चात् अब तक गवेषणा की सुविधाओं के विस्तार पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सरकार समस्त राज्य में कृषि गवेषणा कार्य के समन्वय की आवश्यकता के प्रति सजग है और इस उद्देश्य से उसने तीसरी योजना अवधि में एक केन्द्रीय गवेषणा-केन्द्र तथा संभागीय गवेषणा उपकेन्द्रों के स्थापित करने की योजना तैयार की है।

राष्ट्रीय बचत राज्य परामर्श मण्डल की बैठक

राज्य के मुख्य मंत्री डॉक्टर कैलासनाथ काटजू ने गत २३ जून को राष्ट्रीय बचत राज्य परामर्श मण्डल की बैठक में भाषण देते हुए यह सुझाव दिया कि १९६१-६२ वर्ष में राशि संग्रह का लक्ष्य ५॥ करोड़ रुपए निश्चित् किया जाना चाहिये तथा इस लक्ष्य को पूरा करने के लिये अभियान को तीव्र किया जाना चाहिए।

इस मण्डल की बैठक में द्वितीय पंचवर्षीय योजनाकाल में हुई प्रगति पर विचार किया गया। यह बताया गया कि १९६०-६१ वर्ष में राष्ट्रीय बचत प्रतिभूतियों तथा इनामी बाण्डों को मिलाकर कुल ३५३.५४ लाख रुपए एकत्र किए गए थे। द्वितीय पंचवर्षीय योजनाकाल के किसी भी अन्य वर्ष की तुलना में इस वर्ष एकत्रित धनराशि अधिक है।

मण्डल में यह भी निश्चित किया गया कि गांववासियों को विभिन्न योजनाओं के लाभों से परिचित कराने के लिये पर्याप्त प्रचार के साधन अपनाए जाएँगे।

अल्प बचत के प्रति जन-उत्साह उत्पन्न करने के लिये यह निश्चय किया गया कि वर्ष में अधिकतम राशि एकत्रित करनेवाले जिले के कार्य की प्रशंसा के प्रतीक के रूप में एक शील्ड पुरस्कार स्वरूप दी जानी चाहिए।

इस दिशा में इसके अतिरिक्त और महत्त्वपूर्ण कार्य यह किया जाएगा कि मण्डल के १० गैर सरकारी सदस्यों में से प्रत्येक को ४ या ५ जिलों का उत्तरदायित्व सौंपा जाएगा। सदस्य समस्त जिलों का दौरा करेंगे तथा समस्त कार्यरत एजेन्सियों से सम्पर्क स्थापित करेंगे और अल्प बचत योजनाओं में अधिक नियोजन कराने में उनका मार्ग दर्शन करेंगे।

इस वर्ष पुनः एक जिले को राज्य में एक आदर्श जिला बनाने के लिये चुना जाएगा। पंचायतों, व्यावसायिक संघों, सरकारी बैंकों की शाखाओं तथा अन्य संस्थाओं से सम्पर्क स्थापित कर अधिकृत एजेन्टों की संख्या में भी एक बड़ी हद तक वृद्धि की जावेगी।

भूमिहीनों के सम्मेलन में डॉ० काटजू

राज्य के मुख्य मंत्री डॉ० कैलासनाथ काटजू ने गत १६ जून, को गोपालपुरा गांव (पश्चिम निमाड़ जिला) में भूमिहीन आदिवासियों, हरिजनों और श्रमिकों के सम्मेलन में कहा कि हम सब एक हैं और सुसंगठित तथा बराबर हैं—यह हमारा राष्ट्रीय नारा होना चाहिए। स्वतंत्रता प्राप्त करना सरल था, परन्तु उसे बनाए रखना तथा उसकी रक्षा करना बहुत कठिन है। उन्होंने राष्ट्रीय दृष्टिकोण तथा राष्ट्रीय चरित्र विकास के महत्व पर जोर दिया। भूमि समस्या के संबंध में उन्होंने कहा कि सरकार इस समस्या को हल करने के लिए कृत संकल्प है और वह इस संबंध में हर संभव प्रयत्न कर रही है। समस्त जनता का यह पवित्रतम कर्त्तव्य है कि उपलब्ध भूमि से उत्पादन बढ़ाए और कठोर परिश्रम करे। डॉ० काटजू ने जनता को सहकारी समितियां गठित करने का परामर्श दिया। ग्रामवासियों में कोई दलगत भावना अथवा दलबंदी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि यह लोकतंत्र के स्वस्थ्य विकास के प्रतिकूल है। उन्होंने सुझाव दिया कि जिस गांव में औषधालय नहीं हैं, उस प्रत्येक गांव में एक औषधि-पेटिका अवश्य होनी चाहिए।

सिंगरौली कोयला क्षेत्र के लिए रेल

केन्द्रीय रेलवे मन्त्रालय द्वारा जारी की गई एक अधिसूचना के अनुसार केन्द्रीय रेल मन्त्रालय (रेलवे बोर्ड) ने सिंगरौली कोयला क्षेत्र (मध्य-प्रदेश) से दक्षिण पूर्वी रेलवे की अनूपपुर-कटनी शाखा के किसी उचित स्थान तक, लगभग १७० मील की दूरी के लिए रेल सम्बन्ध स्थापित करने के उद्देश्य से एक ब्राड गेज रेलवे लाइन के निमित्त उत्तरी रेलवे द्वारा किए जानेवाले प्रारम्भिक अभियान्त्रिक तथा यातायात सम्बन्धी सर्वेक्षण के लिए स्वीकृति दे दी है।

उद्योगों का विकास

राज्य के उद्योग विभाग द्वारा १९६०-६१ वर्ष में दी गई ५३,०४५ रुपए की वित्तीय सहायता से राजगढ़ और गुना जिलों को कुल ८२ औद्योगिक इकाइयों को लाभ पहुंचा।

इस वित्तीय सहायता से जिसका उद्देश्य लघु तथा कुटीर उद्योगों का विकास करना है। दोनों जिलों में बढ़ईगिरी, लोहारी, लाख उद्योग, बांस उद्योग तथा इसी प्रकार के अन्य कार्यों के विकास में सहायता मिलेगी।

सिंधाना ग्राम में मंत्रीगण

गत १८ जून को धार जिले की मनावर तहसील के सिंघाना गांव में एक वृहत् कृषक समूह को संबोधित करते हुए राज्य के वित्त मंत्री श्री मिश्रीलाल गंगवाल ने गांव की जनता को ऐसे असंतुष्ट व्यक्तियों के बहकावे में न आने की चेतावनी दी, जो शासन द्वारा किए गए किसी अच्छे काम की प्रशंसा कर ही नहीं सकते। उन्होंने गांववासियों से अपील की कि वे अपने गांवों के विकास के लिए संयुक्त होकर आगे बढ़ें। भूमि सीमा अधिनियम का उल्लेख करते हुए श्री गंगवाल ने कहा कि इस अधिनियम से छोटे भू-स्वामी एवं भूमिरहित किसान अत्यधिक लाभान्वित होंगे।

लोक कर्म मंत्री श्री शंकरलाल तिवारी ने अपने भाषण में सहकारी खेती के महत्त्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में सफलता का रहस्य सहकारिता है। अपना भाषण जारी रखते हुए श्री तिवारी ने मध्यप्रदेश में पंचायत राज का उल्लेख किया तथा गांववासियों से निकट भविष्य में और अधिक उत्तरदायित्वों का वहन करने के लिए तैयार रहने का अनुरोध किया।

लोक कर्म विभाग के उप मंत्री श्री दशरथ जैन ने गांव के समाज में दो सामाजिक बुराइयों तथा अस्पृश्यता और जातिवाद को दूर करने की आवश्यकता पर जोर दिया, उन्होंने कहा कि ये सामाजिक बुराइयां उनकी प्रगति में बाधक हैं। श्री जैन ने उन्हें सेवा सहकारी समितियों को बनाने की सलाह दी, क्योंकि इन सेवा सहकारी समितियों से कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी।

उप मंत्री श्री शिवभानु सोलंकी ने अतिथियों को धन्यवाद दिया।

वन मंत्री की बिहार-विधायकों से चर्चा

बिहार विधान मंडल अनुमान समिति के सदस्यों ने मध्यप्रदेश में वन-व्यवस्था के संपूर्ण प्रश्न पर राज्य के वन नैसर्गिक साधनमंत्री श्री शंभूनाथ शुक्ल से गत १४ जून को भोपाल स्थित विधायक विश्राम गृह में चर्चा की। यह उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश में देश का विशालतम वन क्षेत्र है और यह उन प्राचीनतम राज्यों में माना जाता है, जहां के अधिकांश क्षेत्र में एक सदी पूर्व वनों की वैज्ञानिक व्यवस्था का प्रारंभ किया गया था।

चर्चा आरम्भ करते हुए श्री शुक्ल ने कहा कि मध्यप्रदेश के पास अत्यधिक विशाल वन संपदा है। ये वन लगभग ६७,००० वर्ग मील क्षेत्र अर्थात् राज्य के लगभग ३८ प्रतिशत भाग में स्थित हैं। वन-राजस्व, जो कि आज १० करोड़ रुपए है, राज्य के पुनर्गठन के पश्चात गत पांच वर्षों में लगभग दुगना हो गया है।

श्री शुक्ल ने समिति को वन-संबंधी अनेक समस्याओं से जिसमें बहुचर्चित निस्तार समस्या भी सम्मिलित है, अवगत कराया। उन्होंने कहा कि कृषकों को अनेक छूटें तथा सुविधाएँ प्रदान की गई है, जिनमें लगभग १ करोड़ रुपए का वार्षिक व्यय आता है। आपने आगे कहा कि निस्तार वनों में भी क्रमशः वैज्ञानिक वन व्यवस्था लागू की जा रही है और २० वर्षीय अन्तरिम पातन श्रेणियों का गठन किया जा रहा है, जो कि सतत् उत्पादन के आधार पर वनों के संरक्षण के सिद्धांत के अनुरूप ही है। इस वर्ष समूचे राज्य के विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों में स्थित ३५०० वितरण-केंन्द्रों (डिपो) में इमारती लकड़ी तथा ईंधन को रियायती दरों पर उपलब्ध किया गया है। ये डिपो ग्रामीण जनता में अत्यधिक लोकप्रिय सिद्ध हो रहे हैं। निस्तार के संपूर्ण प्रश्न की जांच करने के लिए एक वन निस्तार नीति समिति भी गठित की गई है, जिसमें सरकारी तथा गैर सरकारी सदस्य हैं और यह समिति अपनी रिपोर्ट राज्य सरकार के समक्ष प्रस्तुत करेगी। श्री शुक्ल ने बताया कि इस समिति ने व्यापक रूप से राज्य का दौरा किया है।

चर्चा के समय बहुमूल्य जाति के वृक्षों के रोपण, भू-संरक्षण, उजड़े हुए वनों के पुनर्जीवन तथा वन्य पशुओं के संरक्षण आदि के संबंधित विषयों पर भी विचार-विमर्श किया गया।

सदस्यों ने सांची के निकट वन विभाग द्वारा किया गया विभिन्न वृक्ष जातियों का रोपण क्षेत्र भी देखा।

रायपुर जिले में मत्स्य-संवर्धन

रायपुर जिले में दूसरी पंचवर्षीय योजना अवधि में मत्स्य-संवर्धन को प्रोत्साहन दिया गया था। प्रधानतः मत्स्य-संवर्धन विभाग के कर्मचारी दलों के प्रयत्नों और जनता के उत्साहवर्धक सहयोग के फलस्वरूप इस क्षेत्र में प्रगति हुई है।

जो बहुत से मालगुजारी तालाब अब सरकार के अधिकार में आ गए हैं, उनका मत्स्य-संवर्धन के लिए पूर्ण रूप से किया गया। रायपुर जिले में दूसरी योजना अवधि में जिले के लगभग ८०० एकड़ जल क्षेत्र से लगभग ९ लाख रुपए की लगभग २१,००० मन मछलियां निकाली गईं।

मत्स्य-उत्पादन में वृद्धि करने के लिए मत्स्य-संवर्धन सहकारी समितियां पंजीयित गईं, जिनकी सदस्य संख्या ९१३ है। अधिक अधिक मछुओं को सहकारिता के क्षेत्र में सम्मिलित करने के प्रयत्न किए गए। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में २,००० से अधिक बेकार व्यक्तियों रोजगार दिया गया।

मत्स्य-संवर्धन क्षेत्र को बढाने की अपार संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए रायपुर तथा बस्तर जिलों में तीसरी योजना की अवधि में मत्स्य-संवर्धन के लिए लगभग ४,००० एकड़ जल क्षेत्र का विकास करने का प्रस्ताव है। इसके अतिरिक्त तीसरी योजना की अवधि में मछुओं को प्रशिक्षण देने के लिए केंद्र आरम्भ करने तथा प्रयोगशाला और शीतगृह स्थापित करने की भी व्यवस्था की गई है।

योजना प्रचार

रायपुर से २० मील दूर अभनपुर ग्राम में हाल ही में क्षेत्रीय प्रकाशन कार्यालय, रायपुर द्वारा आयोजित एक विशाल सभा में ग्रामीणों को उन्नत बीजों, उर्वरकों और कृषि प्रणाली के उपयोग सुझाव दिए गए। पंचवर्षीय योजनाओं से संबंधित साहित्य वितरित किया गया तथा कृषि और पशु कल्याण पर शिक्षाप्रद चलचित्र प्रदर्शित किए गए। इस अवसर पर ग्राम विकास पर आधारित एक सामाजिक नाटक 'नवप्रभात' भी अभिनीत किया गया।

गहन कृषि-कार्यक्रम

रायपुर जिले में आरम्भ किए गए गहन कृषि कार्यक्रम के अन्तर्गत, कृषि कार्यों के निमित्त अन्तरिम अर्थ-प्रबंधन के लिए रायपुर विकास खंड में ५,०५,००० रुपए के अल्प और मध्यकालीन ऋण वितरित किए गए। रायपुर उन जिलों में से एक है, इस कार्यक्रम के लिए चुने गए हैं। यह गहन-कृषि-कार्यक्रम, जो पांच-वर्षीय योजना के रूप में है, क्रमशः कार्यान्वित किया जा रहा है।

कार्यक्रम के प्रथम वर्ष में, रायपुर विकास खंड में ४१ गांव चुने गए हैं और प्रत्येक किसान के कृषि कार्यक्रम को अन्तिम रूप से तैयार करने के पश्चात्, इन गांवों में अर्थ-प्रबंधन का कार्य

तीव्र रूप से आरम्भ किया गया। खंड से प्राप्त एक प्रगति प्रतिवेदन के अनुसार, ५,०५,००० रुपए के विभिन्न ऋण प्रदान करने के अतिरिक्त, ४,५२३ बोरे रासायनिक उर्वरक, १,६२८ मन उन्नत किस्म के धान के बीज, और हरित खाद के लिए २६५ मन बीज किसानों को वितरित किए गए।

गहन कृषि कार्यक्रम के अन्तर्गत, हाट-व्यवस्था सुविधाएं बढाने के लिए भी प्रयत्न किए जा रहे हैं। एक हाट-व्यवस्था समिति संगठित की जा रही है और अन्य सहकारी समितियों की सदस्य संख्या १,२०० से बढ़ाकर २,००० कर दी गई है। एक गोदाम का निर्माण हो रहा है। भूमि के कटाव को रोकने के लिए, कुल्हान नाले के तटों पर १,००० एकड़ से अधिक जमीन पर, जो दस से अधिक गांवों में फैली है, समोच्च बांध बनाने की योजना तैयार की गई है।

कृषक चावल मिल की स्थापना

रायपुर जिले के आरंग विकास खंड में सघन कृषि कार्यक्रम के प्रथम चरण का जो प्रतिवेदन प्राप्त हुआ है, उसके अनुसार सघन कृषि कार्यक्रम के अन्तर्गत हाट समिति के निरीक्षण में २ लाख रुपए लागत की एक सुसज्जित "कृषक चावल मिल" की स्थापना के प्रयत्न विशेष रूप से किए गए हैं। विकास खंड की जनता ने ५०,००० रुपए की धनराशि एकत्रित की तथा शासन ने इस कार्य के लिए १,५०,००० रुपए की सहायता स्वीकृत की है। इस योजना को शीघ्र ही कार्यान्वित करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

आरंग विकास खंड के ४९ गांव सघन कृषि कार्यक्रम के प्रथम वर्ष के लिए चुने गए हैं तथा इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के संयुक्त रूप से प्रयत्न किए जा रहे हैं।

कृषि के उत्पादन में वृद्धि करने के उद्देश्य से ५,८६८ बोरे उर्वरक, ५,२५४ मन धान के बीज तथा २००मन हरित खाद, किसानों को इस कार्यक्रम के अन्तर्गत मई, १९६१ के अन्त तक वितरित किए गए।

इसके अतिरिक्त खंड में सघन कृषि क्षेत्र के किसानों को ३,८६,००० रुपए और सघनेतर क्षेत्र के किसानों को ५,३६,००० रुपए के ऋण वितरित किए गए।

दमोह जिले में सहकारी-कार्य

सहकारी विभाग के मई, १९६१ माह के मासिक प्रतिवेदन में कहा गया है कि दमोह जिले में सहकारी समितियों के गैर-सरकारी व्यक्तियों को प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से चौराई, झारोली, जेतगढ़, हरदुआ सड़क तथा हैइगुवन में से प्रत्येक में एक प्रशिक्षण वर्ग आरम्भ किया गया। इस प्रकार ५ प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किए गए। इन वर्गों में १२३ सदस्यों को सहकारिता का प्रशिक्षण दिया गया।

इसके अतिरिक्त, दमोह सहकारी हाट समिति मर्यादित ने १६,९८२ रुपए मूल्य के मसूर के ४,७१८ बोरे तथा मसूर दाल के ५१० बोरे प्राप्त किए। आलोच्य माह में लगभग ७३ बोरे रासायनिक उर्वरक नगद बेचे गए तथा तकावी के रूप में दिए गए।

ग्रामनेता प्रशिक्षण शिविर

दतिया खंड के बनोली ग्राम में हाल ही में एक त्रि-दिवसीय ग्राम नेता कृषि प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में ८ निकटवर्ती ग्रामों के ग्राम-नेताओं और ग्राम सहायकों ने भाग लेकर कृषि, पशु-पालन, सहकारिता और पंचायत का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रत्यक्ष प्रदर्शन करके शिविरार्थियों को मिश्रखाद कूप तैयार करने की विधि भी समझाई गई।

ग्वालियर सम्भाग में कृषि कार्यों की प्रगति

ग्वालियर संभाग में मार्च, १९६१ के अन्त तक की त्रैमासिक अवधि में अधिक अन्न उपजाओ योजनाओं के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगी कार्य किया गया, जिनका विवरण नीचे दिया गया है।

लघु सिंचन योजनाओं के अन्तर्गत २३४ नवीन कुओं का निर्माण किया गया व १९५ रेंहट एवं ३९ आयल इंजिन कुओं एवं नदियों पर लगाए गए, जिनसे लगभग ११९० एकड़ कृषि क्षेत्र में वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त लगभग ९०० एकड़ भूमि में तालाबों का निर्माण किया जाकर कृषि के क्षेत्र में वृद्धि हुई है। इस प्रकार लघु सिंचन योजनाओं से लगभग ५२२ टन अधिक अन्न उत्पादन की आशा की जा सकती है।

खाद वितरण के क्षेत्र में रासायनिक खानों में नेत्रजन युक्त ११,८४४ मन खाद व फास्फेट युक्त ३,७७६ मन खाद फसलों में डाला गया। १,२७,९३६ मन कम्पोस्ट खाद एवं १,०७,१५६ मन शहरी खाद का उपयोग खेतों में किया गया, जिससे अनुमानतः १२,४९२ एकड़ भूमि लाभान्वित हुई, और फलस्वरूप १,०८५ टन अधिक अन्न-उत्पादन का अनुमान है।

कृषि के सुधरे हुए तरीकों से कृषि कराने की योजना में इस संभाग में लगभग ३३,१२६ एकड़ भूमि में कार्य हुआ, जिससे लगभग ५९२ टन अधिक अन्न उत्पादन की संभावना है।

उक्त अवधि में ६६० एकड़ भूमि में कीटाणु नाशक दवा का फसलों पर उपयोग किया गया एवं ३५,६९३ मन सुरक्षित अन्न भंडार पर इस विभाग द्वारा कीटाणु नाशक उपचार करके उसे सुरक्षित रखा गया।

कृषि फार्मों की योजनाओं के अन्तर्गत इस संभाग में दो कृषि फार्म मंडल शिवपुरी में खोले जा चुके हैं, जिनकी भूमि हस्तगत करके कार्य प्रारंभ किया जा रहा है। बिरखड़ी फार्म मंडल भिंड का कार्य हाथ में लिया जा चुका है और संभावना है कि निकट भविष्य में कार्य प्रारंभ हो जावेगा।

माधव अन्धाश्रम

ग्वालियर स्थित श्री माधव अंधाश्रम-नेत्रहीन बालक और बालिकाओं को सुशिक्षित कर स्वावलंबी बनाने का कार्य कर रहा है। विद्यार्थियों को शिक्षण निःशुल्क दिया जाता है। संस्था में रहनेवाले विद्यार्थियों के लिए भोजन व वस्त्र आदि की निःशुल्क व्यवस्था है। विद्यार्थियों को लिखना-पढ़ना ब्रेल पद्धति से सिखाया जाता है। इसके अतिरिक्त उन्हें हस्तकला, संगीत आदि की शिक्षा भी दी जाती है।

लघु एवं कुटीर उद्योगों को ऋण

ग्वालियर संभाग के गुना जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास हेतु सन् १९६०–६१ के अर्थ वर्ष में ४९,२२० रुपए की धनराशि ऋण स्वरूप वितरित की गई। इस धनराशि में से गुना, राघोगढ़, ईसागढ़, आरोन तथा चन्देरी विकास खंडों के अन्तर्गत ५१ औद्योगिक केंद्रों को ३२,५४० रुपए ऋण स्वरूप वितरित किए गए। शेष राशि आठ विभिन्न औद्योगिक सहकारी समितियों को वितरित की गई।

सशस्त्र सेनाओं में भर्ती

शाखा भर्ती कार्यालय ग्वालियर, के भर्तीकारी दल सशस्त्र सेनाओं में युवकों को भर्ती करने के लिए जुलाई में निम्नलिखित स्थानों का दौरा करेंगे।

स्थान	जिला	दिनांक
जीरापुर ..	राजगढ़ ..	८ जुलाई
नरसिंहगढ़.	राजगढ़ ..	१० तथा ११ जुलाई
भोपाल ..	सिहोर ..	१२ तथा १३ जुलाई
विदिशा ..	विदिशा ..	१४ तथा १५ जुलाई
वरोदा ..	मुरैना ..	१६ जुलाई
गुना ..	गुना ..	१७ जुलाई
शिवपुरी ..	शिवपुरी ..	१७ तथा १८ जुलाई
मुरैना ..	मुरैना ..	१९ तथा २० जुलाई
दतिया ..	दतिया ..	२३ जुलाई
लहार ..	भिण्ड ..	२५ जुलाई
भिण्ड ..	भिण्ड ..	२६ तथा २७ जुलाई

दतिया जिले में सहकारी-कार्य

अपने सदस्य किसानों के लिए अर्थ-प्रबंधन के कार्य के अतिरिक्त दतिया जिले की सहकारी समितियां अब प्रगति पथ पर और भी अग्रसर होकर किसानों की उपज को बेचने का कार्य तक कर रही हैं।

इस वर्ष अप्रेल में दतिया की हाट व्यवस्था सहकारी समिति ने बाजार में किसानों का २०,००० रुपए के मूल्य का अन्न बेचने की व्यवस्था की।

जिले की ४ उत्तम कृषि समितियों को ३,००० रुपए प्रति समिति के हिसाब से १२,००० रुपए की सहायता भी राज्य शासन से प्राप्त हुई है।

भूतपूर्व कैदियों को सहायता

भूतपूर्व कैदी सहायता समिति, देवास ने हाल ही में यह निर्णय किया कि समिति के सदस्यों की संख्या ६७ से बढाकर १०० कर दी जाए। इस समिति का उद्देश्य कारागार से छूटनेवाले कैदियों को अच्छी तरह से अपना जीवनयापन करने में सहायता देना है। जिले के भूतपूर्व कैदियों के संबंध में सूचना एकत्रित करने के लिए जिलास्तर पर एक पन्द्रह सदस्यीय समिति गठित की गई, जिसके अध्यक्ष जिलाध्यक्ष हैं। यह समिति एक प्रश्नावली तैयार कर रही है।

पचास आदिवासी परिवारों का पुन सि

केन्द्र-संचालित कार्यक्रम के अन्तर्गत, जशपुर वन-सम्भाग (रायगढ़ जिला) के तीन गांवों में ५० आदिवासी परिवार बसाए जाएंगे। नवीन कार्यक्रम के अनुसार उक्त सम्भाग में आदिवासी परिवारों को बसाने के स्थान पुनः निश्चित कर लिए गए हैं। अब खुड़िया वन में मधुपुर गांव में ७ परिवार, कुंजर वन रेंज के लोटापानी गांव में १८ परिवार और नारायणपुर वन रेंज के खुरहर्तीफा में २५ परिवार बसाए जाएंगे।

भाषायी अल्पसंख्यक आयुक्त का प्रतिवेदन

१ अगस्त, १९५९ से ३१ अक्टबर, १९६० की अवधि के लिए भाषायी अल्पसंख्यक आयुक्त का प्रतिवेदन बिक्री के लिए उपलब्ध है। वह मैनेजर ऑफ पब्लिकेशन्स, पब्लिकेशन्स ब्रांच, सिविल लाइन्स, दिल्ली --८ से मिल सकता है। प्रतिवेदन की प्रत्येक प्रति का मूल्य ३ रुपए ३५ न.पै. है और उसकी १५० प्रतियां बिक्री के लिए उपलब्ध हैं।

डाकू दल का नेता तथा उसके चार सहयोगी मारे गये

मध्यप्रदेश की पुलिस ने गत २० जून को हुई एक वीरतापूर्ण मुठभेड़ में एक सक्रिय डाकू-दल के नेता देवपुरी बाबा तथा उसके ४ सहयोगियों को गोली से मार गिराया। यह मुठभेड़ मुरैना जिले में श्योपुर पुलिस थाने के अन्तर्गत बाब्जी-कोमार गांव के जंगलों में हुई। इन डाकुओं के पास से कुछ बहुमूल्य सम्पत्ति, जिसमें तीन कलाई-घड़ियां और सोने के जेवर सम्मिलित हैं और एक .३०३ राइफिल तथा .६६ गोलियों और ४ भरमार बन्दूकें बरामद की गईं।

देवपुरी बाबा का यह डाकू दल कई डकैतियों, हत्याओं तथा धन वसूली के लिए अपहरणों के लिए जिम्मेवार था।

दस्यु गिर्दावरी बन्दी बनाया गया

भिण्ड जिले के पुलिस स्टेशन टेहनगुर के अन्तर्गत गुलालपुरा ग्राम का निवासी तथा दस्यु श्रीपाला के दल का सदस्य दस्यु गिर्दावरी गत १७ जून, को दतिया जिले के सेंवढ़ा पुलिस स्टेशन के अन्तर्गत राज्य पुलिस द्वारा बंदी बना लिया गया।

जिला परामर्श समिति की बैठक

टीकमगढ जिला परामर्श समिति की एक बैठक हाल में हुई। जिलाध्यक्ष ने जो इस समिति के अध्यक्ष हैं, सदस्यों को बतलाया कि मई, १९६१ में १२६ भूमिहीन श्रमिकों को ४४१ एकड़ भूमि दी गई।

समिति ने तीसरी योजना में ग्राम औद्योगि संस्थान तथा ग्राम कर्मशाला की स्थापना लिए जतारा गांव का चुनाव किया। १० गांवों में पेयजल के कुएँ खोदने के लिए ५,५५० रु भी स्वीकृत किए गए। आलमपुरा में एक आयुर्वेदि औषधालय आरम्भ करने का निश्चय किया गया।

समिति को यह भी बतलाया गया कि तीन सिंचाई तालाबों का सुधार भी किया जा रहा है जिससे ६४० एकड़ अधिक जमीन की सिंचा में सहायता मिलेगी।

अल्प-बचत अभियान

सागर और दमोह जिलों में मई, १९६१ में जनता द्वारा विभिन्न अल्प-बचत योजनाओं में एक बड़ी निधि नियोजित की गई। एक प्रतिवेदन में कहा गया है कि आलोच्य अवधि में विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत कुल ५,५५,८ रुपए नियोजित किए गए।

दोनों जिलों में इस निधि में से लगभग ३,३६,६३४ रु० पोस्ट ऑफिस सेविंग्ज अकाउन्ट्स में जमा किए गए। १,८०,७३० रुपए के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट खरीदे गए तथा ३,०८० रु निरन्तर वृद्धिशील सावधिक जमा योजना में नियोजित किए गए।

खण्डवा में योजना प्रदर्शनी

पश्चिमी निमाड़ के जिला प्रकाशन कार्यालय द्वारा हाल ही में खण्डवा में पंचवर्षीय योजना प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। यह प्रदर्शनी ९ दिन तक चली तथा इसे लगभग ५०,०० दर्शकों ने देखा। प्रदर्शनी में चार्टों नमूनों तथा चित्रों द्वारा द्वितीय योजना की प्रगति तथा उसकी सफलताओं को दर्शाया गया था। पंचवर्षीय योजना तथा राज्य की प्रमुख योजनाओं सम्बन्धी साहित्य बड़े पैमाने पर वितरित किया गया। प्रदर्शनी में कृषि, पशु-चिकित्सा, शिक्षा, स्वास्थ्य उद्योग तथा अन्य विभागों ने भाग लिया।

भारत सरकार से "रजिस्टर्ड"

सफेद दाग

यह हमारी दवा सन् १९३६ से प्र है, इस दीर्घकाल में हजारों ने इसकी प की और प्रसंसा-पत्र भेजे हैं। आप भी एक अनुभव कर देखें। मूल्य ५ रुपये। अ विवरण मुफ्त मंगाकर देखिये।

वैद्य के. आर. बोरकर (मध्य

मु. पो. मंगरूलपीर. जि. अकोला (महारा

साप्ताहिक समीक्षा

भारत में ध्वनि से तेज गतिवाले विमान का निर्माण

भारत ध्वनि की गति से तेज चलनेवाले जिस लड़ाकू विमान एच. एफ. २४ को बनाने में लगा हुआ था, उसकी बंगलौर में गत २४ जून को सफलतापूर्वक परीक्षात्मक उड़ान की गई।

इस तरह भारत संसार के उन अन्य ५ देशों में शामिल हो गया है, जिन्होंने ऐसे विमान बनाए हैं। विमान की प्रथम उड़ान के समय यहां रक्षा मंत्री श्री वी. के. कृष्ण मेनन उपस्थित थे।

श्री मेनन ने कहा कि ऐसा विमान उनको, जिनके भारत के प्रति बुरे इरादे हैं, अपने इरादे पूरे करने से रोकने के लिए जरूरी है। देश को हमलावरों को हटाना है।

विमान आगे बढ़ते हुए तीर के समान लगता है। इसकी उड़ान धीमी और तेज दोनों गतियों पर काफी सुरक्षित है।

उड़ाके की सुरक्षा के लिए भी इसमें आधुनिकतम यंत्र हैं। अगर विमान में कोई गड़बड़ी हो जाए, तो चालक उड़ते हुए या पट्टी पर दौड़ते हुए दोनों अवस्थाओं में बटन दबाकर सुरक्षित बाहर आ सकता है। ४०–५० हजार फुट की ऊंचाई पर भी, यदि विमान में कुछ खराबी हो जाए, तो चालक सकुशल नीचे आ सकता है, चाहे वह बेहोश भी हो जाए।

इस विमान के निर्माण में ५ वर्ष लगे हैं। यह एशिया में अपनी किस्म का पहला है। भारत से पूर्व इस प्रकार के विमान रूस, अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस तथा स्वीडन ने बनाए हैं।

कारखाने के १७,००० कर्मचारियों के कार्य की सराहना करते हुए श्री मेनन ने ५०० रुपए से कम वेतन पानेवाले सभी कर्मचारियों को २०-२० रुपए इनाम की घोषणा की और विमान के निर्माण से सीधा संबंध रखनेवाले कर्मचारियों को ५०-५० रुपए इनाम दिए जाने की घोषणा की।

उड़ीसा में नए मंत्रि-मंडल द्वारा शपथ ग्रहण

भुवनेश्वर में गत २३ जून को श्री विजयानन्द पटनायक के नेतृत्व में एक ७ सदस्यीय कांग्रेसी मंत्रि-मंडल ने शपथ ग्रहण की।

उड़ीसा के राज्यपाल श्री वाई. एन. सुखठनकर ने सरदार पटेल भवन में गण्यमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में मंत्रियों को उनके पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

नए मंत्रि-मंडल की रचना इस प्रकार है :— श्री विजयानन्द पटनायक (मुख्यमंत्री), श्री बीरेन-मित्र, श्री सदाशिव त्रिपाठी, श्री नीलमणि रावतराय, श्री पवित्र मोहन प्रधान, श्री हरिहरसिंह मरदराज तथा श्री पी० वी० जगन्नाथ राव।

मंत्रियों की सूची को श्री विजयानन्द पटनायक ने भुवनेश्वर पहुंचने के कुछ देर बाद ही अन्तिम रूप दिया।

राजभवन से निम्नलिखित विज्ञप्ति जारी की गई :

"भारतीय संविधान के अनुच्छेद १६४ की धारा १ के अन्तर्गत मिले अधिकारों का उपयोग करते हुए राज्यपाल ने श्री विजयानन्द पटनायक को उड़ीसा का मुख्य मंत्री और अपनी मंत्रि-परिषद् का एक सदस्य नियुक्त किया है। मुख्य मंत्री की सलाह पर राज्यपाल ने निम्नलिखित को उड़ीसा की मंत्रि-परिषद् के सदस्य एवं राज्य-मंत्री नियुक्त किया है :

(१) श्री बीरेन मित्र, (२) श्री सदाशिव त्रिपाठी, (३) श्री पवित्र मोहन प्रधान, (४) श्री नीलमणि रावतराय, (५) डॉ० पी० वी० जगन्नाथ राव, (६) श्री हरिहरसिंह मरदराज।

उड़ीसा में राष्ट्रपति का शासन समाप्त

गत २३ जून को राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्रप्रसाद ने उड़ीसा राज्य में राष्ट्रपति का शासन समाप्त करने की घोषणा की। संविधान की धारा ३५६ के अन्तर्गत गत २५ फरवरी, १९६१ को उड़ीसा राज्य में राष्ट्रपति का शासन लागू करने की घोषणा की गई थी।

संविधान की धारा ३५६ के खंड २ के अन्तर्गत राष्ट्रपति का शासन समाप्त करने की घोषणा एक असाधारण गजट में प्रकाशित की गई थी।

इस्पात कारखानों का उत्पादन बढ़ेगा

भारत के तीनों इस्पात कारखानों भिलाई, राऊरकेला तथा दुर्गापुर का उत्पादन तीसरी पंच-वर्षीय योजना के अन्त तक दुगना अर्थात ६० लाख टन वार्षिक होने की आशा है। भिलाई का उत्पादन अभी १० लाख टन वार्षिक है, जो २५ लाख टन होनेवाला है। यह कारखाना रूसी सहयोग से स्थापित हुआ है और रूसी इंजीनियरों ने इसके विस्तार की एक योजना भारत सरकार के विचारार्थ प्रस्तुत की है।

इसी प्रकार राऊरकेला और दुर्गापुर कारखाने के विस्तार के लिए भी भारत सरकार विश्व-स्तर पर टेंडर मांगेगी।

राऊरकेला की वर्तमान उत्पादन-क्षमता १० लाख टन वार्षिक है, जो योजना के अन्त तक १८ लाख टन हो सकेगी। इसी प्रकार दुर्गापुर कारखाने की क्षमता १० लाख टन से १६ लाख टन बढ़ाई जानेवाली है।

सरकार बिहार में स्थापित होनेवाले चौथे कारखाने को उच्च प्राथमिकता दे रही है और उसका उत्पादन भी इसी प्रकार बढ़ाया जाएगा।

कछार जिला 'उपद्रवग्रस्त क्षेत्र'

असम के राज्यपाल जनरल एस० एम० श्रीनागेश ने असम उपद्रवग्रस्त क्षेत्र अधिनियम १९५५ की ३ री धारा के अन्तर्गत समस्त कछार जिले को गत २३ जून से तीन मास के लिए 'उपद्रवग्रस्त क्षेत्र' घोषित कर दिया है।

प्रधान मंत्री श्री नेहरू को भेंट

नई दिल्ली में गत २२ जून को पं० मोतीलाल नेहरू के जीवन तथा कार्य से संबंधित दो पुस्तकें प्रधान मंत्री नेहरू को भेंट की गईं। पुस्तकों का नाम है: "वाईस ऑफ फ्रीडम", जिसमें मोतीलाल नेहरू के भाषण हैं और दूसरी है जीवन चरित्र: "मोतीलाल नेहरू, ए शॉर्ट बायोग्राफी।"

अमरीकी द्वारा भारतीय जीवन का अध्ययन

अमरीका के ३५ युवक व युवतियों का एक दल गत २३ जून को बम्बई पहुंचा। ये लोग ७ सप्ताह तक भारतीय परिवारों के साथ रहेंगे और भारतीय जीवन के बारे में जानकारी हासिल करेंगे।

धातुओं में दरारें पता लगाने की विधि

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला में देशी माल से ही वह चुम्बकीय तरल पदार्थ बनाने की दो विधियां निकाली हैं, जो लौह धातुओं में दरारें पता लगाने में काम आता है। इस तरह के तरल पदार्थ अभी तक विदेशों से मंगाए जाते हैं। भारत में बनने पर इनकी लागत एक रुपया प्रति लिटर बैठने का अनुमान है।

तरल पदार्थ बनाने के ५०० किलोग्राम के प्लांट पर लगभग १० हजार रुपए खर्च होने का अनुमान है। इसके चलाने का खर्च लगभग ५ रुपये प्रति किलोग्राम बैठेगा।

इंजीनियरों के लिए योजना

भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय ने देश में इंजीनियरों की बढ़ती हुई मांगों को देखते हुए स्वयं ही इंजीनियर प्रशिक्षित करने की व्यवस्था की है और १५ जुलाई से शिक्षण-क्रम शुरू करने का प्रबंध कर लिया गया है।

रक्षा मंत्रालय के अनुसंधान और विकास विभाग के देश के विभिन्न भागों में स्थापित १४ केंद्रों में से करीब १२ में यह प्रशिक्षण योजना शुरू होगी और इंजीनियरी परीक्षा के लिए विद्यार्थी तैयार किए जाएंगे। प्रति वर्ष प्राय: १,५०० विद्यार्थियों को सिविल, इलैक्ट्रिकल और मैकेनिकल परीक्षाओं के लिए तैयार किया जाएगा। दिल्ली में ही २५० प्रशिक्षार्थियों के लिए प्रबंध किया गया है। शुरू में १५० के लिए व्यवस्था करने की योजना थी।

तीसरी योजना की सफलता के लिए अधिकाधिक इंजीनियर तैयार करने के उद्देश्य से बनाई गई इस योजना का एक लाभ यह भी होगा कि रक्षा विज्ञान संगठन में कार्य कर रहे वैज्ञानिकों की योग्यता और अनुभव का लाभ उठाया जा सकेगा। हर केंद्र में ऐसे विशेषज्ञ प्रशिक्षार्थी-इंजीनियरों की कक्षाएं लिया करेंगे।

देश में इंजीनियरी शिक्षा प्राप्ति के इच्छुक व्यक्तियों का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि अकेले दिल्ली में ही मूल १५० स्थानों के लिए ८०० से अधिक आवेदन-पत्र प्राप्त हुए थे।

खादी-ग्रामोद्योग विकास के लिए राशि

अधिकृत रूप से पता चला है कि खादी और ग्रामोद्योग के लिए तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तिम प्रारूप में ८९ करोड़ रुपए की राशि की विशेष व्यवस्था की गई है। भारत क तमाम उद्योगों के लिए जितनी राशि दी जाएगी, खादी तथा ग्रामोद्योग के लिए उसका ५ प्रतिशत दिया जाएगा।

उक्त राशि में से ६९ करोड़ रुपए की बड़ी रकम खादी पर व्यय की जाएगी और शेष राशि ग्रामोद्योग के विकास के लिए काम में लाई जाएगी।

विदेशों को वनस्पति तेल का निर्यात

कांडला के बंदरगाह से अलकोहल तो भारत से बाहर के देशों को निर्यात किया ही जा रहा है, अब वहां से शीघ्र ही वनस्पति तेल और चीनी का भी निर्यात विदेशों को किया जाने लगेगा।

देश के विभिन्न भागों से वनस्पति तेल रेल द्वारा कांडला पहुंचेगा और फिर वहां से वह अधिकतर ब्रिटेन को भेजा जाया करेगा।

इस तरह कांडला के नए बन्दरगाह का महत्त्व दिन प्रतिदिन स्पष्ट रूपसे बढ़ता जा रहा है।

भारत-यूनान सांस्कृतिक समझौता

भारत और यूनान के बीच गत २२ जून को एक सांस्कृतिक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जिसके अन्तर्गत दोनों देशों के बीच सब क्षेत्रों में सांस्कृतिक सहयोग की व्यवस्था है।

डी. डी. टी. कारखाने के कर्मचारियों को पुरस्कार

हिन्दुस्तान इंसेक्टीसाइड्स लि० के प्रबंधक निर्देशकों ने अलवाए और दिल्ली के डी. डी. टी. कारखानों के कर्मचारियों को लक्ष्य से अधिक उत्पादन के लिए ८० हजार रुपए पुरस्कार देने की मंजूरी दी है। ये पुरस्कार १९५९-६० के लिए दिए जाएंगे। डी. डी. टी. कारखाने के कर्मचारियों को लक्ष्य से अधिक उत्पादन के लिए यह तीसरी बार पुरस्कार दिया जारहा है।

छोटे उद्योगों को ऋण की सुविधा

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की छोटे उद्योगों को ऋण देने की योजना के अन्तर्गत इस साल मार्च के अन्त तक २,६३३ कारखानों को लगभग करोड़ रुपया ऋण दिया गया। छोटे उद्योगों को स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के अलावा राज्यों के वित्त निगमों और सहकारी तथा अन्य बैंकों से भी ऋण मिलता है। यह सूचना स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही रिपोर्ट में दी गई है।

कानूनों का हिन्दी में अनुवाद

भारत सरकार ने कानूनी विशेषज्ञों का स्थायी आयोग बनाया है। इसे राजभाषा (कानून संबंधी) आयोग कहा जाएगा और यह जहां तक हो सकेगा, सभी भारतीय भाषाओं में प्रयोग के लिए कानूनी शद्वावली तैयार करने तथा कानूनों का हिन्दी अनुवाद करने के पूरे काम की योजना तैयार करेगा और उसे चलाएगा।

आयोग का काम यह होगा:जहां तक हो सके सभी भारतीय भाषाओं में प्रयोग करने के लिए कानूनी शद्वावली तैयार और प्रकाशित करना; सभी केंद्रीय अधिनियमों, अध्यादेशों और राष्ट्रपति के विनियमों को अधिकृत रूप से हिन्दी में तैयार करना, केंद्रीय अधिनियमों, अध्यादेशों और राष्ट्रपति के विनियमों का राज्यों की सरकारी भाषा में अनुवाद कराने का प्रबंध करना और किसी राज्य में जो अधिनियम पास हों और अध्यादेश जारी हों, वे यदि हिन्दी के अलावा किसी अन्य भाषा में हों, तो उनका हिन्दी अनुवाद तैयार करने का प्रबंध करना तथा अन्य काम करना, जिन्हें भारत सरकार समय-समय पर आयोग को सौंपे।

प्राचीन भारतीय शैल स्तम्भों के शीर्ष परगहे

(पृष्ठ १७ का शेष)

काठमांडू (नैपाल) के एक बौद्ध मन्दिर में बौद्ध देवी तारा की एक धातु निर्मित ललित मूर्ति एक स्तम्भ के परगहे को सुशोभित कर रही है।

राष्ट्रपति भवन के सामने एक लौह स्तम्भ है, जिसका शीर्ष परगहा डमरूनुमा पत्थर का है। इसके ऊपर धातु का कमल है और सबसे ऊपर धातु का एक नक्षत्र है।

इन स्तम्भों के मूर्तिजड़ित शीर्ष रसज्ञों के लिए आनन्द के अजस्र स्रोत हैं। पश्चिमी कला के गर्वाभिभूत कलामर्मज्ञों के मस्तक भी इन परगहों की सजीवता के सामने नत मस्तक हैं।

न्यायालय कोर्ट तहसीलदार परगना शिवपुरी म. प्र.

शीर्षक

गौकुलदास पुत्र मुर्लीधर कौम वैश्य ग्राम धौलागढ़ वादी.

विरुद्ध

सूखा चिन्टू पुत्र फोदी कौम चमार निवासी ग्राम धौलागढ़ लापता प्रतिवादी वाद दुरुस्ती इन्द्राज सर्वे नं. १५११।१ रकबा ।।।ऽ लगानी १)

सम्बोधितः--चिन्टू पुत्र फोदी कौम चमार निवासी धौलागढ़।

विज्ञप्ति

इस विज्ञप्ति द्वारा सूचित किया जाता है कि वादि ने इस न्यायालय में वाद पत्र दुरुस्ती इन्द्राज पेश किया है ओर तारीख पेशी १९ जुलाई १९६१ नियत है यदि आपको उक्त सम्बन्ध में कोई आपत्ति हो तो स्वयं या अभिभाषक द्वारा उक्त दिनांक को कार्यालिय तहसील शिवपुरी में उपस्थित होकर पेश करो इसके पश्चात कोई आपत्ति नहीं सुनी जाएगी।

मेरे हस्ताक्षर व मुद्रा सहित आज दिनांक १७ जून, १९६१ को जारी किया गया है।

आर. वी. सिह

तहसीलदार परगना व जिला शिवपुरी.

म० प्र०

१३२-२९)

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER CHAMBAL CANAL DISTRIBUTARY DIVISION No. I, SEOHPUR-BARODA, MADHYA PRADESH.

Corrigendum

Please refer to the tender notice No. 1/61-62 and read the last sentence as "The tender will be opened in presence of such tenderers or their authorised representatives who may be present on 4.30 P.M. on 17th July 1961" instead of 4.30 P.M. on 17th June 1961.

Other conditions of the tender will remain unchanged.

Executive Engineer,
Chambal Canal Distributary Division No. I,
Sheopur-Baroda, M. P.

135/29-30.

GWALIOR IMPROVEMENT TRUST, GWALIOR, MADHYA PRADESH.

Applications are invited for one Post of Overseer in the Pay Scale of Rs. 100-5-150-EB-10-250, plus all usual allowances admissible for the post as per State Government scales. Post is permanent on provident fund basis after confirmation. No advantage of any gratuity or pension. **Age:**—below 40 years relaxable for Govetnment servants or specially qualified and experienced candidates.

Qualifications Essential:—Diploma in Civil Engineering of any recognised Institution and at least four years Experience of Development Works.

Applications with necessary Attested-Testimonials should reach the undersigned on or before 15th July 1961. Selected candidates will have to appear for interview at their own expenses.

J. K. SARAN, Engineer and Secretary, Gwalior Improvement Trust, Gwalior.

136/29.

कार्यालय तहसील चाचौडा म. प्र.

सूचना

श्री नारायण प्रसाद पुत्र धन सुन्दर, जाति ब्राह्मण निवासी आंतरी तहसील आंतरी जिला गिर्द.

जो कि आपके विरुद्ध प्रकरण क्रमांक ३४।६०-११६, ३५।६०-११६ में भूमि क्रमांक १७ रकवा १३।।।), भूमि क्रमांक १२ रकवा ६।।ऽ४ का वंशीलाल बालमुकुन्द पन्नालाल गंगाधर कांदयाखेड़ो कंला ने धारा ११६ भू राजस्व संहिता के अन्तर्गत पेश किया है अतः आपको सूचना दी जाती है कि दिनांक २१ जुलाई, १९६१ को समय ११ बजे दिन के तहसील कार्यालय में मय अभिभाषक के या स्वयं आप उपस्थित होकर पक्ष समर्थन करें।

एस. डी. जाधव

तहसीलदार, कोर्ट परगना चाचौड़ा, जिला गुना.

१३३-(२९)

सफेद दाग

सतत् परिश्रम एव खोज के बाद सफेद दाग की औषधि का निर्माण किया गया है। सन १९३५ से हजारों ने इसका अनुभव करके लाभ उठाया है। दवा का मूल्य ६) रुपया विशेष जानकारी के लिए विवरण पत्र मुफ्त मंगाकर देखें। नक्कालों से सावधान रहें।
वैद्य बी. आर. बोरकर, आयुर्वेद भवन (२५)
मु. पो. मंगरूलपीर जिला अकोला (महाराष्ट्र)

शासन की गतिविधि

मध्यप्रदेश विक्रय कर नियमों में संशोधन

गत वर्ष उज्जैन में मध्यप्रदेश के व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधियों एवं विक्रय कर प्राधिकारियों का एक संयुक्त सम्मेलन हुआ था, जिसमें यह तय किया गया था कि व्यापारी वर्ग की सहूलियत के लिए मध्यप्रदेश विक्रय कर (केन्द्रीय) नियमों में ऐसा संशोधन किया जावे कि घोषणा पत्रों नमूना "ग" के फार्म विक्रय कर कार्यालयों से नगदी रकम देकर खरीदा जा सके व साथ ही चालान फार्म चार प्रतियों में भरा जावे, ताकि उनकी एक प्रति जमा करनेवाला व्यापारी अपने पास रख सके।

उक्त निर्णय के अनुसार हाल ही में शासन ने उक्त नियमों के नियम ८ व ११ में संशोधन किया है।

अतः अब यदि किसी भी रजिस्टर व्यापारी को घोषणापत्रों की पुस्तक खरीदना हो और उनका किसी एक समय में मूल्य १० रुपए से अधिक न हो, तो विक्रय कर प्राधिकारी के कार्यालय में नगदी रकम देकर पुस्तक प्राप्त कर सकता है।

साथ ही आगे के लिए सरकारी खजाने में पैसा जमा करने के लिए चालान की चार प्रतियां भर कर दे सकते हैं, जहाँ से उनको दो वापस मिलेंगी। इनमें से एक जिस पर "तृतीय प्रति" लिखा हो, कर-निर्धारण प्राधिकारी को भेजने हेतु भुगतानकर्त्ता को देने के लिए लिखा है। विक्रय-कर अधिकारी को रिटर्न या अन्य किसी आवेदन-पत्र या याचिका के साथ भेजना चाहिए। शेष एक प्रति जिस पर "चतुर्थ प्रति" लिखा हो, व्यापारी अपने पास रख लें। यह ध्यान में रखा जावे कि विक्रय कर कार्यालय में केवल "तृतीय प्रति" ही चालान की स्वीकार की जावेगी।

मध्यप्रदेश सामान्य विक्रय कर अधिनियम १९५९ व मध्यप्रदेश मोटर स्पिरिट विक्रय कराधान अधिनियम, १९५८ के अधीन भी इसी प्रकार के चार प्रतियों के चालान शीघ्र निर्धारित किए जा रहे हैं। मध्यप्रदेश विक्रय कर (केन्द्रीय) नियम, १९५७ के अधीन अब निर्धारित हुए चार प्रतियों के चालान की मुद्रित प्रतियां यथाशीघ्र विक्रय कर कार्यालय को भेजी जावेगी।

मिश्र खाद उत्पादन की वृद्धि

खाद के उपयोग को लोकप्रिय बनाने तथा उसके उत्पादन में वृद्धि करने की दृष्टि से राज्य सरकार ने स्थानीय मिश्रखाद विकास योजना के अन्तर्गत नगरपालिकाओं, ग्राम पंचायतों और किसानों को ऋण के रूप में वित्तीय सहायता देने का निश्चय किया है।

नगरपालिका को ट्रेक्टर ट्राली आदि क्रय करने के लिए २०,००० रुपए तथा फिल्टर औजारों के लिए २०० रुपए तक का ऋण दिया जावेगा। इसी प्रकार छोटी ग्राम पंचायतों को खाद तैयार करने की व्यवस्था करने के लिए ३५,०० रुपए तक ऋण मिलेगा। स्थानीय संस्थाओं को यह ऋण ५ वार्षिक किश्तों में लौटाना होगा।

इन रियायतों के अन्तर्गत, हरी खाद के उत्पादन और प्रयोग को लोकप्रिय बनाने के लिए किसानों को द्विगुणित करने के लिए वितरित किए जाएँगे।

कृषक द्वारा तैयार की गई खाद, अन्य किसानों को खेतों में उपयोग के लिए वितरित की जाएगी। किसान को यह ऋण कटाई के बाद एक किश्त में लौटाना पड़ेगा और वह अपने उत्पादन में से जितनी हरी खाद वितरित करेगा, उस पर १ रुपए प्रति मन के हिसाब से छूट दी जाए

इस सम्बन्ध में विवरण सम्बन्धित क्षेत्र कृषि विभाग तथा खण्ड विकास अधिकारि प्राप्त किया जा सकता है।

जबलपुर के लिए अवैतनिक दण्डाधिका

राज्य सरकार ने श्री ढी. पी. एस. गौर श्री वसन्त वाजपेयी को जबलपुर जिला में प्र श्रेणी का अवैतनिक दण्डाधिकारी नियुक्त कि है। राज्य सरकार ने श्री राधेश्याम अग्र डॉक्टर (श्रीमती) उर्मिला दुबे और श्री एम. पोहनकर को भी अवैतनिक दण्डाधिकारी नि किया है। ये तीन दण्डाधिकारी एक बैंच में साथ बैठेंगे और जबलपुर जिले में तीसरी के दण्डाधिकारी की शक्तियों का प्रयोग कर

जबलपुर जिले में सहायता-कार्यों के अतिरिक्त राशि निर्धारित

मध्यप्रदेश सरकार ने जबलपुर संभाग आयुक्त के अधिकार में ३,००० रुपए की अति राशि सौंपी है, जिससे वे १९६१–६२ के वर्त वर्ष में पीड़ितों को आग, बाढ और इसी प्र की अन्य आपत्तियों से क्षतिग्रस्त अपने घरों को सुधारने अथवा फिर से बनाने में सहायता दे

सुपरफास्फेट का विक्रय-मूल्य निश्चि

सरकार ने १९६१–६२ में समस्त रा लिए सुपरफास्फेट का विक्रय मूल्य २८० प्रति टन निश्चित किया है, जिसमें सब आनु व्यय सम्मिलित है, परन्तु कृषि के लिए वा विक्रय मूल्य २५ प्रतिशत द्रव्य सहायता घटा बाद २१० रुपए प्रति टन रहेगा।

ग्राहकों से निवेदन

ग्राहकों से निवेदन है कि पत्र- करते समय वे ग्राहक नंम्बर देना न भूलें न करने की दशा में उनकी ओर से प्राप्त उचित समय में ठीक कार्यवाही करने में को कठिनाई होती है और कतिपय कार्यवाही करना ही असम्भव हो जाता

—मैनेजर

हाल ही में गुजराती कॉलेज, इंदौर में आयोजित मध्यप्रदेश तथा राजस्थान खादी ग्रामोद्योग सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राज्य के उद्योग एवं राजस्व मंत्री श्री भगवंतराव मण्डलोई

* * *

गत ११ जून को गाँधी हॉल, इंदौर में एक त्रि-दिवसीय अखिल भारतीय आम प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। चित्र में विजेताओं को राज्य के वितमंत्री श्री मिश्रीलाल गंगवाल पारितोषिक वितरण करते हुए। दाहिनी ओर प्रदर्शनी में प्रदर्शित अनेक किस्मों के आम दिखाई दे रहे हैं

MADHYA PRADESH SANDESH
Registered No. 158
Licenced to post Without prepayment
वार्षिक मूल्य छः
Licence No. P. P. 1

सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय, मध्यप्रदेश के प्रका

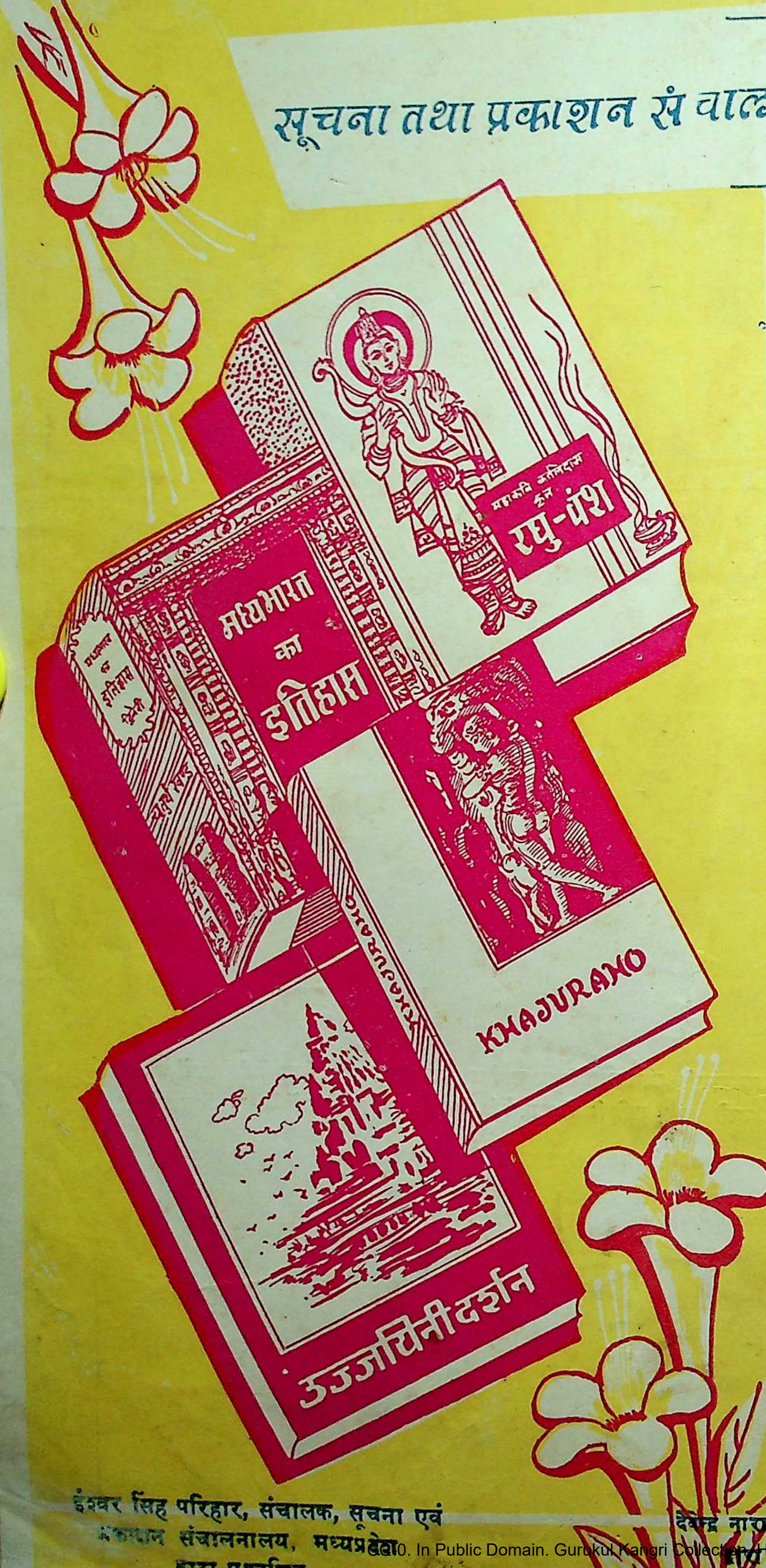

खजुराहो—

विश्वविख्यात स्थापत्य कला की अनुपम
खजुराहो के विख्यात मंदिरों का इतिहास और उ
सचित्र परिचय और १०२ चित्र प्लेट
पेपर पर हिन्दी अंग्रेजी में मूल्य १० रु.

उज्जयिनी दर्शन—

उज्जैन पर पुरातत्त्व संबंधी खोजों और पौ
णिक तथ्यों के साथ रायल चौपेजी पृष्ठ
मूल्य ३ रु.

रघुवंश—

कालिदासरचित संस्कृत काव्य के
रूपान्तर सहित ९" × ६" में एण्टिक कागज
४०० पृष्ठ मूल्य ६ रु.

मध्यभारत का इतिहास—भाग ४

मध्यभारत क्षेत्र की सांस्कृतिक साहित्यिक
राजनैतिक गतिविधियों का पूर्ण परिचय
रायल अठपेजी पृष्ठ-संख्या ४३४ मूल्य १०

प्राप्तिस्थान

व्यवस्थापक,
प्रकाशन शाखा, सूचना तथा प्रकाश
संचालनालय मध्यप्रदेश, जयाजी चौक, ग्वालि

★

ईश्वर सिंह परिहार, संचालक, सूचना एवं
प्रकाशन संचालनालय, मध्यप्रदेश
द्वारा प्रकाशित

देवेन्द्र नारायण वाजपेयी, मुख्य सम्पादक, सूचना-प्रकाशन संचालना
द्वारा सम्पादित तथा गवर्नमेंट रीजनल प्रेस, ग्वालियर द्वारा
एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे

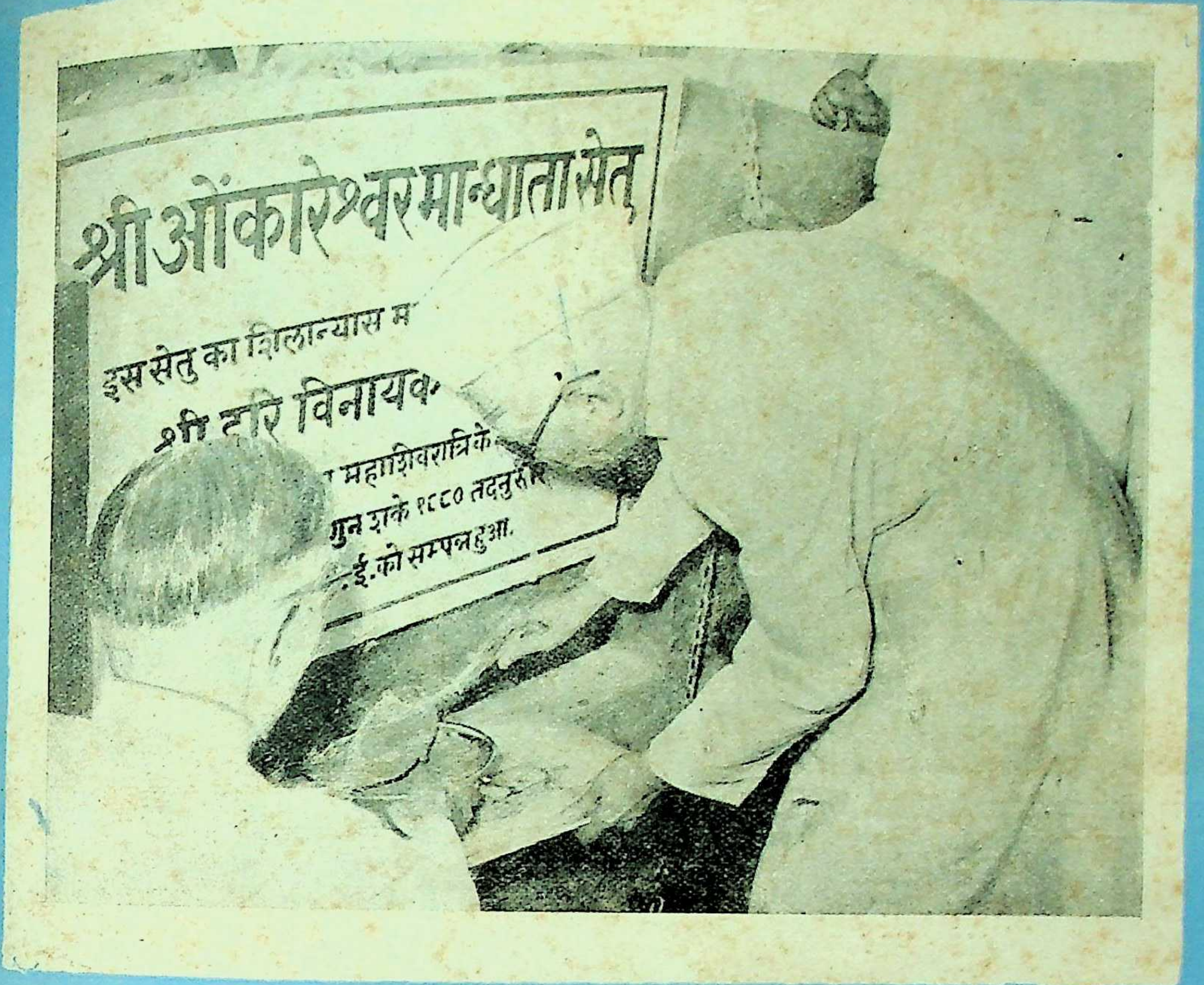
श्री ओंकारेश्वर मान्धाता सेतु
इस सेतु का शिलान्यास म
श्री हरि विनायक
महाशिवरात्रि के
गुन शके १८८० तदनुसार
ई. को सम्पन्न हुआ.

ग्वालियर, शनिवार, २८ मार्च, १९५९
चैत्र ७, १८८१
वर्ष ३ : अंक १६

मध्यप्रदेश सन्देश

जापान की फ़ूजी आयरन स्टील कं० लि० के अध्यक्ष श्री एस० नागानो, के नेतृत्व में नौ व्यक्तियों का एक प्रतिनिधि मंडल भोपाल पहुंचा। चित्र में श्री एस० नागानो राज्य के मुख्य मंत्री डॉ० काटजू से बातचीत करते हुए दिखाई दे रहे हैं

* * *

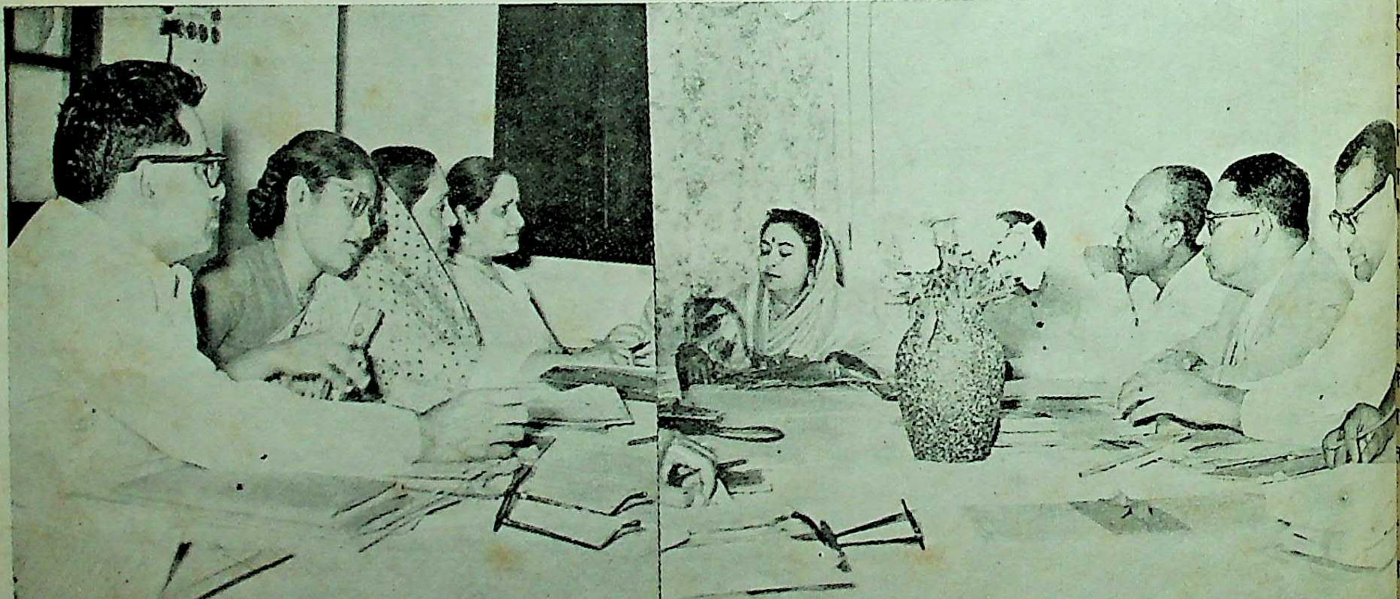

स्वास्थ्य मंत्राणी श्रीमती रानी पद्मावती देवी, अपने निवास-स्थान पर राज्य परिवार नियोजन मंडल की प्रथम बैठक में उद्घाटन-भाषण करती

सचित्र साप्ताहिक
मध्यप्रदेश सन्देश

अस्पृश्यता का कलंक

हमारे देश में एक बहुत बड़ी जन-संख्या मनुष्यों की रही है, जो सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक–सभी दृष्टियों से पिछड़े हुए ों के अन्तर्गत आते हैं। इन वर्गों को उच्च ों द्वारा अनेकानेक शताब्दियों से उपेक्षित अस्पृश्य समझा जाता रहा है। यद्यपि देश दीर्घकाल से अस्पृश्यता-निवारण का आन्दोलन री है और देश के स्वतंत्र होने के पूर्व ही से जन-उत्थान की दिशा में महत्त्वपूर्ण व्यापक र-कार्य होता रहा है। देश की राजनीतिक ीनता के समान ही हरिजनोद्धार राष्ट्र- गांधीजी के जीवन का एक ऐसा मिशन जिसमें उनका रोम-रोम रमा हुआ था। कारण है कि उन्होंने भवनों तथा बंगलों अपेक्षा भंगी बस्ती में ठहरना अधिक पसन्द ा। अपने प्रमुख पत्रों का नाम 'यंग इंडिया' 'नवजीवन' से बदलकर उन्होंने 'हरिजन' 'हरिजन सेवक' रखा। वास्तव में महात्मा ने हरिजनोद्धार के रूप में राष्ट्र की जो की, वह देश की राजनैतिक मुक्ति से किसी कम नहीं ठहरती।

जब सन् १९३७ में प्रान्तों में मंत्रि-मंडलों स्थापना सन् १९३५ के भारतीय विधान के ंत हुई, तो प्रान्तीय शासनों ने हरिजनोद्धार र्य को बड़े उत्साह के साथ हाथ में लिया। लिए योजनाएँ बनाई गईं और विशेष कारियों तथा विभागों को उन्हें कार्या- करने का भार सौंपा गया। किन्तु १९३९ में लोकप्रिय मंत्रि-मण्डलों त्यागपत्र दे देने के कारण हरिजनों के न के जो प्रयत्न आरम्भ किये गये थे, वे स्थगित हो गये, पर अस्पृश्यता के निवारण जो मार्ग प्रशस्त किया जा चुका था, वह भविष्य की प्रगति के लिए अत्यन्त सहायक सिद्ध हुआ।

हरिजनोद्धार का जो कार्य सन् १९३९ में रुक गया था, देश के स्वाधीन होते ही पुनः प्रारम्भ किया गया। यह कार्य विशेष रूप से पिछड़े हुए वर्ग में शिक्षा प्रसार, उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार तथा विविध विधानों के निर्माण द्वारा उनकी सामाजिक अयोग्यताओं के निवारण, सहकारी समितियों की स्थापना और उनमें कुटीर-उद्योगों के प्रसार के रूप में किया गया। उनके लिए स्वास्थ्यप्रद और सुविधाजनक निवास-व्यवस्था की योजना भी बनाई गई।

देश के संविधान द्वारा शासकीय सेवाओं में नौकरी देने के लिए उन्हें विशेष सुविधाएँ प्रदान की गईं। संविधान के अनुसार हरिजनों के समस्त नागरिकों के समान अधिकार माने गये तथा यह स्पष्ट कहा गया कि राज्य की ओर से किसी नागरिक के विरुद्ध केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग तथा जन्म-स्थान के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जायगा।

यद्यपि केन्द्रीय एवं राज्य शासनों द्वारा देश में अस्पृश्यता निवारण के लिए अधिक से अधिक प्रयास किये जा रहे हैं, किन्तु भारतीय समाज में जाति-पांत, ऊंच-नीच और छुआछूत की जड़ें बहुत पुरानी तथा गहरी हैं और उनके निवारण के लिए केवल शासकीय प्रयास ही पर्याप्त नहीं समझे जा सकते; क्योंकि अस्पृश्यता-निवारण का कार्य हृदय-परिवर्तन की वस्तु है। इसके लिए निःस्वार्थ भाव से कार्य करनेवाले समाजसेवी व्यक्तियों की आवश्यकता भी है, जोकि समाज से अस्पृश्यता का कलंक मिटाना अपना धर्म तथा परम कर्त्तव्य समझें।

हाल ही में भोपाल के निकट साँची में मध्यप्रदेश दलित वर्ग द्वारा आयोजित पांच दिवसीय संगोष्ठी का समारोप करते हुए केन्द्रीय गृह विभाग के मंत्री श्री बी० एन० दातार ने ठीक ही कहा है कि सरकार अस्पृश्यता के कलंक को दूर करने के हेतु कृतसंकल्प है। इस सम्बन्ध में वह यथाशक्य धनराशि व्यय करती आ रही है। चूंकि सरकारी आर्थिक सहायता की व्यवस्था फिलहाल आगामी दो वर्षों तक के लिए ही रहेगी। अतः श्री दातार ने इस अवधि के भीतर ही अस्पृश्यता-निवारण सम्बन्धी कार्य करने की और भी अधिक आवश्यकता प्रतिपादित की है। आपने इस समस्या के निवारण के हेतु सामाजिक कार्यकर्ताओं से स्पष्ट कहा है कि वे यह न भूल जायँ कि छुआछूत का वास्तविक निवारण कानून के सहारे नहीं, बल्कि प्रेम के बल पर ही संभव है। इसमें सन्देह नहीं कि मंत्री महोदय ने इस सामाजिक समस्या के निवारण के हेतु शासकीय आर्थिक सहायता और प्रयासों से अधिक स्वतंत्र रूप से सामाजिक कार्यों द्वारा प्रयत्नों को अधिक महत्त्व दिया है, जो उचित ही है; क्योंकि अस्पृश्यता-निवारण के लिए हृदय-परिवर्तन होना आवश्यक है।

मुखपृष्ठ का चित्र

ओंकारेश्वर-मान्धाता में नर्मदा के पुल का
शिलान्यास करते हुए राज्यपाल
श्री हरि विनायक पाटसकर

निर्माण की दिशा में

देश में गरीबी व बेकारी को मिटाकर सामाजिक न्याय व समानता स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि हम देश के निर्माण में लग जायें।

*

देश के निर्माण के लिये हमें अच्छे-अच्छे होशियार इंजीनियर तैयार करने होंगे। आज का युग विज्ञान का युग है, जिसमें प्रतिदिन मनुष्य प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के लिये नए-नए तरीके निकाल रहा है। ऐसी अवस्था में हमारे इंजीनियर व विज्ञानवेत्ता पुरानी रूढ़ि की शिक्षा में ही उलझे रहे तो हम प्रगति नहीं कर सकेंगे। इंजीनियरिंग के छात्र इंजीनियरिंग के उच्च स्तर को कायम रखें तथा सेवा भावना से काम करें तभी हमारे राष्ट्र का चहुंमुखी उत्थान हो सकेगा।

—श्री गोविन्दवल्लभ पंत

भारत में राजनैतिक क्रांति आर्थिक क्रांति के बाद हुई है, जबकि पश्चिम में इससे विपरीत हुआ है। हमें हर प्रकार की प्रगति से पहले देश में खाद्योत्पादन बढ़ाने की चिन्ता है। यह ठीक है कि पिछले कुछ वर्षों की अपेक्षा उत्पादन में वृद्धि हुई है, परन्तु हमें अपना अन्नोत्पादन इतना अधिक बढ़ाना है, ताकि हम विदेशों पर निर्भर न रहें।

*

भारतीय जनता में से ८५ प्रतिशत लोग गांवों में रहते हैं और उनकी रोटी खेती से चलती है। हमें चाहिए कि इनमें से आधे लोग उद्योग की ओर आएं ओर आधे लोग खेती को वैज्ञानिक तरीके से करें, ताकि वह आर्थिक दृष्टि से अधिक लाभदायक हो सके। साथ ही उत्पादन कम से कम डयोढा अवश्य बढ़ा लेना चाहिए और यह बात पुराने तरीके की खेती से संभव नहीं है।

—श्री मेनन

भारत देश बड़ा है। छोटा दिल रखकर हम इसे महान राष्ट्र नहीं बना सकते। पुराने जमाने में राजस्थान के राजा तनिकसी बातों पर आपस में लड़ते-भिड़ते रहे। आजादी मिलने के बाद आज भी देश में धर्म, भाषा और जाति के प्रश्नों को लेकर बराबर उपद्रव होते रहते हैं। आखिर इन मतभेदों के रहते हमारी यह स्वतंत्रता कैसे टिकेगी।

*

मैं चाहता हूं कि देश का प्रत्येक व्यक्ति संस्कृत का अध्ययन करे, क्योंकि यह हमारे देश की संस्कृति की वास्तविक प्रतीक है।

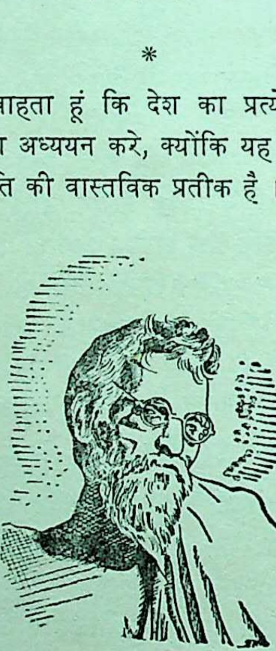

सरकार से इसके अध्ययन को अनिवार्य बनाने की मांग करना इस अमृत भाषा का अपमान करना है। जिस प्रकार भोजन के लिए हमारे मन में स्वतः इच्छा जागृत होती है। उसी प्रकार संस्कृत पढ़ने के लिए भी हममें स्वाभाविक अभिलाषा उत्पन्न होनी चाहिए।

*

मातृभाषा हमारी एक आंख है, राष्ट्रभाषा दूसरी। यदि हम इनमें से एक न पढ़ें तो एकाक्ष हो जाएंगे, परन्तु संस्कृत हमारा ज्ञाननेत्र है। इसे पढ़कर व्यक्ति त्रिनेत्र अर्थात भगवान शंकर का रूप हो जाता है।

मैं ग्रामदान की मांग इसलिए कर
यह हमारे जीवन को सुव्यवस्थित रूप में
करने का बहुत पुराना स्वरूप है। मैं
कि उसकी पुनः प्रतिष्ठा हो तथा गांव
व्यक्ति अपनी जमीन को एक मानकर
समान रूप से उपभोग करें और
अधिकाधिक उपज बढ़ाएँ।

—आचार्य विनो

आज हमें आर्थिक आजादी की
को जनशक्ति को संजोकर दृढ़ करना है।
सुधार व सहकारी कृषि के प्रस्तावों पर
है। ये प्रस्ताव कोई नए क्रांतिकारी
हैं, यह तो बापू की बताई बहुत पहले की
धारा ही है। गरीबी व बेकारी को
के लिए हमें घर-घर व गली-गली में छोटे
धन्धे पनपाने का प्रयत्न भी करना है।
साथ-साथ कर्त्तव्य भी हैं। महिलाओं
निर्माण कार्यों में योग देना चाहिए।
में एक ओर बेकारी है और दूसरी
विदेशों से विशेषज्ञ लाते हैं। इन परस्पर
बातों में हमें समन्वय करना है। हमें
विचारधारा बदलनी है।

—श्रीमती इन्दिरा

इस अंक में

लेखक और रचनाएं

१. निमाड़ : अतीत के गौरवशाली पृष्ठों में
—श्री रामनारायण उपाध्याय
२. हमारी जल-विद्युत्-योजनाएँ ..
३. देव मेरे (कविता) .. ..
—श्री नरेंद्र शर्मा
४. गांधी और गीता .. ..
—श्री गोवर्धनदास मेहता
५. मलाई (एकांकी नाटक) ..
—डा० वृन्दावनलाल वर्मा
६. मध्यप्रदेशीय कोक साहित्य : ..
कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियां ..
७. मधुमास बिहंसता आया (कविता)
—श्री शैवाल सत्यार्थी
८. खाद तैयार करके पैदावार बढ़ाइए
—श्री एम. एस. शिवरमण

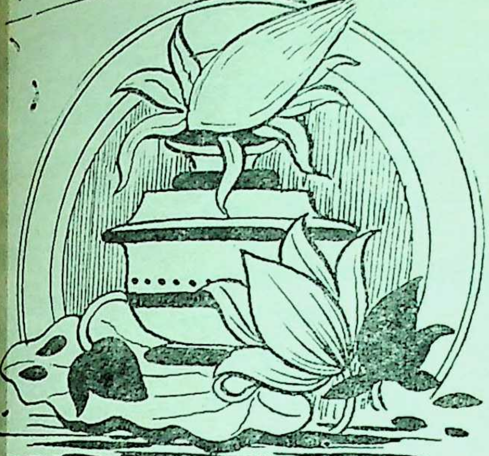

निमाड़—अतीत के गौरवशाली पृष्ठों में

--श्री रामनारायण उपाध्याय

निमाड़ के प्राचीन इतिहास की खोज करने से पता चलता है कि सुदूर रामायण काल में (ईस्वी पूर्व १६०० के) (१) यहां पर माहिष्मती (आधुनिक महेश्वर) को राजधानी के रूप में लेकर एक सशक्त राज्य स्थापित था। महेश्वर को हैहयवंशीय राजा सहस्त्रार्जुन एवं चेदीवंश के राजा शिशुपाल की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। वाल्मीकि रामायण में हैहयवंशीय सहस्त्रार्जुन को 'अर्जुनों जयंता ष्ठोमाहिष्मत्या पतिप्रभो" माहिष्मती नगरी का राजा महा विजयी अर्जुन' ऐसा लिखा लिखा है। (२)

सहस्त्रार्जुन महान् पराक्रमी था। जिस रावण ने कुबेर, यम और वरुण, को भी जीत लिया था, उसे सहस्त्रार्जुन ने महेश्वर में पराजित किया था। महेश्वर में रावण की पराजय का वर्णन करते हुए श्री शांतिकुमार नानूराम व्यास ने लिखा है कि "रावण का आक्रमण महमूद गोरी के हमलों के समान था, जिनके सामने उत्तर भारत के हिन्दू राजा एक-एक करके धराशायी होते गये, केवल माहिष्मती नरेश कार्तिवीर्य अर्जुन के आगे रावण को मुंह की खानी पड़ी। सन्धि करके उन्हें रावण ने अपने पक्ष में मिला लिया। अन्य सभी आर्य नृपति, दुष्यन्त, सुरभ, गाधी, गय, और पुरुरवा, लंकेश के सम्मुख नतमस्तक थे। स्वयं दशरथ ने यह स्वीकार किया था कि, मैं रावण का युद्ध में सामना करने में असमर्थ हूं। "न हि शक्तोःस्मि, संग्रामे स्थांतु तस्य दुरात्मन्" १।२०।२० (३)

(शेष पृष्ठ १९ पर)

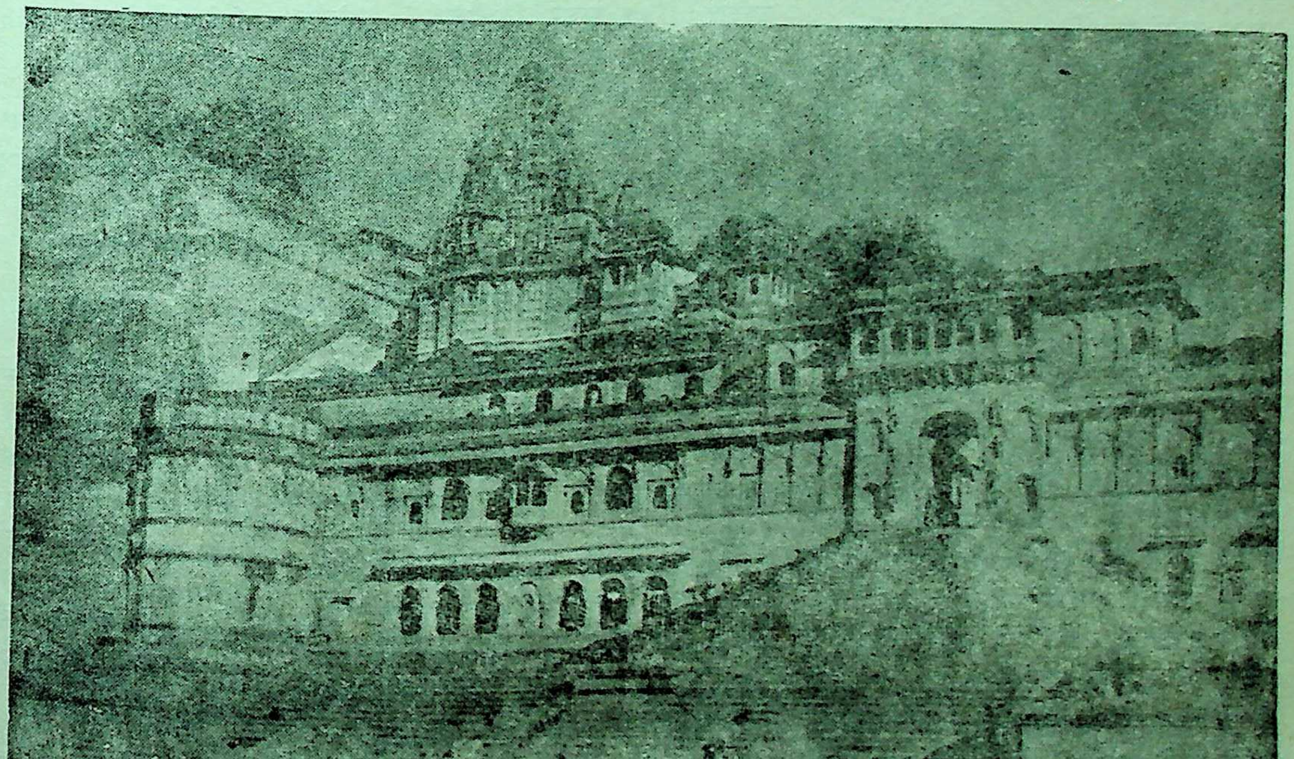

र्मदा के तट पर अवस्थित महेश्वर (माहिष्मती)

---

(१) पुराण विशेषज्ञ-पार्जिटर्–'संस्कृत और उसका साहित्य'।

(२) वाल्मीकि रामायण (उत्तर-काण्ड) सर्ग ३२, श्लोक २।

(३) श्री शांतिकुमार नानूराम व्यास (रामायणकालीन समाज) पृष्ठ २८-२९।

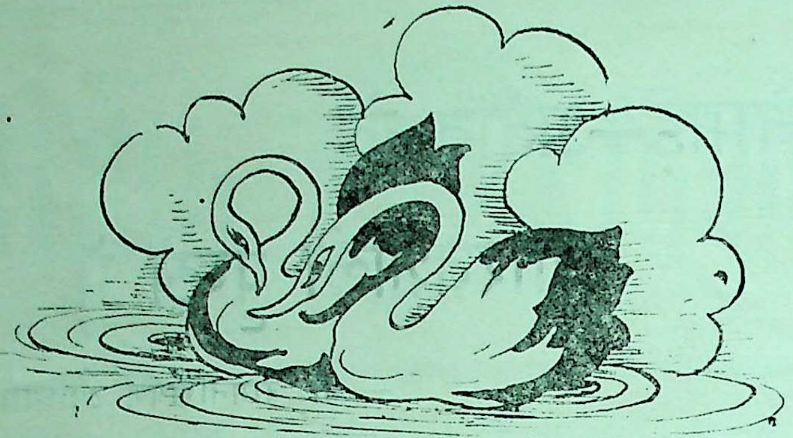

हमारी जल-विद्युत् योजनाएँ

जनता की आर्थिक उन्नति के लिए बिजली आदि शक्ति-साधनों का विकास आवश्यक है। इस दृष्टि से दूसरी योजना की अवधि में १९५८-५९ का वर्ष काफी महत्त्व रखता है।

पहली योजना की अवधि में ३४ लाख किलोवाट बिजली (पानी तथा ताप दोनों से) पैदा करने की क्षमता के यंत्र लगाये गये। सन् १९५५-५६ में इनसे ८ अरब ७८ करोड़ २० लाख यूनिट बिजली पैदा की गई। दूसरी योजना के पहले दो सालों में हर साल औसतन २९ लाख किलोवाट की म्वा बढ़ाई गई, जिससे प्रतिवर्ष औसतन १ अरब २७ करोड़ यूनिट बिजली और पैदा हुई। चालू वित्तीय वर्ष में क्षमता तथा उत्पादन और बढ़ेगा। अनुमान है कि उत्पादन क्षमता ४० प्रतिशत और बिजली का उत्पादन ११ प्रतिशत बढ़ जायगा।

१९५८-५९ में हो रहे काम

नवम्बर, १९५८ तक के आंकड़ों से पता चलता है कि सन् १९५७-५८ के अन्त तक सब बिजलीघरों को मिलाकर उत्पादन-क्षमता १६ लाख किलोवाट बढ़ चुकी थी। इसमें माईथान (दामोदर घाटी योजना) में ४० हजार किलोवाट, हीराकुड में ३७ हजार ५०० किलोवाट, पेरियार में ३५ हजार किलोवाट, मद्रास ताप बिजलीघर में ३० हजार किलोवाट, अहमदाबाद (ताप) योजना में १५ हजार किलोवाट और दिल्ली (ताप) योजना में ६ हजार १ सौ किलोवाट उत्पादन-क्षमता बढ़ी। इसके अलावा अगले ४ महीने के भीतर २५ लाख किलोवाट क्षमता वाले ८ ताप बिजलीघर और २ जल-बिजलीघर नये चालू हो जाएंगे। ये जल-बिजलीघर पेरियार (७० हजार किलोवाट) और मछकुंड (२ हजार ५ सौ) के हैं।

निम्नलिखित ताप बिजलीघरों में मार्च, १९५९ के अन्त से काम शुरू हो जायगा—दिल्ली (६४ हजार किलोवाट), सिक्का (८ हजार किलोवाट), उत्रान (३० हजार किलोवाट), कानपुर (१५ हजार किलोवाट), कांडला (६ हजार किलोवाट), कोरवा (३० हजार किलोवाट), कोटा (२ हजार किलोवाट), चोल (१८ हजार किलोवाट) और गोरखपुर, सोहबल और मऊ उत्तर प्रदेश (१५ हजार किलोवाट)।

केन्द्रीय सहायता प्राप्त योजनाएँ

केन्द्रीय सरकार की सहायता से बनने वाली योजनाओं में भाखड़ा, दामोदर घाटी, चम्बल, कोयना, रेंड, हीराकुड, और तुंगभद्रा विशेष महत्त्व की हैं।

भाखड़ा नांगल योजना में नांगल बिजलीघर भी शामिल है। इसकी उत्पादन-क्षमता ९६ हजार किलोवाट है। इससे और ऊलनदी बिजली केन्द्र से पंजाब के अलावा दिल्ली, जम्मू-कश्मीर तथा हिमाचल प्रदेश को भी बिजली मिलेगी। भाखड़ा बांध में ९०–९० हजार किलोवाट क्षमता के ५ बिजलीघर बन रहे हैं। पहला बिजलीघर सन् १९५९-६० में तै जायगा और बाकी सब सन् १९६०-६१ त हजार किलोवाट की क्षमता वाले गंगूवाल कोटला बिजलीघर भी दूसरी योजना की में चालू हो जाएंगे।

दामोदर घाटी योजना का बोकारो बि जिसकी क्षमता १ लाख ५० हजार कि है, पूरी गति से काम कर रहा है। म १९५८ में माईथान के २०–२० हजार कि की क्षमता वाले दूसरे और तीसरे बि में काम शुरू हो गया था। बोकारों बिजलीघर का परिवर्धन हो रहा है। में एक नया बिजलीघर बनाया जा र आशा है, सन् १९५९ के अन्त तक इस की उत्पादन-क्षमता बढ़कर २ लाख २५ किलोवाट हो जायगी।

४० हजार किलोवाट क्षमता का पहाड़ी का बिजलीघर भी अगले सा जायगा।

चम्बल योजना में २३ हजार क्षमता का पहला बिजलीघर सन् १९५ पूरा बन जायगा और बाकी दो भी सन् १९ में तैयार हो जायेंगे। कोयना और रेंड यो भी तेजी से काम हो रहा है और हीराकुड अपने दूसरे चरण में है।

दूसरी योजना के अन्त तक बिजली क्षमता ६४ लाख किलोवाट हो जायगी। योजना में यह बढ़कर १ करोड़ २० किलोवाट हो जायगी।

अभी काम बाकी है

इतनी प्रगति के बावजूद अभी बहु बाकी है। हमारे देश में जल-बिजली की ४ करोड़ किलोवाट आंकी गई है। जल-बिजली स्रोतों को काम में लाने अभी काफी अनुसंधान की आवश्यक हिमालय से निकलने वाली नदियों और ब्र से कम खर्च पर प्रचुर मात्रा में बिजली जा सकती है, पर इसके लिए हमें बहुत विकास करना होगा।

साहित्य, संस्कृति, कला, ज्ञान-विज्ञान आदि का विशेषांश

इसके संपादन परामर्शदाता ~ श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द

विशेष कविता

देव मेरे!

श्री नरेंद्र शर्मा

देव मेरे! रहो तुम न यों अनमने!

रूप के रूप! तुमको हृदय हारकर,
साधना के सुमन, मन, नयन वारकर;
देह-देही खड़े देहरी-द्वार पर
देव-संमुख विमुग्ध, मुग्ध प्रतिमा बने!

अश्रु-गीला, तरल छंद-अभिषेक है;
चार हैं यदि चरण, एक ही टेक है;
देह-देही युगल, प्रार्थना एक है;
भावना-योग से एक हैं दो जने!

ज्ञान अर्पित करे वह, जिसे ज्ञान हो;
किंतु, उसके लिए, जो कि अनजान हो,
भावना के मुकुर-मध्य मुसकान हो;
भाव-भावन खड़े आमने-सामने!

जो कहो, शांत कर लूं चपल चाव को,
और आग्रह सिखाऊँ न अपनाव को,
मूंदना दृग् सिखाऊँ मधुर भाव को;
कौंध जाओ, घिरे हैं सघन घन घने!

विशेष लेख

गाँधी और गीता

--श्री गोवर्धनदास मेहता

सन् १८८९ में जब गाँधीजी की आयु २० वर्ष की थी, तब उनका विलायत में गीता से प्रथम बार परिचय हुआ । वहाँ दो थियोसोफिस्ट मित्रों ने उनसे गीता पढ़ने की बात कही । उन दिनों वे दोनों एडविन आर्नाल्ड-कृत गीता के अँग्रेज़ी-अनुवाद को पढ़ रहे थे, लेकिन, उन्होंने गाँधीजी से संस्कृत में गीता पढ़ने की इच्छा प्रकट की । यह सुनकर गाँधीजी बड़े लज्जित हुए, क्योंकि, उस समय तक संस्कृत में तो दूर, भाषा तक में गाँधीजी ने गीता नहीं पढ़ी थी । इस तरह दोनों मित्रों के साथ गीता पढ़ने का क्रम शुरू हुआ । गीता पढ़ने से गाँधीजी की आँखें खुल गईं और फिर तो वह तत्त्व-ज्ञान के लिए गीता को सर्वोत्तम ग्रंथ मानने लगे । उस समय दूसरे अध्याय के अंतिम १९ श्लोकों का गांधी जी पर विशेष प्रभाव पड़ा, निम्न दो श्लोकों की ध्वनि की गूंज से उनके हृदय-कपाट खुल गए:—

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्ते षूप जायते
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते
क्रोधाद् भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिलिभ्रमः
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ।

अर्थात् विषय का चिंतन करने से पहले तो उसके साथ संग पैदा होता है और संग से काम की उत्पत्ति होती है । कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है । फिर क्रोध से संमोह, संमोह से स्मृति-भ्रम और स्मृति-भ्रम से बुद्धि का नाश होता है । और अंत में पुरुष खुद ही नष्ट हो जाता है ।

गीता कैसे कंठस्थ की ?

फिर तो गाँधीजी ने श्लोकों को कंठस्थ करना शुरू कर दिया । अनुवाद के सहारे संस्कृत को समझने की कोशिश की । दक्षिण-अफ्रीका में उनका प्रातःकालीन दतौन और स्नान का समय गीता को कंठ करने में लगता । वह दतौन करने में १५ मिनिट और स्नान करने में २० मिनट लगाते थे । दतौन अँग्रेज़ी रिवाज़ के अनुसार खड़े-खड़े करते । सामने दीवार पर गीता के श्लोक लिखकर चिपका लेते और उन्हें देख-देखकर रटते रहते । इस तरह रटे हुए श्लोक स्नान करने तक याद हो जाया करते थे । बीच में पिछले श्लोकों को दुहराते भी जाते । इस क्रम से महात्माजी ने १३ अध्याय कंठस्थ कर लिए थे । पर, बाद में राजनीतिक जीवन की व्यस्तता के कारण यह क्रम जारी नहीं रह सका । लेकिन, गीता के अपरिग्रह-धर्म का उनके ऊपर इतना प्रभाव पड़ा कि वह पूरे संन्यासी बन गए । बीमे की पॉलिसी बंद करदी और अपने बड़े भाई को लिख दिया--"आजतक मैं जो कुछ बचाता रहा, आपको अर्पित करता रहा, अब मेरी आशा छोड़ दीजिए । अब जो कुछ बच रहेगा, वह यहींके सार्वजनिक जीवन में लगेगा ।

गीता समझने की कुंजी

गाँधीजी ने कर्मयोगवाले तृतीय अध्याय को गीता समझने की कुंजी बताया है, जिसमें निष्काम कर्मयोग की शिक्षा दी गई है । इसी कर्मयोग को गाँधीजी ने 'सेवा' संज्ञा दी । इस अध्याय का सार गाँधीजी ने केवल एक वाक्य में यों रखा--"जीवन सेवा के लिए है, भोग के लिए नहीं ।" पर, सच्ची सेवा बिना इंद्रिय-दमन के असंभव है । इसीलिए, तृतीय अध्याय के अंतिम श्लोक में बहुत ज़ोर देकर कहा गया है---

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ।

अर्थात् इस प्रकार बुद्धि से परे आत्मा को पहचानकर और आत्मा द्वारा मन को वश में करके, हे महाबाहो ! इस कामरूप दुर्जय शत्रु का संहार करो ।

वास्तव में अनासक्ति और परोपकारार्थ किया हुआ कर्म उस समय तक संभव नहीं; जब तक इंद्रियों को वश में न रखा जाय । गीता के कर्मयोग को कुछ लोग बड़ा कठिन मार्ग बताते हैं, पर, यदि उसे 'सेवा-योग' के रूप में देखा जाय और जितना जिससे बन सके, उतना वह उस पर चले, तो वह सरल बन जाय । गृहस्थ-धर्म में रहकर भी मनु मोक्ष पा सकता है, यह संदेश और उसकी प्रा का उपाय जितनी उत्तमता के साथ गीता बताया गया है, उतनी खूबी से दुनिया की किसी पुस्तक में नहीं ।

गीता-माता की गोद में

गाँधीजी का जीवन गीतामय था । श्रीकृ ने अर्जुन से कहा--

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्मामि मा शु

अर्थात् "सब धर्मों का त्याग करके एक मे ही शरण ले । मैं तुझे सब पापों से मुक्त करूं शोक मत कर । और गाँधीजी ने अपने को भग के कथनानुसार उनकी शरण में डाल दिया । श्लोक गीता का सार-तत्त्व है । श्रीकृष्ण ने जी साफल्य का कितना सरल उपाय बताया । और श्लोक में उन्होंने अर्जुन से कहा--

मत्कर्मकृत्यत्परमो मद्भक्तः संगवर्जितः
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पांडवः ।

अर्थात् "हे पांडव, जो सब कर्म मुझे स करता है, मुझ में परायण रहता है, मेरा बनता है, आसक्ति का त्याग करता है प्राणिमात्र में द्वेषरहित होकर रहता है, वह पाता है । इसी प्रकार श्रीकृष्ण ने जो-जो अर्जुन को दिए, वे सभी दैनिक जीवन में घटा चीज़ें हैं; कोरे आदर्श-मात्र नहीं । गीता की खूबी के कारण गाँधीजी ने गीता की उपमा से दी । उन्होंने लिखा "गीता जीती- जोव देनेवाली अमर माता है । दूध पि पालने-पोसनेवाली माता एक दिन धोखा चली जायगी । हम देखते हैं कि असंख्य अपनी संतान को तूफ़ान से बचाने में असमर्थ है । किंतु, गीता-माता का आश्रय लेनेवाला तूफ़ान में से उबर जाता है । वह नित्य-

(शेष पृष्ठ १३ पर)

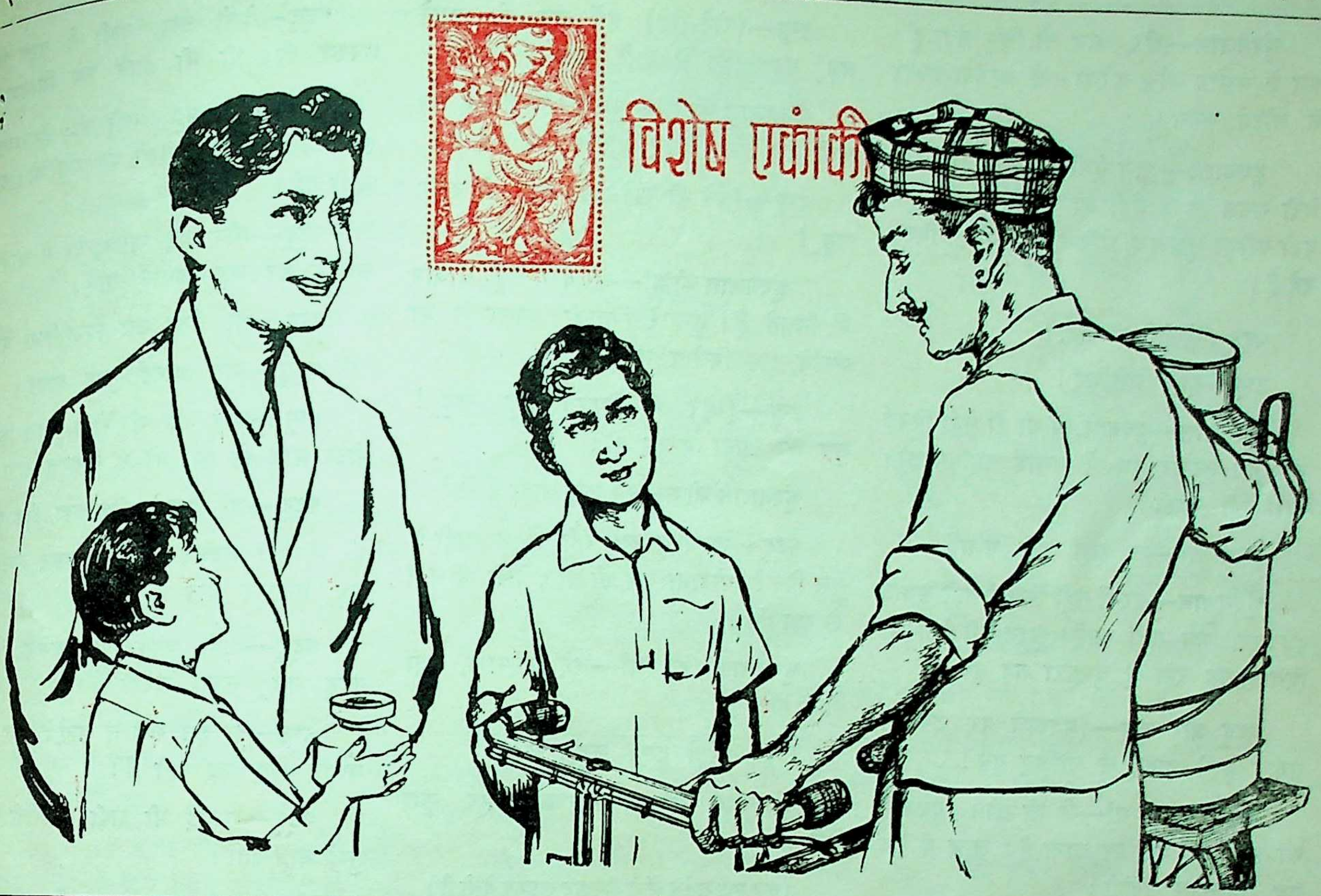

विशेष एकांकी

मलाई

डॉ० वृंदावनलाल वर्मा

कुंदनलाल—एक दफ्तर के बाबू

पट्टू—कुंदनलाल का लड़का, आयु लगभग ८ वर्ष

टप्पू—कुंदनलाल का लड़का, आयु लगभग ६ वर्ष

कुंदनलाल की माँ—आयु लगभग ६० वर्ष

दूधवाला

(१)

एक नगर के साधारणसे घर के सामने दूध वाले का साइकिल की घंटी बजाते हुए प्रवेश। घंटी बजाता रहता है। घर के भीतर चहल-पहल है। जब उसकी सुनवाई नहीं होती, तब चिल्लाता है—भय्यो! भय्यो! खड़े-खड़े बड़ी देर हो गई। और भी कई जगह दूध देने के लिए जाना है। (घर का द्वार खुलता है। धोती कुर्ता पहने कुंदनलाल आता है। उसके पीछे-पीछे पट्टू और टप्पू। दूधवाला टीन के डिब्बे को साइकिल से खोलता है। एक डिब्बा दूसरे से टकराता है। वह भी भरा हुआ है।)

दूधवाला—लीजिए दूध! मुझे जल्द जाना है।

कुंदनलाल—जल्दी क्यों न होगी! पानी-भरा दूध हमारे लोटे में डाला और चल दिए!

(पट्टू हाथ में लोटा लिए है। आगे बढ़ता है)

पट्टू—डाल दो दूध इसमें।

कुंदनलाल—ज़रा ठहरो। भई दूधवाले, तुम्हारे पकड़े जाने की घड़ी आ गई है।

दूधवाला—क्यों? मैंने ऐसा क्या किया है?

पट्टू—डालो दूध लोटे में।

कुंदनलाल—ठहर भी! (दूधवाले से) देखोजी, दूध में पानी की मिलावट का पूरा पता लगाने के लिए हम आज बाजार से मशीन लानेवाले हैं। तुम्हारे ऊपर मुक़दमा चलाने में देर नहीं लगेगी।

दूधवाला—चाहे मशीन लाइए, चाहे पूरा इंजिन, मेरे दूध में पानी है ही नहीं। लाइए लोटा, लीजिए।

पट्टू—लो! (आगे बढ़ता है)

टप्पू—लेलो न, हमें दूध पीना है।

पट्टू—दादा, आपको दफ्तर जाना है न, दूध तो लीजिए।

टप्पू—मुझे भूख लग रही है।

(कुंदन की माँ आती है)

कुंदन की माँ—ले भी लो कुंदन! यह तो जुग ही ऐसा है। शुद्ध दूध तो दुर्लभ हो गया है। कहीं भी नहीं मिलता है।

कुंदनलाल--खैर, आज तो लिए लेता हूँ। कल से मशीन जाँच करेगी। ले आऊँगा दफ्तर से लौटते समय।

दूधवाला--आज ऐसी क्या बात हो गई है, मेरी समझ ही में नहीं आ रहा है। वही दूध, वही बढ़िया शुद्ध दूध, लेकिन, आप यों ही बिगड़ रहे हैं।

पट्टू--लेलीजिए दादा!

टप्पू--हाँ, लेलीजिए!

कुंदनलाल--दूधवाले, मैं यों ही नहीं बिगड़ रहा हूँ। तुम्हारे दूध में मलाई नहीं पड़ती। क्यों नहीं पड़ती?

दूधवाला--कब नहीं पड़ी मलाई?

कुंदनलाल--परसों नहीं दिखाई पड़ी मलाई दूध पर, कल नहीं आई। आज भी वैसा ही दिखाई पड़ रहा है तुम्हारा यह दूध।

पट्टू और टप्पू--(दूधवाले पर टकटकी लगाए हुए) दादा, ले लीजिए दूध!

कुंदनलाल की माँ--ले भी लो। दूधवाले को अभी कई घरों पर जाना है। आज मैं खुद दूध उबालकर देखूंगी।

कुंदनलाल--खैर आज लिए लेता हूँ। कल से सावधान रहना! (बच्चे के हाथ से लोटा लेता है) डालदो!

दूधवाला--(लोटे में दूध डालते हुए) मैं और दूधवालों की तरह का नहीं हूँ। सावधान हूँ बाबूजी, और सदा रहूँगा।

(लोटे में दूध डालकर साइकिल की घंटी बजाता जाता है।)

कुंदनलाल--(अपनी माँ से) माँजी, आप ज़रा ठिकाने से ओंटिएगा दूध। दफ्तर से आऊँ तब बतलाइएगा कि आज कैसी और कितनी मलाई पड़ी।

कुंदनलाल की माँ--हाँ, मैं सब कर लूंगी।

(सब भीतर जाते हैं। किवाड़ बंद होते हैं।)

(२)

कुंदनलाल के घर के भीतर उसकी माँ उबले हुए दूध को थाली में डालती है। पट्टू और टप्पू निकट ही हैं। टप्पू रो रहा है।

टप्पू--(रोते-रोते) हमें लड्डू दो, हमने लड्डू बहुत दिन से नहीं खाया।

कुंदनलाल की माँ--तुम्हारी माँ मायके क्या चली गई, हमारे लिए आफ़त छोड़ गई है।

टप्पू--(वैसे ही रोते-रोते) लड्डू दो, दादी, लड्डू!

कुंदनलाल की माँ--अरे बेटा, लड्डू बाजार में मिलते हैं। तुम्हारे पिताजी दफ्तर से आ जायँगे, तब मिलेगा लड्डू!

टप्पू--(और भी रोकर) लड्डू, लड्डू! तुम जो खाया करती हो।

कुंदनलाल की माँ--मैं कब खाती हूँ रे?

पट्टू--उस दिन खा रही थीं न दादी? उस दिन? थोड़ासा मुझे भी दो। देखो, मैं नहीं रो रहा हूँ।

कुंदनलाल की माँ--अरे दईमारो, क्यों बक़ते हो।

टप्पू--(रोते हुए) लड्डू, लड्डू।

कुंदनलाल की माँ--अच्छा ठहर, कुछ देती हूँ।

(वह एक बर्तन में से शक्कर लाकर देती है)

लो, शक्कर खा लो! लड्डू इसीसे बनते हैं।

पट्टू--हाँ, हाँ ठीक है! उसमें थोड़ासा घी मिलादो न दादी!

कुंदनलाल की माँ--हे भगवान्, क्या मुसीबत है!

(शक्कर में थोड़ा-सा घी मिलाकर उन दोनों को देती है।) लो, भरलो पेट। (वे दोनों खाते हैं।)

पट्टू--ठीक रहा! ठीक रहा!

टप्पू--(खाते-खाते) बहुत ठीक रहा! बहुत अच्छा रहा।

कुंदनलाल की माँ--अच्छा देखो, मैं पड़ोस में एक काम से जा रही हूँ। दूध देखे रहना--मक्खी न गिरे, बिल्ली-बिल्ली न पी जाय।

दोनों--हाँ-हाँ, जाओ!

पट्टू----मैं देखे रहूँगा।

टप्पू--मैं पहरा लगाऊँगा।

(कुंदनलाल की माँ बाहर जाती है।)

पट्टू--देखो टप्पू, दादी ने बहुत शक्कर दी। घी भी उसमें कम मिलाया

टप्पू--भैया पट्टू रखी तो है उस बर्तन में, और, देखो वह रहा घी। चली गईं।

पट्टू--और वह ज़रूर देर में शक्कर का लड्डू बनाएँ खाएँ।

टप्पू--हाँ, जैसा उस दिन किया

पट्टू--याद आगई, याद आगई।

टप्पू--तभी तो मैं रोया था। पीटा थोड़े ही था, जो मैं सचमुच रोता।

पट्टू--अरे वाह! ठीक कहा, ठीक

(दोनों शक्कर में घी डालकर लड्डू बनाकर खाते हैं)

पट्टू--दादी चुपके-चुपके, अकेले में तरह लड्डू खाया करती हैं।

टप्पू--तो हम क्यों न खाएँ? और मलाई खूब पड़ रही है।

पट्टू--मलाई भी दादी खा लेती हैं तुम्हें नहीं देतीं।

टप्पू--आज हम-तुम खाएँ। चम्मच इकट्ठी करके कटोरे में डाल लो पट्टू ठंढ़ी हो जायगी, तब शक्कर मिलाकर खा

पट्टू--अभी लो, अभी लो।

(थाली से चम्मच द्वारा मलाई करके कटोरे में डालता है।)

टप्पू--ख़ूब रही। ख़ूब रही। कटोरे गई मलाई से।

पट्टू--अब तुम एक काम करो। के पास खड़े हो जाओ। दादी आ जावें, गीत गा देना, वही भालूवाला। याद है

टप्पू--हाँ-हाँ, याद है। दरवाज़े पर हुआ जाता हूँ, पर, देखो सबकी सब मलाई मत कर जाना।

पट्टू--नहीं, नहीं। तुम्हारे लिए छोड़ दूंगा। (टप्पू दरवाज़े पर जा खड़ा हो पट्टू मलाई खाने लगता है।)

(३)

टप्पू दरवाज़ा थोड़ा-सा खोलकर हो जाता है। पट्टू मलाई खाए चला

टप्पू को चिंता होती है-कहीं सबकी सब न खा जाय !

टप्पू--वाह ! वाह ! तुम तो पट्टू भैया सब खाए जाते हो ।

पट्टू--(खाते-खाते) नहीं, नहीं ! बहुत-सी छोड़ दूँगा तुम्हारे लिए। और देखो थाली में मलाई और भी जमती जा रही है।

टप्पू गाता है--भालू आया, भालू आया,
कैसा उसने मुँह बिदकाया।

पट्टू--(घबराकर) क्या, दादी आ रही हैं ?

टप्पू--हूँ--भालू आया, भालू आया--

(पट्टू कटोरी में थोड़ी-सी मलाई छोड़कर द्वार पर दौड़कर आता है और किवाड़ों में होकर झाँकता है।)

पट्टू--दादी तो यहाँ कहीं नहीं दिखाई पड़तीं। तुमने वैसे ही डरवा दिया।

टप्पू--आई थीं, लौट गईं। फिर आ जायँगी। अब मैं खाऊँगा मलाई, तुम खड़े हो जाओ यहाँ, भले पट्टू !

(पट्टू को खड़ा होना पड़ता है, क्योंकि टप्पू दौड़कर कटोरे के पास पहुँच जाता है।)

टप्पू--हूँ--ऊँ तुमने तो पट्टू भैया, सब खा ली, मेरे लिए कुछ नहीं छोड़ी।

पट्टू--अरे बहुत है अभी कटोरे में टप्पू ! तुम खा लो और यहाँ आ जाओ। फिर मैं आकर थाली में से और मलाई इकट्ठी करूँगा और तुम्हें बहुत-सी दूँगा।

टप्पू--हूँ-ऊँ ! (वह मलाई खाने लगता है।) तुमने तो पट्टू भैया, मेरे लिए छोड़ी ही नहीं ! मैं थाली में से इकट्ठी करता हूँ। तुम वहीं खड़े रहना, ऐं ! दादी दिखलाई पड़ें, तो वही गाना गा देना, ऐं !

(टप्पू थाली में से मलाई इकट्ठी करता है कि पट्टू गाता है)--

भालू आया, भालू आया,
कैसा उसने मुँह बिदकाया।

पट्टू--तुम मलाई बटोरने लगे और चाटने भी लगे।

(टप्पू दौड़कर पट्टू के पास आता है। उसके मुँह पर मलाई लगी है।)

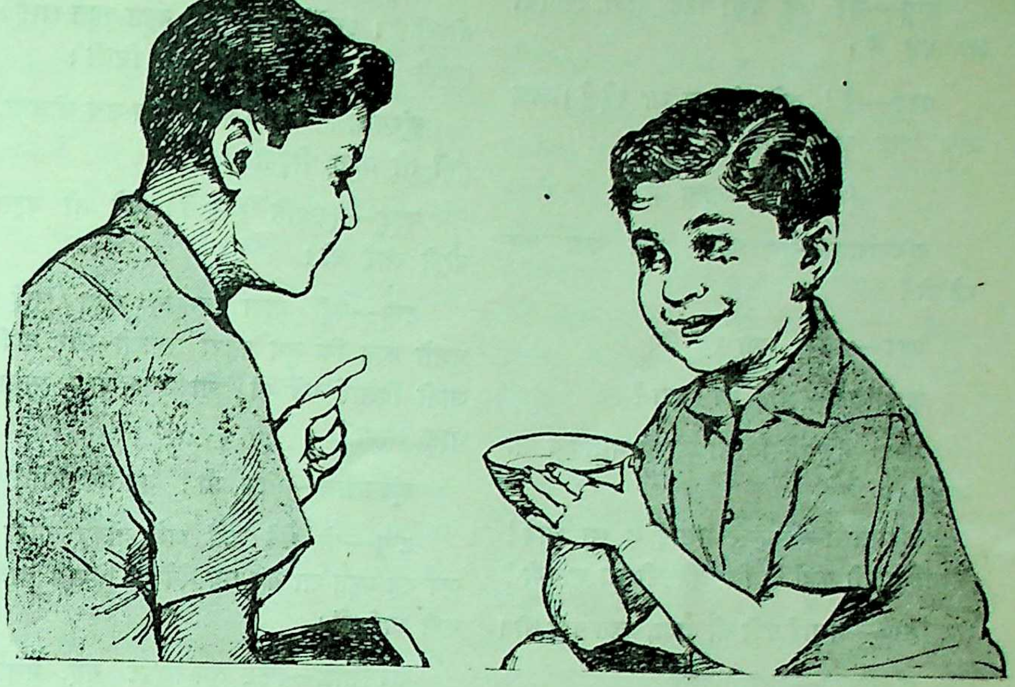

पट्टू--तुम मलाई बटोरने लगे और चाटने भी लगे

टप्पू--क्या दादी आ गईं? कहाँ हैं? (किवाड़ों में होकर झाँकता है।) दादी तो कहीं नहीं दिखलाई पड़तीं। तुमने धोका दिया पट्टू !

पट्टू--तुमने भी तो धोखा दिया था टप्पू !

टप्पू--तुम सब खा गए पट्टू, मेरे लिए बिलकुल नहीं छोड़ी।

पट्टू--तुम झूठ बोलते हो टप्पू !

टप्पू--(रुँआँसे स्वर में) झूठे तुम हो !

पट्टू--अरे चुप, देखो वह आ रही हैं, दादी !

(कुंदनलाल की माँ आती है।)

कुंदनलाल की माँ--क्योंरे, यहाँ किवाड़ों के पास खड़े-खड़े क्या कर रहे हो ?

पट्टू--मलाई की रखवाली कर रहे हैं। बिल्ली तो दादी इन्हीं किवाड़ों में होकर भीतर आती है।

कुंदनलाल की मां--और यह टप्पू क्यों मुंह डाले खड़ा है ?

पट्टू--इसकी आदत है, ज़रा-से में रो पड़ता है।

टप्पू--(वैसे ही स्वर में) मैं तो नहीं रोता, तुमहो रुअँटे ! झूठे !

कुंदनलाल की मां--अच्छा लड़ो मत ! तुम्हारे स्कूल की छुट्टी क्या हुई तुम्हें लड़ने के लिए त्योहार मिल गया। (भीतर जाते-जाते) स्कूलों में इतनी छुट्टियाँ होती हैं कि जिनका ठिकाना नहीं।

टप्पू--नहीं दादी, हम आगे कभी नहीं लड़ेंगे।

कुंदनलाल की माँ--(दूरी से) देखे रहना, कुत्ता-बिल्ली भीतर न आने पावे। सड़क पर से रीछ-भालू का तमाशा निकले, तो देख लेना ! थाली के पास जाती है।)

दोनों--हाँ-हाँ !

पट्टू--(धीरे से) अरे देख टप्पू, थाली की मलाई दादी उड़ाए-खाए जा रही हैं। भला, हमारा कोई क़सूर नहीं।

टप्पू--आने दो पिताजी को, उनसे मैं सब कहूँगा।

पट्टू--दादी पिटाई लगायँगी तब ?

टप्पू--लगायँगी तो--नामा के यहां से अम्मा जो आ जायँगी। फिर देखें कोई कैसे मारता है।

पट्टू--हाँ-हाँ, टप्पू, अम्मा जल्द आ जावेंगी।

टप्पू--चलो न दादी के पास, उनसे मलाई लेंगे।

पट्टू--नहीं, नहीं। यहीं खड़े रहो। उन्होंने कहा था न ?

टप्पू--अरे वह देखो पट्टू भैया, पिताजी आ रहे हैं।

पट्टू--हैं! अरे हाँ, वह आ रहे हैं। आज जल्द लौट आए दफ्तर से!

(कुंदनलाल आता है।)

कुंदनलाल--तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो?

पट्टू--पहरा लगा रहे हैं।

कुंदनलाल--काहे का पहरा?

पट्टू--जिसमें बिल्ली आकर मलाई न खा जावे।

कुंदनलाल--बिल्ली मलाई न खा जाय! मलाई पड़ती कहाँ है, जिसे बिल्ली खा जायगी?

टप्पू--मलाई पड़ी थी दादा, बहुत पड़ी थी।

कुंदनलाल--फिर? फिर?

टप्पू--पट्टू भैया ने खाई। इन्होंने बहुत सारी खा डाली।

(कुंदनलाल की माँ आती है।)

कुंदनलाल की मां--आज दफ्तर से जल्द आ गए?

कुंदनलाल--हाँ माताजी! आधे दिन की छुट्टी हो गई।

कुंदनलाल की मां--तो कपड़े बदल लो, ओरें पट्टू, या तो भीतर बैठकर पढ़ या टप्पू को ले जाकर खेल।

टप्पू--और दादा, दादा, इन्होंने भी मलाई खाई; दादी खा रही थीं अभी-अभी मलाई! मलाई बहुत पड़ी थी।

कुंदनलाल की मां--झूठा कहीं का। पाजी!

कुंदनलाल--तुमने खाई है पट्टू, तुमने! खाई है न? टप्पू कहता है।

पट्टू--हैं-हूँ-ऊँ-मैंने काहे को खाई-टप्पू ने खाई है, देखिए इसके मुंह पर लगी है।

(टप्पू का हाथ मुंह पर जाता है। वह मलाई को पोंछता है।)

कुंदनलाल की मां--देखो कुंदन, देखो इसीने खाई है। अब पोंछ रहा है।

कुंदनलाल--क्योंबे! कहता है कि हमने नहीं खाई। झूठ बोलता है? तेरे कान मलूंगा।

टप्पू--(रोते हुए) दादा, पट्टूभैया झूठ बोलते हैं। इन्होंने बहुत खाई, बहुत-बहुत खाई। हमको तो बहुत थोड़ी-सी ही मिली।

कुंदनलाल--क्योंबे पट्टू! सच-सच बोलना, नहीं तो बहुत पीटूंगा।

पट्टू--(रुआँसे स्वर में) मैंने तो बहुत थोड़ी खाई थी।

टप्पू--नहीं दादा। इन्होंने बहुत खाई। मुझसे कहा कि तुम पहरा लगाओ और दादी आती दिखाई पड़ें तो गा देना-भालू आया, भालू आया!

कुंदनलाल--ओफ़ ओ! यह बदमाशी!

टप्पू--तो मैंने यहाँ खड़े होकर गाया। जब यह बहुत खा गए तब मैंने गा दिया। दादी नहीं आई थीं।

कुंदनलाल--फिर तुम चिपट गए, मलाई खाने क्यों?

टप्पू--(रुआंसे स्वर में) हमने तो बहुत कम खाई।

कुंदनलाल की मां--ये दोनों बहुत खराब होते जा रहे हैं।

पट्टू--सबसे ज्यादा तो दादी ही ने मलाई खाई है। दादी रोज़ मलाई खाती हैं, दूध से उतार-उतारकर!

कुंदनलाल--रोज़ एं!

कुंदनलाल की मां----दाढ़ीजार! झूठा कहीं का।

कुंदनलाल--खैर, जाने भी दीजिए माताजी! जो हुआ, सो हुआ! पर, इसमें कोई संदेह नहीं कि यदि हम बड़े-बूढ़े ठीक ढंग से चलें, तो बच्चे झूठ नहीं बोलेंगे और ठीक ढंग पर चलेंगे।

कुंदनलाल की मां--तुम क्या कह रहे हो कुंदन?

कुंदनलाल--कुछ नहीं माँ, योंही। एक ग़लती कर आया हूँ, उसका मुझे खेद है। मैं दूध जाँचने की मशीन, जिसे 'लैक्टोमीटर' कहते हैं, खरीद लाया हूँ। व्यर्थ ही पैसे बिगाड़े।

कुंदनलाल की माँ--राम-राम, राम-राम, कैसा जुग आया है। इन दोनों ने घी-शक्कर भी चुरा-चुराकर खाए।

पट्टू--वाह दादी! तुम्हीं ने तो दिए थे।

टप्पू--तुमने थोड़े से ही दिए थे, तो ह थोड़ेसे और उठाए खाए और तुम तो रो खाती हो!

(४)

कुंदनलाल के द्वार के सामने दूधवा आता है और साइकिल की घंटी टनटनाता भय्यो! भय्यो। खड़े-खड़े बड़ी देर हो ग और भी कई जगह दूध देने के लिए जाना

(भीतर से कुंदनलाल की आवाज़- 'आते हैं') कुंदनलाल आता है। उसके पी पीछे पट्टू और टप्पू।)

कुंदनलाल--मैं ले आया हूँ दूध जाँचने मशीन देखता हूँ तुम्हारा दूध आज।

दूधवाला--(दबे स्वर में) देख लीजि देख लीजिए। हमारा माल खरा उतरे (कुंदनलाल जेब से दूध जाँचने की म निकालता है। दूधवाला सिटपिटाता है।) मे घरवाली भी बड़ी ईमानवाली है। आज उ मेरे इन बर्तनों में दूध भरा है।

कुंदनलाल--(दूध की जाँच करके) देखो। पानी मिला है तुम्हारे दूध में! पक गई बात! कहो, अब क्या कहते हो?

दूधवाला--बाबूजी, गरीब के लिए तरफ़ कठिनाई है।

पट्टू--पिताजी, कल के दूध में पानी मिला था। उसमें खूब मलाई पड़ी थी।

दूधवाला--वाह भैया वाह! तुम कहते हो!

कुंदनलाल--अच्छा भाई, अच्छा, मैंने लिया, पर आज यह गड़बड़ घोटाला कै

दूधवाला--आज घरवाली ने.....

कुंदनलाल--क्यों उस बेचारी को ब करते हो? सच बताओ आज तुम्हींने मिलाया है न?

दूधवाला--तो बाबूजी, मुझे भी करके बता दीजिये कि कल और परसों के मलाई पड़ी थी या नहीं?

पट्टू और टप्पू--हाँ पड़ी थी। पड़ी थी।

कुंदनलाल--मैं समझता था कि नहीं थी, खैर।

दूधवाला--तो बाबूजी, आज पानी मैंने ही मिलाया है। पर, आज के पहले पानी कभी नहीं मिलाया था, चाहे जैसी सौगंध मुझसे लेलो।

कुंदनलाल--तो फिर आज क्यों पानी मिलाया तुमने?

दूधवाला--जब कल देखा कि आप मेरे धर्म-ईमान का भरोसा ही नहीं करते, तब मैंने आज पानी मिला दिया।

कुंदनलाल--खैर! आगे तो कभी नहीं मिलाओगे? सौगंध खाते हो?

दूधवाला—सौगंध खाता हूँ, कभी नहीं मिलाऊँगा। जैसे पहले नहीं मिलाता था, वैसे ही आगे भी कभी नहीं मिलाऊँगा पानी! पर, आप भी वादा कीजिए कि मुझपर कभी अविश्वास नहीं करेंगे। जुग-जुग जिएँ पट्टू और टप्पू भैया। इन्होंने सचाई बता दी!

पट्टू और टप्पू—अब खूब मलाई खाएँगे खूब मलाई खाएँगे।

गाँधी और गीता

(पृष्ठ ९ का शेष)

कभी धोखा नहीं देती। किंतु, जैसे, बिना माँगे माँ भी दूध नहीं पिलाती, वैसे ही गीता-माता भी बिना माँगे कुछ नहीं देती। वह किसी को अपनी गोद में लेने से पहले उसकी कठिन परीक्षा लेती है, पूर्ण भक्ति की अपेक्षा रखती है।

गीता में प्रत्येक धार्मिक समस्या का समाधान मौजूद है, भक्तों का यह दावा उचित ही है। वह आत्मा का इतिहास है।

गीता–कामधेनु

गीता का अर्थ स्पष्ट करते हुए गाँधीजी ने कहा—"गीता का अर्थ है गेय। यह शब्द विशेषण के रूप में उपनिषद् के साथ प्रयुक्त होता है, जो स्त्रीलिंग है। गीता कामधेनु की भांति है, जो संपूर्ण इच्छाओं की पूर्त्ति करती है। इसीलिए, वह माता कहलाती है। अपने आध्यात्मिक जीवन को कायम रखने के लिए हमें जितने दूध की आवश्यकता है, उसके लिए अगर हम याचक दुधमुंहे बच्चे की तरह माँग करें, तो वह अमर माता हमें संपूर्ण दूध दे देती है। उसमें अपने लाखों बच्चों को अपने अजस्र थनों से दूध देने की क्षमता है।"

याचक कैसे बनें?

पर, प्रश्न तो यही है कि हमें याचक बनना कैसे आए? गाँधीजी इस दृष्टिकोण से गीता के मनन के पक्षपाती थे कि श्रीकृष्ण अर्थात् परमात्मा हमारे हृदय में विराजमान हैं और जब अर्जुन की भाँति हम जिज्ञासु बनकर उनसे प्रश्न करते हैं, तब वह सदैव हमें शरण देने और शंका-समाधान करने को तैयार रहते हैं। हमारे अंदर इस प्रकार की लगन, श्रद्धा और भक्ति पैदा हो, इसीलिए, गीता के प्रतिदिन के पारायण पर ज़ोर दिया गया है। हम अपनी तुच्छ बुद्धि के कारण यदि अपने जीवन में गीता से कोई लाभ नहीं उठा पाते, तो इसमें गीता का नहीं, हमारी समझ का दोष है। अभ्यास ही वह क्रिया है, जिससे हम याचक बनकर गीता की शरण जा सकते और अपनी सभी मुसीबतों का अंत कर सकते हैं।

दैनिक जीवन में गीता

दैनिक जीवन में गीता का उपयोग कैसे किया जाय, इसे जगह-जगह गाँधीजी ने समझाया है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा—"क्रोध आया कि तुरंत उससे संबंधित श्लोक का स्मरण करके शांत करना चाहिए। किसी से द्वेष हो, अधीरता आय, आहारैषणा आय, किसी काम को करने या न करने के संकट आएँ, तो ऐसे सब प्रश्नों का निबटारा, श्रद्धा हो और नित्य मनन हो तो, गीता-माता से कराया जा सकता है।"

इसीलिए, गीता के प्रतिदिन के पारायण की व्यवस्था की गई है। पर, हमें गीता समझकर पढ़नी चाहिए, न कि तोते की तरह रटकर। हमें गीता को इस रूप में भी पढ़ना चाहिए कि वह भौतिक युद्ध के बहाने मनुष्य के भीतर निरंतर होते रहनेवाले द्वंद्व-युद्ध का वर्णन भी है। गीता आचरण की वस्तु है। उसे आचरण में कैसे उतारना चाहिए, इसे देखना है, तो गाँधीजी के संपूर्ण जीवन् का चित्र अपने मन-मंदिर के संमुख रख लीजिए। गीता की गूढ़ व्याख्या करनेवाले तो कई मनीषी हुए, पर, सीधीसादी, सरल भाषा में जनता को गीता का वास्तविक मर्म समझानेवाले गाँधीजी ही को उन्होंने गीता में मानव-जीवन का सार देखा, उसे समझा, वह स्वयं उस पर चले और उन्होंने दूसरों को उस पर चलने की प्रेरणा दी।

ज्ञान और क्रिया का संगम

संजय ने कहा—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।

अर्थात् "जहाँ योगेश्वर श्रीकृष्ण हैं, जहाँ धनुर्धारी पार्थ हैं, वहाँ श्री है, विजय है, वैभव है और अविचल नीति है; ऐसा मेरा मत है।" यहाँ योगेश्वर श्रीकृष्ण से तात्पर्य गाँधीजी ने "अनुभव-सिद्ध ज्ञान" और धनुर्धारी अर्जुन से अभिप्राय तदनुसारिणी क्रिया बतलाया है। वास्तव में इन दोनों का जहाँ संगम हो, वहाँ अवश्य विजयश्री और वैभव प्राप्त होकर रहता है। अतः, जो भी परमात्मा को, गीता को और गाँधी को समझना चाहता है, वह इस 'संगम' की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हो।

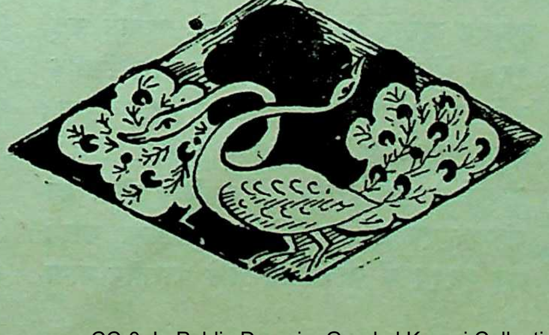

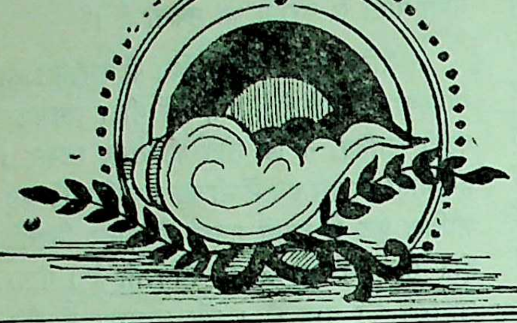

मध्यप्रदेशीय लोक-साहित्य कुछ महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ

--श्री त्रिलौचन

लोक-भाषाओं का जन्म धरती से हुआ है। इनम हमारे देश की मिट्टी की सौंधी-सौंधी सुगन्ध समाहित हो गई है और विभिन्न जातियों की जीवन-प्रणाली उनके रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार, धार्मिक-धारणाएँ एवं सामाजिक-मान्यताएँ सब कुछ मुखरित हो उठी हैं। इनमें लोक-जीवन की कल्याणकारी-भावनाओं से ओत-प्रोत साहित्य का अवाधस्रोत बहता रहता है और गौरवशाली अतीत की अमूल्य निधियाँ वर्तमान के सृजनात्मक विकास और उज्ज्वल भविष्य की असंख्य आशाएँ भरी पड़ी हैं। इसीलिए संत कबीर ने लोक-भाषा के अविरल प्रवाह को 'संस्कृत कविता कूपजल, भाषा बहता नीर' कहकर सम्बोधित किया है। आज कालचक्र की चपेट में आकर संस्कृत भाषा केवल एक वर्ग विशेष की भाषा बनकर रह गई है, किन्तु इसके विपरीत लोक-भाषाओं की अजस्र -प्रवाहिणी धारा, बीहड़-वनों, घने जंगलों और गहरी-घाटियों को पार करती हुई लोक-मानस के हरे-भरे मैदानों में प्रवाहित हो रही है।

आधुनिक युग में लोक भाषाओं के महत्त्व का उचित मूल्यांकन करना तथा उनमें लिखित एवं अलिखित साहित्य की मनोवैज्ञानिक भावभूमि का अन्तरावलोकन करना उनका संकलन, भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन, सुसम्पादन एवं प्रकाशन करना, इसलिये आवश्यक प्रतीत होता है कि उनमें हमारे लोकजीवन के स्वस्थ शरीर में संचारित होनेवाले रक्त का तीव्रतम स्रोत उन्मुक्त गति से प्रवाहित होता रहता है, और जन-जीवन के सुख-दुःख की सांसें करवटें बदलती रहती हैं।

स्वतन्त्रता के पश्चात् हमारे देश की भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखते हुये राज्य पुनर्गठन आयोग ने भाषाओं के आधार पर जिन नवीन प्रान्तों की रचना की, उसी का प्रतिफल हमारा मध्यप्रदेश भी है। इस नवीन प्रदेश की रचना में भूतपूर्व मध्यभारत, भोपाल, विन्ध्य और महाकोशल राज्यों के विशाल भू-भागों को सम्मिलित किया गया है, जिसके फलस्वरूप इस प्रदेश की जनसंख्या २,६१,००,००० हो गई है। इस नवीन मध्यप्रदेश के विशाल भू-भाग में ६६,७०५ ग्राम और उनमें २,२६,५८,८३६ ग्रामवासी निवास करते हैं।

नवीन मध्यप्रदेश उद्भव के पश्चात् हमारा यह पुनीत कर्त्तव्य हो जाता है कि हम अपने प्रदेश के लोक-जीवन, लोक-साहित्य एवं लोक-संस्कृति का ऐतिहासिक, साहित्यिक, सामाजिक एवं भाषा शास्त्रीय अध्ययन करें।

इस दिशा में अबतक जो भी कार्य हुआ है, वह या तो लोक-साहित्य के विद्वान् अन्वेषकों के व्यक्तिगत प्रयासों का फल है, अथवा मालव लोक-साहित्य परिषद् के द्वारा मालव-भूमि एवं मालवी भाषा का विभिन्न दृष्टियों से वैज्ञानिक अध्ययन, इसके पूर्व इस दिशा में प्रतिभा-निकेतन के पर्यवेक्षकों द्वारा बाघ के भील-भिलालों, लेकोड़ा, टंकारिया तथा निमाड़ जिले के लोक-साहित्य का सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से सर्वेक्षण अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यदि हम मध्यप्रदेश में लोक साहित्य के अध्ययन की प्राचीन-परम्परा पर दृष्टि डालें, तो पाश्चात्य विद्वानों के भाषा एवं साहित्य संबंधी अध्ययन के अतिरिक्त अन्य कोई प्रमाण नहीं मिलता। हमारे देश में सर्वप्रथम इन्हीं विद्वानों ने लोक भाषा एवं लोक-साहित्य के वैज्ञानिक अध्ययन की परम्परा को प्रारम्भ किया। सर्व प्रथम सन् १८८६ में एस. हिस्लप महोदय ने मध्यप्रदेशीय सामग्री के रूप में एक पुस्तक का प्रकाशन नागपुर से कराया। इसके पश्चात् सन् १९०१ में सी. ई. ल्यूअर्ड द्वारा 'एथनालाजिकल सर्वे ऑफ सेण्ट्रल इण्डिया एजेन्सी' का प्रकाशन हुआ। इसमें भूतपूर्व ग्वालियर, देवास, होल्कर व धार राज्यों के आदिवासियों में प्रचलित गीतों का संकलन एवं संक्षिप्त विवेचन भी किया गया। सन् १९११ में जार्ज ग्रिअर्सन ने भारतीय भाषा सर्वे नामक विशाल एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का निर्मा कर भारतीय भाषाओं का वैज्ञानिक अध्य प्रस्तुत किया। भारतीय भाषा सर्वे के इन चौ भागों में मध्यप्रदेश की लोक-भाषाओं का महत्त्वपूर्ण वर्गीकरण एवं वैज्ञानिक विश्लेषण प्र किया गया है। इसके पश्चात् मध्यप्रदेश की विभि जातियों, भाषाओं और उनमें उपलब्ध साहित्य संबंध में सर्वश्री शरत्‌चन्द्र राय, आर. व्ही. रे एवं हीरालाल द्वारा भी कुछ सामग्री प्रका आई।

यह सत्य है कि हमारे देश में सूक्ष्म रू प्रत्येक बारह कोस की दूरी पर भाषा अपना बदल देती है, किन्तु नवीन मध्यप्रदेश के उद्भव फलस्वरूप स्थूलरूप से निम्नलिखित छः भाषा का, उनकी अपनी संस्कृतियों का समन्वय गया है:--

(१) मालवी
(२) बुन्देली
(३) बघेली
(४) छत्तीसगढ़ी
(५) आदिवासी भाषा समूह:--(गोंड़ी, भिलाली, मारिया, कोखा आदि)
(६) ग्वालियरी भाषा समूह (घारी, भदावरी, जटवारी, सिकरवारी आदि)

उपरोक्त भाषाओं के अतिरिक्त यहां हिन्दी, मराठी और उर्दू के भी मिश्रित रू जाते हैं।

यहां तक हमारे मध्यप्रदेश में लोक- एवं लोक-भाषाओं के शास्त्रीय अध्ययन का है, यह भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों क्रमश: प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रणालियों के पर तीन प्रकार से किया गया है—

(१) लोक-साहित्य का संकलन तथा
(२) लोक-भाषाओं का भाषा वै अध्ययन,

(३) लोक-भाषाओं में साहित्य-सृजन ।

उपरोक्त अध्ययन-क्रम में पाश्चात्य विद्वानों द्वारा अप्रत्यक्ष प्रणाली के आधार को स्वीकार किया गया, जिसके अध्ययन की रूपरेखा हम पूर्व में ही बता चुके है, किन्तु यहां हम प्रत्यक्ष अध्ययन प्रणाली के आधार पर किसी भाषा विशेष का भारतीय विद्वानों द्वारा जो उल्लेखनीय कार्य किया गया है, उसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करेंगे ।

मालवी भाषा में लोक-साहित्य के अध्ययन का प्रारम्भ सन् १९३३ में प्रकाशित श्री रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' के 'मालवी और उसके भेद' नामक लेख से प्रारम्भ होता है। इसके पश्चात सर्व श्री विश्वनाथ पौराणिक, जी. आर. प्रधान, चन्द्रसिंह झाला, पं. सूर्यनारायण व्यास, डा. जोशी, स्व. श्री भालेराव, शंकर सहाय वर्मा व प्रभागचन्द्र शर्मा के नाम भी उल्लेखनीय हैं, मालवी के लोक-साहित्य के संबंध में जिनके तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित हुए, किन्तु सन् १९४४ में डॉ. श्याम परमार द्वारा मालवी के अध्ययन में एक नया मोड़ आया।

श्री परमार का पहला लेख सन् १९४४ में 'जयाजी प्रताप' में प्रकाशित हुआ, जिससे मालवी के लोक-साहित्य के संकलन, सम्पादन एवं अध्ययन को एक नई दिशा मिली। इसके पश्चात् श्री परमार के और भी कई लेख यत्र-तत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे। सन् १९४८ में 'मालवी लोकगीत' के नाम से मालवी लोक-साहित्य की सर्व प्रथम पुस्तक का प्रकाशन हुआ और फिर सन् १९५४ में 'मालवी और उसका साहित्य' 'मालवी की लोककथायें' और 'भारतीय लोकगीत' नामक पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। श्री परमार के ये प्रकाशन लोक-साहित्य के क्षेत्र में कार्य करने वाले अन्वेषकों के लिये महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां सिद्ध हुईं। सन् १९५७ में श्री परमार को आगरा विश्वविद्यालय द्वारा, मालवी का लोक-साहित्य नामक शोधग्रन्थ लिखने पर पी. एच. डी. की उपाधि से विभूषित किया गया। इसी परम्परा को बल देने में पं. सूर्यनारायण व्यास द्वारा 'मालवी और उसका क्षेत्र-विस्तार' निबन्ध ने भी अपूर्व सहयोग प्रदान किया। डा. परमार की उक्त परम्परा के प्रतिपादक एवं सहयोगी डॉ. चिन्तामणि उपाध्याय ने भी इस दिशा में सन् १९५० से कार्य प्रारम्भ किया। श्री उपाध्याय ने लोक-साहित्य के संकलन की दिशा में अथक परिश्रम कर लगभग १,००० लोकोक्तियां, २०० पहेलियां १५० मालवी दोहे तथा १,००० लोक-गीतों का संकलन व सम्पादन किया।

मधुमास विहँसता आया

मधुमास विहँसता आया,
लो नया सँदेशा लाया !

है पूर्व दिशा में उदित अनोखी लाली,
खेतों में हँसती हरी मदभरी बाली।
फूली सरसों पर छाई सुषमा पीली,
छेड़ी कोयल ने तानें मधुर रसीली,
आमों पर सुन्दर स्वर्ण-मंजरी फूली,
जिसकी शोभा को देख प्रकृति सुधि भूली,
अम्बर ने सप्त रंगों से-
नव बन्दनवार बनाया।
मधुमास विहँसता आया।

है मन्द-मन्द बह रही हवा पुरवाई,
कलियों ने उषाकाल में ली अँगड़ाई,
सौरभ बिखेरते खिले पुष्प मदमाते,
सब मुदित विहंगम मधुर स्वरों में गाते,
पुलकित वसुधा का अंग-अंग मुसकाया,
स्वागत में प्रियतम के, शृंगार सजाया,
नव ओस-बिन्दुओं ने मिल--
शुचि मुक्ताहार बनाया,
मधुमास विहँसता आया।

--श्री शैवाल सत्यार्थी

आपने 'मालवी-एक भाषा शास्त्रीय अध्ययन' नामक पुस्तक लिख कर मालवी भाषा की एक भारी कमी को पूरा किया। आपने नागपुर विश्वविद्यालय से सन् १९५६ में 'मालवी लोकगीतों' पर शोधपूर्ण ग्रन्थ लिखकर पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। श्री कुमार गंधर्व द्वारा मालवी के लोकगीतों में संगीत तत्व की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण अध्ययन एवं शोधकार्य किया गया। डॉक्टर द्वयों की इस परम्परा को आगे बढ़ाने का श्रेय मालव लोक साहित्य परिषद् के मंत्री श्री बसन्तीलाल बंम ऋतुराज को दिया जा सकता है। श्री ऋतुराज का इस दिशा में सन् १९४८ में पदार्पण हुआ। तभी से आज तक वे लोक-साहित्य के विभिन्न विषयों पर अविराम लिखते चले आरहे हैं। प्रकाशन की असुविधा के कारण श्री ऋतुराज की अब तक किसी पुस्तक का प्रकाशन नहीं हुआ, किन्तु लोक-साहित्य के विभिन्न अंगों पर देश की कई प्रतिनिधि पत्र-पत्रिकाओं में लगभग १५० से अधिक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। श्री ऋतुराज ने लोक-साहित्य के संकलन के क्षेत्र में भी सराहनीय कार्य किया है। अब तक उनके संकलन में २ हजार लोकोक्तियां एवं मुहावरे, ४ हजार मालवी शब्द, ५०० से अधिक गीत, ७० लोककथायें और ७ प्रबन्ध काव्य संगृहीत हुए हैं। इसके अतिरिक्त 'मध्यप्रदेश की लोक भाषाएं और उनका साहित्य' 'मालवी व्याकरण,' 'मालवी लोकोक्तियां एवं मुहावरें' 'मालवी लोकगीत' (एक साहित्यिक मूल्यांकन) आदि पाण्डुलिपियां तैयार रखी हैं। आज भी श्री ऋतुराज की लेखनी अविराम बहती चली जा रही है न केवल इतना ही, किन्तु वे हिन्दी के अच्छे कवि, लेखक एवं कहानीकार भी है। श्री ऋतुराज के अतिरिक्त श्री अनूप, श्री मेहता, श्री मधुर, श्री कुमार निर्मोही, श्रीमती मनोरमा, श्री मालवीय उपाध्याय, श्री चन्द्रशेखर दुबे आदि कई प्रतिभा-सम्पन्न लेखक इस दिशा में प्रयत्नशील है।

मालवी की उपभाषा निमाड़ी के क्षेत्र में डॉ. कृष्णलाल हंस, श्री रामनारायण उपाध्याय, प्रो. नेमीचन्द जैन एवं श्री बलराम पगारे कार्य कर रहे हैं। श्री हंस ने 'निमाड़ी लोक-साहित्य' पर शोध ग्रन्थ लिखकर नागपुर विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

इनके अतिरिक्त लोक भाषा के लेखक एवं कवियों में सर्व प्रथम महत्त्वपूर्ण नाम श्री श्रीनिवास जोशी का आता है। श्री जोशी ने मालवी बोली में कई व्यंग चित्र, कहानियां और हास्यरस पूर्ण 'गुरुगोटलाल' 'के नाम से एक उपन्यास भी लिखा है। श्री जोशी के अतिरिक्त सर्व श्री आनन्दराव

दुबे, भंवर, निगम, बेरागी, मामा उपाध्याय, पगारे, नरहरी पटेल, श्रीमती जोशी, मदनमोहन व्यास, नरेन्द्रसिंह तोमर, सिद्धेश्वर सेन तथा अन्य कई कविगण है, जिनने मालवी के संदेश को गाँव-गाँव और घर-घर में पहुँचाया है। 'मालव लोक-साहित्य परिषद' एवं 'मालव लोक-नाट्य मंडल' की स्थापना करने के फलस्वरूप मालवी भाषा का कार्य सराहनीय एवं प्रगति उल्लेखनीय है।

मालवी भाषा के प्रचार-प्रसार में आकाशवाणी इन्दौर और ग्राम सभा के आयोजित कार्यक्रमों ने भी अपूर्व सहयोग दिया है।

मध्यकाल में बुन्देली-लोक-भाषा का साहित्य अपनी प्रगति की पराकाष्टा पर था। वैसे तो बुन्देली भाषा पर ब्रज भाषा का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है, किन्तु मध्यकालीन बुन्देली साहित्य में बुन्देली भाषा का प्रभावपूर्णरूपेण परिलक्षित होता है। बुन्देली वीरों की वीर गाथाओं का उसके लोक-साहित्य पर जो प्रभाव पड़ा, उसी का एक रूप 'आल्हा-काव्य में हमारे सामने आता है। मध्यकाल के पश्चात् बुन्देली भाषा के लोक-साहित्य में शोध कार्य की परम्परा का प्रादुर्भाव पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी द्वारा होता है। टीकमगढ़ से प्रकाशित होनेवाले 'मधुकर मासिक' में बुन्देली, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी भाषाओं के लोक-साहित्य संबंधी कई लेख-आदि प्रकाशित हुए। यही परम्परा आगे चलकर श्री कृष्णानन्द गुप्त द्वारा संपादित 'ईसुरी की फागें' नामक लोकगीतों के संग्रह के रूप में प्रकट हुई। इसका प्रकाशन लोकवार्ता परिषद्, टीकमगढ़ द्वारा किया गया। 'गोने कीं विदा' (ग्राम्य कहानियाँ) और 'पाषाण नगरी' श्री शिवसहाय चतुर्वेदी की उक्त दो अनुपम कृतियों ने बुन्देली लोक-साहित्य में शोध परम्परा को एक नवीन दिशा दी। इसके पश्चात् श्री हरप्रसाद शर्मा की 'बुन्देलखण्डी लोकगीत' के नाम से एक और पुस्तक का प्रकाशन हुआ।

बाघेली भाषा के लोक-साहित्य में शोधकार्य का प्रारम्भ लगभग दो दशक से पूर्व का नहीं है, वैसे तो जिस प्रकार बुन्देलखण्ड के कवियों ने ब्रजभाषा को अपना रखा था, इसी तरह रीवां के दरबार में बघेली कविगण साहित्यिक भाषा के रूप में अवधी का आदर करते थे। सन् १९५३ में विन्ध्य भूमि की लोक कथाएँ—श्रीचन्द्र जैन का प्रथम लोक कथा-संकलन प्रकाशित हुआ, सन् १९५४ में आपका 'विन्ध्यप्रदेश के लोक गीत' तथा श्री लखन प्रतापसिंह 'उरगेश' का 'बघेली लोकगीत' नामक दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं। इन दोनों ग्रन्थों में बघेली के लोकगीतों का विभिन्न दृष्टियों से अध्ययन किया गया और इन्ही के पश्चात् बघेली भाषा क्षेत्र में लोक-साहित्य संबंधी शोध कार्य की परम्परा ने प्रबल रूप धारण किया।

छत्तीसगढ़ी भाषा में शोधकार्य एवं उसके लोक-साहित्य के संकलन, सम्पादन एवं प्रकाशन का प्रारम्भिक कार्य पाश्चात्य विद्वान श्री एलविन तथा श्री हिवाले के द्वारा रचित 'फोक सांग्ज ऑफ छत्तीसगढ़' नामक शोधपूर्ण पुस्तकों के प्रकाशन से प्रारम्भ हुआ। इसके पश्चात् सन् १९४० में श्री श्यामाचरण दुबे द्वारा 'फील्ड सांग्स आफ छत्तीसगढ़' पुस्तक का प्रकाशन हुआ। इसके अतिरिक्त टीकमगढ़ से प्रकाशित होनेवाले मासिक-पत्र 'मधुकर' में सन १९४० से ४५ तक के अंकों में श्री बनारसीदास चतुर्वेदी के द्वारा बहुतसी-सामग्री का सम्पादन हुआ। श्री चन्द्रकुमार की छत्तीसगढ़ी लोक-कथाओं का संग्रह भी इसी कड़ी की एक लड़ी है।

बुन्देली, बघेली एवं छत्तीसगढ़ी भाषाओं में लोक-साहित्य का जो संकलन एवं सम्पादन हुआ, वह या तो पाश्चात्य विद्वानों द्वारा किया गया, या फिर भारतीय विद्वानों के व्यक्तिगत मात्र प्रयासों का फल कहा जा सकता है। आज इन भाषाओं में साहित्य सृजन की भावना भी बलवती हो उठी है और इसके फलस्वरूप कई, प्रतिभा सम्पन्न लेखक एवं नये कवियों का उद्भव भी हुआ है।

आदिवासी भाषा समूह में भीली, भिलाली, गोंड़ी, मारिया और कोरवा भाषाओं में बिखरे रूप से कार्य भी अवश्य हुआ है। पाश्चात्य विद्वानों में प्रमुख रूप से श्री सी० ई० ल्यूअर्ड, एलबिन, डब्ल्यू. व्ही. ग्रेगसन, एस हिस्लप, डब्ल्यू. कूपर्स, आर० व्ही.० रसेल, तथा भारतीय विद्वानों में एम० एन.० बैंकटस्वानी, एस. :सी० राय० श्यामराव हिवाले तथा हीरालाल आदि ऐसे विद्वान हैं, जिनने अपने ग्रन्थों में इन आदिवासी भाषाओं और उनके साहित्य पर प्रकाश डाला है।

इनके अतिरिक्त 'प्रतिभा निकेतन' उज्जैन द्वारा विन्ध्या एवं सतपुड़ा की पहाड़ियों में निमाड़, बाघ तथा बड़वानी के क्षेत्रों में रहनेवाले भील-भिलालों की भाषा और उनमें उपलब्ध साहित्य का श्री बसन्तीलाल बम ने सम्पादन कर 'बाघ के भील-भिलाले' नाम से एक पुस्तक का प्रकाशन किया।

ग्वालियर भाषा समूह में अभी विशेष रूप से महत्वपूर्ण शोधकार्य नहीं हुआ, किन्तु श्री हरिहरनिवास द्विवेदी ने अपनी 'मध्यदेशीय भाषा, नामक पुस्तक में भाषा समूह का प्राचीन इतिहास और उनके वर्तमान स्वरूप पर अच्छा प्रकाश डाला है। इसके अतिरिक्त श्री रुद्रदत्त मिश्र, भीष्मसिंह चौहान, गोपीवल्लभ उपाध्याय आदि महानुभावों ने भी इस क्षेत्र के लोक-साहित्य संकलन में महत्व-पूर्ण कार्य एवं रचनाएें भी कीं। जहां तक इन भाषओं में उपलब्ध लोक-साहित्य के संकलन, सम्पादन और उनके प्रकाशन का संबंध है, कुछ बिखरे रूप में ही कार्य हुआ है तथा समय-समय यत्र-तत्र समाचार-पत्रों में उनका प्रकाशन भी होता रहा है। मध्यप्रदेश शासन द्वारा संचालित मध्यप्रदेश संदेश, ग्राम सुधार तथा साहित्य परिषद् द्वारा इस दिशा में पर्याप्त प्रकाशन कार्य हो रहा है।

उपरोक्त भाषाओं के अतिरिक्त हमारे इस विशाल प्रदेश में हिन्दी, उर्दू एवं मराठी भाषाओं का भी प्रचलन है। मराठी भाषओं में श्री पी. त्र. गोरे, की बरहाड़ी लोकगीतों तथा सौ० कमलाबाई देशपांडे की अपौरूषेय वाङ्मय अर्थात् स्त्री गीते, नामक कृतियां उल्लेखनीय हैं। यवतमाल, भुसावल, खानदेश एवं बरार के क्षेत्र में प्रचलित मराठी भाषा के लोकगीतों का इनमें विस्तृत एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। जहांतक हिन्दी एवं उर्दू भाषाओं का संबंध है, कोई महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय सामग्री दृष्टिगत नहीं होती।

आज हमें यह अवश्य प्रतीत होता है कि नवीन मध्यप्रदेश के निर्माण के पश्चात् हमें अपने प्रदेश की लोक-भाषाएं और उनमें उपलब्ध लोक-साहित्य, संस्कृति लोक-कला और लोक-संगीत का योजना बद्ध रूप से संकलन सम्पादन एवं प्रकाशन करना है और हम इस महन् कार्य के लिये लोक-साहित्य के क्षेत्र में कार्य करनेवाले विचारकों एवं लेखकों को सम्मिलित होकर गम्भीरतापूर्वक विचारविमर्श करना आवश्यक प्रतीत होता है।

डॉ० राजेन्द्रप्रसाद का कम्बोडियाई संसद में भाषण

नोम पेन। १८ मार्च को भारत के राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने कम्बोडियाई संसद के दोनों सदनों के एक संयुक्त अधिवेशन में भाषण करते हुए कहा कि यदि स्वतंत्रता का उपभोग प्रत्येक व्यक्ति को करना है तो उसका आधार अहिंसा तथा सत्य होना चाहिए। स्वतन्त्रता केवल निरा काल्पनिक सिद्धांत ही नहीं है, उसके लिए आर्थिक सन्तोष जरूरी है, जिससे वह मानवीय समाज में फलीभूत हो सके।

राष्ट्रपति ने कहा कि अहिंसा व सत्य पर आधारित स्वतन्त्रता को ही सब भोग सकते हैं, क्योंकि तब प्रत्येक व्यक्ति दूसरों की वैसी ही स्वतन्त्रता का सम्मान करता है। एक आदर्श समाज में स्वतन्त्रता का यह सम्मान प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य बन जाता है तथा वह दूसरों पर लादा जानेवाला अधिकार नहीं रह जाता।

राष्ट्रपति का सैगोन में भव्य स्वागत

दक्षिणी वियतनाम की त्रि-दिवसीय यात्रा के लिए राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद के यहां पहुंचने पर उनका जोरदार स्वागत किया गया। हवाई अड्डे पर उनकी अगवानी के लिए वियतनाम के राष्ट्रपति न्गो दिन. जेम, विभिन्न विभागों के मंत्री तथा कूटनीतिक प्रतिनिधि उपस्थित थे।

श्री हैमरशोल्ड की नेहरूजी से भेंट

नई दिल्ली। संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव श्री डाग हैमरशोल्ड १८ मार्च को प्रधानमंत्री नेहरूजी से मिले और बाद में उन्होंने उनके साथ ही खाना खाया। भोजन में प्रतिरक्षा मंत्री श्री कृष्ण मेनन भी उपस्थित थे।

सायंकाल श्री हैमरशोल्ड ने गृहमंत्री पन्तजी से आध घंटे तक बातचीत की।

श्री हैमरशोल्ड भारत का चार दिन का दौरा करने के लिए काठमांडू से यहां पहुंचे।

साप्ताहिक समीक्षा

श्री हैमरशोल्ड के सम्मान में एक स्वागत आयोजन भी किया गया, जिसमें भाषण करते हुए श्री हैमरशोल्ड ने कहा कि "एशिया के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र" की यात्रा से लौटते हुए नई दिल्ली आने से मुझे भारतीय नेताओं से अपने सम्बन्धों को फिर से ताजा करने एवं एशिया की घटनाओं के सम्बन्ध में इम्प्रेशनों पर विचार विनिमय करने व नए इम्प्रेशन प्राप्त करने का अवसर मिला है।

उन्होंने कहा कि मैं एशिया में राष्ट्रों के नेताओं से सम्पर्क कायम करने और यहां के सारे वातावरण के बारे में जानकारी पाने एवं यथाशक्य लोगों को यह बताने आया हूं कि संयुक्त राष्ट्र संघ सिर्फ न्यूयार्क ही नहीं है और वह सांकेतिक रूप में सर्वत्र है और होना भी चाहिए। दक्षिण-पूर्व एशिया की इस यात्रा में मुझे यह देखकर बड़ा उत्साह मिला है कि संयुक्त राष्ट्र संघ किस हद तक न केवल राजनीतिक और राष्ट्रीय नीतियों से सीधा सम्पर्क रखनेवाले क्षेत्रों में बल्कि और भी व्यापक क्षेत्र में एक सजीव वास्तविकता बन गया है।

समाज-कल्याण सम्बन्धी नेहरूजी का परामर्श

प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने समाज कल्याण कार्यकर्त्ताओं से कहा कि वे लोक-जीवन को प्रभावित करने वाली पंचायतों, सहकारी समितियों और अन्य प्रवृत्तियों की वृद्धि में दिलचस्पी लें।

उन्होंने कहा : उन्हें जहाँ-तहँ छोटे-मोटे काम करके ही संतुष्ट न होना चाहिए; बल्कि अपने काम को देश की बुनियादी समस्याओं के हल के व्यापक आन्दोलन का अंग बना देना चाहिए।

नेहरूजी ने यह विज्ञान भवन में राज्य समाज कल्याण परामर्श-दाता मंडलों के अध्यक्ष-सम्मेलन में उद्घाटन भाषण देते हुए कहा।

उन्होंने कहा : मंडलों ने समाज सुधार की दृष्टि से ही अच्छा कार्य नहीं किया है। बल्कि बुनियादी महत्त्व की दृष्टि से भी अच्छा कार्य किया है। उन्होंने भारत में सामाजिक क्रान्ति को आगे बढ़ाया है। किन्तु मैं यह निर्णय नहीं कर सकता हूं कि इस कार्य ने ग्रामीण भारत को कितना प्रभावित किया है। हमें गांवों को ओर ही विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

नेहरूजी ने कहा कि मंडल स्त्रियों को सहकारी समितियों में काम करने के लिए विशेष रूप से शिक्षित करे, जिससे गांवों के लोग यह ख्याल न करें कि स्त्रियाँ अलग रखी जा सकती हैं।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए केन्द्रीय समाज कल्याण मंडल की अध्यक्षा श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख ने कहा : "तीसरी पंचवर्षीय योजना के लिए समाज कल्याण के मुख्य-मुख्य काम अभी से निश्चित कर दिए जाने चाहिए। सार्वजनिक संस्थाएँ लोगों के हित के लिए काफी महत्त्वपूर्ण काम कर रही हैं, इसलिए अब यह जरूरी हो गया है कि सार्वजनिक संस्थाओं और राज्यों के बीच लोगों की भलाई से सम्बन्धित कामों का भी बंटवारा कर दिया जाए।"

भारत तथा रूसी प्रतिनिधि मंडल की संयुक्त घोषणा

नई दिल्ली। भारत तथा सोवियत रूस ने अन्तर्राष्ट्रीय तनाव में कमी करने तथा शांति के उद्देश्य में सहायता देने के लिए अपने प्रयास जारी रखना स्वीकार किया है। यह घोषणा आज यहां सोवियत संघ के सरकारी प्रतिनिधि मंडल की भारत-यात्रा की समाप्ति पर जारी की गई एक संयुक्त विज्ञप्ति में की गई।

विज्ञप्ति में बताया गया है कि रूसी प्रतिनिधि मंडल ने प्रधानमंत्री श्री नेहरू व अन्य प्रमुख नेताओं से अनेक वार्ताएं की हैं, इन वार्त्ताओं के दौरान दोनों पक्षों ने आणविक आयुधों वाले बड़े राष्ट्रों के बीच ऐसे आयुधों के परीक्षण अविलम्ब रोकने के लिए शीघ्र समझौता किए जाने की सहमति व्यक्त की।

भारतीय नेताओं से बातचीत में निशस्त्रीकरण, जर्मनी से शांति संधि, बर्लिन-समस्या, दक्षिण-पूर्वी एशिया और प्रशांत महासागर क्षेत्र में अणु आयुधों से मुक्त शान्ति क्षेत्र की स्थापना, अणु बमों के परीक्षणों पर रोक, हाल के अमेरिका और पाकिस्तान तथा तुर्की और ईरान के सैनिक समझौतों आदि बहुत-सी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार विनिमय हुआ। इस बातचीत में दोनों पक्षों ने संसार में तनाव कम करने और शांति बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील रहने के बारे में सहमति प्रकट की।

खाद तैयार करके पैदावार बढ़ाइए

—श्री एम. एस. शिवरमण

हमारे देश की आबादी काफी अधिक है और यह हर साल लगभग २ प्रतिशत बढ़ती जा रही है. दूसरी ओर अनाज की उपज इतनी कम हो गयी है कि इसके लिए हमें विदेशों का मुंह ताकना पड़ता है। कृषि शास्त्रियों का कहना है कि भारत की जमीन की उर्वरता अब काफी गिर चुकी है।

इन परिस्थितियों में भी हम पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा लोगों का रहन-सहन बढ़ाना चाहते हैं और अगले २५ वर्षों में प्रति व्यक्ति आय दुगनी करना चाहते हैं। परन्तु इसमें हम तभी सफल हो सकते हैं, जब पैदावार इतनी बढ़ाई जाय, जिससे देश की बढ़ती हुई आबादी की जरूरत भी पूरी हो सके। इसके बाद ही हम उद्योग बढ़ाने की ओर अधिक ध्यान दे पाएंगे।

फसल के लिए नाइट्रोजन जारी

खेती के बारे में हमारी एक कमजोरी यह है कि हम प्रकृति की बुनियादी बातों की अवहेलना कर देते हैं। इसीलिए हमें बाद में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह प्रकृति का नियम है कि यदि किसी फसल को अच्छी तरह उगाना है तो उसे पौष्टिक तत्त्व देना जरूरी है। इसमें पोटाश, फास्फेट और नाइट्रोजन प्रमुख हैं। हमारे देश की जमीन में पोटाश काफी मात्रा में है। फास्फेट भी पर्याप्त है, केवल कहीं-कहीं इसकी कमी है। परन्तु नाइट्रोजन की कमी सभी स्थानों पर है। इसके अलावा पौधों के लिए नमी सुरक्षित रखनेवाले पदार्थ (ह्यूमस) की भी कमी है। गर्म-स्थानों में नाइट्रोजन नष्ट हो जाता है और ह्यूमस जल जाता है।

पौधों के लिए नाइट्रोजन बहुत जरूरी है। यदि जमीन में नाइट्रोजन की कमी हो तो फसल अच्छी नहीं होती। इसलिए अच्छी फसल के लिए यह जरूरी है कि खेतों को पर्याप्त मात्रा में नाइट्रोजन दिया जाय।

हमारी फसलें हर साल जमीन से लगभग ४० लाख टन नाइट्रोजन ले लेती हैं और दूसरी और खेतों में जो खाद दी जाती है, उसमें केवल १० लाख टन नाइट्रोजन होता है। कुछ नाइट्रोजन बरसाती पानी के साथ आई मिट्टी और सड़े-गले पेड़-पौधों तथा जानवरों से भी मिल जाता है। इससे खेतों में मामूली पैदावार हो सकती है, अधिक नहीं। अधिक पैदावार के लिए अतिरिक्त नाइट्रोजन देना जरूरी है।

नाइट्रोजन के लिए ढेंचा

परन्तु देश का साधारण किसान अलग से नाइट्रोजन नहीं खरीद सकता। उसे ऋण भी आसानी से नहीं मिलता। इसलिए यदि थोड़ी मेहनत से खेतों में ही कम खर्च पर नाइट्रोजन तैयार करने का तरीका अपनाया जाय तो वह साधारण किसान के लिए अधिक उपयोगी साबित होगा। इससे वह दूसरों पर निर्भर नहीं रहेगा और अपने ही खेत में उत्साह से नाइट्रोजन तैयार करेगा। मद्रास में नाइट्रोजन तैयार करने का जो तरीका निकाला गया, उससे वहां किसानों को काफी लाभ पहुंचा। यह तरीका सारे देश की सिंचित और सूखी जमीन में अपनाया जा सकता है।

पैदावार बढ़ाने के लिए खाद जरूरी है और जब तक पैदावार नहीं बढ़ेगी तब तक हमारा खाद्य संकट दूर नहीं हो सकता। इस लेख में बताया गया है कि किसान किस प्रकार अपने ही खेत में खाद तैयार करके पैदावार बढ़ा सकते हैं।

—संपादक.

नाइट्रोजन के लिए गोबर बहुत अच्छा होता है, परन्तु उसका अधिकांश भाग ईंधन के काम आ जाता है। पौधों के पत्तों और डंठलों से भी नाइट्रोजन मिल सकता है, परन्तु वह जानवरों के खाने के काम आ जाता है। साथ ही एक एकड़ जमीन के लिए ४ टन पौधे चाहिएं और उसे खाद बनने में तीन से छः महीने तक लग जाते हैं। इससे कम से पर्याप्त नाइट्रोजन नहीं बन सकता।

हमारे देश में सिंचित जमीन भी है और वर्षा पर निर्भर रहनेवाली जमीन भी। सिंचित जमीन में यदि धान या गेहूं बोने से पहले दाल, ढेंचा आदि कलीदार फसल बो दी जाय तो उसकी हरी खाद से उससे गेहूं या धान के लिए नाइट्रोजन तैयार हो जायगा। यह देखा गया है कि ४,००० से ८,००० पौंड तक हरी खाद डालने से ४-५ साल में धान की उपज १,१०० पौंड से बढ़कर २,००० पौंड हो जाती है।

सिंचित जमीन में यदि पौध लगाते समय खेतों में हरी खाद बो दी जाय, तो रोपनी के समय वह तैयार हो जायगी और इस प्रकार रोपनी के बाद पौधों को बढ़ने के लिए काफी नाइट्रोजन मिल जायगा।

मद्रास की सफलता

मद्रास में १९५२ में मैंने ढेंचा के ४-४ औंस के बीज के पेकेट १-१ आने में किसानों को दिए। इसके अलावा ढेंचा बोने का काफी प्रचार किया गया और पूरे मद्रास में खेतों के किनारे ढेंचा बोने का कार्यक्रम चलाया गया। नतीजा यह हुआ कि १९५२ में वहां १० लाख एकड़ जमीन में ढेंचा बोया गया। इसकी खाद से पैदावार में काफी वृद्धि हुई।

अदुतरई के कृषि अनुसंधान केन्द्र में पैदावार १९४२ के १ लाख ७ हजार पौंड से बढ़कर १९५२-५३ में २ लाख ३३ हजार पौंड हो गई और हरी खाद भी २० टन से बढ़कर ४० पैदा होने लगी।

उड़ीसा में भी

मद्रास का यह तरीका देश के सभी क्षेत्रों अपनाया जा सकता है। उड़ीसा, बंगाल, आसाम, बिहार और उत्तरप्रदेश में ४ करोड़ एकड़ धान बोया जाता है, परन्तु वहां १९५७-५ केवल ५० हजार एकड़ में हरी खाद बोई उड़ीसा में १९५७ में ढेंचा के २-२ औंस के ६ लाख पेकेट बांटे गए। उस साल वहां

(शेष पृष्ठ २८ पर)

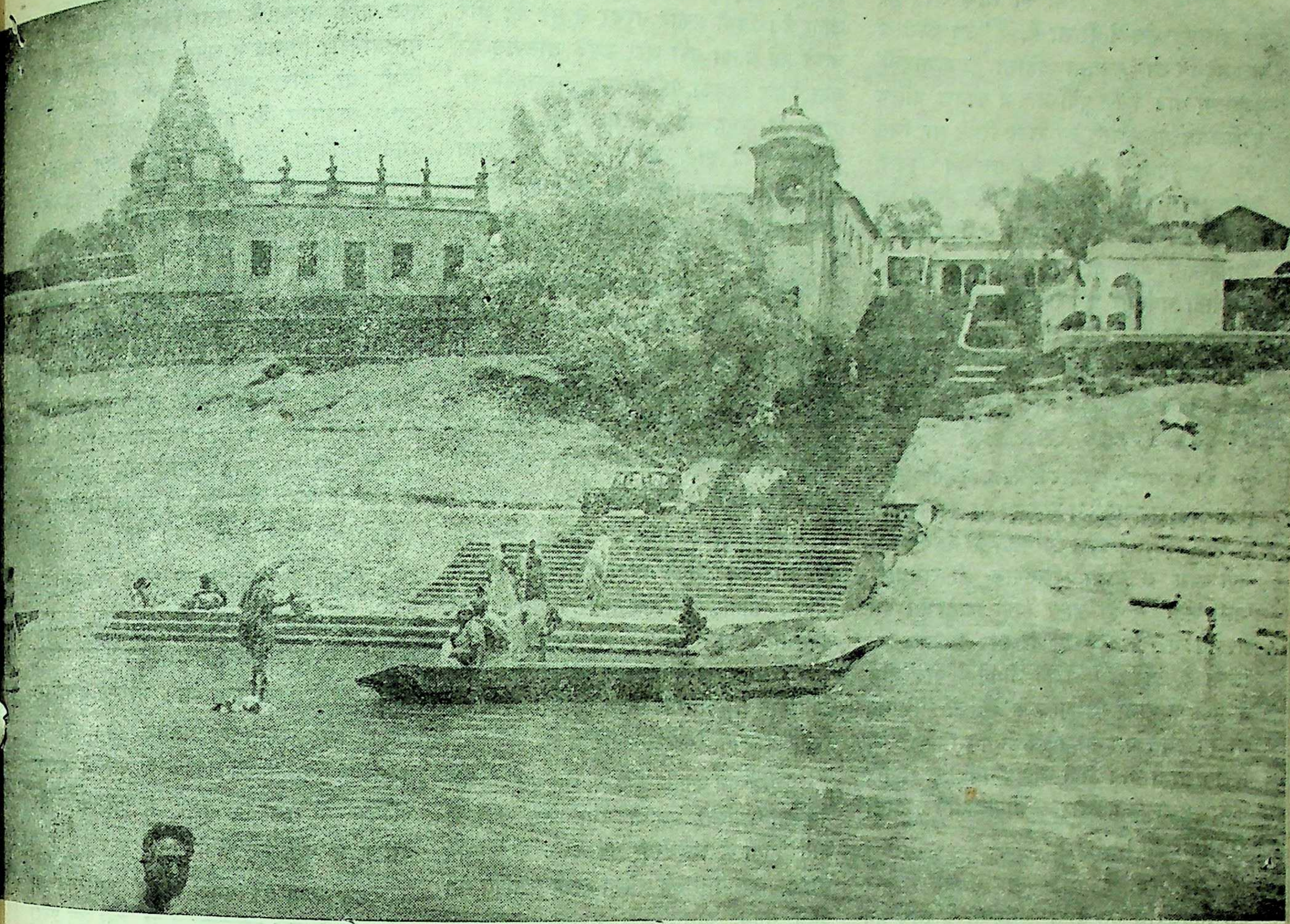

मंडलेश्वर (निमाड़) में मनोरम नर्मदा-तट का एक दृश्य

निमाड़—के अतीत······

(पृष्ठ ५ का शेष)

कुछ लोगों ने आधुनिक मान्धाता को माहिष्मती दर्शाया है। लेकिन यह सर्वथा निराधार है। सहस्रार्जुन ने जहां अपने सहस्रों हाथों से नर्मदा को रोका था, और जहां से नर्मदा का जल सहस्रों हाथों में होकर बहा था, वह स्थान आज भी महेश्वर में 'सहस्रधारा' के नाम से प्रसिद्ध है। वाल्मीकि रामायण में भी सहस्रधारा के निकट ही, सहस्रार्जुन और रावण में युद्ध होना पाया जाता है।

श्री शांति कुमार नानूराम व्यास ने भी अपने 'रामायण कालीन समाज' नामक अध्ययन ग्रंथ में श्री नन्दलाल दे की 'ज्याग्रफिकल डिक्शनरी ऑफ एनसिएंट एंड मिडिल इंडिया' के आधार पर इंदौर से ४० मील दूर दक्षिण में नर्मदा तट स्थित महेश्वर को ही 'माहिष्मती' दर्शाया है।

कहते हैं, इक्ष्वाकु वंश के राजा मांधाता के तीसरे पुत्र मुचकुंद ने महेश्वर को बसाया था। उसने पारियात्र, और ऋक्ष, पर्वतों के बीच नर्मदा किनारे एक नगर बसाया था, और उसे दुर्ग के समान चारों ओर से सुरक्षित किया था। (४) ऋक्ष और पारियात्र पर्वत के संबंध में में श्री डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का मत है कि 'शुक्तिमान भारतवर्ष के सात कुल पर्वतों में से एक था। सतपुड़ा और महादेव पहाड़ियां शुक्तिमान ज्ञात होती हैं। इसी पर्वत शृंखला का पूर्वी भाग जो सोन की उपत्यका में आगे बढ़ा हुआ है' ऋक्ष पर्वत होना चाहिए। दोनों के उत्तर में विन्ध्य और उसी का उत्तर-दक्षिण का बढ़ाव 'अड़ावला पर्वत पारियात्र' था।

इस तरह ऋक्ष और पारियात्र पर्वतों के बीच स्थित माहिष्मती ही आधुनिक महेश्वर सिद्ध होती है। बाद में हैहय वंशीय राजा महिष्मत ने उसे जीतकर उसका नाम 'माहिष्मती' रखा। पश्चात् सहस्रार्जुन ने ककेटिक नागों से युद्ध कर अनूप देश पर कब्जा कर लिया था, और माहिष्मती को अपना राज्य बनाया था। (६)

---

(४) श्री बालचंद्र जैन 'शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ' इतिहास पुरातत्व खंड पृष्ठ ९।

(५) डा० वासुदेवशरण अग्रवाल 'भारत सावित्री' पृष्ठ १३९।

(६) श्री बालचंद्र जैन–'शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ' पृष्ठ ९।

प्राचीन राज्य-व्यवस्था का जिक्र करते हुए श्री बालचंद्र जैन ने लिखा है, "उस काल में मध्यप्रदेश का बहुतसा हिस्सा 'दण्डकारण्ये' कहलाता था। इसके पूर्वी भाग में कोशल, दक्षिण कोशल या महाकोशल का राज्य स्थित था, जिसे अब छत्तीसगढ़ कहते हैं। उत्तरीय जिले, 'महिष्मण्डल' और 'डाहल मण्डल' में विभाजित थे। महिष्मंडल की राजधानी निमाड़ में "माहिष्मती" में थी और डाहलमण्डल की राजधानी जबलपुर के निकट त्रिपुरी में। अनूप, अवन्ति, दशार्ण, और औंड्र तथा कलिंग की सीमाएं वर्त्तमान मध्यप्रदेश से लगी हुई थीं। इसके अनेक टुकड़े अब मध्यप्रदेश के अंग बन चुके हैं।" (७)

इसके बाद महाभारत काल में भी युधिष्ठिर के द्वारा आयोजित राजसूय यज्ञ की सफलता के लिये, भीमसेन द्वारा विजित देशों के वर्णन में चेदी वंश के राजा, शिशुपाल की राजधानी 'माहिष्मती' में ही होना पाया जाता है। इस सम्बन्ध में डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने लिखा है, 'अनेकों देशों को जीतने के बाद भीम ने चेदी के राजा शिशुपाल के देश की ओर मुंह मोड़ा। जिसे वश में लाने के लिये युधिष्ठिर की विशेष आज्ञा थी। चेदी जनपद नर्मदा के किनारे फैला हुआ था, और "माहिष्मती" उसकी राजधानी थी।

महाभारत के नलोपाख्यान में जुयें में हारे हुए निषधराज नल द्वारा दमयन्ती के साथ वन में पहुंचने पर नल ने दमयन्ति को अपने मैके जाने का आग्रह करतें हुये जो तीन मार्ग बताये थे, उनमें से एक "निमाड़" में से होकर गया था। वे ही तीनों मार्ग आज भी भारतीय रेल-पथ ने ले लिये हैं। इस संबंध में डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने लिखा है कि-'कालीसिन्ध और सिन्ध के बीच में, प्राचीन निषध जनपद था, जिसकी राजधानी नलपुर आज का नरवर है। इसी प्रदेश में खड़े होकर नल ने तीनों मार्गों का निर्देश किया था। इस स्थान से रतलाम को जाते हुये रेल पथ के लगभग साथ उतरते हुये, पहला मार्ग उज्जैन, वहां से विंध्य पार कर नर्मदा उतरते हुये खंडवा और वहां से ठीक नीचे उतरते हुये, वर्तमान रेल मार्ग के साथ ताप्ती पार करते हुये विदर्भ अर्थात् अमरावती (बरार) की ओर जाता है। इसी प्रकार नरवर से पूर्व की ओर चलते हुये बेतवा नदी और उसके आसपास का घना जंगल जिसका पुराना नाम विंध्यावटी था, पार करके, बीना, सागर, दमोह, कटनी, सुहागपुर, विलासपुर का मार्ग, दक्षिण कोशल को जाता था। यही महाभारत-कार के अनुसार पश्चिम और पूरब के दो मुख्य यातायात के मार्ग थे। जो "विदर्भ मार्ग" और 'कोशल मार्ग' कहलाते थे। इन दोनों के बीच से तीसरा दक्षिण पथ मार्ग था, जो विन्ध्य की खड़ी हुई पट्टी के पूर्व ग्वालियर के धुर दक्षिण झांसी, बीना और वहां से सागर व कटनी होकर जबलपुर की ओर मुड़ता हुआ, पुनः उस मार्ग में जा मिलता था, जो आज भी नागपुर से दक्षिण की ओर जानेवाली यातायात की बड़ी धमनी है। (८)

'महाभारत के पश्चात् परीक्षित भारतवर्ष के सम्राट् बने। उनके समय से ही कलियुग का आरम्भ होना पाया जाता है। उसके बाद जनमेजय ने राज्य किया। इस समय अवन्ति के राज्य में मालवा, निमाड़ तथा मध्यप्रदेश के लगे हुये हिस्से मिले थे। अवन्ति राज्य पर अभी हैहयवंशी लोग राज्य कर रहे थे।'

"बौद्ध ग्रंथ अगुंतर निकाय, जैन ग्रंथ भगवती सूत्र या व्याख्या प्रज्ञप्ति तथा अन्य ग्रंथों से ज्ञात होता है कि ईस्वी पूर्व ६०० के लगभग उत्तर भारत में सोलह जनपद राज्य स्थापित थे। इनमें मगध, कोशल और अवन्ति, दूसरों की अपेक्षा अधिक सुसंगठित एवं शक्तिशाली थे। मध्यप्रदेश का कुछ हिस्सा अवन्ति महाजनपद के अन्तर्गत था, जिसकी राजधानी 'माहिष्मती' थी। (९)

लेखों और शिलालेखों के आधार पर ईसा की पहली और दूसरी सदी से इस जनपद का 'अनूप' नाम पाया जाता है। ईस्वी सन् १२४ में गौतमी पुत्र सतकर्णी ने नहपाना नामक नरेश से जो प्रदेश अपने अधिकार में लिया, उसमें अंकारा (पूर्वी मालवा) और अंवति (पश्चिमी मालवा) के साथ अनूप (निमाड़) का भी उल्लेख है।

इससे भी पहले कण्व और सुंग के राज्य को नष्ट करके आन्ध्र के राजा सियुक्त सतवाहन ने मालवा और निमाड़ में अपना राज्य स्थापित कर लिया था, और उसका पराभव कनिष्क के कुशन साम्राज्य के प्रतिनिधि महाक्षत्रप रुद्रदमन ने किया था। इस इतिहास का उल्लेख गिरनार के ईस्सी सन् १५० में जिस शिलालेख में किया गया है, उसमें भी इस प्रदेश का नाम 'अनूप' दिया गया है। (१०)

मुगलकाल में भी निमाड़ की एक स्वतंत्र राज्य के रूप में प्रतिष्ठा थी। इस संबंध में श्री प्रयागदत्त शुक्ल ने लिखा है-"तुगलक-वंश के समय में मुसलमानी भारत कई स्वतंत्र राज्यों में विभक्त हो गया था। इन प्रांतीय राज्यों में 'निमाड़' भी एक था। गुंजाल और हिरनफाल के मध्य में निमाड़ था, जिसकी राजधानी नेमावर (हंडिया के उत्तरीय तट पर) थी।

सुल्तान फिरोजशाह के समय में खानदेश राज्य की स्थापना हुई थी। सुल्तान ने एक फरमान के द्वारा ताप्ती कछार का प्रदेश मलिक फरूख को दे दिया गया था। आरम्भ में मलिक फरूख की राजधानी तालनेर थी। फरिस्ता कहता है कि 'उसके राज्य के पूर्व में वरार, पश्चिम में गुजरात, उत्तर में मालवा, और दक्षिण में महाराष्ट्र थे।"

इस राज्य का 'प्रमुख किला' 'असीरगढ़' था और यह जिसके अधिकार में हो, वही उस प्रदेश में हुकूमत कर सकता था। सन् १३७० ईस्वी में मलिक फरूख ने ताप्ती के कछार में अपनी सल्तनत की नींव रखी और उसका विकास उसके पुत्र नासीरखां ने किया। नासीरखां को गुजरात के सुल्तान ने 'खान' की उपाधि दी थी, जिससे उसका मुल्क "खानदेश" कहलाया,। फिर भी असीर का किला हिन्दू किलेदार के हाथ में था। नासिर ने उसके साथ मित्रता करके वह किला ले लिया। असीरगढ़ प्राप्त कर लेने पर उसको मुबारकबाद देने के लिये, दक्षिण से बुरहान्नुदीन और जैन्नुदीन नामक दो फकीर तालनेर गये थे। उनका शुभ संकेत पाकर नासिर ने ताप्ती के दोनों ओर नगर बसाया और एक का नाम 'जैनाबाद' और दूसरे का नाम 'बुरहानपुर' रखा।

---

(७) श्री बालचन्द्र जैन-'शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ' पृष्ठ ३।

(८) डा० वासुदेवशरण अग्रवाल-भारत सावित्री पृष्ठ १३९, २१६-२१७।

(९) श्री बालचंद्र जैन-'शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ' पृष्ठ १०।

(१०) श्री सत्यदेव विद्यालंकार 'मध्यभारत जनपदीय अभिनंदन ग्रंथ' पृष्ठ ७७।

स्थानीय समाचार

पूर्व माध्यमिक (मिडिल) परीक्षार्थियों को सूचना

शिक्षा विभागीय परीक्षाओं के रजिस्ट्रार द्वारा कक्षा ८ के अन्त में ली जाने वाली तथा दिनांक ६ अप्रैल १९५९ को प्रातः ७ बजे से राज्य के मध्यभारत क्षेत्र में विभिन्न केंद्रों पर प्रारंभ हो रहीं पूर्व माध्यमिक (मिडिल) परीक्षा में सम्मिलित होनेवाले प्रायवेट परीक्षार्थियों के प्रवेश-पत्र उनके आवेदन-पत्र प्रमाणित करनेवाले अधिकारियों की ओर प्रेषित किये जा चुके हैं। प्रायवेट परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे पूर्व माध्यमिक (मिडिल) परीक्षा के केंद्रों के प्रधानाध्यापक एवं प्रधानाध्यापिकाओं अथवा निरीक्षक शिक्षा विभाग अथवा सहायक निरीक्षक शिक्षा विभाग अथवा निरीक्षका एवं सहायक निरीक्षिका कन्या-शालाएं इनमें से जिसके द्वारा उन्होंने अपने आवेदन-पत्र प्रमाणित कराकर भेजे हों, उनसे अपने प्रवेश-पत्र तथा परीक्षा कार्यक्रम प्राप्त कर परीक्षा में सम्मिलित हों।

यद्यपि परीक्षार्थियों को आवेदन-पत्र के साथ दी गई सूचना में यह स्पष्ट सूचना दी गई है कि वे अपने प्रवेश-पत्र प्रमाणीकरण करनेवाले अधिकारी से प्राप्त करें, फिर भी वे रजिस्ट्रार कार्यालय से प्रवेश-पत्र की मांग करते हैं, जिसमें उनका समय व धन व्यर्थ ही नष्ट होता है। अतः यदि आवेदन-पत्र प्रमाणित करने वाले अधिकारी से संपर्क साधे बिना सीधे रजिस्ट्रार कार्यालय से प्रवेश-पत्रों की मांग के हेतु पत्रादि भेजे गए तो उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा और न कोई उत्तर भी दिया जाएगा।

पं. कृष्णराव सत्कार समारोह समिति का चुनाव

स्थानीय संगीत संस्थाएँ भारतीय संगीत विद्यालय, महारुद्र मंडल, शंकर गांधर्व महाविद्यालय, सरगम, संगीत कला मंडल, सांस्कृतिक मंडल तथा नादनिनाद एवं अन्य संगीत-सेवी जनों की एक बैठक श्री मोरघोड़े के निवास-स्थान पर दिनांक २० मार्च को हुई। जिसमें "पं. कृष्णराव सत्कार समारोह समिति" का निम्न प्रकार चुनाव सम्पन्न हुआ :—

(१) अध्यक्ष—श्री जी. एस. मोरघोड़े।

(२) उपाध्यक्ष—श्री बालकृष्ण मसूरकर।

(३) जनरल सेक्रेटरी—श्री भगवन्तराव ढोंढे।

(४) ज्वाइन्ट सेक्रेटरीज—श्री बावा जाधव तथा शशिकान्त ओदक।

(५) कोषाध्यक्ष—श्री के. वी. गड़कर।

(६) प्रसार मंत्री—श्री रामचरण दुबोलिया 'वसंत'।

श्री मसूरकर को विदाई पार्टी

गत दिनांक २३ मार्च को शासकीय क्षेत्रीय मुद्रणालय, ग्वालियर के कर्मचारियों ने सेवा-निवृत्त श्री वामन गोविन्द मसूरकर (राजाभैया) मेकेनिकल कम्पोजिंग फोरमेन को बिदाई पार्टी दी, सम्बन्धित अधिकारीगण भी सम्मिलित थे। श्री राजाभैया की पैंतीस वर्षीय सुदीर्घकालीन यशस्वी सेवाओं, अधीनस्थ श्रमिकों से स्नेहपूर्ण व्यवहार एवं कार्य-कुशलता की भूरि-भूरि प्रशंसा कई वक्ताओं द्वारा की जाकर उन्हें एक अभिनन्दन-पत्र भेंट किया गया।

इसके बाद नासिरखां ने बहमनी राज्य पर आक्रमण किया। अलाउद्दीन ने 'निमाड़ी सेना' को रोकने के लिये सूबेदार खालिकहुसैन खां को भेजा था। रोहणखेड़ की घाटी में निमाड़ी सेना को बहमनी राज्य की सेना ने हरा दिया। जिससे नासिरखां तैलंग के किले को भाग गया।

नासिरखां ने ४० वर्ष शासन किया था। (ईस्वी सन् १४३७) फारूकी वंश ने ई० सन् १३७० से १६०० तक शासन किया। उनकी वंशावली बुरहानपुर की जुम्मा मस्जिद में फारसी और संस्कृत में शिलांकित है। यह लेख संवत् १६४६ ई० सन् १५९० का है। (११)

क्या आप जानते हैं?

१. नेशनल सेम्पल सर्वे की आठवीं पड़ताल से (जुलाई १९५४ मार्च, १९५५) पता चला है कि भारत के गांवों में लगभग ६ करोड़ ५० लाख परिवार रहते हैं।

२. इन परिवारों के पास करीब ३१ करोड़ एकड़ जमीन है, जो देश के क्षेत्रफल का ३८ प्रतिशत और काम में आने लायक जमीन का ६१ प्रतिशत है।

३. इनमें से लगभग डेढ़ करोड़ परिवारों के पास कुछ भी जमीन नहीं है। और करीब एक चौथाई परिवारों के पास एक-एक एकड़ से भी कम जमीन है। अर्थात् करीब आधे परिवारों के पास जमीन है ही नहीं या है तो एक एकड़ से कम इनके पास जितनी जमीन है, वह कुल ग्रामीण परिवारों की जमीन के एक प्रतिशत से कुछ ही अधिक है।

४. लगभग तीन-चौथाई परिवार ऐसे हैं, जिनके पास जमीन नहीं है या ५ एकड़ से कम है। इन सबकी जमीन मिलाकर कुछ जमीन के छठे भाग से अधिक नहीं है।

५. सब परिवारों के पास जमीन का औसत ४.७ एकड़ होता है। इनमें भूमिहीन परिवार भी शामिल हैं।

६. भारतभर के तमाम ग्रामीण परिवारों में से ६३.५ प्रतिशत ने, कुछ भी जमीन पट्टे पर नहीं उठाई थी। १२.५ प्रतिशत परिवारों ने कुछ हिस्सा और २ प्रतिशत ने अपनी पूरी जमीन पट्टे पर उठाई थी। बाकी २२ प्रतिशत भूमिहीन हैं।

७. ९० प्रतिशत परिवार अलग खेती करते हैं।

८. १० प्रतिशत शामिल खेती करते हैं। ६ प्रतिशत केवल शामिल खेती और ४ प्रतिशत कुछ जमीन पर अलग और कुछ पर शामिल खेती करते हैं। सारे क्षेत्र का लगभग ८ प्रतिशत शामिल खेती में है।

---

(११) श्री प्रयागदत्त शुक्ल—'शुक्ल अभिनंदन ग्रंथ' पृष्ठ ७३ से ७५।

विविध-समाचार

प्रदर्शनियाँ आयोजित तथा नाटक अभिनीत

संपूर्ण मध्यप्रदेश में अल्प बचत पक्ष मनाया गया। जनता को योजना का महत्त्व समझाने के लिये प्रदर्शनियां आयोजित की गई तथा नाटक अभिनीत किये गये। योजना के महत्व को जनता पूरी तरह समझ चुकी है तथा राष्ट्रीय प्रमाण-पत्रों को खरीदने में उसने अत्यधिक रकम लगाई है।

रायगढ़

अल्प बचत पक्ष के अवसर पर जिला प्रकाशन कार्यालय द्वारा आयोजित अल्प बचत योजना प्रदर्शनी को रायगढ़ जिले के किलकिला तथा निकटवर्ती ग्रामों में लगभग ६ हजार से अधिक ग्रामीणों तथा आदिवासियों ने देखा। इस अवसर पर पत्थलगांव विकास खंड द्वारा एक हस्त-शिल्प, कृषि तथा पशु प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

महीदपुर

उज्जैन जिले के महीदपुर ग्राम में हाल ही में सप्त-दिवसीय शिवरात्रि मेले के अवसर पर जिला प्रकाशन कार्यालय द्वारा एक योजना तथा अल्प बचत प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। ५ हजार से अधिक ग्रामीणों ने प्रथम पंचवर्षीय योजना की सफलताओं तथा अल्प बचत योजनाओं के लाभों को दर्शाने वाली प्रदर्शनी को देखा।

बिलासपुर

बिलासपुर में राष्ट्रीय बचत पक्ष में स्थानीय महन्ती हाईस्कूल के शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा हाल ही में एक हिन्दी नाटक "लक्ष्मी पूजा" का अभिनय किया गया। इस नाटक का सारांश "बचत कीजिये तथा बुद्धिमत्तापूर्वक विनियोजित कीजिये।" इस नाटक को लगभग ७०० नागरिकों ने देखा :।

आलोच्य पक्ष में इस जिले में राष्ट्रीय बचत प्रमाण पत्रों में ७ लाख से अधिक रकम लगाई गई तथा ४०,००० रु० की रकम लगाने के वचन प्राप्त हुए।

यहां यह उल्लेखनीय है कि पूर्व इसी संबंध में शिवरी नारायण में क्षेत्रीय प्रकाशन कार्यालय द्वारा "हमारा गांव" नाटक अभिनीत किया गया। शिवरी नारायण, तखतपुर, मूंगेली और रतनपुर में इस पक्ष में प्रदर्शनियां भी आयोजित की गई।

सागर

सागर जिले में गत फरवरी, में विभिन्न अल्प बचत योजनाओं के अन्तर्गत कुल २,८४,८७५ रु० की रकम एकत्र की गई। इस रकम में ७८,९०० रु० १२ वर्षीय राष्ट्रीय योजना बचत प्रमाण-पत्र तथा अल्प बचत बैंक में जमा किये गये २,०५,२३१ रु० भी शामिल हैं।

छतरपुर में श्री मंडलोई का सरपंचों को उद्बोधन

मध्यप्रदेश के राजस्व, स्वायत्त शासन एवं वाणिज्य उद्योग मंत्री श्री बी. ए. मंडलोई ने दिनांक १५ मार्च को छतरपुर में आयोजित जिला स्तरीय सरपंच संगोष्ठी के सिलसिले में नगरपालिका टाउन हॉल में उपस्थित सरपंचों के समक्ष भाषण करते हुए कहा कि पंचायतें विकेन्द्रित प्रजातंत्रीय प्रशासकीय ढांचे की प्राथमिक इकाइयां हैं। मंत्रीजी ने उन्हें आपसी मतभेदों से ऊपर उठने की सलाह दी और कहा कि वे अपने पिछड़े भाइयों के प्रति सेवा की भावना अपनावें। मंत्रीजी ने कहा कि पंचायतों को शीघ्र ही प्रशासकीय अधिकार दिये जाएंगे, जिससे सच्चे अर्थों में कल्याणकारी राज्य की स्थापना के हेतु उनकी स्थिति को सुदृढ़ किया जा सके। उन्होंने आगे कहा कि समूचे राज्य में पंचायतों के ढांचों में एकरूपता लाने के प्रयास जारी हैं और सरकार पंचायतों की तरक्की के लिए पूरा सहयोग प्रदान करेगी।

इस अवसर पर, नगरपालिका बोर्ड छतरपुर के अध्यक्ष द्वारा मंत्रीजी को मानपत्र दिया गया।

इसके पूर्व श्री मंडलोई ने अखिल भारतीय खादी तथा ग्रामोद्योग मंडल की छतरपुर शाखा द्वारा स्थानीय तेलघानी केन्द्र में स्थापित साबुन निर्माण प्लांट का उद्घाटन किया।

श्री मंडलोई, लोक निर्माण विभाग के उप-मंत्री श्री दशरथ जैन के साथ टीकमगढ़ से छतरपुर पहुंचे। छतरपुर के मार्ग में उन्होंने राज्य पुरातत्त्व संग्रहालय, धुवेला का निरीक्षण किया और वहां सुरक्षित प्राचीन वस्तुओं की सराहना की।

दोपहर में आपने खजुराहो के ऐतिहासिक मंदिर भी देखे और मंदिरों की सुन्दर नक्काशी, शिल्पकला और स्थापत्यकला की प्रशंसा की।

दुर्ग जिले में पशुओं की रक्षा

दुर्ग जिले में जनवरी १९५९ के एक प्रगति प्रतिवेदन में बतलाया गया है कि पशु-पालन और पशु-चिकित्सा विभाग में पर्याप्त प्रगति हुई है। इस अवधि में ४,३९० पशुओं का इलाज किया गया, ८० पशुओं की शल्य-क्रिया की गई और ५०,००० से अधिक पशुओं को टीके लगाये गये। इसके अतिरिक्त आलोच्य अवधि में २,८२६ सांड़ों को बधिया किया गया।

प्राकृतिक और कृत्रिम विधियों द्वारा ४० गायों को गर्भाधान कराया गया। इसी प्रकार इस अवधि में २७,००० पौंड दूध और ११,७९३ अंडे पैदा किये गये और २,६१५ अंडे सेने के लिये दिये गये।

शहडोल जिले में कृषि कार्य

शहडोल जिले में १९५८-५९ वर्ष में कृषि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किये गये तथा आलोच्य अवधि में ७,७२,२४० रुपये तकावी के रूप में किसानों को वितरित किये गये। जिला कृषि कार्यालय से प्राप्त प्रतिवेदन के अनुसार आलोच्य वर्ष में बैलों को खरीदने, बांधों के निर्माण तथा पड़ती भूमि को कृषियोग्य बनाने के लिये ४५,८८ रुपये किसानों को दिये गये। ८२० एकड़ भूमि प जापानी प्रणाली से कृषि की गई, ६३५ मिश्रवा कूप खोदे गये तथा ९३९ मन उर्वरक वितरि किये गये।

रबी तथा खरीफ फसल अभियान को लोक प्रिय बनाने के उद्देश्य से १९,६४२ मन उन्नत बी वितरित किये गये। इसमें से १७,३८९ मन र अभियान में तथा २,५५३ मन खरीफ अभियान वितरित किये गये।

आलोच्य वर्ष में सिंचाई कार्यों पर ९२ हज से अधिक रुपये खर्च किये गये। इस रकम में ६,९०० रुपये की लागत से ३ पम्प खरीदे ४,००० रुपये की लागत से १३ कुएं खोदे तथा भूमि-क्षरण को रोकने के लिये १,५ रुपये की लागत से बांध बनाये गये।

परिवार-नियोजन मंडल की बैठक

राज्य परिवार नियोजन मंडल की पहली बैठक भोपाल में १४ मार्च को स्वास्थ्य मंत्राणी के निवास स्थान पर हुई ।

स्वास्थ्य मंत्राणी रानी पद्मावतीदेवी, जो कि इस मंडल की अध्यक्षा भी हैं, ने इस अवसर पर भाषण करते हुए भारत सदृश देश में, जहां उत्पादन की तुलना में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है, परिवार नियोजन की आवश्यकता पर जोर दिया । आपने कहा कि वास्तव में यही हमारी मुख्य समस्या है और इसी को दृष्टिगत रखते हुए पंचवर्षीय योजनाएं बनायी गयी हैं ।

स्वास्थ्य मंत्राणी ने आगे कहा कि इस समस्या को हल करने का प्रयत्न करते समय लोगों की सामाजिक आर्थिक, तथा मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि की जानकारी बहुत आवश्यक है । आपने कहा कि परिवार नियोजन की योजना को सफल बनाने के लिये यह आवश्यक है कि सामाजिक कायकर्त्ताओं, स्थानीय नेताओं तथा विशेषकर महिलाओं का सहयोग प्राप्त किया जावे । आपने सुझाव दिया कि राज्य में जहां कहीं भी ऐसे केन्द्र प्रारम्भ किये जायें, वहां स्थानीय कार्यकर्त्ताओं की समितियां गठित की जायें । आपने यह मत व्यक्त किया कि इस कार्य में ग्राम पंचायतों तथा अन्य ग्राम्य माध्यमों का सहयोग भी लिया जाना चाहिये ।

मंडल की बैठक में परिवार नियोजन कार्यक्रम को लोकप्रिय बनाने के लिये आवश्यक उपायों पर विचार-विमर्श किया गया । इस कार्यक्रम को विशेषकर राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में लोकप्रिय बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया । मंडल के अधिकांश सदस्यों ने यह मत व्यक्त किया कि जनता में परिवार नियोजन की आवश्यकता का प्रचार करने हेतु, प्रचार के प्रभावशाली माध्यम का उपयोग किया जाये ।

ग्वालियर संभाग में अल्प-बचत पक्ष

ग्वालियर संभाग में अल्प बचत पक्ष बड़े उत्साह से मनाया गया । यहां प्राप्त प्रतिवेदन के अनुसार इस पक्ष में ग्वालियर भिंड, मुरैना, शिवपुरी और दतिया जिले में २,५२,९४२ रु. के राष्ट्रीय अल्प बचत प्रमाण-पत्र बेचे गये ।

आलोच्य पक्ष में सराफा स्कूल, ग्वालियर तथा डबरा खंड के छीमक ग्राम में योजना के अन्तर्गत विभिन्न विभागों की प्रगति को दर्शानेवाले नमूनों तथा चार्टों का प्रदर्शन किया गया था । इसके अतिरिक्त संभाग के विभिन्न स्थानों में १० चलचित्र प्रदर्शन, सार्वजनिक सभाएं और विकास तथा अल्प बचत योजनाओं का लाभ दर्शानेवाले संगीत-नाट्य के कार्यक्रम आयोजित किये गये ।

ग्राम-रक्षा समितियों की गतिविधियां

ग्वालियर, भिण्ड और मुरैना जिलों के डाकुओं से आतंकित क्षेत्रों में गठित ग्राम-रक्षा समितियां शांति और व्यवस्था बनाये रखने और असामाजिक तत्त्वों का मुकाबला करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं । समितियों के सदस्यों ने अपने कर्त्तव्यों तथा दायित्वों को समझ लिया है तथा उन्हें डाकुओं के संकट से अपने गांवों की रक्षा करने में सफलता मिली है । समितियों के लिये यह गौरव की बात है कि जिन गांवों में ये समितियां गठित की गई हैं, वहां डकैती, हत्या अथवा अन्य कोई अवांछनीय घटना नहीं हुई है ।

यहां यह स्मरणीय है कि १९५८ वर्ष के अंत तक ८४५ ग्राम रक्षा समितियां गठित की गई हैं, जिनकी सदस्य संख्या १३,२७० है ।

यहां प्राप्त प्रतिवेदन के अनुसार इन समितियों ने अभी तक डाकुओं से ४५ गांवों में ८८ मुठभेड़ की हैं, तथा अनेक फरारों को आत्म समर्पण करने को विवश किया है । इसके अतिरिक्त समिति के साथ हुई विभिन्न मुठभेड़ों में ७ डाकु मारे गये । उन्होंने अब तक ४ डाकुओं तथा ६ बन्दूकों को पुलिस को सौंपा, तथा ३ लड़कियों और ४ व्यक्तियों का डाकुओं से उद्धार किया ।

उनकी बहादुरी के लिये, तथा डाकुओं से वीरतापूवक सामना करने की भावना को प्रोत्साहन देने के लिये राज्य शासन ने उन्हें नकद पुरस्कार दिये हैं ।

पश्चिमी जर्मनी में अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियां

जर्मनी (पश्चिमी जर्मनी) की संघीय गणतंत्र सरकार ने भारतीय नागरिकों को, पश्चिमी जर्मनी के विश्व विद्यालयों अथवा संस्थाओं में कृषि, वन विद्या (फॉरेस्ट्री) और टेकनॉलॉजी के विषयों के अध्ययन के लिये ८ छात्रवृत्तियां प्रदान की हैं । छात्रवृत्ति की अवधि दो वर्ष की होगी, जो एक अक्टूबर १९५९ से शुरू होगी । उम्मीदवार के पास विज्ञान की प्रथम श्रेणी की स्नातकोत्तर उपाधि, अथवा बेचलर ऑफ इंजीनियरिंग या टेकनॉलॉजी की उपाधि और जिस शाखा के लिये छात्रवृत्तियां दी जा रही हैं, उसमें उसे दो वर्ष का व्यावहारिक अथवा गवेषणा का अनुभव होना चाहिये । जर्मन भाषा का अच्छा ज्ञान होना भी अपेक्षित है । जो उम्मीदवार इन छात्रवृत्तियों के लिये आवेदन कर रहे हों, उनकी आयु १ अप्रैल १९५९ को ३० वर्ष से कम होनी चाहिये ।

इन छात्रवृत्तियों में लगभग ३९० रु. का मासिक निर्वाह भत्ता विश्वविद्यालयीन निःशुल्क शिक्षा और निःशुल्क यात्रा सम्मिलित है ।

आवेदन-पत्र, मंत्रालय, वैज्ञानिक गवेषणा और सांस्कृतिक कार्यकलाप, सी. एस. ३ शाखा, भारत सरकार, नई दिल्ली के पते पर २० मार्च १९५९ तक पहुंच जाना चाहिये ।

पंच प्रशिक्षण शिविर

मंडला जिले में निवास में हाल ही में निवास तहसील के पंचों के लिये एक सात दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया । ५० ग्राम पंचायतों के अनेक प्रतिनिधियों, जिला अधिकारियों तथा सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं ने शिविर के विभिन्न कार्यों में भाग लिया ।

इस शिविर में ग्राम पंचायतों के कार्यों की विस्तृत रूप से चर्चा की गई तथा शोषक कूप और खाद कूपों के निर्माण की वैज्ञानिक प्रणाली के प्रदर्शन किये गये ।

एक प्रदर्शनी, जिसमें कृषि, पशु-पालन, सामुदायिक विकास जैसे विषयों की नक्शों और चार्टों द्वारा महत्त्वपूर्ण जानकारी दी गई थी, भी आयोजित की गई ।

सीहोर में अल्प बचत पखवारा

सीहोर में हाल ही में अल्प बचत पखवारा बड़े उत्साहपूर्ण ढंग से मनाया गया । अंतिम दिन बचत अभियान के संगठकों द्वारा एक जुलूस निकाला गया । जुलुस ने सारे शहर में चक्कर लगाया और बाल-विहार में एक सभा के रूप में परिवर्त्तित हुआ । इस सभा में राष्ट्र के विकास कार्यक्रम में अल्प बचत योजना के महत्त्व की चर्चा की गई और इस अभियान की सफलता के लिए जनता से सहयोग मांगा गया ।

इस अवसर पर चलचित्र भी प्रदर्शित किये गए ।

खण्ड अधिकारियों के समक्ष डॉक्टर काटजू .का भाषण

मुख्य मंत्री डॉक्टर कैलासनाथ काटजू ने होशंगाबाद में जिले के खण्ड विकास अधिकारियों, विस्तार अधिकारियों और ग्रामसेवकों के सामने भाषण देते हुए कहा कि "आपको दो उद्देश्य सामने रखकर कार्य करना चाहिये। पहला यह कि भारत के कृषकों की आर्थिक दशा में सुधार हो तथा उनका जीवन-स्तर ऊंचा हो और दूसरा यह कि उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य-सुधार और यातायात की सुविधाएं प्राप्त हों"।

पशुओं के नस्ल में सुधार करने की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए आपने अधिकारियों को सलाह दी कि वे कृषकों को अपने अवकाश के समय लघु-उद्योग अपनाने के लिये भी प्रोत्साहित करें। मुख्य मंत्री ने सहकारी तथा संयुक्त कृषि का महत्ता, आवश्यकता और विस्तार पर भी जोर दिया और अधिकारियों से कहा कि वे कृषकों के निकट संपर्क में आएँ और उनकी कठिनाइयों का पूर्ण अध्ययन करके उनका निराकरण करने का प्रयत्न करें।

इसके पश्चात् डॉक्टर काटजू ने पुलिस परेड मैदान में पुलिस अधिकारियों और जवानों को सम्बोधित करते हुए उन्हें परामर्श दिया कि वे ईमानदारी और निष्पक्षता से कार्य करें।

अल्प-बचत पखवारा

रायपुर में—

रायपुर जिले में अल्प-बचत पखवारे की अवधि में २ लाख रुपये से अधिक राशि अल्प-बचत में विनियोजित की गई। यह पखवारा यहां ६ मार्च को समाप्त हुआ। रायपुर में पखवारे के अन्तिम दिवस एक श्रेष्ठ और मनोरंजक परिसंवाद आयोजित किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता रायपुर नगरपालिका समिति के अध्यक्ष ने की। आपने ५,००० रुपये की राशि बचत प्रमाण-पत्रों में विनियोजित भी की।

इसके पूर्व, सहायक राष्ट्रीय अधिकारी ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और कहा कि पखवारे की अवधि में ५०,००० रुपये के आश्वासनों के अतिरिक्त २ लाख रुपये से अधिक की कुल राशि विनियोजित की गई है। रायपुर जिले में अब तक कुल दस लाख रुपये की राशि विनियोजित की गई है।

रीवा में—

रीवा में महिलाओं में अल्प-बचतों को लोकप्रिय करने के लिये एक विशेष अभियान आरम्भ किया गया। इसका उद्धाटन ५ मार्च १९५९ को रीवा में श्रीमती चौधरी ने किया। श्रीमती कलमकर ने महिलाओं को सलाह दी कि वे इस अभियान में सक्रिय रूप से भाग लें। अल्प-बचतों की योजना विस्तार से समझाई गई और उसी समय १,४१० रुपये के प्रमाण-पत्र खरीदे गये।

ग्वालियर संभाग के भिंड, मुरैना, ग्वालियर शिवपुरी तथा दतिया जिलों में (गुना जिले की जानकारी सम्मिलित नहीं) अल्प-बचत योजना पक्ष में रुपये २,५२,९४२ के विभिन्न प्रकार के बचत सर्टिफिकेट क्रय किए गए।

राज्य पुलिस की सफलता

जिला मुरैना में सिहोनिया थाने के अन्तर्गत चिचावली ग्राम के निकट कुख्यात दस्यु पाना दल के १७ सदस्यों तथा मध्यप्रदेश पुलिस के ३ व्यक्तियों के एक दल से मुठभेड़ हुई, जिसके फलस्वरूप दस्यु हुक्मा काछी मारा गया और ३०३ बोर की एक बंदूक, १०१ कारतूस तथा अनेक कपड़े पुलिस के हाथ लगे। उक्त गिरोह द्वारा राहिलपुरा और बामोरे ग्राम के जो ७ व्यक्ति पकड़ लिए गए थे, उन्हें छुड़ा लिया गया। रामचरन चमार नाम के दस्यु की स्त्री जो उक्त दल की सदस्या है, जीवित पकड़ली गई।

१४ दस्यु पुलिस के बन्दी

राज्य पुलिस ने लालाराम, खेतीसिंह, रघुनाथ, भूरा, पंचम तथा भीखा नाम के ६ दस्युओं को जो मुरैना जिले के बागचीनी थाने के अंतर्गत क्षेत्र के निवासी हैं, बंदी बना लिया है। इन डकैतों ने दिनांक ४ मार्च को मुरैना जिले के बागचीनी थाने के अन्तर्गत पंचमपुर ग्राम में डकैती डाली थी।

दिनांक ६ मार्च, १९५९ को शिवराम, मगोले, बुद्धा, शिवनाथसिंह, शिवशंकर तथा लालाराम नामक ६ दस्युओं को, जो जिला जालौन, उत्तर-प्रदेश के निवासी हैं, कररुआ तथा बिजुरा ग्राम के बीच के वन-क्षेत्र में गिरफ्तार किया गया। इन दस्युओं के पास से हथियार भी बरामद हुए हैं।

ग्वालियर जिले के पिछोर थाने के अन्तर्गत राज्य पुलिस तथा कुख्यात दस्यु सालसिंह के गिरोह के मध्य दिनांक १० मार्च को हुई मुठभेड़ के फलस्वरूप रघुवर तथा किशोरा नामक दो दस्यु जो दतिया जिले के इन्दरगढ़ थाने के अन्तर्गत क्षेत्र के निवासी हैं दो बंदूकों के सहित पुलिस द्वारा बन्दी बना लिए गए। उक्त दस्यु-दल द्वारा विगत मास फरार की गई लड़की सरजू तथा उसका पिता जिसे डकैतों ने दिनांक ९ मार्च, १९५९ को पकड़ लिया था, दस्युओं के चंगुल से छुड़ा लिए गए।

पुलिस द्वारा दस्युओं से मुठभेड़

दिनांक १२ मार्च को राज्य पुलिस की एक टुकड़ी तथा कुख्यात दस्यु लालसिंह के दल से ग्वालियर जिले के बेहट थाने के अंतर्गत नरायनपुरा नामक ग्राम के निकट मुठभेड़ हुई।

उक्त दिवस को ही मुरैना जिले के बागचीनी थाने के अन्तर्गत मेघकापुरा नामक ग्राम के निकट दस्युओं के एक अज्ञात दल से राज्य पुलिस की मुठभेड़ हुई। इनके फलस्वरूप एक बंदूक, कुछ चांदी की सामग्री, वस्त्र तथा अनेक वस्तुएं पुलिस के हाथ लगीं।

डकैत लाखन के दो सहयोगी पुलिस के बन्दी

मुरैना पुलिस ने दिनांक ४ मार्च, को सिहौनिया पुलिस थाने के अन्तर्गत कोलुआ ग्राम के निवासी बबुआ तथा रतनसिंह को गिरफ्तार कर लिया। ये दस्यु लाखनसिंह के दल को सहायता देते थे। पुलिस ने रतनसिंह के पास से एक मजल लोडिंग बंदूक भी बरामद की है।

(भारत सरकार से रजिस्टर्ड)

सूखामृत पर मुफ्त इनाम

सूखा व अन्य बाल रोगों की अत्यन्त लाभप्र औषधि। दवा की प्रसिद्धि के लिये प्रत्येक द पर १ केलेन्डर, १९५९ का व एजेन्सी रो पुस्तक मुफ्त मँगावे। मू. १ शीशी १ रु. नये पैसे (खर्च अलग.)

श्री धर्नासिह आयुर्वेद भवन बरई—गवालियर

(२४—३)

मध्यप्रदेश सन्देश
में
विज्ञापन देकर लाभ उठाइए।

CHAMBAL VALLEY DEVELOPMENT GANDHI SAGAR DAM M. P.

Tender notice

Sealed item rate tenders, superscribed "Tender for construction of Wing Walls on Rampura Pathar" will be received by the undersigned upto 4 P.M., on 30th April, 1959. The tenders will be opened on the same day at 4-30 P.M., in the presenee of tenderors or their representatives as may be present. Only "A-1 and above" Class contractors registered in this Organisation or P.W.D., of any State or C.P.W.D., or M.E.S., or Indian Railways are eligible to tender.

The approximate cost of the work is Rs. 2,00,000.00 (Two Lakhs).

Period of completion of the work is 6 months from the date of issue of work order.

Earnset money of Rs. 3,000.00 in the form of National Savings Certificate, duly pledged in the name of the undersigned by designation or challan for deposit in cash in the office of the Chief Accounts Officer, Chambal Hydel and Irrigation Scheme, P.O., Chambal Hydel Works, Madhya Pradesh (in no case in form of currency notes) should accompany the tender, failing which the tender will not be considered.

Tender forms, together with relevant drawings, specifications, terms and conditions of contract etc., can be obtained from the office of the undersigned on payment of Rs. 7.00 per set (non refundable).

The competent authority reserves the right to reject any or all tenders without assigning any reason therefor.

(D. N. NAYATE),
Executive Engineer, Dam Divn. I., Chambal Hydel Scheme, M. P.
P. O., Chambal Hydel Works.

148;17

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER, CHAMBAL HYDEL AND IRRIGATION SCHEME (M.P.) TRANSMISSION CIVIL DIVISION, UJJAIN.

Tender Notice No. 20

Sealed quotations will be received from established suppliers for the supply of the material for construction of Sewerage system at the office of the undersigned upto 4-00 p.m., on 16th April, 1959 and will be opened o the same day at 4-30 p.m., in the presemce of the suppliers who may be present at the time. The approximate estimated cost is of Rs. 38,500/-.

The tender in the prescribed form can be obtained from the office of the undersigned on payment of Rs. 5/ per set during office hours on any working day from 9th April, 1959.

No tender will be received without an earnest money of Rs. 770/ in the form of National Savings Certificates pledged in the name of undersigned or Treasury Challans. Under no circumstances the Earnest money will be accepted in cash

No tender will be issued on the date fixed for opening of tenders.

The Superitending Engineer, (Electrical) Chambal Hydel Scheme reserves the right to reject any or all of the tenders without assigning any reason thereof.

Executive Engineer,
Transmission Civil Division, Ujjain.

149;16-17.

तहसील,कार्यालय नरसिंहगढ़

विज्ञप्ति

प्र. क्र. ५।५९×२७।८मूंडला वारोल

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम मूंडला वारोल के खातेदार विनयसिंह पुत्र दौलतसिंह, राजपूत ने अपने खाते से खसरा १४५ र. ३।) व खसरा नं. १४६ र. १ कुल रकबा ४।ऽ, लगानी ३।।।≡) की भूमि बल्देवसिंह पुत्र सेवाजीराव, मूंडला वारोल को बिक्री की है जिसकी स्वीकृति श्रीमान सब डिवीजनल ऑफीसर महोदय, नरसिंहगढ़ के कार्यालय से प्र. क्र. २०३।५८-६०११, दिनांक ७ नवम्बर १९५८ द्वारा हो चुकी है ।

क्रयता बल्देवसिंह ने इस कार्यालय में आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया कि विक्रयता विनयसिंह विक्री-भूमि की रजिस्ट्री नहीं कराता है ।

पस इस विज्ञप्ति द्वारा सूचित किया जाता है कि विक्रयता विनयसिंह एक माह के भीतर तहसील कार्यालय में आकर रजिस्ट्री करावे, अन्यथा अवधि समाप्त होने पश्चात तहसील द्वारा रजिस्ट्री करादी जावेगी और फिर किसी की कोई आपत्ति माननीय नहीं होगी । दिनांक २९ मा १९५९.

आज हमारे हस्ताक्षर व तहसील की मुद्रा-सहित जारी किया गया ।

लक्ष्मणसिंह,
तहसीलदार, नरसिंहगढ़, जिला
राजगढ़, म. भा.

(१४६-१६)

सफेद दाग

वह ऐसे निकल जाते हैं कि वे कहाँ थे इसका पता भी नहीं लगता। भगवान जी जैन पाचोरा (खानदेश) की पुत्री के सफेद कोढ़ के दाग अच्छे हो गये और आपने हमको ५१) रुपये इनाम दिया। ऐसे कई इनाम मिलें। मू० ६) विवरण-पत्र मुफ्त मँगावें। **नक्कालों से सावधान रहें।**

वैद्य बी. आर. बोरकर, आयुर्वेद भवन (२५) मु. पा. मंगरूलपीर, जि. अकोला (विदर्भ)

CHAMBAL HYDEL AND IRRIGATION SCHEME MADHYA, PRADESH

Tender Notice

Sealed tenders are invited by the undersigned by designation, for fabrication at Chambal Hydel Works of Steel structures for the Grid-substation in Madhya Pradesh. Total tonnage to be fabricated is approximately 122. Cost of tender documents and forms (non-refundable) payable in cash or by Money Order to the Chief Accounts Officer, Chambal Hydel & Irrigation Scheme, P.O., Chambal Hydel Works Madhya Pradesh, is Rs. 25.00 per set, which will be available for sale from the 15th March, 1959.

Tenders will be received till 4-00 P.M., on 15th April, 1959, and will be opened by 4-30 P.M., on the same date. Earnest money @ 2 % of the tendered value should accompany the tender without which it will not be considered.

The undersigned reserves the right to reject any or all the tenders or to place an order for the fabrication of part of the tonnage notified herein, without assigning any reason thereof.

K. S. SIVAPRAKASAM,
Superintending Engineer, Electric, Chambal Hydel and
Irrigation Scheme, Madhya Pradesh.

151;16-18

कार्यालय कार्यपालन यंत्री, लोक निर्माण विभाग, (भवन तथा सडक), निमाड़ संभाग खरगोन

विज्ञप्ति

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि आगरा-बाम्बे सड़क पर खलघाट के समीप नर्मदा नदी में पुल पर १ वर्ष के हेतु दिनांक १ जून १९५९ से दिनांक ३१ मई १९६० तक पथ-कर वसूल करने के स्वत्व का घोष-विक्रय इस कार्यालय में दिनांक १८ अप्रैल १९५९ को दिन के ३ बजे किया जावेगा.

बोली लगाने के पूर्व प्रत्येक इच्छुक व्यक्ति को रुपये १,००० (एक हजार) नगद अथवा इतनी रकम नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट अर्नेस्ट मनी के रूप में कार्यालय में जमा करन होंगे।

ठेके का प्रतिबन्ध तथा तत्संबंधी जानकारी इस कार्यालय में कार्यालयीन समय में देखी जा सकेगी।

ल० हा० भाटिया,
कार्यपालन यंत्री,
लोक निर्माण विभाग, भवन तथा सड़क,
निमाड़ संभाग, खरगोन।

(१४७-१६ से १८)

रूप, क्रमांक ४ दीवानी

वाद कारणों को नियत करने के लिये आव्हान पत्र (समन्स)।

(सम्पत्ति सम्बन्धी विधि के संग्रह की धारा ६४ व ६६ देखिये)।

सिविल जजी द्वितीय श्रेणी करेरा न्यायालय (अदालत)

प्र. क्र. ४७।५८- सीगा-इ. दीवानी।

शीर्षक (उनवान)

जानकी वल्द बल्देव, जाति तेली, निवासी
करेरा .. .. वादी।

विरुद्ध

दुरगा वल्द किशोरा, जाति तेली, निवासी
करेरा .. .. प्रतिवादी।

वाद का विवरण ३७५)

दुरगा पुत्र किशोरा, तेली, निवासी करेरा, हाल झांसी, तेलीयान के मन्दिर के पास, के नाम.

प्रगट हो कि वादी ने आपके नाम एक वाद ऋण के विषय में प्रस्तुत किया है।

इसलिये आपको आज्ञा होती है कि आप दि० ६ मई १९५९ को दोपहर से पूर्व ११ बजे स्वयं या नियमानुसार सक्षम वकील के द्वारा, जो मामले के हाल से वास्तव में अवगत (वाकिफ) किया गया हो और जो मामले से सम्बन्धित सब बातों का उत्तर दे सके या जिसके साथ कोई और व्यक्ति हो, जो ऐसे प्रश्नों का उत्तर दे सके, उपस्थित हो और उक्त वादी के वाद का उत्तर दो।

और आपको अनिवार्य है कि उसी दिन ऐसी सब लिखतमें प्रस्तुत करें, जिनके आधार पर आप अपने विवाद का समर्थन करना चाहते हैं।

और आपको सूचित किया जाता है कि यदि उक्त दिन आप उपस्थित न होंगे तो आपकी अनुपस्थिति में मामले की सुनवाई और निर्णय होगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा से आज दिनांक ५ मार्च १९५९ को जारी किया गया।

सिविल जज, द्वि० श्रेणी,
करेरा, मध्यप्रदेश।

(१५०-१६)

रूल, रूप. भा. २ क्र. २

वाद कारणों को नियत करनें के लिये आव्हान-पत्र ।

(ऑर्डर ५ रूल १,५ सं. वि. सं.)

न्यायालय सैंकन्ड सिविल जजी, ग्वालियर

मूल साम. वादा. क्र. ३६८।५८ इ. दी.

बिहारीलाल पुत्र भगवानदास, कौम वैश्य, साकिन फालके का बाजार लशकर, वादी

विरुद्ध

वृजलाल पुत्र लालाराम जाटव, निवासी कर्नल साहब की गली, लश्कर .. प्रतिवादी

प्रगट हो कि वादी ने आपके नाम एक वाद ४९२।।) के विषय में प्रस्तुत किया है ।

इसलिये आपको आज्ञा दी जाती है कि आप दिनांक ७ अप्रैल १९५९, दोपहर से पूर्व ११ बजे स्वयं या नियमानुसार सक्षम वकील के द्वारा, जो प्रकरण के हाल से वास्तव में अवगत किया गया हो और जो प्रकरण से सम्वधित सब बातों का उत्तर दे सके या जिसके साथ कोई और व्यक्ति हो, जो ऐसे प्रश्नों का उत्तर दे सके, उपस्थित हो और उक्त वादी के वाद का उत्तर दो और आपको अनिवार्य है कि उसी दिन ऐसी सब लिखतमें प्रस्तुत करें, जिनके आधार पर आप अपने प्रतिवाद का समर्थन करना चाहते हैं और आपको सूचित किया जाता है कि यदि उक्त दिन आप उपस्थित न होंगे तो आपके अनुपस्थिति में वाद की सुनवाई और निर्णय होगा ।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा से आज दिनांक ९ मार्च १९५९ को जारी किया गया ।

सिविल जज, श्रेणी, २, ग्वालियर
मध्यप्रदेश ।

(१४५-१७)

भारत सरकार से "रजिस्टर्ड"

सफेद दाग

इस परिक्षित दवा से स्त्री पुरुष या बालकों के शरीर पर के सफेद लाल दाग शरीर के त्वचा के समान पूर्ववत सुन्दर होते हैं। हजारों ने अनुभव करके प्रशंसा पत्र भेजे हैं मूल्य ५) रुपये अधिक विवरण मुफ्त मंगाकर देखिये ।

वैद्य के. आर. बोरकर (मध्य.),
मु. पो. मंगरूलपीर
जि. अकोला (विदर्भ)

MADHYA PRADESH PUBLIC WORKS DEPARTMENT

Tender Notice

Sealed item rate tenders either below or above on Estimated rates in P. W. D. Form 'C' Madhya Pradesh P. W. D. will be received from 'A' Class contractors registered by the Chief Engineer, P. W. D. (B&R) Division Bhind, for the following works up to 3 p. m. on the 4th April 1959 in the office of the undersigned.

1. *Name of works.*—Collection of B. T. chips mile No. 55, 56, 57, 58, 59/6F. of Gwalior Etawah Road.
2. *Probable cost of work.*—Rs.700,038.
3. *Time for completion.*—Mile No. 52, 57, 58/6F. be completed before 30th June 1959.
4. *Amount of earnest moner.*—Rs. 1,401.

(Other particulars including detailed conditions of tender notice can be seen at the office of the undersigned on any working day during office hours except on the day fixed for the receipt of tender.

A. M. KANHEREE,
Executive Engineer,
P. W. D. (B&R) Bhind, Division,
Bhind, M. P.

Note.—Sealed tenders from the next Lower Class P. W. D. contractors will also be received and considered, but a tenders so received will be accepted only if it is considered suitable and advantageous to Government.

खजुराहो

विश्वविख्यात स्थापत्यकला की अनुपम देन

यदि आपने कभी खजुराहो के विख्यात मंदिर नहीं देखे, तो यह पुस्तक अवश्य देखिये

यदि देखें हैं
तो उनकी स्मृति इस पुस्तक से ताजा रखिये

रायल अठपेजी, आर्ट पेपर पर मुद्रित १०२ प्लेट

अंग्रेजी और हिन्दी में
मंदिरों के इतिहास का मनोरंजक परिचय

नयनाभिराम मुद्रण : आकर्षक जिल्द : मूल्य १० रुपये

प्राप्तिस्थान :

व्यवस्थापक:—प्रकाशन शाखा, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय
जयाजी चौक, ग्वालियर, म० प्र०

(पृष्ठ १८ का शेष)

पड़ने के बावजूद भी ढेंचा खूब पैदा हुआ। १९५७ में वहां १०,००० एकड़ जमीन में और १९५८ में १ लाख एकड़ से भी अधिक जमीन में ढेंचा बोया गया। १९५९ में लागभग २० लाख एकड़ में बोया जायगा और तब देश में ढेंचे के बीज की कमी नहीं रहेगी।

उड़ीसा के कुछ स्थानों में धान रोपा नहीं जाता; फिर भी वहां धान के साथ ही ढेंचा बो दिया गया और एक महीने बाद उसे उखाड़कर खाद के काम लाया गया।

गेहूं के लिए हरी खाद

गेहूं की फसल के लिए हरी खाद तैयार करना और भी आसान है। खरीफ की फसल के समय गेहूं के खेत खाली रहते हैं। वहां जुलाई में ढेंचा बो दिया जाय और अगस्त के तीसरे सप्ताह उसे काटकर उसकी खाद बनादी जाय। इससे अक्टूबर में गेहूं बोते समय पर्याप्त मात्रा में हरी खाद तैयार हो जायगी। ढेंचे को बीज के लिए खरीफ की फसल के किनारे-किनारे भी बोया जा सकता है।

ग्लीरीसीडिया

हरी खाद के लिए मद्रास के कृषि अनुसंधान केन्द्रों में ग्लीरीसिडिया बोया गया। अब उड़ीसा और बंगाल में भी बोया जाने लगा है। पिछले साल केरल में इसके एक करोड़ से भी अधिक पौधे उगाए गए। यदि हम रुचि लें और तेजी से काम करें तो कुछ ही समय में हम देश भर की जमीन के लिए काफी बीज पैदा कर सकते हैं।

देश में नाइट्रोजन की कमी तभी दूर हो सकती है, जब हम किसानों को अपने खेतों के वास्ते खुद ही खाद तैयार करने के लिए प्रेरित करें। इसमें उन्हें खर्च नहीं करना पड़ेगा। यदि किसानों में उत्साह पैदा किया जाय तो जो सफलता मद्रास आदि में मिली है, वह सभी क्षेत्रों में मिल सकती है। हरेक खेत के लिए वहीं खाद तैयार की जा सकती है और इस प्रकार पैदावार बढ़ाई जा सकती है। तो फिर हम मेहनत करके क्यों न आत्मनिर्भर होने का प्रयत्न करें।

न्यायालय तहसील पिछोर, (गिद)

प्र. क्र. ५०।५७–५१

नोटिस

बनाम

विश्वनाथ पुत्र रामनाथ, जाति ब्राह्मण, निवासी ग्राम सिरोही.

जोकि तुम्हारे ऊपर मुसम्मी गड्वा पुत्र हरीसींगा व कलुआ पुत्र गोविंदी, जाति भोई, निवासी ग्राम सिरोही ने एक वाद इन्द्राज दुरुस्ती मि. नं. ५०।५७-५१ हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। अत: तुम दिनांक २० अप्रैल १९५९ को इस न्यायालय में उपस्थित होकर जवाबदेही करो, वर्ना तुम्हारे खिलाफ एकतर्फा किया जावेगा व तुम्हारा कोई उज्र समाअत न होगा।

राजबहादुरसिंह,
तहसीलदार,
परगना पिछोर, गिर्द, म. प्रा.

(१४४–१६)

501
SPECIAL SOAP
FOR DELICATE MATERIALS
THE TATA OIL MILLS CO. LTD.

आपके क़ीमती
कपड़ों के लिए
— टाटा का ५०१ स्पेशल साबुन

शुद्ध और सौम्य, टाटा का ५०१ स्पेशल साबुन आपके सभी क़ीमती कपड़ों के लिए एकदम निरापद है। इसके इस्तेमाल से आपके कपड़े ज़्यादा अरसे तक टिकाने और नये-जैसे बने रहेंगे।

दी टाटा ऑइल मिल्स कंपनी लिमिटेड TO 5361

मेल्स आफिस २५–जवाहर मार्ग, इंदौर सिटी

साप्ता० समीक्षा

श्री नेहरू का 'वास्तुकला' गोष्ठी में भाषण

प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने नई दिल्ली में ललित कला अकादमी द्वारा आयोजित "वास्तुकला" प्रदर्शनी व गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए भारत के भवन निर्माण विशेषज्ञों को सलाह दी कि वे पुरानी परिपाटियों से चिपटे न रहें, बल्कि स्वतंत्र रूप से चिंतन करें। भारत में यह प्रदर्शनी अपने ढंग की पहली प्रदर्शनी है। प्रदर्शनी के साथ-साथ वास्तुकला विषयक गोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

श्री नेहरू ने अपने भाषण में कहा कि प्रकाश, हवा, पानी और मानवी सुविधाएँ, इन आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर "वास्तुकला" के नए ढांचे के निर्माण पर विचार होना चाहिए। इस संबंध में उन्होंने चंडीगढ़ का उदाहरण पेश किया।

नेहरूजी ने कहा कि हमारे देश में लगभग २०० साल तक यह कला गतिहीन रही, जिसके कारण भारतीय मन का गतिहीन बन जाना था।

केन्द्रीय सांस्कृतिक गवेषणा मंत्री श्री हुमायूं कबीर ने अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए कहा कि इस गोष्ठी में स्वतंत्र मतों का प्रकटीकरण होना आवश्यक है, किन्तु उसकी नींव हमारे समाज की रचना पर आधारित होनी चाहिए। ऐसा विचार करने से हम भावी भारत के निर्माण का विचार कर सकेंगे।

श्री कबीर ने कहा कि वास्तुकला के विषय में हमारी प्राचीन परम्परा उज्ज्वल होते हुए भी कुछ समय तक हम सभी बातों को भूलकर मानो अन्धकार में टटोल रहे थे और उसी के कारण पश्चिम की नकल करते थे। अब परिवर्तन आवश्यक है।

सामुदायिक विकास की सन् १९५८-५९ की प्रगति

सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्रालय के सन् १९५८-५९ के काम की रिपोर्ट से पता चलता है कि १ जनवरी, १९५९ तक सामुदायिक विकास का काम २,४०५ खण्डों के ३,०२,९४७ गांवों में शुरू हो चुका था और लगभग १६॥ करोड़ देहाती जनता उससे लाभ उठा रही थी।

मैकमिलन का वाशिंगटन में स्वागत

ब्रिटिश प्रधानमंत्री श्री मैकमिलन राष्ट्रपति आइजनहोवर से रूस के साथ संबंधों व बर्लिन-समस्या पर वार्त्ता के लिए ओटावा से यहां पहुंच गए। हवाई अड्डे पर उप-राष्ट्रपति श्री निक्सन ने उनका हार्दिक स्वागत किया।

श्री मैकमिलन और आइजनहोवर की मैरिलैंड की पहाड़ियों में राष्ट्रपति के विश्राम-स्थल कैम्प डेविड में २–३ दिन तक गुप्त बातचीत हुई। इस वार्त्ता से पूर्व उन्होंने ४५ मिनट तक विदेशमंत्री श्री डलेस से बातचीत की।

हवाई अड्डे पर श्री मैकमिलन ने उप-राष्ट्रपति के स्वागत का प्रत्युत्तर देते हुए कहा कि अपनी रूस यात्रा में हमारी सफलता यह रही है कि हमने उनसे यह बात मनवाली है कि राष्ट्रों के बीच आपसी मतभेद बातचीत से दूर किए जाएं ताकत या एकपक्षीय कार्रवाई से नहीं।

उन्होंने कहा कि मित्र राष्ट्रों को अब इस बात की जरूरत है कि वे एक ऐसी सामान्य नीति अपनाएं, जिसमें दृढ़ता के साथ-साथ युक्तियुक्तता भी हो। इन दोनों चीजों के ठीक सम्मिश्रण से ही "स्वतंत्र संसार" को एकता और शक्ति प्राप्त होगी। नए समाचार के अनुसार आप ब्रिटेन में वापस आगए।

औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय की सन् १९५८-५९ की रिपोर्ट के अनुसार इस वर्ष विदेशी मुद्रा की कमी के बावजूद उत्पादन में वृद्धि हुई। नई चीजों का उत्पादन शुरू हुआ और कई नई योजनाएं शुरू की गईं। सूती कपड़े के उत्पादन में कुछ कमी हुई, किन्तु हथकरघे के कपड़े का उत्पादन इस वर्ष काफी बढ़ा। रिपोर्ट के अनुसार इस वर्ष उत्पादन-क्षमता भी बढ़ी।

निर्यात-वृद्धि के लिए बराबर प्रयत्न किया जा रहा है। इस वर्ष जापान, यूनान और इथियोपिया से सरकार ने पहले चार व्यापार समझौते किए। हाल ही में रूस से एक समझौता हुआ है, जिसके अनुसार व्यापार भारतीय मुद्रा में हो सकेगा।

सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय की रिपोर्ट

सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय की सन् १९५८-५९ की रिपोर्ट से पता चलता है कि इस मंत्रालय के हर विभाग की सन्तोषजनक प्रगति हुई है। इस वर्ष लखनऊ, हैदराबाद और भोपाल में नये रेडियो-ट्रांसमीटर लगाए गए। दिल्ली में १०० किलोवाट का शार्टवेव ट्रांसमीटर लगाया गया, जिससे विदेशों को कार्यक्रम प्रसारित करने का काम किया जाएगा। दिल्ली में टेलीविजन केन्द्र खोलने की भी व्यवस्था की गयी है।

फिल्म-डिवीजन ने सन १९५८ में ६९ नये फिल्म तैयार किए। सन् १९५८ के अंत में १६५ विदेशी संवाददाताओं को पत्र सूचना कार्यालय समाचार इकट्ठा करने में सुविधाएं दे रहा था। इस वर्ष राजस्थान के पत्रों को हिन्दी में सूचनाएं देने के लिए जयपुर में एक शाखा-कार्यालय खोला गया। पत्र सूचना कार्यालय से इस वर्ष हिन्दी में ६,०१५ सूचनाएं समाचार-पत्रों को भेजी गईं, जिनमें २३२ विशेष लेख थे। इस वर्ष ६०५ हिन्दी-पत्रों और प्रतिनिधियों को हिन्दी सूचनाएं भेजी जा रही थीं। मंत्रालय के प्रकाशन विभाग ने इंडियन इन्फार्मेशन, 'भारतीय-समाचार' और 'मीट्रिक मेजर्स' नामक नई पत्रिकाएं प्रारंभ कीं।

दंडकारण्य योजना में विस्थापितों को रोजगार

९ मार्च को नई दिल्ली में संसद-सदस्यों की अनौपचारिक बैठक में पुनस्संस्थापन मंत्री, श्री मेहरचन्द खन्ना ने बताया कि दण्डकारण्य क्षेत्र में विकास कार्य शुरू होते ही काफी विस्थापितों को काम मिल जाएगा। उद्योग-धन्धे चालू हो जाने पर नौकरी की और गुंजाइश हो जाएगी।

श्री खन्ना ने कहा कि खानें खोदने, रेल की लाइन बिछाने तथा यातायात का विकास करने के लिए सर्वे हो रहा है। यह काम शुरू होने पर और अधिक लोगों को काम मिलेगा।

सन्१९ ५८-५९ में चावल की पैदावार

सन् १९५८-५९ में देश में २ करोड़ ९७ लाख टन चावल पैदा हुआ। अब तक इतना चावल कभी पैदा नहीं हुआ। अधिक चावल पैदा होने का कारण क्षेत्रफल बढ़ने के अलावा प्रति एकड़ उपज बढ़ना भी है। इस साल प्रति एकड़ उपज ८१६ पौंड रही, जबकि पिछले साल ७०२ पौंड ही रही थी।

—परराष्ट्र मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री परेल रत्नम् लाओस में भारत के राजदूत नियुक्त किये गये हैं।

—कांडला में १७ लाख रुपये की लागत से नया हवाई अड्डा बन गया है, जिसका उद्घाटन १४ मार्च को नागरिक उड़ान के उपमंत्री श्री अहमद मुहीउद्दीन ने किया।

शासन की गतिविधि

मंत्रि-परिषद् के निर्णय

मंत्रि-परिषद् की बैठक में राज्य में उप-नगरों के विकास के नियमन के लिए विधान सभा में एक वैधानिक व्यवस्था प्रस्तुत करने का निर्णय किया गया। उन क्षेत्रों में, जहां नये उद्योग स्थापित किये जा रहे हैं, जैसे भिलाई तथा भोपाल के निकट, उप-नगर बड़ी तेजी से बढ़ रहे हैं और जब तक निर्माण-कार्यों का उचित ढंग से नियमन नहीं किया जाता, तब तक उचित दिशा में इन क्षेत्रों का विस्तार सम्भव नहीं हो सकता। इस उद्देश्य से शासन द्वारा एक बिल प्रस्तुत किया जायगा।

जूरी-प्रथा की समाप्ति

राज्य में जिन स्थानों में अभी जूरी-प्रथा चालू है, उसे समाप्त करने का भी परिषद् ने निर्णय किया। इस समय यह प्रथा महाकोशल क्षेत्र के केवल तीन राजस्व जिलों—होशंगाबाद, जबलपुर और निमाड़ में चालू है। यह उल्लेखनीय है कि विधि-आयोग ने इस प्रथा को समाप्त करने की सिफारिश की है।

राज्यपाल की सहायता निधि की बैठक में किये गये निश्चय

राज्यपाल की सहायता निधि, मध्यप्रदेश की जो बैठक राजभवन में १५ मार्च को हुई, उसमें यह निश्चय किया गया कि इस निधि को स्थायी आधार पर चालू रखा जाय और इस निधि के उद्देश्यों का इस दष्टि से विस्तार किया जाय कि जब राज्य के किसी भाग में कोई अप्रत्याशित आपत्ति आये, उस समय जनता को सहायता पहुंचाई जासके। राज्यपाल श्री एच०व्ही० पाटस्कर ने, जो इस निधि के अध्यक्ष हैं, इस बैठक की अध्यक्षता की। अध्यक्ष ने इस निधि का लेखा प्रस्तुत किया। १० मार्च, १९५९ तक कुल १,५२,४३१.५० रुपये एकत्र किये गये और ६५,४७९. रु० खर्च हुए। अध्यक्ष ने यह सूचित किया कि चूंकि यह निधि अस्थायी आधार पर है, इसलिये इसकी एकत्र राशियां फिलहाल स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, भोपाल के चालू खाते में रखी जा रही हैं। उन्होंने ५०० रुपये और इससे अधिक राशि देनेवाले व्यक्तियों के नाम पढ़ कर सुनाये।

बैठक में यह भी निश्चय किया गया कि जो व्यक्ति निर्धारित राशि से अधिक राशि दान में दें, उनके दान एक टिकाऊ कागज पर छपे हुए प्रमाण-पत्र देकर स्वीकार किये जाएं तथा इन प्रमाण-पत्रों पर राज्यपाल के हस्ताक्षर रहें।

इस बैठक में उपस्थित व्यक्तियों में निम्नलिखित सम्मिलित थे:— मुख्य मंत्री डॉ० के० एन० काटजू, वन मंत्री श्री शंभुनाथ शुक्ल, वित्त मंत्री श्री मिश्रीलाल गंगवाल, लोक निर्माण मंत्री श्री शंकरलाल तिवारी, श्रम मंत्री श्री व्ही० व्ही० द्रविड़, समाज कल्याण मंत्री श्री गणेशराम अनन्त। स्वास्थ्य मंत्राणी रानी पद्मावती देवी, उप मंत्री श्री एम०पी० दुबे, सर्वश्री शाकिर अली खान, वि० स० स सदोरामल, एम० राजपूत, बैरागढ़, उद्धवदास मेहता, भोपाल, व्ही. सी. टंडन, पी. टी. आई, और सिरोंज नगरपालिका की उपाध्यक्षा श्रीमती लज्जा भार्गव।

जलकर-समिति की प्रश्नावली लोकमत जानने के लिये प्रसारित

लोक कर्म उप-मंत्री श्री दशरथ जैन की अध्यक्षता में गत २ मार्च, १९५९ को भोपाल में २० सदस्यों वाली जलकर-समिति की बैठक में किये गये निश्चय के अनुसार नये मध्यप्रदेश की विभिन्न एकीकृत इकाइयों की विभिन्न फसलों के लिये विद्यमान जलकरों के परीक्षण के संबंध में एक विस्तृत प्रश्नावली तैयार की गई है। यह प्रश्नावली राज्य में सिंचाई कार्यों के प्रबन्ध और प्रशासन पुनरीक्षण हेतु भी तैयार की गई है।

फसलों के लिये जल की मात्रा, विभिन्न फसलों की पैदावार, फसलों का उत्पादन व्यय, वर्त्तमान जल-कर व्यवस्था, सिंचाई की विभिन्न पद्धतियों के लिये जल-कर, जलकर पुनरीक्षण, सिंचाई का कृषि पर प्रभाव, जलकर व्यवस्था में एकरूपता, अनिवार्य सिंचाई-कर, जल मार्गों की व्यवस्था तथा उनकी देख-भाल, जल-अपव्यय के लिये दण्ड, उर्वरक और सिंचाई में समन्वय, जिला स्तर सिंचाई समिति का गठन, सिंचाई की करार पद्धति, जल-कर संग्रह की एजेंसी, नहर पंचायत के कर्त्तव्य तथा राज्य में सिंचाई के प्रबंध व नियंत्रण के संबंध में विस्तृत सूचना एकत्र करने तथा जनता की राय जानने के लिये यह प्रश्नावली अन्तिम रूप से तैयार करके प्रसारित की गई है।

जनता द्वारा कोई सुझाव या मत, यदि कोई हों, और प्रश्नावली के उत्तर देने की अन्तिम तिथि दिनांक ३० अप्रैल १९५९ है।

शासकीय फार्मों से कृषकों को लाभ पहुंचाने की व्यवस्था

राज्य शासन द्वारा उस योजना को अन्तिम रूप दे दिया गया है, जिसके अन्तर्गत १ अप्रैल १९५९ से प्रत्येक सप्ताह में एक ऐसा दिन निश्चित किया जाएगा, जब किसान राज्य के सब शासकीय फार्मों का निरीक्षण कर सकेंगे। उस दिन कोई भी किसान फार्म में जाकर अपनी कठिनाइयों को हल करा सकता और अपनी विशेष समस्याओं पर फार्म के कर्मचारियों के साथ चर्चा कर सकता है।

फार्म अधीक्षकों को आदेश दिये गये हैं कि वे अपने-अपने फार्मों में विशिष्ट स्थान पर दो सूचना-फलक लगाएं। पहले फलक में यह सूचना रहेगी कि विशेष रूप से इस दिन कोई भी किसान दिन को १२ से ५ बजे तक फार्म में आकर अपनी कृषि-सम्बन्धी समस्याओं के सम्बन्ध में फार्म कर्मचारियों से सलाह ले सकता है। दूसरे फलक में यह बतलाया जायगा कि फार्म ने कितनी प्रगति की है। उसमें विशेषतः विभिन्न फसलों के उत्पादन के आँकड़े रहेंगे और यह बतलाया जायगा कि इतना उत्पादन कैसे किया गया।

इन अवसरों पर किसानों को समस्त फार्म में घुमाया जायगा, जिससे वे देख सकें कि अच्छी फसल कैसे उत्पन्न की जा सकती है। किसानों को उन्नत प्रणालियों के महत्त्व को समझाने के लिए विभिन्न कृषि कार्यों, विभिन्न फसलों और खादों तथा अन्य कार्यों के लिए अधीक्षक द्वारा सुबोध प्रदर्शन-प्लाट तैयार किये जायेंगे। महत्त्वपूर्ण कृषि प्रयोग, फसलों की अदला-बदली और मिश्र खाद के उत्पादन आदि के संबंध में भी विस्तार-पूर्वक समझाया जायगा। निरीक्षणार्थ आये किसानों को अधीक्षक द्वारा फार्म दिखलाया जायगा तथा अधीक्षक सरल भाषा में उक्त प्रकार के सब कार्यों को विस्तार से समझाएंगे और किसानों के द्वारा पूछे गये प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर देंगे।

जिन शासकीय फार्मों पर मुर्गी-पालन केंद्र और दुग्धशाला हैं, वहां इनका भी सुदृढ़ रीति से विकास किया जायगा; जिससे किसान यह समझ सके कि अतिरिक्त आय प्राप्त करने के लिए मिश्रित कृषि कितनी लाभदायक है।

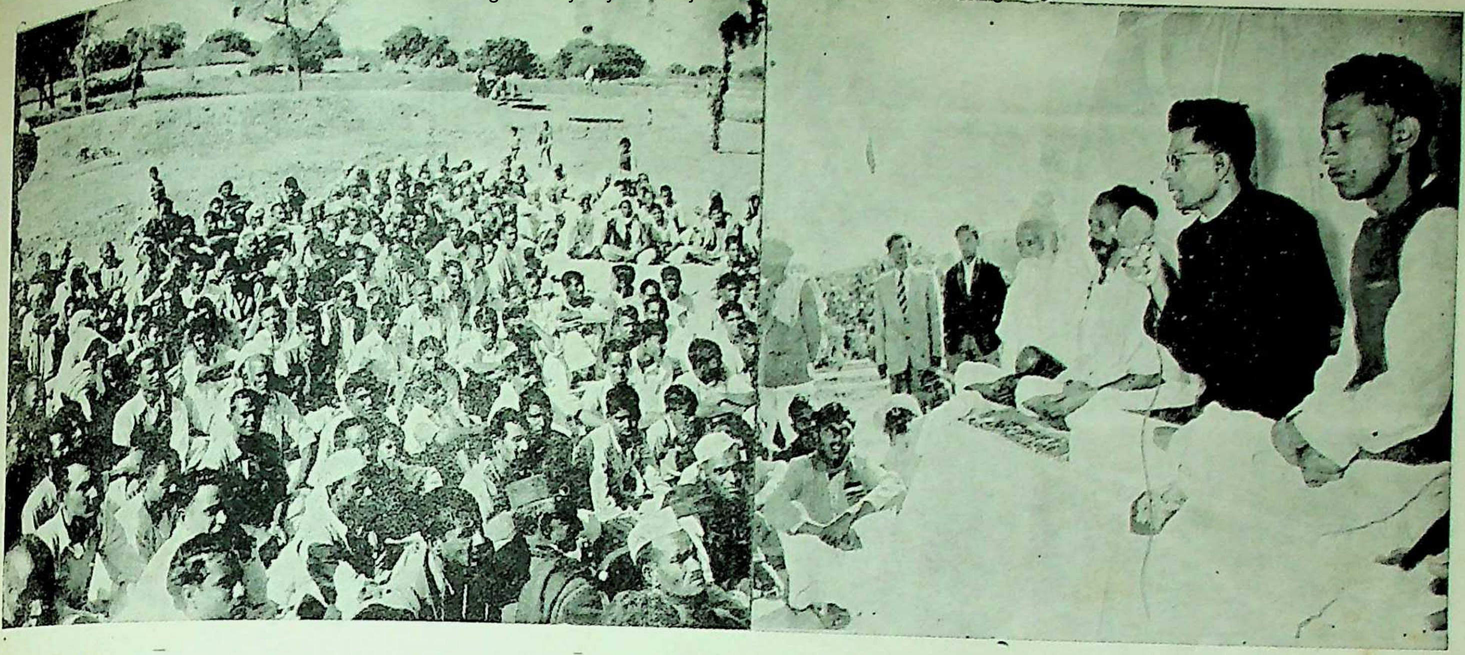

बिरखड़ी (जिला भिन्ड) में परशुराम विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर भाषण देते हुए मध्यप्रदेश के श्रम मंत्री श्री वी० वी० द्रविड़

★

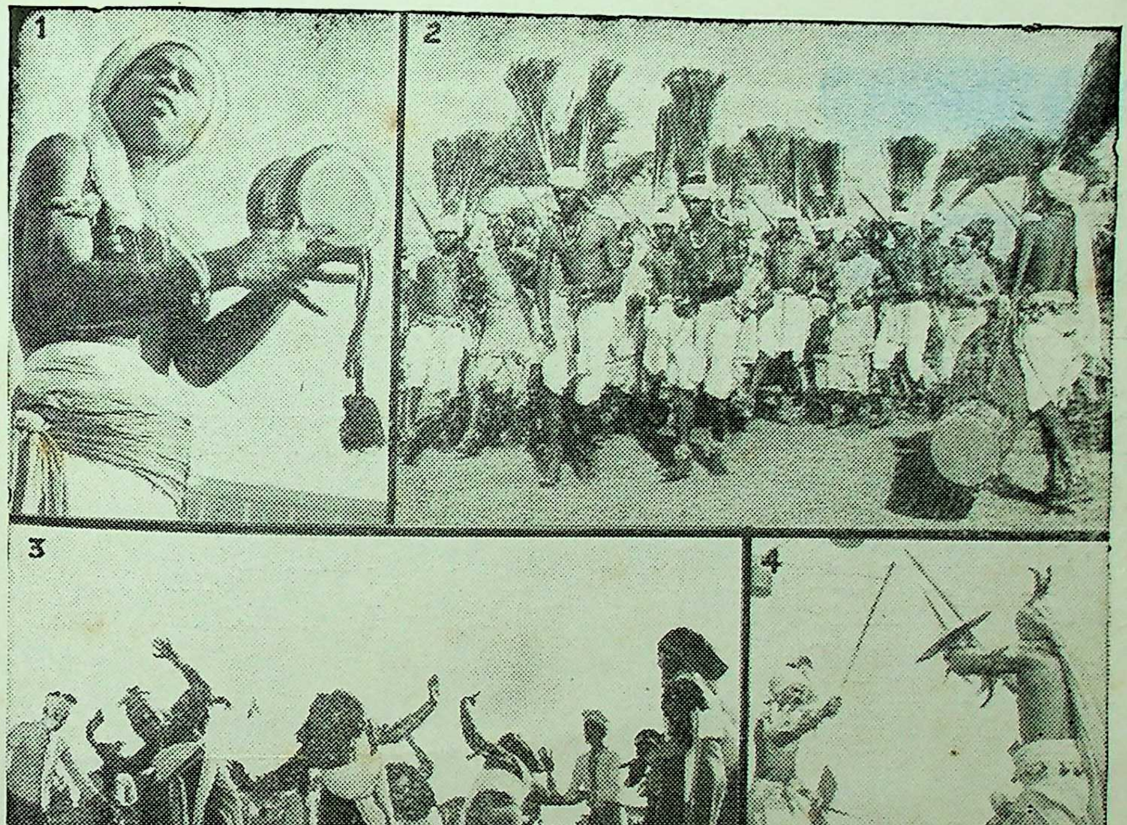

दिल्ली में गणराज्य दिवस समारोह के अवसर पर लोक-नृत्य का कार्यक्रम भी रखा जाता है। इससे हमें विभिन्न स्थानों की लोककलाओं की सुन्दर झांकी मिलती है। चित्र संख्या (१) पांडिचेरी का एक युवक डमरू बजा रहा है। चित्र संख्या (२) बिहार के संथालों का शिकार-नृत्य। इसे १९५९ की लोकनृत्य ट्राफी प्रदान की गई। चित्र संख्या (३) आसाम का प्रमुख उत्सव-नृत्य 'हुरई रंगीली'। चित्र संख्या (४) उड़ीसा की पैक जाति का युद्ध-नृत्य।

Registered No J. 158
Licenced to post Without prepayment

MADHYA PRADESH SANDESH

वार्षिक मूल्य छः रुपये
Licence No. P.P.

GEW
GWALIOR

Madhya Pradesh Government Workshop

The best People use the best Articles
&
we make them best for you

We make :

STEEL FURNITURE
HOSPITAL EQUIPMENT
PLANT PROTECTION BLOWERS & PUMPS
SLUICE GATES
TAR BOILERS & OTHER P. W. D. ITEMS
BUS BODIES & TRUCK BODIES
MOBILE VANS FOR SPECIAL PURPOSES
AMBULANCE CARS
CONSERVANCY CARTS & TRAILERS
ROAD ROLLER RIMS & HEAVY CASTINGS
MACHINE TOOLS
STEEL STRUCTURALS
&
THEY ARE ALL BEST BY ANY STANDARDS

Details and Price lists on demand please—

GWALIOR ENGINEERING WORKS, GWALIOR

Grams: 'MECHANIC'
phone

प्रबंध सम्पादक——ईश्वरसिंह परिहार, संचालक, सूचना एवं प्रकाशन संचालनालय, मध्यप्रदेश

सम्पादक-अनन्त मराल शास्त्री

देवेन्द्र नारायण वाजपेयी, मुख्य सम्पादक, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय
द्वारा प्रकाशित तथा गवर्नमेंट रीजनल प्रेस, ग्वालियर द्वारा

एक प्रति का मूल्य—१३ नये पैसे

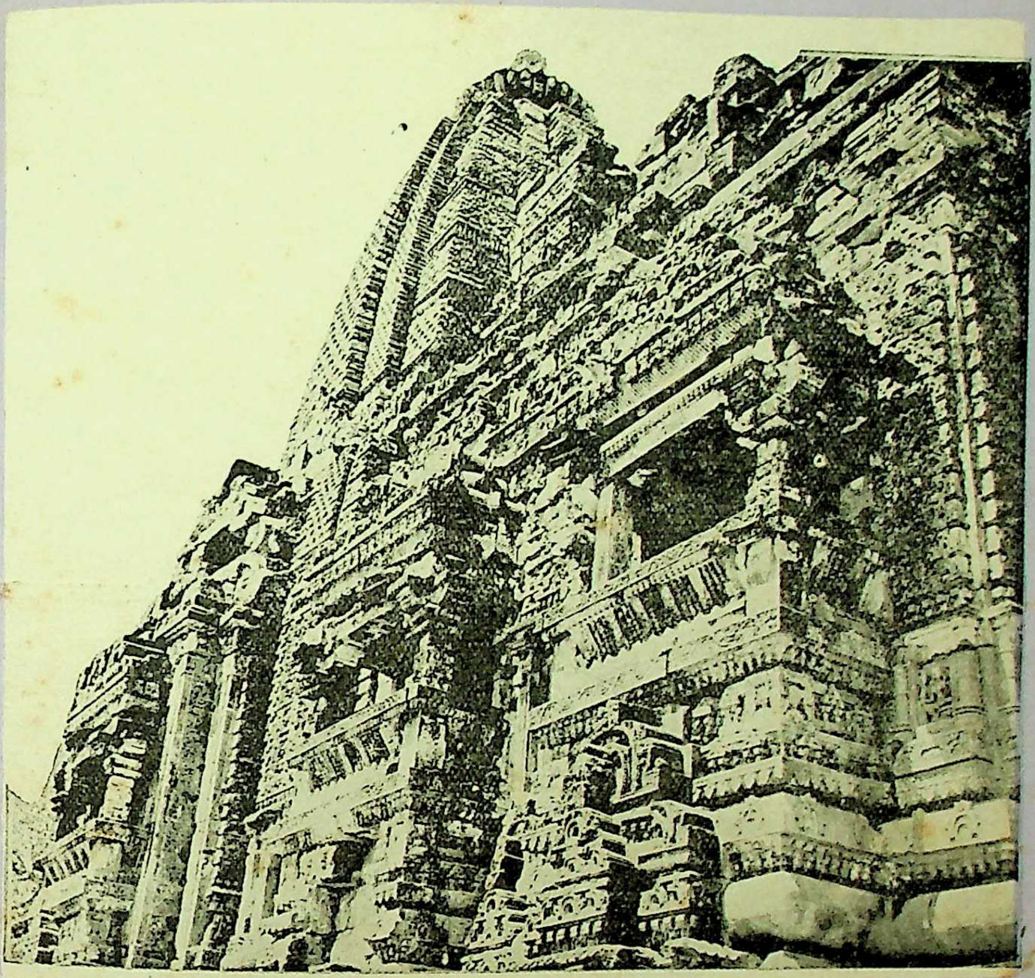

ग्वालियर, शनिवार, ४ अप्रैल, १९५९
चैत्र १४, १८८१
वर्ष ३ : अंक १७

मध्यप्रदेश सन्देश

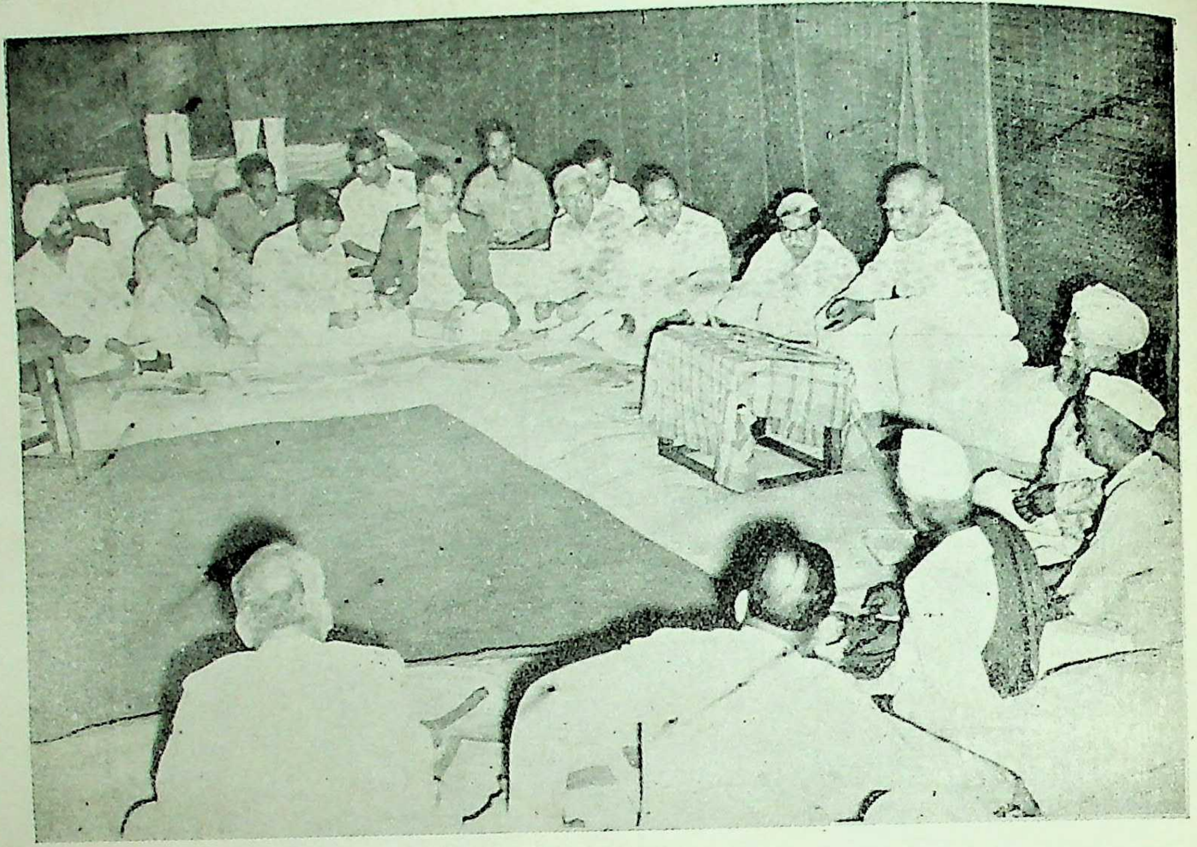

भोपाल में राज्य गोसम्वर्धन समिति की प्रथम बैठक की अध्यक्षता करते हुए राज्य के मुख्य मंत्री डा० कैलासनाथ काटजू

★

सुल्तानपुर फार्म में वृक्षारोपण करते हुए राज्य के राजस्व मंत्री श्री बी. ए. मंडलोई

सचित्र साप्ताहिक
मध्यप्रदेश सन्देश

हमारे देश की लोकतंत्री शासन-व्यवस्था में ग्राम-पंचायतों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ग्राम-पंचायतें ही लोकतंत्र की रीढ़ हैं। इनके द्वारा जनता और शासन के मध्य सीधा सम्पर्क स्थापित होता है। इनकी सफलता ग्राम्य-जीवन के विकास और समृद्धि पर आधारित है। भारत के संविधान में पंचायतों के संबंध में एक निश्चित निर्देश है। प्रथम पंचवर्षीय योजना में ग्राम-विकास के कार्य को संचालित करने के लिए पंचायतों का स्वरूप बनाया गया। दूसरी योजना में भी इस पर जोर देते हुए उन्हें ऊँचे स्तर की लोक-संस्थाओं के साथ सम्बद्ध किया गया। द्वितीय योजना में पंचायतों के जिम्मे जो काम लगाए गए हैं, उनमें ये भी सम्मिलित हैं—ग्रामों में खेती का उत्पादन, सहकारिता के साथ आपस में मिलकर कार्यक्रम को पूरा करने के लिए आवश्यक सामग्री और धन के लिए बजट बनाना, एक ऐसा क्रियाशील जरिया बनाना जिसके द्वारा गांव तक सरकारी सहायता पहुँच सके, साझी जमीनों का विकास, गांव की चीजों की मरम्मत और देखभाल तथा सहकारिता बढ़ाना आदि।

देश में पंचायतों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है। सन् १९५७ में १,५२, ३३७ पंचायतें देश के ५,६८,५१५ गाँवों में से ३,९८,२२२ गाँवो में थीं। सन् १९५८ मार्च तक इनकी संख्या बढ़कर १,६४,३५८ हो गई। इस समय मध्यप्रदेश में १२,५८६ ग्राम-पंचायतें तथा १,८८१ न्याय-पंचायतें कार्य कर रही हैं। इनके अतिरिक्त मध्यभारत क्षेत्र में १०९ केन्द्र-पंचायतें और १६ मंडल-पंचायतें भी स्थापित हैं। स्वायत्त शासन की इन महत्त्वपूर्ण संस्थाओं को अधिकाधिक सुदृढ़, जनहितकारी और सक्रिय बनाने के हेतु मध्यप्रदेश शासन निरन्तर चेष्टा कर रहा है।

पंचायत पर्व

यह ऐतिहासिक सत्य है कि हमारी पंचायतों की परम्पराएँ प्राचीनकाल से बड़ी गौरवपूर्ण रही हैं और सब धार्मिक पुस्तकों तथा इतिहासों में इसके संकेत मिलते हैं। हमारे देश में प्राचीनकाल से प्रारम्भ हुई ग्रामों के स्वायत्त शासन की व्यवस्था ग्रामीणों के अधीन विकसित हुई जनपद स्व-शासन के रूप में बढ़ी, गणराज्यों के रूप में पनपी और अपने ऊपर के सिरे के रूपों में राजनीतिक परिवर्तनों के साथ बदलती रही, किन्तु गाँवों में इसका अस्तित्व सदा ही बना रहा। उनकी लिखित विधि-पुस्तिका भले ही न रही हो, पर शताब्दियों एवं सहस्राब्दियों के अनुभव पर खरी उतरी उनकी स्थिर कार्य-प्रणाली थी और उसने अपने नैतिक व्यवहार के मान स्थिर कर लिये थे। गत समय तक यह व्यवस्था ग्रामों में प्रचलित थी। ग्राम-पंचायतें अपना काम स्वयं करनेवाली इकाइयां थीं और लोकतंत्री ढंग पर सहयोग से काम करती थीं। ये ग्राम-संस्थाएँ ही वस्तुतः वास्तविक गणराज्य थीं। आज फिर उन्हीं को अधिक व्यवस्थित रूप में स्थापित करने की प्रवृत्ति सक्रिय है।

मध्यप्रदेश राज्य के निर्माण से पूर्व ही उन राज्यों में, जिनके संयोजन से इस राज्य ने रूप ग्रहण किया है, इस दिशा में पर्याप्त प्रगति हुई है। मध्यप्रदेश निर्माण के पश्चात् ग्राम-पंचायतों के विकास की दिशा में और भी अधिक प्रयत्न किये जारहे हैं और उन्हें अधिक सक्षम, सक्रिय तथा सुदृढ़ बनाने के हेतु राज्य में प्रति वर्ष पंचायत-पर्व का आयोजन किया जाता है।

पंचायत पर्व, ग्राम-पंचायतों के प्रति ग्रामवासियों में आस्था उत्पन्न करने और उनका सहयोग प्राप्त करने के हेतु आयोजित एक आन्दोलन है। इस आन्दोलन के द्वारा ग्रामीण जनता को पंचायत के स्वरूप उनके जनहितकारी कार्यों तथा महत्त्व से परिचित कराना है। ग्राम-पंचायत को अपने कार्य करने के हेतु जितने धन की आवश्यकता पड़ती है, वह उसे कर लगाकर प्राप्त करना होता है। इस कर के महत्त्व को समझने पर ही ग्रामवासी कर-वसूली में सहयोग देते हैं। अतः ग्राम के विकास जनहित के कार्यों के महत्त्व को भली प्रकार समझाना भी पंचायत पर्व के आन्दोलन का एक मुख्य उद्देश्य है। इसके अतिरिक्त, ग्राम-विकास के कार्यों, ग्रामवासियों को स्वावलम्बी बनाने तथा रचनात्मक कार्यों के प्रति उनमें प्रेरणा उत्पन्न करने, अच्छे स्वास्थ्य और शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करने, उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करने तथा ग्रामवासियों की सर्वांगीण उन्नति के साधन उपलब्ध करने संबंधी पंचायतों के कर्तव्य तथा कार्यक्षेत्र की पूर्ण जानकारी देना भी पंचायत पर्व के उद्देश्य के अंतर्गत है। पूर्व की भाँति इस वर्ष भी पंचायत पर्व सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। इस पर्व के अन्तर्गत लोकोपयोगी कार्यों के लिए एक बड़ी धनराशि जमा हुई है और अनेक रचनात्मक कार्य सम्पन्न किये गये हैं। निर्माण की दिशा में भी बहुत अधिक कार्य हुआ है। पंचायत पर्व के आयोजन से ग्राम-पंचायतों के विकास के लिए ग्रामवासियों में कर्त्तव्य तथा उतरदायित्व की भावना उत्पन्न हुई है, जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और यह आन्दोलन लोकतंत्र की व्यापक स्थापना के हेतु एक महान् सफल प्रयोग है।

मुखपृष्ठ का चित्र

प्राचीन मालादेवी मंदिर, ग्यारसपुर (विदिशा)

निर्माण की दिशा में

संसार भर में हुए प्रगतिशील विकास धार्मिक सुधार और सामाजिक प्रथाओं ने जनता को सिखाया है कि सहिष्णुता सभी विचारों के प्रति बौद्धिक दृष्टि तथा ग्रहणशीलता की भावना सभी के लिए आवश्यक है।

*

भारतीय संस्कृति की बुनियाद है विचार-स्वातंत्र्य और इसी विशेषता के कारण वह सदियों तक टिकी रही। भारतीय संस्कृति कोई स्थिर सरोवर नहीं है, किन्तु एक बहती हुई धारा है, और जब भी कभी कोई गन्दगी इसमें आई है तभी उसके विरुद्ध विद्रोह हुआ है।

*

'वास्तविकता क्या है'? इस प्रतिक्षण परिवर्तित होते संसार में जो परिवर्तित नहीं होती, वही वास्तविकता है, उसी को अन्तिम वास्तविकता कह सकते हैं, वह है ब्रह्म। आत्मनिरीक्षण करने पर हम पाते हैं कि वह स्थिर रहने वाला तत्व है आत्मा। बुद्धि के द्वारा इस तथ्य को हृदयंगम कर लेना ही पर्याप्त नहीं है, किन्तु दैनिक जीवन के प्रत्येक काम में उस तथ्य का क्रियात्मक आभास मिलना चाहिए।

*

हम सब सत्य के अन्वेषक हैं, सार्वभौम या स्वामी नहीं हैं। किन्तु तपस्वी, संयमी, सत्यपारायण, अनुभवी व्यक्ति ही सच्चा सन्त कहा जा सकता है। हम सब के सब तीर्थयात्री हैं और अभी अपने गन्तव्य स्थान तक नहीं पहुंचे हैं।

—उपराष्ट्रपति डा. राधाकृष्णन्

देश की आर्थिक व राजनीतिक उन्नति का हमारा कोई भी लक्ष्य क्यों न हो, किन्तु हमें सामाजिक आदर्शों का भी ध्यान रखना होगा।

*

जीवन के आर्थिक, राजनीतिक अथवा हर क्षेत्र केन्द्रीकरण निन्दनीय है। इसलिए हमें केन्द्रीकरण व विकेन्द्रीकरण में संतुलन रखना चाहिए। इन दोनों की अति बुरी है।

*

सम्पत्ति अथवा सत्ता का कुछ लोगों के हाथों में ही केन्द्रित हो जाना आपत्तिजनक है। इससे तरह-तरह के झगड़े पैदा होते हैं। इससे बचना चाहिए। लेकिन इसका अभिप्राय यह नहीं कि मैं निजी क्षेत्र का विरोधी हूं। मैं तो यहां तक चाहता हूं कि राजनीतिक सत्ता का भी विकेन्द्रीकरण किया जाना चाहिए।

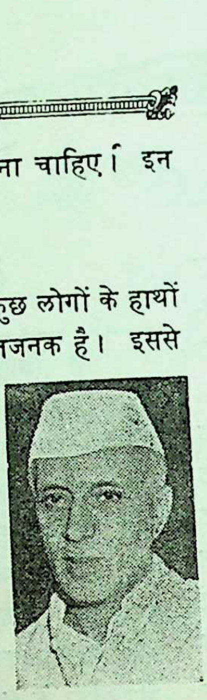

—श्री नेहरू

जब तक देश के युवक श्रम की महत्ता नहीं जान लेते तथा अपना कार्यक्षेत्र गांवों की तरफ नहीं बना लेते, तब तक वे उन्नति नहीं कर सकते। युवक आन्दोलन तभी कुछ सफल हो सकता है, जब कि युवक अपनी नीति और शांतिपूर्ण क्रांति के सिद्धान्त का अच्छी तरह से अमल करें।

*

विद्यार्थियों को ऐसे प्रयत्न करने चाहिए जिससे देश की एकता बनी रहे। उनमें देशभक्ति का बंटवारा नहीं होना चाहिये। वे अपने में इतनी क्षमता उत्पन्न करें, जिससे शहर और देहाती क्षेत्रों के लोगों में कोई भेदभाव जैसी दीवार न रहे। शहर और देहात में ऐसा संबंध रहे जिससे देश का अहित न हो सके और किसी तरह की अशांति उत्पन्न न हो सके।

*

आणविक युग ने जीवन के मूल्यों को बदल दिया है। हमारे विचारों में भी तेजी से परिवर्तन हो रहा है। युवकों को चाहिए कि वे बदलते हुए जमाने के साथ अपने दिमागों को भी बदलें, ताकि उनके मानसिक क्षितिज भी और अधिक गहरे और चौड़े हो सकें।

—श्री वी. के. मेनन

हम विज्ञान के विरुद्ध नहीं हैं। हम केवल यही चाहते हैं कि विज्ञान का उपयोग मानव-हित के लिए किया जाय। प्रश्न यह है कि विज्ञान को मानव के जीवन में किस प्रकार समन्वित किया जाय कि वह मानव पर हावी न हो। अन्ततः विज्ञान को मानव ने ही बनाया है तथा हमें ही यह निश्चय करना चाहिए कि विज्ञान मनुष्य के लिए किस रूप में प्रयुक्त किया जाय।

*

खादी और ग्रामोद्योग केवल लोगों को काम देने मात्र की व्यवस्था नहीं है, यह नये समाज और उसको नई मान्यताओं के निर्माण का भी एक सन्देश है।

—श्री जयप्रकाशनारायण

इस अंक में

क्र. शीर्षक एवं लेखक पृष्ठ-संख्या

१. पंचायत पर्व का महत्व . .
२. संस्कृति के परिचायक—बुन्देलखंडी लोकगीत
—श्री मोहनजी मेहरोत्रा
३. गीत (विशेष कविता) . .
—डॉ. महेंद्र भटनागर
४. प्राकृत-हिंदी-कोश के प्रणेता : हरगोविंद दास सेठ
—श्री अगरचंद नाहटा
५. दो मित्र, एक कर्मचारी (शब्द-चित्र)
—श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
६. समाज कल्याण की विविध योजनाएं
७. प्रकृति और मानवता के अनन्य उपासक : महाकवि रौबर्ट फ्रौस्ट
८. शिक्षा के विस्तार के लिए चहुंमुखी प्रयास
९. अमेरिका में महिलाओं की स्थिति . .
१०. कवि से (कविता) . .
—श्री विमलकुमार पाराशर

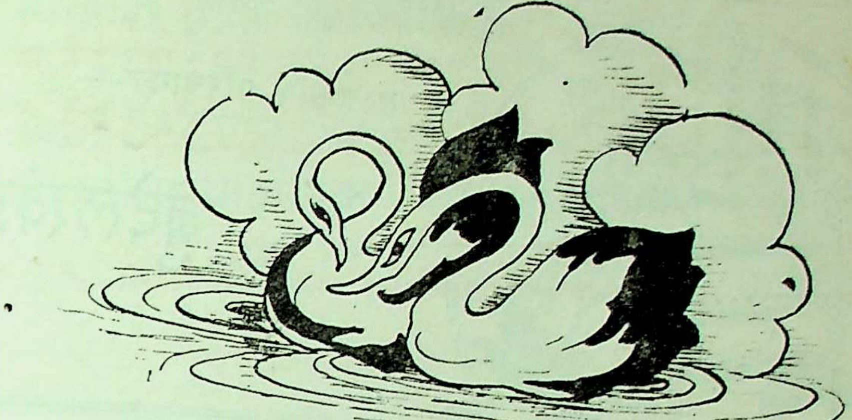

पंचायत पर्व का महत्त्व

भारत के राष्ट्रीय जीवन में गांव और उस की संगठित इकाई—पंचायत दोनों का प्रजातांत्रिक महत्त्व है। ग्राम-पंचायतों की सफलता ग्राम्य जीवन के विकास और समृद्धि पर आधारित है। इसीलिए प्रथम पंचवर्षीय योजना में पंचायतों को ग्रामीण जीवन की धुरी माना गया था। अब बराबर यह प्रयास किया जा रहा है कि सामुदायिक विकास के कार्य पंचायतों के ही जिम्मे कर दिये जावें। लेकिन यह तब तक सम्भव नहीं हो सकता, जब तक कि पंचायतें इतनी बड़ी जिम्मेदारी को निभा सकने के लिए समर्थ न बनें। अपेक्षित सामर्थ्य आये बिना यदि सामुदायिक विकास के कार्य पंचायतों को दे भी दिये गये तो उद्देश्यपूर्ति में बड़ी कठिनाई उपस्थित हो सकती है। इस बात को ध्यान में रखकर ही देश के प्रत्येक राज्य में पंचायतों को सक्षम और सक्रिय बनाये जाने के अनेक आन्दोलन चलाये जा रहे हैं।

इस समय मध्यप्रदेश में १२,५८६ ग्राम-पंचायतें तथा १,८८१ न्याय-पंचायतें काम कर रही हैं। इनके अतिरिक्त मध्यभारत क्षेत्र में १०९ केन्द्र-पंचायतें और १६ मंडल-पंचायतें भी अस्तित्व में हैं। इन महत्त्वपूर्ण संस्थाओं को सक्रिय बनाने के लिए मध्यप्रदेश शासन निरंतर बड़ी तेजी के साथ कोशिश कर रहा है। ग्राम-सहायकों, अन्य शासकीय कर्मचारियों, पंचों तथा ग्राम-नेताओं को प्रशिक्षित करके ग्राम-पंचायतों के मार्गदर्शन की व्यवस्था तो की ही जा रही है, साथ ही समाज-सेवा की प्रवृत्तियों द्वारा ग्रामवासियों में सेवा-भावना जाग्रत की जा रही है।

मध्यप्रदेश में एक और अनूठा प्रयोग किया गया था, जिसका उद्देश्य यह था कि जनसाधारण के मन में अपनी वर्त्तमान स्थिति के प्रति असन्तोष जागे और इसके फलस्वरूप रचनात्मक स्वावलंबन को बढ़ावा मिले। इस आन्दोलन का नाम था—समाज-शिक्षा। इस आन्दोलन के अन्तर्गत राज्य के हजारों गांववासी केवल साक्षर ही नहीं बने, वरन् उससे भी आगे वे अपनी नागरिकता का महत्त्व समझ सके।

पंचायतों को सक्रिय बनाने के क्रम में पूर्व मध्यप्रदेश में सन् १९५२ के मार्च महीने में पंचायत पर्व नामक प्रतियोगिता को जन्म मिला। इस स्पर्धामूलक आंदोलन प्रारंभ करने के उद्देश्य इस प्रकार हैं:—

१. ग्रामीण जनता को ग्राम-पंचायत के स्वरूप और कार्यों से परिचित कराना, ताकि ग्रामवासियों को इन संस्थाओं का महत्त्व मालूम हो और उसके कार्यों में उनकी रुचि बढ़े और ग्राम-पंचायत को ग्रामवासियों का सहयोग प्राप्त हो। इस प्रकार पंचायत पर्व का प्रथम उद्देश्य यही है कि ग्राम-पंचायत के प्रति ग्रामवासियों में आस्था उत्पन्न हो।

२. ग्राम पंचायत को अपने कर्त्तव्य पूरे करने के लिए धनराशि की आवश्यकता पड़ती है। प्रत्येक ग्राम-पंचायत को कर वसूल करने के अधिकार दिये गये हैं। कर-वसूली की पूरी जिम्मेवारी पंचों पर होती है। ग्रामवासियों के सहयोग के बिना कर वसूली नहीं हो सकती। इसीलिए पंचायत पर्व में पंचों को कर वसूल करने के लिए जन सहयोग प्राप्त करने का अवसर मिलता है। लोगों को कर का महत्त्व भी ज्ञात होता है।

३. ग्राम विकास-कार्यों से संबंधित लोगों को अपनी अड़चनें मालूम हों, इस दृष्टि से उन्हें समझने का मौका देना पंचायत पर्व का तीसरा उद्देश्य है। विकास कार्य से पंच और ग्रामवासियों का संबंध तो आता ही है, मगर इसके साथ ही सरकारी अधिकारियों और विधान सभा के सदस्यों को भी ग्राम विकास के कार्यों के बारे में जानकारी होती है। इन सब लोगों को एक दूसरे के निकट आने का अवसर पंचायत पर्व में ही प्राप्त होता है और वे सब उस समय एक दूसरे के सवालों और अड़चनों को समझकर उनका हल खोजने का प्रयत्न करते हैं।

४. रचनात्मक कार्यों के प्रति ग्रामवासियों को प्रोत्साहित करना भी पंचायत-पर्व का उद्देश्य है। पंचों द्वारा गांव में शुरू किये गये कार्यों को पंचायत पर्व से एक नवीन गति मिलती है तथा ग्रामवासी अपनी सर्वांगीण उन्नति के लिए स्वावलंबी बनते हैं। इस प्रकार पंचायत पर्व के अन्तर्गत ग्रामवासियों में अपने गांव को आगे बढ़ाने का एक नया उत्साह और प्रेरणा मिलती है।

उक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अब तक ५ पर्व मनाये जा चुके हैं। पहला पंचायत पर्व सन् १९५२, दूसरा १९५५, तीसरा १९५६, चौथा तथा पांचवा पर्व नवगठित मध्यप्रदेश में सन् १९५७ और १९५८ में मनाये गये। इस वर्ष सर्वश्रेष्ठ पंचायतों में सात संभागों के आधार पर ही कासोन (इन्दौर), जमानी (भोपाल), जावरकाठी (जबलपुर), जिवरी (बिलासपुर), तिरगा (रायपुर), ककरहटी (रीवां), पार्टई (ग्वालियर) गांवों को स्थान मिला है। इन गांवों के योग्य सरपंचों अथवा सभापतियों की कर्मठता ही इसके लिए प्रेरक है, जिन्होंने जन-सहयोग प्राप्त कर अपने-अपने ग्रामों में रचनात्मक कार्यों का तांता लगा दिया है।

यह पंचायत पर्व चारों घटकों में बड़े उत्साह और लगन के साथ मनाया गया। पर्व के अन्तर्गत २,२० हजार रुपये की राशि बकाया करों की

(शेष पृष्ठ २८ पर)

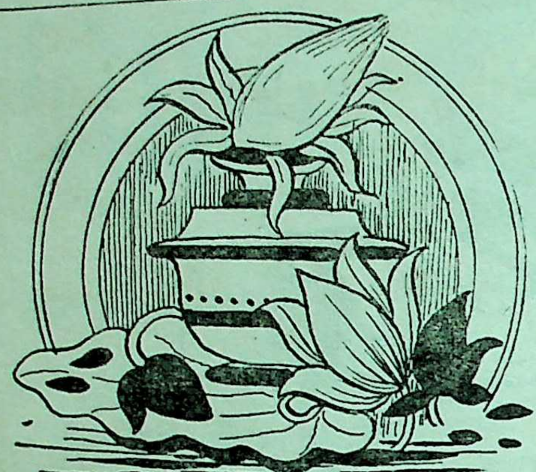

संस्कृति के परिचायक—

बुंदेलखंडी लोकगीत

—श्री मोहनजी मेहरोत्रा

लोकगीतों का तत्व-चिन्तन आज पहले से अधिक हो रहा है। किसी भी देश की प्राचीन-सुरक्षित-सम्पत्ति लोक-गीत हैं। बुन्देलखंड के लोक-गीत सभी प्रान्तीय लोक-गीतों की तुलना में विशेष भाव-प्रवण एवं प्राणवंत माने जाते हैं। विन्ध्या की ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ तथा नर्मदा की इठलाती-बलखाती अजस्र-ऊर्मियां बेतवा का गौरवशाली-इतिहास हमारी आँखों के सामने उपस्थित कर देती हैं। आल्हा, ऊदल, छत्रसाल, पेशवे, डांगी और बुन्देलों की यश-गाथायें वहाँ के लोक-गीतों में सन्निहित हैं।

एक समय बुन्देलखंड में इस कदर सूखा पड़ा कि मानवगण, आबाल-स्त्री-वृद्ध सभी 'वरुण' को रिझाने में लग गए। अत्यधिक विनती-प्रार्थना के उपरान्त वरुणदेव ने वहाँ के लोगों को स्वप्न दिया कि उक्त सूखेपन को दूर करने के लिए उन्हें बहुत बड़ी बलि देनी पड़ेगी। आगत-आपत्ति से छुटकारा पाने के लिए सबों ने वरुणदेव की आज्ञा अंगीकार कर ली। तुरन्त सोने का एक हिंडोला निर्मित हुआ तथा तत्काल न मुखिया के नवयुवक-पुत्र और पुत्र-वधू की आत्म-बलि सम्पन्न हुई। सरोवर के मध्य जल का जो स्रोत प्रवाहित हुआ, वह ५०० वर्ष बाद आज भी आप्लावित है। नव-दम्पत्ति उसी में अन्तर्ध्यान हो गए तथा वहाँ के लोगों के लिए एक अभूतपूर्व दृश्य छोड़ गए। लोक-गीत है—

सोने के बनालय हिंड़ोला री
जमे बैठे हैं दो नगीना री!
सोने के सज लय० !

उक्त पौराणिक आख्यान के अतिरिक्त वहाँ के लोक-गीतों में 'लाला-हरदौल' का स्मरण आधुनिक गणेश-वंदना के समान-ही समाहत है। तत्सम्बन्धी निम्न लोक-गीत है—

इतनी रहि भाभी सों प्रीत,
जितनी सब दुनियाँ की रीति,
तुमने करी न कुछ अनरीति,
जैसी उने निबाही 'लाला'
ऊंसई संत्रै निभइयो।

मौलिक परम्पराएँ

बुन्देलखंडी लोक-गीतों का आरम्भ १२ वीं शताब्दी से होता है। सुप्रसिद्ध 'आल्हा-काव्य' उसी समय लिखा गया था। बघेली एवं बुन्देलखंडी संस्कृति का उक्त काव्य में अटूट सामंजस्य है। इस भूमि पर अवतरित वीरों का वर्णन चन्दबरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' में भी किया है। वैदिक-साहित्य में बुन्देलखंड के नगरों आदि का उल्लेख मिलता है। व्हेनसांग ने अपनी 'भारत-यात्रा' पुस्तक में जुझौति (बुन्देलखंड) के ब्राह्मण राजाओं की प्रशंसा की है। इस दृष्टि से बुन्देलखंड की अपनी मौलिक साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परम्परा रही है। आदि-काल से ही उनकी अन्तःप्रवृत्ति कला की ओर रमी थी। बौद्ध, जैन, शैव एवं यवन सभी तरह की संस्कृतियों का यहाँ के लोक-गीतों में समावेश है। विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर जो गीत गाये जाते हैं, उनमें हिन्दू-मुसलमान का भेद-भाव नहीं दिखाई पड़ता।

तीन कोस तक मिले काना,
तो फौरन लौटकर घर आना!

आदि जन-कहावतें, जीवन के बहुत ही समीप हैं। वहाँ का किसान जितना विश्वास इन लोक-कहावतों पर करता है, दूसरों के इंगितों पर नहीं। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसी पहेलियाँ भी वहाँ बूझी जाती हैं, जिनसे ठंडी-रातों में बुन्देलखंडी भाई-बहन कोंठो पर बैठकर अपनी दिन-भर की थकावट मिटाते हैं।

उनकी अद्भुत पहेली का रसास्वादन कीजिए—

दो-पग चले, चार लटकायें,
चला जाय मन चैना
एरी सखी मैं तोसे पूछूं,
तीन-सीस दो नैना?

बताओ न सखी! इसका उत्तर मैं तुझी से पूछ रही हूँ? ननद के सम्मुख भाभी मुस्करा देती है! बाद में कहती है कि इस पहेली में श्रवण-कुमार के अंधे माता-पिता का वर्णन है।

कुछ पहेलियाँ ऐसी हैं कि लाख माथा-पच्ची करने पर भी उनका मूल-अर्थ हृदयंगम नहीं हो पाता! एक दूसरी पहेलीः—

छोटी जनी और बड़ी जनी,
मझली जनी ने खोली तनी!
जब नाचन लगीं तीनों जनीं,
बताओ को को? और कितनी जनीं?

इसमें मथानी, मथने वाली और रस्सी क
भाव है, जिसे वहाँ के अपढ़-ग्रामीणों ने का
घुमा-फिराकर अभिव्यक्त किया है। इन कहाव
एवं पहेलियों को हम समय की बर्बादी औ
मनोरंजन का सस्ता-साधन कह सकते हैं। लेकि
उनकी आप-बीती का जैसा सजीव-वर्णन इनमें
वह निःसंदेह सरस एवं मर्मस्पर्शी है। उन्हें न
दूसरों के धन से मतलब है और न दूसरों के ऐ
आराम से! सादगी और सच्चाई से जीवन-
करना ही उनके जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य

पर्वों के लोकगीत

यों बुन्देलखंड मे प्रत्येक पर्व और ऋ
लिए अनेक लोक-गीत प्रचलित हैं, तथापि दी

(शेष पृष्ठ २९ का)

साहित्य, संस्कृति, कला, ज्ञान-विज्ञान आदि का विशेषांश

इसके संपादन परामर्शदाता ~ श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द

विशेष
कविता

गीत

डॉ० महेंद्र भटनागर

कौन तुम, अरुणिम-उषा-सी, मन-गगन पर छा गई हो ?

(१)

लोक धूमिल रँग दिया अनुराग से,
मौन जीवन भर दिया मधुराग से,
दे दिया संसार सोने का सहज,
जो मिला करता बड़े ही भाग से;

कौन तुम, मधुमास-सी, अमराइयां महका गई हो ?

(२)

वीथियां सूने हृदय की घूमकर,
नव-किरण-सी डाल बाँहें झूमकर,
स्वप्न-छलना से प्रवंचित प्राण की
चेतना मेरी जगाई चूमकर;

कौन तुम, नभ-अप्सरा-सी, इस तरह बहका गई हो ?

(३)

युग-युगों का रिक्त घट है भर दिया,
भावना-संवेदना को स्वर दिया,
कामनाओं के चमकते नव शिखर,
प्यार मेरा सत्य-शिव-सुंदर किया;

कौन तुम, अवदान री, इतनी अधिक जो गा गई हो ?

विशेष लेख

प्राकृत-हिंदी-कोष के प्रणेता
हर गोविंद दास सेठ

—श्री अगरचंद नाहटा

हिंदी-भाषा की सेवा हिंदी-प्रदेश के व्यक्ति करें, यह तो उचित एवं स्वाभाविक ही है, पर, अहिंदी-प्रांतों के लोगों ने हिंदी भाषा में उच्चकोटि का साहित्य-निर्माण करके जो विशिष्ट सेवा की है, उसका स्मरण हमें हर समय बना रहना चाहिए। खेद है कि प्राचीन समय से लेकर अब तक अहिंदी-भाषी प्रदेशों या उन प्रदेशों के विद्वानों ने हिंदी-भाषा की जो सेवा की है, उन्होंने हिंदी के प्रचार एवं साहित्य-निर्माण में जो सहयोग दिया है, उसका आदर जिस ढंग से हमें करना चाहिए, नहीं किया जा रहा है। अहिंदी-प्रदेशों में निर्मित हिंदी-साहित्य की खोज बहुत ही कम हो पाई है। इसलिए, गत कई शताब्दियों में जो उन प्रदेशों में हिंदी साहित्य का सर्जन हुआ, उससे हम बहुत ही कम परिचित हैं। विगत कुछ वर्षों में अहिंदी-भाषी लोगों ने जो हिंदी-भाषा की सेवा की है, उसकी भी हमें ठीक जानकारी नहीं है और हमें उनके प्रति जो कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए, वह नहीं की जा रही है। हमारी इस कमी, इस त्रुटि के प्रति वयोवृद्ध श्री अंबिकाप्रसादजी वाजपेयी ने 'हिंदी के अहिंदी-भाषी हिमायती' शीर्षक लेख द्वारा ध्यान आकर्षित किया है। उनका यह लेख 'मध्य प्रदेश संदेश' में प्रकाशित तथा 'नया समाज' में उद्धृत हुआ। लेख के अंत में उन्होंने जिन पंडित हरगोविंद दास सेठ का संक्षिप्त उल्लेख किया है, उनका विस्तृत परिचय इस लेख में दिया जा रहा है।

माननीय अंबिकाप्रसादजी वाजपेयी ने उनके संबंध में लिखा है कि:—"श्री सेठ हरगोविंद दास जैन विद्वान् और गुजराती हैं। आज से कोई ४० साल पहले वह कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्राकृत-भाषा के अध्यापक थे। हिंदी के अहिंदी-भाषी हिमायतियों में सेठ जी का आसन बहुत ऊँचा है। स्वामी दयानंद सरस्वती और वेद-मूर्ति श्रीपाद दामोदर सातवलेकर के समान ही वह भी हमारे आदर के अधिकारी हैं। उन्होंने हिंदी के एक विशिष्ट अंग की पूर्ति की है। सन् १९०८-९ के पहले हिंदी में प्राकृत की चर्चा नहीं के बराबर थी। बहुतों को उसके विषय में कुछ भी ज्ञान न था। और तो क्या, १९०५ में श्री महावीरप्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती में 'भाषा और व्याकरण' शीर्षक जो लेख दिया था, उसमें कहा था कि "पाली और प्राकृत ग्रामीण और असभ्य देश की भाषाएँ थीं।" इससे स्पष्ट है कि पाली और प्राकृत के विषय में हमारे शीर्षस्थ लेखकों को भी कितना ज्ञान था! जो हो, सन् १९२३ के लगभग श्री हरगोविंददास सेठ ने 'पाइय सद्द महण्णवो' नाम से प्राकृत कोष का प्रकाशन प्रारंभ किया था। यह कोष उन्होंने अपनी मातृभाषा गुजराती में नहीं, हिंदी में प्रकाशित किया था। इससे हिंदी के ज्ञान-भंडार की कितनी उन्नति हुई, यह कल्पनातीत है। इसमें उन्होंने प्राकृत शब्दों की व्युत्पत्ति-अर्थ ही नहीं दिए हैं, प्राकृत-भाषा और व्याकरण का इतिहास भी दिया है। इससे हिंदी के बड़े अभाव की पूर्ति हुई है।"

'पाइय सद्द महण्णवो' नामक प्राकृत हिंदी कोष वास्तव में श्री हरगोविंददास सेठ का एक महान् कार्य है। चार भागों में यह कोष सन् १९२३ से १९२८ तक पाँच वर्षों में प्रकाशित हुआ था। डबल-क्राउन आठ पेजी साइज के १३०० पृष्ठों का यह विशाल कोष है। इसमें प्राकृत भाषा के २५० से अधिक प्रकाशित और हस्तलिखित ग्रंथों के लगभग ५०००० शब्दों का संस्कृत रूप और हिंदी अर्थ दिया गया है। हिंदी में आज भी प्राकृत शब्दों का यह एक ही कोष है। इस महान् कार्य में पंडित हरगोविंददासजी को १५ वर्ष तक कठिन परिश्रम करना पड़ा था। निवेदन में उन्होंने स्वयं अपनी कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए लिखा है कि "प्राकृत के विविध भेदों और विषयों के जैन तथा जैनेतर साहि के यथेष्ट शब्दों से संकलित, आवश्यक अवतर से युक्त, शुद्ध एवं प्रामाणिक कोष का नित अभाव बना ही रहा। इस अभाव की पूर्ति के लि मैंने अपने विचार को कार्यरूप में परि करने का दृढ़ संकल्प किया और तदनु शीघ्र ही प्रयत्न शुरू कर दिया, जिस

फल प्रस्तुत कोष के रूप में १४ वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद आज पाठकों के सामने उपस्थित है। प्राकृत-कोष के न होने से प्राकृत के हर एक अभ्यासी को अपने अभ्यास में बहुत असुविधा होती थी। खुद मुझे भी अपने प्राकृत ग्रंथों के अनुशीलन के काम में इस अभाव का कटु अनुभव हुआ करता था। इससे करीब आज से १५ वर्ष पहले पूज्यपाद, प्रातःस्मरणीय, गुरुवर्य, शास्त्र विशारद, जैनाचार्य श्री १००८ श्री विजयधर्म सूरीश्वर जी महाराज की प्रेरणा से प्राकृत का एक उपयुक्त कोष बनाने का मैंने विचार किया था।"

"प्रस्तुत कोष की तैयारी में जो अनेक कठिनाइयाँ मुझे झेलनी पड़ी हैं, उनमें सर्वप्रथम प्राकृत की शुद्ध पुस्तकों के विषय में थी। प्राकृत का विशाल साहित्य-भंडार विविध-विषयक रत्नों से पूर्ण होने पर भी आज तक वह यथेष्ट रूप में प्रकाशित ही नहीं हुआ है और हस्तलिखित पुस्तकें तो बहुधा अज्ञान लेखकों के हाथ से लिखी जाने के कारण प्रायः अशुद्ध ही हुआ करती हैं, परंतु, आज तक जो प्राकृत की पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, वे भी न्यूनाधिक परिमाण में अशुद्धियों से खाली नहीं हैं। इस तरह हस्तलिखित और मुद्रित प्राकृत ग्रंथ प्रायः अशुद्ध होने के कारण आवश्यकतानुसार एकाधिक हस्तलिखित पुस्तकों का, अन्य ग्रंथों में उद्धृत उन्हीं पाठों का और भिन्न संस्करणों का सावधानी से निरीक्षण करके उनमें से शुद्ध प्राकृत शब्दों का तथा एक ही शब्द के भिन्न-भिन्न परंतु शुद्ध रूपों ही का यहाँ ग्रहण किया गया है और अशुद्ध शब्द या रूप छोड़ दिए गए हैं। और जिस ग्रंथ की एक ही हस्तलिखित प्रति अथवा एक ही मुद्रित संस्करण पाया गया है, उसमें रही हुई अशुद्धियों का भी संशोधन यथामति किया गया है और संशोधित शब्दों ही को इस कोष में स्थान दिया गया है। ऐसे ही आधुनिक विद्वानों की की हुई छाया (संस्कृत प्रतिशब्द) और अर्थ की भूलों को सुधारने की भी पूरी कोशिश की गई है। सारांश यह है कि इस कोष को सर्वांग शुद्ध बनाने में संपूर्ण ध्यान दिया गया है। मुझे यह जानकर संतोष हुआ है कि मेरे इस प्रयत्न की कदर भी प्रोफेसर ल्योमेन जैसे प्राकृत के सुप्रसिद्ध जर्मन विद्वान् तक ने की है।"

दूसरी मुख्य कठिनाई अर्थ-व्यय के बारे में थी। मेरी आर्थिक अवस्था ऐसी नहीं थी कि इस महान् ग्रंथ की तैयारी के लिए पुस्तकादि आवश्यक साधनों के और सहायक मनुष्यों के वेतन-खर्च के अतिरिक्त प्रकाशन का भार भी वहन कर सकूं। और मुफ्त में किसी से आर्थिक सहायता लेना मैं पसन्द नहीं करता था। इससे इस कठिनाई को दूर करने के लिए अग्रिम ग्राहक बनाने की योजना की गई, जिसमें उन अग्रिम ग्राहकों को हर २५ रुपए में इस संपूर्ण ग्रंथ की एक कॉपी देने की व्यवस्था थी। इससे मेरी उक्त कठिनाई संपूर्ण तो नहीं, किंतु, बहुत-कुछ कम हुई है।

यद्यपि मेरी मातृभाषा हिंदी नहीं है, तथापि वही एकमात्र भारतवर्ष की सर्वाधिक व्यापक और इसलिए राष्ट्रभाषा के योग्य होने के कारण यहाँ अर्थ के लिए विशेष उपयुक्त समझी गई है।*

अंत में आर्ष से लेकर अपभ्रंश तक की प्राकृत भाषाओं के विविध-विषयक जैन एवं जैनेतर प्राचीन ग्रंथों के (जिनकी कुल संख्या २५० से भी ज्यादा है) अति विशाल, शब्द-राशि से, संस्कृत प्रतिशब्दों से, हिन्दी अर्थों से, सभी आवश्यक अवतरणों से और संपूर्ण प्रभागों से परिपूर्ण यह बृहद् प्राकृत-कोष है।

इस कोष में स्वीकृत पद्धतिः—प्रथम काले टाइपों में क्रम से प्राकृत शब्द, उसके बाद सादे टाइपों में उस प्राकृत शब्द के लिंगादि का संक्षिप्त निर्देश, उसके पश्चात् काले कोष्ठ (ब्राकेट) में काले टाइपों में प्राकृत शब्द का संस्कृत प्रतिशब्द उसके अनंतर सादे टाइपों में हिंदी-भाषा में अर्थ और तदनंतर सादे टाइपों में ब्राकेट में प्रमाण का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत कोष के चौथे भाग का उपोद्घात ५३ पृष्ठों में है। जिसमें प्राकृत, पाली से अपभ्रंश तक की दस भाषाओं व उनके व्याकरण का महत्त्वपूर्ण परिचय दिया गया है।

अब हम इस कोष के निर्माता पंडित हरगोविंददास सेठ जी का परिचय दे रहे हैं:—

उक्त पंडितजी ने अपना परिचय 'पाइय सद्द महण्णवो की प्राकृत भाषा की २६ गाथाओं की प्रशस्ति में स्वयं दे दिया है। गुजरात के सुप्रसिद्ध लेखक जयभिक्खु ने पंडित जी की एक जीवनी "जीवन-झरमर" के नाम से गुजराती में लिखी है। वह श्री यशोविजय जैन ग्रंथमाला, भावनगर से २४ पृष्ठों की पुस्तिका के रूप में पंडित जी के फोटो के साथ प्रकाशित हुई है। उसी के आधार से यह परिचय दिया जारहा है।

गुजरात के राधनपुर में सेठ टीकमचंद की पत्नी प्रधान बाई के गर्भ से संवत् १९४५ की बैसाख सुदी ६ को उक्त पंडित हरगोविंददास का जन्म हुआ था। आपके छोटे भाई वृद्धिलाल जी ने जैन-मुनि-दीक्षा ग्रहण की। वह मुनि 'विशाल विजय जी' के नाम से आज भी ग्रंथ लेखक और चारित्र्य-पात्र मुनि के रूप में अपने वंश का गौरव बढ़ा रहे हैं।

हरगोविंददास जी की प्रारंभिक-गुजराती छठी पोथी तक की शिक्षा पालनपुर में हुई। मुनि श्री हर्षविजय के पास आपने धार्मिक अध्ययन किया। मुनि जी ने हेम-लघु-प्रक्रिया द्वारा आपको संस्कृत-भाषा के अभ्यास की ओर प्रवृत्त किया। पंडित जी श्रीमाली जैन सेठों के खानदान में उत्पन्न हुए थे, इसलिए, आपका गोत्र या विरुद 'सेठ' मिलता है। संवत् १९५६ में जब आप अपने ननिहाल सौराष्ट्रवर्ती-महुआ में अपने मामा के घर पर थे, तब आपको मुनिश्री धर्म-विजय जी के सत्समागम का लाभ मिला। संवत १९५८ में राधनपुर में उन मुनि जी के पधारने पर आपका उनसे विशेष परिचय बढ़ा। उन्होंने आपकी बुद्धि की परीक्षा के लिए अभिधान-चिंतामणि के पाँच श्लोक कंठस्थ करने को दिए, जिन्हें हरगोविंदजी ने पौन घंटे में शुद्ध रूप में कंठस्थ करके सुना दिया। इससे श्री धर्मविजयजी (जिनका आचार्य पदानंतर विजयधर्म सूरि नाम प्रसिद्ध हुआ) का आपके प्रति आकर्षण बढ़ा।

एक वैश्य कुटुंब में जन्म होने के नाते व्यापारिक क्षेत्र में आपका प्रवेश होना स्वाभाविक था। मुनि हर्ष विजय जी ने आपको खंभात के सेठ पोपटलाल अमरचंद के यहाँ व्यापार सीखने के लिए भिजवा दिया। वहाँ थोड़े समय ही में आपने अपने कौशल से सेठ को प्रसन्न कर दिया, अतः सेठ ने आपको अपनी बंबई की दूकान पर भेज दिया और वहाँ आप अच्छी तरह काम-काज करने लगे।

इधर विजय धर्मसूरि जी के मन में एक बहुत बड़ी तमन्ना जैन साधुओं और श्रावकों को

(शेष पृष्ठ १३ पर)

---

*हिंदी के राष्ट्रभाषा पद के योग्य होने की एक गुजराती भाषी विद्वान् द्वारा ३० वर्ष की गई पूर्व यह घोषणा महत्त्वपूर्ण है।

—लेखक

विशेष शब्दचित्र

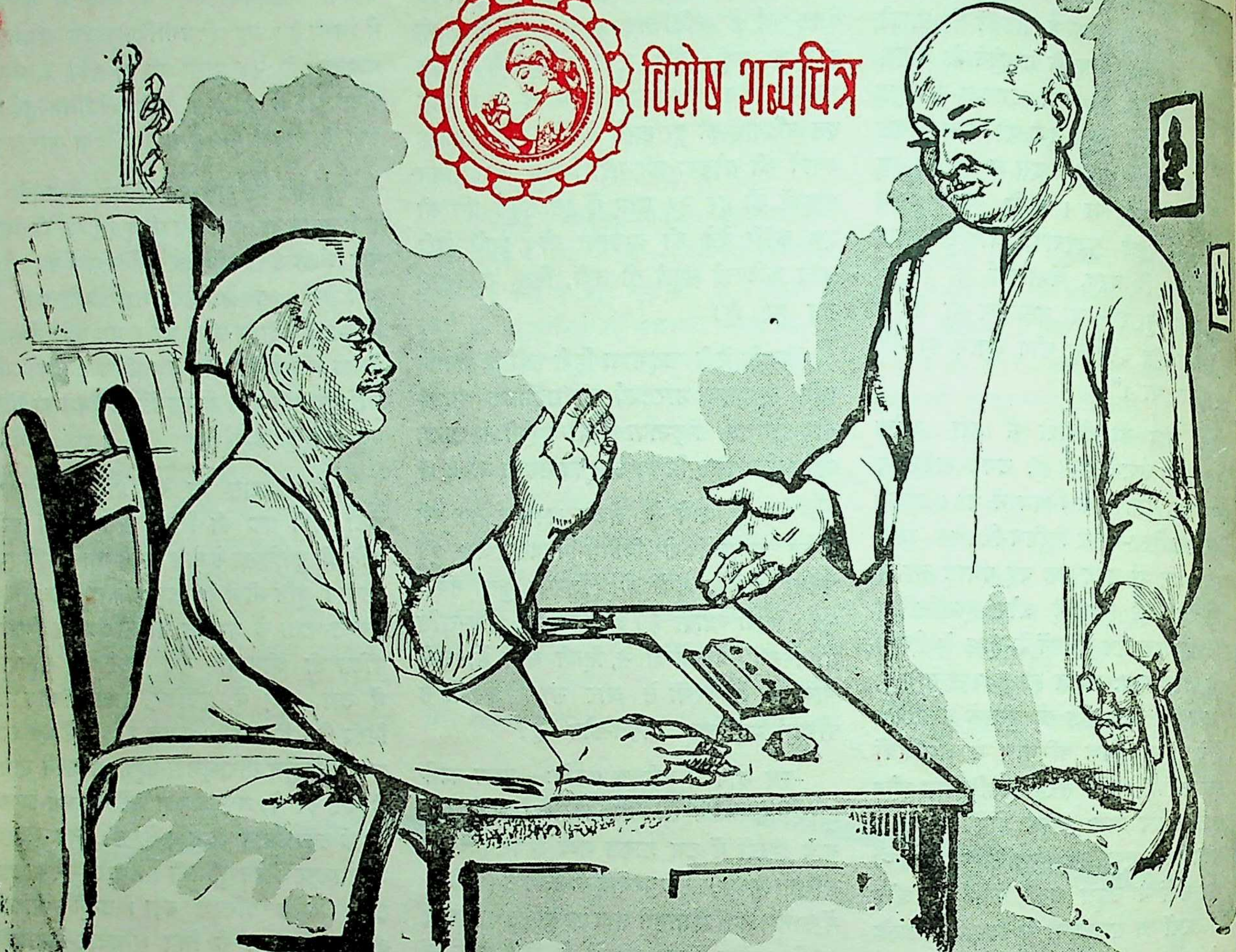

दो मित्र, एक कर्मचारी

—श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

९ अगस्त १९४२, सुबह ९ बजे मैं अपनी मेज़ पर आया ही था कि पुलिस-अधिकारियों के लाल साफों की दमक और काले बूटों की धमक से मेरा कमरा लकझक हो उठा। गिरफ्तारी साफ़ थी, फिर भी पूछा––"कहिए, क्या बात है ?"

"कुछ लोग आ गए हैं, कुछ आ रहे हैं; इसबार सब एक-साथ हैं–कोई कभी, कोई कहीं नहीं।" पुलिस-अधिकारी ने बताया, तो अँगरेज़-राजनीति का पूरा नक्शा समझ में आ गया कि काँग्रेस को एकदम, एकसाथ इस तरह दबोच लो कि 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव का एक भी शब्द सजीव न रहे! एक बार मन हिरहिराया कि क्या सब तैयारियाँ बेकार गईं, पर तभी एक विचार मन में आया कि दमन से क्रांतियाँ असफल हुआ करतीं, तो हम कृष्णलीला नहीं, कंसलीला का त्यौहार मनाया करते।

बस, मेरा मन ताज़गी और उत्साह से भर गया और मैं जेल के लिए अपना सामान सँजोने लगा, पर, तभी मुझे दिखाई दीं उन मित्र की आँखें, जो एक महीने से बीमार थे। मैं उन्हें उनके नगर के अस्पताल से उठाकर लाया था। घर न द्वार, भाई न बंधु, सगा न नाती; शरी में रोग, जैसे भारत में अँगरेज़ और पास इक नहीं–एकदम फक्कड़। उनकी आँखों के खामो बोल थे––"मेरा क्या होगा, भाई साहब?"

कुछ महीने पहले ही मेरी पत्नी की मृ हुई थी, मैं जेल जा रहा था, मेरे पुत्र अखि

पर बहुत बोझ था, पर, कर्त्तव्यों के लिए मुहूर्त देखना तो गाँधीजी ने सिखाया न था; अखिलेश से कहा–"अपने चाचाजी को यहीं रखना और देखना उन्हें कोई दिक्क़त न हो।"

मैं जेल से लौटकर आया, तो अखिलेश के वह चाचा मेरे घर पर ही थे—एकदम स्वस्थ और ताज़े। कमरे में घुसते ही उत्साह से बोले—"देख लीजिए, भाई साहब, मैंने आपका कमरा बिलकुल साफ़ कर रखा है।" मुझे अपना स्थान साफ़-सुथरा और व्यवस्थित रखने का सचमुच शौक़ है और कोई दूसरा भी अपने स्थान को साफ़-सुथरा रखे, तो मुझे आनंद मिलता है। अपने कमरे की स्वच्छता देखकर मुझे ख़ुशी हुई और मैंने उनकी प्रशंसा की, तो बोले—भाई साहब, मैंने सब रद्दम-फद्दम साफ़ कर दिया है और काम की एक-एक चीज़ माँज-रगड़कर जगहसिर लगा दी है।"

तीन-चार दिन बाद मैं लिखने बैठा, तो मुझे 'त्यागभूमि' के एक अंक की ज़रूरत पड़ी। उसके स्थान पर देखा, इधर-उधर देखा, सब जगह देखा, पर, कहीं वह अंक न मिला। अरे साहब, वह अंक ही नहीं, 'त्यागभूमि' की पूरी फ़ाइल ही लापता थी। बाहर से वह आए, तो पूछा–"भैया, यहाँ 'त्यागभूमि' की पूरी फ़ाइल रखी थी, कहाँ है?"

ज़रा सोचकर बोले—"हर किताब अपनी जगह रखी है।" मैंने कहा—"किताब नहीं, 'त्यागभूमि' की फ़ाइल २८-२९ अंक थे उसके!"

वह सोच-विचार में पड़ गए और बड़ी मुश्किल से उनकी स्मृतियों की तह खुली, तो आश्चर्य की मुद्रा में पूछा—"त्यागभूमि! . . . वह एक पुराना अख़बार? भला, उसे क्यों भर रखा था यहाँ आपने?"

"पहले यह बताओ कि वह है कहाँ?' गंभीर होकर मैंने पूछा, तो बोले—"मैंने सब फ़ालतू काग़ज़ रद्दी में बेच दिए हैं" और तब उन्होंने अपने काम की उपयोगिता सिद्ध की—"आपको रद्दी कागज़ भरे रखने की बहुत बुरी आदत है, भाई साहब!"

एक बार तो भीतर गरमी का उफान आया, पर, ऐसे मौक़ों पर चेहरे के तनाव और जीभ की तेज़ी से बचने का प्रयास मेरा स्वभाव है, इसलिए, उनसे कुछ न कहकर मैं अपने काग़ज़-पत्तर देखने में जुट गया। 'त्यागभूमि' का एक ही अंक शेष था, बाक़ी सब रद्दी में जा चुके थे, पर, मेरे द्वारा संपादित मासिक 'मनोरंजन', 'ब्राह्मण सर्वस्व', 'विश्वज्ञान' और साप्ताहिक 'विकास', 'विश्वास' भी जब मुझे दिखाई न दिए, तब मैं घबराया–"यहाँ ४-५ और अखबारों के बहुत-से अंक रखे थे, वे सब कहाँ हैं भाई?"

बहुत सादगी से मेरे मेहमान बोले—"कह तो दिया आपसे कि जो काम की चीज़ें थीं, वे सब ढंग से सजा दी हैं और रद्दी छाँट दी है।"

"रद्दी नहीं, वे बहुत काम की चीज़ें थीं यार!" मैंने ज़रा उभरकर कहा, तो पूरी गहराई से बोले—"उन पुराने अखबारों में ऐसी क्या खास बात थी, जो नयों में नहीं है?"

हर बात कहने ही की नहीं होती, कुछ बातें बिना कहे समझने की भी होती हैं। वैसे ही यह बात थी कि वे सब पत्र भी रद्दी में जा चुके। मैं चुपचाप अपने बिस्तर पर लेट गया। वह मेरी सुस्ती दूर करने को एक प्याला चाय ले आए। मैंने पहली घूंट भरी ही थी कि उन्होंने स्वार्थ-परमार्थ की मिलवा चटनी मुझे दी, जिससे मेरा बुद्धि-विभ्रम-रोग पूरी तरह दूर हो जाए। बोले–"आप तो जेल में थे और अखिलेश से बार-बार पैसे माँगना मुझे अच्छा नहीं लगा। लड़ाई के कारण रद्दी बहुत महँगी हो रही है, तो धीरे-धीरे मैंने सब रद्दी निकाल दी और कमरे की सफ़ाई भी कर दी।"

यह तो हुआ स्वार्थ और यह लीजिए परमार्थ–"भाई साहब, घर की स्वच्छता-सुंदरता के लिए काम की चीज़ों का सँजोकर रखना जितना ज़रूरी है, रद्दी चीज़ों का निकालना भी उतना ही ज़रूरी है।"

और यह पड़ा मुझपर बम—"पुरानी चिट्ठियों के कूड़े को घर में भर रखना कौनसी अक्लमंदी है, भाई साहब?"

"तुमने मेरी पुरानी चिट्ठियाँ तो नहीं फेंक दीं?" मेरे रोम-रोम से एक चीख-सी निकल पड़ी, पर, उसकी ओर बिना ध्यान दिए ही उन्होंने अपना उपदेश बखेरा—"रोज़ एक थैला-भर चिट्ठियां आती हैं, वही आपसे नहीं पढ़ी जातीं।" मैं कूदकर उठा और चिट्ठियों के लिफ़ाफ़े खोजने लगा, पर, जिसका अस्तित्व ही नहीं, उसकी खोज से लाभ?

मुझे लगा कि धरती घूम रही है, पर, धरती घूमे-न-घूमे? मुझे तो अभी घूमना था। उन्हें साथ लेकर मैं उस हलवाई की दूकान पर गया, जिसके हाथ उन्होंने रद्दी बेची थी—"लालाजी, मैं उस रद्दी को देखना चाहता हूँ, उसमें कुछ काम के कागज़ थे।"

"बाबूजी, वह तो बहुत दिनों की बात है। रद्दी आती रहती है, खर्च होती रहती है।" हलवाई का उत्तर पूर्ण था, फिर भी, जिसका ऊँट खो जाता है, मशहूर है कि वह घड़े में हाथ डालकर देखता है। मैंने पूछा—"लालाजी, उसमें कुछ पत्र थे, उनका आपने क्या किया?" हलवाई ने आश्चर्य से मेरी तरफ़ देखा—"किसीमें लड्डू बाँध दिया, किसीमें पेड़ा–और क्या करता, बाबूजी!"

इन पत्रों में गाँधीजी के पत्र थे, जवाहरलाल नेहरू के पत्र थे और अनेक वयोवृद्ध साहित्यकारों के पत्र थे, पर, अब वे सब पुड़िया बन चुके थे। सच यह है कि मेरे मित्र ने मेरे कमरे ही की सफ़ाई नहीं की थी, मेरा खज़ाना साफ़ कर दिया था, पर, अब क्या हो सकता था। मैं अपने मित्र को गालियाँ दूं, तो वे पत्र लौट न सकते थे; हाँ, उनके साथ मैं अपनी मित्रता खो सकता था। यह मैंने उचित न समझा और चुप रह गया।

वर्षों बाद उस दिन यह बात भाई परमेष्ठीदास जैन के सामने स्मृति के कोष से होठों उछल आई, तो बोले—"मेरा भी एक ऐसा ही संस्मरण है, पर, उसका स्वरूप इससे भिन्न है। मैं तब सूरत में था। राष्ट्रीय आंदोलन में मैं और मेरी पत्नी जेल चले गए, तो मेरे मित्र श्री साकेरचंद सरैया आकर हमारा सामान अपने घर उठा ले गए। इस सामान में कई सौ पुस्तकें थीं, पुराने मासिक-पत्र थे, चिट्ठियाँ थीं, कपड़े-लत्ते थे। उन्होंने अजिल्द पुस्तकों की जिल्द बँधाई और तब सब पर नंबर की चिट लगा दी। पुराने पत्रों को महीने-सप्ताह के हिसाब से लगाकर उन्होंने उनकी भी जिल्द बँधाई और उनपर भी नाम-नंबर की चिट लगादी। एक-एक आदमी की चिट्ठियाँ पहले उन्होंने अलग-अलग छाँटी, फिर, उन्हें समय के क्रम से तारीखवार लगाकर अलग-अलग लिफ़ाफ़ों में रखकर उनका नाम लिख दिया। इस प्रकार जेल जाते समय सामान का जो अस्तव्यस्त ढेर मैं छोड़ गया था, वह एक व्यवस्थित संग्रहालय के रूप में मुझे, लौटने पर, मिला।"

भाई परमेष्ठीदास का संस्मरण सुना, तो मन में विचार आया कि मेरे मित्र ने भी मेरे घर की सफ़ाई की थी और उनके मित्र ने भी उनके घर की सफ़ाई ही की, पर, दोनों में कितना अंतर है कि एक की सफ़ाई से नाश हो गया और दूसरे की सफाई से निर्माण। मुझे लगा कि सफ़ाई की यह बात, पूरे जीवन का एक सूत्र अपने में समाए हुए हैं। उस सूत्र का धुंधला-सा भाव तो मेरे मन में घूमता रहा, पर, वह ऐसी भाषा न पा सका कि मैं उसे कह-सुन सकूं।

गर्भ जैसे पाँच महीने पलकर आत्मा ग्रहण करता है, कुछ वैसा ही यानी उससे उल्टा हाल भाव का है। वह सूक्ष्म होकर जन्म लेता है। इस सूक्ष्मता में शब्द नहीं, संकेत होते हैं। यह सूक्ष्मता चिंतन का रस पीकर पलती रहती है और इस प्रकार कभी धीरे-धीरे और कभी जल्द ही शब्दों की देह पा जाती है।

मेरा भाव-सूत्र भी पल-पनप ही रहा था कि फूलचंद ने पूछा—"बाबूजी, कोठरी में झाड़ू लगा दूं?" फूलचंद १४-१५ साल का किशोर है और प्रेस में काम करता है। अपनी कोठरी में अक्सर मैं खुद सफ़ाई करता हूँ पर, किसी कारण से खुद न कर सकूं, तो फूलचंद से करा लेता हूँ। विशेष बात यह है कि फूलचंद सुलभ न हो, तो कोठरी को बिना सफ़ाई के छोड़ देता हूँ, पर, किसी और से सफाई नहीं कराता।

फूलचंद ने पूछा तो 'हाँ' कह दी और बाहर जा बैठा। कोई एक घंटा बाद लौटा, तो कोठरी मंदिर हो रही थी; हर जगह साफ़, हर चीज व्यवस्थित। मैंने सब चीजों पर जाँच-पड़ताल की-सी नजर डाली, सब चीज़ें अपनी-अपनी जगह पर थीं। फूलचंद की यही तो खास बात है कि हर चीज़ को ज्यों-का-त्यों रखने में सौ फी सदी सावधान रहता है।

ज्यों का त्यों!!! एक मीठी घंटी-सी मेरे भीतर बजी; एक घी का दिया-सा मेरे भीतर जगमगाया और मेरा वह भाव-सूत्र शब्दों की सुंदर देह पागया—'यों का यों या ज्यों का त्यों'। मुझे इतनी खुशी हुई कि मैंने मन ही मन कई बार इसे दोहराया—यों को यों या ज्यों का त्यों और सोचने लगा कि श्री सरैया ने जो कुछ किया था, उसका रूप है यों को यों और फूलचंद जो कुछ करता है, उसका रूप है ज्यों का त्यों।

यों की यों क्या? जो कुछ यों-ऐसा है, उसे यों-ऐसा, यानी पहले से अच्छा—कर देना सफ़ाई नंबर एक है और ज्यों का त्यों रहने देना सफ़ाई नंबर दो है। इसके विरुद्ध मेरे मित्र ने जो कुछ किया, वह सफाई नहीं सफाया है! तो सफ़ाई का रूप है, स्थान को, स्थान की व्यवस्था——सैटिंग को पहले से स्वच्छ, सुंदर और सार्थक बनाना कम से कम यह कि उसकी स्वच्छता, सुन्दरता और सार्थकता को वर्तमान से नीचे न गिरने देना।

भाव की इस पूर्णता से चिंतन को जो चैतन्य मिला, वह गहरे-गहरे उतर चला और तब उपजा भाव में से भाव सफाई का जो सिद्धांत है, वही जीवन का मूल मंत्र है—हम अपना जीवन यों जिएं कि हमारे जीवन से हमारा परिवार, हमारा नगर, हमारा देश और हमारा समाज पहले से श्रेष्ठ हो, सुंदर हो, उच्च हो, पूर्ण हो; कम से कम यह कि हमारे जीवन से हमारा परिवार हमारा नगर, हमारा देश और हमारा समाज पहले से नीचा न हो, ज्यों का त्यों रहे।

अतीत में किसी ने ऋषि से पूछा था—"श्रेष्ठ पिता कौन है?

ऋषि ने उत्तर दिया था—"पुत्रादिच्छेत् पराजयम्।"

वह पिता श्रेष्ठ है, जो अपने पुत्र से पराजय की कामना करे; जो चाहे कि मेरा पुत्र मुझसे हर बात में श्रेष्ठ हो, आगे हो।

बाज़ार में एक मामूली पान मुफ्त नहीं मिलता, तो प्रकृति हमें मनुष्य का महान् जीवन बिना-मूल्य कैसे दे सकती है? जीवन का मूल्य क्या है? यही कि हम अपने पिता से श्रेष्ठ बनें-हमारा जीवन हमारे परिवार को पहले से ऊंचा उठानेवाला हो, हम अपने युग से आगे बढ़ें-हमारा जीवन हमारे राष्ट्र को, युग को प्रगति देनेवाला हो। परिस्थितियों के कारण यह संभव न हो, तो हम यह करें; यह तो करें ही कि हमारे जीवन से हमारा परिवार, हमारा नीचे न गिरे, पीछे न मुड़े।

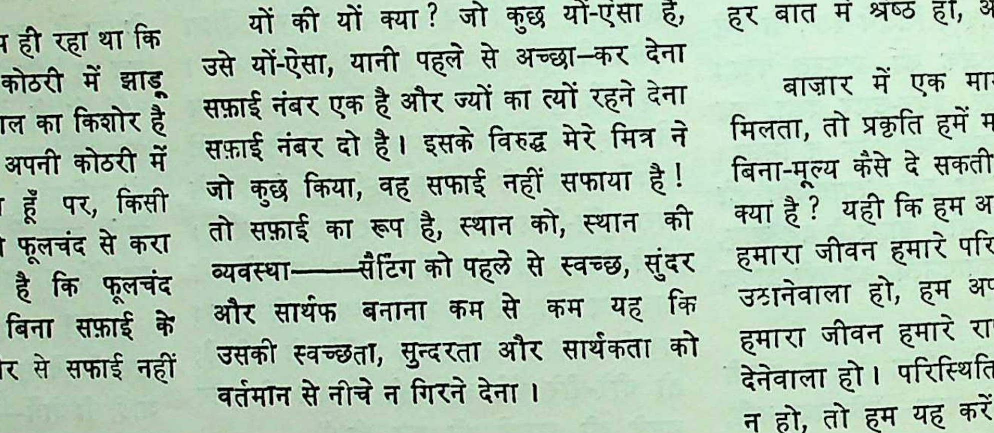

प्राकृत-हिन्दी-कोष के प्रणेता....

(पृष्ठ ९ का शेष)

अच्छे विद्वान् बनाने की बढ़ रही थी, इसलिए, उन्होंने बनारस में संवत् १९५९ की अक्षय तृतीया को 'यशोविजय जैन पाठशाला' स्थापित की। हरगोविंदजी उनके चित्त में चढ़े हुए थे ही, अतः उन्हें संदेश भेजा गया कि यहाँ अध्ययन की पूरी सुविधा हैं, शीघ्र चले आओ। विद्यार्जन का यह सुअवसर मत खोओ। आप भी उनकी आज्ञानुसार व्यापारिक शिक्षा से निवृत्त होकर प्राकृत-संस्कृत-भाषा और न्याय-व्याकरण आदि विषयों का पांडित्य प्राप्त करने के लिए बनारस चले गए। आपके सहपाठियों में प्रज्ञाचक्षु पंडित मुनि सुखलालजी, पं० बेचरदासजी, न्याय-विशारद न्याय विजयजी आदि आज भी विद्यमान हैं। आपने प्रकांड न्याय शास्त्री पंडित अंबादत्त जी के पास न्याय का, व्याकरणवेत्ता पं० हरनारायण त्रिपाठी से शब्दशास्त्र का तथा विजयधर्म सूरिजी से तत्त्वार्थ सूत्र आदि धार्मिक ग्रंथों का अभ्यास किया। संस्कृत-प्राकृत के साथ हिंदी और बंगाली-भाषाओं को भी आपने सीखा और संवत १९६८ से ७१ तक में आप न्यायतीर्थ और व्याकरणतीर्थ की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए।

संवत् १९६४ में विजयधर्म सूरिजी ने "यशो-विजय-जैन-ग्रंथ-माला" नामक संस्था जैन ग्रंथों को सुसंपादित रूप में प्रकाशित करने के लिए स्थापित की। उसमें पंडित बेचरदास दोसी के साथ आपने प्राचीन विशिष्ट जैन ग्रंथों के संपादन और संशोधन का कार्य पांच वर्ष तक किया। २८,००० श्लोक वाले विशेष आवश्यक भाष्य जैसे महान ग्रंथ का आपने विद्वतापूर्ण संपादन किया, जिसकी प्रशंसा यूरोपीय विद्वानों ने भी की है।

आचार्य विजयधर्म सूरि जी, आपकी और पंडित बेचरदास की प्रतिभा से परम प्रसन्न थे। अतः, संवत् १९६६ में महामहोपाध्याय सतीशचन्द्र विद्याभूषण के साथ आप दोनों को सीलोन भेजा गया। कोलंबो में आपने सुमंगलाचार्य नामक बौद्ध भिक्खु के मठ में लगभग आठ मास रहकर पाली-भाषा की विद्वत्ता प्राप्त की और प्राचीन सिंहली-भाषा का भी अभ्यास किया। वहां एक-दो बौद्ध साधुओं को आपने प्राकृत का अभ्यास कराया और जैन-धर्म-संबंधी सार्वजनिक भाषण दिए। संवत् १९६८ में आपके द्वारा लिखित पाली-भाषा का 'नवतत्त्व' नामक निबंध जैन शासन के विशेषांक में छपा हुआ मेरे संग्रह में है।

सीलोन से लौटने पर आपने बनारस में रहते हुए 'विविध-साहित्य-शास्त्र-माला' नामक एक ग्रंथमाला प्रारंभ की, जिसमें प्राकृत और संस्कृत के सुरसुंदरी चरितम् (संवत् १९७२) सुपासनाह चरितम् (संवत १९७४-७५), विवेक मंजरी, विनोद तथा, सप्तसंधान महाकाव्य आदि ग्रंथ-रत्नों को प्रकाशित किया, जिनकी प्रस्तावनाएं बहुत ही महत्त्व की लिखी गई हैं। संवत १९७३ में संस्कृत में हरिभद्र सूरि चरित्र और गुजराती में 'हेमचंद्राचार्य' नामक निबंध लिखा।

इधर कलकत्ता विश्व-विद्यालय में पाली और प्राकृत के प्राध्यापक की आवश्यकता हुई और और आपकी विद्वत्ता की प्रसिद्धि के कारण संवत् १९७४ में आपकी उस पद पर नियुक्ति हो गई, कुछ महीनों में ही आपने अंग्रेजो भाषा का भी अभ्यास कर लिया। विश्व-विद्यालय में आपको बड़ा संमान मिला ? कलकता संस्कृत एसोसिएशन बोर्ड की परीक्षाओं के आप आजीवन परीक्षक रहे। संवत् १९७५ में सुभद्रा देवी से आपका विवाह हुआ। उन्हें भी आपने विद्याभ्यास कराकर अपने काम में सहयोगिनी बना लिया। प्राकृत हिंदी-कोष के कार्य में आपकी पत्नी का भी उल्लेखनीय सहयोग रहा है। पंडित जी का गृहस्थ-जीवन बड़ा सुखी और समृद्धिशाली रहा। कलकत्ते में रहते हुए ही आपने उपर्युक्त महान कोष बनाया और जैन-धर्म के पंच-प्रतिक्रमण नामक प्राकृत संस्कृत-पाठों का भी आपने एक सुंदर हिंदी-अनुवाद जिन चारित्र्य सूरिजी की प्रेरणा से किया ओर वह उन्हीं के नाम से प्रकाशित हुआ। हमने जब अपने 'ऐंतिहासिक जैन काव्य संग्रह' का संपादन तथा प्रकाशन किया तब कई प्राचीन अपभ्रंश प्रभावित रचनाओं के संपादन में हमें पंडितजी से पूर्ण सहयोग मिला।

'प्राकृत शब्द महार्णव' के प्रकाशन के वाद आपने "जैन पारिभाषिक शब्दकोष" की तैयारी की, पर, उसे अर्थ सहित लिखकर पूर्ण नहीं कर पाए। इसी प्रकार महान् जैन दार्शनिक ग्रंथ संमति तर्क का गुजराती विवेचन लिखना प्रारम्भ किया था। वह भी अधूरा ही रहा। २० वर्ष तक विश्व-विद्यालय में अध्यापन-कार्य करके आप निवृत्त हुए। कोष के कार्य में अत्यधिक परिश्रम करने से आपके उदर पीड़ा, संग्रहणी तथा क्षय रोग प्रकट हुए। आपने अपने निवासस्थान पर राधनपुर आकर एकांत में रहने के लिए पर्णकुटी और बाग बनाए, पर, खारी जमीन होने से वह उद्यान विकसित न हो पाया। इधर आपका जीवनोद्यान भी मुर्झाने ही पर था।

रोग बढ़ता गया। साथ ही अंतर्मुखवृत्ति भी बढ़ती गई। हठयोग से आध्यात्म योग की ओर बढ़े। आध्यात्मिक ग्रंथों का वाचन-मनन और ध्यान करना प्रारंभ हुआ, योगवेत्ताओं की खोज में आपने उत्तर में काश्मीर और दक्षिण में नीलगिरि तक यात्रा की और तिब्बत, नेपाल, भूटान जाने का विचार किया। पर, अचानक रोग बढ़ जाने से नहीं जा सके। विशेषज्ञ डॉक्टरों ने निदान किया कि आपको गले का कैन्सर नामक भयानक रोग है। पंडितजी उसकी चिकित्सा कराने बंबई और वहां से मिरज गए। चिकित्सा में कोई त्रुटि नहीं हुई, पर, सफलता नहीं मिली। अतः, पुनः बंबई अपने ससुराल लौटे और वहीं पर संवत् १९९७ की आषाढ़ बदी १३ को आपने इस नश्वर शरीर को छोड़ा। संस्कृत पद्यबद्ध महावीर-स्तोत्र और १०१ श्लोकों का अन्यस्त्रोत्र भी आपने इसी बीच बनाए। इनसे आपकी विशुद्ध भावना, भक्ति. अंतर्मुखी वृत्ति का अच्छा परिचय मिलता है। अस्वस्थता के समय भी शान्ति और धार्मिक भावना द्वारा आपने आत्मोत्थान किया। आपकी पत्नी ने भी आपकी भावना के अनुरूप कार्यों में काफी द्रव्य व्यय किया है।

'पाइय सद्द महण्णवो' आपकी अमर कीर्ति है। डॉ० वासुदेव शरण जी अग्रवाल ने 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' में लिखा है कि 'पाइय सदद महण्णव' की सहायता के बिना मध्यकालीन हिन्दी साहित्य का अध्ययन अधूरा ही रह जाता है। जायसी के सैकड़ों शब्दों के अर्थ इसी कोष की सहायता से मुझे प्राप्त हो सके। अर्ध मागधी, महाराष्ट्री प्राकृत और देश्य शब्दों का यह प्रामाणिक और विस्तृत कोष है। हिंदी को एक ऐसा अत्यंत महत्त्वपूर्ण कोष देनेवाले पंडित जी को शतशः प्रणाम हैं।

समाज-कल्याण की विविध योजनाएँ

केन्द्रीय समाज कल्याण मंडल पूरे देश में बहुत-सी योजनाएं चला रहा है। राज्यों के समाज-कल्याण सलाहकारी मंडल इन योजनाओं के खर्च की स्वीकृति देते हैं और समय-समय पर इसके आय-व्यय की जांच भी करते हैं। जो रकम जिस योजना के लिये दी जाती है, वह उसी में खर्च हो इस पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

राज्यों के समाज-कल्याण मंडल को हर योजना का पूरा हिसाब-किताब केन्द्रीय मंडल के पास सालभर में दो बार भेजना होता है। यदि कहीं एक से अधिक योजनाओं को चलाने के लिये योजना समिति होती है तो उसकी प्रत्येक योजना का हिसाब अलग-अलग देना होता है। मंडल इन योजनाओं के प्रबन्ध, हिसाब-किताब आदि का पूरा ब्यौरा रखता है।

राज्यों के मंडल केन्द्रीय मंडल की ओर से समाज-कल्याण की योजनाओं जैसे ग्रामसेवकों या दस्तकारी शिक्षकों की ट्रेनिंग आदि को भी चलाते हैं। यदि रकम पूरी नहीं हो पाती तो उसके अनुकूल ही बजट बनाया जाता है और दूसरे साल उसे पूरा करने की कोशिश की जाती है। मंडल समाज-कल्याण में स्वेच्छा से काम करनेवाली स्त्रियों की भी व्यवस्था करता है, जो विभिन्न योजनाओं को चलाने में सहायता देती हैं। मंडल की सालाना बैठक होती है, जिसमें इसके द्वारा चलाई गई योजनाओं की समीक्षा की जाती है, एक दूसरे की बातें समझी जाती हैं, कठिनाइयों को हल करने की कोशिश की जाती है और भविष्य के लिए उपयोगी निर्णय भी किये जाते हैं।

मद्रास राज्य के समाज-कल्याण विस्तार खण्ड

केन्द्रीय समाज-कल्याण मंडल ने १९५७, १९५८ और १९५९ में मद्रास राज्य में १३ कल्याण विस्तार खण्ड खोलने की स्वीकृति दी है। इनमें से एक पुराने ढंग का बाकी सब नये ढंग के हैं। सन् १९५७ से पहले इस राज्य में २३ समाज-कल्याण विस्तार खण्ड थे। इस एक के साथ पुराने ढंग के इन २४ खण्डों में ७८० गांव आते हैं, जिनमें १०७ केन्द्र खोले गये हैं। इनकी कुल जनसंख्या १० लाख १३ हजार है। इसके अलावा नये ढंग के १२ खण्डों में १,२०० गांव आते हैं, जिनमें १४६ केन्द्र हैं। इन खण्डों की कुल जनसंख्या मिलाकर लगभग ७ लाख होगी।

पुराने ढंग के प्रत्येक खण्ड लगभग २५ गांवों को मिलाकर बनाये गये हैं, जिनमें ५ केन्द्र होते हैं और जनसंख्या भी लगभग २५ हजार होती है। नये खण्डों में १४ केन्द्र होते हैं और बाकी बातें उन सामुदायिक विकास खण्डों की ही तरह होती हैं, जिन्हें सन् १९५७-५८ में राष्ट्रीय विस्तार खण्डों को बदलकर बनाया गया है।

कर्मचारियों की भविष्य निधि योजना

३१ मई १९५८ तक ६,६२९ औद्योगिक संस्थानों में भविष्य निधि योजना लागू हो चुकी थी। इसमें २४ लाख से भी अधिक कर्मचारी भाग ले रहे थे। इनकी संख्या अब लगभग २९ लाख ९० हजार हो गई होगी अर्थात् अब ८० प्रतिशत कर्मचारी इससे लाभ उठा रहे हैं।

भविष्य निधि की रकम को रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के द्वारा केन्द्रीय सरकार की सिक्यूरिटियों में लगाया जाता है। सन् १९५८-५९ में इन पर ३¾ प्रतिशत ब्याज घोषित किया गया है।

भविष्य निधि में वेतन का ६¼ प्रतिशत जमा करना होता है। इतनी ही रकम मालिकों की ओर से भी दी जाती है। यह रकम हर महीने की १५ तारीख के भीतर ३ प्रतिशत प्रबन्ध व्यय अथवा ¾ प्रतिशत निरीक्षण व्यय के साथ जमा करनी होती है। यह योजना मजदूरों तथा उनके परिवारों की वृद्धावस्था में सहायता करने के लिये चलाई गई है।

सन् १९५६ के बाद इसे ३२ और उद्योगों में भी लागू कर दिया गया है। यह उन सभी कारखानों तथा उद्योगों के लिये अनिवार्य है, जिन्हें स्थापित हुए तीन साल पूरे हो चुके हैं और जिनमें ५० या इससे अधिक व्यक्ति काम कर रहे हैं। समाचार-पत्र उद्योग में यह संख्या केवल २० रखी गई है। इसके अन्तर्गत वे सभी कर्मचारी आते हैं, जिन्होंने १२ महीने के भीतर कम से कम २४० दिन काम किया है और जिनका कुल वेतन ५०० रुपये से अधिक नहीं है। काम छोड़कर जानेवाले लोगों को मालिकों की ओर से भविष्य निधि का भाग दिलाने के लिये इसके कानून में संशोधन भी किया गया है। १५ साल तक काम करने के बाद मालिक कर्मचारी उसके हिस्से की भविष्य-निधि की पूरी रकम मय ब्याज के ले सकता है। दूसरी योजना की अवधि में इस योजना को उन सभी उद्योगों में लागू करने का विचार है, जिनमें १० हजार से कम मजदूर काम करते हैं।

एक अध्ययन दल इस बात की जांच कर रहा है कि सामाजिक सुरक्षा की इन योजनाओं को मजदूरों के हित के लिये कैसे लागू किया जाय। सरकार भी भविष्य निधि योजना को बैंकों, जीवन बीमा कंपनियों, होटलों, स्टूडियो और साधारण व्यापारी संस्थाओं में भी लागू करने का विचार कर रही है। ऐसा करने पर १ लाख ७० हजार कर्मचारी इसमें और भाग ले सकेंगे और भविष्य निधि के रूप में हर साल ४ करोड़ २४ लाख रुपये की अधिक रकम प्राप्त हो सकेगी।

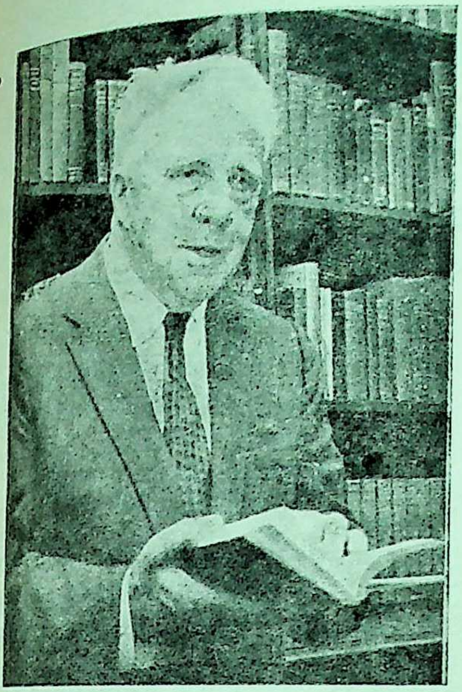

प्रकृति और मानवता के अनन्य उपासक

महाकवि रौबर्ट फ्रौस्ट

पुरातनता और नवीनता, जीवन और मृत्यु-प्रकृति का यह क्रम कभी टूटता नहीं, ठीक उसी प्रकार जैसे रात के बाद दिन और दिन के बाद रात। प्रकृति के इस शाश्वत सत्य, जीवन और मरण के इस गूढ़ रहस्य को समझते हुए जिन दार्शनिकों और कवियों ने मनुष्य को अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर रहने के लिए ललकारा है, मृत्यु को एक शाश्वत सत्य मानते हुए भी जिन्होंने जीवन को उससे भी महान् सत्य माना है, उनमें अमेरिका के यशस्वी महाकवि रौबर्ट फ्रौस्ट भी एक हैं।

प्रकृति के उक्त शाश्वत नियम द्वारा प्रेरित जीवन, मृत्यु और पुनः जीवन का जो चक्र इस सृष्टि के अणु-अणु में व्याप्त है, उनकी ओर संकेत करते हुए कवि फ्रौस्ट ने कहा है:——

'वसंत ऋतु में वृक्षों की डालियां नये पल्लवों से भर जाती हैं, परन्तु धीरे-धीरे नवीनता पुरातन का रूप ग्रहण करती जाती है और एक दिन पुराने पत्ते धराशायी हो जाते हैं। पुनः कोंपलें फूटती हैं, पुनः नए पल्लवों की बहार आती है. लेकिन फिर वही क्रम.......'

कवि फ्रौस्ट के उक्त उदगारों को पढ़कर हमें सहसा ही आधुनिक भारतीय हिन्दी साहित्य के महाकाव्य 'कामायनी' के रचयिता महाकवि स्वर्गीय 'प्रसाद' की निम्न पंक्तियां याद आ जाती हैं:—

"प्रकृति के यौवन का शृंगार,
करेंगे कभी न बासी फूल;
मिलेंगे वे जाकर अति शीघ्र
आह उत्सुक है उनकी धूल।
पुरातनता का यह निर्माण
सहन करती न प्रकृति पल एक;
नित्य नूतनता का आनन्द
किये है परिवर्तन में टेक।'

प्रसाद की उक्त पंक्तियों में और फ्रौस्ट के उद्गारों में कितना अद्भुत साम्य है। विभिन्न समय में और एक दूसरे से कितनी दूरी पर होते हुए भी विचारों की यह साम्यता वस्तुत: अनोखी है।

श्री रौबर्ट फ्रौस्ट की गणना अमेरिका के प्रमुख कवियों में की जाती है। उनकी रचनाओं में प्रकृति और मानवता के प्रति वही प्रेम दृष्टिगोचर होता है, जिससे आधुनिक हिन्दी काव्य-जगत ओतप्रोत है।

सम्पादक

महाकवि जयशंकर प्रसाद की तरह कवि फ्रौस्ट भी जीवन और मृत्यु के शाश्वत सत्य के गूढ़ रहस्य से भलीभांति परिचित हैं, परन्तु मृत्यु के प्रति उनमें भी वही उपेक्षा भाव दृष्टिगोचर होते हैं। मृत्यु भले ही एक शाश्वत सत्य हो, परन्तु कवि फ्रौस्ट उससे भयभीत नहीं। वह जीवन को, कर्म के प्रति जीवन की निष्ठा को उससे भी बड़ा, उससे भी महान् शाश्वत सत्य मानता है। कवि फ्रौस्ट यह नहीं जानता कि जीवन और मृत्यु के इस चक्र से मनुष्य की आत्मा को किस प्रकार मुक्ति मिलेगी। वह जानना भी नहीं चाहता। इसके लिए न तो वह चिंतित है और न उसके पास समय है; वह तो मृत्यु की उपेक्षा करता हुआ साहस के साथ कर्म-पथ पर अग्रसर रहने का, जीवन में आनेवाली बाधाओं को पार करते हुए अविचल निश्चय के साथ कर्म-पथ पर आरूढ़ रहने का सकेत देते हुए कहता है:—

"है कितना सुन्दर यह विश्व; कितना सुन्दर यह दृश्य,
जी चाहता है तनिक विश्राम कर—
फिर बढ़ूं मैं लक्ष्य पर; नव शक्ति से,
पर रुकूं कैसे यहां,
बाट मेरी तक रहा कोई वहां विश्वास ले..."

कर्मयोगी कवि जीवन और मृत्यु की लंबी मंजिलों के बीच पड़नेवाली बाधाओं और कठिनाइयों से घबराता नहीं, अगम्य और अथाह सागर में डगमगाती हुई नैया पर टूटी पतवार के सहारे ही जीवन के भवसागर को पार करने का दृढ़ संकल्प प्रकट करते हुए वह जो कुछ कहता है, उसे सुनकर श्रद्धा के वे प्रेरणापूर्ण शब्द कानों में गूंजने लगते हैं, जो उसने निराश मनु को उत्साह बंधाते हुए कहे थे:

"जिसे तुम समझे हो अभिशाप,
जगत की ज्वालाओं का मूल;
ईश का वह रहस्य वरदान
कभी न इसको जाओ भूल;
विषमता की पीड़ा से व्यस्त
हो रहा स्पंदित विश्व महान्;
यही दुख सुख विकास का सत्य
यह 'भूमा का मधुमय दान।"

और फिर कर्म-पथ पर मनु को आरूढ़ करने के लिए यह प्रकृति के परिवर्तनशील चक्र की ओर इंगित करते हुए कहती है:—

"और यह क्या तुम सुनते नहीं,
विधाता का मंगलमय वरदान—
"शक्तिशाली हो, विजयी बनो"
विश्व में गूंज रहा यह गान।"

ऐसा प्रतीत होता है, जैसे इन शब्दों में कवि फ्रौस्ट की आत्मा, उन की ही अनुभूति बोल रही है। इसीलिये कवि की आत्मा मृत्यु की उपेक्षा करते हुए बोल उठती है:

"जीवन की प्रथम लहर है,
मृत्यु की अन्तिम रेखा,
ऊषा की प्रथम किरण है,
रात्रि की अन्तिम बेला।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

शिक्षा के विस्तार के लिए चहुँमुखी प्रयास

अर्थाभाव और सब तरफ बचत करने के प्रयत्न होने पर भी, १९५८-५९ में देश में शिक्षा विस्तार का कार्य काफी आगे बढ़ा। यह बात केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के १९५८-५९ के कार्य-विवरण में कही गई है।

विवरण में बताया गया है कि अप्रैल १९५८ में, भूतपूर्व शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसन्धान मंत्रालय को दो मंत्रालयों में बांट दिया गया। दूसरी पंचवर्षीय योजना में शिक्षा तथा वैज्ञानिक अनुसन्धान के लिए ३ अरब ७ करोड़ रुपया रखा गया था, जिसमें से २ अरब १२ करोड़ रुपया राज्यों की योजनाओं के लिए और ९५ करोड़ रुपया केन्द्र के हाथों होनेवाले कामों के लिए था। अब इसे घटाकर २ अरब ७ करोड़ रुपया और ६८ करोड़ रुपया (कुल २ अरब ७५ करोड़ रुपया) कर दिया गया है। वर्तमान शिक्षा मंत्रालय की शिक्षा संबंधी योजनाओं के लिए कुल ४५ करोड़ रुपये की राशि नियत की गई है।

निःशुल्क प्रारंभिक शिक्षा

विवरण में बताया गया है कि १९६५-६६ तक, छः से ग्यारह वर्ष तक के सब बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य रूप से प्रारंभिक शिक्षा की व्यवस्था करने का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए, इस साल भी कुछ कदम उठाये गये। इसके लिए शिक्षा मंत्रालय नमूने के कानून का मसविदा तैयार कर रहा है और यह जल्दी ही तैयार हो जाएगा। इस तरह के कानून बनाकर, राज्यों को अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा की उचित व्यवस्था करने में सहायता मिलेगी। कुछ राज्य सरकारें सामुदायिक विकास या राष्ट्रीय विस्तार सेवा खंडों में आजमाइश के लिए, प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य करने को राजी हो गई हैं। गांवों में प्रारम्भिक शिक्षा को और अधिक फैलाने और पढ़े-लिखे लोगों को काम देने की दृष्टि से ६०,००० अध्यापक और १,२०० निरीक्षण अधिकारी नियुक्त करने और अध्यापिकाओं के लिए ६,००० मकान बनाने की भी एक योजना शुरू की गई है। यह काम योजना के इन आखिरी तीन वर्षों में पूरा होगा।

बुनियादी शिक्षा

बुनियादी शिक्षा और प्रारम्भिक शिक्षा का प्रचार करनेवाली ६१ समाजसेवी संस्थाओं को इस साल ४,४८,००० रुपये की सहायता दी गई। बुनियादी शिक्षा के प्रचार के लिए राज्य सरकारों और गैर-सरकारी संस्थाओं को उदारतापूर्वक सहायता दी जाती है। इसके अलावा, गैर बुनियादी प्रारम्भिक स्कूलों को बुनियादी शिक्षा के स्कूलों में बदलने का भी एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम चलाया जा रहा है। बुनियादी शिक्षा की राष्ट्रीय संस्था में, जो १९५६ में स्थापित हुई थी, इस साल अनुसन्धान तथा साहित्य रचना का काम और आगे बढ़ा। बुनियादी शिक्षा की किताबें आदि तैयार करने के जो प्रयत्न किये जा रहे हैं, उनमें बच्चों की पुस्तकों के लिए पुरस्कार देने के अलावा "साहित्य रचनालयों" का भी आयोजन किया जा रहा है। इनमें लेखकों को बच्चों के लिए उपयुक्त पुस्तकें लिखने की शिक्षा दी जाती है।

लड़कियों की शिक्षा

इस साल लड़कियों की शिक्षा को बढ़ाने की योजना के अन्तर्गत व्यापक कार्य हुआ। यह योजना १९५७-५८ में शुरू हुई थी। पिछले साल, लड़कियों के स्कूल आदि खोलने के लिए राज्यों को ९३,१३३ रुपया दिया गया था, परन्तु इस सात राज्य सरकारों और केन्द्रशासित क्षेत्रों को ४८,७४,९७१ रुपया देना मंजूर किया गया। यह सहायता अध्यापिकाओं को अध्यापन की शिक्षा देने, लड़कियों को छात्रवृत्तियां देने, अध्यापिकाओं के लिए मकान बनाने आदि पर खर्च की जाती है। मई १९५८ में, स्त्री-शिक्षा की विभिन्न समस्याओं पर विचार करने के लिए एक राष्ट्रीय समिति नियुक्त की गई थी, जिसकी अध्यक्ष श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख थीं। समिति ने ५ जनवरी, १९५९ को अपनी रिपोर्ट सरकार को दे दी थी और इस पर विचार किया जा रहा है।

माध्यमिक शिक्षा

मंत्रालय ने, माध्यमिक शिक्षा के पुनर्गठन के लिए राज्य सरकारों को, १९५८-५९ में ३ करोड़ ३३ लाख रुपये की सहायता दी। मार्च १९५८ तक, १,१४३ बहुद्देश्यीय माध्यमिक स्कूल खोले गये। दूसरी योजना की अवधि में १,१८ ऐसे स्कूल खोलने का लक्ष्य रखा गया है। इसी प्रकार मार्च १९५८ के अन्त तक ३४० उच्च माध्यमिक स्कूल (हायर सेकेंडरी स्कूल) खोले गये।

अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद को, जो अब तक एक स्वतंत्र संस्था थी, मंत्रालय का एक विभाग बनाने का निश्चय किया गया है। हैदराबाद का सेंट्रल इन्स्टीटयुट ऑफ इंग्लि १७ नवम्बर १९५८ से चालु हो गया है।

उच्च शिक्षा

देश के १८ विश्वविद्यालयों में तीन साल डिग्री पाठ्यक्रम आरम्भ किया जा रहा है। समय, देश में जो १० ग्राम महाविद्यालय (इन्स्टीट्यूट) काम कर रहे हैं, उनके अ पंजाब और मध्यप्रदेश में भी, गांवों में उच्च की व्यवस्था करने के लिए एक-एक ग्राम विद्यालय खोलने के बारे में विचार किया जा है। इन विद्यालयों के समाज-सेवा डिप्लोमा विश्वविद्यालयों से मान्यता दिलाने का प्रश्न विचाराधीन है।

दृश्य-श्रव्य शिक्षा

शिक्षा मंत्रालय, शिक्षा में दृश्य-श्रव्य का प्रयोग बढ़ाने का विशेष प्रयत्न कर रहा इसके लिए, नयी दिल्ली में जो राष्ट्रीय बनाया गया है, वह जल्दी ही काम करने

इस साल, समाज-शिक्षा के प्रसार के लिए भी कई कदम उठाये गये। राष्ट्रीय आधार शिक्षा केन्द्र, मई १९५६ में स्थापित किया गया था। जिला समाज शिक्षा संगठनकर्त्ताओं का पहला दल, अप्रैल १९५८ में यहां से पढ़कर निकला। २२ शिक्षार्थियों का दूसरा दल, इस समय यहां शिक्षा पा रहा है। दिल्ली विश्वविद्यालय में पुस्तकाध्यक्षों (लायब्रेरियन) को शिक्षा देनेवाली संस्था इसी महीने चालू हो जाएगी। इसके लिए शिक्षा मंत्रालय ने सहायता दी है।

छात्रवृत्तियों की योजनाएं

विदेशी सरकारों, अंतर्राष्ट्रीय तथा विदेशी संस्थाओं और कोलम्बों योजना आदि की ओर से भारतीय छात्रों को विदेशों में अध्ययन करने के लिए जो छात्रवृत्तियां दी जाती हैं, उनके अलावा भारत सरकार ने भी भारतीयों को विदेशों में अध्ययन के लिए बहुत-सी छात्रवृत्तियां देने की व्यवस्था की है। इसी प्रकार, भारत सरकार विदेशी छात्रों को भारत में पढ़ने के लिए भी वृत्तियाँ देती हैं। स्वदेश में ही अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियों की कई योजनाएँ चल रही हैं। इस साल राजनीतिक पीड़ितों के बच्चों को छात्रवृत्तियाँ देने की भी योजना बनाई गयी, जिस पर १९५९-६० में अमल होगा।

अप्रैल से दिसम्बर १९५८ तक, १,७६२ श्रम तथा समाज-सेवा शिविर लगाने के लिए, मंत्रालय ने ३२,७८,००० रुपया दिया। इन शिविरों में १,३८,९८७ व्यक्तियों ने भाग लिया। १७ विश्वविद्यालयों, १३ राज्य सरकारों और एक केन्द्र शासित प्रदेश के शासन को ७९ मनोरंजन-भवन तथा हाल, १४ क्रीडांगण (स्टेडियम), ९ तैरने के जलाशय, ७ खुली नाटयशालाएं, ७ पेवीलियन और २ साइकिल दौड़ाने के पक्के दायरे बनाने के लिए १४ लाख ७९ हजार रुपया देना मंजूर किया गया। देश में, व्यायाम तथा खेलकूद की शिक्षा को आगे बढ़ाने के सम्बन्ध में "राष्ट्रीय शरीर कौशल उपक्रम" एक उल्लेखनीय प्रयास है। इस पर जल्दी ही अमल शुरू हो जाएगा और व्यायामशालाओं तथा अखाड़ों और दूसरी संस्थाओं को सरकारी सहायता दी जाएगी। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं तथा खेलकूद में जो विश्वविद्यालय सबसे अधिक छात्रों को भेजेगा, उसको पुरस्कार द्वारा प्रोत्साहित किया जायगा। एशियाई तथा ओलम्पिक खेलों में भारतीय खिलाड़ियों की असफलताओं का कारण खोजने के लिए भी एक समिति नियुक्त की गई है।

राष्ट्रीय अनुशासन योजना अब २१० स्कूलों में शुरू हो चुकी है और १ लाख १० हजार बच्चे इसका लाभ उठा रहे हैं।

हिन्दी की उन्नति के लिए काम

हिंदी की उन्नति के लिए, दूसरी पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत पिछले साल जो काम शुरू किये गये थे, वे इस साल और आगे बढ़े। ३१ दिसम्बर, १९५८ तक विविध विषयों के १ लाख ४० हजार पारिभाषिक शब्दों के हिन्दी पर्याय गढ़े गये। इनमें से ३३,६०० को भारत सरकार स्वीकार कर चुकी है और ७,२९८ शब्द, मंत्रिमंडल के विचारार्थ गये हुए हैं। शिक्षा मंत्रालय में हिन्दी में विज्ञान तथा शिल्प शब्दकोष तैयार करने के लिए, एक अलग विभाग बनाया गया है।

संस्कृत आयोग ने जो सिफारिशें की थीं, उनके अनुसार संस्कृत शिक्षा को बढ़ाने के लिए गैर सरकारी संस्थाओं को सहायता देने की योजना बनाई गयी है। इसके अलावा, संस्कृत के व्यापक प्रचार के बारे में सरकार को सलाह देने के लिए, केन्द्रीय संस्कृत मंडल की स्थापना पर भी विचार किया जा रहा है।

मंत्रालय के खर्च में बचत करने के कई उपाय किये गये हैं। उनमें से एक केन्द्रीय शिक्षा पुस्तकालय और केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय को एक करने के बारे में है। जनवरी से मार्च १९५८ की अवधि में, शिक्षा सम्बन्धी २१ प्रकाशन और अप्रैल से दिसम्बर १९५८ तक ४७ प्रकाशन मंत्रालय की ओर से निकाले गये। इनमें से कुछ किन्हीं विषयों पर हैं और कुछ सामान्य उपयोग के हैं।

खजुराहो
विश्वविख्यात स्थापत्यकला की अनुपम देन
यदि आपने कभी खजुराहो के विख्यात मंदिर नहीं देखे, तो यह पुस्तक अवश्य देखिये
यदि देखे हैं
तो उनकी स्मृति इस पुस्तक से ताजा रखिये
रायल अठपेजी, आर्ट पेपर पर मुद्रित १०२ प्लेट
अंग्रेजी और हिन्दी में
मंदिरों के इतिहास का मनोरंजक परिचय
नयनाभिराम मुद्रण : आकर्षक जिल्द : मूल्य १० रुपये
प्राप्तिस्थान
व्यवस्थापकः—प्रकाशन शाखा, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय
जयाजी चौक, ग्वालियर, म० प्र०

महिला-संसार

अमेरिका में महिलाओं की स्थिति

यह सत्य है कि अमेरिकी जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं ने अपने लिए सम्मानजनक स्थान बना लिया है। अमेरिका में महिलाओं को आज जो सम्मानजनक स्थान प्राप्त हो गया है, वह उन्हें सहज ही नहीं मिला है। संसार के इतिहास के ज्ञाता यह भलीभांति जानते हैं कि यूरोप के अधिकांश देशों और विशेषरूप से ब्रिटेन में महिलाओं ने अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए कठोर संघर्ष किया और अपने संघर्ष और साहस के फलस्वरूप वह अपने राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने में समर्थ भी रहीं। अमेरिका की महिलाओं ने भी अपने अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी है, परन्तु यह लड़ाई सड़कों पर अथवा कांग्रेस भवन के सामने नहीं, बल्कि उन वनाच्छादित प्रदेशों और पर्वतीय प्रदेशों में लड़ी गई, जहां वह पुरुषों के साथ जाकर रहीं, जहां पुरुष के कंधे से कंधा भिड़ाकर निर्भीकता और साहस के साथ उसने अपनी गृहस्थी चलाई और अपनी सन्तानों का लालन-पालन किया। वहां वह मनुष्य की दासी नहीं, बल्कि उसकी साथी बनकर रही। अवसर पड़ने पर उसने कंधे पर बन्दूक रखकर रेडइण्डियनों एवं अन्य खतरों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। अमेरिकी राष्ट्र के निर्माण में उन्होंने पुरुषों के समान ही बलिदान किए हैं।

फिर भी, अमेरिकी महिला को अमेरिका के निरन्तर विकासोन्मुख समाज में अपना स्वतन्त्र और सम्मानजनक अस्तित्व कायम रखने और अपने सामाजिक, राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने के लिए राजनीतिक आधार पर भी संघर्ष करना पड़ा है।

संक्षेप में, आज अमेरिका में जीवन के सभी क्षेत्रों में अमेरिकी महिला पुरुषों के समान स्थान प्राप्त करने का दावा करती है। चिकित्सा, उद्योग, व्यवसाय, इंजीनियरिंग, विज्ञान इत्यादि क्षेत्रों में उसने प्रवेश ही नहीं किया है, बल्कि उल्लेखनीय सफलताएं भी प्राप्त की हैं।

अमेरिकी महिला गृहिणी के रूप में

परिवार का उच्च जीवन-स्तर कायम रखने के लिए आजकल अधिकांश अमेरिकी गृहिणियां नौकरी करती हैं। उनका प्रमुख उद्देश्य परिवार की आय में वृद्धि करना होता है। लेकिन नौकरी करते हुए भी, वह प्रेमपूर्ण और सुखद पारिवारिक जीवन बिताना पसन्द करती हैं। अमेरिका में लगभग २ करोड़ २० लाख महिलाएं किसी न किसी पेशे में नौकर हैं। हर दस विवाहित अमेरिकी महिलाओं में से तीन तो अवश्य ही किसी न किसी पेशे में नौकर हैं। ६० वर्ष पूर्व लगभग ५० प्रतिशत महिलाओं को, अपना जीवन घर में ही बिताना पड़ता था, लेकिन अब कुल वेतन और पारिश्रमिक का २० प्रतिशत भाग महिलाओं के पास जाता है। अमेरिकी महिलाएं नौकरी करके जो धन कमाती हैं, उसका उपयोग अपने परिवार को अधिक सुखी रखने तथा अपनी सन्तानों का उचित ढंग से लालन-पालन करने में करती हैं। महिलाओं के नौकरी करने से एक लाभ यह भी होता है कि सन्तान के लालन-पालन में माता-पिता, दोनों का ही हाथ रहता है और दोनों को उनमें अपने गुणों का समावेश करने का अवसर मिलता है। परिवार के प्रत्येक आवश्यक कार्य पति-पत्नी मिलकर सहकारिता और सहयोग के आधार पर करते हैं और इसमें उनकी भी पूरा-पूरा हाथ बटाती हैं। नौकरी करते भी अपने परिवार में वह गृहस्थी की स्वामि होती हैं और सप्ताहान्त में दोनों पति- मिलकर जीवनोपयोगी वस्तुएं खरीदने जाते और साथ ही साथ अपना मनोरंजन भी करते हैं।

डाक्टरों और वैज्ञानिकों के रूप में महि

अमेरिका में महिलाओं ने डाक्टरों वैज्ञानिकों के रूप में ख्याति प्राप्त की है। कुशल इंजीनियर, गणितज्ञ और हवाबाज साबित हुई हैं। इस समय अमेरिका अन्त विजय के लिए जो अनुसन्धान कर रहा है, कई महिला वैज्ञानिक महत्वपूर्ण पदों पर कर रही हैं। बहुतसी महिलाएं ऐसी हैं, इंजीनियर, वैज्ञानिक या पेशेवर हवाबाज रूप में कार्य करते हुए भी सुखी और सन्तु पारिवारिक जीवन व्यतीत कर रही हैं। के क्षेत्र में तो उन्होंने विशेष उल्लेखनीय प्र की है। बहुतसी अमेरिकी महिलाएं ऐसी जो अपने क्षेत्र में विशिष्ट जानकारी प्रा करने के उपरान्त विदेशों में विशेषज्ञों और सलाहकारों के रूप में कार्य कर रही हैं। हाल में ही एक महिला मेरी जी० रोबलिंग 'ट्रस्ट ट्रस्ट कम्पनी' नामक एक अमेरिकी स्टाक एक्स चेंज कम्पनी के बोर्ड की अध्यक्ष चुनी गई है।

कोई समय था, जब अमेरिका में महिलाओं का राजनीति में भाग लेना उचित और भद्र पूर्ण कार्य नहीं समझा जाता था और अमेरिका कांग्रेस के किसी भी सदन में कोई महिला सद नहीं थी। लेकिन अब इस क्षेत्र में भी स्थि बदल गई है।

अमेरिका की ८६वीं कांग्रेस में अमेरि प्रतिनिधि सभा के चुनाव में तीन अन्य महिला को चुन लिया गया है। ८५वीं कांग्रेस में महिला सदस्य थीं, जिनमें से १२ पुनः चुन गई हैं। इनमें एक महिला कांग्रेसजन श्रीम एडिथ नोर्स राजर्स ने १८वीं बार कांग्रेस चुनाव जीता है। ४ अन्य महिलाएं भी पह बार चुनाव जीतकर कांग्रेस में प्रविष्ट हुई हैं इस प्रकार उनकी कुल संख्या १६ तक पहुंच है। प्रतिनिधि सभा के लिए ३० महि तथा सिनेट सभा के लिए ५ महिलाएं खड़ी थीं। यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है राजनीतिक कार्यकर्ताओं और उम्मीदवारों

रूप में अधिकाधिक अमेरिकी महिलाएं राजनीति में प्रवेश कर रही हैं। इनमें सभी प्रकार की राजनीतिक विचारधारा की महिलाएं हैं।

समाज-कल्याण

समाज-कल्याण के क्षेत्र में तो अमेरिकी महिलाएं बहुत समय पूर्व से अत्यधिक दिलचस्पी ले रही हैं। अमेरिका में शायद ही कोई महिला ऐसी हो, जो किसी न किसी समाज-कल्याण या परोपकारी संस्था की सदस्या न हो और पीड़ित रोगग्रस्त और अभावग्रस्त व्यक्तियों की सहायता के कार्य में सक्रिय योग न देती हो। बीमार व्यक्तियों और बालकों के लिए तरह तरह की भेंट भेजना, शारीरिक दृष्टि से असमर्थ व्यक्तियों की सहायता के लिए धन जुटाना, आवश्यकता पड़ने पर घर-घर जाकर स्थानीय, राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय सहायता-कार्यों के लिए धन एकत्र करता, यह अमेरिकी महिलाओं के दैनिक जीवन का अंग बन गया है। विदेशों में रहनेवाली अमेरिकी महिलाएं भी स्थानीय समाज के पीड़ित और अभावग्रस्त लोगों की सहायता के लिए कोई न कोई आयोजन करती रहती हैं। उनके कार्यों में उनके पति और परिवार का पूरा योग मिलता है। कभी-कभी तो पूरा परिवार न्दा एकत्र करने के लिए द्वार-द्वार घूमता दिखाई पड़ता है।

संक्षेप में, अमेरिकी जीवन के सभी अंगों में महिलाओं ने अपने बलिदान और अनवरत एवं साहसपूर्ण प्रयन्नों के फलस्वरूप विशिष्ट और सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर लिया है। वह हर कार्य में पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करती है और यह मानने के लिए कभी तैयार नहीं हो सकती कि कोई ऐसा काम भी है, जो केवल मनुष्य ही कर सकता है। पिछले वर्षों और विशेष रूप से द्वितीय महायुद्ध के दौरान उसने इस धारणा को बिलकुल भ्रान्त सिद्ध कर दिया है। इन सब बातों के बावजूद अमेरिकी महिलाओं में नारी के गुण विद्यमान हैं और वह उन सभी बातों और कार्यों में रुचि लेती हैं, जिसमें भारत या अन्य किसी भी देश की महिलाओं को रुचि रहती है। दुनिया की अन्य नारियों की तरह प्रेम, निष्ठा और भ्रातृत्व उनके लिए भी एक पुनीत और गौरव की वस्तु है।

महाकवि रावर्ट फ्रॉस्ट

(पृष्ठ १५ का शेश)

जीवन परिचय

१८७४ में सैनफ्रांसिस्को में रावर्ट ली फ्रौस्ट का जन्म हुआ था। गत २६ मार्च को उनकी आयु ८५ वर्ष की हो गई। इनके पिता एक समाचार-पत्र के सम्पादक थे। जब उनका निधन हुआ, तब रावर्ट ११ वर्ष के थे। इनकी माता, जो एक शिक्षिका थीं, मेसाचुसेट्स में आबाद हो गई। वहीं रावर्ट के बाबा रहते थे।

इसी स्थान पर सर्वप्रथम युवक रावर्ट का साक्षात्कार प्रकृति से हुआ और ज्यों-ज्यों वर्ष बीतते गये, प्रकृति के प्रति उनका आकर्षण प्रबलतर होता गया। उस प्रदेश के अनुपम दृश्यों और प्राकृतिक सौंदर्य-सुषमा ने उनका मन इतना अधिक मोह लिया कि उनकी कविता में उनकी छाया निरन्तर झलकती रही। उन्होंने स्वयं कहा है कि साहित्य भूगोल से आरम्भ होता है। उनकी सभी रचनाओं—एक 'सूनी कुटिया', 'भोजपत्र का वृक्ष', 'प्रथम हिमपात', 'एक शर्मीली पर्वतीय बाला' इत्यादि में इसी प्रदेश के जीवन की झांकी मिलती है। प्रकृति-दृश्यों से ही उन्हें सब से अधिक प्रेरणा मिली है।

अपने प्रथम कविता-संग्रह के प्रकाशन से पूर्व लगभग २० वर्ष तक श्री फ्रौस्ट एक सच्चे कर्मयोगी की भांति खेती-बाड़ी का काम करते हुए जीवन के संघर्ष में लीन रहे। प्रकृति के सानिध्य में उनका बहुत समय व्यतीत हुआ। बीच-बीच में, वे फैक्टरी के कर्मचारी, स्कूल के शिक्षक तथा छोटे-छोटे समाचार-पत्र के सम्पादक के रूप में भी कार्य करते रहे। किन्तु उन्मुक्त प्रकृति का प्रेम उन्हें बार-बार प्रकृति की गोद में खींच लाता।

१९१३ में उनकी पहली पुस्तक "ए बौयज विल" इंग्लैंड में प्रकाशित हुई। उसके बाद "नार्थ और बोस्टन" कविता-पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसकी बहुत सराहना हुई। बाद के वर्षों में कवि ने अपने जीवन के अनुभवों को कविता का रूप प्रदान करके अन्य लोगों को उनका रसास्वादन कराया।

इनके देशवासियों ने इनके प्रयत्नों का आदर करते हुए इन्हें विभिन्न प्रकार से सम्मानित किया है। इन्हें राष्ट्र का सब से उच्च साहित्यिक पुरस्कार ४ बार प्रदान किया गया है—सबसे पहले १९२४ में "न्यु हैम्पशर" नामक कविता-पुस्तक प्रकाशित होने पर और अन्तिम बार १९४३ में "ए विटनेस ट्री" के प्रकाशन पर। १९५० में सेनेट सभा में उत्कृष्ट काव्य रचना करने के लिए फ्रौस्ट का सम्मान करने के हेतु एक विशेष प्रस्ताव पास किया गया। गत वर्ष इन्हें दो वर्ष के लिए वाशिंगटन स्थित कांग्रेस पुस्तकालय का कविता संबंधी सलाहकार नियुक्त किया गया है जो किसी भी प्रकार से अन्य देशों में मिलनेवाली राष्ट्रीय कवि की उपाधि से कम सम्माननीय नहीं।

जहां तक कविता के उद्गम का प्रश्न है, रौबर्ट फ्रौस्ट प्रकृति के अनन्य उपासक कवि पंत के इस उद्गार से पूर्ण सहमत हैं:

"वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान;
निकल कर आंखों से चुपचाप,
बही होगी कविता अनजान।"

मानवता के अनन्य उपासक

महाकवि रौबर्ट फ्रौस्ट मानवता के अनन्य पुजारी हैं। अपना समस्त जीवन ही उन्होंने मानवता की सेवा में बिता दिया है और जीवन की इस संध्या वेला में भी यह उनके जीवन का सबसे बड़ा व्रत है। उन्हें मानवता से अत्यधिक प्रेम है। इसलिए वह मानव की त्रुटियों को देखते-समझते हुए भी, उनकी आलोचना करते हुए भी मानवता से उसी प्रकार प्यार करते हैं, जिस प्रकार मानिनी अपने प्रेमी से रूठ कर भी क्षणमात्र के लिए उसको अपनी आंखों से ओझल नहीं होने देना चाहती।

मुख्य मंत्री द्वारा सर्वोत्तम पंचायतों को पुरस्कार वितरण

मुख्य मंत्री डॉक्टर के. एन. काटजू ने सदर मंजिल में आयोजित समारोह में राज्य की सात सर्वोत्तम पंचायतों में से प्रत्येक को एक हजार रुपये पुरस्कार दिया। अपने गांवों में विभिन्न विकास कार्यों को पूरा करने और समाज सुधार करने की दृष्टि से ये पंचायतें सर्वोत्तम घोषित की गई थीं। ये सात पंचायतें निम्नलिखित गांवों की हैं:—जबरकटी ग्राम (जबलपुर संभाग), तिरगा (रायपुर संभाग), जिवरी (बिलासपुर संभाग), कासौन (इन्दौर संभाग), पटाई (ग्वालियर संभाग), जमनी (भोपाल संभाग) और ककटहरी (रीवा संभाग)। उक्त पंचायतों की ओर से निम्नलिखित सरपंचों को प्रशंसापत्रों सहित पुरस्कार मिले:—सर्व श्री प्रह्लादसिंह कुमरे, भंगीराम, बचन कंवर, मोहनसिंह परिहार, रामदयाल शर्मा, पुरुषोत्तमलाल दुबे तथा रामसनेही त्रिपाठी।

इस अवसर पर श्रेष्ठ पंचायतों का अभिनन्दन करते हुए मुख्य मंत्री ने कहा कि आज का सर्व प्रमुख कार्य देश की नवोदित स्वतन्त्रता को सुदृढ़ बनाना है। पंचायतें, जो कि हमारे देश के लोकतन्त्र का वास्तविक आधार है, इस कार्य को पूर्ण करने का सर्वोत्तम माध्यम है। वे अपने ग्रामों में सर्वांगीण विकास कार्य कर सकती हैं। कुछ समय पश्चात् उन्हें भू-राजस्व एकत्रित करने का अधिकार भी सौंपा जा सकता है।

मुख्य मंत्री ने कहा कि हमारे देश की स्वतन्त्रता का भव्य भवन ग्राम-पंचायत, न्याय-पंचायत, ग्राम-शाला और सहकारी-समिति—इन चार स्तम्भों पर आधारित है। यदि ये चारों स्तम्भ मजबूत और स्थायी बना दिये जायँ तो देश की स्वतन्त्रता, प्रगति और समृद्धि चिरकाल के लिये सुनिश्चित् हो जायेगी।

अधिक कृषि उत्पादन के लिये मुख्य मंत्री जी ने उपस्थित पंचों को सलाह दी कि वे अपने गांवों में कृषि सहकारी समितियां स्थापित करके कृषि कार्यों को एक विशाल परिमाण में अधिक क्षमतापूर्वक पूरा करें। ग्रामीण हस्त-शिल्पों के विकास और पुनरुत्थान के लिये बुनकरों, लुहारों और बढ़ई लोगों की सहकारी समितियां भी बनाई जा सकती हैं।

अपने भाषण के अन्त में पंचों को मुख्य मंत्री ने आश्वासन दिया कि सरकार विकास कार्यों को पूरा करने में उन्हें यथासम्भव सहायता देगी।

इसके पूर्व समाज कल्याण मंत्री श्री गणेशराम अनन्त ने उन विभिन्न निर्माण कार्यों पर प्रकाश डाला, जो गांवों में पंचायतों के माध्यम से किये जा रहे हैं।

इस अवसर पर एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई थी, जिसमें पोस्टरों नक्शे, चार्टों आदि के द्वारा राज्य की पंचायतों की प्रगति का चित्रण किया गया था। मुख्य मंत्री ने इस प्रदर्शनी का निरीक्षण भी किया।

विविध-समाचार

भारत सेवक-समाज द्वारा ग्रीष्म शिविरों का आयोजन

भारत सेवक-समाज बिलासपुर संभाग की क्षेत्रीय शिविर समिति ने आगामी ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में २४ श्रम एवं समाज सेवा तथा शिक्षक प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने का निश्चय किया है। जिलेवार शिविरों का विवरण इस प्रकार है:—सरगुजा ९, बिलासपुर ८, और रायगढ़ ७। उक्त शिविर १ मई से प्रारंभ होंगे।

इन २४ शिविरों में चार शिविर गोरेखा (बिलासपुर) सरडी एवं श्रीगढ़ (सरगुजा) और चीलंग (रायगढ़) में केवल महिलाओं के लिये आयोजित किये जा रहे हैं।

राष्ट्रीय-बचत पक्ष की सफलता

खंडवा। पूर्व निमाड़ जिले में सर्वत्र राष्ट्रीय बचत-पक्ष उत्साहपूर्वक मनाया गया और उसके परिणामस्वरूप विभिन्न प्रकार के राष्ट्रीय बचत पत्रों के विक्रय तथा पोस्ट ऑफिस सेविंग्ज-बैंक के खाते में धनराशि जमा कराकर दो लाख पैंसठ हजार आठ सौ उनन्चास रुपये की धनराशि बचत-पक्ष की अवधि में एकत्र की गई। बचत-पक्ष की अवधि में विभिन्न संस्थाओं और व्य से धन लगाने के लिये एक लाख चौंतीस ह एक सौ रुपये के जो बचन प्राप्त किये गये, उसमें से भी ८१,००० रुपये. बचत-पक्ष के द राष्ट्रीय-बचत में लगाये जा चुके हैं।

सहकारिता के कार्य का अध्ययन

अखिल भारतीय सहकारिता प्रशिक्षण सं इंदौर के प्रशिक्षणार्थियों के एक दल ने पू निमाड़ जिले के विभिन्न सहकारी हाट व्यव संगठनों का हाल ही में पांच दिवसीय अध्ययन कि किया। दल ने खंडवा के कपास के संग्रह (का पूल) तहसील कृषि संगठन और बड़े पैमाने कार्य करने वाली अन्य संस्थाओं को देखा इस दल ने खंडवा विकास खंड के कुछ ग्रामों भी दौरा किया तथा दल के सदस्य बड़ गूजर ग्राम द्वारा की गई प्रगति से प्रभावित हु इस ग्राम में सिंचाई कार्यों के लिये ६ बिज के पम्प लगाये गए हैं। इसके अतिरिक्त इस में प्रमुख गृह-निर्माण-योजना के अंतर्गत उ कृषि और गृह-निर्माण समितियां भी सफल पूर्वक कार्य कर रही हैं।

रीवा जिले में हरिजन-कल्याण-कार्य

एक प्रतिवेदन में बतलाया गया है कि हरिज आदिदासियों और पिछड़े वर्गों की प्रगति हे उन्हें उत्तम सुविधाएँ प्रदान करने के उद्देश्य रीवा जिले के हरिजन-कल्याण विभाग द्वा सभी सम्भव प्रयास किये जा रहे हैं।

इस प्रतिवेदन के अनुसार वित्तीय १९५८-५९ एक आदिवासी और १५ हरि रात्रि पाठशालायें चलाई गईं और ३१ हरि और ७ आदिवासियों को छात्रवृत्तियाँ दी गईं इसके अतिरिक्त एक हरिजन आश्रम के सु रूप से संचालन हेतु ८,००० रुपये का एक अनु मंजूर किया गया और आलोच्य अवधि स्त्री-शिक्षा की प्रगति के लिये १०,४०० की राशि खर्च की गयी।

आवास-सम्बन्धी सुविधाएँ देने के उद्दे से २५ हरिजनों को घर बनाने हेतु १८, रुपये की अग्रिम राशि दी गई। इसके अतिरि हुजूर तहसील के ६ हरिजन परिवारों को ज की जुताई के लिये कुल १५०० रुपये के अनु दिये गये।

संग्रहीत खाद्यान्नों की कीटाणुओं से सुरक्षा

संग्रहीत खाद्यान्नों को सुरक्षित रखना उतना ही आवश्यक है, जितना अधिक अन्न उत्पादन करना। संगृहीत अन्न कीटाणुओं तथा चूहों आदि से दस से बीस प्रतिशत तक नष्ट कर दिया जाता है, जिसकी बचत, रोक थाम वैज्ञानिक तरीकों से की जा सकती है।

समुचित संग्रह करने की प्रणाली का उल्लेख करते हुए पौवरक्षण अधिकारी बिलासपुर ने सलाह दी है कि संग्रह के पूर्व अन्न को पूरी तरह से सुखा लेना चाहिये। अन्न को ठीक तरह से सुरक्षित रखने की यह प्रथम आवश्यकता है। स्वच्छ तथा कीटाणुरहित अन्न भंडारों से अनाज की रक्षा बहुत दर्जे तक हो जाती है। डी. डी. टी. २५ प्रतिशत तथा ५ प्रतिशत डी. एच. सी. अन्न को रोगाणुरहित करने में सहायक होते हैं। बी. एच. सी. अथवा डी. डी. टी. से बोरे को साफ रखना तथा थप्पियों को कीटाणुनाशक द्रव्यों से साफ कर देना उतना ही आवश्यक है।

कीटाणु वाले अन्न को सुवासित करने की विधि भी है, किन्तु यह सावधानी से किसी विशेषज्ञ की देखरेख में करना चाहिये।

चूहे जो कि अन्न के गोदामों में नुक्सान करते हैं या तो पकड़े जा सकते हैं अथवा जहर से मारे डाले जा सकते हैं। इस संबंध में अधिक जानकारी स्थानीय कृषि अधिकारियों या पौधरक्षण अधिकारी लिंक रोड, बिलासपुर से प्राप्त की जा सकती है।

पंच प्रशिक्षण-शिविर

खंडवा से कुछ दूरी पर स्थित भामगढ़ ग्राम में हाल ही में एक पंच-प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। इसमें ६ ग्राम-पंचायतों के ४० पंचों ने पंचायतों से संबंधित कार्यों, उनकी कार्य-पद्धति और अन्य सामाजिक कार्यों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। वहां इसके साथ ही ग्रामसेवकों के लिये भी समाज-कल्याण-विभाग, इन्दौर के विशेष कर्त्तव्यस्थ-अधिकारी ने इस शिविर का निरीक्षण किया। वर्तमान वित्तीय वर्ष का यह तेरहवां और अंतिम पंच-प्रशिक्षण शिविर था।

दुर्ग जिले में पंचायत पर्व

दुर्ग जिले में गत जनवरी १९५९ में आयोजित पंचायत पर्व में ४६८ ग्राम पंचायतों ने भाग लिया तथा कृषि एवं यातायात के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की।

उपरोक्त अवधि में ग्रामवासियों द्वारा १,२४८ शोषक गड्ढ़े, २,७४५ संयुक्त खाद के गड्ढ़े तथा २,००० शौचकूप तैयार किये गये। उन्होंने ४१ मील सड़क का निर्माण तथा ७२ मील पुरानी सड़क का सुधार भी किया। इसके सिवाय सिंचाई एवं पेय जल के लिये ४९६ तालाब व ३९४ कुएं सुधारे गये। १२५ पुलियों एवं ५ शाला-भवनों का निर्माण भी किया गया।

पंचायत पर्व की अवधि में ग्रामीणों द्वारा ८३,६०० रुपये अंशदान स्वरूप एकत्र किये गये व १,६२५ रुपये अल्प बचत योजना में लगाये गये।

ग्राम युवकों का प्रशिक्षण शिविर

बालाघाट जिले के वारासिवनी में खण्ड विकास कार्यालय, वारासिवनी द्वारा, हाल ही में, एक त्रि-दिवसीय ग्राम-युवक प्रशिक्षण-शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में वारासिवनी तहसील के ३३ ग्रामों के ५८ युवकों ने भाग लिया।

इस शिविर में आयोजित कार्यक्रमों में मुख्य रूप से, शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज कल्याण, खेल कूद, कृषि, वृक्षारोपण, श्रमदान आदि से सम्बन्धित विषयों पर चर्चा की गयी। प्रशिक्षणार्थियों के लाभार्थ, उन्हें इन विषयों के व्यावहारिक पहलू में भी शिक्षित किया गया।

सीधी में पशु मेला एवं योजना प्रदर्शनी

सीधी में हाल ही में आयोजित पशु मेला एवं योजना-प्रदर्शनी को २,००० से भी अधिक व्यक्तियों ने देखा। इस प्रदर्शनी में आकर्षक नक्शों तथा चार्टों के माध्यम से प्रथम योजना की उपलब्धियों तथा द्वितीय योजना के विभिन्न आयोजनों को दर्शानेवाले स्टाल स्थापित किये गये थे। अखिल भारतीय कृषक समाज के सदस्य श्री रणबहादुर सिंह ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर उत्तम नस्लों के पशुओं के २५ मालिकों को ५५० रुपये मूल्य के पुरस्कार वितरित किये गये।

शिवपुरी में योजना प्रदर्शनी

शिवपुरी में आयोजित वानगंगा एवं सिद्धेश्वर मेले में सूचना एवं प्रकाशन संचालनालय द्वारा योजना प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। सुन्दर एवं कलात्मक ढंग से सजाई गई प्रदर्शनी को बोतल के आकार का सजाया गया तथा अन्दर का भाग खुला रखा गया। अन्दर के भाग में मध्यप्रदेश एक परिचय, भिलाई इस्पात योजना, शिवपुरी जिले की प्रथम एवं द्वितीय योजनान्तर्गत की गई प्रगति, नेपा मिल्स तथा मध्यप्रदेश की प्रथम पंचवर्षीय योजना की संपूर्ण प्रगति एवं द्वितीय योजनान्तर्गत किए जा रहे विभिन्न विकास-कार्यों की पूर्ण जानकारी चार्ट, नक्शे, मौडल आदि द्वारा प्रदर्शित की गई।

मचल मेला में योजना प्रदर्शनी

मंडला जिले के मचल मेले में क्षेत्रीय प्रकाशन कार्यालय जबलपुर द्वारा हाल ही में एक चतुर्दिवसीय प्रदर्शनी आयोजित की गई थी।

इस प्रदर्शनी में कार्यालय का मंडप, मानचित्रों, अनुकृतियों, नक्शों तथा छाया चित्रों से अलंकृत किया गया था, जिनके द्वारा प्रथम पंचवर्षीय योजना के लक्ष्य एवं उपलब्धियों का चित्रण किया गया था। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय अल्प बचत योजना के उद्देश्य दिखलाने वाले कुछ पोस्टर भी इस प्रदर्शनी में रखे गये थे। इस प्रदर्शनी के देखने को समीपवर्ती गांव-निवासी बड़ी संख्या में आए। इस अवसर पर राष्ट्रीय गीतों का एक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया था।

दस्यु लाखनसिंह का भाई पुलिस का बन्दी

राज्य पुलिस द्वारा भिण्ड जिले के फूप पुलिस थाने के अंतर्गत भदाकुर ग्राम के ठाकुर मलखानसिंह के घर से मार्क थ्री के ९७ कारतूस २७ मार्च को प्रातः बरामद किए गए हैं। मलखानसिंह कुख्यात दस्यु लाखनसिंह का भाई है तथा राज्य पुलिस उसे बंदी बनाने में सफल हुई है।

भिण्ड पुलिस क्षेत्र के अन्तर्गत गढ़ी ग्राम में २७ मार्च को प्रातः आयोजित छापे में पुलिस द्वारा २९ कारतूस और बरामद किए गए तथा श्रीपाल कुम्हार नामक कथित अभियुक्त बन्दी बनाया गया।

इस प्रकार राज्य पुलिस द्वारा थ्री नाट थ्री के १२४ कारतूस बरामद किए गए।

दस्यु पाना द्वारा चन्दा मांगने के समाचार मिथ्या

कुख्यात दस्यु पाना द्वारा माता-बसई के ग्रामवासियों से चन्दा मांगने के समाचारों के संबंध में जांच करने पर पता चला है कि उक्त ग्राम की जनता द्वारा इस आशय के समाचारों

की कोई पुष्टि नहीं की गई। अतः उक्त समाचार मिथ्या एवं निराधार हैं।

दस्यु जसरामसिंह द्वारा आत्म-समर्पण

कुख्यात दस्यु रूपा के दल के जसरामसिंह नामक सदस्य ने २८ मार्च को भिण्ड आरक्षी अधीक्षक के समक्ष आत्मसमर्पण किया। उक्त दस्यु मुरैना जिले के पोरसा पुलिस क्षेत्र के अंतर्गत छोटी कोंथर ग्राम का निवासी है तथा राज्य पुलिस को इसकी अनेक प्रकरणों में आवश्यकता थी।

डकैत बन्दी

मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा भिण्ड जिले के फूफ थाने के अन्तर्गत बिरगवां रानी नामक ग्राम के निवासी डकैत बाबू को जो कुख्यात डकैत लच्छी के दल का सदस्य रहा है। फूफ थाने के अंतर्गत दिनांक २२ मार्च को बन्दी बनाने में सफलता प्राप्त की है।

स्थानीय समाचार

ग्यारह व्यक्ति बन्दी

मनीराम आत्मज तुलसीराम जिसका अपहरण जनकगंज से ४ फरवरी को गंभीरा के दल द्वारा किया गया था और जिसे मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा ११ मार्च को वापस प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की थी के प्रकरण के संबंध में अब तक निम्नलिखित ११ व्यक्ति बन्दी बनाए जाचुके हैं:—गंभीरा, हल्कू, हरिया, रूपसिंह, माधोसिंह, रामेश्वर, कैलाश, लक्ष्मी नारायण (बिरखड़ी निवासी) लक्ष्मीनारायण (तारोली निवासी) रघुबर तथा रमाकान्त 'रामू'। उक्त प्रकरण से संबंधित दो व्यक्ति फरार हैं।

'और भगवान देखता रहा' नामक नाटक अभिनीत

सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय के तत्वावधान में ग्वालियर के आदर्श कला निकेतन द्वारा "और भगवान देखता रहा" नामक नाटक दिनांक २४ मार्च को श्रम-बस्ती, ग्वालियर में सफलतापूर्वक अभिनीत किया गया। लगभग एक हजार दर्शक जन-समूह ने उक्त अभिनय को देखा।

भोपाल में पुनः उपद्रव स्थिति काबू में

भोपाल ३० मार्च। रात्रि में शान्ति रहने के बाद आज भोपाल के एक या दो स्थानों में लगभग २ बजे दोपहर से पुनः उपद्रव प्रारम्भ हुआ। यह उपद्रव मुख्यतः चौक क्षेत्र में शुरू हुआ, जबकि जामा मसजिद में दोपहर की नमाज के लिये एकत्रित हुए लोगों में से एक बड़ी संख्या ने बाहर निकलकर दूकानों पर आक्रमण करना तथा बाहर के लोगों पर हमला शुरू कर दिया। पुलिस ने अश्रु गैस का प्रयोग कर उन्हें तितर-बितर कर दिया। फिर भी मसजिद के भीतर एकत्रित भीड़ अवज्ञा करती रही तथा मसजिद के भीतर से उसने पत्थर फेंकना शुरू किया। परिणामस्वरूप, मसजिद को चारों तरफ से घेरना पड़ा तथा भीतर के लोगों को बाहर आने के लिये कहना पड़ा। जैसे ही लोग मसजिद से बाहर आये, वे हिरासत में ले लिये गये तथा घटना-स्थल से हटा दिये गये। पथराव के फलस्वरूप कुछ लोगों को चोटें लगीं थीं। तीन उदाहरणों में जबकि उपद्रव पर आमादा भीड़ के द्वारा एक सिपाही तथा दो सब-इन्सपेक्टरों पर हमला किया गया तब आत्म-रक्षा के हेतु उन्हें गोली चलानी पड़ी। अभी तक किसी भी मृत्यु की सूचना नहीं मिली है। आगजनी की कुछ घटनाओं के साथ ही लूटपाट भी हुई।

कुछ गिरफ्तारियां की गई हैं— कुछ १४४ धारा तोड़ने के अपराध में तथा खुलेआम अपराध करने के कारण।

मुख्य मंत्री डॉक्टर के. एन. काटजू ने अपरान्ह में दुर्घटना-स्थलों का निरीक्षण कि

स्थिति काबू में है। सावधानी के हेतु आवश्यक कदम उठाये गये हैं। समाज व्यक्तियों को भी पकड़ा जा रहा है। आज के सात बजे से प्रातः ५ बजे तक के लिये लगा दिया गया है।

भारत सरकार से "रजिस्टर्ड"

सफेद दाग

इस परिक्षित दवा से स्त्री पुरुष या बालकों शरीर पर के सफेद लाल दाग शरीर के त्वचा समान पूर्ववत सुन्दर होते हैं। हजारों ने अनु करके प्रशंसा पत्र भेजे हैं मूल्य ५) रुपये विवरण मुफ्त मंगाकर देखिये।

वैद्य के. आर. बोरकर (मध्य.),
मु. पो. मंगरूलपीर
जि. अकोला (विदर्भ)

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER, CHAMBAL HYDEL AN
IRRIGATION SCHEME (M.P.) TRANSMISSION CIVIL DIVISION, UJJAI

Tender Notice No. 20

Sealed quotations will be received from established suppliers for the sup of the material for construction of Sewerage system at the office of the undersig upto 4-00 p.m., on 16th April, 1959 and will be opened on the same day at 4-30 p in the presemce of the suppliers who may be present at the time. The appro mate estimated cost is of Rs. 38,500/-.

The tender in the prescribed form can be obtained from the office of the under signed on payment of Rs. 5/- per set during office hours on any working day fr 9th April, 1959.

No tender will be received without an earnest money of Rs. 770/ in the fo of National Savings Certificates pledged in the name of undersigned or Treas Challans. Under no circumstances the Earnest money will be accepted in ca

No tender will be issued on the date fixed for opening of tenders.

The Superitending Engineer, (Electrical) Chambal Hydel Scheme reser the right to reject any or all of the tenders without assigning any reason there

Executive Engineer,
Transmission Civil Division, Ujjai

149;16- 17.

मुख्य मंत्री द्वारा चार दिवसीय दौरा

"प्रस्तावित दो रेलवे लाइनों के निर्माण और वोलाडिला लोहे की खानों का कार्य आरम्भ हो जाने से वस्तर जिले की अर्थ व्यवस्था में आगामी कुछ वर्षों में निश्चित् रूप से महान् परिवर्तन हो जायगा ।" उक्त शब्द मुख्यमंत्री डाक्टर कैलाशनाथ काटजू ने उस समय कहे जब वे वस्तर जिले की अपनी प्रथम यात्रा के समय विगत रविवार को वस्तर जनपद सभा और जगदलपुर नगरपालिका द्वारा संयुक्त रूप से अर्पित किये गये मानपत्र का उत्तर दे रहे थे । मुख्य मंत्री ने उन्हें वताया कि वस्तर निवासियों का भविष्य उज्ज्वल है और उन्हें उसके लिये तैयार रहना चाहिए ।

इसके पूर्व, जब मुख्यमंत्री जगदलपुर विमान स्थल पर उतरे तब उनका हार्दिक स्वागत किया गया । उनके सम्मान में अनेक द्वार तैयार किये गये थे और सम्पूर्ण जगदलपुर शहर में हर्षोल्लास की लहर व्याप्त हो गई थी ।

नारायणपुर में आदिवासी सभा

नारायणपुर में २१ मार्च को आदिवासियों की एक-विशाल सभा में भाषण देते हुए डाक्टर काटजू ने कहा कि आदिवासियों और हरिजनों का कल्याण उन्हें सर्वाधिक प्रिय हैं । आदिम जातियों की दशा में सुधार करने के लिये योजनाबद्ध प्रयत्न किये जा रहे हैं । मुख्यमंत्री ने आदिवासियों से हार्दिक अनुरोध किया कि वे इन योजनाओं से पूरा लाभ उठावें और देश के सर्वांगीण विकास में सहयोग दें । डाक्टर काटजू ने अपने भाषण के अन्त में यह मत प्रगट किया कि आदिवासियों की प्रगति ही देश की प्रगति की वास्तविक कसौटी है ।

वस्तर जिले में अपने चार दिनों के दौरे में डाक्टर के. एन. काटजू ने जगदलपुर से लगभग ६० मील दूर वीरगांव ग्राम में दण्डकारण्य योजना का निरीक्षण किया । वहां पहुंचने पर दण्डकारण्य विकास प्राधिकार के मुख्य प्रशासक और योजना के अन्य अधिकारियों द्वारा उनका स्वागत किया गया । मुख्य मंत्री ने वस्ती का चारों ओर से निरीक्षण किया और योजना के विषय में विस्तृत रूप से जानकारी प्राप्त की । उन्होंने पूर्वी पाकिस्तान के विस्थापितों से जो यहां वसाये जा रहे हैं, भेंट की और वस्ती के निकट जो जंगल उन्मूलन तथा भूमि सुधार कार्य हो रहा है, उसका निरीक्षण किया ।

जिला अधिकारियों के समक्ष भाषण

जगदलपुर पहुंचने पर मुख्य मंत्री ने उसी दिन जिला अधिकारियों और वकील संघ के सामने भाषण दिया । उन्होंने जिला जेल और महारानी अस्पताल का भी निरीक्षण किया ।

भोपाल को रवाना होने के पूर्व मुख्य मंत्री ने महारानी लक्ष्मीबाई कन्या उच्च विद्यालय, जगदलपुर, का निरीक्षण करके बस्तर जिले का अपना प्रथम दौरा समाप्त किया ।

डॉ. केसकर द्वारा खजुराहो मंदिरों का अवलोकन

केन्द्रीय सूचना और प्रसार मंत्री डॉ० बी. व्ही. केसकर ने खजुराहो के प्रसिद्ध मंदिरों का अवलोकन किया। हिन्दू और जैन मंदिरों को देखने में उन्होंने लगभग ६ घंटे बिताये और सुन्दर खुदाई और उत्तम शिल्प की बड़ी प्रशंसा की। वे वहाँ रात में ठहरे और दूसरे दिन प्रसिद्ध संगीतज्ञ उस्ताद अलाउद्दीन खाँ द्वारा संचालित संगीत महाविद्यालय देखने के लिये मैहर गये। मैहर जाते हुए आपने मार्ग में पन्ना की हीरे की खदानें भी देखीं ।

सागर में छोटे सिंचाई कार्यों का विस्तार

सागर जिले के सातों खंडों में, खंड विकास अधिकारियों द्वारा छोटे सिंचाई के क्रियान्वय में, यथासंभव प्राथमिकता दी जा रही है। विद्यमान कुओं, पंपों और बँधियों के अतिरिक्त, जिनसे इस समय लगभग ४३,२७३ एकड़ जमीन सींची जा रही है । २ बांधों का निर्माण-कार्य पूरी गति पर है, जिनमें एक शाहगढ़ खंड के दिगोंडा गांव में और दूसरा रइली खंड के मोठेरकला के पास है । इन दो कार्यों की अनुमानित लागत लगभग २,००३,४० रुपये है और समाप्त होने के पश्चात् इससे ९०० एकड़ अतिरिक्त भूमि पर सिंचाई होगी ।

इसके अतिरिक्त ४ अन्य कार्य आगामी दो तीन महीनों में शुरू किए जावेंगे, जिनसे १७०० एकड़ भूमि सींची जावेगी । राहतगढ़, बंडा, देवरी और जैसीनगर खंडों और चार अन्य कार्यों का सर्वेक्षण कार्य प्रगति पर हैं । यह आशा की जाती है कि इन कार्यों के फलस्वरूप कृषि उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि होगी ।

माध्यमिक परीक्षा में प्रायवेट रूप से सम्मिलित होनेवालों के लिए सूचना

रजिस्ट्रार शिक्षा विभागीय परीक्षायें, मध्यप्रदेश ग्वालियर सूचित करते हैं कि इस वर्ष (१९५९) की पूर्व माध्यमिक (मिडिल) परीक्षा में प्रायवेट रूप से सम्मिलित होने वाले जिन परीक्षार्थियों ने अपने आवेदन-पत्रों में परीक्षा के विषय में अंग्रेजी विषय अंकित कर दिया है, उनको अंग्रेजी विषय की परीक्षा उनके कार्यालय द्वारा ली जावेगी और जिन्होंने अपने आवेदन-पत्रों में अंग्रेजी विषय अंकित नहीं किया है, उनकी अंग्रेजी विषय की परीक्षा नहीं होगी । जिन परीक्षार्थियों ने कक्षा ६ के अंग्रेजी के पाठ्यक्रम का अध्ययन किया है, उनकी परीक्षा उनके कार्यालय द्वारा नहीं होगी ।

जिन परीक्षार्थियों की मातृभाषा मराठी उर्दू और सिंधी है, उनकी अनिवार्य हिन्दी विषय की परीक्षा उनके कार्यालय द्वारा ली जावेगी ।

रीवा जिले में सहकारी खेती

यहाँ प्राप्त एक प्रतिवेदन में कहा गया है है कि रीवा जिले में सहकारी खेती के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति की गई है । अगडाल, तमरा, वैसा पडोखर, सरई, ढावा, देवरा और सिरमौर-गांवों में ७ सहकारी कृषि समितियां कार्यरत हैं तथा ७ अन्य सहकारी समितियां भी गठित की जा चुकी हैं जो अपना कार्य शीघ्र आरंभ कर देंगी।

जो सहकारी समितियाँ कार्य कर रही हैं उनके पास १,३६९ एकड़ भूमि है, जिनमें से १,२३७ एकड़ भूमि में खेती की जा रही है । इन समितियों को सुचारु रूप से कार्य करने के लिए केन्द्रीय सहकारी बैंक, रीवां द्वारा १३,७३४ रुपये का ऋण दिया गया है । इसके अतिरिक्त इन समितियों को अनुदान के रूप में १,०२० रुपये तथा हिस्सा पूंजी के रूप में ६,००० रुपये सरकार से प्राप्त हुए ।

कार्यालय संचालक स्वास्थ्य सेवायें मध्यप्रदेश

विज्ञप्ति

शासन को ओर से निम्नलिखित केन्द्रों में परिचारिका, हैल्थ विजीटर (स्वास्थ्य अभ्यांगता) मिडवाइफ, (प्रसाविका) एवं दाई प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है:—

प्रशिक्षण का नाम	कम से कम आयु	अधिक से अधिक आयु	प्रशिक्षण को अवधि	प्रशिक्षण केंद्र	शैक्षणिक योग्यता.
१	२	३	४	५	६
परिचारिका	१७	३५	४ वर्ष	जे. ए. हॉस्पिटल, ग्वालियर	मैट्रिक तथा तत्सम परी उत्तीर्ण.
	,,	,,	,,	एम. वाय. हॉस्पिटल, इन्दौर	,,
	,,	,,	,,	डी. के. हॉस्पिटल रायपुर	,,
	,,	,,	,,	एलजिन हॉस्पिटल, जबलपुर	,,
	,,	,,	,,	विक्टोरिया हॉस्पिटल, जबलपुर	,,
	,,	,,	,,	हमीदिया हॉस्पिटल, भोपाल	,,
	,,	,,	,,	जी. एम. हॉस्पिटल, रीवा	,,
स्वास्थ्य अभ्यांगता	१७	३५	२।। वर्ष	एम. वाय. हॉस्पिटल, इन्दौर	मैट्रिक या तत्सम परी उत्तीर्ण.
आक्सीलरी नर्स व प्रसाविका ..	१७	३५	२ वर्ष	एम. वाय. हॉस्पिटल, इन्दौर	,,
,,	१७	३५	,,	जे. ए. हॉस्पिटल, ग्वालियर	,,
,,	,,	,,	,,	मेटरनिटी होम, मुरार	,,
,,	,,	,,	,,	एस. जेड. हॉस्पिटल, भोपाल	,,
,,	,,	,,	,,	वीमेन्स हॉस्पिटल, छिन्दवाडा	,,
,,	,,	,,	,,	वीमेन्स हॉस्पिटल, बिलासपुर	,,
,,	,,	,,	,,	वीमेन्स हॉस्पिटल, खंडवा	,,
	,,	,,	,,	डी. के. हॉस्पिटल, रायपूर	,
अक्सीलरी नर्स व प्रसाविका ..	१७	३५	२ वर्ष	इलगिन हॉस्पिटल, जबलपुर	मैट्रिक या तत्सम उत्तीर्ण.
,,	,,	,,	,,	जनसेवा रुग्णालय, इटारसी	,,
,,	,,	,,	,,	सिविल हॉस्पिटल, उज्जैन	,,

प्रशिक्षण का नाम.	कम से कम आयु	अधिक से अधिक आयु	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण केंद्र.	शैक्षणिक योग्यता.
१	२	३	४	५	६
आक्सीलरी व नर्स प्रसाविका . .	१७	३५	२	सिवल हॉस्पिटल, रतलाम	मैट्रिक या तत्सम परीक्षा उत्तीर्ण.
”	”	”	”	” देवास	”
”	”	”	”	” गुना	”
”	”	”	”	” अम्बिकापुर	”
”	”	”	”	” मंडला	”
”	”	”	”	” जगदलपुर	”
”	”	”	”	” रायगढ़	”
अव्यवसायिक दाई	१७	३५	६ माह	महारानी चिकित्सालय, जगदलपुर	”
	”	”	”	सेन हॉस्पिटल, अम्बिकापुर	”
”	”	”	”	सिविल हॉस्पिटल, धार	”
”	”	”	”	” रायगढ़	”
”	”	”	”	” शिवपुरी	”
”	”	”	”	” टीकमगढ़	”
”	”	”	”	” जी. एम. हॉस्पिटल, रीवा . .	”

उपर्युक्त प्रशिक्षण केवल महिलाओं के लिये हैं। छात्राओं को निम्नानुसार छात्रवृत्ति दी जावेगी:—

परिचारिका:—रुपये २०-४० तथा निम्नानुसार महंगाई भत्ता व निःशुल्क निवास एवं खाना दिया जावेगा।

हैल्थ विजीटर और मिडवाइफ:—छात्रवृत्ति प्रतिमाह ५० रुपये तथा निःशुल्क निवास, भोजन तथा पोशाक का खर्च छात्रवृत्ति से करना होगा।

दाई:—हर मास ३० रुपये निःशुल्क निवास खाना खर्च शिल्पवृत्ति से काट लिया जावेगा.

छात्राओं को एक ऐसा करार पत्र भरना होगा कि ट्रेनिंग पास होने के पश्चात उन्हें ३ साल तक सरकारी नौकरी करना आवश्यक होगा।

निर्वाचित छात्राओं को होस्टल में ही रहना होगा जो छात्राएं इस अवसर पर लाभ उठाना चाहती हैं, वे निम्न विवरण सहित अपनी अर्जियां उपर्युक्त किसी केंद्र को भेजें।

(१) पूर्ण नाम व पूरा पता
(२) आयु
(३) शैक्षणिक योग्यता के प्रमाण-पत्र की प्रतिलिपियां
(४) विवाहित या अविवाहित
(५) यदि विवाहित हों तो कितनी संतान हैं, व सब से छोटे बच्चे की आयु अगर ट्रेनिंग में भर्ती हुये तो इनकी क्या व्यवस्था करेगी क्योंकि होस्टल में बच्चों को नहीं रखा जावेगा
(६) किसी भी आदरणीय व्यक्ति से (जो रिश्ते में न हो) चरित्र प्रमाण-पत्र।
(८) पालक का पूरा नाम तथा पता, साथ ही, प्रशिक्षण के लिये मान्यता-पत्र।

प्रार्थना-पत्र पहुंचने की आखरी तारीख १५ अप्रैल, १९५९ होगी। खाली जगहें हों तो देरी से आई हुई दरख्वास्तों पर विचार किया जावेगा।

(१५४-१७)

गोविन्दलाल शर्मा, एम. डी.
संचालक,
स्वास्थ्य सेवाएं, मध्यप्रदेश

CHAMBAL HYDEL AND IRRIGATION SCHEME MADHYA, PRADESH

Tender Notice

Sealed tenders are invited by the undersigned by designation, for fabrication at Chambal Hydel Works of Steel structures for the Grid-substation in Madhya Pradesh. Total tonnage to be fabricated is approximately 122. Cost of tender documents and forms (non-refundable) payable in cash or by Money Order to the Chief Accounts Officer, Chambal Hydel & Irrigation Scheme, P.O., Chambal Hydel Works Madhya Pradesh, is Rs. 25.00 per set, which will be available for sale from the 15th March, 1959.

Tenders will be received till 4-00 P.M., on 15th April, 1959, and will be opened by 4-30 P.M., on the same date. Earnest money @ 2 % of the tendered value should accompany the tender without which it will not be considered.

The undersigned reserves the right to reject any or all the tenders or to place an order for the fabrication of part of the tonnage notified herein, without assigning any reason thereof.

K. S. SIVAPRAKASAM,
Superintending Engineer, Electric, Chambal Hydel and
Irrigation Scheme, Madhya Pradesh.

151;16-18

कार्यालय कार्यपालन यंत्री, लोक निर्माण विभाग, (भवन तथा सडक),
निमाड़ संभाग खरगोन

विज्ञाप्ति

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि आगरा-बाम्बे सड़क पर खलघाट के समीप नमदा नदी में पुल पर १ वर्ष के हेतु दिनांक १ जून १९५९ से दिनांक ३१ मई १९६० तक पथ-कर वसूल करने के स्वत्व का घोष-विक्रय इस कार्यालय में दिनांक १८ अप्रैल १९५९ को दिन के ३ बजे किया जावेगा.

बोली लगाने के पूर्व प्रत्येक इच्छुक व्यक्ति को रुपये १,००० (एक हजार) नगद अथवा इतनी रकम नेशनल सेव्हिंग सर्टिफिकेट अर्नेस्ट मनी के रूप में कार्यालय में जमा करन होंगे ।

ठेके का प्रतिबन्ध तथा तत्संबंधी जानकारी इस कार्यालय में कार्यालयीन समय में देखी जा सकेगी ।

ल० हा० भाटिया,
कार्यपालन यंत्री,
लोक निर्माण विभाग, भवन तथा सड़क,
निमाड़ संभाग, खरगोन ।

(१४७ १६ से १८)

क्या आप जानते हैं ?

१. भारत में दृश्य-श्रव्य उपकरणों के
शिक्षा देने की प्रणाली अभी हाल में शु
ह, किन्तु १९३७ में जब से शिक्षा विकास
बनाई गई, तब से इस पद्धति को विशेष
दिया जाने लगा है ।

२. स्वतंत्रता मिलने के बाद से
आंदोलन को एक नई प्रेरणा मिली है ।
में दृश्य-श्रव्य शिक्षा के विभिन्न पहलुओं की
करने तथा उसके विकास के लिए सुझाव
उद्देश्य से अक्टूबर १९५१ में एक अखिल भा
सम्मेलन किया गया ।

३. इस सम्मेलन ने राष्ट्रीय दृश्य-श्रव्य
मण्डल नियुक्त करने की सिफारिश की। सन्
में यह मण्डल नियुक्त किया गया और मई
में इसकी पहली बैठक हुई। इस बैठक में
राज्यों में दृश्य मण्डल बनाने, शिक्षा-सं
द्वारा संग्रहालय खोलने, हरेक राज्य में
का संग्रहालय स्थापित करने और फिल्म
फिल्म की रीलों के बारे में एक समान
निर्धारित करने की सिफारिश की गई।

४. इस मण्डल की दूसरी बैठक मई
में हुई और इसमें दूसरी योजना में शामिल
के लिए दृश्य-श्रव्य शिक्षा के विकास की
योजनाएं तैयार की गईं ।

५. इनमें से कुछ योजनाएं इस प्रकार
जैसे शिक्षकों की प्रशिक्षण संस्थाओं में दृ
शिक्षा के बारे में ट्रेनिंग देना; हाईस्कूल या
सेकेंड्री स्कूलों के लिए रेडियो देना, सभी
में चलती-फिरती गाड़ियों द्वारा दृश्य-श्रव्य
देने के लिए गाड़ियों की व्यवस्था करना
श्रव्य शिक्षा के बारे में पत्रिका निकाल
मिलीमीटर की फिल्म की रीलें तैयार
चुनी हुई संस्थाओं के सहयोग से शिक्षा में
की उपयोगिता के बारे में अनुसंधान कर
दृश्य-उपकरण आदि बनाने में गैर
उत्पादकों को प्रोत्साहन देना ।

६. दूसरी योजना में शिक्षा के वि
लिए शिक्षा मंत्रालय का जो कार्यक्रम है
अंतर्गत राष्ट्रीय दृश्य-श्रव्य शिक्षा संस्था
जा रही है । इसमें शिक्षकों को दृश्य
उपकरण बनाने तथा उनका प्रयोग क
तरीका सिखाया जाएगा । इसके लिए
लाख रुपये देना स्वीकार किया गया है

साप्ताहिक समीक्षा

चीन द्वारा तिब्बत की सरकार भंग

तिब्बत में विद्रोह के बारे में १८ दिन बाद किंग की एक घोषणा', में कहा गया है कि ब्बती सेना तथा अनेक तिब्बती जनों द्वारा विद्रोह किए जाने के परिणामस्वरूप तिब्बत की थानीय सरकार को भंग कर दिया गया है।

इस घोषणा में, जो चीन की राज्य परिषद् (मंत्रिमंडल) द्वारा प्रचारित की गई है तथा जिस र प्रधानमंत्री श्री चाऊ-एन-लाई के हस्ताक्षर हैं, हा गया है कि भंग सरकार के स्थान पर पणछेन-मा की अध्यक्षता में समाजवादी व्यवस्था की पना के लिए एक समिति का निर्माण किया या है।

चीन सरकार की घोषणा में कहा गया है कि दलाई लामा "विद्रोहियों के दवाव" में हैं,

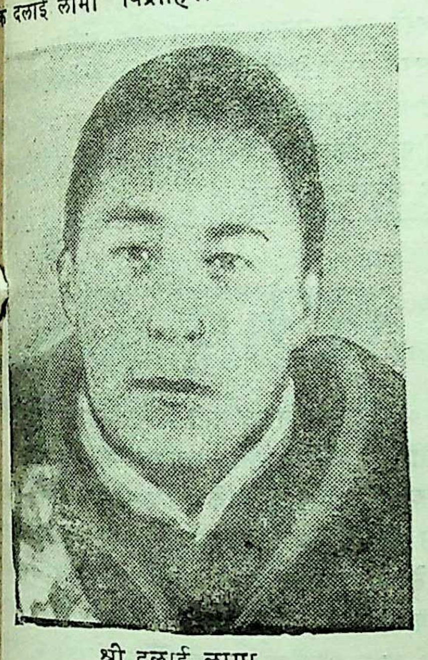

श्री दलाई लामा

लेकिन इसका खुलासा नहीं किया गया है। घोषणा में १८ तिब्बती नेताओं को उनके पदों से हटाया गया है और उनको "कानून के अन्तर्गत व्यक्तिगत रूप में दंडित किया जाएगा।" इन नेताओं के नाम भी दिए गए हैं।

नवचीन समाचार समिति के एक समाचार में बताया गया है कि मोटे आंकड़ों के अनुसार २३ मार्च तक ४,००० विद्रोही सैनिकों को गिरफ्तार किया गया। विभिन्न प्रकार के ८,००० अस्त्र, ८१ बड़ी और छोटी मशीन गनें, २७ छोटी तोपें, ६ अन्य प्रकार की तोपें तथा १० लाख कारतूस बरामद किए गए।

नवचीन समाचार समिति द्वारा प्रसारित केंग की घोषणा में कहा गया है कि तिब्बती सरकार, स्थानीय सेना तथा विद्रोही तत्वों ने जिनको कि विदेशी "साम्राज्यवादियों तथा प्रगतिगामियों" की सहायता प्राप्त थी। दलाई-लामा की इच्छा के विरुद्ध चीन-विरोधी विद्रोह प्रारम्भ किया। ल्हासा में मुख्य आक्रमण को कुचलने के बाद चीनी फौजें दूर-दूर स्थानों में विद्रोहियों का सफाया कर रही हैं।

बम्बई में श्री नेहरू का भाषण

बम्बई में प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने पवई में भारतीय टैकनोलोजी संस्था की आधारशिला रखने के बाद भाषण देते हुए कहा कि हमने जिस नए भारत की कल्पना की थी, उसको प्राप्त करना 'निकट भविष्य' में संभव है।

उन्होंने कहा कि लाखों भारतीय हमारे स्वप्न के नए भारत के निर्माण के लिए जानबूझकर और अनजाने में काम कर रहे हैं। हमने उसके स्वप्न देखें हैं और मैं यह कहने का साहस कर रहा हूं कि अब वह हमारी पहुंच के अंदर आ गया मालूम पड़ता है।

श्री नेहरू ने अपने भाषण में इस संस्था की स्थापना में सहायता के लिए 'यूनेस्को' ओर रूस को धन्यवाद दिया और कहा कि यह वास्तव में एक 'अंतर्राष्ट्रीय प्रयास' है। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की भावना पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि रूस ने विज्ञान और टैकनोलोजी के क्षेत्र में महान् प्रगति की है और उसके सहयोग का न सिर्फ स्वागत ही होना चाहिए, बल्कि कई कारणों से उत्सुकता के साथ उसकी प्रतीक्षा की जानी चाहिए। श्री नेहरू ने रूसी सहयोग को लाभप्रद बताते हुए कहा कि मैं और मेरी सरकार विशेषतया से उनके आभारी हैं।

उन्होंने कहा कि भारत तभी तेजी के साथ प्रगति कर सकता है, जब उसके लोग टैकनिकल ज्ञान प्राप्त कर लें और ऐसी मशीन तैयार कर सकें जिनकी देश को आवश्यकता है।

इस वर्ष ७ करोड़ टन अनाज पैदा होगा

सरकारी क्षेत्रों के प्रारम्भिक अनुमान के अनुसार इस वर्ष (१९५८-५९) देश में ७ करोड़ टन अनाज पैदा होगा। इतना अधिक अनाज आज तक देश में कभी पैदा नहीं हुआ। इससे पहले का उच्चतम रिकॉर्ड १९५६-५७ का है, जो ६ करोड़ ८० लाख टन का है।

रवी आंदोलन की सफलता के कारण और खरीफ की अच्छी फसल होने के कारण इतना अधिक अनाज पैदा होना सम्भव हो सका।

जिन नौ राज्यों में गत सितम्बर में रवी आंदोलन किया गया था, उनमें उस आंदोलन के कारण उत्पादन में कम-से-कम २० प्रतिशत वृद्धि हुई है।

असम के बजट में ७४ लाख की बचत

असम के सन् १९५९-६० के बजट में ७६,६६,००० रुपये की बचत दिखाई गई है।

राजस्व में वैसे तो कुल बचत ३,४१,००००० रुपए की है, लेकिन पहले से चले आरहे २,६६,००,००० रुपए के घाटे की पूर्ति के बाद बचत ७४,६६,००० रुपए रह जाती है।

इस वर्ष कोई नया कर नहीं लगाया गया है। आय का अनुमान ३३.९५ करोड़ और व्यय का अनुमान ३०.५४ करोड़ लगाया गया है।

काश्मीर में पर्मिट प्रणाली खत्म

काश्मीर के प्रधान मंत्री वख्शी गुलाम मुहम्मद ने जम्मू में कहा कि जम्मू और काश्मीर में प्रवेश और राज्य से निकासी के लिए जारी परमिट-प्रणाली भारतीय नागरिकों के लिए १ अप्रैल से समाप्त कर दी जाएगी।

विदेशियों के लिए राज्य में प्रवेश और राज्य से निकासी अब भी प्रवेशपत्रों और यात्रापत्रकों के जरिए ही होगी, जिस प्रकार वह देश के दूसरे भागों में होती है।

काका कालेलकर को महात्मा गांधी पुरस्कार

राज्य सभा के सदस्य श्री काका साहब कालेलकर इस वर्ष महात्मा गांधी पुरस्कार से संमानित किये गये हैं। १६०१ रुपये का यह

पुरस्कार वर्धा की राष्ट्र भाषा प्रचार समिति द्वारा प्रतिवर्ष हिन्दीतरभाषी क्षेत्र के उस विद्वान् को दिया जाता है, जिसकी राष्ट्र भाषा हिन्दी के साहित्य में कुछ उल्लेखनीय सेवायें हों।

सम्मानित विद्वान् को प्रत्यक्ष पुरस्कार अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर दिया जाएगा, जो इस वर्ष आगामी ९-१० मई को नई दिल्ली में होगा। इस सम्मेलन की अध्यक्षता लोकसभा के अध्यक्ष श्री अनंतशयनम् आयंगार करेंगे।

देश में इस वर्ष ३॥ हजार नए डाकखाने खुलेंगे

परिवहन एवं संचार मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार १९५८-५९ के वित्तीय वर्ष के अन्त तक देश में ३,४३८ नए डाकघर खुल चुकेंगे, जिनमें से १,९४७ इस वर्ष ३१ जनवरी तक खोले गए। गत वर्ष ३१ मार्च को ६१,८८६ डाकघर काम कर रहे थे।

३१ मार्च १९५८ को डाक-तार विभाग में काम करनेवाले व्यक्तियों की संख्या ३,१७,००० थी जो ३१ मार्च १९५९ को ३,३३,००० हो जाने का अनुमान है। विभाग को आशा है कि वह इस वर्ष में ३५० करोड़ पत्रादि, ३४० लाख तार और २५० लाख ट्रंक टेलीफोन इधर से उधर पहुंचाएगा।

श्री कालावेंकटराव का देहावसान

आंध्र प्रदेश के राजस्व मंत्री श्री कालावेंकट राव का २८ मार्च को हैदराबाद में हृदय गति रुक जाने से देहांत हो गया। वह ५८ वर्ष के थे।

श्री राव आंध्र के प्रमुख कांग्रेसी नेताओं में से थे। वह १९२१ से राष्ट्रीय संग्राम के योद्धा रहे। सन् १९४९ से १९५१ तक वह कांग्रेस के महासचिव रहे। वह सन् १९४७ से १९४९ तक मद्रास में राजस्व मंत्री रहे और १९५१ से १९५२ तक स्वास्थ्य मंत्री रहे। मार्च १९५५ से वह आंध्र राज्य के योजना और उद्योग मंत्री थे।

वह मधुमेह के रोगी और इन्फ्लूएंजा से पीड़ित थे।

संशोधन

मध्यप्रदेश संदेश दिनांक २१ मार्च, १९५९ के पृष्ठ २७ पर प्रकाशित श्री एक्जीक्यूटिव इंजीनियर, पी.डब्ल्यू.डी. भवन तथा पथ की विज्ञप्ति में आयटम नं. १ मेहदा के कालम नं. ७ में हैसियत की रकम २५०० रु. के बजाय २५००० रुपया समझा जाय व हस्ताक्षर के स्थान पर अ. एम. कन्हारे के बजाय ए. एम. कन्हारे समझा जाय।

व्यवस्थापक

पंचायत पर्व का महत्व

(पृष्ठ ५ का शेष)

वसूली के अन्तर्गत हुई तथा लोकोपयोगी कार्यों के लिए ५,७७,३२१ रुपये जमा हुए। इस बार अल्प बचत योजना में १,६९,३२१ रुपये की निधि एकत्र की गई। रचनात्मक कार्यों के क्रम में ३९ हजार शोषक गड्ढे और लगभग ४८ हजार खाद के गड्ढे खोदे गये। २८ हजार लोगों के लिए शौच कूप बनाये गये। ८ हजार कुओं और १ हजार से ऊपर तालाबों की मरम्मत हुई तथा ३ हजार मील लंबी सड़कों की मरम्मत की गई। इसके अलावा १,१३५ मील लंबी नई सड़कें बनीं। ३७,००० से भी अधिक सुभाषित गांवों में लिखे गये। पंचायत-भवन, शाला-भवन, गांधी चबूतरा, बालोद्यान आदि जैसे सार्वजनिक स्थानों के निर्माण की दिशा में भी बहुत अधिक कार्य हुआ है। स्वच्छ गृह-स्पर्धा में २ लाख १९ हजार लोगों ने, हस्तकला प्रदर्शनी में लगभग ७९ हजार महिलाओं ने और लोगों में खेलकूद प्रतियोगिता में २,२६ हजार से अधिक ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इन पांच पंचायत पर्वों ने यह सिद्ध कर दिया है कि वर्ष प्रतिवर्ष ग्राम-पंचायतों की रचनात्मक वृत्ति जाग्रत हो रही है और उदासीन ग्राम-पंचायतों की संख्या में उत्तरोत्तर कमी होती जा रही है। कई छोटे-छोटे गांवों की तरक्की देखकर तो विश्वास होता है कि अवसर और साधन दिये जाने पर प्रदेश की समस्त ग्राम पंचायतें देश की समृद्धि में भाग लेंगी। पंचायत पर्व ग्रामवासियों में कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व की भावना जगाने का सफल प्रयास है।

मध्यभारत माध्यमिक शिक्षा
भोपाल नगर के विद्यार्थियों को सू

संचालक, लोक शिक्षण, मध्यप्रदेश
करते हैं कि भोपाल नगर के जो परीक्षार्थी
के कारण मध्यभारत माध्यमिक शिक्षा
मध्यभारत पाठ्यक्रम एवं अजमेर बोर्ड पा
के परीक्षा केन्द्रों में उपस्थित नहीं हो सके,
सूचित किया जाता है कि उनकी परीक्षा सम्ब
विषयों में बाद की किसी तिथि को ली जा
जिसकी सूचना कुछ समय पश्चात् दी जा
उक्त परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे अपने
अधीक्षकों को इस संबंध में लिखित सूच
दें। उसमें परीक्षार्थियों को अपने रोल न
और जिन प्रश्न-पत्रों में वे उपद्रव के कारण
नहीं सके, उनका उल्लेख होना चाहिए।
अपने केन्द्रों से भी सम्बन्ध रखना चाहिये,
उन्हें यह ज्ञात हो सके कि परीक्षा किस तिथि
होगी। फिलहाल, परीक्षायें पूर्व निर्धारित ति
के अनुसार हो रही हैं।

सफेद दाग

वह ऐसे निकल जाते हैं कि वे कहाँ थे इ
पता भी नहीं लगता। भगवान जी जैन पा
(खानदेश) की पुत्री के सफेद कोढ़ के दाग
हो गये और आपने हमको ५१) रुपये इनाम दि
ऐसे कई इनाम मिले। मू० ६) विवरण
मुफ्त मँगावें। नक्कालों से सावधान रहें।
बी. आर. बोरकर, आयुर्वेद भवन (२५)
मगरूलपीर, जि. अकोला (विदर्भ)।

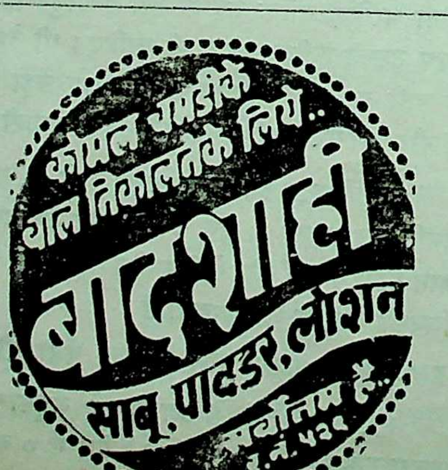

सुवासित, बादशाही बालसफा पाउडर
इस्तेमाल से फालतू बाल भली भाँति बिना
कठिनाई के निकल जाते हैं।

आधुनिक ढंग से दुर्गन्ध निकाल कर
से प्रभावित किये हुए बादशाही पाउडर
इस्तेमाल कर अपनी मलायम चमड़ी को
क्षित रखें।

सी. सी. महाजन,
एण्ड कम्पनी, बम्बई—२

बुन्देलखंडी लोकगीत

(पृष्ठ ६ का शेष)

के लोक-गीत अधिक स्फूर्तिदायक तथा आनन्ददायक माने जाते हैं। खास दीवाली के दिन वहाँ के ग्वाले उछल-कूदकर सहर्ष एक-दूसरे के घर जाते हैं और चारों तरफ दीपों की कतार सजा देते हैं। मिली-जुली आवाज में अनेक कंठों से लोक-गीत सुनते ही बनता है—

एक 'दिवारी' सुनिये—

बिन्द्रावन की कुंज-गलिन में गई टेर !
हरे कन्हैया नन्द के,
कऊं गैयां लेजा फेर।
जेठ दिवारी होत ती,
जेठई पुजवती गाय,
गये तो कन्हैया नन्द के,
कऊं कातक ले गये फेर।

कृष्ण के संबंध में कहे गये कारुणिक ताने-बाने उक्त लोक-गीत में समन्वित हैं। झुंड बनाकर तालाब के किनारे जब गोपियाँ प्रातःकाल स्नानार्थ जाती हैं, तो खाट पर पड़े हुए व्यक्तियों की भावुकता हिलोरें मारने लगती है। वे सोचने लगते हैं कि क्या सचमुच गोपियों ने कृष्ण के लिए इतना बड़ा त्याग किया था? अपने वचनों के आगे वास्तव में वे लोक-लाज और मर्यादा का सीमोल्लंघन कर देना अनुचित नहीं समझती थीं?

उन्हें जब विश्वास नहीं होता, तो गोपियाँ अनेक प्रकार से आश्वासन देती हैं:—

आ जाऊंगी बड़े भोर दही लेके,
आ जाऊंगी बड़े भोर।
ने मानो मटकी धर राखो,
सबेरे बिरज को मोल !
ने मानो कुड़री धर राखो,
मुतियां जड़ें हैं किडोर।
आ जाऊंगी बड़े भोर !
ने मानो चुनरी धर राखो,
लिखे हैं पपीरा और मोर।
ने मानो गहनों धर राखो,
बाजुबन्द हमेल......।
आ जाऊंगी बड़े भोर !
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण-छवि,
छलिया जुगलकिशोर !
आ जाऊंगी बड़े भोर, दही ले के।...

अक्सर गोपियाँ कृष्ण को धोखा देकर चली जाती थीं। आज उन्होंने सबको घेर लिया और छेड़खानी शुरू कर दी ! गोपियाँ विश्वास दिलाने लगीं कि वे सवेरे दही लेकर जायेंगी। विश्वास न हो तो मटकी, कुड़री या जेवर अपने पास रख लें।

प्रवृत्तिमूलक लोकगीत

इन लोकगीतों में यहाँ की संस्कृति की स्पष्ट छाप है ! जीवन के हर मोड़ पर एक नयी-चेतना का आभास वहाँ के लोक-गीतों में आँका जा सकता है। उच्च शिक्षा-प्राप्त व्यक्ति भी तद्भावनाओं से दूर नहीं हो पाता।

एक ग्रामीण पढ़-लिख कर शहर से वापस लौटता है। उसके कटु अनुभव सुनिये—

दद्दा मैं ने सहरैं जैंहो
जेखों देखो ओहि जानवर सो
हेरन तौ हमतखों
हमें जानवर समझन तौ के जाने
खुदई अपना खो ?
धरती निगत सरग खों देखत,
बुकरा-से मिमयावे
सूदें कोउ बोलत नैयां
का समझाऊं तुमखों !
अब तो अपने घरई बैठकें
गम्म मनई मन खैंहों !
दद्दा मैं ने सहरैं जैं हों !

युवक कहता है, "दद्दा ! अब मैं शहर कभी नहीं जाऊंगा। वहाँ का हर-आदमी मुझे पशु-तुल्य समझता है। पता नहीं, वे स्वयं जानवर हैं अथवा मैं ! चलते तो सब धरती पर हैं, लेकिन उनकी दृष्टि सदैव आकाश की तरफ रहती है। और-तो-और उनकी बकरे जैसी, बोली सुनकर मैं भ्रम में पड़ जाता हूं? अब, मैं गम खा लूंगा पर, शहर कदापि नहीं जाऊंगा।"

उक्त लोक-गीतों में बुन्देलखंड की आत्मा बोलने-सी लगती है ! सीधे-सादे शब्दों में जैसे विचार इन लोक-गीतों में भरे हुए हैं, वे प्राचीन भारतीय संस्कृति के परिचायक हैं।

कवि से

स्वप्न लोक के सरगम में है सार कहाँ ?
ओ मेरे कवि ! गीत आज माटी के गा ।

चाहे जितना आकर्षक हो इन्द्रधनुष,
पर, धरती से उसका कैसा नाता है ?
वह शोभा है नभ की, धरती की छलना,
भोले ! देख उसे तू व्यर्थ लुभाता है ।

नभ तुझ से है दूर, पास धरती कितनी
वह तेरी जननी है, उससे नेह लगा ।

शून्य कल्पना में तू उड़ना छोड़ जरा,
जन-जन की आँखों में छिपी व्यथा को पढ़ ।
माटी का कण-कण तुझसे कुछ कहता है,
उसकी सुन, मानवता की अब मूरत गढ़

त्रस्त मनुज को आशा का तू संबल दे,
अंधकार में भी जीवन की ज्योति जगा ।

वर्ग-भेद की सीमा में जो बन्दी हैं,
उन्हें मुक्त करना होगा तुझको पहले,
धरती पर समता का रवि लाना होगा,
युग के संग बढ़ना होगा तुझको पहले ।

हम हैं एक, हमारा धर्म मनुजता है,
दुनियांवालों को तू यह संदेश सुना ।

कलम उठे तेरी, बढ़ चले थका मानव,
धूल-धूसरित हों पथ की सब बाधाएँ ।
स्नेह-सिन्धु जन-जन के मन में लहराये,
बढ़ते चरणों की संगिनी हों आशायें,

प्रेम-विरह के गीतों का युग नहीं रहा
निर्माणों के स्वर में जीवन-गीत सुना ।

—श्री विमलकुमार पाराशर

शासन की गतिविधि

मध्यप्रदेश सर्व सामान्य विक्रय कर अधिनियम १ अप्रैल से प्रभावशील

मध्य प्रदेश सर्व सामान्य विक्रय-कर अधिनियम १ अप्रैल १९५९ से प्रभावशील हो गया। इस अधिनियम के प्रभावशील होने से, सर्व वर्तमान क्षेत्रीय विक्रय-कर अधिनियम रद्द हो जावेंगे। परन्तु इस अधिनियम के आरम्भ होने के पूर्व जो विक्रय हुआ है, उस पर, रद्द किये गये अधिनियमों के अन्तर्गत प्रचलित दरों के अनुसार ही कर लगेगा।

कर-प्रणाली

इस अधिनियम के अन्तर्गत, जो विक्रय-कर लग रहा है, वह मुख्यतः विक्रय की प्रथम स्थिति का एक स्थानीय विक्रय-कर है। कुछ प्रकार की वस्तुओं जैसे घोषित माल और अधिनियम की अनुसूची ३ में वर्णित माल पर, कर, उनके अन्तिम विक्रय-कर पर लगेगा। इस अधिनियम के अन्तर्गत जारी की जा रही कर-प्रणाली अधिकतर मध्यभारत विक्रय कर अधिनियम की कर-प्रणाली के समान है। विक्रय-कर के अतिरिक्त इस अधिनियम के अन्तर्गत "क्रय-कर" भी लगाने की व्यवस्था है। अनुसूची ३ में वर्णित माल के छोटे व्यापारियों की रक्षा करने के उद्देश्य से विक्रय-कर के बदले लाइसेन्स-शुल्क लेने की व्यवस्था की गई है। इस अधिनियम में यह भी व्यवस्था है कि विक्रय के लिये वस्तुओं के निर्माण में जो कच्चा माल आवश्यक है, उस समस्त माल पर केवल एक प्रतिशत कर देय होगा, बशर्ते कि उन वस्तुओं का उल्लेख खरीददार-व्यापारी के पंजीयन में हो। इस पंजीयन के लिये आवश्यक आवेदन किया जाना चाहिये।

कर की दरें

अनुसूची १ में वर्णित कर-मुक्त वस्तुओं को छोड़कर विक्रय-कर की सामान्य-दर ४ प्रतिशत होगी।

कर-दायित्व

इस अधिनियम के अन्तर्गत उन सब व्यापारियों को कर देना पड़ेगा, जिनकी कुल विक्रय-राशि निम्नलिखित सीमाओं से अधिक हो:—

	रुपये
१. पान के अतिरिक्त अन्य माल के आयातकर्ता	५०००
२. पके पकाये खाद्य-पदार्थ के अतिरिक्त अन्य माल के निर्माता	५०००
३. पंजीयित सहकारी समितियां जो केवल उनके सदस्यों द्वारा उत्पादित अथवा निर्मित माल का ही व्यापार करती हों	२५,०००
४. ऊपर की किसी भी श्रेणी में न आने-वाला व्यापारी	१५,०००

पंजीयन

जिन व्यापारियों की कुल विक्रय-राशि ऊपर वर्णित सीमा से अधिक है, उन सबको अधिनियम के अन्तर्गत पंजीयन कराना आवश्यक होगा।

जिन व्यापारियों के पास निरस्त अधिनियमों के अन्तर्गत १-४-१९५९ को वैध प्रमाण-पत्र होंगे, वे सब भी अधिनियम के अन्तर्गत वैध रूप से पंजीयित माने जायेंगे और उन्हें नवीन रूप से पंजीयन नहीं करना पड़ेगा। ऐसे व्यापारियों को वित्तीय वर्ष १९६०-६१ से नवीनीकरण शुल्क देना पड़ेगा।

महाकौशल तथा विन्ध्य प्रदेश क्षेत्रों में पुनर्विक्रय के लिए खरीद की घोषणा प्रस्तुत करके जो माल खरीदा गया हो, उस पर इस अधिनियम के आरम्भ के पश्चात् किये गये प्रथम विक्रय पर कर लगेगा।

इस अधिनियम के विभिन्न नियमों को विस्तारपूर्वक समझाने के लिये एक मार्गदर्शिका प्रकाशित की जा रही है। अधिक सूचना किसी भी विक्रय-कर अधिकारी से प्राप्त की जा सकती है।

मोटर स्प्रिट तथा लुब्रीकेन्ट्स पर

१ अप्रैल से प्रभावशील

राज्य शासन ने १ अप्रैल ५९ से मोटर स्प्रिट तथा लुब्रीकेशन अधिनियम को समस्त राज्य में लागू करने का किया है।

तदनुसार बिक्रीकर, मोटर लुब्रीकेंट की प्रत्येक फुटकर बिक्री पर आयातकर्ता तथा थोक व्यापारी द्वारा या विक्रेताओं को देना पड़ेगा तथा इन तीनों के व्यापारियों को विभिन्न स्थानों पर हैसियत से अपना व्यापार जारी रखने पंजीयन कराना पड़ेगा। पंजीयन के जाने वाले प्रत्येक आवेदन के साथ ५ ट्रेजर चालान रहना चाहिये तथा इन्हें क्षेत्र के बिक्रीकर अधिकारियों को जाना चाहिये।

पुराने अधिनियम के अन्तर्गत उन के पंजीयन प्रमाण-पत्र जिनका नवकरण होचुका है, १९५९-६० वर्ष की में मान्य रहेंगे। विन्ध्य प्रदेश क्षेत्र के व्यापारी ३१ मार्च १९६० तक केवल अपने व्यापार स्थान के हेतु ही यथाविधि समझे जायंगे।

बिक्री कर की दर

नवीन अधिनियम के क्रियान्वित पेट्रोल पर ३२ नये पैसे प्रति गैलन, डिजिल आइल पर १८ नये पैसे प्रति गैलन अन्य प्रकार की मोटर स्प्रिट पर १२ प्रति गैलन तथा लुब्रीकेंटों पर ८ प्रतिशत से बिक्री कर लगेगा।

इस अधिनियम तथा नियमों के विवरण, सम्बन्धित स्थान के बिक्री कर से प्राप्त किये जा सकते हैं।

उज्जैन में औद्योगिक विस्तार

केन्द्रीय वाणिज्य और उद्योग द्वारा उज्जैन में एक औद्योगिक विस्तार आरंभ किया गया है। इस केन्द्र में "मशीन की प्रशिक्षण सुविधायें सुलभ की गई यहां छोटे पैमाने की इकाइयों से कुछ भी लेना संभव है।

इच्छुक व्यक्ति विवरण के लिये लघु उद्योग सेवा-संस्था, इंदौर से संपर्क कर सकते हैं।

जिला प्रकाशन
योजना प्रदर्शनी

खंडवा में जिला प्रकाशन कार्यालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन भाषण करते हुए श्री माखनलाल चतुर्वेदी
दाएँ:—प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए दर्शकगण

ललित कला-केन्द्र की ओर से भोपाल स्थित पॉलीटैकनिक हाल में अल्प बचत के महत्त्व पर अभिनीत
'लक्ष्मी-पूजा' नामक नाटक का एक दृश्य

Registered No J. 158
Licenced to post Without prepayment
MADHYA PRADESH SANDESH
वार्षिक मूल्य
Licence No. P.

बच्चों के
पोषण के लिए
इतने अच्छे!

दिन भर बच्चे जो शक्ति खर्च करते हैं उस की पूर्ति के लिए उन्हें ठीक प्रकार के आहार की आवश्यकता हैं।

जे. बी. मंघाराम के एनर्जी फ़ूड बिस्कुट बच्चों के लिए एक आदर्श पौष्टिक आहार के नाते मशहूर हैं। स्वास्थ्यरक्षक नियमों के आधीन एयरकंडीशन्ड फ़ैक्टरी में गेहूँ, दूध, माल्ट और ग्लुकोस में बनाए जाते हैं — और ये विटामिन से भरपूर हैं।

जे. बी. मंघाराम के
एनर्जी फ़ूड
बिस्कुट

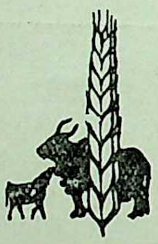

जे. बी. मंघाराम ऑण्ड कं.
ग्वालियर और हैदराबाद, भारत

JB-6

रेडियो सीलोन मिलाइए—जे. बी. मंघाराम का नया शो "जे. बी. मंघाराम का संगीत खजाना" प्रत्येक रविवार को प्रातः १० बजे से १०.४५ बजे तक सुनिये और १००) का नगद पुरस्कार लीजिये

स्थानीय एजेन्ट—
प्रीतम स्टोर्स, जयाजी चौक व पाटनकर बाजार, लश्कर

न्या. रू. भा. २ क्र. १३

९६।५९ प्रवर्त्तन प्रकरण क्र. इ. दि.

डिक्री के प्रवर्त्तित न कराने के कारण प्रगट करने के लिये सूचना

(ऑ॰ २१ रूल २२, सं. वि. सं.)

न्यायालय सिविल जजी, द्वितीय श्रेणी चांचोड़ा मध्यप्रदेश

मुकुन्दराव, बाबूराम आदि दक्षिणी ब्रा नि. गण चांचौड़ा.—हकरसी अर्जदार।

विरुद्ध

(१) महिला लक्ष्मीबाई विधवा पत्नी रघु राव नि. कुंभराज, (२) लक्ष्मणराव, (३) शिवराव, (४) बालकृष्णराव, (५) छोटू आत्मज रघुनाथराव नि. भेलसा व लक्ष्मण मजकूर, लश्कर.——हकरसी कर्जदार।

डिक्री धन आवेदन बावत दिलाये जाने दुकान।

क्योंकि हकरसी अर्जदारान ने इस न्यायालय सम्पत्ति-संवंधी न्यायालय के इ. दी. प्र क्रमांक २४४।५३ की डिक्री के प्रवर्त्तन के आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया है।

इसलिये आपको सूचित किया जाता है आप इस न्यायालय में दि. ११ अप्रैल, १९५ स्वयं या किसी अभिभाषक द्वारा या नियमा अधिकार दिये गये ऐसे व्यक्ति द्वारा, जो मामले की बातों से परिचित हो उपस्थित हे यदि आप डिक्री प्रवर्त्तित न किये जाने के कोई आपत्ति रखते हों, प्रस्तुत करें।

आज दि. १९ मार्च, १९५९ को मेरे ह और न्यायालय की मुद्रा से के अधीन जारी गया।

आर॰ जी. कानूनगो,
सिविल जज द्वितीय श्रेणी,
चाचोड़ा, म. प्र.

(१५३–१७)

प्रबंध सम्पादक—ईश्वरसिंह परिहार, संचालक, सूचना एवं प्रकाशन संचालनालय, मध्यप्रदेश
सम्पादक-अनन्त मराल शास्त्री

देवेन्द्र नारायण वाजपेयी, मुख्य सम्पादक, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय, द्वारा प्रकाशित तथा गवर्नमेंट रीजनल प्रेस, ग्वालियर द्वारा
एक प्रति का मूल्य—१३ नये पैसे

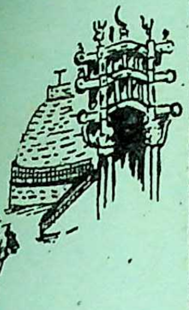

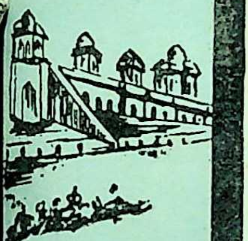

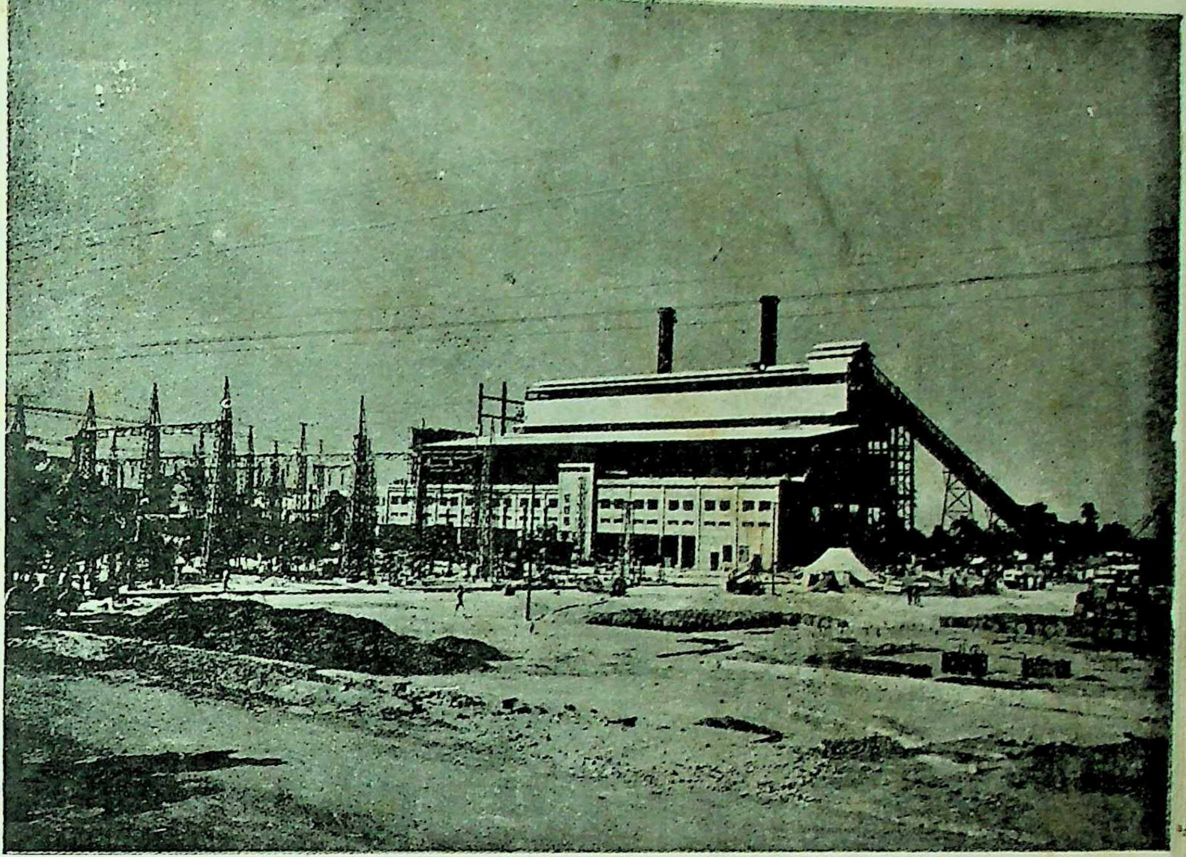

मध्यप्रदेश सन्देश

ग्वालियर. शनिवार, १८ अप्रैल, १९५९
वर्ष ३] चैत्र २१, १८८१ [अंक १९

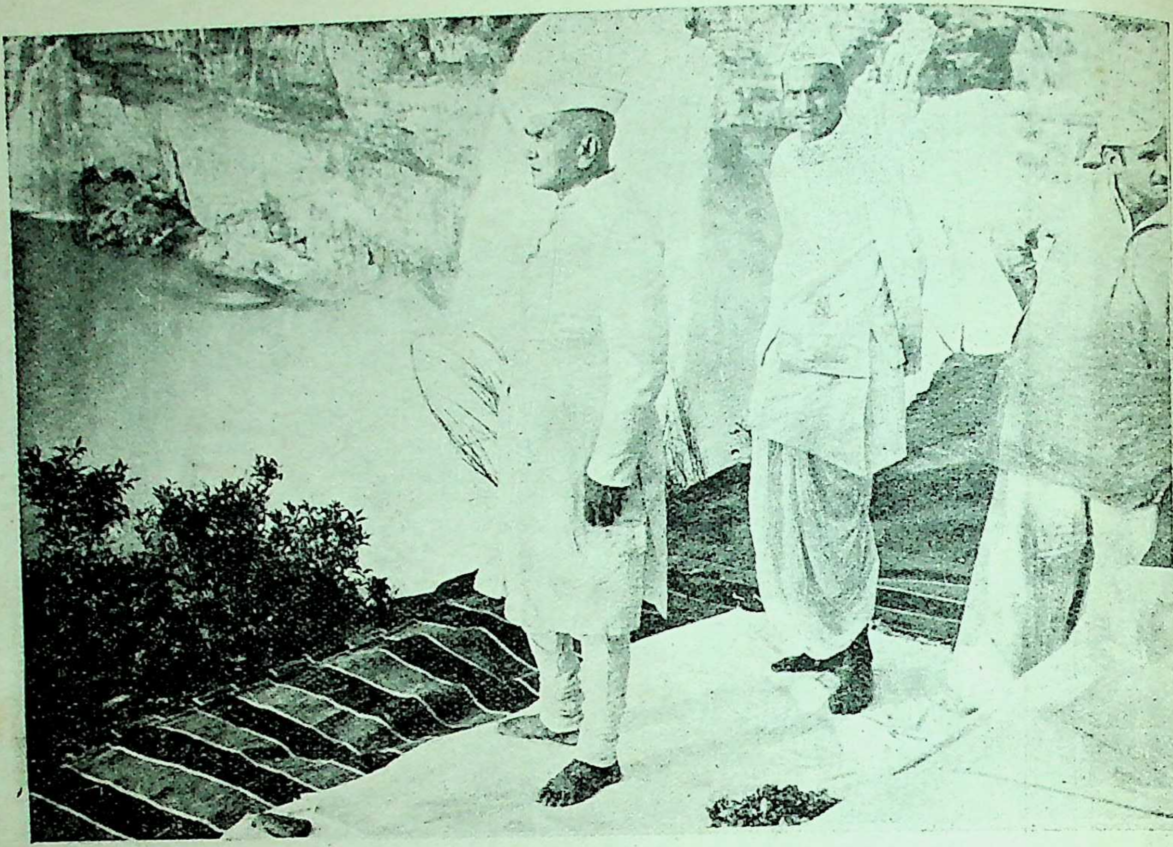

चित्रकूट जलप्रपात का अवलोकन करते हुए मुख्य मंत्री डॉ० कैलासनाथ काटजू

☆

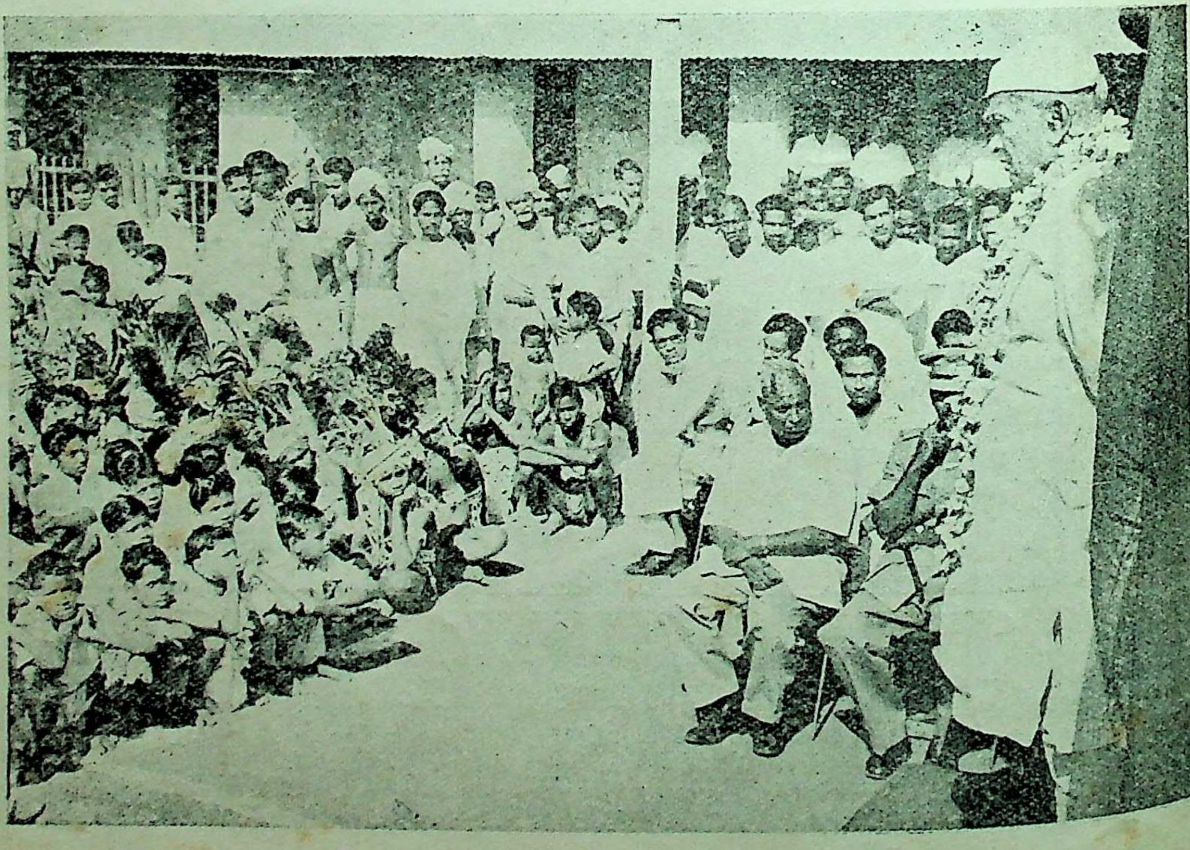

बस्तर में आदिवासियों के मध्य भाषण देते हुए राज्य के मुख्य मंत्री डॉ० काटजू

सचित्र साप्ताहिक
मध्यप्रदेश सन्देश

सहकारिता का महत्त्व

हमारे देश के नव-निर्माण के इस युग में अधिकाधिक अन्नोत्पादन और उद्योग-धन्धों का उत्तरोत्तर विकास हमारे प्रजातन्त्री शासन का मुख्य लक्ष्य है। हमारी प्रथम, द्वितीय और आगामी तीसरी पंचवर्षीय योजनाओं का कार्यक्रम इसी महान् उद्देश्य की पूर्ति करना है। हमारे देश का भविष्य कृषि की उन्नति पर ही निर्भर है। यही कारण है कि तीसरी पंचवर्षीय योजना में भी कृषि को उच्च प्राथमिकता दी जायगी। कृषि-प्रधान होने के कारण हमारे देश की अधिकांश जनता का निवास लाखों ग्रामों में है और ग्रामों के विकास तथा किसानों की आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति के हेतु व्यापक आयोजन के कार्यान्वय को आवश्यकता है। इस समय हमारे देश में द्वितीय पंचवर्षीय योजना का उत्तरार्द्ध है और इस समय तक राष्ट्र-विकास के प्रत्येक क्षेत्र में जो उन्नति एवं विकास-कार्य देखा जा रहा है, वह असाधारण सफलताओं का प्रत्यक्ष प्रमाण है, किन्तु अभी राष्ट्र-निर्माण के पूर्ण विकास की उद्देश्य पूर्ति के लिए बहुत अधिक व्यापक तथा असाधारण कार्य किया जाना शेष है। हमारे राष्ट्र-नेता प्रधान मंत्री श्री नेहरू राष्ट्रोन्नति के लिए देश में आर्थिक क्रान्ति लाना चाहते हैं। उनका विश्वास है कि राष्ट्र को पूर्ण स्वावलम्बी और शक्तिशाली बनाने के लिए आर्थिक क्रान्ति लाना अत्यावश्यक है। वह देश के ग्राम-ग्राम में इस महान् आर्थिक क्रान्ति का आह्वान करने का कार्यक्रम प्रारम्भ कर रहे हैं, जिसका लक्ष्य हमारे वास्तविक ग्राम्य जन-जीवन के आर्थिक और सामाजिक स्तर को उच्च करना है। देश की तीसरी पंचवर्षीय योजना में इसी लक्ष्य की पूर्ति के हेतु राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम बनाया जारहा है, जिस पर हमारे प्रजातंत्र का उज्ज्वल भविष्य निर्भर रहेगा।

हाल ही में श्री नेहरू ने इलाहाबाद के निकट एक स्थान पर अपने भाषण में ग्रामीणों से कहा है कि उनका लक्ष्य देश को उन्नत करना तथा ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामोद्योगों तथा सहकारी समितितियों के द्वारा आर्थिक क्रान्ति लाना होना चाहिए। आपने आगे कहा कि देश के निर्माण के लिए जनता द्वारा कठोर श्रम मुख्य बात है। यदि प्रत्येक किसान अपना उत्पादन दुगुना करने का दृढ़ निश्चय करले तो जहां ग्रामीण क्षेत्र का रंग-ढंग बदल जायगा, वहां समूचे देश का भी विकास होगा।

श्री नेहरू ने ग्रामीण जनता से यह आग्रह किया कि वे ग्रामों में सहकारी समितियां स्थापित करें तथा खेतों और कारखानों में उत्पादन बढ़ाकर निर्धनता के विरुद्ध जिहाद बोल दें। नेहरूजी ने सहकारी समितियां स्थापित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि उनका संचालन किसानों द्वारा ही होना चाहिए। उनके द्वारा उन्हें अच्छे औजार, बीज तथा ऋण आदि मिल सकेगा। वे समिति के शेयर होल्डर होने के साथ अपनी भूमि के मालिक भी बने रहेंगे।

हमारे प्रधान मंत्री ने कृषि की उन्नति और ग्राम-विकास के हेतु सहकारी समितियों की स्थापना को जो प्रमुखता दी है, वह महत्त्वपूर्ण है।

ग्राम-विकास-कार्य, भारत की विकास-योजना का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य है। इसके लिए सहकारिता-प्रणाली विश्वसनीय समझी जा रही है। आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व हमारे देश में यह ग्राम्य-व्यवस्था का आधार थी। इसका महत्त्व और उपयोगिता आज भी उतनी ही है, जितनी कि अतीतकाल में थी, क्योंकि सहकारिता समाजवादी प्रणाली का मूल आधार है। यही कारण है कि आज इस बात की सर्वाधिक आवश्यकता अनुभव की जा रही है कि इसे विश्वास और आस्था के साथ आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

मध्यप्रदेश में सहकारी आन्दोलन नई वस्तु नहीं है, और उसकी अब तक की प्रगति प्रेरणाप्रद तथा उत्साहवर्द्धक रही है। राष्ट्र-निर्माण की गति में तीव्रता लाने के लिए सहकारी कृषि के विकास को व्यापक रूप से कार्यान्वित करने के हेतु सारे देश में जो महान् प्रयास किये जाने की तैयारी की जारही है, उसके लिए ग्रामों के विशाल क्षेत्र को मुख्य रूप से कार्य-क्षेत्र बनाया जानेवाला है। हमारे राज्य के मुख्य मंत्री डा० काटजू ने भी कृषि सहकारी समितियों और लघु-उद्योग-विकास समितियों की राज्य भर में स्थापना किये जाने की आवश्यकता पर बल दिया है और शासन द्वारा उनकी स्थापना किये जाने की तैयारी प्रकट की है। हमें आशा है कि राष्ट्र-निर्माग के हेतु सहकारी समितियों द्वारा ग्राम-विकास का व्यापक आयोजन जन-सहयोग से अवश्य सफल होगा।

मुखपृष्ठ का चित्र

बिलासपुर जिले में निर्मित कोरबा थरमल पावर स्टेशन, जिसकी बिजली की उत्पादन-क्षमता ९० हजार किलोवाट है।

निर्माण की दिशा में

आजकल संस्कृत के विद्वानों को आधुनिक विद्याओं का ज्ञान कम होता है। हमारे पूर्वज अगर इतने संकीर्ण तबियत के होते तो कभी इतनी तरक्की नहीं कर सकते थे। उनमें संकीर्णता बिल्कुल नहीं थी, इसीलिए वे इतने दूर-दूर के देशों तक अपनी कला और संस्कृति पहुंचा सके।

*

मैंने यह सब बातें इसलिए कहीं हैं कि संस्कृत के विद्वान् इस बात पर विचार करें कि हमारी प्रगति क्यों रुकी रही और उसका कारण दूर करें।

*

संस्कृत के अध्ययन को अधिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए और संस्कृत के विद्वानों की हैसियत में सुधार होना चाहिए।

—राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्रप्रसाद

देश में चालीस करोड़ नागरिक हैं, अगर वह कमर कस कर कठिन श्रम करने में जुट जाएं तो दरिद्रता के भागने में देर न होगी। हम चाहते हैं कि देश में कोई भी गरीब न रहे, सबको समानता के अधिकार हों। रोटी-रोजी, कपड़ा, शिक्षा, चिकित्सा, खेल आदि जीवन सम्बन्धी सब सुविधाएं सबको बराबर मिलें। लेकिन यह सब दिल्ली में कानून बनने से नहीं मिलने का। देश को लोगों को इसके लिए अपना खून-पसीना एक कर उत्पादन बढ़ाने में जुटना होगा। गरीबी को भगाने के लिए चारों तरफ से हमला बोलना है। इसके लिए काम करके बतलाने का समय है।

जाति भेद ने देश को दुर्बल बना दिया है। धर्म अलग-अलग हैं, वह रहेंगे। कोई एक दूसरे को दबाने की चेष्टा न करें। जो ऐसा करता है तो वह अधर्म करता है। भारत में कोई भी धर्मावलम्बी हो, सब समान हैं और भारत के नागरिक हैं।

—श्री जवाहरलाल नेहरू

दुनिया की कशमकश का कारण यह है कि कुछ लोग शरीर परिश्रम करते हैं और कुछ लोग शरीर-परिश्रम से बचना चाहते हैं। शरीर परिश्रम करनेवाले को आज निम्न व घृणित समझा जाता है। आज किसान अपने बच्चे को ज्ञान प्राप्ति के लिए पढ़ाने की बात नहीं करता, अपितु वह अपने बच्चे को शरीर-परिश्रम से दूर रखने के लिए उसे पढ़ाने की बात करता है। आज स्वयं शारीरिक परिश्रम करनेवालों में भी श्रम के प्रति निष्ठा नहीं है, वह तो मजबूरन श्रम करते हैं। आज सेवा का मूल्य आंका जाता है जो कि बिल्कुल गलत है। सेवा नैतिक वस्तु है और नैतिक वस्तु की कीमत भौतिक वस्तु से कभी नहीं आंकी जा सकती।

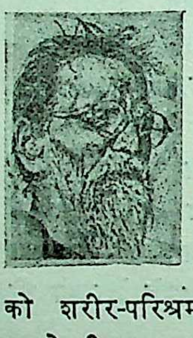

*

जबकि आज हमारे देश में शरीर श्रम की कोई प्रतिष्ठा नहीं है तो फिर देश कैसे उन्नति कर सकता है, यह चिन्ता का विषय है। आज अर्थशास्त्र में श्रम की कीमत कम है किन्तु हम शरीर परिश्रम को प्रतिष्ठा देना चाहते हैं। आज जिस श्रम में अधिक मेहनत होती है, उसे अधिक घृणित समझा जाता है जैसे मेहतर के काम को। सेवा की कीमत पैसे में कभी नहीं हो सकती; क्योंकि मील के सेकण्ड नहीं गज ही बन सकते हैं।

आज स्त्री की कीमत पुरुष के श्रम से जबकि स्त्री का पारिश्रमिक पुरुष से अधिक चाहिए और यदि ऐसा नहीं होता है तो बात है, यह पाप भी है।

*

प्राचीन वर्ण-व्यवस्था में कार्य विभाजन फिर अंग्रेजों की शिक्षा से ऐसे वर्ग के लोग जो अपनी भाषा भी नहीं बोल सकते थे। मध्यम वर्ग आज भी बढ़ता जा रहा है। यदि वर्ग के हाथ में पूरी सत्ता आ गई तो फिर उससे छीनना बड़ा मुश्किल हो जाएगा। अतः शरीर-परिश्रम की स्थापना होनी चाहि शरीर-परिश्रम का महत्व तभी बढ़ेगा, जब व्यक्ति अपने हाथ से सारा कार्य करेगा और को महत्व देगा।

—संत विनोबा

इतिहास हमें बताता है कि अनेकता, ही हम गुलाम हुए और गरीबी भी आई। मजदूरों को परिश्रम से काम कर और अधिका उत्पादन कर देश की उन्नति में योग देना चाहि अधिक उत्पादन का अर्थ है अधिक निर्यात अधिक निर्यात से देश को अधिक विदेशी मिलती है, जिसकी हमें बहुत आवश्यकता है। अधिक उत्पादन से देश की ही नहीं मजदूरों भी खुशहाली होगी।

—श्रीमती इंदिरा

इस अंक में

क्र. शीर्षक एवं लेखक पृष्ठ-सं
१. मालव के कुछ महिला-रत्न . .
—श्री सूर्यनारायण व्यास.
२. लेखन-क्षण (कविता) . .
—श्री वीरेन्द्र मिश्र.
३. इन्सान और. . . . (कविता)
—श्री जगदीश सकसेना.
४. मुल्ला दो-प्याजा . .
—श्री जहूरबख्श.
५. दीप जले, दीप बुझे (कहानी)
—श्री सुखवीर.
६. लोकतंत्र के आधार
—श्री गगनबिहारीलाल मेहता.
७. लाख उद्योग का विकास
८. ग्राम सेविकाओं को शिक्षण . .

मालव के कुछ महिला-रत्न

—श्री सूर्यनारायण व्यास

मालव प्रदेश मानव-रत्नों की अतीतकाल से आकर-भूमि रहा है, जहां प्रद्योत, अशोक, अग्निमित्र, विक्रम, भर्तृहरि, भोज, कालिदास, शूद्रक, वराहमिहिर, जैसी विश्वविदित विभूतियां हुई हैं, और जिसकी साहित्य-सुरभि से अपने महान् राष्ट्र का ही नहीं, विश्व का वातावरण भी सरस, सुगन्धित बना हुआ है, वहां की अनेक महिलाएँ भी महिमामयी हुई हैं। उनका यदि विवरण एकत्रित किया जावे, तो एक स्वतंत्र इतिहास बन सकता है !

वैदिक उपनिषद्काल और पौराणिक युग की कथा-गाथाओं को छोड़कर इतिवृत्त में विश्रुत वनिताओं का ही विचार करें, तो विविध क्षेत्रों में विशिष्ट कार्य करनेवाली विभिन्न देवियों का वृत्त भी विस्तृत विदित होता है।

वासवदत्ता

सम्राट् चंडप्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता का नाम कौन ऐसा सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत व्यक्ति होगा, जो नहीं जानता हो ? ई. स. पूर्व ३२० वर्ष के लगभग प्रद्योत अवंती में भारत का तेजस्वी सम्राट् हो गया है। वासवदत्ता उसी की कीर्तिशालिनी कन्या थी, उसका विवाह वत्स के राजकुमार उदयन से करने का विचार था, परंतु वत्स और अवंती नरेश के सम्बन्ध ठीक नहीं थे। उदयन स्वयं बड़ा कलाप्रवीण, वीणा-वादन में अप्रतिम कुमार था, वह वीणा की स्वर-लहरी से जंगली हाथियों को मुग्ध कर पकड़ लेता था, इसलिए प्रद्योत ने काठ का हाथी बनवाकर जंगल में वनराजि के अंदर रखवा दिया था, और उसके पेट की पोल में सैनिक छुपाकर बैठा दिए थे, ताकि उदयन हाथी के पास पहुँचे, तब उसे पकड़कर अवंती में लिवा लावे। यह षड्यंत्र सफल हुआ और हाथी के पेट में उदयन प्रद्योत का बंदी बन अवंती ले आया गया, यहां राजसी नजरबंदी में रखकर, उसे प्रद्योत ने अपनी पुत्री को वीणा सिखला देने के लिए नियुक्त किया। उदयन ने बड़ी तत्परता के साथ वासवदत्ता को वीणा सिखलाना आरम्भ किया और साथ ही प्रणय-पाठ भी पढ़ाया। यदा-कदा वे हाथी पर बैठकर सैर को भी जाया करते थे, इसी प्रकार एक रोज राजकुमारी वासवदत्ता को लेकर वह अपने नगर की ओर पलायन कर गया। वासवदत्ता के अपहरण की कल्पना तो प्रद्योत कर ही सकता था, और उसे दोनों का संबंध अभीष्ट भी था ही, किंतु प्रणय-प्रपंच के लिए जो मधुर-षड्यंत्र रचा गया था, वह इतिहास और साहित्य के लिए लोकप्रिय विषय बन गया था। सदियों तक यह कथा जन-मानस पर अधिकार जमाए रही। ई. स. पूर्व का महान् नाटककार भासजैसों की प्रतिभा ने इस सरस-प्रणय और अपहरण कथा को लेकर अप्रतिम नाटक का निर्माण किया है और यह कथा कालिदास के काल तक भी अवंती के चौराहों पर बैठकर ग्राम-वृद्धजन बड़ी रुचि के साथ कहा करते थे। वासवदत्ता केवल एक राजकुमारी ही रही होती, तो शायद कोई प्रतिभा-पुत्र उसकी कथा में इतना आकर्षण अनुभव न करते, किंतु वह स्वयं विदुषी थी और कला प्रवीण भी थी, उसकी मंजुघोषावती-वीणा की स्वर-लहरी-सदियों बीत जाने पर भी सहृदयों के मानस में गुंजरित रहती आई है। भास ने अपनी कला के माध्यम से उसे अपने साहित्य में अमरता प्रदान करदी है। वासवदत्ता संस्कृत-साहित्य की सुंदरतम कथा-वस्तु बन गई है। आज भी उसमें मुग्ध बना देने की मोहिनी बनी हुई है। ऐसा कौन रसिक होगा, जो उसे अपहरण कर अपने हृदय-सिंहासन पर बिठलाने को उत्सुक न होगा, उदयन ने तो उसे एकबार ही अपहरण कर अपनी हृदय-सम्राज्ञी बना लिया, परंतु उसकी मनोहारी गाथा अब तक लोगों का हृदय हर लेने की क्षमता रखती आ रही है।

वसन्तसेना

अवन्ती की यह वेश्या इतिहास और साहित्य में अपना एक स्वतंत्र स्थान रखती आ रही है, जिस प्रकार मगध की एक वेश्या—अम्बपाली वीत-राग महात्मा बुद्ध के समय बुद्ध-साहित्य की विशिष्ट विभूति बनकर नगर-वधू से नारी-रत्नों में अलंकारभूत बन गई है, उसी प्रकार वसंतसेना साहित्य को सुरभित बनाए हुए मालव-महिलाओं की रत्न हो गई है।

वसंतसेना यद्यपि वेश्या थी, पर उसका चरित्र बहुत आदर्श था, वह परम सुंदरी और अवंती की शोभाशाली नारी थी, उसके चरित्र पर हाथ डालने के प्रयास में अवंती का राज्य—श्यालक-'शकार', जनता की निगाह में गिर गया था, और अत्यंत कलाप्रेमी प्रतिष्ठित ब्राह्मण चारुदत्त के घर जाकर वसतसेना ने आश्रय ग्रहण किया था। चारुदत्त संपत्ति-हीन हो गया था, परंतु वह अवंती का एक श्रेष्ठ नागरिक समझा जाता था। शकार के षड्यंत्र का शिकार बन वह फांसी पर लटकाने तक पहुंचाया गया था, किंतु अवंती में अराजकता फैल गई। राजा का आसन उलट दिया गया और चारुदत्त चिरजीवी बन गया। महान् नाटककार शूद्रक ने चारुदत्त की इस रुचिर-कथा को अभिनय का विषय बना, अवंती की रमणी-रत्न वसंतसेना के उज्ज्वल चरित्र को साहित्य में महत्वपूर्ण स्थायी स्थान प्रदान कर दिया है। एक वारवनिता कैसी विदुषी, कुशल, कलामयी, चरित्र और आदर्श में उदाहरण-योग्य हो सकती है, यह शूद्रक ने जिस सफलता से अंकित किया है, वह शूद्रक की एकमात्र अपूर्व कृति से ही विदित हो सकता है।

वेश्याएँ इस देश में अगणित हुई हैं, पर साहित्य में सम्मान-भाजन बनने का सौभाग्य केवल अवंती की वसंतसेना और मगध की अम्बापाली को ही सुलभ हुआ है ।

चारुदत्त और वसंतसेना रूप-लावण्य के कारण नहीं, आदर्श और दाक्षिण्य के कारण साहित्य के साथ जन-मानस पर अद्यावधि सजीव बने हुए हैं। शूद्रक की एक हीं कृति उपलब्ध है, किन्तु वह अपनी एकमात्र कृति से साहित्य-जगत में शिरोमणि बना हुआ है । उसका श्रेय वसंतसेना जैसी सुदक्षिणा नारी को ही दिया जा सकता है, जिसे पात्र बनाकर कवि ने अपने को और वसंतसेना के प्रणयी—चारुदत्त को चिरजीवी कर दिया ।

भद्रा कपिलानी

बौद्ध धर्म के परमप्रिय विद्वान् शिष्य महाकात्यायन की पत्नी भद्रा कपिलानी उज्जैन की विदुषी नारी थी, प्रद्योत सम्राट् के राजपुरोहित महाकात्यायन उज्जैन का ब्राह्मण विद्वान् था, प्रद्योत की प्रेरणा से वह गौतम बुद्ध को उज्जैन आमंत्रित करने भेजा गया था, किंतु वहां बुद्ध-उपदेशों से प्रभावित हो उसने प्रवृज्या ग्रहण करली । उज्जैन लौटकर यहां एक विहार बनवाया और १,५०० विद्यार्थियों को वह शिक्षित करने लगा । इस विरक्ति से प्रभावित होकर महाकात्यायन की पत्नी भद्रा कपिलानी ने भी दीक्षा ग्रहण कर भिक्षुणी के रूप में महिला-समाज में धर्म-प्रचार और शिक्षा देने का कार्य करना आरंभ कर दिया था। आज से ढाई हजार साल पहले इस महिला-रत्न ने अवंती-जनपद की नारियों में ज्ञानदान का कार्य बड़ी लगन और निष्ठा से किया है ।

देवी

इतिहास में प्रसिद्ध सम्राट् अशोक ने अवंती में रहकर राज्यपाल पद का वर्षों तक उपभोग किया और अनेक जनोपयोगी कार्य कर लोकप्रियता और यश सम्पादित किया था। उसी समय विदिशा के एक श्रेष्ठी की पुत्री देवी से प्रणय-सूत्र में बंधकर उसे अपनी पत्नी बना लिया था। इसी देवी से अवंती में रहते हुए, अशोक को एक पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा उत्पन्न हुई थी । आगे चलकर इन दोनों संतानों ने प्रवृजित हो लंका में धर्म-प्रचार के लिए बोधिवृक्ष की शाखा लेकर प्रवास किया था। इसी देवी की स्मृति में अशोक ने सांची का भव्य स्तूप निर्मित करवाया था। महेन्द्र और संघमित्रा अपनी माता से मिलने के लिए सांची गए थे। बौद्ध-युग का यह अमर-स्तूप, शिल्प-शृंगार का अत्यंत मनोहर और सुंदर उदाहरण बना हुआ है । इसके निर्माण का कारण अशोक की प्रिय देवी ही थीं, यह बौद्ध-साहित्य से प्रमाणित है, परंतु इस भाग्यवती-देवी का अन्य परिचय-चरित्र एक प्रकार से अज्ञात बना हुआ है । सांची की स्तूप-निर्मात्री विदिशा की श्रेष्ठिसुता—देवी, केवल अपनी दो दिव्य संतानों के साथ हीं परिचित बनी हुई हैं । उसका यश, सांची के स्तूप के रूप में इतिहास और बौद्ध-जगत में अमर स्मृति का विषय बना हुआ है ।

लेखन-क्षण

जब तुम कुछ बहुत नये होते हो
इस क्षण से चले गये होते हो
सर्जन के वे सब क्षण पूजनीय।

इस क्षण तुम सम्मुख हो साधारण
तुलसी हो, किन्तु नहीं रामायण
जब तुम सागर के कोलाहल में
खेते हो नाव घिरे बादल में
मंथन के वे सब क्षण पूजनीय।

अधगाए गीत तुम्हें क्या सूझी
पूजी जो मूर्ति, रही अधपूजी
अश्रु किसी सावन के घन से थे
थे दो ही फूल, मगर मन से थे
अर्चन के वे सब क्षण पूजनीय।

इस क्षण वीरान भी रहो तो क्या
मुझको पाषाण भी रहो तो क्या
निश्छल लेखन-निमग्न होते जब
सबकी पीड़ाओं में रोते जब।
धड़कन के वे सब क्षण पूजनीय।

—श्री वीरेन्द्र मिश्र

गोपाल माता

वस्तुतः यह महिला रत्न तेलप्रणालि
की एक श्रेष्ठि-कन्या थी, जब महाकात्यायन
साथियों के साथ तेल-प्रणालि नगर से
उज्जैन लौट रहे थे, तब इस श्रेष्ठि-सुता ने
सिर के सुंदर केशों को कटवाकर बेच दिया,
उससे जो आय हुई, इन आठों भिक्षुओं को
करवा दिया था। जब सम्राट् प्रद्योत ने यह
सुनी, तो प्रसन्न होकर इस श्रेष्ठि-कन्या को
पटरानी बना लिया, इससे जो राज
उत्पन्न हुआ, उसका नाम गोपाल रखा गया
जो प्रद्योत के पश्चात् उत्ताराधिकारी बना
पुत्र के नाम के कारण इस देवी का नाम '
माता' प्रसिद्ध हो गया था। वासवदत्ता
उत्पन्न हुई थीं। गोपाल माता की
महाकात्यायन पर बड़ी श्रद्धा थी, उसीने
कीय उद्यान कांचन-वन में एक बौद्ध-
बनवाया था और भिक्षु-संघ को दान कर
था। (अंगुत्तर अट्टकहा)

प्रज्ञावती

इसी समय उज्जैन की प्रसिद्ध
प्रज्ञावती भी रहती थी। बौद्ध धर्म से प्रभा
होकर वह भिक्षुणी बन गई थीं। बाद में
नाम अभय माता हो गया था। उज्जैन में
पुत्र अभय नामक था, जो आगे चलकर भि
गया था और सुप्रसिद्ध हो गया था। धर्म-प्र
ही इस माता-पुत्र ने जीवन व्यतीत किया
प्रतिष्ठा प्राप्त की थी।

ऋषिदासी

यह सन्नारी बौद्ध धर्म में जीवन्मुक्त
मानी गई है। यह भी भिक्षुणी बन गई
उज्जैन की ही रहनेवाली थी। थेरी-गाथा
से जो प्रसिद्ध ग्रंथ हैं, उसमें ऋषिदासी
४८ गाथाएं विद्यमान हैं। उनके द्वारा ध
और कर्म सिद्धांत का दार्शनिक रहस्य
होता है। परमत्थ दीपनी में उज्जैन के
सम्पन्न परिवार में इसे उत्पन्न बतलाया
वह पति परित्यक्ता होकर उज्जैन में
पास ही रहती थी। विदुषी जिनदत्ता के
दीक्षा ली थीं। यह आगे योग्य विदुषी हो
थेरी गाथा में इसने आत्म-चरित्र भी लिखा

(शेष पृष्ठ २९ पर)

साहित्य, संस्कृति, कला, ज्ञान-विज्ञान आदि का विशेषांश

इसके संपादन परामर्शदाता ~ श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द

विशेष कविता

इन्सान और ....

श्री जगदीश सकसेना

लो सुनो,
यह सत्य है इस जिंदगी का,
एक तीखा सत्य,
एक दिन
एक सज्जन चल बसे थे;
पास उनका शव पड़ा था;
रो रहे थे लोग;
एक बेटे की बहू, जो
चाय देते बड़बड़ाती थी सदा,
कह रही थी–
'हाय मेरे हाथ ही की चाय भाती थी इन्हें।'
दूर के थे एक रिश्तेदार,
यों तो रो रहे थे,
किंतु,
मन में सोचते थे—
पाँच सौ का कर्ज इनका बच गया अब।
पास ही के एक सज्जन
सो रहे थे;
शोर सुन झल्ला उठे, यों बड़बड़ाए—
मौत भी बेवक्त आई,
कँपकँपाती ठंढ में अब घाट तक जाना पड़ेगा !
एक नौकर
दूसरे से कह रहा था—
'एक धुतिया दैन कहि राखी मलिकवा,
हाय धुतिया लै गए मोरी मलिकवा।'
इस तरह था चल रहा व्यापार सारा,
किंतु, जैसे,
भिन्नता थी एक प्राणी के हृदय में,
अनमना-सा था खड़ा वह,
देखकर अनजान को भी
आज वह था भूँकता बिलकुल नहीं,
दुम हिलाना भी अचानक भूल बैठा,
मौन, गुमसुम,
वह व्यथा, समवेदना का
रूप-सा निश्छल बना,
दार्शनिक-सा,
वास्तविक सहचर,
स्वजन-सा
सोचता था,
कौन जाने, क्या ?

विशेष लेख

मुल्ला दो-प्याज़ा

—श्री जहूरबख्श

इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि अकबर के मंत्रिमंडल के नव-रत्नों में मुल्ला दो-प्याजा का एक महत्त्वपूर्ण स्थान था। वह विद्या-बुद्धि-संपन्न थे। अरबी-फारसी साहित्य में असाधारण गति रखते थे। इसीलिए, उन्नति के शिखर पर पहुँचे थे। उनका मूल नाम तो था अबुल हसन, परंतु, प्रसिद्धि पाई थी उन्होंने 'मुल्ला दो-प्याजा' जैसे अद्भुत उपनाम से। उनका जन्म तो हुआ था अरब के एक साधारण से वंश में, परंतु, जीवन बिताया था उन्होंने अकबर जैसे सम्राट् के संगी-सँगाती के रूप में, राजसी सुख भोगते और भारत के इतिहास में अपने लिए स्थान बनाते हुए।

अरब में मक्का नगर के निकट तायफ नामक एक स्थान है। वहीं उक्त मुल्लाजी का जन्म हुआ था। उनके माता-पिता न तो संपन्न थे, न दरिद्र। बस, यों समझ लीजिए कि घर के खाते-पीते थे। हाँ, सुशिक्षित अवश्य थे। इसलिए, मुल्लाजी छह वर्ष के होते-होते मकतब जाने लगे। बुद्धि के प्रखर तो थे ही, नौ वर्ष की आयु में पहुँचते-पहुंचते 'हाफिजे-कुरआन' बन बैठे। फिर भी नित्यप्रति ऐसे-ऐसे काम करते थे, जिनसे मकतब के ऊधमी और हँसोड़ बालकों में प्रथम माने जाते थे।

एक दिन मुल्ला जी तीसरे पहर मकतब में पहुँचे, तो देखते क्या हैं कि न तो सहपाठी आए हैं और न मौलवी साहब पधारे हैं। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ है। बस, उनको हँसने-हँसाने का एक साधन मिल गया। उन्होंने जल्दी-जल्दी से एक सहपाठी के बस्ते से कुरआन-शरीफ के कुछ पन्ने निकाले और मौलवी साहब के बस्ते में बाँध दिए। थोड़ी देर बाद सहपाठी आए, मौलवी साहब पधारे और पढ़ाई-लिखाई का काम प्रारंभ हुआ। अब तो उस सहपाठी ने घबराकर मौलवी साहब से शिकायत की—'जनाब, मेरे बस्ते में तो कुरआन-शरीफ के पन्ने ही नहीं हैं। खुदा जाने, किसने गायब कर दिये।'

मौलवी साहब ने बिगड़कर कहा—'जाएँगे कहाँ, होंगे यहीं किसी के बस्ते में! ढूँढ़ो-ढूँढ़ो, जल्दी करो। जिसके बस्ते में निकलेंगे, उसके मुँह पर कालिख पोती जाएगी।'

यह कहकर मौलवी साहब ने कालिख भी मँगवा ली। उनके आदेशानुसार सभी बस्ते ढूँढ़ डाले गए; परंतु, पन्ने किसी के बस्ते में होते तब तो निकलते। आखिर मुल्लाजी हाथ जोड़कर बड़ी विनम्रता से बोले—'जनाब, अभी आपका बस्ता बाकी है। वह भी देख लिया जाए। क्या हर्ज है।'

मौलवी साहब ने आपे से बाहर होकर अपना बस्ता खोल डाला। परंतु, जब उसमें पन्ने निकल आए तब वह हक्के-बक्के-से रह गए। अब तो मुल्लाजी ने मुसकराकर कहा—'जनाब, कालिख हाजिर है! अब देर करने की क्या जरूरत? बस, हुक्म दीजिए!'

मुल्लाजी की बचपन की ऐसी शरारतें उनके प्रतिभाशाली जीवन की द्योतक थीं।

खेद है कि मुल्लाजी का यह सुख छाया के समान अस्थायी प्रमाणित हुआ। अभी वह दस वर्ष के भी न होने पाए थे कि उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। फल-स्वरूप, उनके जीवन में दुःख को छोड़कर और कुछ भी शेष न रहा। इतने पर भी उनका पाला पड़ा ऐसी सौतेली माता से, जो बड़ी कर्कश-स्वभावा थी। अतएव, एक दिन उनके सीधे-सादे पिता उससे लड़-झगड़ कर निकल गए और ऐसे गायब हुए कि फिर कभी उनका कहीं पता ही न चला।

अब तो मुल्लाजी सर्वथा निराधार हो गए। जब कुछ न सूझा, तब वह भी पिता की खोज में घर से बाहर निकल पड़े और देश-विदेश में घूमते-फिरते, भीख माँगते-खाते ईरान की राजधानी तेहरान में पहुँचे। वहाँ उनकी भेंट सरदार अकबर अली से हुई। सरदार साहब ने उनमें होनहार व्यक्ति के लक्षण पाए, तो उनको अपने पास रख लिया और कुछ दिन बाद भार के पलायित मुगल-सम्राट् हुमायूँ के सेनापति अल्लाहबख्श खाँ को सौंप दिया।

कुछ समय उपरांत हुमायूँ ने ईरान के शा तहमास्प की सहायता से काबुल पर आक्र किया। वहाँ सेनापति अल्लाहबख्शखाँ तो र भूमि में काम आए और मुल्लाजी लगभग पं वर्ष की आयु में, सन् १५५६ ईस्वी में, हुमा की सेना के साथ भारत की राजधानी दिल्ली चले आए। दिल्ली में आते ही उन्होंने एक मस्जि में डेरा डाल दिया। कुछ काम-धाम तो था ही नही, इसलिए वह दिन-भर कुरआन-शरीफ पढ़ते रहते थे। धर्म के प्रति उनकी यह अभिरु देखी तो लोग उनको मुल्ला जी कहकर पुका लगे।

मुल्लाजी प्रसन्न-चित्त थे, हँसने-हँसाने व थे और कुरआन-शरीफ का पाठ बड़े ही म स्वर से करते थे। इसलिए, सहज ही लोगों प्रेम-पात्र हो गए थे और यहाँ-वहाँ उनकी रीझ-बूझ होने लगी थी। एक दिन उनको कि भोज में सम्मिलित होने का निमंत्रण मि वह उत्साह-पूर्वक भोज में सम्मिलित हुए वहाँ पुलाव की थाली देखकर प्रफुल्लित हो उन्होंने लोगों से आग्रह-पूर्वक उस भोज्य का नाम पूछा। किसी ने कहा—'खाइए तो पुलाव है।'

परंतु, मुल्लाजी इस उत्तर से संतुष्ट वाले नहीं थे, बोले—'इतना तो हम भी हैं। मगर, इस खास पुलाव का कोई नाम भी किसी ने उत्तर दिया—'है क्यों नहीं, समझ दो-प्याजा है!' तबसे मुल्लाजी को ज निमंत्रण मिलता था, वह पहले यही प्रश्न थे—'वहाँ दो-प्याजा भी मिलेगा? अगर

तो हम न जाएँगे।' बस, लोग हँसी-हँसी में उन्हें 'मुल्ला दो-प्याजा' कहकर चिढ़ाने लगे और फिर तो वह धीरे-धीरे इसी नाम से प्रसिद्ध हो गए—यहाँ तक कि इतिहास में भी।

मुल्लाजी सेनापति अल्लाहबख्शखाँ के नाते कभी-कभी अकबर के दरबार में जा पहुँचते थे। एक दिन किसी कानी तथा पोपले मुँहवाली बुढ़िया ने आकर सम्राट् अकबर से शिकायत की कि एक नवयुवक ने उसका अपमान किया है। फिर क्या था, सम्राट् की आज्ञा से उस नवयुवक को पकड़ लाने के लिए फ़ौरन कई आदमी दौड़ पड़े। कोई किसी को पकड़ लाया और कोई किसी को। परंतु, बुढ़िया ने उन सबको निर्दोष बताया। इतने में मुल्लाजी एक सुंदर नवयुवक को पकड़ लाए। उसे देखते ही बुढ़िया बोली—"यही है, यही है।" लोगों ने आश्चर्यचकित होकर मुल्लाजी से पूछा—"भला, आप इसे क्या सोचकर पकड़ लाए?" मुल्लाजी बोले—"यह हज़रत एक घर की कीचड़-भरी नाली में मुँह धो रहे थे। बस, हम समझ गए कि यह गंदी तासीर के आदमी हैं। भला इनके सिवा ऐसा कमीनापन और कौन करेगा?"

अपनी अद्भुत सूझ-बूझ के कारण मुल्लाज़ी उसी दिन से सम्राट् की दृष्टि में समा गए और उनकी उन्नति के मार्ग निष्कंटक हो गए। शाही दरबार में वह प्रसिद्ध हास्यावतार बीरबल के प्रतिद्वंद्वी थे। दोनों में नित्य ही कुछ-न-कुछ नोंक-झोंक चलती रहती थी। मुल्लाजी प्रतिदिन एक विशेष ढंग की पगड़ी बाँधकर दरबार में जाते थे और बादशाह बहुधा उनकी पगड़ी की प्रशंसा करने लगते थे।

एक दिन बीरबल ने सोचा—"बादशाह सलामत सदा मुल्लाजी की पगड़ी की तारीफ़ किया करते हैं। यदि हम चाहें, तो उससे भी अच्छी पगड़ी बाँध सकते हैं। बस, वह आईने के सामने जा बैठे और उन्होंने बड़ी देर तक घोर परिश्रम करके उसी ढंग की पगड़ी बाँध ली। इसके बाद वह दरबार में पहुँचे। सम्राट् प्रसन्न होकर बोले—"वाह! तुम भी ऐसी पगड़ी बाँधने लगे। अब मुल्लाजी यह न कह सकेंगे कि ऐसी पगड़ी बाँधना अकेले हमी जानते हैं।"

मुल्लाजी ने फ़ौरन् खड़े होकर निवेदन किया—"जहाँपनाह, इसमें बीरबल की कोई करतूत नहीं है। यह तो यह अपनी बीवी की मदद से बाँधकर आए हैं।"

सम्राट् ने पूछा—"तुम्हारे पास कोई सुबूत भी है?"

यह सुनते ही मुल्लाजी ने अपनी पगड़ी उतार ली और कहा—"सच-झूठ का फ़ैसला अभी हुआ जाता है। बीरबल भी अपनी पगड़ी उतार लें। फिर हम दोनों ही आपके सामने अपनी-अपनी बाँधें और देखें, कौन कितनी जल्दी से और ठीक ढंग से कामयाब होता है।"

बीरबल अब क्या करते! उन्हें भी अपनी पगड़ी उतारकर मुल्लाजी का सामना करना पड़ा। मुल्लाजी तो अभ्यस्त थे, चटपट पगड़ी बाँधकर हँसते-हँसते अपने स्थान पर जा बैठे। परंतु, बेचारे बीरबल आईने के अभाव में बहुत प्रयत्न करने पर भी पगड़ी नहीं बाँध सके। अब तो सम्राट् ने भी बीरबल की चुटकी ली और कहा—"मालूम हो गया! जो काम तुम खुद नहीं कर सकते, वह अपनी बीवी की सहायता से किया करते हो।"

यों बीरबल अपनी हास्यविनोद की सूझ में विलक्षण थे और कई बार अपने साथियों को मात दिया करते थे, पर इस बार वह मुल्लाजी से करारी मात खा गए।

मुल्लाजी धीरे-धीरे सम्राट् के पूरे कृपा-पात्र हो गए थे—यहाँ तक कि वह युद्ध-भूमि में भी मुल्लाजी को अपने साथ ले जाते थे। जब शाहज़ादा दानियल और सलीम अहमदनगर के मोर्चे पर असफल रहे, तब सम्राट् स्वयं युद्ध-भूमि में पहुँचे। उनकी उपस्थिति से युद्ध ने इतना ज़ोर पकड़ा कि पहले ही धावे में मुग़ल-तोपों ने दुर्ग की प्रधान दीवार उड़ा दी। परंतु, सुलतानाचाँद वीरता की जीवित मूर्त्ति थी। उसने बड़े ही साहस और धैर्य से सम्राट् का सामना किया और स्वयं अपनी उपस्थिति में दुर्ग की उस दीवार की मरम्मत करवा दी। फलतः दूसरे दिन मुग़ल तोपों की गोलाबारी व्यर्थ हुई और दुर्ग की दीवार ज्यों-की त्यों खड़ी रही। फिर भी, चापलूस व्यक्तियों ने सम्राट् से कहा—"कल क़िला ज़रूर सर हो जाएगा। अब तो आप क़िले को, सुलताना चाँद को और अहमदनगर को अपने ताबे समझिए। भला एक औरत कब तक आपकी फ़तह को रोक सकती है।"

किंतु, मुल्लाजी गंभीरतापूर्वक बोले—वाक़ई! दुनिया के किसी भी बादशाह ने इस बहादुर औरत का सामना न किया। अगर किसी ने किया भी, तो अकेले आपने।"

मुल्लाजी के इन शब्दों में जो तीक्ष्ण व्यंग्य था, वह सम्राट् के हृदय में चुभ गया। वह समझ गए कि अगर फ़तह भी हुई, तो लोग कहेंगे कि एक औरत को शिकस्त देने में कौन-सी बड़ी बात हुई; दूसरे बादशाह तो उसे औरत जानकर छोड़ देते थे। इसके खिलाफ़, अगर फ़तह न हुई, तो लोग कहेंगे कि एक औरत से भी शिकस्त खा गए। बस, सम्राट् ने दूसरे ही दिन अहमदनगर से अपनी सेना हटा ली। वह जीता हुआ युद्ध, जीता हुआ मैदान और जीता हुआ देश छोड़कर आगरा लौट आए।

यद्यपि उस समय मुल्लाजी की आयु साठ वर्ष की हो चुकी थी, तथापि शारीरिक स्थिति किसी प्रकार चिंतनीय नहीं थी। परंतु, लौटते समय कदाचित् यात्रा-जन्य कष्ट से उनको बुख़ार आ गया, गाँठों में दर्द होने लगा और अंत में संनिपात ने धर दबाया। संनिपात की अवस्था में वह कभी-कभी अपने पिता का स्मरण करने लगते थे—"अब्बा, मैंने तुम्हें अरब, ईरान और हिंदुस्तान में खोज डाला; पर, कहीं तुम्हारा पता न पाया।" इसी रोग के कारण उनको सम्राट् का साथ छोड़ना पड़ा और वह पीछे रह गए। अंत में हँडिया—ज़िला होशंगाबाद पहुँचते-पहुँचते सन् १६०० ईस्वी के रमज़ान मास की पंद्रहवीं तारीख़ को उनका स्वर्गवास हो गया। जब उनके निधन का समाचार सम्राट् ने सुना, तब वह शोकाधिक्य से अधीर हो उठे।

मुल्लाजी का शव हँडिया ही में दफ़नाया गया। वहाँ उनकी क़ब्र अब तक विद्यमान है। इस प्रसंग को लेकर लोग बहुधा हँसी में कहने लगते हैं—"अंत में दो-प्याज़ा को हँडिया ही में शरण मिली। भला दो-प्याज़ा के लिए हँडिया से अधिक उपयुक्त स्थान और कौन-सा हो सकता है?"

मुल्ला दो-प्याज़ा अपनी प्रतिभा के कारण भारत के इतिहास में अमर हैं।

विशेष कहानी

दीप जले दीप बुझे

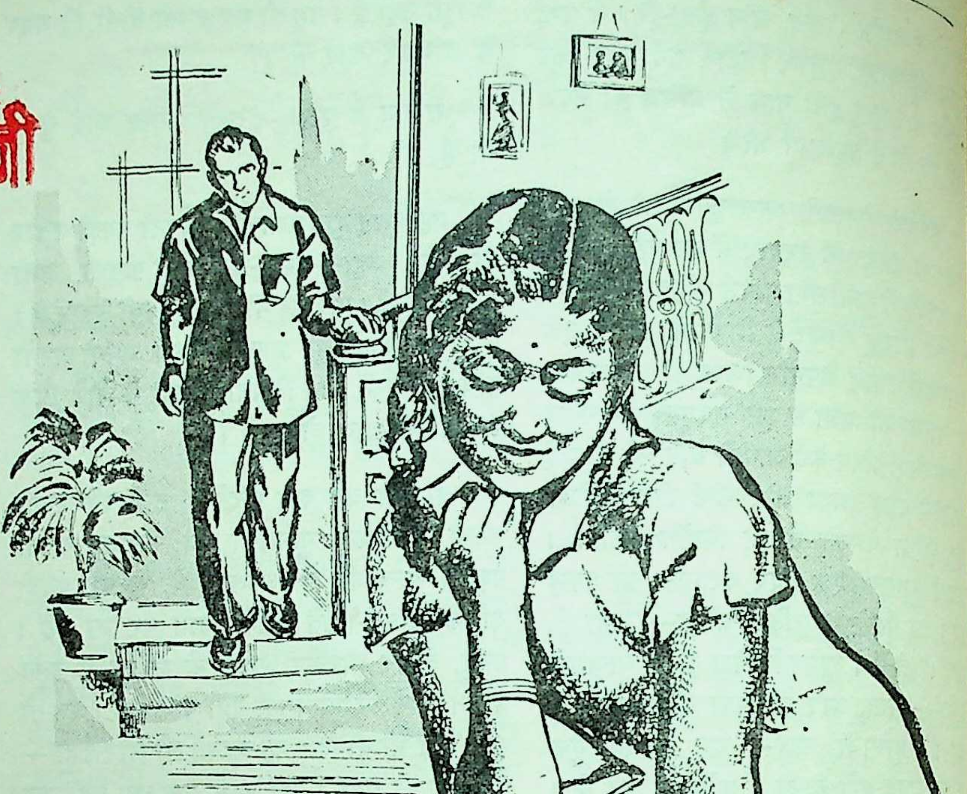

— श्री सुखबीर

आज शनिवार को किसी त्योहार की छुट्टी थी। एक पक्षी जैसे हौले से पर तोलकर अपने घोंसले में आ बैठे, आज की सुबह अपने रोशनी के पर तोलती हुई हौले से धरती पर उतरी थी। खुशवंतसिंह अपने कमरे में आराम कुर्सी पर बैठे थे। शायद धरती पर उतरी यह सुबह उनकी आँखों को चमका नहीं सकी थी। वह बहुत उदास दिखाई दे रहे थे। उनकी आँखें जैसे दूर किसी को देख रही थीं और किसी का अभाव उनकी आँखों में शाम के धुँधलके की तरह एक हलकी-सी उदासी बनकर छाया हुआ था। उनकी पत्नी को उनके पास से गए हुए एक महीना हो गया था और पिछले खत में भी उसने आने के बारे में कुछ नहीं लिखा था। सुखिंदर उन्हें इतनी प्रिय थी कि पिछले पाँच वर्षों में वह उससे केवल दो-तीन बार ही बिछुड़े थे और वह भी अधिक से अधिक एक हफ्ते के लिए। परंतु, इस बार तो एक महीने से ऊपर हो चला था।

परंतु, सामने गैलरी में बैठी मिनी—उनकी सात वर्षों की बेटी (जो उनकी मर चुकी पहली पत्नी से थी)—बहुत खुश थी। वह अपनी सहेलियों के साथ खेल रही थी। उसके और उसकी सहेलियों के नन्हे-नन्हे अट्टहास जब घुँघरुओं की तरह छनकते, तब खुशवंतसिंह की उदास आँखों में एक हलकी-सी चमक पैदा होती और वह उनकी ओर देखकर मन ही मन मुसकरा उठते। उन्हें यह मिनी बहुत प्रिय थी—उनकी पहली पत्नी का बस एक छोटा-सा रूप ! वह गुणवंत को भी कितना प्यार करते थे, परंतु, विवाह के एक वर्ष पश्चात् ही वह मिनी के जन्म पर उनसे सदा के लिए बिछुड़ गई थी।

मिनी अपनी सहेलियों के साथ सामने गैलरी में बैठी थी और पड़ोसियों की लड़की की गुड़िया के साथ अपने गुड्डे के विवाह की तैयारियाँ कर रही थी। दियासलाई की डिबियों को आपस में जोड़कर और उन पर नीले, गुलाबी और हरे रंग के कागज लगाकर उसने पिछले दिनों जो "सोफ़ा सैट" तैयार किया था, वह वहाँ सजाया गया था। मध्य में डिबियों ही की बनी एक मेज की और उस पर उसने "प्लास्टिक" के बने "कपों" का चाय का "सैट" रखा था। एक ओर प्लास्टिक का बना रसोई का सारा सामान था, जिससे वह कुछ समय पहले गुड्डे और गुड़िया के विवाह की "पार्टी" के लिये झूठमूठ की चीजें बनाकर हटी थी। जब सब चीजें तैयार हो गईं, तब वह अपना गुड्डा लाई। बड़ा-सा फूले-फूले गालोंवाला गुड्डा था वह, जिसकी गोल-गोल आँखें हिलने पर पारे की तरह चमकतीं। उसने "चैक डिज़ाइन" की रेशमी कमीज़ और निकर पहन रखी थी और उसके पावों में मखमली "बूट" थे। तब उसकी सहेली भी अपनी गुड़िया ले आई। अपने फ़लोंवाले "फ्रॉक" में वह पतले-से शरीरवाली गुड़िया लचक खा रही थी। उसकी लंबी-लंबी चीनी आँखें थीं, उसके पावों में ऊँची एड़ी के "सैंडल"

और हाथ में एक छोटा-सा "पर्स"। जब विवाह शुरू हुआ, तब सभी लड़कियाँ एकसुर होकर अपनी बारीक आवाज़ में गाने लगीं:—

गोरे-गोरे हाथों में मेहदी लगाके
नयनों में कजरा डालके,
चली दुलहनिया पिया से मिलने
छोटा-सा घूंघट निकाल के.....

खुशवंतसिंह की उदास आँखों में जैसे सुबह अपने रोशनी के पंख तोलती हुई अब उतरी थी। वह मुसकराते हुए उठे, गुड्डे और गुड़िया की शादी में शामिल होगए और लड़कियों के साथ अपनी भारी आवाज़ में गाने लगे। उन्होंने गुड्डे और गुड़िया के सिर पर से रुपए वारे और वे रुपए मिनी और उसकी सहेलियों को "पार्टी" के लिए दे दिए। तब सब लड़कियाँ अपनी हँसी से छोटे-छोटे चाँदी के घुंघरू बजाती बहुत-बहुत खुश हुईं।

आज मिनी बहुत खुश थी। विवाह के पश्चात उसने अपनी सहेलियों के साथ रसभरी मोटी-मोटी गुलाब-जामुनों की पार्टी खाई। उसे गुलाब-जामुनें बहुत पसंद थीं। और फिर वे सभी लड़कियाँ गुड्डे-गुड़िया को "गैलरी" में सोफे पर बैठाकर सामने आँगन में खेलने चली गईं। वहाँ वे कई प्रकार के खेल खेलती रहीं और फिर वहीं ज़मीन पर बैठकर एक तरफ़ पड़ी रेत में खेलने लगीं। मिनी को आज कोई डर नहीं था कि उसका यह नया रेशमी फ्राक मिट्टी में ख़राब हो जायगा। वह देर तक वहाँ खेलती रही और जब अचानक आसमान में बादल उठे और देखते-देखते वर्षा की फ़ुहार उनके ऊपर पड़ी, तब वे हँसती हुई, चीखती हुई वहाँ से गैलरी की ओर दौड़ीं। परंतु, बजाय गैलरी में अंदर आने के वे वर्षा में नाचती-कूदती, तालियाँ बजाती रहीं। पानी उनके बालों में से धाराएँ बन-बनकर बहने लगा और उनके मुंह धुल गए और उनके कपड़े भीग-भीगकर चूने लगे।

गैलरी में खड़े हुए खुशवंतसिंह का दिल चाहा कि वह भी वर्षा में उनके साथ जाकर नहाएँ और नाचें और कूदें; परंतु, वे वहीं खड़े रहे और उन्हें देख-देखकर हँसते रहे और फिर जब मिनी और उसकी सहेलियों ने जी भरकर नहा लिया, तब उन्होंने उन्हें अंदर आ जाने के लिए बुलाया और कहा कि वे कपड़े बदल लें, ताकि ठंड न लग जाए।

मिनी आज इतनी ख़ुश थी कि खुशवंतसिंह का दिल भर आया। यह पिछला महीना मिनी ने हँसते, खेलते, नाचते, कूदते बिताया था। इन दिनों में वह कई बार खुशवंतसिंह के साथ बाज़ार गई थी। वहाँ से उसने नए फ्रॉक खरीदे थे, चित्रोंवाली पुस्तकें ख़रीदी थीं, "ड्रॉइंग" के लिए रंगों का नया डिब्बा लिया था, जिसमें बारह रंगों के बजाय छत्तीस रंग थे और उसने अपनी मन की पसंद के कई खिलौने लिए थे, जिनमें वह फूले-फूले गालोंवाला वह गुड्डा भी था, जिसका उसने आज विवाह किया था। वह खुशवंतसिंह के साथ रानीबाग़ देखने भी गई थी, जहाँ उसने बन्दरों को मूंगफलियां खिलाई थीं, हिरन के मुंह पर हाथ फिराया था और वह हाथी पर चढ़ी थी। वह खुशवंतसिंह के साथ समुद्र पर भी दो बार गई थी, जहाँ उसने बहुत-सी रंगबिरंगी सीपियाँ इकट्ठी की थीं और रेत का एक बहुत बड़ा क़िला बनाया था, जिसमें एक परी रहती थी और उसे वहाँ कोई नहीं पकड़ सकता था।

यह महीना था, जब मिनी की सौतेली माँ सुखिंदर खुशवंतसिंह की दूसरी पत्नी—यहाँ नहीं थी और उसकी झिड़कियाँ नहीं थीं और उसका डर नहीं था और उसके हुक्म के नीचे लगातार घंटों कमरे में बैठकर पढ़ना नहीं था और एक सहम के नीचे दबा हुआ हँसना और वैसा ही नाचना और कूदना नहीं था।

खुशवंतसिंह की समझ में नहीं आता था कि क्यों सुखिंदर से मिनी ऐसा व्यवहार करती है। क्यों इतनी प्यारी लड़की को देखकर उसके अंदर प्यारके बजाय जलन पैदा होती है और ईर्ष्या की आग में वह दिन-रात कुढ़ती रहती है और कई बार मौक़ा लगने पर मिनी को बड़ी बेदर्दी के साथ पीट देती है; हालाँकि उसने अपनी सगी बेटी सिन्नी को आज तक कभी झिड़का या डाँटा भी नहीं था। उन्होंने उसे कितनी बार समझाया था कि यह ठीक नहीं– परंतु, वह मिनी के बारे में कभी उनकी कोई बात सुनने को तैयार नहीं हुई थी। अगर कभी उन्होंने इस पर ज़ोर दिया, तो फिर वह रो पड़ी थी। और यही खुशवंतसिंह की सबसे बड़ी कमज़ोरी थी कि वह सुखिंदर के आँसू नहीं देख सकते थे। वह उन्हें प्राणों से प्यारी थी। वह उनके जीवन की पतझड़ में खिला वह फूल था, जिसकी पत्तियों पर वह ओस के आँसू भी नहीं देख सकते थे।

सात वर्षों की मिनी सात वर्षों की लड़की की तरह फल-फूल नहीं सकी थी। वह उस गुलाब के पौधे की तरह थी, जिस पर किसी वृक्ष की छाया हो। सुखिंदर की सहम के नीचे उसका बचपन एक अधखिले फूल की तरह रह गया था। वह कई बार सोचती थी कि उसने कभी सुखिंदर से कुछ नहीं कहा था, वह जैसे कहती थी, वैसे ही करती थी, परंतु, फिर भी पता नहीं क्यों, वह उसे डाँटती थी। अगर कहीं वह तालियाँ बजाकर ऊँची आवाज़ से हँस पड़ती, तो सुखिंदर की झिड़की उसे सहमा देती। स्कूल से घर आने पर अगर कहीं फिराक खराब हुआ होता या हाथ में स्याही लगी होती, तो उसकी शामत आ जाती। स्कूल में वह सहेलियों के साथ हँसती, कूदती, परंतु, घर आने पर उसे सोग लग जाता। उसके सारे खिलौने उससे दो वर्ष छोटी सिन्नी की अलमारी में चले गए थे, क्योंकि, अब वह बड़ी हो गई थी और खिलौनों के साथ खेलने के बजाय उसका पढ़ना ज़रूरी था। या तो वह सुखिंदर के साथ चौके में छोटा-मोटा काम कराती रहती या, अगर चौके में काम न होता तो, सुखिंदर उसे पढ़ने बैठा देती। उससे बार-बार पहाड़े लिखवाती या कोई पाठ छह-छह बार लिखने को कहती या कोई कविता बार-बार ज़बानी याद करने को कहती। और ये पहाड़े और ये कविताएँ मिनी को अच्छी तरह याद होने के बावजूद भी वह बार-बार लिखने या पढ़ने पर भी उन्हें कई बार भूल जाती और फिर उसके कान लाल हो जाते, उसकी नीली आँखों में धुंधलका छा जाता और उसकी नन्ही-नन्ही सिसकियाँ उठकर उसके अंदर ही चुप हो जातीं। पड़ोसियों की लड़कियों के साथ कभी-कभी ही उसे खेलने को मिलता। सुखिंदर उनकी माताओं से कई बार मिनी के पीछे लड़ चुकी थी और फिर मिनी को थप्पड़ पड़े थे कि वह व्यर्थ में ये आफ़तें क्यों मोल लेती है। और जब कभी वह सिन्नी के साथ खेलती, तब मिनिटों में उसके साथ लड़ाई हो जाती। सिन्नी कभी उसे अपने किसी खिलौने से हाथ न लगाने देती और पता नहीं खेलते-खेलते कब योंही रोने लग जाती। तब सुखिंदर दौड़ी-दौड़ी आती, मिनी हैरान रह जाती और उसके गालों पर सुखिंदर की अँगुलियों के निशान पड़ जाते। कभी सुखिंदर खुशवंतसिंह के साथ सैर के लिए जाती या सिनेमा देखने जाती, तो घर में हल करने के लिए मिनी को गहुत-से सबाल दे जाती, लिखने के लिए पाठ दे जाती और ज़बानी याद करने के लिए

कोई नई कविता दे जाती, जो शायद उसके 'कोर्स' में न होती । और यह इसलिए था कि उसके लिए पढ़ना ज़रूरी था, कक्षा में हर सप्ताह अच्छे नंबर लाने ज़रूरी थे और सिन्नी उनके साथ जाती—आखिर वह तो अभी बच्ची थी ।

खुशवंतसिंह इसके बारे में कुछ न कह सकते, क्योंकि, यदि वह कुछ कहते, तो सुखिंदर रो पड़ती और वह सुखिंदर के आँसू नहीं देख सकते थे । पतझड़ के फूल की पत्तियों पर वह ओस के आँसू भी नहीं देख सकते थे । वह कुछ न कर सकते, सिवा इसके कि वह मिनी से कह जाते कि वह लौटने पर उसके लिए "चाकलेट" लायँगे, उसके लिए खिलौने लायँगे, उसके लिए चित्रोंवाली नई पुस्तक लायंगे । और जब चाकलेट, खिलौना या कोई चित्रोंवाली पुस्तक आती, तब उस पर सिन्नी का भी अधिकार होता । आधे से ज्यादा चाकलेट सिन्नी खा जाती, खिलौना दूसरे दिन सिन्नी की अलमारी में चला जाता और पुस्तक तीसरे-चौथे दिन सिन्नी के हाथों फटी हुई होती । सिर्फ़ कभी, जब सुखिंदर सिन्नी को लेकर किसी के घर गई होती, तब खुशवंतसिंह मौक़ा पाकर मिनी को बाज़ार ले जाते और वह जिस चीज़ पर भी अँगुली रखती, वह उसे ले देते, यद्यपि वह घर आने पर उसके पास नहीं ही रहती । और तब वह रास्ते-भर उसके साथ बहुत-बहुत बातें करते और उसे जी भर-भरकर प्यार करते ।

परंतु, यह पिछला महीना मिनी ने इतना हँस-हँसकर, खुश हो-होकर और नाच-कूदकर बिताया था कि वह यह भूल ही गई थी कि इस घर में कभी सुखिंदर भी रहती थी, सिन्नी भी रहती थी । यद्यपि पहले सभी खिलौने तो सिन्नी साथ ही ले गई थी, परंतु, अब फिर नए खिलौनों से उसकी अलमारी के ऊपर के दोनों खाने भर गए थे, जिनमें उसकी छोटी-बड़ी छह गुड़ियाँ थीं, दो बड़े गुड्डे थे, अपने हाथों बताया नीले, गुलाबी और हरे रंग का सोफ़ासैट था, छोटे-छोटे फूलोंवाला प्लास्टिक का टी-सैट था, वे कई जानवर थे, जो उसने रानी बाग़ में देखे थे, एक रेलगाड़ी थी, जो गोल 'लाइन' पर बहुत तेज़ दौड़ती थी, उसका 'एंजिन' बहुत लम्बी चीख मारता था, जलतरंग की तरह बजनेवाला एक छोटा-सा बाजा था, एक 'टेलीफ़ोन' था, एक दूरबीन थी और बहुत-सी फ़िल्में थीं ।

इसी महीने मिनी स्कूल के साप्ताहिक 'रैंक' में दो बार कक्षा में दूसरे नंबर पर आई थी, उसकी 'टीचर' की इस बार उसके बारे में 'रिपोर्ट' बहुत अच्छी थी और उसने आश्चर्य प्रकट किया था कि मिनी ने इस महीने बहुत उन्नति की है ।

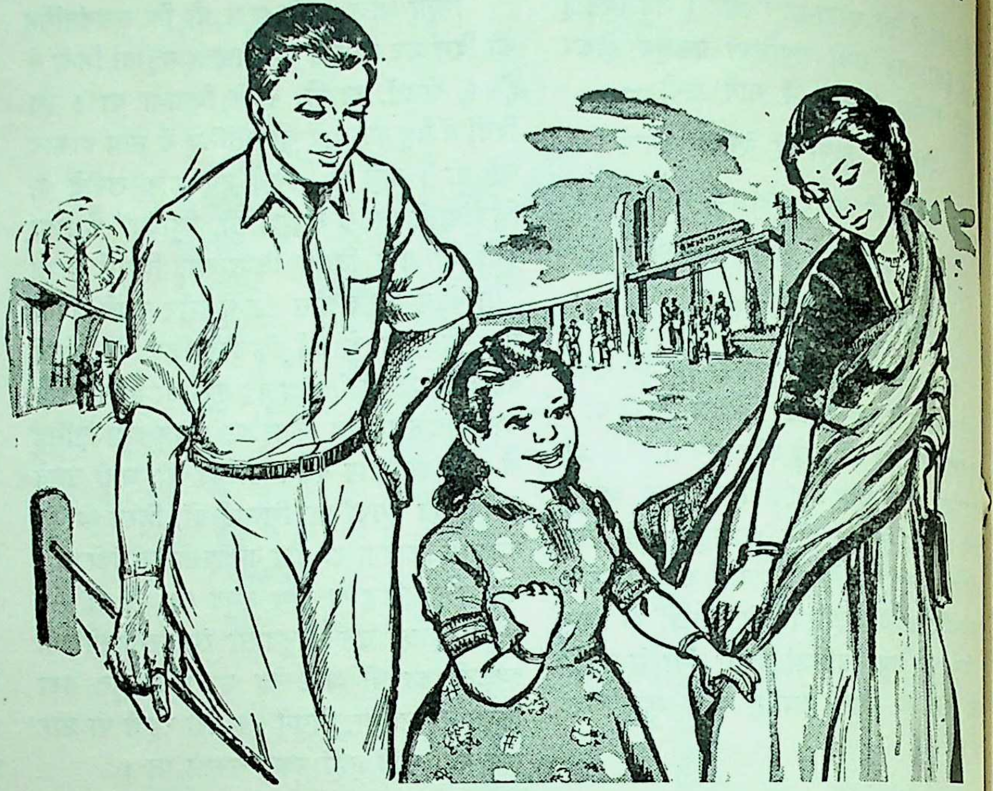

सिन्नी उनके साथ जाती—आखिर वह तो अभी बच्ची थी

मिनी नए कपड़े पहनकर फिर अपनी सहेलियों के साथ खेलने में लगी हुई थी, खुशवंतसिंह फिर आराम कुर्सी पर बैठे उदास-से लग रहे थे, उनकी आँखें दूर किसी को देख रही थीं और किसी का अभाव उनकी आँखों में शाम के धुंधलके की तरह एक हलकी-सी उदासी बनकर छाया हुआ था । वह सुखिंदर के बारे में सोच रहे थे ।

मिनी खेलती रही, खेलती रही । वह सोचते रहे, सोचते रहे ।

शाम हो गई थी । मिनी अपनी सहेलियों के साथ चित्रोंवाली पुस्तकें देख रही थी । कभी उनके बाल-चेहरों पर हैरानी पैदा होती और उनकी आँखें खुली की खुली रह जातीं । कभी डर से उनके मुंह खुल जाते, एक हलकी-सी चीख निकल पड़ती, कभी वे खिल-खिलाकर हँस पड़तीं और फुलझड़ियों से चारों ओर का वातावरण रोशन हो जाता । और फिर उनकी छोटी-छोटी बातें चल पड़तीं । मिनी ने उन्हें चित्रोंवाली कई कहानियाँ सुनाईं । फिर उसने उन्हें अपना कल का समुद्र पर जाने का 'प्रोग्राम' बताया और उनसे साथ चलने के लिए कहा कि वहाँ वे कई खेल खेलेंगी, समुद्र में नहाएँगी, सीपियाँ इकट्ठी करेंगी और एक बहुत बड़ा रेत का महल बनाएंगी, जिसका सीपियों का फ़र्श होगा, जिसकी सीपियों की छत होगी और उसके अंदर वे अपने आजवाले गुड्डे और गुड़िया को बैठाएँगी और फिर....

उसी समय बाहर का फाटक खुला, ला सायकिल लिए 'पोस्टमेन' अंदर आया और उस खुशवंतसिंह के नाम का तार उन्हें दिया । खुशवं सिंह ने बड़ी घबराहट में तारवाला लिफ़ाफ़ा फाड़ तारवाला काग़ज़ खोला और पढ़ते ही उन आँखें चमक उठीं । उसी समय उन्होंने मिनी क आवाज़ दी और जब मिनी दौड़ी-दौड़ी, तालि बजाती, हँसती हुई उनके पास आई, तब उन्हें खुशी से गद्गद् होकर उसे अपनी बाँहों में लिया और कहा—"कल तुम्हारी मम्मी औ और सिन्नी आ रही हैं । सुबह की गाड़ी से, ह उन्हें लेने चलेंगे, सुबह, बस मुंह-अँधेरे ही, जिस समय तुम शनिवार के दिन अपने स्कूल जा करती हो, छह बजे से भीं पहले.......

वह खुशी में बोलते गए, बोलते गए । वह रुके, तब उन्होंने चुपचाप खड़ी मिनी चेहरे को देखा । वह बिलकुल उतरा हुआ और उसकी आँखों में एक ऐसी सहम और था, जो मरने के पहले किसी जख्मी पक्षी नजरों में होता है ।

लोकतंत्र के आधार

—श्री गगनविहारीलाल मेहता

आज दुनिया के कुछ ही देशों में लोकतंत्र अर्थात् उत्तरदायीया प्रतिनिधि सरकार ठीक से चल रही है। स्वेज से लेकर दक्षिण प्रशांत सागर तक सर्वत्र लोकतंत्र खतरे में है। लोकतंत्र से असंतोष के कई कारण हैं। किन्तु इतना तो निश्चित है कि आज की दुनिया में, विशेष रूप से एशिया और अफ्रीका के देशों में, लोकतंत्र बना देना पर्याप्त नहीं। उसके लिए बहुत कुछ करना पड़ेगा।

जीवन-स्तर उठाने की आवश्यकता

प्रजातन्त्र को तभी लोग स्वीकार करेंगे, जब उसके द्वारा जनता की आर्थिक और सामाजिक हालत सुधारी जा सके। बर्ट्रेण्ड रसल ने इस प्रसंग में बड़ा ठीक प्रश्न किया है कि "यदि कोई आप से कहे कि या लोकतंत्र ले लो या रोटी, तो आप, क्यों भूखे मरना चाहेंगे। वास्तव में गरीबी, अशिक्षा, जनसंख्या की अधिकता, बेकारी और अप्रगतिशील अर्थ-व्यवस्था, स्वस्थ राजनैतिक विकास में बड़े बाधक हैं।

एशियाई देशों में औद्योगिक विकास होने के पहले ही लोकतंत्री पद्धति की सरकारें बन गई। जनता को सरकार चुनने का अधिकार मिला। जनता स्वभावतः अपनी सरकार से यह आशा करती है कि वह उसे रोजी और रोटी दे और यदि सरकार इसमें असमर्थ रहती है तो जनता उसे अगले चुनाव में हरा सकती है। इन देशों में महंगाई फैली हैं, अनाज, कपड़ा आदि जीवन की आवश्यक वस्तुओं की अत्यधिक कमी है, बेरोजगारी है और अधिक गरीबी है। इस स्थिति का देश की राजनेतिक स्थिति पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। इसे सुधारने के लिए बड़ी सूझ-बूझ, दृढ़ता और दूरदर्शिता की जरूरत है। इन देशों की आर्थिक दशा सुधारने की जरूरत है। इसका मतलब यह है कि लोगों को अच्छा काम दिलाया जाय।

समान अवसर

सबको समान अवसर देने का अर्थ है कि सबके लिए एक कानून, शिक्षा-दीक्षा सुविधाएँ हों, रोजी का प्रबन्ध हो, तथा विभिन्न वर्ग के लोगों में आमदनी तथा धन में अधिक अन्तर न हो। लोकतंत्र में हर एक नागरिक को शिक्षा और नौकरी मिलनी चाहिए। इन पर किसी वर्ग या जाति का इजारा न होना चाहिए। यह नैतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि समाज के फायदे की दृष्टि से भी आवश्यक है, क्योंकि इसी से ही सर्व साधारण की प्रतिभा का सर्वोत्तम रूप से लाभ उठाया जा सकता है। अवसर न मिलने से न जाने कितनी प्रतिभाएं कुंठित रह जाती हैं। कौन जानता है कि देश में कितने हो रामानुजम् और अमृता शेरगिल छिपे हैं।

समानता और प्रोत्साहन

पुराने ढर्रे के अर्थशास्त्री भी, जो समाजवादी सिद्धान्तों को स्वीकार नहीं करते, यह मानते हैं कि आर्थिक विषमता के कारण समाज के वर्गों में द्वेष और क्षोभ पैदा होता है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री मार्शल का कहना है कि इसका कोई नैतिक औचित्य नहीं है कि एक ओर लोग भूखों मरें और दूसरी ओर लोग मजे उड़ावें। ऐसी विषमता हमारी अर्थ-व्यवस्था का बहुत बड़ा दोष है। अमेरिकन अर्थशास्त्री टासिग ने कहा है कि भले ही यह तर्क दिया जाए कि आर्थिक समानता स्थापित कर दी गई तो योग्य-अयोग्य सब एक ही लाठी से हाँके जाएंगे, काम करने का उत्साह मारा जाएगा। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि समाज में यदि गहरी विषमता स्थायी रूप से बनी रही तो उससे जनता को सुख नहीं मिल सकता। हां, यह ठीक है कि आर्थिक विषमता एक दिन में नहीं मिटायी जा सकती। कर आदि लगाकर इसे धीमे-धीमे कम किया जा सकता है। साथ ही इसका ध्यान रखना होगा कि इससे लोगों में काम करने का उत्साह न नष्ट हो। यह भी सच है कि केवल धन के लोभ से ही काम नहीं किये जाते। काम करने में और साहित्य या कला की रचना में भी एक आनन्द होता है। बड़े-बड़े वैज्ञानिकों, कलाकारों, समाज सुधारकों, यहां तक कि उद्योगपतियों ने भी हमेशा पैसे के लिए ही नहीं, बल्कि रचना के आनन्द के लिए भी काम किए हैं।

लोकतन्त्र तभी सफल होगा, जब इसके द्वारा जनता की आर्थिक और सामाजिक उन्नति होगी। आर्थिक विषमता से समाज में द्वेष और क्षोभ उत्पन्न होते हैं। आर्थिक विषमता दूर करने के लिए धन के न्यायोचित बँटवारे के साथ देश का धन बढ़ाना भी आवश्यक है।" ये शब्द श्री गगनविहारीलाल मेहता ने, आकाशवाणी से 'लोकतंत्र के आधार' शीर्षक भाषणमाला में कहे। इसका सारांश हिन्दी में लेखबद्ध प्रस्तुत है।

—संपादक

फिर भी यह मानना पड़ेगा कि ज्यादातर लोग पैसे के लिए काम करते हैं। सबको बराबर पैसा न तो दिया जा सकता है और न देना उचित है, वह तो उन्हें काम के अनुसार दिया जाएगा। सोवियत रूस में भी सबको बराबर पैसा नहीं मिलता। गांधीजी का भी यही कहना था कि धन का वितरण बराबर नहीं, न्यायोचित होना चाहिए। न्यायोचित वितरण में आमदनी का बहुत अधिक अंतर नहीं रह सकता।

गरीबों को अमीर बनाइए

समानता के कई रूप हैं। जहाँ सब दास हैं, वहाँ भी समानता है और जहां सब स्वतन्त्र हैं, वहाँ भी, अगर सब निर्धन हो जाएं तो भी समानता आ जाए और सब धनी हो जाएं तो भी। किन्तु अमीरों को गरीब बनाकर समानता लाने के बजाय गरीबों को अमीर बनाकर समानता लाना ज्यादा अच्छा है। इस संबंध में मुझे एक कहानी याद आती है एक बार दो बच्चे झगड़ रहे थे। एक कहता था मैं तुम से लम्बा हूं, दूसरा कहता था नहीं मैं लम्बा हूँ। इस पर एक ने दूसरे को एक गड्ढे में खड़ा कर दिया और खुद ऊपर खड़ा होकर कहने लगा कि देख मैं तुझसे लम्बा हूँ। वह लड़का, बजाय दूसरे को गड्ढे में खड़ा करने के, खुद किसी बेंच पर भी खड़ा होकर

ऊंचा हो सकता था, लेकिन उसने दूसरे को नीचे ढकेलना ही पसन्द किया। बहुत से लोगों की मनोवृत्ति ठीक इसी लड़के की तरह हैं। आर्थिक विषमता कम करने के अनेक तरीके हैं। सम्पत्ति के वितरण से, छोटे-छोटे उद्योगों की स्थापना से, राजनैतिक शक्ति के विकेन्द्रीकरण आदि से भी समाज की आर्थिक दशा सुधारी जासकती है।

आर्थिक विषमता दूर करने के लिए यह उपाय तो करना ही चाहिए कि सारा धन थोड़े से लोगों की ही मुट्ठी में न रहे और अधिक से अधिक लोगों की आमदनी बढ़े। साथ ही राष्ट्र की सम्पत्ति भी बढ़ानी चाहिए, जिससे लोगों की समृद्धि बढ़े। इधर अमेरिका में जन-साधारण की जो आर्थिक उन्नति हुई है, उसका कारण केवल धन का उचित बंटवारा नहीं है, बल्कि वहां की राष्ट्रीय सम्पदा भी काफी बढ़ी है, जिससे सबको लाभ हुआ है। हमारे देश में आज इतनी धन-सम्पदा नहीं है कि उसे बांट देने से जनता की हालत सुधरे, इसलिए पहले हमें राष्ट्र का धन बढ़ाना चाहिए फिर उसके ठीक बंटवारे का प्रबंध करना चाहिए।

लोकतंत्र से असंतोष के कारण

आर्थिक कठिनाई और सामाजिक असंतोष के अतिरिक्त और भी कई कारण हैं, जिनसे लोकतंत्र में जनता की आस्था उठ रही है। नेताओं में पद के लिए होड, पक्षपात, भ्रष्टाचार तथा जनता की शिकायतों के प्रति अधिकारियों की उदासीनता के कारण भी नेताओं पर जनता का विश्वास उठ जाता है और लोग लोकतंत्र से भी निराश हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में जनता को भड़काना और बरगलाना आसान होता है। महत्वाकांक्षी व्यक्ति या दल ऐसे मौके का लाभ ठाकर सरकार पर कब्जा कर बैठते हैं।

तानाशाही की खराबियां

लोकतंत्र सरकारों की, असफलताओं से असन्तुष्ट होकर कुछ लोग ऐसे उदार नेता या शासक की चाह करते हैं, जो सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयों को बलपूर्वक मिटा दे। किन्तु हम जानते हैं कि तानाशाह कभी 'उदार' नहीं हुआ करते। एक बार निरंकुश सत्ता का भोग कर लेने पर वे उसे छोड़ना नहीं चाहते और अपने लाभ के लिए उसका इस्तेमाल करते हैं और इसी को वे जनता का लाभ बताते हैं। जिस देश में किसी दल या वर्ग की तानाशाही रहती है, वहां वह दल जनता को शासन की आलोचना का अधिकार नहीं देता। सशस्त्र क्रांति से ही ऐसे शासन को बदला जा सकता है।

लार्ड एक्टन ने कहा है कि सत्ता पाकर आदमी बिगड़ जाता है और पूरी सत्ता पाकर तो वह बिलकुल ही बिगड़ जाता है। फिर तानाशाही या एकतंत्र का आधार दृढ़ नहीं होता। तानाशाही में ऊंचे अधिकारी ताकत हथियाने के लिए बराबर कुचक्र करते रहते हैं, और वहां की जनता का भी नैतिक पतन हो जाता है। सम्भव है, तानाशाही कुछ कठिनाइयों को दूर कर दे। किसी समय भ्रष्टाचार, मुनाफाखोरी आदि को खत्म करने के लिए फौजी अदालत या सैनिक शासन भी जरूरी हो सकता है, किन्तु इससे देश की आर्थिक समस्याओं का स्थायी समाधान नहीं होता।

तानाशाही में विवेकशून्यता

फौजी शासन से कठिनाइयों का ऊपरी उपचार होता है, वे जड़ से नहीं मिटायी जा सकतीं। आदर्श समाज की स्थापना जादू की छड़ी घुमा देने से नहीं हो सकती। स्पूतनिक पर सतयुग में यात्रा नहीं की जासकती। विकास का मार्ग आसान नहीं है, इसमें निराशाओं और असफलताओं का सामना करना पड़ता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि तानाशाही नैतिक दृष्टि से दिवालिया होती है। ऐसी व्यवस्था में जनता मतांध और पतित हो जाती है। फिर लोकतंत्र शासन की महज एक पद्धति ही नहीं है, यह जीवन की एक पद्धति भी है। इसका उद्देश्य जनता को सुख ही नहीं, सन्तोष भी देता है। लोकतंत्र में जनता को स्वावलंबन की शिक्षा मिलती है, यही इसका असली महत्व है। लोकतंत्र के आदर्शों पर चलने से जनता का चरित्र उन्नत होता है।

ऐसा समझा जाता है कि लोकतंत्र में काम धीमे होता है, लेकिन ऐसी बात नहीं। पिछले दो महायुद्धों में लोकतंत्री देशों ने जर्मनी को हराकर यह सिद्ध कर दिया कि अगर लोकतंत्र सचेत होकर उठ बैठता है तो यह लोकतंत्र एकतंत्र और तानाशाही से कहीं शक्तिशाली और कुशल सिद्ध है। लोकतंत्र युद्ध में सफलता पा सकते हैं तो रचनात्मक कार्यों में क्यों नहीं पा सकते?

व्यक्ति का महत्त्व

तानाशाही राज्य दावा करते हैं कि उन्हों
ब त बड़े-बड़े काम बड़ी जल्दी कर डाले। कि
जांचने से मालूम होगा कि उनकी सफलता
बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बतायी जाती हैं और कभी-क
तो कह दिया जाता है कि इतना काम हु
जबकि उतना हुआ नहीं होता। यह सच है कि
साम्यवादी देशों ने कुछ बड़े काम किये हैं, कि
उनका मूल्यांकन करते समय यही नहीं दे
चाहिए कि उनमें कितना कम समय लगा, ब
यह भी देखना चाहिए कि इसके लिए मनु
का हनन नहीं किया गया। हमें काम की
पर ही नहीं उसके उद्देश्य, भाव और ढंग को
देखना चाहिए।

अर्थात् हमें देखना चाहिए कि जिन दे
में ये काम हुए वहां के समाज में व्यक्ति की
स्थिति है? उसने ये काम अपनी इच्छा से कि
या जोर-जबरदस्ती से। उन्नति का यह
नहीं कि व्यक्ति को एक विशाल मशीन का पु
बना दिया जाए, जो एक दो आदमियों के इशारे
पर चले। यदि हम आर्थिक उन्नति के साथ व्यक्ति
की भी उन्नति करना चाहते हैं तो हमें दू
मार्ग अपनाना होगा। आखिर विकास की योजना
व्यक्ति के लिए हैं, योजना के लिए व्यक्ति
है।

सबसे बड़ा प्रश्न

आज हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न है
किस प्रकार एक ऐसी व्यवस्था स्थापित की
जिसमें न तो व्यक्ति को इतना स्वतंत्र छोड़
जाए कि वह दूसरों को दबाने लगे, जैसा पूंजी
देशों में है, और न व्यक्ति की स्वतन्त्रता का
अपहरण हो जाए, जैसा साम्यवादी देशों में
आज की सबसे बड़ी राजनीतिक और
समस्या यही है कि व्यक्ति और समाज के
में किस तरह सामंजस्य किया जाए, जिससे

(शेष पृष्ठ २९ पर)

लाख उद्योग का विकास

दूसरी पंचवर्षीय योजना के आखिरी साल में चपड़े का उत्पादन १३ लाख ५० हजार मन होने की आशा है। इस योजना के आरम्भ में वार्षिक उत्पादन ११ लाख ५० हजार मन था।

लाख का उपयोग बहुत से कामों में होता है। लकड़ी की सुन्दरता को बढ़ाने में चपड़े के समान कोई भी वस्तु नहीं है। इसलिए खासकर इसका उपयोग लकड़ी और फर्श पर पालिश करने में होता है। इसकी पालिश से लकड़ी में घुन भी नहीं लग पाता। बहुत चमकदार कागज बनाने में कागज पर लाख ही की वार्निश की जाती है। कुछ मिठाइयों और दवाओं की गोलियों को सुरक्षित रखने के लिए भी उन पर चपड़े की तह चढ़ाई जाती है। देखने के शीशों के पीछे लगाने के भी यह काम आता है। छापे और चीनी मिट्टी के बर्तनों पर नक्काशी करने की रोशनाई, ग्रामोफोन के रेकार्ड, धातु की पालिश, लाख की पालिश वाले चीनी मिट्टी के बर्तन, वस्तुओं को जोड़ने और चिपकाने वाले चेप, मोमजामा और रेगमाल आदि बनाने में भी चपड़ा काम आता है।

लाख एक प्रकार के कीड़ों से मिलता है। यह राल या गोंद जैसा पदार्थ होता है। लाख के कीड़े पैदा होते ही पेड़ की दूसरी टहनियों पर लगा दिए जाते हैं। ये कीड़े इन टहनियों पर भी लाख जमा कर देते हैं। इन टहनियों को काट लिया जाता है और फिर लाख को धोकर साफ किया जाता है। इस धुले हुए लाख को पिघला कर इसकी गंदगी दूर की जाती है और इस प्रकार लाख चपड़े में परिवर्तन हो जाती है।

देश की अर्थ-व्यवस्था में लाख का महत्त्व इस बात से स्पष्ट है कि इससे ५० लाख किसानों को खासकर छोटा नागपुर के पहाड़ी इलाके के आदिवासियों को अतिरिक्त आय होती है। प्रतिवर्ष लगभग १० करोड़ रुपये की लाख विदेशों को भेजी जाती है। लाख मंगाने वाले मुख्य देश अमरीका, इग्लैंड और पश्चिमी जर्मनी हैं।

लाख और पंचवर्षीय योजनाएं

पहली पंचवर्षीय योजना में लाख के मानक और श्रेणी निर्धारित करने का काम किया गया। भारतीय लाख अनुसंधान संस्था द्वारा निर्धारित मानक को भारतीय मानक संस्था ने भी स्वीकार कर लिया है। चपड़े के उत्पादन को बढ़ाने के लिए भारतीय लाख कर समिति ने भी कुछ क्षेत्रों में पड़ताल की है।

दूसरी पंचवर्षीय योजना में लाख उद्योग के विस्तार और विकास के लिए लगभग ५५ लाख रुपया खर्च किया जायगा। लाख के भाव में स्थिरता लाने के लिए कुछ गोदाम बनाए जायंगे। कलकत्ते में एक वातानुकूलित गोदाम बनाने के लिए जगह ले ली गई है। इस गोदाम में २५ हजार मन लाख भरी जा सकेगी। राष्ट्रीय विस्तार ट्रेनिंग केन्द्रों के शिक्षकों को लाख के कीड़ों को पालने के तरीकों को सिखलाने का प्रबंध भारतीय लाख अनुसंधान संस्था में किया गया है। सुहागा और क्षार जैसी आसानी से मिल जाने वाला और सस्ती रसायनों के प्रयोग से धुली हुई लाख की किस्म सुधारने के तरीके निकाले गए हैं।

लाख से रेत और दूसरी गंदगी अलग करने की एक मशीन बनाई गई है। पिघले हुए लाख के चपटे टुकड़े बनाने की भी एक मशीन बनाई गई है। यह मशीन बड़ी सस्ती है और इसे चलाना भी बहुत आसान है। लाख और चपड़े के विश्लेषण के लिए चार प्रयोगशालाएं बनाई जायेंगी। पहली प्रयोगशाला गोंदिया में बनाई जा चुकी है।

चपड़े के निर्यात को बढ़ाने के लिए सन् १९५७ में एक चपड़ा निर्यात वृद्धि परिषद् बनाई गई थी। लाख का निर्यात वे ही व्यापारी कर सकते हैं, जिन्हें भारतीय लाख निर्यातकर्त्ता संघ ने लाइसेंस दिया हो। यह लाख के भावों में स्थिरता लाने के लिए किया गया है। रूस, चीन और पूर्वी यूरोप के देशों से लाख के ऑर्डर मंगाने के लिये राज्य व्यापार निगम प्रयत्न करता रहा है।

लाख उद्योग का भविष्य

तीसरी योजना में प्रतिवर्ष १७ लाख मन लाख के उत्पादन का लक्ष्य रखा जा रहा है। इसके लिए यह जरूरी है कि लाख के कीड़ों के पालने के और बहुत से केन्द्र स्थापित किये जायें।

देश में लाख साफ करने के बहुत से कारखाने हैं। पर इनमें से दो में ही मशीनों से लाख साफ की जाती है। लगभग ४०० अन्य कारखानों में अभी भी देशी तरीका ही काम में लाया जाता है। इन कारखानों को मशीनें खरीदने के लिए ऋण दिया जाना चाहिये।

यदि लोगों को पुराने फर्नीचर पर दुबारा पालिश करने की आदत हो जाय तो देश में ही लाख की बिक्री बढ़ जायगी। इसके लिए बड़े शहरों में प्रचार आंदोलन करना चाहिये। जिसमें लोगों को दुबारा पालिश कराने के फायदे बताए जाएं।

ग्राम-सेविकाओं को शिक्षण

आशा है, दूसरी योजना की अवधि में केन्द्रीय समाज-कल्याण-मंडल की ग्राम योजनाओं के लिए ७,८०० ग्राम-सेविकाओं की जरूरत पड़ेगी। इसमें से ३,००० को शिक्षण दिया जा चुका है और २,६०० को शिक्षण देने की व्यवस्था कर दी गई है। ये ग्राम सेविकाएँ १,५७० विभिन्न विकास योजनाओं में काम करेंगी। कुछ ग्राम-सेविकाओं ने तो काम शुरू भी कर दिया है।

कस्तूरबा गाँधी नेशनल मेमोरियल ट्रस्ट पिछले चार वर्षों से शिक्षण देने का काम कर रहा है। अब इस काम के जिए तीन और संस्थाएं चुनली गई हैं और कुछ अगले साल चुनी जाएँगी।

गाँव की बेपढ़ी लिखी औरतों को शिक्षा देने के लिए भी केन्द्रीय समाज-कल्याण मण्डल ने अनुदान देने का निश्चय किया है। इन औरतों को कम से कम इतनी शिक्षा दी जायगी कि वे ग्राम-सेविका को ट्रेनिंग लेने योग्य हो जाएँ। यह योजना इसलिए बनाई गई है कि इस तरह की कुछ शिकायतें आई थीं कि आजकल जो ग्राम-सेविकाएँ काम कर रही हैं, उनकी आयु और रहन-सहन आदि ठीक नहीं है।

ग्राम-सेविकाओं को भर्ती करने से पहले उनकी पढ़ाई, लिखाई, गणित और सामान्य ज्ञान की मामूली-सी परीक्षा ली जाती है। इसके

बाद उनका इंटरव्यू होता है। तब सफल उम्मीदवारों से एक पखवाड़े तक काम करवाके, उसकी परख की जाती है। जो उम्मीदवार ठीक काम नहीं करते, उन्हें निकालकर अन्य उम्मीदवारों को मौका दिया जाता है। इसलिए आवश्यकता से कुछ अधिक उम्मीदवारों का चुनाव किया जाता है। जो ग्राम-सेविकाएँ अपने आपको इस काम में नहीं ढाल सकतीं, उनकी जगह अतिरिक्त उम्मीदवारों की सूची में से नियुक्ति कर दी जाती है। प्रत्येक ग्राम-सेविका को एक बांड भरना पड़ता है कि वह अपनी ट्रेनिंग पूरी करेगी। डॉक्टरी चिकित्सा के अलावा अगर अन्य किसी कारण से वह काम नहीं कर सकती या निकाल दी जाती है तो उसे ट्रेनिंग के दौरान दी गई धन-राशि वापस कर देनी पड़ती है।

कामदिलाऊ दफ्तरों का काम

जुलाई, १९५८ में विभिन्न राज्यों में मिलाकर कुल २०२ कामदिलाऊ दफ्तर थे। आशा की जाती है कि दूसरी योजना के अन्त तक इनकी संख्या बढ़कर २६८ हो जायगी।

कामदिलाऊ दफ्तर नौकरियाँ दिलाने के अलावा इस बात की भी जानकारी इकट्ठी करते हैं कि देश में रोजगारों की हालत क्या है। य लोगों को काम-धंधा चुनने में मार्गदर्शन करते हैं, नौकरियों के बारे में पुस्तिकाएँ प्रकाशित करते हैं और विभिन्न धंधों का राष्ट्रीय रजिस्टर रखते हैं। इन कामों के कारण ये दफ्तर नौकरियां दिलाने के बारे में अत्यन्त उपयोगी साबित हुए हैं।

सन् १९४६ में सेना से निकाले गए लोगों को काम देने के लिए यह सेवा शुरू की गई। तब से यह काम लगातार बढ़ता ही गया है और आजकल लोगों को सरकारी या निजी नौकरियाँ दिलाने और विभिन्न उद्योगों, कारखानों, संस्थाओं आदि को उपयुक्त कर्मचारी ढूंढ़ देने में इसने बहुत सहायता की है। इसके अलावा यह सेवा विस्थापितों, केन्द्रीय सरकार के निकाले गए कर्मचारियों, अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित आदिम जातियों के लोगों को भी नौकरी दिलाने का विशेष काम कर रही है।

प्रबन्ध में मजदूरों का भाग

सरकारी हिन्दुस्तान मशीन टूल्स कम्पनी तथा अन्य लगभग एक दर्जन संस्थानों ने मजदूरों और प्रबन्धकों के प्रतिनिधियों की संयुक्त-प्रबन्ध परिषद बना दी हैं। इस साल के शुरू में केन्द्रीय श्रम मंत्रालय ने एक गोष्ठी का आयोजन किया था, जिसम मजदूरों और प्रबन्धकों के आपसी सहयोग पर जोर दिया गया। इसक अनुसार कम्पनियों ने उक्त प्रकार की परिषदें बनानी शुरू कर दी हैं।

दूसरी योजना में सरकार ने अपनी यह श्रम नीति बनाई है कि औद्योगिक सम्बन्ध दृढ़ करने के लिए प्रबन्ध में मजदूरों को भी भाग दिया जाय।

यूरोपीय देशों में इस काम का अध्ययन करने के लिए एक दल भेजा गया था। उसने भारत में उक्त प्रथा चलाने के बारे में एक रिपोर्ट दी थी। जुलाई १९५७ में भारतीय श्रम सम्मेलन ने इस रिपोर्ट पर विचार किया और यह सिफारिश की कि कुछ चुने हुए उद्योगों में मजदूरों को प्रबन्ध में हिस्सा दिलाने की प्रथा शुरू की जाय।

जानने योग्य बातें

१. दूसरी पंचवर्षीय आयोजना में ६ करोड़ टन का कोयले के उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है।

२. इसका मतलब हुआ, २ करोड़ २० लाख टन अधिक उत्पादन। पहली आयोजना की अवधि में सालाना उत्पादन ३ करोड़ ८० लाख टन था।

३. इसमें १ करोड़ २० लाख टन उत्पादन सरकारी क्षेत्र से होगा। इसमें से १५ लाख टन सिंगरेनी (आंध्र) की कोयला खानों से, बाकी केंद्रीय सरकार की ११ कोयला खानों से निकाला जाएगा।

४. इसके लिये नई खानें खोदी जाएंगी और पुरानी खानों का विस्तार किया जायगा। इस उद्देश्य से ही अक्टूबर १९५६ में रांची में राष्ट्रीय कोयला विकास निगम (प्राइवेट) लि० की स्थापना की गई।

५. कोरबा, कथेरा, गिडी, सोंडा, सयाल, विश्रामपुर और कोरिया में कोयला खदानों की जांच व ड्रिलिंग पूरी हो चुकी है।

६. नई खानों के लिये ५० प्रतिशत मशीनों के आर्डर जा चुके हैं। इनका एक भाग आ भी गया है, जो काम में लाया जा रहा है।

७. कोयला खदानों को जोड़ने वाली रेलवे लाइनें भी बन रही हैं। चम्पा और कोरबा के बीच २५ मील लम्बी लाइन बन चुकी है। बिजुरी और कैरोंजी के बीच ६० मील लम्बी लाइन बन रही है। गिडी की खानों के लिये रेलों की पेट्रटू दामोदर शाखा का विकास हो रहा है। कैथरा, बछरा और सोंडा के लिये भी रेल की लाइनें बन रही हैं। कोरबा क्षेत्र में नदी के ऊपर पुल बनाने की भी योजना है।

८. निगम ने काम सीखे हुए लोगों की मांग को देखते हुए गिरीडीह, कांर्गेली, कुरासिया और तालछड़ में ट्रेनिंग स्कूल भी खोल दिये हैं।

९. भारत में सन् १९५८ में ७ अरब ८३ करोड़ रुपये के मूल्य का माल विदेशों से मंगाया गया, जबकि सन् १९५७ में १० अरब २६ करोड़ रुपये के मूल्य का मंगाया गया था।

१०. गेहूं, चावल आदि कुछ विशेष चीजों को छोड़कर बाकी विदेशों से मंगाई जानेवाली सभी चीजों के आयात में कमी कर दी गयी है।

११. आयात में कटौती करने के कारण काफी बचत हुई। कपास, नकली रेशम के धागे, नारियल के तेल, कच्ची तम्बाकू, दवा, कागज तथा अन्य वस्तुओं के कारण विदेशी मुद्रा में बहुत बचत हुई।

१२. सन् १९५८ में यहां से विदेशों को जितने रुपये का माल भेजा गया, उससे २ अरब रुपये के मूल्य का अधिक माल विदेशों से मंगाया गया। जबकि सन् १९५८ में आयात किये जानेवाले माल के मूल्य में तथा निर्यात किये जाने वाले माल के मूल्य में ३ अरब ८३ करोड़ रुपये का फर्क था।

१३. आयात में यह कटौती करने तथा निर्यात बढ़ाने के कारण देश की संचित पूंजी बची रही। विदेशों से आर्थिक सहायता मिलने के कारण स्थिति में काफी सुधार हुआ। देश के पास अक्टूबर १९५८ में १ अरब ८० करोड़ रुपये का पौंड पावना रह गया था, किन्तु २० फरवरी १९५९ में यह बढ़कर २ अरब ११ करोड़ ४० लाख रुपये हो गया।

वार्षिक रेलवे सप्ताह

—श्री एच. वी. पाटसकर, राज्यपाल म, प्र.

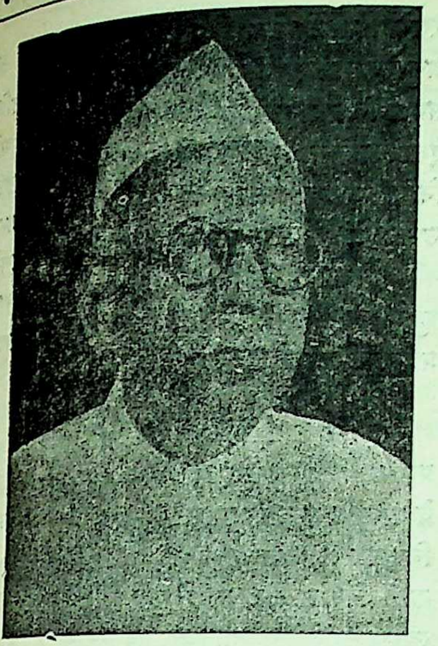

आज से आरंभ होनेवाला सप्ताह हमारे देश में रेलवे की १०६ वीं वर्ष ग्रन्थि के अवसर पर वार्षिक रेलवे सप्ताह के रूप में समस्त भारत में मनाया जानेवाला है। इस अवसर पर हमें उस स्मरणीय वर्ष सन् १८५३ का ध्यान तथा स्मरण आता है, जब ३ एंजिनों, १२ छोटे डब्बों और लगभग ५०० यात्रियों की सर्वप्रथम रेल भारत अथवा यदि मैं कहूं तो एशिया में चली थी। जब सहस्रों कंठ उत्साहपूर्वक हर्ष-ध्वनि कर रहे थे और दर्शकों में उत्साह तथा कौतूहल व्याप्त था, उस समय इस प्रथम रेलगाड़ी ने बंबई से थाना तक २१ मील की यात्रा की। अनेक ऐसे थे, जो भयाक्रान्त थे तथा जो गम्भीरता-पूर्वक इस आशय के क्रांतिपूर्ण वक्तव्यों पर विश्वास कर उन्हें प्रस्तुत करते थे कि एंजिन का धुंआ पक्षियों को मार डालेगा, पशु इससे भयभीत हो जाएंगे और फलतः गायें दूध देना बंद कर देंगी तथा चिनगारियों से घर एवं संपत्ति में आग लग जायगी।

उस समय एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना भी कितना कष्टसाध्य कार्य था, इसका वास्तविक सजीव चित्रण हमारे महान् राष्ट्रीय कवि डॉ० रवीन्द्रनाथ टैगोर के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर द्वारा सन् १८५६ में दिल्ली से कलकत्ता तक की गई यात्रा के वर्णन में मिलता है। उन्हें वाराणसी तक नाव से आने में लगभग एक माह तथा वहां से घोड़ा गाड़ी से आगरा आने में १५ दिन से अधिक तथा तदुपरान्त पुनः नाव द्वारा दिल्ली आने में एक माह का समय लगा था।

१८५३ में जिस आविष्कार का आविर्भाव हुआ था, वह आज एक विशालकाय देव हो गया है जो अब मैदानों, नदियों, पर्वतों को नापता है, विभिन्न स्थानों के अन्तर तथा यात्रा के समय को कम करता है, दुर्भिक्ष से लोगों की रक्षा करता है, उद्योगों का पोषण करता है और सामाजिक विद्वेषों का उन्मूलन करता है तथा दृष्टिकोण विस्तृत करता है।

आज हम उन प्रवर्त्तकों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करें, जिन्होंने इस साहसपूर्ण कार्य को आरंभ किया। आज भारत की रेलें हर अर्थ में जनता की रेलें हैं। जनता पर उनका अत्यधिक प्रभाव पड़ा है तथा उनका कार्य इस देश की जनता के दैनिक जीवन से अविछिन्न रूप से सम्बद्ध हो गया है।

पूंजी, नियोजन, रोजगार-प्राप्त कर्मचारियों की संख्या, राजस्व, देशी भंडारों के संरक्षण, भौतिक प्रगति को गति प्रदान करने की क्षमता की दृष्टि से आज रेलें अन्य सब उद्योगों की अपेक्षा सबसे बड़ा एक मात्र उद्योग है।

रेलों के आगमन के पश्चात् ही हमारे देश का औद्योगिक विकास आरम्भ हुआ। उदाहरणार्थ बम्बई में प्रथम कपड़े की मिल सन् १८५४ में अर्थात् रेलें चलने के एक वर्ष बाद आरम्भ हुई। इसी प्रकार कलकत्ता क्षेत्र में सन् १८५४ में रेलें आरम्भ हुईं तथा उसी वर्ष उसके पश्चात् प्रथम जूट मिल की स्थापना हुई। भूतपूर्व ईस्ट इंडियन रेल्वे के इतिहास को भारत के कोयला उद्योग का इतिहास कहा जा सकता है, क्योंकि दोनों उद्योगों का उद्भव साथ ही हुआ। इस्पात-उद्योग, जिसके विषय में आज बहुत कुछ सुना जाता है, तुलनात्मक दृष्टि से हाल में ही आरम्भ हुआ है। किन्तु यह बिलकुल स्पष्ट है कि यह उद्योग रेलवे यातायात पर पूर्ण रूप से निर्भर है। हमारे राष्ट्रीय जीवन के अन्य क्षेत्रों का भी यही हाल है—भारतीय रेलों को हमारी राष्ट्रीय अर्थनीति की धुरी कहना अतिश्योक्तिपूर्ण न होगा।

आज भारतीय रेलों का जाल ३४,००० मील लम्बे मार्गों पर बिछा है, जिन पर ७,००० रेलगाड़ियाँ प्रतिदिन दौड़ा करती हैं। इनमें से ४,००० से अधिक गाड़ियां यात्रियों के लिए तथा लगभग ३,००० गाड़ियां माल का यातायात करने के लिए हैं। अविभक्त भारत में सन् १९३९ में औसतन १५ लाख व्यक्ति प्रतिदिन यात्रा करते थे, जब कि आज यह औसत संख्या बढ़कर लगभग ४० लाख हो गई है। भारतीय रेलें वास्तव में अब देश की केन्द्र बिन्दु बन गई हैं।

निःसंदेह अभी तक की गई प्रगति बहुत प्रभावोत्पादक है, किन्तु देश के वृहद् आकार को दृष्टिगत रखते हुए हमें अभी भी बहुत-सी दूरी तय करना है। इस दिशा में हमारे नवनिर्मित राज्य की ओर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है, क्योंकि जब कि हमारे राज्य का क्षेत्रफल १,७१,००० वर्गमील है, उसमें रेलें ३,००० से भी कम मील के मार्ग में चलती हैं।

हमारे बहुत से जिलों में रेल्वे-यातायात नहीं है और यह कथन तनिक भी अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि अन्तरिक्ष-यात्रा के इस युग में हमारे राज्य में अभी भी ऐसे हजारों लोग हैं जिन्होंने अपने जीवन में रेलगाड़ी कभी नहीं देखी। यातायात की सुविधाओं के अभाव में हमारे राज्य में विशाल मूल्यवान खनिज भंडारों का अभी भी उपयोग नहीं हो सक रहा है। सारे देश की प्रगति और आवश्यकताओं की दृष्टि से भी यह स्पष्ट है कि यदि देश के मध्यभाग में अवस्थित और प्रचुर साधनों से संपन्न इस राज्य की रेल व्यवस्था में शीघ्र ही तथा पर्याप्त सुधार किया जाए तो वह राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के विकास में बहुमूल्य योग देगा। इस संबंध में रेल-मंत्री द्वारा अपने आय-व्ययक अभिभाषण में की गई यह घोषणा उत्साहजनक

है कि इस वर्ष गुना-उज्जैन रेल-श्रृंखला का काम शुरू कर दिया जाएगा।

राज्य की एक दूसरी आवश्यकता जिसका तीव्रता से अनुभव किया जा रहा है यह कि हमारे देश के दूसरे सबसे विशाल राज्य, इस मध्यप्रदेश की नई राजधानी भोपाल के रेलवे स्टेशन का नए ढंग से पुनः निर्माण किया जाए।

स्वतंत्रता के उपरान्त हमारी रेल-प्रणाली में एक प्रकार से आमूल परिवर्त्तन हुआ है। सम्पूर्ण रेलों को पुनर्गठित कर क्षेत्रों में विभाजित कर दिया गया है। इसका फल यह हुआ है कि अतीत में प्रचलित विभिन्न कम लम्बाई की रेल प्रणालियों के कारण जो विलम्ब और बाधाएं उत्पन्न होती थीं, वे कम हो गई हैं। नई और अधिक वेगवान गाड़ियां आरम्भ की गई हैं और यात्रियों के लिए, विशेषकर तृतीय वर्ग के यात्रियों के लिए, उपलब्ध सुविधाओं में सुधार किया गया है तथा उन्हें नई सुविधाएं प्रदान की गई हैं। यद्यपि अभी काफी कार्य करना शेष है, तो भी अल्पावधि में रेलवे को एक तेज और सुविधाप्रद यातायात का साधन बनाने के लिए पर्याप्त कार्य किया गया है।

हमारी रेलों को मुख्यतः विदेशों में निर्मित सामग्री के आयात पर निर्भर रहना पड़ता था, लेकिन आज उन्होंने इनमें से बहुत सी वस्तुओं का हमारे देश में निर्माण करने के संबंध में उन्होंने प्रशंसनीय प्रगति की है। चितरंजन इंजिन कारखाने में आज लगभग १६८ इंजिन प्रतिवर्ष बन रहे हैं और टेलको कारखाने में १०० इंजिन प्रतिवर्ष बनते हैं। पैराम्बर इंटीग्रल कोच फैक्ट्री को प्रतिवर्ष एक ही पाली में प्रतिवर्ष ३५० डिब्बे बनाने के लिए सज्जित किया गया है। जबतक इस प्रकार बनाय गये डिब्बों को सुसज्जित करने के लिए स्थायी कारखाना तैयार न हो जाए तब तक इस कार्य के लिए अस्थायी व्यवस्था की गई है। आशा है कि जब पूर्ण उत्पादन आरम्भ हो जाएगा तब इंटीग्रल कोच फैक्ट्री से देश के लिए आवश्यक अधिकांश डिब्बों तथा बैगनों की पूर्ति हो सकेगी। रेल की महत्वपूर्ण सामग्री जैसे मैकेनिकल सगलिंग, थर्मिक प्रेशर कास्टिंग्ज, सिग्नल ग्लासेज, वेक्युअम और स्टीम प्रेशर गाजों का देश में उत्पादन सारभूत रूप से बढ़ गया है। संचालन के बढ़ते हुए भार की आवश्यकता को पूरा करने के लिए रेलवे कर्मशालाओं में निरन्तर सुधार हुआ है।

यह सत्य है कि हमारे रेल-मार्गों पर कभी-कभी दुर्घटनाएं हुई हैं, जिनसे जन-सम्पत्ति तथा प्राण दोनों की काफी हानि हुई है। यह स्वाभाविक है कि जब भी हमारी रेलों में दुर्घटनाएं होती हैं तब उनके कारण जनता उत्तेजित हो जाती है। फिर भी यह स्वीकार करना आवश्यक है कि जब रेल-मार्ग का अचानक विस्तार होता है तब रेलवे कर्मचारियों पर अनिवार्यतः निरन्तर दबाव और कार्यभार पड़ता है और इस कारण दुर्भाग्यवश इन कर्मचारियों से अपने कर्त्तव्य के संबंध में कुछ भूलें हो जाती हैं। मुझे इसमें सन्देह नहीं कि रेलवे-प्रशासन इस बात के लिए सब सम्भव प्रयत्न कर रहा है और करता रहेगा कि इस प्रकार की दुर्घटनाओं की संख्या कम-से-कम हो जाए। हमारी रेलें सबसे बड़ा राज्य व्यवसाय है और उसके संचालन से संबंधित प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि वह यह बता दे कि उसमें जन-सेवा की सच्ची भावना तथा राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि के प्रति निष्ठा-भाव से इस प्रकार के कार्य को योग्यतापूर्वक करने की क्षमता है। इस कार्य में जनता को भी सहयोग देना चाहिये। रेलवे का उपयोग करनेवाले व्यक्तियों से मैं अनुरोध करूंगा कि वे उसे एक राष्ट्रीय निधि समझें जिसकी रक्षा करना आवश्यक है। कोई भी ऐसा कार्य नहीं किया जाना चाहिए जिससे इस निधि को क्षति हो। पंखों, बल्बों अथवा अन्य उपकरणों को जानबूझ कर क्षति पहुंचाना, खतरे की जंजीर का दुरुपयोग, बिना टिकिट यात्रा ये सब कुछ ऐसी बुरी आदतें हैं, जिन पर राष्ट्र के हित में प्रतिबन्ध लगना चाहिए।

हमारे हजारों-लाखों रेल-कर्मचारियों की प्रशंसा में कुछ कहना भी मेरे लिए आवश्यक है। वे राष्ट्रीय महत्व का कार्य कर रहे हैं, जिसके लि निरन्तर सतर्कता आवश्यक है। दर्शकों को उनका कार्य कितना ही सामान्य तथा निश्चित् दैनि स्वरूप का क्यों न प्रतीत हो, यह सत्य है कि वह इस प्रकार का कार्य है, जिसके लिए मानसिक सतर्क तथा निर्धारित नियमों का कठोर रूप से पाल आवश्यक है। हमारी रेलवे-व्यवस्था के नियमपूर्व संचालन पर केवल यात्रियों का नियमित आवागमन ही नहीं, बल्कि समाज के जीवन के लि आवश्यक खाद्यान्नों तथा अन्य वस्तुओं का यातायात भी निर्भर है। मैं भारतीय रेलों के कर्मचारियों तथा रेलों का उपयोग करनेवाली जनता और विशेष कर मध्यप्रदेश राज्य में म तथा पश्चिम रेलवे के संचालन से संबंधित कर्मचारियों का हृदय से अभिनन्दन करता हूं औ कामना करता हूं कि आगामी वर्ष में उन्हें त राष्ट्र को, जिसकी सेवा में रेलें कार्यरत हैं, समृद्धि सुलभ हो तथा वे निरन्तर प्रगति क

[आकाशवाणी के भोपाल केन्द्र से १० अप्रैल १९५९ को प्रसारित भाषण]

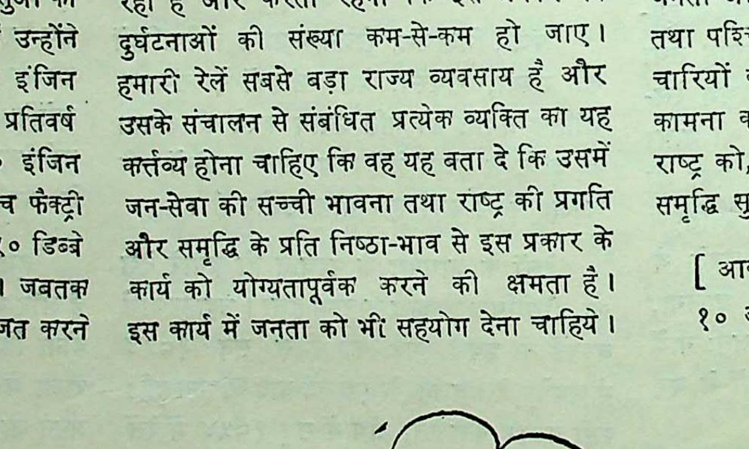

स्थानीय समाचार

नगर निगम की स्थायी समिति का निर्वाचन

ग्वालियर नगर निगम की स्थायी समिति का वार्षिक निर्वाचन ११ अप्रेल को सम्पन्न हुआ। समिति के चुनाव हेतु १४ नाम प्रस्तावित किये गयें थे, जिनमें से १० सदस्य बहुमत से निर्वाचित घोषित किये गये। निर्वाचित सदस्यों में सर्व श्री देवीप्रसाद भार्गव, डॉ० धर्मवीर, प्रेमचन्द कश्यप, अशर्फीलाल जाटव, डॉ० खानचन्द, डोंगरसिंह, करतारसिंह, रेवतीनन्दन, राम अवतार शर्मा एवं प्यारेलाल शाहू हैं। इस दिन की बैठक में ५० सदस्यों में से ४५ सदस्य उपस्थित थे तथा एक सदस्य ने मतदान में भाग नहीं लिया।

इससे पूर्व प्रातःकाल पिछली स्थायी समिति की अन्तिम बैठक श्री देवीप्रसाद भार्गव की अध्यक्षता में हुई, जिसमें अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये। इसी अवसर पर सदस्यों द्वारा एक विदाई समारोह का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। सदस्यों की ओर से मेजर करतारसिंह ने समिति के अध्यक्ष श्री देवीप्रसाद भार्गव को धन्यवाद देते हुए कहा कि एक वर्ष के कार्य संचालन और कुशल प्रशासन के रूप में जो कार्य किये गये, वे प्रशंसनीय हैं। आपने कहा कि इस कार्यकाल में अनेक नई परिपाटी डाली गईं तथा सहयोग और एकता की भावना से सभी कार्यों को निबटाया गया और इसके लिये चेअरमैन महोदय बधाई के पात्र हैं। चेयरमैन श्री भार्गव ने अपने भाषण में सदस्यों के प्रति आभार प्रकट किया।

ग्वालियर नगर निगम के महापौर, उप महापौर का चुनाव

ग्वालियर नगर निगम परिषद् ने आगामी वर्ष के लिये राजा साहब पंचमसिंह को महापौर निर्वाचित कर लिया। इसके बाद सदन ने उप-महापौर पद के लिये श्रीमती विद्यादेवी राजदान को सर्वानुमति से चुन लिया। दोनों ही पार्षद सदन के नामजद सदस्य हैं। निर्वाचन की कार्यवाही की अध्यक्षता तत्कालीन महापौर सैयद हामिद अली शाह ने की। महापौर के निर्वाचन में कांग्रेस के उम्मीदवार राजा साहब को २९ मत प्राप्त हुए जबकि विपक्षी उम्मीदवार श्री पिप्पल को केवल २० मत मिले। उप-महापौर पद के लिये कांग्रेसी उम्मीदवार श्रीमती विद्या राजदान तथा कांग्रेसी पार्षद श्री अशर्फीलाल जाटव के नाम प्रस्तावित किये गये। किन्तु कांग्रेस की अधिकृत उम्मीदवार श्रीमती विद्या राजदान थीं। अतः श्री अशर्फीलालजी ने द्वारा पार्टी अनुशासन की घोषणा करते हुए तुरन्त अपना नाम उम्मीदवारी से वापिस ले लिया। फलस्वरूप श्रीमती विद्या राजदान निर्विरोध उप-महापौर चुन ली गईं।

निर्वाचनों के उपरान्त नव-निर्वाचित पदाधिकारियों का सभी पक्षों की ओर से स्वागत किया गया। तत्कालीन महापौर सैयद हामिद अली शाह ने राजा साहब के निर्वाचन पर हर्ष व्यक्त करते हुए पार्षदों तथा अधिकारियों से यथावत सहयोग देने की अपील की एवं अपने कार्यकाल में पार्षदों तथा अधिकारी व कर्मचारियों द्वारा दिये गये सहयोग के लिये धन्यवाद दिया। साथ ही आपने आशा व्यक्त की कि परिषद् के संचालन में जिस प्रकार पार्षदों ने उसकी मर्यादा को कायम रखने में सहयोग दिया उसी प्रकार भविष्य में भी वे देते रहेंगे तथा नवीन महापौर उस परम्परा को कायम रखते हुए अपना कार्य करेंगे।

पं० कृष्णरावजी का सम्मान

स्थानीय दालबाजार स्थित आर्टिस्ट कम्बाइन थियेटर में ११ अप्रैल को सन्ध्या को भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत संगीत रत्नालंकार पं० कृष्णराव जी का सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें महाराजा सिन्धिया ने समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया तथा नगर-निगम के महापौर राजा पंचमसिंह द्वारा नागरिकों की ओर से पण्डित जी को मानपत्र अर्पित किया गया।

संगीत रत्नालंकार श्री कृष्णराव पण्डित ने अपने सम्मान में आयोजित समारोह में भाषण करते हुए कहा कि राष्ट्र ने मेरा सम्मान नहीं, बल्कि ग्वालियर का सम्मान किया है। ग्वालियर के प्राचीन संगीत को पुनः श्रेष्ठ स्थान दिलाने के लिये सज्जन संगीत सेवियों की आवश्यकता है। कई प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण प्राचीन गायन शैली तथा चीजें विकृति अवस्था में हो गई हैं। प्रसन्नता की बात है कि अब ग्वालियर की ओर भी ध्यान दिया जारहा है। स्वतंत्र भारत में ग्वालियर के संगीत का यह तीसरी बार सम्मान है। पण्डित जी ने कहा कि हद्दू खां-हस्सूखां की परम्परा से संगीत शैली चली आरही है, उसे उनके घराने ने सम्हालकर रखा है तथा वे अपने शिष्यों सहित उस शैली को सम्हालकर रखना अपने जीवन का कर्त्तव्य समझते हैं।

नगर की अनेक कला एवं संगीत संस्थाओं ने इस अवसर पर पण्डित जी को पुष्पहार समर्पित कर उनके प्रति सम्मान व्यक्त किया। नगर निगम के महापौर ने पण्डित जी को एक शील्ड पर अंकित मान-पत्र अर्पित करते हुए उनके गुणों की प्रशंसा की। रात को और दूसरे दिन संगीत सम्मेलन के कार्यक्रम आयोजित किये गये।

——गांवों के विकास के लिए राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की उपयोगिता जांचने के लिए एक विस्तार सलाहकार समिति बनाई गई है।

——भारत सरकार ने आसाम, पश्चिमी बंगाल, मणिपुर और त्रिपुरा के कामदिलाऊ दफ्तरों को आदेश दिया है कि नागा पहाड़ियों की आदिमजातियों के उम्मीदवारों को नौकरी दिलाने में प्राथमिकता दी जाए।

——विधि आयोग ने भारतीय दण्ड विधान में संशोधन का काम शुरू कर दिया है; जो व्यक्ति या संगठन इस बारे में कुछ सुझाव देना चाहें, वे 'ज्वाइंट सेक्रेटरी ला कमीशन, ५-जोर बाग, नई दिल्ली-३ के पते पर ३१ मई, १९५९ तक भेज सकते हैं।

——विधि आयोग ने भारतीय साक्षी अधिनियम, १८७२, में कुछ संशोधन करने का काम शुरू कर दिया है, जो व्यक्ति या संस्थाएं इस विषय पर अपने विचार भेजना चाहें, वे ३१ मई, १९५९ तक संयुक्त सचिव, विधि आयोग, ५-जोर बाग रोड, नई दिल्ली-३ के पते पर भेज सकते हैं।

——केन्द्रीय सामुदायिक विकास और सहकार मंत्रालय ने राज्य सरकारों से कहा है कि वे विकास-खंडों में मछुओं को मछली पकड़ने के आधुनिक तरीके सिखाएँ।

——सरकारी कर्मचारियों को धर्म-परिवर्तन कराने के काम में भाग लेने की मनाही कर दी गई है। ऐसा करने पर उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

साप्ताहिक समीक्षा

राष्ट्रपति द्वारा २८ व्यक्तियों का राष्ट्रीय सम्मान

राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने दो व्यक्तियों को "पद्मविभूषण", आठ को "पद्म भूषण" और १८ को "पद्मश्री" के पदक दिए। दसवें गणराज्य दिवस पर इन अलंकारों की घोषणा की गई थी। समारोह में अलंकार पानेवाले आठ व्यक्ति उपस्थित नहीं थे। जिन व्यक्तियों को अलंकार दिए गए, उनमें ४ स्त्रियां भी थीं। इन्होंने शिक्षा-विज्ञान, संगीत, खेल-कूद, समाज-सेवा, नाटक और गणितशास्त्र जैसे विषयों में नाम कमाया है।

सन् १९५४ सेये अलंकार शुरू किए गए हैं। तब से ८ व्यक्तियों को भारत रत्न; १७ को पद्म विभूषण ९१ को पद्मभूषण और ९१ को पद्मश्री, अर्थात् कुल २०७ व्यक्तियों को ये अलंकार मिल चुके हैं।

राष्ट्रपति भवन में यह समारोह भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। श्री जॉनमथाई तथा श्री गगनबिहारी मेहता को "पद्म विभूषण" पदक से सम्मानित किया गया। डॉ. राधाविनोद पाल कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके थे। मामा वररेकर, श्री रामधारीसिंह दिनकर, तेनजिंग नोर्के, श्रीमती हंसा मेहता आदि आठ व्यक्तियों को "पद्म भूषण" से सम्मानित किया गया। श्री भाउराव पाथगोंडा पाटिल अनुपस्थित थे। १८ व्यक्तियों को "पद्म श्री" से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर उपराष्ट्रपति डा. राधाकृष्णन, प्रधान मंत्री पं. नेहरू, मंत्रिमंडल के अन्य सदस्य, संसदसदस्य, अधिकारीगण, दरबार हाल में उपस्थित थे। समारोह सम्पन्न होने के बाद पं. नेहरू ने सभी सम्मानित व्यक्तियों से भेंट की। इसके उपरान्त मुगल-उद्यान में सम्मानित व्यक्तियों से राष्ट्रपति ने भेंट की। सम्पूर्ण कार्यक्रम हिन्दी में सम्पादित हुआ।

कमला नेहरू-स्मारक अस्पताल के नासूर-कक्ष का उद्घाटन

भारत के उप-राष्ट्रपति डा. एस. राधाकृष्णन् ने इलाहाबाद में कमला नेहरू स्मारक अस्पताल के नासूर-कक्ष (कैन्सर विंग) का उद्घाटन किया।

इस पर ४ लाख रुपये से भी ज्यादा का खर्च बैठा है। इसका भवन दुमंजिला है। इसमें दो आम वार्ड हैं। प्रत्येक वार्ड में १०-१० चारपाईयां होंगी। इसके अतिरिक्त पुरुषों व स्त्रियों के लिए पृथक्-पृथक् विकिरण कमरे होंगे।

प्रधान मंत्री नेहरूजी, श्री लालबहादुर शास्त्री, डा. जीवराव मेहता, श्री चन्द्रभान गुप्त, आदि इस उद्घाटन-समारोह में उपस्थित थे।

इस अवसर पर भाषण करते हुए डा. राधाकृष्णन् ने कहा कि नासूर (कैन्सर) एक खतरनाक बीमारी होगई है। इस सदी के शुरू में अमरीका में नासूर मौतों का ७ वां कारण था, तो विगत १० वर्षों में यह दूसरा कारण होगया। विश्व के विभिन्न हिस्सों में नासूर संबंधी अनुसंधान करने के लिए बड़ी-बडी शालाएं कायम की जा रही हैं। हम लोग कोशिश में हैं कि नासूर फैलने न पाए और यदि किसी को नासूर हो जाय, तो उसका इलाज हो जाय। इससे पूर्व डा. राधाकृष्णन् ने स्वर्गीय कमला नेहरू के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

विश्व की जनसंख्या में ३० करोड़ की वृद्धि

संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार इस समय विश्व की आबादी २,७०,५०,००,००० है। ८ वर्ष पूर्व विश्व की जनसंख्या २,४९,३०,००,००० थी। इस समय जनसंख्या में १.६ प्रतिशत प्रतिवर्ष के हिसाब से वृद्धि हो रही है। एशिया की आबादी ११५,५६०,००,०००है। (इसमें रूस की जनसंख्या शामिल नहीं की गई)। यूरोप की आबादी ४१,४०,००,००० है।

नीलामों में सम्पत्ति की खरीद

भारत सरकार ने निर्णय किया है कि नीलामों में सम्पत्ति खरीदने वाले गैर-दावेदार २० विस्थापित २० प्रतिशत की पहली किश्त नकद देने के बाद, बाकी मूल्य चुकाने के लिए अपने संबंधियों और मित्रों के दावों का उपयोग कर सकते हैं।

यह भी निर्णय किया गया है कि अविस्थापित व्यक्ति भी नीलामों में खरीदी गई सम्पत्ति का मूल्य चुकाने के लिए अपने मित्रों और संबंधियों के दावों का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन उन्हें पहली किश्त २० प्रतिशत के बदले ३० प्रतिशत नकद देनी होगी।

अल्जीरिया की अस्थायी सरकार के प्रधानमन् श्री फरहत अब्बास, जो आजकल भार पधारे हुए हैं

सैनिक अधिकारी अशोकचक्र से विभूषित

राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने भारतीय वायु सेना, स्थल सेना के ४५ अधिकारियों और जवानों को अशोकचक्र (द्वितीय) श्रेणी से विभूषित किया।

राष्ट्रपति तूर्यनाद के साथ एक जुलूस में 'दरबार हाल' में पधारे और तब उपस्थित अतिथिगण ने खड़े हो कर उनका अभिवादन किया। राष्ट्रपति के भगवान् बुद्ध की मानवाकार प्रस्तर मूर्ति की छाया में सिंहासनारूढ़ होने के बाद रक्षा सचिव ने अलंकरण समारोह प्रारम्भ करने की अनुमति के लिए प्रार्थना की और बारीबारी वे पदक प्राप्त-कर्ता राष्ट्रपति के मंच के सम्मुख राष्ट्रपति के अंगरक्षकों द्वारा लाए गए और राष्ट्रपति ने उनका अभिवादन स्वीकार कर उन्हें अलंकृत किया। राष्ट्रपति के आसन ग्रहण करने के पूर्व राष्ट्रीय गान का वादन हुआ।

समारोह में ४० सैनिकों को उनके द्वारा नागा पहाड़ी के दुर्गम क्षेत्र में विद्रोहियों से भिड़ंत के समय बहादुरी और अदम्य उत्साह के लिए अशोक चक्र द्वितीय श्रेणी और द्वितीय श्रेणी के पदक से अलंकृत किया गया। पश्चिम पंजाब व पूर्वी पंजाब की सीमा पर हुसेनीवाला स्थित बेला पर हमारी चौकी पर सीमा के उस पार से आक्रमण के समय बहादुरी दिखलाने के लिए सिपाही धनीराम को अशोक चक्र, तृतीय श्रेणी से विभूषित किया गया। संयुक्त राष्ट्र आपातकालीन सेना में भारतीय बटालियन के जमादार बलवीरसिंह, हवलदार दीवानसिंह (मरणोपरान्त) नायक पूरन चन्द (मरणोपरान्त), और सिपाही बेगराज को गाजा क्षेत्र में सुरंगों के साफ करने के कार्य में अदम्य उत्साह कर्त्तव्य-परायणता और वीरता के लिए अशोकचक्र तृतीय श्रेणी से राष्ट्रपति ने विभूषित किया।

उपर्युक्त व्यक्तियों के वीरता और उत्साह के प्रशस्ति पाठ से यह पता चला कि नागा क्षेत्र में १९५५, १९५६, १९५७ वर्षों में विद्रोही नागाओं से लड़ाई में भारतीय सेना को कठिन समय का सामना करना पड़ा। विद्रोहियों के पास अति आधुनिक शस्त्रास्त्र थे। गोलाबारूद, लाइट व भारी मशीन गन, हथगोले, ब्रेनगन, स्वचालित यंत्र आदि विद्रोहियों के पास भारी संख्या में थे और मोर्चे बांध कर वे लड़ते थे।

इस अवसर पर उप-राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन, प्रधान मंत्री नेहरूजी, रक्षा मंत्री श्री वी. के. कृष्ण मेनन, गृहमंत्री पन्त, वित्तमंत्री श्री मोराजी देसाई तथा सैन्य कार्यालय अध्यक्ष, संसत्सदस्य और उच्च सैनिक व असैनिक अधिकारी मौजूद थे।

राष्ट्रपति ने बाद में मुगल उद्यान में पदक प्राप्तकर्ताओं तथा अतिथियों के लिए एक स्वागत समारोह किया।

घायल भारतीय चालक दिल्ली पहुंचे

नई दिल्ली, १२ अप्रैल। प्रतिरक्षा मंत्री श्री कृष्णमेनन ने कल लोकसभा में कहा था कि भारतीय वायुसेना के केनबरा विमान के, जिसे पाकिस्तान में गोली मार कर गिरा लिया गया था, कर्मचारी भारत को चल पड़े हैं। लेकिन, ये लोग कल नहीं आए, क्योंकि पाकिस्तान के चिकित्सा अधिकारियों का ख्याल था कि वे यात्रा करने की स्थिति में नहीं हैं। उन्होंने भारतीय वायुसेना के अधिकारियों से पूछा था कि यदि वे चाहते हैं कि ये चालक वापस चले जाएँ तो वे एक डॉक्टर भेजें, जो यह कह सके कि इन लोगों को इनकी जिम्मेदारी पर ले जाया जा रहा है। भारतीय वायुसेना का डॉक्टर आज तड़के रावलपिंडी पहुंचा था। डाक्टर तथा चालक आज सुबह ७-१५ बजे पालम लौट आए।

यहाँ पहुँचने के बाद ये दोनों चालक अस्पताल में हैं। उन्हें हड्डी टूट जाने तथा अन्य चोटें आने के अलावा बड़ा धक्का-सा लगा है और वे घबराए हुए हैं। चिकित्सा अधिकारियों के विचार में अब ये लोग खतरे से बाहर हैं।

युवराज अकीहितो का विवाह सम्पन्न

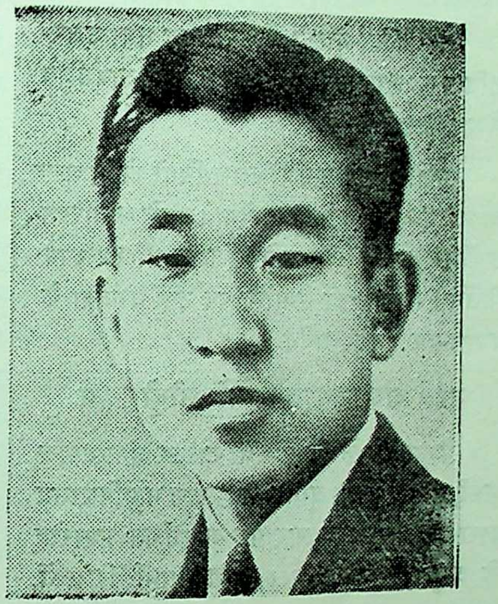

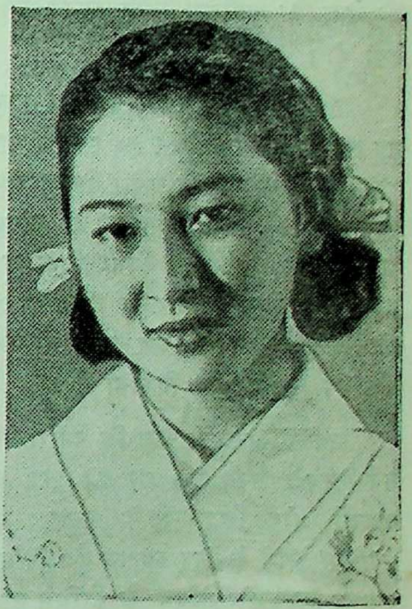

जापान के एक उद्योगपति की पुत्री कुमारी मिचिको शोदा युवराज अकीहितो की पत्नी बनीं। गत दो हजार वर्षों में यह पहला अवसर है, जबकि एक जन-साधारण नागरिक की लड़की का विवाह जापान के राजवंश में हुआ है।

शाही महल के अन्दर एक लकड़ी के मन्दिर में १५ मिनट के साधारण समारोह में २४ वर्षीय कुमारी मिचिको शोदा बगैर एक शब्द बोले युवराज्ञी बन गईं।

भारत की भेंट

जापान के युवराज अकीहितो के कुमारी मिचिको शोदा के साथ विवाह के अवसर पर भेंट देने के लिए भारत ने दो वस्तुएँ भेजी हैं, जिनमें से एक हाथी दांत पर नक्काशी का एक सुन्दर लैम्प है और दूसरी बनारसी जरी के काम की एक बढ़िया चादर है। ये दोनों वस्तुएँ विदेशी मामलों के मंत्रालय द्वारा टोकियो स्थित भारतीय राजदूत को कुछ समय पूर्व भेजदी गई थीं।

भारतीय राजदूत श्री सी. पी. एन. सिंह ने युवराज के विवाह-समारोह में सम्मिलित होकर राजमहल में इन वस्तुओं की भेंट दी।

विविध-समाचार

राजगढ़ में डाक्टर काटजू का भाषण

"भगवत्गीता की महान् शिक्षा यह है कि हम अपना कर्त्तव्य पूरा करें और परिणाम की चिन्ता न करें। हम सबको इस उपदेश के अनुसार कार्य करने का प्रयत्न करना चाहिए।" उक्त विचार मध्यप्रदेश के मुख्य मंत्री डाक्टर के. एन. काटजू ने भोपाल से लगभग ९१ मील दूर पर स्थित राजगढ़ में श्री गीता मानस प्रचार समिति के वार्षिक महोत्सव का उद्घाटन करते हुए प्रकट किये। उन्होंने आगे कहा कि गीता का उपदेश विगत दो हजार वर्षों या उससे भी अधिक समय से करोड़ों लोगों को स्फूर्ति देता रहा है और भविष्य में अनन्त काल तक स्फूर्ति देता रहेगा।

डाक्टर काटजू ने यह भी कहा कि गीता का उपदेश है कि हम अपने कर्त्तव्य-पालन में स्वयं से सम्बन्धित सब प्रश्नों को भूल जाएँ। भगवान् की सेवा की सर्वोत्तम विधि मानव-मात्र की सेवा है।

आगे बोलते हुए मुख्य मंत्रीजी ने कहा कि यह सब का सौभाग्य है कि हम स्वतन्त्र भारत में रह रहे हैं। आज किसी सम्राट् अथवा राजा का शासन नहीं है, किन्तु जनता का ही शासन है। शासक और शासित का विभेद मिटा ही दिया गया है। इसके परिणामस्वरूप जनता का दायित्व बहुत अधिक बढ़ गया है। अब जनता को कार्यभार सँभालने का दायित्व निभाना है।

डाक्टर काटजू ने कहा कि हमारा देश एक धर्म-निरपेक्ष राज्य है। हम सब अपने धार्मिक आदर्शों और सिद्धान्तों के अनुसार धार्मिक उपासना करने के लिए स्वतन्त्र हैं। विभिन्न धर्म एक ही स्थान तक पहुंचने के विभिन्न मार्ग हैं।

राष्ट्रीय ध्वज का उल्लेख करते हुये मुख्य मंत्री जी ने कहा कि इसकी छाया में समस्त नागरिकों को बिना जाति, पंथ या धर्म के भेदभाव के समान अधिकार एवं सुविधाएं सुलभ हैं। इसके द्वारा यह आश्वासन दिया गया है कि समस्त नागरिकों को उनकी प्रगति के समान सुअवसर उपलब्ध होंगे।

उन्होंने कहा कि समय का यह एक सुखद चिह्न है कि सब लोगों, यहाँ तक कि हमारी महिलाओं में भी शिक्षा का शीघ्रतापूर्वक प्रसार हो रहा है तथा वे 'भगवत्गीता' सदृश महान् पुस्तकों का भी अध्ययन कर सकेंगी।

इसके पूर्व श्री रामचन्द्र दुबे, विधान सभा सदस्य ने गीता समिति के गत १५ वर्षों के कार्यों का संक्षेप में वर्णन किया तथा माननीय अतिथि का स्वागत किया।

तीस दिवसीय लोक-सहायक-सेना-शिविर

उज्जैन तहसील में उज्जैन-बड़नगर मार्ग पर स्थित खात के एक बाग में १५ अप्रैल से एक तीस दिवसीय लोक-सहायक-सेना-शिविर आयोजित किया गया है। इस अवधि में १९ वर्ष से ४० वर्ष तक के स्वस्थ तथा सशक्त व्यक्तियों को प्रशिक्षण दिया जायेगा।

यह शिविर युवकों में अनुशासन तथा उत्तर-दायित्व की भावना उत्पन्न करने के लिए आयोजित किया जाता है।

आलोच्य अवधि में प्रशिक्षणार्थियों को निःशुल्क आवास एवं भोजन दिया जावेगा। इसके अतिरिक्त उन्हें जेब ख़र्च के लिए प्रति प्रशिक्षणार्थी १५ रुपये मिलेंगे। शिविर की समाप्ति पर उन्हें योग्यता के प्रमाण-पत्र दिये जावेंगे।

डा० शंकरदयाल शर्मा सीहोर में

मध्यप्रदेश के शिक्षा मंत्री डाक्टर शंकरदयाल शर्मा, सीहोर स्थित बुनियादी शिक्षण महाविद्यालय द्वारा सत्रान्त के अवसर पर आयोजित समारोह के प्रमुख अतिथि थे। प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों, अभ्यास काल में पढ़ाये जाने वाले बच्चों तथा स्थानीय शिक्षण-संस्थाओं के कुछ छात्रों द्वारा भजनों, हल्के-फुल्के तथा शास्त्रीय संगीत के सुन्दर कार्यक्रम इस अवसर पर प्रस्तुत किये गये।

शिक्षा मंत्री ने बाद में महाविद्यालय द्वारा आयोजित संगीत-प्रतियोगिता के विजेताओं तथा जिन प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों ने सत्र-काल में बुनाई, कताई, काष्ठ-कला, वाद-विवाद क्रीड़ा, तथा खेल-कूद में विशिष्ट स्थान प्राप्त किये थे, उन्हें पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र दिये।

उन शिक्षकों को, जो शीघ्र ही गाँवों में अपने स्थानों पर वापिस जाएंगे, उद्बोधित करते हुये डाक्टर शर्मा ने उनके उस महान् दायित्व का स्मरण कराया, जो उनके संरक्षण में आनेवाले देहात के बच्चों को भविष्य-निर्माण के रूप में उन पर अयेगा।

ग्रामीणों ने डाकुओं के प्रयास को विफल किया

छतरपुर जिले में पुलिस स्टेशन मल्हेरा के अन्तर्गत पिपरा गाँव के ग्रामीणों ने हाल में डाकुओं के आक्रमण का कड़ा मुकाबला किया, जिससे न केवल डकैती की योजना विफल हो गई, वरन् पुलिस स्टेशन मल्हेरा, ग्राम बमनोर का कुख्यात डाकू रणजोरसिंह मारा गया, जो कुछ दिनों से इस जिले में सक्रिय था।

यह घटना तब हुई, जबकि इस डाकू ने बल्दुआ चमार के कुछ चाँदी के आभूषण लूट लिए। शोरगुल मचाने पर ग्रामीण घटना-स्थल पर जमा हो गए और उन्होंने डाकुओं द्वारा गोली चलाने पर भी उनका डटकर मुकाबला किया। ग्रामीणों के दल का कोई व्यक्ति नहीं मरा और डकैत रणजोरसिंह को ग्रामीणों ने काबू में कर लिया। इस संघर्ष में लगे घावों के परिणामस्वरूप वह बाद में मर गया और उसके पास एक एकनाली भरमार बंदूक तथा गोली-बारूद बरामद हुआ। यह डाकू अगस्त १९५८ से फरार था, और इसकी डकैती के मामले में तलाश थी। यह डाकू राजा-भैया के गिरोह का अस्थायी सदस्य था और कभी-कभी डकैत मूरतसिंह के गिरोह में भी शामिल हो जाया करता था।

दूसरी घटना में जब पुलिस को यह सूचना मिली की वल्दुआ और हल्का डाकू छतरपुर जिले में भगवान थाने के रिछारा गाँव में उपस्थित हैं, तब पुलिस गाँव में तुरन्त गई तथा उन्हें चारों ओर से घेर लिया। डाकू गिरफ्तार कर लिये गये तथा एक ३०३ बन्दूक, एक १२ बोर बन्दूक, १ भरमार बंदूक तथा बारूद उनके पास से बरामद किये गये। ये डाकू कुख्यात डाकू देवीसिंह के दल के सदस्य थे तथा इन दोनों को पकड़ने के लिए दो हजार रुपये प्रति डाकू का पुरस्कार घोषित किया गया था। छतरपुर (मध्यप्रदेश) तथा उत्तर प्रदेश के कई जिलों में हुई डकैतियों, हत्याओं तथा लूटमार के सिलसिले में इनकी तलाश थी।

श्री मण्डलोई सुल्तानपुर फार्म में

राज्य के राजस्व मंत्री श्री बी. ए. मंडलोई का भोपाल से ५० मील दूर सुल्तानपुर फार्म स्थित तीन बस्तियों—ईटखेड़ी, मजूसकलां और उड़दमऊं में स्वागत किया गया। उनके साथ विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री ए. एस. पटवर्धन, भोपाल संभाग के आयुक्त और राज्य के कतिपय विधान सभा सदस्य भी गये थे।

ईटखेड़ी में एक महती जन-सभा में भाषण देते हुए राजस्व मंत्री ने यहां बसनेवाले केरल के निवासियों को सहकारिता आधार पर खेती करने के लिए बधाई दी। उन्होंने उनसे कहा कि वे सेवा-सहकारी समितियों का गठन करें। उन्होंने इन केरलवासियों को अपने उत्पादन का विक्रय भी सहकारी समितियों द्वारा करने की सलाह दी; क्योंकि इससे उन्हें अपनी उपज का अधिक मूल्य प्राप्त हो सकेगा। राजस्व मंत्री ने कहा कि शासन उन्हें इनके इस उद्योग में हर सम्भव सहायता देगा।

अपना भाषण जारी रखते हुए उन्होंने कहा कि यहां बसनेवाले केरल के निवासी अब मध्यप्रदेश के नागरिक हो गये हैं और उन्हें इस राज्य को अब अपना घर समझना चाहिये। विगत चार-पाँच वर्षों में उन्होंने इस क्षेत्र की कृषि-प्रवृत्तियों का अध्ययन कर लिया है और इन्हें अब स्थानीय कृषकों से स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना से कार्य करना चाहिये।

श्री मंडलोई ने अपने भाषण में सूचित किया कि भारत सरकार ने उस क्षेत्र में भूमिहीनों को बसाने के उद्देश्य से दस हजार एकड़ भूमि का कृष्यकरण किया है तथा इस कार्य पर लगभग पचास लाख रुपया व्यय किया है।

अंत में राजस्व मंत्री ने उनसे अच्छे कृषक बनने के लिए कहा तथा उनकी समृद्धि के लिए अपनी शुभ कामना प्रगट की।

इसके पूर्व मंत्रीजी ने मजूस-कलां में एक जन-सभा के समक्ष भाषण दिया। कालोनी में स्वस्थ और प्रसन्न बच्चों को देखकर वे बहुत खुश हुए तथा उन्होंने बच्चों के लिए शाला को १०० रुपये भेंट दिये।

मजूसकलां, ईटखेड़ी और उड़दमऊं में प्रवासियों ने राज्य सरकार से मिली सब प्रकार की सहायता के लिए मंत्रीजी को धन्यवाद तथा उत्तम सिंचाई-सुविधाओं, बैलों को खरीदने के लिए और अधिक तकावी, खेतों के लिए पक्की सड़कें तथा पोस्ट ऑफिस आदि सम्बन्धी मांगें प्रस्तुत कीं।

सुल्तानपुर फार्म में फिलहाल केरल के प्रवासियों के १६१ परिवार तथा स्थानीय प्रवासियों के ४६८ परिवार निवास कर रहे हैं। केरल से आनेवाले प्रत्येक परिवार को पाँच एकड़ सिंचित तथा सात एकड़ असिंचित भूमि दी गई है। प्रवासियों के लिए निवास-गृह भी बनाये जा रहे हैं। ३४ निवास-गृहों का निर्माण पूरा हो चुका है तथा अन्य १५६ गृहों का निर्माण-कार्य जारी है।

बिलासपुर सँभाग में नगर सेना की सेवाएं

बिलासपुर संभाग में जनवरी तथा फरवरी १९५९ में नगर-सेना ने मूल्यवान सामाजिक सेवाएं कीं। नगर-सेना ने विभिन्न ग्रामों में अग्नि पर नियंत्रण किया, जिसके परिणामस्वरूप जन-जीवन एवं धन-धान्य की सुरक्षा हो सकी। आलोच्य अवधि में सेना ने ग्रामों के कुओं तथा सड़कों की सफाई की तथा बोहरडीह ग्राम के समीप के नाले पर विद्यार्थियों के सहयोग से एक कच्ची पुलिया का निर्माण किया। स्थानीय किसानों की सहायता से रानी तराई ग्राम को दुर्ग सड़क से जोड़ने के लिए एक संयोजक मार्ग बनाया गया। नगर सेना ने कुछ घायल व्यक्तियों का भी प्रथमोपचार किया।

गुना में जिला स्तरीय सेमीनार

ग्रामीण जनता को सामुदायिक विकास के उद्देश्य समझाने की दृष्टि से, हाल ही में गुना में एक जिला-स्तरीय सेमीनार आयोजित किया गया था, जिसमें जन-नेताओं, विकास अधिकारियों एवं अन्य जिलाधिकारियों द्वारा विकास योजनाओं से सम्बन्धित विभिन्न प्रश्नों पर चर्चा की गई।

इसके अतिरिक्त फरवरी मास में गुना के जय-हिन्द मेले में एक लोक-गीत और लोक-नृत्य सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस सम्मेलन में गुना और ईसागढ़ खंड के कई दलों ने भाग लिया। गहेरा ग्राम के दल को लोक-नृत्य में सर्वोत्तम प्रदर्शन करने के उपलक्ष्य में प्रथम पुरस्कार-स्वरूप एक शील्ड दी गई।

गुना विकास खंड द्वारा मेले के अवसर पर एक योजना-प्रदर्शनी की भी व्यवस्था की गई थी, जिसे ग्रामीणों ने बहुत बड़ी संख्या में देखा।

कुख्यात दस्यु पीतम गूजर मारा गया

हाल ही में कराहल तथा पोहरी के पुलिस सब-इन्स्पेक्टर के नेतृत्व में जा रहे एक पुलिस दल और डकैत पीतम गूजर के दल में मुठभेड़ हुई, जिसके फलस्वरूप दस्यू पीतम गूजर मारा गया तथा एक दुनाली बंदूक पुलिस के हाथ लगी।

ग्रामसेवकों की पुरस्कार-प्रतियोगिता

भारत सरकार के सामुदायिक विकास मन्त्रालय ने निश्चय किया है कि १९५९-६० वर्ष में ग्रामसेवकों एवं ग्रामों के लिए पुरस्कार-प्रतियोगिता जारी रखी जाय।

ग्रामसेवकों में यह प्रतियोगिता खण्ड स्तर, जिला स्तर, राज्य स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जावेगी। प्रथम तीन स्तरों पर सर्वोत्तम ग्रामसेवक के चुनाव के लिए प्रतियोगिता की अवधि १ अप्रैल से ३० सितम्बर १९५९ तक होगी। समस्त ग्रामसेवक एवं सेविकाएं इस प्रतियोगिता में भाग ले सकती हैं। इसके लिए प्रत्येक को ५० नये पैसे का शुल्क देना पड़ेगा। यह प्रतियोगिता कृषि, सहकारिता और पशु-चिकित्सा सम्बन्धी कार्यों के लिए आयोजित की जाएगी। विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये जावेंगे।

ग्रामों में प्रतियोगिता

खण्ड का सर्वोत्तम गांव खण्ड विकास समिति की सलाह से खण्ड विकास अधिकारी द्वारा चुना जाएगा। जिला स्तरीय चुनाव समिति खण्ड विकास अधिकारियों द्वारा सूचित किये गये समस्त ग्रामों की सफलताओं पर विचार करेंगी तथा उनमें से जिला स्तर पर सर्वोत्तम ग्राम का चुनाव करेंगी। सर्वोत्तम ग्राम का पुरस्कार राष्ट्रीय स्तर पर ५,००० रुपये, राज्य स्तर पर १,००० रुपये तथा जिला स्तर पर २५० रुपये होंगे। पुरस्कार की राशि ग्राम पंचायत अथवा ग्राम मंडल को नकद दी जावेगी, जिसका उपयोग कृषि-उत्पादन में वृद्धि करने के हेतु ग्राम के सामान्य कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में किया जावेगा।

रायगढ़ जिले में वनों का विस्तार

वनों का पुनः विस्तार करने की दृष्टि से, राज्य वन विभाग ने रायगढ़ वन मंडल में इमारती लकड़ी वाले वृक्षों विशेषतया सागौन के रोपण का कार्य प्रारम्भ किया है। इस वन मंडल में ६७२.९२ वर्गमील आरक्षित वन क्षेत्र और

७४२.० वर्गमील संरक्षित वन क्षेत्र है, जिसमें अधिकांशतः साल, साजा और बाँस के पेड़ और सागौन के कुछ कूप हैं। वन अधिकारियों ने यहां की भूमि और मौसम की स्थिति को सागौन के उत्पादन के अनुकूल पाकर यहां सागौन लगाने का अभियान प्रारम्भ किया है, जिसके अन्तर्गत ३३१ एकड़ वन-भूमि पर कीमती इमारती लकड़ी वाले वृक्ष लगाये जायँगे।

प्रस्तावित सागौन-उत्पादन के लिये उपयुक्त स्थान चुन लिए गए हैं और अन्य प्रारम्भिक कार्य जैसे, झाड़ी के जंगलों की सफाई और मलवों को जलाने जैसे हैं। सागौन उत्पन्न करने के लिए आवश्यक कार्य किये जा रहे हैं।

सूती-वस्त्र-उद्योग-गवेषणा-संस्था

राजस्व, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री बी. ए. मंडलोई ने अहमदाबाद सूती-वस्त्र-उद्योग-गवेषणा संस्था के इंदौर स्थित क्षेत्रीय कार्यालय के वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर भाषण करते हुए उन्होंने कहा कि सूती-वस्त्र-उद्योग से संबंधित सभी लोगों की तरक्की के लिए गवेषणा करनेवाली ऐसी शोध-संस्थाओं के ढांचों और कार्यप्रणाली को अधिक विकसित करने की आवश्यकता है। उन्होंने गवेषणा संस्था की कार्यपद्धति जैसे परस्पर विचार-विनिमय, परीक्षण और सूती-मिलों में की जानेवाली परीक्षण-सेवाएँ आदि की प्रशंसा की। मंत्री महोदय ने उद्योगपतियों से गवेषणा संगठन को मजबूत बनाने की जोरदार अपील करते हुए कहा कि वे उत्पादन के आर्थिक पहलुओं और वस्त्र-उद्योग की गवेषणात्मक गतिविधियों के संबंध में इन संस्थाओं से प्राविधिक सलाह लें।

इस अवसर पर श्री मंडलोई ने इस संस्था की विभाग शाखाओं में प्रवीण सफल प्रशिक्षणार्थियों को प्रशस्ति-पत्र भी दिये।

गेहूं के १७,३३३ मन बीज वितरित

होशंगाबाद जिले में हाल ही में आयोजित रबी-उत्पादन अभियान के अवसर पर सरकार द्वारा किसानों में १७,३३३ मन उन्नत किस्म के गेहूं के बीज वितरित किये गये। हरदा सहकारी बैंक ने ४,००० मन गेहूं का वितरण किया तथा जरूरतमंद किसानों में वितरण करने के लिये सम्पन्न किसानों से ३५,००० मन गेहूं के बीज प्राप्त किये गये। लगभग १६६ टन अमोनियम सल्फेट और सुपर फास्फेट का भी वितरण किया गया। चने की फसल की सुरक्षा के लिए लगभग ८०० एकड़ भूमि पर कीटाणुनाशक औषधियां छिड़की गई। ११० एकड़ भूमि के लिए हरित खाद की पूर्ति की गई।

इस अभियान के अवसर पर लगभग २२,५०० एकड़ भूमि को सिंचाई के अंतर्गत लाया गया। उक्त अवधि में जिले में आयोजित विभिन्न फसल-प्रतियोगिताओं में एक सौ से भी अधिक किसानों ने भाग लिया।

मध्यप्रदेश में खरीफ-उत्पादन अभियान

राज्य में खरीफ-उत्पादन में वृद्धि करने के लिए तैयारियां की जा रही हैं। उक्त उद्देश्य के लिए, बिलासपुर में संभागीय आयुक्त की अध्यक्षता में एक सम्भागीय समिति बनाई गई है। उप-संचालक इसके पदेन सचिव रहेंगे। इस समिति में चार अन्य सदस्य भी हैं, जिनमें से दो मध्यप्रदेश कृषक समाज और भारत सेवक समाज के प्रतिनिधि हैं।

पूर्वी निमाड़ में:—

पूर्वी निमाड़ जिल में गत फरवरी मास में 'खरीफ' के बीजों की प्राप्ति का कार्य जारी रहा। इसी अवधि में किसानों में ६६ टन उर्वरक और २८३ टन नगर मिश्र खाद का वितरण किया गया। ११ कुओं तथा २ एंजिन पम्पों को स्थापित करने के लिये तकावी भी दी गई।

सरगुजा:—

सरगुजा जिल के बैकुंठपुर सामुदायिक विकास खण्ड में खरीफ-उत्पादन अभियान आरम्भ हो गया है। खण्ड अधिकारियों द्वारा बनाये गये कार्यक्रम के अन्तर्गत अन्य बातों के अतिरिक्त प्रत्येक कृषक परिवार का विस्तृत सर्वेक्षण तथा उस विशेष परिवार की क्षमता के अनुसार योजना बनाने का कार्य भी सम्मिलित है।

ग्रामीण जलप्रदाय योजना

स्वास्थ्य मन्त्राणी रानी पद्मावतीदेवी ने जो हाल ही में रायपुर गई थीं, महाकोशल क्षेत्र की ग्रामीण जलप्रदाय-योजना-हेतु चालू वित्तीय वर्ष में स्वीकृत तीन लाख रुपये की धनराशि के शीघ्र उपयोग किये जाने की दृष्टि से जिले के जल-कष्ट-पीड़ित क्षेत्रों का दौरा किया। आपके साथ जन-स्वास्थ्य इंजीनियर भी थे।

महाकोशल की प्रत्येक जनपद सभा क्षेत्र के कुआ-निर्माण-कार्य को गति देने की दृष्टि से कलेक्टरों को यह अधिकार दिये गये हैं कि वे नवीन कुओं के निर्माण-हेतु किये गये दो लाख रुपये के प्रावधान तथा भूतकाल में जनपद सभाओं द्वारा प्रारम्भ किये गये कूओं की खुदाई को पूर्ण करने के लिये किये गये एक लाख रुपये के प्रावधान का जनहित की दृष्टि से उपयोग करें, स्मरण रहे कि शासन प्रति कुआ २,५०० रुपये की राशि जनपद सभा को देती है और प्रत्येक जनपद सभा को चार कुओं के निर्माण का अधिकार होता है।

शासन द्वारा इस बात के पूरे प्रयत्न किये जा रहे हैं कि राज्य के आन्तरिक क्षेत्रों के प्रत्येक ग्राम में, जिसकी आबादी पांच सौ या उससे अधिक हो एक कुएं का निर्माण किया जाय।

आदिवासियों तथा हरिजनों के लिए कल्याण-कार्य

प्राप्त १९५८-५९ वर्ष के प्रतिवेदन के अनुसार आदिवासियों और हरिजनों की दशा सुधारने की दृष्टि से शहडोल जिले के आदिम जाति-कल्याण विभाग द्वारा हर सम्भव प्रयास किये गये हैं।

आलोच्य अवधि में शिक्षा विभाग योजना के अन्तर्गत ज्वालामुखी, बरतार तथा गिरारी में से प्रत्येक में एक आदिवासी बालक आश्रम संचालित किया जा रहा है। इस प्रकार यहां आदिवासी बालक आश्रम हैं। पटना में एक बालिका आश्रम चल रहा है। इसके अतिरिक्त, जिले के विभिन्न स्थानों में ३७ आदिवासी तथा ६ हरिजन प्रौढ़ शिक्षा-शालाएं कार्य कर रही थीं। इन संस्थाओं द्वारा बहुत-से आदिवासियों तथा हरिजनों को शैक्षणिक सुविधाएँ मिलीं।

इन संस्थाओं के सुचारु रूप से संचालनार्थ ३१,४४७ रुपये की कुल राशि व्यय की गई तथा ३९ आदिवासी तथा हरिजन विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति के रूप में २,१७० रुपये दिये गये।

आदिवासी तथा हरिजनों का स्वास्थ्य सुधारने की दृष्टि से जैतपुर तथा अमरपुर में द्वितीय श्रेणी के २ अस्पताल तथा केशवाही, गोहचारु, खेरहा, बनवारी, अमझोरा, बिलासपुर तथा निपनिया के ७ चिकित्सालयों में उनके लिए सब सम्भव चिकित्सा-सुविधाओं

व्यवस्था की गई है। आलोच्य अवधि में इस कार्य के लिए ३५,९५१ रुपये की कुल राशि व्यय की गई।

आलोच्य अवधि में प्रति आदिवासी परिवार को एक घर के लिए ७५० रुपये के हिसाब से ६० गृहहीन परिवारों को कुल ४५,००० रुपये का ऋण दिया गया। इन परिवारों को निपनिया, सर्रा, निमहन और जैतहरी ग्रामों में बसाया जा रहा है।

आदिवासी क्षेत्रों में आवश्यक सड़कों का निर्माण करके उन्हें आवागमन की सुविधाएँ दी गई हैं। आलोच्य अवधि में ५० मील लम्बी सड़कों के निर्माणार्थ स्वीकृत २५,००० रुपये में से ६,००० रुपये के अनुमानित व्यय पर १६ मील लम्बी मैका-रसमोहनी सड़क तथा १५,००० रुपये के अनुमानित व्यय पर ३० मील लम्बी पाली-देवरी सड़क का निर्माण किया जा रहा था।

आदिवासी क्षेत्रों में पेय जल की पर्याप्त व्यवस्था के लिए १४,००० रुपये के अनुमानित लागत पर १४ कुए खोदे जा रहे थे। इनमें से सोहागपुर तहसील में ८ कुए, बांधोगढ़ में २ कुए, ब्यौहारी में ३ कुए और पुष्पराजगढ में १ कुआ खोदा जा रहा है।

लाख के प्रायोगिक उद्योग में लगभग ९० आदिवासियों को रोजगार भी दिया गया।

श्रमदान तथा ग्राम सफाई पक्ष

समस्त राज्य में श्रमदान और ग्राम-सफाई पक्ष अत्यन्त उत्साह से मनाया गया। जबलपुर जिले के कुंडम विकास खण्ड की जनता ने इस इस पक्ष के दौरान ६,२३२ रुपये के मूल्य का श्रमदान किया। उक्त खण्ड के हरदुली गांव ने ४,१२२ का श्रमदान दिया और यह गांव खण्ड के ग्रामों में सर्वोत्कृष्ट निर्णीत किया गया। चौराई-झिरिया सड़क पर आठ मील तक मरम्मत की गई। अब इस मार्ग में मोटर का आवागमन सम्भव हो गया है और इस प्रकार कृषि-उत्पादन का यातायात भी हो सकेगा। यह इस पक्ष की उल्लेखनीय उपलब्धि है। इसी प्रकार पाबलगांव खण्ड की जनता ने चार मील लम्बी सड़क बनाई, चार पुराने कुओं तथा एक पुराने तालाब की मरम्मत की तथा दो नये कुयें खोदे। इस पक्ष में कुल ४,७५० रुपये का श्रमदान किया गया।

मातृसदन का उद्घाटन

मुख्य मंत्री डाक्टर कैलासनाथ काटजू ने बमलावा ग्राम में राजगढ़ विकास खंड मातृसदन का उद्घाटन किया। इस वर्ष राजगढ़ जिले के तीन विकास खण्डों में इस प्रकार के १४ और सदन स्थापित किये जाएंगे।

इस अवसर पर ग्रामवासियों को सम्बोधित करते हुए मुख्य मंत्री ने कहा कि ग्रामों में बहुधा शिशुओं का जन्म अस्वास्थ्यकर तथा अस्वच्छ वातावरण में होता है। इसका फल यह है कि शहरों की अपेक्षा गांवों में माताओं और बच्चों की बहुत संख्या में मृत्यु होती है। अतः यह आवश्यक है कि गांवों में अधिकाधिक मातृसदन खोले जायें। यह जरूरी नहीं है कि गांव के मातृ सदन का भवन पक्का अथवा बड़ा हो। वह स्वच्छ तथा आरामदायक होना चाहिये।

डाक्टर काटजू ने उपस्थित ग्रामीणों के समक्ष ग्राम विकास के एक दूसरे पक्ष पर भी प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि अब किसानों को समाज की उन्नति के लिये मिलकर प्रयत्न करना चाहिये। यदि गांव के सब किसान सहकारी समिति में सम्मिलित हो जाय तो वे गांव की काया पलट सकते हैं और अपने संयुक्त परिश्रम द्वारा उसे सुखी और समृद्ध बना सकते हैं।

इसके पश्चात्, मुख्य मंत्री जी ने इस अवसर पर आयोजित एक छोटी स्वास्थ्य-प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

हर ग्राम में मुफ्ती दवाखाना

स्त्री, पुरुष एवं बालकों के प्रायः सभी रोगों की सहस्त्रोंनुभूत सफल १७५) रुपये की बहुमूल्य १४० दवाइयों से परिपूर्ण २४ सेर वजन के "बाहुबलि चिकित्सा बॉक्स" सेवन विधि को सरल पुस्तक सहित मात्र शीशी पैकिंग पेटी आदि ऊपरी खर्च ३५) रुपये में पूरा दवाखाना मुफ्त मंगा लें। ५) रुपये पेशगी शेष ३०) रुपये की वी. पी. मंजूरी तथा पास की स्टेशन सहित पूरा पता भेजें।

अखिल हिन्द बाहुबलि औषधालय,
ललितपुर (झांसी) उ. प्र.

(१६४–१९)

न्या. रूप भा. १३ प्रवर्त्तन प्र. क्र. ३०।५८ ई. दी.

डिक्री के प्रवर्तित न कराने के कारण प्रगट करने

के लिए सूचना-पत्र

(आॅ. २१, रूल २२, सं. वि. सं.)

न्यायालय सिविल जजी द्वितीय श्रेणी लहार

डब्बूलाल पुत्र खूदे, जाति वैश्य, साकिन आलमपुर .. हकरसी अर्जदार।

विरुद्ध

रघुवीर पुत्र पुल्लू, जाति कायस्थ, साकिन विडरा .. .. हरकरसी कर्जदार।

डिक्री धन ५७८.८४ नये पैसे।

क्योंकि डिक्रीदार ने इस न्यायालय में सम्पत्ति संबंधी न्यायालय के दीवानी प्रकरण क्रमांक १३/५५ की डिक्री के प्रवर्त्तन के लिये आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया है।

इसलिये आपको सूचित किया जाता है कि आप इस न्यायालय में दिनांक २३ अप्रेल १९५९ को स्वयं या किसी अभिभाषक द्वारा या नियमानुसार अधिकार दिये गये ऐसे व्यक्ति द्वारा, जो उक्त मामले की बातों से परिचित हो उपस्थित होकर यदि आप डिक्री प्रवर्त्तित न किये जाने के बारे में कोई आपत्ति रखते हों, प्रस्तुत करें।

आज दिनांक २१ मास ३ सन् १९५९ ई० को मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

न्यायाधीश

अमरचन्द दालानी,

सिविल जज द्वितीय श्रेणी लहार (म. प्र.)

१६९—१९

मेरिज आफिस भिन्ड कलेक्टोरेट

मि० नं० १।५९ मैरिज ऐक्ट।

गोविन्द पुत्र शोभाराम जाति लोध राजपूत साकिन मुड़िया खोरा आयु ५९ साल पेशा कृषि.—पति

धर्मो पत्नी गोविन्द जाति लोध राजपूत साकिन मुड़ियाखेरा, आयु ४५ साल.—पत्नी।

आवेदन-पत्र आधीन धारा १५, दि स्पेशल मैरिज एक्ट रूल सन् १९५४।

नोटिस

उपरोक्त विषय में प्रार्थीगण ने निम्नांकित आशय का आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया है।

१. पक्षों के नाम.—

१. पति गोविन्द पुत्र शोभाराम जाति लोध राजपूत, निवासी मुड़ियाखेरा।।

२. पत्नी धर्मो पत्नी गोविन्द, जाति लोध राजपूत, साकिन मुड़ियाखेरा।

२. आयु तथा जन्म का दिनांक.—

१. पति गोविन्द आयु ५९ साल।

२. पत्नी धर्मो आयु ४५ साल।

३. स्थायी निवास स्थान यदि कोई हो—ग्राम मुड़ियाखेरा, परगना व जिला भिण्ड।

४. वर्तमान निवास स्थान—ग्राम मुड़ियाखेरा, परगना व जिला भिण्ड।

५. पक्षों के विवाह से पूर्व का परस्पर संबंध, पति-पत्नी की भांति व माह बैशाख संवत २००४ से रह रहे हैं।

६. गोविंद पुत्र शोभाराम पति व धर्मो पत्नी गोविन्द, के मध्य व माह वैशाख संवत २००४ को सम्पूर्ण रस्मों के अनुसार विवाह-संस्कार संपन्न हुआ और हम घोषणा करते हैं कि उपरोक्त दिनांक से हम पति-पत्नी के रूप में साथ-साथ रह रहे हैं। हम इसके द्वारा घोषणा करते हैं कि:—

(१) आवेदन-पत्र में लिखित दिनांक को हममें से किसी एक की भी एक से अधिक जीवित पति या पत्नी नहीं थीं।

(२) उनमें से कोई भी मूढ या विक्षप्त नहीं है।

(३) रजिस्ट्रांकन के दिनांक को उन दोनों ने २१ वर्ष की आयु पूरी कर ली है।

(४) वह निषेधित सम्बन्धों की पीढ़ी के अन्तर्गत नहीं आते हैं। उसका विवाह स्पेशल मैरिज ऐक्ट सन १९५४ के प्रभावशील होने से पूर्व सम्पन्न हुआ था तथा उन दोनों को शासित करनेवाली विधि का प्रभाव रखनेवाले रुढ़ि या रीति के रिवाज के अनुसार, उनके बीच विवाह सम्बन्ध अनुज्ञापित है। यद्यपि उपरोक्त विधान के अनुसार वह निषेधित संबंधों की पीड़ी के अन्तर्गत नहीं आते हैं।

(५) वह दोनों विवाह पदाधिकारी के विचाराधिकार के भीतर ग्राम मुड़ियाखेरा परगना भिण्ड, जिला भिण्ड में ऐसे काल से निवास कर रहे हैं, जो इस आवेदन-पत्र के दिनांक से ३० दिन से कम का नहीं है। वह यह घोषणा करते हैं कि उपरोक्त विवरण उनके अधिकतम ज्ञान तथा विश्वास से सही है।

(६) यह कि हम दोनों के उक्त सम्बं दो पुत्र क्रमशः मुकटसिंह आयु ९ वर्ष व द्वितीय पु अर्जुनसिंह आयु लगभग ७ वर्ष के उत्पन्न हुये हैं भविष्य में हम दोनों से उत्पन्न इन दोनों पुत्रों के आगे यदि कोई और सन्तान भी हों तो, उन उत्तराधिकार के संबंध में कोई बाधा उत्पन्न हो, इस कारण यह प्रार्थना वास्ते रजिस्ट्रे पेश है।

अतएव, धारा १६ दि स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत जर्ये नोटिस हाजा हर आम व खास को सूचना दी जाती है कि इस रजिस्ट्रेशन शादी से जिसको उज्र हो, वह तारीख इशाअत से ३० दि के अन्दर अपनी आपत्ति पेश करे। नियत अवधि के पश्चात फिर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

एल. एस. टायटस,
मैरिज ऑफिसर,
मंडल भिण्ड, (म. प्र.)

(११०—१८)

खजुराहो

विश्वविख्यात स्थापत्यकला की अनुपम देन

यदि आपने कभी खजुराहो के विख्यात मंदिर नहीं देखे, तो यह
पुस्तक अवश्य देखिये
यदि देखे हैं
तो उनकी स्मृति इस पुस्तक से ताजा रखिये

रायल अठपेजी, आर्ट पेपर पर मुद्रित १०२ प्लेट
अंग्रेजी और हिन्दी में
मंदिरों के इतिहास का मनोरंजक परिचय
नयनाभिराम मुद्रण : आकर्षक जिल्द : मूल्य १० रुपये

प्राप्तिस्थान
व्यवस्थापक:—प्रकाशन शाखा, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय
जयाजी चौक, ग्वालियर, म० प्र०

कार्यालय कार्य पालन यंत्री चम्बल हाईडल एन्ड इरिगेशन स्कीम ट्रांसमिशन सिविल डिविजन उज्जैन, मध्यप्रदेश

निविदा क्रमांक २, ५९-६०.

समस्त रजिस्टर्ड ठेकेदारों से निम्नांकित कार्य के हेतु, उपरोक्त कार्यालय में, पत्रक में निहित विवरण के अनुसार परसेंटेज रेट निविदा दोपहर ४ बजे तक पुन्हः आमंत्रित किये जाते हैं. निविदा उसी दिन उपस्थित ठेकेदारों के समक्ष दोपहर ४-३० बजे खोले जायेंगे:—

क्र.	कार्यस्थल.	कार्य का विवरण.	अनुमानित धनराशि.	अर्नेस्ट मनी.	टेंडर आमंत्रित होने की तिथि.	कार्य समाप्त होने की अवधि.
१	२	३	४	५	६	७
			रुपये.	रुपये.		
१	ग्रिड सब-स्टेशन साईट ज्योती नगर कालोनी, उज्जैन.	सब-डिविजनल ऑफिस का निर्माण ..	१२,२७५	२४६	२७-४-५९	४ माह.
२	ग्रिड सब-स्टेशन साईट पोलो ग्राउन्ड, इन्दौर	रोड्स एवं कलवर्ट्स का निर्माण ..	१८,९३५	३७९	२७-४-५९	२ माह.

निविदा फार्म कार्यालय में किसी भी चालू दिन प्रति निविदा फार्म मूल्य २) पर निविदा आमंत्रित होने की तिथि हे से एक सप्ताह पूर्व से दिये जायेंगे.

निविदा के साथ की अर्नेस्ट मनी नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स या ट्रेझरी चालान के रूप में ही स्वीकृत की जायेंगी . निविदा आमंत्रित होने के नियोजित दिन निविदा फार्म का क्रय नहीं होगा.

निम्न हस्ताक्षरकर्त्ता को बिना कारण बताये किसी भी अथवा समस्त निविदा अस्वीकृत करने का अधिकार है.

श्री. श. तेलंग,
कार्य पालन यंत्री, ट्रांसमिशन सिविल डिविजन,
उज्जैन. (म. प्र.)

१६८-१९-२०

नोटिस

जर्ये हाजा आवाम की जानकारी के लिये मुश्तहर किया जाता है कि मिन मुश्तहर कराने वाले की जायदाद गैर मनकूला मोहल्ला कानूगोयान में वाके है और कुछ लोग मुसलमान की जायदाद समझ कर हड़प करना चाहते हैं व कुछ लोग फर्जी व नुमायशी मालिक बनकर उसको बेचना चाहते हैं इसलिये आवाम को मुत्तला किया जाता है कि वह मिनमुकिर की जायदाद की रहन व बय न करें वरना उनका पैसा बेकार जाकर उनको मुकद्दमे वाजी में और परेशानी होगी और उनका रहन व बय नाजायज व झूंठा समझा जावेगा। फक्त तारीख १३ अप्रेल १९५९।

मुजफ्फरअली वल्द असगरअली,
कौम मुसलमान, साकिन मोहल्ला कानूगोयान, ग्वालियर सिटी मुश्तहर कराने वाला——

(१७३–१९)

सफेद दाग

सतत् परिश्रम एवं खोज के बाद सफेद दाग की औषधि का निर्माण किया गया है । हजारों ने इसका अनुभव करके लाभ उठाया है । दवा का मूल्य ६) रुपया विशेष जानकारी के लिये विवरण पत्र मुफ्त मंगाकर देखें। नक्कालों से सावधान रहें।

वैद्य बी. आर. बोरकर, आयुर्वेद
भवन (२५) मु. पो. मंगरूळ पीर,
जिला अकोला (विदर्भ) ।

कार्यालय नगर पालिका गोहद

टेण्डर नोटिस

रजिस्टर्ड ठेकेदारान सी. व डी. क्लास, मध्यप्रदेश को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित कार्यों के टेण्डर, दिनांक २० अप्रेल १९५९ को ३ बजे तक कार्यालय नगरपालिका में लिये जायेंगे.

१. ठेके की शरायतें व एस्टीमेंट वगैरह अलावा तातयलात के कार्यालयीन समय में देखे जा सकते हैं.

२. टेण्डर देने के पेश्तर मौका देखकर टेण्डर पेश करना होगा तमाम लीड़ लिफ्ट व दीगर महसूल इसमें शामिल है.

३. कमेटी को अधिकार होगा कि एस्टीमेंट रेट से कम या ज्यादा का टेण्डर मंजूर करें या रिजेक्ट करें इस सम्बन्ध में में किसी को पूछने का कोई अधिकार न होगा न कोई उज्र सुना जायगा.

४. ठेकेदारान को लायसेंस अपने साथ लाकर दिखाना होगा.

५. डिपाजिट नगद जमा खजाना कराना होगा.

	नाम काम.	मंजूरशुदा रकम.	डिपाजिट	कीमत टेंडर.	तारीख खत्म काम.
		रुपये.	रुपये.	रुपये.	
१	कार्यालय का वरांडा	१,८००	९०	१	१५-६-५९
२	मरम्मत नाला कालिया कंथ, एस्टीमेट नम्बर १	१५९	१०	„	„
	„ २	५०४	२५	„	„
	„ ३	१,१४०	६०	„	„
	„ ४	१,०२८	५५	„	„
३	मरम्मत कुंआ बाबा गोपालदास	८०९	४५	„	„
४	मरम्मत कुंआ, रेनी	१,५००	७६	„	„
५	मरम्मत खरंजा विरखडी गेट	१,०८३	५५	„	„
६	स्फाल्ट रोड किले से डाक बंगला तक	६,२१०	३१५	„	„

चीफ एक्जीक्यूटिव्ह ऑफिसर, म्युनिसिपेलिटी, गोहद,

१६७-१९

तहसील कार्यालय राघौगढ़

उनवान

मानसिंह पुत्र रामलाल अहीर निवासी सागर।

विरुद्ध

मु. हल्की बेवा राजहंस अहीर सागर फौत ला-वारिस।

सर्व-संबंधित को सूचित किया जाता है कि ग्राम सागर की आराजी नं. १३७-१) १, १६४-१-६॥। (१६४-२-॥), कुल रकबा ८।१ लगानी ९-५३ का असल कृषक मु. हल्की बेवा राजहंस अहीर सागर लावारिस फौत हो चुकी है, उप-कृषक मानसिंह पुत्र रामलाल अहीर ने पक्के कृषक के स्वत्व प्राप्ती का दावा मि. नं. ९।५९-२१ तहसील राघोगढ़ में किया है, जिसमें तारीख पेशी १२-५-५९ नियत है। अतः जिस किसी को उज्र हो तो नियत दिनांक पर तहसील राघोगढ़ में उपस्थित हो आपत्ति-पत्र पेश करो, अन्यथा एक तर्फा में आदे दिया जावेगा और नियत दिनांक के बाद को आपत्ति नहीं सुनी जावेगी।

वृजबिहारीलाल सक्सेना,

तहसीलदार परगना राघोगढ़

(१५७—१९).

मालव के कुछ महिला रत्न

(पृष्ठ ६ का शेष)

कात्यायनी

कात्यायनी और काली उपासिकाएँ इसी अवंती जनपद की बौद्धकालीन प्रसिद्ध साधिकाएँ मानी गई हैं। बौद्ध साहित्य में इनका नाम श्रद्धा-सहित लिया जाता है। कात्यायनी अतीव श्रद्धामयी थी, इसको बुद्ध ने 'अनुश्रव' का पद देकर सम्मानित किया था।

महाश्वेता-कादम्बरी

महाकवि वाण ने अपनी रचना में जिस महाश्वेता और कादंबरी के मनोहारी वर्णन पर अपनी प्रांजल प्रतिभा का अर्घ्य अर्पित किया है, संस्कृत-साहित्य में वाण की तुलना में कोई कथा-लेखक और गद्यकाव्य का प्रणेता अन्य नहीं हुआ। इस महाकवि ने जिसकी स्वर्गीय प्रणय-कथा अंकित की है। उसके साथ अवंती को शब्द-रत्नों से अलंकृत कर अत्यंत रमणीय रूप में प्रस्तुत किया है। इस कथा का माध्यम ही अवंती को बनाया है। चाहे महाश्वेता और कादंबरी कल्पित कथा की सन्नारी क्यों न हों, किंतु साहित्य की सुप्रसिद्ध सुषमामयी स्वर्गीय-सुंदरी होकर भी जनमानस की प्रहरी बनी हुई हैं।

अवंती सुंदरी

धारा नगरी के प्रसिद्ध पंडित धनपाल की विदुषी बहिन अवंती सुंदरी मालव की महिमान्विता महिला है। यह अपने भाई की तरह ही पंडिता और प्रतिभाशालिनी प्राकृत कवियित्री रही है। इसकी कुछ प्राकृत कविताएँ अलंकार शास्त्र के ग्रंथों में उद्धृत हुई हैं। कोषों की टीकाओं में भी मिलती है। धनपाल की पुत्री इला और बहिन अवंती सुंदरी दोनों ही काव्य-साहित्य में प्रवीण और प्रसिद्ध रही हैं।

मालविका

विदिशा में प्रच्छन्न रूप से राजकुल में रहनेवाली विदर्भ राजकुमारी मालविका इतिहास-प्रमाणित महिला है। मालविकाग्नि मित्र-नाटक की रचना इसी आर्य-रत्न की मधुर, मनोहर प्रणय-कथा से सम्बन्धित हुई है। इस कारण साहित्य में मालविका का स्थान महत्वपूर्ण बना हुआ है। मालविका ने संगीत-नृत्य एवं चित्र-कला की शिक्षा लेकर प्रवीणता प्राप्त की थी और अग्निमित्र को अपने रूप-सौंदर्य और कला के कारण विमुग्ध बना लिया था। अंततः महारानी धारिणी के सहयोग से और विदूषक के प्रयास से वह महारानी बन गई थीं। मालविका के नाम में ही मालव का ममत्व भरा हुआ है।

रूपमती

मांडवगढ़ की प्रणय-कथा की सम्राज्ञी रूपमती का नाम कौन नहीं जानता? रूपमती का महल आज भी उसकी रोमांचक-कथा का स्मारक-साक्षी बनकर खड़ा है। सारंगपुर की यह सुंदरी अपनी कला की मोहिनी से मालव के सुल्तान बाजबहादुर की पटरानी सुल्ताना बन गई थी। बाजबहादुर के साथ वह अंत तक एक आदर्श हिंदू रमणी की तरह रही और उसी की प्रणय-वेदी पर बलि हो गई। सम्राट् अकबर की आंखें उस पर लग गई थीं, वह साधारण भी होती तो मालवे की सुल्तानी को ठुकराकर भारत की मुगल-सम्राज्ञी सहज ही बन सकती थी, पर वह अपने समय की आदर्श नारी, वीर पत्नी थी। मालवे की समाधि पर सम्राज्ञी बनने की अपेक्षा बाजबहादुर के स्नेह पर समर्पित होकर प्राणों से खेल गई और अपना नाम इतिहास में अंकित कर गई। मांडव का इतिहास रूपमती के अनुराग से रंजित है, वह शापित किन्नरी होकर मालव में अवतरित हुई थी। उसकी स्वर-लहरी आज भी मांडव में ही नहीं, मालवे के मलय के साथ गुंजरित है। 'रूपमती दुखिया भई, बिना बहादुर बाज' की आवाज रसिक समाज के कानों में निकुंजों से आज भी आती रहती है। कवियित्री, गायिका, कलाकार और वीर नारी के साथ आदर्श-प्रणयिनी के रूप में वह अमर हो गई है।

अहिल्यादेवी

होल्कर वंश की यह पावन नारी मालवे के इतिहास में ही नहीं, भारत के इतिहास में अपनी अमर गाथा लिए हुए है। वीरता, धार्मिकता, शासन-पटुता और कुशलता में वह अप्रतिम, और अनन्य है, शौर्य-साधना और भावना का त्रिवेणी-संगम का नाम ही अहिल्यादेवी है। हजारों वर्ष पूर्व एक अहिल्या हुई थी। राम ने उसका उद्धार किया था और वह कथा-गाथाओं में जनवाणी पर अब तक अमर हो गई है। हजारों वर्ष के बाद होल्कर वंश की महारानी अहिल्या ने अपना, अपने वंश का और देश के अनेक अज्ञात स्थानों का उद्धार कर कथा-गाथा में ही नहीं, इतिहास में भी अपना नाम अमर बना, जनवाणी पर यशः शरीर से सजीव कर लिया है। साधारण शिक्षित होकर भी वह कुशल शासिका सिद्ध हुई है। उसने धन का ही सद्व्यय नहीं किया, जीवन का भी सदुपयोग किया है। मालव-भूमि को अहिल्या पर गर्व है।

महारानी बायजाबाई सिंधे, मैनाबाई, आदि और भी कुशल, धार्मिक और शासन-क्षम महिलाएँ इस मालव-भूमि में हुई हैं, पूर्व, प्राचीन, मध्ययुगीन इतिहास में भी इस प्रदेश की अनेक नारी-रत्नों ने जन्म लिया है। उनकी स्मरण-सूची भी साधारण नहीं है। यहाँ हमने उनमें से कुछ सुपरिचित एवं सुप्रसिद्ध महिलाओं का ही संकेत किया है। हमारे संकलित कोष में इस प्रदेश की नारियों के इतने अधिक नाम हैं कि उन पर स्वतंत्र इतिवृत्त लिखा जा सकता है।

……

लोकतन्त्र के आधार

(पृष्ठ १४ का शेष)

भी कमजोर न हो और व्यक्ति की स्वतन्त्रता और कार्यशक्ति का हनन न हो। हम सुदृढ़ शासन के साथ विकास भी करना चाहते हैं। वैसे तो कोई भी सुदृढ़ शासन देश में न्याय, अमन चैन-कायम रख सकता है, शत्रु से रक्षा की व्यवस्था कर सकता है तथा सामाजिक और आर्थिक उन्नति भी कर सकता है। किन्तु, समाज का विकास तो तभी होगा जब प्रतिभावान व्यक्तियों को देश के विकास की योजना के अंतर्गत उद्योग, सम्पत्ति के उपभोग तथा अपनी आर्थिक उन्नति के लिए, प्रयोग करने और संघटन बनाने का अधिकार हो।

इन विषयों में व्यक्ति को स्वतंत्रता रहनी चाहिए। लोकतंत्री सरकार का यह प्राथमिक कर्त्तव्य है कि वह व्यक्ति-उद्योग को प्रोत्साहन और ऐसे अवसर दे, जिससे सबका लाभ हो। समाज की भलाई और प्रगति के लिए सरकारी योजना और नियंत्रण या देखरेख भी उतनी ही आवश्यक है, जितना व्यक्तिगत उद्योग। यदि व्यक्तिगत उद्योग न हो तो समाज की उन्नति रुक जाएगी और सरकारी योजना न हो तो विश्रृंखलता फैल जाएगी।

शासन की गतिविधि

राजधानी-योजना के लिए मंत्रि-परिषद् समिति

मन्त्रि-परिषद् की एक बैठक में यह निर्णय किया गया कि भोपाल-राजधानी योजना से सम्बन्धित विषयों पर शीघ्र कार्यवाही के लिए एक मंत्रि-परिषद्-समिति गठित की जाय। इस योजना से सम्बन्धित प्रश्न प्रायः इस प्रकार के हैं, जिन पर शीघ्र कार्यवाही की जाय। इसके लिए यह आवश्यक पाया गया कि एक मंत्रि-परिषद्-समिति गठित की जाय, मंत्रि-परिषद् के निर्णयों की अधिस्वीकृति के साथ उचित समय पर निर्णय ले सकने में समर्थ होगी। इस मंत्रि-परिषद् समिति में मुख्य मंत्री, राजस्व मंत्री, शिक्षा मंत्री, वित्त मंत्री, लोक-कर्म मंत्री तथा श्रम मंत्री होंगे।

मंत्रि-परिषद् ने आयुर्वेद महाविद्यालय, रायपुर से संलग्न २५ अतिरिक्त शय्यावाले एक चिकित्सालय के प्रारम्भ करने तथा महाविद्यालय में अध्यापन-कार्य के लिए अतिरिक्त कर्मचारियों की भी स्वीकृति प्रदान करने का निर्णय किया।

एक दूसरे निर्णय द्वारा, मंत्रि-परिषद् ने बसों द्वारा यात्रा करनेवाले यात्रियों को दिये गये टिकटों पर कर लगाने से सम्बन्धित एक विधेयक विधान-सभा के चालू सत्र में प्रस्तुत करने का निश्चय किया। नगरपालिका-सीमाओं के अन्दर चलनेवाली बसों पर यह प्रस्तावित कर नहीं लगेगा।

मंत्रि-परिषद् ने जीवाजीराव परमार्थिक-निधि से आवश्यक राशि देकर भिण्ड जिले के पवई ग्राम के माता मन्दिर के जीर्णोद्धार की स्वीकृति प्रदान करने का निर्णय किया।

खेतिहर मजदूरों की न्यूनतम मजदूरी का निर्धारण

असंगठित खेतिहर मजदूरों के हितों की रक्षा करने तथा आगे बढ़ाने के लिए राज्य शासन ने उनकी न्यूनतम मजदूरी निर्धारित करने तथा उन्हें संशोधित करने का निर्णय किया है। इस कार्य के लिए एक समिति गठित की गई है, जिसमें शासकीय तथा अशासकीय सदस्य हैं।

इस समिति ने आवश्यक जानकारी प्राप्त करने तथा जनमत जानने-हेतु एक विस्तृत प्रश्नावली जारी की है। इस प्रश्नावली का प्रथम भाग सामाजिक सुरक्षा की समस्या से सम्बन्धित है तथा दूसरे भाग का संबंध उन लोगों से है, जो खेतिहर मजदूरों के विषय में विस्तृत जानकारी एकत्रित करेंगे।

निस्तार-समिति द्वारा प्रश्नावली जारी

राज्य वन-निस्तार नीति-समिति ने राज्य में वन-निस्तार की समस्या से सम्बन्धित जो विस्तृत प्रश्नावली जारी की है, उसके उत्तर भेजने की अन्तिम तिथि समिति ने ३० अप्रैल, १९५९ तक बढ़ाकर दी है। उल्लेखनीय है कि इसके पूर्व उत्तर प्रेषित करने की अन्तिम तिथि ३१ मार्च निश्चित की गई थी।

विधान सभा सदस्यों और वन विभाग के अधिकारियों के अतिरिक्त यह प्रश्नावली राज्य की समस्त ग्राम-पंचायतों, न्याय-पंचायतों और अन्य ग्रामीण और शहरी एजेन्सियों को भेजी गई है।

अप्रैल-सितम्बर १९५९ के लिए आयात-नीति

भारत सरकार के असाधारण सूचना-पत्र में अगली छमाही अर्थात् अप्रैल-सितम्बर, १९५९ के लिए आयात-नीति की घोषणा कर दी गई है। इसके अनुसार रंगने और चमड़ा कमाने का सामान, ब्लीचिंग पाउडर, एस्बस्टस पैकिंग, छोटे मोटर इंजन, गैरेज टूल, सोडा का हाइड्रोसल्फाइट, अरबी गोंद, कार्क का सामान और विज्ञान तथा गणित के यंत्रादि के आयात-कोटे बढ़ाए गए हैं। दवाओं में मरक्यूरिक क्लोराइड, फास्फोरिक एसिड और डाइकेलसियम फास्फेट के लिए आयात-लाइसेंस नहीं दिए जाएंगे। बड़े उद्योगों को लम्बी अवधि के लिए आयात-लाइसेंस दिए जाएंगे, ताकि वे उत्पादन के लिए ठीक तरह से योजाना बना सकें और काफी समय पहले सस्ती दर पर कच्चा माल आयात कर सकें।

अब तक केवल वास्तविक उपभोक्ताओं को ही तांबे और जस्ते के लिए आयात-लाइसेंस दिया जाता था। अब अच्छी साख वाले आयातकों को भी इसके आयात-लाइसेंस दिए जाएंगे। वास्तविक उपभोक्ताओं को अब और अधिक वस्तुओं के आयात के लिए लाइसेंस दिए जाएंगे।

पाकिस्तान से आयात के लिए जो सामान्य लाइसेंस हैं, उसकी अवधि तीन महीने के लिए और बढ़ा दी गई है, वहां से अब कच्चा चमड़ा और खालें भी आयात की जा सकेंगी।

अनाज का राजकीय व्यापार

राष्ट्रीय विकास परिषद् ने खाद्य तथा कृषि मंत्री की अनाज के राजकीय व्यापार-योजना पर अपनी सहमति प्रकट की। भारत सरकार की इस योजना के दो भाग हैं। एक, अन्तःकालीन और दूसरी, पक्की योजना। अन्तःकालीन योजना के अंतर्गत थोक व्यापारियों को लाइसेंस प्राप्त अधिकारियों की तरह काम करने की अनुमति होगी, जो सरकार की तरफ से किसानों से निर्धारित भाव पर अनाज खरीद सकेंगे। इसके अलावा उन्हें खुदरा व्यापारियों को नियंत्रित भाव पर बेचने की छूट होगी। राज्य-व्यापार का अंतिम रूप यह होगा कि गांवों की सेवा-सहकारी समितियों के जरिये किसानों का फालतू अनाज जमा किया जाएगा और सहकारी संस्थाओं के द्वारा बाजार में भेजा जाएगा। फिर खुदरा व्यापारियों तथा उपभोक्ताओं की सहकारी संस्थाओं द्वारा उसका वितरण किया जाएगा। परिषद् इस से सहमत थी कि यह योजना हर राज्य में चालू की जाए।

Digitized by Arya ... otri

आदिवासियो के करमा-नृत्य का एक दृश्य

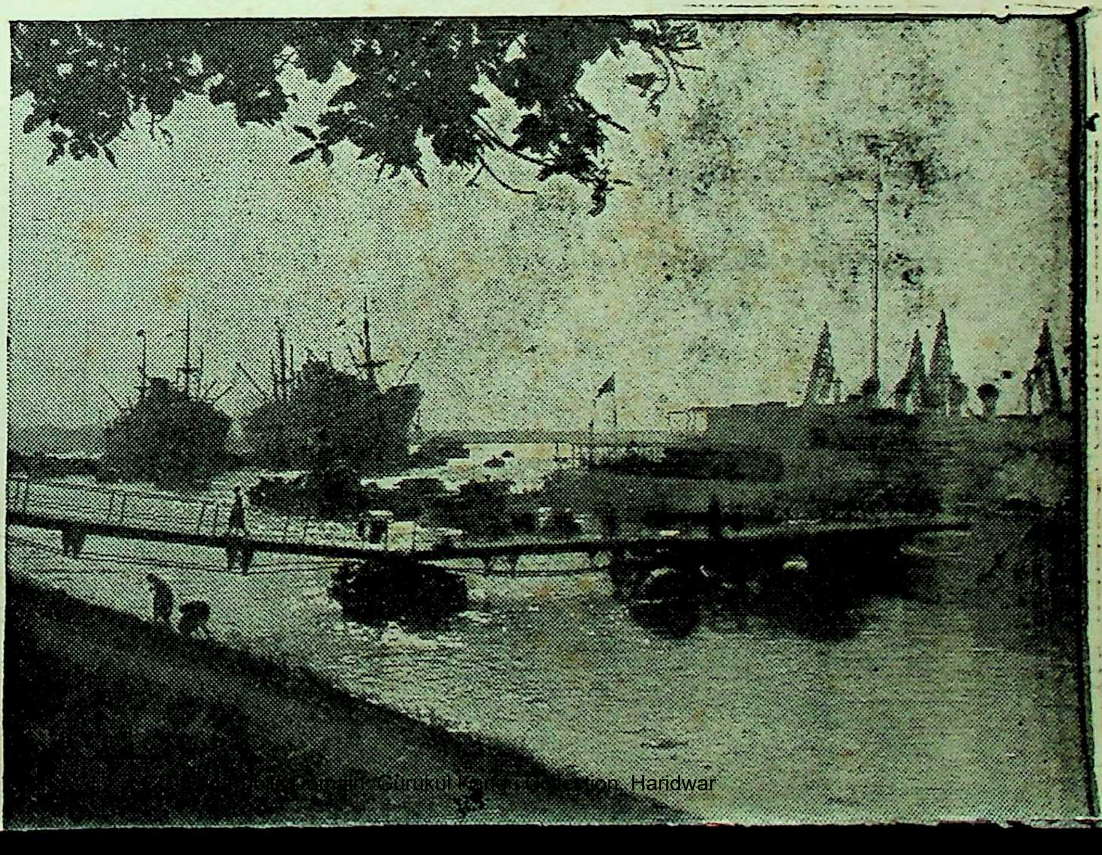

कलकत्ता में सूर्यास्त के समय
हुगली नदी का सुन्दर दृश्य

Registered No. J. 158
Licenced to post Without prepayment

MADHYA PRADESH SANDESH

वार्षिक मूल्य छह रु
Licence No. P.

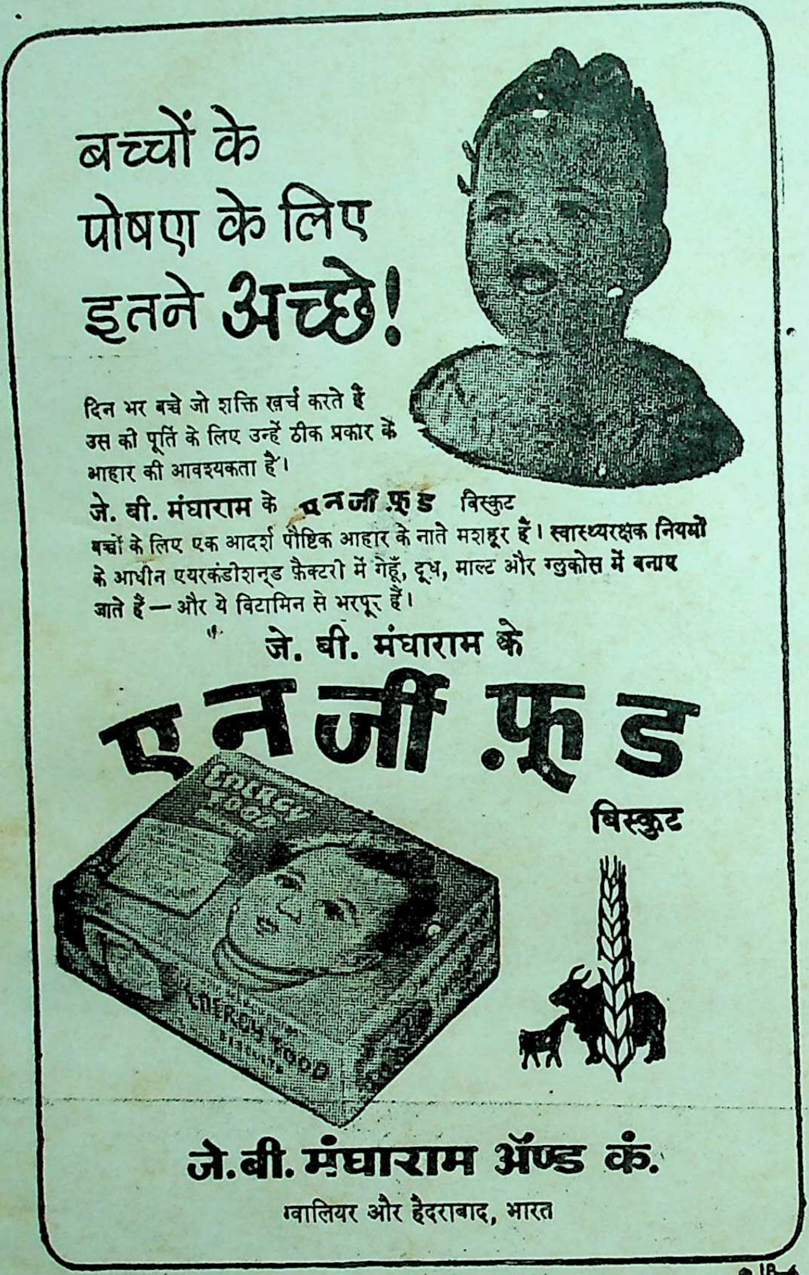

बच्चों के
पोषण के लिए
इतने अच्छे!

दिन भर बच्चे जो शक्ति ख़र्च करते हैं उस की पूर्ति के लिए उन्हें ठीक प्रकार के आहार की आवश्यकता है।

जे. बी. मंघाराम के एनर्जी फ़ूड बिस्कुट बच्चों के लिए एक आदर्श पौष्टिक आहार के नाते मशहूर हैं। स्वास्थ्यरक्षक नियमों के आधीन एयरकंडीशन्ड फ़ैक्टरी में गेहूँ, दूध, माल्ट और ग्लुकोस में बनाए जाते हैं — और ये विटामिन से भरपूर हैं।

जे. बी. मंघाराम के
एनर्जी फ़ूड
बिस्कुट

ENERGY FOOD

जे.बी. मंघाराम ॲण्ड कं.
ग्वालियर और हैदराबाद, भारत

•18-6

रेडियो सीलोन मिलाइए—जे. बी. मंघाराम का नया शो "जे. बी. मंघाराम का संगीत खजाना" प्रत्येक रविवार को प्रातः १० बजे से १०.४५ बजे तक सुनिये और १००) का नगद पुरस्कार लीजिये

स्थानीय एजेन्ट—
प्रीतम स्टोर्स, जयाजी चौक व पाटनकर बाजार, लश्कर

तहसील कार्यालय राघौगढ़

मि० नं० २१५९।२१.

उनवान

पन्नालाल पुत्र औंकार गाड़री सागर।

विपरीत

मु. हरवाई पत्नी करनसिंह फौत वा

ला पता।

सर्व-संबंधित को सूचित किया जाता है सागर की आराजी नं. ८६-१।।।, ८७- ८८-२।।४, ९०-२।४, ९१-१।२ कुल १०।।४ का पक्का कृषक मु. हरबाई बेवा कर लावारिस फौत है। उप कृषक पन्नालाल ने आराजी को पक्के कृषकत्वता पर लेने के मि. नं. २१५९ २१ से तहसील राघो दावा किया है और तारीख पेशी ११-५-५९ है। अतः जिस किसी को उज्र हो नियत दि तक अपना आपत्ति-पत्र तहसील राघोग उपस्थित होकर पेश करो अन्यथा निश्चित दि के पश्चात कोई आपत्ति न सुनी जाकर दे दिया जावेगा। दि. १८ मार्च १९५९।

वृजविहारीलाल

तहसील
परगना,

१५६—१९

मध्यप्रदेश सन्देश
में
विज्ञापन देकर लाभ उठाइए

प्रबंध सम्पादक—ईश्वरसिंह परिहार, संचालक, सूचना एवं प्रकाशन संचालनालय, मध्यप्रदेश
सम्पादक-अनन्त मराल शास्त्री

देवेन्द्र नारायण वाजपेयी, मुख्य सम्पादक, सूचना-प्रकाशन संचालनालय
द्वारा प्रकाशित तथा गवर्नमेंट रीजनल प्रेस, ग्वालियर द्वारा
एक प्रति का मूल्य—१३ नये पैसे

मध्यप्रदेश सन्देश

ग्वालियर, शनिवार, २५ अप्रैल, १९५९

वर्ष ३] वैशाख ५, १८८१ [अंक २०

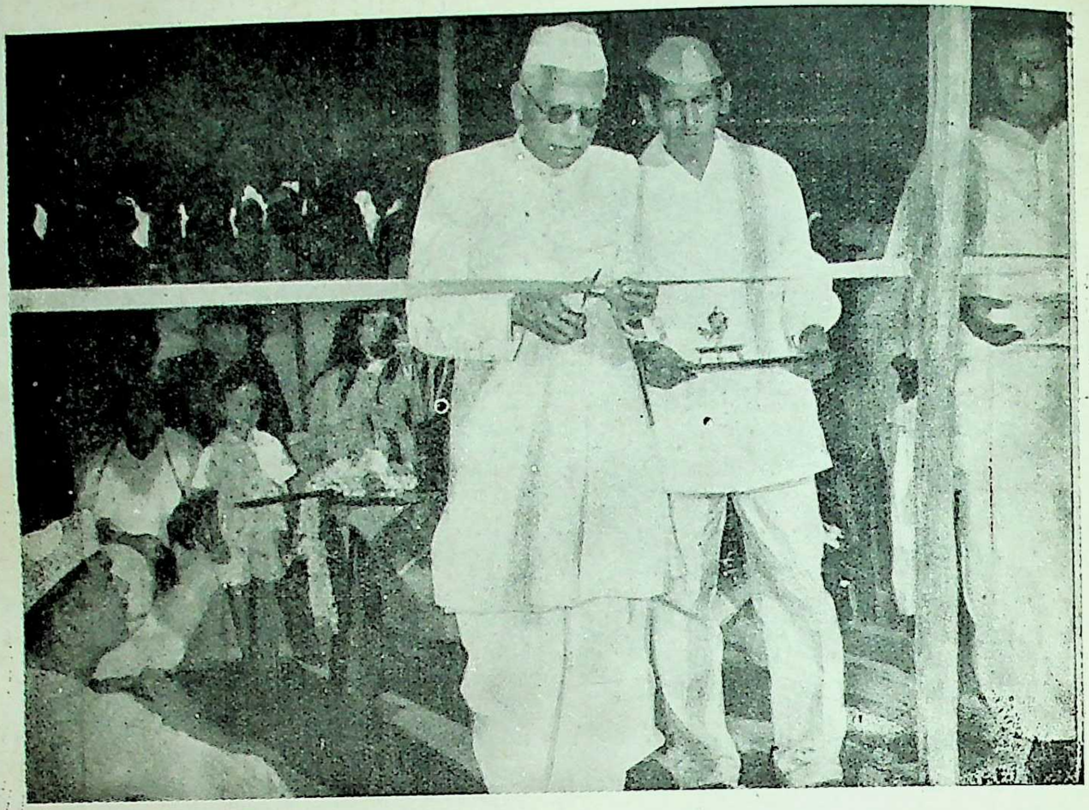

खरीफाटक रोड़ (विदिशा) स्थित हरिजन बस्ती में सड़क का उद्घाटन करते हुए मध्यप्रदेश के राज्यपाल श्री पाटसकर

★

दण्डकारण्य बस्ती का निरीक्षण करते हुए डा० कैलासनाथ काटजू

सचित्र साप्ताहिक
मध्यप्रदेश सन्देश

ग्रामों का विकास

हमारे देश की ८० प्रतिशत से अधिक जनता गाँवों में बसती है। इस जन-समूह के विकास और अभ्युत्थान का अर्थ ही 'राष्ट्रोत्थान' है। राष्ट्रीय अभ्युत्थान में ग्रामों का महत्व सर्वाधिक है। उनके विकास और उन्नति के बिना देश का पूर्ण निर्माण नहीं हो सकता। प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा है कि भारत में लोकतंत्र का वास्तविक आधार गाँव ही है। यह बात पूर्णतया सत्य है। लोकतंत्र को सुदृढ़ एवं शक्तिशाली बनाने के हेतु गाँवों में फैली हुई अशिक्षा, गरीबी, बेकारी, और पिछड़ेपन को दूर करना युग की सर्वाधिक आवश्यकता है। देश की बहुसंख्यक जनता से बसे इन ग्रामों की उन्नति पर ही लोक-कल्याणकारी राज्य की कल्पना साकार होगी, किन्तु इसके लिए पिछड़े हुए ग्रामीण लोगों को ऊपर उठाना होगा, उनका जीवन-स्तर सुधारना होगा और उन्हें इस योग्य बनाना होगा कि वे राष्ट्र के सच्चे और उपयोगी नागरिक सिद्ध हो सकें।

ग्रामों के विकास के हेतु ग्रामीणों में शिक्षा प्रसार के अंतर्गत बालकों को पाठशालाओं के अतिरिक्त प्रौढ़ शिक्षा की आवश्यकता को भी महत्व दिया गया है, जिससे कि ग्रामों में तात्कालिक विकास के लिए ग्रामीणों में जाग्रति उत्पन्न की जा सके। किसानों की गरीबी को मिटाने के हेतु कृषि के पुराने तौर-तरीकों में सुधार किये जाने की दिशा में व्यापक प्रयास किये जारहे हैं। ग्रामीणों को फुरसत के समय और उनकी बेकारी को दूर करने के हेतु ग्रामीण उद्योग-धन्धों के साधनों और उनके प्रशिक्षण की सुविधाओं को दिया जारहा है। इसी प्रकार उनके पिछड़ेपन के कारणों—मूढ़ता, अन्ध-विश्वासों और रूढ़िवादिता को समाप्त करने के लिए प्रचार-साधनों का उपयोग किया जा रहा है। ग्रामीण-जनता में दरिद्रता के साथ ही अस्वच्छता का समावेश भी जड़ पकड़े हुए है। इससे ग्रामीणों के स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है और फलस्वरूप उनमें बीमारियाँ फैलती हैं; जिनके कारण लाखों ग्रामवासी अकाल मृत्यु के ग्रास बनते हैं। अतएव ग्रामीणों को सफाई से रहने के लाभों का प्रचार किया जाता है। साथ ही रोगों की प्राथमिक चिकित्सा के उपादान एवं साधन भी उनको सुलभ करने की व्यवस्था की जाती है। इस प्रकार ग्रामीणों की मुख्य समस्याओं, अभावों और आवश्यकताओं के निवारण के हेतु विशाल पैमाने पर हमारी केन्द्रीय और राज्य सरकारें अनवरत प्रयास कर रही हैं।

हमारे देश की प्रथम और द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं में ग्रामों की उक्त समस्याओं और आवश्यकताओं की पूर्ति के हेतु ही सामुदायिक विकास खण्डों तथा विकास खण्डों की स्थापना का कार्यक्रम रखा गया, जिनके अंतर्गत ग्रामों के विकास की योजनाएँ व्यापक रूप में कार्यान्वित की जारही हैं। कृषि की उन्नति के हेतु किसानों को ऋण दिया जाना, उत्तम बीज का वितरण, अच्छे खाद की उपलब्धि सुगम किया जाना, खेती के आधुनिक औजार उपलब्ध किया जाना आदि सुधारों को कार्यान्वित किया जारहा है। इस समय चल रहे सामुदायिक विकास योजना केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य ग्रामों की हर प्रकार उन्नति करना है, किन्तु इसकी सफलता ग्रामवासियों के सहयोग और परिश्रम पर निर्भर है। ग्राम पंचायतों की स्थापना और खेती में सहकारिता का समावेश कराने की योजना भी ग्रामों के विकास के हेतु अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो रही हैं। शासन द्वारा विविध योजनाओं के अंतर्गत किये जारहे विकास कार्य ग्रामीण जनता के हित के लिए उनके सहयोग से कार्यान्वित किये जा रहे हैं, जिनसे हमारे ग्रामों की काया-पलट होने के शुभ चिन्ह दिखाई देने लगे हैं और फलस्वरूप हमारे देश में अनाज के उत्पादन में लगातार वृद्धि हो रही है तथा किसानों के जीवन-स्तर में सुधार हो रहा है।

हमारे मध्यप्रदेश में ग्रामों की उन्नति के लिए जो विकास कार्य किये जारहे हैं, उनका परिणाम बहुत सन्तोषजनक और आशाप्रद हो रहा है। ग्रामों की सर्वांगीण उन्नति के हेतु मध्यप्रदेश शासन ने राज्य में १ अप्रैल से १५ पूर्व विस्तार खण्ड खोल दिये हैं। इन विकास खण्डों के अंतर्गत ५,२७० वर्गमील का क्षेत्र आयगा तथा इन विकास खण्डों की २५१९ गांवों की जन-संख्या ७,५४,७३७ होगी। इन १५ खण्डों के खुलजाने से राज्य में अब कुल २४७ खंड हो जायंगे। इसमें ११८ प्रथम चरण खंड, १० बहुउद्देश्यीय आदिवासी खण्ड, ५१ सामुदायिक विकास खण्ड, ४४ द्वितीय चरण तथा २४ पूर्व विस्तार खण्ड हैं। इन खण्डों के अंतर्गत ४७,४१९ ग्राम आते हैं, जो कि राज्य के ग्रामों की कुल संख्या के आधे से अधिक हैं तथा जिनकी जन-संख्या लगभग १.५२ करोड़ है। राज्य शासन द्वारा ग्रामोन्नति के हेतु जो विकास कार्य किया जा रहा है, उसका विस्तार क्षेत्र व्यापक है और उद्देश्य महान् है।

मुखपृष्ठ का चित्र

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय, रायपुर में स्थित वज्रपाणि की (सिरपुर) ७-८ वीं शती की मूर्ति

निर्माण की दिशा में

विज्ञान तथा टेक्नोलॉजी के विकास ने केवल व्यक्ति का ही नहीं, अपितु समूचे समाज का स्वरूप परिवर्तित कर दिया है। अणु-शक्ति के सम्बन्ध में जो नवीन आविष्कार किए गए हैं, उनके फलस्वरूप एक महान् प्रश्न खड़ा हो गया है, जिसका उत्तर दिया जाना आवश्यक है—क्या उन आविष्कारों को मानव जाति के विनाश के लिए प्रयुक्त होने दिया जाए या इनसे मनुष्य के दुःखों के निवारण में सहायता ली जाए।

जो शक्ति मनुष्य के हाथ में आगई है, उसका विनाश के लिए नहीं, बल्कि लोगों के भाग्य-निर्माण व राष्ट्रोत्थान के लिए उपयोग किया जाए। 'मानव-जाति की रक्षा के हितार्थ' लोगों को कठिन परिश्रम करना चाहिए ।

—राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

आज धर्म के पर्दे के पीछे बहुत से लोग जमा हो गए हैं। इससे धर्म बदनाम होता है। रोकिए इनको अगर आप रोक सकते हैं। इस समय तो देखना यह है कि कौन कितना काम करता है। स्वामी रामतीर्थ अच्छे व्यक्ति थे । रामतीर्थ, विवेकानन्द और स्वामी रामकृष्ण ने हमारे देश में बहुत काम किया। उन्होंने हमें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी थी ।

*

"मैं नहीं चाहता कि सिद्धांत कौमुदी और लघु कौमुदी रटते रहो। रटना बुरी बात नहीं, पर विवेक के साथ होना चाहिए। संस्कृत के अध्ययन में जर्मनी बहुत आगे बढ़ा। अंग्रेजों ने भी उससे बहुत-सी बातें निकालीं। हम संस्कृत जानने में पिछड़ गए थे। मैं चाहता हूं कि महाविद्यालयों और विद्यापीठों में संस्कृत की पढ़ाई चले। यदि संस्कृत की पढ़ाई न होगी तो हमारी प्रगति की एक कड़ी कमजोर पड़ जाएगी, परन्तु मैं चाहता हूं कि वह अच्छे ढंग से हो। विज्ञान के साथ उसका संबंध जुड़े। ज्ञान-विज्ञान और इंजीनियरिंग की शिक्षा युग-धर्म बन गई है।"

मैं समाज को कहता हूं कि वह लाखों-करोड़ों के लाभ की बात को सोचे। उस पर अमल करे।

*

लोग समझते हैं कि जवाहरलाल नेहरू धर्म का विरोध करता है। परन्तु, मेरे सामने तो केवल कर्त्तव्य है। जितनी मुझमें शक्ति और बुद्धि है, उसके अनुसार मैं कार्य करता हूं। जिस मैदान में जिसकी जितनी शक्ति हो, वह चले, पर विवेक, बुद्धि, हिम्मत और वीरता उसमें होनी चाहिए। भारत के प्राचीन इतिहास का मुझ पर प्रभाव होता है– इतना ही कि हमारे देश के रहने वाले विवेक-बुद्धि से काम लेते थे और उनका दिल मजबूत था।

—श्री जवाहरलाल नेहरू

हमें उन व्यक्तियों को जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है, सुविधा देकर प्रेमपूर्वक अपने साथ ले चलना होगा। जोर-जबरदस्ती, डंडे के जोर और कानून के बल पर यह काम पूरा नहीं होना है। हमें सभी भाषाओं को बराबर समझना चाहिए। इन सभी में बड़ा साहित्य है। इनमें धर्म है, दर्शन है और अनेक रत्न हैं।

—डा० बी. बी. केसकर

संसार की वर्तमान स्थितियों में
छिड़ने का बड़ा अन्देशा है। इसका
राष्ट्रीय विकास पर
प्रभाव पड़ेगा।
सभी विकास-यो
के सामने, जिनमें
और ग्राम-उद्योग
शामिल हैं।

*

सच पूछें तो सत्य का आचरण करना
ही आसान है। असत्य का आचरण ही कठिन
है। सत्य के लिए मन की सरलता चाहिए।
बच्चों में भी यह सरलता पाई जाती है। फिर
इतनी सरल और सबके लिए अत्यावश्यक
निष्ठा आज अत्यन्त कठिन हो गई है, किन्तु
हमें अमल में लाना ही होगा, तभी देश और
की उन्नति होगी।

—आचार्य विनोबा

इस अंक में

क्र. विषय और लेखक पृ
१. शवरी (नाटक) .. ..
—सेठ गोविन्ददास
२. बहार की प्रतीक्षा (कविता) ..
—श्री नर्मदाप्रसाद त्रिपाठी
३. नई कविता .. ..
—डा० रामरतन भटनागर
४. मामी (कहानी) .. ..
—सुश्री माधवी
५. द्वितीय योजना के अंतिम दो वर्ष
—श्री श्रीमन्नारायण
६. उस महानता को शत वन्दन ! (कविता)
—श्री रामेश्वरदयाल दुबे
७. योजना सफल बनाने के उपाय
—श्री वी० आर० शेनाय
८. महंत घासीराम स्मारक संग्रहालय
९. उद्योगों की उन्नति का आधार—कोयला
१०. बुनियाद मजबूत करने का नया तरीका : कोटा बाघ में पहली बार

एकांकी नाटक

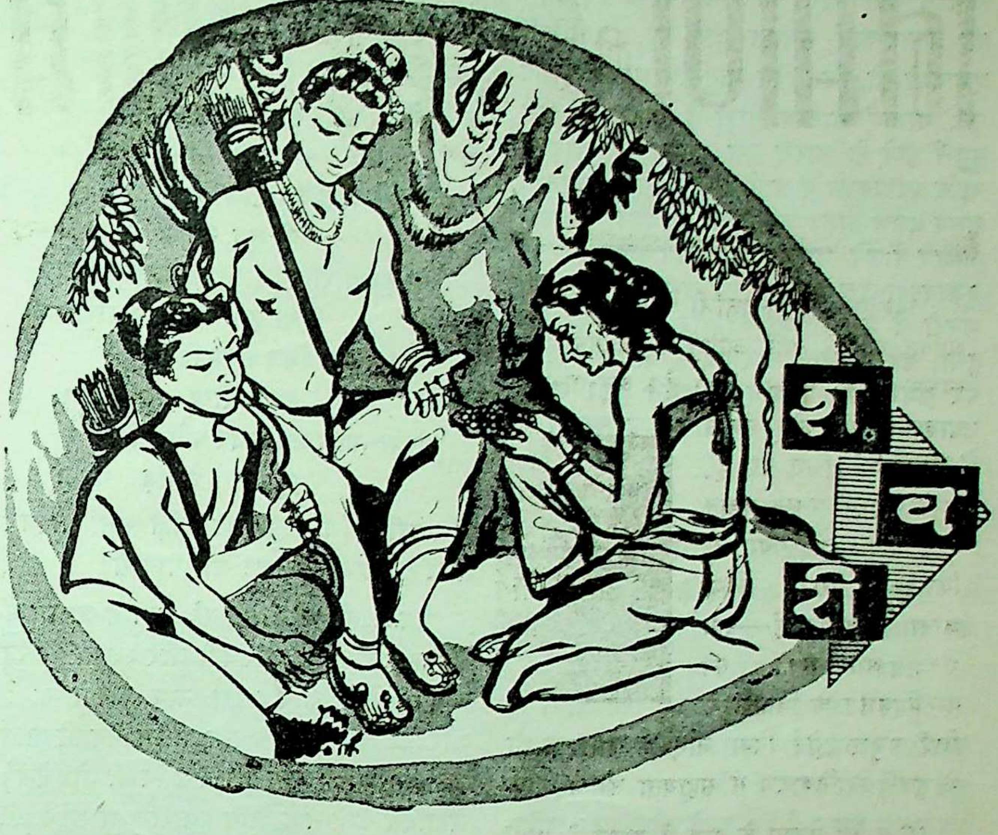

श व री

——सेठ गोविन्ददास

पात्र-परिचय—

१. शबरी
२. वसिष्ठ
३. मरीचि
४. अंगिरा
५. अत्रि
६. पुलस्त्य
७. पुलह
८. ऋतु

कहानी

कथा है त्रेता युग की। सत्, त्रेता, द्वापर और कलि–ये चार युग हमारे यहां माने गये हैं; सत् सर्वोत्तम और कलि निकृष्टतम। किन्तु सत् चाहे सर्वोत्तम रहा हो, उस समय की अपेक्षा उससे निम्न युगों के अवतार उस युग के अवतारों से श्रेष्ठ रहे हैं। सतयुग के प्रधान अवतार नर-नारायण अंशावतार हैं, त्रेता के प्रधान अवतार राम अंशावतार होते हुए भी नर नारायण की अपेक्षा अधिक कलाधारी और द्वापर के अन्त तथा कलियुग के आरंभ के प्रधान अवतार कृष्ण तो पूर्णावतार हैं। भगवान् कृष्ण गीता में कहते हैं:—

"यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानंसृजाम्यहम् ॥"

सतयुग में जब धर्म की ग्लानि ही नहीं तब एक तो अवतार की आवश्यकता ही नहीं। दूसरे यदि अवतार होता भी है तो थोड़ी-बहुत कलाओं के अवतार से काम चल जाता है। जैसे-जैसे धर्म की अधिक ग्लानि होती जाती है, वैसे-वैसे अधिक तथा बलशाली अवतारों की आवश्यकता बढ़ती जाती है, क्योंकि अवतार के कार्य के संबंध में भगवान् कृष्ण ने ही गीता में कहा है:—

"परित्राणाय साधूनां विनाशायच दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥"

और जब हम इस दृष्टि से देखते हैं तब सत् से त्रेता, त्रेता से द्वापर और द्वापर से कलि का महत्व बढ़ जाता है। अवतार का हम चाहे कोई भी अर्थ क्यों न करें, पर सारे अतीत काल में कहीं भी हमको क्या सतयुग में राम और कृष्ण के समान स्फूर्तिदायक चरित्र मिलते हैं?

त्रेता, ऋषि-महर्षियों और राजा-सम्राटों के महत्व का युग था। उस काल में आर्य संस्कृति और सभ्यता के ये ही प्रतीक थे। आर्यों में 'धर्म' शब्द का इतने व्यापक रूप में उपयोग होता है कि उनके सारे लौकिक और पारलौकिक विषय, सारी संस्कृति और सारी सभ्यता का समावेश धर्म के भीतर ही हो जाता था। उत्तर से दक्षिण की ओर धर्म का प्रसार हो रहा था; इसे करते थे ऋषि-महर्षि और उनकी रक्षा करते थे राजा-सम्राट्। धर्म के प्रसारक ऋषि-महर्षियों का काम था श्रवण, मनन और निदिध्यासन। वे श्रुति वाक्यों से श्रवण, तार्किक युक्तियों से मनन और योग प्रतिपादित उपायों द्वारा निदिध्यासन करते थे। साथ ही वे जो प्राप्त करते, उसका प्रसार करते, जिससे लोक कल्याण हो।

वे तपोवनों में आश्रम बना निवास करते और त्यागमय जीवन बिताते हुए इस लोक-कल्याण में दत्तचित्त रहते थे। वे स्वयं न तो सत्ता ग्रहण करते और न शस्त्र ही। यह था राजा और सम्राटों का क्षेत्र; इसीलिए ऋषि-महर्षियों की रक्षा का भार राजा-सम्राटों पर था । ऋषि-महर्षियों के इस प्रकार के जीवन ने उन्हें केवल भूत और वर्त्तमान का ज्ञाता ही न बनाया था, वरन् भविष्य में क्या होगा, इसे जानने की शक्ति भी प्रदान की थी। इसीलिए वे त्रिकालज्ञ कहलाते हैं। उनके उपदेश ही तत्वों से भरे न होते, वरन् वर अथवा शाप के रूप में भी जो कुछ उनके मुख से निकलता, वह सत्य सिद्ध होता।

दक्षिण में दंडकारण्य नामक प्रसिद्ध वन था। इस वन में पम्पा नाम के एक सरोवर के तट पर ऋषियों का एक आश्रम था। चार वर्षों के एक युग तक यहां ऋषियों ने निवास कर अपने उपयुक्त कार्यों को किया था। उनकी संख्या सात थी और वही उनके नाम थे, जो सप्त ऋषियों के हैं। हाँ, सूर्यवंश के गुरु वसिष्ठ और इन सात ऋषियों में के वसिष्ठ अलग-अलग थे, एक नहीं। इस काल में उन ऋषियों की सेवा में दत्तचित्त थीं 'शवरी' नाम की एक भील बालिका। छह वर्ष के अल्प

वय से ही अनाथ शवरी ऋषि-सेवा के इस पुण्य कार्य में लगी रहती थी। ऋषियों के इस स्थल का प्रसार-कार्य समाप्त होने पर, प्रबोधिनी एकादशी को, जिस दिन चातुर्मास समाप्त होकर पुनः यात्राएँ आरम्भ होती हैं, प्रदोष में शुभ मुहूर्त होने के कारण उस आश्रम को छोड़कर ऋषि प्रदोषकाल में आगे बढ़े। उन्होंने प्रस्थान के समय प्रसन्न होकर शवरी को वर दिया कि उसी आश्रम में उसे भगवद्दर्शन होंगे। बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक ऋषिवर पर अखंड विश्वास रख शवरी ने प्रभु-प्रतीक्षा की और जब रामावतार हुआ, तब भगवान् रामचन्द्र के दक्षिण पधारने पर शवरी को भगवान् के दर्शन हुए। शवरी उपाख्यान हमारे यहां के प्रसिद्ध उपाख्यानों में से एक है।

पहला दृश्य

स्थान--पम्पा सरोवर के तट पर ऋषियों का आश्रम।

समय--उषाकाल।

[अरुण अपनी अरुण आभा को प्राची में प्रसारित कर भगवान् भास्कर के शुभागमन की सुखमय सूचना दे रहा है; किन्तु अरुण का यह रक्त-रंग इतना हलका है कि इसके बीच शुभ्र कान्ति-वाले शुक्र के ही नहीं, किन्तु उसके आस-पास के नक्षत्रों के दर्शन भी होते हैं। ऊपर तारों की तरल तथा सूरसूत की स्थिर प्रभा से पूर्ण प्रसन्न पुष्कर और नीचे पवनान्दोलित पंकजों एवं अनुपम आभा से प्रतिबिम्बित प्रसन्न पुष्कर दोनों की समान ही सुषमा है। पीछे की ओर दूर यह दृश्य है और इसके सामने समीप तड़ागतट के ऋषि-आश्रम की शोभा भी दर्शनीय है। आश्रम ऊंचे और घने वन-वृक्षों से घिरा हुआ है। आश्रम में जो प्रफुल्ल पादप प्रस्थापित किये गये हैं, जान पड़ता है मानों वे चारों ओर के दीर्घकाय द्रुमों के अंकों में उनके अलंकृत बालक हों। दाहिनी ओर की पंक्ति में छोटी-छोटी कुटियां बनी हैं। कुटियों की बायीं ओर मखमंडप है, जिस पर वितान के रूप में बल्लियां चढ़ी हुई हैं; इन लताओं के ललित कुसुम विकसित हो रहे हैं। मानो ये बल्लियां अपने विकच प्रसूनों की पुष्पांजलियां ले-लेकर यज्ञ-कर्म के हेतु उपस्थित होने की तैयारी कर रही हैं। मंडप के समीप ही एक ओर कुछ मृग और दूसरी ओर कुछ मयूर दृष्टिगोचर होते हैं। मंडप के निकट ही एक शिवक से बद्ध एक शृंगिनी अपने वत्स को चाट रही है। निकट ही एक कूप से शवरी नीर खींच रही है। शवरी का वर्ण श्याम है। वह दस वर्ष की बालिका है। वस्त्र हैं वल्कलों के। पानी खींचने के संग ही शवरी गा रही है।]

गीत

कोऊ आई सुघर पनिहारी,
कुअला उमड़ि परे।
कै तुम गोरी धन सांचे की ढारी,
कै तुम गढ़े हैं सुनार।
ना हम गोरी धन सांचे की ढारी,
ना हम गढ़ी हैं सुनार।
माता-पिता मिल जनम दियो है,
रूप दीन्ह करतार।
रामा-कोऊ आई सुघर पनिहारी,
कुअला उमड़ि परे।

शवरी--(गान पूर्ण होते-होते पानी भी भर जाता है। गाय के निकट आ, गाय से)

तो......तो, माँ, आज, हाँ, आज से आश्रम में श्यामा और शवरी......शवरी और श्यामा ही रह जायँगी; सुता और माता मात्र......क्यों न ? और........और अवनिके पास आश्रम निवासी सातों ऋषियों के प्रतीक रूप (ऊपर उत्तर की ओर देख) अन्तरिक्ष के वे सप्त ऋषि हमारी रक्षा करेंगे...... (फिर गाय की ओर दृष्टि घुमा) क्यों? (कुछ रुककर) माँ, जब से अनन्ता के इन ऋषियों ने मुझे अनन्त के (फिर ऊपर देख) उन ऋषियों के दर्शन कराकर उनकी कथा सुनाई (फिर धेनु की ओर दृष्टि कर) तब से मैं अचला के ऋषियों को अभ्र के ऋषियों का प्रतीक मानने लगी थी। परन्तु, आज पृथ्वी के ये ऋषि जा रहे हैं, तब पुष्कर के ऋषियों को ही इनका प्रतीक मानना होगा। सत्संग तो अब उनका ही रहेगा न, इनका नहीं। (कुछ रुककर) पर, माना वसुन्धरा के इन ऋषियों की तो सेवा-सुश्रूषा में सारा समय बीत जाता था, ये कितनी कलित कथाएँ कहते, उनके सुनने से सदा ही सुख मिलता रहता; कैसी शिक्षा देते। (फिर ऊपर दृष्टि घुमा) व्योम के उन ऋषियों की सेवा किस प्रकार होगी ? वे इस प्रकार की कथाएँ कैसे सुनावेंगे, कैसे मुझे शिक्षा देंगे ? (फिर गाय की ओर देख, कुछ रुककर) और......और, माँ, जब से......जब से इन ऋषियों ने (फिर ऊपर दृष्टि घुमा तर्जनी से अरुन्धती को दिखाते हुए) महर्षि वसिष्ठ के समीप स्थित अंबा अरुन्धती के दर्शन कराये (फिर धेनु को लक्ष्य कर) तब से......तब से एकाएक न जाने क्यों मैं अपने को अरुन्धती मानने लगी ?......ऋषियों ने कहा था वसिष्ठ की अर्द्धाङ्गिनी है अरुन्धती। मेरा यहां सम्बोधन है सुना !....पुत्री ! और......पत्नी और पुत्री पर तो पुरुषों को प्रेम रहता है। ये ऋषि मुझ पर तो कितना, हाँ, कितना स्नेह रखते हैं! पत्नी और पुत्री के......दोनों के प्रणय में क्या अंतर है (गंभीरता से विचारते हुए) समझ में नहीं आ (कुछ रुककर) जो कुछ हो, किन्तु किन्तु जब से, माँ, मैंने अम्बा अरुन्धती का ना सुना, तब से मैंने अपने को सदा अरुन्धती मान (फिर ऊपर देखकर) पर, वह......अरुन्धती वसिष्ठ से विलग होती ही नहीं। सदा सप्तऋषि के संग घूमती है। (फिर गाय की ओर दृष्टि घुमा और......और मैं......मैं तो आज आश्रम में अकेली हाँ......अकेली रह जाऊंगी। (आंसू टपकने लगे हैं। कुछ रुककर) इस चतुर्वर्षीय एक युग की ए एक कर कितनी घटनाएँ आज सन्मुख घूम रही हैं (फिर कुछ रुककर) और अब......अब अकेली.......एकाकिनी.......गाय रंभाती है।]

शवरी--(चौंककर) नहीं, नहीं, अके क्यों, एकाकिनो कैसी ? ठीक......ठीक कहती माता, तू तो साथ रहेगी। श्यामा और शवरी शवरी और श्यामा...... (लघु यवनिका)

दूसरा दृश्य

स्थान--वही

समय--मध्याह्न

[नभ मंडल के मध्य में मार्तण्ड हैं, जिन मयूखों के आलोक से सारा दृश्य आलोकित है। मख-मंडप के मध्य में पावक प्रज्ज्वलित है। मंडल और मख-मंडल की इस दृष्टि से समता शाखाओं पर शाखामृग और हरित तृणों हरिणों की हलचल है। मंडप में मध्या जटायुक्त तथा श्मश्रुवाले सात ऋषि, जो व के वस्त्रों से विभूषित हैं, यज्ञ में संलग्न हैं और साथ यज्ञ मंत्रों का उच्चारण कर रहे हैं।]

(लघु यवनि

तीसरा दृश्य

स्थान--वही

समय--प्रदोष

[एकादशी के सुधांशु की अंशुओं से आ और अवनि दोनों ही द्युतिमन्त हैं। चन्द्रि चमकती हुई तड़ाग की तरंगों तथा पला पलाशों को पवन नृत्य-सा करा रही है। आ

(शेष पृष्ठ २९ पर)

साहित्य, संस्कृति, कला, ज्ञान-विज्ञान आदि का विशेषांश

इसके संपादन परामर्शदाता ~ श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द

विशेष कविता

बहार की प्रतीक्षा

श्री नर्मदाप्रसाद त्रिपाठी

आम में बौर फिर आ गए,
बाग में गंध के गलीचे बिछे,
लहक उठी डाल-डाल,
महक उठे पात-पात,
कोकिल ने छेड़ी है रागिनी !
नदी में छलकती जवानी उमंगों की !
बहारें सभी के पास
स्वयं चली आती हैं;
सभी का होता है समय एक;
किंतु, मेरी जिन्दगी में
बहारों का समय कोई तय नहीं !
झड़ गए उमंगों के पात सभी,
डंठल कामनाओं के
शेष हैं अभी भी, किंतु !
तुम किन अँधेरी घाटियों में
छिपे हो, ओ, रे, मेरे वसंत !
पुकारो तो सही एक बार,
तुम नहीं,
मैं ही स्वयं तुम तक दौड़ आऊँगा !
पुकारो तो सही एक बार !

विशेष लेख

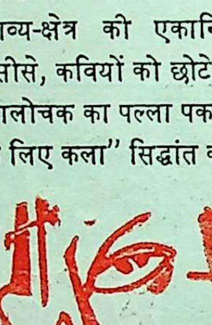

नई कविता

—डॉ॰ रामरतन भटनागर

नई कविता की एक प्रमुख प्रवृत्ति "व्यक्तिवाद" है। उसमें जो वैचित्र्य दिखाई देता है, वह मूलतः बहुत-कुछ इसी व्यक्तिवाद के कारण है। इस व्यक्तिवाद के जन्म और विकास का अपना इतिहास है। मूल रूप से व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों का संबंध स्वच्छंदतावादी आंदोलन से है, जो स्वयं भौतिकवादी-विज्ञानवादी संस्कृति की प्रतिक्रिया है। विज्ञान के विकास ने भौतिकता को प्रश्रय दिया और कवि सामान्य एवं व्यापक समाज से छिन्न-भिन्न होकर विद्रोही बन गया। सामंतवादी युगों में कवि अभिजात समाज का प्रवक्ता और शीर्षस्थ वर्ग का चारण था। औद्योगिक क्रांति ने स्थिति में परिवर्तन कर दिया। फल यह हुआ कि लोकतंत्री चेतना का जन्म हुआ और कवि नवोन्मुक्त समाज का संदेशवाहक बन गया। उसने विज्ञान में मानवीय संभावनाओं का श्रेष्ठ विकास देखा और स्वतंत्रता, समता तथा बंधुत्व के आदर्शों को नई वैज्ञानिक संस्कृति में मूर्तिमान देखना चाहा। परंतु, विज्ञान को कवि का यह नेतृत्व पसंद नहीं था। उसने पूंजीवाद से गठबंधन कर लिया और कवियों के नए समाज के स्वप्न अधूरे ही रह गए। इसलिए यूरोपीय स्वच्छंदतावाद के काव्य में हम निरंतर कुंठा, अवसाद और असंतोष का स्वर पाते हैं। संवेदनशील कवियों में यह असंतोष धीरे-धीरे विद्रोह का रूप धारण कर लेता है और कवि के लिए सबसे बड़ी समस्या यह हो जाती है कि विरोधी जगत में अपने छोटे-से व्यक्तित्व को किस प्रकार सुरक्षित रख सके। लोकतंत्र की इकाई ही व्यक्ति है। अतः, कवि का यह विद्रोह लोकतंत्री आदर्शों के विरुद्ध नहीं पड़ता। इसीलिए, स्वच्छंदतावादी काव्य के भीतर विकसित व्यक्तिवादी एवं विद्रोही स्वर उस युग के समीक्षकों और सहृदयों के लिए आकर्षक बना रहा। शीघ्र ही लोकतंत्र के भीतर असंगतियाँ दिखाई देने लगीं और 'रोमांस' से व्यक्तिवाद का साथ छूट गया। पिछली एक शताब्दी का काव्य व्यक्तिवाद के उत्तरोत्तर उत्कर्ष और कवि की संवेदनात्मक भूमि के निरंतर संकोच का इतिहास कहा जा सकता है।

इस संकोच के कारणों की खोज करना आवश्यक है। एक कारण है प्रचलित नीति का विरोध। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में यूरोप में व्यक्तिवाद और रोमांस के विरोध में नीतिवादी दृष्टिकोण को विकसित किया गया। अँग्रेजी समाज और साहित्य में इसका विशेष प्रसार था। रूसो, टाल्सटाय और रस्किन के साहित्य-सिद्धांत इस नीतिवादी साहित्यदृष्टि के शिखर थे। इस साहित्य का जीवनोल्लास से विरोध था और नीरस पंक्तियों को काव्य के नाम से चलाया जाने लगा था। "नई कविता" के कवियों ने परंपरित नीतिवादिता को एकदम तिरस्कृत कर दिया। फलतः, किसी एक वर्ग के न रहने ही में उन्होंने अपनी सार्थकता समझी। नीति की डोर के शिथिल होकर टूट जाने पर काव्य-क्षेत्र की एकान्विति समाप्त हो गई। इसीसे, कवियों को छोटे-छोटे गुट बनाने या किसी आलोचक का पल्ला पकड़ने की चाह हुई। "कला के लिए कला" सिद्धांत का जन्म हुआ और कवियों की दृष्टि अन्तर्मुखी होने लगी। आग्रह हुआ कि काव्य नीति-निरपेक्ष हो, अच्छा हो यदि विषय-वस्तु से भी शून्य हो। इस प्रकार व्यक्तिगत दृष्टिकोण और वैचित्र्यमयी अनुभूति को प्रश्रय मिला।

एक दूसरा कारण है विज्ञानवादी दृष्टिकोण का प्रसार। आधुनिक संस्कृति मूलतः बुद्धिवादी और विश्लेषण-प्रिय है। उसमें ज्ञान की अपार महिमा है, परंतु, हृदय के स्रोत निरंतर सूखे जा रहे हैं। जिसे शिक्षा कहकर चलाया जा रहा है, वह सूचना-मात्र है। उसमें अनुभूति को जगह नहीं मिली है। फलतः, आज का शिक्षित मनुष्य व्यर्थता से भर गया है। कविता का स्रोत है आनंद, जिज्ञासा, रहस्य। हमारे ज्ञान की परिधि इतनी विस्तृत हो गई है कि कुछ भी अप्रत्याशित नहीं रह गया है। काव्यरूढ़ियाँ आज हास्यास्पद जान पड़ती हैं। "अद्भुत" का थोड़ा भी स्पंदन जीवन में शेष नहीं रह गया है। विज्ञान और कविता में निरंतर विरोध ही है यह आवश्यक नहीं है, क्योंकि, रहस्योन्मुखी है। उसमें जिज्ञासा धान के अनेक सूत्र हैं। परंतु, आज विशेषज्ञता के उस संसार में पहुँच गया है, तालिकाओं का राज्य है और मानव-शिशु की मरु-भूमि में खो गया है। फल यह हुआ कि हम अहं के स्तूप बन गए हैं। हम होने में मान-हानि समझते हैं। हमारी मानवीय अन्तर्वृत्तियाँ जड़ होती जा रही हैं।

यह कहा जा सकता है कि सिनेमा, टेलीविज़न और रेडियो के इस युग में कविता के लिए स्थान कहाँ है, क्योंकि हमारी जिज्ञासा की भावना से पुष्ट हो जाती है। परंतु, मनुष्य अनुभूति ही नहीं है, वह अनुभूति को ग्रहण भी चाहता है। वाणी के द्वारा वह अपनी अनुभूति को आकार देता है, उन्हें अपने लिए अधिक दनीय बनाता है। भाषा मनुष्य की विशेषता

और हम अनुभूति के आलेखन ही में शब्दों उपयोग नहीं करते, उन्हींके द्वारा हमारी प्रेक्षणीय बनती है। वास्तव में हमारी सभी अनुभूतियाँ उस समय तक किसी न किसी अधूरी रहती हैं, जब तक हम उन्हें वाणी देते। अनुभूति का संपूर्ण मधु भाषा के पात्र ढल सकता है। अन्य कलाएँ भी अनुभूति को में समर्थ हैं, परंतु, इन कलाओं में सभी नहीं हो सकते। शब्द की कला सार्वभौमिक सहज है और उसमें व्यंजना की अपार सामर्थ्य अन्य कलाओं में अनुभूतियों के प्रकाशन की है, परंतु, इस प्रकार की कोई सीमा भाषा नहीं लगी है। सूक्ष्म से सूक्ष्म और व्यापक अनुभूति शब्दबद्ध हो सकती है। फिर हम ही करना नहीं चाहते, उसे समझना भी समझकर अन्य संवेदनशील मनुष्यों तक समक्ष पहुँचाना भी हमारी संवेदना का

बन जाता है। इस प्रकार अनुभूति के साथ भाषा और भाषा के साथ प्रेषणीयता का संबध अनिवार्यतः लगा हुआ है। अनुभूति स्वांतःसुखाय होकर भी लोकानुरंजनाय या लोकहिताय होती है, क्योंकि, जोड़ना उसका धर्म है और जहाँ वह अपने ही में सिमट जाती है, वहाँ कुंठाग्रस्त और अनगढ़ बनी रहती है।

परंतु, केवल बुद्धिग्राह्य होने ही पर अनुभूति ग्राह्य नहीं बन पाती, उसे हृदयस्थ भी होना होगा। हम तर्क और बुद्धि के द्वारा ही अपने अनुभवों को भी समझना चाहते हैं और यह नहीं समझते कि यह भ्रांति है। हमें उन्हें तर्क और भावना दोनों भूमियों पर ग्रहण करना है। धर्म और कला जीवन को एकसाथ तर्क और भावना के दो विभिन्न और विरोधी स्तरों पर समझने के उपक्रम हैं और इन दोनों के संपूर्ण योगायोग में ही हमारी जीवनानुभूति की सक्षमता, परिपूर्णता तथा गहनता की अभिव्यक्ति होती है। वैज्ञानिक युग में धर्म और कला के भावकोष सूख जाते हैं। कवि का कर्त्तव्य है कि वह नए स्रोत खोले और अपने युग को अनुभूति सक्षम बनाए। जहाँ वह व्यक्तिगत वैचित्र्य ही से चिपटकर रह जाता है, वहाँ वह अपने इस मूल कर्त्तव्य से विमुख हो जाता है। अपने मन को टटोलकर कवि सबके मन की कली खोलता है, परंतु, जहाँ वह ऊहापोहग्रस्त या कुंठित होकर अपने मन ही को बंद कर लेता है, वह अपार अंतराल को पारकर किस प्रकार अन्य मन तक अभियान कर सकेगा।

वैचित्र्यवादी कवि कह सकता है कि वह अपने ही तक सीमित रहेगा, दूसरों की चिंता उसे क्यों हो। क्यों वह प्रेषणीय बने? परंतु, क्या केवल तर्क से अपने को भी तुष्ट किया जा सकता है? रुद्ध मानस अपने भीतर किस सौंदर्य की सृष्टि कर सकेगा? हम यह नहीं कह सकते कि आज बीसवीं शताब्दी में हमें कविता की आवश्यकता ही नहीं है। आदिकाल से कवि युगानुभूति व्याख्यापक रहा है। युगांतर के साथ अनुभूति की प्रकृति में भी अंतर पड़ता गया है। मानव की मूल प्रकृति इतनी शीघ्रता से नहीं बदलती और अनुभूति की प्रकृति भी बहुत धीरे-धीरे बदलती है, परंतु, अनुभूति का स्वरूप युग के साथ अवश्य बदल जाता है। अनुभूति के किसी पक्ष पर हम कम जोर देते हैं या अधिक, उसके प्रति हमारी संवेदना किस गहराई पर विकसित होती है, यह बहुत-कुछ परिवेश पर अवलंबित है। बदलते परिवेश के साथ काव्य-भाषा ही नहीं बदलती, काव्यात्मक संवेदना के स्वरूप, प्रकार, गांभीर्य एवं अंतर्योग में भी अंतर पड़ जाता है और उसे स्वयं अपने लिए अनुभूत एवं सार्थक बनाने के लिए कवि को उपयुक्त छंद, काव्य-रूप, प्रतीक तथा प्रतिमान देने होते हैं। इसीलिए, एक ही अनुभूति विभिन्न युगों में विभिन्न स्वरूप धारण करती हुई दिखाई देती है।

यह स्पष्ट है कि परिवेश ही युगधर्म की सृष्टि करता है और नए परिवेश को पहचानना तथा उसे वाणी देना कवि का परम कर्त्तव्य है। परन्तु, परिवेश की पहचान क्या एकदम सरल बात है? जैसे-जैसे मानव-संसार वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण सरल होता गया है, वैसे-वैसे मानव-संस्कृति का स्वरूप जटिल होता गया है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांतियाँ दिखाई पड़ती हैं और नए-नए ज्ञान-विज्ञान प्रत्येक क्षण हमारी चेतना के द्वार पर दस्तक देते दिखाई देते हैं। जीवन के भीतर-बाहर झाँकने की इतनी खिड़कियाँ आज खुल गई हैं कि कवि के लिए सबमें से झाँकना असंभव हो गया है। वह कहाँ तक विशेषज्ञ बने? मनोविज्ञान, मनोविश्लेषण, नृतत्व, पुरातत्त्व, भौतिक-शास्त्र, धर्मशास्त्र, किससे वह क्या ले, किस सीमा तक ले, क्या छोड़े? अतः, मनुष्य का सतत विकसित ज्ञान ही आज उसकी अनुभूति की सीमा बन गया है। उसने संवेदना के पैरों में बेड़ियाँ डाल दी हैं और उसे पंगु बना दिया है। इसीसे, वैचित्र्य ही में ज्ञान का आभास देकर आज का कवि अपना छुटकारा पा जाना चाहता है। नए काव्य में समस्त ज्ञान-भूमियों की संस्कृति में यही रहस्य है। परंतु, वहाँ ज्ञान उस प्रकार एकान्विति को प्राप्त नहीं हो सका है, जिस प्रकार कालिदास के काव्य में। वह काव्य-साधना के माध्यम से समीकृत नहीं हुआ है, परिवेश और परंपरा के निरर्थक आकलन का आतंकवादी आग्रह-मात्र बन गया है।

इस गर्त से काव्य का उद्धार करना होगा और वैचित्र्य की भूमि पर से उठाकर उसे संतुलन और साधना के देश से परिचित कराना होगा। यह बता देना होगा कि काव्य मात्र-संवेदन नहीं है, वह अनुभव है। जीवन-विस्तृत अनुभव की भूमि ही पर श्रेष्ठ काव्य खड़ा किया जा सकता है। क्षणवादी संवेदन और तुरंती वास्तविकता को लेकर हम किसी भी स्थायी कृति की सृष्टि नहीं कर सकेंगे। नए काव्य की सबसे बड़ी कठिनाई यही है कि उसने साधना की कठोर भूमि को छोड़कर सहजानुभूति के पिच्छल पथ पर चलना आरंभ किया है और पथ ही को मंजिल मान लिया है। रिल्के के उन शब्दों को उसके सामनें रखना होगा, जिनमें श्रेष्ठ काव्य की रूपरेखा स्थापित करते हुए उसने कहा है :—

"But alas, one does not get very far with verses, if one write them too early. One should wait and collect sense and sweetness during a whole lifetime and if possible a long one, and then, right at the end, one might perhaps be able to write ten lines that were good. For verses are not, as people suppose, feeling (one has those soon enough)—they are experiences. For the sake of a verse one must see many cities, men and things, one must now animals, one must feel how birdsfly, and understand the gestures with which little flowers open in the morning. One must be able to look back upon roads in unknown regions, on unexpected meetings and on partings that one long foresaw, on days of childhood that are still unexplained, on parents whom one had to hurt, if they brought one a pleasure and one did not comprehend it (it wasa pleasure for someone else),—on childish illnesses, that begin so strangely with so many deep and difficult charges, on days in still, subdue1 rooms an on mornings by tne sea, on all that the sea can mean on seas, on nights of travel that rushed away on high and flew with all the starts—and even if one is able to think of all that, it is not sufficient. One must have memories of many nights of love, of which not one was like another, of cries of women in labour and of light, white sleeping women in childhood, who are closing. But one must also have been beside the dying, must have sat beside the dead in the room with the open windows and the intermittend sound. And still, even to have me mories is not sufficient. If thereare many of them one must be able to forget them, and one must have the great patience to wait till they

(शेष पृष्ठ १३ पर)

मामी

—सुश्री माधवी

विशेष कहानी

मामी . . इस शब्द-मात्र से मेरा हृदय भर आता है । मेरा रोम-रोम हर्रासिगार-सा फूल उठता है । संभवतः कारण यही है कि मेरी एक ही मामी हैं, जिन्हें मैंने कभी देखा नहीं है, किंतु, जिनके संबंध में सुना बहुत-कुछ है । इसीलिए, मुझे वे चिरंपरिचित-सी लगती हैं । फिर भी, उनके व्यक्तित्व के प्रति मुझे कुतूहल-मिश्रित भय है । विगत वर्षों से उन्होंने मेरी कल्पना पर एकाधिकार प्राप्त कर लिया है । कोई भी दिन ऐसा नहीं जाता, जब मैं उनके विषय में कुछ न सोचूं । मेरे मन में एक प्रश्न प्रायः उठा करना है, मैं उसका उत्तर खोजने की विफल चेष्टा करती हूँ, परंतु, मेरा प्रयत्न अंधे की खोज-सा निष्फल तथा निरर्थक ही सिद्ध होता है ।

एक दिन साहस करके मैंने पूछा, "माँ ! मामी कब आएँगी ?"

"जब उनकी पढ़ाई समाप्त हो जाएगी ।"

"कब समाप्त होगी ?"

"तुझसे कौन ज़बान लड़ाए ?" झुंझलाकर उन्होंने उत्तर दिया ।

मैं कुछ और पूछना चाहती थी, पर, वह किसी कार्यवश उठकर चली गईं । मैं सोच रही थी कि मामी पढ़ाई के कारण यहाँ नहीं आती हैं, यह कैसी बात है ? मेरी विवाहिता सहेलियाँ तो पति के घर जाती हैं, फिर वह क्यों नहीं आती हैं ? माँ मुझे बताती क्यों नहीं है ? मुझसे छिपा क्यों रही है ? मामी मेरे लिए एक समस्या थी, जिनके प्रति मेरा आकर्षण बढ़ता जा रहा था ।

"नानी ! मामी को देखने की मेरी इच्छा है । वह कब आएँगी ?"

"राम जाने" दुःखभरे स्वर में उन्होंने कहा ।

"कैसी हैं मामी ?"

"वह बड़ी अच्छी हैं । बड़े भाग्य से ऐसी ब मिलती हैं ।"

"फिर घर क्यों नहीं आती ?"

नानी ने एक लंबी साँस खींची और वह हो गईं ।

मैं विस्मय से अवाक् रह गई । मामी बड़ी अच्छी हैं । फिर ? इसीका उत्तर तो मैं खोज थी ।

"क्या मामा से मामी का झगड़ा हो गया है ?" "पढ़ना न लिखना, बस व्यर्थ की बातों में दिमाग़ खराब कर रखा है ।" बाहर से आते मामा ने इतनी ज़ोर से डाँटा कि मैं अपने कमरे भाग गई ।

कमरे में मुझे रोना आ गया । आखिर, ऐसा पूछा ही क्या था, जो मामा ने इतना मैं कोई छोटी बच्ची तो हूँ नहीं, फिर, मुझसे लोग छिपाते क्यों हैं ?" मैं भी कुछ-कुछ सम हूँ । औरों की भी मामियाँ हैं, वे कम से कम

एक बार आती हैं, प्यार करती हैं, घुमाती हैं और एक मेरी मामी हैं ।

इधर कुछ दिनों से मेरे घर का वातावरण अशांत हो गया है । जाड़े के दिन हैं । यों तो सर्वत्र प्रफुल्लता, प्रसन्नता है । कहीं भी गर्मी तथा उमस नहीं है । पर, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे घर में उमस छा गई है । पंखा खोलने की इच्छा होती है, पर, किसी अज्ञात प्रेरणावश मैं खोल नहीं पाती हूँ । नानी दिन-भर पूजा-गृह में बैठी रहती हैं, माँ को घर के काम ही से अवकाश नहीं, वह एक क्षण के लिए भी खाली बैठना नहीं चाहती हैं, साफ़ फ़र्श पर दुबारा झाड़ू लगाने लगती हैं, अवकाश के क्षणों में मेज़-कुर्सी झाड़ने लगती हैं । ऐसा अनुभव होता है कि उन्हें काम करने की झक आ गई है । मामा घर में प्रायः उदास रहते हैं । माँ के पास जब मामी का पत्र आता है, तब उनके साँवले चेहरे पर लाली छा जाती है, उनकी छोटी-छोटी आँखें आशंकावश भुट्टे के दानों-सी गोल-गोल हो जाती हैं, पारसी कट की नाक, फड़कते हुए बैंजनी होंठ स्थिर हो जाते हैं । बिना कुछ कहे पत्र पढ़कर माँ एक ओर रख देती हैं और मामा जड़ हो जाते हैं । मामा को फुलवाड़ी का अत्यधिक शौक़ था । किंतु, अब वही मुरझा गई है । गुलाब, बेला अपने भाग्य को रो रहे हैं । अब प्रकृति का अक्षय सौंदर्य उनके लिए नगण्य हो उठा है । मेरा मन मामी के प्रति विद्रोह कर उठा । मामी देवी है......यह मिथ्या धारणा है.....मेरे मन ने स्वीकार किया ।

मेरे घर में मरघट-सी ख़ामोशी छाती जा रही थी, आकाश से मानों मेरे घर पर निरंतर उल्कापात हो रहा हो । परिवार की निःस्तब्धता से मैं जड़ होती जा रही थी । मुझे सबसे अधिक परेशानी यह थी कि मुझसे कोई बोलता नहीं था । एक दिन मुझे अपनी स्थिति पर रोना आ गया । काश मेरे कोई भाई-बहन होती, तो उससे बात करके मन बहला लेती ।

"तू उदास क्यों रहती है ?"

मैं चुप रही ।

पुनः प्रश्न पर मैं खुलकर रो पड़ी ।

माँ की आँखें भी छलछला आईं ।

"मैं इधर बहुत परेशान हूँ । पर, तू तो बच्ची है । तुझे तो हँसना, बोलना चाहिए ।"

"मुझे कोई प्यार नहीं करता ।"

उन्होंने मुझे आकुल हृदय से चिपटा लिया । काफी क्षणों की नीरवता के पश्चात् बोलीं, "तुझे ज्ञात नहीं है कि तेरे मामा युद्ध में जा रहे हैं ।"

मैं चौंक गई । मेरी कल्पना सजग हो गई । विस्फोट, बम, भीषण नर-संहार, मृत्यु !

"तुम मुझसे छिपाती क्यों हो ?"

"छिपाना क्या ? जीवन के प्रति उसे कोई आकर्षण नहीं रहा ।"

कारण....मेरी कल्पना दौड़ गई ।

"माँ ! क्या मामी कभी नहीं आएँगी ?"

"ऐसा न कहो । एक दिन वह अवश्य आएगी ।"

"क्या वह कर्कशा, हठी हैं ? जितने भी कड़े शब्द उस क्षण याद आए, उनका मैंने प्रयोग किया ।

"वह बहुत अच्छी है ।"

सबकी प्रशंसा ही मेरे लिए प्रश्नचिह्न बन गई । मैं चाहती थी कि कोई उनकी निंदा करे, जिससे मैं कोई सूत्र पकड़ सकूं ।

मामा की निराशा, माँ की उदासी, नानी की पूजा बढ़ती जा रही थी । घर के नीरस वातावरण में मैं प्रतिदिन शिथिल होती जा रही थी ।

और एक दिन....

मैंने मामी को पत्र लिखना प्रारंभ किया । मामा का जितना करुण चित्र मैं अंकित कर सकती थी, वह किया । पत्र लिखते संकोच हो रहा था । मैं धड़कते हृदय से उत्तर की प्रतीक्षा कर रही थी । मैंने मामी को आमंत्रित किया था । युद्ध की विभीषिका से उन्हें आतंकित करने की चेष्टा की थी । मैंने धृष्टतावश यह भी लिख दिया था कि यदि आप नहीं आती हैं तथा मामा की युद्ध में मृत्यु हो जाती है, तो इसके लिए आप उत्तरदायी होंगी, केवल आप ही । आज मुझे अपनी बाल-सुलभ चेष्टा पर हँसी आती है ।

आखिर वह शुभ दिन भी आया और मैंने पत्र पढ़ा, तो गद्गद् हो गई । एक-एक वाक्य में मेरे प्रति उनका स्नेह, अपरिमित ममता छलक रही थी, कहीं भी क्रोध या आक्रोश की छाया नहीं थी । आने के संबंध में केवल इतना लिखा था.... मुझे किसीसे कोई शिकायत नहीं है । मैं घर आने को प्रस्तुत हूँ, बस, अपने मामा को भेज दो । तुम्हारे मामा ने मुझी पर नहीं, समस्त शिक्षित स्त्री-समाज के चरित्र पर संदेह किया है । उच्च शिक्षित, छात्रावास में रहनेवाली लड़की का चरित्र महान् हो सकता है, यह उनकी कल्पना से परे है । उनके भ्रम के निवारणार्थ ही मैंने यहाँ अपना कार्यक्षेत्र बनाया है । वह यहाँ आएँ और देखें । अपने मामा को भेज देना । तुम्हें भ्रम है । मैंने कभी आना अस्वीकार नहीं किया । अपने-आप में कैसे आ सकती हूँ ।

पत्र पढ़कर मेरी गुत्थी और उलझ गई । मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मामी के कथन में भी तथ्य है । उस दिन पहली बार मेरे हृदय में मामी के लिए श्रद्धा-भाव उदित हुआ । कितना स्वाभिमानी, उदात्त चरित्र है मामी का । ज़रा-सी बात लग गई और वह मामा से संबंध तभी रखेंगी, जब भ्रम का निवारण हो जाए ।

अवसर पाकर वह पत्र मैंने माँ को दिखाया । वह शांत रहीं । "तुझे पत्र लिखने की क्या सूझी ?"

उत्तर मेरे पास न था ।

"बेटी ! तेरी मामी स्वाभिमानी है, हठीली नहीं । वह अत्यंत ममतामयी है । उसका चरित्र शुक्र-तारा-सा पवित्र है । एक बार प्रसंगवश उसने अपने एक सहपाठी का नाम लिया, तेरे मामा ने संशय किया, यह उसे असह्य था । उसने चुनौती-भरे स्वर में कहा, "आपके विचार ज़रा संकुचित हैं । उच्च शिक्षित नारी का चरित्र भी महान् होता है, यह मुझे सिद्ध करना होगा ।" तबसे उसकी साधना आरंभ हो गई । उसने एक अन्य नगर में जाकर एक महिला-विद्यालय की स्थापना की है, जहाँ सादा जीवन तथा उच्च विचार का आदर्श क्रियान्वित हो रहा है ।"

मेरे मस्तिष्क में अध्याय खुलते जा रहे थे । जो मेरे मन में प्रश्न था, वह स्पष्ट हो गया । परंतु, यह गुत्थी सुलझेगी कैसे ?

माँ मुझसे बराबरी से बात कर रही थीं ।

"मामी फिर आएँगी कैसे ?"

"हरि-इच्छा के अधीन है ।"

"मैं उन्हें आमंत्रित करूँगी ।"

माँ ने नकारात्मक सिर हिलाया ।

मामी के शहर में एक विराट् प्रदर्शनी का आयोजन हुआ था । मुझे आशाकी एक किरण नजर आई । मैंने माँ से हठ की कि मैं प्रदर्शनी देखने जाऊँगी । माँ के निषेध के बावजूद मामा से मैंने वहाँ ले

चलने का अनुरोध किया। मुझमें अपरिमित साहस आ गया था। डाँट-फटकार सहने पर भी मैं अड़ी रही। अंत में निरुपाय होकर वह चलने को प्रस्तुत हुए। मैंने एक पत्र चुपचाप मामी को लिख दिया। मेरी योजना गुप्त रूप से चल रही थी।

प्रदर्शनी में मामी को देखकर मेरा चित्त हर्षित हो उठा। उनके चेहरे पर निर्मल तथा उच्च चरित्र का अद्भुत तेज था, आँखें दिव्य आलोक से आलोकित हो रही थीं। यही कारण है कि मुझे अपनी सामान्य मामी अपरूप सुंदरी लगीं।

मामा ने मामी को देखा, वह उनकी साधना के तेज के आगे बुझ-से गए। वह संभवतः हृदय में प्रसन्न हुए, परंतु, प्रत्यक्षतः वह अतिशय गंभीर हो गए।

"मामी" मैं धीरे से फुसफुसायी "यह नाटक मेरा देखा हुआ है।" मामा के साथ तुम चली जाओ।

वह चुप रहीं।

"मामा! यह नाटक दर्शनीय है।"

उनके नेत्र अनायास ही मामी की ओर उठ गए, मामी के नयन झुक गए।

"चली जाओ ना!"

वह लज्जित हुई और धीरे से कहा, "जीजी क्या सोचेंगी?"

मैंने अवाक् होकर उनका चेहरा देखा। मैं सोच रही थी कि जिसमें इतनी आत्म-सम्मान-भावना है, जिसे प्रतिष्ठा इतनी प्रिय थी कि अपनी हठ पर पड़ी रही, वही इस क्षण कितनी विनयी और मर्यादाशील हो रही है, उसे दूसरे की भावना का क़ितना ध्यान है। वह कौन-सा नशा था, जिसनें इसे हठी बनाया?

मामा के हाथ में नाटक के टिकिट थे, मामी के पैर आगे बढ़ नहीं पा रहे थे। वह बार-बार मेरी माँ की ओर देख रही थीं, मानों वहाँ जाने की अनुमति माँग रही हों।

"मामा! ये टिकिट क्या युद्ध में जाने के हैं?" मैंने मुसकराकर पूछा।

"बड़ी शैतान है!" प्यार से माँ ने कहा। वह भावविभोर होकर झूले की चर्खी देख रही थीं और संभवतः मन में सोच रही थीं कि यही है जीवन-क्रम ऊँचा-नीचा!

नई कविता

(पृष्ठ ९ का शेष)

return. For the memories themselves are not yet what is required. Not till they become blood within us, look and gesture, nameless and longer distinguishable from ourselves, not till than is it possible, in some very rare hour, for the first word of verse to arise in their midst and to proceed from them."

[कवि अल्प वय ही में कविता लिखने लगे, तो भी बहुत बड़ा कवि नहीं बन सकता। कवि बनने के लिए प्रतीक्षा करनी होगी और जीवन भर, संभव हो तो लंबे जीवन भर अर्थ और माधुर्य का संचय करना होगा और तब ठीक अंत में वह दस पंक्तियाँ ऐसी लिख सकेगा, जो अच्छी पंक्तियाँ हों; क्योंकि, जैसा लोग मानते हैं, कविताएँ संवेदनाएँ नहीं हैं, —संवेदनाएँ जल्द उभरती हैं, —वे अनुभव हैं। एक भी रचना के लिए कवि को अनेक नगरों, मनुष्यों, वस्तुओं को देखना होगा, अनेक पशुओं को जानना होगा, महसूस करना होगा कि पक्षी कैसे उड़ते हैं और उन भंगिमाओं को समझना होगा, जिनमें छोटे-छोटे फूल सुबह खिलते हैं। अपरिचित प्रदेशों में बिछी सड़कों की स्मृति उसे ताजी करनी होगी। अप्रत्याशित भेंटें और पूर्वाभासित विदाइयाँ; बचपन के दिन, जो अभी भी अबूझे हैं, माता-पिता, जिन्हें हमने तब नहीं समझा, जब वे हमें सुख पहुँचाना चाहते थे और जिन्हें हमने पीड़ा पहुँचाई—बचपन की बीमारियाँ, जो अजीब तरह से शुरू होती हैं और इतने गंभीर और कठिन परिवर्तन दे जाती हैं—खामोश, पराजित कमरों में बीते दिन और समुद्र-तट की सुबहें; और समुद्र क्या कुछ हो सकता है, विशेषतः यात्रा की रातों में, जो उड़ती चली जाती हैं और सितारों से होड़ करने लगती हैं। और यदि कोई इन सब को स्मृति में सुरक्षित रख सके, तो भी काफ़ी नहीं है। प्यार की अनेक रातों की याद बनी रहनी चाहिए और ये रातें भी एक-जैसी नहीं हों। क्या होते हैं प्रसव-पीड़ा के समय के नारी-कंठ के चीत्कार और प्रसव के बाद नवजात शिशु से लिपटे हुए गोरे, हल्के शरीर? यही नहीं, मरणासन्न मनुष्यों की शय्या से लग कर बैठना होगा और शव के साथ भी, जब कमरे की खिड़की खुली हो और कभी-कभी कोई शब्द चेतना पर आघात करता हो। और इन स्मृति-मात्र से काम नहीं चलेगा। बहुत स्मृतियों में से कुछ को भुला देना होगा और कुछ लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी होगी, जब तक वे लौट न आएँ; क्योंकि, केवल स्मृतियाँ ही वांछि नहीं हैं। उन्हें हमारे भीतर का रक्तप्रवाह ब जाना होगा, नाम-रूपहीन और हमसे अभि बनकर हमारी निगाहों और मुद्राओं में झांक होगा। जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक यह संभ नहीं है कि किसी दुर्लभ क्षण में इन स्मृतियों के बीच में कोई गीत उठे और इनमें से फूट क आकार ग्रहण करे]

आज का कवि ज्ञान से परास्त है और विज्ञा से हार गया है। अपनी अनुभूति के धागे में व इन्हें पिरो नहीं सका है। इसीसे, उसकी काव्यात्म संवेदना विश्रृंखल, अस्पष्ट और सतही है। आ पीढ़ी की तरह कवि का स्पर्श भी सतही औ तात्कालिक रह गया है। आज वह न स्रष्टा है, द्रष्टा। वह अपनी अनुभूति के प्रबल प्रवाह में बहता हुआ निःसहाय तृण बन गया है। उस उस अंतर्दृष्टि का अभाव है, जो सतही असंगतियों अस्पष्टताओं और विभिन्नताओं के भीतर घु सके और केंद्रवर्त्ती सार्थकताओं को पहचान सके। दर्शन का काम यदि युग की समस्त तथा विरो उपलब्धियों को बौद्धिक स्तर पर एकात्मता दे है, तो काव्य का काम उन्हें नए सौंदर्य-बोध ए नए भाव-जगत् में एकाकार करना है। केव बौद्धिक धरातल पर चलकर आज का कवि ज्ञा विज्ञान से छोटी ही चीज़ हमें दे सकेगा, वह व चीज़ नहीं, जिसकी परंपरा काव्य कहलाती र है। उपनिषद् के ऋषियों ने कवि को "मनी "ऋषि" और "धीर" कहा है। केंद्र तक पहुँ वाली अंतर्दृष्टि जिस साधना की अपेक्षा करती है वह एकसाथ हृदय-मन की संतुलित साधना है। उसीके फलस्वरूप आस्था के कमल खिलेंगे औ कवि नए युग को अभिव्यक्ति दे सकेगा। तब उ लिए प्रेषणीयता का प्रश्न रहेगा ही नहीं, क्यों उसके प्रतीक युगनिष्ठ, सहज-सौंदर्यप्राण औ तादात्म्यज रहेंगे। इस युगाधार पर प्रति युगातीत सत्य भी वैचित्र्यभ्रांत तथा अम न रहकर मानव-मूल्यों की अभिव्यंजना में सक्षम रहेगा।

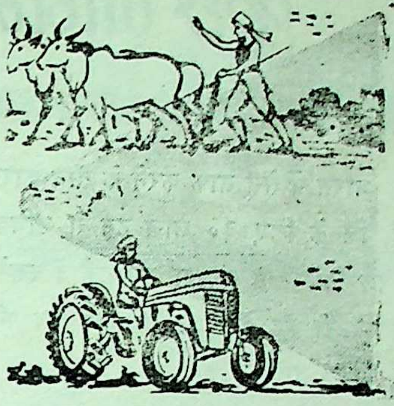

द्वितीय योजना के अंतिम दो वर्ष

—श्री श्रीमन्नारायण

अब तीसरी पंचवर्षीय योजना बनाने पर विचार आरम्भ हो गया है। दूसरी योजना के लक्ष्यों की पूर्ति पर ही तीसरी योजना का रूप और आकार निर्भर होगा। इसलिए, दूसरी योजना के आखिरी दो साल बहुत महत्व के हैं। यदि अगले दो सालों में हम अपने आन्तरिक साधन बढ़ालें और अपने लक्ष्यों को पूरा कर लें, तो हम तीसरी योजना की तैयारी विश्वास के साथ कर सकेंगे। योजना का काम बराबर चलता रहता है। किसी भी समय ढिलाई करने से अगली योजना पर बहुत बुरा असर पड़ता है। हमें निरन्तर कोशिश करनी चाहिए कि ज्यादा से ज्यादा रुपया बचाकर विकास के कामों में लगाएं।

पहली योजना के आरम्भ में हमारी बचत की दर ७ प्रतिशत थी और दूसरी योजना के मध्य में यह १० प्रतिशत हो गई। तीसरी योजना गें हमें राष्ट्रीय आय का १४ प्रतिशत बचाना चाहिए। यदि हम अगले दो वर्षों में बचत बढ़ाने की पूरी कोशिश नहीं करते, तो तीसरी योजना में इसका एकदम बढ़ जाना कदापि सम्भव नहीं। कम विकसित देशों में बचत बढ़ाने का काम बड़ा कठिन है। इसके लिए लोगों को ठीक से समझाना होगा, साथ ही रुपया इकट्ठा करने के लिए शहरों और देहातों में बहुत अच्छा संगठन भी जरूरी होगा।

देश के आर्थिक विकास के लिए जनता का सहयोग जरूरी है, यह तभी मिलेगा, जब वे समझें कि यह योजना उनकी, और उन्होंने ही इसे अपने ही हित के लिए बनाया है और वे ही इसे चला रहे हैं। शासन कितना भी कुशल क्यों न हो, जनता के पूरे सहयोग के बिना योजना सफल नहीं हो सकती

पंचायत और सहकारी समिति

इसलिए, योजना की बुनियाद जनता की संस्थाओं पर रखनी चाहिए, जैसे देहातों में पंचायतें और सहकारी समितियां तथा शहरों में नगरपालिकाएं। हमें इन संस्थाओं पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इन्हीं पर दूसरी और तीसरी योजनाओं की सफलता निर्भर है।

सारी शक्ति सरकार के हाथों में केन्द्रित करके काम करना आसान है। जनता की संस्थाएं बनाना और उनको अधिकार और काम सौंपना कठिन है, पर हमने इसी ढंग से अपनी विकास-योजनाओ को चलाने का निश्चय किया है और यह ठीक भी है।

करों की वसूली में सुधार

अनुमान है कि अगले दो वर्षों में केन्द्रीय और राज्य सरकारें दूसरी योजना के कार्यक्रमों में १,७५४ करोड़ रुपए लगा सकेंगी। पर, उन्हें लगाना है २,०३४ करोड़ रुपया, जिससे पूरी योजना में ४,५०० करोड़ रुपए लगाने का लक्ष्य पूरा हो सके। इस प्रकार २८० करोड़ रुपए की कमी रह जाती है। केन्द्र में १९८ करोड़ रुपए की और

उस महानता को शत वन्दन

वरण किया जिसने लघुता को
उस महानता को शत वन्दन!

हिमगिरि श्रृंग छोड़कर जिसने
मिट्टी से नित नाता जोड़ा।
गांव-गांव में गीत गुंजाये
गिरि-ममता का बन्धन तोड़ा।
सुरसरि के उस शुचि प्रवाह को,
नित मेरा शत-शत अभिनन्दन!

तन मिट्टी का, स्नेह-पूर्ण जो
पहने लघु किरणों की माला।
श्रान्त पथिक को आमंत्रण दे
फैलाता आलोक निराला।
परहित निरत जल रहा तिल-तिल
उस प्रदीप को, शत-शत वन्दन!

उर विदीर्ण स्वांसों में ज्वाला
तृषा तृप्ति में जल की दूरी।
धूल उड़ रही जिसके मुख पर
उस मरु की कितनी मजबूरी।
रिमझिम के स्वर में जो उतरे
उस घन को मेरा अभिनन्दन!

जिसकी ममता भरी क्रोड़ ने
समता का संसार सजाया।
दीन-दलित पर द्रवित हुआ जो
पतित मनुज को गले लगाया।
मानवता के गौरीशंकर—
को, मेरा शत-शत अभिनन्दन!

वरण किया जिसने लघुता को
उस महानता को शत वन्दन!

—श्री रामेश्वरदयाल दुबे

राज्यों में ८२ करोड़ रुपए की। स्पष्ट है कि २८० करोड़ रुपए की यह कमी पूरी करने के लिए नये कर लगाने पड़ेंगे और जनता से भी ऋण लेना होगा। नये कर लगाने के साथ यह भी बहुत आवश्यक है कि वर्तमान करों को ठीक तरह से वसूला जाय। यह निश्चित है कि वर्तमान करों की पूरी रकम वसूल नहीं हो रही है। अतः यह बहुत जरूरी है कि करों की चोरी को किसी प्रकार समाप्त किया जाय। यह किस प्रकार किया जाय, इसकी जाँच के लिए वित्त मंत्रालय ने त्यागी समिति नियुक्त की है। आशा है कि यह समिति अपनी रिपोर्ट शीघ्र देगी, जिससे इसके सुझावों से दूसरी योजना के आखिरी दो वर्षों में लाभ उठाया जा सके। राज्य सरकारों का भी ऐसी ही समितियां नियुक्त करनी चाहिए और कर-वसूली की व्यवस्था को कसना चाहिए। कर-दाताओं को परेशान न करना चाहिए, पर कर-वंचकों को कड़ा दण्ड दिया जाना चाहिए। नए कर लगान और करों की पूरी वसूली के साथ-साथ अगले दो वर्षों में छोटी बचतों को बढ़ाने के लिए देहातों में संगठित रूप से कार्य होना चाहिए। इस कार्य में पंचायतें और सहकारी समितियां बड़ी सहायक होगी। गांवों में जीवन-बीमे का काम भी बहुत बढ़ाया जा सकता है। राजस्थान में इस कार्य में बड़ी सफलता मिली है।

यह स्पष्ट है कि खेती और कारखानों का उत्पादन बढ़ने पर ही नये करो और सार्वजनिक ऋणों से पर्याप्त धन मिल सकेगा। देश को अगले दो वर्षों में अन्न में आत्मनिर्भर हो जाना चाहिए, जिससे तीसरी योजना में बाहर से अनाज मंगाने पर खर्च न करना पड़े। इस वर्ष फसलें भी अच्छी हुई हैं, यदि प्रकृति प्रतिकूल न हुई हो, तो आशा है कि दूसरी योजना के अन्त तक देश अनाज में आत्मनिर्भर हो जाएगा। इसके लिए अच्छे बीज, खाद, सिंचाई और खेती के अच्छे तरीकों का पूरा उपयोग जरूरी है। इसमें सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं का सहयोग आवश्यक है। सामुदायिक विकास आन्दोलन में भी अन्न की उपज बढ़ाने को प्रधानता दी गई है। किसानों का सहयोग मिल जाय, तो अन्न की उपज बढ़ाना कुछ मुश्किल भी नहीं है। इसी तरह कारखानों, विशेषकर छोटे धंधों, घरेलू और ग्रामोद्योग को भी बढ़ाना चाहिए, जिससे लोगों को अपने व्यवहार की सामग्री पर्याप्त मात्रा में मिल सके। यदि अगले दो वर्षों में सहकारी ढ़ंग से देशभर के गांवों में अच्छे खेत और छोटे धंधे और कारखाने खोले जा सकें, तो तीसरी योजना की सफलता निश्चित है।

दूसरी योजना के आखिरी दो साल बड़े महत्व के हैं। तीसरी योजना की तैयारी करते समय हमें अगले दो वर्ष के कार्यक्रमों पर पूरा ध्यान देना चाहिए।

कुछ जानने योग्य बातें

१. भारत में तेल साफ करने के तीन कारखाने हैं, जिनके लिए ३० लाख टन से अधिक अशुद्ध तेल विदेशों से मंगाया जाता है। इसके अलावा मिट्टी का तेल और डिजल तेल भी आयात किया जाता है।

२. आयात का यह पूरा व्यापार विदेशी कम्पनियों के हाथ में है। ये कम्पनियां अशुद्ध तेल मंगाती हैं और अपने कारखानों में इसे साफ करवाती हैं। ये ही मिट्टी का तेल आदि भी मंगाती हैं और भारत भर में इनके वितरण की व्यवस्था करती हैं।

३. पेट्रोल और उसके उत्पादनों की बन्दरगाह तक पहुंचने तक की कीमत और बाजार भाव में बहुत बड़ा अन्तर देखने को मिलता है। एक टन मिट्टी के तेल का बिक्री मूल्य, बंदरगाह मूल्य से १५० रुपये अधिक है, इसमें शुल्क शामिल है, पर बिक्री-कर नहीं।

४. इस अन्तर को घटाने तथा इन ची का ठीक मूल्य निर्धारित करने के लिए सरकार विदेशी कम्पनियों से बातचीत की थी।

५. आरम्भ में विदेशी कम्पनियों ने पेट्रो और उसके उत्पादनों के मूल्य में से १० करो रुपये कम करने की बात मान ली और यह मान लिया था कि हर वस्तु का मूल्य उसकी पू लागत के अनुसार निर्धारित किया जाएगा।

६. लागत मूल्य की जाँच सरकारी त विदेशी कम्पनी दोनों के विशेषज्ञ कर रहे हैं। आशा है, शीघ्र ही इस पर समझौता हो जाए जिससे इन चीजों की कीमतें कम हो जाएंगी।

७. सरकार तेल-वितरण के इस व्यवसा को अपने हाथ में लेना चाहती है। अतः इस वि की पूरी जानकारी हासिल करने की कोशिश की जा रही है।

८. कुछ दिन पहले, केन्द्रीय खान औ तेल मंत्री श्री केशवदेव मालवीय ने राज्यस में बताया था कि इतने बड़े व्यवसाय को विदेशी कम्पनियों के एकाधिकार में रहने दे ठीक नहीं है। इसलिए, इन चीजों का मूल्य नि रण करने, वितरण की व्यवस्था करने तथा ला में उचित हिस्सा लेने के लिए सरकार को ते वितरण की व्यवस्था अपने हाथ में यथाशी ले ही लेनी चाहिए।

९. देश में मोटे तौर पर कुल आयात १७ प्रतिशत पूंजीगत माल, ६५ प्रतिशत औ गिक कच्चा माल और २० प्रतिशत उप वस्तु आयात की जाती हैं। उपभोग्य वस्तु अन्तर्गत दवा, रासायनिक पदार्थ तथा वस्तुएं मंगाई जाती हैं। इसके अलावा राष्ट्रों से व्यापार सम्बन्ध बनाये रखने के वहां से खजूर, मेवा, लौंग आदि भी जाता है।

योजना सफल बनाने के उपाय

— श्री वी० आर० शेनाय

भारत का हर कर्मठ नागरिक दस दिन में औसतन एक दिन सरकार के लिए काम करता है। ऐसे स्त्री-पुरुषों की संख्या भी कम नहीं हैं, जो महीने के बाद के भाग में हर आठ दिन में औसतन ६ या ७ दिन सरकार के लिए काम करते हैं। तीन लाख रुपये की आमदनी पर आयकर आदि चुकाने के बाद केवल ७५ हजार रुपये बचते हैं। वस्तु इतनी आय वाला व्यक्ति सरकार के लिए तीन दिन और अपनी घर-गृहस्थी के लिए केवल एक दिन काम करता है। समाजवादी समाज की रचना के लिए यह अनुपात बढ़ना चाहिये और इसीके आधार पर केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के बजट बनने चाहिएँ।

सन् १९५९-६०

दूसरी पंचवर्षीय योजना में सन् १९५९-६० का वर्ष विशेष महत्त्व रखता है। प्रथम योजना के पहले चार वर्षों में जनता जो भी बचत कर सकी थी, उसे योजना में लगा दिया गया। दूसरी योजना के पहले तीन सालों के भीतर हमारा संचित मुद्राकोष भी प्रायः समाप्त हो चला है। अब योजना चलाने के लिए रुपये चाहिएँ। घाटे की वित्त व्यवस्था को और बढ़ाने से वस्तुओं की कीमतें भी और बढ़ेंगी। पिछले दो साल के भीतर ७७६ करोड़ रुपये की घाटे की वित्त व्यवस्था करदी गई है, जिससे भाव ७.३ प्रतिशत बढ़ गये हैं। और यह तब है, जब वास्तव में घाटे की वित्त व्यवस्था हुई नहीं है, क्योंकि सन् १९५७-५८ के बजट का ४९८ करोड़ रुपये घाटा, मुद्राकोष से २९४ करोड़ रुपया निकाल कर और १५२ करोड़ रुपये विदेशी सहायता लेकर पूरा किया गया। इसमें विदेशों की भारत में लगी पूंजी भी शामिल है। सन् १९५८-५९ के बजट में २७८ करोड़ रुपये का घाटा, अकेले विदेशी सहायता से ही पूरा किया गया। इसमें मुद्राकोष से केवल ४६ करोड़ रुपये लिए गये।

वर्तमान वर्ष

इस साल योजना पर १,१२१ करोड़ रुपये खर्च होने को हैं। यदि मान ले कि ३३७ करोड़ रुपये विदेशी सहायता के रूप में मिलेंगे और पिछले दो सालों के औसत रेट पर ४८४ करोड़ रुपये बचत से आवेंगे, तो ३०० करोड़ रुपये की कमी रह जाती है। ऋण लेकर इसे पूरा करने का मतलब होगा, मुद्रा-प्रसार, जो हमारी अर्थ-व्यवस्था के लिए अहितकर तो होगा ही और समाजवाद के विपरीत जाएगा; क्योंकि, चीजों के दाम बढ़ जाने से व्यापारियों और उद्योगपतियों को तो अत्यधिक लाभ होता है, पर बंधी आमदनी वाली मध्यम श्रेणी, मजदूरों और गरीबों को इससे अत्यधिक हानि उठानी पड़ती है। जब तक मुद्रा-प्रसार के साथ-साथ वस्तुओं का उत्पादन नहीं बढ़ता और आर्थिक नीति ऐसी नहीं होती, जिससे गंदगी रुके, तब तक आर्थिक उन्नति और समाज का भला नहीं हो सकता।

हमारे पास केवल दो उपाय हैं। एक है लोगों को अधिक से अधिक रुपया बचाने को प्रेरित करना और दूसरा अधिक से अधिक विदेशी सहायता प्राप्त करना। यदि विदेशी सहायता जरूरत के अनुसार नहीं मिल पाती, तो हमें अपने बजट में काट-छाँट करनी ही होगी।

कठोर उपाय

यदि योजना में काट-छाँट नहीं करनी है और आर्थिक स्थिरता कायम रखनी है, तो हमें कुछ कठोर उपाय करने होंगे। पहला काम कर बंचना को रोकना है। अनुमान ह कि हर साल करीब-करीब दो सौ करोड़ रुपये से तीन सौ करोड़ रुपये तक का सरकारी कर मारा जाता है। १९५१-५२ से व्यक्तिगत आय पर लगभग १४५ करोड़ रुपये कर मिल रहा है। इस बीच राष्ट्रीय आय २० प्रतिशत बढ़ी है, पर करों से होने वाली आय नहीं बढ़ी। इससे साफ पता चलता है कि कर मारा जा रहा है। इसे रोकना है। दूसरा उपाय आयात-लाइसेंसों पर शुल्क लगाना है। लोग आयात-लाइसेंस बेचकर बहुत मुनाफा कमाते हैं। तीसरा साधन प्रतिरक्षा बजट में १० से १५ प्रतिशत की कमी करना हैं। इससे २५ से ३८ करोड़ रुपये तक बच सकते हैं। चौथा साधन रुपये के पुराने विनिमय-मूल्य में संशोधन है, निर्यात के लिए फिलहाल जो सहायता दी जाती है, इससे उसका बोझ कम होगा और कुछ निर्यात-शुल्क बढ़ाया जा सकेगा। साथ ही आयात के प्रतिबन्ध ढील हो सकेंगे और आयात-शुल्क भी अधिक मिलेगा। पांचवां साधन कारखानों और खेती के मजदूरों को और अधिक काम करने को प्रेरित करना है। अधिक उत्पादन से अधिक आमदनी और अधिक आमदनी से अधिक बचत होना स्वाभाविक है। छठे, यदि सरकार सोने का आयात करे और उसे बेचे तो वर्तमान बाजार-दर पर उससे १८ से २० करोड़ रुपये साल तक की आमदनी हो सकती है। इसके अलावा बेकार लोगों से श्रमदान कराकर अथवा छुट्टियों में छात्रों से काम ले कर भी देश का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

राज्य द्वारा व्यापार को अधिक से अधिक अपने हाथ में लने से उत्पादन नहीं बढ़ सकता और न इससे जनता में रुपया बचाने को ही उत्साह होगा। हाँ, सरकारी क्षेत्र में इससे कुछ बचत जरूर हो सकती है। इसी तरह सहकारी खेती से भी तत्काल फल न होगा; क्योंकि, छोटे-छोटे खेतों को मिलाकर बड़े खेत बनाना, उसे चलाने के लिए पैसा जुटाना और आधुनिक रीति से खेती करना कोई सरल काम नहीं है। इसमें काफी समय लगेगा।

महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय; रायपुर

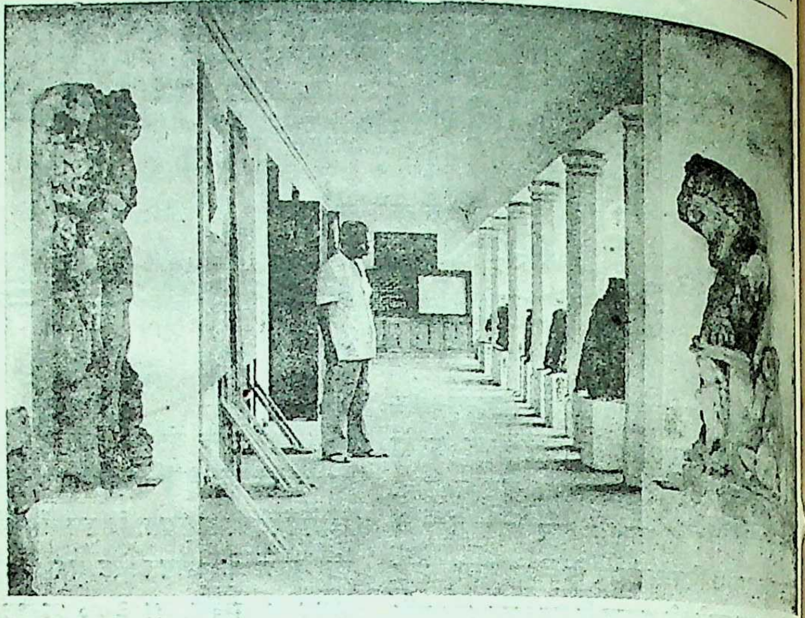

राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास को शृंखलाबद्ध करने में पुरातत्व-अवशेषों, उत्कीर्ण शिलालेखों तथा ताम्रपत्रों का विशिष्ट स्थान है। दीर्घकाल तक देश की पराधीनता के कारण उसकी बहुत-सी बहुमूल्य ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक सामग्री नष्ट हो गई। व्यक्तिगत अभिरुचि से जिन महानुभावों ने उपलब्ध सामग्री को सुरक्षित करके अगली पीढ़ियों को उपलब्ध कराया, वे निश्चय ही साधुवाद के पात्र हैं। उनमें नांदगांव के राजा साहब दिवंगत महन्त घासीदास का कार्य उल्लेखनीय है, जिन्होंने आज से लगभग ९० वर्ष पूर्व सन् १८७५ ईसवी में सिलवर जुबिली चिकित्सालय रायपुर के निकट एक भव्य भवन में एक पुरातत्व संग्रहालय की स्थापना की और उसे भली भांति सुरक्षित रखा। सन् १९५३ में उक्त संग्रहालय की व्यवस्था का भार मध्यप्रदेश शासन ने ले लिया।

नांदगांव की रानी श्रीमती ज्योतिदेवी ने डेढ़ लाख रुपयों की धनराशि दान करके संग्रहालय को नवीन भवन की सुविधा दिलाई। तब से यह महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय कहलाता यह संग्रहालय एक सुन्दर उद्यान में नि भव्य भवन में स्थापित है।

संग्रहालय में पांच उप-विभाग हैं—पुरात कलाकौशल, चित्रकारी, प्राणिशास्त्र तथा नतत्व पुरातत्व शाखा में प्रागैतिहासक औजार, प्रा मूर्तियां, शिलालेख, सिक्के और हस्तलि पोथियाँ संग्रहीत हैं। प्रागैतिहासिक वस्तुओं प्राप्त ताम्रयगीन औजार महत्त्वपूर्ण हैं। प्रतिमाओं म सिरपुर से प्राप्त बुद्ध और

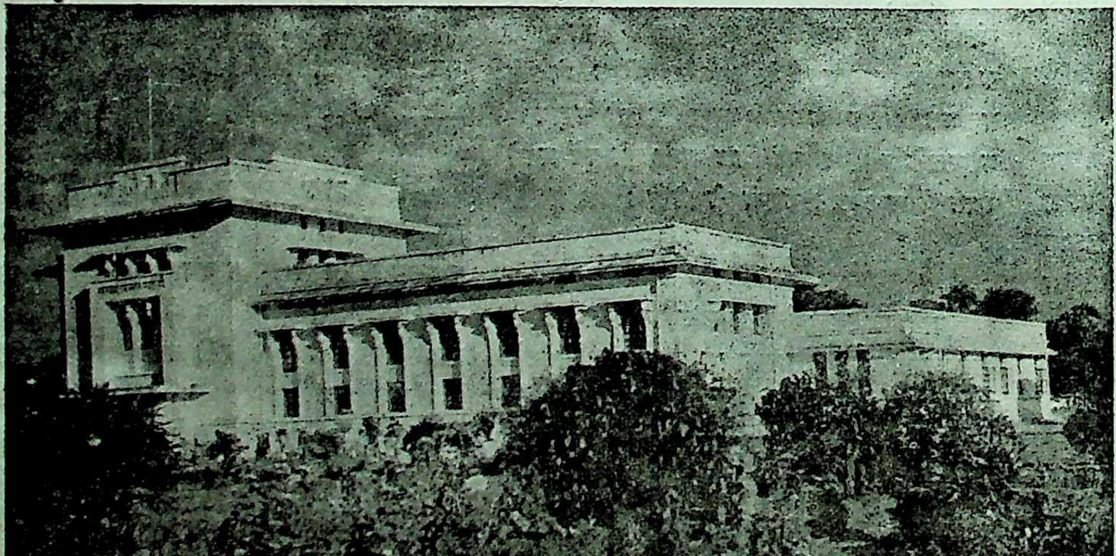

संग्रहालय का भवन

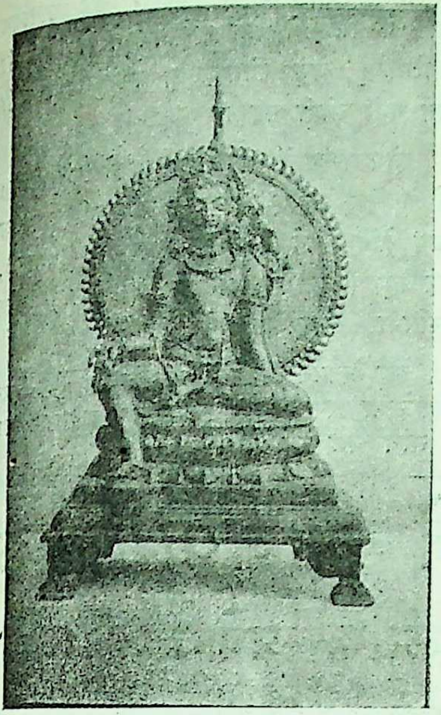

संग्रहालय म सग्रहात वज्र पाणि की मूात
(सातवीं-आठवीं शती सिरपुर)

सत्व प्रतिमाएँ तथा सलखन से प्राप्त गौरी की प्रतिमा तथा वज्रघण्टा दर्शनीय हैं। पाषाण-प्रतिमाओं में सें कारीतलाई से उपलब्ध कलचुरि-कालीन गरुड़नारायण, योगनारायण, मधुसूदन गोविन्द, नारायण, हृषीकेश, नृसिंह, वामन, त्रिविक्रम, आदिनाथ, गोमरी की कार्तिकेय-प्रतिमा आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। राजनांदगांव सें प्राप्त तीन बंदर अद्वितीय हैं। वे "बुरा मत कहो, बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो" का उपदेश देते हैं। गोंड कालीन प्रतिमाएँ तत्कालीन वेश-भूषा पर प्रकाश डालती हैं। संग्रहालय के ३६ शिलालेख और ताम्रपत्र लेख, महाकोशल के प्राचीन राजवंशों—सोमवंश, शरभपुरीय वंश और कलचुरिया वंश के हैं। किरारी से प्राप्त काष्टस्तंभ-लेख महत्त्वपूर्ण है। इसका समय ईसवी सन् की द्वितीय-तृतीय शताब्दी है। इसमें तत्कालीन राजकीय अधिकारियों के नाम मिलते हैं। प्राचीन भारतीय सिक्कों की विविधता का ज्ञान कराने के लिए प्राचीन सिक्कों की नकलें एक शो-केस में प्रदर्शित की गई हैं। संग्रहालय में अस्त्र-शस्त्र भी संग्रहीत हैं। प्राचीन हस्तलिखित पोथियों में श्रीमद्भागवत, सारस्वती प्रक्रिया, नल-दमयंती-रासो, सुंदर विलास, रतनजोग, वाशिष्ठसार, गोरख ज्ञान आदि-संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश तथा हिन्दी के ग्रंथ संग्रहीत हैं। चित्र-विभाग में अजंता, मुग़ल, राजस्थानी और कांगड़ा शैली के चित्र प्रदर्शित हैं।

कला-कौशल विभाग में भारत के विभिन्न प्रदेशों की कलापूर्ण वस्तुओं का संग्रह है। बनारस के पीतल के बर्तनो पर धार्मिक प्रसंगों और अवसरों का अंकन है।

प्राणि-शास्त्र विभाग में राज्य के जंगलों में पाये जाने वाले पशु-पक्षी मसाला भरकर सुरक्षित रखे गये हैं।

नृतत्व विभाग में महाकोशल और विदर्भ में निवास करनेवाले आदिवासियों की वस्तुओं का संग्रह है। विशेषकर माड़िया, गोंड, कोरकू-बंजारा, ओराव जातियों के कपड़े-लत्ते, गहने, पात्र, शस्त्र, वाद्य एवं दैनिक-उपयोग की वस्तुएं।

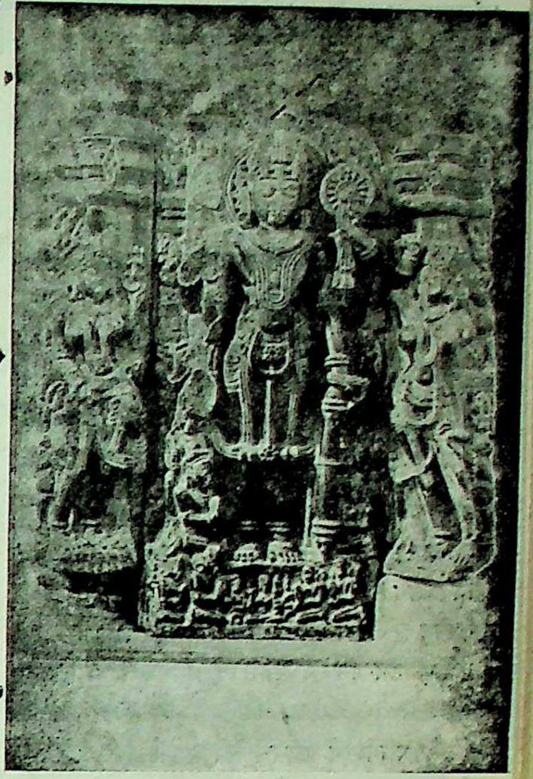

सग्रहालय में स्थित विष्णु की मर्ति
(रतनपुर, १२वीं शती)

संग्रहालय-भवन में ही महन्त सर्वेश्वरदास ग्रंथालय स्थापित है, जिसमें विविध भाषाओं की लगभग पाँच हजार पुस्तकों का संग्रह है। वाचनालय में साठ के लगभग पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं।

उक्त संग्रहालय में दर्शनार्थी का प्रवेश निःशुल्क है। इस प्रकार इस संग्रहालय में अन्वेषकों, इतिहास-प्रेमियों तथा पर्यटकों के उपयोग की पर्याप्त सामग्री विद्यमान है।

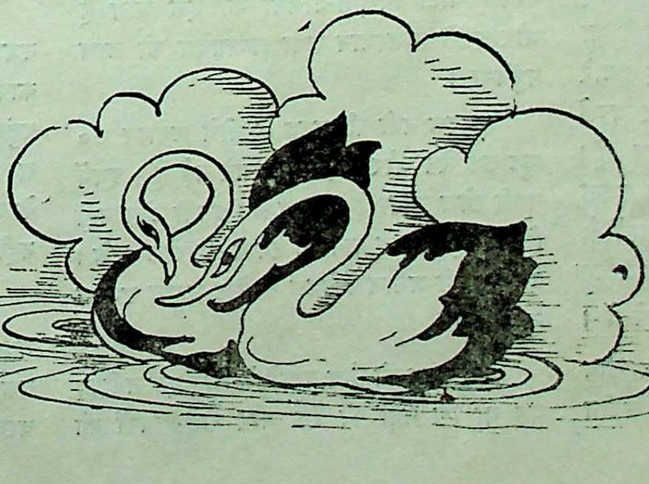

उद्योगों की उन्नति का आधार—कोयला

कोई भी देश अपने उद्योग बढ़ाकर समृद्धि के पथ पर तभी आगे बढ़ सकता है, जबकि उसके पास कोयले की काफी खानें हों और वह उनसे पर्याप्त कोयला निकालता हो।

इसीलिए, देश की दूसरी योजना में खानों से और अधिक कोयला निकालने पर विशेष जोर दिया गया है। योजना के आरम्भ में देश की खानों से हर साल ३ करोड़ ८० लाख टन कोयला निकाला जाता था। अब इस योजना में ६ करोड़ टन अर्थात् २ करोड़ २० लाख टन अधिक कोयला निकालने का लक्ष्य रखा गया है। इसमें से १ करोड़ २० लाख टन सरकारी खानों से और १ करोड़ टन निजी खानों से निकाला जायगा।

उद्योगों में कोयले की काफी जरूरत होती है। जब तक कोयले का उत्पादन काफी न हो, तब तक उद्योगों को बढ़ाना सम्भव नहीं। प्रस्तुत लेख में बताया गया है कि देश में कोयले का उत्पादन बढ़ाने के लिए क्या प्रयत्न किए जा रहे हैं।

—सम्पादक

सन् १९५८ में सरकारी और निजी खानों से कुल ४ करोड़ ५२ लाख टन कोयला निकाला गया। इस प्रकार हम अपना लक्ष्य पूरा करने में सफल हो रहे हैं।

देश में कोयले के कुल उत्पादन का ९५ प्रतिशत देश में ही खप जाता है और बाकी ५ प्रतिशत कोयला विदेशों को भेजा जाता है।

देश में उद्योग तेजी से बढ़ रहे हैं और इसलिए इसके साथ-साथ कोयले की मांग भी बढ़ती जा रही है। परन्तु, इस मांग को देखते हुए हमारे यहां कोयले की खानें काफी नहीं हैं और अच्छे किस्म के कोयले की खानें तो बहुत कम हैं। इसलिए, हमें इस बात का बराबर प्रयत्न करना पड़ता है कि हमारे पास जितनी भी खानें हैं, उनसे आधुनिक वैज्ञानिक तरीके से अधिक से अधिक कोयला निकालें और उसे बरबाद न होने दें।

इसके लिए केन्द्रीय सरकार ने राष्ट्रीय कोयला विकास निगम बनाया है, जिसके अधीन सरकारी खानों से कोयला निकालने, उत्पादन बढ़ाने और उसे हिफाजत से रखने का काम होता है। निगम अपना काम पूरी सफलता के साथ कर रहा है। इस समय उसके अधीन ११ कोयला खानें हैं। इसके अलावा कुछ नई खानों से भी कोयला निकालने का काम शुरू हो गया है और कुछ अन्य नई खानें खोदी जा रही हैं।

दूसरी योजना में कोयले का उत्पादन बढ़ाने के लिए केन्द्रीय सरकार ने वे क्षेत्र भी ले लिए हैं, जहां कोयला है, परन्तु जहां अभी खानें नहीं खोदी गईं।

कोयला-खानों में काम करने की ट्रेनिंग देने के लिए भी एक योजना चल रही है। इस समय ट्रेनिंग देने के लिए करगली (बिहार), गिरडीह (बिहार), तलछर (उड़ीसा) और कुरसिया (मध्यप्रदेश) में केन्द्र हैं।

इस प्रकार उद्योगों की प्रगति के लिए कोयले का उत्पादन बढ़ाने का काम पूरी सफलता के साथ चल रहा है।

बुनियाद मजबूत करने का नया तरीका

कोटा बांध पर पहली बार प्रयोग

जिस जगह की जमीन ठोस नहीं होती, वहां बांध की बुनियाद को मजबूत बनाने के लिए उसकी सतह में मिट्टी और सीमेण्ट का मिश्रण भर दिया जाता है।

दक्षिण फ्रांस में दूरेंस नदी पर ४०० फुट ऊंचा बांध बनाते समय यही तरीका अपनाया गया। वहां की जमीन में काफी नीचे तक मिट्टी और सीमेण्ट का मिश्रण भरना पड़ा और इस प्रकार बुनियाद बनाने के लिए जमीन को ठोस बनाना पड़ा।

सुना जाता है कि अब मिश्र में अस्वान बांध बनाने के लिए भी यही तरीका अपनाया जाएगा।

भारत में भी पहली बार कोटा बांध बनाते समय यह तरीका अपनाया गया है। यह बांध चम्बल घाटी विकास-योजना का एक भाग है और इससे राजस्थान तथा मध्यप्रदेश को लाभ पहुंचेगा।

चम्बल नदी की सतह के नीचे लगभग ७० फुट तक रेत और रोड़े-पत्थर भरे पड़े हैं। इनमें पानी छीज जाता है और जमीन इतनी ठोस नहीं है कि वह बांध के पानी के दवाब को रोक सके। इस रेतीली जमीन में केवल सीमेण्ट भरना सम्भव नहीं है।

इस सतह को ठोस बनाने के लिए एक तरीका यह था कि वहां की रेत और रोड़े-पत्थरों को हटा दिया जाता और उसके स्थान पर मिट्टी भर दी जाती। परन्तु, इस पर काफी खर्च बैठता और समय भी बहुत अधिक लगता।

इसलिए, वहां सतह के नीचे मिट्टी और सीमेण्ट के मिश्रण को डालकर उसे मजबूत करने का आधुनिक तरीका अपनाया गया। यह काम वहां जनवरी के मध्य से शुरू हो चुका है।

यह तरीका इस प्रकार है—पहले नदी के तट से महीन मिट्टी निकालकर उसे पानी के हौज में डाल देते हैं। फिर, पानी और मिट्टी को खूब मिलाया जाता है और तब उसमें सीमेण्ट तथा सोडियम सिलीकेट डाल देते हैं। इस प्रकार मिश्रण तैयार हो जाता है।

जहां जमीन को मजबूत बनाना हो, वहां नजदीक-नजदीक छेद बनाकर इस मिश्रण को काफी दवाब के साथ अन्दर डाल देते हैं। अन्दर पहुंचकर यह मिश्रण सूख जाता है और काफी सख्त बन जाता है। इस प्रकार वह जमीन मिश्रण के कारण ठोस बन जाती है और तब उससे पानी नहीं छीज सकता।

कोटा बांध में यह काम जनवरी १९५९ के मध्य में शुरू हुआ और अप्रैल १९५९ के आरम्भ तक समाप्त हो जाएगा। इस काम की देखरेख चार विदेशी विशेषज्ञ कर रहे हैं।

स्थानीय समाचार

सम्भाग स्तरीय सेमिनार

ग्वालियर संभाग के आयुक्त श्री एस. पी. मेहता, आई. ए. एस., ने मोतीमहल में त्रि-दिवसीय संभाग स्तरीय सेमिनार का उद्घाटन किया।

उक्त अवसर पर बोलते हुए आपने कहा कि सामूहिक विकास एवं राष्ट्रीय विस्तार सेवा-खंडों के माध्यम से देश में सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति हो सकती है। इस कार्यक्रम में ग्रामीण जनता, जिसका अनुपात देश की जनसंख्या का लगभग तीन-चौथाई है, की सर्वांगीण उन्नति पर विशेष जोर दिया गया है।

इस प्रकार का प्रथम सेमिनार नवम्बर १९५७ में हुआ था और अब यह दूसरा प्रयत्न है। इनका उद्देश्य यही है कि इस संभाग में विकास-कार्यों से संबंधित अधिकारी अपने विचारों का आदान-प्रदान करें, अपनी कठिनाइयों का हल निकालें और एक-दूसरे के अनुभव का लाभ उठावें। योजना की सफलता के लिए इस प्रकार के आयोजन आवश्यक हैं।

सेमिनार में भाग लेनेवाले अधिकारियों तथा अन्य व्यक्तियों को कलेक्टर--ग्वालियर, भिंड, गुना तथा दतिया की अध्यक्षता में चार समूहों में विभक्त कर दिया गया, जिनमें उन्होंने कार्यक्रम के अनुसार विकास-कार्यों के संबंध में विस्तृत चर्चा की।

सेमिनार की परिसमाप्ति के अवसर पर आयुक्त द्वारा सेमिनार में भाग लेनेवाले अधिकारियों को देश के नव-निर्माण-कार्य के प्रति निष्ठा एवं लगन से अपना कर्त्तव्य पालन करने एवं जनता के हृदय में जनसेवा के द्वारा स्थान बनाने की सलाह दी गई।

राज्य के विकास आयुक्त श्री पी. एस. बापना, आई. ए. एस., द्वारा राष्ट्रीय विस्तार-सेवा-खंडों के अधिकारियों को जन-सहयोग, विकास, कृषि, पशु-पालन, जनस्वास्थ्य, शिक्षा, यातायात आदि अनेक विषयों के संबंध में मार्ग-दर्शन कराया गया।

उक्त सेमिनार में ग्वालियर, गुना, भिण्ड तथा दतिया जिलों के कलेक्टरों, संभाग के छह जिलों के डिप्टी कलेक्टरों, राष्ट्रीय विस्तार-सेवा-खंडों के अधिकारियों, सरपंचों तथा स्वास्थ्य, पशु-पालन, कृषि, शिक्षा, सहकारिता, जन-कार्य, उद्योग आदि विभागों के संभागीय अधिकारियों, इस प्रकार लगभग ८० व्यक्तियों ने भाग लिया। सेमिनार में भाग लेनेवाले व्यक्तियों के मनोरंजनार्थ सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय की ओर से लोक-गीत के कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

रीजनल ट्रान्सपोर्ट अथॉरिटी की बैठक

रीजनल ट्रान्सपोर्ट अथॉरिटी की ग्वालियर में विगत सप्ताह हुई बैठक में लगभग ४७५ प्रकरणों पर निर्णय किए गए।

उक्त बैठक में प्रकरणों की संख्या में वृद्धि का कारण प्रार्थना-पत्रों को अनुपयुक्त मार्गों के लिए प्रस्तुत करना अथवा ऐसे अन्तर्राज्यीय मार्गों के लिए देना, जिनके लिए पारस्परिक ठहराव नहीं था जिन पर यात्री गाड़ियों को बढ़ाने की गुंजायश नहीं है।

रीजनल ट्रान्सपोर्ट अथॉरिटी द्वारा इस क्षेत्र के समस्त मार्गों के लिए सीलिंग कायम करने का निर्णय लिया गया है तथा एक उप-समिति का निर्माण किया गया है, जो क्षेत्र का दौरा करके शासकीय अधिकारियों, जिला सलाहकार समिति, मुख्य ऑपरेटरों एवं अन्य जन-प्रतिनिधियों से परामर्श करके स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर रीजनल ट्रान्सपोर्ट अथॉरिटी को अपने सुझाव पेश करेगी। इसके फलस्वरूप अनियमित प्रार्थना-पत्र मर्यादित हो सकेंगे और कार्य में सुविधा होगी।

प्रार्थियों को परमिट मिलन की आशा में पहले ही से बस न खरीदना चाहिए। ऐसा प्रबन्ध भी किया गया है कि शादी, मेले आदि के लिए एक सप्ताह के लिए अस्थाई परमिट देने के लिए जिला मजिस्ट्रेटों को अधिकार दिए गए हैं।

उक्त बैठक में ५२ बस मार्गों के परमिट जारी किए गए, जिनमें से ग्वालियर-भोपाल, ग्वालियर-अम्बाह मार्गों पर तीन डीलक्स गाड़ियां चलेंगी।

डॉ० हानेमन का २०४ वां जयन्त्युत्सव समारोह

स्थानीय सेंट्रल होमियोपैथिक और बायो-कैमिक एसोसिएशन की ओर से होम्योपैथी के प्रस्थापक डॉ० हानेमन का २०४ वां जयन्त्युत्सव श्री सन्तप्रकाश गुप्ता की अध्यक्षता में मनाया गया। कार्यक्रम बालक-बालिकाओं के वन्दे-मातरम् गान से प्रारम्भ हुआ। डॉ० वर्मन ने डॉ० हानमेन के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डाला। अध्यक्ष डॉ० फूलसिंह तोमर ने वर्तमान युग में होम्योपैथी की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। समारोह के अध्यक्ष ने होमि० चिकित्सकों को कर्त्तव्यपरायणता तथा सहृदयता व सच्ची निस्वार्थ सेवा करने का परामर्श दिया।

ग्वालियर जिले में मत्स्य-विकास-कार्य

ग्वालियर जिले में मत्स्य-विकास-कार्यों के अन्तर्गत गत मार्च मास में एक कच्चा तालाब मत्स्य-फार्म के पास तैयार किया गया। इसी मास में १०,६८२ मत्स्य-बीज तालाबों में डाले गए। अब तक ५६,२२० मत्स्य-बीज तालाबों में डाले जा चुके हैं, जिनमें से १०,९८२ टेकनपुर तालाब में डाले गए हैं।

बीज-वितरण के कार्यक्रम के अन्तर्गत २,००० मत्स्य-बीज लोगों में बांटे गए और ११३ मन मत्स्य तालाबों से निकाले गए। गत वित्तीय वर्ष में ४७२ मन ३२ सेर मत्स्य तालाबों से निकाले गए थे।

टीकमगढ़ जिले में ४ डाकू गिरफ्तार

टीकमगढ़ पुलिस को हाल ही में चार कुख्यात डाकुओं को पकड़ने में सफलता मिली है। इन चार डाकुओं के नाम गनुआ सौर, तेजसिंह, नारायणसिंह तथा गोकुल लोधी हैं—ये सभी टीकमगढ़ जिले के बुदेरा पुलिस स्टेशन क्षेत्र के अंतर्गत स्थित सपोर गांव के निवासी हैं। ये सभी डाकू उसी गांव के निवासी, एक कुख्यात डाकू गजराजसिंह के दल के सदस्य थे। लगभग ४२५ रुपये मूल्य की संपत्ति तथा २ भरमार बंदूकें भी उनके पास से बरामद की गई हैं।

इन चारों डाकुओं ने अपने नेता गजराजसिंह के साथ मिलकर, बल्देवगढ़ तथा पालेरा पुलिस थानों के कई गांवों में डकैतियां की थीं।

साप्ताहिक समीक्षा

राऊरकेला इस्पात संयंत्र की प्रथम खुली भट्टी प्रज्ज्वलित

राऊरकेला। केन्द्रीय गृह मंत्री पंडित पंत ने यहां विशाल राऊरकेला इस्पात कारखाने की चार खुली भट्टियों में से पहली भट्टी को प्रज्ज्वलित किया। अब से १० दिन के अन्दर एक भीमकाय क्रेन सार्वजनिक क्षेत्र में तैयार किए जाने वाले इस्पात का प्रथम पिंड उठाएगी।

इस खुली भट्टी का प्रज्ज्वलन, जो किसी विशेष समारोह के बगैर किया गया, राऊरकेला कारखाने की प्रगति में एक महत्वपूर्ण दौर आरम्भ करता है।

गृह मंत्री ने एक जलते हुए मशाल वाली लोहे की लम्बी छड़ से भट्टी को प्रज्ज्वलित किया। तुरन्त ही गैस की नालियों ने आग पकड़ली और मिनटों में सारी भट्टी दहक उठी। अब यह आग वर्षों तक जलती रहेगी और धधकती हुई भट्टी पिघले हुए लोहे को इस्पात का रूप देगी।

गृह मंत्री ने उन जर्मन कारीगरों तथा भारतीय मजदूरों को बधाई दी, जिनके सहयोग से यह कार्य सफल हुआ है।

पन्त जी यहां इस्पात व ईंधन मंत्री श्री स्वर्णसिंह के साथ पहुंचे। गृह मंत्री १५ महीनों के पश्चात् यहां पहुंचे। उन्होंने कहा कि इस संयंत्र के निर्माण की प्रगति को देख कर मुझे बहुत खुशी हुई है।

चित्तरंजन में नए प्रकार के इंजनों का निर्माण

चितरंजन लोकोमोटिव वर्क्स के जनरल मैनेजर श्री के० रामचन्द्रन ने रेलवे सप्ताह के अवसर पर पत्र-प्रतिनिधियों को बताया कि भारत ने भारी उपनगरीय यात्री सेवा के लिए एक नई किस्म के डब्लू० टी० टाइप इंजन बनाने शुरू कर दिए हैं।

चित्तरंजन कारखाने ने सन् १९५० से जब उसमें उत्पादन शुरू हुआ था, केवल बड़ी लाइन पर चलने वाली मालगाड़ियों के लिए इंजन बनाए हैं। इस प्रकार के इंजन अब तक ८४५ बनाए जा चुके हैं।

यह नये प्रकार का इंजन मुसाफिरों से भरी १० बोगियों को अधिकतम ६० मील फी घण्टा की रफ्तार से खींच कर ले जा सकता है। इसकी एक विशेषता यह भी है कि यह उलटा और सीधा समान रूप से चल सकता है और सिरे के स्टेशनों पर इसका मुंह मोड़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी। इस प्रकार के इंजन फिलहाल १० बनाए जाएंगे।

श्री रामचन्द्रन ने बताया कि समय आने पर यह कारखाना भाप इंजनों के अलावा डीजल इंजन और विद्युत् इंजन भी बनाएगा।

उन्होंने कहा कि डब्लू० टी० इंजन डिजाइन से लेकर निर्माण के आखिरी दौर तक सम्पूर्णतः भारतीयों का बनाया हुआ है।

भारत में भारी मशीनों का निर्माण

लोकसभा में उद्योग मंत्री श्री मनुभाई शाह ने बताया कि सरकार इस बात के लिए प्रयत्नशील है कि तीसरी योजना के अंत तक भारत औद्योगीकरण के लिए अपनी आवश्यकताओं की ८० से ८५ प्रतिशत मशीनें तैयार कर सके। उन्होंने कहा कि इस काल तक हम मुख्य रासायनिक पदार्थों के लिए भी स्वावलम्बी होने का प्रयत्न कर रहे हैं।

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय के व्यय की मांगों पर बहस में हस्तक्षेप करते हुए श्री मनुभाई शाह ने बताया कि मशीनों के निर्माण में भारत ने संतोषजनक प्रगति की है। इसका श्रेय निजी उद्योगपतियों को है। भारत प्रतिवर्ष अब ८० करोड़ रुपए की कीमत की मशीनें तैयार करने लगा है, जबकि आवश्यकता ३०० करोड़ और ३५० करोड़ रुपए के बीच की है।

प्रतिरक्षा-सामग्री का निर्माण

नई दिल्ली। ज्ञात हुआ है कि भारतीय नौ-सेना की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भारत की गैर-सरकारी फर्में प्रति का सामान बहुत बड़े पैमाने पर बना रही है।

एरियल के तार, इंसुलेटिंग वार्निशें और रोगन-रंग, विशेष प्रकार के लैम्प और बिज के केबल जो पहले विदेशों से मंगाने पड़ते थे अब भारत में ही बन रहे हैं। इस प्रकार भार लाखों की संख्या में विदेशी मुद्रा बचा रहा है।

श्री डलेस का अमरीकी पर-राष्ट्र मंत्री पद से इस्तीफा

अमरीकी राष्ट्रपति श्री आइजनहोवर ने घोषणा की कि श्री जान फास्टर डलेस ने पर-राष्ट्र मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया है, राष्ट्रपति ने अपने ग्रीष्मकालीन सदर मुकाम में एक तात्कालिक विशेष पत्र-प्रतिनिधि सम्मेलन में यह समाचार स्वयं सुनाया। यह सूचना देते हुए राष्ट्रपति की आंखें भर आई थीं।

श्री आइजनहोवर ने बताया कि कैंसर-पीड़ित पर-राष्ट्र मंत्री पूर्णतः असमर्थ हो ग हैं तथा वह अब अपने पद का कार्य-भार वहन नहीं कर सकते तथा नीतियां संचालित नहीं कर सकते।

भारतीय क्रिकेट टीम इंग्लैंड यात्रा के लिए रवाना

बम्बई। भारतीय क्रिकेट टीम १६ अप्रैल को अपनी इंग्लैण्ड यात्रा के लिए रवाना हो गई। इस टीम में १७ खिलाड़ी हैं। टीम के अधिकांश सदस्य ३० वर्ष की आयु से भी कम हैं। सबसे छोटे खिलाड़ी देसाई (१९ वर्ष) बम्बई विश्वविद्यालय के छात्र हैं।

शांताक्रुज हवाई अड्डे पर सैकड़ों क्रिकेट प्रेमियों ने टीम के सदस्यों को विदाई दी और शुभकामनाएं प्रकट कीं।

भारतीय खेल-कूद परिषद् के अध्यक्ष डॉ० पी. सुब्बारायन ने शुभकामना संदेश भेजते हुए लिखा है कि नवयुवकों की यह टीम पहले की अपेक्षा अच्छा प्रदर्शन करे, ऐसी मेरी अभिलाषा है।

टीम के कप्तान डी० के० गायकवाड़ हैं। इससे पूर्व वह सन् १९५२ में पाकिस्तान और इंग्लैण्ड के विरुद्ध खेल चुके हैं। गायकवाड़ ब्रेक और गुगली बोलर हैं। पंकजराय, कन्ट्रैक्टर, पी० जी० जोशी, ताम्हणे, सुभाष गुप्ते, बोर्डे, देसाई, कृपालसिंह, सुरेन्द्रनाथ, मांजरेकर, अरविन्द आप्टे, घोरपडे, नादकर्णी, उम्रीगर, जयसिंह और मुदीयाह टीम के अन्य खिलाड़ी हैं।

सहकार समितियों की सदस्य-संख्या बढ़ाने के उपाय

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय द्वारा नियुक्त विचार समिति ने कहा है कि चालू पंचवर्षीय योजना की समाप्ति तक सहकार समितियों की सदस्य संख्या बढ़ाकर दो करोड़ करने के लिए इन २॥ सालों में सहकार आन्दोलन को बहुत बढ़ाना होगा और वर्तमान समितियों को और मजबूत करना होगा।

विचार समिति ने दो प्रकार की सहकार समितियों का गठन करने का सुझाव दिया है। एक तो बहुमुखी समितियां, जो सब जगह आसानी से बनाई जा सकें। ये मुख्य रूप से सेवा सहकार समितियां हों और कर्ज देने, खेती की आवश्यक चीजें जुटाने, माल बिकवाने और उपज बढ़ाने के कार्यक्रम तैयार कराने आदि का काम भी करें। दूसरे प्रकार की सहकार समितियां दो-चार गांवों की छोटी-छोटी समितियां हों, जो इन गांवों में पैदावार बढ़ाने और दूसरी तरह के उन्नति के काम करें।

विचार समिति की राय है कि जब तक गांवों की ६,००० वर्तमान बड़ी बहुमुखी समितियों के काम को, जिनमें सरकार ने पूंजी लगा रखी है, अच्छी तरह न देख लिया जाय, तब तक प्राथमिक सहकार समितियों के हिस्सों के रूप में सरकार धन न लगाए।

समिति का अनुमान है कि २ करोड़ की सदस्यता के लिए ४ अरब रु. कर्ज देना जरूरी हो जायगा। कर्ज के लिए धन मिलने में रिजर्व बैंक ने जो सुविधाएं दे रखी हैं, वे तो लाभदायक हैं ही, इनके अलावा कर्ज और माल बेचने की व्यवस्था में जितना निकट सम्बन्ध रहेगा, यानी माल की बिक्री से जितनी जल्दी रुपया पटाया जा सकेगा, उतना ही कर्ज अधिक दिया जा सकता है। सहकार संस्थाओं के कर्ज देने की सीमा के बारे में भारत सरकार, राज्य सरकारों और रिजर्व बैंक आदि को जांच करनी चाहिए, ताकि कर्ज की सुविधाओं को बढ़ाया जा सके।

आकाशवाणी साहित्य समारोह

नई दिल्ली के तालकटोरा बाग में सूचना और प्रसारण मंत्री, डा. बालकृष्ण विश्वनाथ केसकर ने चौथे आकाशवाणी साहित्य समारोह का उद्घाटन किया। इस समारोह में देशभर से १०४ हास्यरस के साहित्यकारों ने भाग लिया और उन्होंने रेडियो कार्यक्रमों में हास्यरस पर अपने विचार प्रकट किये।

इस समारोह में देशभर के श्रोताओं के सामने विभिन्न भाषाओं में लिखी गयीं रचनाओं के कुछ नमूने मौलिक रूप में प्रस्तुत किये गये।

दाल की उपज में डेढ़ लाख टन की वृद्धि

सन् १९५८-५९ की खरीफ की फसल में दालों (तूर को छोड़कर) की उपज में १५२ हजार टन की वृद्धि हुई है। खाद्य और कृषि मंत्रालय के अंक विभाग के अखिल भारतीय प्राक्कलन के अनुसार, इस वर्ष दालों की खेती का क्षेत्रफल १ करोड़ ५५ लाख ६ हजार एकड़ और उपज १५ लाख ४२ हजार टन है। १९५७-५८ से १९५८-५९ में खेती का क्षेत्रफल १ लाख ५१ हजार एकड़ या १.० प्रतिशत घटा, जबकि पैदावार १ लाख ५२ हजार टन या १०.९ प्र. श. बढ़ी।

दामोदर घाटी निगम की बिजली व्यवस्था

दामोदर घाटी निगम के बारे में प. बंगाल और बिहार सरकार के प्रतिनिधियों के सम्मेलन में यह बताया गया कि दूसरी योजना की अवधि में दामोदर घाटी निगम के अन्तर्गत दुर्गापुर (प. बंगाल) और चन्द्रपुर (बिहार) में दो ताप बिजलीघर और खोले जायेंगे और यहां १९६२-६३ से बिजली तैयार की जाने लगेगी। यहां २॥-२॥ लाख किलोवाट बिजली तैयार की जा सकेगी।

सम्मेलन में बताया गया कि यदि जल्दी ही और बिजलीघर न खोले गये तो दामोदर घाटी निगम क्षेत्र के उद्योगों को आवश्यक बिजली न मिल पायेगी। अनुमान के अनुसार १९६०-६१ में इन उद्योगों के लिए १,७९,००० किलोवाट बिजली की कमी पड़ेगी, जबकि १९६१-६२ में २,१६,००० और १९६२-६३ में २,६५,००० किलोवाट की पड़ेगी। इसी क्रम के अनुसार यदि इन उद्योगों के लिए बिजली की कमी पड़ती रही, तो १९६५-६६ में ७,१९,००० किलोवाट बिजली कम पड़ेगी। सम्मेलन में यह सुझाव दिया गया कि वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए तीसरी योजना में दामोदर घाटी निगम क्षेत्र में १।-१। लाख किलोवाट के चार और बिजलीघर खोलने के प्रस्ताव पर विचार किया जायगा।

विस्थापितों को बसाने के काम में प्रगति

पुनस्संस्थापन मंत्रालय की सन् १९५८-५९ की रिपोर्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान के कुल विस्थापितों को सन् १९५९-६० में और पूर्वी पाकिस्तान के विस्थापितों को दूसरी योजना के अंत तक बसा दिया जाएगा। दण्डकारण्य में पश्चिम बंगाल के विस्थापितों को बसाने के लिए जो निर्माण-कार्य हो रहा है, उसके लिए ६ करोड़ ४० लाख रुपये रखा गया है। विस्थापितों को रोजगार दिलाने के लिए दो करोड़ ९६ लाख रुपये की २३ योजनाएँ स्वीकार की जा चुकी हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि ३१ जनवरी, १९५९ तक ४,६८,००० दावेदारों में से ३,६०,००० को १ अरब ५६ लाख रुपया मुआवजा दिया जा चुका था। पाकिस्तान सरकार द्वारा समय-समय पर कठिनाइयां पैदा करने के कारण बैंकों के लाकरों में रखी हुई वस्तुओं और जमा धन की अदला-बदली नहीं हो सकी।

विस्थापितों को पेंशनें

भारत सरकार ने पाकिस्तान से आये हुए विस्थापितों को दी जानेवाली पेंशन की वर्तमान व्यवस्था को ३१ मार्च. १९६० तक बढ़ा देने का व्यवस्था को ३१ मार्च, १९६० तक बढ़ा देने का निश्चय किया है। पुनस्संस्थापन अनुदान देने के लिए अर्जियां भेजने की अंतिम तारीख भी ३० अप्रैल, १९५९ तक बढ़ा दी गई है।

——बम्बई में चीरफाड़ में काम आनेवाले डाक्टरी औजार बनाने का कारखाना खोला गया है। औजारों के डिजाइन आदि बनाने में सलाह देने के लिए एक विदेशी विशेषज्ञ काम कर रहा है।

——भारत में पिछले दस वर्षों में रबड़ का उत्पादन ६० प्रतिशत बढ़ गया है। रबड़ का उत्पादन बढ़ाने के लिए दसवर्षीय योजना बनाई गई है। इसके अनुसार कम रबड़ पैदा करनेवाली ७० हजार एकड़ जमीन में अच्छी किस्म के अधिक रस देनेवाले पेड़ लगाये जाएंगे।

१८ मार्च को राज्य समाज-कल्याण मण्डल के अध्यक्षों के सम्मेलन में समाज-कल्याण मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख ने कहा कि दूसरी योजना के अन्त तक मण्डल लगभग ७,००० सार्वजनिक संस्थाओं को ४ करोड़ रुपये की सहायता देगा।

१८ से २२ मार्च तक नई दिल्ली में समाज कल्याण-प्रदर्शनी हुई, जिसमें देश के विभिन्न भागों से मंगाए गए दस्तकारी के सामानों का प्रदर्शन किया गया।

विविध समाचार

डॉ. काटजू द्वारा मालिनी नदी पर बांध का शिलान्यास

"निस्संदेह आज का दिन रतलाम के इतिहास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जायेगा। रतलाम को बहुत दिनों से एक जल-यंत्रालय की आवश्यकता थी। अब यह स्वप्न प्रायः साकार होने को है।" उक्त शब्द मुख्य मंत्री डॉ० के० एन. काटजू ने उस समय कहे जब वे रतलाम से लगभग १६ मील दूर गुनावड़ा ग्राम में रतलाम शहर के जल-यंत्रालय के लिए मालिनी नदी पर बनाये जानेवाले एक ६०० फुट लंबे बांध का शिलान्यास कर रहे थे। रतलाम जल-यंत्रालय की कुल लागत का अनुमान ७० लाख रुपये है। इसमें से राज्य सरकार ३० प्रतिशत अनुदान तथा ५० प्रतिशत ऋण के रूप में देगी और शेष २० प्रतिशत व्यय की पूर्त्ति रतलाम नगरपालिका द्वारा की जायेगी। राज्य सरकार ने चालू वित्तीय वर्ष में अनुदान और ऋण के एक अंश के रूप में कुल छह लाख रुपये स्वीकृत किये हैं। इस योजना के पूर्ण होने पर इससे रतलाम शहर को प्रतिदिन ४५ गैलन जल की पूर्ति होगी।

जो लोग रामनवमी के पवित्र दिवस पर इस समारोह के समय दूर-दूर से आये थे उनके उत्साह की प्रशंसा करते हुए डॉक्टर काटजू ने कहा कि उन्हें अपने नगरों और ग्रामों के उत्थान के लिए कठोर श्रम करना चाहिएं। यह तभी संभव है, जब जनता स्वयं स्फूर्ति से काम करे। ग्रामों में पंचायतों के महत्त्व पर जोर डालते हुए डॉक्टर काटजू ने कहा कि प्रत्येक पंचायत का यह कर्त्तव्य है कि वह प्रत्येक बालक के शिक्षण तथा हित के लिए उचित व्यवस्था करे, जिससे आगामी पीढ़ी देश को और अधिक समृद्ध बना सके।

अपने भाषण में डॉक्टर काटजू ने सब ग्रामवासियों को यह परामर्श दिया कि वे आधुनिक कृषि-औजारों और उर्वरकों के उपयोग द्वारा उत्पादन में वृद्धि करने के एकमात्र उद्देश्य से संगठित होकर सहकारी समितियाँ बनाएं।

उप-राजस्व मंत्री श्री जगमोहनदास ने रतलाम में योजना का विवरण देते हुए कहा कि यह दिन राज्य और विशेषकर रतलाम की जनता के लिए गौरवशाली दिन है।

इसके पश्चात् गुनावड़ा ग्राम पंचायत के सदस्यों को संबोधित करते हुए डाक्टर काटजू ने उनसे अनुरोध किया कि वे अपने बालकों और विशेषकर बालिकाओं को शिक्षित करने में अपनी शक्ति लगाएं। इस अवसर पर श्री जगमोहनदास ने भी भाषण दिया। उन्होंने पंचायत विधान के महत्त्व पर प्रकाश डाला। इस विधान के फलस्वरूप पंचायतों के अधिकार बहुत बढ़ जायँगे।

मुख्य मंत्री डॉक्टर काटजू का प्रत्येक मार्गवर्ती गांव में उत्साहपूर्ण स्वागत किया गया। प्रत्येक स्थान में डॉक्टर काटजू ने ग्रामवासियों को परामर्श दिया कि वे सहकारी समिति बनाये और अधिक अन्न उत्पादन के लिए कठोर परिश्रम करें।

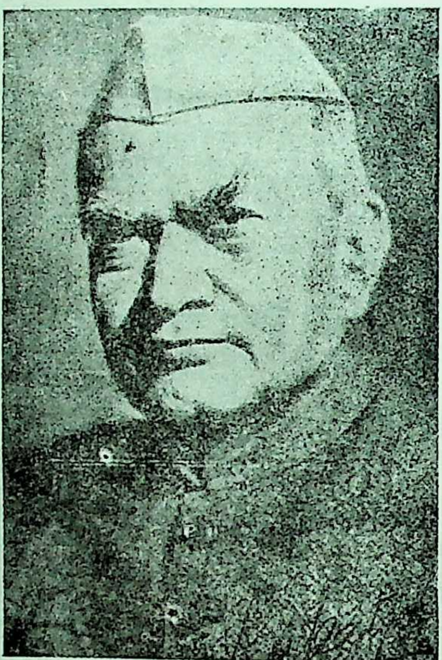

डॉ० शर्मा द्वारा श्रम के महत्त्व पर जोर

शिक्षा मंत्री डॉक्टर एस. डी. शर्मा ने दिनांक १६ अप्रैल को इटारसी में कहा कि देश तभी प्रगति कर सकता है, जब श्रम के महत्त्व की पुनस्थापना होगी तथा जब जनता यह अनुभव करने लगे कि किसी भी व्यक्ति को छोटे कार्य करने में भी शर्म नहीं लगना चाहिये, क्योंकि ऐसा करने में व्यक्ति का महत्त्व कम नहीं होता। डॉक्टर शर्मा इटारसी में रेलवे सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रम के अवसर पर यह भाषण दे रहे थे।

शिक्षा मंत्री ने आगे बोलते हुए कहा कि वास्तव में वही मनुष्य महान् है, जो अपना कार्य पूर्ण करता है, फिर चाहे वह कार्य कितना ही महत्त्वपूर्ण तथा छोटा क्यों न हो। उन्होंने कहा कि जब भी जनता ने इस सिद्धांत को माना है, तभी दे प्रगति की है। डाक्टर शर्मा ने जनता से ईमानदार व्यक्तियों के आदर करने के लि कहा, जिससे कि देश प्रगति के पथ पर बढ सके।

श्री गंगवाल द्वारा भीकनगांव में शाला भवन का उद्घाटन

राज्य के वित्तमंत्री श्री मिश्रीलाल गंगवाल ने पश्चिमी निमाड़ जिले में स्थित भीकनगांव विशाल छात्र-समूह की उपस्थिति में एक शाला भवन का उद्घाटन किया। यह शाला-भवन स्थानीय जनता एवं राज्य शासन के संयुक्त प्रयत्नों के परिणामस्वरूप बनी है। विधान सभा सदस्य श्री वीरेन्द्रसिंह मंडलोई ने इस सभा की अध्यक्षता की।

उप-गृह मंत्री द्वारा जवाहर विद्यालय का शिलान्यास

मध्यप्रदेश शासन के उप-गृह-मंत्री, श्री नरसिंहराव दीक्षित ने ग्वालियर से १८ मील की दूरी पर स्थित बिलौआ, ग्राम में जवाहर हाईस्कूल के भवन का शिलान्यास किया।

उक्त अवसर पर बोलते हुए आपने कहा कि जनता द्वारा शिक्षा के प्रसार का कार्य प्रशंसनीय है। शिक्षा के क्षेत्र में शासन द्वारा पर्याप्त कार्य उतनी द्रुतगति से नहीं किया जा सकता, जितना कि आवश्यक है। अतः जनता को ऐसे कार्य में आगे आना चाहिए और उक्त बोझ को हल्का करना चाहिए। शिक्षा के पुनीत कार्य में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए।

आपने आगे कहा कि शिक्षा का उद्देश्य बालकों के सद्गुणों को प्रोत्साहित करना और अच्छे नागरिकों का निर्माण करना है। आपने आशा व्यक्त की कि यह विद्यालय अपना कर्तव्य भलीभांति पालन करेगा और जो विद्यार्थी शिक्षा समाप्त कर इस विद्यालय से बाहर जायें वे अपने विद्यालय का नाम उज्ज्वल करें।

उक्त विद्यालय के भवन का निर्माण बिलौआ की जनता द्वारा एकत्रित की गई धनराशि तथा शासकीय अनुदान से प्रारम्भ किया जारहा है जिसमें चार हजार रुपये उक्त ग्राम के नागरिक श्री चोखेलाल द्वारा दिए गए हैं।

विधान सभा सदस्यों द्वारा चम्बल योजना की यात्रा

• मध्यप्रदेश विधान सभा के ८२ सदस्यों का एक दल पिछलें सप्ताह एक दिन के लिए चम्बल हाइडेल योजना को देखने के लिए गया था। यह विधायक दल १० अप्रेल को प्रातः भोपाल से चम्बल के लिए रवाना हुआ और १२ तारीख को सन्ध्या समय भोपाल वापिस आ गया था।

श्रम तथा चम्बल मंत्री श्री व्ही. व्ही. द्रविड़ ने गांधी सागर बांध पर इस दल का स्वागत करके उसे इस योजना की अब तक की प्रगति से अवगत कराया। ७७ करोड़ रुपए लागत की यह चम्बल बहुउद्देश्यीय योजना मध्यप्रदेश में भिलाई इस्पात कारखाने के बाद सबसे बड़ी है। इसके पूर्ण हो जाने पर इससे १४ लाख एकड़ जमीन की सिंचाई होगी और ६० प्रतिशत भार से २,१०,००० किलोवाट बिजली उत्पन्न होगी। मध्यप्रदेश तथा राजस्थान की सीमाओं पर स्थित चम्बल हाइडेल योजना इन दो राज्यों का संयुक्त प्रयास है और योजना के लाभों तथा व्यय में उनका समान हिस्सा है। श्री द्रविड़ ने बतलाया कि कठिनाइयों होते हुए भी यह योजना कार्यक्रमानुसार प्रगति कर रही है। मुख्य गांधी सागर बांध २०४ फुट ऊंचा है। वह १९५९-६० तक पूरा हो जाएगा। १९५९-६० से दोनों राज्यों को सिंचाई लाभ होने लगेगा, और बिजली भी उसी वर्ष से मिलने लगेगी।

विधायक योजना की प्रगति से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने निर्माणकार्य की गति की प्रशंसा की।

रायपुर जिले में समाज कल्याण गतिविधियां

जिला समाज कल्याण विभाग रायपुर से प्राप्त वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन के अनुसार १९५८-५९ वर्ष में रायपुर जिले में समाज कल्याण के क्षेत्र में सर्वांगीण प्रगति हुई।

शिक्षा एवं समाज शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई। उच्च एवं माध्यमिक शालाओं में हरिजन छात्रों को छात्रवृत्तियों के रूप में ५,९३२ रुपये वितरित किये गये। इसके अतिरिक्त जिले के विकास खण्डों मे ११३ प्रौढ़ शिक्षा वर्ग आरम्भ किये गये तथा खण्डेतर क्षेत्रों में ३,५०० प्रौढ़ों को विभिन्न विषयों की शिक्षा दी गई।

आलोच्य अवधि में पंचों एवं सरपंचों के ४ शिबिर आयोजित किये गये, जिनमें २०० पंचों को ग्राम पंचायतों के सुचारु रूप से कार्य संचालन का प्रशिक्षण दिया गया।

इस प्रतिवेदन में कहा गया है कि रायपुर में ? बालवाड़ी और शिशु संस्कार केन्द्र अच्छी तरह से चल रहे थे तथा इसकी उपस्थिति पंजी में ६ वर्ष से कम आयु के २५ निर्धन छात्र थे।

आलोच्य वर्ष में कलापथक द्वारा ९० सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिन्हें ६०,००० से अधिक व्यक्तियों ने देखा।

भिक्षावृत्ति की समस्या का उन्मूलन करने के लिए विभाग द्वारा सारे रायपुर नगर का तीव्र सर्वेक्षण किया गया तथा भिखारियों के कल्याण की योजनायें बनाई जा रही हैं।

दंड प्रक्रिया संहिता की धारा लगाई गई

भोपाल नगर में कानून तथा व्यवस्था कायम रखने और जनता के मन में नगर की शान्ति तथा व्यवस्था के संबंध में किसी प्रकार का अंदेशा न होने देने के दृष्टिकोण से सीहोर जिले के भोपाल स्थित अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी ने १८ अप्रैल १९५९ से १५ दिन की अवधि के लियें दंड प्रक्रिया संहिता की धारा १४४ के अन्तर्गत एक आदेश घोषित किया है। यह आदेश तुरन्त प्रभावशील होकर भोपाल नगर की नगरपालिका सीमाओं के अन्तर्गत क्षेत्र में लागू होगा।

इस आदेश के अनुसार कोई भी व्यक्ति मोटर-स्टेंड, रेल्वे-प्लेट-फार्म, स्टेशन और सिनेमा हाल को छोड़कर किसी सार्वजनिक मार्ग, उपमार्ग, सार्वजनिक स्थल तथा सार्वजनिक सडक पर ४ से अधिक व्यक्तियों का जमाव नहीं करेगा अथवा भोपाल नगर के पुलिस की लिखित पूर्व आज्ञा के बिना कोई भी जुलूस संचालित या संगठित नहीं करेगा और न उसे निकालेगा। किंतु यह आदेश विवाह अथवा शवयात्रा जुलूसों पर लागू नहीं होगा।

इस आदेश में यह भी निर्देश है कि कोई भी व्यक्ति अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी, भोपाल की लिखित पूर्व अनुमति के बिना सार्वजनिक सभा को न तो आयोजित करेगा और न उसे बुलायेगा। साथ ही उक्त जुलूसों और सभाओं को आयोजित करने के लिये लाउडस्पीकरों का उपयोग भी नहीं करेगा।

लघु उद्योगों को १९,९०० रुपये का ऋण

जिला दतिया में राज्य शासन की ओर से वित्तीय वर्ष १९५८-५९ में लघु-उद्योगों के विकास के हेतु ३७ व्यक्तियों को १९,९०० रुपये का ऋण वितरित किया गया। उक्त ऋण चमड़ा पकाने, ईंटें बनाने, फर्नीचर बनाने, लुहारी कार्य, बांस के कार्य तथा हस्त करघा आदि उद्योगों के हेतु दिए गए हैं।

कोलारस में किसान एवं सहकारिता सम्मेलन

विकास-खण्ड जिला शिवपुरी के तत्वावधान में कोलारस में विगत सप्ताह किसान एवं सहकारिता सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन जिलाध्यक्ष शिवपुरी ने किया। आपने अपने भाषण में कृषक संगठन, सहकारी खेती की उपयोगिता एवं गांव के विकास कार्य में आनेवाली रुकावटों को दूर करने आदि विषयों पर प्रकाश डाला।

पशु सेवाओं में वृद्धि

जिला दतिया में पशु-पालन एवं पशु-चिकित्सा विभाग द्वारा मार्च १९५९ को समाप्त होनेवाली त्रैमासिक अवधि में ५,४६९ पशुओं की चिकित्सा तथा ९,२५७ पशुओं को चेचक-निरोधक टीके लगाए गए, १५१२ निकृष्ट सांड़ों को बधिया किया गया, ६५ गायों को नस्ल सुधार की दृष्टि से उत्तम सांड़ों द्वारा गर्भाधान कराया गया एवं ६७ पशुओं को गौ-सदन बैर छा भेजा गया।

उपरोक्त अवधि में मुर्गी-पालन की दिशा में व्हाइट लैग होर्न किस्म के १५ मुर्गे, ५४ मुर्गियां तथा ४३० अण्डे बच्चे निकालने के लिए वितरित किए गए।

कृषि कार्यों के लिए तकावी

छतरपुर जिले में किसानों को सन् १९५८-५९ में विभिन्न कृषि-कार्यों के लिए ३,०७,६०० रुपये की तकावी दी गई। इस राशि में से ५०,००० रुपये बांध बनाने और कुए खोदने के लिये और १,०७,६०० रुपये अधिक-अन्न उपजाने की विभिन्न योजनाओं के लिए दिए गए। उन्नत बीजों और बैलों को खरीदने के लिए किसानों को १,००,००० रुपये की तकावी भी दी गई।

आदिम जाति क्षेत्र के विधायकों द्वारा कल्याण योजनाओं पर विचार विमर्श

अनुसूचित आदिम क्षेत्र के विधायकों की एक दो दिवसीय बैठक १४ और १५ अप्रेल, १९५९ को आदिम जाति कल्याण मंत्री राजा नरेशचन्द्र सिंह की अध्यक्षता में, उनके निवास स्थान पर, हुई। इस बैठक में आदिम जाति से सम्बन्धित समस्याओं और विशेषतः आदिम जाति के भूमिहीन लोगों को भूमि देन के प्रश्न पर विचार-विमर्श किया गया।

इस बैठक में लगभग ४० आदिम जाति क्षेत्र के विधायक उपस्थित थे। राजस्व मंत्री श्री मंडलोई तथा उप राजस्व मंत्री श्री जगमोहनदास विशेष निमंत्रण पर उपस्थित थे। इसमें अन्य व्यक्तियों के अतिरिक्त, आदिम जाति कल्याण उप मंत्री श्री शिवभानु सोलंकी, आदिम जाति कल्याण विभाग के शासन सचिव और संचालक, भी उपस्थित थे।

इस बैठक में आदिम जाति क्षेत्र के विधायकों ने सामान्यतः आदिम जाति के भूमिहीन लोगो को भूमि वितरित करने, तकावी ऋणों की मात्रा में वृद्धि करने और उन्हें प्राप्त करने की प्रणाली को अपेक्षाकृत सुविधाजनक बनाने की मांगों पर जोर दिया। राजस्व मंत्री श्री बी. ए. मण्डलोई ने दिनांक १४ अप्रेल की बैठक में सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वन विभाग से परामर्श करने के पश्चात, अब यह निश्चय किया गया है कि जो वन भूमि कृषि के लिए उपयुक्त समझी जाए वह अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित आदिम जाति के भूमिहीन लोगों में भूमि वितरण के लिए उपलब्ध कर दी जाए। श्री मण्डलोई ने विधान सभा सदस्यों को बतलाया कि राजस्व विभाग, प्रति वर्ष; लगभग २ करोड़ रुपए की तकावी देता है, परन्तु चूंकि आदिम जाति के लोगों को बड़े ऋणों के लिए पर्याप्त जमानत देना सामान्यतः कठिन होता है, इसलिए कृषि के क्षेत्र में सेवा सहकारी समितियां बनाना आवश्यक हैं। राजस्व मंत्री ने आदिम जाति के विधायकों से अनुरोध किया कि वे अपने निर्वाचन क्षेत्रों में सेवा सहकारी समितियां बनाने का भरसक प्रयत्न करें।

आदिम जाति के विधायकों ने, १५ अप्रेल की बैठक में, आदिम जाति कल्याण के सम्बन्ध में अपने निर्वाचन क्षेत्रों की अन्य समस्याएं भी प्रस्तुत कीं। इनमें से अधिकांश का सम्बन्ध १९५९-६० वर्ष के जिला आदिम जाति कल्याण के कार्यक्रमों से था, जिनकी प्रतियां पहिले वितरित की जा चुकी है। विधायकों ने यह भी मांग की कि वन मजदूर सहकारी समितियों, कानूनी सहायता तथा ऋण-निवारण के प्रश्नों पर अधिक ध्यान दिया जाए। आदिम जाति कल्याण मंत्री राजा नरेशचन्द्रसिह ने उनकी समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुना और आश्वासन दिया कि उनपर विभाग सहानुभूतिपूर्ण विचार करेगा। आदिम जाति कल्याण मंत्री ने विधायकों को आदिम जाति की समस्याओं का समाधान करने के शासकीय प्रयासों में उनके द्वारा दिये गये सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर एक चलचित्र-प्रदर्शन का भी आयोजन किया गया, जिसमें यह बतलाया गया कि सरगुजा जिले में आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा रामानुजगंज कत्था समिति के पुनर्गठन के लिए शासन ने क्या प्रयत्न किये हैं। इस अवसर पर संचालक, आदिम जाति कल्याण विभाग ने आदिम जाति के विधायको को कत्था बनाने की प्रणाली समझाई और समिति को गठित करने के लिए विभाग द्वारा किए गए प्रयत्नो पर प्रकाश डाला।

१००० से अधिक पशुओं के टीके लगाए

पशु चिकित्सा एवं पशु पालन विभाग के प्रगति प्रतिवेदन के अनुसार पन्ना जिले में २८ फरवरी १९५९ को समाप्त होनेवाली तिमाही में लगभग १०,३४५ पशुओं का इलाज किया गया, १,०६५ पशुओं को टीके लगाए गए और ४४४ सांडों को बधिया किया गया। इसके सिवाय इस अवधि में ६० पशुओं की शल्य क्रिया की गई और विभिन्न रोगों से ग्रस्त १,४३० पशुओं को दवाइयां दी गई।

मत्स्य-पालन के क्षेत्र में लगभग २०० रु० की लागत से एक छोटा तलाब बनाया गया, जिसमें रंगीन मछलियां पाली जायेंगी। इसके अतिरिक्त १,००० रु० की लागत से स्थानीय बेनी सागर और कमलाबाई तालाब साफ करवाये गये और जिससे मछली के उत्पादन में सहायता मिलेगी।

मन्दरोद में ग्राम नेता प्रशिक्षण शिविर

रायपुर जिले के कुरूद द्वितीय चरण खण्ड के मन्दरोद ग्राम में एक सात दिवसीय ग्राम नेता प्रशिक्षण शिविर हाल ही में आयोजित किया गया। विभिन्न ग्रामों के लगभग ४६ ग्राम नेताओं ने इसमें भाग लिया।

खंडवा में श्री माखनलालजी चतुर्वेदी की ७१ वीं वर्षगाँठ

स्थानीय नार्मल स्कूल में साहित्य वाचस्पति श्री माखनलाल जी चतुर्वेदी की ७१ वीं वर्षगांठ मनाई गई। इस अवसर पर नार्मल स्कूल तथा महिला नार्मल-स्कूल के क्रमशः अध्यापक-छात्र तथा अध्यापिका-छात्राओं ने श्री चतुर्वेदीजी की रचनाओं का पाठ कर, सस्वर गायन कर तथा उनकी साहित्य, साधना पर प्रकाश डालकर दादा माखनलाल जी चतुर्वेदी की शतायु की कामना की। स्कूल के प्रिंसिपल श्री बैद्य ने श्री चतुर्वेदीजी का अभिनन्दन किया और १०१ रुपये की थैली भेंट की। इस अवसर पर श्री चतुर्वेदीजी ने शिक्षकों से बच्चों को आदर्श छात्र बनाने की शिक्षा दी।

कुख्यात डाकू मारा गया

पुलिस द्वारा लगातार डाकुओं पर दबाव पड़ने के कारण डाकू ग्रस्त क्षेत्रों में लूटमार में कमी होने तथा जनता में विश्वास पैदा होने में बड़ी मात्रा में सहायता मिली है। अनेक कुख्यात डाकू मार डाले गये हैं या जीवित पकड़ लिए गये हैं।

डाकुओं के विरुद्ध सतत अभियान में मध्यप्रदेश पुलिस को एक और सफलता मिली, जब कुछ ही दिन पूर्व मुरैना जिले के करहल पुलिस स्टेशन के अंतर्गत जबलपुर के जंगलों में कुख्यात डाकू पीतमसिंह गूजर और पुलिस दल के बीच हुई मुठभेड़ में पुलिस ने डाकू दल के मुखिया पीतमसिंह गूजर को गोली से मार डाला तथा उसके पास से गोली-बारूद के साथ मजल लोडिंग सिंगल बैरल बन्दूक भी जप्त कर ली। मृत डाकू पहले वारेलाल के दल का एक सक्रिय सदस्य था।

मुरैना पुलिस स्थानीय ८ डाकुओं के एक दल को भी गिरफ्तार करने में सफल हो गई है तथा उसने उनके पास से ४ मजल लोडिंग बंदूकें तथा १,००० रुपये मूल्य की सम्पत्ति भी जप्त की है।

दस्यु सरमन रामस्वरूप पुलिस का बन्दी

कुख्यात दस्यु रूपा के दल का सदस्य सरमन रामस्वरूप, जो भिंड जिले के अमायन पुलिस स्टेशन के अंतर्गत क्षेत्र का निवासी है, दिनांक ५ अप्रैल को राज्य पुलिस द्वारा भिंड जिले में बंदी बना लिया गया।

CHAMBAL VALLEY DEVELOPMENT MADHYA PRADESH

Tender Notice

1. Sealed lumpsum tenders on the departmental design superscribed "Construction of Prestressed concrete girder deck for the Bridge Down Stream of Gandhi Sagar Dam" estimated to cost Rs. 5,00,000 (Constractors portion only) are invited to be received by the undersigned upto 4.00 P. M. on 1st June, 1959 and will be opened the same day at 4.30 P. M. in the presence of such contractors or their representatives as may be present. Only "A" Class contractors registered in Chambal or P. W. D. of any State C. P. W. D., M. E. S. or Indian Railways or reputed firms are eligible to tender.

2. Tenders based on Contractor's own design conforming to IRC-AA Class Load will also be considered.

3. The Bridge is located 900' down stream of the Axis of the Gandhi Sagar Dam across the River Chambal.

4. Dational Saving Certificates in lieu of earnest money of Rs. 10,000 duly pledged in the name of the undersigned by designation or the Challan for deposit in cash in Gandhi Sagar Sub-Treasury, Chambal Hydel and Irrigation Scheme, Madhya Pradesh ,P. O. Chambal Hydel Works, or a demand draft on a scheduled bank should accompany the tender, failing which the tender will not be considered.

5. Tender Forms, together with relevant specifications general coditions and other documents, may be obtained from the office of the undersigned, on payment of Rs. 25/- per set in cash or money order (Non-refundable) after 1st May, 1959

6. The rates quoted by the Contractors shall remain valid upto six months from the date of opening of tenders.

7. Time allowed for completion of work is five months from the date of issue of work order.

8. The sanctioning authority reserves the right to reject any or all tenders without assigning any reason.

B. S. BHAVANI SHANKAR,
Executive Engineer,
Concreting and Power House Division, Chambal Hydel Scheme,
P. O Chambal Hydel Works *via*
Jhalawar Road (W. Rly.) M. P.

175—20

लघुवाद क्रमांक ४५।५९ न्या. रूप भा. २ क्र. २

अंतिम निर्णय के लिये आव्हान-पत्र

(ऑर्डर ५ रूल १५ सं. वि. सं.)

न्यायालय लघुवाद मुरेना (म. प्र.)

भगवानलाल पुत्र नकटूराम, जाति ब्राह्मण, निवासी ग्राम सूजानगढ़, परगना जौरा वादी।

विरुद्ध

पंचमसिह पुत्र देवीसिह, जाति ठाकुर,निवासी ग्राम भर्रा, परगना जौरा .. प्रतिवादी।

पंचमसिह वल्द देवीसिह, जाति ठाकुर, के नाम निवासी, ग्राम भर्रा, परगना जौरा।

प्रगट हो कि वादी ने आपके नाम एक वाद जरे नक्द ४०४) के विषय में प्रस्तुत किया है।

इसलिये आपको आज्ञा दी जाती है कि आप दिनांक २२ जुलाई, १९५९ ई० दोपहर से पूर्व १० बजे स्वयं या नियमानुसार समक्ष वकील के द्वारा, जो प्रकरण के हाल से वास्तव में अवगत किया गया हो और जो प्रकरण से सम्बन्धित सब बातों का उत्तर दे सके, या जिसके साथ कोई और व्यक्ति हो जो ऐसे प्रश्नों का उत्तर देसके, उपस्थित हो और उक्त वादी के वाद का उत्तर दो, और आपको अनिवार्य है कि उसी दिन ऐसी सुबू लिखतमें प्रस्तुत करें जिनके आधार पर आप अपने प्रतिवाद का समर्थन करना चाहते हैं और आपको सूचित किया जाता है कि यदि उक्त दिन आप उपस्थित न होंगे तो आपके अनुपस्थिति में वाद की सुनवाई और निर्णय होगा।

नोट.—दिनांक २२ जुलाई, १९५९ अंतिम निर्णय को नियत है। इससे आठ दिन पूर्व प्रतिवाद-पत्र पेश करो।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा से आज दिनांक २ अप्रैल, १९५९ को जारी किया गया।

अनवर अहमद,
न्यायाधीश
लघुवाद, मुरेना म. प्र.

(१७०-१९)

'मध्यप्रदेश संदेश' की बिक्री के लिए मध्यप्रदेश के प्रत्येक जिले में एजेन्टों की आवश्यकता है

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER, P. W. D. (B' and 'R) BRANCH, VIDISHA

Tender Noticee

Sealed tenders in Form "A of M. P., P. W. D. (Percentage Rate Tender and contract) Based on the Current Schedul Rates of Bhopal Circle will be received in the office of the undersigned for the below noted work upto 3-P. M. on 18th Ma 1959 from A. I. to A. IV. Class Contractors registered in the office of the Chief Engineer, P. W. D. (B' and 'R) Branc Madhya Pradesh, Gwalior.

The Cost of Blank tender form will be Rs. 3/--which can be obtained and other particulars can be ascertained from office of the undersigned on any working day during office hours, except Holidays and the day on which the tenders are be opened.

Detailed plan and specification can be obtained on payment of the prscribed fees and other particulars may be secur in the office of the undersigned on any working day during office hours.

S. No.	Name of Works.	Probable amount of contracts.	Earnest money	Time allowed completion
1.	Balance work of Police Station, Satpada Sarai at Vidisha. (Main Bldg. Married Constables Qrts/Sub-Inspector Quarters/unmarried Constables quarters/Kitchen and other works).	Rs. 69,080	Rs. 1,382	18-Month from th date of work orde

B. V. NAGRAJ,
Executive Engineer,
P. W. D. (B' and R') Branch,
Vidisha M. P.

174—20

कार्यालय तहसील डबरा

मि. नं. १४२।५४–२१

श्रीकृष्ण वल्द नरसिंह दास वैश्य, काश्तकार, ग्राम सिरोही, साकिन डबरा मंडी, परगना पिछोर, जिला .. .. .. वादी।

बनाम

छोटेलाल वल्द उदयराज, कौम ब्राह्मण, काश्तकार व साकिन ग्राम सिरोही, परगना पिछोर, जिला ग्वालियर.

नोटिस

बनामः—छोटेलाल वल्द उदयराज, ब्रा ण, काश्तकार व साकीन ग्राम सिरोही, परगना पिछोर, जिला ग्वालियर।

जोकि वादी ने जागीर समाप्ति विधान की धारा २१ के तेहत आराजी नम्बर १४७-८ʃ४, ३२९।१, ३२९-२-॥१, ३१६-१–१ʃ, ३३४-४–।ʃ, ३३४-५–॥४ किता ६, रकबा १०॥४ बीघा लगानी रुपये ३४।) सालाना का पक्के कृषक का दावा किया है। इस प्रकरण में दिनांक ९ मई, १९५९ कायम होकर सूचित किया जाता है कि जो आपत्ति हो वह कार्यालय में हाजिर होकर पेश करे, वाद गुजरने मियाद उचित आदेश दिया जावेगा।

सालिगराम शर्मा,
नायब तहसीलदार,
(१७२–१९) परगना पिछोर, (गिर्द) म. प्र.

खजुराहो

विश्वविख्यात स्थापत्यकला की अनुपम देन

यदि आपने कभी खजुराहो के विख्यात मंदिर नहीं देखे, तो यह
पुस्तक अवश्य देखिये
यदि देखे हैं
तो उनकी स्मृति इस पुस्तक से ताज़ा रखिये
रायल अठपेजी, आर्ट पेपर पर मुद्रित १०२ प्लेट
अंग्रेजी और हिन्दी में
मंदिरों के इतिहास का मनोरंजक परिचय
नयनाभिराम मुद्रण : आकर्षक जिल्द : मूल्य १० रुपये

प्राप्तिस्थान
व्यवस्थापकः—प्रकाशन शाखा, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय
जयाजी चौक, ग्वालियर, म० प्र०

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER P.W.D. AND IRRIGATION MORENA DIVISION MORENA.

Tender Notice

Sealed percentage rate tender either below or above or par on scheduled rates are invited form the eligible classes of contractors registered by the Chief Engineer, P.W.D. (B and R) Gwalior or Office Subordinate to him for the following works upto 3 P.M. on 5th May, 1959 in the office of the undersigned on payment of usual fees on or before 4th May, 1959.

Other particulars inciuding detailed conditions of the tenders notice can be seen in the office of the undersinged on any working days during office hours except on the fixed for the receipts of tenders. The undersigned reserves the rights of rejecting any or all tenders without assignment of reasons to the tenderers. The tenders should attach Income tax clearance Certificate and the copy of the registration certificate with the tender without which tenders are likely to be rejected.

The Department is not bound to issue any materials cement and steel may be issued to the contractor if available with the Department the Departmental issue rates current at the time of issue of materials this how ever does not place the time of issue of materials this how ever does not place the Department under any obligation to issue Cement and Steel.

S. No.	Name of works.	Approximate Cost. Rs.	Time limit.	Earnest Money. Rs.
1.	Construction of quarters for 1 A.S.I., I.H.C. and 9 married constable at Police Station Dimni District Morena.	94,551	10 months from the date of works order.	1,892

Executive Engineer,
P. W. D. and Irrigation,
Morena Division.e Morena.

(180—20)

कार्यालय उप क्षतिपूर्ती पदाधिकारी भू-सुधार एवं जागीर विभाग मंडल गुना, मध्यप्रदेश

शीर्षक

घीसेखां पुत्र शकूरखां, चाचौड़ा—सुपुर्दगीदार ।

बनाम

जगरूप जमीदार, ग्राम गईपुराकलां ।

जर्ये हाजा सूचना दी जाती है कि ज. स. वि. की धारा ३६ के अन्तर्गत उक्त सुपुर्दगीदार के स्वत्व क्षतिपूर्ति का निरूपण किया जाना है, किन्तु उपर्युक्त भू-स्वामी का लावल्द फौत होना विदित हुआ है अतः इस विज्ञप्ति द्वारा सूचना दी जाती है कि जरे सुपुर्दगी की रकम सुपुर्दगीदार को देने की आज्ञा देने में जिस किसी को आपत्ति हो वह विज्ञप्ति प्रकाशन के १५ दिवस के भीतर इस कार्यालय में प्रस्तुत करे. अन्यथा उचित आज्ञा दी जावेगी और फिर कोई आपत्ति समायत योग्य न होगी ।

जी० व्ही० पाटील,
उप-क्षतिपूर्ति पदाधिकारी, भू-सुधार एवं
जागीर विभाग गुना म. प्र.

(१८१-२०)

नायब तहसीलदार कोर्ट, परगना गुना

मि. नं. १०।५८-१९।३

सीताराम हरीराव पुत्र गोविन्दराव, दक्षिणी ब्राह्मण टकनेरा .. .. वादी.

बनाम

करनराव फौत पन्नालाल फरार, जाति राव दक्षिणी ब्राह्मण, साकिन म्याना प्रतिवादी.

वाद धारा २१ जमींदारी समाप्ति विधान ।

इश्तहार

बनाम.—करनराव फौत व पन्नालाल फरार जाति राव दक्षिणी ब्राह्मण, निवासी म्याना, परगना व जिला गुना ।

जर्ये हाजा सूचित किया जाता है कि वादी ने ग्राम टकनेरा की भूमि क्रमांक १०१७ रकबा ७।३ लगानी ७।।) पर पक्के कृषक स्वत्व प्राप्त हेतु वाद प्रस्तुत किया है अत: तुमको अथवा तुम्हारे उत्तराधिकारियों को यदि इसमें कोई आपत्ति हो तो दिनांक ११ मई, १९५९ को तहसील कार्यालय गुना में लेखी रूप में प्रस्तुत की जाये अन्यथा कोई उज्र काबिल समात न होगा तया प्रकरण में उचित आदेश दिया जावेगा ।

नायब तहसीलदार,
परगना गुना, म. प्र.

(१७९-२०)

नायब तहसीलदार कोर्ट, परगना गुना

मि. नं. ९।५७-३८

कन्हैयालाल पुत्र तुलसी राम किरार, साकिन वामोरी .. .. .. वादी.

बनाम

हल्का तुलसी पिसरान छुट्टीलाल, किरार, साकिन वामोरी .. .. प्रतिवादीं.

वाद धारा ३८ जमींदारी समाप्ति विधान ।

इश्तहार

बनाम.—हल्का तुलसी पिसरान छुट्टीलाल किरार, निवासी वामोरी, परगना गुना ।

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि वादी ने ग्राम वामोरी की भूमि क्रमांक ७६८, ७६९, ७७० रकबा ६।४ लगान ५।।) पर पक्के कृषक स्वत्व प्राप्त हेतु वाद प्रस्तुत किया है अत: इस संबंध में तुम्हें अथवा तुम्हारे उत्तराधिकारियों को इसमें किसी प्रकार की आपत्ति हो तो वह दिनांक ६ मई, १९५९ को कार्यालय तहसील, परगना गुना में लेखी रूप में प्रस्तुत की जावे । अन्यथा उचित आदेश प्रकरण में दिया जावेगा ।

नायब तहसीलदार,
परगना गुना, म प्र.

(१७८-२०)

न्यायालय नायब तहसीलदार कोर्ट, सरदारपुर मध्यप्रदेश

प्र. क्र. ३५।५८–१९।३

कालू पिता खीमा, भील ,निवासी बोरदी खुर्द .. .. वादी.

विरुद्ध

लूणा पिता गोबा, भील, निवासी बोरदी खुर्द .. .. .. प्रतिवादी.

बनाम.—लूणा पिता गोबा, भील, निवासी बोरदी खुर्द ने तुम्हारे विरुद्ध ग्राम बोरदी खुर्द (लाबरिया) की भूमि क्रमांक ५–२॥।२, ३९-२॥।२ तथा ४५-६।३ कुल रकबा १२)१ लगानी रु ७.१२ न. पै. पर तहत धारा २१, २२, २३ जमींदारी समाप्ति विधान के अन्तर्गत वाद पत्र प्रस्तुत किया है। अस्तु वास्ते जवाबदेही के दिनांक ३० अप्रैल १९५९ को समय ११ बजे दिन को तहसील न्यायालय सरदारपुर में उपस्थित होकर उत्तर पेश करें। तुम्हारी अनुपस्थिति में वैधानिक आदेश दिया जावेगा।

नंदलालजी तिवारी
नायब तहसीलदार,
सरदारपुर म. प्र.

(१८३–२०)

न्यायायाल तहसील, परगना भांडेर

प्र० क्र० १४।५८।५१

उनवान

मुलू व रामनाथ पुत्रगण टुण्डे, जाति दांगी, निवासी ग्राम तेंडोंत, परगना भांडेर वादीगण।

बनाम

शंकर पुत्र जुगराज, जाति दांगी, निवासी, ग्राम तेंडोंत लावारिस फौत कायम मुकाम शासन द्वारा तहसील भांडेर .. प्रतिवादी।

सव-साधारण की सूचित किया जाता है कि मुलू व रामनाथ पुत्र टुण्डे, जाति दांगी, निवासी ग्राम तेंडोत ने इस न्यायालय में ग्राम तोंडोत भूमि क्रमांक ९४१-॥Տ३, ९४२-३॥Տ३, ९४३-।Տ१ १०९३-Տ४ कुल किता ४ रकबा ४॥Տ१ बि. मु. लगानी ८॥–) के संबंध में लेखा शोधन के हेतु वाद पत्र धारा ५१ मा. प्र. वि. के अन्तर्गत इस न्यायालय में प्रस्तुत किया है व प्रतिवादी शंकर पुत्र जुगराज, जात दांगी, निवासी तेंडोत लावारिस फौत होना प्रगट किया है अतएव कोई भी व्यक्ति जो उक्त प्रतिवादी का उत्तराधिकारी स्वयं को समझता हो वह इस प्रकरण में नियत दिनांक २८ मई, १९५९ को इस न्यायालय में अपना आपत्ति-पत्र लिखित रूप से स्वयं य सक्षम पेरोकार द्वारा प्रस्तुत करे नियत दिनांक गुजरने के उपरान्त कोई भी आपत्तिपत्र श्रवण योग्य न होगा व प्रकरण का निर्णय विधिवत् किया जावेगा।

लक्ष्मीनारायण करैया,
तहसीलदार,
भांडेर म. प्र.

(१७६–२०)

भारत सरकार से "रजिस्टर्ड"

सफेद दाग

इस परिक्षित दवा से स्त्री पुरुष या बालकों के शरीर पर के सफेद लाल दाग शरीर के त्वचा के समान पूर्ववत सुन्दर होते हैं। हजारों ने अनुभव करके प्रशंसा पत्र भेजे हैं मूल्य ५) रुपये अधिक विवरण मुफ्त मंगाकर देखिये।

वैद्य के. आर. बोरकर (मव्य.),
मु. पो. मंगरूलपीर
जि. अकोला (विदर्भ)

कोमल चमड़ीके
बाल निकालनेके लिये..
बादशाही
साबू, पावडर, लोशन
सर्वोत्तम हैं

सुवासित, बादशाही बालसफा पाउडर के इस्तेमाल से फालतू बाल भलीं भाँति बिना किसी कठिनाई के निकल जाते हैं।

आधुनिक ढंग से दुर्गन्ध निकाल कर खुशबू से प्रभावित किये हुए बादशाही पाउडर को इस्तेमाल कर अपनी मलायम चमड़ी को सुरक्षित रखें।

सी. सी. महाजन,
एण्ड कम्पनी, बम्बई.—२

कार्यालय तहसील, पिछोर (डबरा) म.प्र.

प्र० क्र० १४।५८–३८

शीर्षक

परताप पुत्र भरथू, जाति रावत ठाकुर, निवासी व कृषक ग्राम गाजना, परगना पिछोर (डबरा), मंडल ग्वालियर .. प्रार्थी।

विरुद्ध

रतना पुत्र मन्नू, जाति नट, निवासी ग्राम गाजना, परगना पिछोर (डबरा) मंडल ग्वालियर .. .. प्रतिवादी।

समंस

बनाम.—रतना पुत्र मन्नू, जाति नट, निवासी ग्राम गाजना, परगना पिछोर मंडल ग्वालियर।

उपरोक्त शीर्षक में प्रार्थी ने तुम्हारे विरुद्ध धारा ३८ जमींदारी समाप्ति विधान के अन्तर्गत आवेदन प्रस्तुत किया है, जो ग्राम गाजना की आराजी नम्बर २८६-२–२॥Տ३, २८७ ४६१-१- ४७४–॥Տ१, योग खेत ४ क्षेत्रफल ३॥Տ३ लगानी ७.६९ का है जिसकी सुनवाई के लिये दि. १३ मई, १९५९ नियत है अतएव उक्त तारीख पर उपस्थित होकर जवाबदेही करो अन्यथा तुम्हारी अनुपस्थिति में तुम्हारे विरुद्ध एकपक्षीय कार्यवाही करदी जावेगी। दिनांक १३ अप्रेल १९५९

रमेशचन्द्र शर्मा,
प्रॉ. नायब तहसीलदार,
डबरा म. प्र.

(१८२–२०)

हर ग्राम में मुफ्ती दवाखाना

स्त्री पुरुष एवं बालकों के प्रायः सभी रोगों की सहत्रोनुभूत सफल १७५) रुपयों की बहुमूल्य १४० दवाईयों से परिपूर्ण २४ सेर वजन के "बाहुबलि चिकित्सा बॉक्स" सेवन विधि की सरल पुस्तक सहित मात्र शीशी पैकिंग पेटी आदि उपरी खर्च ३५) रुपये में पूरा दवाखाना मुफ्त मगालें ५) रुपये पेशगी शेष ३०) रुपये की वी. पी. मंजूरी तथा पास के स्टेशन सहित पूरा पता भेजें !

अखिल हिन्द बाहुबलि औषधालय
ललितपुर (झांसी) उ. प्र.

१६४–(१९)

शवरी

(पृष्ठ ६ का शेष)

मालती लताओं की मुकुलावली कुसुमों का स्वरूप ले अपनी सुगन्धि से समीर को सुवासित कर समीर द्वारा ही अपनी सुमनरज सृष्टि को दान दे रही है। यदाकदा टिटहरी का स्वर गूंज उठता है। ऐसे दृश्य तथा समय में आश्रम से प्रस्थान के लिए प्रस्तुत ऋषि-मंडली के शवरी चरणस्पर्श कर रही है ।]

ऋषि––(दक्षिणकर उठा एक साथ आशीर्वाद के मंत्र का उच्चारण करते हैं ।)

मरीचि––(आशीर्वाद के अनन्तर) शवरी चतुर्वर्षीय इस एक युग में इतनी अल्पवयस्क रहते हुए भी तूने हमारी जो सेवा की है, उसे हममें से कोई भी विस्मृत न कर सकेगा ।

शेष छह ऋषि––(एक साथ) कदापि नहीं, कदापि नहीं।

[शवरी अभी भी बालिका ही है, किन्तु चार वर्षों के ऋषि-संग एवं उनके द्वारा प्राप्त शिक्षा ने उसमें उसकी अवस्था से कहीं अधिक ज्ञान भर दिया है। उसमें साधारण बालिका का सा न तो बचपन है, न चपलता ही और न हठ। ऋषि के इस भाषण पर वह अपने आंसुओं को रोकने में तो असमर्थ रहती है, पर बालकों के रुदन में बहुधा जैसा शब्द रहता है, वह उसके आंसुओं के साथ नहीं रहता। अश्रुरूपी अर्घ्यऋषि-चरणों को समर्पित करते हुए वह अपना मुख उठा ऋषियों की ओर देखती है । सीकरयुक्त इन्दीवर जिस भाँति ज्योत्स्ना में चमकता है, उस प्रकार उसका मुखमंडल कौमुदी में चमक उठता है। ऋषि-कथन का वह कोई उत्तर नहीं दे पाती, परन्तु उसकी मुखमुद्रा से ही ऋषियों को उत्तर मिल जाता है। वे फिर कहते हैं।]

मरीचि––पुत्री, हम ऋषियों को भी जब तेरा वियोग दुःख दे रहा है, तब तेरी भावनाओं को हम भलीभांति समझ सकते हैं। तूने बाल्यावस्था से ही सेवा को अपना सर्वस्व बनाया है। बिरले बालक ऐसे सौभाग्यशाली होते हैं। यह आश्रम आज से तेरा है। इसी आश्रम में निवास करते हुए अतिथियों की सेवा करना । इस ओर ऐसे आश्रमों की न्यूनता है, जहाँ यात्री निवास कर अपने भय का निवारण कर सकें। यदि तेरी अतिथि-सेवा भी हमारी सेवा के समान ही अगाध भक्ति के साथ चलती रही और इस आश्रम में आगन्तुक को सच्चा विश्राम मिला तो, अतिथि के रूप में ही कभी तुझे भगवद्दर्शन होंगे।

शवरी––(आश्चर्य से) भगवद्दर्शन, प्रभो ?

मरीचि––हाँ, भगवद्दर्शन ! (कुछ रुककर) दिनोंदिन धर्मग्लानि बढ़ रही है, अधर्म का अभ्युत्थान हो रहा है, साधुओं को असाधु कष्ट पहुंचा रहे हैं। अवतार का अवसर समीप जान पड़ता है ।

शवरी––(और आश्चर्य से) अवतार का अवसर !

मरीचि––हाँ, अवतार का अवसर......और अवतार होगा तो उत्तर में ही, जहाँ आर्य धर्म संस्थापित हो चुका है, परन्तु दक्षिण में अवतार का अधिक कार्य होने के कारण उन्हें यहाँ आना अवश्य ही पड़ेगा........उस समय, शवरी, तेरी अतिथि-सेवा ग्रहण करने वे इस आश्रम में भी पधारेंगे।

शवरी––(उत्कंठा से)यह कब तक, प्रभो ?

मरीचि––समय का ठीक संकेत कठिन है, किन्तु विलम्ब......बहुत विलम्ब नहीं जान पड़ता।

अंगिरा––और यह भी संभव है कि अवतार हो चुका हो।

शवरी––(उसी प्रकार आश्चर्य से) अवतार हो चुका हो ?

अत्रि––हाँ, अवतार हो चुका हो। यदि अवतार हो भी चुका होगा, तो भी भगवान् दक्षिण को तो पधारेंगे ही ।

शवरी––(विचारते हुए) यदि अवतार हो चुका हो, तब तो इस ओर अवतार का आगमन और भी शीघ्र होगा, आर्य !

पुलस्त्य––अवश्य।

शवरी––(उसी प्रकार विचारपूर्वक) और भगवन् यह ज्ञात किस प्रकार होगा कि अमुक व्यक्ति अवतारी है ?

पुलह––गुणों तथा कर्मों से।

ऋतु––वारिवाह, विवस्वत की क्रियाओं को क्या सदा छिपा कर रख सकते हैं ?

वसिष्ठ––प्रज्ज्वलित पावक राख से परिवेष्टित होने पर भी पहचान ही लिया जाता है।

शेष छह ऋषि––अवश्य, अवश्य।

(यवनिका)

श्री विष्नार द्वारा किसान मेले का उद्घाटन

वन एवं नैसर्गिक साधन उप मंत्री श्री सज्जनसिंह विष्नार ने पश्चिमी निमाड़ जिले में स्थित बामानाला के समीप एक किसान मेला तथा कृषि-प्रदर्शनी का उद्घाटन किया ।

इस अवसर पर भाषण करते हुए उन्होंने किसानों से जोरदार शब्दों में अपील की कि वे सहकारिता के आधार पर खेती कर कृषि-उत्पादन में वृद्धि करें ।

साक्ष्य अधिनियम १८७२ का संशोधन

विधि आयोग ने भारतीय साक्ष्य अधिनियम १८७२ पर इस दृष्टि से विचार करना आरंभ किया है कि वह इस बात की सिफारिश करेगा कि इस अधिनियम को किन दिशाओं में संशोधित किया जावे ।

आयोग इस संबंध में प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत अभिमत जानने का अभिलाषी है, अतएव जो व्यक्ति इस संबंध में अपना अभिमत व्यक्त करना चाहते हों, वे अपने अभिमत उप-सचिव, विधि मंत्रालय (विधि आयोग), ५ जोरबाग, नई दिल्ली ३, को ३१ मई १९५९ के पहले भेज सकते हैं ।

दतिया में कृषक दिवस

खेतों के उन्नत तरीकों से कृषकों को परिचित कराने की दृष्टि से सहकारी यांत्रिक प्रक्षेत्र दतिया में, हाल ही में, कृषक-दिवस मनाया गया, जिसमें जिले के विभिन्न भागों से आए चालीस कृषकों ने भाग लिया।

इस अवसर पर एक कृषि-प्रदर्शनी भी आयोजित की गई, जिसमें उन्नत बीजों, रासायनिक उर्वरकों एवं उन्नत कृषि-औजारों के प्रयोग तथा खेतों के अन्य उन्नत तरीकों को बताया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन दतिया जिलाध्यक्ष ने किया।

इस अवसर पर किसानों द्वारा लोक-नृत्यों का एक सांस्कृतिक-कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया।

दतिया जिले में ६ दस्यु पुलिस के बन्दी

राज्य की पुलिस ने दतिया जिले में जग्गू, बल्का, बाबू, छोटे, हरदास और गन्दू नामक ६ दस्युओं को दिनांक १७ अप्रैल को बंदी बना लिया है और उक्त जिले के ग्राम कुम्हर्रा पुलिस स्टेशन दुरसेदा के अन्तर्गत हुई एक डकैती का भी कुछ माल तथा ३ मजिल लोडिंग बन्दूकें उक्त डकैतों से प्राप्त करली हैं ।

शासन की गतिविधि

मध्यप्रदेश नगरपालिका अध्यक्ष सम्मेलन

स्वायत्त शासन मंत्री श्री बी. ए. मंडलोई ने बिलासपुर में मध्यप्रदेश की नगरपालिकाओं के अध्यक्षों के सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि नगरपालिका जैसी स्वायत्त शासन-संस्थाओं की वास्तविक सफलता भव्य-भवनों तथा सीमेंट की सड़कों के निर्माण में हीं नहीं, बल्कि नागरिकों के लिये सर्वतोमुखी सुविधाएं उपलब्ध कराने में निहित है

नवीन मध्यप्रदेश में स्वायत्त-शासन की संस्थाओं के एकीकरण के प्रश्न का उल्लेख करते हुए श्री मंडलोई ने कहा कि यह प्रश्न लगभग हल किया जा चुका है और अब संस्थाओं के विकास पर ध्यान दिया जा रहा है। यह हमारा कर्त्तव्य है कि शहरी तथा ग्रामीण दोनों प्रकार की स्वायत्त-शासन संस्थाओं को प्रभावशाली तथा सुदृढ़ बनावें ताकि ये संस्थाएं कल्याणकारी राज्य से संस्बद्ध उत्तरदायित्वों को निभा सकें। मेहता समिति के प्रतिवेदन का उल्लेख करते हुए मंत्रीजी ने बताया कि यह प्रतिवेदन राज्य शासन के विचाराधीन है।

अपना भाषण जारी रखते हुए मंत्री जी ने आगे कहा कि इन संस्थाओं की सहायता करने के लिये सरकार हर संभव प्रयास कर रही है। जलपूर्ति योजनाओं का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उन्होंने बताया कि स्थानीय बड़ी संस्थाएं भी अपना व्यय केवल अपने साधनों से पूरा करने में कठिनाई का अनुभव करती है। शासन द्वारा संबंधित नीति में अब सुधार किया जा चुका है और इस प्रकार १५ शहरी जलपूर्ति योजनाओं की स्वीकृति दी गयी है।

अपना भाषण समाप्त करते हुए श्री मंडलोई ने नगरपालिकाओं के अध्यक्षों से नागरिक-विकास योजना के प्रारूप तैयार करने तथा उन्हें तृतीय पंचवर्षीय योजना में सम्मिलित करने के उद्देश्य से शासन के पास भेजने को कहा।

श्री मंडलोई ने सायंकाल बिलासपुर के जल यन्त्रालय की आधारशिला रखी। इस प्रस्तावित जल यंत्रालय की अनुमानित लागत २० लाख रुपये है। इस धनराशि में से राज्य शासन ३० प्रतिशत अनुदान तथा ५० प्रतिशत ऋण के रूप में देगा। शेष २० प्रतिशत धनराशि नगरपालिका देगी।

मध्यप्रदेश में १५ और विकास खण्ड खुले

मध्यप्रदेश शासन ने राज्य में १ अप्रेल १९५९ से १५ पूर्व विस्तार खण्ड खोले हैं। इन विकास खण्डों के अन्तर्गत, ५,२७७ वर्ग मील का क्षेत्र आयेगा तथा इन विकास खण्डों की २५१९ गांवों की जनसंख्या ७,५४,७३७ होगी। खोले गये ये विकास खण्ड निम्नलिखित हैं:—सीधी (सीधी जिला), बकस्वाहा (छतरपुर जिला), थांदला (झाबुआ जिला), शाजापुर (शाजापुर जिला), बीजेपुर (मुरेना जिला), चंदेरी (गुना जिला), सेंधवा (पूर्वी निमाड़ जिला), बनखेड़ी (होशंगाबाद जिला), बिछिया (मण्डला जिला), अमरवाड़ा (छिंदवाड़ा जिला), खलवा (पश्चिमी निमाड़ जिला), सारंगढ (रायगढ जिला), कसडोल (रायपुर जिला), जैपुर (बिलासपुर जिला), तथा मुलताई (बैतूल जिला)।

इन विकास खण्डों का क्षेत्रफल ग्रामों की संख्या तथा जनसंख्या निम्नलिखित है :—

खण्ड का नाम.		क्षेत्रफल (वर्ग मील में)	जनसंख्या.	गांवों की संख्या.
सीधी	..	३७८	६७,९०२	२९५
बकस्वाहा	..	४४५	३३;७३१	१७०
थांदला	..	२०७	३२,२४१	११२
शाजापुर	..	३५९	८०,९६७	२१६
चन्देरी	..	५२२	४२,२८३	१८४
बीजेपुर	..	१,०८०	५५,६४६	२२३
सेंधवा	..	२९५	६३,२००	१२२
बनखेड़ी	..	२४२	४०,१०९	१२५
बिछिया	..	२५८	४९,२८६	
अमरवाड़ा	..	२७६	४३,०४२	
खलवा	..	२९०	४५,३५४	
मुलताई	..	३१६	६९,१९२	
सारंगढ़	..	१८५	८७,१४८	
कसडोल	..	२५८	६९,८४९	
जैजैपुर	..	१६६	७४,७८७	

उक्त १५ खंडों के खुल जाने से राज्य में अब कुल २४७ खंड हो जायेंगे। इसमें ११८ प्रथम चरण खंड, १० बहुउद्देश्यीय आदिवासी खंड, ५१ सामुदायिक विकास खंड, ४४ द्वितीय चरण तथा २४ पूर्व विस्तार खंड हैं। इन खंडों के अन्तर्गत ४७,४१९ ग्राम आते हैं, जोकि राज्य के ग्रामों की कुल संख्या के आधे से भी अधिक हैं, तथा जिनकी जनसंख्या लगभग १.५२ करोड़ है। आशा है कि इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अक्टूबर १९६३ तक समूचे राज्य में ४१६ विकास खंड खोले जायेंगे।

खण्डों का रूपान्तर

राज्य सरकार ने, १ अप्रैल १९५९ से ११ पूर्व-विस्तार खंडों को भी प्रथम चरण खंडों में रूपांतरित किया है। ये खंड निम्नलिखित हैं:- सोहागपुर (शहडोल जिला), जोबट (झाबुआ जिला), सैलाना (रतलाम जिला), बागली (देवास जिला), मनावर (धार जिला), सिहावार (रायपुर जिला), किरनापुर (बाला घाट जिला), कोन्टा (बस्तर जिला), कुरई (सिवनी जिला), पंडरिया (बिलासपुर जिला) और बावई चिचली (नरसिंहपुर जिला)।

मध्यप्रदेश खाद्यान्न आदेश

राज्य के सीमावर्ती क्षेत्रों से खाद्यान्नों को चोरी से बाहर भेजने की भावनाएं कम करने के उद्देश्य से भारत. सरकार ने १४ अप्रैल १९५९ को अपने असाधारण राजपत्र में मध्यप्रदेश खाद्यान्न (सीमा पर यातायात नियन्त्रण) आदेश १९५९ प्रकाशित किया है। इस आदेश के अन्तर्गत राज्य की सीमा में पांच मील के क्षेत्र तक इस क्षेत्र से या इस क्षेत्र के अन्दर चावल और गेहूं का यातायात करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इन प्रतिबंधित क्षेत्रों में चावल और गेहूं के स्टाक का यातायात केवल उन परमिटों द्वारा होगा, जो शासन द्वारा या अधिकारी द्वारा जिसे शासन ने इस संबंध में अधिकार दिया हो, जारी किये जाएं।

कार्यालय कार्य पालन यंत्री चम्बल हाईडल एन्ड इरिगेशन स्कीम ट्रांसमिशन सिविल डिवीजन उज्जैन, मध्यप्रदेश

निविदा क्रमांक २, ५९-६०.

समस्त रजिस्टर्ड ठेकेदारों से निम्नांकित कार्य के हेतु, उपरोक्त कार्यालय में, पत्रक में निहित विवरण के अनुसार परसेंटेज रेट निविदा दोपहर ४ बजे तक पुन्हः आमंत्रित किये जाते हैं. निविदा उसी दिन उपस्थित ठेकेदारों के समक्ष दोपहर ४-३० बजे खोले जायेंगे:—

क्र.	कार्यस्थल.	कार्य का विवरण.	अनुमानित धनराशि.	अर्नेस्ट मनी.	टेंडर आमंत्रित होने की तिथि.	कार्य समाप्त होने की अवधि.
१	२	३	४	५	६	७
			रुपये.	रुपये.		
१	ग्रिड सब-स्टेशन साईट ज्योती नगर कालोनी, उज्जैन.	सब-डिविजनल ऑफिस का निर्माण ..	१२,२७५	२४६	२७-४-५९	४ माह.
२	ग्रिड सब-स्टेशन साईट पोलो ग्राउन्ड, इन्दौर	रोड्स एवं कलवर्टेस का निर्माण ..	१८,९३५	३७९	२७-४-५९	२ माह

निविदा फार्म कार्यालय में किसी भी चालू दिन प्रति निविदा फार्म मूल्य २) पर निविदा आमंत्रित होने की तिथि हे से एक सप्ताह पूर्व से दिये जायेंगे.

निविदा के साथ की अर्नेस्ट मनी नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स या ट्रेझरी चांलान के रूप में ही स्वीकृत की जायेंगी . निविदा आमंत्रित होने के नियोजित दिन निविदा फार्म का क्रय नहीं होंगा.

निम्न हस्ताक्षरकर्ता को बिना कारण बताये किसी भी अथवा समस्त निविदा अस्वीकृत करने का अधिकार है.

श्री. श. तेलंग,
कार्य पालन यंत्री, ट्रांसमिशन सिविल डिविजन,
उज्जैन. (म. प्र.)

१६८-१९-२०

कार्यालय तहसील, परगना नीमच

प्र० क्र० २१।५८—१९।३.

सेवा आत्मज चतरभुज सुनार जीरन एवं किशन आ. नन्दा कामरिया जीरन।

बनाम

मोहम्मद नबी आ. मकसूदअली मुसलमान, जीरन हाल लापता।

उपरोक्त प्रकरण में प्रतिप्रार्थी को सूचित किया जाता है कि प्रार्थी ने धारा २१ के तहत ग्राम जीरन की आराजी खसरा नं. ७९३ रकबा ११ विस्वा लगानी १० आना पर पक्के कृषक के स्वत्व प्रदान करने बावद आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया है और सुनवाई के लिये दि. २८ अप्रैल, १९५९ नियत है। अतः इस संबंध में तुमको कोई आपत्ति हो तो नियत दिनांक को तहसील कार्यालय नीमच में ११ बजे उपस्थित होकर प्रस्तुत करो। अवधि के पश्चात कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी एवं प्रार्थी को पक्के कृषक के स्वत्व प्रदान कर दिये जावेंगे। दि. २३ मार्च, १९५९.

वी. के. जोशी,
अधिकृत तहसीलदार,
नीमच. म. प्र.

(१५५-१९)

सफेद दाग

सतत् परिश्रम एवं खोज के बाद सफेद दाग की औषधि का निर्माण किया गया है। हजारों ने इसका अनुभव करके लाभ उठाया है। दवा का मूल्य ६) रुपया विशेष जानकारी के लिये विवरण पत्र मुफ्त मंगाकर देखें। नक्कालों से सावधान रहें।

वैद्य बी. आर. बोरकर,
आयुर्वेद भवन (२५) मु. पो. मंगरूळपीर,
जिला अकोला (विदर्भ)।

Registered No. J. 158
Licenced to post Without prepayment

MADHYA PRADESH SANDESH

वार्षिक मूल्य
Licence No.

GEW
GWALIOR

Madhya Pradesh Government Workshop

The best People use the best Articles
&
we make them best for you

We make :

STEEL FURNITURE
HOSPITAL EQUIPMENT
PLANT PROTECTION BLOWERS & PUMPS
SLUICE GATES
TAR BOILERS & OTHER P. W. D. ITEMS
BUS BODIES & TRUCK BODIES
MOBILE VANS FOR SPECIAL PURPOSES
AMBULANCE CARS
CONSERVANCY CARTS & TRAILERS
ROAD ROLLER RIMS & HEAVY CASTINGS
MACHINE TOOLS
STEEL STRUCTURALS
&
THEY ARE ALL BEST BY ANY STANDARDS

Details and Price lists on demand please—

GWALIOR ENGINEERING WORKS, GWALIOR

Grams: 'MECHANIC'
phone

प्रबंध सम्पादक--ईश्वरसिंह परिहार, संचालक, सूचना एवं
प्रकाशन संचालनालय, मध्यप्रदेश
सम्पादक--अनन्त मराल शास्त्री

देवेन्द्र नारायण वाजपेयी, मुख्य सम्पादक, सूचना-प्रकाशन संचालनालय
द्वारा प्रकाशित तथा गवर्नमेंट रीजनल प्रेस, ग्वालियर द्वारा
एक प्रति का मूल्य--१३ नये पैसे

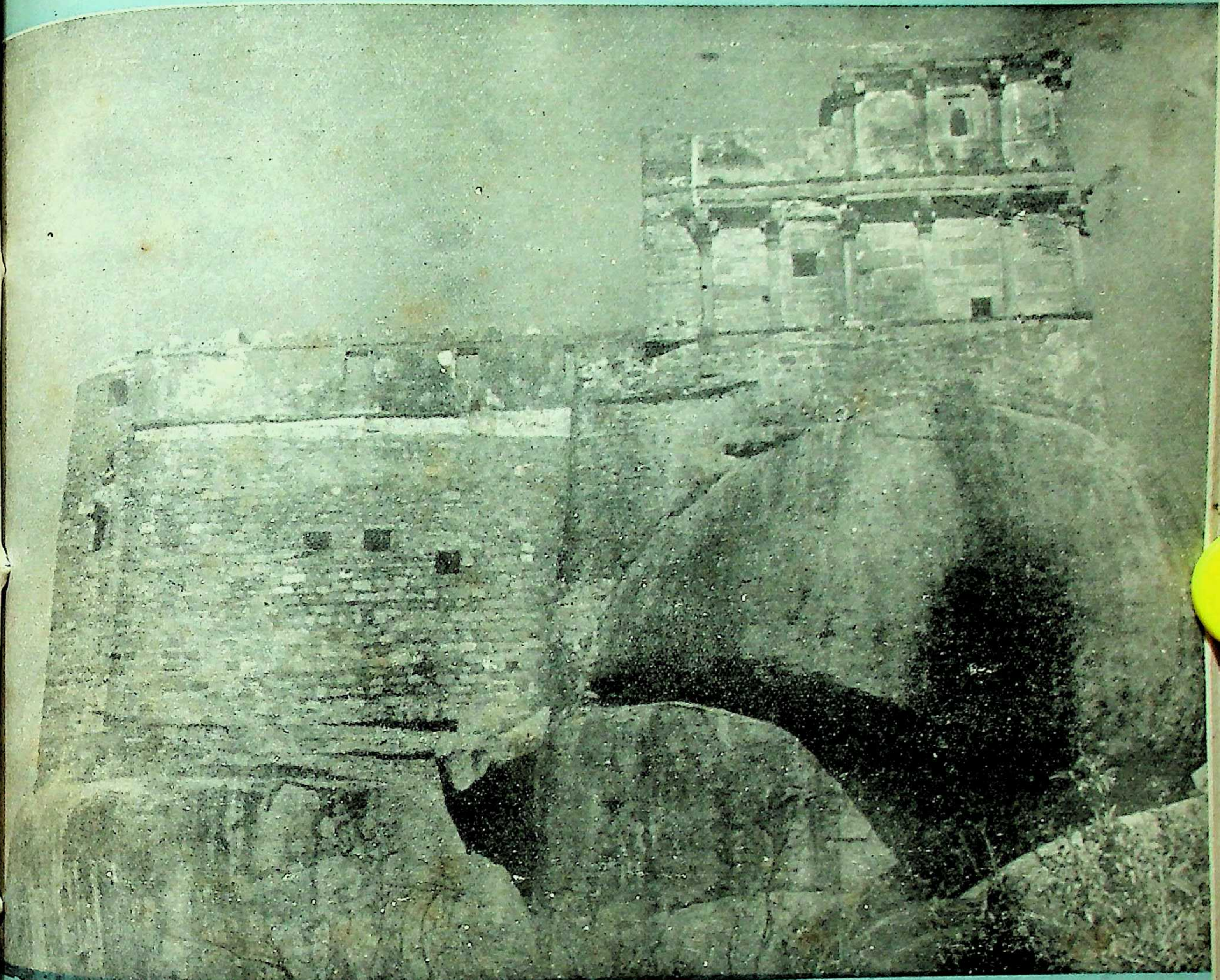

मध्यप्रदेश सन्देश

ग्वालियर, शनिवार, ३० मई, १९५९
वर्ष ३] ज्येष्ठ ९, १८८१ [अंक २५

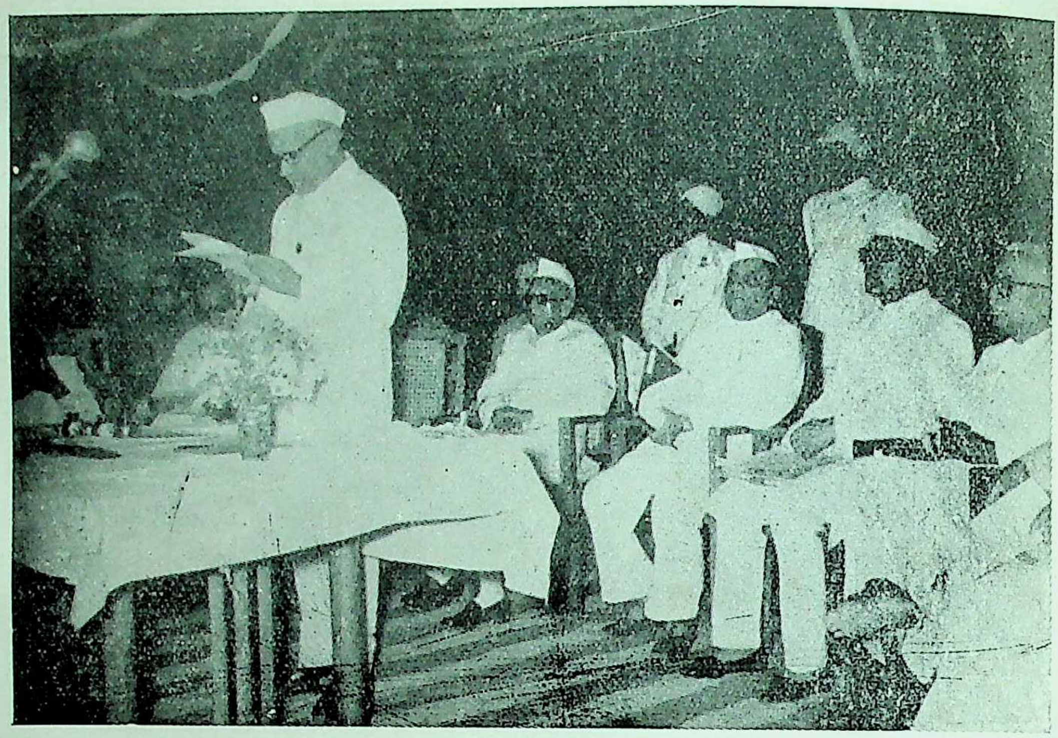

राज्य के वनमंत्री श्री शंभुनाथ शुक्ल १४ मई को पचमढ़ी में आयोजित केन्द्रीय वन-मंडल की पांचवीं बैठक में स्वागत-भाषण पढ़ते हुए

*

राज्यपाल श्री हरि विनायक पाटसकर १४ मई को पचमढ़ी में केन्द्रीय वन-मंडल की पांचवीं बैठक का उद्घाटन करते हुए

सचित्र साप्ताहिक
मध्यप्रदेश सन्देश

खरीफ-उत्पादन-आन्दोलन

देश में अनाज की समस्या सुलझाने के लिए 'अधिक अन्न उपजाओ' आंदोलन का श्रीगणेश किया गया था एवं उसके अन्तर्गत कृषि की उन्नति के समस्त साधनों को उपयोग में लाया गया और देश की पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि-विकास को विशेष महत्त्व दिया गया। 'अधिक अन्न उपजाओ' के व्यापक नारे को देश की दो प्रमुख फसलों की दृष्टि से विभक्त करके रबी-उत्पादन और खरीफ-उत्पादन के आन्दोलनों में रूपांतरित कर दिया गया है। फसलों की दृष्टि से उत्पादन-अभियान चलाना गत वर्ष से ही प्रारंभ हुआ है। रबी-अभियान द्वारा गत वर्ष गेहूं-चने की प्रमुख फसलों का उत्पादन पर्याप्त रूप से बढ़ा है और उससे भी अधिक बढ़ा है हमारी क्रियाशीलता के प्रति आत्मविश्वास, जिसके अभाव में मनुष्य संकट के समय में साहस और धीरज को छोड़ बैठता है। रबी और खरीफ की फसलें तो प्रकृति के मौसमी चक्र के साथ बोई और काटी जाती रही हैं, किन्तु इनके ढीले-ढाले परंपरागत कार्यक्रमों में फिर से नये प्राण फूंकने की आवश्यकता थी। और तदनुसार रबी-उत्पादन का आन्दोलन चलाया गया और उसमें सफलता प्राप्त हुई। केन्द्रीय तथा राज्य शासनों द्वारा फसल के उत्तम उत्पादन के लिए यथासंभव सहायता तथा परामर्श दिया गया।

रबी-आन्दोलन ने कृषकों में जो आशा, विश्वास और गतिमयता उत्पन्न की, उससे प्रभावित होकर अब खरीफ-उत्पादन अभियान प्रारंभ किया जारहा है। धान, ज्वार, मक्का, दालें और तेलहन की अनेक जिन्से इस फसल में उत्पन्न होती हैं। गत २१ मई को राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने खरीफ-उत्पादन-अभियान का प्रारंभ, आकाशवाणी से अपना सार गर्भित भाषण प्रसारित करते हुए, किया है जिससे देश के करोड़ों कृषकों को प्रेरणा और बल मिलेगा। राष्ट्रपति ने अपने भाषण में यह कहा है कि हम अन्न के मामले में आत्मभरित होने के आदर्श को प्राप्त कर सकेंगे या नहीं, किन्तु इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हमें देशभर में अनाज के उत्पादन को बढ़ाने के लिए पूरा प्रयत्न करना है। आपने रबी आन्दोलन से, जोकि सीमित रूप में था, खरीफ आन्दोलन को अखिल देश-व्यापी बनाने की बात पर बल दिया। तद्नुसार खरीफ-आन्दोलन का प्रारंभ देश में उचित समय पर किया गया है। इसमें देश के प्रत्येक व्यक्ति की सहानुभूति और शक्ति लगाई जानी चाहिए। कृषक लोग तो अपना कार्य करेंगे ही, और उन्हें शासकीय सलाह और सहायता भी हर प्रकार की प्राप्त होगी ही, किन्तु इससे भी बढ़कर उसे प्रत्येक अन्न-उपभोक्ता की मानसिक सहानुभूति और सहायता की आवश्यकता है, जिसके बिना उसे स्फूर्ति प्राप्त नहीं हो सकती। खरीफ-उत्पादन आन्दोलन को हम एक अनुष्ठान का और यज्ञ का-सा रूप प्रदान करें, जिसमें यज्ञ करने-करानेवालों के अतिरित अन्य सर्व-साधारण का पूर्ण सहयोग आवश्यक है। उत्तम बीज, उपयुक्त खाद, जुताई, बुआई, सिंचाई आदि के लिए शासकीय सहायता दी जारही है और खेती के श्रेष्ठ तरीके भी कृषकों को बताए जारहे हैं, जिससे उत्पादन का प्रतिशत अधिक बढ़ेगा। साथ ही, फसल-नाशक कीड़े-मकोड़ों, जीव-जंतुओं से फसलों की सुरक्षा की व्यवस्था भी की जारही है।

मध्यप्रदेश भी इस अभियान में देश के अन्य राज्यों के साथ उत्साहपूर्वक भाग ले रहा है। खरीफ-उत्पादन की जोरदार प्रारंभिक तैयारियां शुरू होगई हैं। संभागों में लक्ष्यों को निर्धारित करने तथा अभियान को गति प्रदान करने के उद्देश्य से विभिन्न स्तरों पर समितियां गठित की गई हैं। विभिन्न जिलों में यथावश्यक कार्य निश्चित कर लिए गये हैं। बंधिया बनाना, मेड़ें ठीक करना, तकावी ऋण प्रदान करना, आवश्यक बीज, खाद, यंत्रादि की सहायता करने आदि का कार्यक्रम तैयार करलिया गया है और क्रियान्वय के कदम उठाये जारहे हैं। शासकीय अधिकारी और कर्मचारी कृषकों के निकट संपर्क में आगये हैं और अपनी समस्त शक्ति से खरीफ उत्पादन को सफल बनाने में जुट गए हैं। विकास खंडों में कार्य चालू होगये हैं। ग्रामसेवक किसानों को उत्साह के साथ काम में जुटाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। कृषकों की कठिनाइयां और कृषि संबंधी अभाव की पूर्ति की जारही है। कृषि विभाग भी अपनी समस्त सेवाएँ किसानों के हित में संलग्न कर रहा है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि मध्यप्रदेश देश के इस महत्त्वपूर्ण अभियान में अपना उचित स्थान प्राप्त करेगा और अन्न-समस्या को हल करने में सफलता प्राप्त करेगा।

मुखपृष्ठ का चित्र

इतिहास प्रसिद्ध 'मदन महल',
जबलपुर

निर्माण की दिशा में

जिस प्रकार जीवों को अच्छी तरह समझने के लिए डाक्टरी के विद्यार्थी अस्थि-पंजरों का अध्ययन करते हैं और चीरफाड़ करते हैं, उसी प्रकार विद्वानों को भी भूतकाल के बारे में अध्ययन करना चाहिए, जिससे कि वे वर्तमान की अधिक अच्छी तरह सहायता कर सकें, उसे अधिक अच्छी तरह समझ सकें और उसे अधिक अच्छा बना सकें।

—राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद

आणविक हथियारों और शीत-युद्ध के इस युग में भारत के पास दुनिया के लिए एक महान् संदेश है। यह संदेश मित्रता, सहिष्णुता तथा अहिंसा का है, जिसे युग-युग से हमें भगवान् बुद्ध, सम्राट् अशोक और महात्मा गांधी ने दिया है।

*

विज्ञान की प्रगति के साथ, जिसने नई-नई समस्याएँ पैदा करदी हैं, इन महान् विचारकों की शिक्षाओं को याद रखना बेहतर होगा।

*

देश के धर्मशास्त्रों में इस बात पर जोर दिया गया है कि मनुष्य को सबसे बड़ा उपहार निडरता का मिल सकता है, किन्तु दुनिया में आज भय फैला हुआ है। जो देश जितना अधिक शक्तिशाली है, उसके भय भी उतने ही बड़े हैं। भय पाप है; क्योंकि घृणा और हिंसा जैसे उसके साथी हैं। यदि इन्हें मानवता को कुचलने दिया गया, तो अन्य सफलताएं कितनी भी क्यों न हों, जीने में कोई स्वाद नहीं रह जायगा। इसीलिए गाँधीजी ने कहा था कि डरने से तो तलवार हाथ में लो।

*

शान्तिपूर्ण संघर्ष का अर्थ बुराई के आगे घुटने टेकना नहीं है। आपको शक्तिशाली, किन्तु साथ ही विनम्र होना है। पश्चिम की भांति शक्ति के गुण विकसित कीजिये, किन्तु उसका आधार विनम्रता को बनाइए। मुझे इस बात पर गर्व है कि भारतीय जनता अपनी परम्पराओं के कारण विनम्र है, यद्यपि कुछ लोग इसी गुण के कारण उसकी निन्दा कर सकते हैं।

—श्री जवाहरलाल नेहरू

भारतीय अर्थ-व्यवस्था अभी तो कृषि-प्रधान है ही, भविष्य में भी बहुत वर्षों तक ऐसी ही रहेगी। इसलिए हमें कृषि-व्यवस्था को सुधारने पर बहुत जोर देना है। हमारी कृषि-व्यवस्था का पुनर्गठन तो सहकारी आधार पर ही संभव है। मेरी राय में ग्राम-विकास के तीन ही मुख्य आधार हो सकते हैं— ग्राम सहकारी संस्था, ग्राम पंचायत और ग्राम विद्यालय। यदि इन तीन आधारों की ओर पर्याप्त ध्यान दिया गया, तो हमारे देश में ग्राम-विकास सही दिशा में संभव हो सकेगा।

यदि हम चाहते हैं कि गांवों में परिवर्तन हो, तो हम ग्रामवासियों के दिलों और दिमाग पर स्थापित रूढ़िवादी पुराने संस्कार व रस्म-रिवाज को मिटाने के लिये उसी प्रकार के नये संरक्षण उपलब्ध करें, जिससे वे प्रगति के नये ढांचे में ढल सकें। ग्रामवासियों के स्वावलंबन के बिना कोई भी विकास कार्य सफल नहीं हो सकते। अतः हम उनके अनुभव, आवश्यकता व आकांक्षाओं का मनन करें और ग्रामीणों में अपने आपको विलीन करदें।

—डॉ० श्रीमाली

भारत जैसे देश में कला पर जोर देना विशेष महत्व रखता है, क्योंकि यहां के अनेक प्रकार के कामों को कलात्मक रूप दिया जाता है। फसल बोते समय, काटते समय और विभिन्न ॠतुओं में अपने-अपने ढंग से उत्सव मनाए जाते हैं। दैनिक जीवन में अनेक प्रकार से सौंदर्य और माधुर्य का पुट दिया जाता है। आम इस्तेमाल की वस्तुओं में भी कलात्मकता देखकर बाहर के लोग आश्चर्य करते हैं, क्योंकि धार्मिक और दार्शनिक तथ्यों को कला के माध्यम से अभी तक सुरक्षित रखा गया है।

—श्री हुमायूं कबीर

इस अंक में

क्र. शीर्षक एवं लेखक पृष्ठ-संख्या
१. तीसरी योजना की ओर .. ५
 —श्री एम. एच. गोपाल
२. मालव-भूमि का एक मनोरम स्थल—केदारेश्वर (सैलाना) .. ६
 —श्री गोविन्दप्रसाद मिश्र
३. अस्थि-पिंजर का तोता (कविता) ७
 —श्री माखनलाल चतुर्वेदी
४. कहावतें, कहावतें और अधिक कहावतें ८
 —प्रा० राजनाथ पांडेय
५. पहले बाहर, फिर भीतर (कहानी) १०
 —श्री रावी
६. पौराणिक घटनाओं का काल-निर्णय १३
 —श्री चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र
७. श्रमदान (कविता) .. १४
 —श्री सत्यनारायण श्रीवास्तव
८. हिन्दी पत्रकारिता .. १५
 —श्री शिवशंकर मिश्र
९. तात्या टोपे नगर का मल-निकास-यंत्र

तीसरी योजना की ओर

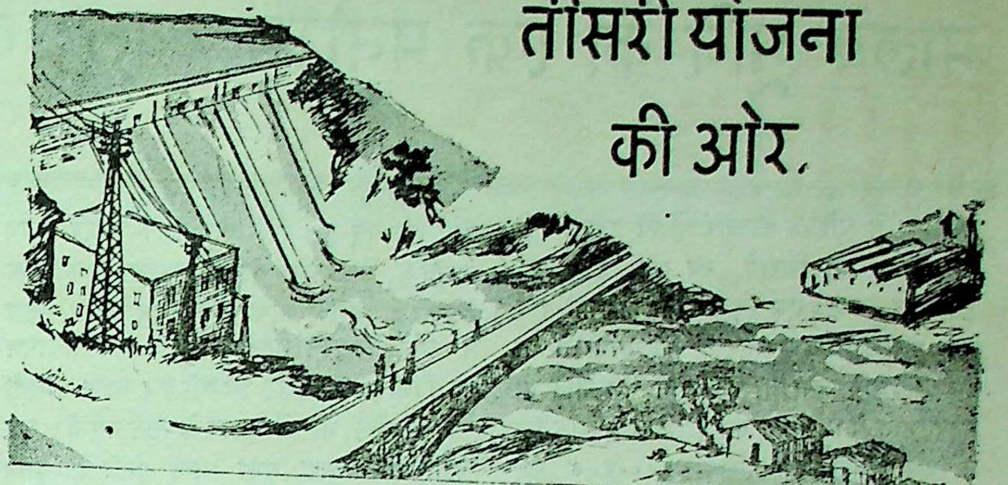

—श्री एम० एच० गोपाल

दूसरी योजना को समाप्त होने में अब अधिक देर नहीं है। इसलिए सरकार और लोग अभी से यदि तीसरी योजना पर विचार करने लगे हों, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

पहली और दूसरी योजनाएं बनाते समय हमने एक बड़ी गलती यह की कि हमने उनके सैद्धान्तिक पहलू पर ही अधिक ध्यान दिया, व्यावहारिक पहलू पर नहीं। इसलिए अब तीसरी योजना तैयार करते समय हमें यह अवश्य ही ध्यान में रखना चाहिए कि वह व्यावहारिक हो। हम अपनी नीति को स्पष्ट रखें, केवल सिद्धांत या आदर्श के ही पीछे न भागें। इससे हमें ठीक तरह से मालूम हो सकेगा कि देश में क्या काम किए जा सकते हैं और क्या नहीं।

देश हाल ही में आजाद हुआ। इसलिए यह स्वाभाविक है कि उसकी सरकार और जनता तेजी से उन्नति करने की इच्छुक हो। वैसे भी यह देश काफी पिछड़ा हुआ था। अतः पहली और दूसरी योजनाएं बनाते समय हमने अधिक महत्वाकांक्षा से काम लिया, जैसे—राष्ट्रीय आय को २५ प्रतिशत बढ़ाना; ७०-८० लाख व्यक्तियों को रोजगार देने की व्यवस्था करना; इस्पात का उत्पादन ६० लाख टन तक बढ़ाना आदि।

साधन

परन्तु, ऐसी योजनाएं बनाते समय हमने यह नहीं देखा कि हमारे साधन क्या हैं। योजना बनाते समय यह अवश्य ही देख लेना चाहिए कि राष्ट्रीय आय में से कितनी पूंजी योजना में लगाई जा सकती है। यदि हम इस ओर ध्यान न देकर सिर्फ यही देखें कि देश की जरूरत पूरी करने के लिए कौन-सी योजनाएं चलानी चाहिएं, तो हम पूंजी के अभाव में उन योजनाओं को ठीक तरह से नहीं चला पाएंगे।

दूसरी योजना बनाते समय हमने इसका ठीक से अनुमान नहीं लगाया कि हमारे पास विदेशी मुद्रा प्राप्त करने के कितने साधन हैं, हम कितनी विदेशी मुद्रा कमा सकते हैं, और हमें कितनी विदेशी मुद्रा खर्च करनी चाहिए। यही कारण है कि हमें अब विदेशी मुद्रा की कठिनाई उठानी पड़ रही है।

इसी प्रकार हमने यह भी नहीं देखा कि हमारे पास क्या साधन हैं और उन्हीं सीमित साधनों से हम किस प्रकार अपनी जरूरतें पूरी कर सकते हैं। इसलिए बाद में हमें दिक्कत हुई और योजना का खर्च घटाकर ४२-४५ अरब करना पड़ा। इसमें से भी काफी बड़ी पूंजी विदेशों से ऋण और सहायता के रूप में मिली है।

विदेशी सहायता

देश में कितनी आय होगी और विदेशों से कितनी सहायता मिलेगी, इसका ठीक-ठीक अनुमान नहीं लगाया जा सकता; क्योंकि परिस्थितियों के अनुसार उसमें घट-बढ़ हो सकती है। परन्तु, फिर भी यदि हम प्रयत्न करें, तो हमारा अनुमान बहुत गलत भी नहीं होगा।

देश में कर, ऋण आदि से कितनी आय होगी, इसका अनुमान लगाया जा सकता है। साथ ही, बाहर के मित्र देशों और संस्थाओं से भी जानकारी हासिल की जा सकती है कि वे कितनी सहायता देंगे। तब इन्हीं साधनों के आधार पर हमें तीसरी योजना बनानी चाहिए।

इस तरह से योजना कुछ छोटी बनेगी, जिससे हो सकता है, कुछ हतोत्साहित हों, परन्तु योजना के बीच में कठिनाइयों के दलदल में फंस जाने के बजाय यह अच्छा है।

इससे एक लाभ और होगा। साधनों की सीमा के अन्दर ही योजना-कार्य चलने से बीच में कोई कठिनाई नहीं आएगी और सभी लक्ष्य पूरे किए जा सकेंगे। इससे आय बढ़ेगी और तब हम अपने लक्ष्य भी बढ़ा सकते हैं। इस प्रकार पहले योजना छोटी होगी, परन्तु व्यावहारिक होने के कारण उसे बाद में, आय बढ़ने के साथ-साथ बढ़ाया जा सकता है।

प्रत्येक कार्य का उपयोग हो

योजना बनाते समय यह भी ध्यान में रखा जाए कि जो भी काम हो उसका पूरा-पूरा उपयोग किया जाए।

दूसरी योजना में आर्थिक उन्नति की प्रबल इच्छा के कारण कुछ ऐसे काम शुरू किए गए, जिनसे तत्काल कोई लाभ नहीं हुआ। अनेक बहुमुखी योजनाएं चलाई गईं और उन पर करोड़ों रुपया खर्च किया गया। इनके अन्तर्गत नहरें बनाई गईं, परन्तु खेतों तक पानी पहुंचाने के लिए छोटी नहरों या कूलों का निर्माण नहीं हुआ। फलस्वरूप सिंचाई के लिए नहरों के पानी का पूरा उपयोग नहीं हो सका।

इसी प्रकार इस्पात-कारखानों पर जो पूंजी लगाई जा रही है, उसका भी तब तक लाभ नहीं होगा, जब तक इस्पात से मशीनी औजार आदि बनाने के कारखाने भी खड़े न किए जाएं।

हमारा देश गरीब है, इसलिए यहां की प्रत्येक योजना का जल्दी ही लाभ मिलना चाहिए, अन्यथा देश योजनाओं को आगे बढ़ाने में असमर्थ हो जाएगा।

तीसरी योजना में इस बात को ध्यान में रखना जरूरी है कि जितना इस्पात बने, सिंचाई

(शेष पृष्ठ २७ पर)

मालव भूमि का एक मनोरम स्थल: केदारेश्वर (सैलाना)

—श्री गोविन्दप्रसाद मिश्र

रतलाम से पश्चिम की ओर चलिये चाहे अपनी कार से या किराये की बस से, केवल १६ मील के बाद एक स्थल आता है, जहां बोर्ड लगा हुआ है, "केदारेश्वर"। कई यात्री तो जब यह बोर्ड नहीं लगा था तब आगे चले जाते या भटक जाते थे। कारण यह है कि यह स्थल दूर से दिखाई नहीं देता करीब ३००-४०० फुट नीचे विन्ध्याचल की एक पर्वत श्रेणी ने किला-सा निर्माण किया है और यही मनोरम स्थान बन गया है। मंदिर के ऊपर तक पक्की सड़क है।

दर्शनीय स्थल दो प्रकार के होते हैं। प्रकृति निर्मित और मानव निर्मित। जहां प्रकृति और मानव दोनों मिल जाते हैं और अपना-अपना पुरुषार्थ उस स्थल को प्रदान करने में जुट जाते हैं तो वह स्थान दर्शनीय, रमणीय, एवं मनोरम हो जाता है भारतवर्ष में प्राय· ऐसे स्थलों को किसी देवता की प्रतिमा से विभूषित कर देने की प्रथा सी चली आई है, हिमालय अमरकंटक, विन्ध्याचल, सहयाद्रि, सतपुड़ा पर्वत राशियों ने अच्छे-अच्छे नयनाभिराम स्थल प्रदान किए हैं। कुछ स्थल तीर्थ बन गए हैं। कुछ ऐतिहासिक महत्व लेकर जागृत हैं, कुछ मनुष्य की आवश्यकताओं की भूख मिटाते हैं इसलिए मानव वहां काम करता रहता है और उत्पादन वस्तुएं वहां से सर्व-साधारण को वितरित होती हैं, मिलती हैं। आज बीसवीं सदी में तीर्थ भी दो प्रकार के माने गए हैं। एक जहां आध्यात्मिक सुधा शान्त होती है, दूसरे वे तीर्थ हैं—माननीय नेहरूजी के शब्दों में जिनका नाम है—भाखरा, पेराम्बुलम, विशाखापट्टम, भिलाई, गांधी सागर-चम्बल बांध आदि।

प्रथम श्रेणी के तीर्थों का महत्व तब विदित होता है, जब तपस्वी वहां बैठकर मानव के अन्तर के लिए रत्नों को ढूंढ़कर साधना से उत्खनन करते हैं, वहां के जल और वायु दोनों शुद्ध हो जाते हैं, वहां पहुंचते ही हृदय प्रफुल्लित हो जाता है और भार से हल्का होकर यात्री महसूस करता है सुख, और आनन्द।

केदारेश्वर सैलाना तहसील के हेडक्वार्टर से लगभग तीन मील दक्षिण की ओर ऐसा ही मनोरम व दर्शनीय स्थल है। गत जनवरी में मुख्यमंत्री डॉ. काटजू ने जब वहां पदार्पण किया तो उनके मुख से प्रशांसात्मक शब्दनिकले। उन्होंने इस स्थल की मनोरमता एवं शांतिदायकता से प्रभावित होकर इसकी बड़ी सराहना की। इतिहास के भी पृष्ठ इस स्थल से जुड़े हुए हैं वह यह कि सैलाना राजधानी स्थापित करने की दृष्टि से सं. १७७३ में आए हुए राज्य के पूर्वज जयसिंहजी ने इस स्थान को भव्य पाकर महल बनवाने की इच्छा प्रकट की। स्वप्न हुआ 'यहां महल निर्माण करोगे, तो मैल से धुला हुआ जल हमारे मंदिर में आएगा अतः तुम आगे बढो,' वह आगे बढ़े, और तीन मील दूर सैलाना में महल बनाया वहीं सैलाना राज्य की राजधानी बनी।

अभी यह खोज अवशेष है कि केदारेश्वर की स्थापना कब हुई, किस ने की। यह तो निश्चित है किसी संत ने साधना की, तप किया और आध्यात्मिकता का विकास स्थल-पाकर शंकर (केदारेश्वर) को बिठा दिया।

कहा जाता है कि १०० वर्ष पूर्व सं. १९०० में स्व. महाराज दुलेसिंहजी यहां प्रकृति दत्त कुंड में एक बार स्नान को गए और स्नान करते हुए डूब गए। दो-चार क्षण जल में रहने के पश्चात् किसी त्रिशूलधारी ने उन्हें ऊपर ढकेल दिया बच गए। उसी दिवस से इस स्थल का भाग्य मनुष्य के हाथों पड़ गया और लगभग डेढ़ लाख रुपये की लागत से मंदिर, महल आदि बनकर नव निर्माण हुआ। प्रकृति की देन में चार चांद लग गए, वे वर्ष में लगभग चार-छः मास यहां

(शेष पृष्ठ २७ पर)

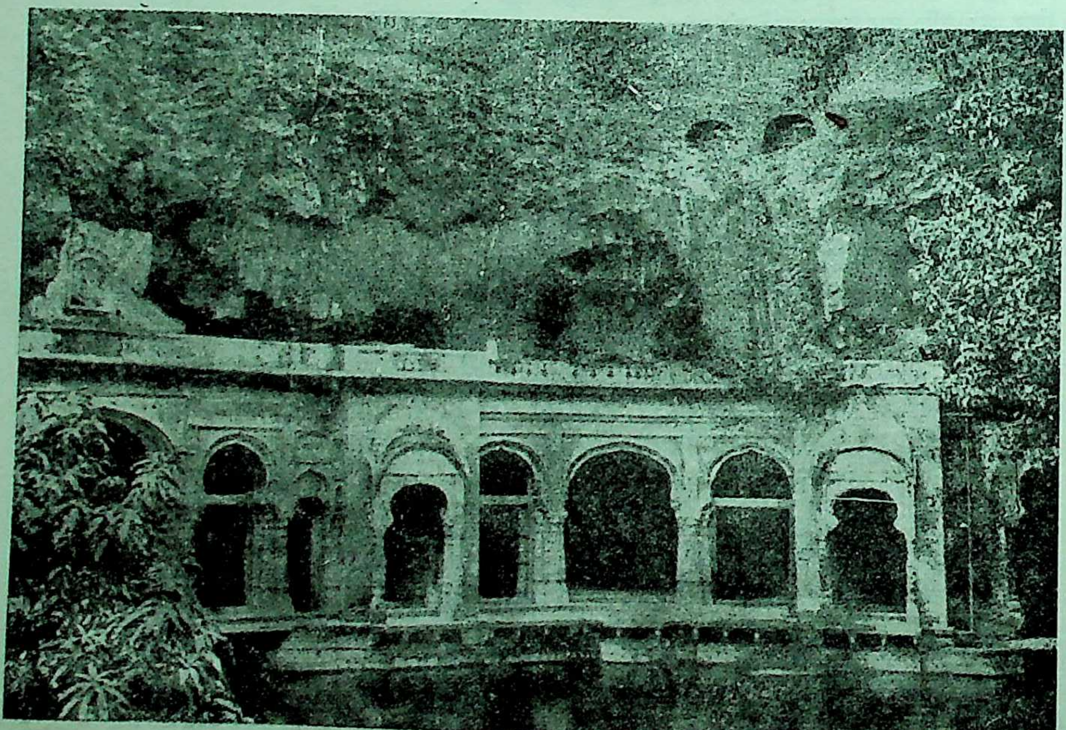

केदारेश्वर मंदिर का मनोरम दृश्य

गत १६ मई के अंक में पृष्ठ ७ पर प्रकाशित कविता के अंतिम से ऊपर वाले चरण में मुद्रण-त्रुटि के कारण 'अंधता' के स्थान पर 'अंजता' छप गया है। पाठक कृपया सुधार लें।

—सम्पादक

साहित्य, संस्कृति, कला, ज्ञान-विज्ञान आदि का विशेषांश

इसके संपादनपरामर्शदाता ~ श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द

विशेष कविता

अस्थि-पिंजर का तोता

श्री माखनलाल चतुर्वेदी

अब कि अस्थि-पिंजर का तोता बोल उठा,
बंदी रह, वाणी के बंधन खोल उठा !

किसने कहा कि इसने वैभव वार दिए,
आरोपों के बोझ अनंत उतार दिए !
जंतर-मंतर तज अंतर् का वासी है,
इसकी आंखें अनुहारों की प्यासी हैं ।

हरे रंग पर कितनी स्मृतियां धारे है,
तोता है, पर, पचा रहा अँगारे है ।
यह उड़ने की साधों का दीवाना है,
जालिम है, युग का आना-पहचाना है ।

हवा चलेगी, मरा पींजरा डोलेगा,
सुन पाओ तो, यह जीवित है, बोलेगा ।
कौन अँगुलियों से इस तरह टटोल उठा,
अब कि अस्थि-पिंजर का तोता बोल उठा !

विशेष लेख

(१)

कहावतें, कहावतें, और अधिक कहावतें!

—प्रा० राजनाथ पांडेय

संसार की समस्त भाषाओं में प्रत्येक लोकोक्ति, कहावत या मसल और मुहावरे का सदा एक सुनिश्चित, सुष्ठ और सहज संदेश तथा मंतव्य होता है। प्रत्येक कहावत की उत्पत्ति का प्रायः एक बड़ा मनोरंजक इतिहास भी होता है, जिसके मनन से उस भाषा की राष्ट्रीय वृत्तियों और उसके भाषियों की मानसिकता एवं बुद्धिमत्ता के क्रमिक विकास का पूर्ण परिचय प्राप्त हो सकता है। ऐतिहासिक और नैरुक्तिक प्रक्रिया से शब्दार्थों की परख और शब्दानुशासन की चिंतना वाणी और अर्थ के महार्णव से पार पाने में जितनी सहायिका होती है, उतना ही सहायक होता है भाषा के प्राणों की वास्तविक और उल्लासपूर्ण सराहना में मुहावरों की उत्पत्ति की रामकहानी का ज्ञान। "एक पंथ दो काज" और "एक ही गोली में दो शिकार" कहावतों का अभिप्राय भले ही एक ही हो, पर, प्रथम का प्रयोग करनेवाला यदि अहिंसक यात्री है, तो दूसरा है शिकारी या चिड़ीमार! इसी प्रकार "घर का जोगी जोगना, आन गाँव का सिद्ध" तथा "घर की मुर्गी साग बराबर" कहावतों में अर्थ साम्य भले ही हो, दोनों के मानसिक वातावरण में पर्याप्त अंतर है।

भारत का राष्ट्रीय उद्यम कृषि है। यही कारण है कि हिंदी की अधिक-संख्यक कहावतों और हमारे कवियों द्वारा काव्य में प्रयुक्त रूपकों का खेती से सीधा संबंध है। 'पद्मावत' काव्य में जायसी के "दीठि-दवंगरा मेरवहु एका", में दीठि-रूपी दवंगरा का, तथा "रेंगि चलीं जिमि बीर बहूटी" में पहली बरसात होते ही खेतों में रेंग चलनेवाली वीर-बहूटियों का (लाल-लाल नेत्रों से टूटे हुए रतनार आँसुओं के) रूपकार्थ प्रयोग, और "तपनि मृगसिरा जे सहहिं ते अदरा पलुहंत" वाली कहावत कृषक-जीवन ही से ली हुई हैं। वास्तव में जायसी-जैसा खेतिहर कवि, और घाघ-जैसा खेतिहर लोकोक्तिकार हिंदी में दूसरा है ही नहीं। तुलसीदास के 'मानस' में भी "कृषी निरावहिं चतुर किसाना", "ऊसर बरसै त्रिन नहिं जामा", "का बरखा जब कृषी सुखाने?" आदि अनेक कृषि-कर्म से संबंधित कहावतें भरी पड़ी हैं। "कहैं खेत की, सुनैं खलिहान की", "गाँव में घर न सीवान में खेती", "जैसा बुवै सो तैसा लुनै" आदि अनेकानेक कहावतें स्पष्ट विज्ञापित कर रही हैं कि कृषि ही इस देश का राष्ट्रीय व्यवसाय, उद्यम या पुरुषार्थ रहा है और आज भी है। अतः, यह निर्विवाद हुआ कि प्रत्येक देश की राष्ट्रीय वृत्ति और आत्मा का सच्चा परिचय वहाँ की लोकोक्तियों (जनोक्तियों या कहावतों) तथा प्रयोगों (मुहावरों) और काव्य में प्रयुक्त उपमाओं और रूपकों से प्राप्त होता है। जिन्होंने अँगरेजी भाषा का अध्ययन किया है, उन्हें यह स्वीकार होगा कि इस भाषा में समुद्र, नौका और नाविकों से संबंधित रूपक और मुहावरे बहुत अधिक हैं। उदाहरणार्थः—"राजकाज" को अँगरेजी में "शिप ऑफ स्टेट" (राज्य का जहाज) कहते हैं। राज-काज के संचालक "पाइलेट" (नाव का पथ-प्रदर्शक) कहे जाते हैं; और संसदों या परिषदों की वह समिति जो मंतव्य के अनुरूप प्रस्तावना-कार्य करती है "स्टिअरिंग कमेटी" (नाव खेनेवाली समिति) कहलाती है। जब आदमी बहुतेरी उलझनों के कारण किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है, तब उसके संबंध में "ऑल ऐट सी" (सब कुछ समुद्र में) मुहावरा प्रयुक्त होता है। अँगरेजी में "पोर्ट" बंदरगाह होता है और जहाज का निश्चित समय पर बंदरगाह में पहुंचना "अपौरचून" (Opportune) और न पहुँचना "इन-अपौरचून" (In-opportune) माना जाता था। किंतु, अँगरेजी में न जाने कब से इन शब्दों का अर्थ अनुकूल या प्रतिकूल अवसर ही माना जा रहा है।

कितनी ही कहावतें एक गाँव या कस्बे में सीमित मान्यता पाकर ही रह जाती हैं और धीरे-धीरे अपने स्थानीय महत्त्व को खोकर कालांतर में मृत भी हो जाती हैं। ऐसी एक कहावत इस समय हमें याद आ रही है। बाल्यावस्था में हम एक कहावत "भरी बारी जस कै तस!" उसी अर्थ में सुना करते थे, जिस अर्थ में "सावन हरे न भादों सूखे", या "दीवा का दीवा भर" कहावतें शायद अन्य लोगों ने भी सुनी हों। हमारे गाँव के पास ही "भरी बारी" नाम की एक गड़ही थी, जो साल-भर सूखी ही रहती थी। बात यह थी कि बरसात में पानी बरसते ही वह फौरन् लबालब भर जाती, क्योंकि गांव-भर का पानी वहीं एकत्र होता था। किंतु, उसके तीन तरफ निचले खेत थे। जो उस बारी का पानी भीतर-भीतर रिसता था और दो-चार दिनों ही में खेतों में पहुँच जाता। इस तरह वह बारी बेचारी भरी बरसात ही में रिक्त हो-होकर ज्यों की त्यों (जस कै तस) बनी रहती थी। समय पाकर वह गड़ही पटती गई, और आज वह एक खेत है। पुराने लोगों में से बचे-खुचे एकाध लोगों के मुंह से यह कहावत कभी सुनी जाती है, पर, बहुत कम। इसके विपरीत कितनी ही ऐसी कहावतें हैं, जो एक देश, राष्ट्र या काल तक ही सीमित न रहकर, जरा रूप बदल-बदलाकर अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व प्राप्त करती हैं। उदाहरणार्थ हमारी हिंदी की कहावत "दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंककर पीता है", फारसी की "साँप की काटी बिल्ली, रस्सी से भी डरती है", और फरासीसी भाषा की कहावत "गर्म पानी से झुलसी बिल्ली ठंडे पानी से भी बिदकती है!" मूलतः एक ही हैं। एक और उदाहरण लें। "चंद दूबरो कूबरो, तऊ नवत दोनों बाढ़ि" तथा "टुटहा[1] हाथी तौ नौ मन"

---

[1] टुटहा = टूटा हुआ यानी दुर्बल या हलका (बुंदेलखंडी) या झीना = पतला (संस्कृत क्षीण से, भोजपुरी)।

ही कहावतें समानार्थी हैं। तनिक-सा भिन्न रंग लेकर यही कहावत फारसी में भी मौजूद है :—

अस्प[2]·ताजी[3] अगरच लाग़र[4] बूद ।
हमचुना अज़ तबेलये ख़र बेह ॥

[ताजी घोड़ा भले ही लागर हो जाय, तबेले के गदहे से फिर भी बेहतर ही रहता है !]

और कभी-कभी एक ही समय एक ही भूमि-भाग में बोलनेवालों की सामाजिक-भिन्नस्तरता के कारण एक ही अर्थ देनेवाली अनेक कहावतों का प्रचलन मिलता है। "ऊँचो दुकान को फीको पकवान", "नाम बड़ेला दरसन थोड़ा", "कहावै को रानी चोरावै को चमरख", "नाम दुलहिनिया गाल खंधक", "कहावै के बाबा और पेट गिरस्तऊ" इत्यादि कहावतें इस बात के उदाहरण में प्रस्तुत की जा सकती हैं।

(२)

एक ही भाषा-भाषियों के बीच एक ही अर्थ देनेवाली चार-चार या पाँच-पाँच कहावतों का एक ही समय में प्रचलन देखकर दो बातें मुख्य रूप से ध्यान में आती हैं। प्रथम तो यह कि यदि हिंदी भाषा-भाषी समस्त जनपदों की बोलियों की लोकोक्तियों का संकलन किया जा सके, तो नाटक, उपन्यास तथा कविता-कहानी आदि के साहित्य ही के समान कहावतों का भी एक बड़ा महत्त्वशाली साहित्य-महावरोह[5] ऊर्जस्वित हो सकता है। हम यह मानते हैं कि कहावतों के संकलन का कार्य इधर पिछले कुछ दिनों हुआ है, और होता जा रहा है। यहाँ हमारा जिस ढंग के कार्य की ओर संकेत है, वह काफी आगे का कदम है। हम चाहते हैं कि हिंदी की समस्त बोलियों की कहावतों ही का नहीं, भारत की समस्त प्रादेशिक भाषाओं की कहावतों का भी संग्रह हो और जहाँ तक हो सके, प्रत्येक कहावत की जन्म-कहानी का भी पता लगाया जाय, जिसके तुलनात्मक अनुशीलन द्वारा कहावतों के वर्गीकरण की प्रक्रिया में ज्ञान और गवेषणा की एक नितांत नवीन विद्या—"तुलनात्मक-लोकोक्ति-विज्ञान"—की उसी प्रकार स्थापना हो, जिस प्रकार संस्कृत-साहित्य के संपर्क में आने पर योरपीय विद्वानों द्वारा "तुलनात्मक-भाषा-विज्ञान" (Comparative Philology) तथा "तुलनात्मक पौराणिक-कथा-विज्ञान" (Comparative Mythology) जैसे चिंतन के नितांत मौलिक और स्वतंत्र विषयों की प्रतिष्ठा हुई थी। हमारा विश्वास है कि जिस प्रकार तुलनात्मक-भाषा-विज्ञान और तुलनात्मक-पौराणिक-कथा-विज्ञान ने भारतीय भाषाओं और विभिन्न योरपीय भाषाओं में शब्दों और पौराणिक कथाओं की अपार समानता दिखलाकर इनकी संस्कृति की मौलिक एकता सिद्ध की थी, उसी प्रकार लोकोक्तियों के तुलनात्मक अध्ययन से प्रकाश पाकर साहित्य और संस्कृति के कई कोनों का अँधेरा दूर हो सकेगा। एक-दो कहावतों की जन्म-कहानी और एक कहावत का तुलनात्मक-अनुशीलन हम आगे उपस्थित करेंगे, जिससे यह सारी बातें एकदम स्पष्ट हो जायँगी।

इन दिनों हमारे कुछ विश्वविद्यालयों में, ज्ञान के विभिन्न विभागों में, विशेषतः हिंदी साहित्य में, एक ही विषय या व्यक्ति (लेखक) को लेकर, प्रायः एक ही बात को घोल-मथकर दर्जनों "डफलियों" (या "डाफिलों")[6] के निर्माण का उपक्रम किया जा रहा है। उदाहरण के तौर पर, हमारा अनुमान है कि, एक "प्रसाद" ही की माला जपकर निम्नांकित तेरह नौकाओं द्वारा तेरह अपरिष्कृत "फिसड्डी" परिष्कृत "पी एच डी" बनकर अपने-अपने घाट लग सकते हैं:—

(१) कामायनी का काव्य सौंदर्य; (२) महाकाव्यकार प्रसाद : एक अध्ययन; (३) कामायनी का विवेचनात्मक अनुशीलन; (४) मुक्तक-कवि प्रसाद : एक अध्ययन; (५) कामायनी काव्य के मूल स्रोतों का ऐतिहासिक और तुलनात्मक विवेचन; (६) प्रसाद की कहानियों का विश्लेषणात्मक अनुशीलन; (७) प्रसाद-पूर्व हिन्दी-कहानी; (८) कथाकार प्रसाद : उनके आदर्श और यथार्थ पक्षों का विश्लेषणात्मक अन्वेषण; (९) प्रसाद के नाटकों का राजनीतिक और ऐतिहासिक विश्लेषण; (१०) प्रसाद-साहित्य की नारियाँ; (११) प्रसाद-पूर्व हिंदी-नाटक; (१२) बीसवीं शताब्दी के अग्रणी साहित्य-स्रष्टा जयशंकरप्रसाद तथा (१३) महामानव और मानव प्रसाद तथा उनकी मित्र-मंडली।[7]

हमारे कहने का मतलब यह कदापि नहीं है कि इस प्रकार की खोजों और शोध-प्रबंधों का महत्त्व कम है या इन कार्यों में जो प्रचुर राष्ट्रीय धन और शक्ति लगती है, वह सब व्यर्थ जा रही है। हमारा नम्र निवेदन केवल इतना ही है कि तुलनात्मक लोकोक्ति-विज्ञान भी गंभीर अनुशीलन और शोध के योग्य ज्ञान की एक शाखा मानी जाय, और इसकी उचित प्रतिष्ठा करने की ओर विश्वविद्यालयों आदि का ध्यान आकृष्ट हो।

एक ही भाषा-भाषियों के बीच एक ही अर्थ देनेवाली कई कहावतों का एक ही समय प्रचलन देखकर जो दूसरी मुख्य बात स्पष्ट रूप से ध्यान में आती है, वह यह है कि मानव की सचेतन वाणी उसकी दीर्घकालीन जीवंत अनुभूतियों को लेकर तीव्रतम व्यंजना के साथ कहावतों ही के आकार में मुखर हुई है। यही कारण है कि बहुत दिनों तक ठेठ गाँवों में बसनेवाले लोगों को निरक्षर रहते हुए भी देश-काल और जीवन-व्यापार की जो कुछ शिक्षा प्राप्त होती थी, वह बड़े-बूढ़ों के मुंह सुनी हुई कहावतों द्वारा ही। उस समय कहाँ इतने स्कूल थे और कौन इतनी पुस्तकें थीं। अपने सामाजिक स्तर में जीवन के प्रायः प्रत्येक पक्ष से संबंध रखनेवाली प्रत्यक्ष अनुभूतिमय ज्ञान से परिपूर्ण कहावतें गाँव के लोगों में एक व्यक्तित्व और निश्चित चरित्र की प्रतिष्ठा करती थीं। इन्हीं से उन्हें किसी हद तक कृषि, वाणिज्य, लोक-व्यवहार

(शेष पृष्ठ ११ पर)

---

[2] फारसी अस्प = संस्कृत अश्व।

[3] ताजी = ताज़किस्तान देश का प्रसिद्ध घोड़ा। वहां के कुत्ते भी प्रसिद्ध हैं।

[4] संस्कृत "लगुड" और फारसी "लागर" (= दुर्बल) एक ही हैं। लकुटी (= पतली छड़ी) संस्कृत लगुड ही का ब्रजभाषा में अपभ्रंश है।

[5] महावरोह = महान्, ऊँचा, वट-वृक्ष।

[6] "स्वर-विपर्यय" की प्रक्रिया से "डिफिल" से "डफली" शब्द बन सकता है। हो सकता है कि हमारी "डफली" ही से "ड़िफिल" पैदा हुआ हो। "डिफिल" की "डफली" है या "डफली" का "डिफिल" इसका निर्णयात्मक उत्तर भाषा-विज्ञानी ही दे सकता है।

[7] हमारे इस लेख को, छपने के पूर्व, सुननेवाले एक मित्र ने एक चौदहवीं "डी. फिल. का विषय इस प्रकार प्रस्तावित किया है :— प्रसाद की मसककुटी, तिरस्करिणी एवं आपाद-मस्तक समस्त परिच्छद तथा परिधान।

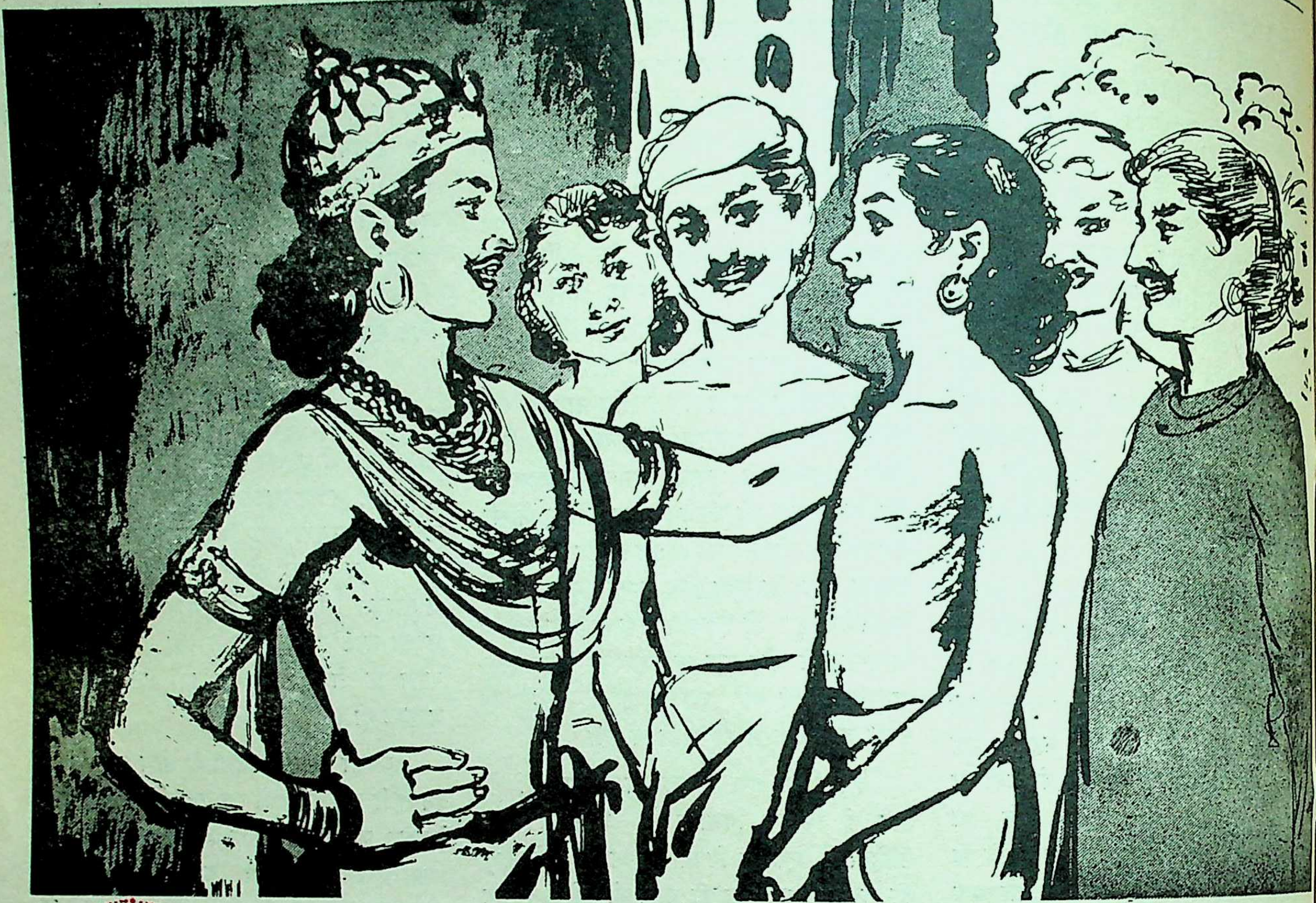

विशेष कहानी

पहले बाहर, फिर भीतर

—श्री रावी

एक राजा को एक बार अपने महलों में सौ नए सेवक नियुक्त करने की आवश्यकता हुई। राजा ने सारे राज्य में इस आवश्यकता का विज्ञापन करा दिया और यह भी स्पष्ट कर दिया कि प्रार्थियों में किस प्रकार की योग्यताएँ होनी चाहिए।

निश्चित दिन सुबह ही से राजमहल के द्वार पर दस सहस्र प्रार्थियों की भीड़ एकत्र हो गई। राजमहल के सेवकों का असाधारण वेतन भी तो अत्यधिक आकर्षक था !

प्रार्थियों के निरीक्षण का पूर्व-निश्चित समय आया और महल के भीतर से निकलकर एक राज-पुरुष ने सूचना दी कि अभी निरीक्षण-अधिकारी के आने में कुछ विलंब है।

दो घंटे बाद वही राज-पुरुष फिर बाहर आया और उसने प्रतीक्षा करती हुई भीड़ को सूचना दी कि निरीक्षण-अधिकारी के आने में अभी कुछ और विलंब है।

इस पर एक सहस्र प्रार्थी असंतुष्ट होकर अपने घरों को लौट गए।

दो घंटे बाद फिर उसी राजपुरुष ने आकर वैसी ही बात कही, और उससे खीझकर दो सहस्र प्रार्थी और लौट गए।

दो-दो घंटे बाद उस राज-पुरुष द्वारा उसी सूचना की पुनरावृत्ति होती रही और सूर्यास्त के पश्चात् राजमहल के द्वार पर केवल सौ प्रार्थी शेष रह गए। अपनी इस संख्या को देखते हुए संभवतः इनमें से प्रत्येक को अब आशा हो गई थी कि वह राजसेवा में अवश्य ही ले लिया जायगा। किंतु, रात के दो पहर बीतते-बीतते इन्हें भी नींद आने लगी। दिन-भर के भूखे और थके-
ये प्रार्थी महल के द्वार की भूमि पर लेट
विश्राम करने लगे और इनकी
लग गई।

ग्रीष्म ऋतु थी और यह देश धरती का
अधिक गरम देश था। महल के द्वार पर
पत्रों वाले वृक्षों की अपर्याप्त छाया में बैठे
इन्होंने दिन भर का आतप सहन किया था
इस आधी रात के समय भी गरमी की
वायुहीन वातावरण का सहयोग पाकर

सोए हुए शरीरों को पसीने से लथपथ करके उन्हें • बेचैन कर रही थी।

इन सौ में से निन्नानवे व्यक्ति धरती पर पड़े सोए हुए थे और केवल एक अब भी जागता हुआ उनके मुखों पर अपने हाथ के पंखे की हवा झलंता हुआ उन्हें कुछ सुख पहुँचाने का प्रयत्न कर रहा था। यह व्यक्ति प्रातःकाल ही से अपनी शक्ति-भर महल के द्वार पर एकत्र जन-समुदाय की जल और वायु से सेवा करने में संलग्न था।

रात के तीसरे पहर महल का द्वार एक बार और खुला और महाराज स्वयं उसमें से बाहर निकलकर आए। महाराज के साथ पीछे-पीछे आए हुए सेवकों ने सभी सोए हुए व्यक्तियों को जगाकर भोजन, जल और शीतल वायु से उनका सत्कार किया और तत्पश्चात् उन्हें अपने-अपने घर को विदा करते हुए सबकी निस्स्वार्थ सेवा में अब तक जुटे हुए इस एक व्यक्ति का हाथ पकड़कर महाराज ने उन सबके सामने कहा :—

"जो महल के द्वार पर सेवा करता है, केवल वही महल के भीतर भी सेवा करने का अधिकार अपने सामर्थ्य से अर्जित कर लेता है। इस व्यक्ति ने एक दिन-रात का वेतन महल के बाहर ही रहकर उपार्जित कर लिया है और इस बार के प्रार्थियों में से केवल यही मेरी अभीष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है।"

× × ×

मेरे कथागुरु का कहना है कि उस राजा के लिए आवश्यक सौ सेवकों की भर्ती का क्रम अब भी बराबर चल रहा है, उसकी चतुर्थांश पूर्ति भी अभी तक नहीं हो पाई है और इस कथा के प्रत्येक पाठक के लिए उस परम संमानित राज-सेवा में प्रविष्ट होने का अवसर आज भी खुला हुआ है, जिसकी प्रारंभिक कसौटी अथक एवं निस्स्वार्थ जनसेवा है।

कहावतें, कहावतें और अधिक कहावतें

(पृष्ठ ९ का शेष)

आदि जीवन के सभी पक्षों की उपयुक्त जानकारी प्राप्त होती थी। विशेष परिस्थितियों के आग्रह से बड़े-बूढ़ों के हृदय की गहराई से निकली हुई गूढ़ भावनाओं को व्यक्त करनेवाली जो अनेक कहावतें हम सुना करते थे, हमारे गाँव के लोग जो किसी स्कूल में किताबें न पढ़कर ग्राम्य-जीवन-रूपी पाठशाला ही में से कढ़े हैं, आज भी इन्हीं कहावतों को अपने ज्ञान की थाती बनाए हुए हैं। उनमें से कुछ हमें भी अब तक याद हैं, जैसे:—१. सोना परखे घड़ी-वड़ी, आदमी परखे एक घड़ी; २. आपत-काल परखिये चारी। धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी; ३. पछिली बुद्धि गँवारन की; ४. डाटे नवै सो नीच; ५. सच्ची मार कबीर की चित तें दिया उतार; ६. भले घोड़ को एक ही चाबुक, भले आदमी को एक ही बात; ७. रहेंगे शान से, जायँगे जान से; ८. की हंसा मोती चुगै, की लंघन करि जाय; ९. माँगन भलो न बाप सों, जो बिधि राखै टेक, इत्यादि इत्यादि। सच तो यह है कि किसी भी जनपद के निवासियों की सांस्कृतिक और चारित्रिक वास्तविकता का जितना पता अर्थ-शास्त्रीय आँकड़ों और नृशास्त्रीय प्रयोगों से लग सकता है, उससे कहीं अधिक सटीक जानकारी उनकी मानसिकता की संपूर्ण इमारत की आधार-शिला बनी हुई इन कहावतों के अनुशीलन से प्राप्त होती है।

कहावतों के बूते अभिव्यंजना में, विशेषतः हास-परिहास के प्रसंगों और नोंक-झोंकों में, विशेष तेजी और तीखापन आता है। एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा। अभी हाल ही में एक लेखक और संपादक में एक बड़ी मजेदार नोंक-झोंक हो गई। सन् १९२९ में मिस मेयो नाम की एक अमरीकी महिला ने "मदर इंडिया" नाम की एक कुख्यात पुस्तक लिखी थी। उसके जवाब में लाहौर के सुप्रसिद्ध बैरिस्टर के. एल. गौबा (तब के कन्हैयालाल और आज के खालिदुल्लतीफ ने "अंकिल सैम" नाम की एक पुस्तक लिखी और उसका 'समर्पण' मिस मेयो को निम्न शब्दों में किया—

"ड्रेन इन्स्पेक्टर मिस मेयो को दूसरे ड्रेन इन्स्पेक्टर की ओर से!"

लेखक और संपादक की जिस नोंक-झोंक ने इतनी पुरानी बात की याद दिलाई है, वह काफी मनोरंजक और अर्थ-पूर्ण है। एक बार एक संपादक ने 'लाट' और 'चाट' की तुक मिलाकर, एक लेखक को बिना 'घाट' वाला बतलाकर उसे प्रसिद्ध कहावत "न घर का न घाट का" की याद दिलाते हुए एक इशारा किया। लेखक ने उत्तर में तुरंत ही उस संपादक को "तीन गुर्राऊ" वर्गों वाली मशहूर कहावत—"बामन, कूकर, नाऊ, जात देख गुर्राऊ" की याद दिलाते हुए प्रस्ताव किया कि यह कहावत अब काफी पुरानी पड़ गई है, अतः, युग की प्रगतिशीलता को ध्यान में रखकर इन तीन के साथ लेखक और संपादक को जोड़कर अब पाँच गुर्राओं की चर्चा होनी चाहिए, क्योंकि लेखक और संपादक का भी एक ही वर्ग है। अतः, इनमें से अगर पहला इन तीनों गुर्राउओं में से कोई एक है, तो दूसरा भी वही है। यह बात अलग है कि पहला गुर्राऊ "असील" (यानी नसल से 'पेडिग्री' वाला) होने के कारण वफादार हो, और दूसरा "कम असील" (यानी सड़क का गुर्राऊ) होने के कारण दगाबाज हो, क्योंकि यह मसल भी मशहूर है कि :—

असल से दगा नहीं।
कम असल से वफा नहीं॥

इस प्रकार इन कहावतों, मसलों, मुहावरों आदि का मर्म अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है।

(३)

सफल न हो सकनेवाली महत्त्वाकांक्षा रखनेवालों के संबंध में आसमानी महल तैयार करने" अथवा "हवा-महल खड़ा करने" की मिसाल तो सुनी ही जाती थी, अब तो इधर कुछ दिनों से "निर्माण गगन प्रासादों का" भी सुनाई देने लगा है! वास्तव में इसी अर्थ में "आकाश के सितारे लाना" या "आकाश-कुसुम तोड़ लाना" अधिक सरल, सार्थक और स्वदेशी जान पड़ता है। "आसमानी महल तैयार करना", या "हवा-महल खड़ा करना" अँगरेजी की प्रसिद्ध कहावत "बिल्डिंग कासेल्स इन दी एअर!" (बनाना महलों का हवा में) ही का रूपांतर है। और यह अँगरेजी वाली कहावत, फरासीसी "फेयर दे शात्तो आँनेस्पान्ये" (बनाना महलों का स्पेन में) कहावत ही से उत्पन्न हुई है। इस कहावत के प्रचलित होने की कहानी बड़ी मनोरंजक है।

कहते हैं कि एक बार फ्रांस के प्रसिद्ध जनपद "बरगंदी" के ड्यूक हेनरी ने सन् १०६५ ई० में अपने सैनिकों को लेकर "कौस्तेल" (स्पेन की

पुरानी रियासत) के चौथे अलफोन्सो (शासन-काल १०६५ ई० से ११०९ ई०) की एक युद्ध में सहायता की थी, जिसके उपहार-स्वरूप विजय प्राप्त होने पर अलफोन्सो ने हेनरी को "लुसितानिया" का इलाका जागीर में दे दिया। हेनरी ने यहाँ अपने कई महल बनवाए। फिर कुछ समय बाद "लुसितानिया" का इलाका पुर्तगाल-राज्य में चला गया और हेनरी के सारे महल उसके हाथों से निकल गए! "लुसितानिया" ही का कुछ भाग आधुनिक "ऐन्दालुसिया" में लगता है। हेनरी के उस पराभव से स्पेन में महल बनाना आसमान या हवा में महल बनाने के प्रयास या कल्पना के समान उपहासास्पद और अस्तित्व-विहीन माना जाने लगा था और धीरे-धीरे इस उक्ति ने "फेयर दे शात्तो आँने स्पान्ये" कहावत ही का आकार ग्रहण कर लिया।

एक देशी कहावत की रामकहानी भी सुनी जाय। किसी अच्छे काम में जब कोई आड़े आता है और काम बिगड़ जाता है, तब ऐसे अवसर पर काम बिगाड़नेवाले का "लालू जगदल" बनना या होना माना जाता है। कहते हैं "अमुक बड़े आए हैं लालू-जगदल बनने" अथवा "अमुक लालू-जगदल बन रहे हैं।" कहा जाता है कि एक बार सम्राट् अकबर ने सती-प्रथा का अंत करने के लिए अपने मंत्रियों से सलाह ली, तो उनके मंत्रियों ने निवेदन किया कि अगर विधवा-विवाह जारी किया जा सके, तो सती-प्रथा का अपने आप अंत हो जायगा। सलाह वाजिब थी, अतः, सम्राट् को एकदम जँच गई और यह तय पाया कि विधवा-विवाह का प्रचलन हो। शाहंशाह ने विधवा-विवाह के लिए हर प्रकार से मदद देने की घोषणा कराने की आज्ञा भी दे दी। उस समय लालू और जगदल नाम के जुड़वां भाई बहुत चतुर, चाक-चौबंदे, धनी-मानी और हिंदू-समाज में अत्यंत प्रभावशाली दिल्ली के सबसे बड़े दलाल थे। सम्राट् से यह कहा गया कि यदि लालू-जगदल चाहें, तो विधवा-विवाह जारी हो सकता है। अतः, लालू-जगदल दरबार में बुलाए गए।

दरबार में पहुंचकर भैया लालू-जगदल ने शिर नवाकर शाहंशाह जलालमुद्दीन अकबर दिलीश्वरो व जगदीश्वरो वा" का प्रस्ताव सुना और फिर निवेदन किया कि वे दोनों भाई विधवा-विवाह जारी कराकर ही दम लेंगे। उन्हें दरबार से रुखसत होने की इजाजत देने के पहले सम्राट् ने जानना चाहा कि वे यह महत्त्व-पूर्ण कार्य आरंभ कब से करेंगे? दोनों भाइयों ने तब बड़ी विनम्रता से कहा—"जहाँपनाह! अपनी माताजी की इजाजत लिए बिना हम लोग कोई नया काम शुरू नहीं करते। बस अम्माजी की इजाजत लेकर इंशाअल्लाह हफ्ते-दो-हफ्ते के अंदर इस अम्र को अंजाम देकर हम दोनों भाई आलीजाह की कदमबोसी के लिए हाजिर होंगे।" सम्राट् ने बड़ी खुशी से उन्हें रुखसत किया। लेकिन, पूरे दो महीने गुजर गए और लालू-जगदल ने फिर लौट कर न झाँका। एक दिन बादशाह को याद हो आई और तब दोनों भाई दरबार में हाजिर किए गए। बादशाह के पूछने पर कि माँ की इजाजत मिल गई होगी, बड़े लल्लू ने निहायत अदब से कहा, "आलीजाह! काम पूरा हो गया। क्योंकि, हमारी अम्माजी जो अस्सी बरस की बुढ़िया हैं और पिछले पचास साल से विधवा हैं, यह सुनते ही कि जहाँपनाह विधवाओं का ब्याह रचा रहे हैं एक दम निहाल हो गईं। उन्होंने अपनी इजाजत ही नहीं दी है, बल्कि जहांपनाह से यह अर्ज करने के लिए हमें भेजा है कि दिल्ली में सबसे पहला विधवा-विवाह वह खुद अपना चाहती हैं। इसलिए, अगर अस्सी साल का मिले तो एक, चालीस-चालीस के मिलें तो दो, और बीस-बीस के मिलें तो चार दूल्हे उनके लिए जहांपनाह तलाश करा लें।"

सुना जाता है कि लल्लूभाई की यह बात खतम होते ही शाहंशाह अकबर की भवें गुस्से के मारे तन गईं और 'लालू भाई जगदलभाई ऐ कंपनी" को तत्काल दरबार से निकालबाहर कर देने का संकेत करके सम्राट् एकाएक सिंहास से उठकर खड़े हो गए! दरबार बरखास्त हो गया।

हमने सुना है कि अभी हाल ही में अकबर-कालीन मुगल-इतिहास के एक विशेष खोजी ने बहुत श्रम से शोध करके अपने प्रस्तावित पी. एच. डी. प्रबंध में जिन कई मौलिक तथ्यों का उल्लेख किया है, उनमें से एक उस दिन सम्राट् अकबर के सिंहासन से उठकर जानेवाली घटना से भी संबंधित है। उनका कहना है कि उस दिन सिंहासन से उठकर दीवानखाना जाने के लिए पीठ फेरते ही सम्राट् को अपनी हँसी दबाने के लिए मुंह पर बड़ी देर तक अपना दुपट्टा रखना पड़ता था, फिर भी हँसी का इतना प्रबल वेग था कि कई बार नीचे से ऊपर तक वह हिल-हिल गए थे। और उधर दरबार खास में अपनी-अपनी जगह खड़े दरबारीगण अपना अट्टहास न रोक सकने के कारण दुपट्टे से अपना मुंह कसकर दबा रखने के कारण एक दूसरे की तरफ देख-देखकर हँसी के मारे झुक-झुककर धनुही हुए जा रहे थे। उनकी दूसरी मौलिक खोज यह सुनी जाती है कि बादशाह के एकाएक सिंहासन से उठकर जाने का कारण यह था कि वह यह बात जनानखाने में पहुँचकर अपनी बेगमों को सुनाने के लिए बेताब हो रहे थे। पी. एच. डी. पिपासित इन इतिहास-पंडित का कहना है कि अकबरी दरबार के तत्कालीन श्रेष्ठ (तथाकथित नहीं वास्तविक) चित्रकार बसावन ने इस प्रसंग को लेकर एक बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया था, जिसकी प्रतिलिपि अपने शोध-प्रबंध में वह देना चाहते हैं। वह चित्र नवाब बहावलपुर की चित्रशाला में है। यह पता भी वह लगा चुके हैं और उक्त चित्र की प्रतिलिपि तैयार कराने के लिए बहावलपुर की यात्रा के "परमिट" की दरख्वास्त वह पाकिस्तान-सरकार को देना चाहते हैं।

पौराणिक घटनाओं का काल-निर्णय

—श्री चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र

पुराणों के विषय में हमारे देश में दो प्रकार की धारणाएं हैं। एक वर्ग आधुनिक शिक्षित लोगों का है, जो प्रायः इन्हें निरे गपोड़े समझता है और उनकी सर्वथा उपेक्षा करके चलता है। दूसरा वर्ग धार्मिक भावाभिभूत प्राचीन परंपरावादियों का है, जो पुराणों में लिखित प्रत्येक बात पर आंख मूंदकर विश्वास करता है। परिणामस्वरूप इस देश में पुराणों के तर्कपूर्ण अध्ययन की ओर किसी का ध्यान ही नहीं जाता। हम यह स्वीकार करते हैं कि पुराणों में बहुत-सा अंश ऐसा है, जिसे तर्क की कसौटी पर कसने का प्रयत्न करना समय और शक्ति नष्ट करना प्रतीत होता है। परंतु, यह बात संसार के सभी देशों के प्राचीन साहित्य पर समान रूप से लागू होती है। बेबीलोनिया, मिस्र, यूनान और ईरान के पौराणिक उपाख्यान भी कम बेतुके और अस्वाभाविक नहीं प्रतीत होते। फिर भी, विद्वानों को उनकी गहरी छानबीन और अनुसंधान के सहारे उन देशों का प्राचीन इतिहास प्रस्तुत करने में सफलता मिली है। यह बड़े दुःख की बात है कि हमारे देश के विद्वानों ने अभी तक इस ओर जितना चाहिए, उतना ध्यान नहीं दिया है।

पुराण ग्रंथों का महत्व योरोप के प्रसिद्ध विद्वानों को भी स्वीकार करना पड़ा है। प्राचीन इतिहास के पंडित S. G. W. Benjamin ने Story of Persia में लिखा है :—

"It is a custom to assume that legend means fiction, but historians are now beginning to perceive that the legends of a nation are often not only more interesting and poetic than what is called its authentic history, but that they really suggest actual facts."

संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् Shri Winternitz ने साहित्य के इतिहास में लिखा है:—

"The Puranas are valuable to the Historian by reason of their geneologies even though they can only be used with great caution and careful discrimination."

भारत के प्राचीन इतिहास के धुरंधर विद्वान् श्री हेमचन्द्र राय चौधरी ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ Political History of Ancient India में एक स्थान पर लिखा है:—

"It can not be denied that Epics and Puranas in their present shape contain a good deal of what is untrust-worthy, but it has been rightly said that, it is absurd to suppose that fiction completely ousted the truth."

पुराणों के अध्ययन की ओर योरोपवासियों का ध्यान पिछली शताब्दी में गया था। भारतीय पुराणों का तर्कपूर्ण अध्ययन करनेवाले प्रथम योरोपीय श्री पार्जिटर ने Historical Tradition in Ancient India नामक पुस्तक लिखकर संसार के विद्वानों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया था। यद्यपि भारतीय विद्वानों ने बाद में श्री पार्जिटर की बहुत-सी स्थापनाओं को अमान्य किया, परंतु उनके अथक परिश्रम और लगन की सभी को सराहना करना पड़ी है। इस बात से सचमुच इन्कार नहीं किया जा सकता कि पार्जिटर ने पुराणों के अध्ययन की एक पद्धति अगली पीढ़ी को दी। इसके पश्चात् श्री जायसवाल, डॉ. सीतानाथ प्रधान तथा श्री हेमचन्द्र राय चौधरी के लिखे खोजपूर्ण ग्रंथ प्रकाश में आए। इसी समय स्व. लोकमान्य तिलक का ध्यान भी इस महत्वपूर्ण विषय की ओर गया और उन्होंने पुस्तकों और लेखों द्वारा अनेक बातों पर अपना मत प्रगट किया था। आज के विद्यार्थी को इस समस्त सामग्री को आधार बनाकर अपना अध्ययन आगे बढ़ाना है।

काल-गणना का आधार हमें किसी ऐसे बिन्दु को बनाना है, जहां से आधुनिक विद्वान् भारत के प्रामाणिक इतिहास का आरम्भ करते हैं। इतिहास-विदों ने चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्याभिषेक का काल ३२२ ई० पू० निर्धारित किया है। इससे पूर्व नन्दवंश ने ८० वर्ष राज्य किया था। अतः महापद्म नंद के राज्याभिषेक का काल ३२२+८०=४०२ ई० पू० मानने में किसी को कोई आपत्ति न होनी चाहिए। वर्तमान पुराणों की रचना का आरम्भ भी लगभग इसी समय माना जाता है। कई पुराणों में परीक्षित के जन्मकाल से महापद्म के राज्याभिषेक तक की वर्ष गणना दी हुई है, जो एक हजार वर्ष से कुछ अधिक है। इनमें से एक प्राचीन श्लोक इस प्रकार है

यावन्नंदा भिषेकत्तु, यावज्जन्म परीक्षितम् ।
एवम् वर्ष सहस्रंत्तु, ज्ञेयं पंचासदोत्तरम् ॥

आगे लिखे जानेवाले पुराणों में संभवतः इसी श्लोक को थोड़ा-बहुत परिवर्तित करके साहित्य की दृष्टि से अधिक शुद्ध किया गया है, जो इस प्रकार है:—

यावत्परीक्षितो जन्म, यावन्नंदाभिषेचमम् ।
एतद्वर्ष सहस्रंतु, ज्ञेयं पंचदशोत्तनरम् ॥
(श्रीमद्भागवत)

इस प्रकार पंचासदोत्तरम् और पंचदशोत्तरम् पाठों के आधार पर परीक्षित के जन्म और नंद के राज्याभिषेक के बीच का काल या तो १०५० या १०१५ मानना पड़ता है। मेरा अपना मत है कि १०५० वर्ष ही अधिक प्रामाणिक है। श्रीमद्भागवत की रचना के समय तक साहित्यिक परम्पराएँ बहुत महत्त्व प्राप्त कर चुकी थीं। श्रीमद्भागवत में उत्कृष्ट साहित्य का ही रूप हमारे सामने आता है। अतः एक मात्रा की कमी करके भाषा के साथ-साथ छंद की गति भी शुद्ध करने का प्रयास किया जाना स्वाभाविक प्रतीत होता है। मैंने संस्कृत के अनेक विद्वानों का मत भी इसी विषय पर लिया, तो प्रायः सभी की यही राय मिली कि पंचदश का अर्थ ५० भी किया जा सकता है।

उपरोक्त १०५० वर्ष नंद के राज्याभिषेक काल ४०२ ई. पू. में जोड़ देने से परीक्षित के जन्म का समय १०५०+४०२=१४५२ ई. पू. ठहरता है। भारतीय इतिहासाचार्य श्री काशीप्रसाद जायसवाल तथा डॉ. राधाकुमुद मुकर्जी के अनुसार यही महाभारत की समाप्ति का काल ठहरता है। लोकमान्य तिलकने भी इसी का समर्थन किया है।

कुछ अन्य इतिहासविदों का मत इस प्रकार है :—

श्री गिरीन्द्र शेखर बोस	..	१४१६ ई. पू.
श्री ए. डी. पुसालकर	..	१४०० ई. पू. के लगभग.
डॉ. सीतानाथ प्रधान	..	११५० ई. पू.
श्री पार्जिटर ..	..	९५० ई. पू.

श्री पी. एल. भार्गव ने अपनी पुस्तक India in the Vedic age में परीक्षित के राज्याभिषेककाल १३८० ई. पू. माना है। यह अभिषेक महाभारत के ३६ वर्ष पश्चात् हुआ था। अतः, १३८०+३६=१४१६ ई. पू. महाभारत का समय ठहरता है, जो श्री गिरीन्द्र शेखर बोस के मत से मेल खाता है।

यदि हम पंचाशत् का अर्थ ५० और पंचदश का अर्थ १५ करें, तो दोनों गणनाओं में ५०–१५= ३५ वर्ष का अंतर आता है। संभवतः उपरोक्त दोनों विद्वानों ने श्रीमद्भागवत के श्लोक का अर्थ १०१५ वर्ष ही किया है, क्योंकि १४१६ में ३५ जोड़ देने से १४५१ ई. पू. महाभारत का काल हो जाता है। इन विद्वानों ने श्लोक में दिया परीक्षित के जन्म का काल न लेकर उसके राज्याभिषेक का काल निकालना उचित समझा है, जिससे एक वर्ष का अंतर पड़ गया प्रतीत होता है। मेरी अपनी सम्मति यह है कि परीक्षित के जन्म का समय १४५२ ई. पू. और महाभारत का काल उससे लगभग एक वर्ष पूर्व अर्थात् १४५३ ई. पू. मानना चाहिए।

अब हम विद्वानों द्वारा संशोधित वंशावलियों के सहारे इस कालक्रम को द्वापर, त्रेता और ऋत युग तक ले जाने का प्रयत्न करेंगे। इस लम्बे काल को हम मोटे रूप में चार भागों में बांट सकते हैं :—

१. ऋतयुग या सतयुग स्वायंभुव मनु से दक्ष प्रजापति तक, जिसमें ४५ प्रजापति हुए।

२. सतयुग और त्रेता का संधिकाल, जिसमें कश्यप, विवस्वान और मनु की केवल तीन पीढ़ियां हुईं।

३. इला और इश्वाकु से राम तक ३८ पीढ़ियों का त्रेतायुग।

४. द्वापर, जिसमें लव और कुश से महाभारत संग्राम तक १४ पीढ़ियों का औसत माना जाता है।

डॉ. सीतानाथ प्रधान ने Chronology in Ancient India नामक पुस्तक में गणना बीच में से आरम्भ की है और दशरथ से पूर्व का काल छोड़ दिया है, जिससे कई स्थानों पर उनके परिणामों को ज्यों का त्यों ग्रहण कर सकना कठिन हो गया है, क्योंकि भिन्न-भिन्न राजवंशों की सूचियों में समकालीनता सूचक रेखाएं स्थिर नहीं रह पाई हैं। हां, उनकी उपरोक्त पुस्तक में इस काल की भिन्न-भिन्न राजवंशों की १२ से १६ तक पीढ़ियां दी हुई हैं, जिनका औसत १४ मान लेने से एक आनुमानिक अंक तो प्रस्तुत हो ही जाता है। राम तक पार्जिटर की सूचियां कुछ अधिक तर्कपूर्ण प्रतीत होती हैं।

राजाओं के भोगकाल के औसत के प्रश्न पर भी विद्वान् एकमत नहीं हो सके हैं। कुछ विद्वानों के मत यहां दिये जा रहे हैं—

श्री पार्जिटर	..	१८ वर्ष
श्री प्रधान	..	२८ वर्ष
श्री पुसालकर	..	१८ वर्ष
श्री भार्गव	..	२० वर्ष
श्री राम चौधरी	..	२८ वर्ष

प्राचीन बौद्ध लेखकों ने राजाओं के शासनकालों का जो उल्लेख किया है, उसके आधार पर एक राजा के भोगकाल का औसत ३० वर्ष से अधिक आता है। विद्वानों ने प्रायः औसत निकालने में प्रामाणिक इतिहास से सोलहवीं शताब्दी के पश्चात् के अंकों का उपयोग किया है। मेरी राय में प्राचीन काल में लोग दीर्घजीवी होते थे। अतः उस युग का औसत भोगकाल किसी भी अवस्था में २८ वर्ष से कम नहीं हो सकता।

(शेष पृष्ठ १८ पर)

श्रमदान

मांगती है मुक्ति की गंगा, भगीरथ-सी तपस्या,
और विश्वामित्र के तप को डिगाने, वे खड़ी हैं अप्सरायें, लालसा ले, वासना ले
साधना के पांव, पगपग डग-मगाते,
कर्म के पथ में खड़ा आलस्य कहता, ले तनिक विश्राम कर ले
पर तुझे कर्त्तव्य करना है किये जा,
लालसा के, वासना के सामने झुकना नहीं है।
मुक्ति की गंगा बहाना है तुझी को,
श्रम किये जा श्रम, तपस्या से तुझे डिगना नहीं है।
गर्भ में भंडार रत्नों का छिपाये, सो रहा संसार सागर,
रत्न की जब कामना है, तो किनारे क्यों खड़ा है?
और गहरे, और गहरे पैठ, गोता मार तो मोती मिलेंगे!
शक्ति का नागर चलाकर, भूमि की काया पलट दे,
और अपने खेत में बो, बीज श्रम के, साधना के,
खेत में तेरे उगेंगे लाल हीरे, दीप कण-कण में जलेंगे।

—श्री सत्यनारायण श्रीवास्तव

हिन्दी पत्रकारिता

श्री शिवशंकर मिश्र

एक वयोवृद्ध पत्रकार के शब्दों में–"पत्रकार कला में जो आकर्षण है, जो स्पन्दन है, भावुकता के उद्बोधन की जो शक्ति है, अनुभूति की उपलब्धि के लिए अग्रसर होने की जो उत्प्रेरणा है, सत्य की जिज्ञासा जागृत करने का जो साधन है, उसने सदा ही मुझे प्रभावित किया है।" वस्तुतः ये शब्द संक्षेप में पत्रकार के कर्त्तव्य, दायित्वं और क्षमता पर प्रकाश डालते हैं। आज ही नहीं, अपितु पत्रकारिता के प्रारम्भ से ही समाज ने पत्रकार को अपने सजग प्रहरी और समर्थ संरक्षक के रूप में ही मान्यता प्रदान की है। उसका "स्व" समष्टि का प्रतीक है, उसका अहं देशाभिमान है तथा उसकी वाणी युग सन्देश वाहिका है। प्रकाशस्तम्भ के समान इतिहास के समुद्र में संचरण करनेवाली प्रत्येक प्रवृत्ति और घटना पर वह प्रकाश डालता है, केवल मार्ग निर्देशन की भावना से ही नहीं, अपितु इसलिए भी कि तट पर खड़े जिज्ञासुओं को भी उनकी सत्ता का भास हो जाए।

अभिनव प्रयास

हिन्दी पत्रकारिता व्यवसाय के रूप में प्रारम्भ नहीं हुई, यह उक्ति स्वतः ही सिद्ध है। स्थिति चिन्तन, मनन, आत्माभिव्यक्ति की व्यग्रता, जन मंगल के प्रति आस्था तथा ऐसे ही कुछ और अनुभावों से प्रेरित होकर विचारकों ने पत्रों का प्रारम्भ किया था। जनता को उसके बाह्य वातावरण के प्रति जागरूक करना उनका इष्ट था।

अपने अति कठोर परिश्रम से अर्जित पूंजी को पत्र प्रकाशन कार्य में लगा देनेवाले सामान्य कर्मचारी श्री युगल किशोर शुक्ल के हृदय में अपने कार्य के प्रति क्या निष्ठा रही होगी, इसका अनुमान तत्कालीन ऐतिहासिक वस्तुस्थिति पर दृष्टिपात करने से स्वयं हो जाता है। शुक्लजी हिन्दी पत्रकारिता के जनक माने जाते हैं। उन्होंने ३० मई १८२६ के दिन कलकत्ते से हिन्दी का पहला पत्र "उदंत मार्तण्ड" प्रकाशित किया था। वे पत्र के संस्थापक, सम्पादक, मुद्रक, सभी कुछ स्वयं ही थे। उस समय कलकत्ते में हिन्दी के पाठकों की संख्या नगण्य थी। अंगरेजी और बंगला पत्रों के प्रति दमन-नीति बरत कर सरकार ने मानों पत्र प्रारम्भ करने के अभिलाषियों को ऐसा न करने की हिदायत दे दी थी। शुक्लजी के शुभचिन्तकों ने उन्हें इस कार्य में हाथ डालने से रोका। किन्तु बलवती निष्ठा पर्वत-शृंग से प्रवाहित होनेवाली सरिता के समान गतिशीला होती है। पथ की बाधाओं को अपने में लय कर लेना मानों उसका स्वभाव बन जाता है। शुक्लजी ने अदम्य उत्साह के साथ अपना पत्र प्रारम्भ किया। डेढ़ वर्ष तक वह चला भी। इसके बाद मानों आर्थिक विपन्नता चीन की दीवार बनकर शुक्लजी के मार्ग में अड़ गयी। उन्हें पत्र का प्रकाशन स्थगित करना पड़ा। पर उनकी निष्ठा तो मृत नहीं हुई थी न। कुछ दिनों बाद उन्होंने पुनः "सामदन्त मार्त्तण्ड" पत्र प्रारम्भ किया। पत्र के कुछ अंक प्रकाशित ही हुए थे कि शुक्लजी रोगग्रस्त हो गए और एक में अनेक की प्राण प्रतिष्ठा करनेवाले शुक्लजी को विवश होकर पत्रकारिता से संन्यास लेना पड़ा।

शुक्लजी की निष्ठा हिन्दी पत्रकारिता की वह आधारशिला है, जो अनन्त काल तक भवन की पूर्णता का भार वहन करने में सक्षम रहेगी। उपलब्ध सामग्री के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शुक्लजी अपनी निष्ठा के प्रति ईमानदार थे और उसके लिए उत्सर्ग करके भी उन्हें सन्तोष न हुआ। यह निर्विवाद सत्य है कि शून्यता को स्वरूप देने का जो प्रयत्न उन्होंने किया, वह अभिनव तथा अभिनन्दनीय था।

सुधार भावना

ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजा राममोहन राय ने हिन्दी पत्र "बंगदूत" का प्रकाशन संभवतः सुधार भावना से किया था। उसे त्रैमासिक बनाकर उन्होंने अपने उद्देश्य को व्यापकता दी। समय की आंधी कुछ ऐसी चली कि "बंगदूत" अपने को केवल उस समाज के उद्देश्यों की पूर्ति तक सीमित नहीं रख पाया। परोक्ष रूप से विदेशी शासन के प्रति क्षोभ उसकी पंक्ति-पंक्ति से मुखर हो उठा। उनकी पैनी सूझबूझ में विचारों का अद्भुत सम्मिश्रण था। अपने सुगठित व्यक्तित्व के अनुरूप ही उन्होंने अपने पत्र में हलकी-फुलकी, छिछली भावनाओं और अभिव्यक्तियों को प्रश्रय नहीं दिया। एक समीक्षक के शब्दों में वे स्वनिर्मित मर्यादा और आत्मसंयम के पोषक थे। शालीनता उनकी रुचि और शिष्टता उनकी मनोवृत्ति थी। इस विषय में एक विद्वान् के शब्दों में राजा साहब की पत्रकारिता वस्तुतः पत्रकारिता दर्शन है।

इस स्थल पर हमारी दृष्टि सहज ही यह तत्व पकड़ लेगी कि हिन्दी पत्रकारिता अपने दूसरे चरण में भी सोद्देश्यता से प्रेरित थी, किन्तु उसका उद्देश्य स्पष्टतः उस स्वस्थ और सक्षम समाज का निर्माण था जो मुक्तिपथ गामी राष्ट्र की पावन पीठिका के रूप में प्रतिष्ठित हो सकता था।

तूफानों का पथ

इसके बाद हिन्दी पत्रकारिता ने तूफान का पथ पकड़ा। परिस्थितियों का अक्रमिक प्रवाह, और उससे होड़ लेने चली हिन्दी पत्रकारिता। सरपट दौड़ मची। ऐसी दौड़ कि पत्रकारिता को भाषा और मुद्रण-कला को बरबस अपने साथ घसीटकर साथ रखना पड़ा। इतिहास के पटल पर घटनाएं तीव्रता से दौड़-धूप मचा रही थीं। भारत का प्रथम स्वतन्त्रता-संग्राम आरम्भ होने के ठीक तीन वर्ष पूर्व "बनारस गजट" ने देशव्यापी उद्विग्नता की ओर अप्रत्यक्ष संकेत किया और उसके बाद जैसे-जैसे भारत की राजनीति अधिकाधिक विषम होती गयी, पत्रों तथा पाठकों की संख्या में भी अभिवृद्धि होती गयी। देश के विभिन्न स्थानों से पत्र प्रकाशित हुए।

इसे वस्तुतः दैवी संयोग ही माना जायगा कि देश के स्वतन्त्रता-आन्दोलन तथा हिन्दी पत्रकारिता का प्रायः एक साथ ही श्रीगणेश हुआ और

कांग्रेस की उत्पत्ति और विकास के साथ दोनों में ही सघनता आई, पारस्परिक सौहार्द बढ़ा और दीर्घकाल तक दोनों हाथ में हाथ डालकर चलते रहे। एक इतिहासकार के मतानुसार हिन्दी पत्रकारिता ने कभी भी स्वतन्त्रता आन्दोलन के साथ विश्वासघात नहीं किया। राष्ट्र के मुक्ति-संग्राम के सेनानियों के समान ही हिन्दी पत्रकारों ने सत्ता के क्रूर हाथों द्वारा निर्दय प्रहारों को सहा। सारांश यह कि अपने शैशवकाल से ही हिन्दी पत्रकारिता ने तूफानों का पथ पकड़ा तथा अपने उत्सर्ग और त्याग द्वारा मुक्ति-पथ ज्योतिर्मय किया।

भिन्न लक्ष्य : विभिन्न दिशाएँ

हिंदी पत्रकारिता ने क्रमशः मान्यता प्राप्त करली तथा उसे इष्ट साधन का सुगम तथा निश्चित मार्ग समझा जाने लगा। फलतः साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक पत्रों का प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह स्वाभाविक ही था कि उद्देश्य की सीमा ने कार्यक्षेत्र की व्यापकता पर प्रहार किया। पत्रकार सम्पूर्ण समाज के हितरक्षक न बन कर एक वर्ग के पोषक हो गए। इसमें सन्देह नहीं कि जहां इन पत्रों ने लक्ष्य को नियंत्रित करके अपनी गरिमा कम की, वहीं दूसरी ओर उन्होंने सीमित क्षेत्र को गहराई से नापा-जोखा, उसकी उपलब्धियों और सम्भावनाओं की समीक्षा-परीक्षा की।

इसी पत्रकारिता के इतिहास के सन्धि-स्थल पर पूंजीपतियों का ध्यान भी पत्रकारिता की ओर गया तथा उन्होंने उसकी व्यावसायिकता पर विचार किया। पत्रों में विज्ञापन देने की प्रथा प्रारम्भ हुई। मुद्रण और मेकप की सुचारुता में वृद्धि हुई। पत्रकारिता अपनी "स्वदेशी" वृत्ति को छोड़कर विदेशों की टेन्डेन्सी की अनुगता बनी।

इन सब परिवर्त्तनों का एक प्रभाव स्पष्ट था: सम्पादकी नौकरी बनी। उसके कर्त्तव्य और दायित्व प्रेस एक्ट द्वारा निर्देशित होने लगे। अनुभूति का स्थान अनुभव ने ले लिया। अपने संचालकों को पटा लेना पत्रकार का एक शिविष्ट गुण बन गया। कतिपय पत्र सत्ता के पृष्ठपोषक भी बन गए यानी एक विदेशी सम्पादकाचार्य के शब्दों में पत्रकारिता अपनी निर्भीकता और अक्खड़पन को खोकर श्रीहीन नहीं तो श्रीमलीन तो अवश्य हो गई।

नौकरी नहीं बन सकती

सही मायने में पत्रकारिता नौकरी नहीं बन सकती। उसके असीमित दायित्वों और अपरिमेय कर्त्तव्यों को नियमों द्वारा सीमाबद्ध नहीं किया जा सकता। यदि ऐसा हुआ तो पत्रकारिता कुंठा का शिकार हो जायगी। उसके अनावश्यक रूप से प्रमुखतः व्यावसायिक बन जाने पर चिन्तामणिजी के शब्दों में, वह अपना मिशन खो देती है। ग्राहकों की संख्या या उसके द्वारा अर्जित धन पत्रकारिता की उत्कृष्टता की माप नहीं। विज्ञापन की संख्या भी उसकी गुरुता का लेखा नहीं देती। सामान्य दृष्टा की दृष्टि में आज हिन्दी पत्रकारिता श्रीवृद्धि के पथ पर है। सामग्री तथा सज्जा की सुरुचि उसके पृष्ठ-पृष्ठ पर अंकित है। वर्त्तमान को प्रदीप्त करने के साथ-साथ वह स्थायी साहित्य के कोष में भी वृद्धि करती है। भाषा और मुद्रण-कला मानों प्रौढ़ और परिपक्व हो गई हैं। सरकार पत्रों के हितचिन्तन में लीन है और उसके लिए कानूनों का कवच तैयार कर रही है।

यह सब तो है, पर आज उसमें आत्मबल का अभाव-सा प्रतीत होता है। आज का पत्रकार राष्ट्रहित का सजग प्रहरी होने का गौरव प्राप्त नहीं कर पा रहा। मानो पत्रकारिता के वस्त्र लंकाशायर की स्निग्धता और मनोरमता से पूर्ण हो चुके हैं, पर अब उसके पास खादी की पावनता कम ही रह गई है। इन पंक्तियों का आशय यह कदापि नहीं कि हिन्दी पत्रकारिता का कोई भविष्य नहीं है। इस स्थान पर स्थिति को स्पष्ट करने के लिए पुनः एक सम्पादक शिरोमणि को उद्धृत करना पड़ेगा। "पत्रकारिता समाज की यथार्थ झांकी है। वर्त्तमान संक्रान्ति में उसके स्वरूप की स्थिरता की कल्पना करना कठिन है। वह दिन दूर नहीं, जब हिन्दी पत्रकारिता पुनः अपना शिवं, सत्यं, सुन्दरं रूप ग्रहण करेगी।"

यह सम्भव नहीं कि अब विशुद्ध निष्ठा और व्यक्ति के उत्सर्ग के बल पर पत्रकारिता पल और पनप सके। आवश्यकता इस बात की है कि पत्रकार अपनी नौकरी में ही निष्ठा का समावेश करें और पराड़करजी के शब्दों का स्मरण रक्खें कि पत्रकारिता को पेशा समझना उसे पंगु बनाना है। इसलिए यदि उसे श्री समृद्धिमयी बनाना हमारा ध्येय है तो हमें चाहिए कि उसे राष्ट्र-देवता की पूजा के रूप में स्वीकार करें और आचार्य द्विवेदीजी के स्वर में स्वर मिला संकल्प करें :

पत्रकार, पूजो न विभव को, बनो लोक के प्रह
मंगलवाणी बन कर गूंजे पत्रों की स्वर-लहरी
पन्थ प्रदर्शन करो देश का, ज्योतिस्तम्भ सदृश
इसे नहीं चाकरी बनाओ यह स्वदेश आराधन

कुछ जानने योग्य बातें

अंशदायी स्वास्थ्य-सेवा-योजना

१. यह योजना परीक्षण के तौर प १ जुलाई १९५४ को, दिल्ली में रहनेवा केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के लिए शुरू गई थी, किन्तु अब यह स्थायी बन गई है। शुरू में इससे २ लाख २३ हजार व्यक्ति ला उठाते थे और अब ४ लाख से भी अधिक।

२. अंशदायी स्वास्थ्य-सेवा-योजना अंतर्गत, छोटे और बड़े हर प्रकार के सरकारी कर्मचारियों और उनके कुटुम्बियों और आश्रि मातापिताओं की चिकित्सा की जाती है। इसके लिए कर्मचारियों को अपने वेतन के अनुसार कुछ राशि प्रति मास कटानी पड़ती है।

३. योजना के अंतर्गत, चिकित्सा में रोग का निदान और जांच-पड़ताल, अस्पताल घर में मरीज का इलाज, विशेषज्ञों और डॉक्टरों आदि की सलाह तथा दवाइयां आदि सब कुछ शामिल है।

४. सरकारी कर्मचारी अपने वेतन के अनुसार ५० नये पैसे से लेकर १२ रुपये मासिक तक इस योजना में अपना हिस्सा देते हैं। केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के अलावा अ १० अर्धसरकारी और स्वशासी संस्थाओं के कर्मचारी और उनके परिवार भी इस योजना में शामिल कर लिये गये हैं।

५. सन् १९५४ में, जहां १६ औषधालय थे वहां १९५८ में इनकी संख्या बढ़कर २६ हो गई। इसके अलावा, तीन अस्पताली मोटरें भी हैं।

६. दिल्ली में ३० प्रसूति और शिशुकल्या केन्द्रों को मान्यता दे दी गई है, जिनका सरकारी कर्मचारी और उनके परिवार के लोग निःशुल्क लाभ उठा सकते हैं। इस योजना के अस्पतालों में परिवार-आयोजन के बारे में सलाह देनेवाले केन्द्र, माताओं के क्लब आदि काम करते हैं। इसके अलावा, यहां बच्चों को दूध बांटा जा है, फिल्म दिखाये जाते हैं और वार्तालाप द्वारा कई प्रकार की जानकारी दी जाती है।

तात्या टोपे नगर का मल-निकास-यंत्र

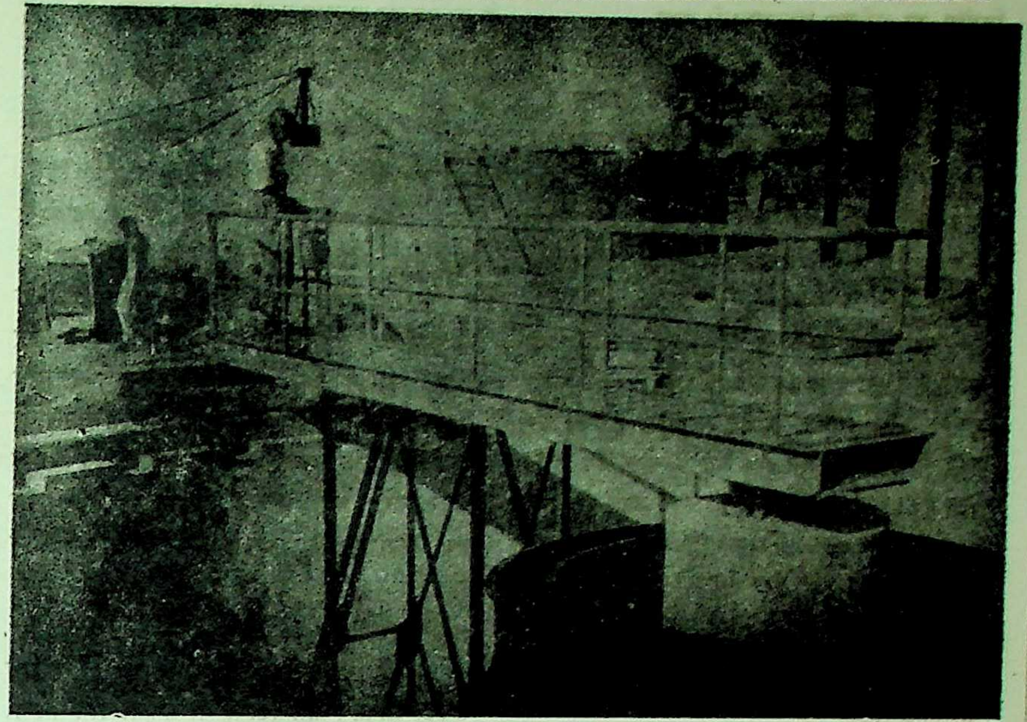

तात्या टोपे नगर में स्थापित सीवेज-संयंत्र का क्लेरीफायर यूनिट

तात्या टोपे नगर भोपाल में ४.२५ लाख रुपये की लागत से स्थापित किया गया मल-निकास-यंत्र मध्यप्रदेश में अपने ढंग का सर्व-प्रथम यंत्र है। इससे तात्या टोपे नगर के ३,००० क्वार्टरों में रहनेवाले लगभग १५,५०० व्यक्तियों की आवश्यकता पूरी होगी।

राज्य के पुनर्गठन के फलस्वरूप जो कर्मचारी भोपाल नगर राजधानी में आये थे, उनके लिए उपयुक्त निवास-व्यबस्था करने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश शासन ने तृतीय तथा चतुर्थ वर्ग के शासकीय कर्मचारियों के लिए ३,००० आवास-गृहों का एक नगर बनाया है, जिसका नाम तात्या टोपे नगर है। अधिकारियों के लिए ११९ बंगले बनाये जा रहे हैं, इस नगर में मल के निकास के लिए भूमिगत मल-निकास-प्रणाली की व्यवस्था की गई है। चूंकि यहां मल-निकास की स्वाभाविक प्रणाली, जिसके अन्तर्गत मल के गिरने के स्थान पर पतला करके उसकी व्यवस्था की जाती है सुलभ नहीं थी. इसलिए, मल को हानिरहित द्रव तथा सघन रूप में परिवर्तित करने की एक कृत्रिम मल-शुद्धि-प्रणाली आरम्भ करना आवश्यक हुआ।

भोपाल की समस्याओं और भारत के अन्य भागों में प्राप्त अनुमानों को दृष्टिगत रखते हुए 'वायोफिल्टरिंग' प्रणाली द्वारा मल का निकास करने की सिफारिश की गई थी। इस प्रणाली को स्वीकार करने के विशेष कारण ये थे कि इसका खर्च कम है और इसका संचालन विशेषज्ञों की देखरेख में होता है। यदि इस प्रणाली पर बहुत अधिक भार भी पड़ जाए, तो भी अन्य प्रकार के यंत्रों की तुलना में उसकी क्षमता उत्तम बनी रहती है। इस प्रकार के यंत्र भारत में १४ अन्य स्थानों पर स्थापित किये गये हैं। यह यंत्र इस प्रकार तैयार किया गया है कि वह लगातार कार्य करेगा और दुर्गन्ध तथा मक्खियों की गन्दगी से मुक्त रहेगा। इस यंत्र को चलाना बहुत सरल है, इसका खर्च कम है और क्षमता बहुत अधिक है।

जब यह यंत्र सामान्य रूप से संचालित होगा, तब उससे मल निरन्तर प्रवाहित होगा, इस मल में घुली हुई जारक वायु बहुत अधिक मात्रा में रहेगी तथा उसमें सघन पदार्थ बहुत कम रहेंगे। मल-शुद्धि की सब आवश्यक क्रियाएं इसमें सम्मिलित कर ली गई हैं।

इस यंत्र में निम्न-लिखित भाग हैं :—

बार-स्क्रीन—

मल में लटके हुए पदार्थों इत्यादि को अलग करने के लिए एक बार-स्क्रीन की व्यवस्था की गई है। बारों के बीच एक इंच के खुले हुए स्थान हैं। इस स्क्रीन को हाथ से साफ़ करना पड़ता है।

पम्प-गृह—

जब मल बार-स्क्रीन से निकलता है, तब वह पम्पों द्वारा "क्लेरिजेस्टर' में भेज दिया जाता है। मल के अधिकतम प्रगृह की व्यवस्था करने के लिए पांच पम्प लगाये गये हैं। ये पम्प एक पम्प-गृह में स्थापित किये गये हैं।

घर्षण यन्त्र (डेट्रीटर)—

कचरे के कणों को दूर करने के लिए 'क्लेरिजेस्टर' के गोल "फीड वाल" के चारों ओर एक गोल कक्ष की व्यवस्था की गई है। कचरे के कण इस कक्ष में बैठ जाते हैं और इनसे मुक्त मल का प्रवाह क्लेरिफायर सेक्शन में ले जाया जाता है।

प्राथमिक स्वच्छकारी यन्त्र —

यह अशुद्ध मल की व्यवस्था करता है। यह अशुद्ध मल पुन: संचालन के साथ 'क्लेरिफिकेशन' सेक्शन की सेन्ट्रल फीड वाल में जाता है। लटके हुए दृढ़ पदार्थ 'डिवाइडिंग' ट्रे पर बैठ जाते हैं तथा शुद्ध मल निकटवर्ती 'लान्डर' में चला जाता है। इस यंत्र में मैले में लटके हुए दृढ़ पदार्थ ६० से ६५ प्रतिशत तक अलग हो जाते हैं।

बायोफिल्टर—

क्लेरिजेस्टर से प्रवाहित मल पर 'बायोफिल्टर' में क्रिया की जाती है। 'बायोफिल्टर' की कार्वन वायु के कारण, यहां वे सेन्द्रिय पदार्थ जिनमें जाटक कम रहता है, जल जाते हैं।

द्वितीय या अन्तिम स्वच्छकारी यन्त्र——

मल सबसे अन्त में इस यूनिट में आता है। यह प्राथमिक स्वच्छकारी यंत्र के समान है, परन्तु उसमें स्किमर नहीं है, क्योंकि वह आवश्यक नहीं है। प्रवाहित मल शुद्ध और ओषजन से युक्त होकर पेरिफरल लाण्डर पर ले जाया जाएगा, जहां से वह अपने अन्तिम स्थान पर पहुंच जाएगा।

ज्वलन——

मल क्लेरिजेस्टर के निचले कक्ष में जलाया जाता है। इस कक्ष का आयतन २८,३०० घनफुट अर्थात् प्रति व्यक्ति २.७५ घनफुट है, जो इस कार्य के लिए पर्याप्त है। यह उल्लेखनीय है कि बैठा हुआ मल ज्वलन-कक्ष में अपने आप ही आता है और उसमें पम्पों की जरूरत नहीं पड़ती। इस यूनिट का बैठा हुआ मल गंधरहित होता है। उस पर मक्खियां पैदा नहीं होतीं और सूखने के बाद उसका खाद के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

शुष्कारी तल——

बैठे हुए मल को सुखाने के लिए ५,२५० घनफुट के एक क्षेत्र की व्यवस्था की गई है। इसे तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है।

परिवर्तन——

आरम्भ में यह यंत्र दो हजार क्वार्टरों के नगर में लगभग दस हजार लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए तैयार किया गया था। अब इसमें परिवर्तन कर [illegible] एक हजार क्वार्टरों तथा कुछ अधिकारियों के बंगलों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकेगा।

यद्यपि अतिरिक्त लोगों की आवश्यकता पूरी करने के लिए इस यंत्र का आकार बढ़ाना वांछनीय था, तो भी यह संभव नहीं ही हो सका, क्योंकि इस यंत्र का बनना शुरू हो गया था और आवश्यक मशीनरी के लिए आर्डर दे दिये थे। अतः उसमें केवल निम्न-लिखित परिवर्तन ही किये जा सके:——

बायोफिल्टर——

लगभग और भी ५,५०० लोगों की आवश्यकता के पूर्ति के लिए यह निश्चय किया गया कि संग्रह-आयतन को बढ़ा दिया जाए और इसके लिए गहराई को ४ फुट ६ इंचसे बढ़ा कर ६ फुट कर दिया जाए। सौभाग्यवश वितरण-यंत्र इतने बड़े थे कि वे अब आनेवाली और अधिक मल की व्यवस्था कर सकते थे।

इसी प्रकार मल-संग्रह-क्षेत्रों की संख्या तीन से वढ़ाकर पांच कर दी गई, क्योंकि क्लेरिजेस्टर में जलाये जानेवाले कीचड़ की मात्रा एक-सी रहने के कारण यह आवश्यक हो गया कि सुखाने के लिए कीचड़ को अधिक बार निकाला जाए।

पम्प——

यदि अतिरिक्त पम्प को सम्मिलित कर लिया जाय, तो पम्पों की क्षमता पर्याप्त पाई जाती है, परन्तु, इसके कारण मल के सर्वाधिक प्रवाह के समय कोई सहायक पम्प शेष नहीं रहेंगे; क्योंकि इस समय सब पम्पों से कार्य लेना आवश्यक हो जाता है। अतएव, यह निश्चय किया गया कि और अधिक पम्प न लगाये जाएँ, परन्तु पांच वर्तमान पम्पों के स्थान में इस प्रकार परिवर्तन किया गया है, जिससे कि एक छठवें पम्प के लिए स्थान निकल सके। आवश्यकता होने पर यह पम्प लगा दिया जाएगा, और सहायक पम्प के रूप में कार्य करेगा।

क्लेरिजेस्टर तथा क्लेरिफायर——

इनमें परिवर्तन नहीं किया गया, क्योंकि अब उनका आकार नहीं बढ़ाया जा सकता था। परन्तु, क्लेरिजेस्टर में अधिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए कुछ छोटे परिवर्तन किये गये हैं।

इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप यह आशा की जाती है कि यह यंत्र अधिक मल-प्रवाह की व्यवस्था कर सकता है। क्लेरिजेस्टर के कार्य का कुछ समय तक निरीक्षण, उसके परिणाम जानने की दृष्टि से किया जाएगा। यदि उससे कार्य कम हुआ, तो दूसरा क्लेरिफायर लगाया जाएगा।

अपने सहायक पुर्जों के सहित इस यंत्र का कुल व्यय लगभग ४.२५ लाख रु. हुआ है। इस यंत्र के लगाने का कार्य अप्रैल, ५८ में शुरू हुआ था।

इस यंत्र के द्वारा मल शुद्ध और गंधरहित किया जाकर तथा ओषजन से युक्त किया जा कर निकटवर्ती नाले में डाल दिया जाएगा अथवा उसका उपयोग जमीन की सिंचाई के लिए किया जाएगा। यह मल-प्रवाह एक उत्तम खाद है। इसका उत्पादन प्रति दिन लगभग ४.५ लाख गैलन होगा तथा वह लगभग ५० एकड़ जमीन पर सिंचाई के लिए पर्याप्त होगा। इस जमीन पर सब्जियां लगाई जा सकेंगी, जिनसे न केवल तात्या टोपे नगर, बल्कि शहर के एक बड़े भाग की आवश्यकता की पूर्ति हो सकेगी।

पौराणिक घटनाओं का काल-निर्णय

(पृष्ठ १४ का शेष)

इसी प्रकार पहले कही गई मुख्य-मुख्य घटनाओं का काल नीचे लिखे अनुसार निर्द्धारित किया जा सकता है:——

१. महापद्म नंद का राज्याभिषेक	४०२ ई. पू.	
२. परीक्षित का जन्म (१०५०+४०२)	१४५२ ई. पू.	
३. महाभारत युद्ध (१४५२+१)	१४५३ ई. पू.	द्वापर
४. लव का राज्याभिषेक (१४ × २८ = ३९२)	१८४५ ई. पू.	
५. बुध और इश्वाकु द्वारा चन्द्र तथा सूर्यवंशीय राज्यों की स्थापना (३८ × २८ = १,०६४)	२९०९ ई. पू.	त्रेता
६. कश्यप तथा अदिति का विवाह (कश्यप, विवस्वान और मनु) .. (३ × २८ = ८४)	२९९३ ई. पू.	संधिकाल
७. स्वायंभुव को मनुपद प्राप्ति .. .. (४५ × २८ = १,२६०)	४२५३ ई. पू.	सतयुग

आधुनिकतम मानव शास्त्रीय अनुसंधानों के अनुसार नव-पाषाण-काल (Neolithic Age) लगभग इसी समय समाप्त होता है और आधुनिक मानव का काल आरंभ होता है। वायुपुराण के आठवें अध्याय में सतयुग अथवा ऋतयुग के विषय में लिखा है——

ऋतयुग के आरम्भ काल में मानव नदी, समुद्र और पर्वतों के समीप रहते थे। उनको अधिक शीत और गर्मी से पीड़ा नहीं होती थी। वे इच्छानुसार इधर-उधर घूमते थे। उनको धर्म-अधर्म का विचार न था, न कोई भेदभाव था। वे वनस्पति और मूल फलादि खाते थे। उनका कोई स्थायी घर न था। वे अपने शरीर का संस्कार (स्नानादि) न करते थे। प्रजाओं के व्यवहार और आचारादि स्वाभाविक होते थे, बुद्धिपूर्वक नहीं। ऋतयुग में शुभ और अशुभ का विभाजन न था, उत्तम और अधम का प्रश्न ही न था। न वर्णाश्रम व्यवस्था थी, न संकर दोष था।

इस उद्धरण के अनुसार भी यह काल मानव-सभ्यता के आरम्भ से पूर्व की स्थिति का ही परिचायक प्रतीत होता है। इस प्रकार पुराण का मत आधुनिकतम वैज्ञानिक मान्यता से भी बहुत-कुछ मेल खाता है और निरे गपोड़ेवाली धारणा की जड़ पर कुठाराघात करके पुराणों की प्रामाणिकता की बात को बल प्रदान करता है।

साप्ताहिक समीक्षा

खरीफ आन्दोलन के अवसर पर राष्ट्रपति का उद्घाटन-भाषण

राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने खरीफ-उत्पादन-आन्दोलन के अवसर पर आकाशवाणी से अपने उद्घाटन-भाषण में कहा कि पिछले साल रबी की फसल का उत्पादन बढ़ाने में अपनी मेहनत और प्रयत्नों के बल पर हमें जो सफलता मिली, वही इस बात का प्रधान कारण है कि हम खरीफ की पैदावार को बढ़ाने के लिए भी उसी तरह के यत्न करें ।

उन्होंने कहा कि रबी की पैदावार में जो वृद्धि हुई वह हमारे घाटे को पूरा करने के लिए काफी थी या नहीं या उस वृद्धि के कारण हम निकट भविष्य में अनाज के मामले में आत्मभरित होने के आदर्श को प्राप्त कर सकेंगे या नहीं—इस समय इन सवालों का हमारे लिए विशेष महत्त्व नहीं है । जो बात महत्त्वपूर्ण है, वह यह है कि देश-भर में अनाज का उत्पादन बढ़ाने का पूरा यत्न किया जाए ।

उन्होंने कहा कि पिछली फसल में हमें जो अनुभव हुए हैं, उनकी सहायता से इस बार के प्रयत्नों से हमारी सफलता और भी अधिक होनी चाहिए । एक और अच्छी बात इस वर्ष यह है कि जहां रबी-उत्पादन-आन्दोलन कुछ सीमित था और देश के कुछ भाग किन्हीं कारणों से अछूते छोड़ दिए गए थे, खरीफ-उत्पादन-आन्दोलन सच्चे अर्थों में देशव्यापी होगा और इसमें भारत के सभी राज्य और केन्द्रीय शासन के अधीन प्रदेश भी शामिल होंगे ।

विनोबा भावे काश्मीर को रवाना

पंजाब में ४०० मील की पदयात्रा के पश्चात् आचार्य विनोबा भावे जम्मू-काश्मीर के लिए रवाना हो गए । लोगों की एक भीड़ ने, जिनमें पंजाब के दो मंत्री श्री मोहनलाल और गोपीचन्द भार्गव भी थे, उन्हें सस्नेह विदाई दी ।

कादियां के अहमदिया समुदाय के सात-सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने आचार्य भावे को कुरान की अंग्रेजी भाषा में अनुवादित पुस्तक भेंट में दी । संसद् सदस्य सरदार जेलसिंह और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति के सदस्यों ने आचार्य भावे को गुरुग्रन्थ साहब की हिन्दी प्रति तथा अन्य सिख-इतिहास की पुस्तकें महारानी नाभा की ओर से भेंट की गईं ।

आचार्य भावे ने पठानकोट में आयोजित सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुए कहा कि सर्वोदय का उद्देश्य विश्व में भाईचारा, ईश्वर विश्वास, समानता, राष्ट्रीय समृद्धि और निःस्वार्थ सेवा करना है । ऐसा करने का परिणाम मानवता का कल्याण होगा और यही सर्वोदय का चरम निष्कर्ष है ।

पंजाब भूदान बोर्ड के अध्यक्ष संसत्सदस्य श्री अचिन्तराम ने बताया कि आचार्य भावे को अपनी पदयात्रा के दौरान २,००० एकड़ भूमि तथा ३ गांव दान में मिले । ६ व्यक्तियों ने अपने नाम शांति सेना के लिए दिए हैं ।

प्रधानमंत्री की चिकित्सकों से अपील

प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने डॉक्टरों से अपील की कि वे गांवों में जाकर पीड़ित लोगों की सहायता करें और शहरों में इकट्ठे न हों ।

वह नई दिल्ली के अ० भा० चिकित्सा विज्ञान संस्थान में डॉक्टरों और छात्रों की एक सभा में भाषण दे रहे थे । वह संस्थान का निरीक्षण करने गए थे ।

उन्होंने कहा कि डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी करने के बाद डॉक्टर लोग गांवों में नहीं बसना चाहते, इसलिए भारत के गांवों में बसी विशाल जनता को चिकित्सा-सुविधाएं नहीं मिल पातीं । उन्होंने कहा कि मैं चाहता हूं कि कुछ निश्चित काल के लिए गांवों में चिकित्सा-कार्य करना डॉक्टरों के लिए कानून द्वारा अनिवार्य बना दिया जाए और किसी भी चिकित्सक को शहरों में तब तक न बसने दिया जाए, जब तक उसने कुछ समय तक देहात में चिकित्सा-कार्य न किया हो ।

प्रधान मंत्री ने सुझाव दिया कि स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्रों को देश की वास्तविक समस्याओं का बौद्धिक एवं भावनात्मक दृष्टि से अध्ययन करने के लिए गांवों और गंदी बस्तियों का दौरा करना चाहिए ।

उड़ीसा में संयुक्त मंत्रिमण्डल द्वारा शपथ ग्रहण

कटक में डॉ० हरेकृष्ण मेहताब के नेतृत्व में कांग्रेस गणतंत्र परिषद् के संयुक्त मंत्रिमंडल के ३ सदस्यों ने अपने-अपने पद की शपथ ग्रहण की ।

मंत्रिमंडल के अन्य दो सदस्यों के नाम हैं : श्री आर. एन. सिंहदेव (गणतंत्र परिषद्) और श्री राधानाथ रथ (कांग्रेस) ।

विभागों का वितरण इस प्रकार हुआ है :—

डॉ० हरेकृष्ण मेहताब (कांग्रेस—मुख्यमंत्री) :— गृह, राजस्व, एक्साइज शिक्षा और राजनीतिक तथा सेवा विभाग श्री भुवनेश्वर (नई राजधानी) स्थित शाखाओं का प्रशासन ।

श्री सिंह देव (गणतंत्र परिषद्) : वित्त, राजनीतिक तथा सेवा, श्रम, विधि, सहायता और पुनर्वास विभाग । (श्री राधानाय रथ (कांग्रेस) : विकास, वाणिज्य, निर्माण, यातायात और पूर्त्ति ।

बुद्ध-जयंती पर उप-राष्ट्रपति का भाषण

उप-राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन् ने नई दिल्ली में २५०३वीं बुद्ध-जयंती समारोह का उद्घाटन करते हुए कहा कि आज के अनिश्चित विश्व में नैतिक सिद्धान्तों का पालन करनेवाले ही अमर हो सकेंगे, शेष का नामनिशान भी मिट जाएगा।

उप-राष्ट्रपति ने जनता से महात्मा बुद्ध के उपदेशों पर चलने की अपील करते हुए कहा कि विश्व आत्मविनाश के पथ पर चल रहा है, इसलिए उसे बचाने के हेतु सत्य, अहिंसा, प्रेम, संयम आदि गुणों के प्रचार की अधिक आवश्यकता है।

इस अवसर पर डॉ. राधाकृष्णन् ने त्रिपिटक के देवनागरी रूपान्तर के प्रथम ग्यारह खंड बर्मा और थाईलैंड के राजदूतों और श्रीलंका के उच्च-आयुक्त को भेंट किए। यह ग्रंथ नालंदा पाली विद्यापीठ ने बर्मा, श्रीलंका और थाईलैंड के सहयोग से प्रकाशित किए हैं।

डॉ. राधाकृष्णन् ने कहा कि बुद्ध के उपदेशों पर चलने से ही मानव सच्ची शांति, सच्ची मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए केन्द्रीय शिक्षामंत्री डॉ. श्रीमाली ने कहा कि आज विश्व को नैतिक और आध्यात्मिक प्रगति की आवश्यकता है। हमें सारी दुनिया में बुद्ध का अहिंसा का संदेश पहुंचाना होगा, तभी विश्व का उद्धार और उसकी रक्षा हो सकती है।

भारत को आर्थिक विकास के लिए बीस करोड़ की सहायता

भारत सरकार और अमरीकी टैक्निकल सहयोग मिशन के बीच दो समझौतों पर हस्ताक्षर हुए, जिनके फलस्वरूप अमरीका के 'पी० एल०–४८०' के कोष से भारत के औद्योगिक ऋण और विनियोजन निगम तथा औद्योगिक वित्त निगम में से प्रत्येक को १०–१० करोड़ रुपये का ऋण प्राप्त हुआ है। 'पी० एल०–४८०' के अन्तर्गत दी गई २० करोड़ रुपये की इस रकम से उपर्युक्त दोनों निगमों के वित्तीय साधन काफी बढ़ जाएंगे और वे भारत के निजी उद्योगों को अतिरिक्त वित्तीय सहायता प्रदान करने में समर्थ होंगे।

समझौतों पर भारत सरकार की ओर से वित्त मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री एन० सी० सेनगुप्त ने और अमरीकी टैक्निकल सहयोग मिशन की ओर से उसके डाइरेक्टर श्री होवर्ड ई० ह्यूस्टन ने हस्ताक्षर किये।

भारत के औद्योगिक ऋण और विनियोजन निगम की स्थापना ५ करोड़ रुपये की पूंजी से १९५५ में की गई थी। यह निगम भारत के निजी उद्योगों को विस्तृत करने में योग देने के लिए भारतीय और विदेशी निजी पूंजी को प्रोत्साहन देता है।

प्रतिबंध के बावजूद अणु-युद्ध का खतरा

यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो ने चेतावनी दी है कि "कोई पागल" अणु-युद्ध आरम्भ कर सारी दुनिया को नष्ट कर सकता है।

एक यूगोस्लाव साप्ताहिक "म्लाडोस्ट" को एक भेंट में उन्होंने आणविक आयुधों पर नियंत्रण एवं प्रतिबंध लगाए जाने की अपील की, लेकिन कहा कि इसके बावजूद खतरा कायम रहेगा। इसलिए दुनिया के सब लोगों के समक्ष सबसे बड़ा काम शान्ति प्राप्त करना है।

बुद्ध पूर्णिमा पर दलाईलामा की अपील

महात्मा बुद्ध की २५०३ वीं जयन्ती का उद्घाटन करते हुए दलाईलामा ने मसूरी में कहा कि विश्व के बौद्धों को प्रार्थना करनी चाहिए, ताकि तिब्बतियों के मार्ग में आई मुसीबतें सूर्य और चन्द्रग्रहण की भांति समाप्त हो जाएं तथा बौद्ध धर्म सदा की भांति जगमगाता रहे।

भारत सेवक समाज की निर्माण-सेवा का कार्यक्रम

केन्द्रीय आयोजन मंत्री श्री गुलजारीलाल नन्दा ने नई दिल्ली में कहा कि भारत सेवक समाज और उसकी क्षेत्रीय इकाइयों की निर्माण-सेवा के लिए सन् १९५९-६० में निर्माण-कार्य का लक्ष्य १० करोड़ रुपए रखा गया है।

श्री नन्दा केन्द्रीय निर्माण-सेवा की सलाहकार समिति की उद्घाटन बैठक में भारत सेवक समाज के अध्यक्ष की हैसियत से भाषण दे रहे थे।

उन्होंने कहा कि सिंचाई और विद्युत् मंत्रालय के समन्वय-मंडल ने सिफारिश की है कि राज्य सरकारें निर्माण-कार्य देने में निर्माण-सेवा को प्राथमिकता दें, उसे ऐसी रियायतें भी देवें, जिससे वह अपना कार्यक्रम अच्छाई से और जल्दी पूरा कर सके।

केन्द्रीय निर्माण-सेवा का प्रारम्भ उस समय हुआ था, जब भारत सेवक समाज ने सन् १९५ में कोसी की बाढ़ से गांवों की रक्षा के लिए बांध बनाने का काम अपने हाथों में लिया था। समाज ने उस क्षेत्र में जन-शक्ति संगठित की, सरकार का १.५ करोड़ रुपया बचाया और मजदूरों को उनके श्रम के लिए अच्छी मजदूरी दी। उसके बाद समाज ने आन्ध्र प्रदेश में नागार्जुन सागर बांध का काम हाथ में लिया। राजस्थान में चम्बल योजना में सहयोग दिया और अभी हाल शाहदरा बांध के निर्माण और नजफगढ़ नाले की सफाई का काम पूरा किया।

श्री नन्दा ने कहा कि इस सेवा का एक कार्यकर्त्ता मंडल बनाना होगा, जिसमें कुल पूरे समय काम करने वाले कर्मचारी होंगे। प्रशिक्षण-कार्यक्रम भी शुरू करने होंगे।

उन्होंने कहा कि कोसी और नागार्जुन सागर में लोक-शक्ति के संगठन का जो अनुभव हुआ है, उसका लाभ श्रम सहकारी संघों के संगठन में उठाया जाएगा।

श्री डलेस का देहान्त

अमरीका के भूतपूर्व विदेश मंत्री

श्री जान फोस्टर डलेस का कैंसर से २४ मई को देहांत हो गया। उनकी आयु ७१ वर्ष की थी।

स्थानीय समाचार

परामर्शदात्री समिति की बैठक

ग्वालियर जिले की परामर्शदात्री समिति की बैठक ग्वालियर के जिलाध्यक्ष, श्री नारायणसिंह, आई० ए० एस०, की अध्यक्षता में हुई। उक्त बैठक में विभिन्न शासकीय विभागों द्वारा निर्धारित लक्ष्यों पर विचार किया गया। जिले के सालौन ग्राम में पशु-चिकित्सालय शीघ्र प्रारंभ करने की सिफारिश भी उक्त समिति ने की। शासन द्वारा पशु-चिकित्सालय के निर्माण के लिए निश्चित धनराशि भी स्वीकृत की जा चुकी है।

ग्वालियर में एक ज्यूनियर टैक्निकल स्कूल की स्थापना की योजना पर भी उक्त समिति ने चर्चा की।

ग्वालियर जिले में समुचित लघु सिंचन सुविधाएं सुलभ करने तथा तत्संबंधी योजनाओं पर चर्चा के हेतु ग्वालियर के जिलाध्यक्ष की अध्यक्षता में एक उप-समिति का गठन किया गया। उक्त उप-समिति के सदस्य श्री मु० वि० घुले (विधायक), श्री राजाराम, श्री महेशप्रसाद मिश्र तथा सिंचन के कार्यपालक यंत्री (जनकार्य विभाग) तथा विकास खंड अधिकारी हैं।

बृहत्तर ग्वालियर में जल-प्रदाय व्यवस्था

योजना कार्यों के अंतर्गत बृहत्तर ग्वालियर की जनता को समुचित जल व्यवस्था प्रदान करने के लिए गोरखी क्षेत्र के पीछे ५ लाख गैलन जल संग्रहीत करने के उद्देश्य से एक जल-भंडार का निर्माण किया गया। उक्त ६२ फुट ऊँची टंकी के निर्माण में ३,३४,००० रुपये की धनराशि व्यय हुई। साथ ही उक्त जल की समुचित प्रदाय व्यवस्था के लिए २४ इंच के स्थान पर ३० इंच की लाइन डाली गई। उक्त निर्माण कार्य से लगभग ५० श्रमिकों के लिए दो वर्ष तक प्रतिदिवस आजीविका की व्यवस्था सुलभ की गई। ५ लाख गैलन जल के उक्त भंडार के निर्माण से लश्कर नगर के कम्पू, हेमसिंह परेड स्थित औद्योगिक बस्ती तथा सशस्त्र पुलिस आदि क्षेत्रों में जल के बहाव तथा जल की मात्रा में वृद्धि हुई। उक्त टंकी का निर्माण तथा अपेक्षाकृत ९ तथा ६ इंच मोटाई के उक्त नए पेय-जल प्रवाह का निर्माण कार्य गत तीन वर्ष पूर्व सन् १९५६ में पूर्ण हुआ था।

बृहत्तर ग्वालियर में आजकल ग्रीष्मकाल में पेय जल की खपत ७५ से ८० लाख गैलन तक है, जिसकी प्रदाय व्यवस्था लोक-स्वास्थ्य विभाग के संभागीय अभियंता द्वारा विद्युत् विभाग के सहयोग से की जाती है, जबकि सर्दियों में पेय जल की खपत केवल ६० लाख गैलन ही रह जाती है। उक्त जल कार्यशाला की स्थापना के समय १९३० में स्वच्छ जल प्रदाय की खपत केवल ४५ लाख गैलन थी। इस प्रकार गत २९ वर्षों में बृहत्तर ग्वालियर की पेय जल की खपत जनसंख्या की तुलनात्मक वृद्धि के साथ दुगनी हो गई है। आजकल जल-प्रदाय का औसत २६ गैलन प्रति व्यक्ति प्रति दिवस है।

हॉकी प्रशिक्षण शिविर का परिसमाप्ति समारोह

ग्वालियर में गत ५० दिवसों से कप्तान रूपसिंह के नेतृत्व में क्रीड़ा-संघ, ग्वालियर के तत्वावधान में चल रहे हॉकी-प्रशिक्षण-शिविर का परि-समाप्ति समारोह १८ मई को सायंकाल सशस्त्र दल के क्रीड़ांगण में मनाया गया। इस शिविर में स्थानीय शिक्षा संस्थाओं के लगभग ६० अध्यापकों तथा नवयुवक छात्रों को हॉकी क्रीड़ा संबंधी विभिन्न क्रियाओं तथा आसन की विभिन्न व्यायाम क्रियाओं का प्रशिक्षण लगभग डेढ़ मास तक प्रति दिवस प्रातः तथा सायंकाल सुलभ किया गया। हॉकी के श्रेष्ठ एवं दक्ष खिलाड़ियों द्वारा शिविरार्थियों को उक्त क्रीड़ा की विभिन्न कलाओं एवं चातुर्यपूर्ण क्रियाओं से अवगत कराया गया।

अपनी प्रकार के उक्त श्रेष्ठ शिविर का निरीक्षण तथा प्रशिक्षणार्थियों को उत्साहित करने के लिए ४ तथा ५ मई को आरक्षी महानिरीक्षक, श्री रुस्तमजी, आई० पी० तथा २० अप्रैल को ग्वालियर के जिलाध्यक्ष, श्री नारायणसिंह, आई० ए० एस० आए।

परि-समाप्ति समारोह के उक्त अवसर पर खिलाड़ियों द्वारा प्रशिक्षण की विभिन्न क्रियाओं के प्रदर्शन तथा हॉकी की मैत्री-प्रतियोगिता प्रस्तुत की गई। उक्त समारोह की अध्यक्षता ग्वालियर नगर निगम के महापौर, श्री पंचमसिंह पहाड़गढ़, कर रहे थे। शिविर-अवधि में क्षमता-पूर्वक निपुण होने के लिए प्रशिक्षणार्थियों को योग्यता-सूचक प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्राकृतिक चिकित्सा प्रशिक्षण शिविर

दिनांक १५ मई, १९५९ को प्राकृतिक चिकित्सा प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन भूतपूर्व शिक्षा संचालक श्री बाबूलाल गुप्त द्वारा सराफा माध्यमिक शाला में किया गया। सदैव की भांति इस वर्ष भी इस शिविर में जनता ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। श्री रामचन्द्र चौधरी व श्री व्ही० एस० साठे साहब ने इस चिकित्सा पद्धति तथा रहन-सहन के नियमों को अपनाने के लिये अपने विचार व्यक्त किये तथा श्री पृथ्वीनाथ शर्मा की सेवाओं की सराहना की।

यह शिविर एक मास तक जनता के स्वास्थ्य के लाभप्रद हेतु चलाया जावेगा। इससे अधिक से अधिक जनता प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा लाभ प्राप्त कर सकेगी।

होम्योपैथिक एसोसिएशन के पदाधिकारियों में परिवर्तन

सेन्ट्रल होम्योपैथिक एंड बायोकैमिक एसोसिएशन, नई सड़क, लश्कर की कार्यकारिणी समिति की बैठक डॉ. फूलसिंह तोमर के निवास-स्थान, चन्द्र-भवन, चिटनिस की गोठ, लश्कर में हुई। एसोसिएशन की शैशवकाल में नींव डालनेवाले उपाध्यक्ष, डा. मावोसिंह, यदुवंशी तथा मंत्री डॉ. एन. पी. सिंह, के त्याग-पत्र स्वीकार किए गए। उपाध्यक्ष के पद पर डॉ. के. पी. वर्मा तथा मंत्री के पद पर डॉ. अमरसिंह रघुवंशी सर्व-सम्मति से निर्वाचित हुए।

भिलाई कारखानों में ८०० फिटर्स लिए जाएंगे

ग्वालियर स्थित एम्प्लायमेंट कार्यालय के अधिकारी द्वारा बताया गया है कि भिलाई इस्पात कारखाने में ८०० फिटर्स कार्य संचालन व्यवस्था के अंतर्गत नियुक्त किए जाएंगे। इनमें से सर्व प्रथम ३५० व्यक्तियों के लिए साक्षात्कार हेतु ३० मई, १९५९ तथा २० जून १९५९ तिथियाँ क्रमशः निर्धारित की गई हैं। उक्त पदों के लिए ५ से ७ वर्ष तक किसी उद्योग (कारखाने) में मिल राइट प्रकार के मेकेनिकल फिटर के रूप में कार्य करने का अनुभव होना आवश्यक है। विशेष जानकारी एम्प्लायमेंट एक्सचेंज (नियुक्ति विनिमय) कार्यालय के अधिकारी, शिन्दे की छावनी, लश्कर-ग्वालियर से संपर्क कर प्राप्त की जा सकती है। भिलाई इस्पात में उक्त पदों पर नियुक्ति के लिए काम दिलाऊ कार्यालय में पंजीकरण कराना आवश्यक है। उक्त पदों के वेतनमान ४० से ९० रुपए प्रति मास तथा ४५ से ५५ रुपए महंगाई भत्ते सहित योग्यतानुसार चयन के उपरान्त दिए जाएंगे।

विविध समाचार

ग्वालियर संभाग में खरीफ-उत्पादन

ग्वालियर संभाग में अधिकतम अन्नोत्पादन के लक्ष्य प्राप्त करने तथा मध्यप्रदेश शासन द्वारा चलाए गए खरीफ-उत्पादन-अभियान को अधिकतम गति देने के उद्देश्य से ग्वालियर संभाग के आयुक्त की अध्यक्षता में संभागीय खरीफ-उत्पादन-अभियान-समिति की बैठक का आयोजन हुआ।

आरंभ में उक्त समिति के अध्यक्ष श्री एस. पी. मेहता ने राज्य शासन के मुख्यमंत्री डॉ. कैलासनाथ काटजू द्वारा जारी किए गए अनुरोध-पत्र तथा आयोजना, कृषि एवं विकास विभागों द्वारा जारी किए गए तत्संबंधी परिपत्रों आदि की जानकारी से अवगत कराया। आपने बताया कि ग्वालियर संभाग के सभी जिलों में जिलास्तरीय खरीफ-उत्पादन-समितियों का गठन विभिन्न जिलाध्यक्षों की अध्यक्षता में किया जा चुका है।

समिति को संभाग के लिए उक्त अभियान के अंतर्गत बीज-वितरण के लिए निर्धारित लक्ष्यों की जानकारी प्रस्तुत की गई। धान, ज्वार, तूअर, तिल्ली तथा मूंगफली क्रमशः १८३८, १२२०, १०६५, १५२ तथा ८०० मन तथा खरीफ-अभियान के अंतर्गत २५० टन हरी खाद, ७० टन हड्डी का खाद वितरित किया जाएगा। खरीफ एवं रबी-उत्पादन-अभियान के अंतर्गत इस वर्ष ४,३०० टन अमोनियम सल्फेट, ९४० टन सुपर फास्फेट, ८० टन नाइट्रेट, ८० टन यूरिया वितरित किया जावेगा।

ग्वालियर संभाग के समस्त जिलों (शिवपुरी के अतिरिक्त) के लिए ८,९४५ मन हरी खाद का बीज, १,५१२ मन ज्वार, ७६४ मन धान, ४२० मन बाजरा तथा ६७ मन तिल्ली के बीज उक्त अभियान के अंतर्गत संग्रहीत किए जा चुके हैं।

ग्वालियर संभाग के लिए १९५९-६० वर्ष में ११,६०० एकड़ क्षेत्र में सन की हरी खाद का बीज बोने, ३८० एकड़ क्षेत्र में ढेंचा, ५५० एकड़ में मूंग, ग्वार तथा ५,००० एकड़ क्षेत्र में पलास-पत्रों की खेती करने के लक्ष्य भी निर्धारित किए गए हैं।

परीक्षाफल प्रकाशन की नई व्यवस्था

माध्यमिक शिक्षा परिषद् (मध्यभारत क्षेत्र) ग्वालियर के सचिव द्वारा सूचित किया गया है कि परिषद् के निर्णयानुसार सन् १९५९ की विभिन्न परीक्षाओं के परीक्षाफल इस वर्ष परिषद्-कार्यालय द्वारा ही घोषित किए जाएंगे। उक्त परीक्षाफल विभिन्न प्रमुख मान्य समाचार-पत्रों में प्रकाशन के लिए उक्त कार्यालय द्वारा सीधे ही उनके प्रतिनिधियों को दिए जाएंगे। परिषद् की विभिन्न परीक्षाओं के परीक्षाफल जिन निश्चित तिथियों को घोषित किए जाएंगे, उनकी पूर्व सूचना समय-समय पर परिषद् कार्यालय द्वारा दी जाएगी।

दुर्ग जिले में खरीफ अभियान

दुर्ग जिले में खरीफ अभियान पूर्ण गति से जारी है। जिले के लिए एक विस्तृत कार्यक्रम बनाया गया है, जिसके अनुसार २२,५०० मन उन्नत धान के बीज तथा १८,८०० टन रासायनिक उर्वरकों का वितरण किया जायेगा। इसके अतिरिक्त इस मौसम में ३,००० एकड़ भूमि पर जापानी प्रणाली से धान की खेती की जायेगी।

जन-सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से हाल ही में जिला खरीफ-अभियान-समिति के सदस्यों तथा जिला अधिकारियों की एक संयुक्त बैठक हुई। इस बात पर जोर दिया गया कि अभियान को सफल बनाने के उद्देश्य से समस्त ग्रामीण संगठनों अर्थात् ग्राम-पंचायतों, सहकारी संस्थाओं तथा कृषकों को पूर्ण सहयोग प्राप्त किया जाये।

अभियान के लिए निश्चित किये गये लक्ष्यों में अन्य बातों के साथ ९० कुओं की खुदाई, ७४ कुओं के जीर्णोद्धार, २५ बिजली के पम्पों तथा १३ डीजल पम्पों की स्थापना का कार्य और कृषि उपयोगी अनेक कार्यों के लिए तकावी वितरित करना भी सम्मिलित है।

शिक्षक पुनराभ्यास प्रशिक्षण-शिविर

लोक निर्माण विभाग के उप-मंत्री श्री दशरथ जैन ने हाल ही में शिवपुरी में जिला स्तर प्राथमिक शाला शिक्षकों के पुनराभ्यास प्रशिक्षण-शिविर का उद्घाटन किया। इस प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम का आयोजन ग्राम-शाला-शिक्षकों को ग्रामीण विकास से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए किया गया है।

इस अवसर पर उप-मंत्री जी ने भाषण करते हुए कहा कि शिक्षक ग्रामोत्थान संबंधी कार्यों में प्रभावपूर्ण कार्य कर सकते हैं, क्योंकि वे इस प्रकार के सभी कार्यों के केन्द्र हैं। यदि पंचायतें, सहकारी समितियाँ तथा शालाएं तथा सेवा-भावना से कार्य करें, तो वे ग्रामीण पुनर्निर्माण कार्यों को एक बड़ी हद तक सफल बना सकती हैं। अन्त में उन्होंने शिक्षकों से अनुरोध किया कि वे राष्ट्र में बाहुल्य एवं समृद्धि का युग आरंभ करने के उद्देश्य को पूरा करने के लिए अपने आपको देश की सेवा में समर्पित कर दें।

इसके पूर्व शिवपुरी जिलाध्यक्ष ने उप-मंत्री जी का स्वागत किया तथा इस प्रकार के शिविरों के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर प्रकाशन विभाग ने गीतों तथा आल्हा के कार्यक्रम भी आयोजित किये।

रबी अभियान की सफलताएं

जबलपुर संभाग रबी अभियान समिति की बैठक हाल ही में अभियान की सफलताओं का पुनरावलोकन करने के लिए जबलपुर में हुई। बैठक में ज्ञात हुआ कि अभियान-अवधि में किसानों में ५८,१४७ मन उन्नत गेहूं के बीजों, १,४३६ टन रासायनिक उर्वरकों तथा तकावी-ऋण के रूप में २३,२२,६०७ रुपये का वितरण किया गया। इसके अलावा तालाबों और तालों पर बाँध बनाकर २५,००० एकड़ अतिरिक्त क्षेत्र सिंचाई के अन्तर्गत लाया गया। ४,७३७ प्रदर्शन किये गये तथा २२८ एकड़ भूमि में टिफिन-प्रणाली से बोआई की गई।

राजगढ़ जिले में सहकारिता की प्रगति

राजगढ़ जिले में द्वितीय पंचवर्षीय योजनान्तर्गत सहकारिता के क्षेत्र में प्राप्त जानकारी के अनुसार १९५८-५९ वर्ष में विभिन्न प्रकार की जिन समितियों का निर्माण किया गया, उनकी संख्या निम्न प्रकार है:—

कृषि ६०, बृहदाकार ४, चर्मकार ८, तेल उत्पादक ३, वेतन भोगी ३, फामिंग ४, कामगार २, कारीगर एवं औद्योगिक २, गृह-निर्माण अकृषि १, कुल ८९। इनमें से १९ संस्थाएं परगना राजगढ़ में, ६ ब्यावरा में, १८ नरसिंहगढ़ में, २८ सारंगपुर में, ११ जीरापुर टप्पे में तथा १० खिलचीपुर परगने में संगठित की गई।

खरीफ-उत्पादन अभियान

भोपाल में खरीफ उत्पादन अभियान समिति की एक बैठक दिनांक १६ मई १९५९ को हुई। इस बैठक की अध्यक्षता श्री पी. एस. बापना, विकास आयुक्त ने की। इसके अतिरिक्त कृषि सचिव, राजस्व सचिव, कृषि संचालक, संयुक्त संचालक, सहकारी समितियां, श्री एस. सी. बोन्द्रिया, सचिव कृषक-समाज, श्री मुजुमदार, भारत सेवक समाज, श्री उमरावसिंह, श्री डी. जी. केलकर, प्रतिनिधि, ज्वार क्षेत्र तथा इंदौर के प्रमुख किसान और संचालक, सूचना तथा प्रकाशन ने भी इस बैठक में भाग लिया।

यह निश्चय किया गया कि आंदोलन को व्यापक बनाने हेतु अब सभी क्षेत्रीय संगठनों को क्रियाशील बनाया जावे। यह सुझाव दिया गया कि खरीफ आंदोलन के साथ-साथ ग्रीष्म-ऋतु में रबी फसल के लिये प्रारंभिक कृषि-कार्य भी प्रारंभ किये जावें। इस मौसम में खरीफ उत्पादन अभियान में स्थूल रूप से भूमि को बुआई के लिये तैयार करने, उत्तम बीजों का उपयोग करने, बुआई के पहले बीजों को शुद्ध बनाने, हरी खाद देने, उन्नत औजारों का उपयोग करने और धान तथा ज्वार की फसल-प्रतियोगिता इत्यादि के कार्य सम्मिलित रहेंगे।

बैठक में यह भी निश्चय किया गया कि अभियान को सफल बनाने के लिये सभी उपलब्ध साधन संगठित किये जावें तथा संबंधित विभिन्न विभागों के प्रयास सम्बद्ध किये जावें। सिंचाई विभाग इस बात पर ध्यान देगा कि समय पर सिंचाई की व्यवस्था की जाय। भू-अभिलेख विभाग इस बात पर ध्यान देगा कि बीजों और उर्वरकों इत्यादि के लिये तकावी अति शीघ्र मंजूर की जावे, ताकि उसके वास्तविक वितरण में समय न लगे। खंड विकास अधिकारी अपने-अपने खंडों में अभियान आयोजित करेंगे।

कृषि विभाग खरीफ-योजनाओं की ठोस क्रियान्विति पर ध्यान देगा तथा समय पर बीजों, उर्वरकों, कीटाणु-नाशक औषधियों इत्यादि की पूर्ति का प्रबंध करेगा। वह फसल प्रतियोगिताएं आयोजित करेगा तथा शहरी खाद के पूर्ण उपयोग के लिए प्रबंध करेगा। सहकारी साख समितियां बीज, खाद, उर्वरकों इत्यादि के लिये ऋण देंगी।

भारत सेवक समाज, कृषक समाज आदि गैर-सरकारी संगठनों का सहयोग प्राप्त कर इस बात के प्रयत्न किये जायेंगे कि किसान इस अभियान में अधिक से अधिक संख्या में भाग लें।

रायगढ़ जिले में खरीफ अभियान

रायगढ जिले में खरीफ अभियान आरम्भ करने के लिये हाल ही में रायगढ़ के जिलाध्यक्ष कार्यालय में जिला स्तर समिति की एक बैठक आयोजित हुई। भारत कृषक समाज के प्रतिनिधिगण जिला तथा विकास कर्मचारियों तथा वर्किंग जर्नलिस्ट यूनियन के अध्यक्ष ने इस बैठक में भाग लिया। बैठक में इस अभियान को जन-आन्दोलन बनाने के लिये महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

इस बैठक के समक्ष भाषण करते हुए जिलाध्यक्ष ने ग्राम-सेवकों, सहकारी समितियों, ग्राम पंचायतों तथा ग्राम-शिक्षकों तथा प्रगतिशील कृषकों के माध्यम से इस अभियान का प्रचार करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उर्वरकों के वितरण में वृद्धि करने के संबंध में समिति ने निर्णय लिया कि संपूर्ण जिले में २५ केन्द्र खोले जावें। समिति ने यह भी निश्चय किया कि जिले के किन्हीं भागों की भूमि और जलवायु में ज्वार और मूंग के उत्पादन की संभावना पर खोज की जाय।

इस बैठक में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों को यह भी सूचित किया कि इस अभियान के उद्देश्यों का प्रचार करने के लिये तहसीलों और विकास खंडों में समितियों बनाई जा चुकी हैं तथा संबंधित अधिकारियों को ये भी हिदायतें दी गई है कि जहां संभव हो सके सिंचाई के लिये जल पूर्ति की जावे। सदस्यों को यह भी सूचित किया गया कि वितरण के लिये १५,००० मन उन्नत बीज का स्टाक तैयार है।

किसानों को स्थायी सुविधायें प्रदान

सागर जिले में १९५८–५९ वर्ष में किसानों को कुल स्थानीय सुविधायें प्रदान किये जाने के फलस्वरूप रबी अभियान पूर्ण रूप से सफल रहा है।

जिले के किसानों को उक्त अवधि में अनेक सिंचाई सुविधायें उपलब्ध की गई थीं। रबी उत्पादन अभियान के अन्तर्गत लगभग १०४ कुयें या तो खोदे गये अथवा उनकी मरम्मत की गई, ८ रहट लगाये गये तथा १३ पंपिंग सेट क्रय किये गये। ३,१८७ एकड़ भूमि पर रबी मेडें बनाई गई। इसके अतिरिक्त रबी फसल उत्पादन में वृद्धि करने के उद्देश्य से ५,८४० टन नगर खाद, २० मन कूडा की खाद, ६९ टन अमोनियम सल्फेट तथा ५६ टन सुपर फॉस्फेट का वितरण किया गया।

सागर जिले में तिफनं (डिब्लिग) प्रणाली से गेहूं की बोआई का यह प्रथम वर्ष था। इस फसल का अधिक उत्पादन सुनिश्चित हो गया है।

फसल प्रतियोगिता योजनाओं के अन्तर्गत ग्राम, तहसील, जिला क्षेत्रीय स्तर पर अनेक प्रतियोगितायें आयोजित की गई, जिनमें ३५७ प्रतियोगियों ने भाग लिया। उनमें से क्षेत्रीय स्तर प्रतियोगिता में ५ प्रतियोगियों ने भाग लिया तथा जिला से क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में अधिकतम उत्पादन ४० मन प्रति एकड़ था।

इस वर्ष २३,१९१ एकड़ क्षेत्र में दोहरी फसलें बोई गई, जबकि गत वर्ष २२,४७६ एकड़ क्षेत्र में दोहरी फसल बोई गई थी। आलोच्यावधि में उर्वरकों के प्रयोग के लगभग ९९० प्रदर्शन किये गये तथा रहली, गौर झावर, तथा गठोला ग्राम-पंचायतों को यंत्र सुरक्षा सामग्री खरीदने के लिये ऋण प्रदान किये गये।

शहडोल जिले में भूमि का निर्धारण

शहडोल जिले में भूमिहीनों के लिये भूमि निर्धारण सम्बन्धी मामलों का शीघ्र निर्णय हो जाने के फलस्वरूप इस जिले में पिछले ८ वर्षों में ३५,५९९ एकड़ भूमि, ७,२४८ भूमिहीन व्यक्तियों को निर्धारित की गई है। इस वर्ष में ही अभी तक २,६५१ एकड़ भूमि १,६०२ भूमिहीन व्यक्तियों को निर्धारित की गई है।

अभी तक निर्धारित भूमि में से १८९० एकड़ भूमि ४३४ व्यक्तियों को १९५२ में, १९२९ एकड़ भूमि ४४५ व्यक्तियों को १९५३ में, ३,०८९ एकड़ भूमि ६९० व्यक्तियों को १९५४ में, ३००३ एकड़ भूमि ७३७ व्यक्तियों को १९५५ में, ६९६० एकड़ भूमि २११७ व्यक्तियों को १९५६ में, ७३९० एकड़ भूमि १३२२ व्यक्तियों को १९५७ में तथा ८,६९७ एकड़ भूमि १९०१ व्यक्तियों को १९५८ में निर्धारित की गई।

१,८७,००० एकड़ भूमि का निर्धारण अभी होना शेष है तथा प्रयत्न किये जा रहे हैं कि यह कार्य शीघ्र पूरा किया जावे।

रीवा जिले में गेहूं प्राप्ति-केन्द्र

रीवां जिले में किसानों से उचित मूल्य पर गेहूं खरीदने के लिये पांच गेहूं प्राप्ति केन्द्र रीवां, मऊगंज, हनुमना, त्योथर और बैकुंठपुर में खोले गये हैं। कृषि कल्याण बहुउद्देश्यीय समिति रीवां तथा हाट व्यवस्था सहकारी समिति हनुमना को इस कार्य के लिये शासन का अभिकर्ता नियुक्त किया गया है। पहली समिति रीवां तथा त्यौंथर केन्द्रों में गेहूं प्राप्ति कार्य करेगी तथा दूसरी समिति मऊगंज तथा हनुमना में गेहूं की खरीद आरम्भ करेगी।

इन केन्द्रों में गेहूं का क्रय यातायात व्यय को ध्यान में रखते हुए ४ श्रेणियों में विभक्त रहेगा। रीवां केन्द्र में चारों श्रेणियों की प्राप्ति की दर क्रमशः १५ रु. ३६ नये पैसे, १४ रु. ३६ नये पैसे, १३ . ३६ नये पैसे, १२ रु. ३६ नये पैसे प्रति मन होगी। मऊगंज केन्द्र में चारों श्रेणियों के लिए दरें—१४ रु. ७६ नये पैसे, १३ रु. ७६ नये पैसे, १२ रु. ७६ नये पैसे, और ११ रु. ७६ नये पैसे रहेंगी। हनुमना केन्द्र के लिये दरें १५ रु. ८ नये पैसे, १४ रु. ८ नये पैसे, १३ रु. ८ नये पैसे व १२ रु. ८ नये पैसे तथा त्यौंथर केन्द्र के लिये गेहूं की चारों श्रेणियों की दरें १५ रु. ४० नये पैसे, १४ रु. ४० नये पैसे, १३ रु. ४० नये पैसे तथा १२ रु. ४० नये पैसे रहेंगी। किसान इन केन्द्रों में स्वेच्छा से अपना गेहूं विक्रय के लिये दे सकते हैं।

बालकों के लिये अवकाश-गृह

मध्यप्रदेश की बाल कल्याण समिति और केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड ने मध्यप्रदेश में १२ से १६ वर्ष के बालकों के लिये दो अवकाश गृह संचालित करने का एक कार्यक्रम तैयार किया है। इन शिविरों में वे ही बालक प्रवेश के लिये योग्य समझे जावेंगे जिनके अभिभावकों की वार्षिक आय २,४०० रुपये अथवा इससे कम हो।

ये दो शिविर पचमढ़ी और मऊ मे २४ मई, से १४ जून १९५९ तक चलाये जावेंगे। अवकाश-गृह से तथा वहां तक की बालकों की यात्रा तथा अवकाश-गृह में उनके निवास और भोजन इत्यादि का खर्च केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड द्वारा वहन किया जावेगा। प्रत्येक गृह में २ शिक्षक नेताओं के निर्देशन में अवकाश गृहों की गतिविधियां आयोजित की जायेंगी। शिविर में बिस्तर, चादर तथा तोलिया इत्यादि भी दिये जावेंगे। बालकों को केवल अपनी व्यक्तिगत वस्तुएं ही लानी पड़ेंगी।

प्रथम क्षेत्रीय सहकारी संगोष्ठी

उज्जैन में आयोजित प्रथम क्षेत्रीय सहकारी सेमीनार की अध्यक्षता करते हुए १७ मई को राज्य के राजस्व मंत्री श्री बी. ए. मंडलोई ने यह घोषित किया कि कृषि उत्पादन के क्षेत्र में वृद्धि करने के लिये सहकारी कृषि को अपनाना होगा। इससे ग्रामीणों की अन्य समस्याओं को हल करने में भी सहायता मिलेगी।

केन्द्रीय सामुदायिक विकास उप मंत्री श्री मूर्ती ने सेमीनार का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रीय विकास कार्यक्रम में सहकारिता के महत्व पर प्रकाश डाला।

श्री मंडलोई ने आगे कहा कि छोटे भूधारियों को सहकारी कृषि के आधार पर कृषि करना चाहिए और इस कार्य के लिये छोटी सहकारी समितियों का गठन करना चाहिये। राजस्व मंत्री ने कहा कि सहकारी समितियों द्वारा साख और सेवा की सुविधाओं की व्यवस्था से सामान्य किसान की अधिकांश आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकेगी और इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए किसानों के मार्गदर्शन हेतु शासन ने सेवा सहकारी समितियों की एक रूपरेखा तैयार की है।

आपने जनता से अपील की कि वह पंचायतों के ढांचे को सुदृढ़ बनावे जिससे कि यह ग्राम प्रशासन की उन नवीन तथा भारी उत्तरदायित्वों को वहन करने में समर्थ हो सके, जिसे कि शासन उसे सौंपना चाहता है।

केन्द्रीय सरकार के उप विकास मंत्री श्री एस. एन. मिश्रा ने भी इस संगोष्ठी में भाषण दिया।

खादी ग्रामोद्योग विद्यालय में नया सत्र

माचला-इंदौर के खादी ग्रामोद्योग विद्यालय का नया सत्र एक जुलाई से प्रारंभ होगा। इसय मेट्रिक अथवा समकक्ष शिक्षा प्राप्त भाई-बहनों को प्रवेश दिया जायगा। चार मास का प्राथमिक तथा ग्यारह मास का कपास से कपड़े तक का औद्योगिक शिक्षण दिया जायगा तथा उस शिक्षण अवधि में ४० रुपये प्रति मास छात्रवृत्ति का भी विधान रखा गया है। अखिल भारत खादी ग्रामोद्योग आयोग की ओर से यह विद्यालय खादी ग्रामोद्योग संस्थाओं तथा ग्राम सेवा के लिये कार्यकर्त्ता तैयार करता है। विस्तृत जानकारी आचार्य खादी ग्रामोद्योग विद्यालय, पोस्ट माचला न्हाया कस्तूरबा ग्राम, इंदौर सें मिल सकती है।

सरकारी सम्पत्ति के गैर दावेदार कब्जाकारी व्यक्तियों के लिए प्राप्ति करार की अन्तिम तिथि ३१ जुलाई १९५९

निर्धारण योग्य सरकारी सम्पत्ति के अधिकृ कब्जेदारों को सरकारी सम्पत्ति का, सरल श पर, हस्तान्तर करने के कार्य में सुविधा पहु की दृष्टि से प्रारम्भिक किश्त की जो कब्जाकृ सम्पत्ति के कुल २० प्रतिशत जो कब्जाकृ सम्पत्ति के मूल्य के २० प्रतिशत के बरा जमा करने तथा शेष राशि को ७ समान किश् में चुकाने का करार सहकार के साथ करने की अन्तिम तिथि केन्द्रीय पुनर्वास मन्त्रालय द्वारा ३१ जुलाई १९५९ तक बढ़ादी गई है।

सरकार ने इन शर्तों की घोषणा १५ जुला १९५६ को की थी ताकि निर्धारण योग्य सरकारी सम्पत्ति के गैर दावेदार कब्जाकारी व्यक्ति कब्जा कृत सम्पत्ति प्राप्त कर सकें। इस प्रकार की सम्पत्ति, जिसका मूल्य ४० करोड़ रु. है, अभी भी गैर दावेदार व्यक्तियों के अधिकार में है तथा वे किराया वसूली छोड़ देने के निश्चय से पूरा लाभ उठा रहे हैं। इसके अतिरिक्त वे नगरपालिका के करों का भी भुगतान नहीं कर रहे हैं, क्योंकि यह सम्पत्ति अभी भी सरकार स्वामित्वाधीन है तथा ऐसे व्यक्तियों ने प्रारम्भिक राशि को जमा करने तथा सरकार के साथ इस प्रकार के करार पर हस्ताक्षर करने की दिशा में भी अभी तक कोई कदम नहीं उठाया है।

केन्द्रीय पुनर्वास मन्त्रालय ने सरकारी सम्पत्तियों के गैर दावेदार विस्थापित व्यक्तियों से कहा है कि वे निर्धारित अवधि में इस अवसर से लाभ उठा लें। जो व्यक्ति ३१ जुलाई १९५९ के पूर्व इस अवसर पत सें लाभ नहीं उठाते हैं, उन्हें सरकार सम्पत्ति से हटा देगी तथा कतिपय मामलों में अपवाद स्वरूप दावेदारों को बाद की तिथि को कब्जाकृत सम्पत्ति खरीदने की अनुमति केवल इस शर्त पर दी जाएगी कि वे १ अगस्त १९५९ तक किराये की समस्त बकाया रकम का पूरा भुगतान कर देंगे।

निर्धारित फार्म में आवेदनपत्र एडमिनिस्ट्रेटर ऑफ कालोनी, या रीजनल सेटिलमेंट कमिश्नर को भेजे जाने चाहिए।

कार्यालय तहसील लहार

प्र० क्र० ९८९।५७—३८

देवीप्रसाद पुत्र झलकन, जाति लुहार, निवासी विरखंड़ी।

बनाम

वन्सीधर, कायस्थ, विरखड़ी।

विज्ञप्ति

उपरोक्त प्रकरण में वादी देवीप्रसाद, लुहार, विरखेड़ो ने वन्सीधर, कायस्थ, विरखेड़ी के विरुद्ध जमींदारी समाप्ति विधान की धारा ३८ के अन्तर्गत ग्राम विरखेड़ी, परगना लहार की भूमि क्रमांक ३४१—ऽ१, बिला लगानी पर पक्के कृषक के स्वत्व प्राप्त करने का आवेदन-पत्र प्रस्तुत करके वन्सीधर का लावल्द फौत होना वतलाया है, जिसकी सुनवाई का दिनांक १६ जून १९५९ नियत है।

अतए व बन्सीधर प्रतिवादी का कोई वारिस हो, वह उक्त दिनांक को ऑफिस टायम पर कार्यालय में स्वयं या अपने कानूनी अभिभाषक द्वारा उपस्थित होकर जबावदेही प्रकरण करो, अन्यथा अनुपस्थिति में एकपक्षीय सुनवाई की जावेगी, बाद में कोई आपत्ति मान्य न होगी।

राजेन्द्रप्रकाश सक्सना,
प्रॉवीशनर नायब तहसीलदार,
परगना लहार म. प्र.

२२४—(२४)

सफेद दाग

सतत् परिश्रम एवं खोज के बाद सफेद दाग की औषधि का निर्माण किया गया है। हजारों ने इसका अनुभव करके लाभ उठाया है। दवा का मूल्य ६) रुपया विशेष जानकारी के लिए विवरण पत्र मुफ्त मंगाकर देखें। **नक्कालों से सावधान रहें।**

वैद्य बी. आर. बोरकर,
आयुर्वेद भवन (२५) मु. पो. मंगरूलपीर,
जिला अकोला (विदर्भ)

CHAMBAL VALLEY DEVELOPMENT GANDHI SAGAR DAM MADHYA PRADESH

Tender Notice

Sealed item rate tenders, superscribed tender for "Drilling 3' dia drainage holes" will be received by the undersigned up to 4.00 P.M. on 22nd June, 1959. The tenders will be opened on the same day at 4.30 P. M., in presence of tenderers or their representatives as may be persent. Any class of Contractors registered in this organisation of P.W.D. or any State or C. P.W.D., or M.E.S., or Indian Railways are eligible to tender.

The approximate cost of the work is Rs. 1.,00,000/-.

Period of completion of the work is four months from the date of issue of work order.

Earnest money of Rs. 1500.00 in the form of National Savings Certificates duly pledged in the name of the undersigned by designation, of challan for deposit in cash in Gandhi Sagar Sub-treasury, P. O. Chambal Hydel Works (in no case in form of currency notes) should accompany the tender, failing which the tender will not be considered.

Tender forms, together with relevant specifications, terms and conditions of contract, etc., can be obtained form the office of the undersined on payment of Rs. 5/- (Five) per sent (non refundable).

The competent authority reserves the right to reject any or all tenders without assigning any reason therefor.

D. N. NAYATE.
Executive Engineer, Divn. I' Chambal Hydel Scheme, M. P.

228/25

Tender notice

Sealed tender are invited for the supply of Ready made Uniform Articles including Ammunition Boots and Shoes for the subordinates of th Madhya Pradesh Forest Department acceptable upto 12 Noon on the 10th June 1959.

Other particulars including the detailed tender notice, tender forms etc., may be obtained from the office of the undersigned on any working day during office hours.

B. R. MISHRA,
Deputy Chief Conservator of Forests Madhya Pradesh, Rewa.

229/25-26

कार्यालय तहसील अशोकनगर

प्र० क्र० १७।५९—१८।२०

हलकू आत्मज पदमा, चमार, निवासी दियाधरी.

विरुद्ध

लालाराम पुत्र दोलती, काछी, निवासी दियाधरी.

सूचना-पत्र

बानमः—लालाराम पुत्र दोलती, काछी, निवासी
दियाधरी हाल फरार.

जोकि इस कार्यालय में तुम्हारे विरुद्ध जमींदारी समाप्ति विधान की धारा ३८ के अन्तर्गत भूमि नं. १०५३, रकबा)१, लागनी –)॥ स्थित ग्राम दियाधरी के सम्बन्ध में पक्के कृषक के स्वत्व प्राप्त करने हेतु वाद प्रस्तुत किया है। अतः आपको इस विज्ञप्ति द्वारा सूचना दी जाती है कि इस सम्बन्ध में यदि कोई आपत्ति हो तो दिनांक ६ जुलाई १९५९ को बवक्त ऑफिस टाइम उपस्थित होकर पैरवी व जबावदेही करो, अन्यथा बाद का निर्णय तुम्हारी अनुपस्थिति में किया जावेगा.

लक्ष्मीनारायण कुलश्रेष्ठ,
नायब तहसीलदार, परगना
२२७–(२५) अशोकनगर.

कार्यालय तहसील लहार

प्र० क्र० ९९०।५७—३८

परमसुख पुत्र ओछे, जाति लुहार, निवासी बिरखड़ी, परगना लहार।

बनाम

वन्साधर पुत्र रामदयाल, जाति कायस्थ, निवासी विरखरी।

उपरोक्त प्रकरण में वादी परमसुख पुत्र ओछे, जाति लुहार, निवासी विरखड़ी ने वन्सीधर पुत्र रामदयाल, जाति कायस्थ, निवासी बिरखड़ी के विरुद्ध जमींदारी समाप्ति विधान की धारा ३८ के अन्तर्गत ग्राम बिरखड़ी, परगना लहार को भूमि क्रमांक ३४५–ʃ१, बिला लगानी पर पक्के कृषक के स्वत्व प्राप्त करने के लिये आवेदन-पत्र प्रस्तुत करके वन्सीधर को लावल्द फौत होना बतलाया है, जिसकी सुनवाई का दिनांक १६ जून १९५९ नियत है। अतएव वन्सीधर प्रतिवादी का कोई वारिस हो वह उक्त दिनांक को ऑफिस टायम पर कार्यालय में स्वयं या अपने कानूनी अभिभाषक द्वारा उपस्थित होकर जबावदेही करो अन्यथा अनुपस्थिति में एक पक्षीय सुनावई की जावेगी, बाद में कोई आपत्ति मान्य न होगी।

राजेन्द्रप्रकाश सक्सेना,
प्रॉवीश्नर नायब तहसीलदार,
२२५–(२४) लहार म. प्र.

कार्यालय तहसील विजयपुर

मि० नं० ११।५९—१९।३

वारेंसिह .. प्रार्थी

बनाम

मोतीसिंह .. प्रतिप्रार्थी.

धारा २१, जा. स. वि.

सूचना-पत्र

बनाम :—नृपालसिंह पुत्र दर्शनसिंह, ठाकुर,
निवासी काठोन।

जरिये हाजा तुमको सूचित किया जाता है कि तुम्हारे विरुद्ध वारेंसिह पुत्र विशालसिंह ठाकुर, निवासी काठीन, ग्राम काठोन की भूमि क्रमांक ८६६, रकबा १) ३, लगानी ५ रुपया पर पक्के कृषक का स्वत्व मिलने के हेतु जागीर-समाप्ति विधान की धारा २१ के अन्तर्गत प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया है। अतः दिनांक १४ जून १९५९ को ऑफिस टायम पर वास्ते जवाबदेही हाजिर तहसील हो। यदि उक्त दिनांक पर उपस्थित नहीं हुए तो कोई आपत्ति विचारणीय न होगी और एकपक्षीय कार्यवाही की जावेगी.
२४ अप्रेल १९५९

एस. व्ही. देशपांडे,
तहसीलदार, परगना विजैपुर.
२२६–(२५)

मध्यप्रदेश सन्देश
में
विज्ञापन देकर लाभ उठाइए।

खजुराहो
विश्वविख्यात स्थापत्यकला की अनुपम देन
यदि आपने कभी खजुराहो के विख्यात मंदिर नहीं देखे, तो यह
पुस्तक अवश्य देखिये
यदि देखे हैं
तो उनकी स्मृति इस पुस्तक से ताजा रखिये
रायल अठपेजी, आर्ट पेपर पर मुद्रित १०२ प्लेट
अंग्रेजी और हिन्दी में
मंदिरों के इतिहास का मनोरंजक परिचय
नयनाभिराम मुद्रण : आकर्षक जिल्द : मूल्य १० रुपये
प्राप्तिस्थान
व्यवस्थापक:—प्रकाशन शाखा, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय
जयाजी चौक, ग्वालियर, म० प्र०

तीसरी योजना की ओर

(पृष्ठ ५ का शेष)

के लिए जितनी नहरें बनें और नयी रेल-पटरियां बिछाई जाएं, उन सबका पूरा-पूरा उपयोग होना चाहिए।

इससे एक लाभ यह भी होगा कि उत्पादक और उपभोक्ता दोनों के लिए ही सामान तैयार होने लगेगा, जिससे भाव के बढ़ने की आशंका नहीं रहेगी।

पूंजी

तीसरी योजना में हमें एक बात और ध्यान में रखनी चाहिए। वर्तमान साधनों को देखते हुए यह जरूरी है कि सरकारी क्षेत्र में वे ही कारखाने खड़े किए जाएं, जो उत्पादन और राष्ट्रीय आय बढ़ाने में मदद दें। जिन कारखानों को सरकार अच्छी तरह नहीं चला सकती, वे निजी क्षेत्र को सौंप दिए जाएं। एक सीमा तक सरकार ऐसा कर भी रही है। वह इस्पात के तीन कारखाने बना रही है, फिर भी उसने टाटा लोहा और इस्पात कम्पनी को उत्पादन बढ़ाने की आज्ञा दे दी है।

इस सिलसिले में एक उदाहरण देना ठीक होगा। मान लीजिए, तीसरी योजना काफी बड़ी बनाई गई है, जिसमें ९९ अरब रुपया खर्च होगा इसमें से दो-तिहाई अर्थात् ६६ अरब रुपया सरकारी क्षेत्र में और एक-तिहाई अर्थात् ३३ अरब रुपया निजी क्षेत्र में खर्च किया जाएगा।

अब मान लीजिए सरकार को अपने साधनों से ६६ अरब रुपया नहीं मिल सकता। तब हमारे पास सिर्फ दो ही रास्ते रह जाते हैं। एक तो यह कि तीसरी योजना को कम कर दिया जाए। इसका परिणाम हम दूसरी योजना के मध्य में देख ही चुके हैं। इसलिए उसी गलती को फिर दुहराना उचित नहीं।

दूसरा रास्ता यह है कि सरकारी क्षेत्र में लगने वाली पूंजी को घटा दिया जाए और निजी क्षेत्र की पूंजी को बढ़ा दिया जाए। मान लीजिए सरकार अपने साधनों से ५५ अरब रुपए का प्रबन्ध कर सकती है, तो सरकारी क्षेत्र की पूंजी ६६ अरब रुपये से घटाकर ५५ अरब रुपये और निजी क्षेत्र की पूंजी ३३ अरब रुपये से बढाकर ४४ अरब रुपये कर दी जाए। इस प्रकार एक क्षेत्र का काम दूसरे क्षेत्र को सौंपने से योजना के लक्ष्य में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

हो सकता है कि चौथी या पांचवीं योजना में सरकारी क्षेत्र अधिक पूंजी लगाने के लिए समर्थ हो जाए; परन्तु वर्तमान स्थिति में वह अधिक पूंजी नहीं लगा सकता। इसलिए इस समय निजी क्षेत्र को अधिक पूंजी लगाने और अपना विस्तार करने का पूरा-पूरा अवसर देना अदूरदर्शिता होगी।

जहां तक निजी क्षेत्र का प्रश्न है, यदि उसे मौका दिया जाए और उसकी सुविधाएं बढ़ाई जाएं तो वह बढ़े हुए लक्ष्य को भी पूरा कर सकता है।

मालवभूमि का एक मनोरम स्थल: केदारेश्वर

(पृष्ठ ६ का शेष)

रहते थे, राजकाज का संचालन भी वहीं कुंड के ऊपर बैठकर करते, उनकी अभिलाषाएं पूरी न हो पाईं, वे विश्व के सभी धर्मों के देवताओं की स्थापना वहां करना चाहते थे। वहां खाली मंदिर अभी भी मौजूद हैं। सैलाना राजकुल की कुलदेवी का मंदिर भी यहीं है। मूर्ति सैलाना लेजाई गई है।

महाराज जसवन्तसिहजी ने पुजारी को तीन गांव में चौबीस बीघे और सात बिस्वे भूमि सं. १९७४ में प्रदान की थी और मंदिर के लिए ग्राम सिमलावदा जो अब रतलाम तहसील के अन्तर्गत है, उसमें करीब ७०-७५ बीघा भूमि इस मंदिर की दुरुस्ती और व्यय के लिए प्रदान की। रकम एक कमेटी द्वारा लगाई जा रही है और जीर्णोद्धार का क्रम अभी भी चल रहा है।

विन्ध्य पर्वत श्रेणी की गोद में यह भव्य मनोरम स्थल-स्थित है। यहां शिवरात्रि और कार्तिक-पूर्णिमा पर मेला लगता है, कार्तिक में १५-२० हजार व्यक्ति दर्शन को आते हैं। वैसे सूर्य-चन्द ग्रहण, अमावस्या आदि पर यह आदिवासी जनों का तीर्थ है। वे स्नान, दर्शन को आते-जाते रहते हैं। सर्व-साधारण जनता जिन्हें इस स्थल का पता है, उनका पूरे वर्ष तांता लगा रहता है, भोजन साथ लाते हैं या बनाते हैं और मनोरंजन कर वापिस चले जाते हैं। रात्रि में विश्राम की सुविधा का अभाव होने से निवास नहीं हो पाता, अब उस अभाव की पूर्ति भी निकट भविष्य में हो रही है।

संगरमरमर का छोटा-सा केदारजी का मंदिर है। जिसमें एक बहुत बड़ा घंटा है। ऐसा घंटा शायद भारतवर्ष में दो-चार स्थल पर ही होगा। उसको बजाने में बड़ा आनन्द आता है। यह सैलाना में ही ढाला गया है। मंदिर के सामने एक गोल सुव्यवस्थित सरीखा छोटा-सा कुंड है, जिसमें आठ मास तक ४०-५० फीट ऊपर से जल की मोटी धारा गिरा करती है। कुंड १५-२० फीट गहरा है, सुन्दर जल स्नान के योग्य भरा रहता है व पानी पीने के उपयोग में भी आता है। यह प्रवाहित रहता है, उपर एक कुंई भी है।

यह है, मंदिर और स्थल का संक्षिप्त विवरण, जिससे मध्यप्रदेश की जनता को परिचय मिल सकता है, कि एक और ऐसा स्थल भी है, जहां जाकर मस्तिष्क और हृदय को बरबस आनन्द प्राप्त हो सकता है।

‘प्रगति’

सचित्र मासिक

मूल्य एक प्रति	अर्धवार्षिक शुल्क	वार्षिक शुल्क
५० नये पैसे	३ रुपये	६ रुपये

ठोस पाठ्य सामग्री, जिसमें अधिकृत सरकारी सूचनाएँ व विकास संबंधी गतिविधियों के समाचार सम्मिलित होते हैं।

समस्त सार्वजनिक कार्यों, शिक्षकों, छात्रों के सूचना संदर्भ के लिये परमोपयोगी सिद्ध हुआ है।

आज ही वार्षिक शुल्क निम्न पते पर मनीआर्डर द्वारा अग्रिम भेज कर ग्राहक बनिये और लाभ उठाइये।

प्रकाशन शाखा,
सूचना विभाग, मध्यप्रदेश शासन,
बाड़ा चौक, लश्कर, ग्वालियर.

सेल्स आफिस २५–जवाहर मार्ग, इंदौर सिटी

न्यायालय तहसील परगना श्योपुर

मि० नं० ६।५८-१८।२०.

बोरबल इत्यादि मीना, अडूसा—-प्रार्थी।

बनाम

मुस० चंपा माली, वितरपुर—-प्रतिप्रार्थी।

जमींदारी समाप्ति विधान, धारा ३८.

सूचना-पत्र

बनाम—-मुस० चम्पा, विधवा गेंदीलाल, माली, (पक्का कृषक ग्राम अडूसा) साकिन विजयपुर।

प्रार्थी तोरमल रामधन, मंशा रामचरन नाबा. सरपरस्त मुस० नारायनी माता खुद, मीना साकिन ग्राम अडूसा, परगना श्योपुर, मंडल मुरैना ने ग्राम अडूसा की भूमि क्रमांक २४१-१२।।।३, लगानी २४।।।) पर स्वत्व पक्के कृषक मिलनें बाबत आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया है। तुम्हारे नाम तामील जारी की गई परंतु पता नहीं चलने से जयें विज्ञप्ति सूचना दी जाती है कि इस संबंध में यदि कोई आपत्ति हो तो वह लिखित रूप में दिनांक १ जून, १९५९ पर प्रस्तुत करो। नियत दिनांक के पश्चात् आपत्ति पर विचार न होगा।

डी. वी. खानवलकर,

नायब तहसीलदार, परगना श्योपुर.।

२३३-(३२)

न्यायालय तहसील परगना श्योपुर

मि० नं० २२।५७-१८।२०

मुस० नारायणी बलाई, जैनी —-प्रार्थी।

बनाम

बनवारीलाल ब्राह्मण, सोरूगी—-प्रतिप्रार्थी.

जमींदारी समाप्ति विधान धारा ३८.

सूचना-पत्र

बन-—-बनवारीलाल पुत्र गुलाबचंद, ब्राह्मण, (पक्का कृषक ग्राम सेवापुर) निवासी सोरूगी।

प्रार्थी मुस० नारायनी पति कजोड मनफल नाबा० सर० मु० नारायनी, बलाई, साकंन ग्राम जेनी परगना श्योपुर, जिला मुरैना ने ग्राम सेवापुर की भुमि क्रमांक ३५८, रकबा ७।ऽ पर पक्के कृषक के स्वत्व मिलने बाबत आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया है। तुम्हारे नाम तामील जारी की गई परन्तु पता नहीं चलने से जयें विज्ञप्ति सूचना दी जाती है कि इस संबंध में यदि कोई आपत्ति हो तो वह लिखित रूप में दिनांक ६ जून, १९५९ पर प्रस्तुत करो। नियत दिनांक के पश्चात् आपत्ति पर विचार न होगा।

डी. वी. खानवलकर,

नायब तहसीलदार, परगना श्योपुर।

२३१-(२५)

दस्यु-अभियान की सफलता

दस्यु बाबूखां द्वारा आत्म-समर्पण

कुख्यात दस्यु लालसिंह के दल के बाबू नामक सदस्य ने १६ मई को एन्डोरी क्षेत्र में रा पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण किया। यह द भिंड जिले के एंडोरी पुलिस क्षेत्र के अंतर्गत की पाली ग्राम का निवासी था।

कुख्यात डाकू गोली का शिकार

भिण्ड पुलिस विगत १४ मई को लाखन डाकू के दल के एक सदस्य हरविला डाकू का अन्त करने में सफल हो गई है। भिण्ड जिले के उमरी थाने के अन्तर्गत एन्ती पाण्ड्री की बीहड़ों में हाल में भिण्ड पुलिस द्वारा घेरा डाला जाने पर जो मुठभेड़ हुई उसमें डाकू गोली से मारा गया। मृत डाकू अने जघन्य अपराधों के लिए उत्तरदायी था।

कुख्यात डाकू मारा गया

छतरपुर की पुलिस डाकू मूरतसिंह के द के एक सदस्य कुख्यात डाकू पृथ्वीराज को गोली से मार डालने में सफल हुई है। यह कुख्या डाकू हाल ही में पुलिस और डाकुओं के बी हुई एक मुठभेड़ में गोली से मारा गया। यह मुठ पुलिस और डाकुओं के दल के बीच उस हुई जब पुलिस दल को यह सूचना मिली कि छतरपुर जिले के वक्षवाहा पुलिस स्टेशन के अन्तर्गत सगोनिया हरगांव के कल्कूनाला में दल उपस्थित है। पुलिस ने मृत डाकू के से बिना लाइसेन्स की एक बन्दूक भी बरा की। इस डाकू की अनेक जघन्य अपराधों के सिलसिले में तलाश थी।

भारत सरकार से "रजिस्टर्ड"

सफेद दाग

इस परिक्षित दवा से स्त्री पुरुष या बालकों के शरीर पर के सफेद लाल दाग शरीर के त्वचा के समान पूर्ववत सुन्दर होते हैं। हजारों ने अनुभव करके प्रशंसा पत्र भेजे हैं मूल्य ५) रुपये अधिक विवरण मुफ्त मंगाकर देखिये।

वैद्य के. आर. बोरकर (मध्य.), मु. पो. मंगरूल-पीर जि. अकोला (विदर्भ)

इंजेक्शन आदि ट्रेनिंग सेन्टर

मैं इंजेक्शन लगाना, बनाना शरीर विज्ञान मौलिक रोगनिदान चिकित्सा स्टेथिस्कोप डूस एनीमा थर्मामीटर नाड़ी आदि १७ विज्ञान शिक्षाएं प्रैक्टीकल परीक्षा रजि. वी. प. बोर्ड के सार्टीफिकेट ४८ इंजैक्शन सिरेंज नीडिल भेंटस्वरूप मुफ्त मिलती १५ दिन में योग्य बना दिया जाता है, फीस ५१।।) की बजाय ४६।।) करदी गई है, कोई कहीं पर २० विद्यार्थी एकत्रित कर लेते हैं, तो वहां शिक्षक पूरे सामान औषधालय के साथ भेजकर ट्रेनिंग सेन्टर खोल देते हैं, सेन्टर खुलवाने पर १००) भेंट में हम देते हैं। आवेदन-पत्र नियमावली मंगा लीजियेगा ललितपुर में सदैव शिक्षण कोर्स चलते हैं, १०) (दस रुपया) भेजकर सीट रिजर्व करालें।

पता—-से० एस. एस. विद्यापीठ वी., परीक्षा बोर्ड, (रजि.) ललितपुर, (झांसी), उ. प्र.

२२०-(२४)

सार्टीफिकेट जरूरी है

हर इलाज करनेवालों को योग्यता वैद्यक, यूनानी, होम्यो०, के सर्टिफिकेट करने रजि. प. वोर्ड की नियमावली आवेद मुफ्त मंगा लेना चाहिये।

पता—

से० एस. एस. विद्यापीठ बी. परीक्षा (रजि.) ललितपुर (झांसी), उ. प्र.

राज्य के कोने-कोने से

मध्यप्रदेश में खरीफ-उत्पादन-अभियान

आगामी खरीफ मौसम में कृषि-कार्यों को गति प्रदान करने के उद्देश्य से समूचे मध्यप्रदेश में प्राथमिक तैयारियाँ आरम्भ कर दी गई हैं। संभागों में लक्ष्यों को निर्धारित करने तथा अभियान को गति प्रदान करने के उद्देश्य से विभिन्न स्तरों पर समितियाँ गठित की गई हैं।

विलासपुर संभाग में

विलासपुर जिले में ३,००० एकड़ भूमि पर बाँध बनाने का प्रस्ताव किया है तथा इस कार्य के लिए २,४०,००० रुपये की राशि निश्चित की गई है। यह भी तय किया गया है कि १,८०,००० रुपयों की धनराशि ऋण के रूप में किसानों को दी जाय। सरगुजा जिले में ९०० एकड़ भूमि पर मेड़ें बनाई जायेंगी, जिनका अनुमानित व्यय ७२,००० रुपये होगा तथा किसानों को ५४,००० रुपये के ऋण दिये जायंगे, इसी प्रकार रायगढ़ जिले में ४०,००० रुपये के व्यय से १०० एकड़ भूमि पर बांध बनाने का निश्चिय किया गया है तथा किसानों को ३०,००० रुपये के तकावी ऋण भी दिये जायंगे।

रायपुर संभाग में

रायपुर संभाग में खरीफ-उत्पादन बढ़ाने और विभिन्न क्षेत्रों के प्रयत्नों को सम्बद्ध करने के लिए संभाग जिला तथा खण्ड-स्तरों पर खरीफ अभियान-समितियाँ गठित की गई हैं। संभागीय खरीफ-अभियान-समिति की बैठक अभियान के लक्ष्य निश्चित करने तथा खण्ड और खण्ड-क्षेत्र के बाहर के किसानों को बीज, उवरंक तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति करने के प्रश्न पर शीघ्र ही होगी।

रीवा जिले में

हाल ही में जिला खरीफ-अभियान-समिति की एक बैठक में यह निश्चय किया गया है कि खंड तथा तहसील-क्षेत्रों में ५४ बीज-वितरण-केन्द्र खोले जावें तथा किसानों में ४,६०० टन धान, १,५३० मन सन और ९२ मन मूंगफली के बीज तथा उन्नत औजार वितरित किये जावें। ३६ केन्द्रों द्वारा लगभग २१३ टन उर्वरक वितरित किये जावेंगे। कृषि तथा सिंचाई की सुविधाएं देने के हेतु जरूरतमन्द किसानों में १,४४,५०० रुपये के तकावी ऋण वितरित किये जावेंगे। खरीफ मौसम में १०० सहकारी समितियों द्वारा १० लाख रुपये ऋण देने का लक्ष्य निश्चित किया गया है।

सागर जिले में

सागर जिले में अधिक से अधिक ग्रामों की जनता को सामूहिक रूप से बाँध बनाने, हरी खाद देने तथा बीजों का चुनाव करने के कृषि-कार्यों में सहायता देने तथा मार्ग में दर्शन करने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। किसानों को उन्नत बीज उपलब्ध करने की व्यवस्था की जा रही है। सिंचित क्षेत्र में अधिक उपज देनेवाली अच्छी किस्म की धान बोई जावेगी तथा ऐसी जमीनों से गेहूं की दूसरी फसल प्राप्त की जावेगी।

इस जिले में जापानी प्रणाली से १,२०० एकड़ भूमि पर धान की खेती करने का लक्ष्य निश्चित किया गया है। विभिन्न केन्द्रों से लगभग ५० टन उर्वरक वितरित किया जावेगा। ग्रामीणों को खाद के सम्बन्ध में आत्मनिर्भर बनाने के लिए एक पाक्षिक अभियान प्रत्येक खण्ड में आरम्भ करने का प्रस्ताव है। प्रत्येक विकास-खण्ड में १,५०० एकड़ हरी खाद डाली जावेगी। प्रत्येक ग्रामसेवक क्षेत्र में २०० एकड़ भूमि पर सामूहिक रूप से बांध भी बनाये जावेंगे। यह भी प्रस्ताव है कि खरीफ मौसम में प्रत्येक ग्राम में दो निजी प्रदर्शन खण्ड स्थापित किये जावें।

शिक्षकों द्वारा ३४,४०६ रुपये मूल्य का श्रमदान

सागर जिले की रहली जनपद सभा की प्राथमिक शाला के शिक्षकों ने कुछ ही समय पूर्व मनाये गये 'श्रमदान-पक्ष' में उल्लेखनीय कार्य किये हैं। श्रमदान पक्ष में ७१ ग्रामों में, ३४,४०६ रुपये मूल्य का श्रमदान किया गया, जिसके अन्तर्गत ९९५ गज लंबे मार्गों का सुधार अथवा नव-निर्माण किया गया, ७ नये शाला-भवनों का निर्माण किया गया, ६५ मिश्र खाद कूप तथा ३४ शोषक कूप खोदे गये, ५ रपट तथा ४ नये कुओं का निर्माण किया गया और १६ पुराने कुओं का जीर्णोद्धार किया गया।

विकास-कार्यों के लिए शिक्षकों में सक्रिय सहयोग की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से यह निर्णय किया गया है कि सर्वोत्तम शाला को एक रजत 'चलित विजयोपहार' पुरस्कार स्वरूप दिया जाये तथा इस दिशा में किये गये उल्लेखनीय कार्यों के लिए कुछ शिक्षकों को एक वर्ष की वेतन-वृद्धि अग्रिम दी जाये।

छुईखदान में महिला-सम्मेलन

दुर्ग जिले के छुईखदान-विकास-खंड में हाल ही में एक महिला सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। सम्मेलन में विविध विकास-कार्यों में महिलाओं के सहयोग के महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर चर्चा की गई तथा उनसे यह अपील की गई कि वे गाँवों में चल रहे विभिन्न विकास-गतिविधियों में भाग लें।

शारदा देवी मेले में योजना-प्रदर्शनी

सतना जिले के मैहर में, कुछ समय पूर्व, शारदा देवी मेले में एक योजना-प्रदर्शनी आयोजित की गई। प्रदर्शनी में विभिन्न विभागों यथा सूचना एवं प्रकाशन, उद्योग, कृषि, पशुपालन और महिला मंडल ने अपने स्टॉल लगाये। सूचना और प्रकाशन विभाग का स्टॉल आकर्षण का प्रमुख केंद्र था, जिसमें प्रथम पंचवर्षीय योजना की सफलताओं और द्वितीय पंचवर्षीय योजना के लक्ष्यों का प्रदर्शन चार्टों, नक्शों, चित्रों और अन्य नमूनों द्वारा किया गया था। इस प्रदर्शनी को लगभग २५,००० लोगों ने देखा जो अधिकांशतः ग्रामों से आये थे।

समतल बांध का निर्माण

तीन सर्किल केडेट कोर मध्यप्रदेश के ८००से अधिक एन. सी. सी. छात्र सैनिकों का वार्षिक संयुक्त सैनिक सेवा-शिविर बैतूल जिले के सांपना बांध पर आयोजित किया गया है। छात्र-सैनिकों द्वारा किये जाने वाले इस समाज-सेवा-कार्य के अंतर्गत खेतों में समतल बांध बनाये जावेंगे, जिनसे यह लाभ होगा कि वर्षा-जल का जो प्रवाह पहले खेतों को काटकर फसलों को बहा ले जाता था, वह अब एक निश्चित दिशा में बह जाएगा, साथ ही ऊपरी भूमि की सतह भी मजबूत बन सकेगी।

यह शिविर १५ मई को आरंभ हुआ था तथा २८ मई को समाप्त हो गया। इस शिविर में मध्यप्रदेश के एन. सी. सी. की २२ इकाइयों के छात्र-सैनिको ने भाग लिया।

शासन की गतिविधि

चम्बल सिंचित क्षेत्र में रोपणियों की स्थापना

मध्यप्रदेश शासन ने चम्बल द्वारा सिंचित क्षेत्र में कृषि-प्रक्षेत्रों में रोपणियों तथा आदर्श फलवाटिकाओं की स्थापना करने के लिए चालू वित्तीय वर्ष में ४४,००० रुपये की धनराशि स्वीकृत की है।

उक्त योजना के अन्तर्गत यह प्रस्ताव है कि चम्बल द्वारा सिंचित क्षेत्र में उन स्थानों का सर्वेक्षण किया जाए। जहां बागवानी के विकास की संभावनाएं हैं, उन उपर्युक्त वृक्षों का पता लगाया जाए, जिनका उपयोग विस्तार के लिए किया जा सकता है तथा फल-बागों को लगाने में किसानों को मार्गदर्शन दिया जाए। यह भी प्रस्ताव है कि भिण्ड एवं मुरैना जिलों में स्थित ३ वर्तमान कृषि प्रक्षेत्रों में ३ एकड़ भूमि पर रोपणियों तथा ३ एकड़ भूमि में आदर्श फल-वाटिकाएं लगाई जाएं। ये रोपणियां भावी फल-उत्पादकों के लिए विश्वसनीय रोपण-सामग्री की पूर्ति करेंगी तथा प्रदर्शन-हेतु आदर्श फल-वाटिकाएं भी सिद्ध होंगी।

चम्बल प्रक्षेत्र पर क्षेत्रीय परीक्षणों के लिए ५९,००० रुपए स्वीकृत

मध्यप्रदेश शासन ने वर्तमान तीन चम्बल प्रक्षेत्रों पर कृषि सम्बन्धी और क्षेत्रीय प्रयोग करने तथा कृषकों के खेतों पर प्रदर्शन करने के लिए चालू वित्तीय वर्ष में ५९,००० रुपये की राशि स्वीकृत की है।

इस योजना के अनुसार यह प्रस्ताव है कि चम्बल सिंचित क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की भूमि वाले बड़ोदा (श्योपुर) जौरा और भिंड स्थित वर्तमान प्रक्षेत्रों में से प्रत्येक प्रक्षेत्र में कृषि खाद तथा सिंचाई के पहलुओं पर उत्तम कृषि सम्बन्धी प्रयोग किये जाएं और इस बात का निश्चय किया जाए कि सिंचित कृषि में किस प्रकार का फसल-परिवर्तन उचित है। इस योजना के अन्तर्गत आवश्यक कर्मचारी नियुक्त किये जा चुके हैं। ये कर्मचारी किसानों के खेतों पर प्रदर्शन भी करेंगे। यह भी प्रस्ताव है कि इन तीनों प्रक्षेत्रों में से प्रत्येक प्रक्षेत्र में ५० प्रदर्शन किये जाएँ।

अनुसूचित आदिम जातियों को प्रशिक्षण सुविधाएँ

आदिम जातियों के युवकों को प्रशिक्षण देने की दृष्टि से राज्य शासन ने रायगढ़ जिले की सारंगगढ़ तहसील के चुरेला गांव में चमड़े के सामान का एक प्रशिक्षण तथा उत्पादन-केन्द्र स्थापित किया है। यह केन्द्र, जो आदिम जातियों को प्रशिक्षण देने के लिए खोला गया है, द्वितीय पंचवर्षीय योजना-काल में महाकौशल क्षेत्र की अनुसूचित आदिम जातियों के कल्याण के लिए, केन्द्रीय सरकार द्वारा आरम्भ की गई योजनाओं के अन्तर्गत स्थापित किया गया है। इस संस्था में १० प्रशिक्षणार्थी भरती किये जायेंगे, तथा इनमें से प्रत्येक को ३० रुपये प्रति मास शिष्यवृत्ति मिलेगी। इस योजना के अन्तर्गत ५, खुरई (सागर जिला), पाटन (जबलपुर जिला), किरनपुर, (बालाघाट जिला) बालोदा बाजार, (रायपुर जिला) तथा मस्तूरी (बिलासपुर जिला) में स्थापित किये गये हैं।

दतिया जिले में कृषि-गतिविधियां

दतिया जिले में १९५८-५९ वर्ष में खाद्य उत्पादन में अभिवृद्धि करने के भरसक प्रयत्न किये गये। किसानों को वित्तीय तथा तांत्रिक सहायता दी गई। आलोच्य अवधि में १३,५६७ मन उन्नत बीज, १,१७६ टन मिश्र खाद तथा ६१ टन उर्वरक वितरित किये गये। जिले में उन्नत कृषि प्रणाली के कुल १७३ प्रदर्शन किये गये। ३०० एकड़ खेतों में पौधों के संरक्षण का काम किया गया तथा ७,१७६ मन बीजों पर कीट-नाशक औषधि डाली गई।

सिंचाई की सुविधाओं में अभिवृद्धि करने की दृष्टि से कृषकों को २९,५०० रुपये के ऋण तथा अर्थ सहायता के रूप में ७३५० रुपये दिये गये। भूमि सुधार कार्यक्रम भी सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया गया तथा आलोच्य अवधि में उस पर ४५,३४९ रुपये खर्च किये गये।

सीधी में महिला शिविर

सीधी में हाल ही में भारत सेवक समाज के तत्वावधान में एक दस दिवसीय महिला शिविर आयोजित किया गया। ४० महिलाओं ने इस शिविर में भाग लिया। इस शिविर में अन्य विषयों के अतिरिक्त ग्राम सफाई, गृह विज्ञान, तथा शिल्पों के संबंध में चर्चा की गई। इन महिलाओं को दर्जीगिरी, कटाई, खिलौने बनाने, तथा बुनाई का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। उनके द्वारा लगभग १०० रुपये मूल्य की वस्तुएं निर्मित की गईं। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन महिलाओं की रुचि के विषयों पर भाषण और चर्चाएं भी आयोजित की गईं।

सैनिकों द्वारा समाज सेवा

बिलासपुर संभाग के मार्च-अप्रैल मास के मासिक प्रतिवेदन में कहा गया है कि विगत अप्रैल १९५९ को नगर-सैनिकों ने रेल के एक डिब्बे को जलने से बचा लिया, जिसमें विद्युत तारों की किसी त्रुटि के कारण आग लग गई थी। नगर-सैनिकों का एक दस्ता एक डिब्बे में रायपुर जा रहा था। जब उनमें से एक सैनिक ने आग देखी तब सैनिकों ने अविलंब कार्यवाही करके शीघ्र ही अग्नि पर नियंत्रण पा लिया और इस तरह एक भयंकर दुर्घटना को घटने से बचा लिया।

दुर्ग जिले के छुईखदान के एक निवासी का भी घर इसी प्रकार एक सैनिक श्यामाप्रसाद की सामयिक कार्यवाही के परिणामस्वरूप बच गया।

पीतमपुर के मेले में नगर सैनिकों ने स्थानीय अधिकारियों को मां-बाप से बिछुड़े हुए बच्चों को खोजने में बहुमूल्य सहायता दी।

बस्तर जिले के भानपुरी तथा जगदलपुर स्थानों में सैनिकों ने ऐसे कुछ निर्धन व्यक्तियों की अंत्येष्टि क्रिया करने में सहायता पहुंचाई, जिनके कोई संबंधी नहीं थे।

आरक्षी केन्द्र घटिया ग्राम का उद्घाटन करते हुए मुख्य मंत्री डॉ० कलासनाथ काटजू

* * *

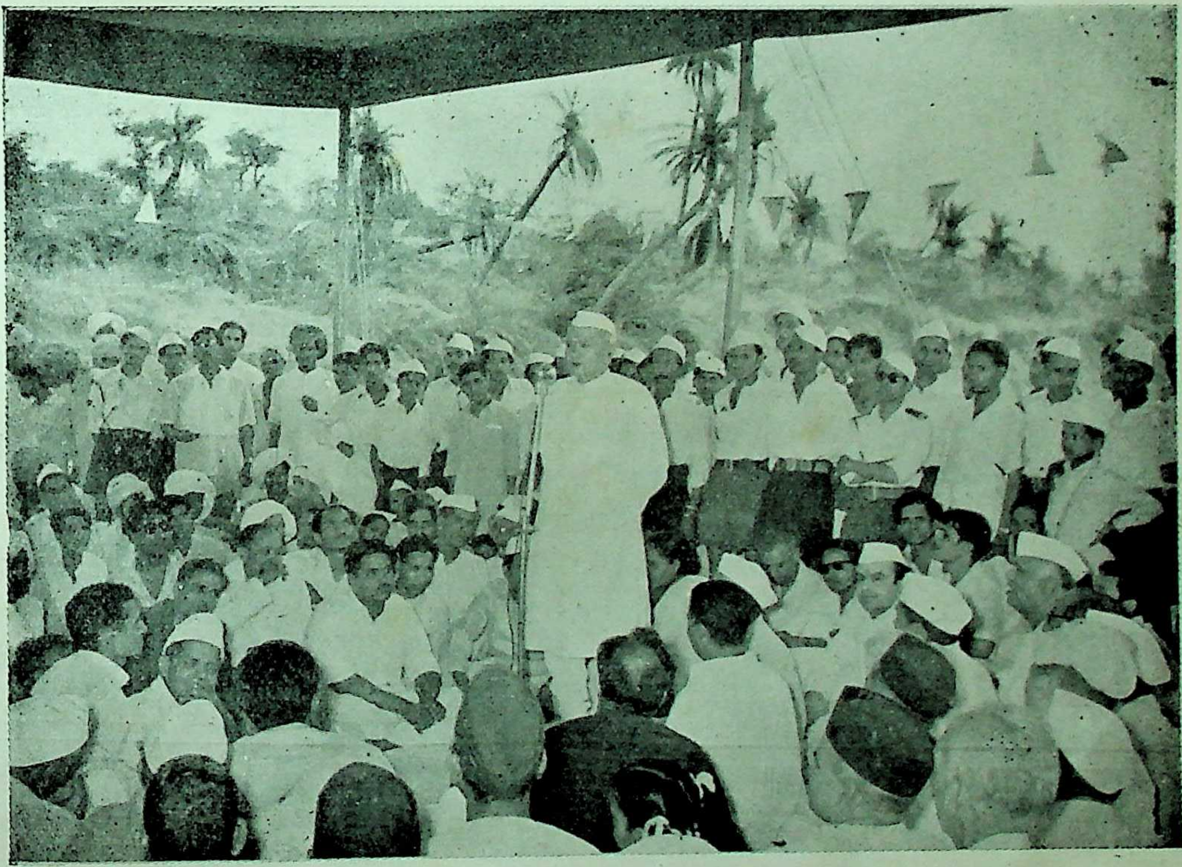

रतलाम के समीप मालती नदी पर गोंडवाडा बाँध के उद्घाटनोपरान्त जनसमूह को संबोधित करते हुए राज्य के मुख्य मंत्री डा० काटजू

Registered No. J. 158
Licenced to post Without prepayment

MADHYA PRADESH SANDESH

वार्षिक मूल्य छः रुपये
Licence No. P. P. 1

बच्चों के
पोषण के लिए
इतने अच्छे!

दिन भर बच्चे जो शक्ति ख़र्च करते हैं उस की पूर्ति के लिए उन्हें ठीक प्रकार के आहार की आवश्यकता है।

जे. बी. मंघाराम के एनर्जी फ़ूड बिस्कुट बच्चों के लिए एक आदर्श पौष्टिक आहार के नाते मशहूर हैं। स्वास्थ्यरक्षक नियमों के आधीन एयरकंडीशन्ड फ़ैक्टरी में गेहूँ, दूध, माल्ट और ग्लुकोस में बनाए जाते हैं — और ये विटामिन से भरपूर हैं।

जे. बी. मंघाराम के
एनर्जी फ़ूड
बिस्कुट

जे. बी. मंघाराम ॲण्ड कं.
ग्वालियर और हैदराबाद, भारत

18-6

रेडियो सीलोन मिलाइए—जे. बी. मंघाराम का नया शो "जे. बी. मंघाराम का संगीत खजाना" प्रत्येक रविवार को प्रातः १० बजे से १०.४५ बजे तक सुनिये और १००) का नगद पुरस्कार लीजिये

स्थानीय एजेन्ट—
प्रीतम स्टोर्स, जयाजी चौक व पाटनकर बाजार, लश्कर

न्यायालय तहसील परगना श्योपुर

मि० नं० १८५।५६, १८।२०

सुखदेव मीना, सामरसा .. प्रार्थी।
बनाम
रामनारायन इत्यादि कीर सामरसा .. तिप्रार्थी

जमींदारी समाप्ति विधान, धारा ३८.

सूचना-पत्र

बनाम.——रामनारायन व पहलाद पुत्र हरिया, मुस० नाथी बेवा हरिया, जाति कीर, (पक्का कृषक ग्राम सामरसा) साकिन सामरसा।

प्रार्थी सुखदेव पुत्र भवरलाल मीना, निवासी सामरसा, परगना श्योपुर, मन्डल मुरैना, ने ग्राम सामरसा की भूमि क्रमांक ६६-।ऽ१, ६७-२ऽ४, ६८-६।।।ऽ१, जुमला ९।ऽ१, लगान ६।)। रुपये पर स्वत्व पक्के कृषक मिलने बाबत आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया है। तुम्हारे नाम तामील जारी की गई, परन्तु पता नहीं चलने से जर्ये विज्ञप्ति सूचना दी जाती है कि इस संबंध में यदि कोई आपत्ति हो तो वह लिखित रूप में दिनांक २ जून, १९५९ पर प्रस्तुत करो। नियत दिनांक के पश्चात् आपत्ति पर विचार न होगा।

डी. वी. खानवलकर,
नायब तहसीलदार, परगना श्योपुर।

२३२-(२५)

(भारत सरकार से रजिस्टड)

सूखामृत पर मुफ्त इनाम

सूखा व अन्य बाल रोगों की अत्यन्त लाभप्रद औषधि। दवा की प्रसिद्धि के लिए प्रत्येक दर्जन पर १ केलेण्डर, १९५९ का व एजेन्सी रोग पुस्तक मुफ्त मँगावे। मू. १ शीशी १ रु. २५ नये पैसे (खर्च अलग)

श्री धर्नसिह आयुर्वेद भवन बरई-ग्वालियर

(२४—३)

प्रबंध सम्पादक—ईश्वरसिंह परिहार, संचालक सूचना एवं प्रकाशन संचालनालय, मध्यप्रदेश
सम्पादक—अनन्त मराल शास्त्री

देवेन्द्र नारायण वाजपेयी, मुख्य सम्पादक, सूचना-प्रकाशन संचालनालय, म. प्र. द्वारा प्रकाशित तथा गवर्नमेंट रीजनल प्रेस, ग्वालियर द्वारा मुद्रित
एक प्रति का मूल्य—१३ नये पैसे

ग्वालियर, शनिवार, १८ जुलाई, १९५९।
वर्ष ३] २७ आषाढ़, १८८१ [अंक ३२

मध्यप्रदेश सन्देश

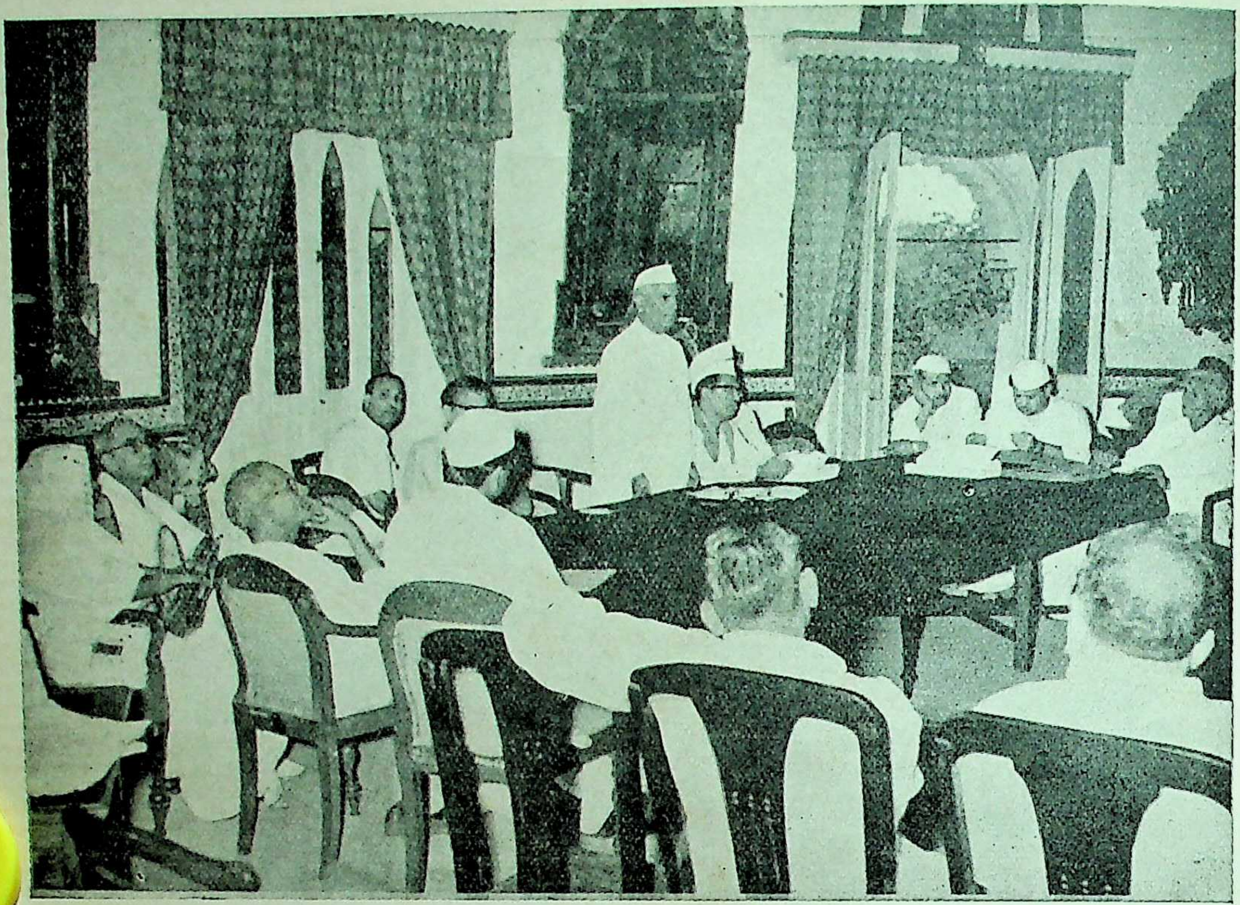

रीवा में वन-निस्तार-समिति की बैठक में अध्यक्षीय भाषण करते हुए राज्य के वन मंत्री श्री शंभूनाथ शुक्ल।

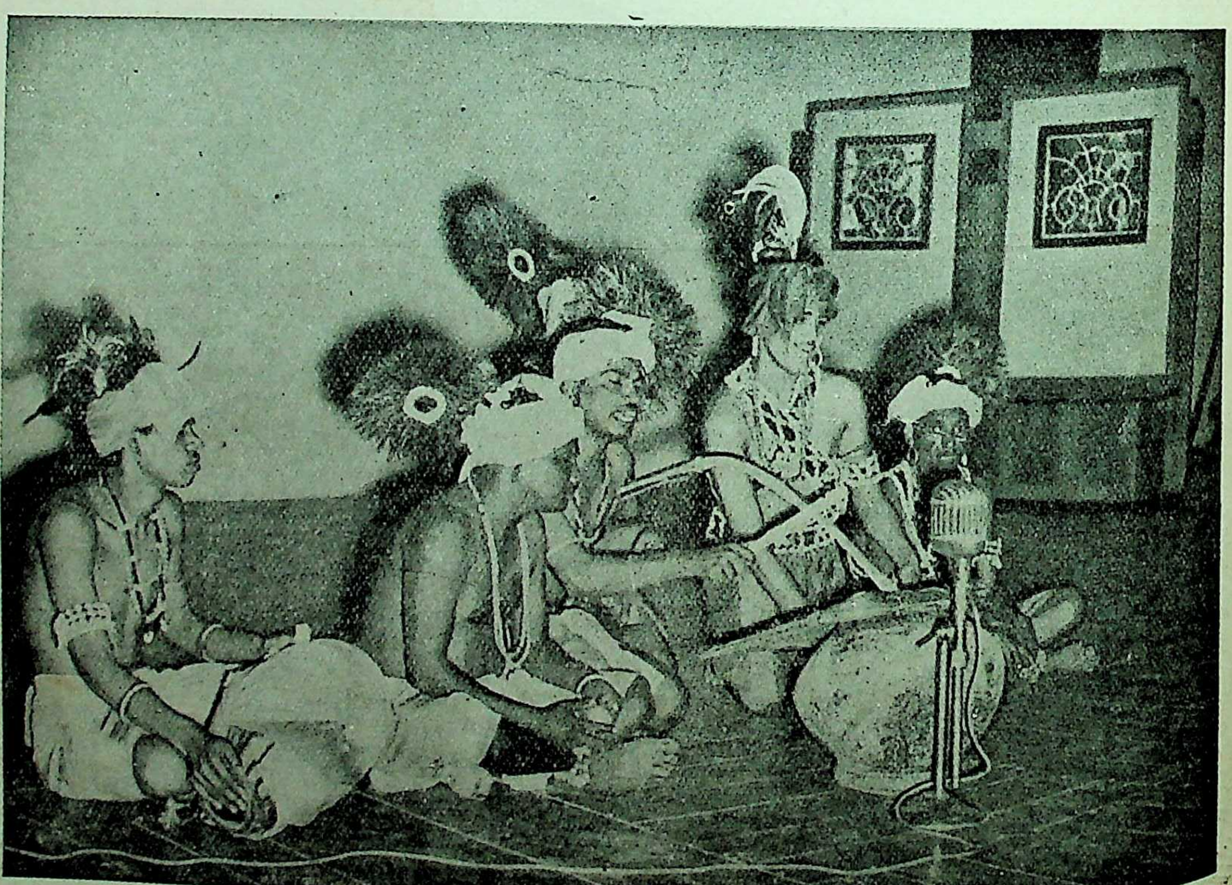

बस्तर के डी. सेनापति और उनका दल, आकाशवाणी, इन्दौर द्वारा आदिवासी लोकगीत और नृत्य प्रसारित करते हुए।

सचित्र साप्ताहिक
मध्यप्रदेश सन्देश

गाँधी सागर बाँध तैयार

चम्बल-योजना का महत्त्वपूर्ण अंग गांधी-सागर बांध बनकर तैयार हो गया। आज उसमें अथाह जल लहरा रहा है। पूर्णतः भरने पर इस जलराशि का विस्तार २६५ वर्गमील अनुमानित किया गया है। इस बांध के निर्माण के विषय में आज से दस वर्ष पूर्व मध्यभारत तथा राजस्थान द्वारा सम्मिलित विचार किया गया था। तद्नुसार कार्य का श्रीगणेश हुआ और आज उसके प्रथम चरण के एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग की पूर्णता देखकर हमारा हृदय आनंद से हिलोरें ले रहा है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद शासन द्वारा किये गये प्रयासों की राज्य में इस प्रकार यह अभूतपूर्व उपलब्धि मानी जा सकती है। इस कार्य में चार हजार से लेकर आठ-दस हजार श्रमिक निरंतर काम में लगे रहे। श्रमिकों और यांत्रिकों के सहयोग की यह साकार प्रतिमा है—तीर्थ है! इसके शेष अंग विद्युतालय और नहर-निर्माण-कार्य भी तेजी से चल रहे हैं। उद्योग-धंधों के लिए बिजली और खेतों के लिए पानी की व्यवस्था भी निकट भविष्य में यथाशीघ्र होने वाली है। दाहिने किनारे की प्रमुख नहर पर लगभग ७६ लाख घनफुट मिट्टी बिछाने, ४.२९ लाख घन फुट चिराई और कांक्रीट तथा ४.४२ लाख घन फुट चट्टान तोड़ने का काम सम्पूर्ण किया गया। विद्युतालय केन्द्र में मई, ५९ तक चुनाई और कांक्रीट का काम निर्धारित लक्ष्य से भी अधिक हो चुका है। नहर पर किये जाने वाले कार्यों में मिट्टी बिछाने तथा चुनाई और कांक्रीट का कार्य निर्धारित लक्ष्य का चालीस प्रतिशत पूर्ण हो चुका है। अब तक प्रायः ७५ हजार बोरे सीमेंट, १ लाख टन इस्पात और ३३ टन पत्थर के कोयले का उपयोग किया गया।

गांधी सागर बांध पर भानपुरा-गरोठ मार्ग पर रुनाखाल तथा जोरमा खाल पुलों का निर्माण प्रगतिपथ पर है। उज्जैन ट्रांसमिशन लाइन पर ७८ मील तक नींव के लिए खुदाई की गई और ऊपरी ढांचे का निर्माण किया गया। सवाईमाधोपुर-ग्वालियर लाइन पर मार्ग-सर्वेक्षण का कार्य १२० मील तक समाप्त किया जा चुका है। इसी प्रकार गाँधी सागर-नीमच शाखा पर तथा नीमच-मंदसौर शाखा पर खुदाई स्टव सैटिंग कांक्रीट डालने तथा चैक फिलिंग का काम १६ मील तक पूरा किया जा चुका है। उज्जैन-भोपाल लाइन का काम भी प्रगति पर है। क्षति पूर्ति के लिए दी जानेवाली धनराशि १९६ लाख रुपये दी जा चुकी है।

विगत २ जुलाई की संध्या को इस अनुष्ठान की पूर्ति पर दर्शकों और निकटवर्ती क्षेत्रों के कृषकों ने गांधी सागर को एक बड़े जलाशय के रूप में देखकर आनंद मनाया। इसके ९ मेहरावदार जल-निकास द्वारों से १५ हजार धन फुट जल प्रति सैकंड की गति से प्रवाहित होने लगा। गत १२ जून से २ जुलाई तक इस बांध को जल संचय के लिए रखा गया था। इस बांध की लम्बाई १,६८५ फुट तथा चौड़ाई २०४ फुट है। इसमें ६ करोड़ ८५ लाख एकड़ फुट पानी भर सकने की क्षमता है। ऐसा माना जाता है कि गांधी सागर बांध विश्व के मानव निर्मित सबसे सस्ते बांधों में से एक होगा। विद्युत-केन्द्र से सन् १९६० में बिजली की उत्पत्ति होने लग जायगी, जिसकी क्षमता ७५,००० किलोवाट होगी। यह स्मरणीय है कि चम्बल-योजना के तीनों विद्युतालयों से २,१०,००० किलोवाट बिजली उत्पन्न करने का प्रावधान है। इससे दो सौ मील के घेरे में आने वाले क्षेत्रों को बिजली दी जा सकेगी। नहरों की पूर्णता पर ७ लाख एकड़ भूमि मध्यप्रदेश की तथा ७ लाख एकड़ भूमि राजस्थान की सिंचाई का लाभ उठा सकेगी। राजस्थान के कोटा जिले में सिंचाई करने के लिए अक्टूबर १९५९ तक गांधी सागर जलाशय से ०.३ मिलियन एकड़ फुट पानी उपलब्ध होगा।

जिन क्षेत्रों में इन बांधों की बिजली और पानी की उपलब्धि होगी, उनकी आर्थिक और सामाजिक अवस्था पर अवश्य ही अच्छा प्रभाव पड़ेगा। जीवन-स्तर ऊंचा होगा और बेरोजगारी तथा कृषकों में सूखा द्वारा होने वाली अनिश्चितता समाप्त हो जायगी।

चम्बल-योजना हमारे देश की पंचवर्षीय योजनाओं में चल रहे विकास-कार्यों का एक अंग है। इससे निर्माण-कार्यों के व्यय, उनमें होने वाली कठिनाई तथा उनकी पूर्णता पर उनसे जन-जीवन को प्राप्त होने वाले लाभ का अनुभव और विश्वास होगा तथा एक की पूर्णता के पश्चात अन्य कार्यों की पूर्णता और उनसे शीघ्रातिशीघ्र लाभ उठाने के लिए जन-सहयोग में गति आ जायगी और कार्यों को शीघ्रता तथा सुन्दरता से करने के लिए प्रति-स्पर्द्धा की प्रेरक भावना जागृत होगी। हम गांधी सागर के निर्माण की सम्पन्नता पर उसके सहस्रावधि श्रमिक तथा कुशल यांत्रिकों को हार्दिक बधाई देते हैं।

मुखपृष्ठ का चित्र

मंडला के शेख गुलाब और दल द्वारा आकाशवाणी इन्दौर में प्रदर्शित 'सेलारिना' नृत्य का एक दृश्य

निर्माण की दिशा में

हरिजन तो अब काफी जाग गए हैं। वे अपनी देखभाल भी कर सकते हैं। लेकिन आदिम-जातियों की तरफ इस देश का जितना ध्यान जाना चाहिए था, उतना नहीं गया। वहाँ खाली सेवा करना काफी नहीं है। जो लोग अपने को बड़े मानकर उन पर ऐहसान जताते हुए उनकी सेवा करते हैं, वे निहायत खतरनाक काम करते हैं। असल में आदिम-जातियों के सवाल बहुत गहरे हैं। उनको तालीम के जरिए उठाना है। उनको ऐसे काम सिखाए जाएं, जिनसे वे अपनी और देश की सेवा कर सकें। कई मानों में कबायली लोग हमसे बहुत ऊपर हैं और जो आदमी उनपर अपनी संस्कृति या रहन-सहन का रंग चढ़ाने की कोशिश करते हैं, वे उनको सबसे बड़ा नुक्सान पहुँचाते हैं। हम उनको अपने गज से नापकर अपने जैसा बनाने की कोशिश करते हैं, यह सही बात नहीं है। इससे वे अपनी पुरानी दुनिया से तो उखड़ जाते हैं और नई दुनिया में जमते नहीं हैं। इसलिए, उनको जबरदस्ती अपनी तरफ नहीं खींचना चाहिए। वे बहुत शानदार और ऊँचे दर्जे के लोग हैं और उनकी संस्कृति का हमें सम्मान करना चाहिए।

—श्री जवाहरलाल नेहरू

वास्तव में भविष्य ही जीवन है, अतीत तो अतीत हो चुका। वर्तमान का अस्तित्व बहुत कम होता है। यह भविष्य ही है, जिसके लिए हम उत्साह, श्रद्धा, विश्वास और लगन दिखा सकते हैं। भारत के ये बच्चे भविष्य हैं। इनको आज अधिक सुविधाएं हैं। इनको शिक्षा पाने के अच्छे साधन हैं। ये शक्ति संकलन अधिक कर पायंगे, परन्तु हमें यह ध्यान देना चाहिये कि शक्ति-संकलन मोनोपली बन कर न रह जाय, बल्कि साझेदारी की भावना पैदा करे।

*

हमें यह जानना चाहिए कि बड़े व्यक्ति जिन उद्देश्यों के लिए जिए, वे हमारे लिए कितने स्फूर्तिप्रद हैं। महान् व्यक्ति ने मानवता की सेवा में जो कुछ किया, उसको हम कितना क्रिया में ला सकते हैं। हमारे सामने राम, कृष्ण और स्वामी विवेकानन्द हैं, जो महान् देशभक्त थे, परन्तु, वास्तव में मानवता की सेवा में जुटे हुए थे। वे राष्ट्रभक्त थे, परन्तु राष्ट्रीयता से ऊपर भी उठे हुए थे। राष्ट्रीयता उनकी भाषा में एक तंग दायरा नहीं था, जिसमें बंधकर रह जाते। मानव की सेवा ही उनका उद्देश्य था।

--श्री बी. के. कृष्णमेनन

भारतीय संस्कृति का आधार त्याग और सेवा है। महात्मा गांधी ने कहा था कि व्यक्तिगत मुक्ति के वजाय त्याग से समाज को सेवा ज्यादा होगी। कार्यकर्त्ता सचाई से अपने आदर्शों का अनुगमन करें और सर्वोदय का सन्देश अभय होकर गांवों में ले जायं। यदि वे लोगों में विश्वास उत्पन्न न कर सके, तो इसमें दोष लोगों का नहीं होगा। उन्हें अस्पृश्यता की समस्या हल करनी है। जो अभी गांवों में मौजूद है। जब यह बुराई समाज में से निकल जायगी, तभी उनको गांवों में सर्वोदय के लिए काम करने के योग्य अनुकूल वातावरण मिल सकेगा।

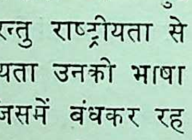

--श्री मुरारजी देसाई

संस्कृत हमारे जीवन मरण के समान है। उसके बिना हमारा सांस्कृतिक जीवन नष्ट हो सकता है। बिना संस्कृत-प्रसार और प्रचार के भारतीय भाषाएं पंगु हो जायेंगी। संस्कृत भाषा के प्रसार के लिए आसेतु हिमाचल समस्त भारतीयों में प्रेम और उत्साह उत्पन्न करना चाहिए। संस्कृत के महत्त्व और सौन्दर्य के और उसके स्थैर्य या वैज्ञानिकता के सम्बन्ध में भी प्रचार किया जाना चाहिए। संस्कृत भाषा के सम्बन्ध में भी प्रचार किया जाना चाहिये। संस्कृत भाषा के सम्बन्ध में जनता को मन से उसकी कठिनता का भ्रम दूर कर देना चाहिए और संस्कृत भाषा के प्रचार के सम्बन्ध में वे साधन जुटाने चाहिए जो जर्मन, फ्रेंच आदि भाषाओं के प्रचार के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं या किए जा रहे हैं।

संस्कृत साहित्य में ज्ञान देनेवाले अनेक स्रोत विद्यमान हैं। इसलिए हमें कोई ऐसा मार्ग निकालना चाहिए, जिससे संस्कृत की प्रगति हो सके और उसके वास्तविक गौरव को लोग समझ सकें।

--श्री दिवाकर

इस अंक में

क.	शीर्षक एवं लेखक	पृष्ठसंख्या
१.	भारत में बौद्ध धर्म का विस्तार .. —प्रो. बी. सी. बागची	५
२.	मध्यप्रदेश का अमर गायक : लोक-कवि ईसुरी —श्री गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर'	६
३.	बांसुरी-वियोग (कविता) .. —श्री नर्मदाप्रसाद त्रिपाठी	७
४.	जैन-साहित्य में मालव का आगर —श्री गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र'	८
५.	वह आदमी बना (शब्द-चित्र) .. —श्री विश्वनाथ वैशंपायन	१०
६.	हम अधिक-से-अधिक निर्यात बढ़ाएँ	१२
७.	मीट्रिक प्रणाली : एक दृष्टि .. —श्री प्रेमप्रकाश कपूर	१३
८.	यह मिट्टी का ढेला (कविता) —श्री सत्यनारायण श्रीवास्तव	१४
९.	शहरी क्षेत्रों में पानी और सफाई की व्यवस्था	१९
१०.	विज्ञान-वार्त्ता ..	२१

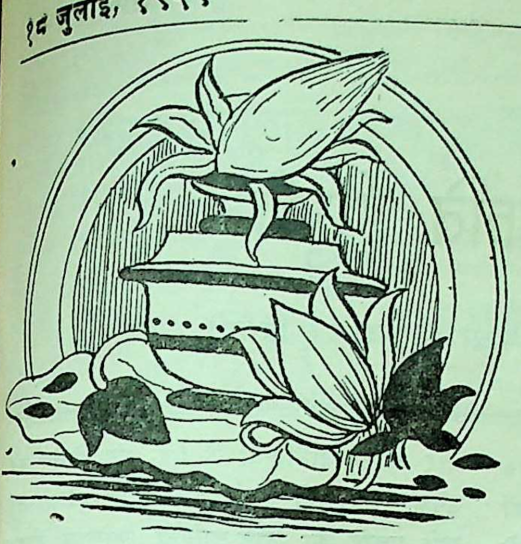

भारत में बौद्ध धर्म का विस्तार

–प्रा. बी. सी. दागची

अपने आरम्भिक काल में बौद्ध धर्म को अधिक सफलता नहीं मिली और उसका प्रसार बहुत सीमित रहा। भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद की दो सदियों तक बौद्ध धर्म देश के अन्य धर्मों में अपना कोई विशेष स्थान नहीं बना पाया था। मौर्यकाल में बौद्ध धर्म ने एक महान् धर्म का रूप ग्रहण किया।

बौद्ध धर्म को विश्व-धर्म बनाने का असली श्रेय मौर्य राजाओं को है। इस काल में बौद्ध धर्मावलम्बियों की संख्या बढ़ी और देश-देशांतरों में इसका प्रसार हुआ। तिब्बत, तुर्किस्तान, चीन, कोरिया, जापान, बर्मा, स्याम, कम्बोदिया और मलाया देश बौद्ध धर्म के अनुयायी हो गये।

सम्राट् अशोक बौद्ध धर्म के महान् पोषक थे और उनके शासन-काल में इसका बहुत विस्तार हुआ। तीसरी बौद्ध संगीति उन्हीं के शासन-काल में हुई थी। सम्राट् के अथक प्रयत्नों ने बुद्ध को विश्वधर्म बनाने में बहुत योग दिया। अपने अभिलेखों में उन्होंने लिखा है कि उन्होंने सीरिया, मिस्र, साइरेनाइका और मेसेडोनिया में धर्म-प्रचारक भेजे थे। चोला, केरलपुत्र, सत्यपुत्र और श्रीलंका में भी धर्म प्रचारक भेजे गये थे। यह भी ज्ञात हुआ है कि उन्होंने नेपाल, कश्मीर और सुवर्णभूमि में भी धर्मदूत भेजे।

इन धर्मप्रचारकों को भारत में और विदेशों में बौद्ध धर्म का प्रचार करने में बहुत सफलता मिली। सम्राट् अशोक के शासन-काल के बाद के बौद्ध शिलालेख तथा स्मारक इस तथ्य के अकाट्य प्रमाण हैं। आज, भगवान बुद्ध के निर्वाण के २,५०० वर्ष बाद भी अगर कैंडी, श्रीलंका से लेकर कामाकूरा, जापान तक के दूर-दूर के लोगों को गौतम बुद्ध की शांत मुद्रा परस्पर प्रेम और शांति का संदेश देती है, तो उसका कारण यही है कि एक जमाने में भारत में सम्राट् अशोक जैसा महान् व्यक्ति हुआ था और उसने भगवान् बुद्ध के इस संदेश को दूर-दूर तक पहुंचाने का अथक प्रयत्न किया था।

बौद्ध सम्प्रदाय

बौद्ध धर्म का तेजी से विस्तार होने के कारण बौद्ध धर्मावलम्बियों के कई सम्प्रदाय बन गये। इस सम्प्रदायों का गठन सैद्धांतिक मतभेदों के कारण नहीं, बल्कि भौगोलिक कारणों से हुआ। यह ध्यान रखने की बात है उस काल में दूर-दूर तक संवाद भेजने का कार्य बहुत कठिन था। ये सम्प्रदाय अधिक समय तक नहीं रहे, बल्कि कुछ समय बाद एक-दूसरे में मिल गये और अंततोगत्वा महायान और हीनयान नामक दो प्रमुख बौद्ध सम्प्रदाय बने। हीनयान सम्प्रदाय के लोग बुद्ध को भगवान के रूप में नहीं, बल्कि एक शिक्षक के रूप में मानते थे। इस संप्रदाय का जोर श्रीलंका और दक्षिण भारत में रहा। महायान सम्प्रदाय ने बुद्ध को ईश्वर के रूप में माना, जो कुशानों, तातारों, और मंगोलों को ज्यादा जंचा। चीन, जापान, तिब्बत और मंगोलिया में महायान सम्प्रदाय को ही स्वीकार किया।

मौर्यकाल में बौद्ध धर्म को जो राजकीय सहायता और मान्यता प्राप्त थी, वह शुंग राजाओं के शासनकाल में न रही। यहां तक कि पुष्यमित्र ने बौद्धों को कष्ट भी दिये। किन्तु बौद्ध धर्म इतना लोकप्रिय था कि विरोध होने पर भी उसका ह्रास नहीं हुआ, बल्कि इसके विपरीत शुंग-कण्व काल में बौद्ध धर्म ने बहुत प्रगति की। भरहुत स्तूप, कार्ले कन्दराएँ और सांची स्तूप इसी काल के हैं। बौद्ध धर्म केवल मठ धर्म ही नहीं रहा, बल्कि एक लोकप्रिय धर्म बन गया। भगवान बुद्ध और उनके अवशेषों की पूजा होने लगी और बौद्ध धर्म ईश्वरवादी धर्म हो गया।

इस काल में, उत्तर में यूनानियों ने बौद्ध धर्म अपनाया। राजा मेनांडर (मिलिन्द) पक्के बौद्ध थे। मोग्गलिपुत्त तिस्स ने एक यूनानी धर्मरक्षित को बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए चुना था। उन्हें अपरान्तक भेजा गया था, जहां उन्होंने प्रचार कार्य में बहुत सफलता पाई और हजारों लोगों को, जिनमें स्त्रियाँ और अभिजात वर्ग के लोग भी सम्मिलित थे, बौद्ध धर्मावलम्बी बनाया। भारत में रहनेवाले यूनानियों ने बौद्ध कला की एक नई शैली निकाली, जो भारत यूनानी शैली कहलाई और जो अधिकतर पंजाब और उत्तर-पश्चिम भारत में प्रचलित हुई।

बौद्ध धर्म के इतिहास में कनिष्ककाल विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वह बौद्ध धर्म के सिर्फ पोषक ही नहीं थे, वरन् कहा जाता है कि उनके यहां ऐसे बौद्ध विद्वान् थे, जिन्होंने बौद्ध धर्म को रूप दिया। यह नया रूप महायान इसी समय चला।

गुप्तकाल

गुप्तवंश के जमाने में बौद्ध धर्म को प्रोत्साहन मिला। यद्यपि गुप्त सम्राट् भागवत थे और ब्राह्मण धर्म में विश्वास रखते थे, किन्तु बौद्ध धर्म प्रति भी उनका रुख अच्छा था। इस काल में जो चीनी यात्री भारत आए, उन्होंने कहा कि भारत में उस समय बौद्ध धर्म के लिए बहुत अनुकूल परिस्थितियां थीं। गुप्त काल में बौद्ध धर्म का जो विस्तार हुआ वह मथुरा, नालन्दा, अजन्ता, बाघ और धनयारलतक की बौद्ध कला और तत्कालीन अवशेषों से प्रतिबिम्बित होता है।

(शेष पृष्ठ २९ पर)

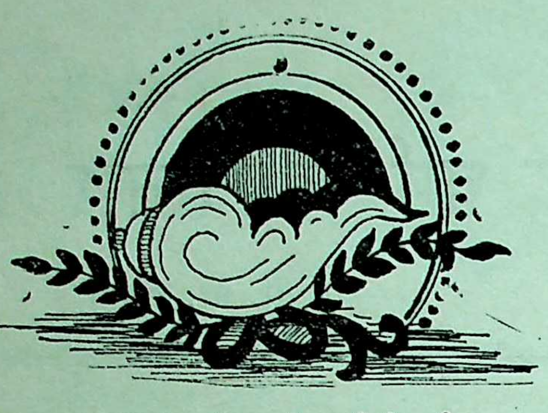

मध्यप्रदेश का अमर गायक——

लोक-कवि ईसुरी

——श्री गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर'

मध्यप्रदेश की वीर और कवि-प्रसविनी भूमि समय-समय पर कितने ही उत्तमोत्तम वीर और सुकवि उत्पन्न कर चुकी है। ऐतिहासिक तत्वान्वेषियों से यह बात छिपी नहीं है।

संस्कृत-साहित्य के सर्वोत्कृष्ट कवि बाल्मीकीय रामायग के रचयिता आदिकवि बाल्मीकजी अष्टादश पुराणों तथा महाभारत के रचयिता कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास, प्रतिभासम्पन्न सुकवि कालिदास, वीर मित्रोदय बृहद्कोष के प्रणेता मित्र मिश्र, शीघ्रबोध जैसे युगांतरकारी ग्रंथ के लेखक काशीनाथ मिश्र, आल्हाखण्ड के रचयिता जगनिक कवि, हिन्दी-भाषा के प्रथमाचार्य कवीन्द्र केशव, सतसईकार बिहारीदास और कितने ही सुकवि इसी पवित्र भूमि के ऐसे उज्ज्वल रत्न हैं, जिनसे आज भी संस्कृत और हिन्दी-साहित्याकाश आलोकित हो रहा है।

शास्त्रीय विद्वानों और कवियों के अतिरिक्त कितने ही जन-कवि इस प्रदेश में इतने प्रभावशाली हो गए हैं कि उनके गीत समूचे प्रदेश में गांव-गांव और घर-घर में बड़े ही चाव से गाए और सुने जाते हैं, उनमें से श्री गंगाधर व्यास और ईसुरी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

श्री गंगाधर व्यास तो तत्कालीन छत्रपुर नरेश के दरबारी कवि हो गए थे, किन्तु लोककवि ईसुरी ने उस सम्मान को सधन्यवाद अस्वीकार कर दिया था, वे अपनी स्वाधीनता को किसी भी मूल्य पर बेचने के लिए तैयार नहीं हुए, वैसे व्यासजी से उनकी बड़ी ही घनिष्ठता थी।

समकालीन होने के कारण वे एक-दूसरे के बहुधा अतिथि भी हुआ करते थे और उनके कविता-दंगल वर्ष में कितनी ही बार एक-एक सप्ताह तक अखण्ड रूप में चला करते थे, जिनमें उतर-प्रत्युत्तर और वाद-विवाद में खूब गहरी छनती थी, किन्तु कभी परस्पर मनोमालिन्य उत्पन्न नहीं हुआ।

लोक-कवि ईसुरी का जन्म सं० १८८१ वि० में मेंढ़की नामक ग्राम में हुआ था। मेंड़की ग्राम, मऊरानीपुर (झाँसी) से पश्चिम-उत्तर की ओर झाँसी सड़क के छठवें मील पर है।

ईसुरी के पिता श्री भोले अरजरिया ओरछा (मध्यप्रदेश) से मेंड़की आ बसे थे। वहाँ उनके सदानन्द, रामदीन और ईसुरी नामक तीन पुत्र हुए।

ईसुरी अंतिम पुत्र होने के कारण घर-भर को अत्यधिक प्यारे थे, अतएव पढ़ने-लिखने की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया जा सका, दूसरे उनको अधिकतर अपने मामा के घर पर भी रहना पड़ता था, क्योंकि उनके मामा के कोई संतान न थी। इन कारणों से पाठशाला की शिक्षा से तो ईसुरी वंचित रहे, किन्तु बड़े होने पर उनकी प्रतिभा ने ऐसा चमत्कार दिखलाया, जो इने-गिने भाग्यशीलों ही को प्राप्त होता है।

वैसे ईसुरी जमींदार के साधारण कारिंदा ही रहे। नौगांव-छत्रपुर के समीप धौर्रा और बगौरा नामक ग्रामों की जमींदारी क्रमशः दीवान जंगजीतजी और नम्बरदार चतुर्भुज की थी। उन ही के ये जीवन-भर साधारण वेतन पर कारिंदा रहे। छत्रपुर-नरेश ने कितने ही प्रलोभन देकर दरबारी-कवि बनाना चाहा, किन्तु आपने उसे स्वीकार नहीं किया।

ईसुरी के प्राप्त गीतों से यह पता चलता है कि उन्होंने प्रायः प्रत्येक विषय पर गीत गाए थे। उनके जीवन-काल में उनकी फागों को लिपिबद्ध करने का उद्योग नहीं किया गया। इधर विगत तीस वर्षों से उनकी फागों को लिपिबद्ध करने का यत्न किया जारहा है और यह संतोषजनक है कि बुद्धिवादी वर्ग उनकी फागों से यथेष्ट प्रभावित हो चला है।

भावों की दृष्टि से ईसुरी की फागें प्रदेश ही में नहीं, समूचे देश में प्रशंसित होने योग्य हैं और राष्ट्रभाषा हिन्दी के एक अंग विशेष की उनके द्वारा पूर्ति होती है। प्रदेश-प्रदेश का इसी प्रकार का लोक-साहित्य उपलब्ध होकर प्रकाश में आ सके, तो हमारी राष्ट्रभाषा कितने ही अंशों में बलवती और सर्वप्रिय बन जावे।

पाठकों के मनोरंजनार्थ प्रत्येक विषय से उनके गीतों के कुछ उदाहरण यहाँ दिए जारहे हैं:—

रामावतार विषयक

मैंने मन-मुदरी में गाड़ौ,
राम-रतन कां छांड़ौ।
सुमरन साथ सुबंज लगाई,
लंच आंच हो काड़ौ
तन-कंचन की डांक डाट दई,
कुमत खटाई ताड़ौ।
नेम के बांट डार कें उर सें,
प्रेम-तराजू आड़ौ।
तिसनां-तौल घटी ना 'ईसुर',
रँग-रसना सें बाड़ौ।

मन्दोदरी अनुनय-विनय करती हुई रावण से कहती है कि अब भी अपनी-अपने वंशधरों की और सोने की लंका की रक्षा कर लीजिए, अन्यथा सर्वनाश होने ही को है। मैंने कितनी बार आपको सचेत किया, किन्तु आप न माने, सो न माने।

यथा:——

तुमने मोरी कयी न मानी,
सीता ल्याये बिरानी।
जिनकी जनक-सुता रानी हैं,
वे हर अंतरध्यानी।

(शेष पृष्ठ २८ पर)

गाड़ौ——लगाया। सुबंज——टाँका लगाने का साहित्य। लंच——मैल। डाँक——गहने में जड़ जानेवाला नग। ताड़ौ——दूर की। आड़ौ——तौला। बाड़ौ——बढ़ गया।

साहित्य, संस्कृति, कला, ज्ञान-विज्ञान आदि का विशेषांश

इसके संपादनपरामर्शदाता ~ श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द

विशेष कविता

बाँसुरी-वियोग

श्री नर्मदाप्रसाद त्रिपाठी

जिस दिन से अधरों की बाँसुरी तुम्हारी
मेरे अधरों से रूठ गई,
उस दिन ही से
कविता की स्वर से लगी सगाई छूट गई!
प्यास हो गई पागल मेरी,
स्वप्न अनाथ हो गए,
पाँवों ने मंजिल की पहचान भुला दी,
मोती की माला के दानों-जैसा—
बिखर गया जीवन मेरा!
मेरा तो वही एक सहारा था,
उसीके कारण तो मैं,
हँस-हँसकर
दुनिया-भर का विष पी जाता था,
उसीकी खातिर तो मैंने
जग की किंचित् भी परवाह नहीं की!
उसको अधरों पर धरते ही—
मेरे जलते ओंठों पर
पूनो के चंदा की शीतलता छा जाती थी।
उसको अधरों पर धरते ही—
मेरी पीड़ा-भीराएँ
पावों में गति के घुंघरू बाँध
स्वयं ठुमकने लगती थीं।
उसको अधरों पर धरते ही
स्वर की खेती होने लगती थी;
हर साँस महकने लगती थी!
आज उसी बाँसुरिया को
बिना सूचना दिए मुझे
मेरे अलसाए और अचेतन अधरों से
कोई स्वर का सौदागर लूट ले गया!
नींद खुली उस समय—
जब अधर पर कुछ हलकापन पाया!
लेकिन, अब तो—
कुछ भी मेरे हाथ नहीं!
मेरा जीवन तो अब—
बिना शीर्षकवाली पुस्तक जैसा है!

विशेष लेख

जैन साहित्य में मालव का आगर

—श्री गणेशदत्त शर्मा 'इंद्र'

मालव का ऐतिहासिक नगर आगर मध्यप्रदेश में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। ऐतिहासिक शोधों के अनुसार इसका अस्तित्व एक हजार वर्ष से कुछ पूर्व का माना जाता है। प्रारंभ की विस्तृत खोज अभी होनी है, पर, निश्चय ही यह नगर आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व एक, धन-जन-वैभव-संपन्न नगर था। प्रारंभ की जनसंख्या का तो अभी तक ठीक पता नहीं चल पाया है, किंतु, अनेक ऐतिहासिक प्रमाणों से यह तो सिद्ध हो चुका है कि आज से सौ वर्ष पूर्व आगर की जनसंख्या बीस हजार से कम नहीं थी। उन दिनों यह एक अच्छा समृद्ध नगर था। उज्जयिनी के समीप इतनी जन-संख्यावाला उस युग में दूसरा कोई नगर होने के प्रमाण अभी तक उपलब्ध नहीं हुए हैं।

"तबकाते अकबरी" में ख्वाजा निजामुद्दीन ने लिखा है कि—"जिकाद, २२। सन् ९०८ हिजरी (मई, १९ सन् १५०३ ई०) के दिन वह (सुलतान नासिरुद्दीन) नालछा पहुँचा। खीची-वाड़े को नष्ट-भ्रष्ट कर देने के उद्देश्य से जब वह सेनासहित आगे बढ़ा, तब आगर] पहुँचा। उसने वहां के जलवायु को मनोरम और स्वास्थ्य-प्रद पाया, अतएव, उसने वहाँ बहुत ही भव्य और सुन्दर महल बनवाया, जो एक अच्छी इमारत है। कुछ दिन वह आगर रहा।" इतिहासकार 'फरिश्ता' भी लिखता है कि—आगर पहुँचने पर उसने (नासिरुद्दीन ने) एक भव्य महल बनवाया, जिसे देखकर सभी उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे।"

"आईने अकबरी" में भी आगर का उल्लेख है। उस समय वहाँ १०० घुड़सवार और दो हजार पैदल सैनिक रहते थे। फारसी इतिहास-ग्रंथों में अनेक स्थानों पर आगर का जिक्र आया है। ये सब उल्लेख सोलहवीं शती के अंत के हैं, परंतु, इन इतिहासकारों के वर्णन से पूर्व आगर की समुन्नत स्थिति पर "श्रीगुरुगुण-रत्नाकरकाव्यम्" नामक एक जैन ग्रंथ से प्रकाश पड़ता है। इस ग्रंथ की शोध महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई है।

"श्री गुरुगुणरत्नाकरकाव्यम्" ग्रंथ का रचनाकाल वि० सं० १५४१ है। इस पुस्तक की रचना श्री सोमचारित्र ने की थी। यह श्री सोम-चारित्र श्री जंबूस्वामी की शिष्यपरम्परा में थे। यह श्री चारित्रहंस के शिष्य थे। इसी पुस्तक के तीसरे सर्ग में लिखा है—

"श्रीमन्मालवमेदनीन्दुवदनालंकार हार प्रभो—
सग्रामागरवासि कर्म तनय श्रीरत्न संघ प्रभोः।
आक्षेपाद्विधुवेदववर्षमसुधावर्षेसुभिक्षोद्भवे
लक्ष्मीसागरसूरिराजविलसद्भाग्यप्रकर्षस्तवे॥"११०
श्री जम्बूसम सोमसुन्दरगुरोः श्री सोमदेवाह्वयः
शिष्यः सूरिवरश्च शिष्यवृषभश्चारित्रहंसोऽस्ययः।
तस्य श्रीविबुधस्य शिष्य शिशुना काव्येमुदानिर्मिते।
सर्गोऽयंतुतृतीय कोगुरुगुणाद्रत्नाकराख्यायुते॥१११

अर्थात्—जिस समय सुभिक्ष था और श्री लक्ष्मीसागर सूरि के भाग्योत्कर्ष की स्तुति जन-जन के मुख पर थी, उस समय समृद्ध मावल-देशरूपी चंद्रवदन के निमित्त अलंकार-हार के सदृश, विशाल आगर-नगर के निवासी कर्मांक के पुत्र श्री रत्नसंघपति के निर्देश से सं. १५४१ में श्री जंबूस्वामी के समान श्री सोम सुंदरसूरि के शिष्य श्रीसोमदेवसूरि, उनके शिष्य श्री चारित्रहंस और उनके शिष्य श्रीसोमचारित्र ने इस "गुरुगुणरत्नाकर काव्य" ग्रंथ की रचना की।

कर्मांक पुत्र श्रीरत्नसंघपति के निर्देश से यह काव्य-ग्रंथ आगर-नगर ही में लिखा गया था। श्री सोमचारित्र ने सं. १४५१ में आगर में चातुर्मास किया था। वह गणिपदधारी थे, अतएव उनके साथ अनेक जैन साधु निश्चय ही वहाँ रहे होंगे। वह कर्मांक के निवासस्थान-आगर का वर्णन चतुर्थ सर्ग में इस प्रकार करते हैं:—

"अथास्यवासस्थानाऽऽगर नगर वर्णनम्"

"विचित्र पोतावलि शालिलोकं,
ह्लादं दधच्चन्द्रवसूदयेन।
सरस्वतीधीवरजीवराजी-
लावण्यजित् पुण्य जिनालयंच"॥२१॥

अर्थात्—जहाँ धान के सुंदर खेत लहराते हुए हठात् अपनी ओर मनुष्य की दृष्टि आकर्षित कर लेते हैं तथा जहाँ विद्याप्रेमी विद्वज्जनों के गुणों का प्रकाश चंद्रज्योत्स्ना की भाँति प्रकाशमान है और जहाँ दर्शनीय पवित्र जिनालय है।

"क्षमाधरैर्विप्रवरैरपारै—
रासेवितंवारिदवाहिनीभिः
यद्भातिनानाभवनाभिरामं,
रत्नाकराभं सकलाप्तरंगम्॥" २२॥

अर्थात्—जहाँ क्षमाशील उत्तम, ज्ञा ब्राह्मण निवास करते हैं, जहाँ अनेक सुन्द जलाशय हैं, जहाँ शासकों द्वारा नियुक्त वि सेना है, जिसे विविध प्रकार के गृह सौंदर्य प्रदा करते हैं, जहाँ समुद्र के समान सब प्रकार की शोभाधारण करनेवाला जलाशय विद्यमान है।

"गृहेगृहेसाऽस्यपुरस्यनाम्न्या-
गरेतिरावोऽस्ति किलेतिमत्वा।
सरोमिषाद् यत्र च सागरेति—
प्रापाऽर्णवः स्थापयितुं निजाह्वाम्॥"२३

अर्थात्—प्रत्येक नगर के घर-घर में (सआगर) वह आगर वह आगर इत्यादि वाक्य गूंजा करते हैं। इस प्रकार सरोवर मिष से (आगर का सरोवर) सागर नाम प्राप्त करने में समर्थ हुआ।

"तत्तत्तटद्वीपभवानिसाकं—
तेना ऽऽगमन्नङ्गिरतिप्रदानि—

(शेष पृष्ठ ११ पर)

विशेष शब्दचित्र

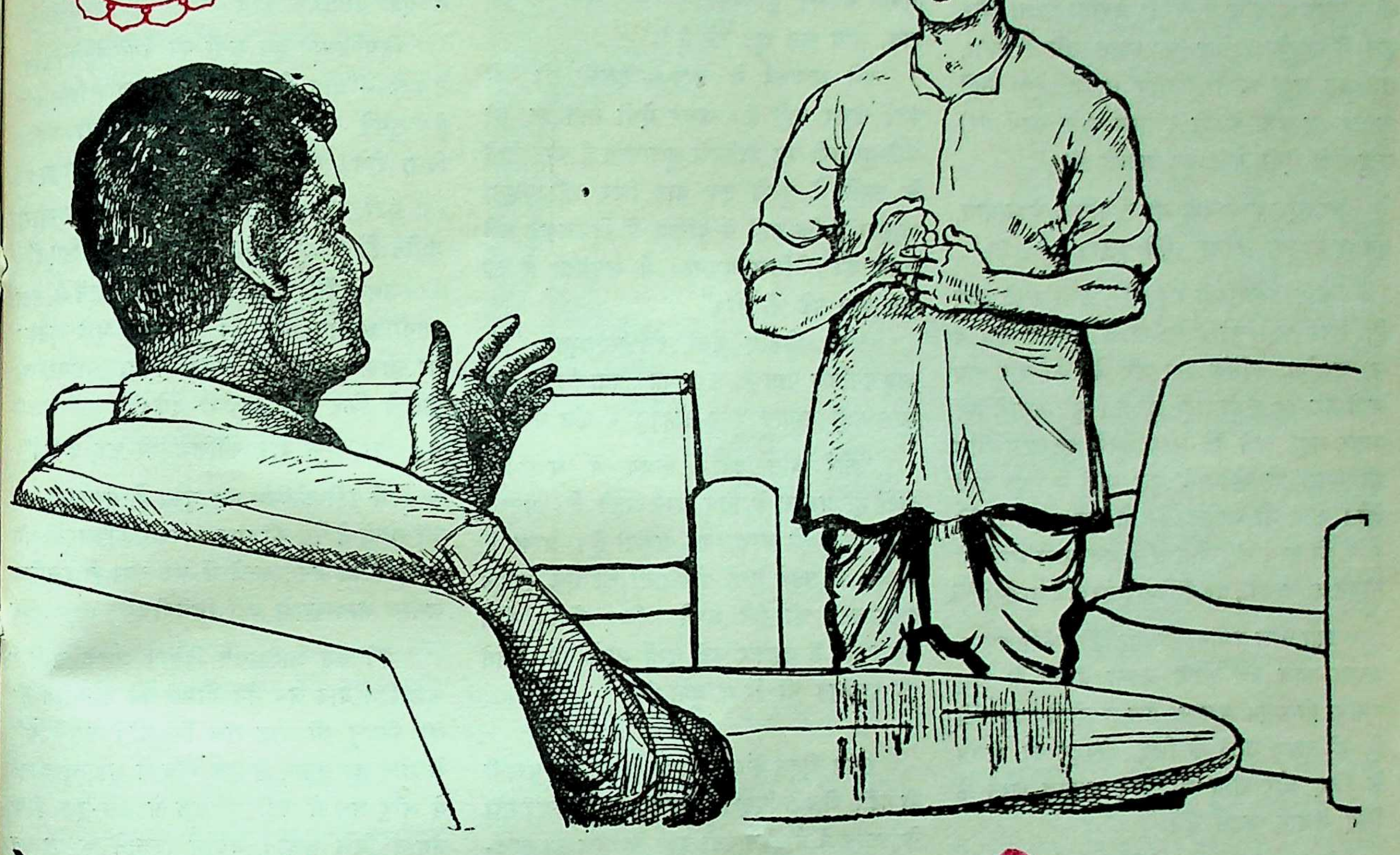

वह आदमी बना

—श्री विश्वनाथ वैशंपायन

जेल-जीवन में शारीरिक कष्टों से मानसिक कष्ट अत्यधिक होते हैं और उस समय तो वे और भी बढ़ जाते हैं, जब व्यक्ति को यह न ज्ञात हो कि इस चहारदीवारी के बंधन से उसकी कब मुक्ति होगी। उसके मन-बहलाव के साधन सीमित और अधिकतर वहाँ के कैदी ही होते हैं। जब कोई अपराधी सजा पाकर जेल में आता है, तब वह अपने साथियों के लिए कुतूहल का साधन बन जाता है। पहले उसकी सजा की अवधि, उसके बाद अपराध और उसके बाद दुनिया में क्या हो रहा है यह जानने की इच्छा!

ऐसी ही घटनाओं के उतारचढ़ाव के बीच मेरी नजरबंदी का जीवन कट रहा था। जिस हाते में मैं बंद किया गया था, उसमें प्रतिदिन सफाई और बगीचे में काम करने के लिए अनेक कैदी आया करते थे। राजनीतिक बंदी होने के नाते मुझपर यह प्रतिबंध था कि मैं उन कैदियों से बात न करूँ। और शुरू-शुरू में इन कैदियों के साथ आनेवाले 'वार्डर' इस आज्ञा का पूरी तरह पालन करते थे। परंतु, जैसे-जैसे समय बीतता गया, वैसे-वैसे उनकी मानवता प्रबल होती गई और उसने इन आदेशों के बंधनों की अवहेलना कर दी। सतर्कता के नाते ये वार्डर इतना ही करते थे कि जब वे हाते में आते, हाते के दोनों दरवाजों में ताले बंद कर देते थे। जिस हाते में मैं बंद था, उसमें दो दरवाजे थे, एक लोहे की चादर का और दूसरा लोहे के सीखचों का। चादर का दरवाजा इसलिए था कि मेरे हाते के बाहर क्या हो रहा है, इसे मैं न देख सकूं। इस तरह इन दोनों दरवाजों के बंद हो जाने के बाद मुझे यह सुविधा भी हो जाती थी कि मैं कैदियों या वार्डरों से खुलकर बातें कर सकूं।

दिन-भर का पहाड़-सा समय काटने के लिए मुझे अपने-आपको किसी-न-किसी काम में लगाए रहना पड़ता था और इसलिए मैं दिन का कुछ समय बगीचे में काम करने में बिताता था।

काम करते समय मेरे सहयोगी कैदी ही होते थे। इस समय इनसे बातें करने का अवसर मिलता था, जिससे उनके जीवन की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती थी।

फिरतू इसी बगीचे की 'कमान' में आता था। उसकी आदत थी कि दस-पाँच मिनिट काम करता और उसके बाद काम से जी चुराता रहता और जब मैं उसके कर्त्तव्य का ध्यान उसे दिलाता, तब वह यही कहता, "बाबू साहब, ऐसा नहीं करता, तो सजा के जो ६ साल काटे, उनमें मेरी तन्दुरुस्ती ऐसी नहीं रह सकती थी।"

पर, एक साल बाद जब तू दुनिया में जायगा, तब वहाँ क्या करेगा" मैंने पूछा।

"वही करूँगा जो मेरे और साथी करते आए हैं; फिर कहीं चोरी करूँगा और फिर जेल में आ जाऊँगा, क्योंकि एक बार जेल का दाग लग जाने पर वह कभी नहीं छूटता। पुलिसवाले हमें बाहर नहीं रहने देते और उनसे छुटकारा मिल भी गया, तो गाँववाले मुझे गाँव में नहीं रहने देंगे। कोई भी व्यक्ति जेल से छूटे हुए मेरे जैसे चोर को काम नहीं देगा और जब भूखों मरने की नौबत आ जायगी, तब मैं किसके दरवाजे जाऊँगा ?"

इसी बीच पचासा हो गया और कैदी अपना-अपना काम बंद करके अपनी बैरकों के लिए रवाना हो गए। पचासा जेल में बजनेवाली घंटी है, जो सुबह उठने के लिए, दोपहर को भोजन के लिए और शाम को काम समाप्त करने के लिए बजाई जाती है।

फिरतू चला गया, लेकिन, उसकी समस्या मेरे दिमाग में घूमती ही रही। उसकी बात बहुत अंशों में ठीक थी, फिर भी, मैंने निश्चय किया कि उस आदमी को यह समझाने का प्रयत्न करूँगा कि अब परिस्थिति बदल चुकी है। देश स्वतंत्र हो चुका है। महीने-पंद्रह दिन में मैं भी छूट जाऊंगा और यह भी संभव है कि वह भी दो-चार महीनों ही में छूट जाय।

वैसे फिरतू होशियार था। साग-सब्जी लगाना अच्छी तरह जानता था। इस बारे में उसे बहुत-कुछ जानकारी भी थी। मैंने सोचा कि यदि यह व्यक्ति चाहे तो अपनी आजीविका आसानी से कमा सकता है। दूसरे दिन जब फिर 'कमान' काम करने आई, तब मैंने फिरतू से फिर चर्चा की। मैंने उससे देश की स्वतंत्रता की बातें कहीं।

उसने कहा—"बाबू ! अच्छी जिंदगी बिताना कौन नहीं चाहता ? यह भी ठीक है कि आप मुझे पुलिसवालों से छुटकारा दिला देंगे। पर, मेरे नाते-रिश्तेदार जो मेरी जमीन हड़पने पर तुले हैं, मुझे बाहर नहीं रहने देंगे। फिर भी, आप कहते हैं, तो मैं कोशिश करूँगा।" उसने विषय बदलते हुए कहा—"मैंने सुना है कि बाबू, आप कल छूट रहे हैं !"

मैंने आश्चर्य से कहा—"इसकी तो मुझे कोई खबर नहीं है। अगर ऐसी बात हो, तो मेरी-तुम्हारी यह आखिरी मुलाकात है और जाने के पहले मैं तुमसे एक बार फिर यही कहना चाहता हूँ कि यहाँ से दुनिया में निकलकर भले बनने की कोशिश करना। मैं समझता हूँ कि तुम कुछ पढ़े भी हो।"

उसने बीभत्स हँसी हँसकर कहा—"हाँ, बाबू मिडिल पास हूँ, पर, वह पढ़ा-लिखा कुछ काम नहीं आया। बुरी सोहबत में फँस गया।"

"कोई बात नहीं। जीवन में अच्छे-बुरे दोनों ही प्रकार के दिन आते रहते हैं। मनुष्य अगर चाहे, तो अच्छा बन सकता है। अच्छा ! मैं जाने के पहले तुम्हें बागबानी की एक पुस्तक दे जाऊंगा, जो मैंने अपने लिए मँगाई थी। बड़े साहब से कहकर उसे तुम्हें अपने पास रखने की इजाजत भी दिला दूंगा।"

× × ×

समय बीतने के साथ-साथ ये बातें भी पुरानी हो गईं। जेल से निकलने के बाद देश की स्वतंत्रता के उत्सव में मैं इतना खो गया कि जेल का कष्टमय जीवन एक बीती कहानी बन गई और वहां की स्मृतियों पर नवीन घटना और विचारों की परत जम गई। एक दिन जब मैं अपने मकान के बाहर खड़ा था, तब अचानक एक व्यक्ति ने आकर मुझे सलाम किया। मैं क्षण-भर उसकी ओर देखता रहा। फिर, तुरंत पहचान गया कि यह तो फिरतू है। आज उसका रंग-रूप बदला हुआ था। उसके सिर पर न तो जेल की सफेद टोपी थी और न बढ़ी हुई दाढ़ी। मैंने आश्चर्य से पूछा—"पर, तुम्हें मेरा घर कैसे मालूम हो गया ?"

उसने हँसते हुए कहा—"बाबू, चोरों को घर ढूंढ़ते देर नहीं लगती और आपका तो मेरे पास पता लिखा था।"

मैंने उसे घर के अंदर ले जाते हुए कहा—"मेरा पता तुम्हें कहाँ से मिला।"

"जेल की बातें आप भूल गए हैं बाबू, पर, मैं नहीं भूला हूँ। आपने जो मुझे किताब दी थी, उसमें आपका पता है।" यह कहते-कहते वह जमीन पर बैठने लगा।

मैंने कहा—"वहां नहीं, कुर्सी पर बैठो, यहाँ तुम कैदी नहीं हो। मेरे ही जैसे स्वतंत्र देश के एक नागरिक हो।"

हिचकिचाते हुए कुर्सी पर बैठते-बैठते फिरतू ने कहा—"बाबू, मैं तुम्हारे पास मदद के लिए आया हूँ। तुमने जेल में कहा था कि मेरी जमीन दिला दोगे। तो अब आप उसे दिला दीजिए।"

क्यों उसमें क्या दिक्कत है। जब तुम्हारी जमीन है, तो वह तुम्हें मिलनी ही चाहिए।"

उसने हँसते हुए कहा—"आप कहते हैं, बात उतनी आसान नहीं है। भाई-बंद मुझे लूटकर खा जाना चाहते हैं। अगर झगड़ा करूँगा, तो मुझे वे फिर जेल भिजवा देंगे।"

"पर, एक बार कोशिश तो कर देखो।"

'मैं पूरी कोशिश कर चुका हूँ, सरकार, पर, उन लोगों ने पैसे की मार मारकर गाँववालों और पटवारी को अपने कब्जे में कर रखा है, इसलिए, जमीन आसानी से नहीं मिलेगी।"

मैंने उसे आश्वासन दिया। उसके जाने के कुछ दिन बाद जब मैंने मामले की छानबीन की, तब फिरतू की बात सच निकली। उसके गाँव के लोग हर प्रयत्न से उसे गाँव से भगाना चाहते थे और अंत में बड़ी मुश्किल से उसे एक बीघा जमीन मिल सकी। जमीन दिलाने के पश्चात् मैंने उसे धन की सहायता भी दी और इस तरह फिरतू को मैंने समाज में जबरदस्ती बैठाया। यों एक-दो वर्षों तक मेरा और फिरतू का संबंध बना रहा। उसे जब कभी जरूरत पड़ती, वह मेरे पास आ जाता। मैं उसे थोड़ी-बहुत सहायता दे देता।

स्वतंत्रता के बाद न केवल राजनीतिक क्षेत्र में काम करनेवाले, बल्कि साधारण से व्यक्ति का भी व्यस्त जीवन था। देश के भविष्य की चर्चा सभी जगह थी। यहां तक कि घर, बाजार, होटल आदि स्थानों में भी देश के भविष्य की चर्चा होती। किसी-न-किसी कारण से लगभग एक वर्ष मुझे घर से बाहर रहना पड़ा और इस अर्से में फिरतू का क्या हुआ, मुझे नहीं मालूम। एक दिन मैं दौरे से लौटकर आया, तब मैंने देखा कि घर में फिरतू की बड़ी

चर्चा थी। आते ही बच्चों का सवाल था कि हम-लोग फिरतू भैया के खेत पर कब चलेंगे।

छोटी लड़की ने कहा—"फिरतू भैया बड़ा अच्छा आदमी है। वह जब आता है, मेरे लिए ढेर भर गाजर ले आता है।" मैं यह सब सुनकर आश्चर्यचकित हो गया। घर में पूछने पर पता चला कि आठवें दिन फिरतू सब्जी बेचने बाजार आता है, लौटते समय दस-बीस मिनिट घर में बैठकर बच्चों से दिल बहलाता है और साथ ही कुछ साग-सब्जी भी दे जाता है।

अभी यह सब चर्चा चल ही रही थी कि दरवाजे पर किसी ने आवाज दी। मुन्नी भागी हुई गई और उसने दरवाजा खोला। मुन्नी पूछ रही थी,—"आज हमारे लिए क्या लाए हो!" फिरतू कह रहा था—"आज तो तुम्हारे लिए कुछ नहीं बचा है, सब बाजार वाले ले गए।" मुन्नी ने रूठकर कहा—"तो जाओ, हम तुमसे नहीं बोलेंगे।"

उसकी बात पूरी होने के पहले ही फिरतू बोल उठा—"अच्छा रूठो मत, यह देखो, तुम्हारे लिए मैं लाल-लाल, बड़-बड़ टमाटर लाया हूँ।" फिरतू मुन्नी से बातें करने में इतना मग्न था कि उसन मुझे भी नहीं देखा। जब मैंने उसकी पीठ पर हाथ रखा, तब एकदम चौंक कर उसन कहा, 'सलाम बाबूजी!'

मैंने पूछा—"कहो, कैसे दिन कट रहे हैं?"

"यह मैं क्या बताऊँ। एक दिन बच्चों को लेकर गाँव पर जरूर आइए, नहीं, किसी दिन क्यों, मैं तो कहता हूँ कि आज ही चलिए गाड़ी साथ है। शाम तक हम लोग पहुँच ही जायँगे।"

मैंने कहा—"आज तो मुझे काम है। अगले रविवार को हम लोग जरूर आयँगे। अच्छा, तुम कुछ नाश्ता कर लो।"

"वह तो मुझे आपके कहे बिना ही मिल जाता है।" बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि मुन्नी उसके लिए एक तश्तरी में नाश्ता ले आई और फिर दोनों ही बातों में फिर मुझे भूल-से गए। उनकी चर्चा का विषय था कि अगली बार जब फिरतू मंडी में आयगा, तब मुन्नी के लिए क्या लाएगा, उसकी खेत की गोभी कितनी बढ़ गई है और वह मंडी में उसे कब लायगा इत्यादि। नाश्ता कर के फिरतू ने एक बार फिर मुझ से गाँव आने का आग्रह किया और वह विदा लेकर चला गया।

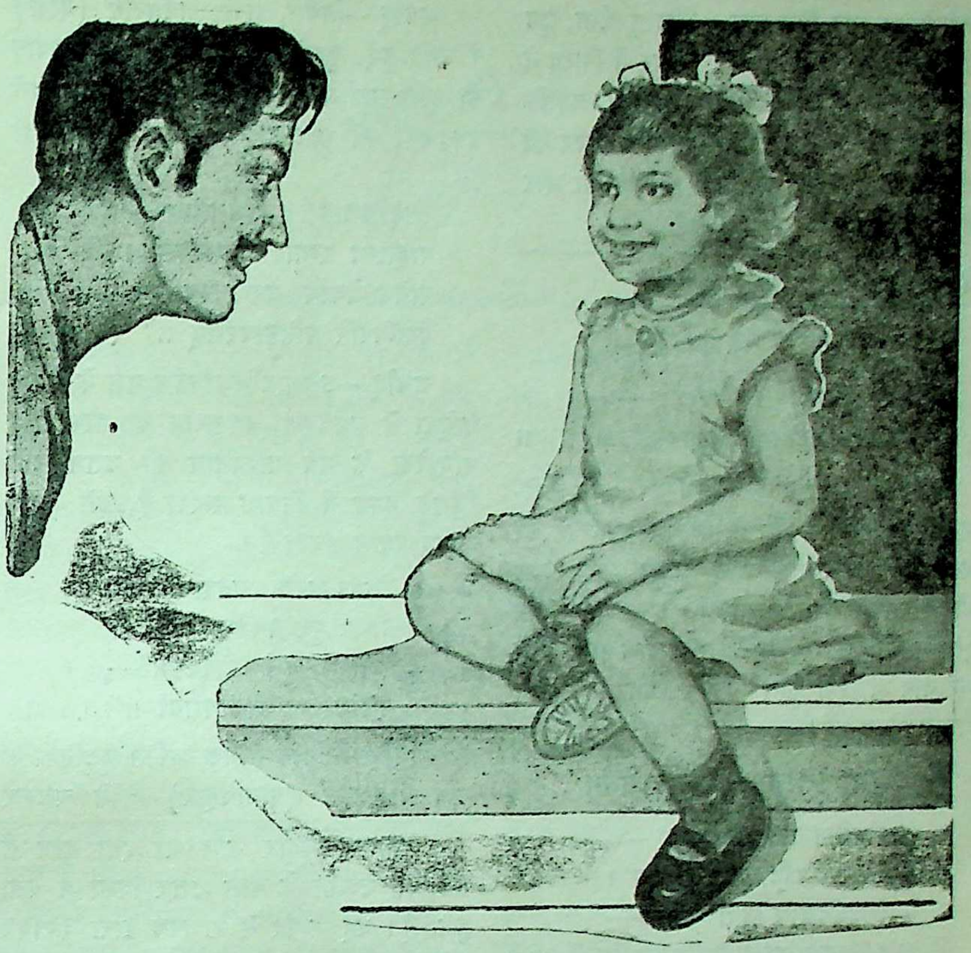

फिरतू कह रहा था—"आज तो तुम्हारे लिए कुछ नहीं बचा है, सब बाजारवाले ले गए।"

जेल में रहते समय फिरतू के विषय में जितनी जानने की इच्छा मुझे नहीं थी, उतनी मुझे अब हो गई थी। और इसलिए अगले रविवार को मोटर द्वारा हम फिरतू के गाँव पहुँचे। वह बड़ी उत्सुकता से हम सबकी बाट जोह रहा था। गाँव पहुँचते ही हम सबने उसके खेत पर जाने की इच्छा प्रकट की। वह हमें सीधे ही खेत पर ले गया। हम लोगों को आया देख, गाँव के कई लोग हमारे पीछे हो गए। मैंने देखा कि उसी एक बीघा जमीन में फिरतू ने कई तरह की सब्जी बोई थी। उसने सारे खेत में हमें घुमाया। आज उसके आनंद का ठिकाना नहीं था।

जब हम लोग गाँव देख चुके, तब उसके घर गए। जो घरवाले पहले उसे गाँव में नहीं रहने देना चाहते थे; उसे घृणा की दृष्टि से देखते थे, उन्होंने फिरतू को न केवल घर ही में जगह दी, बल्कि, ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अब सारा घर ही उसके कहने पर चलता है। गाँववालों ने भी फिरतू की बड़ी चर्चा की। फिरतू की सलाह से अनेक गाँववालों ने अपनी जमीन साग-सब्जी की खेती प्रारंभ कर दी थी। जब हम लोग शाम को लौटे, तब गाँव के सभी सयाने फिरतू के साथ हमें पहुंचाने आए। जब हम लोग मोटर में चढ़ने लगे, तब फिरतू की आँखों में आँसू थे। उसने कहा—"बाबू आप ही की दया से आज मैं आदमी बन सका। नहीं तो, अबतक मैं कब का जेलखाने में पहुँच जाता।"

अचानक मुन्नी पूछ बैठी—"फिरतू भैया, तुम तो कहते थे कि जब मैं गाँव आऊँगी, तब मुझे भाभी दिखाओगे। वह तो तुमने दिखाई ही नहीं!"

मुन्नी की यह बात सुनकर फिरतू ने कोई जवाब नहीं दिया। वह चुपचाप नीचा सिर किए खड़ा रहा। परंतु, एक गाँववाले ने कहा,—"बाबू अबकी पूनो के बाद फिरतू की शादी पक्की हो गई है।

मैंने फिरतू की पीठ ठोककर कहा—"यह तो बड़ी अच्छी बात हुई।" मोटर चलने को हुई।

मुन्शी ने एक बार फिर कहा--"फिरतू भैया, हम भी तुम्हारी शादी में चलेंगे।" उत्तर में फिरतू ने क्या कहा, इसे कोई नहीं सुन सका, क्योंकि मोटर चल पड़ी थी। फिरतू की दृष्टि मोटर की ओर थी और उसकी आँखों में थी कृतज्ञता और अटूट संतोष।

जैन साहित्य में मालव का आगर

(पृष्ठ ८ का शेष)

रादालजम्बूमुखशाखिलेखा--
शालोनियस्मिन् किमुकाननानि ।।" २४ ।।

अर्थात्--उस सरोवर के किनारे तथा सरोवर के मध्य स्थित द्वीप में, प्राणिमात्र के मन को आह्लादित करनेवाले, आम, जामुन, आदि वृक्षों की पंक्तियाँ शोभायमान हैं। इन्हें देखने पर ऐसा प्रतीत होता है, मानो सागर नाम प्राप्त करने के बाद ये वृक्ष यहाँ आकर वन के रूप में परिणत हुए हों।

अथ यत्रस्थ जिनार्चावर्णनम्

"सदासितानन्तपदाश्रितस्य--
श्री पार्श्वभर्तुः पुरुषोत्तमस्य ।
मूर्त्तिर्जगन्नाथ जुषां जनानां--
यत्रस्थिता यच्छतिवाञ्छितार्थम् ।" २५ ।।

अर्थात्--निर्मल, शुभ्र, अनंत-पद (मोक्ष) में रहते हुए, पुरुषोत्तम श्री पार्श्वनाथ भगवान् की मूर्त्ति यहाँ प्रतिष्ठित है, जो सेवा करनेवाले भक्तजनों को सदा इच्छित अर्थ प्रदान करती है।

"सद्दक्षिणावर्त्तक शंखसाम्या--
माहात्म्य रम्या नवपल्लवस्य ।
वामेय देवस्य यदन्तरस्था--
परापिपर्ति प्रतिमापरंशम् ।।" २६ ।।

अर्थात्--उत्तम दक्षिणावर्तक शंख के समान महिमा से समलंकृत, नवपल्लव की शोभावाले, वामादेवी के पुत्र पार्श्वनाथ की उत्तम मूर्ति जिसके हृदय में निवास करती है, उसे महान् आनंद प्रदान करती है।

"सत्रा सगोत्रैः सतदागराख्यं--
प्राप्तः पुरं पर्णविहारपुर्याः ।
कर्मकि कृत्युत्तम विश्वकर्मा--
धर्मादिराभ्यागतकामशर्मा ।।" २७ ।।

अर्थात्--कर्मकि नामक व्यक्ति कुटुंबियों के साथ पर्णविहार (पानबिहार) * से चलकर आगर नामक शहर में आया। कार्मक सज्जन और एक अच्छा कलाविद् था। वह बड़ा ही धर्मनिष्ठ था। आदर-संमान और आतिथ्य करने में वह सदा तत्पर रहता था।

"हरिप्रियाऽनेक सुपर्वलोक--
प्रत्तेष्ट सन्तान वितानतारम् ।
स्व सद्मवद्वास कृतेच तस्मिन्
व्यधापयत्सौधमसौ धनीशः ।।" २८ ।।

अर्थात्--लक्ष्मी के निवासस्थान तुल्य, अनेक देवों की इच्छित परंपरा में वृद्धि करनेवाले, देदीप्यमान, स्वर्गभवन के समान उच्च धनी (कर्मकि) ने अट्टालिकाओं से युक्त आगर में महल बनवाया। इत्यादि।

आज से ४७५ वर्ष पूर्व लिखे गए इस वर्णन से आगर की तत्कालीन स्थिति और ऐतिहासिकता पर प्रकाश पड़ता है। यह वर्णन तब का है जब माँडू के सुलतानों का आक्रमण आगर पर नहीं हुआ था। जैन-मंदिर अपने असली रूप में था। बीस वर्ष बाद होशंगशाह ने आगर पर आक्रमण किया और मंदिर को मसजिद का रूप दिया। यह "गुरुगुणरत्नाकर काव्य" पुस्तक संस्कृत भाषा के विविध वृत्तों में है, जिसमें चार सर्ग और पद्यसंख्या ४६८ है।

---

*यह पानबिहार आज भी इसी नाम से संबोधित उज्जैन के पास उत्तर दिशा में बसा हुआ है। यह आगर से राजपथ द्वारा ३२।३३ मील है।

हम अधिक से अधिक निर्यात बढ़ाएँ

यह साधारण-सी बात है कि हम अपनी जरूरत का जितना माल विदेशों से मंगाते हैं, उतने ही मूल्य का माल हमें विदेशों को भेजना चाहिए, तभी देश का आयात-निर्यात बराबर रहेगा और देश को घाटा नहीं होगा। यह जरूरी नहीं कि हर साल का आयात और निर्यात बराबर हो, किन्तु कुछ सालों का आयात-निर्यात अवश्य बराबर होना चाहिए। यदि काफी समय तक आयात अधिक और निर्यात कम रहा, तो इस कमी को सोना देकर पूरा करना होगा, क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय भुगतान अन्ततोगत्वा सोने में ही होता है। महायुद्ध के बाद, यूरोप में सोने में ही भुगतान किया जाता रहा और इसलिए माल के बदले सोना देना कोई बहुत पुरानी बात नहीं, किन्तु अब अधिकांश देशों के पास इस तरह दूसरों को देने के लिए अधिक सोना नहीं है। पिछले तीस वर्षों में संसार का अधिकांश सोना सिमट-सिमट कर एक ही देश, अमेरिका में जमा हो गया है। इसका कारण यह रहा कि इस अवधि में अमेरिका ने संसार के सब देशों को बेचा बहुत अधिक और उनसे खरीदा बहुत कम।

अंतर्राष्ट्रीय ऋण-व्यवस्था

जो देश अपनी अर्थ-व्यवस्था को उन्नत करना चाहते हैं, उन्हें ऐसा सामान विदेशों से अवश्य मंगाना पड़ता है, जिनसे अपनी जरूरत का बाकी सामान वे खुद बना सकें। यदि कोई देश यही सोचकर चले कि वह उतना ही माल अन्य देशों से मंगायगा, जितने का मूल्य वह सोने के रूप में या अपने निर्यात के द्वारा अदा कर सके, तो वह कभी उन्नति नहीं कर सकता। इसलिए ऐसे देश को विदेशों से कर्ज लेना होता है, किन्तु यह तात्कालिक उपाय है। विकासशील देशों को कम-से-कम इतना निर्यात करना बहुत आवश्यक है, जिससे वे विदेशों के कर्ज और इसके ब्याज को चुकाते रह सकें। भारत की भी आज यही स्थिति है और तीसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में उसे इसी समस्या का सामना करना पड़ेगा; क्योंकि, पहली पंचवर्षीय योजना के दिनों से ही भारत विदेशों से ऋण ले रहा है। आयोजन आयोग ने कुछ महीने पहले देश के वित्तीय साधनों का अंदाज लगाया था और उसने यह अनुमान किया कि तीसरी पंचवर्षीय योजना के पहले दो सालों में ही उसे अपने पुराने ऋण और उनके ब्याज आदि को चुकाने के लिए भी विदेशों से कुछ और धन उधार लेने की आवश्यकता होगी।

दुविधाजनक स्थिति

आयोजन आयोग का विचार है कि अपने वर्तमान निर्यात से हम अपने देश की उसी अर्थ

(शेष पृष्ठ २० पर)

मीट्रिक प्रणाली : एक दृष्टि

—श्री प्रेमप्रकाश कपूर

कुछ सज्जनों का विचार है कि नये पैसे अथवा मीट्रिक प्रणाली के नाप-तौल से उनके मस्तिष्क पर नये प्रकार का विदेशी भार थोपा जा रहा है, परन्तु उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि यह विदेशी देन नहीं, अपनी प्राचीनतम प्रणाली का पुनरुत्थान है। दशमलव-प्रणाली का वर्णन हमारे वैदिक-काल से चला आ रहा है। आधुनकि काल में यद्यपि मीट्रिक प्रणाली फांस द्वारा आरम्भ की गई है, तथापि संसार के २/३ भाग में यह प्रचलित हो चुकी है इसलिए यह अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली है तथा इसके नाम भी सब देशों में मीट्रिक प्रणाली के अनुसार ही हैं। इसलिये हमें भी इन नामों को अपनाने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए जिससे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में कठिनाई हो।

किसी भी देश की उन्नति के लिए वहां का व्यापार ही सर्वप्रथम कोटि में लिया जा सकता है जो कि सर्वथा नाप-तौल पर ही निर्भर है, क्योंकि सभी वस्तुएं गणना द्वारा ही विक्रय नहीं की जा सकतीं। नाप-तौल देश भर में सब स्थानों पर एक ही प्रकार के होने चाहिए अन्यथा सुविधा के स्थान पर कठिनाई ही उत्पन्न होगी। जहां तक हो सके नाप-तौल सरल, सुबोध तथा सुगतमा से समझ में आने वाले हों। परन्तु, भारत में एक ही नाम से पुकारे जानेवाले कई प्रकार के बांट अथवा नाम प्रचलित हैं, जो कि तौल में भिन्न-भिन्न बैठते हैं। सेर का बांट ८ तोले से लेकर १६० तोले तक चल रहा है, जबकि स्टेंडर्ड (मानक) सेर ८० तोले का है। १९५६ में भारत के ८० के जिलों के बाट देखने पर ज्ञात हुआ कि ११३ प्रकार सेर चालू हैं। पंजाब में पक्का सेर २½ कच्चे सेर के बराबर है। इसी प्रकार करयाने तथा चारेवाले लेते समय मन में ४० सेर के स्थान पर ५० सेर तक वस्तु ले लेते हैं, पर देते ४० सेर के हिसाब से ही हैं। यही धोकाधड़ी और वस्तुओं में भी चलती है। हीरे-जवाहरात जो कि इतनी कीमती वस्तु हैं ९६ रत्ती के स्थान पर तोले में ६४ रत्ती मानते हैं। अभिप्राय यह हुआ कि हीरे की रत्ती सोने से १½ गुणा हो गई। बम्बई में केवल ६२ रत्ती ही मानते हैं। यही हाल नापों का है। बम्बई में यदि दूध के नाप को प्याली बोलते हैं, तो उड़ीसा में गुणी। दोनों का नाप भी भिन्न-भिन्न है। लम्बाई के नाप तो और भी आश्चर्य में डालते हैं। दो बालिश्त का एक हाथ, दो हाथ का एक गज, तीन अंगुल की एक गिरह। क्या सब की अंगुली, बालिस्त या हाथ बराबर-बराबर हैं। यह लोगों को और भी भूल में डालना है। इसी प्रकार खसखस, चावल अथवा रत्ती सभी बराबर नहीं हो सकती। सेर के बांट को भी सेर कहा जाता है तथा दूध के नाप को भी सेर कहा जाता है, यद्यपि उसमें सेर भर पानी आना चाहिए। यदि कोई सेर दूध तोल कर दे, तो वह कम बैठेगा; क्योंकि दूध पानी से भारी होता है। इसी प्रकार तरल औंस तथा शुष्क औंस में भूल हो सकती है। तरल औंस में तो केवल ८ ड्राम होते हैं, पर शुष्क औंस में १६ ड्राम। बंगाल में चावल तो ९६ तोले का सेर मान कर बिकता है, परन्तु धान के सेर में १२० तोले माने जाते हैं। इस प्रकार एक ही स्थान पर एक ही प्रकार की दो वस्तुओं में भी एक प्रकार का तौल नहीं। इसी प्रकार गैलन भी दो प्रकार के हैं, जैसे ओ. एम. तथा इम्पीरियल तो १६० तरल औंस का है, पर ओ. एम केवल १२८ औंस का।

हमारे देश में कई प्रकार के नाप-तौल प्रचलित हैं, पर कोई भी एक-दूसरे से सरल, सुबोध अथवा सुगम नहीं माना जा सकता। मन, सेर, छटांक, तोले, माशे, रत्ती इत्यादि जो कि सबसे अधिक प्रचलित हैं, वे भी कोई विशेष लाभदायक नहीं; क्योंकि इनमें हिसाब लगाने में अधिक समय लगता है तथा कठिन हिसाब के लिए गुरु व सवाये, ड्योढ़े, ढाये, ओंटे के पहाड़े स्मरण करने पड़ते हैं। एक का अनुपात दूसरे बांट से बिलकुल भिन्न है। यदि मन में ४० सेर हैं, तो सेर में १६ छटांक, छटांक में ५ तोले हैं, तो तोले में १२ माशे और माशे में ८ रत्ती। इतने नाम तथा अनुपात साधारण जनता के लिए स्मरण रखने सरल नहीं। कई लोग तो यह भी भूल जाते हैं कि माशे में १२ रत्ती होती है या ८, तोले में १२ माशे हैं अथवा ८ या ५ ही हैं। मन-सेर में जहां रुपये आने का सम्बन्ध नहीं बैठता २½ सेर का गुरु स्मरण करना पड़ता है। इसी प्रकार रुपये-आने का सम्बन्ध तोले और माशे में नहीं बैठता, इसलिए तोले और ६ रत्ती का सम्बन्ध गुरु में ले आते हैं। यह बात मीट्रिक प्रणाली में नहीं है। सभी बांट व नाप दस पर भाग होनेवाले ही होंगे। इसी प्रकार नये पैसे तथा रुपये का सम्बन्ध है। यदि रुपये में १०० नये पैसे हैं, तो किलोग्राम में १,००० ग्राम, ग्राम में १०० मिलीग्राम, इसी प्रकार मीटर में १०० मिलीमीटर तथा लिटर में १,००० मिलीलिटर हैं। सभी दस पर सरलता से बट सकते हैं। एक सज्जन कहते हैं कि बांट अथवा नाप दो से भाग होनेवाले होने चाहिए जैसे सेर में दो आधा सेर—आध सेर में दो पाव, पाव में दो आध पाव इत्यादि जिससे किसी थोक में क्रय की हुई वस्तु को बांटने में तराजू बांट की आवश्यकता ही न हो। पर, इस प्रणाली में ५ अथवा १० के अनुपात में बांटना पड़ता है। जिससे कठिनाई उत्पन्न होगी, परन्तु उन सज्जन से यही कहा जा सकता है कि जहां ५ सेर को बांट कर २½, ½ सेर किया जा सकता था वहां यह भी २½, २½ किलोग्राम में बांटे जा सकते हैं। यदि केवल दुगने से दुगने ही बांट बनाये जायें तो १६ के पश्चात् ३२, ६४, १२८ से गुणा अथवा भाग करने में समय नष्ट होगा, जहां वर्तमान युग में समय को सब से अधिक महत्व दिया जाता है और कम-से-कम केवल इसी प्रणाली में संभव है, क्योंकि यहां केवल २ अथवा ५ से ही भाग अथवा गुणा करना पड़ता है, चाहे २, ५, १०, २०, ५०, १००, २००, ५०० में से कोई भी अनुपात क्यों न हो १० अथवा १०० इत्यादि की गुणा अथवा भाग

केवल दशमलव-बिन्दु को दाएँ अथवा बाएँ ओर खिसकाने से ही हो जाती है और जोड़ अथवा घटाने में भी कोई गुणा अथवा भाग की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसलिए यही प्रणाली सबसे सुगम, सरल तथा सुबोध मानी गई है।

किलोग्राम, ग्राम अथवा मिलीग्राम इत्यादि ग्रीक अथवा लैटिन भाषा के नाम इसलिए रखने आवश्यक हैं कि एक तो यह अन्तर्राष्ट्रीय नाप-तौल है, एक दूसरे देशों से व्यापार करने में सरलता रहेगी। दूसरे भारत में पहले ही कई प्रकार के सेर अथवा मन चल रहे हैं। यदि नये सेर अथवा नये मन का नाप रखा जावे, तो और भी अधिक भूल होगी। तीसरे यह नाप-तौल केवल पांच शब्दों से ही स्पष्ट हो जाते हैं—मन, सेर, छटांक; तोले, माशे, रत्ती, अथवा टन, हंडरवेट; पौंड, औंस इत्यादि बहुत-से नाम स्मरण रखने की आवश्यकता नहीं। केवल तीन शब्द विशेष नाप-तौल के लिए तरल पदार्थ के लिये लिटर लम्बाई के लिए मीटर तथा तौल के लिए ग्राम और उनके वंशों में १००० में भाग के लिए मिली तथा १००० गुणा के लिए किलो शब्द प्रयोग होंगे।

इस प्रणाली की विशेषताओं को दृष्टि में रखते हुए ही ९२ छोटे-बड़े देशों में से ६८ देशों ने इसे अपना लिया है तथा शेष देश भी इसके महत्त्व को तो समझते है, परन्तु अपने देशों में मशीनों इत्यादि को पौण्ड, औंस अथवा फुट इंच के हिसाब से बने होने के कारण नहीं अपना सकते, जैसे कि इंग्लैण्ड तथा अमेरिका। फ्रांस में यह प्रणाली प्रारम्भ होते ही पहले १०० वर्ष में ४३ देशों ने इसे अपना लिया था। वैज्ञानिक क्षेत्र में तो इसका इतना महत्त्व है कि सभी देशों में प्रयोगशालाएँ अथवा वैज्ञानिक शिक्षा इसी प्रणाली के आधार पर चलती हैं; क्योंकि यही एक प्रणाली है, जिसमें लम्बी चौड़ी, गुणा, भाग अथवा वर्गफल, घनफल, वर्गमूल, घनमूल इत्यादि बड़ी सरलता से लोग-तालिका की सहायता से जान सकते है। भारत में भी १९ वीं शताब्दी के आरम्भ में इस प्रणाली ने वैज्ञानिक क्षेत्र में स्थान प्राप्त कर लिया था। वास्तव में वही समय था, जबकि पूर्ण देश में यह बांट अथवा नाप चालू हो जाने चाहिए थे। ब्रिटिश सरकार ने १८७१ में इस ओर ध्यान तो दिया, परन्तु इस बात को इतना महत्त्व नहीं दिया, इसका कारण यह भी हो सकता है कि वह अपने नाप-तौल ही प्रचलित करना चाहते हैं, जिससे भारत का व्यापार केवल उनके देशों के साथ ही हो सके।

भारतीय अथवा अन्य ब्रिटिश इत्यादि देशों के नाप-तौलों के आधार परिवर्तनशील हैं तथा उनका आपस में एक-दूसरे के साथ सम्बन्ध भी नहीं है। जैसा कि बालिश्त, हाथ, अंगुल, खसखस, रत्ती इत्यादि, परन्तु मीट्रिक प्रणाली का आधार मीटर है, जो कि पृथ्वी के वृत्त का चार करोड़वां भाग है। यदि पृथ्वी का वृत्त घट या बढ़ सकता है, तभी मीटर में परिवर्तन आ सकता है, परन्तु ऐसा असम्भव है। यदि-एक-दो मीटर का अन्तर आ भी जाय, तो भी उसका चार करोड़वां भाग इतना छोटा है कि उसमें जो अन्तर आयगा, वह छोड़ा जा सकता है। इस मीटर का सौंवां भाग सेन्टीमीटर कहलाता है। इसका घन एक मिलीमीटर के बराबर है, जो कि लिटर का हजारवां भाग है। इस प्रकार लिटर से ही लिटर सम्बन्धित है। इसी मिलीलिटर के नाप में जितना ४ सेन्टीग्रेड पर पानी आयेगा, वह तौल में एक ग्राम होगा और १०००ग्राम का एक किलोग्राम होता है। इस प्रकार हमें ज्ञात हुआ कि सभी नाप-तौल अन्तर्सम्बन्धित हैं। इसलिए इनमें से किसी में भी तबतक परिवर्तन नहीं आ सकता, जब तक कि मीटर में परिवर्तन न आय जो कि असम्भव है।

यह माटी का ढेला

(१)

इसके कण-कण में सोने का,
रत्नों का भंडार छिपा।
इसके कण-कण में अनाज का,
अमृतमय अंबार छिपा।

(२)

इसके कण-कण में पुष्पों की,
भीनी-सुखद सुगन्ध बसी।
सरस फलों की मेवों की,
कण-कण में मधुर मिठास भरी।

(३)

इस ढेले का एक-एक कण,
हरियाली का अमिट खजाना।
इस ढेले का कण-कण गाता,
जग जीवन का अमर तराना॥

(४)

कण-कण इसका हमें सुनाता,
धरती का इतिहास पुरातन।
इसके प्रति कण-कण के भीतर,
छिपी हुई है सृष्टि सनातन।

(५)

माटी का ढेला वरदानी,
कण-कण में नवप्राण बसाये।
अजर-अमर धरती की काया,
कण-कण में भगवान समाये॥

—श्री सत्यनारायण श्रीवास्तव

यद्यपि विशुद्ध मीट्रिक प्रणाली में १० के अनुपात में कई नाम हैं, परन्तु भारत सरकार ने केवल ५ शब्दों से ही, जो नाप व तौल सबको पूर्णतया स्पष्ट कर देते हैं, अपनाये हैं। तरल पदार्थ के लिए लिटर, लम्बाई के लिए मीटर तथा तौल के लिए ग्राम तथा इनके अंशों में १००० वें भाग के लिए मिली तथा १००० गुणा के लिए किलो शब्द प्रयोग होंगे। मिली जो कि १०००वें भाग के लिए प्रयोग होगा यदि लिटर के साथ लगेगा, तो लिटर का हजारवां भाग हो जायगा अर्थात एक लिटर में १००० मिलीमीटर हुए। इसी प्रकार मीटर में १००० मिलीमीटर तथा ग्राम में १००० मिलीग्राम, परन्तु किलो शब्द हजार गुणा के लिये है। इसलिये १००० ग्राम का किलोग्राम होगा अथवा १००० मीटर का किलोमीटर तथा १००० लिटर का किलोलिटर। इस प्रकार यदि हम देखें, तो पांच शब्दों से ही सब बांट व नाप स्पष्ट हो जाते हैं और इनका रेंज (विस्तार) भी सबसे बड़ा है अर्थात् १००० मिलीग्राम का ग्राम तथा १००० ग्राम का किलोग्राम। अभिप्राय यह हुआ कि किलोग्राम में १०००× १०००=१०,००,००० (दस लाख) मिलीग्राम हुए। इसके पश्चात् १०० किलोग्राम का क्विंटल तथा १००० किलोग्राम का मीट्रिक टन है। इस प्रकार हम देखते हैं कि एक बाल के टुकड़े से लेकर बड़ी से बड़ी भारी वस्तु को तौलने के लिए अथवा नापने के लिए इस प्रणाली में बाँट व नाप प्रस्तुत है।

यही कारण है कि औषधियां अथवा रसायन बनाने वाले भी इसी प्रणाली को अधिक महत्त्व देते हैं। इंग्लैंड तथा अमेरिका जैसे देशों

में भी कई कम्पनियां ऐसी हैं जो इसी प्रणाली से अपनी वस्तुओं को ५०० ग्राम बन्द करती हैं जैसे ब्रिटिश ड्रग हौस, मेबेकर इत्यादि, परन्तु और देशों के लिये जो कि पौंड के डिब्बे अथवा बोतलें मांगते हैं, पौंड पैकिंग करना आवश्यक है। इन देशों में विशेषकर भारत है; क्योंकि यहां पौंड तथा ५०० ग्राम में अन्तर नहीं समझते तथा एक ही दाम देना चाहते हैं, जबकि पौंड केवल ४५३.५९ ग्राम का होता है। परन्तु छोटे-छोटे पैकिग के लिये ५,१०,२० ग्राम वस्तु बन्द होती है। कई महंगी अथवा कम लगने-वाली औषधियां मिली ग्रामों में ही बन्द की जाती हैं—जैसे आरिक क्लोराइड (सोने का क्लोराइड) अथवा यूरेनियम इत्यादि धातुओं के लवण केवल २०,२५ मिलीग्राम की ही ट्यूबों में मिलेंगे।

यद्यपि यहां मीट्रिक प्रणाली के बाट अथवा नापों के दूसरे प्रचलित नाप-तोल से सम्बन्ध का वर्णन करना आवश्यक नहीं क्योंकि इनका सम्बन्ध भारतीय मानक संस्था द्वारा प्रकाशित तालिका में उपलब्ध है। इसके अतिरक्त दोनों प्रकार के नाप तोल जो कुछ समय के लिये साथ-साथ चलेंगे आकार में भिन्न हैं तथा मीट्रिक नाप्तोल सरकार द्वारा मुद्रित होंगे तथा जिस हिसाब से भाव किया जायेगा, वही नाप तोल प्रयोग में लाया जायेगा; तथापि आपको इतना परिचय देना उचित है कि नये वाट इत्यादि अपनाने से कुछ अधिक कठिनाई नहीं होगी क्योंकि सेर के स्थान पर जो किलोग्राम का बाट चलेगा वह १ सेर १ छटांक तथा ¾ तोले के लगभग है, जों कि सेर से बहुत अधिक अन्तर नहीं रखता। शेष बाट इसी आधार पर बंट सकते हैं; क्योंकि ५०० ग्राम का बाट किलोग्राम का आधा भाग है। २०० ग्राम ५वां तथा १०० ग्राम १० वां इत्यादि। इसी प्रकार १ मीटर लगभग ३ फुट ३.३७०१ इंच का है। यह भी लगभग गज से कुछ ही बड़ा है। इसमें गिरह के स्थान पर ५० मिलीमीटर का नाप प्रयोग में लिया जा सकता है; क्योंकि गिरह ५७.१५ मिलीमीटर के लगभग है। दूध के नाप दोनों प्रणालियों में अपने बांटों पर आधारित हैं। इसलिये इनका सम्बन्ध बांटों के समान ही हैं। केवल किलोग्राम के स्थान पर लिटर तथा सेर बाट के स्थान पर सेर का नाप प्रयोग हो। २½ अथवा २¾ मन के स्थान पर १ क्विटंल कहना भी सरल रहेगा तथा दोनों भारों का काम चला लेगा; क्योंकि यह लगभग २ मन २७ सेर २ छटांक है जो कि २½ तथा २¾ मन के बीच का भार है।

व्यापार में एक के स्थान पर दूसरे प्रकार के बाट प्रयोग में न लायें जायें। इसलिये सरकार ने मीट्रिक बाटों का आधार भिन्न रखा है। किलो-ग्राम के बांट षटकोण होंगे तथा बड़े बाट ढिवरी के समान हैं, जिनमें लोहे का डंडा उठाने को लगा हुआ है। इसलिये आप आकार को स्मरण रखें। कहीं किलोग्राम के स्थान पर कोई दूकानदार सेर अथवा दो पौंड के बाट न प्रयोग में ले आये अथवा पाव, आध पाव के स्थान पर २०० अथवा १०० ग्राम के बाट से न तोल दे।

यदि साधारण जनता तथा दूकानदार सरकार का साथ दें तो नये मीट्रिक नाप तोल समझने में उन्हें और भी सुविधा होगी; क्योंकि नये पैसे तथा नये मीट्रिक नाप तोल दोनों ही दशमलव प्रणाली पर आधारित हैं तथा एक ही गुर सबके लिये लागू है। कई प्रकार के गुर स्मरण रखना आवश्यक नहीं। यदि एक रुपये की १ किलोग्राम वस्तु होती हो तो एक नये पैसे की १० ग्राम होगी। इसी प्रकार जितने रुपये का किलोग्राम उतने नये पैसे के १० ग्राम अथवा रुपये के जितने किलोग्राम नये पैसे के उतने १० गुणा ग्राम १० गुणा करना तो कठिन नहीं, केवल दाहिनी ओर एक ० लगानी हैं। यही गुर मीटर तथा मिलीमीटर अथवा लिटर तथा मिलीमीटर में प्रयोग हो सकता है। केवल किलोग्राम के स्थान पर मीटर अथवा लिटर और ग्राम के स्थान पर मिलीमीटर अथवा मिली-लिटर प्रयोग होंगे। केवल यह कठिनाई हो सकती है कि तोला तो सेर के बाँटों से जाये, पर उसको ग्राम तथा किलोग्राम में परिवर्तित करना हो। अथवा तोला किलोग्राम इत्यादि से जाये, वस्तु सेरों के भाव बिके। इसलिये साधारण जनता को उचित राय यही है कि शीघ्रातिशीघ्र नये बाट अपनाने का प्रयत्न करें, जिससे कोई असुविधा न रहे और हिसाब लगाने में सरलता अनुभव हो। इस परिवर्तन के समय में जिस तोल के हिसाब भाव किया जायं, उसी के बांट प्रयोग में लाये जायं।

क्या आप जानते हैं ?

१. भारतवर्ष का क्षेत्रफल १० लाख २७ हजार वर्ग मील है और जनसंख्या ३८ करोड़ २० लाख है।

२. देश में इस समय यातायात के लिए १ लाख २१ हजार ६१७ मील पक्की और १ लाख ९५ हजार ५१ मील कच्ची सड़कें हैं।

३. इन सड़कों पर असंख्य लोग, १ करोड़ से ज्यादा जानवर गाड़ियां १ लाख ३० हजार ट्रकें, ४५,००० बसें तथा करीब ३ लाख निजी या अन्य मोटर गाड़ियां चलती हैं।

४. बम्बई-सड़क-यातायात-नियम के अनुसार सवारी मोटर गाड़ियां अनुमानतः ३७ अरब ७० करोड़ मील चलीं।

५. व्यापारिक आर्थिक अनुसंधान की राष्ट्रीय परिषद् की एक पड़ताल के अनुसार सामान ढोने वाली गाड़ियां अनुमानतः प्रायः ११ अरब ४४ करोड़ टन मील चलीं।

६. इंग्लैण्ड में प्रति वर्गमील के ३.४ हिस्से में सड़क हैं और प्रति एक लाख लोग पीछे ३८४ मील सड़क है। अमेरिका में प्रति वर्गमील के १.०० हिस्से में सड़क और १ लाख पीछे १,८३४ मील सड़कें है तथा भारतवर्ष में प्रतिवर्ग मील के ०.२५ हिस्से में सड़क और १ लाख व्यक्ति पीछे ८२ मील सड़कें है।

७. ऊपर के आंकड़ों से भारत में सड़कों की अत्यधिक कमी मालूम पड़ जाएगी। इसके अलावा विदेशों में अधिकतर सड़कें पक्की और पुख्ता हैं तथा जगह-जगह उन पर पुल बने हैं। इस कारण वे साल भर भारी से भारी गाड़ी के लिए भी यातायात के लिए खुली रहती हैं। इसके विपरीत भारत की सड़कों का ६० प्रतिशत भाग कच्चा है तथा सब मौसम में चालू नहीं रहता। फिर वहां कई नदियों पर पुल नहीं हैं, कहीं कमजोर पुल तथा पुलियां हैं। इन कारणों से सड़कों का पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता।

८. भारत में जनसंख्या की तुलना में मोटरों का जो अनुपात है, वह लंका के अनुपात की अपेक्षा १० प्रतिशत और इंग्लैण्ड की अपेक्षा १ प्रतिशत कम है।

साप्ताहिक समीक्षा

कालिदास की स्मृति में दो विशेष टिकट

नई दिल्ली। टिकट संग्रहालय सलाहकार समिति ने महाकवि कालिदास की स्मृति में दो विशेष टिकट जारी करने का रखा है। समिति की एक बैठक डाक तार विभाग के महानिर्देशक श्री वी. शंकर की अध्यक्षता में हुई, जिसमें महाकवि के ग्रंथों का विस्तृत अध्ययन करनेवाले संस्कृत के कई विद्वान् भी उपस्थित थे।

इन टिकटों पर एक में 'मेघदूत' और दूसरे में 'शकुन्तला' का कोई दृश्य चित्रित होगा। पहला टिकट देशी डाक के लिए और दूसरा विदेशी डाक के लिए होगा। इसका उद्देश्य विदेशों में महाकवि के ग्रंथों का प्रचार करना है।

इस सिफारिश को अमल में लाने तथा इस सम्बन्ध की अन्य बातों पर विस्तृत रूप से विचार करने के लिए एक उप-समिति नियुक्त की जाएगी।

समिति ने भारत सरकार से सिफारिश की है कि देश के विभिन्न चित्रकारों तथा अन्य लोगों से इसके लिए डिजाइन आमंत्रित किए जाएं तथा चुने गए डिजाइन के लिए एक-एक हजार की रकम दी जाए।

टिकट संभवतः जुलाई १९६० में चालू किए जाएंगे।

बैठक में यह तय किया गया कि अन्तर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह के अवसर पर भी भारत में विशेष टिकट जारी किए जाएंगे।

इलियड व ओडिसी का हिन्दी में अनुवाद

आगरा। ज्ञात हुआ है कि इलियड व ओडिसी नामक प्रसिद्ध ग्रीक ग्रंथों का हिन्दी कविता में अनुवाद किया जा रहा है। होमर के इन प्रसिद्ध प्राचीन ग्रंथों का अनुवाद राजस्थान के प्रमुख लेखक डॉ॰ रांगेय राघव कर रहे हैं। उक्त ग्रंथ ८५० ई॰ पू॰ में लिखे गये हैं।

यद्यपि इन पुस्तकों का अनुवाद इनके अंग्रेजी रूपान्तर से किया जा रहा है, तथापि डॉ॰ राघव ग्रीक सूत्रों से परामर्श करने का यत्न कर रहे हैं।

स्मरण रहे कि हाल ही में डॉ॰ राघव ने शैक्सपीयर के समस्त ग्रंथों का हिन्दी कविता में अनुवाद किया था।

हेल सेलासी के सम्मान में मास्को स्थित भारतीय राजदूत द्वारा भोज

मास्को। मास्को स्थित भारत तथा संयुक्त अरब गणतंत्र के राजदूतों तथा बांडुंग सम्मेलन के दूसरे राजनयिक प्रतिनिधियों ने सम्राट् हेल सेलासी के सम्मान में एक राजकीय भोज (दोपहर) का आयोजन किया।

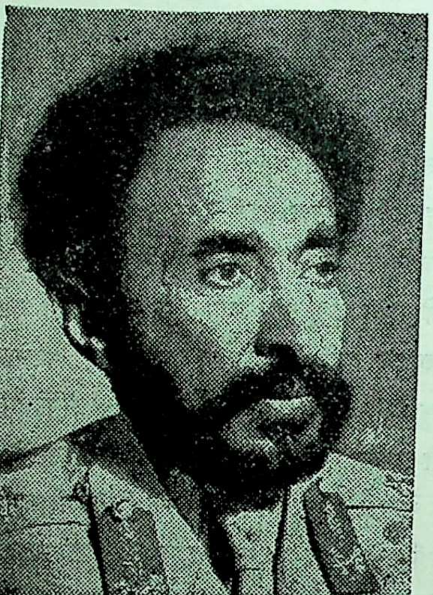

रूस के राष्ट्रपति बोरोशिलोव, प्रधानमंत्री निकिता ख्रुश्चेव तथा दूसरे प्रमुख रूसी मंत्री व अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

राष्ट्रमंडल देशों की नौसेनाओं द्वारा संयुक्त अभ्यास

नई दिल्ली। छः राष्ट्रमंडल देशों की नौसेनाओं का संयुक्त राष्ट्रीय अभ्यास और ट्रेनिंग २५ जुलाई से भारतीय समुद्र में आरम्भ हो जाएगी। इसमें ध्वज पोत 'मैसूर' के नेतृत्व में भारतीय नौसेना के जहाज भाग लेंगे। यह अभ्यास अगस्त के अन्त तक चलेगा। इसमें कुल ३५ युद्धपोत और ८ सहायक पोत भाग लेंगे। भाग लेनेवाली नौसेनाएं इन राष्ट्रमंडल देशों की है: ब्रिटेन, भारत, पाकिस्तान, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और श्री लंका।

यह अभ्यास तीन खंडों में होगा। पहला खंड अरबसागर में २५ जुलाई से १५ अगस्त तक होगा। इसमें जहाजों को दो दलों में बांटा जाएगा। एक दल कराची में होगा और दूसरा कोचीन में।

कोचीन में भारतीय नौसेना, भारतीय वायुसेना, रायल सीलोन नैवी, रायल सीलोन एयरफोर्स और रायल नेवी के जहाज तथा विमान होंगे। इनका निर्देशन भारतीय जहाजी बेड़े के ध्वज अधिकारी रियर एडमिरल ए. चक्रवर्ती करेंगे। भाग लेनेवाले भारतीय जहाज ये हैं: ध्वजपोत 'मैसूर', क्रूजर 'दिल्ली', डिस्ट्रायर 'राजपूत', 'रणजीत', और 'राणा', फ्रीगेट 'कृष्णा', 'कावेरी', 'तीर', 'ब्रह्मपुत्र', और 'खुकरी' तथा माइनस्वीपर 'कोंकण'।

रेडियों लाइसेन्सों की संख्या १५॥ लाख

नई दिल्ली। भारत में रेडियो लाइसेन्सों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है तथा इस समय देश में सब प्रकार के लगभग १५ लाख ६० हजार रेडियो लाइसेन्स हैं। सन् १९५८ में सन् १९५७ की अपेक्षा रेडियो लाइसेन्सों में २ लाख १२ हजार ७५६ की वृद्धि हुई है। सन् १९४७ में कुल उतने ही लाइसेन्स थे, जितनी इस एक साल में वृद्धि हुई है।

भारत सरकार द्वारा प्रकाशित एक विज्ञप्ति के अनुसार स्वतंत्रता के बाद से रेडियो लाइसेन्सों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। सन् १९५१ में एक मास में औसतन १२,५०० रेडियो व लाइसेन्स ही जारी किए जाते थे, परन्तु १९५६ में यह औसत १६ हजार और १९५८ में २२ हजार हो गया।

परन्तु साथ ही संबंधित कर्मचारियों ने गत वर्ष ऐसे २४ हजार रेडियो सेटों का पता लगाया, जिनके लाइसेन्स नहीं बनवाए गए थे।

बिजली के पंखों के उत्पादन म वृद्धि

कलकत्ता। अधिकृत आंकड़ों के अनुसार भारत में १९५९ के प्रथम चार महीनों में २,२९,८०० बिजली के पंखे बनाये गये, जबकि सन् १९५८ की इसी अवधि में २०,९०० पंखे बनाये गये थे। सन् १९५८ में कुल ६३,५,४०० पंखे तैयार किये गये, जबकि सन् १९५७ में ५,२४,४०० पंखे बनाये गये थे।

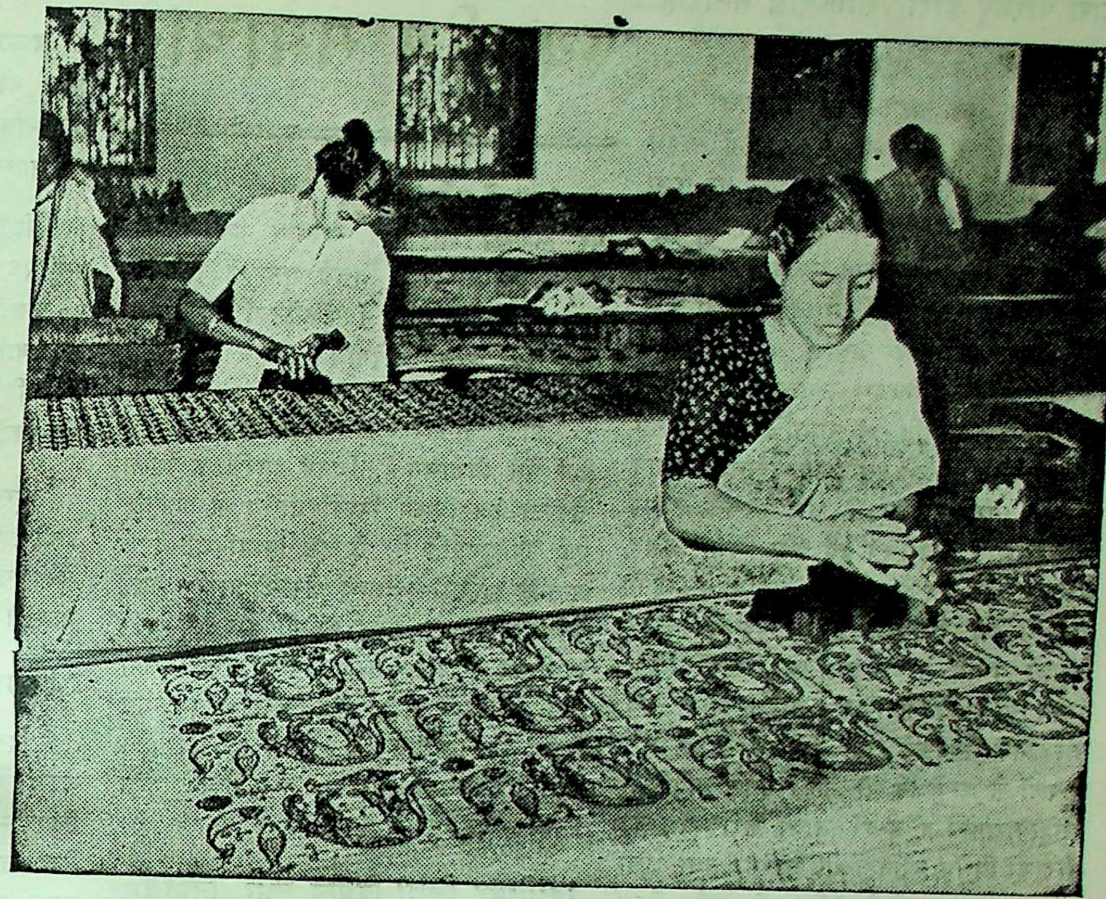

कलकत्ता के निकट कपड़े पर छपाई के ट्रेनिंग केन्द्र में पूर्व पाकिस्तान की विस्थापित स्त्रियां नए और अच्छे डिजाइन बनाना सीख रही हैं । ये डिजाइन लोककला पर आधारित हैं ।

अजन्ता की एक गुफा में एक नक्शे में रूसी प्रदेश

आगरा । अजन्ता की एक-एक गुफा में विश्व के नक्शे में रूसी प्रदेश दिखाया गया है । इस पर एक रीछ का चिन्ह अंकित है ।

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ डॉ० के. एम. अशरफ ने यह सूचना देते हुए यहां बताया कि रूसी दूतावास ने भारत में इस विचित्र-सी खोज का अध्ययन करने के लिए रूसी विशेषज्ञों के एक दल की नियुक्ति की है। उनकी पत्नी ने कहा कि भारतीय बौद्ध-भिक्षुकों का सदियों पूर्व मध्य एशिया में रूसी व्यापारियों के साथ निकट सम्पर्क था। अभी उक्त नक्शे का और भी गहराई से अध्ययन किया जायेगा ।

अमरीका भूमिगत अणुविस्फोट करेगा

वाशिंगटन । अणुशक्ति आयोग ने घोषणा की कि उसने भूमिगत विस्फोट के तरीकों का परीक्षण करने के लिए इसी ग्रीष्म-काल में एक नमक की खान में कई भूमिगत अत्याधिक तीव्र विस्फोट करने की योजना बनाई है।

किपलिंग के बंगले में शिलालेख स्थापित

लन्दन। अंग्रेजी लेखक स्व० रुडयार्ड किपलिंग इलाहाबाद में रहते थे। वे जिस मकान में रहते थे, उसमें एक शिलालेख स्थापित किया गया है। यह शिलालेख इलाहाबाद विश्वविद्यालय की प्रार्थना पर तैयार किया गया है। बंगले के बगीचे का दृश्य उल्लेखनीय है।

ग्रामोफोन रिकार्डों के आयात में कमी

कलकत्ता। व्यापारिक सूत्रों के अनुसार भारत में सन् १९५७ में ६२,६०० ग्रामोफोन रिकार्ड मंगाये गये थे, जो सन् १९५८ में घटकर २३,९०० रह गए।

इस आयात पर सन् १९५७ में ५,३४,००० रुपये और सन् १९५८ में ६७,००० रुपये खर्च हुए।

ब्रिटेन और पश्चिम जर्मनी से ग्रामोफोन रिकार्डों का आयात किया गया।

अमरीकी अणुबमवाही विमान फ्रांसीसी अड्डों से हटेंगे

पेरिस, ८ जुलाई । अमरीका ने उत्तर अटलांटिक संधि संगठन को कहा है कि वह अपने २०० अणुबमवाही लड़ाकू बमवर्षकों को फ्रांसीसी अड्डों से हटा रहा है।

मुगलकालीन इमारत का पुनरुद्धार

पुरावस्तु विभाग द्वारा 'चीनी का रोजा' नामक प्रसिद्ध मुगल इमारत का पुनरुद्धार किया जा रहा है। यह इमारत इतमदअत-दौला के प्रसिद्ध स्मारक से लगभग दो फर्लांग की दूरी पर यमुना के दूसरी ओर है।

यद्यपि इसका काफी बड़ा भाग टूट गया है, फिर भी जो कुछ बचा हुआ है, उससे भारत में ईरानी कला की सुन्दरता का आभास मिलता है।

यह स्मारक प्रसिद्ध ईरानी कवि शुकुरुल्लाह का है। उक्त कवि सम्राट् जहाँगीर के शासन-काल में आगरा में रहा करता था।

श्री ख्रुश्चेव इथियोपिया जाएंगे

मास्को। सोवियत प्रधान मंत्री श्री ख्रुश्चेव ने राष्ट्रपति वोरोशिलोव के साथ इथियोपिया की राजकीय यात्रा का एक निमंत्रण स्वीकार कर लिया है। यह निमंत्रण इथियोपिया के सम्राट हेल सिलासी ने क्रेमलिन में सोवियत नेताओं के लिए दिए गए भोज में दिया था। इस समय सम्राट् हेल सिलासी रूस की राजकीय यात्रा पर हैं।

——न्यूयार्क। 'लाईफ' पत्रिका के वाशिंगटन स्थित संवाददाता ने रूस के प्रधानमंत्री श्री निकिता ख्रुश्चेव के एक वक्तव्य को उद्धृत करते हुए बताया कि यदि जनवादी चीन ने फारमोसा पर हमला करने का फैसला किया तो रूस सीधी फौजी दस्तन्दाजी करके चीन की सहायता करेगा, फिर चाहे इसका अभिप्राय युद्ध ही क्यों न हो।

स्थानीय समाचार

कला परिषद् द्वारा कालिदास समारोह

मध्यप्रदेश कला परिषद् की सामान्य सभा की वार्षिक बैठक यहां राज्य के शिक्षा मंत्री डा० शंकरदयाल शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में गत वर्ष का आय-व्यय का लेखा व कार्य विवरण स्वीकार किया गया। साथ ही नया बजट स्वीकृत किये जाने के उपरान्त आगामी वर्ष के लिये सम्पन्न हुए निर्वाचन में शिक्षा मंत्री डॉ० शंकरदयाल शर्मा अध्यक्ष, और महारानी विजया राजे सिन्धिया उपाध्यक्ष निर्वाचित हुई हैं। कार्य-समिति में नामांकित सदस्य गत वर्ष की भांति ही रहे तथा अन्य सदस्यों के स्थान पर प्रो० गुरुप्रसाद टण्डन, श्री प्रेमचन्द कश्यप एवं श्री मालू निर्वाचित हुए तथा शिक्षा सचिव श्री एल. सी. गुप्ता सचिव बने रहेंगे। इसी बैठक में कालिदास समारोह गत वर्ष के अनुसार विशाल पैमाने पर मनाने का निश्चय किया गया। साथ ही प्रदर्शिनी, नाटक और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा विद्वानों के खोजपूर्ण भाषणों के आयोजन भी होंगे। इसके अतिरिक्त साहित्य, संगीत व अन्य कलाओं के विकास की ओर भी विशेष ध्यान दिया जावेगा तथा कला परिषद् की उप-समिति गठित की गई। बैठक में शिक्षा अधिकारियों के अतिरिक्त विधायक श्री गौतम शर्मा, उप-संचालक श्री० पी० के० श्रीवास्तव, निरीक्षक श्री आर० एस० कटारे व प्रो० हरीराम वर्मा आदि भी उपस्थित थे। शिक्षा मंत्री ने नव-निर्मित पोलीटेकनिक इन्स्टीट्यूट भवन का भी निरीक्षण किया। शिक्षा मंत्री डॉ० शर्मा नें संगीत और कला महाविद्यालयो के ग्वालियर में निर्माण हो रहे भवनों का अवलोकन भी किया और निर्माण कार्य के प्रति सन्तोष व्यक्त किया है। यहां से भोपाल के लिये प्रस्थान करने से, पूर्व, शिवपुरी जिले के नागरिकों के एक प्रतिनिधि मण्डल नें क्षेत्रीय विधायक श्री गौतम शर्मा के नेतृत्व में शिक्षा मंत्री से भेंट की और उनसे शिवपुरी में तत्काल एक डिग्री कॉलेज खोलने की आवश्यकता से उन्हें अवगत कराया।

लक्ष्मीबाई फिजीकल कालेज विश्वविद्यालय से सम्बद्ध

विक्रम विश्वविद्यालय की एकेडेमिक कौन्सिल ने अपनी बैठक में विश्वविद्यालय की फैकल्टियों की संख्या में वृद्धि करने का निश्चय किया है। नई फैकल्टी शारीरिक व्यायाम शिक्षा की प्रारम्भ की जायगी। जिसके शुरू हो जाने पर विक्रम विश्वविद्यालय में फैकल्टियों की संख्या १० तक पहुंच जावेगी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार देश में बहुत कम ऐसे विद्यालय हैं, जिनमें शारीरिक शिक्षा फैकल्टी है। विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति एवं उप-कुलपति ने भी इस विश्वविद्यालय के अन्तर्गत शारीरिक शिक्षा फैकल्टी प्रारम्भ करने के लिये उत्सुकता प्रकट की थी और अब चूंकि ग्वालियर में भारत सरकार द्वारा प्रारम्भ किया गया लक्ष्मीबाई कालेज फार फिजीकल एजूकेशन विक्रम विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हो गया है। अतः विश्वविद्यालय में इसी सत्र से फैकल्टी ऑफ फिजीकल एजूकेशन प्रारम्भ होने जा रहा है।

ग्वालियर जिला विधान सभा निर्वाचन नामावलियाँ

ग्वालियर जिलाध्यक्ष कार्यालय (निर्वाचन शाखा) की ओर से प्राप्त सूचना के अनुसार उक्त क्षेत्र (पिछोर-गिर्द, गिर्द तथा बृहत्तर ग्वालियर) की विधान सभा निर्वाचक नामावली १९५९ का प्रारंभिक प्रकाशन २१ जुलाई' ५९ से किया जाना निश्चित किया गया है, जिनके विषय में दावे, आपत्तियां तथा त्रुटियों के संशोधन आदि के निराकरण के लिए १९ अगस्त ५९ तक रूप क्रमांक ४ व ५ के निर्धारित फार्मों पर उक्त कार्यालय में आपत्तियां आदि प्रस्तुत की जा सकती हैं। नामावली की प्रतियां पिछोर के लिए तहसील डबरा, गिर्द के लिए नायब तहसीलदार, आबयाना, जनकताल लश्कर, लश्कर के लिये निर्वाचन कार्यालय, गोरखी, ग्वालियर ग्वालियर व मुरार के लिये नगर निगम उपकार्यालय, ग्वालियर तथा मुरार में देखी जा सकती हैं। अन्य ग्रामों तथा कस्बों की नामावलियां ग्रामों के पटवारी, गिर्दावर सर्किल, नगरपालिकाओं व उनके हलकों में १९ अगस्त ५९ तक अवलोकनार्थ उपलब्ध रहेंगी।

उच्च माध्यमिक प्रमाण-पत्र की परीक्षा

मध्यप्रदेश के मध्यभारत क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित उच्च माध्यमिक प्रमाण-पत्र की परीक्षा की पूरक परीक्षा दिनांक १२ अगस्त १९५९ से आरम्भ होगी।

जो विद्यार्थी परीक्षा में बैठने के अधिकारी हैं, उन्हें २६ रुपये शुल्क के साथ अपने आवेदन-पत्र २० जुलाई १९५९ तक बोर्ड के कार्यालय में भेज देना चाहिए। पूरक परीक्षा के लिए आवेदन-प्रपत्र विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं से प्राप्त किये जा सकते हैं।

पूरक परीक्षाओं के परीक्षा केन्द्र ग्वालियर, इन्दौर, भोपाल और सतना रहेंगे। आवेदकों को उस केन्द्र का नाम स्पष्ट रूप से लिखना चाहिये, जहां से वे परीक्षा में बैठना चाहते हैं।

जिलाधीश राष्ट्रीय विकास मंडल में

दिनांक ३ जुलाई को राष्ट्रीय विकास मंडल के तत्वावधान में रानीपुरा, ग्वालियर में एक राष्ट्रीय निःशुल्क शिक्षा-प्रसार-केन्द्र का उद्घाटन ग्वालियर के जिलाधीश के द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मोहल्ले के समस्त निवासी, नगर के प्रतिष्ठित नागरिक श्रीमती चन्द्रकला सहाय, एम. एल. ए. तथा अन्य वरिष्ठाधिकारीगण उपस्थित थे।

मंडल के तत्वावधान में एक राष्ट्रीय निःशुल्क शिक्षा-प्रसार-केन्द्र शीतला गली में पूर्व से ही चल रहा है। उक्त उद्घाटन द्वितीय शिक्षा प्रसार का था, जो रानीपुरा जैसे पिछड़े हुए क्षेत्र में स्थापित किया गया है।

ग्राहकों से निवेदन

ग्राहकों से निवेदन है कि पत्र-व्यवहार करते समय वे ग्राहक नम्बर देना न भूलें। ऐसा न करने की दशा में उनकी ओर से प्राप्त पत्रों पर उचित समय में ठीक कार्यवाही करने में कार्यालय को कठिनाई होती है और कतिपय पत्रों पर कार्यवाही करना ही असम्भव हो जाता है।

—मैनेजर

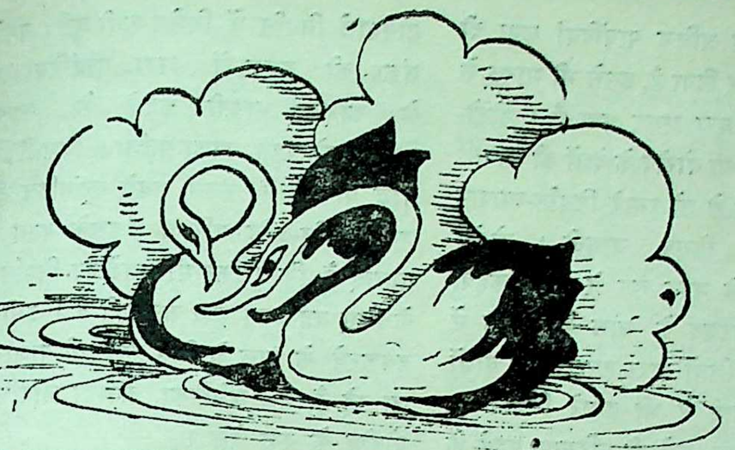

शहरी क्षेत्रों में पानी और सफाई की व्यवस्था

शहरी क्षेत्रों में जल और सफाई-व्यवस्था के राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत सरकार ने अब तक जल-व्यवस्था की २६२ और सफाई की नालियां बनाने की ६३ योजनाएं स्वीकार की हैं। इन योजनाओं पर कुल ७६ करोड़ रुपये खर्च होने की सम्भावना है। मार्च १९५८ तक इस कार्य के लिए २८ करोड़ ९० लाख रुपये खर्च हुए तथा दूसरी योजना समाप्त होने तक इस पर ५६ करोड़ ६० लाख रुपये खर्च होने का अनुमान है।

देश के शहरों और गांवों में पीने के पानी का प्रवन्ध वास्तव में राज्य सरकारों को करना चाहिए। भारत ऐसे देश के लोगों के लिए तो यह सबसे जरूरी है, कारण यहां लोग अशुद्ध पानी और गंदगी से होनेवाली बीमारी के शिकार होते हैं। भारत में प्रतिवर्ष प्राय: बीस लाख व्यक्ति हैजा, मोतीझरा, पेचिश तथा पेट के अन्य रोगों से मर जाते हैं। इन बीमारियों से प्रतिवर्ष पांच करोड़ रोगी आक्रान्त होते हैं। इनके कारण लोगों को आर्थिक हानि होती है; देश की जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग काम करने लायक नहीं रहता, जिससे राष्ट्र का बड़ा नुकसान होता है।

राज्य सरकारों ने पहली योजना के अन्तर्गत पानी और सफाई के लिए योजनाएं बनाई थीं। केन्द्रीय सरकार ने इस काम को और तेजी से बढ़ाने के लिए १९५४ में एक राष्ट्रीय कार्यक्रम चालू किया।

पहली योजना में राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत २२९ पानी और ६२ सफाई की योजनाएं स्वीकार की गईं, जिनकी लागत ६१ करोड़ ५० लाख रुपये आंकी गईं। पहली योजना की अवधि में इन योजनाओं पर १० करोड़ ३० लाख रुपये खर्च हुआ। दूसरी योजना में इनके लिए ५१ करोड़ २० लाख रुपये निर्धारित किया गया, किन्तु दूसरी योजना की अवधि में कुछ कार्यक्रमों की लागत बढ़जाने की वजह से यह खर्च ५१ करोड़ २० लाख से बढ़कर ५९ करोड़ ४० लाख हो गया। इसके अलावा ६ करोड़ ३० लाख रुपये लागत की कुछ और योजनाएं राष्ट्रीय कार्यक्रम में शामिल की गई। इनमें से कुछ योजनाएं तो उन राज्यों की थीं, जिन्होंने राष्ट्रीय कार्यक्रमों में पहली योजनाओं के अन्तर्गत पानी और सफाई की कोई योजना नहीं चलाई थी और कुछ नई योजनाएं थीं।

अनुमान है कि दूसरी योजना समाप्त होने तक आन्ध्र, बिहार, जम्मू और कश्मीर, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल राज्यों तथा हिमाचल प्रदेश और दिल्ली के केन्द्र-शासित क्षेत्र अपनी-अपनी योजनाएं पूरी कर लेंगे। आसाम, मैसूर, राजस्थान और पंजाब की योजनाएं तीसरी योजना के पहले वर्ष में पूरी हो जाएंगी, किन्तु बम्बई, केरल, मध्यप्रदेश, मद्रास और उत्तरप्रदेश राज्यों की योजनाएं दूसरी योजना समाप्त होने के काफी समय बाद पूरी होंगी। दूसरी योजना में इन योजनाओं पर अनुमानत: ४६ करोड़ ३० लाख रुपये खर्च होगा।

पानी और सफाई के राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत जो योजनाएं चल रही हैं, उनके लिए सामान आदि खरीदने को अमेरिका ६२ लाख डालर देगा। मार्च १९५८ के अंत तक ५६ डालर मूल्य का सामान भारत आ चुका था और राज्य सरकारों को बांटा जा चुका था।

भारत सरकार ने स्वास्थ्य महानिर्देशालय के अन्तर्गत, राज्य सरकारों को जल और सफाई से संबंधित समस्याओं के बारे में सहायता और सुझाव देने के लिए, सार्वजनिक स्वास्थ्य इंजीनियरी संगठन बनाया है। यह संगठन राज्य सरकारों की पानी और सफाई की योजनाओं की जांच भी करेगा।

सार्वजनिक स्वास्थ्य इंजीनियरी की ट्रेनिंग

दूसरी योजना में सार्वजनिक स्वास्थ्य इंजीनियरी की ट्रेनिंग देने के लिए तीस लाख रुपये निर्धारित हुआ है। अभी तक इस कार्यक्रम के अन्तर्गत १४१ इंजीनियर, १५७ इंजीनियर सहायक, ७६ जल-कल ऑपरेटर तथा २७ सफाई दरोगाओं को ट्रेनिंग दी गई। ट्रेनिंग पानेवालों को सरकार की तरफ से वृत्ति मिलती है और उनकी फीस, परीक्षा फीस तथा शैक्षणिक यात्रा आदि का व्यय भी सरकार वहन करती है।

पानी और सफाई की योजना पूरी करने के लिए पाइप, पम्प तथा अन्य सामानों की जरूरत पड़ती है। इसके लिए ढलवां और जस्तेदार लोहे के पाइपों की बड़ी जरूरत है। आशा है कि दूसरी योजना के औद्योगीकरण के कार्यक्रम पूरे हो जाने पर शहरों में पानी पहुंचाने के लिए जो भी सामान जरूरी होंगे, वह हमें अपने देश में ही मिलने लगेंगे।

पानी और सफाई की योजना बनाने में काफी विचार से काम लेने की जरूरत है। सबसे बड़ा प्रश्न है पानी का प्रबन्ध करना। इसके लिए संभव है शहर से काफी दूर सिंचाई के जलाशयों आदि से पानी लेना पड़े। किन्तु, इन स्थानों से पानी लेते समय सिंचाई की जरूरतों का ध्यान रखना जरूरी है।

पानी तथा सफाई की योजना बनाने और उन्हें चलाने के लिए नगरपालिकाओं तथा अन्य संस्थाओं का सहयोग लेना चाहिए। केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों को चाहिए कि वे उन्हें सहायता दें, किन्तु इसका ध्यान रखें कि इन संस्थाओं को जो आर्थिक सहायता दी जाती है, उसका वे समुचित उपयोग करें। जनता को चाहिए कि जो शुद्ध जल उन्हें मिलता है, उसका किफायत से उपयोग करे। वर्तमान कठिनाई को देखते हुए पानी और सफाई के लिए ऐसी योजना बनाने की आवश्यकता है, जिसे हम स्वयं पूरी कर सकें।

हम अधिक से अधिक निर्यात बढ़ाएं

(पृष्ठ १२ का शेष)

अर्थ-व्यवस्था को जारी रख सकते हैं, जितनी अब तक उन्नत हो सकी है। अधिक उन्नति के लायक साधन हमारे पास नहीं हैं। इसलिए तीसरी पंचवर्षीय योजना के खर्च के लिए जितनी विदेशी मुद्रा चाहिए, वह सब की सब विदेशी सहायता से ही पूरी करनी होगी। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत की निर्यात-क्षमता कितनी सीमित है। १९५८ का निर्यात आशाजनक नहीं रहा। इस वर्ष भारत ने ५ अरब ८० करोड़ रुपये का माल निर्यात किया, जबकि १९५७ में ६ अरब ४३ करोड़ रुपये के माल का निर्यात हुआ था और इस प्रकार ११ प्रतिशत की गिरावट आई। यह ठीक है कि काफी कड़ाई बरतने के कारण १९५७ की अपेक्षा १९५८ में हमारा आयात भी १७.६ प्रतिशत कम हो सका। इस प्रकार देश के उद्योगों और उपभोक्ताओं के काफी दिक्कतें उठाने के बाद भी अच्छा परिणाम नहीं निकला। उधर यदि आयात १७.६ प्रतिशत घटा, तो निर्यात भी ११ प्रतिशत कम हो गया।

निर्यात क्यों घटा ?

प्रश्न यह है कि हमारा निर्यात क्यों घटा ? निर्यात बढ़ाने के लिए सरकार ने कई प्रकार के प्रोत्साहन और रियायतें दीं, किन्तु विदेशी या अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कई बातों पर निर्भर है। हम खनिज मैंगनीज का ही उदाहरण लें। इसके निर्यात में १९५७ की अपेक्षा १९५८ में ५० प्रतिशत की कमी हुई। इसके लिए भारत तनिक भी जिम्मेवार नहीं है। यदि मैंगनीज के प्रमुख खरीदार अमेरिका और योरोप के देशों में मंदी आ जाय और अमेरिका भारत की अपेक्षा दक्षिणी अमेरिका से जो उसके अधिक निकट है मैंगनीज खरीदना पसंद करे, तो भारत के पास इसका क्या इलाज हो सकता है। निस्संदेह हर देश अपने पास के देश से माल खरीदना पसंद करता है, क्योंकि उसे ढुलाई कम देनी पड़ती है। पश्चिमी योरोप के देशों ने भारत से मंगाये जाने वाले माल के विरुद्ध अधिक पाबंदियां लगा दी हैं और कोटा कम कर दिया है, इससे भी भारत के निर्यात-व्यापार पर बुरा असर पड़ा है। योरोपियन कामन मार्कट या योरोप के देशों की आपसी लेनदेन की व्यवस्था से तो हमारे निर्यात-व्यापार की स्थिति और बिगड़ जायगी। योरोप की इस व्यवस्था से मुख्य रूप से चाय, कहवे, सूती कपड़े और पटसन के माल के निर्यात में कमी होगी। विदेशियों द्वारा हमारी इन चीजों का कम मूल्य लगाने से भी हमारे निर्यात का मूल्य कम हो जायगा, भले ही परिमाण पहले के बराबर ही रहे। इसके विपरीत हम जो पूंजीगत सामान या मशीनें इत्यादि विदेशों से मंगाते हैं उनका मूल्य ऊंचा रहा और हमें उतने ही माल के लिए अधिक मूल्य देना पड़ा। इन दोनों बातों से हमारी व्यापार-तुला आशा से अधिक प्रतिकूल रही।

पटसन और सूती कपड़ा

भारतीय पटसन-उद्योग ने अपने को आवश्यकतानुसार काफी बदला है। किन्तु, योरोप के देशों के तैयार माल और पाकिस्तान के सस्ते माल के मुकाबले भारतीय माल ठहर नहीं पा रहा। सूती कपड़े के बारे में भी यही बात है। भारतीय वस्त्र-उद्योग में मूलतः ऐसी कमियाँ हैं, जिन्हें यह दूर नहीं कर सका है और सरकार ने इस दिशा में जो नीति अपनाई है, उसका भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा। भारतीय वस्त्र-उद्योग की सबसे बड़ी आवश्यकता है आधुनिकतम तरीकों और मशीनों से काम लेने की। यहां वस्त्र-उद्योग में आवश्यकता से अधिक मजदूर काम कर रहे हैं। हर साल हमारा दक्षिण-पूर्वी एशिया के बाजारों में चीन और जापान के कपड़े से मुकाबला बढ़ता जा रहा है। ये दोनों देश अपने वस्त्र-उद्योग को खूब बढ़ा रहे हैं। यही कारण है कि कपड़े का निर्यात १९५७ के ६५ करोड़ १० लाख रुपये से घट कर १९५८ में ४७ करोड़ रुपये ही रह गया। ब्रिटेन मध्य पूर्व और अफ्रीका के देशों को होनेवाले निर्यात में विशेष कमी हुई। बर्मा और लंका की सरकारों द्वारा पाबंदियां लगाने के कारण भारती करघे के माल के निर्यात को बहुत धक्का पहुंचा। जितनी निर्यात-वृद्धि परिषदें हैं, उनमें सबसे सुसंगठित है सूती वस्त्र-निर्यात-वृद्धि परिषद्। इसके काम में कई बाधाएं हैं, किन्तु फिर भी कपड़े का निर्यात बढ़ाने के लिए यह बहुत कुछ कर रही है। इसी प्रकार हथकरघे के माल के लिए कुछ नये बाजार खोजे जा रहे हैं, जैसे अमेरिका, कनाडा और पश्चिमी योरोप के कुछ देश।

नये उद्योग

कुछ नई चीजों जैसे--इंजीनियरी के हल्के सामान आदि के निर्यात को बढ़ाने के लिए भी काफी प्रयत्न किये जा रहे हैं और इसमें सफलता मिली है। इन छोटी-छोटी चीजों से भी हम काफी विदेशी मुद्रा कमा सके हैं। चाय के निर्यात से हमें काफी कमाई होती है, किन्तु विदेशों में इसका भाव काफी घटता-बढ़ता रहता है। तेलहन की जगह अब भारत तेल ही निर्यात करने लगा है और तेलों में भारत को किसी से मुकाबला नहीं करना पड़ता।

पिछले मार्च में निर्यात-वृद्धि-सलाहकार परिषद् की बैठक में वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने कहा था कि मुझे आश्चर्य होता है कि हम इच्छित मात्रा में निर्यात बढ़ाने में सफल क्यों नहीं हुए। ऐसा मालूम होता है कि हम अभी तक विदेशों की अपेक्षा स्वदेश में ही अपने माल खपाने की अधिक फिक्र करते हैं। विश्व बैंक के विशेषज्ञ दल ने भी यही राय दी थी कि हम लोग अपने मन को निर्यात-बढ़ाने के अनुकूल नहीं बना सके हैं। निर्यात बढ़ाने के प्रति उदासीनता को देखकर अनिवार्य रूप से निर्यात करने को बाध्य करने का विचार भी उठ सकता है, किन्तु यह कहना कठिन है कि इस तरह की किसी योजना से मूल समस्या हल होगी या और उग्र हो जायगी।

[योजना से साभार]

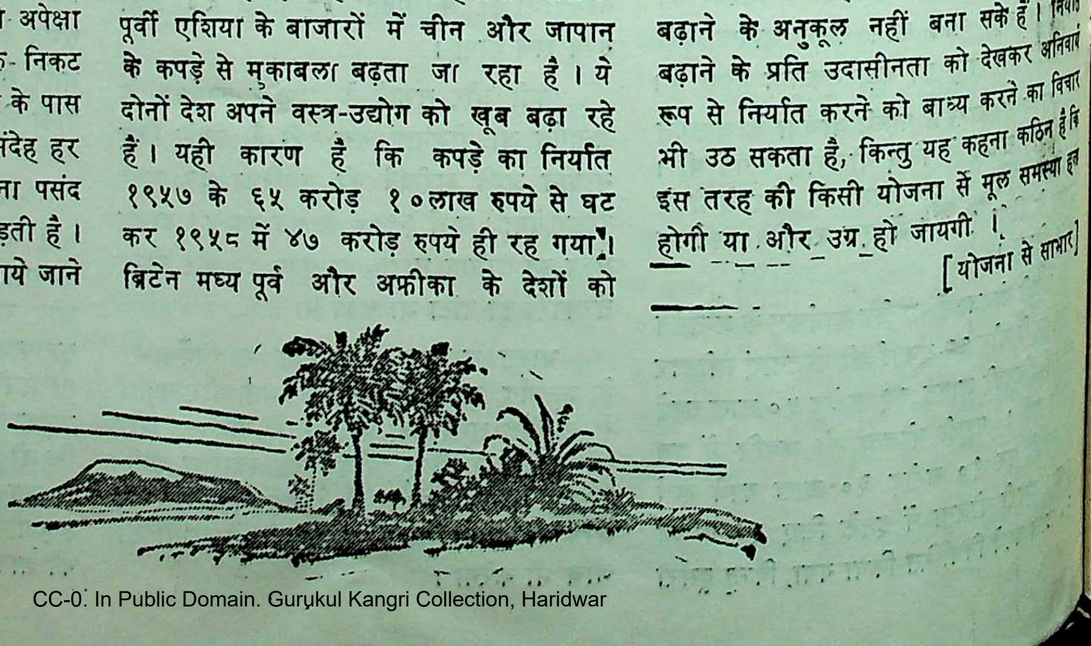

विज्ञान-वार्ता

पानी के छिड़काव द्वारा सिंचाई

प्रत्येक माली यह जानता है कि उसके छोटे से बगीचे के लिए पानी छिड़क कर पौधों को सींचने का तरीका सबसे अच्छा है । लेकिन, बड़े-बड़े खेतों और बगीचों को इस रीति से सींचना आसान नहीं । आजकल सिंचाई-विशेषज्ञ इस तरीके को बड़े-बड़े खेतों और बगीचों में काम में लाने के बारे में प्रयोग कर रहे हैं ।

पिछले दस वर्ष में छिड़काव के द्वारा सिंचाई का तरीका अमरीका, आस्ट्रेलिया और कनाडा में प्रचलित हुआ है । भारत में दो साल पहले ही इसकी आजमाइश शुरू हुई । दक्षिण के कुछ काफी-बागानों में ही पहले-पहल इस तरीके से सिंचाई की गई और उससे बहुत लाभ हुआ । देश के उन भागों में, जहां पर बगीचे और खेत तो बहुत बड़े-बड़े हैं, पर पानी कम प्राप्त है, वहां इस तरीके से सिंचाई बहुत लाभप्रद सिद्ध होगी ।

सिंचाई के इस तरीके के सबसे बड़े लाभ हैं कि न तो पानी के रुकाव का भय रहता है और न ही नालियों में मिट्टी और कीचड़ जमा होता है । साथ ही, पोली जमीन में अधिक पानी सोख लिए जाने की भी गुंजाइश नहीं रहती और पानी का पूरा उपयोग होता है । प्रयोगों से सिद्ध हो गया है कि पानी के छिड़काव द्वारा सिंचाई का तरीका भारत के लिए बहुत उपयुक्त रहेगा ।

अच्छे किस्म के उर्वरक बनाने पर जोर

सिन्द्री के खाद कारखाने में केवल रासायनिक खाद का उत्पादन बढ़ाने के लिए ही जी-तोड़ मेहनत नहीं की जा रही है, बल्कि इस बात का भी पूरा ध्यान रखा जा रहा है कि उर्वरक अच्छे किस्म के हों । सिन्द्री का प्रत्येक कर्मचारी यह जानता है कि उसके कारखाने में बनी अच्छी रासायनिक खाद पर ही देश की अनाज की उपज निर्भर है । सबसे अधिक यह जिम्मेदारी इस कारखाने के अनुसंधानकर्ताओं और टेकनोलोजीकल विभाग पर है ।

हाल ही में एक समस्या सामने आयी । अमोनियम नाइट्रेट का देश में सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाता है; क्योंकि इसमें अन्य उर्वरकों की तुलना में कहीं अधिक नाइट्रोजन होती है । लेकिन इसमें एक बहुत बड़ा नुक्स है । यह बहुत जल्दी सीलता है और जम जाता है । गोदामों में भरे रहने पर इस पर जो दबाव पड़ता है, उससे यह और भी कड़ा हो जाता है । कड़े ढेलों को खेत में मिलाया नहीं जा सकता । इसे फिर से पीसकर खेतों में डालने योग्य बनाने पर बहुत खर्च होता है । इस समस्या के हल के लिए सिन्द्री के वैज्ञानिकों ने दो तरीके अपनाए हैं–एक तो ऐसे थैलों का निर्माण, जिनमें अमोनियम नाइट्रेट सील से सुरक्षित रहता है और जम नहीं पाता । दूसरे, अमोनियम नाइट्रेट में कुछ ऐसे सस्ते और हानिरहित पदार्थ मिलाना, जो इसे सीलने नहीं देते और यह जमने से बच जाता है । ये दोनों तरीके बहुत कारगर सिद्ध हुए हैं ।

मछलियों की डिब्बाबन्दी के अच्छे तरीके

देश में डिब्बाबन्द मछली अधिकांश बाहर से मंगाई जाती है । अभी हाल ही में कुछ भारतीय फ़र्मों ने मछलियों की डिब्बाबन्दी शुरू की है । इस काम में सरकार द्वारा स्थापित मछली अनुसंधान-केन्द्रों की खोजों से बड़ी मदद मिली है ।

मछलियां अधिक समय तक ठीक बनी रहें । अतएव, उनका नमक आदि से उपचार किया जाता है । उपचार के कई तरीके हैं, जो मछलियों की किस्म और स्थानीय परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं । देश में अधिकतर मछलियों को धूप में सुखाकर और नमक लगाकर डिब्बाबन्दी करने का तरीका काम में लाया जाता है । मछलियों को अधिक दिन खाने योग्य बनाए रखने के लिए कहीं-कहीं मसाले और अन्य पदार्थ लगाए भी जाते हैं ।

मछलियों की डिब्बाबन्दी का काम हमारे लिए नया है । इस समय काम में आनेवाले विभिन्न तरीकों की जाँच की जा रही है । यह देखा जा रहा है कि अलग-अलग जगहों और मछलियों की डिब्बाबन्दी के लिए कौनसे तरीके अधिक उपयुक्त हैं ।

बिजली-उद्योग के लिए अच्छा अभ्रक

कलकत्ते की सेंट्रल ग्लास एण्ड सिरेमिक रिसर्च इंस्टीटयूट ने बिजली-उद्योग में काम आनेवाले अभ्रक की परीक्षा के लिए एक यंत्र बनाया है । बिजली का सामान बनाने में खास किस्म का अभ्रक काम में आता है । इस यंत्र द्वारा यह आसानी से पता लगाया जा सकता है कि जांच के लिए आया हुआ अभ्रक बिजली के किस प्रकार के सामान के लिए उपयुक्त है । पहले अभ्रक को देखकर और उसमें दाग आदि होने या न होने से ही उसकी अच्छाई-बुराई की जांच की जाती थी । पर अब वह अभ्रक भी, जिस पर दाग लगे हों, काम में लाया जा सकेगा. यदि वह इस यंत्र द्वारा विद्युत्-गुणों की परीक्षा में खरा उतरता है । इस यंत्र के प्रयोग से यह निश्चित हो जाएगा कि बिजली-उद्योग में अच्छा अभ्रक ही इस्तेमाल होता है ।

यह यन्त्र आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है, बैटरी से चलता है और इसको चलाने तथा समझने का काम बड़ा आसान है । इन गुणों के कारण इसकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती है ।

चमत्कारी औषधियों का आविष्कार

पिछले कुछ वर्षों में रोगों के प्रसार को रोकने और रोगों का नाश करनेवाली अत्यधिक प्रभावशाली औषधियों का विकास हुआ है । न केवल सामान्य रोगों, बल्कि शरीर और मस्तिष्क को पंगु और बेकार कर देनेवाले भयंकर रोगों पर काबू पानेवाली काफी प्रभावशाली औषधियों का निर्माण किया गया है । आज मनुष्य के अनेकों रोगों पर काबू पाने के लिए जिन औषधियों का उपयोग होता है, उनमें से ९० प्रतिशत १० वर्ष पूर्व अज्ञात थीं । उदाहरणार्थ, पेनिसिलिन, स्ट्रेप्टोमाइसिन इत्यादि । विभिन्न औषधि-निर्माता-फर्मों में कार्य करनेवाले औषधि-विशेषज्ञों ने इन प्रभावशाली औषधियों के निर्माण में उल्लेखनीय योग दिया है । उदाहरण के लिए विस्कौसिन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने रक्त में थक्का जमने के कारणों का अनेक वर्षों तक सूक्ष्मता से अध्ययन करने के उपरान्त एक ऐसी प्रभावशाली औषधि खोज निकाली, जिससे इस भयंकर रोग पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है । इस प्रकार हृदय की रक्तवाहिनी नाड़ियों में रक्त जमने के खतरे पर काबू पाकर हृदय रोगों के निदान और उपचार में काफी सहायता मिली है ।

विविध-समाचार

आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास

द्वितीय पंचवर्षीय आयोजना के अन्तर्गत, भारत सरकार के वैज्ञानिक अनुसन्धान तथा सांस्कृतिक मन्त्रालय ने आधुनिक भारतीय भाषाओं (हिन्दी तथा संस्कृत को छोड़कर, जिसके लिए अलग योजनाएं हैं) के विकासार्थ एक योजना बनाई है। इस योजना के अन्तर्गत साहित्य की अपेक्षा भाषा के विकास को प्राथमिकता दी जायगी।

इस योजना का उद्देश्य संविधान में निर्देशित सभी भाषाओं (हिन्दी तथा संस्कृत को छोड़) तथा सिन्धी को गति तथा प्रोत्साहन देना है, ताकि इन भाषाओं को अवाध रूप से अपना विकास करने तथा अधिकाधिक रूप से समृद्ध बनने में सहायता प्राप्त हो। यह उद्देश्य केवल सभी भारतीय भाषाओं के समन्वित तथा समान विकास से ही सम्भव हो सकता है। यह आज की एक सबसे बड़ी राष्ट्रीय आवश्यकता है।

भारत सरकार ने इस योजना को द्वितीय पंचवर्षीय योजना की शेष दो वर्षों की अवधि (१९५९-६१) में इस योजना को जारी रखने का निश्चय किया है तथा इस योजना के लिए भारत सरकार के वैज्ञानिक अनुसन्धान तथा सांस्कृतिक मन्त्रालय द्वारा केन्द्रीय सरकार के १९५९-६० के आय-व्ययक में सात लाख रुपये की व्यवस्था की गई है तथा इस वर्ष प्रत्येक भाषा के विकास के लिए कुल पचास हजार रुपये अखिल भारतीय स्तर पर उपलब्ध किये जायंगे। केन्द्रीय सरकार की सहायता राज्य सरकारों और सम्बन्धित संस्थाओं द्वारा स्वीकृत योजनाओं पर किये जानेवाले व्यय के ५० प्रतिशत के बराबर, किन्तु विशेष मामलों में केन्द्रीय अनुदान १०० प्रतिशत तक भी बढ़ा दिया जा सकता है।

राज्य सरकार, आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास-कार्य में संलग्न निजी संस्थाओं में अनुदान देने की सिफारिश करेगी और इन मामलों में केन्द्र द्वारा दिये गये अनुदान ऐसी संस्थाओं द्वारा, विशेष योजनाओं पर किये जानेवाले खर्च के बराबर होंगे। जो संस्थाएं राज्य के भीतर स्थित हैं और हिन्दी तथा संस्कृत को छोड़कर आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास-कार्य में संलग्न हैं, उन्हें सहायता मिल सकेगी, भले ही इस प्रकार की भाषाएं राज्य की प्रादेशिक भाषा से भिन्न हों। जानकारी की सुविधा के लिए यह उल्लेखनीय है कि इस योजना के अन्तर्गत जिन विषयों के लिए संस्था को सहायता दी जा सकेगी, उनकी सूची में विश्व ज्ञान कोष, अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं के शब्द कोषों के ग्रन्थ, साथ ही भारतीय भाषाओं के द्वि-भाषीय कोषों का निर्माण तथा प्रकाशन, पुरातन हस्तलिपियों अथवा अनुपलब्ध पुस्तकों, सूची-पत्रों तथा पुस्तक-सूचियों का प्रकाशन तथा विज्ञान और संस्कृत पर बोध सुलभ भाषा में लिखी पुस्तकों की प्रकाशन-रचना तथा प्रकाशन सम्मिलित है। जिन अन्य कुछ विषयों के लिए अनुदान-हेतु आवेदन दिया जा सकता है, वे निम्नलिखित हैं:—वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण वैज्ञानिक विषयों पर, पाठ्य-पुस्तकों अथवा सामान्य उपयोग की पुस्तकों की तैयारी असाधारण रूप से, महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन, हस्तलिपियों का संपादन, ऐसी पुस्तकों की तैयारी और प्रकाशन, जो व्याकरण वाक्य-रचना अथवा विशिष्ट शब्द भाण्डार की दृष्टि से विभिन्न भारतीय भाषाओं में सादृश्य बतलाए, एक भारतीय भाषा से दूसरी भारतीय भाषा में अनुवाद के लिए पुरस्कार-वितरण, मान्य संस्थाओं के तत्वावधान में साहित्यिक सम्मेलनों का आयोजन, ऐसी पुस्तकों की रचना तथा प्रकाशन, जिससे अन्य मातृभाषावाले व्यक्ति विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषाओं की लिपियों, व्याकरण आदि से परिचित हो सकें, एक भाषा की लिपि से अन्य भाषा, जिसमें हिन्दी सम्मिलित है, की लिपि में पुस्तकों का प्रकाशन है।

इस योजना के अन्तर्गत जो कार्य किया जानेवाला हो, उसकी एक सम्बद्ध तथा सम्पूर्ण योजना १९५९-६० और १९६०-६१ दोनों वर्षों के लिए स्वीकृत योजनाओं के अंतर्गत तैयार की जा सकती है। अनुदान १९५९-६० वर्ष में, ३१ मार्च, १९६० तक अनुमानित व्यय राशि तक ही दिया जायगा, परन्तु १९६०-६१ के लिए अनुदान निश्चित रूप से दिया जायगा, बशर्ते कि आवश्यक धनराशि संसद द्वारा स्वीकृत हो जाए।

अनुमानों सहित आवेदन-पत्र मध्यप्रदेश शासन सचिव, शिक्षा विभाग भोपाल के पास ३१ जुलाई, १९५९ तक पहुंच जाना चाहिए।

सी. पी. टी. एस. भवन का उद्घाटन

जबलपुर में सी. पी. टी. एस. परिवहन-सेवाओं के नये कार्यालय-भवन का उद्घाटन उपमन्त्री श्री केशवलाल गोमास्ता ने किया। इस अवसर पर भाषण करते हुए उन्होंने कहा कि उनकी सदैव यह अभिलाषा रही है कि सी. पी. टी. परिवहन-सेवाओं का निजी कार्यालय, डिपो और कर्मशाला हो। इससे विभाग को अधिक कार्यक्षम बनाने में सहायता मिलती है।

श्री गोमास्ता ने कर्मचारियों से कहा कि कर्मशाला के विस्तार और मध्यप्रदेश परिवहन-सेवाओं के कर्मचारियों के आवास-गृहों के निर्माण की योजना सरकार के विचाराधीन है।

उपमन्त्री ने आगे कहा कि सरकार कर्मचारियों की आर्थिक स्थिति सुधारने के प्रश्न पर समुचित ध्यान दे रही है और बोनस तथा ग्रेच्युटी सम्बन्धी उनकी मांगें स्वीकृत की जा चुकी हैं। उपमन्त्रीजी ने कार्यालय के प्रांगण में पौधारोपण किया। इस अवसर पर मध्यप्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष श्री कुंजीलाल दुबे भी उपस्थित थे।

ग्राम-रक्षा-समितियां स्थापित

ग्राम-रक्षा समितियों के विशेषाधिकारी की ओर से प्राप्त हुये जून मास के प्रतिवेदन के अनुसार जून मास की समाप्ति तक ग्वालियर संभाग के भिण्ड. मुरैना तथा ग्वालियर जिलों में ९५५ ग्राम-रक्षा-समितियों की स्थापना की गई तथा आलोच्य अवधि तक २५,६१६ सदस्य बनाए गये। भिण्ड जिले में ४९३ ग्राम-समितियां कार्यरत हैं, जिनके १३,५९० सदस्य हैं। मुरैना जिले में ३५५ ग्राम-रक्षा-समितियां, जिनकी सदस्य-संख्या ९५१, है। आत्मरक्षा में योग दे रही हैं। ग्वालियर जिले में १०७ ग्राम-रक्षा समितियां की स्थापना की जा चुकी है, जिनके २,३७४ सदस्य हैं।

कुख्यात दस्यु जयसिंह पुलिस का बन्दी

९ जुलाई को मुरैना जिले के पोरसा पुलिस क्षेत्र के अंतर्गत समथरा ग्राम में आयोजित छापे में राज्य पुलिस भिण्ड तथा मुरैना जिलों में की गई अनेक डकैतियों के कथित अभियुक्त दस्यु जयसिंह को बंदी बनाने में सफल हुई है।

महिलाओं तथा बच्चों के बीच कल्याण-कार्य

डाक्टर काटजू द्वारा सम्मेलन का उद्घाटन

भोपाल के गांधी मेडिकल कालेज, भवन में समस्त सामुदायिक विकास खंड में समाज बोर्ड की योजना क्रियान्वय समितियों के अध्यक्षों तथा खंड-विकास अधिकारियों के सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राज्य के मुख्यमंत्री डा. कैलासनाथ काटजू ने सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को आव्हान किया कि वे राज्य के प्रत्येक गांव को कल्याण-कार्यक्रम के अंतर्गत लाएं। आपने कहा कि यह एक वृहद् कार्य है, क्योंकि राज्य में लगभग ६७,००० गांव है। वेतनभोगी कर्मचारियों के कार्य की प्रशंसा करते हुए मुख्यमंत्रीजी ने इस वात की आवश्यकता पर जोर दिया कि गांवों में ही नेता तैयार किये जायं तथा महिलाओं में आत्मसुधार की अभिलाषा जागृत की जाए। इस कार्य के लिए प्रत्येक गांव में एक महिला समाज की स्थापना की जानी चाहिए। आपन यह भी सुझाव दिया कि शहरवासी महिलाएं ग्राम की महिलाओं के साथ सामाजिक उत्सव मनाकर उसके जीवन में उत्साह तथा आशा का संचार कर सकती हैं। उन्होंने समाज-सेवा की आकांक्षा रखनेवाले व्यक्तियों से अनुरोध किया कि वे किसी एक गांव को अपना ले तथा वहां गहन रूप से विकास-कार्यक्रम को आगे बढ़ावें।

खंड विकास अधिकारियों के बीच भाषण देते हुए डाक्टर काटजू ने कहा कि वे ग्रामीणों के उनके पास आने की प्रतीक्षा न करें, बल्कि, वे स्वयं ग्रामवासियों के पास जायं, उनसे मिलें, उनकी समस्याएं समझें तथा उन्हें हल करने का प्रयत्न करें। आपने सलाह दी कि दौरे पर जाते समय वे अपनी पत्नी को ले जायं, जो गांवों में महिला एवं शिशु-कल्याण-कार्यों की देखरेख में दिलचस्पी लें।

इसके पूर्व मध्यप्रदेश समाज कल्याण मंडल की अध्यक्षा, श्रीमती विमला शर्मा ने अपने स्वागत-भाषण में मंडल की गतिविधियों का विवरण दिया। उन्होंने कहा कि समाज-कल्याण-कार्य, १९५३ से १९५७ तक स्वतंत्र रूप से किया जाता था, परन्तु १९५७-५८ से वह सामुदायिक-विकास खंड-कार्यक्रम से संवद्ध हो गया है, जिसके परिणामस्वरूप इन विकास-खंडों में पहले की ४९ योजनाओं के साथ ३९ नवीन योजनाओं का भी कार्य आरम्भ कर दिया गया है।

इन योजनाओं के अन्तर्गत बाल-वाड़ियाँ, समाज-शिक्षा-केन्द्रों, कुटीर-उद्योग-केन्द्रों तथा सूतिका-गृहों की स्थापना का कार्य सम्मिलित है। दूरस्थ ग्रामों में इन कल्याण-कार्यक्रमों का सन्देश और लाभ पहुंचाने के लिए समाज कल्याण मंडल की विभिन्न शाखाओं को जीप गाड़ियों की व्यवस्था की गई है। श्रीमती शर्मा ने ग्रामीण महिलाओं से अनुरोध किया कि वे ग्रामसेविकाओं का प्रशिक्षण प्राप्त करने के इस सुअवसर से लाभ उठावें। अब तक १२ महिलाओं को अम्बर चर्खा चलाने का प्रशिक्षण दिया जा चुका है तथा ११ को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उन्होंने अंत में कहा कि राज्य में महिलाओं तथा शिशुओं के कल्याण-कार्यों में व्यस्त १०० गैर-सरकारी संस्थाओं को अनुदान के रूप में २,७५,००० रुपये दिये जा चुके हैं।

सम्मेलन में अन्य व्यक्तियों के अतिरिक्त श्री मिश्रीलाल गंगवाल, वित्तमंत्री; डाक्टर शंकरदयाल शर्मा, शिक्षामंत्री; श्री अब्दुल कादिर सिद्दीकी, अन्न-मंत्री; श्री मथुराप्रसाद दुबे, उप-मंत्री तथा राज्य के उच्च अधिकारी उपस्थित थे।

सहकारी आन्दोलन की प्रगति

सागर जिले में सहकारी आन्दोलन दिन-प्रति-दिन प्रगति कर रहा है। अब तक जिले के बसे हुए १,८३७ ग्रामों में से लगभग १,६५० ग्रामों को ३७७ प्राथमिक साख-समितियों के अंतर्गत ले आया गया है तथा इन समितियों में लगभग १२,३०० सदस्य ह। इनमें से ३६ अकृषि समितियां हैं।

सागर में एक केन्द्रीय सहकारी एवं भू-बंधक बैंक लिमिटेड है, जो पूरे जिले के लिए काम करता है। इस बैंक का पंजीयन १९११ में १५,९९० रुपये की साधारण पूंजी के साथ हुआ था। बैंक की चुकता हिस्सागत पूंजी बढ़कर अब २,६७,१७५ रुपये हो गई है, जिसमें से समितियों की हिस्सागत पूंजी १,७७,७७० रुपये है। १९५७-५८ वर्ष में सागर जिले के खुरई विकास-खंड के खिमलासा, झराई, बरघा, बेहरोलसिंह पुर और बरोदिया नगर में ५ बड़े वृहत् आकार समितियां गठित की गई थीं। राहतगढ़ खंड में भी १९५८-५९ वर्ष में ५ बड़े वृहत् समितियां स्थापित की गई थीं।

श्रमदान-व्यवस्था को हाट-व्यवस्था से जोड़ने के लिए गत वर्ष खुरई में एक प्रादेशिक हाट-व्यवस्था-समिति की स्थापना की गई थी। इस समिति को शासन की ओर से २०,००० रुपये का ऋण मिला है तथा समिति की १५,००० रुपये की हिस्सागत पूंजी में शासन के अंशदान के रूप में ५,००० रुपये का सहायता-अनुदान प्राप्त हुआ है। पहले जिले में बंडा, खुरई और सागर में ३ सहकारी कृषि संघ थे। खुरई संघ को पहले ही प्रादेशिक कर दिया गया था। सागर का संघ भी मार्च मास में प्रादेशिक हाट-व्यवस्था-समिति लिमिटेड में परिवर्तित कर दिया गया है।

इस संस्था को इसकी हिस्सागत पूंजी में सरकार के अंशदान के रूप में ४२,५०० रुपये की सहायता मिली है और ऋण के रूप में १५,००० रुपये तथा गोदाम-सहायता के रूप में ५,००० रुपये दिये गये हैं।

इसके अतिरिक्त, तहसील कृषि संघ, बंडा और सागर प्रादेशिक हाट-व्यवस्था-समिति बहुत ही उपयोगी कार्य कर रही है। यह हाट-व्यवस्था-समिति रासायनिक उर्वरकों तथा लोहा और इस्पात की एकमात्र वितरक है। यह समिति कपड़े का व्यापार भी करती है तथा अपने सदस्यों और गैर-सदस्यों को कृषि-उपज की हाट-व्यवस्था करती है। बंडा संघ लोहा, कपड़ा, खाद्यान्न इत्यादि का व्यापार करता है।

सागर जिले में चार पशु-सुधार समितियां हैं, जो राहतगढ़, नरामावली, बिजौरा और गोडाला में स्थित है। सागर शहर में चार शहरी सहकारी भंडार हैं।

इसके अतिरिक्त, बरखेड़ा, रानीपुरा, सागर और धाना में चार बहुउद्देश्यीय सहकारी समितियां कार्य कर रही हैं। सागर, देवरी, राहतगढ़ और गढ़ाकोटा की चार बुनकर सहकारी समितियां संतोषजनक ढंग से कार्य कर रही हैं। जिले में पांच औद्योगिक सहकारी समितियां तथा छह सहकारी कृषि-समितियां भी हैं।

अस्पृश्यता-निवारण-सम्मेलन

सतना के पास कोठी में ४ जुलाई को अस्पृश्यता-निवारण-सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए वन तथा नैसर्गिक साधन मंत्री श्री शंभुनाथ शुक्ल ने कहा कि जो व्यक्ति अस्पृश्यता-निवारण के महान कार्य का विरोध कर रहे हैं, वे मानवता की बहुत बड़ी हानि कर रहे हैं। उन्होंने जनता से आग्रह किया कि वे अस्पृश्यता-निवारण तथा हरिजनों के सुधार के लिए निःस्वार्थ भाव से उत्साहपूर्वक प्रयत्न करें।

श्री शुक्ल ने आगे कहा कि गांधीजी तथा हमारे सन्तों ने अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के कल्याण पर बहुत जोर दिया था; क्योंकि ये जातियां हिन्दू समाज का लगभग एक-तिहाई अंश है। यदि हमें किसी भी प्रकार की प्रगति अभीष्ट है, तो यह अनिवार्य है कि हम अपने समाज के इस भाग की दिशा सुधारें। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों ने अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के कल्याणार्थ विशाल राशियां खर्च की हैं तथा उनके हितार्थ कानून बनाये हैं। भारत के संविधान में उनकी भलाई के लिए विशष व्यवस्था की गई है। सरकार अस्पृश्यता के उन्मूलन के लिए भरसक प्रयत्न कर रही है। अब स्थिति बदल गई है और बहुत सुधार हो गया है, परन्तु, इस दिशा में अभी भी बहुत कार्य करना शेष है।

लगभग दो हजार लोगों को काम मिला

राज्य के १७ काम-दिलाऊ दफ्तरों के मई मास के प्रतिवेदन में कहा गया है कि बेकारों के लिए उचित काम प्राप्त कराने तथा जरूरतमंद मालिकवर्गों के लिए प्रशिक्षित कर्मचारी उपलब्ध कराने में राज्य सरकार के काम-दिलाऊ दफ्तरों ने अधिकाधिक सहायता पहुंचाई है।

इन दफ्तरों के माध्यम से कुल १९३९ पंजीबद्ध बेकारों को काम पर लगाया गया, जबकि विगत मास में १,९८८ लोगों को काम में लगाया गया था। इस मास कुल ११,१६७ बेकारों का पंजीयन किया गया और ४,१२३ रिक्त जगहों को अधिसूचित किया गया था।

३१ मई, १९५९ को कुल रिक्त जगहें ८,७३२ थीं और इन दफ्तरों में ४४,९१८ लोगों को पंजीबद्ध किया गया था। जो रिक्त जगहें अधिसूचित की गई हैं, परन्तु भरी नहीं हैं, उनसे यह ज्ञात होता है कि अन्य बातों के अतिरिक्त प्रशिक्षित प्राविधिक व्यक्तियों, अनुसूचित जातियों, जनजातियों के उम्मीदवारों, शारीरिक प्रशिक्षण-शिक्षकों, चिकित्सक श्रेणी, प्रशिक्षित प्राथमिक शिक्षकों, प्रशिक्षित शीघ्रलिपिकों तथा टंकलेखकों का अभाव है।

चार सौ से अधिक सरकारी और गैर-सहकारी सेवा-नियोजक इन काम-दिलाऊ दफ्तरों की सेवा का लाभ उठा रहे हैं।

दिल्ली में विश्व कृषि मेले का आयोजन

नई दिल्ली में आगामी ११ दिसम्बर, १९५९ से १४ फरवरी, १९६० तक प्रथम विश्व कृषि मेला आयोजित किया जायगा। यह अनूठा मेला, भारतीय कृषक समाज द्वारा आयोजित किया जा रहा है और मथुरा रोड पर स्थित लगभग ५२,२५,२०० वर्गफुट के क्षेत्र में प्रदर्शनी मैदान में भरेगा।

इस मेले में विश्व के अनेक छोटे-बड़े देश या तो अपनी प्रशासकीय संस्थाओं के माध्यम से या निजी कृषि और उनसे संबंधित व्यापारिक संगठनों द्वारा भाग लेंगे। इस प्रदर्शनी में समस्त विश्व के प्रदर्शनों एवं भारत द्वारा इस बात का प्रदर्शन किया जायगा कि खाद्यान्न के मोर्चे पर किस प्रकार महान् युद्ध संचालित किया जारहा है तथा उसमें विजय प्राप्त की जा रही है।

संपूर्ण मेला छह खंडों में विभक्त होगा। प्रत्येक विभाग के अपने विशिष्ट आकर्षण होंगे। इसमें अंतर्राष्ट्रीय खंड, राष्ट्रीय खंड—राज्य खंड, हाथकरघा तथा ग्रामीण उद्योग खंड, दूकान खंड एवं मनोरंजन खंड सम्मिलित हैं।

इस मेले का एक अन्य आकर्षण वे उपाहार-गृह होंगे, जहां विभिन्न राज्यों तथा देशों के विशेषज्ञ पाकज्ञों द्वारा तैयार किये गये स्वादिष्ट व्यंजन अपने परंपरागत परिधान धारण किये हुए युवक-युवतियों द्वारा परोसे जायँगे।

खजुराहो
विश्वविख्यात स्थापत्यकला की अनुपम देन
यदि आपने कभी खजुराहो के विख्यात मंदिर नहीं देखे, तो यह
पुस्तक अवश्य देखिये
यदि देखे हैं
तो उनकी स्मृति इस पुस्तक से ताजा रखिये
रायल अठपेजी, आर्ट पेपर पर मुद्रित १०२ प्लेट
अंग्रेजी और हिन्दी में
मंदिरों के इतिहास का मनोरंजक परिचय
नयनाभिराम मुद्रण : आकर्षक जिल्द : मूल्य १० रुपये
प्राप्तिस्थान
व्यवस्थापक:—प्रकाशन शाखा, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय
जयाजी चौक, ग्वालियर, म० प्र०

लघु वाद क्र. ९।५९

वाद निराकरण के लिये सूचना-पत्र

(ऑर्डर ५ रूल १-५ सं. वि. ल.)

न्यायालय लघुवाद चांचोड़ा, मध्यप्रदेश

गोरेलाल पुत्र हीरालाल, मीना, निवासीं सूतानदी .. .. .. प्रार्थी.

विरुद्ध

१. ईदमोहम्मद कूंजड़ा शाजापुर, २. रामचंद, ३. नारायण लाल, अग्रवाल, निवासीगण कुंभराज .. .. . प्रतिवादी.

वाद रुपये २००).

ईदमोहम्मद पुत्र अब्दुल्लाखां, कुंजड़ा सब्जी बाजार शाजापुर को मालूम हो कि सदर वाद की चौकसी का दिनांक ८ अगस्त, १९५९ नियुक्त किया गया है। उस रोज दिन के के ११ बजे आप अपने प्रकरण के कागज सहित इस न्यायालय में हाजिर रहें या प्रकरण से जानकार अभिभाषक नियुक्त करके उनको पुरावे सहित भेजें। या ऐसा व्यक्ति उनके साथ भेजें कि प्रकरण से संबंधित सवालात का जवाब दे सकेगा। चूंकि यह दिनांक इस वाद के आखिरी निराकरण के लिए नियत किया गया है। यह आवश्यक है कि आप इस रोज अपने बचत सम्बन्धी मौखिक व लिखित पुरावे सहित न्यायालय में हाजिर रहें।

इसके अनुसार आप हाजिर न रहे तो प्रकरण की एकपक्षीय चौकसी की जाकर उसका निराकरण किया जावेगा।

आज दिनांक २६ जून १९५९.

आर. जी. कानूनगो,
सिविल जज द्वितीय श्रेणी.
चांचोड़ा म, प्र.

(२९०-३२)

सफेद दाग

सतत् परिश्रम एवं खोज के बाद सफेद दाग की औषधि का निर्माण किया गया है। हजारों ने इसका अनुभव करके लाभ उठाया है। दवा का मूल्य ६) रुपया विशेष जानकारी के लिए विवरण पत्र मुफ्त मंगाकर देखें। **नक्कालों से सावधान रहें।**

वैद्य बी. आर. बोरकर,
आयुर्वेद भवन (२५) मु. पो. मंगरूलपीर,
जिला अकोला (विदर्भ)

कार्यालय निरीक्षक शिक्षा विभाग मंडल शिवपुरी मध्यप्रदेश,

विज्ञाप्ति

समस्त व्यापारियों के सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि इस कार्यालय को निम्नांकित सामग्री क्रय करना है। जिसके लिए सीलड टेण्डर्स आमंत्रित किये जाते हैं।

सामग्री:—कुर्सी, मेज, टाटपट्टी, कपास, फर्श, आल्मारी, (लोहा) बाल्टी नं. ११, रस्सी, श्यामपाट, (४:३), घड़ी जाज, रेडियो सेट, नक्शे का चार्टस्।

निम्नलिखित शर्तों का पालन करना ठेकेदारों को अनिवार्य होगा:—

१. फर्नीचर सागवान की लकड़ी का होगा, जिसमें गांठदार लकड़ी का प्रयोग नहीं किया जावेगा। तथा टोप स्क्रूज से किए जावेंगे।

२. माल का सेम्पल परचेजिंग कमेटी के समक्ष प्रस्तुत करना होगा। तदउपरान्त उसी मुताबिक सामान की डिलीवरी ली जावेगी। फर्नीचर पर पॉलिश माल पास होने के उपरान्त कार्यालय में करना होगी।

३. आर्डर मिलने के एक मास के भीतर माल, प्रदाय करना होगा। माल की डिलीवरी कार्यालय कोठी नं. ११ पर देना होगी, जिसका पृथक् से कोई चार्ज नहीं दिया जावेगा।

४. माल की रेट के अतिरिक्त अन्य व्यय स्थायी कर आदि नहीं दिये जावेंगे, सेल टेक्स नियमानुसार दिया जावेगा।

५. टेंडर स्वीकृत होने के उपरान्त पांच प्रतिशत काशनमनी डिपाजिट के रूप में निरीक्षक, शिक्षा विभाग शिवपुरी के नाम शिवपुरी ट्रेझरी में जमा करना होगा। नकद रकम स्वीकृत नहीं की जावेगी।

६. सीलड टेण्डर्स दिनांक २५ जुलाई, १९५९ तक कार्यालय में प्राप्त होना अनिवार्य है। निर्धारित समय के उपरान्त टेण्डर्स मान्य नहीं होंगे।

७. टेण्डर्स दिनांक ३० जुलाई, १९५९ को खोले जावेंगे। अधिक रेट्स के टेण्डर्स स्वीकृत करने न करने का कमेटी को अधिकार होगा। माल आवश्यकतानुसार ही क्रय किया जावेगा। प्रदत्त आदेशों का प्रदाय किया जाना अनिवार्य होगा।

८. प्रत्येक टेण्डर्स के रेट्स प्राप्त होने के दिनांक से १ मास तक प्रभावशील रहेंगे। इस बीच रेट्स घटने-बढ़ने का टेण्डर्स के रेट्स पर कोई प्रभाव नहीं होगा।

अन्य माहिती कार्यालय समय में निरीक्षक शिक्षा विभाग मंडल शिवपुरी के कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

जी. व्ही. आठले,
निरीक्षक शिक्षा विभाग,
मंडल शिवपुरी, मध्यप्रदेश

(२८८-३२)

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER, P. W. D. (B' and 'R) BRANCH, VIDISHA

Tender Notice

Sealed Tenders in Form "C" of M. P., P. W. D. (Tender and Contract for supply of materials) based on the Current Schedule of Rates of Bhopal Circle, will be received in the office of the undersigned, for the below noted work upto 4 P. M. on 11th August, 1959 from A. I. to A. IV. Class Contractors registered in the office of the Chief Engineer, P.W.D. (B 'and'R) Branch, M. P., Gwalior.

Separate sealed tenders from the next lower class P. W. D. Contractors will close also be received and considered, but a tender so received will be accepted only if it is considered suitable and advantages to Government.

The cost of blank tender form will be Rs. 3/- which can be obtained and other particulars can be ascertained from the office of the undersigned on any working day during office hours, except holidays, and the day on which the tenders are to be opened.

Detailed plan and specifications can be obtained on payment of the prescribed fees and other particulars may be secured in the office of the undersigned on any working day during office hours.

S. No.	Name of Works.	Probable amount of contract. Rs.	Earnest money. Rs,	Time allowed for completion.
1.	A. R. Collection Vidisha Ashoknagar Road. (Basoda Sub-Division).	55,282/-	— 1,110/-	31-5-1960.

285—32

B. V. NAGRAJ,
Executive Engineer,
P. W. D. (B and R) Branch, Vidisha.

GOVERNMENT OF MADHYA PRADESH PUBLIC WORKS DEPARTMENT

Tender Notice

Sealed item rate tenders in P. W. D. Form 'B' of Madhya Pradesh P.W.D. will be received from the Contractors of appropriate categories registered in the Office of the Chief Engineer M. P., P. W. D. (B & R) Gwalior for the following works upto 3 P. M. on 17th August, 1959 in the Office of the undersigned. Contractors of 'A' Class of the earst while M. B. State are also allowed to tender provided that they have applied for registeretion before 30th June, 1958.

Name of work.	Amount of Establishment Rs.	Probable amount of work. Rs.	Amount of earnest money. Rs.	Time allowed. for completion.
1. Construction of Morar Chitora Road including cross drainage work Mile No. 1 and 2.	70,311/-	70,311/-	1,410/-	1½ years.
2. Do Mile No. 3, 4, and 5.	1,47,733/-	1,47,733/-	1,480/-	21 months.
3. Do. Mile No. 6, 7, 8, 9, and 10.	2,28,607/-	2,28,607/-	2,290/-	24 Months.
4. Do. Mile No. 11, 12, 13, 14, and 15.	1,11,954/-	1,11,954/-	1,120/-	18 Months.
5. Do. Mile No. 16, 17, and 18. ..	1,86,272/-	1,86,272/-	1,865/-	16 Months.

Tenders will be received separately for each group. Other Particulars including detailed conditions of the tender notice can be seen at the office of the undersigned on any working day during office hours except on the day fixed for the receipt of tenders.

Tenders forms will be issued upto 3 P. M. on or before 14th August, 1959. No information or tender forms will be given on the day tenders are to be opened.

286—32

Executive Engineer,
P. W. D. (B & R) Division,
Gwalior M.P.

OFFICE OF THE DIRECTOR OF PUBLIC INSTRUCTION MADHYA PRADESH

Corrigendum

Kindly omit P. S. M., Jabalpur and P. G. B. T. College, Bhopal occuring in the advertisement for admissions to Master of Educations classes of Government Training Colleges Madhya Pradesh.

S. P. VARMA,
Director of Public Instruction,
Madhya Pradesh.

290—32

हर चिकित्सक को इन्जेक्शन ट्रेनिंग

इन्जेक्शन लगाना बनाना थर्मामीटर, नाड़ी, शरीर, मूत्र रोग ज्ञान, स्टेथिसकोप, डूस, एनीमा आदि १७ वैज्ञानिक शिक्षायें १५ दिन में अनुभव परीक्षा सार्टीफिकेट प्राप्त करें। फीस ४६।।) है साथ में ४८ इन्जेक्शन सिरेन्ज नीडिल भेंट-स्वरूप मुफ्त दिये जाते हैं। जो यहां नहीं आना चाहें वह यहां से कोर्स मंगाकर शिक्षा अनुभव सार्टीफिकेट और भेंट मुफ्त प्राप्त कर सकते हैं। नहीं आनेवालों को ३८।।) खर्च पड़ते हैं शीघ्र ही आवेदन-पत्र नियमावली मंगालें।

पता :—से. एस. एस. विद्यापीठ,
वी. परीक्षा बोर्ड, ललितपुर, (झांसी) उ. प्र.

(२८१-३१)

भारत सरकार से "रजिस्टर्ड"

सफेद दाग

यह हमारी दवा सन १९३६ से प्रसिद्ध है इस दीर्घकाल में हजारों ने इसकी परीक्षा की और प्रशंसापत्र भेजे हैं। आप भी एकबार **अनुभव** कर देखें। **मूल्य ५ रुपये। अधिक विवरण मुफ्त मंगाकर देखिये।**

वैद्य के. आर. बोरकर (मध्य.),
मु. पो. मंगरूलपीर जि. अकोला (विदर्भ)

THE GWALIOR ENGINEERING WORKS, GWALIOR (GOVERNMENT OF MADHYA PRADESH,

Wanted

An English Stenographer at least a Matriculate with speed 100/40. Higher educational qualifications preferable. Post permanent on Contributory Provident Fund basis. Grade 100-8-180-EB-10-220. Dearness Allowance and other allowances according to Madhya Pradesh Government Scales. State Public Service Commission test passed candidate will be preferred. Selected candidate to appear before the Departmental Recruiting Committee at his own cost.

Applications with copies of testimonial to reach the undersigned by 31st July, 1959.

M. O. DANANI,
General Manager,
Gwalior Engineering Works,
Gwalior. M. P.

289—32

CHAMBAL VALLEY DEVELOPMENT CHAMBAL CANAL CIRCLE SHEOPURKALAN M. P.

Tender Notice No. 8/C/59

Sealed item rate tenders are invited from the registered contractors of appropriate class of P. W. D., M. E. S., C. P. W. D. and Railways for the work of "Lining of Canal in mile No. 1 (Ch. O to 20.15) of Main Canal Upper (Parvati Approach Bank)," so as to reach the undersigned not later than 4 P. M. on 5th September, 1959.

Approximate estimated cost of work on works portion.	Rs. 2,95,612.00
Earnest money to be deposited	Rs. 5,910.00, in the form of receipted treasury challan or N.P.S.cs. pledged to Executive Engineer, Dn. I, Baroda by designation.
Completion period	6 months from the date of issue of work order.
Cost of tender document	Rs. 5/- per set which will be non-refundable.
Period of sale of tender document	During office hours from 13th July, 1959 to 4th September, 1959.
Date of opening of tender	5th September, 1959 at 4.30 P. M. in presence of such of the tenderers or their representatives who may be present.

Right to accept any or reject all the tenders rests with the department.

Y. G. MANE,
Superintending Engineer,

287—32-33

लोक-कवि ईसुरी

(पृष्ठ ६ का शेष)

हेम-कँगूर धूर में मिल जैं,
लंका की रजधानी।
लै कैं मिलो सिकाउत जेऊ,
मन्दोदरी सियानी।
'ईसुर' आप हात हरियानी,
आनी मौत–निसानी।

एक दूसरी फाग में वे कहते हैं कि जिस रावण के लिए यह कहा जाता था कि उसकी अपार शक्ति है, देवता वश में हैं, उसके वंशधरों की संख्या 'इक लख पूत सवा लख नाती' कही जाती है, किन्तु कुबुद्धि के कारण सब एक साथ ही भस्मीभूत हो गए। कोई पित्रों को पानी देनेवाला तक न रहा। 'लुप्त पिंडोदक क्रिया' हो गई। यथा :—

को रऔ रावन कैं पनदेबा,
बिना किये हर-सेबा।
करुना सिंधु करौ कुल भर कौ,
एक नाव कौ खेबा।
कालफंद अबधेस छुड़ाये,
जै बोलत सब देबा।
बांकन लगे काग महलन पर,
भीतर बसत परेबा।
'ईसुर' नास मिटावत, पावत,
पाप करे को मेबा।

कृष्णावतार-विषयक

जग में होय उजेरौ जी कौ,
राधा कौ मुख नीकौ।
उतै हिरात परब हीरन की,
कुन्दन कौ रँग फीकौ।
जौ रँग-रूप पाइये कांसें,
बिरन करेजौं झींकौ।
'ईसुर' सदा स्वाद बानी लयें,
सुक्ख-सनेह अमी कौ।

ऋतु-काल विषयक

अब रित आई बसन्त बहारन,
पान, फूल, फल-डारन।
हारन हद्द, पहारन, पारन,
धाम, धवन-जल धारन।
कपटी कुटिल कन्दरन छाई,
गई बैराग बिगारन।
चाहत हतीं प्रीत प्यारे की,
हा हा करत हजारन।
जिनके कंत अंत घर सें हैं,
तिनें देत दुख दारुन।
'ईसुर' भौर झौंर के ऊपर,
लगे भौंर गुंजारन।

नेत्र-विषयक

अखियां पिस्तौलें-सी भरकें,
मारत जात समर कें।
दारू दरस, लाज की गोली,
गज कर देत नजर सें।
देय लगाय सैन की सूजन,
पल की टोपी धर कें।
'ईसुर' फैर होत फुरती में,
कोउ कहां नौं बरकें।

रजउ-विषयक

छायावाद की सजनी की भाँति प्रेमिका के लिए ईसुरी ने रजउ शब्द का प्रयोग किया है। उसका स्पष्टीकरण भी उन्हीं ने अपनी एक फाग में कर दिया है। यथा :—

नइयां रजउकाउ के घर में,
बिरथां कोउ न भर में।
सब में हैं और सब सें न्यारी,
सब ठौरन में भर में।
को कय अलख-खलक की बातें,
लखी न जाय नजर में।
'ईसुर' गिरधर रयँ राधे में,
राधा रयँ गिरधर में।

× × ×

सोभा रजउ की कीसौं कइये,
कियैं उनारन जइये।
बड़ कैं चीज, इकइसौ सोनों,
ई खों का परखइये।
साजी फागें कयी 'ईसुरी',
सुगर सुनैया चइये।

शांत-रस-विषयक

बरवरी रइयत हैं भारे की,
दई पिया प्यारे की।
कच्ची भींत उठी माटी की,
छाई फूस-चारे की।
बे बन्देज बड़ी बेबाड़ा,
जेइ में दस द्वारे की।
एकउ नई किवार-किबरियां,
बिना कुची-तारे की।
'ईसुर' चायें निकारौ जिदना,
हमें कौन उवारे की।

परिचयात्मक

तन तन दोउ जनें गम खायें,
करौ फैसला चायें।
नायँ बगौरा कौ मेंड़ौ है,
बड़ेगांव कौ मांयें
मांझ पारिया पै झगड़ा है,
तूदा बिना बनायें।
कानीगोजू कान सें लग कें,
सब कौं मंत्र बतायें।
लयें फिरत हैं खर्रा-खतौनी,
लाला जू कखयायें।
हो गये हैं हैरान बिचारे,
कानौं कियैं बतायें।
लम्बरदार चतुर्भुज जू के,
हम कारिन्दा आंयें।
अपनी लांच खायबे कौं बे,
नांय की मांय मिलायें।
गड्डी-गाड़े ढँड़कत नइयां,
ओंगन बिना लगायें।

—इत्यादि।

देश-भर में बिखरा हुआ जन-साहित्य एकत्रित होकर प्रकाश में आ सके तो अत्युत्तम हो, जिससे राष्ट्रभाषा हिन्दी का शब्द-भण्डार बढ़ सके और साथ ही साथ वह यथेष्ट बलवती बनकर देश-भर में सर्वप्रियता प्राप्त कर सके।

इस कार्य की सफलता के लिए देशव्यापी शोध-कार्य को प्रधानता देने की आवश्यकता है, यह संतोषजनक है कि हमारी जनप्रिय सरकार इस दिशा में प्रयत्नशील है, किन्तु इसके लिए प्रत्येक हिन्दी-भाषा-भाषी का सहयोग अपेक्षित है।

कयी—कही, कहना। बिरानी—दूसरे की। सिकाउत—सिखलाती है। जेऊ—येही। बाँकन—बोलने। परेबा—कबूतर।

हतीं—थीं। बरकें—वचें।

नइयाँ—नहीं हैं। काउ—किसी के। बिरथाँ—व्यर्थ। कय—कहे। रयँ—रहें। कीसौं—किससे। उनारन—उपमा दें। ई—इसको। साजी—उत्तम। उवारे की—सुभीते की।

चायें—चाहते हों तो। नाँय—इस ओर। माँय—उस ओर। कखयायें—काँख में दाबे हुए।

भारत में बौद्ध धर्म का विस्तार

(पृष्ठ ५ का शेष)

सातवीं सदी के बहुत-से ऐसे अभिलेख हैं, जिनसे पता चलता है कि उस समय भारत में बौद्ध धर्म की क्या स्थिति थी। हर्षवर्धन स्वयं बाद में महायान बौद्ध धर्म के अनुयायी हो गये थे। मैत्रक वंश के राजाओं के शासन-काल में पश्चिम में वल्लभी बौद्ध धर्म का एक केन्द्र बन गया था।

हर्ष के शासन-काल के बाद की सदी में बौद्ध धर्म के लिए अनुकूल वातावरण नहीं रहा। तब भी कश्मीर, स्वात घाटी, वल्लभी और उत्तर के अन्य स्थानों में बौद्ध धर्म के अनुयायी थे, किन्तु कुल मिलाकर उसकी स्थिति संतोषजनक नहीं थी। यद्यपि, भारत के अन्य भागों से धीरे-धीरे बौद्ध धर्म का लोप होता जा रहा था, फिर भी पाल राजाओं के राज्य-काल में पूर्वी भारत में बौद्ध धर्म का फिर से उदय हुआ। छठी से नौवीं सदी तक सारे बौद्ध संसार पर नालन्दा की धाक रही। पाल राजाओं ने जगद्दल और विक्रमपुरी, विक्रमशिला और ओदन्तपुरी में जो नई संस्थाएँ स्थापित कीं, उन्होंने नौवीं से बारहवीं सदी तक बौद्ध-संस्कृति के केन्द्रों के रूप में बहुत ख्याति प्राप्त की।

कुछ इतिहासज्ञों का कहना है कि दमन या अत्याचार के कारण भारत में बौद्ध धर्म का ह्रास हुआ। लेकिन इसका कोई उदाहरण नहीं मिलता। बाद की बौद्ध रचनाओं को देखने से पता चलता है कि धीरे-धीरे बौद्ध धर्म हिन्दू धर्म के निकट आता गया। बोधिसत्वों को दैवत्व दिया गया और बाद में सिर्फ नाम के भेद के अतिरिक्त उनमें और हिन्दू-देवताओं में कोई भेद नहीं रहा।

[प्रस्तुत लेख प्रो० बी. सी. बागची के लेख 'बौद्ध धर्म का विस्तार' के आधार पर लिखा गया है। प्रो० बागची का यह लेख 'बौद्ध धर्म के २,५०० वर्ष' का एक अध्याय है]

खरीफ आन्दोलन समाचार

खरीफ-अभियान के अन्तर्गत कार्य अब पूर्ण गति से जारी है तथा दुर्ग, गुना, मुरैना जिलों और भोपाल संभाग में विभिन्न कार्यक्रमों की क्रियान्वित की जा रही है। कृषकों को अनेक प्रदर्शनों और सार्वजनिक सभाओं द्वारा कृषि की उक्त प्रणालियों से परिचित कराया गया।

गुना जिला

गुना जिले में खरीफ-अभियान-कार्यक्रम निर्धारित रूप के अनुसार कार्यान्वित किया जा रहा है। १० स्थानों में बीज-वितरण-केन्द्र आरम्भ किये गये। ९०० एकड़ भूमि पर सिंचाई सुविधाओं की व्यवस्था की गई तथा भूमि-संरक्षण इकाई द्वारा ५,००० एकड़ भूमि पर मेड़ें बनाई गई।

दुर्ग जिला

हरी खाद को लोकप्रिय बनाने की दृष्टि से धान की मेड़ों पर लगाने के लिए खैरागढ़ खण्ड के किसानों को इम्पोनिया कारनिया की दस हजार कलमें वितरित की गई।

जिले के प्रत्येक खण्ड तथा गैर-खण्ड क्षेत्रों में किसानों को खरीफ फसल के उक्त बीजों, रासायनिक उर्वरकों तथा तकावी-वितरण के लिए प्रबन्ध किये गये हैं।

मुरैना जिला

मुरैना जिले में खरीफ-अभियान गतिशील हो गया है तथा इसके अन्तर्गत उक्त बीज और उर्वरक वितरित किये गये।

जिले के जावरा-विकास-खण्ड में किसानों को जून १९५९ तक १,००० बोरे उर्वरक वितरित किया गया। इसके अतिरिक्त ४०० मन खरीफ तथा ६४७ मन रबी बीज वितरित किये गये।

भोपाल संभाग में

भोपाल में संभागीय खरीफ उत्पादन अभियान समिति की एक बैठक भोपाल संभाग के आयुक्त की अध्यक्षता में हुई, जिसमें कृषि उप-संचालक, सहकारी समितियों के उप-पंजीयक श्री अमरचन्द, विधान सभा सदस्य और जिलों के कृषि अधिकारी उपस्थित थे। बैठक में इस संभाग में खरीफ-उत्पादन में तीव्रता लाने के लिए कृषि-क्षेत्र में किये गये विभिन्न उपायों का सिहावलोकन किया गया।

कृषि अधिकारियों के बीच भाषण देते हुए आयुक्त ने इस बात पर जोर दिया कि वे बीज की वसूली पर सतर्कता से ध्यान रखें, जिससे उनका बीज-भण्डार कम न हो जाय। उन्होंने आगामी वन-महोत्सव-समारोहों की ओर भी इन अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट किया तथा उनसे अनुरोध किया कि वे किसानों को फलदार वृक्षों के अतिरिक्त सागौन वृक्ष भी लगाने के लिए प्रोत्साहित करें।

जिला सलाहकार समिति के निर्णय

होशंगाबाद की जिला सलाहकार समिति ने हाल ही में अपनी बैठक में यह निर्णय किया कि १९५९-६० वर्ष में सिवनी, मालवा, होशंगाबाद और सोहागपुर तहसीलों में तीन सेवा-सहकारी समितियां स्थापित की जावें तथा जिले की सिवनी-मालवा तहसील के शिवपुर नामक ग्राम में एक ग्रामीण गोदाम बनाया जावे। इसके अतिरिक्त दहेडी, रूपापटेरिया, जासलपुर और समरखा नामक ग्रामों में चार संयुक्त कृषि-समितियां भी आरंभ की जावेंगी।

समिति को बताया गया कि सिवनी मालवा तहसील में भू-संरक्षण दल द्वारा खेतों पर बांध बनाने के कार्य को जन-सहयोग मिल रहा है तथा अधिक-से-अधिक क्षेत्र का समाहित करने के लिए दल का कार्य जारी रहेगा।

नर्मदा नदी के ऊपर से आवागमन को सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से यह निर्णय किया गया कि लोक-निर्माण विभाग द्वारा सर्वेक्षण पूरा कर लिए जाने के बाद बबरीघाट और मिलाडियाघाट में नर्मदा पर अस्थायी पुल बनाने का कार्य हाथ में लिया जावे।

शासन की गतिविधि

अनसूचित जनजातियों एवं पिछड़े वर्गों के लिए छात्रवृत्तियां

द्वितीय पंचवर्षीय योजना के कार्यक्रम के अन्तर्गत राज्य सरकार ने मध्यप्रदेश के मध्यभारत तथा महाकोशल-क्षेत्रों की अनुसूचित जनजातियों तथा अन्य पिछडे वर्गों के विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां देने के लिए चालू वर्ष में ३,१४,००० रुपये की राशि मंजूर की है।

इस राशि में से २,००,००० रुपये की राशि २३,९२५ साधारण छात्रवृत्तियों के लिए निर्धारित की गई है, जो अनुसूचित जातियों के उन विद्यार्थियों को १२ मास तक दी जायगी जो सरकारी अथवा सरकारी सहायता प्राप्त शालाओं में प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च कक्षाओं में पढ़ते हों। इन साधारण छात्रवृत्तियों के अतिरिक्त प्रति विद्यार्थी ५ रुपये, १० रुपये तथा २० रुपये की विशेष छात्रवृत्तियां १० महीने तक तीसरी तथा चौथी कक्षा, मिडिल तथा हाईस्कूल के उन विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध रहेंगी, जो अपने घरों से ५ मील की सीमा से बाहर स्थित पाठशालाओं में पढ़ते हों, बशर्ते कि इस ५ मील के घेरे में कोई शैक्षणिक संस्था न हो।

महाकोशल-क्षेत्र के मिडिल तथा हाईस्कूल में पढ़नेवाले पिछड़े वर्गों के विद्यार्थियों को ६०५ छात्रवृत्तियाँ देने के लिए १,००,००० रुपये की राशि निर्धारित की गई है। शेष १४,००० रुपये की राशि मध्यभारत क्षेत्र के अन्य पिछड़े वर्गों अनुसूचित इलाकों के बाहर रहनेवाले भील तथा भिलाला विद्यार्थियों के लिए निर्धारित की गई है। प्राथमिक से हाईस्कूल में पढ़नेवाले सभी विद्यार्थी इन छात्रवृत्तियों को पाने के अधिकारी होंगे।

हरिजन छात्रावासों को सहायता-अनुदान

राज्य सरकार ने चालू वित्तीय वर्ष में मध्यभारत क्षेत्र के ११ गैर-सरकारी छात्रावासों के विद्यार्थियों तथा इन छात्रावासों के संचालन के लिए सहायता-अनुदान देने की स्वीकृति दे दी है। ये अनुदान विद्यार्थियों के भोजन, वस्त्र इत्यादि खर्च के लिए प्रति छात्रावासी विद्यार्थी २० रुपये प्रति मास तथा छात्रावासों के संगठन और प्रबन्ध के लिए प्रति विद्यार्थी ४० रुपये के हिसाब से दिये जायंगे।

इन अनुदानों के लिए व्यय की कुल राशि ५७,६०० रुपये इन संस्थाओं को मासिक किश्तों के रूप में दी जायगी।

इस व्यवस्था के अन्तर्गत हरिजन छात्रावास इन्दौर, धार, रतलाम, ग्वालियर, महीदपुर प्रति छात्रावास ४,८०० रुपये; गांधी छात्रावास देवास ४,८०० रुपये; राष्ट्रीय हरिजन छात्रावास, शाजापुर ४,८०० रुपये; जाल छात्रावास, उज्जैन ९,६०० रुपये; कबीर छात्रावास, भेलसा ४,८०० रुपये; हरिजन छात्रावास, शिवपुरी ७,२०० रुपये; एवं हरिजन छात्रावास करेरा (शिवपुरी) २,४०० रुपये प्राप्त होंगे।

सामुदायिक विकास सलाहकार समिति की बैठक

राज्य के संसद्-सदस्यों और विधान सभा सदस्यों की औपचारिक सामुदायिक विकास सलाहकार समिति की तृतीय बैठक ७ जून को पचमढ़ी में मुख्य मंत्री डॉ. कैलासनाथ काटजू के तत्त्वावधान में हुई। इस बैठक में लोक-निर्माण मंत्री श्री एस. एल. तिवारी, उप-कृषि मंत्री, श्री एस. एन. मुशरान के अतिरिक्त १२ विधान सभा सदस्य, ४ संसद्-सदस्य और विकास आयुक्त उपस्थित थे।

समिति ने अन्य बातों के अलावा समस्त राज्य में खरीफ-उत्पादन-अभियान को गति से चलाने का निश्चय किया। यह भी निश्चय किया गया कि ग्राम-पंचायतों, भारत सेवक समाज, सहकारी समितियों जैसे गैर-सरकारी संगठकों का सहयोग प्राप्त करने के लिए सामूहिक प्रयास किया जाए, ताकि खरीफ-फसल-अभियान को सफल बनाया जा सके। यह बात भी निश्चित की गई है कि ग्राम-सेवकों को अपने-अपने वृत्त के अभियान की जिम्मेदारी सौंप दी जाए। विधान-सभा-सदस्यों को भी जिला अभियान समिति से सम्बद्ध किया जावेगा।

सर्वोदय तकनीक से विकास अधिकारियों को परिचित कराने के लिए सम्भागीय स्तर पर सर्वोदय शिविर आयोजित किया जाए और इस प्रकार ग्राम-दान आन्दोलन और सामुदायिक विकास-कार्यक्रम की शृंखला को समन्वित करने की आवश्यकता को पूरा किया जाने के राज्य सरकार के निर्णय का भी समिति द्वारा समर्थन किया गया।

सलाहकार समिति ने डॉक्टर काटजू के इस सुझाव को स्वीकृत किया कि अच्छे काम को प्रोत्साहन देने के हेतु राज्य सरकार को तहसील-स्तर पर ग्रामों के सर्वोत्तम विकास-कार्य को पुरस्कृत करने की सम्भावना पर विचार करना चाहिए।

यह भी निश्चय किया गया कि उन विषयों की सूची में, जिनका प्रतियोगिता के लिए मूल्यांकन होना है, सहकारी समितियों के प्रयासों द्वारा प्राप्त परिणामों को भी सम्मिलित करना चाहिए। यह अनुभव किया गया कि पुस्तिकाओं और भिनि-चित्रों इत्यादि द्वारा पुरस्कार-प्रतियोगिता की योजना का विस्तृत प्रचार करना चाहिए।

यह सुझाव दिया गया कि जैसे ही बहुउद्देश्यीय खंड क्षेत्र में निर्माण किये जानेवाले उपर्युक्त घरों का स्वरूप तय हो जाता है, वैसे ही खंडों में जन-सहयोग के आधार पर गृह-निर्माण के लिए सहायता देने की योजना आरम्भ करदी जावे। समिति ने राज्य सरकार को सलाह दी कि वह खंड-विकास-समितियों के गैर-अधिकारी सदस्यों के प्रशिक्षण की योजना को अन्तिम स्वरूप प्रदान करें।

जिलों में पूर्व विस्तार-खंडों को खोलने और पूर्व विस्तार-खंडों को प्रथम चरण के खंडों में परिवर्तित करने के संबंध में समिति का यह मत है कि जिलाध्यक्ष सामान्यतः अन्य निर्धारित बातों के अतिरिक्त विकास-कार्यक्रम इत्यादि में पंचायतों की स्वच्छता और आरोग्य के प्रबन्ध को भी सम्मिलित करें।

वर्तन की सरल तालिकाएँ

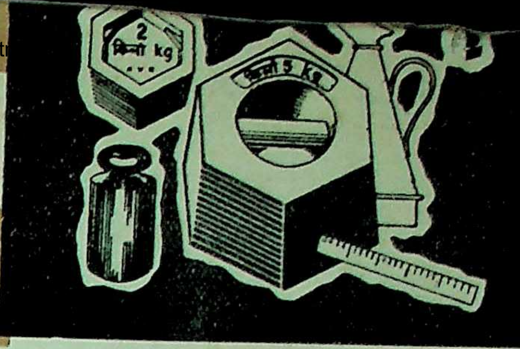

१. भार

टन से मेट्रिक टन

टन	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
मेट्रिक टन	१.०२	२.०३	३.०५	४.०६	५.०८	६.१०	७.११	८.१३	९.१४	१०.१६

पौण्ड (एव्) से किलोग्राम

पौंड	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
किलोग्राम	०.४५	०.९१	१.३६	१.८१	२.२७	२.७२	३.१८	३.६३	४.०८	४.५४

तोला से ग्राम

तोला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
ग्राम	११.६६	२३.३३	३४.९९	४६.६६	५८.३२	६९.९८	८१.६५	९३.३१	१०४.९७	११६.६४

सेर से किलोग्राम

सेर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
किलोग्राम	०.९३	१.८७	२.८०	३.७३	४.६७	५.६०	६.५३	७.४६	८.४०	९.३३

मन से क्विन्टल

मन	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
क्विन्टल	०.३७	०.७५	१.१२	१.४९	१.८७	२.२४	२.६१	२.९९	३.३६	३.७३

२. लम्बाई

मील से किलोमीटर

मील	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
किलोमीटर	१.६१	३.२२	४.८३	६.४४	८.०५	९.६६	११.२७	१२.८८	१४.४८	१६.०९

गज से मीटर

गज	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
मीटर	०.९१	१.८३	२.७४	३.६६	४.५७	५.४९	६.४०	७.३२	८.२३	९.१४

इंच से मिलीमीटर

इंच	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
मिलीमीटर	२५.४०	५०.८०.	७६.२०	१०१.६०	१२७.००	१५२.४०	१७७.८०	२०३.२०	२२८.६०	२५४.००	२७९.४०	३०४.८०

३. क्षेत्रफल

एकड़ से हेक्टेयर

एकड़	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
हेक्टेयर	०.४०	०.८१	१.२१	१.६२	२.०२	२.४३	२.८३	३.२४	३.६४	४.०५

वर्ग गज से वर्ग मीटर

वर्ग गज	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
वर्ग मीटर	०.८४	१.६७	२.५१	३.३४	४.१८	५.०२	५.८५	६.६९	७.५३	८.३६

४. तरल पदार्थ

गैलन (इम्पीरियल) से लीटर

गैलन	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
लीटर	४.५५	९.१०	१३.६४	१८.१८	२२.७३	२७.२८	३१.८२	३६.३७	४०.९१	४५.४६

-तौल की मीटरिक प्रणाली

Registered No. J. 158
Licence to post Without prepayment
MADHYA PRADESH SANDESH
वार्षिक मूल्य छः रुपये
Licence No. P. P. 1

GEW
GWALIOR

Madhya Pradesh Government Workshop

The best People use the best Articles
&
we make them best for you

We make :

STEEL FURNITURE
HOSPITAL EQUIPMENT
PLANT PROTECTION BLOWERS & PUMPS
SLUICE GATES
TAR BOILERS & OTHER P. W. D. ITEMS
BUS BODIES & TRUCK BODIES
MOBILE VANS FOR SPECIAL PURPOSES
AMBULANCE CARS
CONSERVANCY CARTS & TRAILERS
ROAD ROLLER RIMS & HEAVY CASTINGS
MACHINE TOOLS
STEEL STRUCTURALS

&

THEY ARE ALL BEST BY ANY STANDARDS

Details and Price lists on demand please—

GWALIOR ENGINEERING WORKS, GWALIOR

Grams: 'MECHANIC'
phone 383

प्रबंध सम्पादक—ईश्वरसिंह परिहार, संचालक, सूचना एवं प्रकाशन संचालनालय, मध्यप्रदेश

सम्पादक—अनन्त मराल शास्त्री

देवेन्द्र नारायण वाजपेयी, मुख्य सम्पादक, सूचना-प्रकाशन संचालनालय, म. प्र. द्वारा प्रकाशित तथा गवर्नमेंट रीजनल प्रेस, ग्वालियर द्वारा मुद्रित

एक प्रति का मूल्य—१३ नये पैसे

1959–1960

मध्यप्रदेश सन्देश

ग्वालियर, शनिवार २५ जुलाई, १९५९
वर्ष ३] ३ श्रावण, १८८१ [अंक ३३

केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री डी. पी. करमरकर क्षय चिकित्सालय भोपाल, में केन्द्रीय रेल्वे वार्ड का उद्‌घाटन करते हुए। चित्र में उनके दायीं ओर मुख्य मंत्री डॉ० कैलासनाथ काटजू एवं स्वास्थ्य मंत्राणी रानी पद्मावती खड़ी हुई हैं

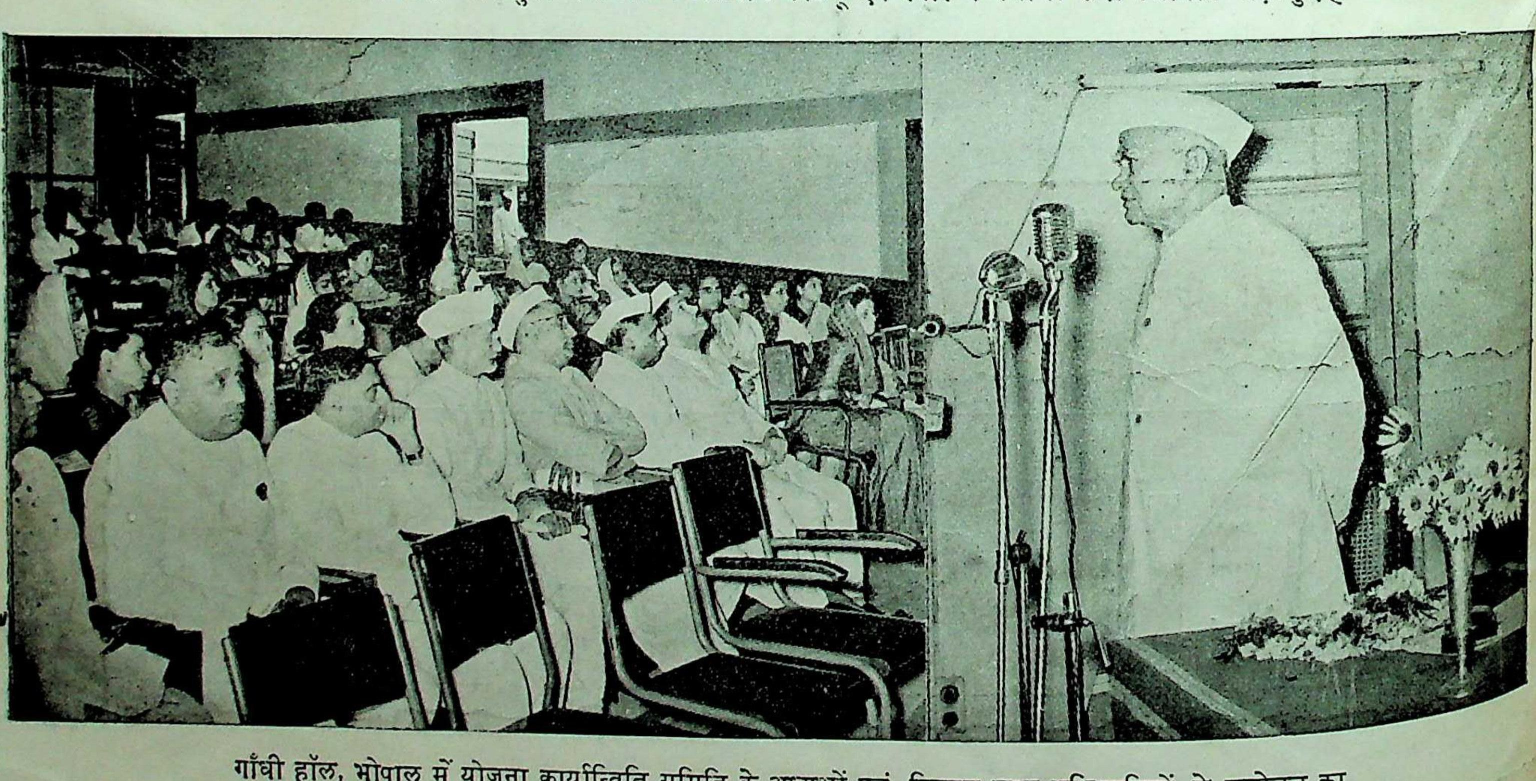

गाँधी हॉल, भोपाल में योजना कार्यान्विति समिति के अध्यक्षों एवं विकास खण्ड-अधिकारियों के सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुये डॉ० कैलासनाथ काटजू

सचित्र साप्ताहिक

मध्यप्रदेश सन्देश

हमारे देश के कुछ भाग ऐसे हैं, जहाँ वर्षाकाल तिवर्ष भयंकर रूप से बाढ़ आ जाया करती है उससे बाढ़-ग्रस्त क्षेत्र के निवासियों को अमित पहुँचती है। विशेषतः आसाम और विहार ऐसे ही क्षेत्र रहे हैं, जहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ का सामान्य वात हो गई है ! यद्यपि केन्द्रीय उक्त राज्यों के शासन बाढ़-नियंत्रण के हेतु ल और छोटी योजनाओं को कार्यान्वित कर हैं, किन्तु बाढ़-नियंत्रण की व्यापकता और लता को देखते हुए उक्त महत्वपूर्ण कार्य त समय की अपेक्षा रखते हैं। उक्त क्षेत्रों में से म में फिर इस वर्ष बाढ़ से वहुत अधिक क्षति है, किन्तु काश्मीर घाटी में हुई अतिवृष्टि और फलस्वरूप विस्तृत क्षेत्र में आई हुई बाढ़ की रता कल्पना से भी परे की वस्तु है, जो धिक क्षति के कारण महान् प्राकृतिक विपत्ति हो रही है। आसाम और काश्मीर घाटी हुई विनाशकारी बाढ़ से जो भयंकर हुई है, वह कल्पनातीत है। हजारों-लाखों -पीड़ित व्यक्तियों की सहायता एक व्यापक असाधारण कार्य बन गया है। इसमें योगदान करना केवल संबद्ध राज्य नों तथा केन्द्रीय शासन का ही उत्तरदायित्व है, अपितु अन्य राज्य सरकारें भी उक्त यों की बाढ़-पीड़ित जनता की सहायता करना ना कर्त्तव्य समझ रही हैं, जो समयोचित एवं हनीय कदम है। हमारे राज्य के मुख्य मंत्री काटजू ने अविलम्ब ही आसाम तथा काश्मीर -पीड़ित-सहायता-निधि में राज्य की जनता योगदान करने की अपील प्रसारित की है, समयोचित एवं महत्वपूर्ण है।

आसाम और काश्मीर में बाढ़ के फलस्वरूप विनाशकारी हानि बहुत ही चिन्ताजनक है।

मुख्य मंत्रीजी की अपील

अनुमान है कि आसाम में १,५०० वर्ग मील से अधिक क्षेत्र बाढ़ के पानी से घिरा हुआ है और लगभग नौ लाख व्यक्ति बेघरबार हो गए हैं। धान की फसलों को भयंकर क्षति पहुँची है।

इसी प्रकार काश्मीर राज्य में आई बाढ़ अपने व्यापक विनाशकारी रूप के कारण और भी अधिक भीषण सिद्ध हुई है। नवीनतम समाचारों के अनुसार काश्मीर के प्रधान मंत्री ने काश्मीर में बाढ़ के फलस्वरूप हुई हानि के जो तथ्य और अंक प्रकट किये हैं, उसी से बाढ़ की विनाश-लीला का अनुमान लगाया जा सकता है। उनके कथनानुसार काश्मीर राज्य में बांढ़ के परिणामस्वरूप अनेकों मनुष्यों की जानें गईं। लगभग दस करोड़ रुपये की सार्वजनिक सम्पत्ति की क्षति हुई। बाढ़ के कारण दस हजार से अधिक मवेशी मरे हैं। दो लाख एकड़ से अधिक खड़ी फसल बाढ़ से नष्ट हो गई। सड़कों और पुलों तथा सिंचाई की नहरों को भारी क्षति पहुँची है, जो कि सरकारी अनुमानों के अनुसार ढाई करोड़ रूपये के लगभग है। काश्मीर घाटी के दो बिजलीघरों में से एक मोरोरा स्थित बिजलीघर झेलम की बाढ़ से पूर्णतः नष्ट हो गया है और दोनों बिजलीघरों को पहुँची क्षति का अनुमान ५० लाख रुपये से अधिक है। इसके अतिरिक्त अन्य हानियों का अभी अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता।

उक्त बाढ़-ग्रस्त राज्यों में बाढ़-पीड़ित व्यक्तियों के कष्टों के कारण उनके प्रति समस्त देश के लोगों के मन में सहानुभूति उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। मध्यप्रदेश के मुख्य मंत्री ने बाढ़-पीड़ित सहायता निधि में सहायता देने के लिए राज्य की जनता से मार्मिक अपील तो की ही है। साथ ही राज्य शासन द्वारा सहायता-निधि एकत्रित करने के अभियान को संचालित तथा निर्देशित करने के लिए राज्य-स्तर पर मुख्य मंत्री की अध्यक्षता में एक केन्द्रीय समिति गठित की गई है।

मुख्य मंत्रीजी ने अपनी अपील में राज्य के लोगों से उक्त सहायता-निधि में अधिक-से-अधिक धन देने के लिए अपील करते हुए कहा है कि वह आसाम और काश्मीर में अपने पीड़ित भाइयों की सहायता के लिए आगे आएं और उन्हें राहत तथा सुविधा पहुँचाने के लिए भरसक योग-दान दें। हमें आशा है कि मुख्य मंत्री डा. काटजू की बाढ़-पीड़ित सहायता-निधि के लिए की गई अपील के फलस्वरूप राज्य की जनता अपने बाढ़-पीड़ित भाइयों की सहायता के हेतु अधिक-से-अधिक धन देकर योगदान करेगी; क्योंकि देश के किसी भी भाग में हुई हानि पूरे देश की हानि है और उसकी पूर्ति के हेतु प्रत्येक राज्य के लोगों का यथाशक्ति सहायता करना अपना परम कर्त्तव्य हो जाता है। हमें आशा है कि इस सहायता निधि की राशि अपेक्षित धन से भी अधिक होगी।

मुखपृष्ठ का चित्र

जेकोस्लोवाकिया के प्राहा चिड़ियाघर के लिए छै मास की अवस्था के शेर के दो बच्चे, जो वहां भेजने के हेतु मध्यप्रदेश के राज्यपाल श्री एच. वी. पाटस्कर द्वारा सौंपे जा रहे हैं

निर्माण की दिशा में

इतिहास में यह युग अणु-युग के नाम से विख्यात नहीं होगा, बल्कि यह ऐसा युग होगा, जिसमें दुनिया के विभिन्न देश एक-दूसरे के निकट आएं। हमारा काम इस विश्व-समाज का विकास करना है।

आज विश्व को इस बात की जरूरत है कि लोग एक-दूसरे को समझें और आपस के मतभेदों को समाप्त कर अधिक से अधिक बातों के बारे में समझौता करें।

—उप-राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन्

आज की दुनिया अजीब है, जिसमें वैज्ञानिक प्रगति से हर मिनिट कुछ नई चीजें, कुछ नये अस्त्र पैदा किये जाते हैं और कुछ नई घटनाएं होती हैं। इसलिए, हमें सचेत रहना चाहिए और पीछे नहीं रहना चाहिए। हमें जानना चाहिए कि हममें कितनी शक्ति है और चेहरे पर मुस्कान के साथ दुनिया का सामना करना चाहिए।

—श्री जवाहरलाल नेहरू

देश के एकीकरण और मेल से प्रगति सम्भव है तथा भारतीयता सबसे बड़ा आदर्श है। ऊँची भावनाओं और उत्साह से देश व देशवासियों पर भरोसा रखते हुए भारत को समृद्ध बनाना है, जिससे हमें भारत में ही दुबारा जन्म लेने का गौरव हो तथा उस भारत में, जहाँ आत्म-सम्मान, शान्ति-संतोष—सबके सुख की भावना से लोग जीवन का संचालन करने में अपना कर्त्तव्य समझते हों।

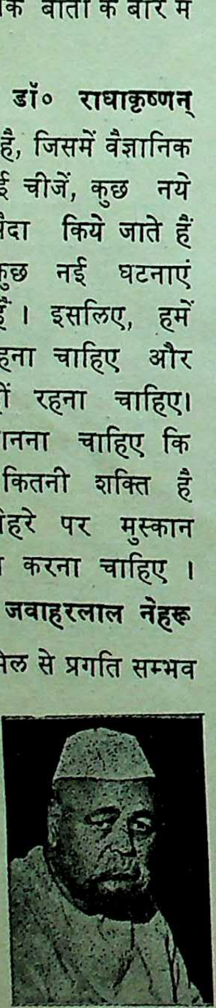

—पंडित गोविन्दवल्लभ पंत

भारत महापुरुषों और संस्कृतियों की जन्म-भूमि रहा है। लेकिन, महापुरुषों के पीछे जो अनेक सम्प्रदाय पैदा होगए, उनमें समय के साथ-साथ इतनी रूढ़ियाँ और अन्ध-विश्वास बढ़ते गए कि उन्होंने एक इन्सान में दूसरे के विरुद्ध नफरत पैदा कर दी, जबकि हर धर्म एक-दूसरे के प्रति आदर और सहिष्णुता पर जोर देता रहा है। उपदेश हम अक्सर बहुत ऊँचे-ऊंचे सिद्धांतों का देते हैं, लेकिन अमल में हम बहुत पीछे हैं। जब तक हम स्वयं उन ऊंची बातों पर अमल नहीं करते, तब तक हमें किसी दूसरे पड़ोसी के बारे में फैसला देने का कोई अधिकार नहीं।

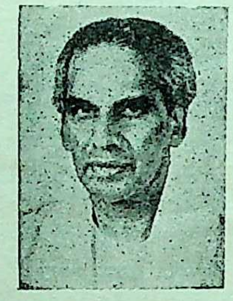

—श्री कृष्ण मेनन

शिशु-कल्याण का काम सारे देश के समाज कल्याण-कार्य का एक अंग होना चाहिए। हमारे यहाँ बच्चों की देखभाल का काम बहुत अस्त-व्यस्त चल रहा है। इस काम में यूरोप के देशों की तो बात क्या, दक्षिण एशिया के कई देश भी हमसे आगे हैं।

*

हमें लूले-लंगड़े, गूंगे-बहरे बच्चे देखकर रहम तो आ जाता है, लेकिन जोश नहीं आता। आज आवश्यकता जोश की है और खासतौर से शिशु-कल्याण के काम में लगे हुए कार्यकर्त्ताओं में। बच्चों को विकास के पूरे अवसर उपल किए जाने चाहिए और इस काम के लिए स देश में जाग्रति की लहर पैदा करने की आवश्यक है। इस काम को एक संगठित तरीके से चला जाए, ताकि जो सीमित साधन उपलब्ध हैं, बेकार न जाने पाएँ।

—श्रीमती इंदिरा गां

मृत्यु-संख्या के घटने और जन्मसंख्या अधिक होने से देश की आबादी असाधारण रू बढ़ जायगी। इसलिए परिवार-नियोजन का प्र आज बेहद जरूरी है। यह काम देश का उत्पा बढ़ाने और चीजों के समान वितरण से महत्त्वपूर्ण नहीं। यह अनुसंधान-केन्द्र, स्त्री-पु की उर्वरता, मृत्यु-संख्या, रोजगार तथा लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बसने प्रवृत्ति आदि के बारे में खोज करके बहुत उप कार्य कर सकता है।

*

आज इस बात की बड़ी आवश्यकता है परिवार-नियोजन के बारे में कुछ ऐसी निकाली जाएं और इस ढंग से उनका प्रचार जाए, जिससे वे लोगों को जंच सकें और वे अमल कर सकें।

—श्री करम

इस अंक में

क्र. शीर्षक एवं लेखक पृष्ठ

१. मीटरिक प्रणाली की उपादेयता ..
—श्री कृष्णवल्लभ जोशी
२. श्रम-गीत (कविता) .. ..
—श्री सूर्य सक्सेना
३ दर्पण है मेरे हाथों में (कविता) ..
—श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'
४. रामायण के वानर क्या सचमुच बंदर थे?
—श्री रामनरेश त्रिपाठी
५. अदृष्ट का उपहास (कहानी)..
—श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
६. गुजरात में सहकारी कृषि-संस्थाएँ ..
७. तीन भाई (एकांकी नाटक)
—सुश्री शकुन्तला तोमर ..
८. साहित्य-समालोचना ..

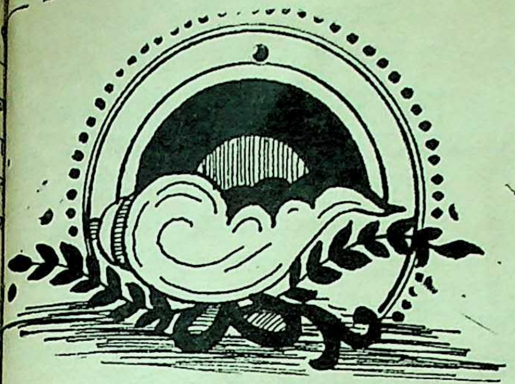

मीटरिक प्रणाली की उपादेयता

—श्री कृष्णवल्लभ जोशी

लिदास ने अपने "मालविकाग्नि मित्र" नामक नाटक में मूल्यांकन-प्रणाली के संबंध में बड़ा सटीक निर्णय दिया है कि जो पुराना ह सब अच्छा ही नहीं है और जो नया है, वह बुरा नहीं है। साधु लोग इसका निर्णय समु-परीक्षा के बाद ही करते हैं और मूढ़ लोग ों के विवेक से।

मीटरिक प्रणाली पर यह सूत्र और अच्छे तरीके से लागू होता है। मीटरिक प्रणाली हमारे देश के लिए आज नई है, किन्तु यदि हम भारतीय अर्थशास्त्र के इतिहास का एवं भारतीय गणित का अध्ययन करें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मीटरिक प्रणाली हमारे ही देश की विश्व को देन है। हमने ही शून्य का आविष्कार करके विश्व-गणित-विज्ञान को एक नया प्रकाश दिया था। यह मीटरिक प्रणाली भी शून्य के ही मेरुदण्ड पर आधारित है।

हमारे व्यवसाय में और उसके विकास में जो कतिपय बाधाएं उपस्थित होती हैं, उनमें एक यह भी है कि हमारे पास कोई एक माप-तौल का तरीका नहीं है। इतने बड़े देश में माप-तौल का मूल्यांकन करने के लिए कोई एक ठोस वैज्ञानिक पद्धति नहीं है, जिससे हम देश के व्यवसाय को किसी एक सूत्र में बांधकर उसका समुचित विकास कर सकें। यहां तो एक ही प्रांत में माप-तौल की अलग-अलग विधियां मिलेंगी। इन विभिन्न पद्धतियों के कारण न केवल हमारे व्यवसाय के विकास में ही बाधाएं उपस्थित हो रही हैं, वरन् इससे व्यापारी वर्ग और हमारे गांवों की भोली जनता को क्रय-विक्रय में हानि होती रही है। इन उलझनों से बचने के लिए मीटरिक प्रणाली का कानून सन् १९५६ में बनाया गया, जिसको कार्यान्वियन करने के लिए दस साल की अवधि रखी गई है। दस वर्ष के पश्चात समस्त देश में माप-तौल के तरीके एक हो जायंगे। अतः आज देश का एवं समस्त बुद्धिजीवी वर्ग का यह कर्त्तव्य है कि वे इस प्रणाली से देश की जनता को खूब परिचित कराएं कि यह नई दाशमिक प्रणाली उनके अपने लाभ के लिए है।

यह प्रणाली "वजन" तौल की दृष्टि से मध्यप्रदेश के कतिपय जिलों—सीहोर, जबलपुर, इन्दौर और ग्वालियर में अक्टूबर १९५८ से लागू करदी गई है। अभी कुछ काल तक दाशमिक बांटों के साथ-साथ प्राचीन बांट भी व्यवहार में लाए जा रहे हैं।

मीटरिक प्रणाली शून्य पर आधारित होने से गणित और हिसाब-किताब के लिए बड़ी ही आसान है। नए पैसे की भांति ही थोड़े दिनों में यह भी जनता की अपनी पद्धति बन जायगी।

श्रम-गीत

सोने वालो उठो उनींदी पलकें अपनी खोल दो।
और समय की सरस तुला पर श्रम का सोना तोल दो॥
वह देखो पौ फटी सुबह का सूरज उगता लाल है,
प्राची के मुख पर ऊषा ने ऐसा मला गुलाल है,
दिशा-दिशा का वसन ललामी अम्बर में लहरा गया—
रह ना जाये कहीं कालिमा तम पर धावा बोल दो।
सोने वालो उठो............

माटी के कोमल हाथों में किरण कंगना जड़ गईं,
झर-झर झरनों की नदियों के संग भांवरें पड़ गईं,
तृण-तृण अंगड़ाई ले जागा, जागी हर मुस्कान है—
रिक्त निराशा के प्यालों में आशा पानक घोल दो।
सोने वालो उठो..........

फूल-फूल के द्वार भृंग की शहनाई का शोर है,
आलस की तो रात दफन होगई कर्म का भोर है,
उठा कुदालें चलो पंथ पर नई उमँग ले चाव से—
धरती के अहसानों का तुम श्रम-सीकर से मोल दो।
सोने वालो उठो..........

बाधाओं की चटटानों पर बिजली-सा आघात करो,
रेगिस्तानी भूमि हरी हो ऐसी कोई बात करो,
फसलों की दुल्हिन मुस्काये कर सोलह शृंगार को—
पायल के स्वर को नूपुर दो औ' हाथों में ढोल दो।
सोने वालो उठो उनींदी पलकें अपनी खोल दो।
और समय की सरस तुला पर श्रम का सोना तोल दो॥

—श्री सूर्य सक्सेना

इसमें तौल के लिए 'ग्राम', घोल के लिए 'लिटर' तथा लम्बाई के लिए मीटर शब्दों का प्रयोग किया गया है । इनके १,००० वें भाग के लिए 'मिली' तथा १,००० गुणा के लिए 'किलो' शब्द प्रयुक्त हुए हैं । ध्यान से देखने पर स्पष्ट विदित हो जाता है कि इसमें १ स लेकर १,००० वें भाग तथा उससे भी अधिकवें अथवा कम के अंश का कितना आसान हिसाब-किताब मौजूद है । इसके हिसाब में केवल दशमलव को ही घटाने-बढ़ाने से काम चल जाता है; इसमें लम्बा-चौड़ा न तो गुणा ही करना पड़ता है और न भाग ही ।

इस प्रणाली का जनक यों तो फ्रांस है, किंतु आज तो वस्तुतः यह किसी एक देश की प्रणाली न बनकर सार्वभौमिक हो गई है । आज विश्व के ९२ छोटे-बड़े देशों में से ६८ देशों ने इसे अपना लिया है तथा शेष देशों में भी किसी-न-किसी रूप में अंशतः यह प्रचलित ही है । फ्रांस द्वारा जनित यह प्रणाली अपने आप में इतनी पूर्ण है कि इसके चलते ही १०० वर्ष की अवधि में ही लगभग इसे ४३ देशों ने अपना लिया था । यही नहीं, विज्ञान की पुस्तकों में—रसायन शास्त्र में तो यही माप-तौल प्रचलित है, जिसे कि हमारे बच्चे भी एक अर्से से पढ़ रहे हैं । इनके बड़े-बड़े ग्रंथों में तो तोल-घोल एवं लम्बाई के लिए दाशमिक प्रणाली की शब्दावली ही प्रचलित है ।

अतः, हम ध्यान से देखें, तो जिस भांति पुराने सिक्कों को नए सिक्कों में परिवर्तित करने में हमें कोई खास अड़चन उपस्थित नहीं हुई, ठीक उसी तरह हमारे पुराने माप-तौल के तरीके परिवर्तित करने में भी हमें कोई विशेष बाधा नहीं होगी । जहां हम वजन मन-सेर-छटांक-तोला में करते थे, वहां हम अब ग्राम में करने लगेंगे । वजन का हिसाब-किताब इस प्रकार रहेगा:—

१० मिलीग्राम = १ सेंटीग्राम
१० सेंटीग्राम = १ डेसीग्राम
१० डेसीग्राम = १ ग्राम
१० ग्राम = १ डेकाग्राम
१० डेकाग्राम = १ हेक्टोग्राम
१० हेक्टोग्राम = १ किलोग्राम
१०० किलोग्राम = १ क्विन्टल
१० क्विन्टल = एक मीटरिक टन

इस भांति एक छटांक = ५८ ग्राम के लगभग होगी । एक सेर .९३ किलोग्राम के लगभग होगा । नए सिक्कों की भांति इसमें भी वैसी ही परिवर्तन-तालिका रहेगी, जिसका कि हम समुचित उपयोग कर सकेंगे ।

घोल का हिसाब-किताब निम्नानुसार होगा:—

१० मिलीलिटर = १ सेन्टीलीटर
१० सेन्टीलीटर = १ डेसीलीटर
१० डेसीलिटर = १ लिटर
१० लिटर = १ डेकालिटर
१० डेकालिटर = १ हेक्टोलीटर
१० हेक्टोलीटर = १ किलोलिटर

इस भांति ०.२२ इम्पीरियल गैलन या ८६ तोले शुद्ध पानी का घनफल = १ लिटर के होगा ।

लंबाई-मूल्यांकन मीटर से किया जायगा ।

१० मिलीमीटर = १ सेन्टीमीटर
१० सेन्टीमीटर = १ डेसीमीटर
१० डेसीमीटर = १ मीटर
१० मीटर = १ डेकामीटर
१० डेकामीटर = १ हेक्टोमीटर
१० हेक्टोमीटर = १ किलोमीटर

इस भांति १.०९ गज की लम्बाई = १ मीटर के होगी ।

उपर्युक्त स्पष्टीकरण से यह स्पष्ट हो गया है कि इसमें लम्बी-लम्बी संख्याओं का गुणा-भा नहीं करना पड़ेगा । ऊपर कहे गए मीटर, लीट और ग्राम मूलरूप से लेटिन के शब्द हैं, जो आ व्यावसायिक क्षेत्र में लगभग सारे विश्व में प्रयुक् होते हैं । अत:, हमारे देश ने भी यह अन्तर्राष्ट्री शब्दावली ही ग्रहण करना अधिक समीची माना है । यों भी यदि कोई एक प्रणाली हम अपनाते, तो प्रान्त के अन्य लोगों को उनके नाम एवं विभाजन सीखने ही पड़ते ।

वास्तव में थोड़े से श्रम से इस प्रणाली द्वार व्यवसाय, विद्या और राष्ट्रीय एकता के क्षेत्र विपुल लाभ होगा । व्यापारी अपने ग्राहकों क झूठे बांटों से तौलकर अब उन्हें धोका नहीं पाएगा । समस्त देश में एक ही प्रणाली ला होने से एक छोर का व्यक्ति दूसरे छोर पर भ आसानी से व्यवसाय कर सकेगा और उन अपनापन जाग्रत हो सकेगा । व्यावसायि अन्तर्राष्ट्रीय बाजार से भी परिचित हो जाएगा जिससे उसे कोई विशेष बाधाओं का सामन नहीं करना पड़ेगा । हमारे विद्यार्थियों के लि तो ये प्रणाली वरदानस्वरूप ही है ।

इस तरह हम देखते हैं कि हमारी संसद दाशमिक प्रणाली का कानून पारित कर व्यवसा जगत् में होनेवाले व्यावसायिक स्तम्भ-वाद क रोका है और व्यावसायिक जगत् में एक लम् अवधि से चली आई हुई दकियानूसी पद्धति क हटाकर नई प्रगतिशील पद्धति अपनाने के लि जनता को अभिप्रेरित किया है । निश्चित् ह प्रारम्भ में उन्हें अपनी प्राचीन पद्धति छोड़ने म बाधा अवश्य उपस्थित होगी । किंतु, जैसे ही उन् थोड़ा-सा अभ्यास होगा, उन्हें इसका महत्त्व स्प हो जाएगा और शीघ्र ही यह भारतीय जनता क अपनी प्रणाली बन जाएगी ।

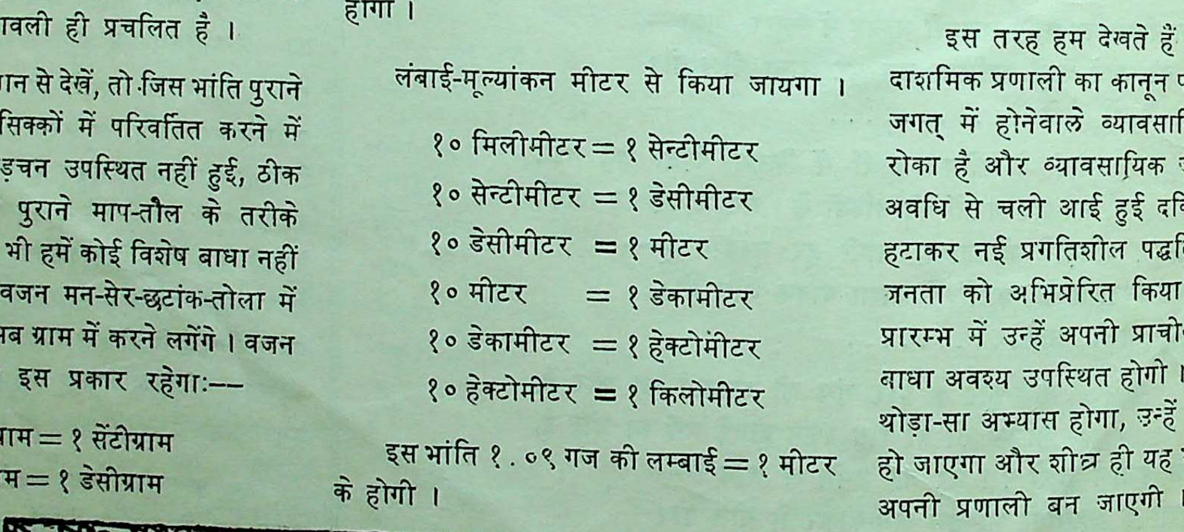

साहित्य, संस्कृति, कला, ज्ञान-विज्ञान आदि का विशेषांश

इसके संपादन परामर्शदाता ~ श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द

विशेष कविता

दर्पण है मेरे हाथों में

––डॉ० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'

दर्पण हैं मेरे हाथों में,
लेकिन, बिंबित रूप तुम्हारा।

जब तक तुम न मिले थे मुझको,
दर्पण तक का भान नहीं था,
मैं कोई बहुमूल्य वस्तु हूँ,
इसका भी अनुमान नहीं था,
बैठा था अपने में डूबा,
पथ के अवरोधों से ऊबा;
सहसा झलक तुम्हारी पाई,
जगमग हुआ ध्येय-ध्रुवतारा।

मेरे दर्पण में झाँके हो,
तो अपना मुँह फेर न लेना,
भेजा है जो प्यार-परेवा,
तो निष्ठुर हो टेर न लेना,
दे अपने आँचल की छाया,
शीतल कर देना यह काया,
इतनी देना तृप्ति कि जिससे,
फिर न फिरे मन मारा-मारा।

रूप-किरण से आलोकित हो,
मेरे मंदिर का हर कोना,
पुतली के आँगन में नाचे,
प्रतिपल सुन्दर श्याम, सलोना,
मैं अपनापन खोकर गाऊँ,
सब के सुख की बीन बजाऊँ।
जब-जब पग डगमग हों मेरे,
तब-तब दो तुम मुझे सहारा।

दर्पण है मेरे हाथों में,
लेकिन, बिंबित रूप तुम्हारा।

विशेष लेख

रामायण के वानर क्या सचमुच बंदर थे?

—श्री रामनरेश त्रिपाठी

वाल्मीकि-रामायण में उल्लिखित जिन वानरों ने राम की सहायता की थी, जिन्होंने लंका के राक्षसों से लड़कर विजय प्राप्त की थी, जो राजनैतिक व्यवहार-वार्ता में कुशल और सुविज्ञ शासक भी थे, जिनकी राजधानी मनुष्य-राजाओं की राजधानियों-जैसी सुरक्षित और ऐश्वर्यमयी थी और जिनकी स्त्रियाँ उत्तम रेशमी वस्त्रों से शरीर और घर को सजाना जानती थीं, क्या वे यहीं मामूली बंदर थे? सहसा इसपर विश्वास नहीं होता। बल्कि, ऐसा जान पड़ता है कि वे वनवासी मनुष्य थे और उनकी एक जाति-विशेष का नाम वानर था। किष्किंधा में उनका राजा बालि रहता था, जिसको मारकर राम ने उसके भाई सुग्रीव को राजा बनाया था। दंडकारण्य में राक्षसों का राज्य था; उसीके पड़ोस में वानर रहते थे। पर दोनों जातियों में रहन-सहन और खानपान की विभिन्नता के कारण वैमनस्य रहता था। राक्षस मांसाहारी थे और वानर फलाहारी, राक्षस युद्ध में कई तरह के अस्त्रशस्त्रों का प्रयोग करना जानते थे, पर, वानर ढेला, पत्थर, वृक्षों की टहनियाँ, घूंसा और कोई-कोई गदा चलाकर ही युद्ध करना जानते थे। वे कुश्ती लड़ना भी अच्छा जानते थे। लंका में सुग्रीव, अंगद और हनुमान् आदि वानरों ने रावण, कुंभकर्ण और महोदर आदि से कुश्ती भी लड़ी थी।

आकाश में उड़ने की कला भी वानरों और राक्षसों दोनों को मालूम थी। हनुमान् तो उड़कर लंका गए ही थे। विभीषण रावण के पास से उड़कर ही राम के पास पहुँचा था।

रामायण में उल्लिखित बुद्धि-संबंधी जितने काम वानरों ने किए हैं, सब मनुष्यों-जैसे थे। फिर उन्हें बन्दर क्यों समझना चाहिए? अनुमान किया जा सकता है कि मनुष्यों की कोई जाति ऐसी थी, जिसके मुंह की बनावट किसी सीमा तक बंदरों-जैसी थी। वे वन में रहते थे, फल-मूल खाते थे, बंदरों की तरह चंचल थे; बंदरों ही की तरह पेड़ों पर चढ़कर कूदते-फाँदते और फल तोड़कर खाते थे। उनका राजा होता था और राजा मंत्रियों की सलाह लेकर राजकाज चलाता था।

सीता की खोज में अंगद, जांबवंत और हनुमान् आदि वानर जब समुद्र-तट पर जा बैठे थे, तब अंगद ने उनको उत्साहित करते हुए कहा था——

सर्वे बलवतां श्रेष्ठा भवन्तो दृढ़विक्रमाः ।
व्यपदेश्य कुले जाता, पूजिताश्चाप्यमीक्ष्णशः ॥

अर्थात् आप सभी वानर असाधारण वीर और बलवानों में श्रेष्ठ हैं। उत्तम कुल में आप लोगों का जन्म हुआ है।

वानरों का यह उत्तम कुल कौन होगा?

वानरों में सबसे अधिक बुद्धिमान्, विद्वान्, प्रत्युत्पन्नमति और अनुपम पराक्रमी हनुमान् थे।

वानर से राम-लक्ष्मण की पहली मुलाकात पंपा-सरोवर के निकट हुई थी। वह वानर हनुमान थे, जो सुग्रीव के मंत्री थे और यह पता लगाने आए थे कि राम-लक्ष्मण कौन हैं? उस समय हनुमान तपस्वी ब्राह्मण का रूप धारण किए हुए थे। उन्होंने अपना परिचय देते हुए स्वयं कहा था:——

राज्ञा वानरमुख्यानां हनूमान्नाय वानरः ।

"मैं वानरों में मुख्य वानर हनुमान हूँ।"

आगे उन्होंने अपनी कुछ और विशेषताएँ भी बताई:——

"भिक्षुरूपप्रतिच्छन्नं सुग्रीवप्रियकाम्यया ।
ऋष्यमूकादिह प्राप्तं कामगं कामरूपिणम् ॥"

"सुग्रीव का काम बनाने के लिए मैं ऋष्यमूक पर्वत से आ रहा हूँ। मैं जैसा चाहूँ, वैसा रूप धारण कर सकता हूँ और जहाँ चाहूँ, वहाँ जा सकता हूँ।"

रामायण के अनुसार तत्काल रूप बदल लेने की कला में वानर और राक्षस दोनों बहुत निपुण दिखाई पड़ते हैं। हनुमान् कभी शरीर को बहुत छोटा कर सकते थे और कभी बहुत बड़ा भी। समुद्र लाँघते समय रास्ते में राक्षसी रूप धारण किए हुए नागमाता सुरसा मिली थी। उसने मुंह फैलाकर हनुमान् को निगल लेना चाहा। तब वह अपने पर्वताकार शरीर को अँगूठे के बराबर करके उसके मुंह में जाकर बाहर निकल आए और आगे चले गए।

"स संक्षिप्यात्मनः कायं जीमूत इव मारुतिः ।
तस्मिन् मुहूर्ते हनुमान् बभूवांगुष्ठमात्रकः ॥"

लंका में पहुँचकर भी हनुमान ने बहुत छोटा रूप करके रावण के महलों में प्रवेश किया था।

हनुमान् से पहली मुलाकात के अवसर पर राम ने लक्ष्मण से हनुमान् की जो प्रसंशा की थी, वह तो किसी भाग्यशाली विद्वान् मनुष्य की ही सकती है, न कि किसी बंदर की। राम ने कहा था——

अभिभाषस्व सौमित्रे सुग्रीवसचिवं कपिम् ।
वाक्यज्ञं मधुरैर्वाक्यैः स्नेहयुक्तमरिन्दम ॥
नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः ।
नासामवेदविदुषः शक्यमेवं प्रभाषितुम् ॥
नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम् ।
बहु व्याहरतानेन न किंचिदपशब्दितम् ॥
न मुखे नेत्रयोर्वापि ललाटे च भ्रुवोस्तथा ।
अन्येष्वपि च गात्रेषु दोषः संविदितः क्वचित् ॥

अर्थात्, हे लक्ष्मण! यह वानरराज सुग्रीव के मंत्री हैं। यह बात समझते हैं; तुम इनसे स्नेहयुक्त मीठी बातें करो।

जिसने ऋग्वेद की शिक्षा न पाई हो; जिसे यजुर्वेद का ज्ञान न हो और जो सामवेद का पंडित न हो, वह ऐसी बातें नहीं कर सकता।

जान पड़ता है, इन्होंने व्याकरण-शास्त्र का अच्छा अध्ययन किया है। बहुत-सी बातें करके भी इन्होंने व्याकरण-संबंधी कोई गलती नहीं की है।

बात करते समय इनके मुख, ललाट और भौंहों में भी कोई दोष नहीं दिखाई पड़ा।"

राम के मुख से वानर हनुमान के शास्त्रज्ञान की प्रशंसा सुनकर लक्ष्मण ने भी हनुमान को 'विद्वन्' शब्द से संबोधित कर बात शुरू की थी :—

'विदिता नौ गुणा विद्वन् सुग्रीवस्य महात्मनः ।'

अर्थात्, हे विद्वन् ! हम दोनों को महात्मा सुग्रीव के गुण ज्ञात हैं।

ऐसे लक्षणों से युक्त वानर को कैसे कहा जा सकता है कि वह मनुष्य नहीं, बल्कि बंदर है।

और आगे चलिए—

बालि ने भी शास्त्रों की शिक्षा पाई थी। उसने राम से कहा था—कि आपकी आज्ञा से मैं सीता को वैसे ही ला देता, जैसे पूर्वकाल में श्वेताश्वतर की श्रुतियाँ लाई गई थीं।

"आनयेयं तवादेशाच्छ्वेतामश्वतरीमिव ।"

सुग्रीव का राज्याभिषेक बड़े समारोह के साथ शास्त्रीय विधि से हुआ था, जैसे देवताओं ने इंद्र का किया था।

अभ्यषिञ्चन्त सुहृदः सहस्राक्षमिवामराः ।

किष्किंधा में ब्राम्हण भी थे। वही स्वस्ति-वाचन, पूजा-पाठ आदि धार्मिक कृत्य कराया करते थे। विविध प्रकार के रत्नों, वस्त्रों और भोज्य पदार्थों से ब्राम्हणों को प्रसन्न किया गया:—

रत्नैर्वस्त्रैश्च भोज्यश्च तोषयित्वा द्विजर्षभान् ।

किष्किंधा-नगरी बहुत सुन्दर बसी हुई थी। राम ने प्रस्रवण-पर्वत से किष्किंधा को देखा था। किष्किंधा से मृदंग और वानरों के गाने-बजाने की ध्वनि सुनाई पड़ रही थी :—

गीतवादित्रनिर्घोषः श्रूयते जयतां वर ।
नर्दतां वानराणां च मृदंगाडम्बरैः सह ॥

चौमासा बीत जाने पर लक्ष्मण सुग्रीव को उसकी प्रतिज्ञा की याद दिलाने किष्किंधा गए थे। उस समय उसकी शोभा और उसकी रक्षा का प्रबंध देखकर वह चकित हुए थे। कोई विशाल गुफा थी, जिसके अंदर सुग्रीव, अंगद और उसके मंत्रियों और सेनापतियों तथा धनियों के सुंदर-सुंदर भवन बने हुए थे :—

स तां रत्नमयीं श्रीमान् दिव्यां पुष्पितकाननाम् ।
रम्यां रत्नसमाकीर्णां ददर्श महती गुहाम् ॥
चन्दनागरुपद्मानां गन्धैः सुरभिगंधिनाम् ।

वानर शराब भी पीते थे। शराब की गंध से नगरी के चौड़े रास्ते वासित हो रहे थे।

मैरेयाणां मधूनां च संमोदितमहापथाम् ॥

लक्ष्मण ने सुग्रीव का अंतःपुर भी देखा था। अन्तःपुर में उन्होंने सोने-चाँदी के पलँग बिछे देखे, अनेक कीमती आसन और कीमती बिछौने बिछे देखे। उसमें प्रवृष्ट होते ही उन्होंने सितार की गत और मृदंग के ताल का मधुर स्वर सुना था :—

हेमराजतपर्यङ्कैर्बहुभिश्च वरासनैः ।
महार्हास्तरणोपेतैस्तत्र तत्रोपशोभितम् ॥
तन्त्रीगीतसमाकीर्णं समगीतपदाक्षरम् ॥

किष्किंधा में होशियार कारीगर भी बसते थे। वे सुंदर और कलापूर्ण पालकी बनाते थे; लक्ष्मण के साथ सुग्रीव पालकी में बैठकर राम के पास गया था। वह पालकी सोने की थी और चमकदार थी। उसपर सफेद छत्र तना था और दोनों ओर श्वेत चँवर चल रहे थे। बाजे बज रहे थे और वंदीजन गुणगान करते चल रहे थे। पालकी इतनी बड़ी थी कि उसमें सुग्रीव और लक्ष्मण के साथ कई वानर भी बैठे थे :—

बृहद्भिर्हरिभिर्युक्तमारुरोह सलक्ष्मणः ।
शंखभेरीनिनादैश्च बन्दिभिश्चाभिनंदितः ॥

तारा बड़ी बुद्धिमती स्त्री थी। लक्ष्मण ने क्रोधावेश में सुग्रीव को अनार्य, कृतघ्न और मिथ्यावादी कह दिया था।

अनार्यस्त्वं कृतघ्नश्च मिथ्यावादी च वानर ।

इस पर तारा ने कहा था—हे लक्ष्मण ! यह वानरों के राजा हैं, इनके प्रति ऐसी कठोर बातें न कहनी चाहिए।

"नैवं लक्ष्मण वक्तव्यो नायं परुषमर्हति॥"

तारा ने आगे कहा—हे राजपुत्र ! उच्च गुण संपन्न पुरुष हीन गुणवाले प्राणी पर क्रोध नहीं करते। फिर भला आपके समान महापुरुष क्रोध के वशीभूत कैसे होगा ? हे राजपुत्र ! यह क्रोध करने का समय नहीं है, और फिर अपने जनों पर तो कभी क्रोध करना ही नहीं चाहिए।

कोपं कथं नाम गुणप्रकृष्टः कुमार कुर्यादपकृष्ट सत्त्वे ।
कस्त्वद्विधः कोप वशं हि गच्छेत्सत्त्वावरुद्धस्तपसः
प्रसूतिः ॥
न कोपकालः क्षितिपालपुत्र न चातिकोपः स्वजने
विधेयः ।

बात करने में निपुण तारा ने लक्ष्मण की चुटकी भी ली थी—

आपने इसीलिए क्रोध किया है कि आपको कामशास्त्र का ज्ञान नहीं है।

न कामतन्त्रे तव बुद्धिरस्ति ।

इससे मालूम होता है कि तारा को कामशास्त्र का अच्छा ज्ञान था। जब तारा लक्ष्मण के सामने आई, तब उसके नेत्र मद-विह्वल हो रहे थे। उसकी करधनी का सुनहला डोरा लटक गया था :—

"सा प्रस्खलन्ती मदविह्वलाक्षी प्रलम्बकांचीगुणहेमसूत्रा।"

तारा ने मृत बालि को 'आर्यपुत्र' कहकर संबोधित किया था:—

सुप्त्येव पुनरुत्थाय आर्यपुत्रेति शोचती ।

इन उदाहरणों से यही प्रमाणित होता है कि वानर बंदर नहीं थे। वे आर्यजाति के मनुष्य थे। स्त्री-पुरुष दोनों शिक्षित होते थे। अच्छे नगर बसा सकते थे। राजनीति और धर्मशास्त्र का उनको ज्ञान होता था। वे अच्छे शूरवीर भी होते थे। वानरियाँ सुंदरी होती थीं। वे रंग-बिरंगी साड़ियाँ पहनती थीं। उनकी चाहे जो बोली रही है, उसका एक ही शब्द 'किलकिला' वाल्मीकि ने हमें जानने दिया है। संभव है, वह बोली भारत की किसी आधुनिक भाषा का आदिरूप रही हो। वानरों में संस्कृत-भाषा का भी प्रचार रहा होगा; क्योंकि, बालि, सुग्रीव, हनुमान् और तारा से राम, लक्ष्मण और सीता ने संस्कृत ही में तो बातचीत की होगी। हनुमान संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे, यह हम पहले कह आए हैं।

वानरों के शरीर का रंग पीला होता था। शायद पीले बालों के कारण पीला दिखाई पड़ता हो। मुँह उनका लाल होता था। यह आजकल के बंदरों से मिलता-जुलता है। मुँह की बनावट कुछ-कुछ बंदरनुमा रही होगी। नाक छोटी थी। आजकल भी भारत के किसी-किसी प्रदेश में बंदरनुमा मुंह के मनुष्य मिलते हैं। ऋक्ष और गोलांगूल भी वानरों की जातियाँ थीं।

देवताओं में भी मुख की आकृतियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की होतीं थीं। कहा जाता है कि किन्नरों का मुँह घोड़े की तरह होता था। अभी

(शेष पृष्ठ १३ पर)

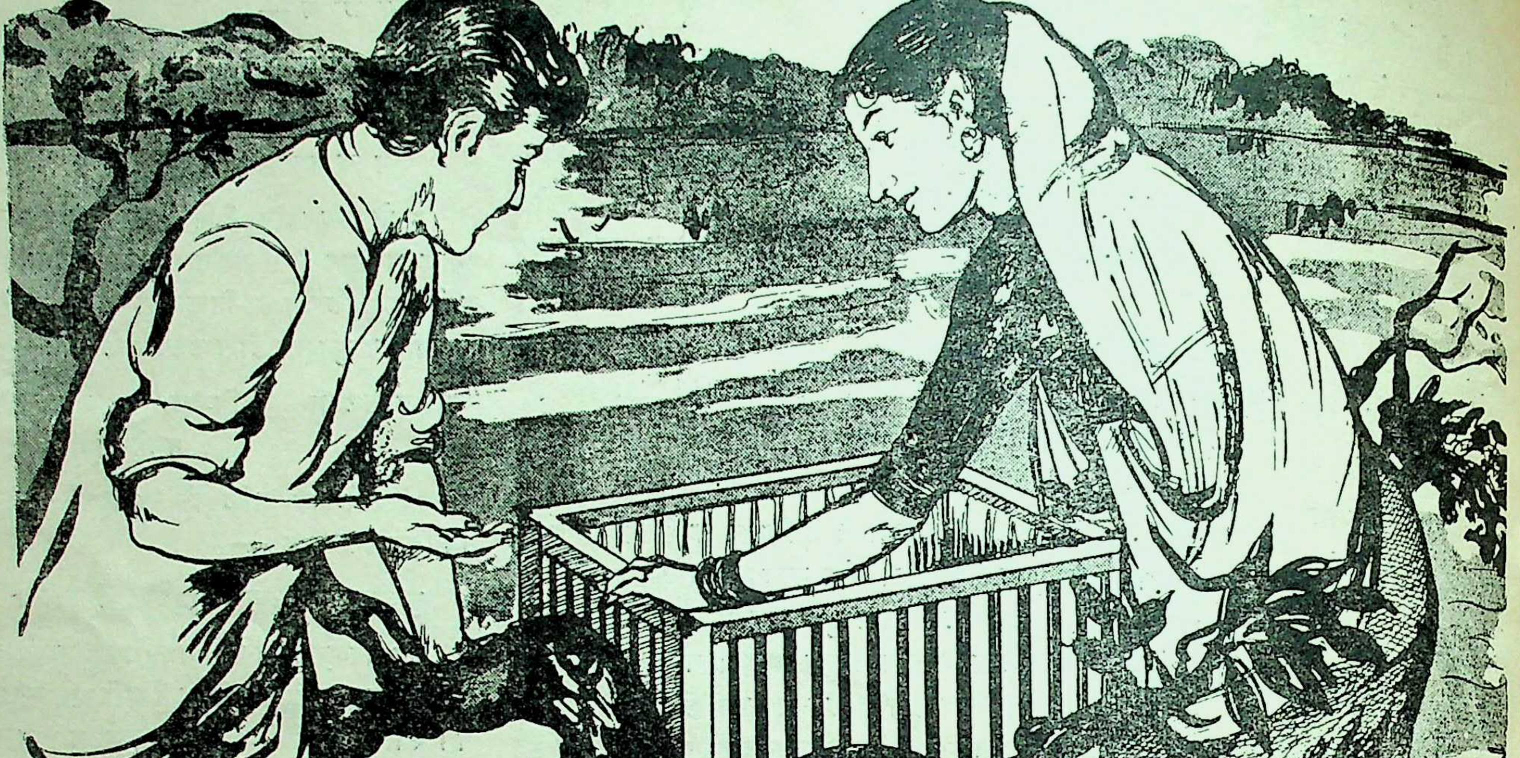

विशेष कहानी.

अदृष्ट का उपहास

—श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

रघुनाथ ने अपनी छात्रावस्था में जिस देश-सेवा और समाज-सेवा के भाव से भिन्न-भिन्न सामाजिक और राजनीतिक आयोजनों में भाग लिया था, उसमें एक व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा ही थी। उसे जीवन में वे सभी सुविधाएँ प्राप्त थीं, जिनके कारण न उसे चिंता थी और न कोई बाधा ही थी। वह जिस महत्त्वाकांक्षा से उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा था, वहीं उसे विभिन्न जातीय और सामाजिक कृतियों में प्रेरणा दे रही थी। उसे अपने कुल का दर्प था, जिसके कारण अनायास ही एक गौरव प्राप्त हो जाता है। जातीय संमेलनों में वह अपनी जाति की जो गौरव-गाथा सुना करता था, उसके कारण देश-सेवा पर वह अपना विशेष अधिकार समझता था। परंतु, ज्योंही उसे मालूम हुआ कि उसकी माता एक निम्न समझी जानेवाली जाति की थी और उच्च जातीय समाज में उसके लिए कोई स्थान नहीं था, तब उसका दर्प भी चला गया और गौरव की वह भावना भी। उसीके साथ उसमें जो एक हीनता का भाव उत्पन्न हुआ, उसने उच्च जातियों के प्रति एक विद्वेष भी ला दिया। उसी विद्वेष से उसने अपना नाम तक बदल दिया। वह रघुनाथ से रग्घू हो गया। इसके साथ ही वह उच्च जाति के लोगों के सभी दोषों को विशेष रूप से देखने लगा। अनेक बड़े-बड़े नरेशों और रानियों में उसने मिथ्या दर्प के साथ अनैतिकता देखी। वे सभी उसके लिए तिरस्करणीय हो गए। उसने यह देखा कि शक्ति और संपत्ति को स्वायत्त कर लेने पर भी वे सभी दुर्नीति का पथ ग्रहण करते हैं। उनमें आचरण का गौरव नहीं रहता और तब वह स्वयं आत्म-गौरव से युक्त होकर अपने लिए नया पथ खोजने लगा।

रग्घू ने अपने जीवन का यह एक व्रत ही बना लिया कि वह अपनी निम्न जाति के बंधुओं का जीवन-स्तर ऊँचा करेगा। अभी तक जो लोग पशुओं की तरह जीवन व्यतीत करते आए हैं, उनमें वह सच्ची मानवता का भाव ला देगा! वह जानता था कि एकमात्र आर्थिक स्थिति ही को उच्च कर देने से काम नहीं चलेगा। स्नेह

का जो मायालोक निर्मित होता है, उसमें अर्थ की विभीषिका से यथेष्ट कटुता उत्पन्न हो जाती है, परंतु इसीके साथ अनेक व्यक्तियों में संपत्ति भी एक दानवता उत्पन्न कर देती है! जो लोग संपत्तिशाली हैं, उनमें बहुतों में नैतिकता के ह्रास के साथ-साथ अहंकार और दंभ दोनों ऐसे विकट रूप धारण कर लेते हैं कि उनमें मानवता रह नहीं जाती। शोषण की प्रवृत्ति जो अधिकांश संपत्तिशालियों में आ जाती है, उसका भी एक कारण उन लोगों में स्वावलंबन का अभाव और आलस्य की भावना है! इसीलिए, रग्घू जिस अपमान की व्यथा के कारण अपने पिता की उच्च जाति के समाज को छोड़कर अपनी माता की निम्न जाति में सम्मिलित हुआ था, उसमें भी वह संपत्ति को एक बड़ा कारण मानने लगा था! यह बात नहीं है कि अधिकतर संपत्तिशालियों के वर्ग में नैतिकता की कोई महिमा रहती है! सच तो यह है कि संपत्ति प्रायः नैतिक भावना को पहले ही नष्ट कर देती है, परंतु संपत्ति के कारण समाज में एक गौरव प्राप्त करने की लालसा से सभी लोग अपना एक विशेष वर्ग ही बना डालते हैं। उस वर्ग में प्रायः नीति की महिमा नहीं रहती, पर, शक्ति का प्रभुत्व अवश्य रहता है! ऐसे लोग अन्य लोगों में किसी प्रकार की हीनता देखकर अपने भीतर एक गौरव का अनुभव करते हैं। प्राचीनकाल से लेकर आजतक लोगों में यह प्रवृत्ति विशेष रूप से काम करती रही है। कुल का अभिमान अथवा जाति का अभिमान उसी गौरव को पुष्ट करने के लिए एक विशेष-वर्ग के द्वारा प्रचलित किया जाता है! यह कोई आवश्यक नहीं है कि तथाकथित बड़े लोगों ही में यह भावना हो, छोटे लोगों में भी अन्य में किसी प्रकार की हीनता लाकर अपने में गौरव देखने की प्रवृत्ति होती है! मनुष्य में सच्ची मानवता का भाव लाने के लिए स्नेह ही का सच्चा प्रसार होना चाहिए और इसी स्नेह के प्रसार के लिए लोगों में स्वावलंबन के साथ-साथ अंतःस्फूर्ति के विकास के लिए साधन रहना चाहिए। यही सब बातें सोचकर रग्घू ने अपने जीवन का एक विशेष कार्यक्रम निश्चित कर लिया था! अपनी माँ के पारिवारिक लोगों के साथ काम करने में उसे यथेष्ट सफलता भी प्राप्त हुई। उसके साधन परिमित थे और शक्ति सीमित। अधिकांश निम्न जाति के लोगों के जीवन में दैन्यावस्था की वीभत्सता रहती है। उस बीभत्स अवस्था में रहकर भी एक संतोष और तृप्ति का अनुभव वे लोग करते हैं और अन्य बड़े लोगों का अन्याय और उत्पीड़न भी सह लेते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि उनके जीवन में स्फूर्ति रहने पर भी अपनी अवस्था के प्रति असंतोष नहीं रहता। वे अपने भीतर किसी शक्ति का अनुभव ही नहीं कर पाते! रग्घू चाहता था कि जिस विद्रोह-भाव से प्रेरित होकर उसने उच्च जाति के समाज को छोड़ा था वही भाव निम्नजाति के समझे जानेवाले लोगों में जागृत हो। अपने जीवन-स्तर को उन्नत करने के लिए उनमें स्वयं एक आकांक्षा हो! कम से कम काम करके अधिक से अधिक पाने का लोभ न करके अधिक से अधिक काम करके उसीमें एक आत्मगौरव को विकसित करने के लिए वह चेष्टा करने लगा! उन्नति के लिए नई शक्ति प्रबुद्ध होनी चाहिए। हमें अपनी कर्त्तव्य-शक्ति में गौरव ही नहीं, सुख का भी अनुभव होना चाहिए। इसीलिए वह अपने दल के लोगों में तरह-तरह की वस्तुएँ बनाने की प्रवृत्ति को विशेष उत्साहित करता था। उन चीजों के प्रचार के लिए उसे नगरों में विशेष रूप से जाना पड़ता था और कितने ही लोगों से संपर्क स्थापित करना पड़ता था। अकेला होकर भी वह स्वयं अपने कार्य में सुख के साथ गौरव का भी अनुभव किया करता था। इसीसे उसे अपने कार्य में एक सफलता का अनुभव होने लगा।

नगर के भीतर तथाकथित उच्च वर्ग में जो जीवन की कृत्रिमता वह पाता था, उसके कारण कभी-कभी वह यह सोचता था कि यदि इन बड़े लोगों को सचमुच ऐसे स्थान में रहना पड़ जाय, जहाँ सम्पत्ति के कृत्रिम साधन नहीं हैं, तो इन लोगों को जीवन की सच्ची महत्ता विदित हो जाय। अवस्था परिवर्तित होने से सचमुच हम लोगों के भावों में परिवर्तन हो जाता है। एक देवार की लड़की किसी उच्च कहे जानेवाले क्षत्रिय कुल में यदि प्रविष्ट हो जाय, तो उसमें भी उस कुल का मिथ्याभाव उत्पन्न हो जायगा। जब कभी वह काम करते-करते अपनी स्थिति से एक विशेष नैराश्य का अनुभव करने लगता, तब वह अपने मन में यही सोचता कि यदि उसकी माँ देवारिन न होकर किसी ठाकुर-वंश की लड़की होती, तो क्या वह स्वेच्छा से इस वर्तमान स्थिति को स्वीकार कर लेता? संभव है कि अन्य ठाकुरों की तरह वह अपने कुल और जाति के गौरव को लेकर नगर में एक श्रेष्ठ नागरिक का जीवन व्यतीत करता। आज जिसे वह अपने जीवन का व्रत समझ रहा है, वह बिलकुल ही न रहता। तो क्या यह किसी अदृष्ट शक्ति की प्रेरणा है, जिसके कारण वह स्वेच्छा से देवारों के दल में संमिलित हो गया। इसमें संदेह नहीं कि कभी-कभी वह अदृष्ट शक्ति हम लोगों के साथ सचमुच उपहास करती है। संसार में न जाने कब, कौन सहसा गौरव पा ले और सहसा गौरव खो भी डाले। जीवन का यह उत्थान-पतन क्या विधाता का एकमात्र खेल है?

(२)

एक दिन संध्या के समय जब रग्घू बाजार से लौट रहा था, तब उसकी एक दूसरे गाँव के भीखू नामक देवार से भेंट हुई। भीखू के चेहरे पर विषाद की एक घनी छाया थी। पूछने पर मालूम हुआ कि भीखू की स्त्री की मृत्यु एक अस्पताल में हो गई। वह गर्भवती थी। डेरे में उसकी दयनीय स्थिति देखकर लोगों ने भीखू को यह सलाह दी कि तुम उसे अस्पताल ले जाओ। वह अपनी स्त्री को अस्पताल ले गया। वहाँ उसके बच्ची पैदा हुई, पर, शारीरिक दुर्बलता के कारण भीखू की स्त्री चल बसी। रग्घू ने पूछा—फिर उस बच्ची का क्या हुआ? क्या वह भी मर गई? भीखू ने कहा—नहीं, वह मरी तो नहीं, पर, अब मेरे लिए वह मरी-सी ही है। रग्घू ने पूछा—बात क्या है? भीखू कहने लगा—मुझमें तो यह सामर्थ्य था नहीं कि मैं उसका लालन-पालन कर सकता। उसी अस्पताल में एक बड़े घर के ठाकुर भी आए थे। उनकी स्त्री के भी एक बच्चा हुआ था, पर, वह मर गया। स्त्री की अवस्था कुछ विक्षिप्त-सी हो गई थी और बच्चा होने के समय वह बेहोश थी, पर, जब वह होश में आई, तब अपने बच्चे के लिए वह विशेष व्यग्र हो गई। उसे शांत करने के लिए नर्स ने मेरी मातृहीना बच्ची ही को दे दिया और उसे पाकर वह संतुष्ट भी हो गई। उसके पति ठाकुर मेरे पास आए और कहने लगे—तुम वह बच्ची हमें दे डालो। हम उसका लालन-पालन करेंगे। मैंने भी सोचा—ठीक ही है। फिर उन्होंने कुछ रुपए भी मुझे दिए और अब मैं अपने गाँव जा रहा हूँ। रग्घू ने पूछा—क्या तुम उन ठाकुर को जानते हो। भीखू ने कहा—मैं उन्हें जानता तो नहीं था, पर, लोगों ने बताया कि वह बड़े धनीमानी व्यक्ति हैं और उनका नाम

है श्रीपतिसिंह। रग्घू को यह सब सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने मन में कहा कि यह अदृष्ट शक्ति की कैसी लीला है। देवार की लड़की उच्चकुल में अनायास ही पहुँच गई! तब क्या जन्म लेने ही से किसी में कुल की महिमा आती है? यही सोचते-सोचते वह भी धर्मशाला को लौट गया। रग्घू जब अपने डेरे को लौटा, तब काफी रात हो गई थी। बतसिया ने कहा—आज तो तुमने बहुत देर की। मैं तो अपने मन में डर रही थी कि कहीं तुम किसी संकट में न पड़ गए हो। रग्घू ने कहा—बतसिया, हम लोगों के लिए तो हमेशा संकट बना रहता है। उससे डरने से काम थोड़े ही चलता है। हम लोग जान-बूझकर जंगलों में रहते हैं। इसी समय खूब जोर से बादल गरजा और हवा चलने लगी। रग्घू ने कहा—देखो, क्षण-भर में यह तूफान कहाँ से आ गया। बतसिया ने कहा—वर्षाकाल में तो यह बात होती ही रहती है। रग्घू ने कहा—तभी तो मैं यह कहता हूँ कि हम लोग आँधी और तूफान से नहीं डरते और उसी में जीते हैं।

(३)

रात भर खूब वर्षा हुई। सवेरे वर्षा थम गई। नदी में प्रचण्ड बाढ़ आ गई थी। देवारों के डेरे से नदी का प्रचंड पूर स्पष्ट दिखाई देता था। रग्घू अपने डेरे से निकला। चारों ओर प्रकृति का मनोरम दृश्य था। रग्घू का हृदय भी एक उल्लास से भर आया। उसी समय बतसिया डेरे से घड़ा लेकर बाहर निकली। रग्घू ने उसे देखकर गाने के स्वर में कहा—सबेरे चली लेने पानी बतसिया। बतसिया ने कहा—वाह रग्घू दादा! अब तुम मुझी को छेड़ने लगे। पहले बिलसिया से निबट लो। इसी समय बिलसिया भी अपने डेरे से बाहर आई। वह कहने लगी—कितना सुहावना लग रहा है रग्घू दादा! मैं भी गाऊंगी, सुनोगे? बतसिया बोली—आज तो रग्घू दादा के कंठ से संगीत फूट निकला है। तुम लोग संगीत की लहरों में बहो, मैं तो चली पानी भरने।

बिलसिया गाने लगी—

नजर लागी रग्घू तोरी पगिया में।
जो मैं होती बन की कोयलिया,
कुहुक उठती बाबू तोरी बगिया में।
जो मैं होती फूल की माला,
महक उठती बाबू तोरी सेजिया में।
जो मैं होती काँच का चश्मा,
चमक उठती बाबू तोरी अँखियों में।

रग्घू ने कहा—वाह बिलसिया, तुमने खूब गाया। अच्छा अब मेरी भी सुनो—

नजर लागी गोरी तोरी कुटिया में।
जो मैं होता कच्चा टमाटर,
चमक उठता गोरी तोरी डलिया में।
जो मैं होता रेशम का धागा,
दमक उठता गोरी तोरी अँगिया में।
जो मैं होता कहीं जोरावर,
मगन रहता गोरी तोरी बतिया में।

बिलसिया हँसकर कहने लगी—रग्घू दादा, आजकल तो तुम बड़े रसिया होते जा रहे हो।

रग्घू—तभी तो घर-द्वार छोड़कर तुम्हारे पीछे जंगल-जंगल भटक रहा हूँ बिलसिया!

बिलसिया—झूठ मत बोलो दादा! जिसके लिए तुम जंगल छान रहे हो, वह कहीं भी हो, जंगल में नहीं है। इतने में नदी के किनारे से बतसिया ने चिल्लाकर कहा—रग्घू दादा! रग्घू दादा! जल्दी आओ।

रग्घू ने उत्तर दिया—लो, आया, आया।

बिलसिया और रग्घू दोनों दौड़कर नदी के किनारे पहुँचे। वहां एक टूटा हुआ पेड़ पड़ा था और वहीं बतसिया खड़ी थी। रग्घू उसके पास पहुँचा। रग्घू ने पूछा—क्या बात है बतसिया! बतसिया बोली—देखो, इस खटोले को, जो इस झाड़ में अटक गया है। रग्घू और बिलसिया ने पास जाकर देखा कि पेड़ में एक खटोला अटका हुआ है और उसमें खिले हुए गुलाब की भाँति एक बच्ची सोई हुई है। जान पड़ता है कि किसी गाँव से नदी में बहती हुई आई है। बिलसिया ने कहा—"पर, यह जरा भी भीगी नहीं है। वह ऐसी सो रही है, मानो यह नदी की बेटी हो और अपनी माँ की गोद में सो रही हो। बतसिया ने कहा—भगवान् ने इसे मुझे दिया है। उसी ने मुझसे मेरी बेटी को छीन लिया था और उसके बदले यह दूसरी बेटी दी है। यह गुलाब के फूल की तरह है, मैं इसे गुलबिया कहूँगी। यह कहकर उसने बच्ची को उठा लिया। बच्ची क्षणभर रोई और फिर उसकी गोद में सिमिट-सी गई। बतसिया बच्ची को लेकर डेरे की ओर लौटी। बिलसिया और रग्घू भी उसके पीछे-पीछे आए। डेरे में एक धूम-सी मच गई। सब लोगों को विस्मय हुआ और एक आनंद भी। उस दिन सभी लोगों ने उत्सव मनाया। पर, रग्घू एक चिंता में मग्न-सा रहा।

(४)

कुछ दिनों के बाद रग्घू खुद नाँदगाँव की ओर चल पड़ा। उसके दल के लोगों ने जो चीजें तैयार की थीं, उनको बेचने के लिए उसे समय-समय पर किसी भी नगर के बाजार में जाना पड़ता था। इस बार वह विशेष व्यग्रता से चला। नाँदगाँव पहुँचकर वह कुलदीपसिंह के घर का पता लगाना चाहता था। वहाँ उसने कुलदीपसिंह के घर का जो हाल सुना, उससे वह स्तब्ध रह गया। उसे मालूम हुआ कि जिस विशालसिंह को कुलदीपसिंह ने अपने घर में बड़े प्रेम से रखा था, वही एक दिन उसकी अनुपस्थिति में उसकी लड़की विमला को लेकर भाग गया। न जाने विशालसिंह ने उसे किस तरह बहकाया। उसकी खोज में कुलदीपसिंह निकल पड़े। बड़ी मुश्किल से एक गाँव में उसका पता चला। वह लड़की बड़ी मुसीबत में थी। विशालसिंह उसके गहने लेकर भाग गया था। उसके पास उसने एक पाई भी नहीं छोड़ी थी। लड़की गर्भवती थी। उसकी हालत देखकर कुलदीपसिंह गाँव ही में कई महीने रुके रहे। विशालसिंह के चचेरे भाई ने उनकी बड़ी मदद की। उसी के घर में रहकर कुलदीपसिंह ने अपनी लड़की की सब व्यवस्था की। वहीं विमला को एक लड़की हुई। उसने एक बड़ा सुंदर खटोला बनवाया था। पर, ऐसी भयंकर बाढ़ आई कि उसमें कितने ही लोग बह गए। विमला की वह फूल-सी बच्ची भी बह गई। उस शोक के आघात में विमला की मृत्यु हो गई। कुलदीपसिंह उसकी दाहक्रिया करने के बाद राजनाँदगाँव लौटे। यह सब हाल सुनकर रग्घू स्वयं शोक से विव्हल हो गया। किसी तरह सब चीजें बेचकर वह अपने डेरे पर लौटा। वह समझ गया कि बतसिया की वह लड़की कौन है? उसके मन में कुछ सांत्वना भी हुई। विमला नहीं मिली, तो भगवान् ने उसी की लड़की को मेरे संरक्षण में भेज दिया। अब मुझ पर एक और कर्तव्य-भार का गया। उसे अब अपने जीवन में एक लक्ष्य मिल गया। डेरे में पहुँचकर उसने अपने दल के लोगों से कहा—मैंने राजनाँदगाँव का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया है। हम लोग अब खैरागढ़ चलेंगे। दल के सभी लोग उसके आज्ञानुवर्ती थे। सब लोग

वहाँ से अपना डेरा उठाकर खैरागढ़ आ गए और वहीं दपका नामक गाँव में अपना डेरा जमा लिया। रघू के हृदय में एक विशेष संतोष का भाव उदित हुआ। उसने अपने मन में कहा—देवारिन की लड़की तो क्षत्रिय-कुल में पहुँच गई और क्षत्रिय-कुल की लड़की देवारों के घर आ गई। जो लोग कुल के अभिमान से अपने भीतर गौरव का अनुभव करते हैं, वे ऐसी स्थिति में क्या करें? क्या उन्हें यह लक्षित नहीं होगा कि कुल और संपत्ति दोनों में कोई गौरव नहीं। यथार्थ गौरव केवल स्नेह में है। एक देवारिन का मातृ-स्नेह एक उच्च-कुल की ललना के मातृ-स्नेह से किसी प्रकार कम नही है। और अपनी संतान न होने पर भी दोनों में अन्य की संतानों के प्रति भी वही ममत्व विकसित हो जाता है। यही तो स्नेह का सच्चा गौरव है। इसी के प्रसार में विश्व का कल्याण संभव है। विश्व-बंधुत्व, देश, जाति. कुल—सभी की सीमाओं का अतिक्रमण करके अपने ही भीतर स्नेह के द्वारा सार्थक होता है।

रामायण के वानर क्या बन्दर थे ?

(पृष्ठ ९ का शेष)

हजार वर्ष भी नहीं हुए, पृथ्वीराज चौहान पर मुहंमद गोरी ने चढ़ाई की थी; चंद वरदाई ने 'रासो' में लिखा है कि उसकी सेना में ऐसी जातियों के सैनिक भी थे, जिनमें कुछ की आंखें बिल्लो को तरह और कुछ के मुँह सियार की तरह थे।

"मजारी चखी मुक्ख जम्बक्क लारी।"

वानर तलवार चलाना जानते थे। लंका में वानर-सेनापतियों ने प्रतिद्वंद्वी राक्षस की तलवार छीनकर उसे चलाया भी है। गदा भी उनका एक शस्त्र था। हनुमान् गदा-युद्ध में बड़े प्रवीण थे। धनुष-तीर का प्रचार वानरों में बिलकुल नहीं था। राम और लक्ष्मण से वे इसीलिए बहुत डरते थे कि उनके पास धनुष-तीर थे।

दंडकारण्य में वानर-राज्य के पड़ोस में राक्षसों का राज्य था। वानरों की वीरता से वे भी डरते थे।

वानरों की एक विचित्र विशेषता यह थी कि उनके पूँछ भी थी। पूँछ उस समय के मनुष्यों के थी न राक्षसों के। फिर यह पूंछवाले मनुष्य लुप्त कैसे होगए, इसका कोई समाधान नहीं मिलता। लंका की लड़ाई में वानरों ने पूँछ का उपयोग किया भी था। और हनुमान् की पूँछ भी जलाई भी गई थी।

गुजरात में सहकारी कृषि-संस्थाएँ

योजना आयोग की अनुसंधान कार्यक्रम समिति ने गुजरात में सहकारी खेती संस्थाओं के विकास की जो पड़ताल की है, उससे बहुतसी महत्त्वपूर्ण बातों का पता चला है। समिति ने केवल सन् १९४९-५४ में हुई प्रगति का ही अध्ययन किया है। लेकिन इसके आधार पर वर्तमान समस्याओं पर भी विचार किया जा सकता है। अनुसंधान कार्यक्रम समिति की रिपोर्ट बम्बई की इंडियन सोसायटी ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनोमीज प्रकाशित कर रही है।

सन् १९४९-५४ में बम्बई के गुजरात प्रदेश में ४० सहकारी खेती संस्थाएं स्थापित करने का लक्ष्य था। पर इस दौरान में ७९ संस्थाएं स्थापित की गईं। इस सफलता के लिए राज्य सरकार की पहल को यदि पूरा नहीं तो बहुत बड़ा श्रेय है। सबसे पहले ये संस्थाएं पिछड़ी हुई जातियों और विस्थापितों के लिए स्थापित की गई थीं। सरकार ने इन संस्थाओं को २५ हजार एकड़ जमीन दी। पर इस योजना की पूर्ण सफलता गैर-सरकारी संस्थाओं और जनता के सहयोग से हुई।

इन संस्थाओं की वृद्धि में काश्तकारी कानून का संशोधन भी बहुत सहायक सिद्ध हुआ। इस संशोधन के अनुसार कोई भी काश्तकार जो किसी सहकारी संस्था का सदस्य था, काश्तकारी से हटाया नहीं जा सकता था। अतः बहुत से काश्तकार इन संस्थाओं के सदस्य बन गए। सन् १९४९-५४ में बनी सहकारी खेती संस्थाओं में से ३७ इन्हीं काश्तकारों की हैं। ये संस्थाएं सहकारिता के आधार पर पट्टे पर जमीन लेकर अपने सदस्यों को बांट देती हैं। काश्तकार अपने हिस्से की जमीन को अलग-अलग जोतते हैं और जमीन के रकबे के हिसाब से सामान देते हैं।

इसके अतिरिक्त २८ सामूहिक खेती संस्थाएं और १४ साझे में खेती करनेवाले किसानों की संस्थाएं हैं। सहकारी खेती में संस्था के सदस्य किसान संस्था की जमीन को जोतते-बोते हैं और साझे की खेती में किसान अपनी-अपनी जमीनों को एक जगह इकट्ठा करके उसमें मिलजुल कर खेती करते हैं।

पड़ताल से यह स्पष्ट हो गया कि सहकारी खेती संस्थाओं के कारण भूमिहीन मजदूर अच्छे किसान बन गए। इस काम में रेहमालपुर, महीसागर भाथा, खेड़िया-पोचम्बा और पाला की संस्थाओं को विशेष सफलता मिली। बमनिया और जरोद की संस्थाओं के कारण वहां के काश्तकार भूमिहीन मजदूर बनने से बच गए। नयाका संस्था ने पशु-पालकों को फिर से बसाने में बड़ी सहायता दी। सहकारी संस्थाओं के कारण इस क्षेत्र के किसानों को अधिक और स्थायी काम मिला, जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई। साथ ही इन्हीं संस्थाओं से इन लोगों को सस्ता अनाज, और मुफ्त प्राथमिक चिकित्सा तथा बच्चों को किताबें भी मिलीं। इससे किसानों में अपना रहन-सहन का स्तर ऊंचा करने की प्रबल इच्छा जगी। सहकारी संस्थाओं ने गांवों के विकास में भी बड़ा योग दिया। एक संस्था ने अपने गांव में प्राइमरी स्कूल खोला और उसे अपने खर्च पर चलाया। दूसरी संस्था ने तीन तटबंध और एक धर्मशाला बनाईं। इसी संस्था ने गांव के स्कूल की इमारत बनाने के लिए रुपया भी दिया। एक तीसरी संस्था ने अपने गांव में बहुउद्देश्यीय संस्था की स्थापना करके अपने क्षेत्र की अन्य सहकारी संस्थाओं की सहायता तो की ही, साथ ही खेती के सुधरे हुए तरीकों को काम में लाने में भी पहल की। इसके अतिरिक्त सुरक्षित निधियों का भी निर्माण हुआ, जिससे विकास-कार्यों के लिए बहुत बड़ा साधन उपलब्ध हो सका।

कुछ व्यक्तियों ने भी सहकारी खेती संस्थाओं के कामों को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण योग दिया। एक संस्था के अध्यक्ष अंधे थे, पर उन्होंने संस्था के कामों का बड़ी कुशलता से निर्देश किया। उन्होंने अपनी १० एकड़ जमीन भी संस्था के चार सदस्यों को दे डाली।

कहीं-कहीं आर्थिक विकास ने बहुत-सी सामाजिक रूढ़ियों को भी समाप्त कर दिया। एक गांव की संस्था ने स्कूल खोला, पर इसमें ऊंची जाति के लोगों ने अपने बच्चे पढ़ने के लिए नहीं भेजे।

(शेष पृष्ठ २९ पर)

एकांकी नाटक

तीन भाई

सुश्री शकुन्तला तोमर

पात्र--

नरेश—बड़ा भाई
हरीश—मंझला भाई
राकेश—सब से छोटा भाई
रश्मि—एक दयालु परी
अंजना—रश्मि की सखी दूसरी परी
रामू—नरेश का नौकर
अन्य :—बुढ़िया, लड़का, स्त्री, मजदूर आदि.

[पर्दा उठता है। स्टेज खाली है। एक ओर से हरीश का प्रवेश। घड़े में से पानी निकालकर एक गिलास पानी पीता है।]

हरीश--(बैठते हुए) ओफफोह, कितना थक गया हूं।

(जेब में से एक छोटा-सा शीशा निकालकर मुंह देखने लगता है।)

(दूसरी ओर से राकेश का प्रवेश)

राकेश--आगए छोटे दादा!

हरीश—हां, तुम कहां रह गये थे। अखाड़े में?

राकेश—हां, दादा खेत से आ रहा था, तो कल्लू पहलवान मिल गया, बोला–चल जरा अखाड़े की तरफ चलें।

हरीश—भाई, तू भी एक ही है। खाने को हो चाहे न हो, लेकिन पहलवानी करने जरूर जायगा। मुझे तो समझ ही में नहीं आता कि खाली पेट पहलवानी कैसे करते बनती है।

राकेश—(अन्दर जाकर लौटकर आता है) क्यों छोटे दादा, कुछ मिला? घर में तो आज कुछ भी नहीं है।

हरीश—कुछ नहीं मिला राकेश! सारे दिन कड़ी मेहनत करने के बाद भी पेट भर खाने तक को नहीं मिलता।

राकेश—बड़े दादा कहां हैं?

हरीश—दादा को एक मजदूरी मिल गई थी। कुछ सामान पहुंचाना था वहीं गए हैं।

राकेश—चलो एकाध दिन का तो काम चल ही जायेगा। अच्छा दादा, मैं जरा पानी भर लाऊं।

(घड़ा उठाकर बाहर चला जाता है।)

[हरीश चटाई उठाकर बिछाकर लेट जाता है। नरेश एक छोटी-सी पोटली कंधे पर लटकाकर प्रवेश करता है।]

हरीश-(उठकर बैठते हुए) क्या लाए दादा? (पोटली खोलते हुए) बस इतना-सा ही।

नरेश—चार आने में और क्या आ सकता था?

हरीश—क्यों, बस चार आने ही दिए?

नरेश—नहीं, हरीश उन्होंने तो एक रुपया दिया था, लेकिन मैंने नहीं लिया।

हरीश—क्यों, आपने क्यों नहीं लिया?

नरेश—क्योंकि मैंने काम ही चार आने का किया था, ज्यादा कैसे ले लेता।

हरीश—लेकिन इतने से क्या होगा?

(राकेश का पानी का घड़ा लेकर प्रवेश)

नरेश—राकेश, जरा एक गिलास पानी पिला दो। (पानी पीकर पोटली उठाकर चलने लगता है) देखो राकेश! तुम जरा पड़ोस के बनिए से थोड़ी-सी दाल उधार ले आओ जाकर।

(हरीश उठकर एक कोने में रखी झाड़ू उठाकर झाड़ू लगाने लगता है।) अच्छा हरीश, तुम जरा झाड़ू लगाओ तब तक मैं रोटी सेंक लेता हूं।

हरीश--(झाड़ू लगाने के बाद) दादा, मैं कुएं पर जा रहा हूं।

नरेश—क्यों?

हरीश—हाथ मुंह धोने। देखिए न कितनी गंदी सूरत हो रही है।

(बाल्टी उठाकर चला जाता है।)

(राकेश का एक बुढ़िया के साथ प्रवेश)

राकेश--दादा! बनिये ने दाल नहीं दी। कहता है, पहिले-पिछले सारे पैसे दे जाओ तब और दूगा।

नरेश--(नेपथ्य से) चलो रहने दो। नमक से ही काम चला लेंगे। (तश्तरी में रोटी लिए प्रवेश। बुढ़िया की ओर देखते हुए) ये कौन है।

राकेश--दादा, मैं बनिया की दूकान से लौट रहा था तो रास्ते में ये मिल गई।

नरेश—बैठो मां जी!

राकेश--(इधर-उधर देखते हुए) छोटे दादा कहां गए?

नरेश--कुएं पर गया है, हाथ-मुंह धोकर अपनी सजावट करने गया है।

[नरेश का प्रवेश। बाल्टी एक ओर रखकर बुढ़िया के सामने आकर खड़ा होकर 'अपने बालों में कंघी करने लगता है]

नरेश—(बुढ़िया के पास बैठते हुए) कहां रहती हो मां जी?

बुढ़िया—जहां जगह मिल जाती है बेटा, वहीं रात काट लेती हूं। मजदूरी करके जो कुछ थोड़ा-बहुत मिल जाता है उसी से पेट भर लेती हूं।

राकेश—दादा, इन्होंने दो दिन से कुछ खाया नहीं है। इस गांव के मुखिया के यहां यह डलिया पहुंचाने जा रहीं थीं, लेकिन भूख के कारण रास्ते में बेहोश हो गईं।

नरेश—लो मां जी, रोटी खाओ।

हरीश—ठहरो भइया, आओ मां, मेरे साथ आओ मैं तुम्हें पानी निकाल देता हूं। मुंह-हाथ धोकर फिर खाना खाओ।

(स्टेज के एक कोने में जाकर हाथ-मुंह धुलाकर एक कपड़ा देता है) ये लो मां जी, इससे हाथ-मुंह पोछ लो। हमारे पास कोई दूसरा वस्त्र भी नहीं है जो......

बुढ़िया—कोई बात नहीं बेटा!

नरेश--आओ खाना खालो (बुढ़िया खाना खाने लगती है।) मां, मुझे बड़ा दुःख है कि तुम्हें सूखी रोटियां खाना पड़ रही हैं। आज बनिये ने भी तो दाल नहीं दी।

बुढ़िया—नहीं बेटा, तू चिंता न कर। तू रुपए-पैसे का गरीब है, लेकिन दिल का बड़ा धनी है।

(शेष पृष्ठ २१ पर)

बाढ़-पीड़ित सहायता-निधि के लिए मुख्यमंत्री की अपील

बाढ़-पीड़ित सहायता के लिए केन्द्रीय समिति गठित

मुख्य मंत्री डाक्टर कैलासनाथ काटजू ने आसाम और काश्मीर बाढ़-पीड़ित सहायता-निधि में योगदान देने के हेतु निम्न-लिखित राज्य-व्यापी अपील प्रसारित की है:—

"पिछले कुछ सप्ताहों में आसाम के कुछ भागों और समस्त काश्मीर घाटी में विनाशकारी बाढ़ों के कारण धन-जन की बहुत भारी बर्बादी हुई है और बहुत-से लोगों को काफी तकलीफ हुई है। कहा जाता है कि आसाम में १,५०० वर्गमील से अधिक क्षेत्र बाढ़ के कारण पानी में डूब गया है और लगभग नौ लाख व्यक्ति बेघरबार हो गये हैं। लोग जिस भरपूर धान की फसल की उम्मीद कर रहे थे, वह पूरी तरह बर्बाद हो गई है। काश्मीर में, सैकड़ों गांवों का संबंध बाहर से टूट गया है और लोगों के घरों और जोते हुए खेतों पर पानी ही पानी फैल गया है। रबी फसल नष्ट हो गई है। समाचार है कि ३० व्यक्ति बाढ़ों में मर गये हैं तथा और भी व्यक्तियों के मरने की आशंका है। यह भय है कि बहुत-सी बड़ी विकास-योजनाओं को, जो कि पूरी हो चुकी हैं या जिनका निर्माण-कार्य चल रहा है, बहुत भारी हानि पहुंची होगी। दोनों स्थानों में, बाढ़ों के बाद भुखमरी और बीमारी का खतरा पैदा हो गया है और लोगों का भविष्य कष्टपूर्ण तथा अंधकारमय है।"

"इस प्रकार की बड़ी प्राकृतिक आपत्तियों से पीड़ितों के प्रति समस्त देश के लोगों के मन में सहानुभूति उत्पन्न होना चाहिये। काश्मीर और आसाम दोनों में राहत-काम संगठित रूप से शुरू कर दिया गया है और जिन स्थानों में बाढ़ से नुकसान हुआ है, वहां अन्न, दवाइयां और धन शीघ्र-से-शीघ्र भेजा जा रहा है। हमेशा की तरह हमारी प्रतिरक्षा सेनाएँ राहत-काम संगठित करने और जो व्यक्ति अलग-अलग स्थानों में फंस गये हैं, उन्हें हवाई जहाज से अन्न पहुंचाने में बहादुरी से सहायता दे रही हैं। लेकिन, इतने विशाल क्षेत्र की इतनी बड़ी विपत्ति के लिए और भी अधिक परिमाण में सहायता की जरूरत है।"

"इसलिये मैं मध्यप्रदेश के लोगों से अपील करता हूं कि वे आसाम और काश्मीर में अपने पीड़ित भाइयों की सहायता के लिए आगे आएं और उन्हें राहत तथा सुविधा पहुंचाने के लिए भरसक योग-दान दें। भारत सरकार, देश की जनता तथा दूसरे राज्यों की सरकारें मानवता के इस काम में मदद देने की पूरी कोशिश कर रही हैं। मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं है कि मध्यप्रदेश में धनवान् और गरीब सभी वर्गों के उदार लोग आसाम और काश्मीर की जनता के कष्टों को दूर करने के लिए जो कुछ भी दे सकते हैं, देंगे; और इन दोनों राज्यों के लोगों को अपनी विपत्ति का कामयाबी से सामना करने में मदद देंगे।"

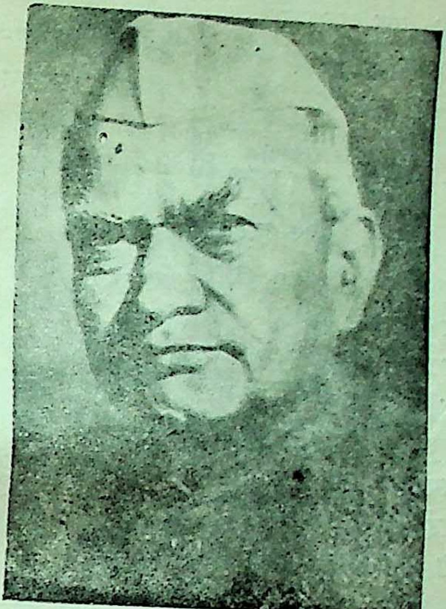

केन्द्रीय समिति गठित

निधि एकत्रित करने के अभियान को संचालित तथा निर्देशित करने और एकत्रित निधि को आसाम और काश्मीर के लिए निर्धारित करने के लिए राज्य-स्तर पर मुख्य मंत्रीजी की अध्यक्षता में एक केन्द्रीय समिति गठित की गई है। अध्यक्ष के अतिरिक्त इस समिति के अन्य सदस्य निम्न-लिखित हैं:—

श्री बी. ए. मण्डलोई, राजस्व मंत्री
श्री शम्भुनाथ शुक्ल, वन मंत्री
श्री मिश्रीलाल गंगवाल, वित्त मंत्री
रानी पद्मावती देवी, लोक स्वास्थ्य मंत्राणी
सेठ गोविन्ददास, संसद सदस्य
श्री कन्हैयालाल खादीवाला, संसद सदस्य
श्री अर्जुनसिंह, विधान सभा सदस्य
श्री के. सी. बघेल विधान सभा सदस्य
श्री के. पी. पाण्डे, विधान सभा सदस्य
श्री मती चन्द्रकला सहाय, विधान सभा सदस्या

श्री एम. जी. कर्णीकर, आई. ए. एस., आयुक्त भोपाल और श्री व्ही. एन. कृष्णन्, उप सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग, समिति के सचिव और कोषाध्यक्ष।

सब जिलों को निधि एकत्रित करने का अभियान संगठित करने के निर्देश दे दिये गये हैं। स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया और खजानों से अनुरोध किया जा रहा है कि इस निधि के लिए जो सब रकमें दी जाएं, उन्हें सममूल्य पर भेजने की वे सुविधाएं दें।

सरगुजा जिले में चार आदिवासी गृह-बस्तियां

महाकोशल-क्षेत्र की अनुसूचित जनजातियों के कल्याणार्थ केन्द्रीय सरकार द्वारा आरंभ किये गये कार्यक्रम के अन्तर्गत सरगुजा जिले की पाल तथा समरी तहसीलों की अनुसूचित जनजातियों के लिए १०० घर बनाने के लिए योजनाबद्ध प्रयास किए जा रहे हैं। इस संबंध में ४ सुनियोजित सुन्दर आदर्श बस्तियां, बनाने का प्रस्ताव है, प्रत्येक बस्ती में २५ घर रहेंगे। इन बस्तियों में भूमिहीन आदिवासियों विशेषतया डहिया कृषि करनेवाले आदिवासियों को बसाया जायगा। उन्हें बस्तियों के पास ही कृषि-योग्य जमीन दी जाएंगी और विस्तार के लिए भी पर्याप्त स्थान का प्रावधान रखा जायगा।

सरकार प्रत्येक मकान के निर्माण के लिए ७५० रुपये का सहायता अनुदान देगी, बशर्ते कि सहायता प्राप्त आदिवासियों २५० रुपये का अंशदान श्रम अथवा सामग्री के रूप में दें।

इन चार आदर्श बस्तियों में से, २ बस्तियां सामरी तहसील में तथा अन्य २ बस्तियां रामानुजगंज उप-संभाग की पाल तहसील में स्थापित की जायंगी। यहां, यह स्मरण रहे कि सन् १९५८–५९ में इस योजना के अन्तर्गत जिले में ३०० घर निर्मित किए गए थे। इस साल १०० घरों के निर्माण के पश्चात्, सरगुजा जिले में आदिवासियों के लिए कुल ४०० आदर्श घर हो जायंगे। यह योजना केंद्रीय निर्माण, गृह तथा पूर्ति मंत्रालय की ग्राम गृह-निर्माण-योजना से सम्बद्ध की जायगी।

साप्ताहिक समीक्षा

काश्मीर में भीषण व्यापक बाढ़

पिछले दिनों जम्मू व काश्मीर में जो बाढ़ आई, उसमें हुई मौतों की संख्या अब १०४ पहुंच गई है।

यहां मिली सरकारी सूचनाओं के अनुसार पुंछ में कुल ४५ व्यक्तियों की मृत्यु हुई है। इनमें से २५ की मौत मंडी में हुई। वे लोग रात को सो रहे थे। बाढ़ आई और उन सब को बहा ले गई।

मंडी में अन्न भेज दिया गया है। यह स्थान इतना तबाह हो गया है कि सरकार ने इस क्षेत्र को रज्जु मार्ग से जोड़ देने की सोची है।

करीब ५,००० कनाल कृषि-योग्य भूमि जलमग्न है। कई मकान बह गए हैं।

काश्मीर के विकास मंत्री श्री कोतवाल चूनीलाल ने हीरानगर का दौरा किया और वह भी यह देखने के लिए कि इस क्षेत्र में कितनी क्षति हुई है। उन्होंने २४ मील लम्बी उज्झा नहर के हैड-वर्क्स का निरीक्षण किया। इस नहर से करीब ४०० एकड़ भूमि की सिंचाई होती है। हैडवर्क की मरम्मत कर दी गई है। इंजीनियर भी उनके साथ थे। उन्होंने बाढ़-पीड़ित देहातों का भी निरीक्षण किया।

सीमावर्ती गांव चकरौली के करीब ३०० व्यक्तियों ने रणवीर नहर से नमक व पत्थर निकालने के लिए अपनी सेवाएं अर्पित कीं।

कच्छ जिले में अभूतपूर्व वर्षा

कच्छ जिले में अभूतपूर्व वर्षा होने के फलस्वरूप १७ व्यक्ति मारे गए तथा २०० से अधिक मकान गिर गए। इनमें १२ व्यक्ति जिले के सदर मुकाम भुज में मरे तथा शेष मांडवी में। मांडवी तट पर ७ नावें उनके नाविकों के साथ लापता हैं।

कच्छ जिले के सदर मुकाम भुज में लम्बे समय तक मूसलाधार वर्षा होने के फलस्वरूप बाढ़ आ जाने तथा अनेक मकान गिरने से कम-से-कम ८ व्यक्ति मारे गए। भुज नगर का सम्बन्ध बाहरी दुनिया से कट गया है। वर्षा तथा तूफान से टेलीफोन व तार-व्यवस्था भंग हो गई है।

भुज तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में जो हानि हुई है, उसके विवरण नहीं मिल सके हैं। भुज से जो यात्री विमानों से पहुंचे हैं, उन्होंने बताया कि भारी वर्षा के फलस्वरूप भुज व आसपास के क्षेत्रों में भारी संख्या में मकानों को क्षति पहुंची है। भुज में १८॥ इंच वर्षा हुई है तथा नगर की कुछ सड़कें १० फुट गहरे पानी में डूब गईं। अधिकांश यात्रियों को विशेष विमानों से भेजा गया।

अहमदाबाद में मौसम विशेषज्ञों ने बताया है कि भुज (कच्छ) में जो १८.५० इंच वर्षा हुई, जो अब तक का सबसे अधिक रेकार्ड है।

सूरत का समाचार है कि नर्मदा नदी में बाढ़ आ गई है तथा उसका पानी भड़ौच नगर व अन्य अनेक आसपास के गांवों के निचले क्षेत्रों में भर गया है। भड़ौच नगर के कुछ क्षेत्र कमर तक पानी में डूबे हुए हैं।

बर्लिन पर दोनों पक्षों की स्थिति यथापूर्व

पश्चिमी देशों ने प्रस्ताव किया कि पश्चिमी तथा पूर्वी बर्लिन में विध्वंसात्मक प्रचार को रोकने के लिए संयुक्त राष्ट्रों का अमल रखा जाय, परन्तु रूस ने इस प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया।

सोवियत विदेश मंत्री श्री ग्रोम्मिको ने पूर्व-पश्चिमी विदेश मंत्री वार्ता में कहा कि संयुक्त राष्ट्रों की सहायता लेने से पूर्व पश्चिमी देशों को बर्लिन को एक स्वतंत्र नगर बनाया जाना स्वीकार कर लेना चाहिए। पूर्वी जर्मन प्रतिनिधि मण्डल के नेता डॉ. लोथर वोल्ज ने भी कहा कि हमारी सरकार भी बर्लिन पर अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण के विरूद्ध है।

अमरीकी विदेश मंत्री श्री हर्टर ने तीन घंटे की खुली बैठक में संयुक्त राष्ट्रों को बुलाने का पश्चिमी प्रस्ताव पेश किया तथा बैठक की समाप्ति पर दोनों पक्ष बर्लिन प्रश्न पर वहीं रह गए, जहां वे पहले थे।

बेलजियम के राजकुमार अल्बर्ट और इटली की राजकुमारी पाओला, जिनका विवाह हाल हीं में वेटिकन सिटी (इटली) में पोप द्वारा सम्पन्न कराया गया

विश्व बैंक के भारत के लिए दो और ऋण

विश्व बैंक ने भारत को छह करोड़ डालर के दो ऋण देना स्वीकार कर लिया है।

पेरिस में की गई एक घोषणा के अनुसार उक्त रकम में से पांच करोड़ डालर रेलवे-विकास के लिए तथा शेष एक करोड़ डालर भारतीय औद्योगिक ऋण तथा विनियोग निगम के लिए हैं।

इन ऋणों का भुगतान वीस वर्षों में होना चाहिए और इसके लिए ६ प्रतिशत सूद देना पड़ेगा।

भिलाई कारखाने से एक लाख टन लोहा भेजा गया

भिलाई कारखाना पिछले सप्ताह तक एक लाख टन लोहे के ढोके बनाकर बाहर भेज चुका है। अब तक यहां कुल १,३३,००० टन लोहे के ढोके बन चुके हैं और इनमें से २,१७,९७,००० रुपये के १,०२,३८० टन ढोके देश के विभिन्न स्थानों को भेजे जा चुके हैं।

जून मास में इस कारखाने में ६२,०४,००० रुपये के २८,८५४ टन लोहे के ढोके तैयार हुए। जून के अन्त तक कुल १,२६,५९८ टन लोहा तैयार हुआ, जिसका मूल्य २,७२,१९,००० रुपये होता था।

भिलाई को धमन भट्टी में प्रति दिन औसतन ९६२ टन लोहा बना। इस भट्टी की क्षमता ९०० टन प्रतिदिन की रखी गई थी। महीने के १५ दिनों में तो उत्पादन १,००० टन से भी अधिक रहा।

कोक का उत्पादन

जून में भिलाई में ३७,९०२ टन कोक बनाया गया और जून के अन्त तक कुल १,६४,२१९ टन कोक बनाया जा चुका था। इसी प्रकार जून में लगभग १,३७५ टन कोलतार प्राप्त हुआ और १,०५० टन की कारखाने से निकासी हुई।

कुमायूं (उतर प्रदेश) के जनोली गांव में, एक ग्रामसेविका द्वारा खोली गई एक शाला। (चित्र में) खेलकूद में रत, शाला के बालक-बालिकाएँ

जून में रझेड़ा की खानों से २८,२६७ टन खनिज लोहा निकाला गया और अब तक कुल उत्पादन ४,२२,४२८ टन का रहा। इसी मास कारखाने में ५०,४८० टन कोयला काम आया। १६ डिब्बे डोलोमाइट पिछले माप में राउरकेला भेजा गया और ५०० टन और भेजा जारहा है। नन्दिनी की खानों से अब तक १,४२,००० टन चूने का पत्थर निकाला जा चुका है।

विस्थापितों को मुआवजे का भुगतान

भारत सरकार ने जनवरी १९५९ में एक विज्ञप्ति में घोषणा की थी कि जिस विस्थापित की संपत्ति पश्चिम पाकिस्तान में छूट गई है और जिसे मुआवजा देने की लिए हिसाब दे दिया गया है, वह उस हिसाब की रकम से हिसाब देने के ६ महीने के अन्दर या १५ जुलाई तक (जो भी तारीख बाद में पड़े) मुआवजा निधि से संपत्ति खरीद ले, अन्यथा सरकार उसे अपनी इच्छा से मुआवजा निधि की संपत्ति अलाट कर देगी।

उस विज्ञप्ति को घोषित किए ६ महीने होने वाले हैं, इसलिए अब भारत सरकार ने अपनी घोषणा को कार्यान्वित करने का निर्णय कर लिया है।

मकान बनाने के लिए केन्द्रीय सहायता

केंद्रीय सरकार १९५९–६० में मकान बनाने की विभिन्न योजनाओं को पूरा करने के लिए राज्यों को (केंद्र-शासित प्रदेशों को छोड़कर) पिछले साल से ५ करोड़ २० लाख रुपये अधिक देगी। इस वर्ष इस काम के लिए १७ करोड़ ४० लाख रुपया दिया जाएगा और १९५८–५९ में १२ करोड़ २२ लाख रुपया दिया गया था।

राज्य-सहायता से मजदूरों के लिए मकान बनाने की योजना के लिए केंद्रीय सरकार ५ करोड़ ३५ लाख रुपये देगी। पिछले साल इसके लिए ४ करोड़ २३ लाख रु० दिया गया था। इसी प्रकार कम आय वालों के लिए मकान बनाने की योजना को केंद्र से ६ करोड़ १ लाख रुपये मिला था। पिछले साल १९५८–५९ में यह रकम ५ करोड़ ८१ लाख रुपये थी।

कृषि-उपज बढ़ाने के लिए सहकारिता को अपनाइए

डॉक्टर काटजू का इन्दौर में अधिकारियों को उद्‌बोधन

मध्यप्रदेश के मुख्य मंत्री डॉक्टर कैलाशनाथ काटजू ने इंदौर में,. इंदौर संभाग के जिलाध्यक्षों, क्षेत्रीय अधिकारीगण तथा खंड-विकास अधिकारियों की एक बैठक में कहा कि "नवीन भारत में कृषि की तरक्की, ऊँचा जीवन-स्तर तथा ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था की सुस्थिरता की आधारशिला सहकारी प्रयास होने चाहिए। विकास-कार्यों के कर्त्ता-धर्ता अधिकारी को ग्रामीण के पास जाना चाहिए, उसे यह आशा नहीं करनी चाहिए कि ग्रांमीण उनके पास आएं। उन्हें ग्रामीण को आश्वस्त करना है कि कृषि-तरक्की के लिए किए जानेवाले सहकारी प्रयासों से अंततः फायदा ही होगा। ग्रामीण जीवन तथा अर्थ-व्यवस्था का समूचा ढांचा सहकारिता के सिद्धांत पर आधारित होगा।" इस अवसर पर समाज कल्याण मंत्री श्री गणेशराम अनन्त तथा उप-कृषि मंत्री श्री श्यामसुन्दर नारायण मुशरान भी उपस्थित थे। डॉक्टर काटजू ने इस बात पर जोर दिया कि किसानों को ऋण इत्यादि की अधिकाधिक सहायता दी जानी चाहिए। उन्होंने अधिकारियों को सलाह दी कि ग्रामीण इलाकों में हाट-व्यवस्था का संगठन होना चाहिए, शिक्षित व्यक्तियों को गांवों में बसने के लिए सुविधाएं दी जानी चाहिए। मुकदमेबाजी को निरुत्साहित करना चाहिए तथा मध-निषेध के सिद्धांतों का काफी प्रचार एवं प्रसार करना चाहिए। अन्त में मुख्य मंत्री जी ने किसानों के लिए अवकाश के समय कामकाज की व्यवस्था करने तथा सेवा-समितियों एवं उपभोक्ता-भाण्डारों की स्थापना की आवश्यकता प्रतिपादित की।

किसानों को कृषि-सुविधाएँ

सीधी जिले की कृषि गतिविधियों में १९५८-५९ वर्ष में निरन्तर प्रगति हुई। यहां प्राप्त एक प्रतिवेदन के अनुसार विविध योजनाओं के अन्तर्गत कुल ४,६३,४९४ रुपये के ऋण किसानों को खरीफ फसल के सुधरे हुये बीज, बैल और खेतों की मेड़ें बनाने के लिए दिये गये। इसके अतिरिक्त भूमि-सुधार-योजनाओं के अन्तर्गत खेतों की मेड़ें बनाने के लिए किसानों को १२,३६० रुपये के तकावी-ऋण दिये गये।

लघु सिंचाई-योजनाओं के अन्तर्गत कुएं, खोदने के लिए ४,००० रुपये दिये गये। रहटों तथा सिंचाई के पम्प खरीदने के लिए क्रमशः १,००० रुपये तथा १६,४०० रुपये दिये गये।

किसानों को खाद्य-उत्पादन में अभिवृद्धि एवं प्रोत्साहित करने के लिए लगभग २४,००० मन रबी फसल के बीज, ४१५ मन आलू के बीज तथा १४७ मन रासायनिक उर्वरक वितरित किये गये। इनके अतिरिक्त बागवानी के विकास के लिए २,००० रुपये व्यय किये गये और ट्रेक्टर तथा बैल खरीदने के लिए क्रमशः ३२,८०० रुपये तथा २५,९६५ रुपये दिये गये।

लगभग १६० एकड़ भूमि पर समतल बांध बांधे गये तथा २,३९० एकड़ भूमि में समतल भूमि की जुताई की गई। कुल १,०२१ एकड़ भूमि पर जापानी प्रणाली से खेती की गई तथा २,५८० एकड़ भूमि पर उन्नत कृषि प्रणाली से खेती की गई।

राजा नरेशचन्द्रसिंह द्वारा शाला-भवन का उद्‌घाटन

आदिम जाति कल्याण मंत्री राजा नरेशचन्द्रसिंह ने रायगढ़ से २५ मील दूर बंजारी में एक प्राथमिक शाला भवन की आधार-शिला रखते हुए कहा कि आज के बच्चे हमारे गौरव एवं भविष्य की आशाएँ हैं। अतः हमें उनके व्यक्तित्व के विकास के लिए सभी आवश्यक कदम उठाने चाहिए।" उन्होंने कहा कि यदि देश को आगे प्रगति करनी है, तो सर्व-साधारण शिक्षा विशेषतः प्राथमिक शिक्षा की ओर ध्यान देना चाहिए। इस महान् कार्य में अभिभावकों शिक्षकों, शिक्षाविदों तथा उदारमना व्यक्तियों के सहयोग की आवश्यकता पड़ेगी।

प्राथमिक शाला भवन १०,५०० रुपये की लांगत से बनाया जा रहा है, जिसमें जनता ने ५,५०० रुपये नकद और श्रमदान के रूप में दिये हैं। शेष राशि बरमकेला सामुदायिक विकास-खंड द्वारा दी जायेगी।

राजा नरेशचन्द्रसिंह ने खरासिया में एक अन्य शाला भवन का भी शिलान्यास किया।

यह शाला-भवन १४,००० रुपये की लागत से बनाया जा रहा है, जिसमें से खरासिया निवासी श्री कांतिलाल शाह ने २,१०० रुपये देने का वचन दिया है। स्थानीय नगरपालिका ६,००० रुपये देगी तथा शेष ६,००० शासन अनुदानस्वरूप देगा।

मध्यप्रदेश में भूमिहीन श्रमिकों का पुनर्वास

द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत मध्य-प्रदेश में भूमिहीन श्रमिकों को बसाने की योजना पूर्व नियोजन के अनुसार चल रही है। इसके अन्तर्गत १,९०० परिवारों के बसाये जाने का प्रावधान है। भूमिहीन श्रमिकों के १२४ परिवार १९५८-५९ वर्ष में राज्य की तीन इकाइयों, अर्थात् महाकोशल, मध्यभारत तथा भोपाल-क्षेत्र में बसा दिये गये हैं।

महाकोशल-क्षेत्र में १०० एकड़ के प्रत्येक क्षेत्र के १४० खण्डों में कुल ७०० परिवारों को बसाने का लक्ष्य निश्चित किया गया है। शासकीय भूमि, जिसे एक जोड़ी बैलों से जोता जा सकेगा, एक परिवार को दी जायगी। यह भूमि स्थूल रूप से १० एकड़ धान क्षेत्र में, १५ एकड गेहूं, कपास और ज्वार के क्षेत्र में तथा २० एकड़ निम्न कोटि के भूमि-क्षेत्र में रहेगी। भूमि-प्राप्ति-कर्ता को बैल, कृषि-औजार तथा मकानों के निर्माण के लिए ऋण दिये जायंगे। यह योजना रायगढ़, सरगुजा, बालाघाट, दुर्ग, सागर, खण्डवा एवं बस्तर इन सात जिलों में क्रियान्वित की गई है।

मध्यभारत-क्षेत्र में ५०० परिवारों को बसाने की योजना है, जो २० से २५ परिवारों की संख्या में प्रतिवर्ष के हिसाब से द्वितीय योजना-काल में बसाये जायंगे। अभी तक १९,१६५ बीघा भूमि १,०३६ व्यवितयों को वितरित की जा चुकी है। १९५८-५९ वर्ष में २,१९,१५० रुपये व्यय किये जा चुके हैं तथा ५० परिवार शिवपुरी और देवास में बसाये जा चुके हैं। २५ भूमिहीन श्रमिकों की ३ बस्तियाँ गुना जिले बसाई जा रही हैं।

भोपाल-क्षेत्र में १०० परिवारों को ८ इकाइयों में बाँट कर ७६० भूमिहीन किसान-परिवार बसाने की योजना है। उन्हें ऋण तथा सहायता भी दी जायंगी। १९५८-५९ वर्ष में रायसेन जिले में २० परिवार बसाने के लिए १,०१,१४५ रुपये व्यय किये गये।

स्थानीय समाचार

राजकीय कला परिषद् की बैठक

शिक्षा मंत्री डॉक्टर शर्मा ग्वालियर में

मध्यप्रदेश कला परिषद् की सामान्य समिति की वार्षिक बैठक १२ जुलाई को राज्य शासन के शिक्षा एवं विधि मंत्री डॉ० शंकरदयाल शर्मा की अध्यक्षता में हुई। उक्त बैठक में कला परिषद् का वार्षिक विवरण एवं १९५८-५९ का आय-व्यय लेखा सर्व-सम्मति से मान्य किया गया। कला परिषद् को प्राप्त होनेवाले वार्षिक अनुदान में वृद्धि करने पर भी विचार-विमर्श किया गया। परिषद् ने १९५९-६० वर्ष के कार्यक्रम के अंतर्गत कालिदास प्रदर्शनी, कालिदास नाट्य-समारोह, अखिल भारतीय चित्रकला प्रदर्शनी, म० प्र० चित्रकला प्रदर्शनी, म० प्र० नाट्य समारोह, ध्रुपद-समारोह, संगीत छात्रवृत्तियाँ, कवि-सम्मेलन एवं मुशायरे तथा राजधानी में, स्वर्गीय मौलाना आजाद कला वीथिका एवं अन्य प्रमुख कार्यक्रम मान्य किए। उक्त बैठक में मध्यप्रदेश शासन ने परिषद् पर अपनी ओर से नियोजन में राज्य के शिक्षामंत्री (अध्यक्ष) तथा लोक सभा सदस्या श्रीमन्त विजयाराजे सिंधिया का नियोजन किया तथा आप सर्व-सम्मति से परिषद् की उपाध्यक्षा निर्वाचित की गई। अन्य नियोजनों में श्रीमती एन. पद्मनाभन, इंदौर, श्रीमती विशालाक्षी जोहरी, भोपाल, श्री आर. के. जोशी रीवा हैं। राज्य के शिक्षा सचिव उक्त परिषद् के सचिव तथा उप-शिक्षासंचालक (ग्वालियर वृत्त) कोषाध्यक्ष नियोजित किए गए। परिषद् की कार्यकारिणी के लिए सर्व श्री प्रेमचंद काश्यप, बाबूलाल मालू, एवं प्रा० गुरुप्रसाद टण्डन सदस्य निर्वाचित किए गए। परिषद् ने स्थायी रूप से एक प्रकाशन समिति का नियोजन विधायक श्री गौतम शर्मा के संयोजकत्व में किया।

सोल्जर बोर्ड का प्रगति-कार्य

ग्वालियर स्थित पूर्व सैनिक, नाविकों एवं वायुसेना के पूर्व सैनिकों के बोर्ड के ३१ मार्च ५९ तक की अवधि के वार्षिक प्रतिवेदन में बताया गया है कि ३९ सेवा, परिवार एवं असमर्थता-पेन्शन प्रकरण निबटाए गए। ७९ निवृत्त वेतन प्रकरण अभी विचाराधीन हैं। निवृत्त वेतन संबंधी ५ प्रकरण संबंधित क्षेत्रों में शासकीय कोषों की ओर भेजे गए। सेवानिवृत्त ७ परिवारों को बाल-छात्रवृत्ति दिलाने की व्यवस्था की गई। शिक्षा संबंधी आर्थिक सहायता व्यवस्था के ८९ प्रकरण स्वीकृत किए गए। ११ पूर्व सैनिकों को आजीविका व्यवस्था के लिए विभिन्न उद्योग प्रारंभ करने के लिए लगभग ५१०० रुपये की ऋण-राशियाँ वितरित की गईं। ऋण-संबंधी १४ प्रकरण अभी मंडल के विचाराधीन हैं। मध्यभारत सैन्य कल्याण निधि से, प्राप्त १,२१० आवेदन-पत्रों में से, ६६७ आवेदकों के लिए एक वर्ष में ४६,७१० रुपये की धनराशि स्वीकृत की गई। पूर्व सैनिकों की विधवा पत्नियों के जीविकोपार्जन हेतु १३ प्रकरण निबटाए गए तथा उन्हें पूर्ण सहायता प्रदान की गई। क्षय से पीड़ित ४ पूर्व सैनिकों को उपचार के लिए चिकित्सालय में प्रवेश दिलाया गया। आलोच्य अवधि में ११२ पूर्व सैनिकों को काम दिलाया गया।

पूर्व सैनिकों को खेती के लिए भू-सुलभ करने की दिशा में मुरैना जिले की बागचीनी स्थित सैनिक कृषि सहकारी संस्था (मर्यादित) को ३४० बीघा समतल की गई भूमि इस वर्ष सुलभ की गई। उक्त समिति को अबतक ५०० बीघा क्षेत्र सुलभ किया गया है। इस संबंध में पूर्व सैनिकों से ८९ आवेदन-पत्र मंडल द्वारा प्राप्त हुए हैं। भू-संबंधी झगड़ों के २१ प्रकरण भी निबटाए गए।

आलोच्य अवधि में संबंधित पूर्व सैनिकों के मध्य उनके साहसिक कार्यों के लिए प्रदान किए गए १,६३७ पदक वितरित किए गए।

ग्वालियर, शिवपुरी, मुरैना तथा भिण्ड जिलों में उक्त मंडल के तत्वावधान में ८ सहकारी समितियाँ कार्यरत हैं।

ध्वज दिवस के उपलक्ष्य में उक्त संभाग में पूर्व सैनिक-परिवारों की सहायता के उद्द्श्य से १५,२५० रुपये की धनराशि एकत्र की गई।

पूर्व सैनिकों द्वारा दस्यु-उन्मूलन में यथोचित योगदान दिया गया। भिण्ड, मुरैना तथा ग्वालियर जिलों में ग्राम-रक्षा समितियों की स्थापना में पूर्व सैनिक परिवारों द्वारा प्रशंसनीय सहयोग दिया गया।

५०० पूर्व सैनिकों के ज्ञानवर्धन के लिए ३,००,००० रुपये की व्यय-राशि के प्रस्ताव भी उक्त मंडल द्वारा संबंधित अधिकारियों की ओर पुस्तकालयों की स्थापना के लिए अग्रेषित किए गए हैं।

वन-महोत्सव

ग्वालियर में संपूर्ण मध्यप्रदेश की भांति वन-महोत्सव आयोजित किया जा रहा है। वन विभाग द्वारा बृहत्तर ग्वालियर में उक्त महोत्सव के सिलसिले में छोटे-छोटे अनेक पौधे वितरित किए जा रहे हैं।

ग्वालियर के जिलाध्यक्ष ने वन-महोत्सव के उपलक्ष्य में १५ जुलाई को ग्वालियर नगर स्थित औद्योगिक संस्थान में वृक्षारोपण किया।

राष्ट्रीय महत्त्व के आयोजन वन-महोत्सव को ग्वालियर संभाग क्षेत्र में अधिकाधिक सफल बनाने के उद्देश्य से टेकनपुर तथा भिण्ड के उद्यानों में जनता को न्यूनतम मूल्य पर फल-फूल एवं छायादार वृक्ष सुलभ किए जाने की व्यवस्था की गई है। विभिन्न शासकीय तथा सामाजिक संस्थाओं से उक्त कार्यक्रम को अधिकाधिक सफल बनाने का अनुरोध किया गया है। वन विभाग द्वारा उक्त क्षेत्र में जनसहयोग से ५०,००० वृक्ष लगाने के कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई है। समस्त शासकीय भवनों के समीपवर्ती क्षेत्र में प्रतिवर्ष ५०० वृक्ष लगाकर दस वर्षों में ५००० वृक्ष लगाए जाने की योजना को कार्य रूप देना प्रारंभ कर दिया गया है। शासकीय कच्चे मार्गों पर दस वर्षों में ३२,५०० वृक्ष लगाए जाएँगे। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवासियों के लिए छायादार आश्रय-स्थल बनाने के लिए १२,५०० वृक्ष लगाना निश्चित किया गया है।

काम-दिलाऊ कार्यालय का प्रगति-विवरण

ग्वालियर स्थित काम दिलाऊ कार्यालय के अधिकारी ने जून मास के प्रतिवेदन में सूचित किया है कि उक्त कार्यालय द्वारा काम दिलाने के लिए ४३७ आवेदन-पत्रों का पंजीयन किया गया। आलोच्य अवधि में ५० पंजीकृत आवेदकों को उनकी योग्यतानुसार विभिन्न संस्थानों में काम दिलाया गया जबकि गत मास में उक्त संख्या ४२ थी। उक्त काम दिलाऊ कार्यालय (नियुक्त विनिमय) की सेवाओं का लाभ ५४ रिक्त स्थानों के लिए २० शासकीय एवं अशासकीय संस्थानों द्वारा उठाया गया। उक्त मास में रिक्त स्थानों के विरुद्ध २२० आवेदन-पत्र पंजीकृत किए गए।

नाप-तौल की मीटरिक प्रणाली

ग्वालियर में

नाप-तौल की मीटरिक प्रणाली के प्रचार के लिए गत वर्ष जुलाई में ग्वालियर में गठित १३ सदस्यीय जिला प्रचार समिति ने नाप-तौल की नई प्रणाली को लोकप्रिय बनाने में सराहनीय कार्य किया है । एक वर्ष में समिति की अनेक बार बैठकें हुईं । मंडियों, व्यापार-संगठनों तथा अन्य अधिकारियों के प्रतिनिधियों के लिए भी ३ बैठकें हुईं ।

इसके सिवाय, गत वर्ष के सितम्बर महीने में जिले में प्रचार सप्ताह-मनाया गया तथा ९३ चल-चित्र-प्रदर्शन भी किए गए । चल-चित्र-प्रदर्शनों के बीच नाप-तौल की मीटरिक प्रणाली के सम्बन्ध में भाषण भी किए गए ।

नाप-तौल की नई प्रणाली से संबंधित पोस्टर तथा परिवर्तन-तालिकाएं, नगर के महत्त्वपूर्ण स्थानों तथा ग्राम-बाजारों एवं साप्ताहिक हाटों में लगाई गई । मंडी-समितियों, व्यापारिक मंडलों तथा अन्य सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों के जरिये फोल्डरों तथा परिवर्तन-तालिकाओं के विस्तृत वितरण की व्यवस्था भी की गई । अनेक सिनेमा-गृहों में नाप-तौल की नई प्रणाली से संबंधित ९ सिनेमा-स्लाइड भी बताए गए ।

पिछले ग्वालियर मेला और प्रदर्शनी में, सूचना और प्रकाशन विभाग के स्टॉल में नाप-तौल के प्रदर्शन-हेतु एक विशेष कक्ष निर्धारित किया गया । इस कक्ष में नक्शे, चार्ट और तख्ते तथा साथ ही प्रामाणिक नाप-तौल तथा पुराने प्रचलित नाप-तौल रखे गये थे । इस अवसर पर फोल्डर और चार्ट बांटे गये और ११ चल-चित्र-प्रदर्शन आयोजित किये गये थे ।

इस वर्ष अल्प बचत पक्ष समारोह के समय ग्वालियर में ७ चल-चित्र-प्रदर्शन आयोजित किये गये, जिनमें नये नाप-तौल संबंधी चलचित्र प्रदर्शित किये गये ।

गुना में

नाप-तौल की मीट्रिक प्रणाली को लोकप्रिय बनाने के लिए गुना जिले के जिलाध्यक्ष द्वारा एक पंच-सदस्यीय जिला प्रकाशन परामर्श-दात्री समिति का गठन किया गया है। दिनांक २५ जून को उक्त समिति की बैठक में मीट्रिक बांटों को लोकप्रिय बनाने के संबंध में विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श कर यह निश्चय किया गया कि पंचायतों, नगरपालिकाओं, मंडी समितियों और अन्य संस्थाओं का सहयोग लेकर स्थान-स्थान पर सभाएं आयोजित की जायं तथा प्रमुख सार्वजनिक स्थानों पर भित्तिपत्र आदि प्रदर्शित किए जावें।

सतना में

इस मास नाप और तौल की मीटरिक पद्धति को प्रचलित करने के संबंध में जिलाध्यक्ष के कार्यालय, सतना में एक सभा आयोजित की गई। संचालक, नाप और तौल, जिलाध्यक्ष तथा अन्य अधिकारीगण इसमें उपस्थित थे ।

संचालक ने इस नई नाप-तौल की पद्धति के लाभों को संक्षेप में समझाते हुए कहा कि १ अक्टूबर, १९५८ से यह पद्धति जबलपुर, इंदौर, सिहोर तथा ग्वालियर जिलों में आरम्भ की जा चुकी है। आगे उन्होंने सूचित किया कि १ अक्टूबर, १९५९ से इस पद्धति को सतना, रायपुर तथा बिलासपुर जिलों में भी प्रचलित कर दी जाने की संभावना है।

इसके पूर्व कलेक्टर ने बतलाया कि मीटरिक पद्धति को सतना जिले में लोकप्रिय बनाने के लिए एक जिला प्रचार परामर्श समिति गठित की गई है। सभा में यह निर्णय किया गया कि नये वजन खंड, सूचना, केन्द्रों, शिक्षा-संस्थाओं और नगरपालिकाओं तथा जिले की विभिन्न प्रदर्शिनियों तया मेलों में प्रदर्शित किये जायं। जिलाध्यक्ष ने यह भी कहा कि इस समिति ने सतना शहर में सितंबर, में मीटरिक प्रचार सप्ताह मनाने का निश्चय किया है।

रायपुर जिले में

नाप तथा तौल की मीटरिक प्रणाली का प्रचार करने तथा उसे लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से रायपुर में हाल ही में एक सात-सदस्यीय जिला नाप-तौल-समिति का गठन किया गया है, जिसके संयोजक प्रादेशिक प्रचार अधिकारी हैं। एक वरिष्ठ उप-जिलाध्यक्ष और भारत सरकार के क्षेत्र प्रकाशन अधिकारी के अतिरिक्त जिले के समस्त उप-संभागीय अधिकारी इस समिति के सदस्य हैं।

इस समिति की प्रथम बैठक प्रादेशिक जन-संपर्क अधिकारी, रायपुर के कार्यालय में जुलाई के प्रथम सप्ताह में हुई । इस बैठक में प्रचार की आरंभिक रूपरेखा पर चर्चा की गई।

यह सुझाव दिया गया कि नाप-तौल की नवीन प्रणाली का प्रचार, समस्त माध्यमों—जैसे भित्ति-चित्रों, पुस्तिकाओं, चलचित्र-प्रदर्शनों, स्लाइडों और भाषणों द्वारा किया जाय तथा जनता को नवीन प्रणाली के लाभों से अवगत कराया जाय। आगे यह भी निश्चय किया गया कि बांटों के नमूने प्राप्त किये जायं तथा समस्त मंडियों और बाजार-स्थलों में उनका प्रदर्शन किया जायं ।

कुक्कुट-पालन-उद्योग का विकास

राज्यकीय पशु-चिकित्सा विभाग, मध्यप्रदेश में कुक्कुट-पालन के विकास के लिए हर संभव प्रयत्न कर रहा है।

राज्य में कुक्कुट-उद्योग के विकास के लिए सरकार ने १०७ स्थानों में कुक्कुट-पालन फार्म, विस्तार केंद्र, इकाइयां आदि स्थापित की हैं तथा इन स्थानों में उन्नत नस्ल के पक्षी विशेष रूप से व्हाइट लेग हार्न और रोड आइलैण्ड के लाल नस्ल के पक्षी रखे गये हैं।

सुअर के पालन का विकास करने और वन्य पशुओं को पकड़ने तथा उन्हें पालतू बनाने के लिए भी दो नई योजनाएं इस वर्ष विभाग द्वारा प्रारंभ की जायंगी।

इसके अतिरिक्त इस वर्ष ४ कुक्कुट विस्तार-केंद्रों को भी खोला जा रहा है। भारतीय कृषि गवेषणा परिषद् की सहायता से इस वर्ष राज्य में कम खर्च में मुर्गियों की खुराक की व्यवस्था संबंधी तथा दूसरी कम व्यय में मुर्गी-पालन संबंधी दो नवीन गवेषणा योजनाएं कार्यान्वित की जावेंगी।

चलचित्रों द्वारा योजना का प्रचार

झाबुआ जिले में वर्ष भर विभिन्न चल-चित्रों, लेखों, राष्ट्रीय नाटकों, गीतों और प्रदर्शनियों के माध्यम से योजना का प्रचार किया गया। आलोच्य तिमाही में २७ चलचित्र-प्रदर्शन आयोजित किये गये, जिनमें कुल १७५ डाक्यूमेंट्री चित्र दिखाये गये, जिन्हें १२,००० से अधिक ग्रामवासियों ने देखा।

तीन-भाई

(पृष्ठ १४ का शेष)

(खाना खतम करके मुंह-हाथ धोती है।) बेटा, तुम लोगों ने मेरी बड़ी मदद की है। भगवान् तुम्हें सदा सुखी रखें।

(डलिया उठाकर चलने लगती है।)

राकेश—लाओ डलिया मैं ले चलता हूं, तुम थक जाओगी।

बुढ़िया—नहीं बेटा, अब तो मुझमें बड़ी ताकत आ गई है। तू जरा भी चिंता न कर, मैं बड़े आराम से ले जाऊंगी।

(चलने लगती है—फिर रुककर)

तुम लोगों ने मेरी इतनी सेवा की है और मेरे पास तुम्हें देने को कुछ भी नहीं है, लेकिन फिर भी (अपने सिर से कुछ बालों को तोड़ नरेश को देते हुए) ये लो बेटा, जब तक ये बाल तुम्हारे पास रहेंगे, तुम्हें किसी बात की कमी न रहेगी। (लड़का बालों को देखता है, खुश होता है।) (अपने बाएं हाथ की उंगली का नाखून तोड़कर दूसरे लड़के को देते हुए) ये लो बेटा, जैसे तुमने मेरा हाथ-मुंह धुलाकर मुझे दूसरों के सामने खड़ा होने लायक बनाया, परमात्मा तुम्हें अक्षय सौंदर्य दे (वह भी नाखून को देखता है) और बेटा (अपने हाथ की लकड़ी देती है) तुम यह छड़ी लो, जैसे तुम मुझे सहारा देकर यहां तक लाए, मेरी डलिया उठाकर लाए, भगवान तुम्हारे शरीर में अपार शक्ति दे, जिससे तुम इसी प्रकार सदा दीन दुःखी और कमजोरों की मदद कर सको।

(प्रस्थान)

(एक क्षण को मंच पर अंधकार छा जाता है)

(पुनः प्रकाश)

(दो परियां उड़ती हुई आपस में बात करती हुई आ रही हैं।)

अंजना—रश्मि, तुम बहुत दयालु हो। लेकिन मैं तो कहूंगी कि तुम जरूरत से ज्यादा दयालु हो, तुम्हें इतना दयालु नहीं होना चाहिये।

रश्मि—क्यों अंजना क्या बात है?

अंजना—मालूम है, ये लोग जिन पर दया करके तुमने उन्हें सब कुछ दिया है, आज कैसे हो गए हैं?

रश्मि—क्यों कैसे हो गए हैं?

अंजना—अपने-अपने गुणों और धन-दौलत के नशे में चूर हो गए हैं। अपने सामने दुनिया में किसी को कुछ नहीं समझते।

रश्मि—लेकिन अंजना यह सब कैसे हो गया?

अंजना—रश्मि! वह भूल गए हैं कि एक दिन वह भी गरीब थे। आज वह संसार के दीन-दुखियों, अपाहिजों से नफरत करते हैं।

रश्मि—(दुःख से आह खींच कर) आह! मैंने यह कभी नहीं सोचा था। यह सब कुछ मैंने उन्हें इसीलिए दिया था ताकि वह दूसरों की सेवा-सहायता और भी अच्छी तरह कर सकें।

अंजना—चलो शायद तुम्हें विश्वास न होता होगा। हम उधर ही चल रहे हैं। तुम स्वयं अपनी आंखों से देख लो चलकर। वह देखो.... ठहरो आओ इधर ही छुपकर देखें। (दोनों एक ओर छुप जाती हैं।

(नरेश का काफी रईसाना पोशाक में प्रवेश। उसके पीछे-पीछे फटे-पुराने कपड़े पहने एक मजदूर का प्रवेश।)

मजदूर—बाबू जी, मेरा बच्चा बीमार है, मेरे पैसे फिर काट लीजियेगा बाबूजी!

नरेश—पैसे, पैसे, पैसे चाहिए थे तो समय पर काम करने क्यों नहीं आया?

मजदूर—रहम कीजिए बाबूजी। आज दे दीजिए मेरा बच्चा बहुत बीमार है। (सामने आकर खड़ा हो जाता है।)

नरेश—(धकेलते हुए) हटो सामने से, खैरात बंट रही है क्या?

मजदूर—दे दीजिए बाबूजी, आप तो बड़े आदमी हैं। आपको इतने पैसों से कोई फर्क न पड़ेगा।

नरेश—बड़ा आदमी—(उसको झटकते हुए) मेरे पास इतने पैसे नहीं कि मैं खैरात बांट सकूं। (तेजी से चला जाता है।)

मजदूर—(उठते हुए) आह! चला गया, निर्दयी कहीं का।

(उठकर धीरे-धीरे चला जाता है।)

(दोनों परियां सामने आती हैं)

अंजना—देख लिया रश्मि (दोनों उड़ना शुरू कर देती हैं) चलो दूसरे का भी हाल देखें चलकर।

रश्मि—अंजना, ये धन-दौलत मैंने इसे इसलिए दी थी कि यह संसार के गरीब और दुःखी मानवों की सेवा कर सके न कि—

अंजना—श् श् वह देखो हरीश आ रहा है।

(दोनों फिर एक ओर को हट जाती हैं। आगे-आगे हरीश का प्रवेश। पीछे-पीछे एक बदसूरत स्त्री का प्रवेश।)

हरीश—मैंने यह दिया कि मैं तुमसे एक भी बात नहीं करना चाहता।

स्त्री—मैं जानती हूँ, आप मुझसे नफरत करते हैं, लेकिन आप मेरे पति हैं, मुझे यों न ठुकराइये।

हरीश—मैं कहता हूं, तुम मेरा पीछा छोड़ दो, मुझे जाने दो। (हाथ छुड़ा लेता है।)

स्त्री—आप सुन्दर हैं, मैं बदसूरत हूँ। आप इसीलिए मुझसे नफरत करते हैं न! लेकिन...

हरीश—नहीं, बाबा नहीं। तुम सुन्दर हो, बहुत सुन्दर हो। बदसूसरत तो मैं हूं। बस— (तेजी से चला जाता है।)

स्त्री—(पीछा करती है) सुनिए, सुनिए (आवाज क्रमशः धीमी होते-होते बन्द हो जाती है।)

(दोनों परियां फिर सामने आती हैं)

अंजना—चलो एक और रह गया है। उसे भी देख लो। देखो और पछताओ कि तुमने यह क्या किया।

(एक दुबले-पतले बीमार बच्चे का प्रवेश)

बच्चा—(कराहते हुए) आह! अभी तो बहुत दूर है। कैसे पहुंचूंगा? (कराहते-कराहते बैठ जाता है। फिर लेट जाता है।)

रश्मि—(उसके पास जाकर) क्यों बेटा क्या बात है?

बालक—(धीरे से आंखें खोलते हुए) आह! मुझे घर जाना है। कैसे जाऊं, चला नही जाता।

रश्मि—(एक ओर को देखते हुए) वह देखो वह आदमी आ रहा है न उससे कहना वह जरूर तुम्हें तुम्हारे घर पहुंचा देगा।

(एक ओर को चली जाती है। दूसरी ओर से राकेश का प्रवेश)

बालक--(किसी के आने की आहट सुनकर उठकर बैठ जाता है।) बाबा-बाबा, मैं बहुत थक गया हूं, मुझे घर पहुंचा दो।

राकेश--(जोर से हंसते हुए) तुम्हें घर पहुंचा दूं? चले जाओ न।

बालक--मैं बीमार हूं, मुझसे चला नहीं जाता।

राकेश--तो मैं क्या करूं?

बालक--मुझे थोड़ी दूर तक पहुंचा दो बाबा, फिर मैं चला जाऊंगा। मुझे बुखार आ गया है।

राकेश--तुम बीमार हो तो मैं भी कोई इतना बड़ा पहलवान तो नहीं जो तुम्हें गोद में उठाकर ले जा सकूं।

(जोर से हंसता है। लड़के की ओर अवहेलना की दृष्टि से देखता हुआ चला जाता है। बालक दयनीय नेत्रों से उसी दिशा में देखता रहता है।)

अंजना--(स्टेज के एक कोने पर जिधर बालक की पीठ है') रश्मि, तुमने दुनियां की धन-दौलत, सुन्दरता, ताक़त देकर उनके अच्छे गुणों को नष्ट कर दिया है।

रश्मि--अंजना, उन्हें अपने कार्यों का दण्ड जरूर मिलेगा।

अंजना--क्या करोगी?

रश्मि--याद है नरेश ने क्या कहा था? कहा था वह बड़ा आदमी नहीं है।

अंजना--हां रश्मि और हरीश ने भी ऐसा ही कुछ कहा था।

रश्मि--हां अंजना! उन सबों ने ठीक कहा--बिलकुल सच कहा।

बालक--(उठते हुए) आह मां!

रश्मि--(बालक के पास आकर) चलो बेटे, मैं तुम्हें थोड़ी दूर तक पहुंचा देती हूं।

(एक क्षण के लिए मंच पर अंधकार छा जाता है)

पुनः--प्रकाश (समय रात ७-८ बजे)
दोनों भाई बैठे हुए हैं।)

हरीश--दादा आज तुमने खाना क्यों नहीं खाया?

नरेश--खाना, ऊँह यह भी कोई खाना है। दाल बनादी, एक तरकारी बना दी--इससे खाना कैसे खाया जा सकता है।

(राकेश का प्रवेश)

राकेश--अरे दादा, दुनिया न जाने दूसरों को क्या समझती है।

नरेश--क्यों क्या हुआ?

(हरीश अपनी जेब में से एक शीशा निकालकर मुंह देखना शुरू कर देता है।)

राकेश--ऊंह! हुआ क्या--आज जब मैं मेले से दंगल देखकर लौट रहा था तो एक बच्चा मिला, कहने लगा, मैं बीमार हूं, मुझे घर पहुंचा दो। अब भला ये बताइये मैं उसे गोदी में लेकर घर तक कैसे पहुंचा सकता था। मैं खुद ही इतना थका हुआ था।

नरेश--हाँ सच है, हमें अपने ही काम क्या कम हैं जो दूसरों के पीछे सिर मारें।

हरीश--(शीशा देखते-देखते अपने आप) मुझे समझ में नहीं आता कि बदसूरत लोगों की दुनिया में जरूरत ही क्या है? (शीशा अपनी जेब में रख लेता है।)

(नौकर का प्रवेश)

रामू--मालिक, बाहर एक बूढ़ा खड़ा है। रात को सोने की जगह माँगता है।

नरेश--भगा दो उसे! न जाने कहाँ से ये सारे चोर-उचक्के यहीं इकट्ठे हो जाते हैं आकर।

नौकर--मालिक वह बहुत बूढ़ा है--उसके पास ओढ़ने को भी कुछ नहीं है।

नरेश--नहीं है तो मैं क्या करूँ? यह सराय है क्या? या उसके बाप का घर है? जाओ भगा दो उसे!

(नौकर चला जाता है। हरीश जो इस बीच में उठकर टहलने लगता है, एक मेज के पास आकर खड़ा हो जाता है और सुन्दर डिब्बी को उठाकर देखने लगता ह।)

हरीश--(खोलकर देखता है। मुंह बनाते हुए) कितनी सुन्दर डिब्बी और उसमें रखा क्या है, ये गंदे-से बाल।

नरेश--क्या है हरीश?

राकेश--(उठकर देखते हुए) अरे दादा यह वही चीजें तो हैं जो आज से ३ वर्ष पहले वह बुढ़िया दे. गई थी।

हरीश--ये सारी चीजें भी उसी बुढ़िया की तरह गंदी हैं।

नरेश--ऊंह फेंको इन सब चीजों को बेकार ही गंदगी इकट्ठो कर रखी है।

(नौकर का प्रवेश')

राकेश--अरे रामू, फेंको इन चीजों को मालूम होता है, तुम कभी अच्छी तरह घर की सफाई नहीं करते। (रामू सहमते-सहमते वह चीजें उठाता है और नरेश की ओर देखता रहता है।)

नरेश--ऐसे क्या देख रहा है। ले जा फेंक दे उन्हें।

रामू--(घबराए हुए प्रवेश) गजब हो मालिक! गजब हो गया।

नरेश--क्यों क्या हो गया? ऐसे चौंख क्यों रहा है?

रामू--मालिक न जाने कैसे खेत में आग लग गई। लपट दरवाजे तक दिखाई दे रही है।

नरेश--(तेजी से खड़े होकर) आग! (बाहर की ओर भागता है)

हरीश--भाग (वह भी भागता है।)

राकेश--(उठने की कोशिश करता है, लेकिन पैर नहीं हिला पाता है) आह! ये क्या हुआ? (फिर उठने की कोशिश करता है, लेकिन गिर पड़ता है। रामू दौड़कर पकड़ता है।)

रामू--क्या हुआ छोटे भइया?

राकेश--हाय रामू!

रामू--मालूम होता है, आपको तो लकवा लग गया। (संभालकर बिठाता है।)

राकेश--हाय!

(आगे-आगे नरेश का प्रवेश। उसके कपड़े काले और फटे हुए हैं। पीछे-पीछे हरीश का प्रवेश, जिसका सारा मुंह काला और गंदा हो रहा है।)

नरेश--(धम्म से गिर पड़ता है) आह! सर्वनाश हो गया है।

[पर्दा गिरता है।]

दस्यु-अभियान की सफलता

लाखन-दल से मुठभेड़

मुरैना जिले के अंबाह पुलिस थाने के अंतर्गत रिठौरा ग्राम के समीपवर्ती चंबल के बीहड़ क्षेत्र में राज्य पुलिस की कुख्यात दस्यु लाखनसिंह के २५-३० सदस्यीय गिरोह से १२ जुलाई को मुठभेड़ हुई। उक्त मुठभेड़ में राज्य पुलिस उक्त दल के एक कुख्यात सदस्य को मारने तथा उससे ३०३ की एक बंदूक तथा ८० कारतूस बरामद करने में सफल हुई। उक्त दस्यु की अभी संपूर्ण पहचान शेष है। एक अन्य दस्यु के मारे जाने की भी निश्चित संभावना है। किन्तु, अंधकार के कारण उसका शव प्राप्त नहीं किया जा सका। एक अन्य दस्यु के घायल होने के समाचार प्राप्त हुए हैं।

राज्य पुलिस के सशस्त्र दल की पहली पल्टन के जवान श्री लक्ष्मीनारायण ने उक्त मुठभेड़ में विशेष साहस एवं वीरता का परिचय दिया। आपने बड़ी चतुराई से एक साथ तीन दस्युओं को गोलियों का शिकार बनाने का साहस किया, किन्तु दुर्भाग्यवश उक्त मुठभेड़ में श्री लक्ष्मीनारायण वीरगति को प्राप्त हुए।

आरक्षी दल द्वारा उक्त लाखन-दल का ४ मील तक निरंतर पीछा किया गया। किन्तु, बीहड़-क्षेत्र में आंधी, वर्षा तथा अंधकार के कारण दस्यु दल का पीछा न हो सका। उक्त दस्युदल मुठभेड़ क्षेत्र में अपनी आवश्यक सामग्री, जिनमें बरसाती, जल-थेले, बर्तन, जूते, दवाएं, टार्च आदि छोड़कर भाग गया।

डाकू गजराजसिंह गिरफ्तार

टीकमगढ़ की पुलिस सपोर के कुख्यात एवं फरार डाकू गजराजसिंह ठाकुर को गिरफ्तार करने में सफल हुई है। कुख्यात डाकू पूरनसिंह तथा चारली राजा का सहयोगी यह डाकू एक अलग दल निर्माण करने का प्रयास कर रहा था। उसके पास से बरामद की गई सामग्री में दो दुनाली वैरल बी एल तथा एक सिंगल मजल बन्दूक सम्मिलित है।

अभियुक्त पानसिंह द्वारा समर्पण

मुरैना जिले के पोरसा पुलिस क्षेत्र के अंतर्गत हुए अपहरण के प्रकरण के कथित अभियुक्त पानसिंह ने जो उक्त क्षेत्र के रिठौली का पुरा ग्राम का निवासी था, १५ जुलाई को मुरैना जिले के आरक्षी अधीक्षक के समक्ष आत्म-समर्पण कर दियां।

१८ कुख्यात डाकुओं को पकड़ने के लिए पुरस्कार

७,७०० रुपये की राशि स्वीकृत

मध्यप्रदेश के पुलिस महानिरीक्षक ने कुल ७,७०० रुपये के विभिन्न राशियों के पुरस्कार ऐसी सूचना देने के लिए स्वीकृत किये हैं, जिससे राज्य में उपद्रव करने वाले कुख्यात १८ डाकू गिरफ्तार किये जा सकें।

डाकुओं के नामों, उनके दलों तथा उनकी गिरफ्तारी के निमित्त जानकारी देने के लिए घोषित पुरस्कार की राशि का विस्तृत विवरण इस प्रकार है :—

नाम तथा दल	पुरस्कार की राशि
रूपा का दल	रुपये
१. सुदीमा वल्द वलवंत कोरी, निवास-स्थान पारा, थाना अटेर, भिंड जिला	५००
२. हुकुमसिंह ठाकुर, निवास-स्थान अकलोनी, थाना गोरमी, भिंड जिला	५००
लाखनसिंह का दल	
३. दफेदारसिंह वल्द उत्तमसिंह ठाकुर, निवास-स्थान नगरा, नागरा थाना, मुरैना जिला	५००
४. रामसिंह कच्छी, निवास-स्थान तालकापुर, एंडोरी थाना, भिंड जिला	५००
५. कल्लू कडेरा वल्द गांगोले, निवास-स्थान विलाव, उमरी थाना, भिंड जिला	५००
गब्बर का दल	
६. भोगीराम वल्द सीताराम चमार, निवास-स्थान जाटपुरा, गोहद थाना, भिंड जिला	५००
कल्ला का दल	
७. तंतिया मुसलमान, निवास-स्थान लोघाकी पाली, इंदौर थाना, भिन्ड जिला	५००
८ जिमिपाल वल्द ओच्छालोधा, निवास-स्थान रायपुरा, भिन्ड थाना	५००
लच्छी का दल	
९. प्रभु वल्द पन्ना कटेरा, निवास-स्थान खानिक, पुलिस स्टेशन पवाड, भिंड जिला	५००
१०. लक्ष्मीनारायण वल्द कन्होई, ब्राह्मण, निवास-स्थान, डिडोना पवाई, पुलिस थाना, भिन्ड जिला	५००
बारेलाल का दल	
११. मुरली वल्द राजहंस गूजर, निवास-स्थान उदयपुरा, रिठोरा पुलिस थाना, मुरैना जिला	५००
१२. रूपा वल्द सेमलिया, काछी, निवास-स्थान गांधी चांदपुर गांव, डिमनी पुलिस थाना, मुरैना जिला	२००
१३. गदीपाल वल्द गंगाराम गूजर, निवास-स्थान प्रतापपुरा, ग्राम रिथोर पुलिस थाना, मुरैना जिला	२००
गूजर का दल	
१४. फूलसिंह वल्द अर्जुनसिंह ठाकुर, निवास-स्थान सुकद, गोर्मी पुलिस स्थान, भिंड जिला	३००
१५. वुलाकी वल्द मूंगाराम गूजर, निवास-स्थान उदयपुरा, ग्राम रिथोरा पुलिस थाना, मुरैना जिला	३००
बहादुर का दल	
१६. रतना वल्द सावलियां काछी, निवास-स्थान बबुआ, मेहगांव पुलिस थाना, भिंड जिला	५००
१७. नेकसाई वल्द बलवन्तिया तेजसिंह, निवास-स्थान पिपरिली, मेहगांव पुलिस थाना, भिंड जिलां	५००
होत्मा काछी का दल	
१८. मानसिंह वल्द रम्मू काछी, निवास-स्थान माताबसई, पुलिस थाना और मुरैना जिला	५००

पुलिस महानिरीक्षक को यह अधिकार है कि पुरस्कार राशि किसे और किस प्रमाण में दी जायं।

दस्यु रामसिंह और हवलदारसिंह गोलियों के शिकार

गत १० जुलाई की रात्रि को रामसिंह काछी तथा बाबू बघेल दस्युओं द्वारा मुरैना पुलिस क्षेत्र के अन्तर्गत बिचौली का पुरा नामक ग्राम में श्रीमती सावित्री नामक एक महिला की हत्या कर दी गई। उक्त सूचना प्राप्त होते ही मुरैना के उप-आरक्षी अधीक्षक के नेतृत्व में पुलिस जवानों के दस्ते ने समय पर घटनास्थल पर पहुंचकर उक्त ग्राम में दस्यु-दल को घेर लिया। दोनों दलों में देर तक हुई मुठभेड़ में राज्य पुलिस एंडोरी क्षेत्र (जिला भिण्ड) के कुख्यात दस्यु रामसिंह काछी को मार गिराने में सफल हुई। राज्य पुलिस द्वारा ३०३ की एक बंदूक तथा ८२ कारतूस भी बरामद किए गए हैं। बाबू बघेल अंधकार का लाभ उठाकर भागने में सफल हुआ।

उक्त मुठभेड़ में मृत दस्यु रामसिंह कुख्यात दस्यु लाखनसिंह, बारेलाल तथा होतमा आदि के दलों का सक्रिय सदस्य रहा है। तत्पश्चात् उक्त दस्यु ओछा काछी के दल में सम्मिलित हो गया था। राज्य पुलिस को उक्त दस्यु की मुरैना जिले के अपहरण, हत्याओं तथा डकैतियों के अनेक प्रकरणों में आवश्यकता थी।

१६ जुलाई को प्रातः ग्वालियर संभाग के मुरैना जिले के नगरा पुलिस क्षेत्र के अंतर्गत बड़ेरी ग्राम में कुख्यात दस्यु लाखनसिंह के भतीजे हवलदारसिंह के धमकी देकर चंदा मांगाने के समाचार प्राप्त होते ही सशस्त्र आरक्षी जवानों का दस्ता तुरन्त ही घटनास्थल पर पहुंच गया। फलस्वरूप हवलदार ने भागने का असफल प्रयत्न किया। राज्य पुलिस उक्त दस्यु का निरंतर पीछा करने पर उसे सीतलदास का पुरा तथा लालपुरा के मध्य घेरने में सफल हुई। उक्त दस्यु को समर्पण की चुनौती दी गई। किन्तु, पुलिस जवान बापूराव पर कुल्हाड़ी से प्रहार करने पर राज्य पुलिस को आत्मरक्षा के लिए गोली चलानी पड़ी। उक्त मुठभेड़ में हवलदारसिंह गोलियों का शिकार हुआ।

राज्य पुलिस को उक्त दस्यु की चोरी, डकैतियों, बलपूर्वक धनसंग्रह संबंधी अनेक प्रकरणों में आवश्यकता थी। उक्त हवलदारसिंह भिण्ड तथा मुरैना जिलों में काफी समय से आतंक जमाए था।

ग्वालियर पाटरीज, ग्वालियर

टेण्डर नोटिस

इस कार्यालय को निम्नलिखित वस्तुओं की सप्लाई तथा विक्रय के ठेके रेट टेंडर द्वारा देना है। जो सज्जन ठेका लेना चाहें अपने-अपने टेंडर्स दिनांक १३ अगस्त, १९५९ को दिन के २ बजे तक इस कार्यालय में डिपॉजिट के चालान सहित भेजने का कष्ट करें। रकम टेंडर मनी डिपॉजिट के चालान सहित भेजने का कष्ट करें। रकम टेंडर मनी डिपाजिट ग्वालियर पॉटरीज, ग्वालियर के पक्ष में शासकीय कोषालय में जमा करनी चाहिये।

बिना डिपॉजिट के टेंडर पर कोई विचार न होगा। कम या अधिक रेट के टेंडर स्वीकार करना या सबको ही अस्वीकार करने का अधिकार बिना किसी कारण बताए जनरल मैनेजर को होगा।

क्रमांक	नाम वस्तु	अनुमानित मासिक आवश्यकता		रकम धरोहर
		रुपये		रुपये
१.	फुट टोकरी बांस की छोटी व बड़ी	१००	प्रतिमास	२५
२.	३०″ × २०″ × १८″ खांचे बांस के	२००	,,	१५०
३.	२४″ × १८″ × १८″ खांचे बांस के	५०	,,	५०
४.	टट्टी बांस की ९′:७′	२५	,,	२५
५.	बक्से बड़े २७″ × १८″ × १६″ × ५:८ सूत ..	४००	,,	६००
६.	बक्से मध्यम १८″ × १५″ × १२″ × १:२ सूत ..	५००	,,	५००
७.	बक्से छोटे १५″ × १२″ × १२″ × १:२ सूत ..	५०	,,	५०
८.	क्रेटस बड़े २५″ × ७″ × ७″ × ५:८ सूत	६००	,,	२००
९.	क्रेटस छोटे १८″ × ७″ × ७″ × ५:८ सूत	२००	,,	२००
१०.	लकड़ी जलाऊ सूखी, मजबूत न घुननेवाली ६ से ८ तक मोटी २॥ लंबी.	१५०	खंडी बारासिक	३००
११.	जला कोयला (सिंडर) कारखाने द्वारा विक्रय	जो भट्टियों से निकले		४००

१. वस्तुओं के नमूने, ठेके के नियम तथा अन्य जानकारी कार्यालय के कार्यके समय में प्राप्त की जा सकती है।

विक्रमादित्य भार्गव,
जनरल मैनेजर,
ग्वालियर पॉटरीज, ग्वालियर.

२९३—३३

कोमल चमड़ीके
बाल निकालनेके लिये..
बादशाही
साबू, पांवडर, लोशन
सर्वोत्तम हैं..
र.नं.५३२

सुवासित, बादशाही बालसफा पाउडर के इस्तेमाल से फालतू बाल भली भाँति बिना किसी कठिनाई के निकल जाते हैं।

आधुनिक ढंग से दुर्गन्ध निकाल कर खुशबू से प्रभावित किये हुए बादशाही पाउडर को इस्तेमाल कर अपनी मुलायम चमड़ी को सुरक्षित रखें।

सी. सी. महाजन,
एण्ड कम्पनी, बम्बई—२

CHAMBAL VALLEY DEVELOPMENT, GANDHI SAGAR DAM, MADHYA PRADESH

Tender Notice

Sealed item rate tender superscribed tender for "Permeability test of masonry of G. S. Dam" will be received by the undersigned upto 4.00 P. M. on 31st August 1959. The tenders will be opened on the same day at 4.30 P. M. in presence of tenderers or their representatives as may be present. Any class of contractors registered in this organisation or P. W. D. of any state or C. P. W. D. or M. E. S. or Indian Railways are eligible to tender.

The approximate quantity of work to be done is 7,000 R. ft. and its approximate cost is Rs. 1,60,000/-.

Period for completion of the work is six months from the date of issue of work order.

Earnest money of Rs. 2,500.00 in the form of National Savings Certificates duly pledged in the name of the Chief Accounts Officer, Chambal Hydel Scheme, Madhya Pradesh or Challan for deposit in cash in treasury (In no case inform of currency notes) should accompany the tender, failing which the tender will not be considered.

Tender forms, together with relevant specifications terms and condition of contract, etc. can be obtained from the office of the undersigned on payment of Rs. 7/- (seven) per set (non refundable) after 25th July, 1959 and on or before 30th August 1959.

The competent authority reserves the right to reject any or all tenders without assigning any reason therefor.

D. N. NAYATE,
Executive Engineer, Division I,
Chambal Hydel Scheme, M. P.

294-33)

खजुराहो

विश्वविख्यात स्थापत्यकला की अनुपम देन

यदि आपने कभी खजुराहो के विख्यात मंदिर नहीं देखे, तो यह
पुस्तक अवश्य देखिये
यदि देखें हैं
तो उनकी स्मृति इस पुस्तक से ताजा रखिये

रायल अठपेजी, आर्ट पेपर पर मुद्रित १०२ प्लेट

अंग्रेजी और हिन्दी में

मंदिरों के इतिहास का मनोरंजक परिचय

नयनाभिराम मुद्रण : आकर्षक जिल्द : मूल्य १० रुपये

प्राप्तिस्थान

व्यवस्थापक:—प्रकाशन शाखा, सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय
जयाजी चौक, ग्वालियर, म० प्र०

तहसील कार्यालय राघौगढ़

मि० नं० १००।५९-२१

हरिया पुत्र गोरेलाल नाई, इमलिया व छोटेराम

विरुद्ध

किशोरा पुत्र गिरधारी, मीना, इमलिया, लावारिश फौत

विज्ञप्ति

सर्व-संबंधित को सूचित किया जाता है कि ग्राम इमलिया आराजी नम्बर ७७-१॥ऽ, ७८-२-ऽ२, ९५-२॥१, ११४-४ऽ४, ११५-॥१, ११६-१०ऽ१, १४८-१२।३, १४९-१-१॥३, १४९-२-४ऽ४, १५०-१-२॥ऽ, १५०-२-१॥३ पर बजाय किशोरा पुत्र गिरधारी मीना, लावारिश फौत के हरिया पुत्र गोरेलाल नाई व छोटेराम पुंत्र कुंजीलाल मीना, ने पक्केकृषक के स्वत्व प्राप्ति का दावा किया है, अतः वारिश जो भी हो या अन्य किसी को कोई आपत्ति हो तो नियत दिनांक १३ अगस्त, १९५९ के पूर्व या को तहसील राघौगढ़ में उपस्थित होकर पेश करो पश्चात् कोई आपत्ति नहीं सुनी जावेगी। फक्त दिनांक १५ जून, १९५९।

बृजबिहारीलाल सक्सेना,
तेहसीलदार,
राघौगढ़ म. प्र.

२९१-(३३)

नोटिस

मिनजानिब:—मेंदाबाई, विधवा पत्नी प्रभूलाल, जाति रघुवंशी, निवासी ग्राम पिपरेसरा, परगना अशोकनगर।

बनाम:—हनमंतसिह पुत्र लालजीराम, जाति रघुवंशी, निवासी ग्राम पिपरेसरा, परगना अशोकनगर, मुख्तार आम जोकि मैंने मुसम्मी हनुमंतसिह को अपना मुख्तारआम मुकर्रर किया था, मगर मुझे अब मुख्तार आम की आवश्यकता नहीं है तथा मुख्तार मजकूर काम भी सन्तोषप्रद नहीं करते हैं। अतः आज से मुख्तार आम मजकूर सब मेरी ओर से कोई काम करने के अधिकारी नहीं रहे। यदि वह कोई काम करेंगे तो बमुकाबले मेरे बातिल व बेअसर होगा। और मुझपर उसकी कोई जिम्मेवारी न होगी। अतः यह विज्ञप्ति सर्व-साधारण के सूचनार्थ तथा मुख्तार-आम हनुमंतसिह के सूचनार्थ पानलार्थ प्रकाशित कराती हूं। नोटिस जाब्ता रजिस्टर्ड भी मुख्तार आम मजकूर दे दिया गया है। तारीख १४ जुलाई, १९५९।

२९२-(३३) दाबाई पिपरेसरा.

कार्यालय तहसील, परगना लहार

प्रकरण क्रमांक २४९।५५ × ३८

सूरतसिंह पुत्र भुजवलसिंह, जाति ठाकुर, निवासी बधावली--प्रार्थी।

बनाम

महिला मेहदवावाली विधवा रनजीत, जाति गडरिया, निवासी बधावली–गैर काबिज मु. १२--प्रतिवादी।

उपरोक्त प्रकरण में वादी सूरतसिंह पुत्र भुजवलसिंह, जाति ठाकुर, निवासी बधावली ने तुम्हारे विरुद्ध जमींदारी समाप्ति विधान की धारा ३८ के अन्तर्गत ग्राम बधावलो की भूमि क्रमांक १३५–१।।।३, १९३–२।।।१, ३५२–४)२ किता ३, रकबा ८।।।१, लगानो १७।।) पर पक्के कृषक के स्वत्व प्राप्त करने हेतु प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया है जिसकी सुनवाई के लिये दि. ७ अगस्त, १९५९ नियत है।

अतएव उक्त दिनांक को ऑफिस टायम पर कार्यालय में स्वयं या अपने कानूनी अभिभाषक द्वारा उपस्थित होकर जवावदेही प्रकट करो। अन्यथा तुम्हारी अनुपस्थिति में एक पक्षीय सुनवाई की जावेगी और बाद में कोई आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

राजेन्द्र प्रकाश सक्सेना,
प्रॉवेशनर, नायब तहसीलदार,
परगना लहार म. प्र.

(२९८—३३)

सफेद दाग

सतत् परिश्रम एवं खोज के बाद सफेद दाग की औषधि का निर्माण किया गया है। हजारों ने इसका अनुभव करके लाभ उठाया है। दवा का मूल्य ६) रुपया विशेष जानकारी के लिए विवरण पत्र मुफ्त मंगाकर देखें। नक्कालों से सावधान रहें।

वैद्य बी. आर. बोरकर,
आयुर्वेद भवन (२५) मु. पो. मंगरूलपीर,
जिला अकोला (विदर्भ)

CHAMBAL VALLEY DEVELOPMENT CHAMBAL CANAL CIRCLE
SHEOPURKALAN M. P.

Tender Notice No. 8/C/59

Sealed item rate tenders are invited from the registered contractors of appropriate class of P. W. D., M. E. S., C. P. W. D. and Railways for the work of "Lining of Canal in mile No. 1 (Ch. O to 20.15) of Main Canal Upper (Parvati Approach Bank)," so as to reach the undersigned not later than 4 P. M. on 5th September, 1959.

Approximate estimated cost of work on works portion.	Rs. 2,95,612.00
Earnest money to be deposited ..	Rs. 5,910.00, in the form of receipted treasury challan or N.P.S.cs. pledged to Executive Engineer, Dn. I, Baroda by designation.
Completion period	6 months from the date of issue of work order.
Cost of tender document ..	Rs. 5/- per set which will be non-refundable.
Period of sale of tender document ..	During office hours from 13th July, 1959 to 4th September, 1959.
Date of opening of tender ..	5th September, 1959 at 4.30 P. M. in presence of such of the tenderers or their representatives who may be present.

Right to accept any or reject all the tenders rests with the department.

Y. G. MANE,
Superintending Engineer,

287—32-33

तहसील न्यायालय मेहगांव

प्र. क्र. १००।५९।३८.

गयाराम व श्यामलाल आत्मज नवाब, जाति गूजर ठाकुर, सा. लावन, वादीगण।

बनाम

सदानन्द पुत्र मिट्ठन जाति ब्राह्मण, निवासी मथुरा, मुहल्ला नीम की गली, मथुरा–प्रतिवादीगण।

प्रतिवादीगण को सूचना दी जाती है कि वादीगण ने ग्राम लावन (सीताराम) की भूमि १८३२–ʃ४ व १८३९–५।।ʃ कुल रकबा ५।।४ भू-आगम १२-३७ के प्रति जमींदारी समाप्ति विधान के अन्तर्गत पक्के कृषक बनने हेतु वाद प्रस्तुत किया है। तदर्थ सुनवाई किये जाने एवं प्रतिवादीगण की आपत्ति किये जाने हेतु दिनांक १२ अगस्त, १९५९ नियत की गई है। अतः कोई आपत्ति हो तो प्रस्तुत करें। अन्यथा एक पक्ष में सुनवाई की जाकर आदेश दिया जावेगा और तत्पश्चात कोई आपत्ति सुननेयोग्य नहीं होगी।

जगदम्बाप्रसाद श्रीवास्तव,
अतिरिक्त नायब तहसीलदार,
मेहगांव (भिण्ड)।

२९७–३(३३)

ग्राहकों से निवेदन

ग्राहकों से निवेदन है कि पत्र-व्यवहार करते समय वे ग्राहक नम्बर देना न भूलें। ऐसा न करने की दशा में उनकी ओर से प्राप्त पत्रों पर उचित समय में ठीक कार्यवाही करने में कार्यालय को कठिनाई होती है और कतिपय पत्रों पर कार्यवाही करना ही असम्भव हो जाता है।

—मैनेजर

मैरिज ऑफिस भिण्ड

(कलेक्टोरेट भिण्ड)

मि. नं. ३।५९ मेरिज एक्ट.

भागीरथ पुत्र मरी, जाति चमार, निवासी ग्राम बेसपुरा, हाल आबाद कस्बा भिण्ड, पति।

मुसम्मात काशीबाई पत्नी भागीरथ, जाति चमार, साकिन बेसपुरा, हाल आबाद, कस्बा भिण्ड, पत्नी।

आवेदन-पत्र आधीन धारा १५; दि स्पेशल मैरिज एक्ट १९५४।

नोटिस

उपरोक्त विषय में प्रार्थीगण ने निम्नलिखित आशय का आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया है।

१. पक्षों के नाम–पति भागीरथ पुत्र मरी, जाति चमार, निवासी ग्राम बेसपुरा हाल आबाद कस्बा भिण्ड, मध्यप्रदेश।

पत्नी मुसम्मात काशीबाई पत्नी भागीरथ, जाति चमार, साकिन बेसपुरा, हाल आबाद कस्बा भिण्ड, मध्यप्रदेश।

२. आयु तथा जन्म का दिनांक––पति भागीरथ आयु २५ साल, पत्नी मुसम्मात काशीबाई, आयु २२ साल।

३. स्थायी निवास स्थान, यदि कोई हो–– पति का ग्राम बेसपुरा, हाल आबाद कस्बा भिण्ड। पत्नी का ग्राम बेसपुरा, हाल आबाद कस्बा भिण्ड।

४. वर्तमान निवास स्थान––हाल आबाद कस्बा भिण्ड, मुहल्ला गुरिहाई।

५. पक्षों का विवाह से पूर्व का परस्पर सम्बन्ध, यदि कोई हो––कोई नहीं।

६. भागीरथ तथा मुसम्मात काशीबाई के बीच माह फागुन सम्वत २००५ को स्थान भिण्ड मुहल्ला गुरिहाई में विवाह संस्कार हुआ था और हम घोषणा करते हैं कि उपरोक्त दिनांक से हम पति और पत्नी के रूप में साथ-साथ रह रहे हैं। हम इसके द्वारा यह घोषणा करते हैं कि :— इस आवेदन-पत्र में उल्लिखित दिनांक को हम में से किसी के भी एक से अधिक जीवित पति या पत्नी नहीं थी, और न हम रजिस्ट्रांकन के समय ऐसा पति या पत्नी रखेंगे।

२. हम दोनों में से कोई भी मूक या बहरा नहीं है।

३. रजिस्ट्रांकन के दिनांक को उन दोनों ने इक्कीस वर्ष की आयु पूर्ण करली है।

४. वह निषेधित सम्बन्धों की पीढ़ी के अन्तर्गत नहीं आते हैं। उनका विवाह स्पेशल मैरिज एक्ट सन् १९५४ विधान क्रमांक ४३, सन् १९५४ के प्रभावशील होने के पश्चात् सम्पन्न हुआ है। तथा उन दोनों को शासित करनेवाली विधि अथवा विधि का प्रभाव रखनेवाली रीति-रिवाज के अनुसार उनका विवाह सम्बन्ध अनुज्ञापित है।

५. वह दोनों विवाह पदाधिकारी के विचाराधिकार के भीतर कस्बा भिण्ड में ऐसे काल से निवास कर रहे हैं जो इस आवेदन-पत्र के दिनांक से ठीक पूर्व तीस दिन से कम का नहीं है। उक्त दोनों के उक्त सम्पर्क से अभी तक कोई लड़का लड़की उत्पन्न नहीं हुए हैं। भविष्य में उन दोनों से जो सन्तान उत्पन्न हो उनके उत्तराधिकार के सम्बन्ध में कोई बाधा उत्पन्न न हो इस कारण यह प्रार्थना-पत्र वास्ते रजिस्ट्रेशन पेश है।

वह यह भी घोषणा करते है कि उपरोक्त विवरण उनके अधिकतम ज्ञान तथा विश्वास से सही है।

अतएव धारा १६ दि स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत जर्ये नोटिस हर आम व खास को सूचना दी जाती है कि इस रजिस्ट्रेशन शादी में जिसको उज्र हो वह तारीख इशाअत मे ३० दिन के अन्दर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करे। नियत अवधि के पश्चात फिर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

एल. एस. टायटस,
मैरिज ऑफिसर, म. प्र.
जिला भिण्ड म. प्र

(२९५–३३)

जूनियर टेकनीकल स्कूल

महारानी लक्ष्मीबाई रोड, लश्कर (ग्वालियर),

जूनियर टेकनीकल स्कूल में प्रवेश पाने के इच्छुक मिडिल पास विद्यार्थियों से प्रार्थना-पत्र आमंत्रित किये जाते हैं। प्रार्थी की आयु १ अगस्त, १९५९ को १४ वर्ष से कम व १७ वर्ष से अधिक नहीं होना चाहिये। कोर्स तीन वर्ष का होकर शिक्षार्थियों को उच्च श्रेणी का चतुर कार्य का प्रशिक्षण दिया जायगा, जिससे कि वे बुनियादी यांत्रिक शिक्षा के सिद्धान्त को समझकर उसे कार्यरूप में परिणित कर सकें। वे अपनी चतुरता और बुद्धिमता के आधार पर समय पाकर अधिक उत्तरदायित्व के पदों को भी जैसे सुपरवाइजर, प्रबन्धकर्त्ता आदि के पदों को भी प्राप्त कर सकें।

प्रशिक्षण समाप्त होने के पश्चात् उनको बड़े औद्योगिक व औजारों के उन कारखानों में, जिनकी हृष्टपुष्ट, सचरित्र, मार्गदर्शक व नवयुवक चतुर कारीगरों की आवश्यकता होगी, स्थान मिल सकेंगे।

इस शिक्षा के लिये कोई शुल्क नहीं लिया जायगा बल्कि ५० प्रतिशत विद्यार्थियों को प्रथम दो वर्ष में २० रुपये व तृतीय वर्ष में ३० रुपये प्रतिमास प्रति विद्यार्थी छात्रवृत्ति दी जायगी।

प्रवेश प्रार्थना-पत्र बिना किसी मूल्य के आचार्य, सेन्ट्रल टेकनीकल इन्स्टीटयूट (पोलीटेकनिक), चन्द्रवदनी का नाका, झांसी रोड, लश्कर ग्वालियर के कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं।

प्रवेश प्रार्थना-पत्र पूर्ति पश्चात् प्रेषित करने की अंतिम तिथि ३१ जुलाई, १९५९ है।

आर. खन्ना,
आचार्य,
सेन्ट्रल टेक्नीकल इन्स्टीटयूट (पोलीटेकनिक).

(२११–३३)

.CORRIGENDUM

The last date of receiving applicetion for admission in Veterinary traning School, Shivpuri/Rewa has been extended to3 1st July, 1959 instead of 20th July, 1959.

300(33)

मैरिज ऑफिस भिण्ड

कलेक्टोरेट भिण्ड

मि. नं. ४।५९ मैरिज एक्ट.

जनवेद पुत्र सुन्नू, कौम लोधे, राजपूत, साकिन पुर, पति।

जावित्री पुत्री रघुबर, कौम लोधे राजपूत, साकिन मदनपुरा पत्नी।

आवेदन-पत्र अधीन धारा १५ दि स्पेशल मैरिज एक्ट, सन १९५४।

नोटिस

उपरोक्त विषय में प्रार्थीगण ने निम्नलिखित आशय का आवेदन-पत्र इस कार्यालय में प्रस्तुत किया है :—

१. पक्षों के नाम—१. पति जनवेद पुत्र सुन्नू, कौम लोधे राजपूत, साकिन पुर। २. पत्नी जावित्री पुत्री रघुबर, कौम लोधे राजपूत, साकिन मदनपुरा।

२. आयु तथा जन्म दिनांकः—१. पति जनवेद उम्र २३ साल। २. पत्नी मु. जावित्री उम्र २२ साल।

३. स्थायी निवास स्थानः—पति का ग्राम पुर परगना भिण्ड, पत्नी का ग्राम मदनपुरा, परगना भिण्ड।

४. वर्तमान निवास स्थानः—ग्राम पुर, परगना भिण्ड।

५. पक्षों का विवाह से पूर्व का परस्पर सम्बन्ध यदि कोई हो—कोई नहीं।

६. पति जनवेद तथा पत्नी मुस. जावित्री के बीच दिनांक २५ मई, १९५९ को स्थान ग्राम पुर, परगना भिण्ड में विवाह संस्कार हुआ था और हम घोषणा करते हैं कि उपरोक्त दिनांक से हम पति और पत्नी के रूप में साथ-साथ रह रहे हैं। हम इसके द्वारा घोषणा करते हैं किः—

(१) इस आवेदन में उल्लिखित दिनांक को हम में से किसी के भी एक से अधिक जीवित पति या पत्नी नहीं थी और न हम रजिस्ट्रांकन के समय ऐसा पति या पत्नी रखेंगे।

(२) रजिस्ट्रांकन के दिनांक को उन दोनों ने इक्कीस वर्ष की आयु पूर्ण कर ली है।

(३) उनमें से कोई भी मूढ़ या विक्षप्ति नहीं है।

(४) वह निषेधित सम्बन्धों की पीढ़ी के अन्तर्गत नहीं आते हैं। उनका विवाह स्पेशल मैरिज एक्ट सन १९५४ (विधान क्रमांक ४३, सन १९५४) के प्रभावशील होने के पश्चात् सम्पन्न हुआ है। तथा उन दोनों को शासित करनेवाली विधि अथवा विधि का प्रभाव रखनेवाली रीतिरिवाज के अनुसार उनका विवाह सम्बन्ध अनुज्ञापित है।

(५) वह दोनों विवाह पदाधिकारी के विचाराधिकार के भीतर ग्राम पुर में ऐसे काल से निवास कर रहे हैं जो इस आवेदन पत्र के दिनांक से ठीक पूर्व तीस दिन से कम का नहीं है।

वह यह भी घोषणा करते हैं कि उपरोक्त विवरण उनके अधिकतम ज्ञान तथा विश्वास से सही है।

अतएव धारा १६ दि स्पेशल मैरिज एक्ट के तेहत जर्ये नोटिस हाजा हर आम व खास को सूचना दी जाती है कि इस रजिस्ट्रेशन शादी में जिसको उज्र हो वह तारीख़ इशाअत से ३० दिन के अन्दर अपनी आपत्ति पेश करे। नियत दिनांक के पश्चात फिर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

एल. एस. टायटस,
कलेक्टर एवं मैरिज ऑफिसर,
मंडल भिंड, मध्यप्रदेश.

(२९६–३३)

भारत सरकार से "रजिस्टर्ड"

सफेद दाग

यह हमारी दवा सन १९३६ से प्रसिद्ध है इस दीर्घकाल में हजारों ने इसकी परीक्षा की और प्रशंसापत्र भेजे हैं। आप भी एकबार **अनुभव कर देखें। मूल्य ५ रुपये। अधिक विवरण मुफ्त मंगाकर देखिये।**

वैद्य के. आर. बोरकर (मध्य.),
मु. पो. मंगरूलपीर जि. अकोला (विदर्भ)

कुछ जानने योग्य बातें

१. अनुमान है कि भारत में २.८१ लाख वर्गमील में जंगल हैं। यह देश के क्षेत्रफल का कुल २२.३ प्रतिशत है।

२. जहां सोवियत रूस में प्रति व्यक्ति पीछे जंगलों का क्षेत्रफल ३.५ हेक्टर (१ हेक्टर-२.४७१ एकड़) और अमेरिका में १.८ हेक्टर बैठता है, वहां भारत में यह केवल ०.२ हेक्टर ही पड़ता है।

३. यही नहीं कि हमारे देश में जंगल कम हैं, बल्कि यह भी कि हमारे देश में वनों से लकड़ी भी कम मिलती है। फ्रांस में प्रतिवर्ष प्रति एकड़ ५६.८ घनफुट लकड़ी मिलती है, जापान में ३७.० घनफुट, अमेरिका में १८.० घनफुट और भारत में केवल २.५ घनफुट। इसके अलावा देश के कुछ भागों में जंगल हैं और कुछ में बहुत ही कम।

४. जंगलों की कमी का खेती और मौसम आदि पर असर पड़ना स्वाभाविक है। इसी कारण भारत में मौसम में परिवर्तन होता रहता है और बाढ़ों के आने तथा जमीन के कटने आदि के कारण पैदावार कम हो गई है।

५. भूमि के कटने और मरुस्थल बनने की क्रिया का सबसे अच्छा उदाहरण पब्बी और शिवालिक पहाड़ियों (पंजाब) का है। राजस्थान के मरुस्थल के बढ़ने के भी प्रायः समाचार आते रहते हैं। भारत में इधर कुछ वर्षों से काफी बाढ़ें आने लगी हैं। कुछ हद तक इसका कारण भी वनों का तेजी से सफाया होना है।

६. भारतवासियों को वृक्षों की उपयोगिता समझाने के लिए ही सन् १९५० में देशभर में वन-महोत्सव का श्रीगणेश किया गया।

७. हर साल वर्षा ऋतु के शुरू, जुलाई के पहले सप्ताह में, देश भर में बबूल, पीपल, आम, नीम और बांस आदि के वृक्ष लगाये जाते हैं।

८. लोगों में उत्साह पैदा करने और निरंतर काम करने को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार ने अखिल भारतीय पुरस्कार देने शुरू किये हैं। 'राजेन्द्र-शील्ड' वन-महोत्सव में सबसे अधिक वृक्ष लगाने वाले जिले को दी जाती है, 'जवाहर-शील्ड' सबसे अच्छे गांव को और 'पटेल-शील्ड' सबसे अधिक पेड़ लगाने वाले विश्वविद्यालय को।

गुजरात में सहकारी कृषि-संस्थाएं

(पृष्ठ १३ का शेष)

क्योंकि यह स्कूल हरिजनों ने चलाया था, पर धीरे-धीरे उनका दृष्टिकोण बदला और वे उस स्कूल को पूरे गांव का मानने लगे। इस गांव की संस्था का काम बड़ा अच्छा रहा। संस्था ने गांव में प्राथमिक चिकित्सा-केन्द्र खोला, अपने खर्च पर गांववालों के लिए पानी का नल लगाया और अपने सदस्यों की आय बढ़ाने के लिए एक खादी-केन्द्र भी स्थापित किया।

पड़ताल के अनुसार समान हित और अच्छा प्रबन्ध इन संस्थाओं की सफलता के मुख्य कारण रहे हैं। बहुत-सी संस्थाओं का प्रबन्ध अच्छा न होने के कारण वहां पर विशेष लाभ नहीं हुआ। तीन संस्थाओं में तो मैनेजर हैं ही नहीं और ४९ संस्थाओं के मैनेजर केवल मिडिल पास हैं। ६२ संस्थाओं के मैनेजरों में से किसी को भी सहकारिता या खेती की ट्रेनिंग नहीं मिली। आधी संस्थाओं के मैनेजरों को तो २५ रुपये से कम वेतन मिलता है। अनुसंधान कार्यक्रम समिति ने मैनेजरों की उपयोगिता बताते हुए उन्हें ट्रेनिंग देने पर जोर दिया है।

अनुभव प्राप्त होने पर काम करने के तरीकों में भी परिवर्तन किया गया। पहले सामूहिक और साझे में खेती करनेवाली संस्थाओं में सदस्यों को प्रतिदिन काम दिया जाता था। इस काम के लिए संस्था की प्रबन्ध-समिति द्वारा निर्धारित मजदूरी उन्हें मिलती थी। इस व्यवस्था से संस्था के सदस्य अपने को मजदूरी पर काम करनेवाला अनुभव करने लगे हैं, हालांकि संस्था के लाभ में उनका हिस्सा था। महीसागर भाथा सामूहिक खेती समिति ने इस समस्या को हल किया। इस संस्था ने सदस्यों की अलग-अलग टोलियों को भिन्न-भिन्न काम सौंप दिए। सदस्यों की १७ टोलियां बन गईं, जिनमें ५ से लेकर १८ सदस्य थे। प्रत्येक सदस्य को किसी भी टोली में शामिल होने की पूरी छूट थी। प्रत्येक टोली को ७ से लेकर १९ एकड़ तक के टुकड़े खेती के लिए दे दिए गए। जमीन का कम और ज्यादा होना उस टोली के सदस्यों की संख्या और उस टुकड़े की जमीन की उर्वरता पर निर्भर था। हिसाब में उलझन न हो, अतः यह निश्चय किया गया कि टोली का प्रत्येक सदस्य बराबर काम करे। उपज का आधा भाग संस्था को मिलता है और शेष सदस्यों में समान रूप से बांट दिया जाता है। संस्था अपने भाग में से सरकार को लगान देती है तथा अन्य कार्यों के लिए रुपया जुटाती है। संस्था टोलियों को बीज और खाद मुफ्त देती है। पहले सिंचाई का आधा व्यय संस्था देती थी। बाद में संस्था पूरा व्यय करने लगी। टोलियों को १० रुपये प्रति एकड़ के हिसाब से ट्रेक्टर से जमीन की जुताई की सुविधा भी प्राप्त है। संस्था ने अतिरिक्त लाभ में से सदस्यों को बोनस भी देना शुरू किया है। सदस्यों को बोनस उनकी आय के अनुपात में दिया जाता है। कुछ कामों को संस्था के सब सदस्य मिलकर करते हैं और कुछ कामों के लिए उन्हें टोलियों में बांट दिया जाता है।

समिति की रिपोर्ट में सहकारी खेती को बढ़ावा देने के लिए एक गैरसरकारी संस्था बनाने की सिफारिश की गई है। समिति की राय में प्रत्येक सहकारी खेती संस्था को अपनी-अपनी पंचवर्षीय योजनाएं बनाने और लक्ष्य निर्धारित करने में सहायता देना भी जरूरी है। ये योजनाएं इन संस्थाओं के सदस्यों की काम करने की क्षमता और संस्थाओं के आर्थिक साधनों पर आधारित होनी चाहिएं। जो रुपया ये संस्थाएं बाहर से प्राप्त कर सकती हैं, और उसकी अदायगी को ध्यान में रखना चाहिए। योजना के अनुसार सरकारी सहायता भी मिलनी चाहिए। प्रत्येक वर्ष योजना की सफलता का मूल्यांकन करना और उसे सफल बनाने के तरीकों पर विचार करना भी आवश्यक है।

साहित्य समालोचना

पंछी और पवन—कवि श्री विद्यानंदन राजीव, प्रकाशक: साहित्य कला परिषद्, भिंड, म. प्र., पृष्ठ संख्या ६८, मूल्य १ रुपया।

प्रस्तुत पुस्तक में श्री राजीव के ४१ गीत हैं। यह उनका प्रथम रचना-संग्रह है। श्री वीरेंद्र मिश्र की विचारपूर्ण भूमिका भी इसमें संलग्न है।

कवि की पहली कविता में ही अनुभूति और उद्बोधन की प्रस्थापना लक्षित होती है, जिसका निर्वाह अन्य रचनाओं में भी किया गया है:—

पंथ पर तूफान ने है सिर उठाया
गीत मेरे मीत बनकर ले चलो तुम !

कवि वर्तमान तूफ़ानी वातावरण में गीतों द्वारा पथ-प्रदर्शन का विश्वासी है और यही विश्वास उसे साहस प्रदान करता है।

मैं नहीं हारा कभी भी ज़िंदगी से
आज तक का है यही इतिहास मेरा।
विघ्न कितने ही पड़े आकर डगर पर
किन्तु गति में ही रहा विश्वास मेरा।

कवि के हृदय को मानव के भीतर पनपती हुई स्वार्थपूर्ण अवसरवादिता के कचोटती है और वह कराह उठता है:—

भंवर में आ रुक गई पतवार मेरी
देखनेवाला न कोई पास आया।
किन्तु जैसे ही तरी पहुंची किनारे
हर किसीने हाथ मिलने को बढ़ाया।

कवि आशावादी है। निराशा के क्षणों में भी वह उस ढाढ़स बंधाती है:—

पर तेरे ही साथ बहारें भी हमसे लेगईं विदाई
फिर भी कोई आश अमा को पूनम की दे रही गवाही।

कवि का विश्वास सत्यं, शिवं, सुन्दरम् के त्यागमय जीवन में किस तरह खिल उठता है:—

मन की पावनता तनिक लुटाकर तो देखो
धरती युग-युग तक गीत तुम्हारे गायेगी।
विश्वास हृदय का भेंट चढ़ाकर तो देखो
हर प्रतिमा में प्रियतम की छवि मुसकायेगी।

कवि नासमझी से शिवं पर आवरण डालनेवालों को लक्ष्य कर कहता है:—

यदि मैं तुमसे कुछ कहता हूं बुरा न मानो,
मेरे मन की इस मुश्किल को तो पहचानो।
जिसकी ज्योति बचा लाया हूं तूफ़ानों से,
उस दीपक पर नहीं तिमिर का परदा तानो।

इस प्रकार कविताएँ जीवन के उन्नयन के लिए लिखी गई हैं, जो मानवता को संबल देकर ऊंचा उठानेवाली हैं। रचनाएं कवि की सफलता की द्योतक हैं।

शासन की गतिविधि

राज्य मंत्रि-परिषद् के निश्चय

मंत्रि-परिषद् की हाल ही की एक बैठक में यह निश्चय किया गया कि संभाग तथा जिलास्तर के वरिष्ठ सिविल तथा पुलिस अधिकारी नीतितः अपने निवास के जिलों में नियुक्त नहीं किये जाएंगे। यह नियम सचिवालयों तथा प्रमुखों के कार्यालयों में नियुक्तियों, शैक्षणिक संस्थाओं के शिक्षकों अथवा नगर-सेना विभाग के कर्मचारियों के लिए लागू नहीं होगा। तृतीय श्रेणी (मिनिस्ट्रीयल) तथा चतुर्थ श्रेणी सेवाओं के सरकारी कर्मचारियों और तृतीय श्रेणी (प्रशासकीय) सेवाओं के जिनमें नियुक्तियां जिला-आधार पर की जाती हैं, के कर्मचारी इस नियम से मुक्त रहेंगे।

परिषद् ने यह भी निश्चय किया कि एम. जी. एम. मेडिकल कॉलेज इंदौर में उन दाताओं के लिए, जिन्होंने भूतपूर्व किंग-एडवर्ड मेडिकल स्कूल, इंदौर के लिए दान दिया था, स्थान सुरक्षित रखना बंद कर दिया जाए। पुराना किंग-एडवर्ड मेडिकल स्कूल अब विकसित होकर मेडिकल कॉलेज बन गया है और प्रदेश के लिए अत्यधिक मांग को देखते हुए दानदाताओं के लिए स्थान सुरक्षित रखना संभव नहीं है।

मंत्रि-परिषद् ने यह भी निश्चय किया है कि राज्य की नदियों एवं झरनों में अपने अधिकार-क्षेत्र के अन्दर मछली पकड़ने के अधिकारों के ठेके देने के अधिकार ग्राम-पंचायतों को सौंप दिये जायें, परन्तु यह अधिकार हस्तान्तर राज्य सरकार द्वारा विवेकानुसार रद्द किया जा सके। ग्राम पंचायतें, संबंधित ठेकों से प्राप्त धन को उस समय तक खर्च कर सकती है, जब तक वे इस सौंपे गये अधिकारों का प्रयोग करती रहें। जो नदियां पडोसी राज्यों की सीमा से लगी हुई हैं, उनके संबंध में यह व्यवस्था की गई है कि जब भी पड़ोसी राज्य ठेके का नीलाम करना चाहें, तब मछली पकड़ने के अधिकारों को ठेके पर देने का प्रत्येक प्रश्न उसके गुणों और परिस्थितियों के आधार पर निश्चित किया जाएगा। परन्तु सभी स्थितियों में, मछली पकड़ने की अनुमति उन स्थानों में नहीं दी जाएगी, जहां प्राचीन प्रथाओं, अथवा धार्मिक अथवा अन्य कारणों से मछली मारना निषिद्ध है।

मंत्रि-परिषद ने यह भी निश्चय किया कि भारत सरकार के परामर्श से बालकों द्वारा धूम्रपान एवं तम्बाकू तथा अन्य हानिप्रद मादक पदार्थों के उपयोग को रोकने के लिये कानून बनाया जाय। प्रस्तावित विधेयक इस विषय पर जारी पिछले कानून का स्थान ले लेगा।

गरीब तथा होशियार विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता

गरीब तथा योग्य विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें इस दृष्टि से, राज्य सरकार ने, योग्य विद्यार्थियों को हर साल कुछ छात्रवृत्तियां देने का निश्चय किया है। पिछले वर्ष आरम्भ की गई नई छात्रवृत्तियों में ६० रुपये प्रतिमास की योग्यता तथा गरीबी के आधार पर दी जानेवाली ५० छात्रवृत्तियां तथा गंगानाथ झा संस्था, इलाहाबाद में अध्ययन के लिये प्रदत्त एक गवेषणा छात्रवृत्ति शामिल है। राज्य की शैक्षणिक संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रतिवर्ष दी जानेवाली नवीन योग्यता छात्रवृत्तियों में शासकीय खनिकर्म तथा धातुशोधन महाविद्यालय, रायपुर में इंजीनियरिंग-पाठ्यक्रम पढ़ने के लिए ३५ रुपये की ७ छात्रवृत्तियां, कम वेतन प्राप्त पुलिस कर्मचारियों के बच्चों के लिए २३ छात्रवृत्तियां, शासकीय पोलीटेकनिक भोपाल के द्वितीय वर्ष वर्ग के लिए ३ छात्रवृत्तियां तथा तृतीय वर्ष वर्ग के लिए ४ अतिरिक्त छात्रवृत्तियां शामिल हैं।

विदेशी छात्रवृत्तियों में टी. सी. एस. कार्यक्रम तथा कोलम्बो योजना के अन्तर्गत विदेशों में, उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए राज्य सरकार द्वारा २८ प्रशिक्षार्थी भेजे गए।

अनुसूचित जनजातियों, अनुसूचित जातियों तथा राज्य की अन्य पिछड़ी हुई जातियों के विद्यार्थियों को वित्तीय सहायता देने के लिये एक अलग विस्तृत योजना है।

अनुसूचित जातियों के लिए कृषि योग्य भूमि

राज्य सरकार ने विंध्यप्रदेश क्षेत्र में अनुसूचित जाति के ६५ परिवारों को अपनी भूमि की ट्रेक्टरों द्वारा जुताई कराने के लिए द्वितीय पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत सन् १९५९–६० में १६,३०० रुपये की अर्थ-सहायता स्वीकृत की है।

इस राशि में से टीकमगढ़ जिले के ७ परिवारों को पुनः बसाने के लिए १,७५० रुपये दतिया जिले को ५ परिवारों के लिए १,२५० रुपये, छतरपुर जिले के १५ परिवारों के लिये ३,७५० रुपये, पन्ना जिले के २० परिवारों के लिए ५,००० रुपये और सतना जिले के १८ परिवारों के लिए ४,५०० रुपये निर्धारित किये गये हैं।

अनुसूचित जाति के प्रत्येक परिवार को १० एकड़ भूमि निःशुल्क दी जावेगी तथा ट्रेक्टरों द्वारा भूमि की जुताई हेतु प्रत्येक परिवार के लिये २५० रुपये सहायतानुदान के रूप में दिय जावेगा।

भूमिहीनों को भूमि का वितरण

अधिकाधिक भूमि को कृषि के अंतर्गत लाकर अन्न-उत्पादन में वृद्धि करने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने भूमिहीनों में पड़ती भूमि का वितरण करना आरंभ कर दिया है। दुर्ग जिले में जनवरी १९५९ से मई १९५९ तक भूमिहीनों को लगभग १५२५ एकड़ भूमि का वितरण किया गया।

स्मरण रहे कि इन किसानों को बीज तथा बैल और कृषि-औजार खरीदने के लिये तकावी ऋण भी वितरित किये गये।

११०.६२.२

आदर्श ग्राम हरसौला के कुछ निर्माण कार्य

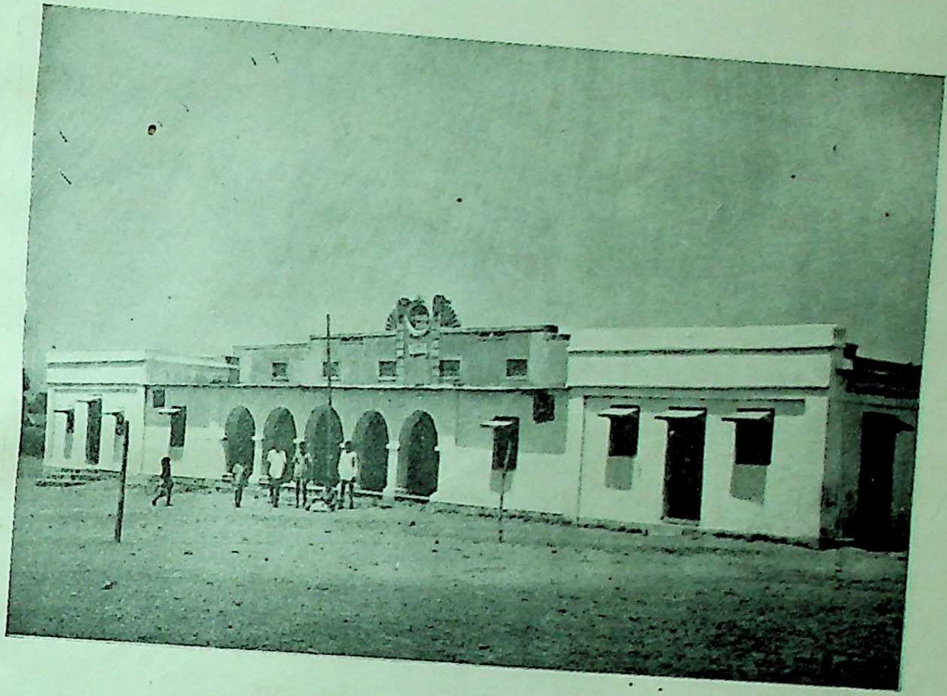

ाम का माध्यमिक शाला भवन। यह भवन २१,००० रुपये की लागत से बना है। इसके निर्माण में जनता ने १३,००० रुपये अंशदान के रूप में दिए हैं। इसमें ३५० से अधिक बालक शिक्षण प्राप्त कर रहे हैं

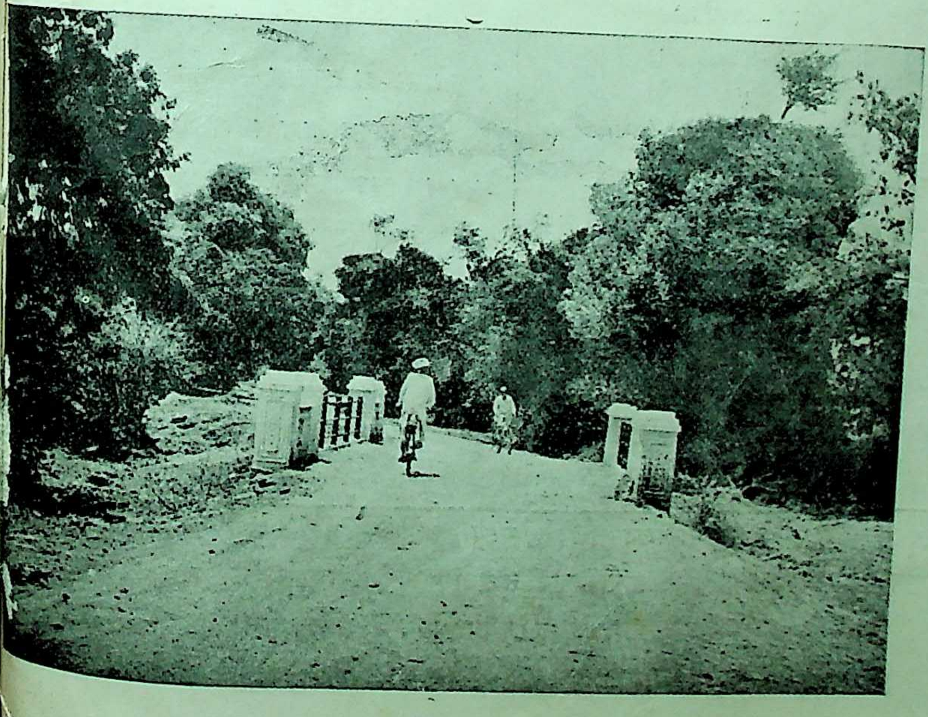

सम्पर्क पथ पर निर्मित बहुत-सी पुलियों में से एक का दृश्य

Registered No. J. 158
Licence to post Without prepayment
MADHYA PRADESH SANDESH
वार्षिक मूल्य छः रुपये
Licence No. P. P. 1

हथिनी कभी नहीं भूलती

. . . . भोजन के समय अपने बच्चे को। वह उसके लिए बांस की कोंपलें, रसपूर्ण गन्ने, रुचिकर पत्तियाँ लाती है....स्वादिष्ट चीज़ें जो उसे भाती हैं और उसकी वृद्धि होती है।

जे. बी.
मिठाइयाँ

आपके बढ़ते हुए बच्चों के लिए—
जे. बी. मंघाराम की मिठाइयां खाने की ऐसी ही स्वादिष्ट चीज़ें हैं जो स्फूर्ति-सम्पन्न ग्लूकोज से बनाई जाती हैं। बच्चे इनकी सुगन्ध और अमृतसम-मधुर स्वाद को पसन्द करेंगे। केवल उच्च श्रेणी की मिठाइयों से ही सन्तोष प्राप्त होता है।

J.B. SWEETS
JB
JB TOFFEE
JB PRODUCTS

लाखों की
मन-पसंद

जे. बी. मंघाराम एण्ड कं.
ग्वालियर • भारत

110672

स्थानीय एजेन्ट—

प्रीतम स्टोर्स, जयाजी चौक व पाटनकर बाजार, लश्कर

आवश्यकता

प्रत्येक जिले के क्षेत्र में ५० रुपये से २५० रुपये मासिक वेतन पर कार्य करनेवाले कार्यकर्ताओं (सहा. संस्थापक, व्यवस्थापक, प्रचारक एवं कुशल वैद्यों) की आवश्यकता है। नक्द जमानत देनेवालों को प्राथमिकता दी जावेगी। इच्छुक बन्धु शीघ्र आवेदन करें।

व्यावस्थापक दी चित्रगुप्त कार्यालय,
(२८३–३१–३३) **मेहगांव (भिण्ड) मध्यप्रदेश.**

तहसील कार्यालय राघोगढ़

मि० नं० १५२।५९–२१

तौफानसिंह पुत्र रामरतन, बाढ़ई, भादौर

विरुद्ध

रामभट पुत्र विसनभट, ब्राह्मण (फौत) वारिश पता नहीं।

विज्ञप्ति

बनाम.——सर्व संबंधित को सूचित किया जाता है कि ग्राम भादौर, आराजी नं. १७४-४ऽ२, ४९७-१ऽ२, १६४-१६५-७।ऽ पर वजाह रामभट कृषक के तौफानसिंह पुत्र रामरतन बाढ़ई, उपकृषक ने पक्के कृषक के स्वत्व प्राप्ति का दावा किया है अतः जिस किसी को या वारिश जहां कहीं भी हो नियत दिनांक २७ अगस्त, १९५९ के पूर्व या को तहसील राघौगढ़ जिला गुना में उपस्थित होकर आपत्ति या जवाब पेश करो अन्यथा नियत दिनांक के पश्चात् कोई आपत्ति नहीं सुनी जावेगा। दिनांक १४ जुलाई, १९५९।

बृजविहारीलाल सक्सेना,
तहसीलदार,
राघोगढ़ म. प्र.

३०१–(३३

प्रबंध सम्पादक——ईश्वरसिंह परिहार, संचालक, सूचना एवं प्रकाशन संचालनालय, मध्यप्रदेश
सम्पादक—अनन्त मराल शास्त्री
देवेन्द्र नारायण वाजपेयी, मुख्य सम्पादक, सूचना-प्रकाशन संचालनालय, म. प्र. द्वारा प्रकाशित तथा गवर्नमेंट रीजनल प्रेस, ग्वालियर द्वारा मुद्रित
एक प्रति का मूल्य–१३ नये पैसे

Com[illegible]
1999 [illegible]00